

कुरआन-मजीद
दा
डोगरी अनुवाद



प्रकाशक

नज़ारत नश्र-व-इशाअत
क्रादियान

पंजाब-143516

कुरआन मजीद

डोगरी अनुवाद (उर्दू ते हिंदी थमां)

- अनुवादक : डॉ० ज्ञान सिंह
खास मदादी : गुलाम अहमद क़ादिर
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत, सदर अंजुमन अहमदिय्या, क़ादियान
छापाखान्ना : फज़ले उमर प्रिंटिंग प्रैस क़ादियान-143516
मिलने दा थाहूर : नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, गुरदासपुर पंजाब-143516
फोन : 01872-500970
अहमदिय्या मुस्लिम मिशन, म्हल्ला दलपतियां
मकान नं. 317, जम्मू त'वी-180001
पैहले पुज्ज : 2016

Holy Qur'an in Dogri Language

Published under the auspices of
HADHRAT MIRZA MASROOR AHMAD
Fifth Successor of Promised Messiah and
Supreme Head of the Ahmadiyya Movement in Islam

- Translated by : Dr. Gyan Singh
Special Contribution : Ghulam Ahmad Qadir
Published by : Nazarat Nashr-o-Isha'at,
Sadr Anjuman Ahmadiyya, Qadian
Printed at : Fazole Umar Printing Press, Qadian-143516
Contact Add. : Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian
Distt. Gurdaspur, Punjab - 143516
Ph. : 01872-500970
Ahmadiyya Muslim Mission,
Mohallah Dalpatiyan, House No. 317,
Jammu Tawi-180001, Ph. : 0191-2572529
First Edition : 2016

© Islam International Publication Limited

ISBN : 978-81-7912-255-6

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

इज़हार शुक्रिया

मानव जाति गी कुरआन करीम दी खूबसूरत ते सदा-बहार शिक्षा शा बाकफ कराने आस्तै दुनियां-भर दी मुख सौ भाशाएं च अनुवाद छापने दे कार्यक्रम तैह्त हिंदोस्तान दी सारी खेतरी भाशाएं च कुरआन मजीद दे अनुवाद छपी चुके दे न। हिंदोस्तान दियें प्रमुख भाशाएं च इक भाशा डोगरी बी ऐ। चिरे थमां इस भाशा च अनुवाद कराने दा कम्म चला करदा हा। हून अल्लाह तआला दी किरपा कन्नै इस भाशा दे जानकार बी कुरआन करीम दी खूबसूरत शिक्षा थमां वाकफ होई सकडन।

डोगरी भाशा च कुरआन मजीद दा अनुवाद हजरत खलीफतुल मसीह द्वितीय मिर्जा बशीरुद्दीन महमूद अहमद (रज्जि) दी “त. सीरे सगीर” थमां श्रीमान डॉ. ज्ञान सिंह साहब पी.एच.डी. चीफ अडीटर कल्चरल अकैडमी जम्मू-कश्मीर जम्मू होरें कीते दा ऐ। उनें बड़ी लगन ते शरधा कन्नै कम्म कीता ऐ।

हजरत अमीरुल मोमिनीन खलीफतुल मसीह पंचम दी चेची सरपरस्ती च इस अनुवाद गी पूरा कराया गेआ ऐ। इस अनुवाद दी संभावत कमियें गी दूर करने ते प्रूफ-रीडिंग च श्रीमान मौलवी गुलाम अहमद कादिर साहब मुबल्गे सिलसला जम्मू नै खास मदाद दिती ऐ। अल्लाह तआला इनें सबनीं गी नेक सिला प्रदान करै ते खुदा करै जे एह अनुवाद हर चाल्ली समूचे डुग्गर बासियें आस्तै फायदे दा जरीया साबत होऐ ते इस कुरआन करीम दे पाठक एहदी शिक्षा ते सनेह गी समझन ते ओहदे शा लाह लैने दी थबीक पान ते दूएँ तक बी इस नैमत गी पुजाने दी सरमत्थ हासल करन।

अल्लाह तआला सारे मदादियें गी नेक सिला प्रदान करै। आमीन

मखदूम शरीफ

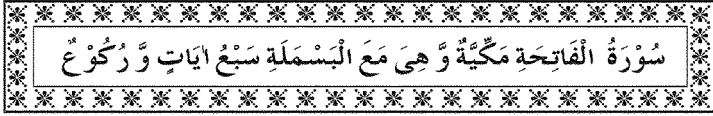
नाज़िर नश्र-व-इशाअत क़ादियान पंजाब

कुर्आन-मजीद

सूरत सूची

| सूरत नं० | सूरः | सफा | सूरत नं० | सूरः | सफा |
|----------|--------------|-----|----------|----------------|------|
| 1 | अल्-फ़ातिहः | 1 | 31 | लुक्मान | 768 |
| 2 | अल्-बकरः | 4 | 32 | अल्-सजदः | 775 |
| 3 | आले इमरान | 100 | 33 | अल्-अहज़ाब | 782 |
| 4 | अल्-निसा | 145 | 34 | सबा | 802 |
| 5 | अल्-माइदः | 193 | 35 | फ़ातिर | 816 |
| 6 | अल्-अन्आम | 230 | 36 | यासीन | 827 |
| 7 | अल्-आराफ़ | 270 | 37 | अल्-साफ़ात | 840 |
| 8 | अल्-अन्फ़ाल | 316 | 38 | साद | 858 |
| 9 | अल्-तौबः | 334 | 39 | अल्-जुमर | 872 |
| 10 | यूनुस | 368 | 40 | अल्-मोमिन | 887 |
| 11 | हूद | 392 | 41 | हा-मीमअल्-सजदः | 903 |
| 12 | यूसुफ़ | 420 | 42 | अल्-शूरा | 915 |
| 13 | अल्-राअद | 447 | 43 | अल्-जुछरुफ़ | 927 |
| 14 | इब्राहीम | 459 | 44 | अल्-दुखान | 941 |
| 15 | अल्-हिज़्र | 471 | 45 | अल्-जासियः | 948 |
| 16 | अल्-नहल | 483 | 46 | अल्-अहक़ाफ़ | 955 |
| 17 | बनी-इस्राईल | 511 | 47 | मुहम्मद | 964 |
| 18 | अल्-कहफ़ | 535 | 48 | अल्-फ़तह | 972 |
| 19 | मरयम | 561 | 49 | अल्-हुजुरात | 981 |
| 20 | ताहा | 577 | 50 | क़ाफ़ | 986 |
| 21 | अल्-अम्बिया | 598 | 51 | अल्-ज़ारियात | 993 |
| 22 | अल्-हज़्ज | 616 | 52 | अल्-तूर | 1001 |
| 23 | अल्-मोमिनून | 633 | 53 | अल्-नज़्म | 1007 |
| 24 | अल्-नूर | 649 | 54 | अल्-क़मर | 1015 |
| 25 | अल्-फ़क़ान | 666 | 55 | अल्-रहमान | 1022 |
| 26 | अल्-शुअरा | 680 | 56 | अल्-बाक़िअः | 1030 |
| 27 | अल्-नम्ल | 703 | 57 | अल्-हदीद | 1039 |
| 28 | अल्-क़सस | 721 | 58 | अल्-मुजादलः | 1047 |
| 29 | अल्-अन्क़बूत | 741 | 59 | अल्-हश्र | 1053 |
| 30 | अल्-रूम | 756 | 60 | अल्-मुम्तहिनः | 1059 |

| सूरत नं० | सूरः | सफा | सूरत नं० | सूरः | सफा |
|----------|------------------|------|----------|---------------|------|
| 61 | अल्-सप्रफ़ | 1064 | 88 | अल्-गाशियः | 1180 |
| 62 | अल्-जुमुअः | 1067 | 89 | अल्-फ़न्न | 1183 |
| 63 | अल्-मुनाफ़िक्कून | 1070 | 90 | अल्-बलद | 1187 |
| 64 | अल्-तगाबुन | 1073 | 91 | अल्-शम्स | 1190 |
| 65 | अल्-तलाक़ | 1077 | 92 | अल्-लैल | 1193 |
| 66 | अल्-तहरीम | 1082 | 93 | अल्-जुहा | 1195 |
| 67 | अल्-मुल्क | 1087 | 94 | अलम्-नश्रह | 1197 |
| 68 | अल्-क़लम | 1092 | 95 | अल्-तीन | 1199 |
| 69 | अल्-हाज़क़ः | 1099 | 96 | अल्-अलक़ | 1201 |
| 70 | अल्-मआरिज | 1105 | 97 | अल्-क़द्र | 1204 |
| 71 | नूह | 1110 | 98 | अल्-बय्यिनः | 1206 |
| 72 | अल्-जिन्न | 1114 | 99 | अल्-ज़िल्ज़ाल | 1208 |
| 73 | अल्-मुज़ज़म्मिल | 1119 | 100 | अल्-आदियात | 1210 |
| 74 | अल्-मुददस्सिर | 1123 | 101 | अल्-कारिअः | 1212 |
| 75 | अल्-क्रियामत | 1128 | 102 | अल्-तकासुर | 1214 |
| 76 | अल्-दहर | 1132 | 103 | अल्-अस्र | 1216 |
| 77 | अल्-मुर्सलात | 1136 | 104 | अल्-हुमज़ः | 1217 |
| 78 | अल्-नबा | 1142 | 105 | अल्-फ़ील | 1219 |
| 79 | अल्-नाज़िआत | 1147 | 106 | कु़रैश | 1220 |
| 80 | अबस | 1152 | 107 | अल्-माऊन | 1221 |
| 81 | अल्-तकवीर | 1156 | 108 | अल्-कौसर | 1222 |
| 82 | अल्-इन्फ़ितार | 1160 | 109 | अल्-काफ़िरून | 1223 |
| 83 | अल्-मुतफ़िफ़ीन | 1163 | 110 | अल्-नस्र | 1224 |
| 84 | अल्-इन्शाक़ाक़ | 1167 | 111 | अल्-लहब | 1225 |
| 85 | अल्-बुरूज | 1171 | 112 | अल्-इख़लास | 1227 |
| 86 | अल्-तारिक़ | 1174 | 113 | अल्-फ़लक़ | 1229 |
| 87 | अल्-आला | 1177 | 114 | अल्-नास | 1230 |



सूरः अल्-फ़ातिहः

एह सूरः मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां सत्त आयतां ते इक रूकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांउ लेइयै (पढ़ना)
जो बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

हर (किसम दी) तरीफ¹ दा अल्लाह (गै)
अधिकारी ऐ (जो) सारे ज्हाँने² दा रब्ब
(ऐ) ॥ 2 ॥

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ②

1. कुरआन मजीद च मूल शब्द 'अल्हम्दु लिल्लाहि' ऐ जिसदा अर्थ ऐ - (क) हर चाल्ली दी स्तुति दा सिर्फ अल्लाह गै अधिकारी ऐ ते इस दा इक अर्थ एह बी ऐ जे हर इक सदगुण पूरी चाल्ली अल्लाह च गै मजूद होंदा ऐ ते जिसलै अस कुसै गुण गी अल्लाह कनै सरबंधत करने/जोड़ने आं तां इसदा एह अर्थ होंदा ऐ जे ओह गुण अपनी चरम सीमा तक सिर्फ अल्लाह च गै मजूद होंदा ऐ। (ख) इसदा दूआ अर्थ एह ऐ जे हर चीजै दा असल गुण अल्लाह गै दस्सी सकदा ऐ। इक शख्स दूए शख्स बारे पूरा-पूरा ज्ञान नैई रखने करी उसदी पन्थान कराने च भुल्ल करी सकदा ऐ। इससै चाल्ली ओह पदार्थें दे तत्वे कनै पूरी चाल्ली बाकफ नैई होने करी उंदे गुण दस्सने च बी भुल्ल करी सकदा ऐ। सिर्फ ऊऐ अंतर्गामी सत्ता पदार्थें दे तत्वे दा भेद दस्सी सकदी ऐ जिसी गौब दा बी ज्ञान होऐ। (ग) इसदा त्रीया अर्थ एह ऐ जे बक्ख-बक्ख जातियां अपनी-अपनी धार्मिक कताबें दे अधार पर जिस चाल्ली दी पूरी तरीफ करदियां न ते इक पूर्ण सत्ता (अल्लाह) दा अंदाजा लांदियां न ओह कामिल सत्ता सिर्फ अल्लाह गै ऐ। (घ) इस दा चौथा अर्थ एह ऐ जे मनुक्ख जिस कामिल सत्ता दी तस्वीर अपने मनै च बनाई बैठे दा ऐ जेकर ओह तस्वीर ठीक होऐ तां ओह कामिल सत्ता अल्लाह दे सिवा कोई दूई होई गै नैई सकदी, की जे 'हम्द' शब्द दा अर्थ असली तरीफ ऐ, बनावटी तरीफ आस्तै 'हम्द' शब्द प्रयुक्त नैई होंदा।
2. 'ज्हाँने (लोकें) दा रब्ब'- रब्ब दा अर्थ ऐ - सुआमी, मालक, पालनहार। 'लोकें दा रब्ब' शब्द राहें बक्ख-बक्ख लोकें पासै संकेत कीता रोदा ऐ। बशाल ख्रिस्टी च बक्ख-बक्ख लोक लभदे न जो रंग-बरंगे, निक्के-बड्डे ते इक-दूए दे उलट न, पर इस रंगा-रंगी दे होंदे होई बी उंदे पिच्छें इक गै सिद्धांत कम्म करदा सेही होंदा ऐ ते उंदे पिच्छें इक गै संचालक शक्ति कम्म करा करदी ऐ, तां पही स्तुति जो प्राकृतक सौंदर्य गी मन्नी लैने दा नांउ ऐ ओह बी कार्य कर्ता अल्लाह दी संपत्ति ते उससै दा हक्क समझी जाग।

बे-हद कर्म करने आहला, बार-बार रैहम
करने आहला ॥ 3 ॥

الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۞

(ते) जज़ा (अच्छा बदला देने) - स'जा'¹
(दंड देने) दे समे दा मालक² ऐ ॥ 4 ॥

مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ۞

(हे अल्लाह!) अस तेरी गै अबादत³ करने
आं ते तेरे शा गै मदद मंगने आं ॥ 5 ॥

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۞

असेंगी सिद्धे रस्ते⁴ पर चलाऽ ॥ 6 ॥

إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۞

1. मूल शब्द 'मालिकेयोमिद्दीन' ऐ। जिसदा अर्थ ऐ जे अल्लाह जज़ा-सज़ा दे समे दा मालक ऐ यानी क्यामत दे ध्याड़े दा मालक ऐ। इत्थें इस लोक ते उस लोक (परलोक) च कर्म दे फलें दा फर्क दस्से दा ऐ जे क्यामत आहलै रोज कर्म दा बदला देने च कुसै दूए दा दखल नैई होग। इस संसार च ते कर्म दा फल मनुक्खें राहें बी मिलदा ऐ ते उंदे शा भुल्ल बी होई सकदी ऐ, पर क्यामत आहलै रोज कर्म दा सिला सिर्फ अल्लाह गै देग ते ऐसा नैई होग जे निर्दोश गी स'जा मिलै ते दोशी बचे दा र'वै ते ऐसा बी नैई होग जे अपराधी छल-कपट शा कम्म लेइयै स'जा भोगने शा बचे दा र'वै।
2. मालक शब्द दा प्रयोग करियै इस पासै संकेत कीता गोदा ऐ जे अल्लाह कर्म दा फल दिंदे मौकै राजा जां कुसै कर्मचारी आंगर नैई होग बल्के मालक जां सुआमी दे रूपै च कम्म करग, की जे राजा ते फ़ैसला करदे मौकै न्याऽ गी सामने रखदा ऐ। उसदा निरना वादी ते प्रतिवादी दे हक कर्ने सरबंधत होदा ऐ। इस आस्तै उसी कुसै गी माफ करने दा हक नैई होदा, पर अल्लाह मालक जां सुआमी होने दे नातै अपने अधिकार कर्ने जिन्ना चाह माफ करी सकदा ऐ। इस चाल्ली इत्थें मनुक्खै गी मेद बहाइयै नराशा थमां बचाया गोदा ऐ। दूए पासै मनुक्खै गी सचेत बी कीता गोदा ऐ जे देआवान अल्लाह दी देआ शा अनुचित लाह लैने दा विचार तक बी नैई करै, की जे जित्थें ओह लोकें (ज्हान्नें) दा मालक होने दे नातै लोकें पर देआ ते उंदे पाप माफ करी सकदा ऐ उल्थें ओह उनेंगी पापें च फसे दे बी नैई दिक्खी सकदा। इत्थें आशा ते भे दे विचार इक्के नेह पैदा करियै मानव समाज गी चुस्त-दरुस्त रौहने ते हिम्मत बनाई रखने दी प्रेरणा दिती गेदी ऐ। इसदा इक अर्थ एह बी ऐ जे अल्लाह दीन यानी धर्म दे दिनै दा मालक ऐ। जिसलै कदें संसार च कोई सच्चा धर्म जनम लैदा ऐ तां उसलै ईश्वर दियां शक्तियां बी प्रकट होना शुरू होई जदियां न, पर जिसलै संसार चा सच्चा धर्म लोप होई जंदा ऐ तां इयां लगदा ऐ जे इस संसार दा कोई मालक ते संचालक नैई, की जे उसदे प्रभुत्व, उसदे अनुशासन ते उसदी कुसै शक्ति दा प्रदर्शन नैई होआ करदा होदा, पर कुसै सुधारक दे औने पर अल्लाह दियें तकदीरें, उसदी प्रभुता दे नेकां चमत्कार ते उसदे फरिश्ते झट्ट गै संसार च प्रकट होन लगदे न ते उसदी योजनाएं दी अभिव्यक्ति इस चाल्ली होंदी ऐ जे जाहरा-बाहरा तौरै पर पता लगदा ऐ जे अल्लाह इक योजनां मताबक संसार गी चलाना चांहादा ऐ।
3. जिसलै संसार च अल्लाह दे प्रभुत्व दे चेचे चमत्कार प्रकट होन लगदे न तां ओह मनुक्खै दे लागै होई जंदा ऐ ते पवित्र आदमी आध्यात्मक शक्ति राहें अल्लाह दे दर्शन करन लगी पौंदे न ते उंदे च इक खास ईमान उजागर होई जंदा ऐ। इस चाल्ली अद्रिश्श अल्लाह उनेंगी नजरी औन लगी पौंदा ऐ, उसलै ओह पुकारी उठदे न 'हे अल्लाह! अस तेरी गै उपासना करने आं ते तेरे शा गै मदद मंगने आं'।
4. इस च दस्सेआ गोदा ऐ जे दर्शन करने परैल उंदे दिलें च अपने प्रीतम गी मिलने दी इक तेज (काहलपुने आहली) आस जागी पौंदा ऐ। इस आस्तै उसदी उपासना करने ते ओहदे शा मदद मंगने दे कर्ने गै ओह एह बी चांहादे न जे अल्लाह कर्ने उंदा मलाप होई जा। इस आयत च इस पासै ध्यान दुआया गोदा ऐ जे इक मोमिन भक्त जिसलै 'इय्याकानाबुदो' दा प्रतिश्रुत स्थान हासल करी लैदा ऐ तां मजबूर होइयै पुकारी उठदा ऐ, 'हे अल्लाह! मिगी अपने कश औने दा करीब तरीन (असान शा असान ते निक्के शा निक्का) रस्ता दस्स।

उन्हें लोकें दे रस्ते पर जिंदे पर तोह इनाम¹
कीते दा (यानी जिनेंगी पुरस्कार प्रदान कीते दा)
ऐ, जिंदे पर नां ते (बा'द च तेरा) ग़ज़ब (प्रकोप) नाज़ल होआ (ऐ) ते नां ओह (बा'द च) गुमराह²
(होए दे) न ॥7॥ (स्कू 1)

صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ
غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ۝

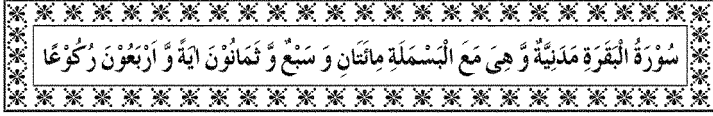
ooo

1. नैमत कन्नै पुरस्कृत होने आहल्लें दी राह्' यानी - (क) अल्लाह तक पुज्जने दा सरस, सुगम ते निक्के शा निक्का रस्ता। (ख) ओह रस्ता ऐसा नेईं होऐ जो अल्लाह शा दूर लेईं जाने आह्ला होऐ।
2. पुरस्कार पाने आहले उन्हें लोकें दा रस्ता दस्स जो तेरे प्रकोप दा पात्तर नेईं बने ते नां गै ओह गुमराह होए न।

हर कौम किश चिरै आस्ते पुरस्कार पाने आहली बनी दी रौहदी ऐ। फही बल्लें-बल्लें बिगड़दे-बिगड़दे अल्लाह दे अज़ाब दी पात्तर बनी जंदी ऐ। इस प्रार्थना च दस्सेआ गोदा ऐ जे साढ़ी शुरुआत बी पुरस्कार पाने आहले लोकें जनेही होऐ ते साढ़ा अंत बी, पर ऐसा कदें बी नेईं होऐ जे साढ़ी कौम पुरस्कार पाने दे बा'द बल्लें-बल्लें उंदे शा बंचत होई जा ते अल्लाह दे अज़ाब च फसी जा।

जाति तौरा पर कुसै मनुक्खै दा गुमराह होई जाना ते अज़ाब दा पात्तर बनी जाना ममकन ऐ, पर इस प्रार्थना दा मकसद एह ऐ जे सारी कौम पूरी दी पूरी गुमराह नेईं होऐ ते नां गै अज़ाब दी पात्तर बनी सकै।

इस आयत च भविक्ख च होने आहले मुसलमानें दे पतन पासै बी संकेत कीता गोदा ऐ, पर इस भविक्खवाणी नै शंका दस्सियै आशा दी किरण बी पाई दी ऐ जे जेकर कुसै बेलै दे पुरस्कार पाने आहले मुसलमान एह कोशिश करन जे ओह गुमराह होइयै अज़ाब दे पात्तर नेईं बनी सकन तां उंदी कोशिशें च सफल होने दी संभावना मज़ूद होंदी ऐ ते कुसै गल्लै दा द्वार खुल्ला होने कन्नै बी इक बौह्त बड्डी आस बनी रौहदी ऐ ते उत्साह बधदा रौहदा ऐ।



सूर: अल्-बकर:

एह सूः मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां दो सो सतासी आयतां ते चाली रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना)जो बे-
हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अ'ऊं अल्लाह¹ सारें शा ज्यादा जानने आहला
आं ॥ 2 ॥

بِسْمِ اللَّهِ

الْمَعَا

इय्यै कामल कताब ऐ, इस (गल्ला) च कोई
शक नई, एह संयमिये² गी हदायत देने
आहली ऐ ॥ 3 ॥

ذَلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ فِيهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ ①

जो गैब³ पर ईमान आहनदे ते नमाज गी
कायम रखदे न ते जे (किश) असें उनेगी

الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيمُونَ
الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ①

1. अलिफ़, लाम, मीम ते इस चाल्ती दे दूए अक्खर जो कुरआन मजीद दी सूरतें दे शुरू च आप न-खंडाक्षर खुआंदे न। इंदे चा हर इक अक्खर इक-इक शब्द दे थाहरै पर प्रयुक्त होए दा ऐ जियाँ-'अलिफ़'=अना, लाम=अल्लाह ते मीम =आलमो दे अर्थ च बरते दा ऐ। एह त्रवै अक्खर मिलियै 'अना अल्लाह आलमो' यानी अ'ऊं अल्लाह सारें शा ज्यादा जानने आहला आं, ऐसा भाव प्रकट करदे न। इनें खंडाक्षरें राहें सूरतें च आप दे अल्लाह दे गुणें पासै संकेत होंदा ऐ। किश सूरतें दे शुरू च कोई खंडाक्षर नई आया। ऐसियां सूरतां अपने शा पैहली सूरतें दे अधीन होदियां न जिंदे शुरू च कोई खंडाक्षर आप दा होंदा ऐ।
2. इस च दस्सेआ गेदा ऐ जे हर-इक ऐसा शख्स जो मुतक्की (यानि संयमी) बनना चाह जां तक्रवा (संयम) दियां किश श्रेणियां पूरियां करी चुके दा होऐ जां ओह अपने आपै गी उच्च कोटि दा संयमी समझदा होऐ, ऐसे सारे लोकें आस्तै इस पबितर कुरआन च आध्यात्मक त्रक्की करने दे साधन मजूद न। इस चाल्ती एह कुरआन त्रक्की दे श्रेष्ठ स्थान शा उप्पर सर्वश्रेष्ठ स्थान तक पुजाने आस्तै मार्ग-दर्शक ऐ।
3. इत्थै 'गैब' दा अर्थ अल्लाह ऐ जो निराकार ऐ पर हर ज'गा बराजमान ऐ। गैब शब्द फरिश्तें, क्यामत, सुर्ग ते नर्क आस्तै बी बरतोदा ऐ। भाव एह ऐ जे संयमी इनें सारियें गल्लें दी सचाई पर पूरा-पूरा ईमान रखदे न।

दित्ते दा ऐ ओहदे चा खर्च करदे रौहदे
न ॥4॥

ते जो तेरे पर नाज़ल कीता गेदा ऐ जां जो तेरे
शा पैहलें नाज़ल कीता गेआ हा, उस पर ईमान
आहन्दे न ते आखरत पर बी ओह यकीन रखदे
न ॥5॥

एह लोक (सच्चेँ गै) उस हदायत पर (कायम)
न जो उंदे रब्ब पासेआ (आई दी) ऐ ते इय्यै
लोक कामयाब होने आहले न ॥6॥

ऐसे लोक, जिनेँ कुफर कीता ऐ (ते) तेरा
उनेँगी डराना जां नेई डराना उंदे आस्तै बराबर
(असर पैदा करदा) ऐ (जिच्चर ओह इस
हालत गी नेई बदलन) ईमान नेई
आहनगन ॥7॥

अल्लाह नै उंदे दिलें पर ते उंदे कर्नेँ पर
मोहर लाई दित्ती दी ऐ ते उंदी अक्खीँ पर
पड़दा (पेदा) ऐ ते उंदे आस्तै इक बड्डा
अज़ाब (निश्चत) ऐ ॥8॥ (रुकू1/1)

ते किश लोक ऐसे बी हैन जो आखदे न जे
अस अल्लाह पर ते औने आहले दिनेँ पर
ईमान रक्खने आं, हालांके ओह ईमान कदें बी
नेई रखदे ॥9॥

ओह अल्लाह गी ते उनेँ लोकें गी जो ईमान
ल्याए दे न, धोखा देना चांहदे न, पर (असल
च) ओह अपने सिवा कुसै गी धोखा नेई
दिंदे - ते ओह समझदे नेई ॥10॥

وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ
وَمَا أُنزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۖ وَالْآخِرَةَ
هُمْ يُوقِنُونَ ﴿٥﴾

أُولَئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِنْ رَبِّهِمْ ۖ وَأُولَئِكَ
هُمْ الْمُفْلِحُونَ ﴿٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ
ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٧﴾

حَتَّمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ
وَعَلَىٰ أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۖ وَهُمْ
عَدَابٌ عَظِيمٌ ﴿٨﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٩﴾

يُخَذَعُونَ اللَّهُ وَالَّذِينَ أَمْنُوا
وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ
وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿١٠﴾

1. दिलें पर मोहर लगने दा अर्थ एह ऐ जे ओह ऐसे कटर बरोधी न जे सच्ची गल्ल उंदे दिलें च दाखल नेई होई सकदी ते नां गै कुफर उंदे दिलें चा बाहर निकली सकदा ऐ। कर्में दा फल ते अल्लाह पासेआ मिलदा ऐ। इस लेई मोहर लाने गी अल्लाह कर्नेँ संबधत कीता गेदा ऐ। अल्लाह कुसै पर अत्याचार नेई करदा, बल्के लोक आपूँ गै अपने बुरे कर्में कारण दंड दे भागी बनदे न।

उंदे दिलें च इक बमारी ही, पही अल्लाह नै उंदी बमारी गी (होर बी) बधाई¹ दिता ते उनेंगी इक दर्दनाक अजाब पुज्जा करदा ऐ, की जे ओह झूठ बोलदे होंदे हे ॥ 11 ॥

فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ ۖ فَآرَادَهُمُ اللَّهُ
مَرَضًا ۗ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ بِمَا كَانُوا
يَكْذِبُونَ ۝

ते जिसलै उनेंगी गलाया जा (जे) धरती² पर फसाद नेई करो, तां आखदे न, अस ते सिर्फ सुधार करने आह्ले आं ॥ 12 ॥

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ
قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ۝

(कन्न खोहलियै) सुनो! इय्यै लोक बे-शक्क फसाद करने आह्ले न पर ओह (इस सचाई गी) नेई समझदे ॥ 13 ॥

أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَكِن
لَّا يَشْعُرُونَ ۝

ते जिसलै उनेंगी गलाया जा जे (इस्सै चाल्ली) ईमान ल्याओ, जिस चाल्ली (दूए) लोक ईमान ल्याए न तां आखदे न जे केह अस (इस चाल्ली) ईमान आहनचै जिस चाल्ली बे-बकूफ (लोक) ईमान ल्याए न? याद रक्खो! (एह झूठ बोल्ला करदे न) ओह आपूं गै बे-बकूफ न पर (इस गल्ला गी) नेई जानदे ॥ 14 ॥

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ امْنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا
أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ السُّفَهَاءُ ۗ أَلَا إِنَّهُمْ
هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَكِن لَّا يَعْلَمُونَ ۝

ते जिसलै ओह उनें लोकें कन्नै मिलदे न, जो ईमान ल्याए दे न, तां आखी दिंदे न जे अस ते (इस रसूल गी) मन्नने आं, ते जिसलै ओह अपने सरदारों³ कन्नै एकांत च (कल्ले) मिलदे न तां गलाई दिंदे न जे अस सच्चें गै थुआड़े कन्नै आं अस ते सिर्फ (उनें मोमिनें कन्नै) मजाक करा करदे हे ॥ 15 ॥

وَإِذَا قَالُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا
خَلَّوْا إِلَىٰ شِيْطَانِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ
إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُونَ ۝

1. 'बधाई दिता' दा अर्थ एह ऐ जे अल्लाह नै बार-बार ऐसे चमत्कार दस्से जिंदे करी मुनाफिकक (दोगले) लोक मुसलमानें शा पैहलें शा बी ज्यादा डरन लगे ते ओह अपनी मुनाफिककत (दोगलेपन) च होर बी बधन लगे।
2. यानी देश ते संसार च।
3. मूल शब्द शतान दा मतलब मुनाफिकें दे ओह सरदार न जो आपूं सचाई शा दूर होई चुके दे न ते दूएँ गी बी बक्हाऽ करदे न।

अल्लाह उनेंगी (उंदे) मजाक दी स'जा देग ते उनेंगी अपनी सरकशियें (हंकार) च भटके दे गै छोड़ी देग ॥ 16 ॥

एह ओह लोक न जिनें हदायत गी छोड़ियै गुमराही गी अखत्यार करी लैता जिसदा नतीजा एह होआ जे नां ते उनेंगी संसारक लाह थहोआ ते नां उनें हदायत हासल कीती ॥ 17 ॥

उंदी हालत उस शख्स दी हालत आंगर ऐ जिसनै अगग¹ वाली पही जिसलै उस (अग्गी) नै उसदे आसे-पासे (दे अलाके) गी रोशन करी दित्ता तां अल्लाह उंदी रोशनी गी लेई गेआ ते उसनै उनेंगी (किसम-किसम दे) न्हें² च (ऐसी दशा च) छोड़ी दित्ता (जे) ओह उस चा (बची निकलने दा) रस्ता नेई दिक्खी सकदे ॥ 18 ॥

ओह बैहरे न, गूंगे न, अ'न्ने न, इस आस्तै ओह (सिद्धे रस्ते पासै) नेई परतोंगन ॥ 19 ॥

जां (उंदी हालत) उस बरखा आंगर ऐ जो (घनघोर घटा) बदलै चा (ब'रा करदी) होऐ (ऐसी बारश) जेह्दे कन्नै (केई किसमें दे) न्हरे ते गुड़को गुड़की ते बिजली (मिलको-मिलकी) होंदी ऐ ओह अपनी आँगलीं गी कड़कने दी ब'जा करी मौती शा डरदे कन्नै च पाई दिंदे न हालांके अल्लाह सारे मुन्करें गी तबाह करने आह्ला ऐ ॥ 20 ॥

اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الضَّلَالَةَ بِالْأَهْلِيِّ ۖ فَمَا رَبِحَتْ تِجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ۝

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا ۖ فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمٍ لَا يَبْصُرُونَ ۝

صُمُّ بَكْمٌ عَنِّي فَهُمْ لَا يَرِجِعُونَ ۝

أَوْ كَصَيْبٍ مِّنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمٌ ۖ وَرَعْدٌ وَبَرْقٌ ۚ يَجْعَلُونَ أَصَابِعَهُمْ فِيٓ أَذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ۗ وَاللَّهُ مُحِيطٌ بِالْكَافِرِينَ ۝

1. अरबी भाशा च 'नार' - अगग शब्द युद्ध आस्तै बी बरतेआ जंदा ऐ। इस लेई आयत दा भाव एह होआ जे मुनाफिकें, मुसलमानें गी हराने आस्तै मुन्करें कन्नै लड़ाई दित्ता, पर जिसलै युद्ध फैली गेआ तां नतीजा उलट निकलेआ। मुसलमान जीती गे ते अल्लाह नै मुनाफिकें गी ऐसी हालत च छोड़ी दित्ता जे उनेंगी इस उलझन चा निकलने दा कोई रस्ता नथा सुझदा ते ओह अ'न्नं आंगर तांह-तुआंह मारे-मारे फिरदे हे।
2. 'न्हें' शब्द दा प्रयोग इस गल्ला गी जाहूर करने आस्तै कौता गोदा ऐ जे सिर्फ बाहरी न्हरा गै नेई बल्के ओहदे अलावा होर बी नेकां मुश्कलां सामनै आई गेइयां हियां। पाप ते दुराचार कल्ले नेई रोहंदे बल्के इक पाप दूप पाप गी ते इक मसीबत दूई मसीबत गी खिचदी ऐ।

करीब (ममकन) ऐ जे बिजली उंदी बीनाई (अक्खीं दी सोझ) गी उचकियै (झमकारे कन्ने) लेई जा। जिसलै बी ओह उंदे पर चमकदी ऐ तां ओह उस (दी रोशनी) च चलन लगदे न ते जिसलै उंदे पर न्हारा करी दिंदी ऐ तां खडोई जंदे न ते जेकर अल्लाह चांहादा तां सच्चें गै उंदी सुनने दी शक्ति ते उंदी अक्खीं दी सोझ नश्ट करी दिंदा। अल्लाह हर (उस) गल्लै पर (जिसदा ओह इरादा करै) सच्चें गै पूरी चाल्ली समथ¹ ऐ ॥ 21 ॥ (रुकू 2/2)

हे लोको ! अपने (उस) रब्ब दी अबादत करो जिसनै तुसंगी (बी) उनेंगी (बी) जो तुंदे शा पैहलें होई गुजरे दे न, पैदा कीते दा ऐ, तां जे तुस (हर चाल्ली दी आपतें शा) बचो ॥ 22 ॥

(ऊरे ऐ) जिसनै थुआड़े आस्तै धरती गी बिस्तरे ते गासै गी छत ते तौरै पर बनाए दा ऐ। ते बदलें चा पानी उतारे दा ऐ, फही उस (पानी) राहें मेवें दे रूपै च थुआड़े आस्तै रिशक पैदा कीते दा ऐ। इस आस्तै तुस समझदे-बुझदे होई अल्लाह दे शरीक नेई बनाओ ॥ 23 ॥

ते जेकर इस (कलाम) दी ब'जा करी, जो असैं अपने बंदे पर उतारे दा ऐ, तुस किसै (किसम दे) शक्क च (पेई गेदे) ओ तां जेकर तुस सच्चे ओ तां एहदे आंगर इक सूर: लेई आओ ते अपने अल्लाह दे सिवा मददगारें गी (बी अपनी मदद आस्तै) बुलाई लैओ ॥ 24 ॥

ते जेकर तुसैं ऐसा नेई कीता तां तुस कदें बी (ऐसा) नेई करी सकगे ओ तां उस अगगी शा बचो जिस दा बालन आदमी ते पत्थर² न—ओह मुन्करें आस्तै त्यार कीती गेदी ऐ ॥ 25 ॥

يَكَادُ الْبَرُّ يُخْطِفُ أَبْصَارَهُمْ كَمَا
أَصَاءَ لَهُمْ مَشَاؤُهُ وَإِذَا أَظْلَمَ
عَلَيْهِمْ قَامُوا وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ
بِسْمِعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ إِنَّ اللَّهَ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢١﴾

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ
وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٢٢﴾

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ
بِنَاءً ۗ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ
مِنَ الشَّجَرِ رِزْقًا لَكُمْ ۖ فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ
أَنْدَادًا وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٣﴾

وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا
فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِثْلِهِ ۚ وَادْعُوا
شُهَدَاءَكُمْ ۖ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٢٤﴾

فَإِنْ لَمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا
النَّارَ الَّتِي وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۗ
أَعَدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ﴿٢٥﴾

1. इस आयत दा मतलब एह ऐ जे अल्लाह जिस कम्मै गी करने दा इरादा करी लैंदा ऐ तां सच्चें गै उसी पूरी चाल्ली पूरा करने बारें अधिकार, शक्ति ते समर्थ रखदा ऐ।
2. इत्थें पत्थर दा अर्थ ओह मूर्तियां न जिंदे च उंदे पुजारी ईश्वरी गुण मनदे हे। सच्चें गै जड़-पदार्थ होने करी पत्थरें गी ते कोई दंड नेई मिलाग, पर अपने आराध्य ते इश्ट देवतें गी नरकें च पैदा दिक्खियै उनें लोकें गी दुख होग जो उनेंगी उपास्य मनदे हे। जेकर पत्थर कन्ने सधारण पत्थर समझेआ जा तां इसदा अर्थ पत्थरें दा कोला होग जेहेदे कन्ने अग होर बी तेज होदी ऐ।

ते तू उनें लोकें गी, जो ईमान ल्याए दे न ते उनें नेक कर्म कीते दे न, खुशखबरी दे, उंदे आस्तै (ऐसे) बाग न जिंदे हेठ नैहरा¹ बगदियां न। जिसलै बी उंदे (बागें दे) फलें चा किश रिशक उनेंगी दिता जाग, ओह आखडन जे एह ते ऊए (रिशक) ऐ जो असेंगी इस शा पैहलें दिता गोआ हा ते उंदे कश ओह (रिशक) मिलदा-जुलदा आहनेआ जाग ते उंदे आस्तै उनें (बागें च) पवित्तर जोड़े² होंगन ते ओह उंदे (बागें) च म्हेशां बास करडन ॥ 26 ॥

अल्लाह कदें बी कोई गल्ल दस्सने शा नेई झकदा, भामें ओह गल्ल मच्छरै बरोबर होऐ जां उस शा बी बदध³। पही जो लोक ईमान रखदे न ओह (ते) सेही करी जंदे न जे ओह उंदे रब्ब पासेआ बिल्कुल सच्ची (गल्ल) ऐ ते जेहके लोक मुन्कर होऐ, ओह आखदे न जे (आखर) अल्लाह दा इस गल्ला गी जाहर करने दा मन्शा केह⁴ ऐ? (असल गल्ल एह ऐ जे) ओह मते लोकें गी इस कुरआन राहें गुमराह करार दिंदा ऐ ते मते सारे लोकें गी इस कुरआन राहें हदायत दिंदा ऐ ते ओह इस राहें उनें ना-फरमायें दे अलावा कुसै गी गुमराह करार नेई दिंदा ॥ 27 ॥

وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرٍ رِزْقًا قَالُوا هَذَا الَّذِي رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ وَأَنْتَابِهِ مُتَسَابِهًا وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٦﴾

إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِي أَنْ يَضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوضَةً فَمَا فَوْقَهَا فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَيَقُولُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا يُضِلُّ بِهِ كَثِيرًا وَيَهْدِي بِهِ كَثِيرًا وَمَا يُضِلُّ بِهِ إِلَّا الْفَاسِقِينَ ﴿٢٧﴾

1. इस दा एह अर्थ ऐ जे ओह नैहरां उनें बागें कन्नै सरबंधत होंगन ते मोमियें दे अधीन उंदी गै सम्पत्ति होग।
2. मूल शब्द 'अज्बाज' दा अर्थ ऐसे साथी न जिंदे कन्नै मिलियें उंदे विकास ते सारे सुखें दी पूर्ती होग। पवित्तर कुरआन शा पता लगदा ऐ जे अल्लाह दे सिवा हर इक चीज सभावक रूपे च अपनी जां जोड़े दी मुत्हाज ऐ। इस नियम मताबक सुरगबासी बी जोड़े दे मुत्हाज होंगन। भामें ओह मड़द होन ते भां जनानियां।
3. मूल शब्द 'फ़ौक' दा अर्थ अरबी भाशा च दौनीं चाल्तीं कन्नै होंदा ऐ। जेकर बड़ेआई च तुलना होऐ तां इस शब्द दा अर्थ "बौहत बड्डा" होई सकदा ऐ ते जेकर छोटे होने दी तुलना च होऐ तां एह शब्द "बौहत छोटा" होने दा अर्थ देई सकदा ऐ। इस आस्तै इस थाहरा पर आयत दे दमें अर्थ कीते जाई सकदे न। एह बी जे मच्छरै शा बड्डो गल्ल जां एह जे मच्छरै शा बी निक्की गल्ल। (मुफरदात-ए-रागिब)

जो अल्लाह कनै कीते गे ऐहद (प्रण) गी उसदे पक्का करने दे बा'द त्रोज़ी दिंदे न ते उस चीजै गी जिसी मलाने दा अल्लाह नै हुकम दित्ते दा ऐ, कट्टी दिंदे न ते धरती पर फसाद करदे न, ऊऐ लोक घाटा खाने आहले होंदे न ॥ 28 ॥

الَّذِينَ يَتَّقُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُؤْصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۗ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٢٨﴾

(हे लोको!) तुस किस चाल्ली अल्लाह (दी गल्लें) दा इन्कार करदे ओ? हालांकि तुस बे-जान हे। फही उसनै तुसंगी जानदार बनाया, फही (इक दिन औग जे) ओह तुसें गी मारग फही तुसंगी जींदा¹ करग जिसदे बा'द तुसंगी ओहदे कश परताया जाग ॥ 29 ॥

كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنْتُمْ أَمْوَاتًا فَأَحْيَاكُمْ ۖ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٩﴾

ओह (खुदा) ऊऐ (ते) ऐ जिसने उनें सारी चीजें गी जो धरती च न थुआड़े (फायदे) आस्तै पैदा कीता। फही ओह गासें पासै ध्यान मगन होआ ते उनेंगी मकम्मल (पूरा) बनाई दिता²-सत्त गास, ते ओह हर इक गल्लै (दी सचाई) गी भलेआं जानदा ऐ ॥ 30 ॥ (स्कू 3/3)

هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَوَاتٍ ۗ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣٠﴾

ते (हे इन्सान! तूं उस बेले गी याद कर) जिसलै तेरे रब्ब नै फरिशतें गी गलाया जे अ'ऊं धरती पर इक खलीफा³ बनाने आहला

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ

- हज़रत मुहम्मद मुस्ताफा सल्लल्लै अल्लै अलै इन्कार करने आहले लोक मरने दे बा'द जींदा होने ते कर्म दा फल भोगने पर विश्वास नथे रखदे। उंदे इस विचार दा खंडन इस आयत च कीता गेदा ऐ जे दिक्खो! अल्लाह नै गै तुसंगी जिंदगी दिती, ऊऐ तुसंगी इस लौकक जीवन दे बा'द मौत देग। आखो जे ईश सत्ता दे एह दो प्रमाण तुस परखी चुके दे ओ। इस संसारक जीवन दे बा'द ओह तुसंगी फही जीवन देग। इसदे बा'द तुस अपने-अपने कर्म दा लेखा लैने आस्तै अल्लाह दे सामनै पेश कीते जागे ओ ते तुसंगी अपने-अपने कर्म दा प्रतिफल जरूर मिलग। इस आयत थमां आवागमन दा सिद्धांत सिद्ध नेई होंदा। इत्थें सिर्फ च'ऊं परिवर्तनें दा बर्णन ऐ जिसलै जे आवागमन दे सिद्धांत मताबक केई लक्ख जूनें च जाना होंदा ऐ।
- मूल शब्द स्व्वा दा अर्थ ऐ मकम्मल यानी पूरे रूपै च बनाई दिता। इसदा भावार्थ एह ऐ जे कुसै चीजै गी इस चाल्ली बनाना जे उस च सारी जरूरतें दा पूरा-पूरा ध्यान रक्खेआ गेदा ऐ।
- खलीफा जां अधिनायक उसी आखदे न जो शासक दा स्थान हासल करने आहला होऐ। इस आस्तै जिसलै अल्लाह नै गलाया जे अ'ऊं धरती पर अपना खलीफा बनाने आहला आं तां फरिशतें गलाया जे इस दी जरूरत ते उसलै होंदी ऐ जिसलै धरती पर ऐसे लोक पैदा करने दा निश्चा होंदा ऐ जो आपस च लड़ी-भिड़ी सकदे होन ते इक-दूए दा खून बगाई सकदे होन। इस लेई फरिशतें दा एह गलाना, जे क्या तूं धरती पर उपद्रव फलाने ते खून-खराबा करने आहले लोक पैदा करगा, नां ते अल्लाह पर कोई आरोप ऐ ते नां हज़रत आदम पर अपनी बड़ेआई सिद्ध करने आस्तै ऐ बल्के एह गल्ल सिर्फ मानव जाति चा किश लोकें दी कमजोरी दस्सने आस्तै ऐ जिंदे पर हज़रत आदम नै शासन करना हा।

आं। (इस पर) उन्हें गलाया जे क्या तू उस पर ऐसे शख्स बी पैदा करगा जो ओहदे पर फसाद करडन ते खून बगाडन ते अस (ते ओह आं जो) तेरी हम्द (स्तुति) दे कनै-कनै तेरी पवित्रता दा गुणगान (बी) करने आं ते तेरे च सारी बड़ेआइयें दे होने दा इकारार करने आं (इस पर अल्लाह नै) फरमाया अ'ऊं सच्चें गै ओह किश जानना जो तुस नेई जानदे ॥ 31 ॥

فِي الْأَرْضِ حَيِّفَةً ۗ قَالُوا أَتَجْعَلُ فِيهَا
مَنْ يُسِفُّ فِيهَا وَ يَسْفِكُ الدِّمَاءَ
وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ
قَالَ إِنْ أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝

ते (अल्लाह नै) आदम गी सब नांस सखाए पही (जिंदे ओह नांस¹ हे) उनेंगी फरिश्तें दे सामनै पेश करियै फरमाया जे जेकर तुस सच्ची गल्ल आखा करदे ओ तां तुस मिगी उंदे नांस दस्सो² ॥ 32 ॥

وَعَلَّمَ آدَمَ الْأَسْمَاءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ
عَلَى الْمَلَائِكَةِ فَقَالَ أَنْبِئُونِي بِأَسْمَاءِ
هَؤُلَاءِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

उनें गलाया तू बे-ऐब ऐं, जे (किश) तोह असेंगी सखाया ऐ उसदे सिवा असेंगी किसै

قَالُوا سُبْحَانَكَ لَا عِلْمَ لَنَا إِلَّا مَا

1. इस आयत च नांए दा अर्थ ईश्वर दे गुण ऐ। जिंदा असल ज्ञान अल्लाह दे सखाने कनै गै होई सकदा ऐ। हजरत आदम दा अवतार धर्म दी स्थापना करने ते अल्लाह ते मानव जाति च संबंध स्थापत करने आस्तै होए दा हा। इस लेई एह जरूरी हा जे उनेंगी ईश्वरी गुण सखाए जंदे तां जे उंदे मनने आहले उनें गुणें राहें अल्लाह दी पन्धान करी सकदे ते ओहदे कनै अपना संबंध स्थापत करी सकदे। जेकर एह नांस (गुण) नेई सखाए जंदे तां उंदे मनने आहलें दे नास्तक ते गुमराह होने दा डर रौहदा। इसदा इक अर्थ एह बी होई सकदा ऐ जे मानव जाति दे सभ्य होने दी अवस्था च उंदे आस्तै इक भाशा दी जरूरत ही। अल्लाह नै आदम गी भाशा दे सिद्धांत सखाए जिंदे अधार पर आदम नै भाशा-विज्ञान गी जारी कीता। इयां सेही होंदा ऐ जे ओह भाशा अरबी ही, की जे हर चीजै दा नांस उसदी बशेशतें ते उसदे गुणें दे अधार पर रक्खेआ गेदा हा ते एह बशेशता सिर्फ अरबी भाशा च गै मजूद ऐ।
 2. फरिश्तें गी हजरत आदम दे खलीफा (अधिनायक) बनाए जाने पर इस आस्तै र्हानगी ही जे ओहदे करी उपद्रव ते खून-खराबे दी संभावना ही। इस लेई अल्लाह नै फरिश्तें गी भविष्य च प्रकट होने आहले नेक कामिल लोकें गी कश्फ (देव ज्ञान) राहें दस्सी दिता ते ऐसे लोकें गी बी कश्फ राहें दस्सी दिता जो नास्तिकता ते इन्कार दी द्रिष्टी कनै कामिल बनने आहले व्यक्ति बी हे। इस लेई अल्लाह नै फरिश्तें शा पुच्छेआ जे जेकर थुआड़ी गल्ल ठीक ऐ तां उंदे नांस दस्सो यानी अल्लाह दी परम किरपा ते प्रकोप दे गुण जिस चाल्ली उनें लोकें राहें प्रकट होने आहले न। क्या उंदा थ्यौरा तुस दूऐं गी दस्सी सकदे ओ?
- इस आयत दा इक होर अर्थ एह बी होई सकदा ऐ जे हजरत आदम दी संतान चा जो लोक नेकी च कामिल होने आहले हे उनेंगी सामनै रक्खियै पुच्छेआ जे क्या तुस इंदे गुणें ते इंदी बशेशतें गी बस्तार कनै दस्सी सकदे ओ? इसदा अर्थ एह हा जे अल्लाह एह दस्सना चांहदा हा जे आदम राहें जो लोक पैदा होंगन ओह उपद्रव फलाने आहले जां खून-खराबा करने आहले नेई होंगन बल्के इंदे बैरी गै झगडा करियै लड़ाई दे हालात पैदा करने आहले होंगन यानी खून बगाने आहले हजरत आदम दे बैरी होंगन इस लेई ऊऐ अपराधी होंगन।

किसम दा इलम नेई ऐ। यकीनन तूं गै कामिल इलम आहला ते हर इक गल्लै च हिवमत गी ध्यान च रक्खने आहला ऐं ॥ 33 ॥

(इस पर अल्लाह नै) गलाया—हे आदम' इनें फरिश्तें गी इंदे नां¹ दस्स। फही जिसलै उस (यानी आदम) नै उनेंगी उंदे नां⁵ दस्से (तां) गलाया, क्या नै तुसेंगी नथा गलाया जे अ'ऊं सच्चें गै गासें ते धरती च छप्पी दियां गल्लां जानना आं ते अ'ऊं (उसी बी) जानना आं जो तुस जाहर करदे ओ ते (उसी बी) जो तुस छपालदे ओ ॥ 34 ॥

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै असें फरिश्तें गी गलाया हा जे आदम दी फरमांबरदारी² करो। इस पर उनें फरमांबरदारी ते कीती मगर इब्लीस³ (नै नेई कीती उस) नै इन्कार करी दिता ते धमंड कीता ते ओह (शुरू थमां गै) मुन्करें बिच्चा हा ॥ 35 ॥

عَلَّمْتَنَا ۙ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝

قَالَ يَا آدَمُ أَنْبِئْهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ ۚ فَلَمَّا أَنْبَأَهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ ۙ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۙ وَ أَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ۝

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۙ أَبَىٰ وَاسْتَكْبَرَ ۙ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۝

- हजरत आदम नै उनें चीजे दे गुण गनाई दिते जो उसी दस्सियां गेदियां हियां तां अल्लाह नै फरिश्तें गी गलाया जे क्या नै तुंदे कनै पैहलें गै नथा गलाई दिता जे मिगी उनें गल्लें दा बी ज्ञान (थौह) ऐ जो थुआड़े दिलें च न ते उनें गल्लें दा बी जो तुस जाहर करदे ओ। थुआड़ा एह बचार हा जे आदम लोकें पर किस चाल्ली व्हमत करी सकगा? जिसलै जे उसी लोकें दे गुणें दा पता गै नेई, पर हून तुसेंगी पता लगगी गेओ ऐ जे में इंदे अंदर कुदरत (प्रकृति) दे गुणें दा ज्ञान हासल करने दी शक्ति पाई दिती ऐ। इस आस्तै उसने पदार्थें दे गुण दस्सी दिते न। इस कनै साबत होई गेओ ऐ जे मेरा गै ज्ञान ठीक हा थुआड़ा नेई।
- इत्थें मूल शब्द सज्द: ऐ। अरबी भाशा च इस दा अर्थ ऐ धरती पर मत्था रक्खियै अल्लाह दी स्तुति करना। इसदे सिवा इसदा इक अर्थ आज्ञाकारी बनना यानी फरमांबरदारी करना बी ऐ। (अक्रब) फरिश्तें गी हजरत आदम दे सामने सजदा करे दा इर्थे अर्थ हा जे उनेंगी गलाया गेओ हा जे हजरत आदम दे आज्ञाकारी बनी। इसदा दूओ अर्थ एह बी ऐ जे हजरत आदम दे जनम करी अल्लाह गी सजदा करो। भाव एह ऐ जे अल्लाह नै इक कामिल वजूद (विभूती) दी रचना कीती ऐ। इसदे शुभ जनम पर अल्लाह दी मैहमा दस्सने आस्तै अल्लाह गी सजदा करो।
- इब्लीस दा अर्थ ऐ - (क) ओह शख्स जो अल्लाह दी किरपा कनै नराश होई चुके दा होऐ। (ख) ओह शख्स जेहदे शा परोपकार दी आशा घट्ट होई गेदी होऐ। (ग) ऐसा शख्स जो अपनी समस्सेओ सुलझाने च असमर्थ होऐ ते जिसी कामयाबी दा कोई रस्ता लब्धा नेई करदा होऐ। (घ) ओह शख्स जिसदा धीरज मुक्की गेदा होऐ ते ओह संताप च उलझे दा होऐ। (अक्रब) पवित्र कुरआन च इब्लीस दा नां⁵ जाह्रें ज'गें पर आए दा ऐ। जित्थें हजरत आदम गी सजदा करने दा उल्लेख ऐ, इब्लीस शब्द बरतेओ गेदा ऐ, पर जित्थें आदम गी गुमराह करने दा जिकर ऐ उत्यें शतान शब्द बरतेओ गेदा ऐ, इब्लीस नेई। इस चाल्ली कुरआन मजीद नै 'इब्लीस' ते 'शतान' दोनीं शब्दें दे प्रयोग च खास फर्क रक्खे दा ऐ। इब्लीस उसी आक्खेओ गेदा ऐ जो फरिश्तें आस्तै बुराई दा प्रेरक ऐ ते शतान इक सधारण नां⁵ ऐ। इब्लीस गी बी शतान आक्खी सकने आं ते उनें सारे लोकें गी बी जो इब्लीस दे नमाइंदे न! ओह बुरे कर्मों दी राह दस्सने आहले न ते ओह नबियें ते उंदी शिक्षा-दीक्षा दा बरोध करने आहले न।

ते असें (आदम गी) गलाया (जे) हे आदम! तूं ते तेरी घरे-आहली सुगै¹ च र'वो ते एहदे च जित्थुआं चाहो रज्जियै खाओ, पर इस (फलाने) बूहटै² कश नेई जायो। जे गे तां तुस जालमें चा होई जागे ओ ॥ 36 ॥

ते (इस दे बा'द इय्यां होआ जे) शतान नै उस (बूहटे) राहें उनें (दौनीं) गी (उंदे थाहरै थमां) हटाई दित्ता ते (इस चाल्ली) उसनै उनेंगी उस (हालत) चा, जेहदे च ओह है हे, कड्ढी दित्ता ते असें (उनेंगी) गलाया जे (इत्थुआं) निकली जाओ। तुंदे चा किश केइयें (इक-दूए) दे दुश्मन न ते (याद रक्खो जे) थुआड़े आस्तै इक (निश्चत) समे तक इससै धरती पर रौहना ते जिंदगी दा समान (लिखेआ गेदा) ऐ ॥ 37 ॥

इसदे बा'द आदम नै अपने रब्ब शा किश (प्रार्थना सरबंधी) कलमे (गल्लां) सिक्खे (ते उंदे मताबक दुआऽ कीती) तां उसनै (अल्लाह नै) ओहदे पासै (फही किरपा दी द्रिस्टी कनै) दिक्खेआ। यकीनन ऊऐ (बंदें दी मसीबत बेलै) बड़ी गै गौर करने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 38 ॥

(उसलै) असें गलाया (जाओ) सारे-दे सारे इस चा निकली जाओ³ (ते याद रक्खो जे) जेकर फही कदें थुआड़े कश मेरे पासैआ कोई हदायत आवै तां जो लोक मेरी हदायत⁴ दी

وَقَلْنَا يَا آدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ
وَكَلاَمِنَهَا رَعَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا
هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ۝

فَازَلَهُمَا الشَّيْطَانُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا
كَانَا فِيهِ وَقَلْنَا اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ
لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ
مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ۝

فَتَلَقَىٰ آدَمُ مِنْ رَبِّهِ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ۖ
إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝

قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ
وَعِيٌّ هُدًى فَمَنِ تَّبِعَ هُدَاىَ فَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝

1. अरबी भाशा च बागें ते बूहटें आहली छां-दार सुखदाई धरती गी जन्नत (सुगै) आखदे न। इस थाहरै पर मरने दे बा'द मिलने आहली जन्नत सुगै अभीष्ट नई ऐ, की जे उस सुगै चा सुगैबासियें गी कदें बी नई कड्ढेआ जाग। (सूर : अल्-हिज्र आयत-48) पर उप्पर दस्से गेदे सुगै चा हजरत आदम गी निकलना पेआ हा। इक खोज मताबक एह इशक दा प्रांत सिद्ध होआ ऐ जित्थुआं हजरत आदम गी निकलना पेआ हा।
2. इस थाहरै पर मूल शब्द शजर: दा अर्थ बूहटा ते बंश ऐ। अरबी भाशा च एहदे आस्तै शजराए-नसब बरतोंदा ऐ। ते आयत दा अर्थ एह ऐ जे शतान ते ओहदी संतान कश नई जाओ।
3. अरबी मुहावरे मताबक इस फिकरे दा जे 'तुस सारे दे सारे इस चा निकली जाओ' एह भाव होंदा ऐ जे तुस सारे दे सारे इस ज'गा थमां उठी जाओ ते दूऐ थाहर जाइयै र'वो। इत्थें हजरत आदम दे हिजरत करने यानी अपना देस छोड़ियै जाने पासै संकेत मिलदा ऐ।
4. हदायत दा अर्थ राह दस्सना ते राह दस्सने आहला होंदा ऐ। इत्थें इनें दौनीं अर्थे पासै संकेत मिलदा ऐ।

पैरवी करडन उनेंगी नां ते कोई (भविष्य दा)
खौफ होग ते नां (होई बीती दी कुसै कुताही
पर) उनेंगी पछतावा होग ॥ 39 ॥

ते जो (लोक) कुफर करडन ते साढ़ी
आयतें गी झूठलांगन ओह (जरूर) नरकै
(च पौने) आहले न। ओह उस च चिरे
तक बास करडन ॥ 40 ॥ (रुकू 4/4)

हे बनी इस्राईल! मेरे उस स्थान गी चेता
करो, जो अ'ऊं तुंदे पर करी चुके दा आं ते
तुसैं मेरे कनै जो ऐहद (बा'यदा) कीता हा
(उसगी) पूरा करो। उसलै, जो ऐहद
(बा'यदा) में थुआड़े कनै कीता हा, उसी
पूरा करडते मेरे (गै) कशा डरो। पही (अ'ऊं
आखना जे) मेरे (गै) कशा डरो ॥ 41 ॥

ते इस (कलाम) पर ईमान ल्याओ जेहड़ा में
(हून) उतारेआ ऐ (ते) जेहड़ा उस (कलाम)
गी जो थुआड़े कश ऐ सच्चा करने आहला ऐ
ते तुस इस दे (सारें शा) पैहले इन्कारी नेई
बनो, ते मेरी आयतें दे बदले च थोढ़ी? कीमत
नेई लैओ। ते मेरे (गै) कशा (डरो) पही
(अ'ऊं आखना जे) मेरे (गै) कशा डरो ॥ 42 ॥

ते जानदे-बुझदे होई सचाई गी झूठ कनै नेई
मलाओ ते नां सचाई गी (जानदे-बुझदे होई)
छपालो ॥ 43 ॥

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٤٠﴾

يٰۤاَيُّهَا اِسْرَائِيْلُ اذْكُرْ وَاَنْعَمْتَ اِلَيْ
اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوا بِعَهْدِيْ اَوْفِ
بِعَهْدِكُمْ وَاِيَّاىْ فَاَرْهَبُوْنَ ﴿٤١﴾

وَاٰمِنُوْا بِمَا اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ
وَلَا تَكْفُرُوْا اَوَّلَ كٰفِرِيْهٖ وَلَا تَشْتَرُوْا
بِآيٰتِيْ ثَمٰنًا قَلِيْلًا وَاِيَّاىْ فَاَتَّقُوْنَ ﴿٤٢﴾

وَلَا تَلْسُوْا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْا
الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٣﴾

- हजरत याकूब दा पर्यायवाची नांS इस्राईल ऐ। इब्रानी भाषा दे शब्द कोश "An-alytical Helrew and chole" च लिखे दा ऐ जे इस्राईल शब्द याकूब दे पर्यायवाची नांS दे अल्लावा उंदी संतान आसै बी बरतेआ जंदा ऐ। पवित्र कुरआन च बनी इस्राईल शब्द अड़ताली ज'गें पर ते यहूद शब्द नौ ज'गें पर बरतेआ गेदा ऐ। बनी इस्राईल शब्द जाति पासै संकेत करने लेई ते यहूद शब्द धर्म पासै संकेत करने लेई बरतेआ गेदा ऐ। यहूद शब्द दा बर्णन इक प्रसिद्ध यहूदी विद्वान 'जोसेप्स' नै एह कीते दा ऐ जे- " जो शख्स धर्म बदलियै यहूदी रीति-रवाजें गी अपनाई लै ते यहूदी विधान दा अनुसरण करै, ओह यहूदी ऐ। (जयूस इन्साइक्लोपीडिया भाग 10 सफा 220 ते निर्गमन 12 : 48. 49)
- थोढ़ी जॉ घट्ट कीमत दा एह अर्थ ऐ जे अल्लाह दियॉ गल्लां हर थाहर धर्म न। उंदे बदले च संसारक माया नेई अपनाओ, की जे माया धर्म दे सामने बिल्कुल तुच्छ चीज ऐ।

ते नमाज़ गी कायम रखो ते ज़कात देओ, ते खुदा दी सच्ची उपासना करने आहल्लें कनै मिलिये खुदा दी सच्ची उपासना करो ॥ 44 ॥

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَارْكَعُوا
مَعَ الرُّكَّعِينَ ①

क्या तुस (दूए) लोकेँ गी (ते) नेकी (करने) आस्तै आखदे ओ ते अपने-आपै गी भुल्ली जंदे ओ? हालांके तुस कताब (यानी तौरात) पढ़दे ओ-फही (बी) क्या तुस अकली शा कम्म नेई लेंदे? ॥ 45 ॥

أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ
أَنْفُسَكُمْ وَأَنْتُمْ تَتْلُونَ الْكِتَابَ ①
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ②

ते सबर ते दुआऽ राहें (अल्लाह शा) मदद मंगो ते बे-शक्क लहीमगी अखत्यार करने आहल्लें दे सिवा (दूए लोकेँ आस्तै) एह (गल्ल) मुश्कल ऐ ॥ 46 ॥

وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ ①
وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخَاشِعِينَ ②

ओह (लहीम लोक) जो (इस गल्ला पर) यकीन रखदे न जे ओह अपने रब्ब कनै मिलने आहले न ते इस गल्ला पर बी जे ओह उससे कश परतोइयै जाने आहले न ॥ 47 ॥ (रुकू 5/5)

الَّذِينَ يَطْمَئِنُّونَ أَنَّهُمْ مُلْقُوا رَبَّهُمْ
وَإِنَّهُمْ إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ①
ع ②

हे बनी इस्राईल! मेरे उस स्थान गी जो अ'ऊं तुंदे पर करी चुके दा आं, याद करो। ते (उस स्थान गी बी) जे मैं तुसेँगी सारे ज्हाँनें पर फ़ज़ीलत यानी प्रधानता दिती ही ॥ 48 ॥

يَنفَى إِسْرَائِيلَ أَذْكَرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي
أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى
الْعَالَمِينَ ①

ते उस दिनेँ शा डरो जे (जिस दिन) कोई शख्स दूए शख्स दा स्थान नेई लेई सकग ते नां ओहदे पासेआ कोई सफारश मन्ज़ूर कीती जाग ते नां ओहदे शा (किसै किसिम दा) मुआबजा (बदला) कबूल कीता जाग ते नां उंदी मदद कीती जाग ॥ 49 ॥

وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْرِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ
شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَلَا يُؤْخَذُ
مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ①

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै असेँ तुसेँगी फ़िरऔन दी कौम शा उस हालती च मुक्ति दुआई जे ओह तुसेँगी सख्त अज़ाब देआ करदी ही, थुआड़े जागतेँ दा खून करी दिंदी ही ते थुआड़ियें जनानियें गी जींदा रखदी ही ते थुआड़े रब्ब पासेआ इस (गल्ला) च (थुआड़े आस्तै) इक बड़ी अजमैश ही ॥ 50 ॥

وَإِذْ نَجَّيْنَاكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ
يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ بِدَيُّحُونَ
أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي
ذُرِّيَّتِكُمْ بَلَاءٌ مِنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ①

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै असें थुआड़े आस्तै समुंदर फाड़ेआ। पही असें तुसेंगी छुटकारा दुआया ते थुआड़ी नजरें सामनै फिरऔन दी कौम गी गरक करी दित्ता ॥ 51 ॥

وَإِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَأَنْجَبْنٰكُمْ وَأَغْرَقْنَا
أَلَ فِرْعَوْنَ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ﴿٥١﴾

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै असें मूसा कनै चाली रातें दा बा'यदा कीता। पही तुसें उसदे (चली जाने) परैत जालम बनिये बच्चे गी उपास्य बनाई लैता ॥ 52 ॥

وَإِذْ وَعَدْنَا مُوسَىٰ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ثُمَّ
الْحَدَّثْنَاهُ الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ﴿٥٢﴾

फी असें इस दे बा'द (बी) तुसेंगी माफ करी दित्ता तां जे तुस शुकरगजार बनो ॥ 53 ॥

ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ﴿٥٣﴾

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै असें मूसा गी कताब (यानी तौरात) ते फुक्रान (यानी चमत्कार) दिते तां जे तुस हदायत हासल करो ॥ 54 ॥

وَإِذْ آتَيْنَا مُوسَىٰ الْكِتَابَ وَالْفُرْقَانَ
لَعَلَّكُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٥٤﴾

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै मूसा नै अपनी कौम गी गलाया जे हे मेरी कौम (दे लोको!) तुसें बच्चे गी (उपास्य) बनाइये सच्चें गै अपनी जानें (अपने) उप्पर जुलम कीता ऐ इस आस्तै तुस अपने पैदा करने आहले अमर्गे झुको, ते हर शख्स² अपने आपै गी कतल करी देऐ। एह गल्ल थुआड़े पैदा करने आहले दे लागै (यानी ओहदी नजरें च)

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يُقَوْمِ إِنَّمَا
ظَلَمْتُمْ أَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ
فَتُوبُوا إِلَىٰ بَارِيكُمْ فَاقْتُلُوا
أَنْفُسَكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ
بَارِيكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ إِنَّهُ هُوَ
التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٥٥﴾

1. उस बेले जुआर-बाटे कारण समुंदरें दा पानी पिच्छें हटी गेआ ते हजरत मूसा ते उंदे साथी समुंदरें दे पार होई गे, पर फिरऔन दी सेना दे औने पर जुआर-बाटे करी समुंदर बधने दा समां आई गेआ। इसलेई ओह डुब्बी गे। असल च जुआर-बाटा अल्लाह दे निजम दे मताबक औंदा ऐ ते अल्लाह गै उस बेले हजरत मूसा ते फिरऔन गी समुंदरें कड़े लेई गेआ हा जिसलै जे जुआर-बाटा दा प्रभाउ अल्लाह दी इच्छा मताबक फिरऔन ते हजरत मूसा पर पौने आहला हा। इस आस्तै अल्लाह नै गलाया जे असें समुंदरें गी पाड़ियै तुसेंगी छुटकारा दुआया।
2. तौरात शा पता लगदा ऐ जे यहूदिये गी एह आदेश दित्ता गेआ हा जे हर भाउ अपने भाउ दा, हर मित्र अपने मित्र दा ते हर गुआंडी अपने गुआंडी दा कतल करै। बाइबिल दे मताबक उस रोज त्रै प्हार लोकें दा खून होआ। (निर्गमन 32 : 27 - 28) पर तौरात दी शिक्षा मूजब कुसै शख्स दी हत्या करना, सिवाए इसदे जे उस शख्स नै कुसै शख्स दी हत्या कीती दे होऐ, बिल्कुल र्हाम ऐ। इस लेई एह अर्थ ठीक नैई। इत्थें शाब्दिक अर्थ आत्महत्या बी अभीष्ट नैई ऐ। एह सारी घटना इक रूपक ऐ ते भाव एह ऐ जे हर शख्स अपने अहंकार ते बिशे-बासनें दा संयम ते सदाचार राहें खून करै।

थुआड़े हक्क च बौहत अच्छी ऐ (जिसलै तुसें गलाया तुसें ऐसा करी लैता) उसलै उसनै थुआड़े पासै किरपा दिश्टी कनै ध्यान दिता। ओह सच्चेन गै (अपने बंदे दा) बौहत ध्यान करने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 55 ॥

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै तुसें गलाया हा जे हे मूसा! अस तेरी गल्ल कदे बी नेई मनगे जां तक अस अल्लाह गी आमने-सामने नेई दिक्खी लैदे, इस पर तुसेंगी इक घातक अजाब नै पकड़ी लैता ते तुस (अपनी अक्खी अपने कर्मे दा अन्जाम) दिक्खा करदे हे ॥ 56 ॥

पही असें थुआड़ी हलाकत (तबाही) दे बा'द तुसेंगी इस आस्तै चुक्केआ' जे तुस शुकरगजार बनो ॥ 57 ॥

ते असें थुआड़े पर बदले दी छौं कीती ते थुआड़े आस्तै मन्² ते सल्वा उतारेआ - ते गलाया जे इनें पवित्तर चीजे चा जो असें तुसेंगी दितियां न, खाओ - ते उनें (ना-फरमानी करियै) सादा नुक्सान नेई कीता बल्के ओह अपना गै नुक्सान करा करदे हे ॥ 58 ॥

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै असें गलाया हा जे इस बस्ती च दाखल³ होई

وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَى لَنْ نُؤْمِنَ لَكَ حَتَّى نَرَى اللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْكُمُ الصَّيْقَةُ وَأَنْتُمْ تُنظَرُونَ ﴿٥٦﴾

ثُمَّ بَعَثْنَاكُم مِّن بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٧﴾

وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْعَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّٰ وَالسَّلٰوٰى ۗ كُؤٰمِنٌ طَيِّبٰتٍ مَّا رَزَقْنٰكُمْ ۗ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِن كَانُوْا اٰنْفُسَهُمْ يٰظَلِمُوْنَ ﴿٥٨﴾

وَإِذْ قُلْنَا اذْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا مِنْهَا

1. यानी असें थुआड़े ईमानें गी होर ज्यादा बधाया ते थुआड़ी नसलें गी बी होर बधाइयै तुसेंगी परतियै शक्तिशाली बनाई दिता।
2. अरबी भाशा च 'मन्' दा अर्थ उपकार होंदा ऐ। इस आस्तै जो चीज अल्लाह दी किरपा कनै बगैर कुसै चेचा जतन करने दे श्हांई जा उसी मन् आखदे न। खूब ते तुरन्जबीन गी बी मन् आखदे न। सल्वा अरबी भाशा च बटेर पैंछी कनै मिलदे-जुलदे इक पैंछी दा नां दे। आयत दा अर्थ एह ऐ जे असें थुआड़े आस्तै उस थाहर खुंबां ते तुरन्जबीन पैदा करी दिती दियां हियां ते उत्थें बटेर आंगर पैंछी भेजी दिते हे।
3. बनी इस्राईल जिसलै मिस्र देश थमां निकलियै सीना नां दे जंगलें चा होंदे होई किन्आन देश पासै जा करदे हे तां रस्ते च ओह किश ऐसे लोकें कनै मिलियै गे जो जंगलें च किश नगगर-नगरोटे बसाइयै रौहदे हे। बनी इस्राईल गी अपनी थकावट उठारने आस्तै उनें नगगरे च किश समां गजारने दी अजाजत मिली जंदी ही। इत्थें इयै नेह इक नगगर जां प्रां दा बर्णन ऐ।

जाओ ते उस च जित्थुआं चाहो रज्जियै खाओ ते उसदे दरोआजे चा पूरी फरमांबरदारी करदे होई दाखल होई जाओ ते गलांदे जाओ जे अस बोझ¹ हलका करने दी प्रार्थना करने आं। उसलै अस थुआड़े गुनाहें गी माफ करी देगे ते अस उपकारी लोकें च जरूर बाधा करगे ॥ 59 ॥

फही (उंदी शरारत दिखबो जे) जालमं उस गल्ला दे खलाफ, जो उनेंगी आखी गेदी ही इक होर गल्ल बदलिये² आखनी शुरू करी दिती (जेहकी साढ़े आखे दे बरुद्ध ही)। जिस पर असें उनें लोकें पर, जिनें जुलम कीता हा, उंदे ना-फरमान होने दी ब'जा करी, गासै थमां इक अजाब नाजल कीता ॥ 60 ॥ (सूक् 6/6)

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै मूसा नै अपनी कौम आस्तै पानी मंगेआ तां असें (उसी) गलाया जे अपना सोटा फलाने पथरै पर मार। इस पर ओहदे चा बारां सूहटे फुट्टी पे (ते) हर इक गरोह नै अपने घाट गी पन्धनी लैता (उसलै उनेंगी गलाया गेआ जे) अल्लाह दी दिती दी रोजी चा खाओ ते पिय्यो ते फसादी बनियै धरती पर फसाद नेई फलाओ ॥ 61 ॥

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै तुसें गलाया हा जे हे मूसा! अस इक्कै चाल्ली दे खाने पर सबर (संदोख) नेई करी सकगे। इस आस्तै तू साढ़े आस्तै अपने रब्ब अगें दुआऽ कर जे ओह साढ़े आस्तै किश ऐसियां चीजां,

حَيْثُ شِئْتُمْ رَعَدًا ۖ وَادْخُلُوا الْبَابَ
سَجْدًا ۖ وَقُولُوا حِطَّةً نَّغْفِرْ لَكُمْ
خَطِيئَتِكُمْ ۗ وَسَزِّدِ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٩﴾

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ
لَهُمْ فَأَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا رِجْرًا
مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٦٠﴾

وَإِذْ اسْتَسْفَىٰ مَوْسَىٰ لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا
اصْرَبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ ۗ فَانْفَجَرَتْ
مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۗ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ
مَّشْرَبَهُمْ ۗ كَلُوا وَأَشْرَبُوا مِنْ رِّزْقِ اللَّهِ
وَلَا تَعْتَوُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٦١﴾

وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَىٰ لَنْ نَصْبِرَ عَلَىٰ
طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ
لَنَا مِمَّا تَشْتَبُ الْأَرْضُ مِنْهُ نَقْلَهَا
وَقَاتِلْهَا ۗ وَقَوْمُهَا وَعَدَسُهَا وَبَصِلَهَا ۗ

1. यानी पापें दा बोझ।

2. किश विद्वान आखदे न जे मूल शब्द 'हिततुन' यानी 'माफ कर' दी ज'गा उनें हिततुन यानी कनक शब्द गलाना शुरू करी दिते दा हा, पर इस कल्पना दी जरूरत नेई। दुस्ट लोक मजाक दे तौरै पर शब्दं च केई चाल्ली दियां तब्दीलियां करी दिंदे न।

जिनेंगी धरती उगांदी ऐ, पैदा करै - जियां साग-सब्जियां, कक्कड़ियां, कनक, मसर ते प्याज - इस पर अल्लाह नै गलाया जे क्या तुस उस चीजा दे बजाए जो उत्तम ऐ, उस चीजै गी लैना चांहेदे ओ, जो घटिया ऐ? तां कुसै शैहर उठी जाओ (उत्थें) जे किश तुसैं मंगेआ ऐ तुसैंगी जरूर मिली जाग। (उसलै) उनेंगी म्हेशां आस्तै जलील ते बे-बस करी दिता गेआ ते ओह अल्लाह दे अजाब दे पात्तर बनी गे। एह इस करी (होआ) जे ओह अल्लाह दी आयतें दा इन्कार करदे होंदे हे ते नबियें गी बिला-ब'जा कतल करना चांहेदे हे (ते) एह (गुनाह) उंदे नाफरमानी करने ते हद शा बधे दे होने दी ब'जा करी (उंदे च पैदा होई गेदा) हा ॥ 62 ॥ (रुकू 7/7)

जो लोक ईमान ल्याए न ते जो यहूदी न, इंदे अलावा ईसाई (नसारा) ते साबी न (उंदे चा) जो (फिरका) बी अल्लाह पर ते आखरत दे दिनै पर (कामिल) ईमान¹ ल्याए दा ऐ ते उसनै नेक कर्म कीते दे न। यकीनन उंदे आस्तै उंदे रब्ब कश उंदा (मनासब) अजर (सिला) ऐ ते उनेंगी नां (ते भविक्ख बारै) कुसै किसमै दा खौफ होग ते नां (भूतकाल/बीते दे समे च) होई दी कुसै कुताही पर पछतावा होग ॥ 63 ॥

قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ الَّذِي هُوَ أَدْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ ۗ إِنَّهُ بُطُوا مُضِرًّا ۖ قَالُوا لَكُمْ مَّا سَأَلْتُمْ ۗ وَصُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ ۗ وَبَاءُوا بِعَصَابِ مِنَ اللَّهِ ۗ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿٦٢﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالنَّصَارَىٰ وَالصَّبِيَّانَ مِنْ أَمْنٍ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلْ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٣﴾

1. इस आयत च किश लोक भलेखे च एह समझदे न जे आखो जे पवित्र कुरआन दा इस बारै एह मतलब ऐ जे यहूदी, ईसाई ते साबी (नखतर पूजक) बगैरा अपने-अपने धर्म च आस्था रखदे होई बी मोक्ष प्राप्त करी सकदे न। आखो जे उनेंगी इस्लाम धर्म स्वीकार करने दी जरूरत नेई, पर एह बिचार ठीक नेई। पवित्र कुरआन इस आयत राहें एह दसदा ऐ जे भामें कोई शख्स मुसलमान होने दा दा'चा करै भां ओह यहूदी होऐ, ईसाई जां साबी बगैरा ओह उसलै गै कामयाबी हासल करी सकदा ऐ जिसलै जे कुरआन दे दस्से दे सारे सिद्धांतों पर पूरा-पूरा ईमान रखदा होऐ। सिर्फ जबानी ईमान लाह नेई पुजाग। ऐसा शख्स अल्लाह शा लेइयै क्यामत तक दे सारे सिद्धांतों गी मनदा होऐ ते इस्लाम दे बनाए दे असूलें मताबक शुभ ते नेक कर्म करदा होऐ।

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै असें तुंदे शा पक्का प्रण लैता हा ते थुआड़े उप्पर¹ तूर पर्वत गी उच्चा कीता हा (ते गलाया हा जे) जे (किश) असें तुसेंगी दिता ऐ उसी मजबूती कन्ने (निगगर) पकड़ी लैओ ते जे किश ओहदे च ऐ उसी याद रक्खो, तां जे तुस संयमी बनी जाओ ॥ 64 ॥

फही एह स्पष्ट हदायत मिली जाने दे बा'द बी तुसें पिटठ फेरी लैती ते जेकर तुंदे पर अल्लाह दी किरपा ते उस दी रैहमत नेई होंदी तां तुस जरूर नुकसान टुआने आहलें च होई जंदे ॥ 65 ॥

ते तुस उनें लोकें दे (परिणाम) गी, जिनें तुंदे चा (होंदे होई) सब्² दे मामले च ज्यादाती कीती ही, यकीनन जानी गे होगे, इस पर असें उनेंगी गलाया हा जे (जाओ) जलील³ बांदर बनी जाओ ॥ 66 ॥

इस आस्तै असें इस (घटना) गी उंदे (उनें लोकें) आस्तै बी जो (उस बेलै) मजुद हे ते इस (घटना) दे बा'द औने आहले लोकें

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ
الطُّورَ طُ حَذُّوْا مَا آتَيْنَكُم بِقُوَّةٍ
وَأَذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ①

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَلَوْلَا فَضْلُ
اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ
الْحٰسِرِيْنَ ②

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الذِّبْنَ اَعْتَدُوا مِنْكُمْ فِي
السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خٰسِيْنَ ③

فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا
وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ④

1. यानी तुसेंगी तूर पर्वत दी तलहटी (पैरें) च खडेरी दिता हा (निर्गमन आयत 17 भाग 19)
2. यहूदियें आस्तै सब यानी शनिवार पवित्र आखेआ गेदा हा। उस रोज यहूदियें गी अल्लाह दी उपासना दे सिवा कोई कारोबार करने दी अजाजत नथी। (दिकखो निर्गमन 20 : 11 - 12)
3. पवित्र कुरआन, अहादीस ते इतिहास शा सिद्ध होंदा ऐ जे थुआड़े कश बांदरें दे गुणें आहले लोक जरूर औंदे होंदे हे, पर शरीरक रूपै च बांदर बने दे लोक कदें बी नथे आए। इस आस्तै मूल शब्द "किरदतन ख्रासेईन" यानी तुच्छ बांदर दा एह मतलब नेई जे ओह रूप, अकार ते आकृति च बांदर बने दे हे, बल्के उंदे राहें बांदरें आहले गुण ग्रैहन करी लैने कारण बांदरें दी उपमा दिती गेदी ऐ। कुरआन मजौद दे टिप्पणीकारें दे महान नेता 'मुजाहिद' नै बी इसदा इय्यै अर्थ कीते दा ऐ जे उंदे दिलें च बगाड़ पैदा होई गेआ हा, पर उंदे बाहरी रूप, अकार ते आकृति च कुसै चाल्ली दा कोई विकार जां बगाड़ पैदा नथा होआ। इत्थें मूल शब्द 'किरदतन' दा बिशेशन 'ख्रासेईन' रक्खेआ गेदा ऐ जो विवेकशील यानी मानव जाति आस्तै प्रयुक्त होंदा ऐ। जानवरें जैसी जाति आहले बांदरें आस्तै 'ख्रासिया' औना चाही दा हा। इस आस्तै इत्थें बांदर शब्द कन्ने संबंधत पशु जाति आहले बांदर नेई बल्के बांदर शब्द उपमेय दे रूपै च प्रयुक्त होए दा ऐ। इसदा अर्थ एह ऐ जे बनी इस्राईल दे मते-हारे लोकें दे दिलें च बगाड़ पैदा होई गेदा हा जे उंदे च अल्लाह दा भै नां-मात्तर बी नथा रेहदा। उंदे सारे कम्म सिर्फ दखावा हे उंदे च असलीयत किश बी नथी।

आस्तै बी नसीहत दा ते संयमियें आस्तै उपदेश
दा साधन बनाई दिता ॥ 67 ॥

ते (उस बेले गी बी याद करो जे) जिसलै
मूसा नै अपनी कौम गी गलाया जे अल्लाह
तुसेंगी गौ-बध¹ करने दा हुकम दिंदा ऐ, उनें
गलाया जे क्या तू असेंगी हासे दा नशान्ना
(पातर) बनान्ना ऐ? (मूसा नै) गलाया अ'ऊं
(इस गल्ला शा) अल्लाह दी पनाह मंगनां जे
(ऐसा कर्म करियै) मूर्ख लोकें च शामिल होई
जां ॥ 68 ॥

उनें गलाया, साढ़ी खातर अपने रब्ब अगें
दुआऽ करो जे ओह असेंगी तफसील कन्ने
दस्सै जे ओह (गौ) कनेही ऐ? उसनै (यानी
मूसा नै) गलाया जे ओह आखदा ऐ ओह गौ
ऐसी ऐ जे नां ते बुड्ढी ऐ ते नां बच्छी बल्के
ओह इस दे बश्कार पूरी जुआन ऐ इस लेई
जो हुकम तुसेंगी दिता जंदा ऐ, उसी पूरा करो
॥ 69 ॥

उनें गलाया, साढ़ी खातर अपने रब्ब अगें
(पही) दुआऽ करो जे ओह असें गी तफसील
च समझाऽ जे उसदा रंग कनेहा ऐ? (मूसा
नै) गलाया, ओह आखदा ऐ जे ओह इक
जरद (पीले) रंगै दी गौ ऐ, उसदा रंग बड़ा
शोख (गैहरा) ऐ ते ओह दिक्खने आहलें गी
बौहत पसंद औंदी ऐ ॥ 70 ॥

उनें गलाया, साढ़ी खातर अपने रब्ब अगें
(पही) दुआऽ करो जे ओह असेंगी तफसील
कन्ने दस्सै जे ओह (गौ) कैसी ऐ? असेंगी

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ
أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً ۗ قَالُوا أَتَتَّخِذُنَا
هُزُؤًا ۗ قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ
الْجَاهِلِينَ ۝۶۸

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ ۗ
قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا فَارِصٌ وَلَا
يَكْرُ ۗ عَوَانٌ بَيْنَ ذَلِكَ ۗ فَافْعَلُوا مَا
تُؤْمَرُونَ ۝۶۹

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا لَوْثُهَا ۗ
قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَاءٌ
فَاتِحَةٌ لَّوْثُهَا نَسْرُ النَّظِيرِينَ ۝۷۰

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ ۗ إِنَّ

1. अरबी मूल शब्द 'बकरतुन' - गौ वाचक संज्ञा ऐ जो गौ ते बैल दौनीं आस्तै प्रयुक्त होंदा ऐ। इतिहास शा पता लगदा ऐ जे बनी इस्राईल फिराउन दी मिस्र बासी जाति दे लोकें शा प्रभावत हे, की जे मिस्र दे लोक बैल दी पूजा करदे होंदे हे। इस आस्तै कुरआन नै दौनीं चाल्नी दे बिचार रक्खने आहले लोकें गी सामनै रक्खियै 'बकरतुन' (गौ - बैल) शब्द बरते दा ऐ।

ते इस किसमै दियां (सब)गमां इक्कै नेहियां नजरी औंदियां न ते (यकीन रक्खो जे) जेकर अल्लाह नै चाहया तां अस जरूर हदायत गी कबूल करी लैगै ॥ 71 ॥

(मूसा नै) गलाया, ओह (अल्लाह) आखदा ऐ जे ओह ऐसी गौ ऐ जो नां ते जुंगले च जुगड़ी गेदी ऐ जे हल्ल चलान्दी होऐ ते नां खेतरें गी पानी दिंदी ऐ, बिल्कुल तंदरुस्त ऐ, उस च कोई दूआ (गैर) रंग नेई (पाया जंदा)। उनें गलाया हून तोह (साड़े सामनै) सचाई रक्खी दिती ऐ, इस आस्ते उनें उस (गवै) गी ज'बा करी दिता, असल च ओह ऐसा करने आस्तै त्यार नथे ॥ 72 ॥ (रुकू 8/8)

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै तुसें इक शख्स गी कतल¹ (करने दा दा'वा) कीता, पही तुसें उस दे बारै इखत्लाफ (मत-भेद) कीता, हालांके जे (किश) तुस छपालदे हे अल्लाह उसी जाहर करने आहला हा ॥ 73 ॥

इस पर असें गलाया इस (घटना) गी उस (जान) कनै पेश औने (घटने) आहली किश दूई घटनें कनै मलाइयै दिक्खो (पही तुसें गी सचाई दा पता लगगी जाग) अल्लाह इस्सै चाल्ली मुडदें गी जींदा² करदा ऐ ते तुसें गी

الْبَقْرَةَ تَشَبَهَ عَلَيْنَا وَإِنَّا إِن شَاءَ اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ ﴿٧١﴾

قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقْرَةٌ لَا ذَلُولَ لِشَيْرِ الْأَرْضِ وَلَا تَتَقَى الْحَرْثَ مَسْلَمَةً وَلَا شِيَةَ فِيهَا قَالُوا لَنْ نَجِدَ بِالْحَقِّ فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُوا يَمْعَلُونَ ﴿٧٢﴾

وَإِذ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادَرَأْتُمُوهَا وَاللَّهُ مَخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٧٣﴾

فَقُلْنَا اصْرَبُوهُ بَعْضَهَا كَذَلِكَ يُخَيِّ اللَّهُ الْمَوْتَى وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٧٤﴾

1. एहदे कनै सरबंधत हजरत मसीह दी सलीब आहली घटना ऐ। इस बारै ईसाइयें ते एह आक्खी दिता जे मसीह अपनी मरजी कनै सलीब पर चढ़ी गे हे की जे ओह संसार आहलें आस्तै कफ़्फ़र बनना चांहेदे हे ते यहूदियें दा वा कीता जे सच्चे गै असें मसीह गी कतल करी दिता ऐ। अल्लाह आखदा ऐ जे ओह दमै झूठे न। असल च हजरत मसीह जींदि गै सलीब पर उतरी आए हे। जेकर ऐसी गै दशा च सलीब पर उतरने आहलें दियें परिस्थितियें गी दिक्खो तां तुसें गी भलेआं सेही होई जाग जे इतिहास ते चकित्सा शास्तर मूजब ओह लोक जींदि गै होंदे न। इस आस्तै मसीह बी सलीब पर जींदि गै उतरे हे ते पवित्र कुरआन नै जेकर उंदे बारे एह गलाया ऐ जे तुसें इक जान दी हया कीती तां इस दा अर्थ एह ऐ जे तुसें इस गल्ला दा दा'वा कीता जे असें उसी कतल करी दिता ऐ जियां यहूदियें दा एह गलाना ऐ जे असें मर्यम दे पुत्र ईसा गी कतल करी दिता ऐ ते जियां जे ईसाई आखदे न जे ओह साहे पापें दा कफ़्फ़र होने आस्तै मरी गेआ।
2. यानी ऐसे उपाय दसदा ऐ जिंदि नै ओह लोक जो थुआड़े विचार कनै मुडदा हे असल च जींदि साबत होई जंदे न।

अपने नशान दसदा ऐ तां जे तुस अकली शा कम्म लैओ ॥ 74 ॥

इस दे बा'द पही थुआड़े दिल सख्त होई गे, चनांचे ओह पत्थरें आंगर बल्के उंदे शा बी ज्यादा सख्त न ते पत्थरें बिच्चा ते यकीनन किश ऐसे बी होंदे न जिंदे चा दरेआ बगदे न ते उंदे चा किश ऐसे बी होंदे न जे फटी जंदे न ते उंदे चा पानी निकलन लगदा ऐ ते इंदे (दिलें) चा (बी) किश ऐसे न जे अल्लाह दे डरें (माफी मंगदे होई) डिग्गी¹ जंदे न ते जे (किश) तुस करा करदे ओ अल्लाह ओहदे शा कदें बी बे-खबर नेई ऐ ॥ 75 ॥

(हे मुसलमानो!) क्या तुस मेद रखदे ओ जे ओह (यहूदी) थुआड़ी गल्ल मन्नी लैंगन, हालांके उंदे चा किश लोक नेह न जो अल्लाह दे कलाम गी सुनदे न, पही उसी समझी लैने दे बा'द उस (दे मतलब) गी बगाड़ी दिंदे न ते ओह (इस कुकर्म दे बुरे नतीजे गी भलेआं) जानदे न ॥ 76 ॥

ते जिसलै एह लोक मोमिनें कनै मिलदे न तां आकखी दिंदे न जे अस मोमिन आं ते जिसलै इक-दूए कनै बखरै मिलदे न तां (इक-दूए पर अलजाम लांदे होई) आखदे न क्या तुस उतें गी ओह गल्लां जो अल्लाह नै तुंदे पर जाहर कीती दियां न, दसदे ओ? इसदा नतीजा² एह होगे जे ओह (मुसलमान) उतें जानकारियें राहें अल्लाह दे सामनै थुआड़े बरुद्ध सबूत रक्खी देंगन। क्या तुस अकली शा कम्म नेई लैंदे ॥ 77 ॥

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدَّ قَسْوَةً وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشْقُقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاءُ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٧٥﴾

أَفَتَطْمَعُونَ أَنْ يُؤْمِنُوا بِالْكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلِمَ اللَّهِ ثُمَّ يُحَرِّفُونَهُ مِنْ بَعْدِ مَا عَقَلُوهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٦﴾

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَا بِبَعْضِهِمْ إِلَى بَعْضٍ قَالُوا أَتَحَدِّثُونَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَاوِرَكُمْ بِهِ عِنْدَ رَبِّكُمْ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٧٧﴾

1. इस आयत दे दमें अर्थ कीते जाई सकदे न :- (क) अल्लाह शा भै दुआने आहली गल्लें चा जियां आंधियां, हाड़, भंचाल बगैरा करी किश पत्थर डिग्गी पोंदे न। (ख) एह जे मनुक्खी दिलें चा किश ऐसे होंदे न जो अल्लाह दे डरें माफी मंगदे होई उस दे अगें झुकी जंदे न।
2. इत्थें मूल शब्द च 'ल' परिणाम बोधक अक्खर ऐ। इसदा अर्थ एह ऐ जे पैहली गल्ला दा परिणाम एह होगे जे मुसलमान तुसंगी दोशी बनाने आसैं सबूत पेश करी देंगन।

क्या एह (इस गल्लै गी) नेई जानदे जे जे किश ओह छपालदे न ते जे किश ओह जाहर करदे न, अल्लाह उसी जानदा ऐ ॥ 78 ॥

ते उंदे चा किश अनपढ़ न जो किश झूठी गल्लें दे सिवा अपनी कताब दा किश बी इलम (ज्ञान) नेई रखदे ते ओह सिर्फ तुकबंदियां करदे रौंहदे न ॥ 79 ॥

इस आस्तै जो लोक अपने हथें कताब लिखदे न (ते) फही ओहदे राहें (किश) थोड़ी हारी कीमत हासल करने आस्तै आखी दिंदे न जे एह (कताब) अल्लाह पासेआ ऐ उंदे आस्तै (इक सख्त) अजाब (निश्चत) ऐ। फही (अस आखने आं जे) उंदे आस्तै उंदे हथें लिखे दा होने करी (इक सख्त) अजाब (निश्चत) ऐ ते उसदे करियै (बी) अजाब (निश्चत) ऐ जो ओह कमांदे न ॥ 80 ॥

ते ओह आखदे न जे असेंगी किश इने-गिने (गिनती दे) दिनें गी छोड़ियै (दोज़ख दी) अग कदें बी नेई रूहग। तू (उनेंगी) आख क्या तुसें अल्लाह शा कोई बा'यदा लेदा ऐ? (जेकर ऐसा ऐ) तां ते ओह अपने बा'यदे दे खलाफ कदें बी किश नेई करग, जां तुस अल्लाह दे बाँरे ऐसी गल्ल आखदे ओ, जिसदा तुसेंगी (कोई) ज्ञान नेई ऐ ॥ 81 ॥

की नेई, जेहके लोक कुसै बी चाल्ली दी बदी कमांगन ते उंदा गुनाह उनेंगी (चपासेआ) घेरी लैग ओह नरकै (च पौने) आहले न, ओह ओहदे च पेदे रौंहगन ॥ 82 ॥

ते जेहके लोक ईमान ल्याए दे न ते उनें नेक कर्म कीते दे न ओह जन्नत (च जाने) आहले न। ओह ओहदे च (म्हेशां आस्तै) बस्सी जांगन ॥ 83 ॥ (रुकू 9/9)

أَوْ لَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ
وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٨﴾

وَمِنْهُمْ أُمِّيُونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا
أَمَانِي وَإِنَّهُمْ إِلَّا يُظُنُّونَ ﴿٧٩﴾

فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ يَكْتُبُونَ الْكِتَابَ
بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ يَقُولُونَ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ
لِيَشْتَرُوا بِهِ مَمْنًا قَلِيلًا فَوَيْلٌ لَهُمْ مِمَّا
كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ لَهُمْ مِمَّا
يَكْسِبُونَ ﴿٨٠﴾

وَقَالُوا لَنْ نَمَسَنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا
مَعْدُودَةً قُلْ أَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللَّهِ عَهْدًا
فَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ عَهْدَهُ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى
اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨١﴾

بَلَى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَاطَتْ بِهِ
خَطِيئَتُهُ فَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ
فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٨٢﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَئِكَ
أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٨٣﴾

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै असें बनी इस्त्राईल थमां पक्का बा'यदा लेदा हा जे तुस अल्लाह दे सिवा कुसै दी अबादत नेई करगे ते मापें कनै अच्छा ब्यहार करगे ते इससै चाल्ली करीबी सरबंधियें, यतीमें ते दीन-दुखियें कनै बी, ते एह (बा'यदा बी लैता हा) जे लोकें कनै नमरता पूर्ण गल्लां करा करगे, नमाज़ गी कायम रक्खा करगे ते जकात देआ करगे, मगर (इसदे बा'द) तुंदे चा किश इक लोकें दे सिवा बाकी सारे दे सारे मूंह फेरी गे ॥ 84 ॥

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै असें तुंदे शा बा'यदा लैता हा जे तुस (आपस च) अपना खून¹ नेई बगागे ओ ते अपने आपै गी (यानी अपनी कौम दे लोकें गी) अपने घरें दा नेई कढगे ते तुसें (उसदा) करार करी लैता हा ते तुस (उस करार दे बाँरे म्हेशां) गुआही² दिंदे रेह ओ ॥ 85 ॥

फही तुससै लोक ओ जे (इस बा'यदे दे बावजूद) आपस च इक-दूए गी कतल करदे ओ ते अपने चा इक जमात गी गुनाह ते जुलम कनै (उंदे दुश्मनें दी) मदद करदे होई उंदे घरें चा कढदे ओ ते जेकर ओह थुआडै कश कैदी होइयै (मदद मंगने आसतै) औन तां तुस फिदया (यानी अर्थ दंड) देइयै उनेंगी छुड़ाई लैंदे ओ आखो जे सच्चें गै उनेंगी (घरें दा) कडढना (बी) तुंदे आसतै रहाम कीता गेदा हा। तां केह तुस कताब दे इक हिस्सै पर ते ईमान आहनदे ओ ते इक हिस्से दा इन्कार करदे ओ? इस लेई तुंदे चा जो ऐसा करदे न उंदी स'जा इस (ज्हान दी) जिंदगी च (गै) अपमान दे सिवा होर केह ऐ (जो उनेंगी

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْكُمْ وَأَنتُمْ مُّعْرِضُونَ ۝۸۴

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُونَ دِمَاءَكُمْ وَلَا تُخْرَجُونَ أَنفُسَكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ أَقْرَرْتُمْ وَأَنتُمْ تُشْهِدُونَ ۝۸۵

ثُمَّ أَنتُمْ هَٰؤُلَاءِ تَقْتُلُونَ أَنفُسَكُمْ وَتُخْرَجُونَ مِنْ دِيَارِهِمْ تُظْهَرُونَ عَلَيْهِم بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۗ وَإِن يَأْتُوكُمْ أُسْرَىٰ فَذُوهُمْ ۖ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ إِخْرَاجُهُمْ ۗ أَفَتُؤْمِنُونَ بِبَعْضِ الْكِتَابِ وَتَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ ۗ فَمَا جَزَاءُ مَنْ

1. यानी इक यहूदी वंश दूए यहूदी वंश गी हानी नेई पुजाग। (निर्गमन 20-21)

2. निर्गमन 20: 3-4

मिलग) ते ओह क्यामत आहलै रोज उस शा बी सख्त अजाब पासै परताए जांगन ते जे किश तुस करा करदे ओ अल्लाह उस शा कदें बी बे-खबर नेई ॥ 86 ॥

ते इयै ओह लोक न जिनें इस (संसारक) जिंदगी गो बा'द च औने आहली (जिंदगी) पर प्रधानता देई रक्खी दी ऐ इस आस्तै नां ते उंदे परा अजाब गै हल्का कीता जाग ते नां उंदी (कुसै होर रूपै च) मदद कीती जाग ॥ 87 ॥ (रुकू 10/10)

ते असें (सच्चे गै) मूसा गो कताब दिती ही ते इसदे बा'द असें (उनें) रसूलें गो (जिनेंगी तुस जानदे ओ उसदे) पिच्छें¹ भेजेआ ते मर्यम दे पुत्तर ईसा गो (बी) असें जाहरे-बाहरे नशान दिते ते रुहलकुदुस² राहें उसी ताकत बखशी (पर तुसें सारें दा मकाबला कीता) ते फही (तुस गै दस्सो जे) क्या (एह गल्ल बौहत बुरी नेई जे) जिसलै बी तुंदे कश कोई रसूल इस (तलीम) गो लेइयै आया जिसी थुआड़े दिल पसंद नेई करदे हे, तां तुसें घमंड (दा प्रदर्शन) कीता। इस आस्तै तुसें केइयें गो झुठलाई दिता ते केइयें गो कतल³ करी दिता ॥ 88 ॥

ते (असेंगी पता ऐ जे) उनें (एह बी) गलाए दा ऐ (जे) साढ़े दिल ते पड़दें च न (पर एह गल्ल) नेई, बल्के अल्लाह नै उंदे कुफर करी उंदे पर लानत बरहाई दी ऐ। इस लेई ओह बड़े गै घट्ट न जो ईमान आहनदे न ॥ 89 ॥

ते जिसलै उंदे कश अल्लाह पासैआ इक कताब आई जो उस (कताब दी

يَفْعَلْ ذَلِكَ مِنْكُمْ إِلَّا خِرُوجَ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يُرَدُّونَ إِلَىٰ أَشَدِّ الْعَذَابِ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٨٦﴾

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ۗ فَلَا يَخَفُفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُصْرَفُونَ ﴿٨٧﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَقَمِيمًا مِنْ بَعْدِهِ بِالرُّسُلِ ۗ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ ۗ أَفَكُلَّمَا جَاءَكُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَىٰ أَنْفُسُكُمْ اسْتَكْبَرْتُمْ ۖ فَفَرِّقُوا كَذِبْتُمْ ۗ وَفَرِّقْنَا تَفْتَلُونَ ﴿٨٨﴾

وَقَالُوا قُلُوبُنَا غُلْفٌ ۗ بَلْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلًا مَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٨٩﴾

وَلَمَّا جَاءَهُمْ كِتَابٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ

1. पिच्छें भेजने दा अर्थ एह ऐ जे उसदे पैरै दा अनुकरण करना ते उसदे धर्म दी सेवा करना।
2. रुहलकुदुस - पाक रुह, पवित्र आतमा।
3. अर्थ एह ऐ जे ओह ऐसा नीच कम्म हा जे अजब बी उसदी कल्पना करचै तां ओह अक्खीं दे सामनै आई जंदा ऐ।

भविष्यवाणियों) गी जो उंदे कश ऐ, सच्चा करने आहली ऐ तां बावजूद इसदे जे पैहलें एह (लोक अल्लाह शा) मुन्करें पर जित्त (हासल करने दी दुआऽ) मंगदे होंदे हे। जिसलै उंदे कश ओह चीज आई गई जिसगी उनें पन्छानी लैता ते उसदा इन्कार करी दिता। इस आस्तै ऐसे मुन्करें पर अल्लाह दी फटकार ऐ ॥ 90 ॥

एह गल्ल बौहत गै बुरी ऐ जिसदे बदले च उनें अपने-आपै गी बेची दित्ते दा ऐ (ते) ओह उंदा अल्लाह दे उतारे दे कलाम शा इस गल्ला पर बिगड़ियै इन्कार करना ऐ जे अल्लाह अपने बंदें चा जिस पर चांहदा ऐ (गी) अपनी किरपा नाजल करी दिंदा ऐ? इसै करी एह लोक अजाब पर अजाब दे पातर बनी गेदे न। ते ऐसे (गै) मुन्करें आस्तै जलील करने आहला अजाब (निश्चत) ऐ ॥ 91 ॥

ते जिसलै उनेंगी गलाया जा जे जे किश अल्लाह नै उतारे दा ऐ उस पर ईमान ल्याओ तां ओह आखदे न जे अस (ते) उस पर ईमान आहनने आं जो साढ़े पर उतारेआ गेदा ऐ ते (एह आखदे होई) उसदे बा'द औने आहले (कलाम) दा ओह इन्कार करी दिंदे न, हालांके ओह उस (कलाम) गी जो उंदे कश ऐ सच्चा करियै पूरे तौरा पर सच्चा (साबत होई चुके दा) ऐ तू (उनेंगी) आख जे जेकर तुस (सचें गै) मोमिन ओ तां पही तुस की इस शा पैहलें अल्लाह दे नबियें दा कतल करने दे पिच्छें पेदे रेह ओ ॥ 92 ॥

ते मूसा थुआड़े कश सचें गै जाहरा - बाहरा नशान लेइयै आया हा पही (बी) तुसैं उसदे (फ्हाड़ा पर जाने दे) बा'द जुलम करदे होई (खुदा गी छोड़ियै) बच्चे गी (उपास्य) बनाई लैता ॥ 93 ॥

مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۗ وَكَانُوا مِنْ قَبْلُ
يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا ۗ فَلَمَّا
جَاءَهُمْ مَا عَرَفُوا كَفَرُوا بِهِ ۗ فَلَعْنَةُ
اللَّهِ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٩٠﴾

بِسْمَا اشْتَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ أَنْ يَكْفُرُوا
بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ بَعِثْنَا أَنْ يُنَزِّلَ اللَّهُ مِنْ
فَضْلِهِ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۗ فَبَاءُوا
بِعَضِّ عَلَى غَضَبٍ ۗ وَلِلْكَافِرِينَ
عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿٩١﴾

وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ امْكُفِّرُوا
بِمَا أَنْزَلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوا بِمَا
وَرَاءَهُ ۗ وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ۗ
قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنْبِيَاءَ اللَّهِ مِنْ قَبْلُ إِنْ
كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٩٢﴾

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ
التَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ
ظَالِمُونَ ﴿٩٣﴾

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै असें थुआड़े शा पक्का बा'यदा लैता हा ते तूर गी थुआड़े उपपर उच्चा¹ कीता हा (एह आखदे होई जे) जे किश असें तुसेंगी दित्ते दा ऐ उसी घोटियै (निगगर) पकड़ो ते उस (यानी अल्लाह) दा आक्खा मन्नो। इस पर (उसलै तुंदे चा जेके लोक साढ़े संबोधत हे) उनें गलाया हा जे (बड़ा चंगा) असें सुनी लैता ते (अस एह बी आखी दिन्ने आं जे) असें (एह हुकम) नेई मन्ने दा फैसला करी लैते दा ऐ ते उंदे कुफर करियै उंदे दिलें च बच्छा (यानी उसदा प्रेम) घर करी गोआ। तू (उनें गी) आख जे जेकर तुस (जियां जे तुस दा'वा करदे ओ) मोमिन ओ तां ओह् कम्म जिसदा तुसें गी थुआड़ा ईमान हुकम दिंदा ऐ, बौहत बुरा ऐ ॥ 94 ॥

तू (उनेंगी) आख जे जेकर अल्लाह कश दूर लोकें गी छोड़ियै सिर्फ थुआड़े आस्तै गै सुर्ग-धाम (यानी आखरत दा घर) ऐ तां जेकर तुस (इस दा'वे च) सच्चे ओ तां मौत² दी इच्छा करो ॥ 95 ॥

ते (हे मुसलमानो! याद रक्खो जे) जे किश उंदे हत्थ, अगमें भेजी चुके दे न उनें कुकर्म करी ओह् इस (चाल्ली दी मौत) दी कदें बी इच्छा नेई करडन ते अल्लाह जालमें गी भलेआं जानदा ऐ ॥ 96 ॥

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ
الطُّورَ ۖ خُذُوا مَا آتَيْنَكُم بِقُوَّةٍ
وَأَسْمِعُوا ۗ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا ۗ
وَأَشْرَبُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۗ
قُلْ بِسْمَايَا مُرْكَبَةٍ اِيْمَانِكُمْ اِنْ
كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمْ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ
خَاصَّةً ۖ فَمِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوْا الْمَوْتَ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝

وَلَنْ يَّتَمَوْهُ اَبَدًا اِيْمَا قَدَمَتْ اَيْدِيهِمْ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝

1. यानी तुसेंगी तूर पर्वत दी तलहटी (यानी घें च) खडेरी दिता हा। (निर्गमन 19:18)

2. यानी हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लह अलैहि वसल्लम कन्ने मुबाहिला करो जियां जे सूर: आले-इम्रान आयत नं: 62 च विवरण ऐ। 'मुबाहिला' - इक - दूर गी शाप दिंदे होई परमात्मा शा न्यां मंगना ऐ।

ते तुस यकीनन इनेंगी (बी) ते किश उनें लोकें गी (बी) जो मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) न सारे लोकें शा ज्यादा जीवन दा लोभी पागे (दिखगे)। उंदे चा (हर इक) इयै चांहदा ऐ जे उसी ज्हार साल दी उमर मिली जा हालांके एह (गल्ल यानी) उस दा (लम्मी) उमर पाना, उसी अजाब शा नेई बचाई सकदा ते जे किश ओह करा करदे न, अल्लाह उसी दिक्खा करदा ऐ ॥ 97 ॥ (रुकू 11/11)

وَلَنَجْذِبَهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَى حَيَاتِهِمْ
وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ
يُعَمَّرُ أَلْفَ سَنَةٍ وَمَا هُوَ بِمُرْحَرَجِهِ
مِنَ الْعَذَابِ أَنْ يُعَمَّرَ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا
يَعْمَلُونَ ﴿٩٧﴾

तू (उनेंगी) आखी दे जे जो शख्स इस ब'जा करी जिब्राईल दा बरोही होऐ जे उसनै तेरे दिलै पर अल्लाह दे हुकम कनै इस (कताबा) गी उतारे दा ऐ जो इस (कलाम) गी जो इस शा पैहलें मजुद ऐ, सच्चा करने आहली ऐ ते मोमिनें आस्तै हदायत ते खुश-खबरी ऐ ॥ 98 ॥

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ
عَلَى قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ
يَدَيْهِ وَهُدًى وَبُشْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٩٨﴾

ते (उसी याद र'वै जे) जो शख्स (बी) अल्लाह ते उसदे फरिशतें ते उसदे रसूलें ते जिब्राईल ते मिर्काईल दा बैरी होऐ तां (ऐसे) मुन्करें दा अल्लाह बी यकीनन दुश्मन ऐ ॥ 99 ॥

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَرُسُلِهِ
وَجِبْرِيلَ وَمِيكَالَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ
لِّلْكَافِرِينَ ﴿٩٩﴾

ते असें तेरे पर सच्चें गै जाहरा-बाहरा नशान नाजल कीते दे न ते ना-फरमानें दे सिवा उंदा कोई इन्कार नेई करदा ॥ 100 ॥

وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَمَا
يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا الْفَاسِقُونَ ﴿١٠٠﴾

ते केह (एह बुरी गल्ल नेई जे) जिसलै बी उनें लोकें कोई बा'यदा कीता तां उंदे चा इक फिरके नै उसी सुट्टी (नकारी) दिता (इयै नेई) बल्के उंदे चा (ते) मते-हारे ईमान दे लागै बी नेई फड़कदे ॥ 101 ॥

أَوْ كَلَّمَا عَاهَدُوا عَهْدًا بَيْنَهُ فَرِيقٌ
مِّنْهُمْ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠١﴾

ते जिसलै उंदे कश अल्लाह पासेआ इक ऐसा रसूल आया जो उस कताब गी जो उंदे कश ऐ, सच्च सिद्ध करने आहला ऐ तां उनें लोके चा जिनेगी ओह कताब दिती गेदी ही, इक फिरके नै अल्लाह दी ताजा कताब (कुरआन) गी अपनी पिट्टीं पिच्छें सुट्टी दिता, आखो जे ओह उसी जानदे गै नेई ॥ 102 ॥

इसदे अलावा ओह (यहूदी) उस (रस्तै) पर चली पे जिस रस्ते पर सुलेमान दी कहुमत बेलै (उस दी कहुमत दे) बागी चलदे हे ते सुलेमान मुन्कर नथा बल्के (उसदे) बिद्रोही इन्कारी हे। ओह लोके गी धोखा देने आहलियां गल्लां सखांदे हे ते (आपू बी) उस गल्ला दी (नकल बी करदे न) जो बाबिल च हारूत ते मारूत¹ नांS दे द'ऊं फरिश्तें पर उतारी गई ही। हालांके ओ दमें कुसै गी उन्ना चिर किश बी नथे सखांदे जिन्ना चिर एह नेई गलाई दिंदे जे अस (अल्लाह पासेआ) थुआड़े आस्तै अजमैश दे रूपै च (नियुक्त होए दे) आं। इस आस्तै हे मुखातब! साढ़े आदेशें दा इन्कार नेई करेओ। जिस पर ओह (लोक) उंदे (दौनी) शा ओह गल्ल सिखदे हे जेहदे राहें ओह मड़द ते उसदी जनानी बश्कार तफरीक (विभेद)² पाई दिंदे हे ते ओह अल्लाह दे हुकम दे सिवा

وَمَا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيقٌ مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ كِتَابَ اللَّهِ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ كَأَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٢﴾

وَأَتَتْهُمْ أَمَا تَتْلُوا الشَّيْطَانُ عَلَى مَلَكِ سُلَيْمَانَ ۚ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمَانُ وَلَكِنَّ الشَّيْطَانَ كَفَرُوا يَعْلَمُونَ النَّاسِ السَّحَرُ ۚ وَمَا أَنْزَلَ عَلَى الْمَلَائِكَةِ بَابِلَ هَارُوتَ وَمَارُوتَ ۖ وَمَا يَعْلَمِينَ مِنْ أَحَدٍ حَتَّى يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ۖ فَيَعْلَمُونَ مِنْهُمَا مَا يَفْتَرُونَ بِهِ بَيْنَ الْمَرْءِ وَرَوْحِهِ ۖ وَمَا هُمْ بِبَصَّارِينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَيَعْلَمُونَ مَا يَصْرِفُهُمْ وَلَا يَفْقَهُمْ

1. फरिश्तें जैसे गुण रक्खने आहले मानव।

2. ओह लोके गी एह खास धार्मिक शिक्षा दिंदे हे। जेकर लाड़ी-मरहाजै चा लाड़ी शिक्षा ग्रैहन करी लैदी ही तां ओह उस शिक्षा - दीक्षा गी प्रधानता दिंदे होई अपनी संस्था दियें गल्लें गी अपने मरहाजै शा गुप्त रक्खन लगी पाँदी ही ते जेकर मरहाज शिक्षा ग्रैहन करी लैदा हा तां ओह बी अपनी लाड़ी शा अपनी संस्था दियां गल्लां गुप्त रक्खन लगी पाँदा हा। इस चाल्ली ओह दमें इक-दूए गी अपना भेत नथे दिंदे होंदे। सिर्फ खुदा दे रसूल जां उसदे नायबें गी भेत दसदे हे।

कुसै गी बी इस (गल्ला) राहें नुकसान¹ नथे पुजांदे ते (इस दे उलट) एह (यानी हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम दे बैरी) ते ओह गल्ल सिक्खा करदे न जो उनेंगी नुकसान पुजाग ते फायदा नेई देग ते एह लोक सच्चें गै समझी चुके दे न जे जो इस (तरीके) गी अखत्यार करी लै, आखरत च उसदा कोई बी हिस्सा नेई होग ते ओह चीज जिसदे बदले च उनें अपने आप गी बेची दिते दा ऐ, बौहत गै बुरी ऐ, काश, जे ओह एह जानदे ॥ 103 ॥

وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي
الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهِ
أَنْفُسَهُمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٣﴾

ते जेकर एह लोक ईमान आहनदे ते संयम अखत्यार करदे तां (उनेंगी पता लगगी जंदा जे) अल्लाह पासेआ मिलने आह्ला बदला (गै) सर्वश्रेष्ठ (बदला) ऐ, काश जे एह जानदे ॥ 104 ॥ (रुकू 12/12)

وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَآتَقُوا لِمُؤَبِّئِهِمْ مِنَ
عِنْدِ اللَّهِ خَيْرٌ لَّو كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٤﴾

1. इस च दस्सेआ गेदा ऐ जे हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम दे अवतार शा पैहलें यहूदियें दो बार छड़जैतर रचे। इक बार हजरत सुलेमान दे खलाफ गुप्त समतियां बनाइयै हजरत सुलेमान गी इन्कारी ते मूरती-पूजक गलाना शुरू करी दिता ते उंदे राज दा सर्वनाश करने दी कोशिश कीती। (राजाएं दा वृतांत पैहला भाग 11:16 ते इतिहास नांस दी दूई कताब भाग 10 : 3-4) असल च एह छड़जैतर अल्लाह दे इक सच्चे नबी दे खलाफ हा।

फलसरूप उंदी एह कोशिश कामयाब नेई होई सकी ते बल्लें-बल्लें यहूदियें दी शक्ति खीन होंदी गई। अखीर च ओह अपने देशें चा कड्डी दिते गे। दूई बार हारुत-मारुत फरिश्ता सभास दे द'ऊं इश्वर भगतें दे संपर्क च "सायरस" फारस ते मेद दे राजा दे समर्थन कनै बाबिल दे सम्राट दे खलाफ छड़जैतर रचेआ गेआ। एह प्रयास अल्लाह दी इच्छा दे मताबक हा। उस बेलै यहूदी दुखी हे ते सरकार अत्याचारी ही। इस आस्तै एह गुप्त प्रयास सफल होआ। यहूदियें दे बैरियें दा नाश होई गेआ ते ओह बदेशें थमां सुदेश परतोई आए। (ब्यौरे आस्तै दिक्खो *History of the World vol. 1. page 126*)

एह दस्सने आस्तै जे हून यहूदी लोक हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम दे सर्वनाश आस्तै कोशशां करा करदे न ते गुप्त रूपै च ईरान दे सम्राट 'किसा' गी हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम दे खलाफ भड़कास करदे न। इस छड़जैतर दा केह फल निकलग? बाबिल दी घटना च एह दुखी हे ते अल्लाह दी इच्छा दे मताबक द'ऊं इश्वर भगतें दी प्रेरणा कनै सफल होए हे, पर हून एह लोक अल्लाह दे सच्चे रसूल हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम दे खलाफ छड़जैतर रचा करदे न। इस आस्तै बाबिल दी घटना आंगर सफल नेई होई सकडन बल्के नकाम रौहगन ते नुकसान तुआंगन। इंदा नतीजा हजरत सुलेमान दे खलाफ छड़जैतर रचने आहलें जनेहा होग। प्ही इय्यां गै होआ ते उंदी कोशशें दा नतीजा एह निकलेआ जे किस्सा-ईरान दे सम्राट दा बी सर्वनाश होआ ते एह लोक आपूं बी नकाम होए।

हे ईमान आह्वाने आहलेओ! (रसूल गी संबोधन करियै) राइना! नेई आखा करो बल्के उनजुर्ना आखा करो ते (उसदी गल्ल ध्यान कनै) सुना करो ते (याद रक्खो जे) मुन्करें आसै दर्दनाक अजाब (निश्चत) ऐ ॥ 105 ॥

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا
وَقُولُوا انظُرْنَا وَاسْمَعُوا وَلِلْكَافِرِينَ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٥﴾

कताब आहलें बिच्चा ते इंदे अलावा मुश्रिकें बिच्चा जिनें लोकें (साढ़े रसूलें दा) इन्कार कीते दा ऐ, ओह पसंद नेई करदे जे थुआड़े पर थुआड़े रब्ब पासेआ किसै चाल्ली दी खैर (ते बरकत/यानी भलाई) उतारी जा ते (भुल्ली जंदे न जे) अल्लाह जिसी चांहदा ऐ अपनी रैहमत दा खास पातर बनाई लैंदा ऐ ते अल्लाह बौहत किरपा करने आह्ला ऐ ॥ 106 ॥

مَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ
وَلَا الْمُشْرِكِينَ أَنْ يُنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِنْ
خَيْرٍ مِنْ رَبِّكُمْ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ
مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿١٠٦﴾

जिस कुसै पैगाम (संदेश) गी बी अस मन्सूख² करी देचै जां उसी भुलाई देचै तां अस उस शा उत्तम जां ओहदे जैसा (संदेश दबारा

مَا نَنْسَخُ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ
مِّمَّهَا أَوْ مِثْلَهَا لَمْ نَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَلِي

1. अरबी भाशा च जेकर कुसै दा ध्यान अपने पासै खिचवना होऐ तां 'राइना' आखदे न; पर एह उसलै आखेआ जंदा ऐ जे जिसलै दमै पक्ख बराबर होन, की जे राइना दा अर्थ ऐ - तू साढ़ा ध्यान रक्ख, अस तेरा ध्यान रक्खगे, पर जिसलै सामने आह्ला पद ते सम्मान बगैरा च बड्डा होऐ तां उसलै राइना दी ज'गा 'उनजुर्ना' आखदे न अर्थात है हजूर! साढ़ा बी ध्यान रक्खेओ ते इस चाल्ली गल्ल करो जे अस बी समझी सकचै। इस आयत च मुसलमानें गी एह तलीम दिती गेदी ऐ जे तुस हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. गी राइना नेई आखा करो। ममकन ऐ एहदे नै थुआड़े अंदर बे-विश्वासी दी भावना दा संचार होन लगै, की जे इस शब्द दा असल अर्थ एह ऐ जे अस ते तुस बराबर आं। इस आसतै तुस 'उनजुर्ना' आखा करो तां जे हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दा आदर ते सम्मान म्हेशां थुआड़े दिलें च कायम र'वै।
2. इसदा एह अर्थ नेई जे अस पवित्र कुरआन दी कुसै आयत गी रद्द करी देचै बल्के अर्थ एह ऐ जे जिसलै अस कुसै चमत्कार गी टलाई दिने आं ते उस शा श्रेष्ठ चमत्कार लेई औन्ने आं जां उसै आंगर दूआ चमत्कार जाहर करी दिने आं तां जे हदायत दा साधन बनै।

इस आयत दा इक अर्थ एह बी ऐ जे पवित्र कुरआन शा पैहलें जो-जो शिक्षां तौरत जां इन्जील च उतरी दियां हियां उनैंगी पवित्र कुरआन दे उतरने बेलै मन्सूख कीता गेआ, की जे उंदे शा उत्तम शिक्षां कुरआन दे रूपै च उतरी गेदियां न। प्रसंग शा एह गै अर्थ सिद्ध होँदा ऐ। जित्थें तक पवित्र कुरआन दी शिक्षा ते आदेशें दा सुआल ऐ तां ओह कदं बी मन्सूख नेई होंगन बल्के ओह क्यामत तक चलदे रौहगन जियां जे कुरआन शरीफ च बार-बार इसदा स्पष्टीकरण कीता गेदा ऐ।

दुनियां च) लेई औने आं। क्या तुगी पता नेई जे अल्लाह हर गल्ला पर (जिसी करने दा ओह निश्चा करी लै) पूरी चाल्ली समर्थ रखदा ऐ ॥ 107 ॥

क्या तुगी पता नेई जे गासैं ते धरती दी बादशाहत अल्लाह दी गै ऐ ते अल्लाह दे सिवा थुआड़ा नां कोई दोस्त ऐ ते नां कोई मददगार ॥ 108 ॥

क्या तुस अपने रसूल कनै इसै चाल्ली सुआल करना चांहदे ओ जिस चाल्ली (इस शा) पैहलें मूसा कनै सुआल कीते गे हे ते (भुल्ली जंदे ओ जे) जो शख्स कुफर गी ईमान कनै बदली लै तां समझो जे ओह सिद्धे रस्ते थमां भटकी गेआ ॥ 109 ॥

कताबा आहलें चा मते-हारे लोक इस गल्ला दे बा'द जे सच्च उंदे पर भलेआं जाहर होई चुके दा ऐ, इस ईरखा दी ब'जा करी जो उंदे अपने अंदरा (पैदा होई) दी ऐ, चांहदे न जे थुआड़े ईमान लेई औने दे बा'द तुसंगी फही काफर बनाई देन। इस आस्तै तुस उस बेलै तगर जे अल्लाह अपने हुकम गी नाज़ल करै, उनेंगी माफ करो ते (उनेंगी) दरगुजर करो। अल्लाह यकीनन हर गल्ला पर पूरी-पूरी समर्थ रखदा ऐ ॥ 110 ॥

ते नमाज़ गी (निजमें मताबक) कायम रक्खो ते ज़कात देआ करो, ते (याद रक्खो जे) जो नेकी तुस अपने आस्तै अगमें भेजगे ओ, तुस उसी अल्लाह कश पागे ओ। अल्लाह थुआड़े कर्में गी सच्चें गै दिक्खा करदा ऐ ॥ 111 ॥

ते ओह (यानी यहूदी ते मसीही/ईसाई एह बी) आखदे न जे जन्नत च सिवाए उंदे (उनें

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٠٧﴾

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ
وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١٠٨﴾

أَمْ تَرِيدُونَ أَنْ تَسْأَلُوا رَسُولَكُمْ كَمَا
سَأَلَ مُوسَى مِنْ قَبْلُ وَمَنْ يَتَّبِعِ
الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ
السَّبِيلِ ﴿١٠٩﴾

وَدَدَّ كَثِيرٌ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ
يَرُدُّونَكُمْ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِكُمْ كَفَّارًا
حَسَدًا مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ
لَهُمُ الْحَقُّ فَأَعْتَمُوا وَأَصْفَحُوا حَتَّى يَأْتِيَ
اللَّهُ بِأَمْرِهِ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١١٠﴾

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَمَا
تُقَدِّمُوا لِأَنْفُسِكُمْ مِنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ
عِنْدَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١١﴾

وَقَالُوا لَنْ نَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَنْ كَانَ هُودًا

लोकें दे) जो यहूदी होन जां ईसाई¹ होन, कदें बी कोई दाखल नेई होग, एह (सिर्फ) उंदियां मनोकामनां न, तू (उनेंगी) आखी दे जे जेकर तुस सच्चे ओ तां अपनी दलील पेश करो ॥ 112 ॥

(ते दस्सो जे दूए लोक) की नेई (दाखल होंगन) जो बी अपने आप गी अल्लाह दे सपुर्द करी देऐ ते ओह नेक कम्म करने आहला (बी) होऐ तां उसदे रब्ब कोल ओहदे आस्तै सिला (निश्चत) ऐ ते उनें (लोकें) गी नां (भविक्ख बाँरे) किसै किसम दा खौफ होग ते नां ओह (कुसै होऐ दे नुक्सान पर) दुखी होंगन ॥ 113 ॥ (रुकू 13/13)

ते यहूदी आखदे न जे ईसाई कुसै (सच्ची) गल्ला पर कायम नेई न ते ईसाई आखदे न जे यहूदी कुसै (सच्ची) गल्ला पर कायम नेई न। हालांकि ओह दमै (इक गै) कताब (यानी तौरात) पढ़दे न। इसै चाल्ली ओह (दूए) लोक जो ज्ञान नेई रखदे, उंदे जनेही गै गल्ल करदे होंदे हे। इस आस्तै जिस (गल्ला) पर एह इखत्लाफ करदे न उसदे बाँरे अल्लाह क्यामत आहले ध्याइँ उंदे बशकार फैसला करग ॥ 114 ॥

ते उस (शख्स) शा बद्ध कु'न जालम (होई सकदा) ऐ जिसने अल्लाह दी मस्जिदें शा (लोकें गी) रोकेआ जे उंदे च उसदा नांS लैता जा, ते उनें गी जुआड़ने दे पिच्छें पेई

أَوْصَارِي ۖ تِلْكَ أَمْثَالُهُمْ ۖ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١١٢﴾

بَلَىٰ ۚ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُ أَجْرُهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۖ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١١٣﴾

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصْرَىٰ عَلَىٰ شَيْءٍ ۚ وَقَالَتِ النَّصْرَىٰ لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلَىٰ شَيْءٍ ۚ وَهُمْ يَسْتَلُونَ ۚ الْكِتَابُ ۚ كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١١٤﴾

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَتَعَ مَسْجِدَ اللَّهِ وَأَن يَذُكَّرَ فِيهَا اسْمُهُ وَسَعَىٰ فِي خَرَابِهَا ۗ أُولَٰئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَن يَدْخُلُوهَا إِلَّا

1. इस दा एह अर्थ ऐ जे यहूदी आखदे न जे सिर्फ यहूदी गै सुर्गे च जांगन ते ईसाई आखदे न ते सिर्फ ईसाई गै सुर्गे च जांगन। एह अर्थ नेई जे ईसाई एह समझदे होन जे ईसाई ते यहूदी दमै सुर्गे च जांगन ते यहूदी एह समझदे होन जे यहूदी ते ईसाई दमै गै सुर्गे दे अधिकारी न।

गेआ। इंदे (इनें लोकें) आस्तै मनासब नथा जे उंदे (उनें मस्जिदें) च दाखल होंदे, पर (खुदा शा) डरदे होई उंदे आस्तै संसार च (बी) अपमान ऐ ते आखरत च(बी) उंदे आस्तै बड्ढा अज़ाब (निश्चत) ऐ ॥ 115 ॥

خَافِينَ^١ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِرْيٌ وَوَلَهُمْ فِي
الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ^٢

ते चढ़दा ते घरोंदा अल्लाह दे गै न इस आस्तै जतांह बी तुस मूंह करगे ओ तुआंह गै अल्लाह गी पागे ओ। अल्लाह यकीनन बौहत बधाने आहला (ते) बड़ा जानने आहला ऐ ॥ 116 ॥

وَاللَّهُ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ^٣ فَأَيَّمَا تَوَلَّوْا
فَقَمَّ وَجْهَ اللَّهِ^٤ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ^٥

ते ओह आखदे न जे अल्लाह नै (अपने आस्तै) इक पुतर¹ बनाई लेदा ऐ (उंदी एह गल्ल सच्च नेई) ओह (ते हर कमजोरी शा) पाक ऐ, बल्के जे किश गासें ते धरती च ऐ, उसै दा ऐ, सब उसदे आज़ाकारी न ॥ 117 ॥

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا^٦ سُبْحٰنَهُ^٧ بَلْ لَّهِ مَا
فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ^٨ كُلِّ لَّهُ
قِسْمٌ^٩

ओह गासें ते धरती गी (बगैर कुसै पैहले नमूने दे) पैदा करने आहला ऐ ते जिसलै ओह कुसै चीजा (गी दुनियां च वजूद च आहने) दा फैसला करी लैदा ऐ तां उस बारै सिर्फ एह आखदा ऐ जे तूं होई जा, ते ओह होई जंदी ऐ ॥ 118 ॥

بَدِيعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ^{١٠} وَإِذَا قَضَىٰ
أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ^{١١}

ते ओह लोक जो (खुदा दी हिकमतें दा) इलम नेई रखदे, आखदे न जे अल्लाह की नेई (आपूं) साढ़े कनै गल्ल करदा जां (की) साढ़े कश कोई नशान (नेई) औंदा? इसै चाल्ली (बिल्कुल) इंदे आहली गल्ल—(ओह बी) आखदे होंदे हे जे जो इंदे शा पैहले

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللَّهُ
أَوْ تَاتِينَا آيَةً^{١٢} كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِهِمْ مِثْلَ قَوْلِهِمْ^{١٣} تَشَابَهَتْ

1. मूल शब्द 'वल्द' दा अर्थ ऐ-पुतर ते धीऽ। एह शब्द इक आस्तै बी, दो आस्तै बी ते एहदे शा मतें आस्तै बी बरतेआ जंदा ऐ। यहूदियें ते ईसाइयें दे बिचार मूजब इत्थें इक पुतर लिखेआ गेदा ऐ। बरना आयत दा एह अर्थ ऐ जे अल्लाह दा नां कोई पुतर ऐ, नां धीऽ ऐ नां इक पुतर-धीऽ ते नां नेकां धीया-पुतर।

(समे दे लोक) हे। उंदे सारें दे दिल इक — जैसे होई गेदे न। अस ते ऐसे लोकें आस्तै जो जकीन रखदे न, हर चाल्ली दे नशान तफसील कनै ब्यान करी चुके दे आं (मगर एह लोक नेई मनदे) ॥ 119 ॥

असें तुगी यकीनन खुश-खबरी देने आहला ते डराने आहला बनाइयै सच्च (ते तत्थ) कनै भजे दा ऐ ते नर्क च जाने आहलें बाँरे तेरे शा कोई पुच्छ-पड़ताल नेई कीती जाग ॥ 120 ॥

ते (याद रक्ख जे) जिन्ना चिर तू उंदे धर्म दा अनुसरण नेई करगा यहूदी तेरे पर कदें बी खुश नेई होंगन ते नां गै ईसाई (खुश होंगन) तू (उनेंगी) आखी दे जे अल्लाह दी हदायत गै यकीनन असल हदायत ऐ ते जेकर (हे मुखातब!) तू इस इलम दे बा'द (बी) जो तेरे कश आई चुके दा ऐ, उंदी इच्छाएं दा अनुसरण करगा तां अल्लाह पासेआ नां कोई तेरा दोस्त होग ते नां मददगार ॥ 121 ॥

(ओह लोक) जिनेंगी असें कताब¹ दिती दी ऐ ओह इसदा इस्सै चाल्ली अनुसरण करदे न जिस चाल्ली इसदा अनुसरण करना चाही दा। ओह लोक इस पर (पुख्ता) ईमान रखदे न ते जो लोक इस दा इन्कार करन ऊऐ नुकसान उठाने आह्ले होंदे न ॥ 122 ॥ (रुकू 14/14)

قُلُوبُهُمْ ۖ قَدْ بَيَّنَّا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿١١٩﴾

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۖ وَلَا تُسْأَلُ عَنْ أَصْحَابِ الْجَحِيمِ ﴿١٢٠﴾

وَلَنْ تَرْضَىٰ عَنْكَ الْيَهُودَ وَلَا النَّصَارَىٰ حَتَّىٰ تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ۗ قُلْ إِنْ هَدَىٰ اللَّهُ فَمَا لَهُدَىٰ ۗ وَلَئِنْ آتَيْتَهُمْ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ الَّذِي جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۗ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١٢١﴾

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَتْلُونَهُ حَقًّا تِلَاوَتِهِ ۗ وَأُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۗ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٢٢﴾

1. इत्थें कताब दा अर्थ पवित्र कुरआन ऐ। इस आयत च अल्लाह नै यहूदियें गी दोशी ठरहाए दा ऐ जे तुसें ते तौरत शा लापरवाही कीती, पर हून एह लोक जिनेंगी असें कुरआन दिते दा ऐ इसी पूरी चाल्ली अपनांदे न ते इस पर इनें लोकें दा सधारण ईमान गै नेई बल्के पक्का ईमान ऐ।

हे बनी इस्राईल! मेरे उस स्थान गी जो अ'ऊं तुंदे पर करी चुके दा आं, याद करो ते (इस गल्ला गी बी) जे में तुसेंगी सारे ज्हांनें पर प्रधानता¹ प्रदान कीती ही ॥ 123 ॥

يٰۤاَيُّهَاۤ اِسْرٰٓءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيۤ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاِنِّيۤ اَفْضَلْتُكُمْ عَلَيِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٣﴾

ते उस दिनें शा डरो जे जिसलै कोई शख्स कदेँ बी कुसै दूए शख्स दा स्थान नेई लेई सकग ते नां उसशा कुसै किसम दा बदला कबूल कीता जाग ते नां कोई सफारश उसी फायदा देग ते नां उंदी मदद कीती जाग ॥ 124 ॥

وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْرِيۤ اَنْفُسٌ عَنْۢ نَّفْسٍۭ سَيِّئًا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ يُنصَّرُوْنَ ﴿١٢٤﴾

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै इब्राहीम गी उसदे रब्ब नै किश गल्लें रहें अजमाया ते उसनै उनेंगी पूरा करी दस्सेआ (इस पर अल्लाह नै) गलाया जे अ'ऊं तुगी सच्चेँ गै लोकें दा इमाम नियुक्त करने आह्ला आं (इब्राहीम नै) गलाया जे मेरी उलाद बिच्चा बी (इमाम बनायो) (अल्लाह नै) गलाया (हां! मगर) मेरा बा'यदा जालमें तक नेई पुज्जग² ॥ 125 ॥

وَازْبَتْلٰى اِبْرٰهٖمَ رَبَّهُۥ بِكَلِمٰتٍۭ فَاتَمَّهَنَّۙ ۗ قَالَ اِنِّىۤ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمٰمًا ۗ قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيۙ ۗ قَالَ لَا يَبۜتَالُ عَهْدِيۙ الظَّالِمِيْنَ ﴿١٢٥﴾

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै असेँ इस घर (यानी काबा) गी लोकें आस्तै बार-बार ज'मा होने दी ज'गा ते अमन (दा मकाम) बनाया हा ते (हुकम दिता हा जे) इब्राहीम दे खड़े होने दी ज'गा गी नमाज दी ज'गा बनाओ, ते असेँ इब्राहीम ते इस्राईल गी तकीदी हुकम दिता हा जे मेरे घरै दा तवाफ़

وَازْجَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمۜنًا ۗ وَاتَّخِذُوا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلِّ ۗ وَعِبِدُنَاۤ اِلٰى اِبْرٰهٖمَ وَاَسْمِعِيۙ اَنْ طَهَّرٰ

1. इस प्रधानता दा अर्थ उससेँ बेले दे लोक न। उंदे च अगले-पिछले लोक शामिल नेई न। (मुफ़्फ़दाते रागिब)
2. यानी इब्राहीम दी संतान चा जो शख्स अत्याचारी होई जांगन उनेंगी इमाम नेई बनाया जाग।

(परदक्खन) करने आहलें, एतकाफ़¹ करने आहलें, रकू करने आहलें ते सजदा करने आहलें आस्तै पाक (ते साफ) रक्खो ॥ 126 ॥

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै इब्राहीम नै गलाया हा जे हे मेरे रब्ब! इस (ज'गा) गी इक पुर-अमन शैहर बनाई दे ते इसदे बशिनं चा जो बी अल्लाह पर ते औने आहले ध्याड़े पर ईमान ल्यौन उनेंगी (हर किसमै दे) फल प्रदान कर। (इस पर अल्लाह नै) फरमाया जे जो शख्स कुफर करै उसी (बी) अ'ऊं थोढ़े चिरै आस्तै फायदा पजांग। पही उसी मजबूर करियै नरकै दे अजाब पासै लेई जांग ते (एह्) बौह्त बुरा अनजाम ऐ ॥ 127 ॥

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै इब्राहीम उस घरै दियां नीहां चुक्का करदा हा ते (उसदे कनै) इस्माईल बी (ते ओह) दमै आखदे जंदे हे जे हे साढ़े रब्ब! साढ़े पासेआ (इस खिदमत गी) कबूल कर। तूं गै (ऐं जो) बौह्त सुनने आहला (ते) बौह्त जानने आहला ऐं ॥ 128 ॥

يَتَىٰ لِلظَّالِمِينَ وَالْعَافِينَ وَالرَّحِيمِ
السُّجُودِ ﴿١٢٦﴾

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا بَلَدًا
أَمِنًا وَارْزُقْ أَهْلَهُ مِنَ الثَّمَرَاتِ مَنْ آمَنَ
مِنْهُمْ يَا اللَّهُ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ قَالَ وَمَنْ
كَفَرَ فَأُمَتِّعُهُ قَلِيلًا ثُمَّ أَضْطَرُّهُ إِلَىٰ
عَذَابِ النَّارِ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٢٧﴾

وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ
وَإِسْمَاعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٢٨﴾

1. एतकाफ़ दा शाब्दक अर्थ-एकांत च ध्यान मग्न होना ऐ। परिभाषा च एतकाफ़ रमजान दी बीहमी तरीका गी मस्जिद च एकांत-बास करियै आसन, प्रार्थना ते जप-तप करदे होई ध्यान मग्न होइयै बेही जाने गी आखदे न। ऐसे एकांत तपस्वी आस्तै रोजेदार होना जरूरी ऐ। एकांत-तपस्वी संसारक बंधनं ते दूए बिशें शा अलगग होई जंदा ऐ ते ज्यादा समां प्रार्थना करने, दरूद (इक प्रार्थना दा नांऽ) पढ़ने, ईश्वर दी स्तुति ते विधिवत नमाज़ पढ़ने, अपनी त्रुटियें ते भुल्लें दी माफ़ी मंगने ते पवित्र कुरआन दा पाठ करने च बर्तीत करदा ऐ। उपासना दा एह ढंग आत्म शुद्धि ते अध्यात्मक उन्नति दा उत्तम साधन ऐ जिसी हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. नै आपू अपनाया ते मुसलमानें गी बी अपनाते दी प्रेरणा दिती। इस्लाम नै सन्यास ते बराग बगैरा शा रोके दा ऐ, पर उपासना च लीन होने ते इक- टक ध्यान लाने आस्तै एतकाफ़ दी प्रथा प्रचलत कीती दी ऐ। एह सन्यास जीवन दा संतुलत ते असान रस्ता ऐ। इस च एकांत तपस्वी संसार च रोहंदे होई बी संसार शा अलगग होई जंदा ऐ। इस चाल्ली इस आसन विधि कनै तपस्वी अल्लाह दे लागै होई जंदा ऐ ते उसदी किरपा दा खास पातर बनी जंदा ऐ।

हे साढ़े रब्ब! (ते अस एह बी बिनती करने आं जे) असें दौनें गी अपना फरमांबरदार (बंदा) बनाई लै ते साढ़ी उलाद चा बी अपनी इक फरमांबरदार जमात (बनाऽ) ते असेंगी साढ़ी (स्थिति दे मताबक) अबादत दे तरीके दस्स ते साढ़ी बक्खी (अपनी) किरपा कन्नै ध्यान दे। यकीनन तूं (अपने बंदे पासै) बौहत ध्यान देने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐं ॥ 129 ॥

हे साढ़े रब्ब! (साढ़ी एह बी प्रार्थना ऐ जे तूं) उंदे चा गै इक ऐसे रसूल¹ दा प्रादुर्भाव कर जो उनेंगी तेरियां आयतां पढ़ियै सुनाऽ ते उनेंगी कताब ते हिकमत सखाऽ ते उनेंगी पवित्र करै। यकीनन तूं गै गालिब (ते) हिकमतें आहला ऐं ॥ 130 ॥ (रुकू15/15)

ते उस शख्स दे सिवा जिसनै अपने आपै गी हलाक करी दिता होऐ, इब्राहीम दे धर्म शा कु'न मूह फेरी सकदा ऐ। ते असें सचनै गै उसी (इस) दुनियां च बी चुनिंदा बनाया हा ते ओह आखरत च बी यकीनन नेक लोके च (शमार) होग ॥ 131 ॥

जिसलै उसदे रब्ब नै उसी गलाया जे (साढ़ी) फरमांबरदारी अखत्यार कर। उस नै (परते च) गलाया जे अंऊं (ते पैहलें शा गै) तमाम ज्हांनें दे रब्ब दी फरमांबरदारी अखत्यार करी चुके दा आं ॥ 132 ॥

ते इब्राहीम नै अपने पुत्रें गी ते (इस्सै चाल्ली) याकूब नै बी (अपने पुत्रें गी) इस गल्ला दी

رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمِينَ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةٌ مُّسْلِمَةً لَّكَ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٣٠﴾

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٣١﴾

وَمَنْ يَّرْعَبْ عَن مَّلَأةِ إِبْرَاهِيمَ الْأَمْنِ سَفِهَ نَفْسَهُ وَلَقَدْ اصْطَفَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٣٢﴾

إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْلِمْ¹ قَالَ أَسَلْتُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٣﴾

وَوَصَّى بِهَا إِبْرَاهِيمُ بَنِيهِ وَيَعْقُوبُ¹

1. इस आयत च हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दे संसार च औने आस्तै प्रार्थना कीती गेदी ऐ। इस आस्तै अज्बै शा चौदां सौ साल पैहलें हजरत इब्राहीम ते हजरत इस्माईल दी इनं प्रार्थनें दे फलसरूप अरब देश दे मक्का शैहरे च हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दा अवतार होआ।

बसीहत कीती (ते गलाया जे) हे मेरे पुत्रो! अल्लाह नै यकीनन इस दीन (धर्म) गी थुआड़े आस्तै चुनी लैता ऐ। इस आस्तै तुसँ कदँ नेई मरना¹, मगर इस हालत च जे तुस (अल्लाह दे) पूरे फरमांबरदार ओ ॥ 133 ॥

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمْ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْنُوْنَ الْاَوَّلٰىمُ الْمَسْلُوْمُوْنَ ﴿١٣٣﴾

क्या तुस उस बेलै मजूद हे जिसलै याकूब पर मौत (दी घड़ी) आई (ते) जिसलै उसनै अपने पुत्रें गी गलाया जे तुस मेरे बा'द कुस दी अबादत करगे ओ? उनें (जवाब च) गलाया जे अस तेरे उपास्य ते तेरे बब्ब-दादें इब्राहीम ते इस्माईल ते इस्हाक दे उपास्य दी जो इक गै उपास्य ऐ, अबादत करगे ते अस उसै दे फरमांबरदार आं ॥ 134 ॥

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِيْۙ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَائِكَ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۗ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٤﴾

एह ओह जमात ऐ, जो (अपना समां पूरा करियै) मरी चुकी दी ऐ जे किश उसनै कमाया (उस दा लाह-नुकसान) उस आस्तै ऐ ते जे किश तुसँ कमाया (उसदा लाह-नुकसान) थुआड़े आस्तै ऐ ते जे किश ओह करदे हे उस बारै तुंदे शा (किश) नेई पुच्छेआ जाग ॥ 135 ॥

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۗ وَلَا تَسْئَلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٥﴾

ते (क्या तुसँ सुनेआ जे) ओह एह बी आखदे न जे यहूदी जां ईसाई होई जाओ (इस चाल्ली) तुस हदायत पाई लैगे ओ। 'तू' (उनेंगी) आखी दे (जे इय्यां नेई बल्के) इब्राहीम दे दीन गी जो (खुदा दे गै अमगें) झुकने आह्ला हा अखत्यार करो ते (याद रक्खो जे) ओह मुश्रिकें चा नेई हा ॥ 136 ॥

وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصْرٰى تَهْتَدُوْا ۗ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيفًا ۗ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٣٦﴾

तुस गलाओ जे अस अल्लाह पर ते जे किश साढ़े पर उतारेआ गेदा ऐ ते जे किश इब्राहीम,

قُوْلُوْا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَا اُنزِلَ اَيْسًا وَمَا

1. मौत कुसै दे बस च नेई ऐ। आयत दा अर्थ एह ऐ जे हर खिन आज्ञाकारी बने दे र'वो, कुतै ऐसा नीं होऐ जे अचानक मौत गै आई जा।

इस्माईल, इस्हाक, याकूब ते (उसदी) उलाद पर उतारेआ गेआ हा ते जे किश मूसा ते ईसा गी दिता गेआ हा ते (इस्सै चाल्ली) जे किश (बाकी) नबियें गी उंदे रब्ब पासेआ दिता गेआ हा (उस सारी वह्नी पर) ईमान रखदे न अस उंदे चा इक (नबी ते दूए नबी) दे बशकार (कोई) बी फर्क नेई करदे ते अस उससै दे फरमांबरदार आं ॥ 137 ॥

इस आस्तै जेकर ओह लोक (उस्सै चाल्ली) ईमान लेई औन जिस चाल्ली तुस इस (तलीम) पर ईमान ल्याए दे ओ तां (बस्स) ओह हदायत पाई गे ते जेकर ओह फिरी जान तां (समझो जे) ओह सिर्फ इखत्लाफ (करने) पर (तुले दे) न। इस सूरत च अल्लाह तुगी जरूर (उंदी दुश्ता शा) बचाग। ओह बौहत गै सुनने आह्ला (ते) बौहत गै जानने आह्ला ऐ ॥ 138 ॥

(हे मुसलमानो! उनेंगी गलाओ जे अस ते) अल्लाह दा दीन (धर्म) अखत्यार करगे ते (दीन सखाने बारै) अल्लाह शा बेहतर कु'न होई सकदा ऐ? ते अस उससै दी अबादत करने आहले आं ॥ 139 ॥

तू (उनेंगी) आख, क्या तुस साढ़े कनै अल्लाह बारै झगड़दे ओ, हालांके ओह साढ़ा (बी) रब्ब ऐ ते थुआड़ा (बी) रब्ब ऐ ते साढ़े कर्म साढ़े आस्तै न ते थुआड़े कर्म थुआड़े आस्तै। ते अस ते उस कनै शरधा (दा तल्लक) रक्खने आं ॥ 140 ॥

(हे कताब आहलेओ!) क्या तुस (एह) आखदे ओ जे इब्राहीम ते इस्माईल ते इस्हाक

أُنزِلَ إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَمَا أُوتِيَ النَّبِيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ ۗ لَا نَفِرُّكَ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ ۗ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿١٣٧﴾

فَإِنْ آمَنُوا بِمِثْلِ مَا آمَنْتُمْ بِهِ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۗ وَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا هُمْ فِي شِقَاقٍ ۗ فَيَسْئَلُهُمُ اللَّهُ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٣٨﴾

صِبْغَةَ اللَّهِ ۗ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً ۗ وَنَحْنُ لَهُ عِبِيدُونَ ﴿١٣٩﴾

قُلْ أَتَحَاجُّونَنَا فِي اللَّهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۗ وَلَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۗ وَنَحْنُ لَهُ مَخْلُصُونَ ﴿١٤٠﴾

أَمْ تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ كَانُوا

ते याकूब ते उसदी उलाद यहूदी जां मसीही / ईसाई हे? तूं (उनेंगी) आख जे क्या तुस ज्यादा जानदे ओ जां अल्लाह? ते उस शा बद्ध जालम कु'न होई सकदा ऐ जो उस शहादत गी जो ओहदे कश अल्लाह पासेआ होऐ, छपालै, ते अल्लाह उस शा कदें बी ना-बाकफ नैई ऐ, जो तुस करदे ओ ॥ 141 ॥

एह ओह जमात ऐ जो (अपना समां पूरा करियै) मरी चुकी दी ऐ। जे किश उसनै कमाया (उसदा नफा-नुकसान) ओहदे गै आस्तै ऐ ते जे किश तुसैं कमाया (उसदा नफा-नुकसान) थुआड़े आस्तै ऐ ते जे किश ओह करदे हे उस बारै तुंदे शा नैई पुच्छेआ जाग ॥ 142 ॥ (रुकू 16/16)

هُودًا أَوْ نَصْرِيًّا ۗ قُلْ ءَأَنْتُمْ أَعْلَمُ أَمِ
اللَّهُ ۗ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً
عِنْدَهُ مِنَ اللَّهِ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا
تَعْمَلُونَ ﴿٤١﴾

تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۗ لَهَا مَا كَسَبَتْ
وَلَكُمْ مِمَّا كَسَبْتُمْ ۗ وَلَا تَسْأَلُونَ عَمَّا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٤٢﴾

1. तीरात च लिखे दा ऐ जे हजरत इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक ते याकूब एह सारे लोक हजरत मूसा ते ईसा शा सदियां पैहलें होई चुके दे न। फही ओह यहूदी ते ईसाई किस चाल्ली होई सकदे न।

मूर्ख लोक जरूर गलांगन जे इनें (मुसलमानें) गो इंदे उस किब्ला¹ शा जिस पर एह (पैहलें) हे किस गल्ला ने फराई² दिता ऐ (जिसलै ओह एह गलान) तूं (उनेंगी) गलायां जो चढ़दा, घरोंदा अल्लाह दा गै ऐ। ओह जिसी चांहदा ऐ इक सिद्धा रस्ता दस्सी दिंदा ऐ ॥ 143 ॥

ते (हे मुसलमानो! जिस चाल्ली असें तुसेंगी सिद्धा रस्ता दस्सेआ ऐ) उसै चाल्ली असें तुसेंगी इक सर्वश्रेष्ठ जाति बी बनाया ऐ तां जे तुस (दूए) लोकें दे नगरान बनो, ते एह रसूल तुंदे पर नगरान होऐ ते असें उस किब्ला गी जिस पर तूं (इस शा पैहलें) कायम हा, सिर्फ इस आस्तै नियुक्त कीता हा जे अस उस शख्स गी, जो इस रसूल दी फरमांबरदारी करदा ऐ उस शख्स दी निस्वत जो अड्डियें दे भार फिरी जंदा ऐ (इस स्पष्ट रूपै च) जान्नी लैन ते एह (गल्ल) उनें लोकें दे सिवा, जिनें लोकें गी अल्लाह नै हदायत दिती दी ऐ (दूएं आस्तै) जरूर मुश्कल ऐ ते अल्लाह (नेहा) नेई जे थुआड़े ईमान गी ब्यर्थ जान देऐ। अल्लाह यकीनन सारे इन्सानें पर अत्त मेहरबान (ते) बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 144 ॥

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّهُمْ ^{بِئْسَ} عَن قِبَلِهِمُ الَّذِي كَانُوا عَلَيْهِمْ قُلِ اللَّهُ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿١٤٣﴾

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعُ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَى عَقْبَيْهِ وَإِن كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمْ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿١٤٤﴾

1. किब्ला-ओह पवित्र थाहर जिस पासै दुनियां भर दे सारे मुसलमान मूंह करिये नमाज पढ़े न ते एह मक्का च स्थित ऐ। इसी पवित्र कुरआन नै काबा, बैतुल हराम ते मस्जिद हराम दा बी नांउ दिते दा ऐ।
2. किब्ला परिवर्तन दी घटना मदीना च होई। मक्का च हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. नमाज मौके ऐसी ज'गा खडोंदे होंदे हे जे सामनै 'काबा' बी रौहदा हा ते 'बैतुल मक़दस' बी। यहूदी इस गल्ला पर खुश हे जे साढ़े किब्ला (बैतुल मक़दस) पासै बी मूंह ऐ। जिसलै तुस मदीना च आए तां किस समां गुजरने पर तुसेंगी वही राहें दस्सेआ गेआ जे 'काबा' पासै मूंह करिये नमाज पढ़ा करो। इस लेई तुसें ऐसा गै कीता। इस पर मूर्खें इराज कीता जिसदा जवाब इनें आयतें च दिता गेदा ऐ जे काबा अपने आप च कोई बसेशता नेई रखदा। असल सत्ता अल्लाह दी ऐ ते इस सर्व व्यापक अल्लाह आस्तै चढ़दा-घरोंदा इक बरोबर ऐ।

अस तेरे ध्यान दा बार-बार गासै बक्खी फिरना/ जाना दिक्खा करने आं इस आस्तै अस तुगी जरूर उस किब्ला पासै फेरी देगे, जिसी तूं पसंद करना ऐं इस लेई (हून) तूं अपना मूंह 'मस्जिदे-हराम' (काबा) पासै फेरी लै। ते (हे मुसलमानो!) तुस (बी) जित्थें कुतै ओ, ओहदे पासै मूंह करा करो ते जिनें (लोकें) गी कताब (यानी तौरात) दिती गेदी ऐ ओह यकीनन जानदे न जे एह (किब्ला दे परिवर्तन दा हुकम) तेरे रब्ब पासेआ (भेजी दी इक) सचाई ऐ ते जे किश एह (लोक) करा करदे न अल्लाह ओहदे शा कदें बी बे-खबर नेई ऐ ॥ 145 ॥

ते जिनें लोकें गी (तुंदे शा पैहलें) कताब दिती गेदी ऐ जेकर तूं उंदै कश हर इक (चाल्ली दा) नशान (बी) लेई आमैं (तां बी) ओह तेरे किब्ला दा अनुसरण नेई करडन ते नां तूं उंदे किब्ला दा अनुसरण करी सकना ऐं ते नां उंदे चा कोई (फिरका) दूप (फिरके) दे किब्ला दा अनुसरण¹ करग ते (हे संबोधत!) जेकर उसदे बा'द बी ते तेरे कश (ईश्वरी) इलम आई चुके दा ऐ तोह उंदी खाहशें दा अनुसरण कीता तां यकीनन तूं ऐसी हालत च जालमें च (शमार) होगगा ॥ 146 ॥

قَدَرَى نَقَلَبْ وَجْهَكَ فِي السَّمَاءِ ۚ
فَلَوْلِيَّتَكَ قِبَلَهُ تَرْضَاهَا قَوْلٌ وَجْهَكَ
شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ
فَوَلُّوْا وُجُوْهُكُمْ شَطْرَهُ ۗ وَإِنَّ الَّذِيْنَ
أُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ
رَّبِّهِمْ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِعَافٍ لِّعَمٰلٍ يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٥﴾

وَلَيِّنْ آتَيْتَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ
آيَةٍ مَّا تَبِعُوا قِبَلَتَكَ ۚ وَمَا أَنْتَ بِتَابِعٍ
قِبَلَتِهِمْ ۗ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبَلَةَ بَعْضٍ ۗ
وَلَيِّنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِّنْ بَعْدِمَا
جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۗ إِنَّكَ إِذًا لَّيِّنٌ
الظَّالِمِيْنَ ﴿١٤٦﴾

1. ईसाई लोक पूर्व दिशा पासै मूंह करिये उपासना करदे होंदे न जियां जे नब्रान दे ईसाई जिसलै हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. कश धार्मिक गल्ल-बात करन आए तां उनें पूर्व पासै मूंह करिये गै नमाज पढ़ी ही। ईसाई इस दा कारण एह दसदे न जे हजरत ईसा दी शुभ-सूचना देने आहला नखतर पूर्व पासेआ चढ़ेआ हा। यहूदियें च सामरी कबीले दे लोक जियां जे इब्जील यूहन्ना भाग 4 आयत 20 शा सिद्ध होंदा ऐ। यूरोशलम दे इक पर्वत पासै मूंह करिये अबादत करदे होंदे हे ते बाकी यहूदी बैतुलमक़दस पासै मूंह करिये नमाज पढ़े होंदे हे। इस आस्तै इनें सारें च किब्ले बारै मत-भेद हा। इसै पासै इस आयत च इशारा कीता गेदा ऐ जे उंदे चा कोई इक बी दूप दे किब्ले पासै मूंह नेई करग।

ओह लोक जिनें गी असें कताब दिती दी ऐ ओह इस (सचाई) गी (उससै चाल्ती) पछानदे न जिस चाल्ती अपने पुत्तरे गी पछानदे न ते उंदे चा किश लोक यकीनन जानी-बुझ्जी सचाई गी छपालदे न ॥ 147 ॥

الَّذِينَ آتَيْنَهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ آبَاءَهُمْ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٤٧﴾

एह सचाई तेरे रब्ब पासेआ ऐ। इस आस्तै तूं शक्क करने आहलें बिच्चा कदें बी नेई बन ॥ 148 ॥ (रुकू 17/1)

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكْفُرْنَ مِنْهُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٤٨﴾

ते हर इक (शख्स) दा इक (नां इक) द्रिस्टीकोण¹ होंदा ऐ जिसी ओह (अपने आपे पर) धारी लेंदा ऐ। इस लेई (थुआड़ा द्रिस्टीकोण एह होऐ जे) तुस (भलाई दे स्हाबें/लिहाज कनै) इक-दूए शा अगमें बधने दी कोशश करो। तुस जित्थें कुतै (बी) होंगे ओ अल्लाह तुसंगी किट्टे करियै लेई औंग। अल्लाह यकीनन हर गल्ला पर पूरी चाल्ती समर्थ ऐ ॥ 149 ॥

وَلِكُلِّ وِجْهَةٍ هُوَ مَوْبُؤُهُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمْ اللَّهُ جَمِيعًا إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٤٩﴾

ते तूं जिस ज'गा थमां बी निकलें/लंघें अपना ध्यान मस्जिदे हराम (काबा) पासै फेरी दे² ते एह (हुकम) यकीनन तेरे रब्ब पासेआ (आई दी) सचाई ऐ ते जे किश (बी) तुस करदे ओ अल्लाह उस शा कदें बी बे-खबर नेई ऐ ॥ 150 ॥

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِنَّهُ لِلْحَقِّ مِنْ رَبِّكَ وَمَا اللَّهُ بِعَافٍ لِعَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٥٠﴾

1. मूल शब्द 'विज्हतुन' दा अर्थ ऐ ओह उद्देश/द्रिस्टीकोण जिस पासै मनुख अपना ध्यान देऐ। (मुफ़दाते रागिब)
2. पवित्तर स्थान 'काबा' पासै मूंह करियै अबादत करना ते कुसै थाहरै परा बाहर निकलने नै सरबंघ नेई रखदा, बल्के इन्सान भामें कुसै थाहरै परा निकलै ते भामें कुसै थाहर दाखल होऐ हर हालत च मुसलमानें आस्तै जरूरी ऐ जे ओह नमाज़ पढ़दे मौकै पवित्तर काबा पासै मूंह करा करन। इस आस्तै इस आयत दे शब्दें शा स्पष्ट होंदा ऐ जे इस थाहरै पर युद्ध दा बर्णन ऐ की जे इत्थें 'खरूज' (निकलना) शब्द युद्ध आस्तै निकलने दे अर्थ च बरतेआ गेदा ऐ। भाव एह ऐ जे हे मुसलमानो! हून तुसंगी युद्ध करने आस्तै मजबूर करी दिता जाग ते तुस जित्थें कुतै बी होंगे ओ तुंदे पर दबाऽ पाया जाग जे तुस मक्का-बासियें कनै युद्ध करो। ऐसे समे आस्तै अल्लाह अजाजत दिंदा ऐ जे जिसलै ओह तुसंगी मजबूर करन तां जरूर युद्ध करो, पर युद्ध दा मूल मकसद बैतुल्ला गी जीतना होऐ। सारांश एह ऐ जे इस थाहरै पर काबा गी जीतने पासै संकेत ऐ।

ते तू जिस ज'गा थमां (बी) निकलें अपना ध्यान मस्जिदे-हराम' पासै फेरी दे ते तुस (बी) जित्थें कुतै ओ अपने मूंह उस्सै पासै¹ करा करो तां जे उनें लोकें दे सिवा जो इंदे (बरोधियें) चा जालम बने दे न (बाकी) लोकें पासेआ तुंदे पर अलजाम² नेई र'वै। इस आस्तै तुस इनें जालमें शा नेई डरो, ते मेरे शा डरो - एह हुकम मैं इस आस्तै दिता ऐ जे तुंदे पर लोकें दा आरोप नेई र'वै। ते तां जे अ'ऊं अपनी नैमत तुंदे पर पूरी करां ते तां जे तुस हदायत पाओ ॥ 151 ॥

(उस्सै चाल्ली) जिस चाल्ली असें तुंदे च तुंदे चा गै इक रसूल भेजेआ ऐ जो तुसेंगी साढ़ी आयतां पढ़ियै सुनांदा ऐ ते तुसेंगी पवित्र करदा ऐ ते तुसेंगी कताब ते हिक्मत सखांदा ऐ ते तुसेंगी ओह किश सखांदा ऐ जो तुस (पैहलें) नथे जानदे ॥ 152 ॥

इस आस्तै (जिसलै अ'ऊं इस चाल्ली किरपा करने आह्ला आं तां) तुस मिगी याद रख्खो, अ'ऊं (बी) तुसेंगी याद करदा रौहग ते मेरे शुकरगजार बनो ते मेरी ना-शुकरी नेई करो ॥ 153 ॥ (रुकू 18/2)

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ
السُّجْدِ الْحَرَامِ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا
وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ
عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ۗ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا
مِنْهُمْ ۗ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي ۚ
وَلَا تَتَّبِعُوا نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ
تَهْتَدُونَ ﴿١٥١﴾

كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِّنْكُمْ يَتْلُوا
عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ
الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُم مَّا لَمْ
تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿١٥٢﴾
فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي
وَلَا تَكْفُرُونِ ﴿١٥٣﴾

1. इस ज'गा उनें मुसलमानें दा बर्णन ऐ जो युद्ध खेतर शा बाहर हे ते उनेंगी गलाया गेआ हा जे जो मुसलमान युद्ध च फसी गेदे न उंदा ते एह फर्ज ऐ जे जित्थुआं बी ओह युद्ध करने आस्तै निकलन ओह काबा दी विजय गी अपना मूल द्रिस्टीकोण बनान ते उनें मुसलमानें दा जो युद्ध खेतर शा बाहर न, एह फर्ज ऐ जे ओह काबा पासै मूंह करियै अबादत करा करन ते अपना ध्यान ते प्रार्थनां सदा इस्सै उद्देश आस्तै करदे रौहन जे अल्लाह असेंगी काबा देखे देरे।
2. जेकर तुस मक्का नेई जीतगे तां बैरी दा तुंदे पर आरोप रौहग, पर जेकर हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम अपने युद्धें दी धारा किब्ला-विजय पासै मोड़ी देंगन तां दूए मुसलमान बी नमाजें ते प्रार्थनाएं च इस गल्ला दा ध्यान रखडन, तां काबा पर विजय हासल होई जाग ते मुन्कर लोकें ते यहूदियें दा कुसै चाल्ली दा आरोप मुसलमानें पर नेई रौहग।

हे लोको! जो ईमान ल्याए ओ, सबर ते दुआऽ राहें (अल्लाह दी) मदद मंगो। अल्लाह यकीनन सबर करने आहलें दे कनै (होंदा) ऐ ॥ 154 ॥

ते जो लोक अल्लाह दे रस्ते च (यानी नांऽ पर) मरोई जंदे न उंदे बाँरे (एह) नेई आखो जे ओह मुड़दा न (ओह मुड़दा नेई) बल्के जींदे न पर तुस नेई समझदे ॥ 155 ॥

ते अस तुसैं गी कुसै हद तगर डर ते भुक्ख (शा) ते जान-माल ते फलें दी कमी राहें जरूर अजमागे ते (हे रसूल!) तू (इनें) सबर करने आहलें गी खुश-खबरी सुनाई दे ॥ 156 ॥

जिंदे पर जिसलै (बी) कोई मसीबत आवै (घबरांदे नेई बल्के एह) आखदे न जे अस (ते) अल्लाह दे गै आं ते उससै कश परतोई जाने आहले आं ॥ 157 ॥

इय्यै ओह लोक न जिंदे पर उंदे रब्ब पासेआ बरकतां (नाजल होंदियां) न ते रैहमत (बी) ते इय्यै लोक हदायत पाने आहले न ॥ 158 ॥

सफ़ा¹ ते मर्वा यकीनन अल्लाह दे नशानें चा न। इस आसतै जो शख्स उस घर (यानी काबा) दा हज्ज जां उमरा करै तां उसी उंदे बशकार तेज चलने पर कोई गुनाह² नेई। ते जो बी शख्स अपनी खुशी कनै कोई नेक कम्म करै (ओह समझी लै जे) अल्लाह (नेक कम्मं दा) कदरदान ऐ ते (ओह) बौहत् जानने आहला ऐ ॥ 159 ॥

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْعَيْنُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٤﴾

وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ بَلْ أَحْيَاءٌ وَ لَكِن لَّا تَشْعُرُونَ ﴿١٥٥﴾

وَتَنبَلُونَكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ ۗ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٦﴾

الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُمُ مُصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴿١٥٧﴾

أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ﴿١٥٨﴾

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِن شَعَائِرِ اللَّهِ ۗ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوْ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۗ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَلَا نَسَأَ اللَّهُ سَأَكَرَ عَلَيْهِ ﴿١٥٩﴾

1. सफ़ा ते मर्वा मक्का शहर च दऊं प्हाडियां न। इनें दौनीं बशकार इक सिरे शा दूए सिरे तक निजमै मताबक हाजी लोकें गी तेज-तेज चलना ते किश हिस्से च दौड़ना होंदा ऐ।
2. मदीना दे लोक इस थाहर घूमना-फिरना बरजत मनदे हे। इस आसतै आखेआ गेदा ऐ जे घूमने-फिरने च कोई पाप नेई।

जो लोक इस (कलाम) गी जो असें खुल्ले नशानें ते हदायतें कनै सज्जे दा उतारेआ ऐ, इसदे बा'द जे असें उसी इस कताबा च (कुरआन च) स्पष्ट रूप कनै ब्यान करी दिता ऐ, छपालदे न, ऐसे गै लोक न जिंदे पर अल्लाह लानत बरहांदा ऐ ते (दूर) लानत करने आहले (बी) लानत करदे न ॥ 160 ॥

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ ۗ أُولَٰئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللَّعُنُونَ ﴿١٦٠﴾

हां मगर जिनें तोबा करी लैती ते सुधार करी लैता ते (खुदा दे हुकमें गी) तफसील कनै ब्यान करी दिता तां ऐसे लोकें पर अ'ऊं किरपा कनै ध्यान देग्या ते अ'ऊं (अपने बंदें पासै) बौहत ध्यान देने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला आं ॥ 161 ॥

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُّوْا فَاُولَٰئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۗ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٦١﴾

जिनें लोकें इन्कार कीता ते उसै हालती च मरी गे ऐसे लोकें पर यकीनन अल्लाह दी ते फरिश्तें दी ते लोकें दी सारें दी लानत ऐ ॥ 162 ॥

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارًا ۗ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١٦٢﴾

ओह उस च (पेदे) रौंहगन नां (ते) उंदे परा अजाब हल्का कीता जाग ते नां उनेंगी (साह लैने दी) मोहलत दिती जाग ॥ 163 ॥

خَالِدِينَ فِيهَا ۗ لَا يَخَفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿١٦٣﴾

ते थुआड़ा उपास्य (अपनी जात च) सिर्फ इक गै उपास्य ऐ उसदे सिवा कोई उपास्य नेई। ओह बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 164 ॥ (रुकू 19/3)

وَاللَّهُمُّ إِلَهٌ وَاحِدٌ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ﴿١٦٤﴾

गासें ते धरती दी पदायश, रातीं ते दिनै दे अगमें-पिच्छें औने ते उनें किशितयें च जो इन्सानें गी फायदा देने आहली चीजां लेइयै समुंदरै च चलदियां न ते उस पानी च जिसी अल्लाह नै बदलै च उतारेआ, पही ओहदे

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا

राहें धरती गी उसदे खुश्क होने परैंत सर-सब्ज/हरा-भरा कीता ते उस पर हर चाल्ली दे जानवर फलाए (पैदा कीते ते बधाए) ते ब्हाएं गी तांह-तुआंह फलाने (चलाने) च ते उनें बदलें च जो धरती ते गासै दे बश्कार सेवादार न (यकीनन) उस कौम आस्तै जो अकली शा कम्म लैंदी ऐ, केई (किसमें दे) नशान न ॥ 165 ॥

ते किश लोक ऐसे न जो अल्लाह दे सिवा दूएँ गी (अल्लाह दा) शरीक बनांदे न ते उंदे नै अल्लाह दे प्रेम आंगर प्रेम करदे न ते जो लोक मोमिन न ओह सारें शा ज्यादा अल्लाह कनै (गै) प्रेम करदे न ते जो लोक (इस) जुलम दे दोशी होए दे न जेकर ओह (उस घड़ी गी) जिसलै ओह अजाब गी (सामनै) दिखडन (कुसै चाल्ली हून दिक्खी लैंदे तां समझी जंदे) जे सब ताकत अल्लाह गी गै ऐ ते एह जे अल्लाह सख्त अजाब (देने) आह्ला ऐ ॥ 166 ॥

(ते काश जे ओह लोक उस समे गी दिक्खी लैंदे) जिसलै ओह लोक जिंदी फरमांबरदारी कीती जंदी ही, उनें लोके चा जो फरमांबरदार हे, बक्ख होई जांगन ते अजाब गी (अपनी अक्खीं) दिक्खी लैंगन ते उंदे (शिकं दी ब'जा करी मुक्ति दे) सारे साधन कटोई जांगन ॥ 167 ॥

ते जो लोक (इन्कारी लोके दे सरदारें दे) फरमांबरदार हे गलांगन जे काश असेंगी इक बार (फही दुनियां च) बापस जाना (नसीब) होंदा तां अस (बी) इंदे (इन्कारियें दे सरदारें) शा बक्ख होई जंदे जिस चाल्ली (अज्ज) एह साढ़े शा बक्ख होई गे न। इस चाल्ली अल्लाह

أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَّاءٍ فَأَحْيَا بِهِ
الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ
دَابَّةٍ ۗ وَتَصْرِيفِ الرِّيْحِ وَالسَّحَابِ
الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لآيَاتٍ
لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٦٥﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ اللَّهِ
أَسَدًا يُحِبُّوهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ ۗ وَالَّذِينَ
أُمُّوهُ أَشَدُّ حُبًّا لِلَّهِ ۗ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ
ظَلَمُوا إِذْ يُرَوْنَ الْعَذَابَ أَنْ الْقُوَّةَ لِلَّهِ
جَمِيعًا ۗ وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ ﴿١٦٦﴾

إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا
وَرَأَوْا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ
الْأَسْبَابُ ﴿١٦٧﴾

وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً
فَنَنْتَبِرَآ مِنْهُمْ كَمَا تَنْتَبِرُونَ ۗ وَآمَنَّا بِكَ
يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ حَسَرَاتٍ عَلَيْهِمْ ۗ

उनेंगी दस्सग जे उंदे कर्म दा नतीजा किश कोरी कल्पनां न जो उंदे पर (गै बिपतां बिनयै) पौंगन ते ओह (दोजख दी) अग्गी चा कर्दे बी नेई निकली सकडन ॥ 168 ॥ (रुकू 20/4)

हे लोको! जो कुश धरती च ऐ, ओहदे चा जे किश ल्हाल ते पवित्र ऐ (उसी) खाओ ते शतान¹ दे पैरे पर नेई चलो ओह यकीनन थुआड़ा जाहरा-बाहरा दुश्मन ऐ ॥ 169 ॥

ओह तुसेंगी सिर्फ बदी (बुराई) दी ते अशलील ते उस (गल्ला) दी जे तुस अल्लाह दे बाँरे झूठ घडियै ओह गल्ल आखो जो तुस नेई जानदे, दी प्रेरणा दिंदा ऐ ॥ 170 ॥

ते जिसलै उनेंगी गलाया जा जे इस (कलाम) दा जो अल्लाह ने उतारे दा ऐ, अनुसरण करो तां ओह आखदे न जे (नेई) अस ते उसै (चाल्ली) दा अनुसरण करगे, जिस पर असें अपने बब्ब-दादे गी दिक्खेआ। भला जेकर उंदे बब्ब-दादा किश बी समझ नेई रखदे होन ते नां सिद्धे रस्ते पर चलदे होन (तां फही बी ओह ऐसा गै करडन?) ॥ 171 ॥

ते उनें लोके दी हालत जिनें इन्कार कीता ऐ उस शख्स दी हालत आंगर ऐ जो उस चीजै गी बुलांदा² ऐ जो पुकार ते अवाज दे सिवा किश नेई सुनदी। (एह लोक) बैहरे³, गूंगे ते अ'न्ने न। इस आस्तै नेई समझदे ॥ 172 ॥

وَمَا هُمْ بِخَرِجِينَ مِنَ النَّارِ ﴿٢﴾

يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۗ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿١٦٩﴾

إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالسُّوْعِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٧٠﴾

وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوْ لَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿١٧١﴾

وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمَثَلِ الْإِنْدِيِّ يُعِيقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ الْإِدْعَاءَ وَوَيْدَاءٌ ۗ صَمٌّ ۗ بَكْمٌ عُمَىٰ فَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٧٢﴾

1. यानी शतान दे रस्ते, ढंग, तरीके ते रीती गी नेई अपनाओ।

2. अरबी दे मूल शब्द 'यनएकरो' दा अर्थ पशु गी अवाज देना होँदा ऐ। पशु अवाज सुनिये अपने मालक दी आज्ञा दा पालन करदा ऐ, पर उसदे शब्दें दा अर्थ नेई समझदा। अल्लाह आखदा ऐ जे मुन्कर लोके दी हालत बी ऐसी गै ऐ। एह लोक इक-दूए दा अनुसरण भेड़-चाल आंगर करदे न ते एह बिचार नेई करदे जे आखने आहला केह आखदा ऐ ते सुनने आहला केह सुनदा ऐ। इसदे उलट इस्लाम धर्म पासै बुलाने आहला बुदिध-संगत गल्ल आखदा ऐ ते समझाइयै आखदा ऐ। उसदे पैरोकार समझियै गै उसदा अनुसरण करदे न, नां के सिर्फ पशुए आंगर अवाज सुनदे न।

3. आखो जे उंदी सारी इंदरियें गी ईरखा-द्वेश नै बे-कार करी दिते दा ऐ। इस आस्तै ओह अपने बुरे कर्म दी बुराइयें दा अनुभव नेई करदे।

हे लोको जे ईमान ल्याए दे ओ! उनें पवित्र चीडे चा खाओ। जो असें तुसें गी दित्ती दियां न ते जेकर तुस (सच्चे गै) अल्लाह दी गै अबादत करदे ओ तां उस दा शुकर (बी अदाऽ) करो ॥ 173 ॥

उसनै थुआड़े आस्तै सिर्फ मरदाड़, खून, सूरै दा मास ते उनें चीजे गी जिनैगी अल्लाह दे सिवा कुसै होरस आस्तै नामजद (मनोनीत)¹ करी दित्ता गेदा होए, रूहाम (नखिदध) कीता गेदा ऐ पर जो शख्स (इनें चीजे दे इस्तेमाल आस्तै) मजबूर होई जा ते ओह नां ते कनून दा मकाबला करने आहला होए ते नां हदद शा अगें लंघने आहला होए, उस पर (आस्तै) कोई गुनाह नई। अल्लाह यकीनन बौहत बखशने आहला (ते) बार-बार रैह्म करने आहला ऐ ॥ 174 ॥

जो लोक उस (तलीम) गी छपालदे न जो अल्लाह नै (अपनी) कताब च उतारी ऐ ते उसदे बदले च थोढ़ा-हारा² मुल्ल लैदे न ओह अपने दिड्डे च सिर्फ अग भरदे न ते क्यामत आहलै रोज अल्लाह नां ते उंदे कनै गल्ल-बात करग ते नां गै उनें गी पवित्र ठरहाग ते उंदे आस्तै दर्दनाक अजाब (निश्चत) ऐ ॥ 175 ॥

इयै ओह लोक न जिनें हदायत गी छोड़ियै गुमराही गी ते बख्शाश गी छोड़ियै अजाब गी अपनाया ऐ। इस आस्तै अगी (दे अजाब) पर उंदा सबर करना बड़ा गै रूहानगी आहला ऐ ॥ 176 ॥

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كَلُّوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَاشْكُرُوا لِلَّهِ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿١٧٣﴾

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَحَمَ الْخُزَيْرِ وَمَا أَهَلَ بِهِ لِغَيْرِ اللَّهِ فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٧٤﴾

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ الْكِتَابِ وَيَشْتُرُونَ بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَئِكَ مَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ إِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧٥﴾

أُولَئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الضَّلَالََةَ بِأَهْلِيهِمْ وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ فَمَا أَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿١٧٦﴾

1. मूल शब्द 'उहिल्ला' दा अर्थ ऐ उच्चे सुरै च किश गलाना। मुहावरे च एह शब्द पशु जां कुसै होर नैमत दे बारे च अल्लाह जां कुसै देवता दा नांऽ पुकारने आस्तै बी बोल्लेआ जंदा ऐ। इस आयत च अल्लाह नै गलाए दा ऐ जे ऐसी चीजे दा प्रयोग रूहाम ऐ जिंदा पर अल्लाह दे सिवा कुसै दूए दा नांऽ लैता गेदा होए चाहे ओह चढ़ावा गै की नई होए जां उस पर ज'बा करदे मौके कुसै होर अराथ्य दा नांऽ लैता गेआ होए।
2. इस्तेमाल एह अर्थ नई जे मते मुल्ल लैना ठीक न बल्के अर्थ एह ऐ जे संसारक माया भामें ओह ठेरें दे ढेर होए ओह इस नुकसान ते अपराध दे बदले च थोड़ी ऐ।

एह (अजाब) इस करी होग जे अल्लाह नै इस कताब (कुरआन) गी सच्च पर (अधारत) उतारे दा ऐ ते जिनें लोकें इस कताब दे बाँरे च इखल्लाफ कीता ऐ ओह यकीनन परले दरजे दी दुश्मनी (अदावत) च पेदे न ॥ 177 ॥ (रुकू 21/5)

थुआड़ा पूर्व ते पच्छम पासे मूह करना कोई बड्डी नेकी नेई ऐ, पर कामिल नेक ओह आदमी ऐ जो अल्लाह, आखरत, फरिश्तें, ईश्वरी कताब ते सारे नबियें पर ईमान रक्खै ते उस (अल्लाह) दे प्रेम दी ब'जा करी रिश्तेदारें, जतीमें, गरीबें, मसाफरें ते मंगने आहलें ते इंदे अलावा गुलामें (दी अजादी) आस्तै अपना धन देऐ ते नमाज गी कायम रक्खै ते जकात देऐ ते अपने बा'यदे गी, जिसलै बी ओह (कोई) बा'यदा करी लैन, उसी पूरा करने आहले ते (खास कर) तंगी, बमारी च ते युद्ध बेलै धीरज शा कम्म लैने आहले (कामिल नेक) न। इय्यै लोक न जो (अपने कथन च) सच्चे साबत होए न ते इय्यै लोक कामिल (पूरी चाल्ली) संयमी न ॥ 178 ॥

हे लोको! जो ईमान ल्याए ओ! कतल कीते गेदे लोकें बाँरे बराबर दा बदला लैना थुआड़ा फर्ज ठरहाया गेदा ऐ। जेकर (कातल) अजाद¹ (मड़द) होऐ तां उसी अजाद (कातल शा) ते जेकर (कातल) गलाम होऐ तां उसी गलाम (कातल) शा ते जेकर (कातल) जनानी होऐ

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ۗ^ط
وَ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰخْتَلَفُوْا فِي الْكِتٰبِ لَفِي
شِقَاقٍ بَعِيْدٍ ۙ

كَيْسَ الْبِرَّانِ تَوَلَّوْا وُجُوْهَكُمْ قَبْلَ
الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَكِنَّ الْبِرَّ مِنْ اٰمَنَ
بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ
وَ النَّبِيِّۦنَ ۚ وَ اٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهِ ذَوٰى
الْقُرْبٰى وَ الْيَتٰمٰى وَ الْمَسْكِيۦنَ وَ الْاٰثِرَ
السَّبِيۡلِ ۗ وَ السَّالِيۦنَ وَ فِى الرِّقَابِ ۙ
وَ اَقَامَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَى الزَّكٰوةَ ۙ وَ الْمُؤَفَّقُوۦنَ
يَعْتَدُهُمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۙ وَ الصَّيْرِيۦنَ فِى
الْبَاسِ ۙ وَ الضَّرَآءِ وَ حِيۦنَ الْبَاسِ ۙ^ط
اُو۟لٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ۗ وَ اُو۟لٰٓئِكَ
هُمُّ الْمُتَّقُوۦنَ ۝۷۸

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَتَبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصَ
فِى الْقَتْلِ ۗ الْحَرُّ بِالْحَرِّ وَ الْعَبْدُ بِالْعَبْدِ
وَ الْاُلٰٓئِىُّ بِالْاُلٰٓئِى ۗ فَمَنْ عَفٰى لَهُ مِنْ اٰخِيْهِ

1. इसदा मतलब एह ऐ जे जेकर कोई अजाद मड़द कुसै दी हत्या करी देऐ तां मारेआ गेदा भामें अजाद मड़द होऐ जां अजाद जनानी होऐ, भामें दास होऐ जां दासी, बदले च उससे अजाद हत्यारे दी हत्या कीती जाग। इससे चाल्ली जेकर हत्यारा कोई दास होऐ तां उससे दास हत्यारे कन्नै बदला लैता जाग ते जेकर जनानी अजाद जां दासी हत्यारन होऐ तां उससे हत्यारन कन्नै बदला लैता जाग।

तां उसी (कातल) जनानी शा, पर जिस (कातल) गी उसदे भ्रा5 पासेआ किश (जरमान्ना) माफ करी दिता जा तां (सुर्गबासी दा बारस यानी उत्तराधिकारी बाकी जरमान्ने गी सिर्फ) मनासब ढंगै कन्नै लेई सकदा ऐ ते (कातल पर) मनासब ढंगै कन्नै (बाकी जरमान्ना) उसी अदा करी देना बाजब ऐ। एह थुआड़े रब्ब पासेआ रिआत ते रैहमत ऐ। पही जो शख्स इस (हुकम) दे बा 'द बी ज्यादती करै ओहदे आस्तै दर्दनाक अजाब (निश्चत) ऐ ॥ 179 ॥

हे अकलमंदो! थुआड़े आस्तै बदला¹ लैने च जिंदगी (दा समान) ऐ (ते एह हुकम इस आस्तै ऐ) जे तुस बची जाओ ॥ 180 ॥

जिसलै तुंदे चा कुसै पर मौती दा समां आई जा तां जेकर ओह (मरने आहला) मता-सारा² माल छोड़ी जा तां माता-पिता³ ते करीबी रिश्तेदारें दे नांउ अच्छी गल्लै दी बसीहत करी जाना थुआड़ा फर्ज ठहराया गेदा ऐ। (एह गल्ल) संयमियें आस्तै जरूरी ऐ ॥ 181 ॥

شَيْءٌ فَاتَّبِعْ بِالْمَعْرُوفِ وَأَدِّ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ ۗ ذَلِكَ تَخْفِيفٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ۗ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧٩﴾

وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَوةٌ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٨٠﴾

كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِنْ تَرَكَ خَيْرًا ۗ الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ ۗ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ ﴿١٨١﴾

1. मूल शब्द 'किसास' दा अर्थ ऐ बदला लैना। भाव एह ऐ जे कुसै शख्स कन्नै ऊऐ ब्यहार कीता जा जो उसनै दूए कन्नै हत्या करने जां जख्मी करने आस्तै कीते दा होऐ यानी उस शख्स कन्नै ओहदे कर्म मताबक ऊऐ नेहा बरताऽ कीता जा। (ताजुल उरूस) इस ज'गा ऐसे शख्स दी स'जा दा बर्णन ऐ जो जानी-बुझियें दूए दी हत्या करदा ऐ। इत्थें सरकार गी जिम्मेदार ठहराए दा ऐ जे ओह प्रजा दे जान-माल दी रक्खेआ करै।
2. मूल शब्द ख़ैर दा अर्थ सधारण धन बी ऐ ते मता-सारा माल बी। इस ज'गा आयत दे प्रसंग शा पता लगदा ऐ जे इत्थें अर्थ मता-सारा धन ऐ।
3. इस आयत दे प्रसंग शा साफ स्पष्ट ऐ जे इत्थें युद्ध दा बर्णन ऐ ते एह दस्सेआ गेदा ऐ जे जिसलै कोई मनुक्ख युद्ध आस्तै कुसै भ्यंकर थाहरै पासै जा ते ओहदे कश मता-सारा धन बी होऐ तां उसी अपने नजदीकी सरबंथियें ते रिश्तेदारें दे नांउ बसीहत करी देनी लोड़दी जे मेरे बा'द 'मारूफ' यानी मनासब ढंगै कन्नै मेरी धन-दौलत दा बटवारा होऐ। 'मारूफ' दा अर्थ बरासत दा अनुदेश (कनून) ऐ यानी पवित्र कुर'आन दे दस्से गेदे कन्नै मताबक उसदी जैदाद दा बटवारा होऐ। इस्सै चाल्ली किश अधिकार ऐसे न जो बरासत दे हुकमं शा बाहर न जिनेंगी विधान दे मताबक ब्यान ते नेई कीता गेदा पर उनेंगी धार्मिक, नैतक ते अध्यात्मक रूपै च सराहया गेदा ऐ। उंदे आस्तै इस्लामी शरीअत नै ज़ीये हिस्से तक बसीहत करने दा द्वार खु'ल्ला रक्खे दा ऐ। इस आस्तै इस थाहरै पर उनें गल्लें गी पूरा करने पासै ध्यान दुआया गेदा ऐ।

पर जो शख्स इस (बसीहत) गी सुनने दे बा'द बदली¹ देरे तां उस दा गुनाह सिर्फ उनेंगी गै होग जो उसी बदली देन। अल्लाह यकीनन खूब सुनने आह्ला (ते) बौहत जानने आह्ला ऐ ॥ 182 ॥

फी जो शख्स कुसै बसीहत करने आहले कन्नै पक्खपात जां पाप होई जाने करी डरै ते उंदे बशकार सु'ला² कराई देरे तां फी उसी कोई पाप नेई लगदा। अल्लाह यकीनन बौहत बख्शने आह्ला (ते) बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 183 ॥ (रुकू 22/6)

हे ईमान आहनेने आहले लोको! थुआड़े आस्तै रोजे रक्खना उससै चाल्ली जरूरी ठरहाए गेदे न जिस चाल्ली उनें लोकें आस्तै जरूरी ठरहाए गेदे हे जो तुंदे शा पैहलें होई चुके दे न तां जे तुस (अध्यात्मक ते इखलाकी कमजोरियें शा) बचो ॥ 184 ॥

(इस आस्तै तुस रोजे रक्खो) एह गिनती दे किश रोज न ते तुंदे चा जो शख्स रोगी होऐ, मसाफर होऐ तां उसी दूर दिनें च गिनती पूरी करनी होग ते उनें लोकें आस्तै जो इस³ (रोजे रक्खने) दी शक्ति नेई रखदे होन (आर्थक

فَمَنْ بَدَّلَهُ بَعْدَ مَا سَمِعَهُ فَأَنَّمَا آثَمَهُ عَلَى الَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿۱۸۲﴾

فَمَنْ خَافَ مِنْ مَوْصٍ جَنَفًا أَوْ إِثْمًا فَأَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿۱۸۳﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كَتَبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامَ كَمَا كَتَبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿۱۸۴﴾

أَيَّامًا مَعْدُودَاتٍ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِنْ أَيَّامٍ أُخَرَ وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَهُ فِدْيَةٌ

1. 'बदली देने' बारै एह संकेत दिता गेदा ऐ जे जिसलै मरने आह्ला एह बसीहत करी जा जे उसदी जैदाद दा बटवारा इस्लामी शरीअत दे मताबक कीता जा ते फही जेकर कोई शख्स उसदे उलत (खलाफ़) किश तबदीली करग तां ऊऐ पापी होग।
2. बसीहत करने आहले ते उसदे रिश्तेदारें च समझोता कराई देऐ जिनेंगी नुकसान पुजाने जां उनेंगी नजरअंदाज करी देने दा उसदा बचार होऐ जां ऐसे शख्स जिंदे बारै बसीहत ऐ उनेंगी आपसी समझोते राहें राजी करी देऐ जे ओह बसीहत दे होंदे होई बी इक-दूर गी उसदा हिस्सा देई देन ते एह बी होई सकदा ऐ जे जेकर कोई शख्स अपनी जैदाद दे त्रीये हिस्से दी बसीहत करी जा, पर उसदे रिश्तेदारें दी गिनती इन्नी ज्यादा होऐ जे बाकी जैदाद चा उनेंगी थोड़ा-हारा हिस्सा मिलदा होऐ तां ऐसी हालत च बसीहत च तब्दीली करोआई दिती जा तां कोई दोश नेई होंदा।
3. इस आयत दा भाव एह ऐ जे ओह लोक जिंदा शरीरक बल घटी गेदा होऐ जां आखो जे नश्ट होई गेदा होऐ ते जेकर ओह रोजे नेई रक्खन तां समर्थ होने दी शर्ता पर इक गरीब दा खाना दान देई देआ करन।

शक्ति होने पर) इक गरीबै दा खाना देना जरूरी ऐ ते जो शख्स पूरी चाल्ली फरमांबरदार बनियै अच्छे कर्म करग तां एह ओहदे आस्तै अच्छा होग ते जेकर तुस इलम रखदे ओ तां (समझी सकदे ओ जे) थुआड़े रोजे रखना थुआड़े आस्तै बेहतर ऐ ॥ 185 ॥

रमजान दा महीना ओह (महीना) ऐ जिसदे बारे च कुरआन (करीम) नाजल कीता गोदा ऐ। (ओह कुरआन) जो सारे इंसानें आस्तै हदायत (बनाइयै भजेआ गोदा) ऐ ते जो खु'ल्ली दलीलां! अपने अंदर रखदा ऐ (ऐसियां दलीलां) जो हदायत पैदा करदे न ते ओहदे कन्नै गै (कुरआन च) अल्लाह दे नशान बी न इस आस्तै तुंदा च जो शख्स इस महीने गी (इस हालत च) दिक्खै (जे नां बमार होऐ नां मसाफर) उसी चाही दा ऐ जे ओह इस महीनै रोजे रखै ते जो शख्स² बमार होऐ जां सफर³ च होऐ तां ओहदे आस्तै दूए ध्याड़ें तदाद पूरी करनी बाजब होग। अल्लाह थुआड़े आस्तै असानी चांहदा ऐ ते थुआड़े आस्तै तंगी नेई चांहदा, ते (एह हुकम उसनै इस आस्तै दिते दा ऐ जे तुसैं गी तंगी मसूस नेई होऐ ते) तां जे तदाद गी पूरा करी लैओ ते इस (गल्ला) पर अल्लाह दी बड़ेआई करो जे उसनै तुसेंगी हदायत दित्ती दी ऐ ते तां जे तुस (उसदे) शुकरगजार बनो ॥ 186 ॥

طَعَامٍ وَسَكِينٍ ۖ فَمَنْ تَطَوَّعَ حَيْرًا فَهُوَ
حَيْرٌ لَهُ ۗ وَأَنْ تَصُومُوا حَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ
كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٥﴾

شَهْرٍ مَّصَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ
هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَى
وَالْفُرْقَانِ ۗ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ
فَلْيَصُمْهُ ۗ وَمَنْ كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ
فَحِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ
الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۗ
وَتَسْكُمُوا الْعِدَّةَ وَتُكْفِّرُوا وَاللَّهُ عَلَى مَا
هَدَيْتُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٨٦﴾

1. इस दा अर्थ एह ऐ जे संसार च मते-हारे दार्शनक ते विज्ञानक बी संसारक युक्तियां रखदे न जिंदे राहें ओह सिर्फ संसारक गल्लां पेश करियै लोकें गी गुमराही पासै लेई जंदे न, पर पवित्र कुरआन दियां युक्तियां हदायत दिंदियां न। जो ब्यर्थ जां मकसद-हीन नेई होंदियां न।
2. यानी स्थाई रोगी जां स्थाई रोगी आंगर नेई हों।
3. ऐसा शख्स जो सफर पर होऐ ते नरोआ होऐ, स्थाई रोगी बी नेई होऐ तां ओहदे आस्तै दूए दिनें च रोजे रक्खियै गिनती पूरी करनी जरूरी ऐ।

ते (हे रसूल!) जिसलै तेरे शा मेरे बंदे मेरे बाँरे पुच्छन तां (तू जवाब दे जे) अ'ऊं (उंदे) कच्छ (गै) आं। जिसलै दुआऽ करने आहला मिगी पकारे तां अ'ऊं उसदी दुआऽ कबूल करना। इस आस्तै चाही दा ऐ जे ओह (दुआऽ करने आहले बी) मेरे हुकम गी पूरा करन ते मेरे पर ईमान ल्यौन तां जे ओह हदायत पान ॥ 187 ॥

وَإِذْ أَسَأَلْتُكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۗ^ط
أَجِيبْ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَا ۗ^ل
فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِلَعَلِّهِمْ
يَرْشُدُونَ ﴿١٨٧﴾

तुसेंगी रोजा रक्खने दी रातीं च अपनी लाड़ियें कश' जाने दी अजाजत ऐ। ओह थुआड़े आस्तै इक (किसमै दा) लबास^न न ते तुस उंदे आस्तै इक (किसमै दा) लबास ओ। अल्लाह गी पता ऐ जे तुस अपने आपै कनै अयाऽ^क करदे हे। इस आस्तै उसने तुंदे पर किरपापूर्ण ध्यान दिता ते थुआड़ा (इस हालत दा) सुधार करी दिता। इस आस्तै हून तुस (बिना सोचे) उंदै कश जाओ ते जे किस अल्लाह नै थुआड़े आस्तै (निश्चत) कीते दा ऐ उसी दूंडो ते खाओ-पिय्यो। इत्थें तक जे तुसेंगी सवरे दी सफेद धारी स्याह धारी शा अलगा नजरी औन लागै। इस दे बा'द (सवरे शा) रातीं तगर रोजें गी पूरा करो ते जिसलै तुस मस्जिदें च मोअतकफिफ होओ (ध्यान मगन होइयै ब'वो) तां उंदे (यानी लाड़ियें) कश नैई जाओ। एह अल्लाह दियां (निश्चत कीती दियां) हद्दां न। इस आस्तै तुस इंदे लागै (बी) नैई जाओ। अल्लाह इस्से चाल्ली लोकें आस्तै अपने हुकम ब्यान करदा ऐ तां जे ओह (हलाकतें/सर्वनाश थमां) बचे दे रौहन ॥ 188 ॥

أَحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ إِلَىٰ
نِسَائِكُمْ ۗ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسٌ
لَّهُنَّ ۗ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَاوْنَ
أَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۗ^ح
فَالَّذِينَ بَاشِرُوهُنَّ وَابْتَعُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ
لَكُمْ وَكَلُوا وَأَشْرَبُوا حَتَّىٰ يَسْبَيْنَ لَكُمْ
الْحَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْحَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ
الْفَجْرِ ۗ ثُمَّ أَتَمُّوا الصِّيَامَ إِلَىٰ اللَّيْلِ ۗ وَلَا
تُبَاشِرُوهُنَّ وَأَنْتُمْ عَكْفُونَ ۗ فِي
الْمَسْجِدِ ۗ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا
تَقْرُبُوهَا ۗ كَذَلِكَ يَبَيِّنُ اللَّهُ لِيَتَّقُونَ ﴿١٨٨﴾

1. मक्का आहलें दा बचार हा जे रोजा-दार शख्स गी रातीं बी अपनी लाड़ी कनै संभोग करना बरजत ऐ। इत्थें इस शंका दा समाधान कीता गेदा ऐ।
2. लबास यानी भेश-भूशा दा एह अर्थ ऐ जे खसमै दे होंदे होई लोक लाड़ी पर ते लाड़ी दे होंदे होई खसमै पर अलजाम लाने शा डरदे न। इस आस्तै खसम ते लाड़ी इक-दूए आस्तै लबास न। यानी इक-दूए दी रक्खेआ करदे न।
3. इस्लाम दे शुरू च किस लोकें दा बिचार हा जे रोजें आहले दिनें दी रातीं गी बी उनें अपनी लाड़ियें कश नैई जाना चाही दा ते इस चाल्ली बिला-ब'जा गै ओह अपने-आपै गी कश्च च पांदे रौहदे हे। इस ज'गा दस्सेआ गेदा ऐ जे थुआड़ा एह बचार ठीक नैई। असें शरीअत दा हुकम दस्सी दिता ऐ जे रमजान दे म्होने दी रातीं बेले अपनी जनायियें कश जाना तुंदे आस्तै जायज ऐ ते उसदी मनाही नैई ऐ।

ते तुस अपने¹ (भ्राएं दे) माल आपस च (मिलियै) झूठ (ते फरेब/धोखे) राहें नेई खाओ ते नां उस धन गी (इस मकसद कनै) हाकमें कश लेई जाओ तां जे तुस लोकें दे धनै दा किश हिस्सा जानी-बुञ्जी नजायज तौरा पर हजम करी जाओ ॥ 189 ॥ (रुकू 23/7)

وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِإِطْلٍ
وَتَدْلُوا بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا فَرِيضًا
مِّنْ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ﴿١٨٩﴾

ओह तेरे शा चनें दे बारे सुआल पुछ्दे न। तूं आखी दे, एह लोकें (दे सधारण कर्म) ते हज्ज दे समे दी जानकारी हासल करने दा साधन न। ते श्रेष्ठ नेकी एह नेई ऐ जे तुस घरें च पिछ्बाड़े² रस्तै दाखल होओ बल्के कामिल नेक ओह शख्स ऐ जो संयम अखत्यार करै ते (तुस) घरें च उंदे दरोआजें राहें दाखल होआ करो ते अल्लाह दा संयम अखत्यार करो तां जे तुस कमायाब होई जाओ ॥ 190 ॥

يَسْئَلُونَكَ عَنِ الْإِهْلَةِ ۗ قُلْ هِيَ مَوَاقِيتُ
لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ۗ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا
الْبَيْوتَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنْ
اتَّقَى ۗ وَأَتُوا الْبَيْوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا ۗ وَاتَّقُوا
اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٩٠﴾

ते अल्लाह दे रस्ते च उनें लोकें कनै जंग करो जो तुंदे कनै जंग करदे न ते (कुसै पर) ज्यादती नेई करो (ते याद रक्खो जे) अल्लाह ज्यादती करने आहलें कनै कदें बी प्यार नेई करदा ॥ 191 ॥

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يَفْقَهُوْنَكُمْ
وَلَا تَعْتَدُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿١٩١﴾

ते जित्थें बी उनें (न्हक्क लड़ने आहलें) गी दिक्खो, उनेंगी कतल करो ते तुस (बी) उनेंगी उस ज'गा थमां कड्डी देओ जित्थुआं उनें तुसें गी कड्ढेआ हा ते (एह) फ़िल्ता

وَأَقْتُلُوهُمْ حَيْثُ تَفْقَهُوْهُمْ
وَأَخْرِجُوهُمْ مِّنْ حَيْثُ أَخْرَجُوْكُمْ

1. पवित्र कुरआन अक्सर कौमी जिंदगी दे उत्थान पर जोर दिंदा ऐ। इससै लेई आम जनता ते देश नासियें ते अपनी कौम दी चीजें गी अपनी चीजां आखदा ऐ तां जे इस पासै संकेत करियें दस्सै जे जो आदमी अपनी कौम दे लोकें गी नुकसान पुजांदा ऐ आखो ओह अपने आपै गी नुकसान पुजांदा ऐ। इस थाहरा पर धन दा अर्थ ऐ मानव-समाज दा धन, पर उप्पर लिखे दे सिद्धांत पासै ध्यान दुआने आस्तै उसी अपना धन गलाए दा ऐ।
2. अरब देश दे लोक जिसलै हज्ज आस्तै निकलदे न तां कोई जरूरत बनी औने पर घरे गी परताना पौंदा ऐ ते दरोआजा टपने दी ज'गा कंधां टपिये घरे च दाखल होंदे हे। इस आयत च इस गल्ला दा खंडन कीता गेदा ऐ जे घरे च कंध टपिये दाखल होना कोई नेकी जां पुनू कम्म नेई ऐ? नेक कम्म ते इक अध्यात्मक गल्ल ऐ। इस आस्तै हर गल्ल करने आस्तै मनासब रस्ता अपनाना चाही दा।

(फसाद) कतल शा (बी) ज्यादा सख्त (नुकसानदेह) ऐ ते तुस उंदे कनै मस्जिदे हराम दे आसै-पासै (उस बेलै तक) जंग नेई करो जिच्चर ओह (आपू) तुंदे कनै जंग (दी शुरुआत) नेई करन ते जेकर ओह तुंदे कनै (उत्थें बी) जंग करन तां तुस बी उनेंगी कतल करो, उनें मुन्करें दी इय्यै स'जा ऐ ॥ 192 ॥

पही जेकर ओह बाज आई जान तां अल्लाह यकीनन बड़ा बख्शने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 193 ॥

ते तुस उंदे कनै उस बेलै तगर जंग करो जे कोई फ़िल्ना (फसाद) बाकी नेई र'वै ते धर्म¹ अल्लाह आस्तै गै होई जा। पही जेकर ओह बाज आई जान तां (याद रक्खो जे) जालमें दे सिवा कुसै दी पकड़ जायज नेई ॥ 194 ॥

इज्जत आहला म्हीना इज्जत आहले म्हीने दे बदले च ऐ ते सब (गै) इज्जत आहली चीजें (दी बेजती) दा बदला लैता जंदा ऐ। इस आस्तै जो शख्स तुंदे पर ज्यादाती करै तुस बी ओहदे कनै (उसदी) ज्यादाती दा जिस चाल्ली जे उसनै तुंदे पर ज्यादाती कीती दी होऐ, बदला लेई लैओ। ते अल्लाह दा संयम अखत्यार करो ते समझी लैओ जे अल्लाह यकीनन संयमियें कनै (होंदा) ऐ ॥ 195 ॥

ते अल्लाह दे राह च (माल ते जान) खर्च करो ते अपने गै हत्थें (अपने आपै गी) हलाकत च नेई पाओ ते परोपकार शा कम्म लैओ। अल्लाह परोपकार करने आहलें कनै यकीनन प्यार करदा ऐ ॥ 196 ॥

وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۗ وَلَا تَقْتُلُوهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّى يُفْتَلُوا فِيهِ ۗ فَإِنْ قُتِلُوا فَمَنْ قَتَلَكُمْ فَاقْتُلُوهُمْ ۗ كَذَلِكَ جَزَاءُ الْكٰفِرِينَ ۝

فَإِنْ اتَّهَمُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

وَقِيلُوا لَهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ فِتْنَةً وَيَكُونَ الدِّينُ لِلَّهِ ۗ فَإِنْ اتَّهَمُوا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ ۝

الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرْمَتُ قِصَاصٌ ۗ فَمَنْ اعْتَدَى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدَى عَلَيْكُمْ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۝

وَأَنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ ۗ وَأَحْسِنُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝

1. 'धर्म अल्लाह आस्तै गै होई जा' दा एह अर्थ ऐ जे धर्म ग्रँहन करना सिर्फ अल्लाह दी खुशी आस्तै होई जा ते धर्म च दखल अंदाजी जां बल प्रयोग जां दमन दी नीति दा प्रयोग नेई कीता जा। जबर करना कुसै आस्तै जायज नेई। इस आयत च दस्सेआ गोदा ऐ जे मुसलमानें दी सुरक्षा आस्तै उंदे युद्धें दा उदेश धार्मिक अजादी दी स्थापना ऐ। इस्लाम च धर्म दे नाँउ पर दमन जां बल-प्रयोग दी मनाही ऐ।

ते हज्ज ते उम्र: अल्लाह (दी खुशी) आस्तै पूरा करो। पही जेकर तुस (कुसै ब'जा करी हज्ज ते उम्र: शा) रोकी दित्ते जाओ तां जो कुरबानी (बलि) उपलब्ध होऐ (ज'बा करो) ते जिन्ना चिर जे कुरबानी अपनी स्हेई (निश्चत) ज'गा तगर नेई पुज्जी जा अपना सिर नेई मुनाओ¹। ते जो कोई तुंदे चा बमार होऐ जां अपने सिरै (दी बमारी दी ब'जा) करी उसी तकलीफ (पुज्जा करदी) होऐ (ते ओह सिर मुनाई देऐ) तां ओहदे आस्तै इस ब'जा कारण रोजे रक्खना जां दान देना जां कुरबानी दे रूपै च किश फ़िद्यः² (बदला) देना (जरूरी) होग। पही जिसलै तुस अमन-अमान दी स्थिति च आई जाओ तां (उस बेलै) जो शख्स (ऐसे) हज्ज कनै (मलाइयै) उम्र: दा फायदा हासल करै तां उसी जो बी कुरबानी मिली सकै, ज'बा करी देऐ ते जो शख्स कुसै बी कुरबानी दी ताकत नेई रक्खदा होऐ (नेई देई सकदा होऐ तां ओहदे आस्तै) (हज्ज दे दिनें च) त्रै रोजे रक्खना जरूरी होग ते सत्त (रोजे) हे मुसलमानो! जिसलै तुस (अपने घरें गी) बापस (परतोई) आओ। एह पूरे दस्स होए। एह (हुकम) उस शख्स आस्तै ऐ जिसदे घरै-आहले मस्जिदे हराम दे लागै रौहने आहले नेई होन ते तुस अल्लाह दा संयम अखत्यार करो ते समझी लैओ जे अल्लाह दी स'जा यकीनन सख्त (होंदी) ऐ

॥ 197 ॥ (रुकू 24/8)

وَاتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ وَلَا تَخْلُقُوا زُرْعًا وَلَا تَسْلُقُوا الْهَدْيَ مَجْلَةً فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيضًا أَوْ بِإِذَىٰ مِنْ رَأْسِهِ فَفِدْيَةٌ مِنْ صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ فَإِذَا أُمِمْتُمْ^۱ فَمَنْ تَمَسَّ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ^۲ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامٌ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ إِذَا رَجَعْتُمْ تِلْكَ عَشْرَةٌ كَامِلَةٌ ذَلِكَ لِمَنْ لَمْ يَكُنْ أَهْلَهُ حَاضِرًا فِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿۱۹۷﴾

1. इस दा अर्थ एह ऐ जे जेकर हाजी बमारी कारण रोकेआ गेदा होऐ तां हाजी कुरबानी दे काबा पुज्जे तक सिरै दे बाल नेई करताऽ ते जेकर कोई बैरी हज्ज च रुकावट बनी जा तां हाजी जित्थें रोकेआ जा उर्थें गै कुरबानी दे जानवर गी ज'बा करी देऐ ते अपने सिरै दे बाल करताई लै।
2. पवित्र कुर'आन च त्रै ऊँ किसमें दा फ़िद्यः दस्सेआ गेदा ऐ ते उनेंगी असीमत कीता गेदा ऐ, पर हजरत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. नै इसी सीमत करदे होई उजर: दे पुत्र काब गी हुकम दिता जे अपने बाल करताई देऐ ते छें गरीबें गी खाना खलाऽ, जां इक बक्करा कुरबान करै जां त्रै रोजे रक्खै।

हज्ज (दे महीने सारें दे) जाने-पन्छाने महीने न। इस आस्तै जो शख्स उंदे च हज्ज (दा अरादा पक्का) करी लै (उसी चेता र वै जे) हज्ज (दे दिनें) च नां ते काम-वासना दी गल्ल, नां कोई ना-फरमानी ते नां कुसै चाल्ली दा झगड़ा करना (जायज) होग ते नेकी (दा) जो (कम्म) बी तुस करगे ओ अल्लाह (जरूर) उस (दे म्हत्तव) गी पन्छानी लैग ते सफर खर्च कनै लेई लै करा करो ते (याद रक्खो जे) बेहतर सफर खर्च संयम ऐ ते हे अकलमंदो! मेरा संयम अखत्यार करो ॥ 198 ॥

थुआड़े आस्तै (एह) कोई गुनाह (दी गल्ल) नेई जे (हज्ज दे दिनें च) तुस अपने रब्ब दी कुसै किरपा¹ गी पाने दी कोशश करी लैओ। पही जिसलै तुस अरफात² शा परतोओ ते मशअरे हराम³ कश आइयै अल्लाह गी चेता करो ते जिस चाल्ली उसनै तुसेंगी हदायत देई रक्खी दी ऐ (उसदे मताबक) उसी याद

الْحَجُّ أَشْهُرٌ مَّعْلُومَةٌ ۖ فَمَنْ فَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ۗ وَمَا تَفَعَّلُوا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمُهُ اللَّهُ ۗ وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ ۗ التَّمْوِيُّ ۖ وَالتَّمْوِيُّ يَأُولَى الْأَبْنَابِ ۝

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِنْ رَبِّكُمْ ۗ فَإِذَا أَقَضْتُمْ مِنْ عَرَفَاتٍ فَأذْكُرُوا اللَّهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۖ وَاذْكُرُوهُ كَمَا هَدَيْتُمْ ۗ وَإِنْ كُنْتُمْ

1. किश लोकें दा बिचार ऐ जे इत्थें फ़जल दा अर्थ बपार ऐ। साढ़े बिचार च एह गल्ल बी ठीक ऐ, पर फ़जल थमां सिर्फ बपार गै समझना इक खु ल्ले बिशे गी सीमत करी देना ऐ। असल च अज्ज इस्लाम गी जिस भ्यंकर बिपता दा सामना करना पवा दा ऐ। ओह एह ऐ जे संसार च चौनें पासें नास्तकता दा राज ऐ ते मुसलमान अपने आध्यात्मक ते नैतक थाहरे थमां खल्ल गिरी चुके दे न। उंदे दिलें च एह एहसास जागदा गै नेई जे ओह इस्लाम दे प्रचार आस्तै उस जोश ते उत्साह शा कम्म लैन जिस जोश कनै वैहले समे दे मुसलमानें कम्म लैता हा ते थोढ़े गै समे च उनें इस्लाम गी संसार भरे च फलाई दिता हा। इस आस्तै हज्ज दे व्योरे दे कनै फ़जल (किरपा) पाने दा प्रयास आखियै इस पासै ध्यान दुआया गेदा ऐ जे तुस इस महा-सम्मेलन शा किश दूर लाह बी लैने दी कोशश करा करो ते जिसी पाने दे बा'द मुसलमान अपमान दे गतै चा निकलियै त्रक्की दे शिखरे पर पुज्जी जान। इस्लाम दे प्रचार आस्तै बक्ख-बक्ख देसें दे प्रभावशाली ते प्रमुख लोकें दी मददी कनै ऐसियां जोजनां सोचियां जान जिंदे फल-सरूप अल्लाह दा फ़जल उतरे ते इस्लाम संसार च ग़ालिब आई जा।
2. 'अरफात' मक्का शैहरे दे उत्तर-पूर्व च 'मक्का' शा नौ मील ते 'मिना' शा छे मील दूर इक खु ल्ले मदान ऐ। जिल्लहज्ज दी नौ तरीकें गी सारे हाजी इस मदान च किट्टे होंदे न ते 'मिना' एह थाहर मक्का शा पूर्व त्रै मील दी दूरी पर स्थित ऐ। इत्थें अठमीं ते नौमीं जिल्लहज्ज दी तरीकें तक रुकियै पंज नमाजां पूरियां करने दा आदेश ऐ ते पही अरफात शा परतोने पर दसमीं ते ग्याहरमीं तरीके तक परतियै इत्थें रुकना पौदा ऐ।
3. 'मशअरे हराम' एह बी हज्ज दा थाहर ऐ जो अरफात ते मिना दे बिच्चा ऐ। अरफात शा बापसी पर हाजी लोक इत्थें रात गजारदे न। इसी 'मुज्दल्फः' दे नांउ कनै बी चेता कीता जंदा ऐ।

करो। ते इस शा पैहलें तुस सच्चें गै गुमराहें च हे ॥ 199 ॥

ते जित्थुआं लोक (बापस) परतोंदे रेह न, उत्थुआं गै तुस बी बापस परतोओ¹। ते अल्लाह शा (अपने पापें दी) माफी मंगो। अल्लाह यकीनन बौहत बखाने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 200 ॥

पही जिसलै तुस अपनी अबादत पूरी करी लैओ तां (बीते दे समे च) अपने बब्ब-दादें गो याद करने आंगर अल्लाह गी याद करो। जां (जेकर होई सकै तां) उस शा बी ज्यादा (दिलै दी प्रेरणा कनै) याद करो। ते किश लोक ऐसे न जो (इय्यै) आखदे रौहदे न जे हे साढ़े रब्ब! असेंगी इस दुनियां च अराम दे। ऐसे लोकें दा आखरत च किश बी हिस्सा नेई होंदा ॥ 201 ॥

ते उंदे चा किश लोक (ऐसे बी होंदे) न जो आखदे न जे हे साढ़े रब्ब! असेंगी (इस) दुनियां (दी जिंदगी) च (बी) कामयाबी² दे ते आखरत च (बी) कामयाबी (दे) ते असेंगी अग्गी दे अज़ाब शा बचाऽ ॥ 202 ॥

इय्यै (ओह लोक) न जिंदे आसतै उंदी (नेक) कमाई कारण (बदले दे रूपे च) इक बौहत बड्डा हिस्सा (निश्चत) ऐ ते अल्लाह (बौहत) जल्दी स्हाब³ चुकाई दिंदा ऐ ॥ 203 ॥

مَنْ قَبْلِهِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝

ثُمَّ اَفِضُوْا مِنْ حَيْثُ اَقَاصَ النَّاسِ
وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رّٰحِيْمٌ ۝

فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ
كَذِكْرِكُمْ اٰبَاءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ۗ فَمِنَ
النّٰسِ مَنْ يَقُوْلُ رَبَّنَا اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا
لَهُ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۝

وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُوْلُ رَبَّنَا اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا
حَسَنَةً وَفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا
عَذَابَ النَّارِ ۝

اُوَلٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ۗ وَاللّٰهُ
سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝

1. इस्लाम नै इस आदेश च मुन्करें दे रीति-रवाजें शा बक्ख कोई हुकम नेई दिता, बल्के उंदे गै प्रचलत रीति-रवाजें गी हजरत इब्राहीम दे रीति-रवाज दस्से दा ऐ ते उनेंगी गै जारी रक्खे दा ऐ।
2. मूल शब्द 'अल् हसनात' दा अर्थ विजय यानी सफलता बी होंदा ऐ। (ताजुलरूस) ते उस दा दूआ अर्थ ऐ दिलै गी खुश करने आहली नैमत। (मुफरदात)
3. मूल शब्द स्हाब दा अर्थ लेखा लैना ते लेखा देना दर्में न। इस थाहरा पर इस्सै पासै संकेत ऐ जे सदाचारी लोकें गी इस्सै जीवन च कन्नो-कन्नी सिला मिलदा रौहग की जे अल्लाह नेई चाहदा जे भले लोकें गी दिते जाने आहले इनाम क्यामत तक रोके जान। सुगै च बी उनेंगी इनाम प्राप्त होंगन ते इस लोक च बी अल्लाह उनेंगी पुरस्कार देग।

ते (इनें) गिनती दे निश्चत दिनें च अल्लाह गी याद करो। पही जो शख्स तौल करै (ते) दौं दिनें' च (गै) बापस उठी जा तां उसी कोई पाप नेई लगदा ते जो शख्स पिच्छें रेही जा, उसी बी कोई पाप नेई लगदा। एह बा'यदा उस शख्स आस्तै ऐ जो संयम धारण करै ते तुस अल्लाह दा संयम धारण करो ते समझी लैओ जे इक दिन तुसें सारे गी किट्ठा करियै उस (अल्लाह) दे सामने लेता जाग ॥ 204 ॥

ते किश लोक ऐसे बी होंदे न जिंदी गल्लां इस संसारक जीवन दे बारे तुगी बौहत चंगियां लगदियां न ते ओह (गल्लां करदे मौके) अल्लाह गी उस (शरधा) पर जो उंदे दिलै च ऐ, गुआह् ठरहांदे जंदे न। हालांके ओह सारे झगड़ालुएं शा बद्ध झगड़ालू होंदे न ॥ 205 ॥

ते जिसलै हाकम बनी जंदे न तां फसाद फलाने, खेती दे मख्जूक (मानव जाति) दा बिनाश करने दे बिचार कनै सारे देश च दौड़दे फिरदे न। हालांके अल्लाह फसाद गी पसंद नेई करदा ॥ 206 ॥

ते जिसलै उनेंगी गलाया जा जे अल्लाह शा डरो तां उनेंगी अपनी मान-मर्यादा (दी आडु) पाप करने तै उकसांदी ऐ। इस आस्तै इस चाल्ली दे लोके लेई नरक गै नवास-स्थान ऐ ते ओह यकीनन बौहत बुरा ठकाना ऐ ॥ 207 ॥

وَأَذْكُرُ وَاللَّهِ فِي أَيَّامٍ مَّعْدُودَاتٍ ۖ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَأَخَّرَ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ لِمَنِ الْاَثْمُ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٠٤﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيُشْهَدُ اللَّهُ عَلَى مَا فِي قَلْبِهِ ۖ وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿٢٠٥﴾

وَإِذَا تَوَلَّى سَعَىٰ فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفُسَادَ ﴿٢٠٦﴾

وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْإِثْمِ فَحَسْبُ جَهَنَّمَ ۗ وَلَيْسَ الْمُهَادَّ ﴿٢٠٧﴾

1. 'मुजदल्फा' थाहरै पर बापस परतोने पर मिना च त्रै दिन ठैहरने दा आदेश ऐ, पर दौं दिनें दे बा'द बी परतोने दी आज़ा ऐ। इस ज'गा इस्सै दा बर्णन ऐ। एह जरूरी नेई जे जेकर त्रै दिन रुके तां चौथै रोज बी उख्यें रुकना पौग बल्के अर्थ एह ऐ जे दौं दिनें च बी परतोई सकदा ऐ ते त्रीयै रोज बी बापस आई सकदा ऐ।

ते किश लोक ऐसे बी होंदे न जो अल्लाह दी खुशी हासल करने आस्तै अपनी जानू गी बेची (गै) दिंदे न ते अल्लाह अपने ऐसे शरधालुएं पर बौहत देआ करने आहला ऐ ॥ 208 ॥

हे लोको! जो ईमान ल्याई चुके ओ तुस सारे दे सारे आज्ञाकारी बनी जाओ ते शतान दे पैरे पर नेई चलो। ओह यकीनन थुआड़ा जाहरा-बाहरा दुश्मन ऐ ॥ 209 ॥

ते जेकर इस गल्ला दे होंदे होई बी जे जेकर थुआड़े कश जाहरा-बाहरा नशान आई चुके दे न, तुस डगमगाई गे तां समझी लैओ जे अल्लाह यकीनन गालिब (ते) हिक्मत आहला ऐ ॥ 210 ॥

ओह (लोक) इस दे सिवा किस (गल्ला) गी बलगा करदे न जे अल्लाह उंदे कश बदलें दी छाया दे रूपै च आवै ते फरिश्ते बी औन ते गल्लै दा फैसला करी दिता जा की जे सारी गल्लां अल्लाह पासै गै ते फेरियां जंदिंयां न ॥ 211 ॥ (रुकू 25/9)

(जरा) बनी इस्राईल शा पुच्छो ते सेही जे असें उनेंगी किन्ने जाहरा-बाहरा नशान दिते हे ते जो शख्स अल्लाह दी कुसै नैमत गी बदली देऐ जिसलै जे ओह उसी मिली जा (ते ओह इस सचाई गी समझी चुके दा होऐ) तां ओह याद रक्खै जे अल्लाह बी सख्त¹ स'जा देने आहला ऐ ॥ 212 ॥

जिनें लोके इन्कार कीता ऐ उनेंगी संसारक जीवन खूबसूरत बनाइयै दस्सेआ गेदा ऐ ते

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْرِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ
مَرْصَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠٨﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ
كَآفَّةً وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوتِ الشَّيْطَانِ
إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٢٠٩﴾

فَإِن زَلَلْتُمْ فِرَّانَ بَعْدَ مَا جَاءَتْكُمْ
الْبَيِّنَاتُ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢١٠﴾

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي
ظُلُمٍ مِّنَ الْعَمَامِ وَالْمَلِكَةِ وَقُضِيَ
الْأَمْرُ ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٢١١﴾

سَلِّ بِنِي إِسْرَائِيلَ كَمَا آتَيْنَهُمْ مِّنْ آيَةٍ
بَيِّنَةٍ ۗ وَمَنْ يُبَدِّلْ نِعْمَةَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ
مَا جَاءَتْهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢١٢﴾

رُزِينًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا

1. इसदा एह अर्थ नेई जे अल्लाह दंड देने मौके सख्ती शा कम्म लेंदा ऐ बल्के इस दा एह अर्थ ऐ जे बंदे गी उसदा दंड सख्त गै सेही होंदा ऐ।

ओह ईमान लयौने आहलें कनै हासा-मजाक करदे न ते (इसदे मकाबले च) जिनें लोकें संयम धारण कीता ऐ ओह इनें इन्कार करने आहलें पर क्यामत आहलै रोज विजयी होंगन ते अल्लाह जिसी पसंद करदा ऐ उसी बे-स्हाब दिंदा ऐ ॥ 213 ॥

सारे लोक इक्कै ख्याल दे हे, फही अल्लाह नै नबियें गी शुध-समाचार देने आहला ते डराने आहला बनाइयै भेजेआ ते उंदे कनै सचाई पर अधारत कताब उतारी तां जे ओह (अल्लाह) लोकें च उनें गल्लें बाँरे फैसला करै जिंदे बाँरे उनें मत-भेद करी लैता हा ते (होआ एह जे) सिर्फ उनें लोकें जिनें गी ओह कताब दिती गेदी ही ते उंदे कश जाहरी-बाहरी नशान बी आई चुके दे हे, आपसी बिद्रोह ते फसाद कारण उस (कताब) बाँरे मत-भेद¹ शा कम्म लैता। इस आस्तै अल्लाह मोमिनें गी उस सच्च तगर लेई गेआ जेहदे बाँरे दूए लोकें मत-भेद शा कम्म लैता हा ते अल्लाह जिसी चांहदा ऐ सिद्धे रस्ते पर चलाई दिंदा ऐ ॥ 214 ॥

وَيَسْحَرُونَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هُمْ
اتَّقَوْا فَوَقَّعَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَاللَّهُ يَرْزُقُ
مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢١٣﴾

كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً فَبَعَثَ اللَّهُ
النَّبِيِّنَ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ وَأَنْزَلَ
مَعَهُمُ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ
فِيمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ ۗ وَمَا اخْتَلَفَ فِيهِ إِلَّا
الَّذِينَ أُوتُوهُ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمْ
الْبَيِّنَاتُ بَعْئِهَا يَتَّبِعُهُمْ فَهَدَى اللَّهُ الَّذِينَ
آمَنُوا لِمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِهِ ۗ
وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ
مُسْتَقِيمٍ ﴿٢١٤﴾

1. इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे नबी ते मत-भेद मटान औंदा ऐ, पर लोक अपने-अपने मत-भेदें गी उथें गै छोड़ियै ओहदें पिच्छें पेई जंदे न ते ऊऐ कौम सारें शा बद्ध उसदा बरोध करदी ऐ जिसदे हित आस्तै नबी दा अवतार होंदा ऐ। दूई कौमां उसदी गल्लें गी ज्ञान दा बिसे समझियै ओहदे चा रुचि प्रकट करदियां न ते कदें-कदें उसदी शिक्षा दी तरीफ बी करदियां, न, पर ओह जाति जेहदे आस्तै ओह शिक्षा ते कताब औंदा ऐ ओह बरोध ते ईरखा च इनी अगमें बधी जंदी ऐ जे उसी शिक्षा च कोई बी गुण नजरी नेई औंदा। अल्लाह आखदा ऐ जे बड़े अफसोस दी गल्ल ऐ जे जिनें लोकें दे हित आस्तै ओह ज्ञान-पूर्ण कताब आई ही ऊऐ लोक उसदे सारें शा बद्ध बरोधी बनी जंदे न। इथें दस्सेआ गेदा ऐ जे जिसलै कौम दे मते-सारे लोक कटर-बरोधी बनी जंदे न तां मोमिन जरूर गै लोकें दे बरोध दा नशाना बनी जंदे न ते उंदे पर घोर बिपता आई पौंदी ऐ। मोमिन जिसलै उस बिपता दी परीक्षा च कामयाब होई जंदे न तां अल्लाह उनेंगी उनें सारे इनामें दा हकदार बनाई दिंदा ऐ जो अल्लाह दी कताब गी स्वीकार करी लैने च सारी कौम आस्तै निश्चत हे। इन्कार करने आहलें हक्क गै कुरआन दा बरोध कीता, फलसरूप मोमिनें गी अत गै दुख झल्लना पे। इस आस्तै अल्लाह नै हुकम दिता जे ओह सारे इनाम जो सारी कौम आस्तै निश्चत हे मुट्ट-हारे मुसलमानें गी देई दिते जान ते कौम दे दूए लोकें गी उंदे जालम बनी जाने करी उंदे इनामें शा बंचत करी दिता जा।

क्या तुसें समझी लेदा ऐ जे बावजूद उसदे जे अजे तुं दे पर उनें लोकें जैसी (तकलीफ दी) हालत नेई आई जो तुं दे शा पैहलें होई चुके दे न, तुस जन्त च दाखल होई जागे ओ? उनेंगी तंगी (बी) पुज्जी ते तकलीफ (बी) ते उनेंगी खूब डराया बी गेआ तां जे (उस बेले दा) रसूल ते उसदे कनै (आहले) ईमान आहले (मोमिन) पुकारी उट्टन जे अल्लाह दी मदद कुसलै¹ औग। याद रखवो जे अल्लाह दी मदद यकीनन करीब (तौले गै मिलने आहली) ऐ ॥ 215 ॥

ओह तुगी सुआल करदे न जे केह खर्च करचै? तूं गलाई दे (जे) जो बी अच्छा² माल तुस खर्च करो, ओह थुआड़े माता-पिता, करीबी रिश्तेदारें, यतीमें, गरीबें ते मसाफरें

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُمْ مَثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ مَسَّهُمُ الْبَأْسَاءُ وَالصَّرَاءُ وَزُلْزَلُوا حَتَّى يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ مَتَى نَصُرَ اللَّهُ أَلَا إِنَّ نَصْرَ اللَّهِ قَرِيبٌ ﴿٢١٥﴾

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ قُلْ مَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ حَيْرٍ فَلِلَّوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبِينَ وَالْيَتَامَى وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا

1. इर्थे अल्लाह दी दार्शनिकता दी द्रिस्टी कनै उनें कश्टे ते बिपतें दा मर्म ते भेद दस्से दा ऐ जो नबियें ते मोमिनें गी झल्ला पाँदे न। अल्लाह नै गलाए दा ऐ जे जेकर अस चांहे दा उं दे पर कोई बी कश्ट जां बिपता नेई औन दिंदे, पर असें ऐसा नेई कीता बल्के बरोधियें पासेआ लगातर दुख ते कश्ट नबियें ते उं दे पर ईमान आहनने आहलें गी पुजदे रेह। इसदा अर्थ एह ऐ जे उं दे दिलें च प्रार्थना दी प्रेरणा जाग्रत र धै ते ओह साढ़े अग्गें झुके दे रोहन तां जे उं दे दिलें च अल्लाह दा प्रेम जागै ते जिसलै अल्लाह दी मदद चमत्कार दे रूपै च आवै तां उं दे ईमान च बाधा होऐ ते मुक्करें चा जो लोक सूझ-बूझ शा कम्म लैने आहले होन उनेंगी हदायत मिली सके। इस लेई जिसलै ऐसा होई जंदा ऐ तां पही अल्लाह आखदा ऐ जे लैओ! हून साढ़ी मदद आई गई ऐ ते ओह सारे इनाम उनेंगी देई दिंदा ऐ।
2. इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे - (क) दान देने आस्तै कोई सीमा निश्चत नेई। जिन्ना दान देने दी शक्ति होऐ उन्ना दान देई सकदे ओ। (ख) इस गल्ला दा ध्यान रखवेआ जा जे दान च जे किश बी दिता जा ओह साफ-सुची कमाई चा होऐ। (ग) दान च दिता जाने आहला धन चगे साधनें रहें कमाया गेदा होऐ ते शुद्ध होऐ जिसी लैने आहला खुशी-खुशी लेई लै। (घ) जेकर कोई शख्स गुज्ज लेइयै, चोरी नौ अत्याचार करियै दू दान लेई लै, चाहे ओह धन थोड़ा-हारा गै होऐ, पर दान अपनी नेक-सुची कमाई चा देऐ, तां बी ओह शख्स इस आज्ञा दा पालन करने आहला नेई होग, की जे तुरे साधनें रहें कमाया गेदा धन उसदे सारे माल गी दूशत बनाई दिंदा ऐ। इस आयत च एह बी संकेत कीता गेदा ऐ जे दान देना इन्ना कठन नेई जिन्ना उसी मनासब थाहरा पर खर्च करना। इस आस्तै दस्सेआ गेदा ऐ जे जो कुछ बी खर्च करो, सचेत होइयै खर्च करो ते ऐसे लोकें गी देओ जो सहेई मेहनें च मदद दे काबल होन। एह सिर्फ कुरआन मजीद दी गै बशोशता ऐ जे ओह थोड़े-हारे शब्दे च विशाल बिशे गी दस्सी दिंदा ऐ। इर्थे एह बी दस्सी दिता जे ल्हाल धन गै खर्च करो ते एह बी जे ओह माल शुद्ध ते पवित्र होऐ जिसी लैने आहला खुशी कनै लेई लै, ऐसा नेई जे फट्टी-पुरानी जुती जो किसै कम्मै दी नेई, दान च देई दिती जा जां कोई भुख्खा जिसी खाना-खाने दी तलब होऐ उसी सुक्का आटा देई दिता जा, जिसलै जे घर स्टूटी पक्की दी होऐ। एह सब किश दसिसयै एह बी स्पष्ट करी दिता जे फलाने-फलाने थाहरें पर खर्च करना ज्यादा उपयोगी ऐ। एह गल्ल चेतना रखनी चाही दी जे "केह खर्च कीता जा" बारे दान दिये शाखें बारे पुछना बी सरबधत होई सकदा ऐ यानी दान कुस बेलै ते कु नें लोकें गी देना चाही दा।

दा (पैहला) हक्क ऐ। ते जो बी नेक कम्म तुस करो अल्लाह उसी यकीनन चंगी चाल्ली जानदा ऐ ॥ 216 ॥

تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ﴿٢١٦﴾

(अपनी रक्खा आस्तै) जंग करना थुआड़ा फर्ज ठरहाया जंदा ऐ (ते) उस हालत च (फर्ज ठरहाया जंदा ऐ) जे ओह तुसेंगी पसंद नेई होऐ ते बिल्कुल ममकन ऐ जे तुस कुसै चीजै गी ना-पसंद करदे होओ हालांके ओह थुआड़े आस्तै बेहतर होऐ ते (एह बी) ममकन ऐ जे तुस कुसै चीजै गी पसंद करदे होओ हालांके ओह थुआड़े आस्तै दूई चीजें दी निसबत बुरी होऐ, एह अल्लाह जानदा ऐ, तुस नेई जानदे ॥ 217 ॥ (रुकू 26/10)

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كَرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسَىٰ أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسَىٰ أَنْ تُحِبُّوا شَيْئًا وَهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢١٧﴾

एह (लोक) तेरे शा इज्जत आहले म्हीने बाँरे यानी उस च जंग करने बाँरे सुआल पुछदे न। तू गलाई दे (जे) इस च जंग करना बाँहत बुरी गल्ल ऐ ते अल्लाह दे रस्ते शा रोकना ते उसदा (यानी अल्लाह दा) ते मस्जिदे हराम दा इन्कार¹ करना ते उसदे बासियें गी ओहदे चा कड्ढी देना अल्लाह कश (अल्लाह दी नजरे च) (इस शा बी) बड्डी गल्ल ऐ ते फिल्ले (फसाद), कतल शा बी बड्डा (गुनाह) ऐ ते एह लोक जेकर इंदे च शक्ति होऐ ते एह थुआड़े कनै लडदे गै रौहन तां जे तुसेंगी थुआड़े धर्म शा फेरी देन ते तुंदे चा जो बी अपने धर्म शा फिरी जा ते प्ही (उस्सै) इन्कार दी हालत च गै मरी बी जा (तां ओह याद रक्खै जे) ऐसे लोकें दे कर्म इस लोक च बी ते परलोक च बी अकारथ उठी जांगन ते ऐसे लोक नरक (दी अग्गी च पौने) आहले न। ओह ओहदे च (चिँरे तगर) रौहगन ॥ 218 ॥

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيهِ ۗ قُلْ قِتَالٌ فِيهِ كَبِيرٌ ۗ وَصَدَّقْنَنِ سَبِيلَ اللَّهِ وَكُفِّرْ بِهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِخْرَاجِ أَهْلِهِ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ اللَّهِ ۗ وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ۗ وَلَا يَزَالُونَ يُقَاتِلُونَكُمْ حَتَّىٰ يَرُدُّوكُمْ عَنْ دِينِكُمْ إِنِ اسْتَطَاعُوا ۗ وَمَنْ يَرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فِيمَتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۗ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢١٨﴾

1. यानी इनें दौनों दी मर्यादा गी भंग करने दी इच्छा करना।

जो लोक ईमान ल्याए दे न ते जिन्हें हिजरत कीती दी ऐ ते अल्लाह दे रस्ते च जिहाद कीते दा ऐ ऐसे लोक यकीनन अल्लाह दी रहमत दे मेदवार न ते अल्लाह बौहत बख्शाने आह्ला (ते) बार-बार रहम करने आह्ला ऐ ॥ 219 ॥

ओह तेरे शा शराब ते जूए दे बारै पुछदे न। तूं गलाई दे जे इंदे (इन्हें कम्मं) च बड़ा गुनाह (ते नुकसान) ऐ ते लोकें आस्तै इंदे च (किश इक) फायदे (बी) हैन, पर इंदा गुनाह (ते नुकसान) इंदे फायदें शा बौहत बड़्हा ऐ ते ओह (लोक) तेरे शा (एह बी) पुछदे न जे ओह केह खर्च करन? तूं आखी दे जे जिन्ना तकलीफ च? नेई पाऽ। इससै चाल्ली

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا
وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ يَرْجُونَ
رَحْمَتَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢١٩﴾

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۖ قُلْ
فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ
وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ۗ
وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ ۗ قُلِ الْعَفْوَ

1. मूल शब्द 'इस्मुन' दा अर्थ ऐ-पाप, पाप दी स'जा ते नुकसान। इसदा इक अर्थ भले कम्मं शा रोक्ना बी ऐ। (मुफ़दात) शराब ते जूए शा इस आस्तै रोकेआ गेदा ऐ जे एह नेक कम्मं शा रोक्दे न। शराब पीने आह्ला शख्स उपासना ते अध्यात्मकता दे बारै खितन नेई करी सकदा, बल्के उसदी रचि व्यर्थ गल्लें पासै बधी जंदी ऐ। ओहदे च बीरता दी सिखत व्यर्थ मरी-मिटने सरबन्धी भावनां उतेजत होई उठदियां न ते बुद्धी संगत बीरता दी कमी आई जंदी ऐ। इयै हालत जूए दी बी ऐ। जुआरी अक्सर अपने पवित्र धन गी नश्ट करी दिंदा ऐ ते भले कम्म करने शा बंचत होई जंदा ऐ। जेकर ओह जूए च जीती जंदा ऐ तां उसदी एह कामयाबी नेकां परिवारें दे बिनाश दा कारण बनी जंदी ऐ। जुआरियें च अपना धन नश्ट करने दी आदत पैदा होई जंदी ऐ। नाऽ-मातर गै कोई ऐसा जुआरी होग जो अपने पैसे (धन) गी सम्हालियै रखदा ऐ। अक्सर सारे जुआरी अपना धन बड़ी बे-परवाही कनै लुटांदे न। ओह इक पासै ते लोकें दा बिनाश करदे न, पर दूए पासै अपने धन शा आपू बी फायदा नेई लेंदें। इसदा कारण एह ऐ जे उनेंगी धन कमाने च कोई खास मेहनत नेई करनी पाँदी। जुआ तगड़ी सोच-बिचार दी शक्ति गी बी कमजोर करी दिंदा ऐ। परिणाम सरूप जुआरी ऐसी चीजें गी बी नश्ट करने पर त्यार होई जंदा ऐ जिनेंगी कोई समझदार शख्स कंई बी नश्ट करने पर (आस्तै) त्यार नेई होग।
2. मूल शब्द 'अप्ख' दे त्रै अर्थ न - (क) सर्वश्रेष्ठ दे शुद्ध वस्तु। (ख) जो अपनी जरूरत शा बची जा ते दानी गी उसदा दान करने कनै कोई कश्ट नेई होऐ। 'ते (ग) बगैर मंगे दान करना। (अक्रब) इर्थें एह सुआल ऐ जे दान किन्ना करना चाही दा? इस आस्तै 'अप्ख' शब्द दा प्रयोग कीता गेदा ऐ जे जिन्हें लोकें दी ईमानी अवस्था उच्च कोटि दी नेई उंदे आस्तै एह अर्थ ऐ जे उन्ना दान करो जे उसदे बा'द थुआड्डा ईमान डगमगान नेई लगै ते तुस कश्ट च बी नेई पवो ते फही लोकें शा मंगदे नेई फिरो ते नां गै थुआड्डे धर्म ते ईमान गी कुसै-बी चाल्ली दा कोई नुकसान पुजै। दूआ गरोह अल्लाह पर पूरा भरोसा रखने आह्ला ऐ। उंदे आस्तै एह हुकम ऐ जे ओह अपने धन दा उत्तम हिस्सा अल्लाह दे रस्ते च देन। इन्हें लोकें दा ईमान निगार होंदा ऐ। इस लेई इंदे आस्तै हुकम दूए मोमिनै शा बक्खरा ऐ। एह पवित्र कुरआन दा गै गुण ऐ जे उसनै दौनीं किसमें दे लोकें गी इककै जनेह शब्दें राहें हुकम देई दिता। इस आयत दा बीया अर्थ एह ऐ जे मोमिनै गी तक्की करदे-करदे अपनी हालत ऐसी बनाई लैनी चाही दी जे जरूरत आहल्लें गी मंगना गै नेई पवै, बल्के ओह आपू गै अपने गुआडियें दी जरूरतें दा ध्यान रखन ते उनेंगी बिना मंगे दे पूरा करन। 'केह खर्च करचें' दे जवाब च एह बी दस्सेआ गेदा ऐ जे मंगने पर दिता तां केह दिता? असल च ऊरे दान, दान ऐ जो बगैर मंगे दिता जा। जिस चाल्ली बच्चा मंगे जां नेई मंगे पर उसदी मां आपू गै उसदा ध्यान रखदी ऐ। इससै चाल्ली लोकें कनै मोमिन दी हमदर्दी मां-घ्योऽ आंगर होनी चाही दी।

अल्लाह अपने हुकम थुआड़े आस्तै ब्यान करदा ऐ तां जे तुस सोच-बिचार शा कम्म लैओ ॥ 220 ॥

इस लोक बारै (बी) ते आखरत बारै बी ते एह (लोक) तेरे शा अनाथें बारै (बी) पुछदे न, तूं गलाई दे (जे) उंदा सुधार करना बौहत् अच्छा कम्म ऐ ते जेकर तुस उंदे कन्नै घुली-मिली र'वो (तां) इस च कोई बुराई नेई की जे ओह थुआड़े भाईबंद न ते अल्लाह फसाद करने आहलें गी सुधार करने आहलें दे मकाबले च खूब जानदा ऐ ते जेकर अल्लाह चांहदा तां तुसंगी मसीबत च पाई दिंदा। अल्लाह यकीनन गालिब (ते) हिक्मत आहला ऐ ॥ 221 ॥

ते तुस मुश्रिक¹ जनानियें कन्नै नकाह नेई करो जिन्ना चिर जे ओह ईमान नेई लेई औन। इक मोमिन दासी इक मुश्रिक जनानी शा भामें ओह तुसंगी (किन्नी गै) पसंद होऐ, यकीनन बेहतर² ऐ। ते मुश्रिकें कन्नै जिन्ना चिर जे ओह ईमान नेई लेई औन (मुसलमान जनानियें दा) ब्याह नेई करो। ते इक मोमिन गुलाम इक अजाद मुश्रिक शा (बी) भामें ओह तुसंगी (किन्ना गै) पसंद होऐ, यकीनन बेहतर³ ऐ। एह लोक (ते नरक दी) अगगी पासै बुलाए जंदे न ते अल्लाह अपने हुकमै राहें जन्नत ते मोक्ष पासै बुलांदा ऐ ते लोकें आस्तै अपनी

كَذَلِكَ يبينُ اللهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٢٠﴾

فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتَامَىٰ قُلْ إِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۗ وَإِنْ تُخَاطَبُوا عَنْهُ فَأَخْوَأْكُمْ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ۗ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَعْتَبْنَاكُمْ ۗ إِنْ اللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٢١﴾

وَلَا تَتَّكِفُوا الْمُشْرِكِ حَتَّىٰ يَوْمٍ ۖ وَلَا مَآةَ مُؤْمِنَةٍ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ ۗ وَلَوْ أَعَجَبْتُمْ ۖ وَلَا تَتَّكِفُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يَوْمٍ ۖ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ ۗ وَلَوْ أَعَجَبْتُمْ ۗ أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ ۗ وَاللَّهُ يَدْعُوا إِلَى الْجَنَّةِ ۗ وَالْمَغْفِرَةِ بِإِذْنِهِ ۗ وَيَبِينُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ

1. मूल शब्द मुश्रिक दा अर्थ ऐ - अल्लाह दे सिवा दूप उपास्यें ते शक्तियें बारै आस्था रक्खने आहला।
2. की जे मोमिन जनानी शरीर ते आतमा दौर्नी दी सुबधा दा ध्यान रक्खी सकदी ऐ।
3. इस्लाम च दास दा नरार जायज नेई ते जिसलै ओह मुसलमान बी होऐ तां ओह मुसलमान जनानी आस्तै अध्यात्मक ते शरीरक द्रिष्टीकोण कन्नै अती उत्तम होग।

(पन्छान दियां) नशानियां तफसील कनै ब्यान करदा ऐ तां जे ओह नसीहत हासल करन ॥ 222 ॥ (रुकू 27/11)

ते एह लोक तेरे शा हैज (मासक धर्म) दे (दिनें च जनानी कश जाने) बारै च बी पुछदे न। तू गलाई दे जे ओह नुकसान देने आहली गल्ल ऐ। इस आस्तै तुस मासक धर्म दे दिनें च अपनी जनानिये कशा अलग्ग र'वो ते जिन्ना चिर ओह पवित्तर ते साफ नेई होई जान, उंदे कश नेई जाओ। प्ही जिसलै ओह श्नान बगैरा करियै पवित्तर ते साफ होई जान तां जिद्धरा अल्लाह नै तुसेंगी हुकम दित्ते दा ऐ, उंदे कश जाओ। यकीनन अल्लाह उनें लोकें कनै प्रेम करदा ऐ जो बार-बार उसदे पासै झुकदे न ते ओह यकीनन उनें लोकें कनै बी प्रेम करदा ऐ जो (शरीरक ते मानसक) पवित्तरता रखदे न ॥ 223 ॥

थुआड़ियां जनानियां थुआड़े आस्तै (आखो जे इक चाल्ली दी) खेती न। इस आस्तै तुस जिस चाल्ली चाहो अपनी खेती कश जाओ ते अपने आस्तै (किश)¹ अगमें भेजो ते अल्लाह आस्तै संयम धारण करो ते समझी लैओ जे तुस उसदे सामनै पेश होने आहले ओ ते तू मोमिनें गी उस रोज बारै शुभ समाचार सुनाई दे ॥ 224 ॥

عَلَهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٢٢﴾

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَحِيضِ قُلْ هُوَ آذَى^ط
فَاعْتَرِلُوا الْبِئْسَاءِ فِي الْمَحِيضِ وَلَا^ط
تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّى يَطْهَرْنَ فَإِذَا تَطَهَّرْنَ^ج
فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ^ط
يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُطَهَّرِينَ ﴿٢٢٣﴾

نِسَاءً وَأُكْمٌ حَرَّتْ لَكُمْ فَأْتُوا حُرَّتَكُمْ^ط
أَنْ سِئِمُمْ وَقَدِمُوا لِأَنْفُسِكُمْ^ط
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَعَلِمُوا أَنَّكُمْ مُلْقَوَةٌ^ط
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٢٤﴾

1. इसदा इक भाव ते एह ऐ जे थुआड़ियां जनानियां इक चाल्ली नै खेती आंगर न इस आस्तै उंदे कनै ऐसा अच्छा ब्यहार करो जे जिस कनै कोई परिणाम निकली सके यानी संतान पैदा होऐ। दूआ अर्थ एह ऐ जे खेती लाह लैने आस्तै होंदी ऐ इस आस्तै तुस उंदे कनै ऐसे अच्छे ढंग कनै सरबंभ रखो जे अल्लाह खुश होई जा।

ते तुस लोकें कन्नै नेक सलूक करने, संयम धारण करने ते लोकें दा सुधार करने आस्तै अल्लाह गी अपनी कसमें दा नशान्ना¹ नेई बनाओ ते अल्लाह खूब सुनने आह्ला ते बौहत जानने आह्ला ऐ ॥ 225 ॥

अल्लाह थुआड़ी लघु (ब्यर्थ)² सघंदें पर तुसंगी नेई पकड़ग, हां! जो पाप थुआड़े दिलें (जानी-बुझी) कमाया, उसै पर थुआड़ी पकड़ होग ते अल्लाह बौहत माफ करने आह्ला ते सैहनशील³ ऐ ॥ 226 ॥

जो लोक अपनी लाड़ियें बरै सघंद⁴ खाइयै उंदे शा बक्ख होई जंदे न, उंदे आस्तै चार म्हीनने तगर बलगना (जायज) ऐ, फही जेकर ओह (इस अरसे च सु'ला आहले पासै)

وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِأَيْمَانِكُمْ أَنْ تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَتُصَلِّوا يُبَيِّنُ النَّاسُ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٢٥﴾

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوبُكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿٢٢٦﴾

لِلَّذِينَ يُؤْتُونَ مِنْ نِسَائِهِمْ تَرَبُّصًا أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ قَانَ فَأَوْفَانِ اللَّهُ

1. अरबी दे मूल शब्द 'उर्जतुन' दा अर्थ ऐ (क) ढाल (ख) दाऽ-पेच (ग) नशान्ना (घ) रोक, पड़दा, आड़। (अक्रब) दूआ मूल शब्द 'ऐमान' ऐ जिसदा अर्थ ऐ (क) सघंद, कसम (ख) शक्ति (ग) बरकत जां बरदान (घ) सज्जे पासै जां शररिे दा सज्जा अंग (ङ) मुहावरे च उस चीजै गी बी आखदे न जेहदे आस्तै कसम चुक्की जा। आयत दा भाव एह ऐ जे अल्लाह गी अपनी सघंदें दा नशान्ना जां ढाल, पड़दा जां आड़ बगैरा रोकां नेई बनाओ यानी जेकर चंगियां गल्लां नेई करने दियां सघंदां चुकगे तां तुस सुधार करने, भलाई ते संयम बगैरा नेक गुण ग्रहण करने शा बंचत होई जागे ओ।
2. ब्यर्थ सघंद ओह ऐ जो (क) बगैर सोचे-समझे खादी जा (ख) सघंद खाने आह्ला इस विश्वास कन्नै सघंद खा जे ओह सच्चे ऐ पर उसदा एह विश्वास झूटा होऐ (ग) अत गुस्से दी हालत च सघंद खाना जिसलै जे सूझ-बूझ ठकानै नेई होऐ (घ) इहाम चीजें गी प्रयोग च आह्वनने दी सघंद (ङ) कर्तब्व पालन नेई करने दी सघंद (च) जोश च आइयै सघंद खानी। एह सारियां सघंदां ब्यर्थ न। इनेंगी त्रुडने दा कोई पाप नेई। ऐसियें सघंदें पर तोबा जां पच्छोताऽ करने दा हुकम ऐ। जेकर जानी-बुझी सघंद खादी जा तां फही पाप बी लग्ग।
3. अरबी दे मूल शब्द 'हलीम' दा अर्थ ऐ - (क) धीरजवान (ख) ऐसा शख्स जो गुस्से दे बश च नेई होऐ (ग) सैहनशील (घ) ज्ञान ते बुद्धि (ङ) अज्ञान ते (जां) मूर्खता दे उलट अर्थ। (अक्रब)
4. मूल शब्द 'ईला' दा अर्थ कुर'आनी मुहावरे मताबक ओह सघंद ऐ जो इस गल्ला पर खादी जा जे पुरश अपनी लाड़ी कन्नै सरबंध नेई रक्खग। (मुफ़दात) असल च ऐसी सघंद जनानी जात दे अधिकारें आस्तै हानीकारक ऐ। इस लेई एहदे शा रोकेआ गेदा ऐ।

परतोई¹ औन तां अल्लाह यकीनन बौहत बखाने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 227 ॥

ते जेकर ओह तलाक दा फैसला करी लैन तां अल्लाह यकीनन बौहत सुनने आहला (ते) बौहत जानने आहला ऐ ॥ 228 ॥

ते जिनें जनानियें गी तलाक थोई जा तां ओह त्रै बार हैज (मासक धर्म) औने तक अपने-आपै गी रोकी रक्खन। जेकर ओह अल्लाह ते आखरत दे दिने पर ईमान रखदियां न तां (ओह चेता रक्खन जे) अल्लाह नै जे किश उंदी कुक्खें च पैदा कीते दा ऐ उंदे आस्तै उसी छपालना मनासब नेई ते जेकर उंदे खसम आपस च सुधार करी लैने दा फैसला करी लैन तां ओह समे दे अंदर-अंदर उनेंगी लाड़ी दे रूपै च बापस लेई लैने दे बशेश अधिकारी न ते जिस चाल्ली उंदे (जनानियें) पर किश जिम्मेदारी ऐ उससै चाल्ली नियमें मताबक उनेंगी किश अधिकार बी प्राप्त न। हां! आदमियें

وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٧﴾

وَالْمَطْلَقُ يُتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ ۗ وَلَا يَجِلُّ لَهُنَّ أَنْ يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ إِنْ كُنَّ يُؤْمِنُنَّ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۗ وَبِعَوْلَتِهِنَّ أَحَقُّ بِرِدِّهِنَّ فِي ذَلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا ۗ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٧﴾

1. मूल शब्द 'फाऊ' भलाई दे कम्मों पासै ध्यान देने आस्तै बरतेआ जंदा ऐ। (मुफ्रदात) असल च एह शब्द सहयोग देने, इक-दूए दी मदद करने ते मिली-जुली कम्म करने दे अर्थे च बरतेआ जंदा ऐ।

अरब देश च इस्लाम शा पैहलें एह रीत प्रचलत ही जे किश लोक अपनी जनानियें गी तलाक ते नथे दिंदे पर सघंद खाई लेंदे हे जे अस उंदे कनै सरबंध नेई रखगे। इस चाल्ली ओह अपने बिचार कनै अपनी लाड़ी दे सारे अधिकारें गी पूरा करने दी जिम्मेवारी शा अपने आपै गी अजाद समझी लेंदे हे। उंदे बिचार कनै लाड़ियें दे हक्क ते अधिकारें गी पूरा नेई करना कोई पाप नथा। ऐसा अपवित्तर बिचार अज्ज बी संसार च मजूद ऐ। कुर'आन मजीद आखदा ऐ जे जेकर कोई मुसलमान ऐसा करग तां उसी याद रक्खना चाही दा ऐ जे उसी चार महीने तक दा समां दिता जंदा ऐ। इस समे दे अंदर ओह अपनी लाड़ी कनै सु'ला करी लै नेई ते चार महीने बीतने पर जज्ज ओहदे पासेआ तलाक दुआई देग। इस आयत च जाननी गी अनिश्चत समे तक लटकाई रक्खने दे खलाफ फैसला दिता गेदा ऐ।

सार एह ऐ जे पवित्तर कुर'आन लाड़ी गी लटकाई रक्खने शा रोकदा ऐ ते जो शख्स अपनी लाड़ी दे बारे च ऐसा करै उसी मजबूर करदा ऐ जे जां ते ओह ओहदे कनै मेल-मलाप कनै र'वै जां पही उसी तलाक देई देऐ।

गी¹ उंदे पर इक चाल्ली दी प्रधानता हासल ऐ ते अल्लाह गालिब ते हिक्मत आह्ला ऐ
॥ 229 ॥ (रुकू 28/12)

ऐसा तलाक² जिस च रुजूअ (बापसी) होई सकै, दो बार होई सकदा ऐ। फही जां ते मनासब रीति कनै जनानी गी रोकी लैना होग जां अच्छा बरताऽ करदे होई उसी बिदा करी देना होग ते थुआड़े आसै उस धन दा कोई हिस्सा बापस लैना जायज नेई जो तुस उनेंगी पैहलें देई चुके दे ओ, सिवाए इस दे जे उनें दौनीं गी एह डर होऐ जे ओह अल्लाह दी (निश्चत कीती गोदी) हद्दें गी कायम नेई रखी सकडन। इस आसै जेकर तुसेंगी एह डर³ होऐ जे ओह दमें अल्लाह दी (निश्चत कीती दी) हद्दें गी कायम नेई रखी सकडन तां ओह जनानी जो किश फिद्यः यानी बदले

الطَّلَاقَ مَرَّتَيْنِ فَمَا سَاكَ بِمَعْرُوفٍ أَوْ
تَسْرِيحٍ بِإِحْسَانٍ ۖ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ
تَأْخُذُوا مِمَّا آتَيْتُمُوهُنَّ شَيْئًا إِلَّا أَنْ
يَخَافَا أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ ۗ فَإِنْ
خِفْتُمَا أَلَّا تُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْهِمَا فِيمَا افْتَدَتْ بِهِ ۗ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ
فَلَا تَعْتَدُوهَا ۗ وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ

1. इत्थें नारी जाति दा ध्यान इस पासै खिच्चेआ गोदा ऐ जे असें थुआड़े अधिकार सुरक्कत करी दिते न। जिस चाल्ली आदमियें गी तुंदे उपपर किश अधिकार दिते गे न उसै चाल्ली तुसेंगी बी उंदे पर किश अधिकार दिते गे न। हां! एह गल्ल जरूर ऐ जे किश खास हालातें च अंताम निरना करने दा अधिकार आदमियें गी दिता गोदा ऐ।
2. (क) तलाक देने दा ठीक ते स्हेई ढंग एह ऐ जे तुहर (पवितरता) दी अवस्था च घरेआह्ला इक तलाक देऐ, इसदे बा'द कुसै तुहर च तलाक नेई देऐ। त्रै कुरू (मासक धर्म) जो इद्दत दा समां न, बीतने पर पति-पत्नी दा सरबंघ दुट्टी जाग ते ओह जनानी कुसै दूए कनै ब्याह करी सकग। (ख) एह इक रजई यानी बापस लैता जाने आह्ला तलाक ऐ। ऐसा तलाक दो बार गै होई सकदा ऐ, जिस दा ढंग एह ऐ। जियां- (अ) जेकर मडद तलाक देऐ तां इद्दत (त्रै कुरू-त्रै मासक धर्म यानी त्रै महीने) दे अंदर-अंदर रुजूअ होई सकदा ऐ। जेकर इद्दत बीती जा ते रुजूअ नेई करै तां नमें मैहर कनै नमां नकाह होई सकदा ऐ। (आ) जेकर ओह इस नकाह दे बा'द फही उसी तलाक देई देऐ तां निश्चत इद्दत (त्रै कुरू) दे अंदर ओह रुजूअ (सु ला) करी सकदा ऐ। जेकर एह इद्दत बी बीती जा ते रुजूअ नेई करै तां नमें मैहर कनै नमां ब्याह होई सकदा ऐ। (इ) पर फही जेकर त्री बार तलाक देऐ तां एह तलाक 'बदः' होग। हून ओह इद्दत दे अंदर रुजूअ नेई करी सकदा ते नां गे इद्दत दे बा'द नमें मैहर कनै नमां नकाह होई सकदा ऐ। हां! जेकर ओह जनानी कुसै दूए शख्स कनै ब्याह करने दे बा'द बिना कुसै होले जां पखंड दे तलाक हासल करी लै जां रंडोई जा तां फही पैहला घरेआह्ला उस कनै ब्याह करी सकदा ऐ। (ई) जेकर कोई शख्स इल्कं बार इक शा मते तलाक देऐ, भामें दो जां त्रै, जां इस शा ज्यादा तां ओह इक गै रजई तलाक समझेआ जाग नां के इक शा ज्यादा।
3. इस च दस्सेआ गोदा ऐ जे जेकर अदालत एह फैसला देऐ जे जनानी अपने खसमें कश रौहने लेई त्यार नेई ते उसदे राजी नेई होने करी खसम बी ओहदे कनै न्याऽ नेई करी सकग तां जनानी जेकर किश बदले च देना चाह तां खसमै गी अजाजत ऐ जे ओह किश धन लेइयै उसी तलाक देई देऐ, पर एह सिर्फ उन्ना गै धन लेई सकदा ऐ जिन्ना उसने अपनी उस पत्नी गी आपू दिता हा। उस शा ज्यादा किश नेई लेई सकदा।

दे रूपै च देऐ उसदे बारे च उनें दौनीं (चा कुसै) गी कोई पाप नेई होग। एह अल्लाह दियां निश्चत कीती दियां हद्दां न। इस आसै तुस इंदा उलंघन नेई करो ते जो लोक अल्लाह दी निश्चत कीती दी हद्दें दा उलंघन करन तां (समझी लैओ जे) ऊऐ लोक असल च जालम न ॥ 230 ॥

पही (पैहलें दस्से दे द'ऊं तलाकें दा समां बीतने परैंत जेकर घरैआहला उसी त्रीया) तलाक देई देऐ तां ओह जनानी ओदे आसै रूहाम होई जाग, जिन्ना चिर जे ओह उस दे अलावा कुसै दूए घरैआहले कश! नेई जा। जेकर ओह बी उसी तलाक देई देऐ तां उनें दौनीं गी इस शर्त पर जे उनेंगी एह पूरा जकीन होऐ जे ओह अल्लाह दी निश्चत हद्दें गी कायम रक्खी सकडन तां आपस च दबारा रुजूअ (बापसी) करी लैने च कोई पाप नेई होग ते एह अल्लाह दियां (निश्चत) हद्दां न जिनेंगी ओह इलम रक्खने आहले लोकें आसै तफसील कन्ने ब्यान करदा ऐ ॥ 231 ॥

ते जिसलै तुस जनानियें गी तलाक देई देओ ते ओह अपने (इद्दत दे) निश्चत समे (दी आखरी हद्द) तक पुज्जी जान² तां उनेंगी जां ते उचित ढंग कन्ने रोकी लैओ³ जां उनेंगी

فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٣٠﴾

فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدِ حَتَّىٰ تَكْتَبَ زَوْجًا غَيْرَهُ ۖ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يَتَرَاجَعَا إِنْ ظَنَّا أَنْ يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ ۗ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٢٣١﴾

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ يَكُنْ لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مَا تُنَبِّئُونَهُنَّ فَمَا مَسْكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ سَرَحَوْهُنَّ ۖ فَمَا مَسْكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ ۚ وَلَا تَمْسِكُوهُنَّ ضِرَارًا

1. यानी ओह जनानी दूए पति कन्ने ब्याह करिये उसदे घर र'वै ते पही उस पति शा कुसै कारण उसी तलाक थहोई जा जां उसदी मौत होई जा।
2. 'पुज्जी जाने' दे अर्थ न - (क) निश्चत समे दे अंत दे लागै पुज्जी जाना ते (ख) निश्चत समे गी पूरा करी लैना। इस कन्ने पैहला अर्थ संबंधत ऐ। अल्लामा कुरतबी हस्पानवी भायकार लिखदे न जे सारे मुसलमान विद्वान इस आयत दे पैहले अर्थ कन्ने सैहमत न। कुसै नै बी मत-भेद नेई कोता।
3. रोकी लैओ दा अर्थ ऐ जे चंगे तरीके कन्ने रुजूअ (सु'ला) करी लैओ ते तलाक बापस लेई लैओ। ऐसा नेई होऐ जे जनानी दा अनादर होऐ।

मनासब तरीके कन्नै बिदा करी देओ ते उंदे पर अत्याचार करने दे बिचार कन्नै उनेंगी कदें बी नेई रोको ते जो शख्स ऐसा करै तां (समझी लैओ जे) उसने अपने आपै पर गै जुलम कीता ऐ ते तुस अल्लाह दे हुकमें दा मजाक नेई लैओ ते तुंदे पर जो अल्लाह दी किरपा होई ऐ उसी याद रक्खो ते (इसी बी चेता रक्खो) जो उसने कताब ते हिक्मत दे रूपै च तुंदे पर उतारेआ ऐ जेहदे राहें ओह तुसंगी नसीहत करदा ऐ ते अल्लाह दा संयम अखत्यार करो ते समझी लैओ जे अल्लाह हर इक गल्ला गी चंगी चाल्ली जानदा ऐ ॥ 232 ॥ (रुकू 29/13)

ते जिसलै तुस जानानियें गी तलाक देओ ते ओह अपनी इद्दत¹ पूरी करी लैन ते जिसलै जे ओह चंगी चाल्ली आपस च राजी होई जान तां पही तुस उनेंगी अपने (नमें) पतियें कन्नै ब्याह करी लैने शा नेई रोको। एह ऐसी गल्ल ऐ जिसदा तुंदे चा हर उस शख्स गी जो अल्लाह ते आखरत (क्यामत दे ध्याड़े) पर ईमान रखदा ऐ, नसीहत कीती जंदी ऐ (ते समझी लैओ जे) एह गल्ल थुआड़े हक्क च सारें शा ज्यादा बरकत आहली ते सारें शा ज्यादा पवित्तर ऐ ते अल्लाह जानदा ऐ ते तुस नेई जानदे ॥ 233 ॥

ते मौरां पूरे दौं साल अपने बच्चें गी दुद्ध पलैन। एह (हदायत) उंदे आस्तै ऐ जो (अपने बच्चें गी निश्चत समे तक) दुद्ध पलैना चाहन ते जिस शख्स दा बच्चा ऐ उस पर रीति-

تَعْتَدُوا^١ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ
نَفْسَهُ^٢ وَلَا تَتَّخِذُوا آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا^٣
وَأذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمَا أَنْزَلَ
عَلَيْكُمْ مِنَ الْكِتَابِ وَالْحِكْمَةَ يَعِظُكُمْ
بِهِ^٤ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيمٌ^٥

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَّغُنَّ أَجَلَهُنَّ فَلَا
تَعْتَدُوا^١ لَهُنَّ أَنْ يَتَّخِضْنَ أَرْوَاجَهُنَّ إِذَا
تَرَاضُوا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوفِ^٢ ذَلِكَ
يُوعِظُ بِهِ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ^٣ ذَلِكَمُ أَرْكَى لَكُمْ
وَإِظْهَرُ^٤ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ^٥

وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ
كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يُنِمَّ الرِّضَاعَةُ^١

1. इद्दत = इस्लामी कनून दे मताबक ओह मुद्दत जिस च जानानी दूआ ब्याह नेई करी सकै, मुतल्लाका आस्तै नै महीने, विधवा आस्तै चार महीने दस्स दिन ते पटाली (गर्भवती) आस्तै बच्चा पैदा होने तक ऐ।

रवाज¹ मताबक उंदे (दुद्ध पलैने आहलियें दे) भोजन² ते कपडें दी जिम्मेदारी ऐ। कुसै शख्स³ पर उसदी समर्थ शा बद्ध जिम्मेदारी नेई पाई जंदा। कुसै मौरी⁴ गी उसदे बच्चे कारण दुख नेई दिता जा ते नां गै प्यो गी उसदे बच्चे कारण दुख दिता जा ते बारस आस्तै बी ऐसा गै करना जरूरी ऐ ते जेकर ओह दमैं अपनी खुशी⁵ ते सु'ला-सलाही (निश्चत समे दो साल शा पैहलें गै) दुद्ध छुड़ाना चाहन तां बी उनेंगी कोई पाप नेई लगदा ते जेकर तुस अपने बच्चें गी (कुसै दूई जनानी दा) दुद्ध पलैना चाहो तां पही बी तुसेंगी कोई पाप नेई लगदा जिसलै जे ओह (बदला) जो तुसें उसी देना कीते दा ऐ,

وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ
بِالْمَعْرُوفِ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ إِلَّا
وُسْعَهَا لَا تَصَّارَ وَالِدَةٌ يَوْلَدَهَا وَلَا
مَوْلُودٌ لَهُ يَوْلَدُهُ وَعَلَىٰ أُنثَرِثٍ مِّثْلُ
ذَلِكَ ۚ فَإِن أَرَادَا فِصَالًا عَنِ تِرَاضٍ مِّنْهُمَا
وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ۗ وَإِن أَرَدْتُمْ
أَن تَسْتَرْضِعُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُمْ مَا آتَيْتُمْ

1. अर्थ एह ऐ जे गरीब प्यो अपनी ते अमीर प्यो अपनी समर्थ मताबक खर्च करन। इस आयत च सधारण दुद्ध पलैने आहलियें दा बर्णन नेई बल्के मौरीं दा ऐ। एह बर्णन तलाक दे प्रसंग च कीता गेदा ऐ जे जेकर दुद्ध पलैने आहली जनानी गी तलाक देई दिता जा तां बच्चे दे हित आस्तै उसदी मौरी आस्तै जरूरी ऐ जे ओह उसी पूरी अर्वाधि तक दुद्ध पलैस ते इसदे बदले च बच्चे दे प्यो दा फर्ज ऐ जे इक सधारण नौकरेनी आंगर ओहदे कन्नै ब्यहार नेई करे बल्के अपनी समर्थ मताबक उसी खर्च देऐ, की जे एह जनानी दे मनोभावें गी ठेस पुजाने आहली होग जे इक पासै उसी तलाक दे बा द बच्चे गी दुद्ध पलैने आस्तै मजबूर कीता जा ते दूए पासै ओहदे कन्नै ऐसा ब्यहार कीता जा जो ओहदे आस्तै नरादर-पूर्ण होऐ।
2. रुट्टी-टल्ला देने दा अर्थ सारी जरूरतें गी पूरा करना ऐ।
3. यानी बच्चे दे प्यो शा एह मांग करना जे ओह अपनी समर्थ शा बद्ध खर्च करे, एह गल्ल मनासब नेई ऐ ते जनानी शा एह मांग करना जे ओह तलाक मिलने दे बा द बी इक सेवका आंगर बच्चे गी दुद्ध पलैने आस्तै इक समे तक उसदे घर र'धै, एह बी मनासब नेई ऐ।
4. यानी बच्चे गी इक-दूए पर दबास पाने दा साधन नेई बनाओ। एह आदेश अति उत्तम ऐ। केई लोक ऐसी मूर्खता करी बौहदे न जिसदा नतीजा एह निकलदा ऐ जे जां ते बच्चे बरबाद/मरी-मुक्की जंदे न जां उनेंगी तलीम बगैरा नेई दिती जाई सकदी। असल च इस चाल्ली दा ब्यहार बच्चें दा कतल करी देने समान ऐ। कुर'आन मज्बद नै इस चाल्ली दी भैड़ गल्लें शा रोकियै औने/होने आहली उलाद पर बौहत बड़डा उपकार/स्थान कीते दा ऐ।
5. इस आयत शा साफ होई जंदा ऐ जे कुर'आन मज्बद नै दुद्ध पलैने जां छुड़ाने बारे मां-प्योस दौनों गी इक बरोबर अधिकार दिते दा ऐ। सारे धार्मिक सिद्धांतें च इस्लाम दा एह सिद्धांत सर्वश्रेष्ठ ऐ, की जे ख्रिस्त जीवन च लाड़ी-मर्हाज दौनों गी इक-बरोबर अधिकार दिते दे न। पवित्र कुर'आन नै दुद्ध पलैने दी जो अर्वाधि निश्चत कीती दी ऐ उस शा ज्यदा समे तक दुद्ध पलैने आस्तै नां ते मर्हाज मजबूर करी सकदा ऐ ते नां गै लाड़ी दबास पाई सकदी ऐ। इस आस्तै तलाक दे बा द बी मर्हाजै गी लाड़ी दी भावनाएं दा इना ध्यान रक्खने आस्तै मजबूर कीता गेदा ऐ तां साफ ऐ जे धर्म-पत्नी होने दी हालत च उसदी भावनाएं गी ध्यान च रक्खना किना जरूरी होग।

ठीक-ठीक देई देओ ते अल्लाह शा डरो ते समझी लैओ जे जे-किश तुस करदे ओ यकीनन अल्लाह उसी दिखदा ऐ ॥ 234 ॥

ते तुंदे चा जिनें लोकें दी मौत होई जंदी ऐ ते ओह् अपने पिच्छें जनानियां छोड़ी जंदे न तां ओह् (विधवां) अपने-आपै गी चार महीने दस्स दिन तक रोक़ी रक्खन। पही जिसलै ओह् अपना निश्चत समां (इद्दत) पूरा करी लैन ते जे किश बी ओह् अपने बाँरे ठीक रूपै च करन तां उसदा तुसंगी कोई पाप नेई लगग ते जे किश तुस करदे ओ अल्लाह उसी जानदा ऐ ॥ 235 ॥

ते इस च तुसंगी कोई पाप नेई लगग जे (विधवा) जनानियें गी ब्याह दा सनेहा संकेत दे रूपै च देओ जां उसी अपने मनै च छपाली रक्खो। अल्लाह जानदा ऐ जे तुसंगी जरूर गै उंदा ख्याल औग, पर तुस गुप्त रूपै च उंदे कनै कोई प्रतिज्ञा नेई करो। हां! एह् (अजाजत ऐ) जे तुस उंदे कनै कोई मनासब¹ गल्ल आखी देओ ते जिन्ना चिर (इद्दत दा) हुकम अपने निश्चत समे तक नेई पुज्जी जा उन्ना चिर तक तुस ब्याह दा द्रिढ़ संकल्प नेई करो ते एह् समझी लैओ जे जो कुछ थुआड़े दिलें च ऐ अल्लाह उसी जानदा ऐ। इस आस्तै तुस इस गल्ला शा डरो ते समझी लैओ जे अल्लाह बौहत बख्शने आहला ते सैहनशील ऐ ॥ 236 ॥ (रुकू 30/14)

तुसंगी कोई पाप नेई लगग जे जेकर तुस जनानियें गी उस बेलै बी तलाक देई देओ

يَا مَعْرُوفُ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٣٤﴾

وَالَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنكُم مَّن يَذَرُونَ أَرْوَاجًا يُتْرَبْنَ بِأَنفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا ۖ فَاذِلَّغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنفُسِهِنَّ بِأَمْعُرُوفٍ ۖ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٣٥﴾

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُم بِهِ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاءِ أَوْ أَكْتَمْتُمْ فِي أَنفُسِكُمْ ۖ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ سَتَذْكُرُونَهُنَّ وَلَكِن لَّا تُوَاعِدُوهُنَّ سِرًّا إِلَّا أَنْ تَقُولُوا قَوْلًا مَّعْرُوفًا ۖ وَلَا تَعْرِمُوا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتَّى يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي أَنفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ ۗ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَفُورٌ ۖ حَلِيمٌ ﴿٢٣٦﴾

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ مَا

1. विधवा जनानियें कनै जेकर ब्याह दी थुआड़ी मरजी होऐ ते इद्दत बीतने तक उसी जाहर नेई करो, हां! संकेत दे रूपै च इस पासै ध्यान दुआने च कोई पाप नेई ऐ।

जिन्ना चिर जे तुसें उनेंगी छूहते¹ दा तक नेई² होऐ जां मैहर² निश्चत नेई कीते दा होऐ³ ते (चाही दा ऐ जे ऐसी अवस्था च) उनेंगी मनासब ढंगे कनै किश समान देई देओ। धनवान आस्तै उसदी समर्था मताबक ते गरीब⁴ आस्तै उसदी समर्था मताबक। (असें ऐसा करना) उपकारी लोकें आस्तै जरूरी (करी दित्ते दा) ऐ ॥ 237 ॥

ते जेकर तुस उनें गी छूहने शा पैहलें तलाक देई देओ ते तुसें मैहर निश्चत करी लैते दा होऐ तां (ऐसी हालत च) जो मैहर तुसें निश्चत कीते दा होऐ उसदा अदध देना होग सिवाए इस गल्ला दे जे ओह जनानियां आपूं छोड़ी देन जां ओह शख्स छोड़ी देऐ जिसदे

لَمْ تَسْؤُهُنَّ أَوْ تَفْرِضُوا لِهِنَّ فَرِيضَةً
وَمِعْوَهُنَّ عَلَى الْمَوْسِعِ قَدْرَهُ وَعَلَى
الْمُقْتَرِ قَدْرَهُ مَتَاعًا بِأَمْعُرُوفٍ حَقًّا
عَلَى الْمُحْسِنِينَ ﴿٢٣٧﴾

وَإِنْ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ
وَقَدْ فَرَضْتُمْ لِهِنَّ فَرِيضَةً فَصِفْ مَا
فَرَضْتُمْ إِلَّا أَنْ يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوا الَّذِي
بِيَدِهِ عُمْدَةُ النَّكَاحِ ط وَأَنْ تَعْفُوا أَقْرَبُ

1. सधारण द्रिष्टी कनै एह गल्ल बे-हूदा जनेही सेही होंदी ऐ जे जो शख्स संभोग करने शा पैहलें गै जनानी गी तलाक देई देओ नकाह गै की करग, पर नकाह दे बा'द किश ऐसियां अड़चनां, मजबूरियां आई जंदिंयां न जिंदे करी तलाक देना पेई जंदा ऐ। जियां नकाह दे फौरन बा'द ऐसियां गुआहियां मिली जान जिंदे कनै ब्याह नजायज होई जा जां दिलें च उस नकाह करी भिना पैदा होई जा। जियां इक गुआही ऐसी मिली जा जे एह जनानी अपने पति दी दुदध पींदी भैन ऐ, इस कनै पति दे दिलें च भिना पैदा होई जाग ते कदें-कदें ऐसियां गुआहियां नकाह दे बा'द मिली जंदिंयां न जां खानदान दे बड्डे लोक जिनेंगी पैहले हालातें दा इलम नेई हा इस अधार पर तलाक दा निरना करी देन जे दौनीं कटुंबें दे आपसी सरबंध ऐसे न जे तुस दमें पति-पत्नी दे रूपै च नकाह नेई करी सकगे। इस्लामी धर्म शास्तर दे मताबक इक माऊ दा दुदध पीयै बच्चें दा आपस च ब्याह रहाम ऐ। ऐसे बच्चें गी परिभाशा मूजब रजाई भैन-भाऽ आखदे न यानी दुदध दे भैन-भाऽ।
2. मैहर यानी नकाह बेलें इक मुसलमान पति प्रतिज्ञा करदा ऐ जे ओह अपनी समर्थ मताबक इन्ना निश्चत धन जां चीज अपनी जनानी गी देग। एह मैहर पत्नी दी जाति जैदाद ते उसदा हक होंदा ऐ।
3. इस्लाम च हक-मैहर निश्चत कीते बगैर नकाह अवैध गलाए दा ऐ, पर इस आयत शा सेही होंदा ऐ जे ऐसा बी ममकन होई सकदा ऐ। शरीअत नै इस दा एह अर्थ कीता ऐ जे जेकर रपेंऽ दे रूपै च मैहर निश्चत नेई बी होऐ तां बी एह समझेआ जाग जे मैहर निश्चत गै ऐ ते ऐसी हालत च मैहर दी नियुक्ती दा अंदाजा उस कटुंब दे दूए लोकें दे मैहर गी दिक्खियै कीता जंदा ऐ।
4. जेकर इस बदले बारै मतभेद होई जा तां कुरआन मजीद नै सिद्धांतक रूपै च निरना करी दिता ऐ जे इस चाल्ती दे झगड़ें गी हाकमै कश लेई जाओ। जज इस गल्ला दा फैसला करग जे पति नै अपनी समर्थ मताबक तलाक आहली जनानी दा नुकसान भरे दा ऐ जां नेई।

हथै च¹ नकाह कराने दा हक्क होऐ ते थुआड़ा छोड़ी देना गै संयम दे ज्यादा लागै ऐ तुस आपस च (ब्यहार करदे बेलै) परोपकार करना नेई भुल्लो, (ते याद रक्खो जे) जो कुछ तुस करदे ओ अल्लाह यकीनन (उसी) दिखदा ऐ ॥ 238 ॥

तुस सारी नमाजें दा ते (खास कर) दरम्यानी नमाज दा पूरा ध्यान² रक्खो ते अल्लाह दे आगें फरमांबरदार बनिगै खड़े होई जाओ ॥ 239 ॥

जेकर तुसेंगी डर होऐ तां पैदल जां सुआर होने दी हालत च गै (नमाज पढ़ी लैओ पढ़ी जिसलै तुसेंगी अमन हासल होई जा तां) अल्लाह गी याद करो, की जे उसनै तुसेंगी ओह किश सखाए दा ऐ जो तुस (पैहलें) नथे जानदे ॥ 240 ॥

ते तुंदे चा जो लोक मरी जान ते लाड़ियां छोड़ी जान तां ओह अपनी लाड़ियें दे भले आसतै इक साल तक लाह पुजाने³ यानी उनेंगी

لِلتَّقْوَى ۗ وَلَا تَسْأُوا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٣٨﴾

حِفْظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ
الْوُسْطَىٰ ۖ وَقَوْمُوا لِلَّهِ قٰتِيْنَ ﴿٢٣٩﴾

فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجًا لَا أَوْرُكِبًا ۖ فَإِذَا
أَمِنْتُمْ فَأَذْكُرُوا اللَّهَ ۚ كَمَا عَلَّمَكُم مَّا لَمْ
تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿٢٤٠﴾

وَالَّذِينَ يُؤَقِّفُونَ مِنْكُمْ وَيَذُرُونَ
أَرْوَاجًا ۖ وَصِيَّةً لِأَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا إِلَىٰ

1. इसदा एह मतलब ऐ जे नेहियां जनानियां तलाक बेलै अपना अद्धा मैहर खसमें गी छोड़ी सकदियां न ते उंदे वकील बी छोड़ी (माफ करी) सकदे न। इस आयत दा एह बी अर्थ होई सकदा ऐ जे जेकर पति च समर्थ होऐ तां ओह उसी अद्धे मैहर दी निसबत पूरा मैहर देई देऐ।
2. यानी तुस सारी नमाजें दा ध्यान रक्खो ते उंदा नरीखन करो, नतीजा एह निकलग जे नमाज कारण तुस पापें ते भुल्लें-कुत्थें शा बचे दे रौहगे ओ, की जे नमाज मनुक्खै गी पापें, दुराचारें ते मंदियें गल्लें शा रोकदी ऐ (सूर: अन्कबूत आयत 46) ते अल्लाह नमाज पर कायम रौहने आहले भगत दा मदादी ते मित्तर बनी जंदा ऐ। 'ध्यान रक्खो' च एह बी दस्सेआ गेदा ऐ जे इस्लामी उपासना दूए धर्म दी उपासना आंगर इक पासो (कपासी) नेई ऐ बल्के इसदा फल इस लोक च ते परलोक च बी मिलग।
3. लाह पुजाने दा अर्थ एह ऐ जे जिनें लोकें दे हथै च बसीहत लागू करने दा हक्क होऐ ओह उनें बिधवा जनानियें गी उंदे सुर्गबासी खसमें दे धरें चा नेई कइडन। जेकर मरने आहले दा मकान कुसै दूए रिश्तेदार गी बी थ्होए दा होऐ तां बी मरने आहले दी जनानी गी उस मकानै च इक साल रौहन देन। हां! जेकर जनानी आपुं अपनी मरजी कनै जाना चाह तां इदत दा समां (चार महीने दस दिन) पूरा करियै जाई सकदी ऐ। इक साल दी शर्त सिर्फ जनानी दी सुख-सुबधा लेई ऐ। इस हुकम दा लाह लैना जां नेई लैना उसदा कम्म ऐ।

(घरें थमां) नेई कड्ढने दी बसीहत¹ करी जान, पर जेकर ओह अपने आप उठी जान ते अपने बाँरे जो बी भली गल्ल करन² उसदा तुसेंगी कोई दोश नेई लग्ग ते अल्लाह गालिब ते हिक्मत आह्ला ऐ ॥ 241 ॥

ते जिनें जनानियें गी तलाक देई दिता जा उनेंगी बी अपने हालात³ दे मताबक किश समान⁴ देना अत जरूरी ऐ। असें एह गल्ल संयमियें आसतै जरूरी ठरहाई दी ऐ ॥ 242 ॥

इससै चाल्ली⁵ अल्लाह अपने हुकम⁶ थुआड़े (फायदे) आसतै तफसील कनै ब्यान करदा ऐ तां जे तुस समझो ॥ 243 ॥ (रकू 31/15)

क्या तुगी उनें लोकें दी खबर नेई मिली जो

الْحَوْلِ غَيْرَ إِخْرَاجٍ ۚ فَإِنْ خَرَجْنَا فَلَا
جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا فَعَلْنَا فِي أَنْفُسِنَا
مِنْ مَّعْرُوفٍ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

وَالْمُطَلَّقَاتُ مَتَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ ۗ حَقًّا
عَلَى الْمُتَّقِينَ ۝

كَذَلِكَ يبينُ اللهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُونَ ۝

الْمَرَّةَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ

1. बसीहत-मरदे मौकै एह गलाना जे मेरे बा'द ऐसा-ऐसा कीता जा ।
2. 'भली गल्ल' अरबी दे मूल शब्द 'मारूफ' दा अनुवाद कीता गेदा ऐ जिसदा अर्थ ऐ-विधान, सभावक निजम जां कौम दे रीति-रवाज मताबक जिसी लोक चंगी चाल्ली जानदे होन। इस थाहा पर इस दा अर्थ मनासब ते भली गल्ल गलाना ऐ। अर्थ एह ऐ जे भामें विधवां उद्दत दे बा'द दूआ ब्याह करन भामें अपने मा-थोड जां अपने रिश्तेदारें कश उठी जान जां कोई नौकरी करन तां तुं दे कोई दोश नेई। इस हुकम मताबक उनेंगी रोकने दा तुसेंगी कोई हक्क नेई।
3. मूल शब्द 'मारूफ' कु'आन मजीद च केई बार बरतोए दा ऐ। मारूफ उस कम्मै गी आखदे न जिसदे गुण ते बशेशतां बुद्धि संगत होन ते इस्लामी धर्म शास्तर कनै पन्धानियां जान। इस लेई जिसलै मारूफ शरीअत दे मताबक होऐ तां ओह कम्म विधान दे मताबक खुआग ते जिसलै साम्य बुद्धि (common sense) कनै उसदे गुण पन्छाने जान तां उसी रीति-रवाज दे मताबक गलाया जाग। इसदा असल अर्थ पन्छानना होआ ऐ। जिसलै कुसै कम्मै दी बशेशता कुसै बशेश व्यक्ति दी बुद्धि कनै पन्छानी जा तां उसी हालात दे मताबक गलाया जाग।
4. इथें तलाक आहली जनानी कनै उत्तम ब्यहार करने दे आदेश गी दुरहाया गेदा ऐ की जे तलाक आहली जनानी पर इक चाल्ली दा गुस्सा होंदा ऐ। इस आसतै आदमी गी बशेश रूपे च उस कनै ब्यहार करने दा आदेश दिता गेदा ऐ। जेकर इस आदेश दा पूरी चाल्ली पालन कीता जा तां नेकां झगड़े मुक्की सकदे न ते तलाक जो कुसै मजबूरी दी हालात च जायज ऐ कुसै चाल्ली दे दुख ते कष्ट दा कारण नेई बनी सकदा, की जे दमै पक्ख एह समझडन जे एह तलाक मजबूरी दी हालात च होआ करदा ऐ नेई ते आपस च कोई झगड़ा नेई। इस आदेश राहें इस बख्खी बी संकेत होंदा ऐ जे जिल्लें विधान नै विधवा गी इक साल तक अपने सुर्गबासी पति दे मकाने च रौहने दी सुबधा देई रक्खी दी ऐ जथें इक मोमिन गी चाही दा ऐ जे तलाक आहली जनानी गी बी उस दी जरूरत मताबक किश ज्यादा समे तक मकाने दा लाह लैन देऐ।
5. यानी शरीअत गी गल्लां दसने च एह गल्ल सामनै रक्खी गेदी ऐ जे सारे म्हत्त्वपूर्ण बिशें ते जरूरतें दी पूर्ति दे सरबधें च शिक्षा दससी दिती जा ते उस दा ब्यौरा ऐसे असान ढंगें होऐ जे मानव समाज पापें ते कमजोरियें शा बचे दा र'वै।
6. मूल शब्द 'आयत' दा अर्थ ऐ - (क) आदेश (ख) अनुदेश (ग) चि'न, नसान, चमत्कार (घ) हदायत (ङ) युक्ति (च) ईमान आहले पासै लेई जाने आहली गल्ल (छ) दुख शा बचाने आहली गल्ल (ज) सभ्यता (झ) समार्ग दसने आहली गल्ल (ञ) अल्लाह पासै ध्यान दुआने आहली गल्ल।

(ज्हारें दी गिनतरी च हे ते) मौती शा बचने आस्तै अपने घरें दा निकले हे। इस पर अल्लाह नै उनेंगी गलाया जे तुस मरी² जाओ। इसदे बा'द उसनै उनेंगी जींदा करी दिता। यकीनन अल्लाह लोकें पर बौहत किरपा करने आह्ला ऐ, पर फही बी मते-हारे लोक शुकर नेई करदे ॥ 244 ॥

ते तुस अल्लाह दे रस्ते च युद्ध करो ते समझी लैओ जे अल्लाह बौहत सुनने आह्ला (ते) बौहत जानने आह्ला ऐ ॥ 245 ॥

क्या कोई है जो अल्लाह गी (अपने धन दा) इक अच्छा हिस्सा कट्टियै दे दे तां जे ओह ओहदे आस्तै उसी बौहत बधाऽ? ते अल्लाह (दा एह बी निजम ऐ जे मनुखै शा धन) लैंदा ऐ ते उसी बधांदा ऐ ते आखर च तुसेंगी उससै कश लेता जाग ॥ 246 ॥

क्या तुगी बनी-इस्राईल दे उनें नेताएं दा हाल नेई सेही जो मूसा दे बा'द होए दे न? जिसले उनें अपने इक नबी⁴ गी गलाया जे साढे

وَهُمْ أَتَوْفَ حَذَرَ الْمَوْتِ فَقَالَ لَهُمُ
اللَّهُ مُوتُوا ثُمَّ أَحْيَاهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَذُو
فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَشْكُرُونَ ﴿۲۴۴﴾

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ
سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿۲۴۵﴾

مَنْ ذَا الَّذِي يُقرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا
فِيضِعْفَهُ لَهُ أَضْعَافًا كَثِيرَةً وَاللَّهُ
يَقْبِضُ وَيَبْضُطُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿۲۴۶﴾

الْمَرَّتْ إِلَى الْمَلَأِ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنْ
بَعْدِ مُوسَى إِذْ قَالُوا لِنَبِيِّهِمْ أَهْمُ ابْعَثْ لَنَا

1. अपने घरें दा निकलने आहले लोक बनी इस्राईल हे जो सम्राट फ़िराँन शा डरिये मिस्र देशे चा निकली गे हे। पवित्र कुरआन मूजब ओह ज्हारें दी गिनती च हे। इस कर्ने तौरात दी इस गल्ला दा खंडन होंदा ऐ जे मिस्र चा निकलने आहले इस्राईलियें दी गिनती छे लक्ख त्रै ज्हार पंज सौ पंजाह ही, की जे छे लक्ख लोकें दा जातरी दल ज्यादा समाने बगैर जंगल च सैकड़े क्रोहें दी जातरा नेई करी सकदा।
2. 'मरी जाओ' दा अर्थ एह ऐ जे थुआड़ी नाफरमानी करी तुंदा शा विजय हासल करने आहली शक्तियां बापस लेई लैतियां जदियां न, पर फही अल्लाह नै उनेंगी माफ करी दिता ते विजय हासल करने आहली शक्तियां बापस देई दितियां।
3. अरबी दे मूल शब्द कर्ज दा अर्थ ऐ - (क) रिण। करजा। (ख) करजा देना। (ग) कट्टियै अलगा करना। (घ) कट्टना। आयत दा भाव एह ऐ जे जो शख्स अपने पवित्र धन चा किश हिस्सा अल्लाह आस्तै दान देऐ, अल्लाह उसी ऐसे कर्में दा फल जरूर देग। शुभ कर्में गी अल्लाह कर्दे बी ब्यर्थ नेई जान दिंदा बल्के उंदे सिले बौहत बधाई-चढ़ाइयें दिंदा ऐ। अल्लाह गी अपने आस्तै नां ते कुसै करजे बगैरा दी ते नां कुसै दूई चीजें दी कोई लोड़ ऐ। ओह ते पैसे आहलें गी गरीबें दी भलाई आस्तै दान देने ते शुभ कर्म करने दी प्रेरणा दिंदा ऐ, फही उंदे कर्में दा सिला बधाई-चढ़ाइयें देने दा बा'यदा करदा ऐ।
4. दिक्खो तौरात, न्याइयें दा वृतांत भाग 6 आयत 7-8।

आस्तै कुसै शख्स गी राजा नियुक्त करो तां जे अस (उस दी मतैहती च) अल्लाह दे रस्ते च युद्ध करचै। उस नै गलाया जे कुदै ऐसा ते नेई होग जे जेकर थुआड़े आस्तै युद्ध जरूरी करी दिता जा तां तुस युद्ध नेई करो। उनें (परते च) गलाया (ऐसा नेई होग) ते असेंगी होई केह गेदा ऐ जे अस अल्लाह दे रस्ते पर युद्ध नेई करगे जिसलै जे असेंगी अपने घरें दा कड्डी दिता गेदा ऐ अपने टक्कै शा बी बक्खरा कीता गेदा ऐ, पर जिसलै उंदे आस्तै युद्ध करना जरूरी करी दिता गेआ तां उंदे चा थोढ़े-हारे लोके दे सिवा दूए सारे मुक्करी / फिरी गे ते अल्लाह जालमें गी खूब जानदा ऐ ॥ 247 ॥

ते उंदे नबी नै उनेंगी गलाया जे अल्लाह नै थुआड़े-आस्तै तालूत¹ गी राजा दे रूपै च (इस कम्मै आस्तै) खडेरैआ ऐ। उनें गलाया जे उसी साढ़े पर व्हूमत² कियां मिली सकदी ऐ जिसलै जे अस उसदी निसबत व्हूमत करने दा ज्यादा हक्क रक्खने आं ते उसी पैसे-धेले च बी कोई बाद्धा अता नेई होआ। उसनै गलाया जे यकीनन अल्लाह नै उसी तुंदे पर फ़ज़ीलत (प्रधानता) दिती ऐ ते थुआड़ी निसबत उसी ज्ञान ते शरीरक शक्ति च बी

مَلِكًا تُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ قَالَهُ هَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوا قَالُوا وَمَا نَأْتِي الْقِتَالَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَدْ أَخْرَجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَأَبْنَاءِنَا فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٢٤٧﴾

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ مَلِكًا قَالُوا أَنَّى يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِنَ الْمَالِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ

1. तालूत गुण वाचक संज्ञा ऐ। इस दा अर्थ ऐ लम्मा ते प्रौढ़ ते इस दा मतबल जदऊन ऐ। इब्रानी भाशा च जदऊन दा अर्थ बड्डना ते ढाना ऐ। आखो जे ऐसा शख्स जो अपने बैरियें गी मारदा ते धरती पर उंदे सत्थर लांदा होऐ। जदऊन गी तौरत च चीर ते बलवान गलाया गेदा ऐ (न्याइयें दा वृत्तांत भाग 6 आयत 12) इस आस्तै तालूत ते जदऊन समानार्थक शब्द न।

2. मूल शब्द 'मुल्क' दा अर्थ ऐ-व्हूमत राज्याधिकार, गल्बा, प्रभुत्व, अनुशासन, साम्राज्य। (अक्रब) आयत दा अर्थ एह ऐ जे तालूत गी साढ़े उपपर अनुशासन करने जां प्रभुत्व जमाने दा अधिकार कियां, कदूं ते कुत्थं थ्योई गेआ।

खास बढोतरी प्रदान कीती दी ऐ ते अल्लाह
जिसी पसंद करदा ऐ उसी अपना मुलख¹
प्रदान करदा ऐ ते अल्लाह बढोतरी देने आह्ला
(ते) बौहत् जानने आह्ला ऐ ॥ 248 ॥

ते उंदे नबी नै उनेंगी गलाया जे उसदी व्हूमत
दा एह बी सबूत ऐ जे तुसेंगी इक ऐसा ताबूत²
(संदूख) थ्होग जेहदे च थुआड़े रब्ब पासेआ
थुआड़े लेई शांति होग ते उस चीजे दा अवशेश³
(यानी बचे दा) होग जो मूसा ते हारून कनै
संबंध रखने आहलें (अपने पिच्छें) छोड़ेआ
हा। उसी फरिशतें चुक्के दा होग। जेकर तुस
मोमिन ओ तां यकीनन इस गल्ला च थुआड़े
आस्तै इक बड्डा नशान ऐ ॥ 249 ॥ (रुकू
32/16)

इस दे बा'द जिसलै तालूत अपनी फौजें गी
लेइयै निकलेआ तां उसनै गलाया जे यकीनन

وَالْجِسْمِ وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَن يَشَاءُ
وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٨﴾

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَنْ
يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ
وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ
تَحْمِيلَهُ ۚ الْمَلِكَةَ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّكُم
إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٢٤٩﴾

٢٤
١١

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ

1. 'अपना राज'-इस रहें एह संकेत कीते दा ऐ जे सारा साम्राज्य अल्लाह दा गै ऐ। इस आस्तै इसी हासल करने दा ऊरे अधिकारी होई सकदा ऐ जिसी अल्लाह नियुक्त करै।
2. मूल शब्द ताबूत दा अर्थ ऐ - (क) संदूख। (ख) नाव (किश्ती) (अक्रब)। इस्तेआरा यानी रूपक दे रूपै च एह शब्द हिरदे दे अर्थ च बी बरतेआ जंदा ऐ (मुफ़दात)। इस ज ग़ा ताबूत दा अर्थ हिरदा ऐ की जे इत्थें दस्सेआ गोदा ऐ जे उस संदूखै च थुआड़े आस्तै शांति ते तसल्ली होग। एह गल्ल साफ ऐ जे शांति दिलें च होंदी ऐ नां के संदूखें च। आयत दा भाव एह ऐ जे तालूत दे अनुयायियें दे दिलें च फरिशते उत्साह भरदे हे ते उनेंगी त्याग ते बलिदान दी प्रेरणा दिंदे हे।
3. बक्रिया अवशेश यानी बचे दा, पर इस थाहरा पर अवशेश दा अर्थ उत्तम पदार्थ ऐ। मतलब एह ऐ जे अल्लाह तालूत दे साथियें च ऊरे उच्च कोटि दी नैतक ते अध्यात्मक शक्तियां पैदा करी देग जो हज़रत मूसा ते हज़रत हारून दे मन्नने आहलें च हियां। सारांश एह ऐ जे उस बेले दे रसूल ने तालूत पर इतराज करने आहलें गी एह जवाब दिता जे छप्यो दी शक्तियें दा ज्ञान सिर्फ अल्लाह गी गै ऐ। जिसलै उसनै अनुशासन आस्तै तालूत गी चुनी लैते दा ऐ तां सच्चें गै ओह तुंदे शा उत्तम ऐ। फही अनुशासन सिर्फ पैसे कर्नै गै नैई बल्के ज्ञान, त्याग ते बलिदान राहें बी होंदा ऐ। इस आस्तै ओह इनं गल्लें च तुंदे शा उप्पर ऐ ते अल्लाह दे रस्ते च कुरबान होने आस्तै हर बेले त्यार ऐ। उसी वीरता, धीरता, सैहनशीलता ते त्याग दा गुण प्रदान कीता गोदा ऐ ते उसदा अपना दिल ते ओहदे साथियें दे दिल अल्लाह दी मदद कर्नै संतुष्ट होंगन ते उनेंगी ऊरे संयम मिलग जो मूसा, हारून ते उसदे साथियें गी प्राप्त होआ हा।

अल्लाह इक नदी¹ राहें थुआड़ा इम्तेहान लैने आहला ऐ। इस आस्तै जिसनै उस नदी चा (ढिड्ड भरियै) पानी पी लैता ओह मेरे कन्नै (संबंधत) नेई (रौहग) ते जिसनै ओहदे चा नेई चक्खेआ ओह यकीनन मेरे कन्नै संबंधत होग, सिवाए उसदे जिसनै ओहदे चा अपने हत्थें कन्नै (सिर्फ) इक चूटी लेइयै पी लैता (उसी कोई पाप नेई लगग) पही (होआ एह जे) उंदे चा थोढ़े हारे लोकें दे सिवा (बाकी सारें) ओहदे चा पानी पी लैता। पही जिसलै ओह आपू ते ओह लोक जो उस पर ईमान ल्याए दे हे उस नदी दे पार पुज्जी गे तां उनें गलाया जे अज्ज साढ़े च जालूत ते उसदी फौज कन्नै युद्ध करने दी रत्ती-भर ताकत नेई, पर जो लोक ईमान रखदे हे जे ओह इक रोज अल्लाह कन्नै मिलने आहले न, ओह गलान लगे जे अल्लाह दे हुकम कन्नै नेकां निक्के जत्थे बड्डे जत्थें पर जीत हासल करी चुके दे न ते अल्लाह धीरजवानें दे कन्नै होंदा ऐ (इस लेई डरने दी कोई ब'जा नेई) ॥ 250 ॥

ते जिसलै ओह जालूत ते उसदी सेना कन्नै युद्ध करने आस्तै निकले तां उनें गलाया

اللَّهُ مُبْتَلِيكُمْ بِنَهَرٍ ۖ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي ۚ وَمَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ ۚ فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ ۖ فَلَمَّا جَاوَزَهُ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُودِهِ ۗ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلِقُوا اللَّهَ لَكُم مِّنْ فِتْنَةٍ قَلِيلَةً ۖ عَلَبْتَ فِتْنَةً كَثِيرَةً بِأَذْنِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝

وَلَمَّا بَرَزُوا لِجَالُوتَ وَجُودِهِ قَالُوا رَبَّنَا

1. मूल शब्द नेहर दे दो अर्थ न - (क) नदी (ख) धन-दौलत (मुक़्दात) इत्थें इस आयत दे दमें अर्थ होई सकदे न। (क) धन-दौलत दे मताबक एह अर्थ होग जो धन राहें थुआड़ी परीक्षा लैती जाग। जेकर तुस धन-दौलत दे पिच्छें पेई गे तां अल्लाह दा कम्म नेई करी सकगे ओ ते जेकर धन-दौलत शा प्रभावत नेई होए तां तुसंगी कामयाबी हासल होग। (ख) तौरत च न्यायियें दा वृत्तांत 7:5, 7 शा पता लगदा ऐ जे जदऊन (तालूत) दे साधियें दी इक नदी राहें परीक्षा लैती गई ही। इस लेई शाब्दिक अर्थ लैने च बी कोई रोक नेई। अल्लाह नै उनेंगी हुकम दिता हा जे हल्के ढिड्ड र'वो ते थोढ़ा पानी पीयो तां जे युद्ध च तेज गति कन्नै कम्म करी सकगे। मते-हारे ईस रहस्य गी नेई समझेआ ते ढिड्ड भरियै पानी पी लैता। बाईबिल दे मताबक सिर्फ त्रै सौ लोकें गै थोढ़ा-थोढ़ा पानी पीता तां जे ओह लड़ाई दे मदान च ठीक चाल्ती कम्म करी सकन। अल्लाह नै उंदे बलिदान दा सिला/बदला देने ते उंदी शरधा गी मानता देने आस्तै एह फैसला कीता जे सिर्फ उनें त्रै सौ लोकें गी युद्ध च शामिल कीता जा, दूए लोकें गी नेई। इस लेई उनें त्रै सौ लोकें गी तालूत जां जदऊन नै युद्ध च शामिल कीता ते अल्लाह नै उनेंगी गै जीत प्रदान कीती।

जे हे साढे रब्ब! असें गी धीरज प्रदान कर ते (लड़ाई दे मदान च) साढे पैर जमाई रख्ख ते इनें बैरियें दे बरुद्ध साढी मदद कर ॥ 251 ॥

पही (ओह लड़ाई च कुद्दी पे ते) उनें अल्लाह दे हुकम मताबक उनेंगी हराई दिता ते दाऊद नै जालूत गी मारी दिता¹ ते अल्लाह नै उसी व्हूमत ते हिक्मत प्रदान कीती ते जे किश ओह (अल्लाह) चांहदा हा उसदा ज्ञान उस (दाऊद) गी दिता ते जेकर अल्लाह लोकें गी (शरारत कनै) नेई हटाई रख्खदा (यानी किश लोकें राहें दूएंगी नेई रुकोआंदा) तां धरती उलट-पलट होई जंदी, पर अल्लाह सब लोकें (ज्हानें) पर बड़ी किरपा करने आहला ऐ (ते) (इस आस्तै फसाद गी रोकी दिंदा ऐ) ॥ 252 ॥

एह अल्लाह दियां आयतां न जो अस तुगी पढ़ियै सुनाने आं इस हालत च जे तूं सच्च पर कायम ऐं तां तूं यकीनन रसूलें चा ऐं ॥ 253 ॥

أَفَرِحَ عَلَيْهَا صَبْرًا وَ تَبَتَّ أَقْدَامًا
وَ انصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

فَهَرَمُوهُمْ بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَ قَتَلَ دَاوُدُ
جَالُوتَ وَ أَنشَأَ اللَّهُ اللَّهُ الْمَلِكَ وَ الْحِكْمَةَ
وَ عَلمَهُ مَا يَشَاءُ ۖ وَ لَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ
بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَفَسَدَتِ الْأَرْضُ
وَ لَكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ تَنْتَوَاهَا عَلَيْكَ يَا حَقُّوقُ
وَ إِنَّكَ لِمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

1. इस शा पैहलें जदऊन दी घटना दा बर्णन होई चुके दा ऐ। हून इनें आयतें च हजरत दाऊद दी घटना दा बर्णन ऐ। हजरत दाऊद दी घटना जदऊन जां तालूत दी घटना आंगर ऐ। जदऊन दे बेलें फलस्तीन बासियें इस्राइलियें गी फलस्तीन थमां कइवने दे प्रयास कीते हे, पर एह शुरुआती प्रयास हे जो बल्लें-बल्लें हजरत दाऊद दे समै तक आइयै खतम होए। इस आस्तै दौनीं घटनें दा बिशे इक्के नेहा होने करी इक्के थाहर बर्णन कीता गेदा ऐ नेई ते पैहली घटना जदऊन दी ऐ ते दूई हजरत दाऊद दी। दौनीं घटनें च दो सौ साल्लें दा फर्क ऐ।

बाईबिल दे मताबक दाऊद नै जालूत दी हत्या कीती ही, पर पवित्र कुरआन नै जदऊन (तालूत) दी घटना च बी जालूत दा बर्णन कीते दा ऐ। इस बारै एह चेता रख्खना चाही दा जे इब्रानी ते अरबी भाशा च 'जालूत' बी इक गुणवाचक संज्ञा ऐ। जालूत उस शख्स गी आखदे न जो देशे च डाके मारें ते फसाद फलाऽ। आम तौर पर साम्राज्यें दे बरोधी इसै चाल्ली दे कम्म करदे होंदे न। इस आस्तै समानार्थक संज्ञाएं करी जदऊन ते हजरत दाऊद दौनीं दे बैरी गी जालूत गलाया गेदा ऐ। जदऊन दा बैरी बी इक डाकू हा जो देशे च फसाद ते अशांति फलांदा हा जेहदे करी उसी जालूत गलाया गेदा ऐ। हजरत दाऊद नै देशे च शांति ब्हाल रख्खने आस्तै जिस बैरी कनै युद्ध कीता ओह बी इक फसादी ते डाकू हा। इस आस्तै दौनीं दे बैरियें गी जालूत गलाया गेदा ऐ।

एह (दस्से गेदे) रसूल ओह न जिंदे चा असें किश रसूलें गी दूए रसूलें दी निसबत श्रेष्ठता (फ़ज़ीलत) दिती ही। उंदे चा किश ऐसे न जिंदे कनै अल्लाह नै कलाम¹ (गल्ल-बात) कीता ते उंदे चा किश रसूलें दे (सिर्फ) दर्जे उच्चे कीते ते मर्यम दे पुतर ईसा गी असें जाहरा-बाहरा नशान दिते हे ते रूहुलकुदुस² राहें उसी (अध्यात्मक) शक्ति दिती ही ते जेकर अल्लाह चांहदा तां जेहके लोक उंदे बा'द (आए) हे ओह जाहरा-बाहरा नशानें दे औने परैत आपस च नेई लड़दे-झगड़दे, पर रूहानगी ऐ जे पही बी उनें मत-भेद कीता। पही इय्यां होआ जे उंदे चा किश ते ईमान ल्याए ते केइयें इन्कार करी दिता ते जेकर अल्लाह चांहदा तां एह लोक आपस च लड़ाई-झगड़ा नेई करदे, पर अल्लाह जो चांहदा ऐ ऊरे करदा ऐ ॥ 254 ॥ (रुकू 33/1)

हे ईमान आहलेओ! जे किश असें तुसैं गी दिते दा ऐ ओहदे चा (अल्लाह दे रस्ते च) खचं करो, उस दिनै दे औने शा पैहलें जे जेहदे च नां कुसै दा बपार होग, नां दोस्ती ते नां सफारश कम्म औग ते (इस हुकम दा) इन्कार करने आहले (आपूं अपने आपै पर) जुलम करने आहले न ॥ 255 ॥

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ
بَعْضٌ مِنْهُمْ مَنْ كَلَّمَ اللَّهُ وَرَفَعَ
بَعْضُهُمْ دَرَجَاتٍ ۗ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ
مَرْيَمَ الْبَيْتُ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ ۗ
وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِينَ مِنْ
بَعْدِهِمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيْتُ
وَلَكِنْ اختلفوا فَمِنْهُمْ مَنْ آمَنَ
وَمِنْهُمْ مَنْ كَفَرَ ۗ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا
اقتتوا ۗ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ۗ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا إِرَارَ رِزْقِكُمْ
مِّن قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَنِي يَوْمٌ لَا بَيْعَ فِيهِ وَلَا خُلَّةً
وَلَا شَفَاعَةً ۗ وَالْكَافِرُونَ هُمُ
الظَّالِمُونَ ﴿٢٥٥﴾

1. 'कलाम' दा अर्थ शरीअत (अध्यात्मक विधान) ऐ यानी किश नबी शरीअत ल्याए हे ते किश नबियें गी असें सिर्फ नबुव्वत प्रदान कीती ही, उनेंगी शरीअत नथी दिती गई। एह आयत इस गल्ला दा प्रमाण ऐ जे किश नबी शरीअत आहनेद न ते किश नबियें गी सिर्फ आदर दे तौर पर रसूल गलाया जंदा ऐ, पर ओह शरीअत लेइयें नेई औंदे।

दूआ अर्थ एह ऐ जे 'किश' दा अर्थ सिर्फ नबी ऐ ते इस द्रिस्टी कनै इस आयत च हज़रत मुहम्मद मुस्ताफ़ा सल्लअम दा जिकर ऐ, जिनें गी जिल्ली तौर पर (ईश्वर दे बिब दे रूप च) प्रभुसत्ता दे महान चमत्कारें दे चि'न प्रदान कीते गे।

2. पाक रूह, पवित्र आतमा, जिब्राईल फरिश्ते दा नांउ बी ऐ।

अल्लाह ओह (जात) ऐ जिस दे सिवा दूआ कोई बी पूजा दे जोग नैई। ओह कामिल¹ जिंदगी आहला, सदा कायम रहने आहला ते दूरं गी कायम² रक्खने आहला ऐ। नां उसी उंच आँदी ऐ ते नां नीदर आँदी ऐ। जे किश गासँ ते धरती च ऐ सब उसै दा ऐ। कु³ ऐ जेहड़ा उसदी आज्ञा दे बगैर ओहदे कश सफारश करै? जे किश उंदे सामने ऐ ते जे किश उंदे पिच्छें ऐ ओह (सब किश) जानदा ऐ ते ओह उसदी इच्छा दे बगैर उसदे ज्ञान दा तिल-परमान बी हासल नैई करी सकदे। उस दा ज्ञान⁴ गासँ पर बी ते धरती पर बी ब्यापे दा ऐ उंदी पहाजत करना उसी थकांदा नैई ते ओह उच्ची शान रक्खने आहला (ते) मैहमाशाली ऐ ॥ 256 ॥

धर्म दे बारे च कुसै चाल्ली दी जबरदस्ती (दी अजाजत) नैई, की जे हदायत⁴ ते गुमराही दा फर्क चंगी-चाल्ली स्पष्ट होई-चुके दा ऐ। इस आसै समझी लैओ जे जो शख्स (अपनी मरजी कनै) भले कम्मं च रोड़ा अड़काने आहले⁵ दी गल्ल मनने शा इन्कार करै ते अल्लाह पर ईमान रक्खे तां उसने इक मजबूत ते भरोसेमंद⁶ चीजै

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَلِيُّ الْيَوْمُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يُعَلِّمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ﴿٢٥٦﴾

لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ قَدْ تَبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ فَمَنْ يَفْضُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنْ بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انفِصَامَ لَهَا وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥٦﴾

1. मूल शब्द 'अल्हय्यो' दा अर्थ ऐ जे अल्लाह कामिल जिंदगी रखदा ऐ यानी जो अपने आपे गी जींदा रक्खने आसै कुसै दूर दा मुत्ताज नैई होऐ। उसी कुसै होरस नै जिंदगी नैई दिती दी होऐ। ओह अनादि ते अनंत ऐ।
2. जो अपने-आप कायम होऐ ते दूरं गी कायम रक्खने आहला होऐ। हर चीजें दा नरीक्षक होऐ ते उनेंगी ऐसी ताकत प्रदान करै जेहदे नै उंदे रचनात्मक तत्त्व जुड़े दे रहने ते ओह कायम रेही सकन ते ओह अपने करतबबें दा पूरी चाल्ली पालन करदियां रहन।
अल्लाह दा एह गुण इस बक्खी इशारा करदा ऐ जे सूर्यमंडल दे नखतरागणें च गुल्तवाकर्षण शक्ति (कशश) मजूद होंदी ऐ। सूक्ष्म दर्शक-यंत्र (टूरबीन) राहें लम्बने आहले परमाणुएं दा आपसी संजोग, समन्वय, समावेश ते उंदे इक-दूर दे इर्द-गिर्द घूमने बगैरा कनै सरबन्धत क्रियाएं पासै बड़े अच्छे ढंगे कनै संकेत कीता गेदा ऐ।
3. मूल शब्द कुरसी ऐ जिसदा अर्थ ज्ञान ते शासन ऐ।
4. मूल शब्द 'स्पष्ट' (हदायत) दा अर्थ ऐ सीमा दा उल्लेख कनै कायम रहना। एह 'गय्युन' दा उल्लेख अर्थ देने आहला ऐ जिस दा अर्थ ऐ गुमराही, विनाश ते असफलता। (अक्रब)
5. अरबी मूल शब्द 'तागूत' दा अर्थ ऐ सीमा दा उल्लेख करने आहला, शतान, भले कम्मं शा रोकने आहला ते ऐसा शख्स जो गुमराही दा अगुआ होऐ (अक्रब)
6. मूल शब्द 'उवाह' दा अर्थ ऐ कुसै चीजें दा कुसै दूर चीजें कनै चमकी जाना। इससे करी भांडे दे हथे गी ते कपड़े दे काज गी उवाह आखदे न की जे एहदे कारण (बाह गला बगैरा) बंद कीता जंदा ऐ। उवाह उनें सारे पदार्थें गी गलाया जाई सकदा ऐ जिंदे पर भरोसा कीता जाई सके ते उंदे राहें सहारा लैता जाई सके। इस लेई 'उवाह' दा अर्थ भरोसेमंद चीज ऐ।

गी जो कदें बी टुटने आहली नेई ऐ घुट्टियै पकड़ी लैता ऐ ते अल्लाह बौहत सुनने आहला ते बौहत जानने आहला ऐ ॥ 257 ॥

अल्लाह उनें लोकें दा मित्तर ऐ जो ईमान आहनदे न। ओह उनें गी न्हेंरें चा कडिहयै लोई आहले पासै आहनदा ऐ ते जो इन्कार करने आहले न उंदे मित्तर नेकी थमां रोकने आहले न। ओह उनेंगी लोई चा कडिहयै न्हेंरें आहले पासै लेई जंदे न। ओह लोक अग्गी च पौने आहले न। ओह ओहदे च बास करडन ॥ 258 ॥ (रकू 34/2)

क्या तुगी उस शख्स दा समाचार नेई थोआ जे इस (घमंडै) करी जे अल्लाह नै उसी क्हूमत¹ देई रक्खी दी ही-इब्राहीम कनै उसदे रब्ब-बारै बैहस करन लागी पेआ हा (एह उसलै होआ) जिसलै इब्राहीम नै (उसी) गलाया जे मेरा रब्ब ओह ऐ जो जींदा करदा ते मारदा ऐ (इस पर) उसनै गलाया (जे) अ'ऊं (बी) जींदा करना ते मारना आं। इब्राहीम नै गलाया (जे जेकर एह गल्ल ऐ) तां अल्लाह (ते) सूरज गी पूर्व पासेआ (आहली बक्खी दा) आहनदा ऐ (हून) तूं उसी पच्छम (आहली बक्खी) दा लेई आ। इस पर ओह (इन्कारी) सटन² (होइयै) रेही गेआ ते (एह

اللَّهُ وَلِىُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَوْلِيَهُمُ الطَّاغُوتُ يُخْرِجُونَهُم مِّنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ ۗ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿۲۵۸﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِي حَاجَّ إِبْرَاهِيمَ فِي رَبِّهِ أَنْ آتَاهُ اللَّهُ الْمُلْكَ إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّىْ أَدَّبْتَنِى ۖ وَإِنِّى كَافٍ لَّنَّادٍ ۖ قَالَ إِنَّا أَنَا هُوَ ۖ وَأَمَّا شِمُّونَ فَمَا يَخْبَىٰ ۖ وَأَمَّا إِبْرَاهِيمُ فَأَنَّ اللَّهَ يَأْتِي بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ ۖ فَبُهِتَ الَّذِى كَفَرَ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿۲۵۹﴾

1. इस दा दूआ अर्थ एह बी ऐ जे ओह हजरत इब्राहीम कनै इस ईरखा करी बैहस करन लगा जे अल्लाह नै इब्राहीम गी की अध्यात्मक बादशाहत दिती ऐ।
2. पवित्र कुरआन दे किश जानकार एह आखदे न जे हजरत इब्राहीम नै अपनी कमजोरी दिक्खियै बैहस दा रुख बदलौ दिता, पर एह गल्ल सहेई नेई। असल गल्ल एह ऐ जे हजरत इब्राहीम दी कौम नखतरें दी पुजारी ही। ओह लोक समझदे हे जे प्राणी-मातर दा जीन-मरन सूरज जे कनै संबंथत ऐ। जिसलै बरोधियें दिदता शा कम्म लैता यानी अपनी गल्ला पर अड़ी गे तां हजरत इब्राहीम नै गलाया जे मेरा उस जीन-मरन कनै कोई बासता नेई जो तेरे अधिकार च ऐ, बल्के मेरा मकसद एह हा जे संसार च जो जीन-मरन दा चक्कर चला करदा ऐ ओह अल्लाह दे अधिकार च ऐ, जिसदे बारे च तेरा बिचार एह ऐ जे ओह सूरज दे अधिकार च ऐ। इस आसतै जेकर असल च तूं ऊऐ अल्लाह ऐं जिसदे अधिकार च जीन-मरन ऐ तां सूरज गी पूर्व दिशा दी निसबत पच्छम आहली बक्खी दा लेई आ। एह इक ऐसी युक्ति ही जेहदे कनै उंदा बरोधी रहान रेही गेआ। जेकर ओह एह आखदा जे तेरा अल्लाह सूरज गी पूर्व थमां प्रकट नेई करदा, बल्के अ'ऊं गै करना आं तां उसदी कौम उसदी बरोधी बनी जंदी ते आखदी जे तूं अपने आपे गी सूरज देवता शा उपर समझना ऐं। इस करी उस चुपप रौहना पेआ।

होना गै हा की जे) अल्लाह जालम लोकेँ गी
(कामयाबी दा) रस्ता नेई दसदा ॥ 259 ॥

ते (क्या तोह) उस शख्स आंगर (कोई आदमी दिक्खे दा ऐ) जो इक ऐसे शैहरे दे लागेआ लंघेआ¹ जेहदी एह हालत ही जे ओह अपने छत्तेँ पर डिगो दा हा²। (उसी दिक्खियै) उसनै गलाया जे अल्लाह इसी जुआड़ने दे बा'द कदूँ बसाग? इस पर अल्लाह नै उसी सौ साल तक (सुखने च) मरे दा रक्खेआ, फही उसी दुआलेआ ते गलाया, (हे मेरे बंदे!) तू किन्ना चिर इस (हालती) च रेहा ऐं? उसना गलाया, अ'ऊँ इस हालती च इक दिन जां दिनै दा किश हिस्सा रेहा आं (तां अल्लाह ने) गलाया (एह बी ठीक ऐ)³ ते तू (इस हालती च) सौ साल⁴ तक बी रेहा ऐं। हून तू अपने खाने-पीने (दे समान्ना) आहली बक्खी ध्यान दे जे ओह सड़े जां बुस्से दा ते नेई ते अपने

أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَى قَرْيَةٍ وَوَهِيَ حَاوِيَةٌ
عَلَى عُرُوشَهَا قَالِ الْيُحْيَى هَذَا اللَّهُ بَعْدَ
مَوْتِهَا قَامَاتَهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ
بَعَثَهُ قَالِ كَمْ لَبِثْتُ قَالِ لَبِثْتُ يَوْمًا
أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَالِ بَلْ لَبِثْتُ مِائَةَ
عَامٍ فَانظُرْ إِلَى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ
يَسْسَهُ وَأَنْظُرْ إِلَى حِمَارِكَ وَنَجْعَلُكَ
آيَةً لِلنَّاسِ وَأَنْظُرْ إِلَى الْعِطَامِ كَيْفَ

1. इस शा पैहलें हजरत इब्राहीम कन्नै (होई दी) बैहसू दा ब्यौरा ऐ। इनें आयतेँ च इक मुड़दा (तबाह-बरबाद) शैहरे दा बर्णन ऐ। एह इस गल्ला दा सबूत ऐ जे हजरत इब्राहीम ने अपने बरोधी कन्नै अपने जीवना दा बर्णन नथा कीता, बल्के कौमी ते जिन्सी (सामूहिक) जीवना दा बर्णन कीता हा, की जे इस उदाहरण च बी कौमी जीवना दा गै बर्णन ऐ, जाति जीवना दा नेई।
2. इस वाक्य दा अर्थ एह होआ जे ओह नगगर अपने छत्तेँ पर डिगो दा हा यानी पैहलें छत डिगो ते फही कंधां उंदे उपर ढेई पेड़यां। किश प्रवक्ताएँ इस दा अर्थ "खाल्ली होई गेआ" कइढे दा ऐ यानी ओह नगगर-बासियेँ दे बगोर हा। दमें अर्थ ठीक न। एह शब्द लम्मी बीरानी (जुआड़-डंडकार) गी स्पष्ट करने आसतै बरते गेदे न, को जे जो मकान मनुक्खी बस्सोआं नेई होने करी डिगो पौंदे न, पैहलें उंदे छत ढौंदे न ते जिसलै छत ढेई पौंदे न तां बरखा बगीरा करी गिंगियां कंधां बी ढौन लागी पौंदियां न ते इस चाल्ली ओह कंधां छत्तेँ पर आई पौंदियां न। इस स्थिति गी दस्सने आसतै "छत्तेँ पर डिगो दा हा," गलाया गेदा ऐ। जो मकान भंचाल बगीरा घटनाएँ कन्नै ढौंदे न, उंदियां कंधां पैहलें ढौंदियां न ते छत उंदे पर पौंदे न। इनें शब्देँ गेहेँ इक सूखम संकेत कीता गेदा ऐ जे इस नगरेँ दी बीरानी (जुआड़-डंडकार) दा कारण भंचाल नथा, बल्के उसदा कारण नगगर-बासियेँ दा उसी छोड़ियै उठी जाना हा।
3. "एह बी ठीक ऐ" आखियै अरबी भाशा दे मूल शब्द 'बल' दा भाव व्यक्त कीता गेदा ऐ। 'बल' अरबी भाशा च द'ऊँ अर्थ च बरतेआ जंदा ऐ। कदें पैहलें आखी गेदी गल्लै दे खंडन आसतै इसदा प्रयोग हौंदा ऐ ते कदें पैहलें आखी गेदी गल्लै दा खंडन ते अभीष्ट नेई हौंदा, बल्के इसदे कन्नै गै दूई गल्लै पासै बी ध्यान खिचना अभीष्ट हौंदा ऐ। इस हालती च दमें गल्लौं ठीक हौंदियां न। इत्यै अल्लाह दा मकपद नबी दे बिचार दा खंडन करना नेई, बल्के इक होर बिशे पासै ध्यान अकर्सत काया गेदा ऐ जे इक दूर दिश्टीकोण कन्नै दिक्खो तां तुसेँ सौ साल इस दशा च बतीत कीते न, पर नबी दा आखना बी अपनी ज'गा सच हा। इस लैई इस बिचार कन्नै बी जे नबी अल्लाह दे फरमान गी प्रधानता देइये अपने बिचार गी झूठा नेई उरहौंदे, अल्लाह नै कन्नै गै दस्सी दिता जे अस धुआड़े बिचार खंडत नेई करदे। ओह बी ठीक ऐ।
4. इस आयत च नगगर दा मतलब युरोशलम ऐ जिसेँ बुखनसर नाँ दे राजा नै तबाह करी दिता हा। ओह शख्स जो युरोशलम दे लागेआ लंघेआ हा, हिक्कील नबी हा। अल्लाह नै कसफ रहें उस पर भेद गुहाड़ेआ जे इक सौ साल तक ओह नगगर दबाय बस्सी जाग। (बाईबिल 'हिक्कील' 37)

गधे आहली बकखी बी दिक्ख इनें दौनीं दा सुरक्षत (ठीक-ठाक) रौहना दिक्खियै समझी लै (ते तेरा बिचार बी ठीक ऐ ते साढ़ा बिचार बी) ते असें ऐसा इस आस्तै कीता जे अस तुगी लोकें आस्तै इक नशान बनाचै ते हड्डियें आहली बकखी बी दिक्ख जे अस उनेंगी किस चाल्ली अपने-अपने थाहरा पर रक्खियै जोड़ने आं, पही अस उंदे पर मास चाढ़ने आं। इस आस्तै जिसलै ओहदे सामनै असलीयत चंगी चाल्ली खु 'ल्ली गई तां उसनै गलाया जे अ'ऊं जानना जे अल्लाह हर इक कम्म करने दी पूरी-पूरी समर्थ रखदा ऐ ॥ 260 ॥

ते (उस घटना गी बी याद करो) जिसलै इब्राहीम नै गलाया हा जे हे मेरे रब्ब! मी दस्स जे तूं मुड़दे गी कियां जींदा करना ऐं? (अल्लाह नै) गलाया, क्या तूं ईमान नेई ल्याई चुके दा? (इब्राहीम नै) गलाया, की नेई (ईमान ते बशक्क हासल होई चुके दा ऐ) पर अपने मनै दी तसल्ली आस्तै (मैं एह सुआल कीता ऐ)। (अल्लाह नै) गलाया, अच्छा! तूं चार पैँछी लेई लै ते उनेंगी अपने कन्नै गझाई लै। पही हर इक फ्हाड़ै पर उंदे चा इक-इक² रक्खी दे, पही उनेंगी बुलाऽ, ओह तेरे पासै तेजी कन्नै³ उठी आँगन ते

نُنشَرُهَا ثُمَّ نَكْسُوها لِحْمًا فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ ۗ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٦٠﴾

وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اَرِنِيْ كَيْفَ تَبْعِي الْمَوْتٰى ۗ قَالَ اَوْلَمْ تُؤْمِنُ ۗ قَالَ بَلٰى وَلٰكِنْ لِّيُظْمِنَ قَلْبِيْ ۗ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يٰ تَيْنِكَ سَعِيًّا وَاَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦١﴾

1. किस लोकें मूल शब्द 'सुरहुना' दा अर्थ कतल करना कीते दा ऐ, पर कुऽआन च 'सुरहुना इलैक' शब्द ऐ। अरबी मुहावरे मताबक जिसलै 'सुर' शब्द दे बा'द 'इला' शब्द जोड़ेआ जा तां अर्थ सधाना, सखाना ते प्रेम कन्नै अपने कन्नै घोली-मेली लैना बनी जंदा ऐ।
2. इक-इक दा अर्थ एह ऐ जे फ्हाड़ै दी च'ऊं चोटियें पर चौनीं पैँछियें गी बट्हाई देओ। मूल शब्द 'जुज' दा अर्थ इक पैँछी दे टुकड़े नेई बल्के चौनीं पैँछियें दा इक हिस्सा ऐ यानी इक-इक पैँछी।
3. मूल शब्द 'सायुन' दा अर्थ ऐ - (अ) चलना (आ) नस्सना, दौड़ना (इ) कोशश करना (ई) कुसै कम्मै गी कोशश कन्नै करना भामें ओह कम्म चंगा होऐ जां बुरा। पैँछी नसदा नेई बल्के उड्डरदा ऐ। इस आस्तै "तेजी कन्नै तेरे पासै उठी आँगन" अनुवाद कीता गोदा ऐ। इनें आयतें च हजरत इब्राहीम दे इक कश्फ दा ब्यौरा ऐ ते चार पैँछियें दा अर्थ ऐ जे हजरत इब्राहीम दी संतान चार बार त्रकी करग ते चार बार अवनती पासै बधग।

समझी लै जे अल्लाह गालिब (ते) हिकमत
आहला ऐ ॥ 261 ॥ (रुकू 35/3)

जो लोक अपना धन अल्लाह दे रस्ते पर
खर्च करदे न उंदी (इस दान दी) हालत उस
दाने दी हालतै जनेही ऐ जो सत्त सिट्टे
उगाऽ ते हर सिट्टे च सौ दाने होन ते
अल्लाह जेहदे आस्तै चांहदा ऐ उसी (इस शा
बी) बधाई-चढ़ाइयै दिंदा ऐ ते अल्लाह बधाई
देने आहला (ते) बौहत जानने आहला ऐ
॥ 262 ॥

जो लोक अपना धन अल्लाह दे रस्ते पर खर्च
करदे न, पही खर्च करने दे बा'द नां ते कुसै
चाल्ली दा स्हान जतलांदे न ते नां कुसै चाल्ली
दी तकलीफ दिंदे न। उंदे आस्तै उंदे रब्ब कश
उंदे कर्म दा बदला (सुरक्षत) ऐ ते उनेंगी नां
ते कुसै चाल्ली दा भै होग ते नां ओ दुखी
होंगन ॥ 263 ॥

चंगी गल्ल (गलाना) ते (कसूर) माफ करना
उस दान शा बेहतर ऐ जेहदे पिच्छें दुख (देना
शुरू करी) दिता जा ते अल्लाह बे-न्याज ते
बुर्दबार (यानी सैहनशील) ऐ ॥ 264 ॥

हे ईमान ल्यौने आहले लोको! तुस अपने
दान गी स्हान जतलाने ते दुख देने शा उस
शख्स आंगर नश्ट नेई करी देओ जो लोके
गी दस्सने आस्तै धन खर्च करदा ऐ ते अल्लाह
ते आखरत दे ध्याड़े पर¹ ईमान नेई रखदा,
की जे उसदी हालत ते उस पत्थरै आंगर ऐ
जेहदे पर किश धूड़ पेदी होऐ ते ओहदे पर
तेज बरखा होऐ ते ओह उसी (धोइयै) पही
साफ पत्थर (दा पत्थर) करी देऐ। एह (ऐसे

مَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ
اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنْبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلٍ فِي كُلِّ
سُنْبُلَةٍ مِائَةٌ حَبَّةٌ وَاللَّهُ يُضِعِفُ لِمَنْ
يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿۳۵﴾

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
ثُمَّ لَا يَتَّبِعُونَ مَا أَنْفَقُوا مِثْلَ ثَمَرٍ
لَّهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿۳۶﴾

قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِنْ صَدَقَةٍ
يَتَّبِعُهَا آذَى وَاللَّهُ عَوِيٌّ حَلِيمٌ ﴿۳۷﴾

يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَبْطُلُوا صَدَقَتِكُمْ
بِالْمَنِّ وَالْأَذَى كَالَّذِي يُنْفِقُ مَالَهُ رِثَاءً
النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ ثَرَابٌ
فَأَصَابَهُ وَابِلٌ فَتَرَكَهُ صَلْدًا

1. महाप्रलेआ, परलोक, क्यामत। (अक्रब)

लोक न जो) जे किश कमांदे न ओहदे चा किश बी उंदै हत्थ नेई औंदा ते अल्लाह इस चाल्ली दे इन्कार करने आहलें गी (कामयाबी दा) रस्ता नेई दसदा ॥ 265 ॥

ते जो लोक अपना धन अल्लाह दी खुशी हासल करने आस्तै ते अपने-आपै गी मजबूत बनाने आस्तै खर्च करदे न, उंदे खर्च दी हालत उस बागै दी हालत आंगर ऐ जो उच्चे थाहरै पर होऐ ते ओहदे पर तेज बरखा होई दी होऐ जेहदे कारण ओह अपना फल दूना पैदा करी देऐ ते (उसदी एह हालत होऐ जे) जेकर ओहदे पर जोरै दी बरखा नेई बी होऐ ते थोड़ी-हारी बरखा गै (ओहदे लेई काफ़ी होई जा) ते जे किश तुस करदे ओ, अल्लाह उसी दिक्खा करदा ऐ ॥ 266 ॥

क्या तुंदे चा कोई शख्स चांहदा ऐ जे उसदा खजूरें ते अंगूरें दा इक बाग होऐ जेहदे खल्ल नैहरं बगदियां होन ते उसी ओहदे चा हर चाल्ली दे फल मिलदे रौहदे होन ते उसी बड़ापै नै बी आई घेरे दा होऐ ते उसदे निक्के-निक्के बच्चे होन, पही उस बागै पर इक ऐसा अग्नगोला चलै ते ओह बाग जली जा। (दिक्खो!) अल्लाह थुआड़े भले आस्तै इस चाल्ली अपने हुकम ब्यान करदा ऐ तां जे तुस सोच-बचार (शा कम्म लै करा) करो ॥ 267 ॥ (रुकू 36/4)

हे ईमान आहलेओ! जे किश तुसें कमाए दा ऐ ओहदे चा पवित्तर चीजें ते जे किश असें थुआड़े आस्तै धरती च पैदा कीते दा ऐ ओहदे चा अपनी समर्थ दे मताबक (अल्लाह दे रस्ते पर) खर्च करो, पर उंदे चा ऐसी दूशत चीजें

لَا يَغْدِرُونَ عَلَى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا^ط
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ^{٢٦٥}

وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ ابْتِغَاءَ
مَرْضَاتِ اللَّهِ وَتَشِيئًا مِنْ أَنْفُسِهِمْ
كَمَثَلِ جَذَّةٍ بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا وَابِلٌ فَآتَتْ
أُكْلَهَا ضَعْفَيْنِ^ح فَإِنْ لَمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ
فَطَلَّ^ط وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ^{٢٦٦}

أَيُّودٌ أَحَدَكُمْ أَنْ تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِنْ
نَجِيلٍ وَأَعْنَابٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ لَهُ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ^ط
وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَةٌ ضَعْفَاءٌ^ث
فَأَصَابَهَا إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ^ط
كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُونَ^{٢٦٧}

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا انْفِقُوا مِنْ طِبَابَاتِ مَا
كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِنَ
الْأَرْضِ^ص وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيثَ مِنْهُ

गी पक्के तौरा पर दान देने आसतै नेई चुना करो जिनेंगी तुस आपूं लैने आसतै कदें बी त्यार नेई होंदे, सिवाए इस दे जे तुस इनेंगी अनजान बनिचै लेई लैओ ते समझी लैओ जे अल्लाह बे-न्याज़ ऐ (यानी उसी किसै चीजै दी लोड़ नेई ऐ) ते सिर्फ ऊऐ स्तुति दे काबल ऐ ॥ 268 ॥

शतान तुसेंगी मुल्हाजी शा डरांदा ऐ¹ ते तुसेंगी निरलज्जता दी प्रेरणा दिंदा ऐ ते अल्लाह तुसेंगी अपने पासेआ इक बड्डी बख्शीश ते किरपा दा बचन दिंदा ऐ ते अल्लाह बौहत बढ़ावा देने आह्ला (ते) बौहत जानने आह्ला ऐ ॥ 269 ॥

ओह जिसी चांहदा ऐ हिक्मत (सूझ-बूझ) प्रदान करदा ऐ ते जिसी हिक्मत प्रदान कीती गेदी होऐ तां (समझी लैओ जे) उसी इक अत्त गै लाह पजाने आहली चीज थ्दोई गेई ते (चेता र'वै जे) समझदारें दे सिवा कोई बी नसीहत हासल नेई करदा ॥ 270 ॥

ते जे किश बी तुस (अल्लाह आसतै) खर्च करो² जां जे किश बी तुस मन्नत मन्नो, यकीनन अल्लाह उसी जानदा ऐ (ओह उसदा चंगा बदला देग) ते जालमें दा कोई बी मददी नेई होग ॥ 271 ॥

जेकर तुस जाहरा-बाहरा दान देओ तां एह बी बौहत उत्तम (ढंग) ऐ ते जेकर तुस ओह दान छप्पर कनै गरीबें गी देओ तां एह तुंदे आसतै

تُحْقَوْنَ وَكُنتُمْ بِإِخْذِيهِ إِلَّا أَنْ تُعْمِضُوا فِيهِ ۗ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَنِّي حَمِيدٌ ﴿٢٦٨﴾

الشَّيْطَانُ يُعِدُّكُمْ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَاءِ ۗ وَاللَّهُ يُعِدُّكُمْ مَغْفِرَةً مِنْهُ وَفَضْلًا ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦٩﴾

يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَمَنْ يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٢٧٠﴾

وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ نَفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُمْ مِنْ نَذْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُهَا ۗ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿٢٧١﴾

إِنْ تَبَدُّوا الصَّدَقَاتِ فَعِمَاهُمْ ۗ وَإِنْ تُخْفُواهَا وَتَوَوُّتُوهَا الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ

1. मूल शब्द 'बासदा' चंगी ते बुरी दौनीं किसमें दी गल्लें आसतै बरतेआ जंदा ऐ। इस आयत च इसदे दमें अर्थ कीते गेदे न। इक थाहरै पर 'डराना' ते दूई ज'गा 'बचन देना' शब्दें दा प्रयोग कीता गेदा ऐ।

2. अरबी शैली दे मताबक इस फिकरे दा एह अर्थ निकलदा ऐ जे जो पदार्थ दान च दिते जान ओह खर्च करने दे काबल होन ते जो मन्नत दे रूपै च चाहो ओह मन्नत दे स्पै च चाहने जां देने दे काबल होऐ।

होर बी चंगा ऐ ते ओह (अल्लाह इस ब'जा करी) थुआइयें मतिरियें-हारियें बुराइयें गी¹ तुंदे शा दूर करी देग ते जे किश तुस करदे ओ, अल्लाह उसी जानदा ऐ ॥ 272 ॥

उनें गी सिद्धे रस्तै चलाना तैरै जिम्मै नेई ऐ। हां ! अल्लाह जिस्सी चांहदा ऐ रस्ते पर लेई औंदा ऐ ते तुस जो बी पवित्रर धन² (अल्लाह दे रस्ते पर) दान देओ, उसदा लाह तुसेंगी गै मिलग ते सचाई एह ऐ जे तुस ऐसा खर्च सिर्फ अल्लाह दी किरपा हासल करने लेई गै करदे ओ ते तुस जो बी अच्छा धन खर्च करो, ओ तुसेंगी पूरे दा पूरा (परताई) दिता जाग ते तुंदे पर कोई जुलम नेई कीता जाग ॥ 273 ॥

एह (उप्पर दस्से गेदे) सदके (दान) उनें गरीबें आस्ते न जो अल्लाह दे रस्ते पर (दूए कम्ममें शा) रोके³ गेदे न। ओह देशे च (अजादी कनै) चली-फिरी नेई सकदे। इक ओपरा शख्स उंदे नेई मंगने करी उनेंगी धनवान समझदा ऐ (पर) तुस उंदे चेहरें शा उनेंगी पन्छानी सकदे ओ। ओह लोके कनै पलमोई-पलमोई नेई मंगदे ते तुस जो बी चंगा धन (अल्लाह दे रस्ते पर) खर्च करो, अल्लाह उसी यकीनन भलेआं जानदा ऐ ॥ 274 ॥ (रुकू 37/5)

जेहके लोक रातीं ते दिवै अपना धन (अल्लाह दे रस्ते पर) गुप्त रूपे च (बी) ते शरेआम बी खर्च करदे रौंहदे न, उंदे आस्ते उंदे रब्ब कश उंदा प्रतिफल (बदला) सुरक्षत ऐ ते नां ते

لَكُمْ وَيَكْفُرْ عَنْكُمْ مِنْ سَيِّئِكُمْ^ط
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ^{٧٣}

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي
مَنْ يَشَاءُ^ط وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ
فَلَا تُنْفِسْكُمْ^ط وَمَا تَنْفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ
وَجْهِ اللَّهِ^ط وَمَا تَنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ يُؤْتَفَ
إِيَّكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تَنْظُمُونَ^{٧٤}

لِلْفُقَرَاءِ الَّذِينَ أَحْصَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
لَا يَسْتَطِيعُونَ ضَرْبًا فِي الْأَرْضِ
يَحْسِبُهُمُ الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءَ مِنَ التَّحْقِفِ^ع
تَعْرِفُهُمْ بِسِيمَاهُمْ^ع لَا يَسْئَلُونَ النَّاسَ
إِلْحَاقًا^ع وَمَا تَنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ
بِهِ عَلِيمٌ^{٧٥}

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ بِالْأَيْلِ وَالنَّهَارِ
سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ
رَبِّهِمْ^ع وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

1. इसदा एह बी अर्थ ऐ जे अल्लाह थुआइी सारी बुराइयें गी मटाई देग।
2. मूल शब्द खैर दा अर्थ ऐ दान ते पवित्रर धन यानी ओह धन जो जायज तरीके नै कमाया गेदा होऐ।
3. यानी ओह लोक दूए कम्म करने शा रोके गे ते सिर्फ धर्म दी सेवा च लगगे दे न।

उनेंगी कोई भै होग ते नां ओह गमगीन होंग
॥ 275 ॥

﴿

يَخْرُجُونَ ﴿٢٧٥﴾

जेहके लोक सूद खंदे न ओह बिल्कुल उसै चाल्ली खड़ोंदे न, जिस चाल्ली ओह शख्स खड़ोंदा ऐ जेहदे पर शतान¹ (यानी पागलपन) दा हमला होए दा होऐ। इस (हालत) दा एह कारण ऐ जे ओह आखदे (रौहदे) न जे बपार बी ते बिल्कुल सूद समान ऐ, हालांके अल्लाह नै बपार गी ल्हाल (जायज) उरहाए दा ऐ ते सूदे गी र्हाम। इस लेई (याद रक्खो जे) जिस शख्स कश ओहदे रब्ब पासेआ कोई नसीहत (दी गल्ल) आवै ते ओह (उसी सुनियै ओहदा बरोध करने शा) रुकी जा तां जो (लैन-देन) ओह पैहलें करी चुके दा ऐ उसदा लाह उसी गै ऐ ते उसदा मामला अल्लाह दे हवालै ऐ ते जो (लोक) फही (ऊऐ कम्म) करन तां ओह (जरूर) अग्गी च पौने आहले न। ओह ओहदे च गै पेदे रौहगन ॥ 276 ॥

अल्लाह सूद गी मटाग² ते सदकें (दान) गी बभाग ते अल्लाह कुसै बी बड्डे मुन्कर ते महापापी गी पसंद नेई करदा ॥ 277 ॥

जेहडे लोक ईमान आहनदे न ते अच्छे ते भले कम्म करदे न ते नमाज गी कायम रखदे न ते जक्रात दिंदे न, यकीनन उंदे आस्तै उंदे रब्ब

الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا أَلَّا يَقُولُوا إِلَّا كَمَا يَقُولُ الَّذِينَ يَتَّخِذُ الشَّيْطَانَ مِنَ الْمَسِّ ذَلِكُمْ بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّمَا بَيْعٌ مِّثْلُ الرِّبَا وَأَحَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا فَمَنْ جَاءَهُ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّهِ فَاتَّهَى فَلَهُ مَا سَلَفَ وَأَمْرُهُ إِلَى اللَّهِ وَمَنْ عَادَ فَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٧٦﴾

يَمْحَقُ اللَّهُ الرِّبَا وَيُرِي الصَّدَقَاتِ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ ﴿٢٧٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ لَهُمْ

1. इत्थें बरतोए दे मूल फिकरे दा अर्थ ऐ शतान नै उसी तकलीफ पुजाई ते उसी सख्त मार चाढ़ी ते 'मस्स' शब्द दा अर्थ ऐ जून ते पागलपन। इस लेई अर्थ एह होआ जे जिस शख्स पर शतान यानी पागलपन दी बमारी दा खतरनाक हमला होए दा होऐ।

2. इस पर सुआल पैदा होंदा ऐ जे ईसाई, यहूदी ते हिंदू बगैर लोक जो सूद लेंदे न। उंदा कारोबार त्रक्की करा करदा ऐ ते मुसलमानें दा कारोबार घटा करदा ऐ। इस दा जवाब एह ऐ जे एह भविक्खवाणी ऐ जे आखर सूद लैने आहली कोमें गी अल्लाह तबाह करी देग ते सूद नेई लैने आहले उस तबाही शा बचीं जांगन। इस आस्तै जर्मनी च सूद दे खलाफ सखा म्हीम जारी ऐ ते इसै चाल्ली किश होर देशें च बी।

कश उंदा बदला (सुरक्षत) ऐ ते उनेंगी नां ते कुसै चाल्ती दा भै होग ते नां गै ओह गमगीन होंगन ॥ 278 ॥

हे ईमान आहलेओ! अल्लाह आस्तै संयम धारण करो ते उस शा डरो ते जेकर तुस मोमिन ओ तां सूदै (दे सहाबै) चा जे किश बाकी रेही गेदा होऐ उसी छोड़ी देओ ॥ 279 ॥

ते जेकर तुसें ऐसा नेई कीता तां अल्लाह ते उसदे रसूल पासेआ (होने आहले) युद्ध गी यकीनी समझी लैओ (ते ओहदे आस्तै सोहगे होई जाओ) जेकर तुस सूद लैने शा तोबा करी लैओ तां (थुआड़ी कोई हानी नेई की जे) अपना मूल धन हासल करने दा तुसेंगी अधिकार ऐ। इस हालत च नां तुस (कुसै पर) जुलम करगे ओ ते नां तुदे पर जुलम होग ॥ 280 ॥

जेकर कोई दुहार लैने आहला तंगी च होऐ तां अच्छी हालत होने तक उसी छूट देनी होग ते जेकर तुस सूझ-बूझ रखदे ओ तां समझी लैओ जे थुआड़ा (उसी मूल धन बी) दान (दे रूपै च) देई देना सारें शा अच्छा (कम्म) ऐ ॥ 281 ॥

ते उस ध्याड़े शा डरो जे जिस रोज तुसेंगी अल्लाह कश भेजेआ जाग, पही हर शख्स गी जो उसने कमाए दा होग, पूरे दा पूरा देई दिता जाग ते उंदे पर कोई जुलम नेई कीता जाग ॥ 282 ॥ (रुकू 38/6)

हे ईमान आहलेओ! जिसलै तुस इक-दूए कनै कुसै निश्चत समे लेई दुहार लैओ-देओ तां उसी लिखी लै करा करो ते चाही दा ऐ जे कोई थुआड़े बशकार (होए दे निश्चत

أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٨﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِن كُنتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٣٩﴾

فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ مِنَ اللَّهِ
وَرَسُولِهِ ۖ وَإِن تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوسُ
أَمْوَالِكُمْ ۖ لَا تَظْلِمُونَ وَلَا تُظْلَمُونَ ﴿٤٠﴾

وَإِن كَانَ دُوْعُسِرَةً فَظُرُّهُ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ
وَإِن تَصَدَّقُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ
تَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى اللَّهِ ۖ ثُمَّ
تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُونَ ﴿٤٢﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَدَايْتُمْ بِدِينٍ إِلَىٰ
أَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوهُ ۖ وَلْيَكْتُب بَيْنَكُمْ

समझोते गी) इन्साफ कनै लिखीं देऐ ते कोई कातब लिखने शा इन्कार नेई करै, की जे अल्लाह नै उसी लिखना सखाया ऐ। इस आस्तै चाही दा ऐ जे ओह (जरूर) लिखै ते दस्तावेज (कागज) ओह लखोआऽ जिस पर जिम्मेदारी होऐ ते चाही दा ऐ जे ओह (लखोआने आहला लखोआंदे बेलै) अपने सामनै अल्लाह दा डर रक्खै जो उसदा रब्ब ऐ ते ओहदे चा किश बी घट्ट नेई करै ते ओह शख्स जेहदी जिम्मेदारी ऐ ना-समझ होऐ, कमजोर होऐ जां आपूं लखाने दे काबल नेई होऐ तां चाही दा ऐ जे (ओहदी ज'गा पर) उसदा बली (नमाईदा) न्याऽ-पूर्वक (दस्तावेज) लखोआऽ ते तुस (ऐसे मौके) अपने मड़दें चा द'ऊं गी गुआह बनाई लै करा करो। हां! जेकर दमें गुआह मड़द नेई होन तां (ऐसे समे पर) गुआहें² चा जिनें लोकें गी (गुआही आस्तै) तुस पसंद करदे ओ उंदे चा इक मड़द ते द'ऊं जनानियें गी गुआह बनाई लै करो। (द'ऊं जनानियें दी शर्त इस लेई ऐ) तां जे उंदे चा इक दे भुल्ली जाने पर दौनीं चा हर इक-दूई गी गल्ल चेता कराई देऐ ते जिसलै गुआहें गी बुलाया जा तां ओह नांह नेई करन ते भामें (लैन-देन) थोड़ा होऐ जां ज्यादा, तुस उसदी अवधि समेत लिखने च सुस्ती नेई करा करो। एह गल्ल अल्लाह दे करीब ज्यादा न्याऽ आहली ऐ ते गुआही गी

كَاتِبًا بِالْعَدْلِ وَلَا يَأْب كَاتِبَ أَنْ يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللَّهُ فَإِكْتُبْ^٥ وَيُمِلُّ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا يَبْخَسُ مِنْهُ شَيْئًا فَإِنْ كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْتَطِيعُ أَنْ يُمِلَّ هُوَ فَلْيُمِلْ وَيُيْمِنْهُ بِالْعَدْلِ^٦ وَاسْتَشْهِدُوا شَهِيدَيْنِ مِنْ رَجَالِكُمْ^٧ فَإِنْ لَمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَامْرَأَتٌ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاءِ أَنْ تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا فَتُذَكَّرَ إِحْدُهُمَا الْأُخْرَى^٨ وَلَا يَأْب الشُّهَدَاءُ إِذَا مَا دُعُوا^٩ وَلَا تَسْمَوْنَ أَنْ تَكْتُوبُوهُ^{١٠} صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا إِلَىٰ آجَلٍ^{١١} ذُرِّيَّتِكُمْ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنَىٰ أَلَّا تَرْتَابُوا^{١٢} إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً حَاضِرَةً

1. 'थुआड़ै बशकार लिखी देऐ' दा एह अर्थ बी होई सकदा ऐ जे थुआड़ै बशकार जेहका समझोता होआ ऐ उसी लिखी देऐ ते एह बी जे लिखने आहला थुआड़ै अपने पक्ख दा शख्स होऐ ते ओह दौनीं पक्खें दी मजूदगी च लिखै।
2. मतलब एह ऐ जे जिसलै तहरिर (दस्तावेज) लिखी जा करदी होऐ उसलै जेकर लिखने आहले दे सिवा जो मड़द ते जनानियां मजूद होन उंदे चा ओह जेकर द'ऊं मड़दें गी गुआह नेई रक्खना चाह, बल्के कुसै जनानी गी बी गुआह बनाना चांहदा होऐ तां इस हालती च जो लोक मौके पर मजूद होन उंदे चा दौनीं पक्खें दे भरोसेमंद लोकें चा इक मड़द ते द'ऊं जनानियें दी गुआही लिखी जाई सकदी ऐ।

मजबूत करने आहली ऐ ते (थुआड़े आस्तै इस गल्ला गी) करीब करी देने आहली ऐ जे तुस कुसै शक्क च नेई पवो। (उस लैन-देन दी गल्ला दा लिखना जरूरी ऐ) सिवाए इसदे जे बपार हल्थो-हल्थ¹ होऐ जिसी आपस च (माल ते रपेऽ) लेई-देइयै (उस्सै लै गल्ल मकाई) लैँदे ओ, इस हालत च इस लैन-देन गी नेई लिखने च तुंदे पर कोई इतराज² नेई ते जिसलै तुस आपस च खरीद-फरोखत³ करो तां गुआह बनाई लै करो ते (एह गल्ल याद र'वै जे) नां ते लिखने आहले गी कश्ट दिता जा ते नां गुआह गी ते जेकर तुस ऐसा करो तां एह थुआड़े पासेआ आज्ञा दा उलंघन समझेआ जाग ते चाही दा ऐ जे तुस अल्लाह आस्तै संयम धारण करो ते (जेकर तुस ऐसा करगे ओ तां) अल्लाह तुसेंगी इलम देग ते अल्लाह हर इक गल्लै गी चंगी चाल्ली जानदा ऐ ॥ 283 ॥

ते जेकर तुस सफरै च होओ ते तुसेंगी कोई लिखने आहला नेई मिलै तां (दस्तावेज दे बदले च) रैहन जां गिरबी रक्खने दा विधान ऐ। इस लेई जेकर तुंदे चा कोई शख्स कुसै (दूए) गी अमीन (अगतैरी/भरोसेमंद) समझै (ते उसी किश रकम देई देऐ) तां जिसी अमीन समझेआ गेओ होऐ उसी चाही दा ऐ जे उस (अमानत रक्खने आहले) दी अमानत गी (मंगने पर) झट्ट बापस करी देऐ ते अपनी पालमां करने आहले अल्लाह आस्तै

تُدِيرُ وُهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ
أَلَّا تَكْتُبُوهَا ۗ وَأَشْهَدُوا إِذَا تَبَايَعْتُمْ
وَلَا يُضَارُّ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ ۗ وَإِنْ تَفَعَّلُوا
فَإِنَّهُ فُسُوقٌ بِكُمْ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ
وَيَعْلَمُكُمْ اللَّهُ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٨٣﴾

وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا
فَرِهْهُنَّ مَقْبُوضَةً ۗ فَإِنْ أَمِنَ بَعْضُكُم
بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي أُؤْتِمِنَ أَمَانَتَهُ وَلْيَسْتَقِ
اللَّهُ رَبَّهُ ۗ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ۗ وَمَنْ

1. जिसलै माल मौके पर कब्जे च करी लैता गेदा होऐ ते मुल्ल नगद देई दिता गेदा होऐ।
2. इस आयत च एह संकेत ऐ जे ऐसी हालत च बी लिखना बेहतर ऐ जियां अंग्रेजी दुकानदार बोचर दिंदे न। इस कन्ने झगड़े घट्ट होई जंदे न।
3. एह गल्ल बड्डे सौंदे कन्ने सरबंध रखदी ऐ जे उनेंगी लिखना बी चाही दा ते गुआह बी रक्खी लैने लोड़दे तां जे कोई फसाद नेई बने।

संयम अखत्यार करै ते तुस गुआही गी (कदेँ बी) नेई छपालो, ते जेहका उसी छपालै ओह यकीनन ऐसा (शख्स) ऐ जिसदा मन पापी ऐ ते (याद रक्खो जे) जे किश तुस करदे ओ अल्लाह उसी खूब जानदा ऐ ॥ 284 ॥ (रुकू 39/7)

जे किश (बी) गासँ ते धरती च ऐ सब अल्लाह दा गै ऐ ते जे किश थुआड़े दिलें च ऐ भाएं तुस उसी जाहर करो जां उसी छपाली रक्खो, अल्लाह तुंदे शा उसदा लेखा लैग, फही जिसी चाहग बख्शी देग ते जिसी चाहग अजाब देग ते अल्लाह हर चीजा पर बड़ा समर्थ ऐ ॥ 285 ॥

जे किश बी इस रसूल पर उसदे रब्ब पासेआ उतारेआ गोदा ऐ, उस पर ओह (आपू बी) ईमान रखदा ऐ ते (दूए) मोमिन बी (ईमान रखदे न) एह सारे (दे सारे) अल्लाह ते उसदे फरिशतें ते उस दी कताबें ते उसदे रसूलें पर ईमान रखदे न (ते गलांदे न जे) अस उसदे रसूलें चा इक दूए दे बश्कार (कोई) फरक नेई करदे ते एह (बी) आखदे न जे असें (अल्लाह दा हुकम) सुनी लैता ऐ ते अस उसदे (दिलै थमां) फरमांबरदार होई चुके आं। (एह लोक दुआई करदे न जे) हे साढ़े रब्ब! अस तेरे शा माफी मंगने आं ते (असें) तेरे कश गै परतिये औना ऐ ॥ 286 ॥

अल्लाह कुसै बी शख्स पर सिवाए उस (जिम्मेदारी) दे जेहड़ी ओहदी थबीके च होऐ, कोई जिम्मेदारी नेई पांदा। जेहका उसनै (अच्छा) कम्म कीते दा होऐ (ओह) ओहदे आसतै (लाह आहला) होग। ते जेहका उसनै (बुरा) कम्म कीते दा होऐ (ओह) उसै

يَكْتُمُهَا قَاتَةٌ اِثْمَ قَلْبِهِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨٤﴾

لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَإِنْ تُبَدُّوا مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفَوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللَّهُ فَيَعْفِرْ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبْ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٨٥﴾

أَمِنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمِنٌ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا تُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿٢٨٦﴾

لَا يَكْفُرُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وَسَعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تَوَاخِذْنَا إِنْ نُسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا

पर (बिपता बनियै) पौग (ते ओह् एह् बी गलांदे न जे) हे साढ़े रब्ब! जेकर अस कदें भुल्ली जाचै जां गलती करी बौहचै तां असेंगी स'जा नेई देओ। हे साढ़े रब्ब! ते तूं साढ़े पर (उस चाल्ली) जिम्मेदारी¹ नेई पायां जिस चाल्ली तोह् उनें लोकें पर जो साढ़े शा पैहलें (होई चुके) दे न, पाई ही। हे साढ़े रब्ब! ते इससै चाल्ली साढ़े शा (ओह् भार) नेई चुकाऽ², जिसी चुक्कने दी ताकत साढ़े च नेई ते असेंगी माफ कर ते असेंगी बख्खी दे ते साढ़े पर रैहम कर (की जे) तूं साढ़ा आक्रा (मालक) ऐं। इस आस्तै मुन्करें दे गरोह्³ दे खलाफ साढ़ी मदद कर ॥ 287 ॥ (रुकू 40/8)

تَحْمِلُ عَلَيْنَا إصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا
طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُ عَنَّا وَاعْفِرْ لَنَا
وَارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى
الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٢٨٧﴾

०००

1. इस आयत दा एह् अर्थ नेई जे पैहले लोकें पर जिम्मेदारी दा ज्यादा बोझ हा ते साढ़े पर घट्ट पायो, बल्के इसदा अर्थ एह् ऐ जे जिस चाल्ली उनें लोकें पर अल्लाह दे हुकम त्रोटने दी जिम्मेदारी पाई गई ही ते ओह् शुभ ते भले कम्म करने शा बंचत होई गे हे उस चाल्ली दी जिम्मेदारी साढ़े पर नेई पाई जा यानी अस बचन त्रोटने आहले बनियै भले कम्म करने शा बंचत नेई होई जाचै। असल च इस प्रार्थना च इस्लाम दे सदा कायम रौहने दी प्रार्थना सखाई गेदी ऐ ते मुसलमानें दा ध्यान इस पासै दुआया गेदा ऐ जे मुसलमान सामूहिक रूपै च अल्लाह गी नराज नेई करन ते अल्लाह उनेंगी सदा उपकार करने दी समर्थ प्रदान करदा र'वै ते उंदे च ऐसी विभूतियें दा अवतार होंदा र'वै जो इस्लाम गी जींदा रक्खन ते पैहली कौमें आंगर उनेंगी थ्योने आहले इनामें दा सिलसला नेई त्रुटै।
2. यानी साढ़े पर ऐसा अजाब नेई आवै जेहदे नै अस फोई जाचै ते मुडियै उटठने दी ताकत नेई र'वै।
3. मूल शब्द 'कौम' दा अर्थ ऐ 'लोकें दा इक दल'। एह् शब्द नजदीकी सर्बोधियें ते रिरतेदारें आस्तै बी बरतेआ जंदा ऐ। इस आस्तै कौम शब्द ऐसे हर दल आस्तै बरतेआ जंदा ऐ जिसदा मकसद इक होऐ। की जे मुन्कर लोक मुसलमानें दे खलाफ इक-राऽ होइयै किट्टे होऐ हे। इस आस्तै ओह् इक कौम खुआने दे हकदार हे। कौम दा इक अर्थ बैरी बी होंदा ऐ। इस अर्थ दे मताबक आयत दा अर्थ एह् हाग जे बैरियें दे खलाफ साढ़ी मदद कर।

سُورَةُ آلِ عِمْرَانَ مَدِينَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ مِائَتًا آيَةً وَعِشْرُونَ رُكُوعًا

सूर: आले-इम्रान

एह् सूर: मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह सभेत
इस दियां दो सो इक आयतां ते बीह् रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नां5 लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अ'ऊं अल्लाह¹ सारें शा ज्यादा जानने आहला
आं ॥ 2 ॥

الْم ①

अल्लाह (ऐसी सत्ता ऐ जे उस) दे सिवा कोई
उपासना दा हकदार नेई। ओह् कामल जिंदगी
आहला, (अपनी सत्ता च) कायम रौहने
आहला ते (सारें गी) कायम रक्खने आहला
ऐ ॥ 3 ॥

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ①

उसनै एह् सच्च पर अधारत कताब तेरे पर
उतारी ऐ जेहकी उस (वह्नी) गी जो इस
(कताब) शा पैहलें (आई) ही, पूरा करने
आहली ऐ ते उसनै लोके गी हदायत देने
आस्तै इस शा पैहलें तौरात ते इञ्जील गी
उतारेआ हा ॥ 4 ॥

نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِمَا
بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنزَلَ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ①

(जो) लोके गी हदायत देने आस्तै इस शा
पैहलें उतारियां गेइयां हियां, फही फैसला करी
दने आहला नशान उतारेआ ऐ। जिनें लोके
अल्लाह दे चमत्कारों दा इन्कार कीता ऐ,
यकीनन उंदे आस्तै कठोर अजाब निश्चत ऐ

مَنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَأَنزَلَ الْفُرْقَانَ ①
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ
شَدِيدٌ ① وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ①

1. ब्यारे आस्तै दिक्खो सूर: बकर: टिप्पणी आयत 2

ते अल्लाह गालिब (ते) स'जा देने आह्ला
ऐ ॥ 5 ॥

अल्लाह शा कदें बी कोई चीज छप्पी दी नेई,
नां धरती च ते नां गासै च ॥ 6 ॥

ऊऐ ऐ जो कुक्खें (मौरीं दे दिड्डें) च जैसी
चांहदा ऐ तुसंगी बैसी गै शकल ते सूरत दिंदा
ऐ। उसदे सिवा कोई उपासना दे काबल नेई।
ओह गालिब (ते) हिक्मत आह्ला ऐ ॥ 7 ॥

ऊऐ ऐ जिसनै तेरे पर एह कताब उतारी ऐ
जिस दियां किश (आयतां ते) मोहकम¹ आयतां
न जो इस कताब दियां जहू न ते किश होर
(न जो) मतशाबिह² (मिलदियां-जुलदियां)
न। इस आस्तै जिनें लोकें दे दिलें च टेढ़ापन
ऐ ओह ते फसाद फलाने दे इरादे कन्नै ते इस
(कताबा) गी (इसदी सचाई थमां) फेरी देने
आस्तै उंदे (आयतें दे) पिच्छें पेई जंदे न जो
इस (कताब) चा मतशाबिह³ न, हालांके इंदे
स्हेई ते सच्चे अर्थें दी पूरी जानकारी सिवाए
अल्लाह ते पूर्ण ज्ञान रक्खने आहलें दे (जे)
जो आखदे न जे अस इस (कलाम) पर
ईमान रक्खने आं (ते जो गलांदे न जे एह)
सब साढ़े रब्ब पासेआ गै ऐ, कोई नेई जानदा
ते सूझ-बूझ आहलें दे सिवा कोई बी नसीहत
हासल नेई करदा ॥ 8 ॥

हे साढ़े रब्ब! तूं असंगी हदायत देने दे बा'द
साढ़े दिलें गी टेढ़ा नेई कर ते असंगी अपने

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفَىٰ عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ
وَلَا فِي السَّمَاءِ ﴿٥﴾

هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ
يَشَاءُ ۗ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦﴾

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ
مُّحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرَ
مُتَشَبِهَاتٌ طَفَّاهَا مَّا لِلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ رِجٌّ
فِيئْتَعُونَ ۗ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ
وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ ۗ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا
اللَّهُ ۗ وَالرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ
أُمَّتًا بِهِ لَكُلِّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا
أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٧﴾

رَبَّنَا لَا تَزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ

1. मोहकमात दा मतलब ओह आयतां न जिंदे च पवित्र कुरआन दी बशेश शिक्षा दा जिकर ऐ।
2. मतशाबिहात दा मतलब ओह आयतां न जिंदे च ऐसी शिक्षा ऐ जिसदा जिकर पैहले धर्म-शास्तरें च बी होई चुके दा ऐ।
3. यानी ओह आयतां जो पैहली कताबें दी शिक्षा कन्नै मिलदियां-जुलदियां न। ओह उनेंगी बगाड़ियै अपनी कौमें दे पुराने रीती-रवाजें दे मताबक करी दिंदे न ते इस चाल्ली ओह पवित्र कुरआन दी बशेशता गी छपाली दिंदे न।

कशा पैहमत (दा समान) अता (प्रदान) कर।
यकीनन तूँ गै बौहत अता करने आहला ऐं
॥ 9 ॥

हे साढे रब्ब! यकीनन तूँ उस रोज (जेहदे
औने च) कोई शक्क नेई, सारें गी किट्टे
करगा। अल्लाह कदें बी अपने बचन गी भंग
नेई करदा ॥ 10 ॥ (रुकू 1/9)

जो लोक इन्कार करने आहले न उंदी धन-
दौलत ते उंदी संतान अल्लाह दे मकाबले च
उंदे किसै कम्म नेई आँगन ते इयै लोक नरकै
दा बालन न ॥ 11 ॥

उंदा ब्यहार फिरऔन दे पैरोकारें ते उनें
लोकें दे ब्यहार आंगरा ऐ जो उंदे शा पैहलें
हे। उनें साढी आयतें गी झठेरे आ हा इस पर
अल्लाह नै उंदे अपराधें कारण उनेंगी पकड़ी
लैता ते अल्लाह दा अजाब कठोर होंदा ऐ
॥ 12 ॥

जो लोक इन्कार करने आहले न उनेंगी गलाई
दे जे तुसेंगी जरूर रूहाई दिता जाग ते नरकै
पासै किट्टे करियै लेता जाग ते ओह बौहत
बुरा ठकाना ऐ ॥ 13 ॥

उंदे दरुं दलें च जो आपस च युद्ध करा
करदे हे सच्चें गै तुंदे आस्तै इक नशान हा।
(उंदे चा) इक दल ते अल्लाह दे रस्ते च
युद्ध करदा हा ते दूआ इन्कार करने आहला
हा। ओह (मुसलमान) इनें इन्कार करने आहलें
गी अपनी अक्खीं कनै दूना दिक्खा करदे हे
ते अल्लाह जिसी चांहा ऐ अपनी मदद
देइयै शक्ति प्रदान करदा ऐ। इस (गल्ला) च
सच्चें गै सोझ रक्खने आहलें आस्तै इक नसीहत
ऐ ॥ 14 ॥

لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً ۗ إِنَّكَ أَنْتَ
الْوَهَّابُ ۝

رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ
فِيهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِعَادَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ نُغْنِيَ عَنْهُمْ
أَمْوَالَهُمْ وَلَا أَوْلَادَهُمْ مِنَ اللَّهِ سَيِّئًا
وَأُولَئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ ۝

كَذَابِ آلِ فِرْعَوْنَ ۗ وَالَّذِينَ مِنْ
قَبْلِهِمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۖ فَآخَذَهُمُ اللَّهُ
بِذُنُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا سَعْلَبُونَ وَتَحْسَرُونَ
إِلَىٰ جَهَنَّمَ ۗ وَبِئْسَ الْمِهَادَ ۝

قَدْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ فِي فِتْنَةِ النَّصَارَةِ ۖ وَإِنَّ
تَفَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَىٰ كَافِرَةٌ
يَرَوْنَهَا مِثْلَ سَيْفٍ مِمَّنْ رَأَى الْعَيْنَ ۗ وَاللَّهُ
يُؤَيِّدُ بِنَصَرِهِ مَن يَشَاءُ ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ۝

लोकें गी (आमतौरा पर) पसंद कीती जाने आहली चीजें दी यानी जनानियें ते पुत्रें ते सुन्ने ते चांदी दे सुरक्षत खजानें ते खूबसूरत घोड़ें ते चौखरें (डंगरें) ते खेती दा प्रेम अच्छी शकली च दस्सेआ गेदा ऐ। एह संसारक जीवन दा समान ऐ ते अल्लाह (ते) ओह (सत्ता) ऐ जेहदे कश अत्त गै उत्तम ठकाना ऐ ॥ 15 ॥

तू आख (जे) क्या अ'ऊं तुसेंगी इस शा (बी) बेहतर चीज दस्सां? जो लोक संयम अखत्यार करन, उंदे आस्तै उंदे रब्ब कश ऐसे बाग न जिंदे हेठ नैहरां बगदियां न (ओह) उंदे च नवास करडन ते (इसदे अलावा इंदे आस्तै) पवित्तर जनानियां ते अल्लाह दी खुशी (निश्चत) ऐ ते अल्लाह अपने बंदें गी दिक्खा करदा ऐ ॥ 16 ॥

जो आखदे न (जे) हे साढ़े रब्ब! अस यकीनन ईमान लेई आए आं। इस आस्तै तू असेंगी साढ़े कसूर माफ करी दे ते असेंगी दोजख दे अजाब शा बचाई लै ॥ 17 ॥

जो सबर करने आहले ते सच्च बोलने आहले ते फरमांबरदार ते (खुदा आस्तै अपनी धन-दौलत) खर्च करने आहले ते रातीं दी खीरली घडियें च प्रार्थना (उपासना) करने आहले न ॥ 18 ॥

अल्लाह इन्साफ दे मताबक एह गुआही दिंदा ऐ जे सच्च इय्यै ऐ जे इस दे सिवा (ते) कोई उपास्य नेई ते फरिश्ते बी ते इलम आहले बी (इय्यै गुआही दिंदे न) जे उस दे सिवा कोई बी उपासना दे काबल नेई। ओह गालिब (ते) हिकमत आहला ऐ ॥ 19 ॥

رُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ
وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ
الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ
وَالْأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ۗ ذَلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا ۗ وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الْمَبِ ۝

قُلْ أَوْ نَسِيْتُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ دِينِكُمْ ۗ لِلَّذِينَ
اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَأَزْوَاجٌ
مُّطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ
بِالْعِبَادِ ۝

الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّا أَمَّا فَاغْفِرْنَا
ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

الصَّابِرِينَ وَالصَّادِقِينَ وَالْمُتَّقِينَ
وَالْمُحْسِنِينَ وَالْمُسْتَغْفِرِينَ بِالسَّحَابِ ۝

شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۗ وَالْمَلِكَةَ
وَأُولُو الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ ۗ لَا إِلَهَ إِلَّا
هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

अल्लाह दे कोल असल दीन यकीनन कामिल फरमांबरदारी ऐ ते सिर्फ उनें लोकें गै जिनें गी कताब दित्ती गेदी ही उसदे बा'द जे उंदे कश इलम (ज्ञान) आई चुके दा हा, आपसी फसाद दी ब'जा करी मत-भेद कीता ते जो अल्लाह दे नशानें दा इन्कार करै (ओह याद रखै जे) अल्लाह यकीनन तौले स्हाब करने आह्ला ऐ ॥ 20 ॥

हून जेकर एह (लोक) तेरे कनै झगड़ा करन तां तूं (उनेंगी) आखी दे जे में ते इनें लोकें गी जो मेरे अनुयायी न अपने आपै गी अल्लाह दी फरमांबरदारी च लाई दित्ते दा ऐ ते जिनें लोकें गी कताब दित्ती गेदी ऐ (उनेंगी) ते (उंदे अलावा) उम्मिये¹ गी आखी दे जे क्या तुस (बी) फरमांबरदार होंदे ओ। इस आस्तै जेकर ओह फरमांबरदार होई जान तां (समझो जे) ओह हदायत पाई (हासल करी) गे। ते जेकर ओह मूंह फेरी लैन तां तेरे जिम्मै सिर्फ संदेश पुजाना ऐ ते अल्लाह बंदें गी दिक्खा करदा ऐ ॥ 21 ॥ (रकू 2/10)

जो लोक अल्लाह दी आयतें दा इन्कार करदे न ते बिला ब'जा (न्हक्क) नबियें गी कतल करना चांहदे न ते (इस दे अलावा) लोकें चा जो न्यांs दी शिक्षा दिंदे न उनेंगी (बी) कतल करना चांहदे न तूं उनेंगी दर्दनाक अजाब दी सूचना (खबर) दे ॥ 22 ॥

एह ओह (लोक) न जे जिंदे कर्म इस संसार (च बी) ते आखरत (बी) जाया (नश्ट) होई जांगन ते उंदा कोई बी मददगार नेई होग ॥ 23 ॥

إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ ۗ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ أُوْتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَعِيًّا بَيْنَهُمْ ۗ وَمَنْ يَكْفُرْ بِآيَاتِ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

فَإِنْ حَاجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ۗ وَقُلْ لِلَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْأَقْبِينَ ءَاسَلْتُمْ ۗ فَإِنْ أَسَلْتُمْ أَفْقَدِ اهْتَدَوْا ۗ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلْغُ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۝

إِنَّ الدِّينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّنَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۗ وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ لَبِئْسَ لَهُمُ بَعْدَابٍ ۝

أُولَئِكَ الَّذِينَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ۝

1. मूल शब्द उम्मी दा अर्थ ऐ अनपढ़ ते 'उम्मुलकुरा' दा अर्थ मक्का-नवासी बी ऐ।

क्या तुगी उनें लोकें दा पता नेईं जिनेंगी शरीअत दा इक हिस्सा दिता गेआ ऐ (जे जिसलै) उनेंगी अल्लाह दी कताब आहले पासै सद्देआ जंदा ऐ तां जे ओह उंदे बशकार फैसला करी देऐ तां उंदे चा किश लोक गै (इस कनै) बे-परवाही करदे होई मूंह फेरी लेंदे न ॥ 24 ॥

एह (बे-परवाही) इस ब'जा करी ऐ ओह आखदे न जे सिवाए किश गिनती दे दिनें दे असेंगी अगग कदें बी नेईं छहग ते जे किश ओह झूठ गंढदे न उसनै उनेंगी (उंदे) दीन (धर्म) (दे बारै) च धोखा दित्ते दा ऐ ॥ 25 ॥

जिसलै अस उनेंगी उस रोज किट्ठा करगे जेहदे (औने) च कोई शक्क (-शुबह) नेईं तां उंदा केह हाल होग ते हर शख्स नै जे किश कमाए दा होग (उस दिन) ओह उसी पूरा-पूरा देईं दिता जाग ते उंदे पर (किश बी) जुलम नेईं कीता जाग ॥ 26 ॥

तूं आख हे अल्लाह! जो सलतनत दा मालक ऐ, तूं जिसी चाहना ऐं सलतनत दिना ऐं ते जेहदे शा चाहना ऐं सलतनत लेईं लैना ऐं। जिसी चाहना ऐं सम्मानत करना ऐं, ते जिसी चाहना ऐं अपमानत (जलील) करी दिना ऐं। सब भलाई तेरे गै हत्थै च ऐ ते तूं हर चीजा पर समर्थ रक्खना ऐं ॥ 27 ॥

ते रातीं गी दिनै च दाखल करना ऐं ते दिनै गी रातीं च दाखल करना ऐं ते बे-जान बिच्चा जानदार कड्ढना ऐं ते जानदार चा बे-जान कड्ढना ऐं ते जिसी चाहना ऐं बे-स्हाब दिना ऐ ॥ 28 ॥

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أَوْتُوا نَصِيبًا مِّنَ
الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَى كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ
بَيْنَهُمْ ثُمَّ يُتَوَلَّوْنَ فِرِينَقٍ مِّنْهُمْ وَهُمْ
مُعْرِضُونَ ۝

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَنْ نَمَسَّنَا النَّارَ إِلَّا
أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ وَّعَرَّهْمُ فِي دِينِهِمْ مَا
كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝

فَكَيْفَ إِذَا جَمَعْتَهُمْ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ
فِيهِ ۚ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝

قُلِ اللَّهُمَّ مَلِكُ الْمَلِكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَن
تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَاءُ
وَتُعِزُّ مَن تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَن تَشَاءُ بِيَدِكَ
الْخَيْرُ ۚ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

تُؤْتِي لَيْلٍ فِي النَّهَارِ وَتُؤْتِي لَيْلٍ فِي
النَّهَارِ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ
وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرزُقُ مَن
تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

मोमिन मोमिनें गी छोड़ियै मुन्करें गी दोस्त नेई बनान। सिर्फ उंदे शा पूरी चाल्ली बचियै रौहना थुआड़े आरतै जायज ए ते (तुंदे चा) जो शख्स ऐसा करै उस दा अल्लाह कनै किसै गल्ला च बी (कोई तल्लक) नेई होग ते अल्लाह तुसेंगी अपने अजाब शा डरांदा ऐ ते अल्लाह कश गै (तुसें) परतोना होग ॥ 29 ॥

तूं (उनेंगी) आखी दे (जे) जो (कुछ) थुआड़े दिलें च ऐ उसी भाए छपालो जां उसी जाहर करो (हर हाल च) अल्लाह उसी बुञ्जी¹ लैग। ते जो कुछ (बी) गासें च ऐ ओह उसी ते जो कुछ धरती च ऐ उसी (बी) जानदा ऐ। ते अल्लाह (हर कम्म करने दी) पूरी-पूरी समर्थ रखदा ऐ ॥ 30 ॥

(उस दिनै शा डरो) जिस दिन हर शख्स हर नेकी गी जो उसनै कीती दी होग (अपने) सामनै मजदूद दिक्खग ते जो पाप उसनै कीते दा होग उसी बी (अपने सामनै दिक्खग) उसदी इच्छा होग जे काश! उस (पाप) दे ते उसदे बशकार लम्मा फासला होंदा ते अल्लाह तुसेंगी अपने अजाब शा डरांदा ऐ ते अल्लाह अपने बंदें पर बौहत देआ करने आहला ऐ ॥ 31 ॥ (रुकू 3/11)

तूं आख जे (हे लोको!) जेकर तुस अल्लाह कनै प्यार करदे ओ तां मेरा अनुसरण करो (इस सूरत च) ओह (बी) तुंदे कनै प्रेम करग ते थुआड़े गुनाह तुसेंगी बख्शी देग ते अल्लाह बौहत बख्शने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 32 ॥

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ
مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ
فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ إِلَّا أَنْ تَتَّقُوا
مِنْهُمْ تَقِيَةً وَيُحَذِّرْكُمْ اللَّهُ نَفْسَهُ
وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ①

قُلْ إِنْ تَحْفَظُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوهُ
يَعْلَمَهُ اللَّهُ وَيَعْلَمَ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا
فِي الْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ②

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ حَيْرٍ
مُخَضَّرًا ۗ وَمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوءٍ تُوَدِّ
لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ أَمَدًا بَعِيدًا ۗ
وَيُحَذِّرْكُمْ اللَّهُ نَفْسَهُ ۗ وَاللَّهُ رَءُوفٌ
بِالْعِبَادِ ③

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي
يُحِبِّكُمْ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ④

1. साहित्यक दिश्टी कनै अल्लाह दे ज्ञान गी द'ऊं चाल्लीं दा दस्सेआ गेदा ऐ। इक सनातन जां स्थाई ज्ञान जिस च कदें बी कोई तब्दीली नेई होंदी ते दूआ घटना दे समे दा ज्ञान यानी जिसलें कोई गल्ल होई जंदी ऐ तां उसी एह बी इलम होई जंदा ऐ जे फलानी गल्ल होई गई ऐ। इस्सै बख्शी आयत च संकेत कीता गेदा ऐ।

तू आख (जे) तुस अल्लाह ते उसदे रसूल दी आज्ञा दा पालन करो (इस पर) जेकर ओह मूंह फेरी लैन तां (याद रक्खो जे) अल्लाह कदें बी मुन्करें कन्नै प्रेम नेई करदा ॥ 33 ॥

अल्लाह नै आदम ते नूह (गी) ते इब्राहीम दे खानदान ते इम्रान दे खानदान गी यकीनन सारे लोकें (ज्हानें)¹ पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दिती दी ही ॥ 34 ॥

(उसनै) इक ऐसी नसल² गी (फ़ज़ीलत/श्रेष्ठता) दिती जो इक-दूए कन्नै पूरी समानता/बरोबरी रक्खने आहली ही ते अल्लाह बौहत सुनने आहला (ते) बौहत जानने आहला ऐ ॥ 35 ॥

(याद करो) जिसलै इम्रान बंश दी जनानी नै गलाया जे हे मेरे रब्ब! जो किश मेरे पेट च ऐ (उसी) अजाद करियै तुगी भेंट करी दिता ऐ। इस लेई तू (उसी) मेरे पासेआ जिस चाल्ली होऐ कबूल³ कर। यकीनन तू गै बौहत सुनने आहला (ते) बौहत जानने आहला ऐ ॥ 36 ॥

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا
فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِينَ ﴿٣٣﴾

إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ
إِبْرٰهِيْمَ وَآلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٤﴾

ذَرِيَّةً بَعْضُهُمْ مِنْ بَعْضٍ ۗ وَاللَّهُ
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٥﴾

اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّي
نَدَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ
مِنِّي ۙ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٦﴾

1. 'सारे ज्हानें' दा अर्थ एह नेई जे भूत ते भविष्य सारे समें दे लोकें पर प्रतिष्ठा प्रदान कीती ही, बल्के अर्थ एह ऐ जे ओह लोक जो उंदे समकालीन हे उनें लोकें पर प्रधानता दिती ही नेई ते जेकर हज़रत आदम गी सारे लोकें पर प्रधानता प्राप्त होऐ तां पृथी हज़रत नूह गी हासल नेई होई सकदी ते जेकर हज़रत नूह गी प्रधानता थोऐ तां हज़रत इब्राहीम गी नेई मिली सकदी ते जेकर हज़रत इब्राहीम गी मिलै तां आले-इम्रान गी नेई मिली सकदी।
2. इस थाह्य पर 'नसल' दा एह अर्थ नेई जे ओह शरीरक दिश्टीकोण कन्नै उंदी नसल चा हे, बल्के अर्थ एह ऐ जे ओह अध्यात्मक दिश्टीकोण कन्नै आपस च इक्कै नेह हे।
3. इस आयत च 'कबूल कर' शब्दें शा साफ पता लगदा ऐ जे हज़रत मसीह कामिल पुरश नथे उंदी नानी नै मसीह दी माता दे बारे च गलाया जे उसदी कमजोरी पर पड़दा पांदे होई कबूल करने दी किरपा करै की जे अभीष्ट ते मर्यम दा पुत्र (मसीह) हा। इस लेई उसदा एह फिकरा असल च हज़रत मसीह कन्नै सरबंधत ऐ। मुसलमानों पर अफसोस ऐ जो इस तथ्य गी नेई समझी सके ते मसीह गी मती-सारी गल्लें च हज़रत मुहम्मद मुस्ताफ़ा सल्लअम पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दिंदे न।

पह्री जिसलै ओह् उसी जनम देइयै फाराग होई तां उसनै गलाया जे हे मेरे रब्ब! मैं ते इसी कुड़ी दे रूपै च जनम दिता ऐ ते जे किश उसनै जम्मे दा हा उसी अल्लाह (सारें शा) ज्यादा जानदा हा ते (उस दा काल्पनक) पुत्तर (इस) कुड़ी आंगर नेई (होई सकदा) ते (गलाया जे) मैं इस दा नांऽ मर्यम रक्खेआ ऐ ते अ'ऊं उसी ते ओहदी उलाद गी फटकारे गेदे शतान (दे हमले) शा तेरी शरणी च दिन्नी! आं ॥ 37 ॥

उसलै उसदे रब्ब नै उसी बड़ी चंगी चाल्ली कबूल कीता ते उसी शैल चाल्ली पालेआ-पोसेआ ते ज़करिया उसदा संरक्षक (दिक्ख-रिक्ख करने आहला) बनेआ। जिसलै कदें बी ज़करिया घरे दे चंगे? थाहरै पर ओहदे कश जंदा (तां) ओहदे कश कोई (नां कोई) खाना (खाने दी चीज़) दिखदा। (इस करी इक दिन एह् दिक्खियै) उसनै गलाया जे हे मर्यम! एह् तेरे आस्तै कुथुआं आया ऐ? उसनै गलाया अल्लाह पासेआ। अल्लाह जिसी चांहदा ऐ यकीनन बे-स्हाब दिंदा ऐ ॥ 38 ॥

उसलै ज़करिया नै अपने रब्ब गी पुकारेआ (ते) गलाया जे हे मेरे रब्ब! तूं मिगी (बी) अपने पासेआ (कशा) पवित्तर संतान बख्खा! तूं यकीनन दुआएं गी (प्रार्थनं गी) बौहत्त कबूल करने आहला ऐं ॥ 39 ॥

فَلَمَّا وَصَعَهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَصَعْتُهَا
أُنْثَىٰ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَصَعْتَ وَلَيْسَ
الذَّكَرُ كَالْأُنْثَىٰ ۗ وَإِنِّي سَمِيْتُهَا مَرْيَمَ
وَإِنِّي أُعِيدُهَا بِيَدِكَ وَدَرَيْتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ
الرَّجِيمِ ۝

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنْبَتَهَا نَبَاتًا
حَسَنًا ۗ وَكَفَلَهَا زَكَرِيَّا ۗ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا
زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا
قَالَ لِمَرْيَمَ أَنَّىٰ لَكَ هَذَا ۗ قَالَتْ هُوَ مِنْ
عِنْدِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ ۗ قَالَ رَبِّ هَبْ
لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۗ إِنَّكَ
سَمِيعُ الدُّعَاءِ ۝

1. इस प्रार्थना शा स्पष्ट ऐ जे कुसै सच्चे सुखने राहें मर्यम दी माता गी ज्ञान होई चुके दा हा जे इस पर ते इसदी संतान पर शतान हमला करग।
2. अरबी शब्द कोश मूजब मूल शब्द 'मेहराब' दा अनुवाद 'अच्छा थाहर' कीता गेदा ऐ। भाव एह ऐ जे मर्यम गी उसदे धर्म आस्तै वक्फ (खतम) होने ते ज़करिया दे प्रेम (ममता) कारण घरें दे सर्वोत्तम हिस्से च उरहाया गेदा हा।

इस पर फरिश्तें उसी जिसलै जे ओह घैरे दे साफ-सुथरे/सर्वोत्तम¹ हिस्से च नमाज पढ़ा करदा हा, अवाज दिती जे अल्लाह तुगी यह्वा दा शुभ-समाचार दिंदा ऐ जे अल्लाह दी इक गल्ला गी पूरा करने आहला होग ते (इस दे अलावा) सरदार ते पापें/गुनाहें शा रोकने आहला ते केइयें चा (त्रक्की करियै) नबी होग ॥ 40 ॥

उसनै गलाया जे हे मेरे रब्ब! (मिगी मेरी जिंदगी च उमर भोगने आहला) जागत कियां थ्होग, हालांके मेरे पर बुढ़ापा आई गेदा ऐ ते मेरी त्रीमत बांझ² ऐ। गलाया, अल्लाह ऐसा मै कादिर/समर्थवान ऐ। ओह जो चांहदा ऐ करदा ऐ ॥ 41 ॥

(फी) उसनै गलाया हे मेरे रब्ब! मेरे आस्तै कोई हुकम दे। गलाया जे तेरे आस्तै एह हुकम ऐ जे तू लोके कनै त्रै दिन तक शारें दे सिवाए गल्ल नेई कर ते अपने रब्ब गी बौहत याद कर ते संजां-सवरे उसदी स्तुति कर ॥ 42 ॥ (रकू 4/12)

ते (उस बेले गी याद करो) जिसलै फरिश्ते नै गलाया जे हे मर्यम! अल्लाह नै यकीनन तुगी सम्मानत कीता ऐ ते पवित्र कीता ऐ ते सारे ज्हांनें दी जनानियें दे मकाबले च तुगी चुनी लैता ऐ ॥ 43 ॥

हे मर्यम! तू अपने रब्ब दी फरमांबरदार बन ते सजदा कर ते सिर्फ इक अल्लाह दी उपासना करने आहलें कनै मिलियै इक अल्लाह दी उपासना कर ॥ 44 ॥

فَدَاتُهُ الْمَلِكَةَ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي الْمِحْرَابِ إِنَّ اللَّهَ يَبْشُرُ بِبَيْحِي مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِنَ اللَّهِ وَسَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِنَ الصَّالِحِينَ ⑤

قَالَ رَبِّ أُنَى يَكُونُ لِي عُلْمٌ وَقَدْ بَلَّغَنِي الْكِبَرَ وَأَمْرًا نِي عَاقِرٌ قَالَتْ كَذَلِكَ اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ⑥

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِي آيَةً قَالَتْ آيَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ إِلَّا زَمْرًا ۖ وَادُّكَّرَ رَبُّكَ كَثِيرًا ۖ وَسَبِّحْ بِالنَّعْتِ وَالْإِبْرَارِ ⑦

وَإِذْ قَالَتِ الْمَلِكَةُ لِمَرْيَمُ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفَاكِ عَلَى نِسَاءِ الْعَالَمِينَ ⑧

لِمَرْيَمَ اقْنُتِي لِرَبِّكِ وَانجِدِي وَارْكُعِي مَعَ الرَّاكِعِينَ ⑨

1. 'सर्वोत्तम हिस्सा' अरबी शब्द 'मेहराब' दा अनुवाद ऐ ते इस दा मतलब एह ऐ जे घैरे दा शुद्ध ते पवित्र हिस्सा।
2. बांझ होने दा भाव ऐ जे जागत पैदा होना नाममकन ऐ ते बुढ़े होने दा भाव ऐ जे ओह अपने जीवन दा जुआन पुत्र नेई दिखी सकदा।

एह ग़ैब (परोक्ष)¹ दी खबरें चा (इक खबर) ऐ जिसी अस तेरे पर वहबी (राहें जाहर) करने आं ते जिसलै ओह अपने तीरें गी (इस आस्तै) छंडदे हे जे उंदे चा कु'न मर्यम दी खबरगीरी (दिक्ख-रिक्ख) करै तां तूं उंदे कश नथा ते नां (गै) तूं (उस बेलै) उंदे कश हा जिसलै ओह लड़ोआ करदे हे ॥ 45 ॥

(पही उस बेले गी याद कर) जिसलै फरिश्तें गलाया हा जे हे मर्यम! अल्लाह तुगी अपने इक कलाम राहें (इक जागतै दी) शुभ-सूचना दिंदा ऐ। उस दा नांउ मर्यम दा पुत्तर ईसा मसीह होग जो (इस) लोक च ते परलोक च गौरवशाली होग ते (खुदा दे कुर्बे) करीबी लोकें चा होग ॥ 46 ॥

ते पंघड़े (यानी निक्की आयु) च बी लोकें कनै गल्लां करग ते अघेड़ उमर होने दी हालत च (बी) ते नेक लोकें चा होग ॥ 47 ॥

उसनै गलाया (जे) हे मेरे रब्ब! मेरे घर बच्चा कियां होग। हालांके कुसै पुरश नै (बी) मिगी हत्थ नैई लाया। गलाया-अल्लाह (दा कम्म) इयै नेहा गै (होंदा) ऐ। ओह जो चांहदा ऐ, पैदा करदा ऐ (ते) जिसलै ओह कुसै गल्लै दा फैसला करी लेंदा ऐ तां उसदे बारै सिर्फ एह फरमांदा ऐ जे तूं वजूद च आई जा, ते ओह वजूद च आई जंदा ऐ ॥ 48 ॥

ते (एह बी शुभ सूचना दित्ती जे अल्लाह) इसी कताब ते हिक्मत (दियां गल्लां) सखाग ते तौरात ते इज्जील बी सखाग ॥ 49 ॥

ते इस्नाईल दी नसल आहली बक्खी रसूल बनाइयै उसी एह सनेहा देखै भेजग जे अ'ऊं

ذٰلِكَ مِنْ اَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ اِلَيْكَ ۗ
وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلقَوْنَ اَقْلَامَهُمْ
اَيْهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۗ وَمَا كُنْتَ
لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿٤٥﴾

اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ لِمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ
يُبَشِّرُكَ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۗ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ
عِيسٰى ابْنُ مَرْيَمَ ۗ وَجِيهًا فِي الدُّنْيَا
وَالْاٰخِرَةِ ۗ وَ مِنَ الْمَقَرَّرِيْنَ ﴿٤٦﴾

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۗ وَمِنَ
الصّٰلِحِيْنَ ﴿٤٧﴾

قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ يَكُوْنُ لِيْ وَكَذٰوَلَمْ
يَمْسَسْنِيْ بَشْرٌ ۗ قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَخْلُقُ
مَا يَشَاءُ ۗ اِذَا قَضٰى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ
كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٤٨﴾

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰةَ
وَالْاِنْجِيْلَ ﴿٤٩﴾

وَرَسُوْلًا اِلَىٰ بَنِيْ اِسْرٰٓءِيْلَ ۗ اِنِّيْ قَدْ

1. यानी एह गल्लां तौरत दिवें कपोल कल्पत गल्लें दे बरूद्ध न ते अंतरायामी अल्लाह नै तेरे पर जाहर कीती दियां न।

थुआड़े कश थुआड़े रब्ब आहली बक्खी दा इक नशान लेइयै आए दा आं। (ते ओह एह ऐ) जे अ'ऊं थुआड़े भले आस्तै गिल्ली मिट्टी दा सभाऽ रक्खने आहलें (यानी नर्म सभाऽ आहलें) चा 'पक्खरूप' दी घाट आहले प्राणी पैदा¹ करड, पही अ'ऊं उंदे च इक नर्मा रूह पांग। जिस पर ओह अल्लाह दे हुकम दे अधीन उडुरने आहले होई जांगन ते अ'ऊं अल्लाह दे हुकम दे तैह अ'नै गी ते कोदी-कुश्टें गी चंगा (ठीक) करड ते मुडुदें गी जीदा² करड ते जे किश तुस खागे ओ ते जे किश अपने घरें ज'मा करगे³ ओ उसदी तुसैं गी अतलाह (खबर) देंग (ते) जेकर तुस मोमिन ओ तां इस च थुआड़े आस्तै इक नशान होग ॥ 50 ॥

ते (अ'ऊं उस वही गी) जो मेरे शा पैहलें (आई चुकी दी) ऐ यानी तौरात, उसी पूरा करने आहला (बनियै आए दा) आं ते इस लेई (आए दा आं) जे किश नेह पदार्थ जो थुआड़े आस्तै र्हाम टर्हाए⁴ गोदे हे, उनेंगी थुआड़े आस्तै ल्हाल बनाऽ ते अ'ऊं थुआड़े आस्तै थुआड़े रब्ब पासेआ इक नशान लेइयै

جِئْتِكُمْ بِآيَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ ۗ أَلَيْسَ لَكُمْ مِنَ الظَّالِمِينَ أَنْتُمْ فِيهِ فَيَكُونُ ظَمِيرًا بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَأَبْرِيءُ الْأَكْمَةَ وَالْأَبْرَصَ وَالْحَيُّ الْمَوْتَى بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَأَنْتُمْ بِمَاتَاتِكُلُونَ وَمَا تَدَخِرُونَ ۗ فِي بُيُوتِكُمْ ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

وَمُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْ مِنَ التَّوْرَةِ ۗ وَلِأَجْلِ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِي حُرِّمَ عَلَيْكُمْ ۗ وَجِئْتِكُمْ بِآيَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ ۗ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۝

1. जिस चाली पक्खरू अंडें गी 'धौं' देइयै उंदे चा बच्चे कढदा ऐ उससै चाल्ली अ'ऊं बी लोकें चा अध्यात्मक काबलियत रक्खने आहलें गी अपने संपर्क च आहनियै इक दिन इस काबल बनाई दिना जे ओह अल्लाह आहली बक्खी अध्यात्मक डुआरी भरने आहले बनी जंदे न। इस दा एह मतलब नैई जे अ'ऊं खुदा बनी जांग ते नां गै एह अर्थ ऐ जे अ'ऊं सचें गै पक्खरू पैदा करगा।
2. यहूदियें गी हुकम हा जे ओह अ'नै ते कोदियें गी अपवितर समझन (लैव्यकथा 13 ते 21) अल्लाह नै हजरत मसीह रहें इस अत्याचार गी दूर करया हा। उससै दा इत्थें बर्णन ऐ। लोकें भुल्ल-भलेखे च एह समझी लैते दा ऐ जे जमांधरू अ'नै ते कोदियें गी ओह ठीक करी दिंदे होंदे हे, पर जमांधरू शब्द पवितर कुरआन च नैई ऐ ते मोतियाबिंद दे रोगियें ते कोदियें गी ते डाक्टर ते बैद लोक बी नरोआ करी दिंदे न, पर जो आयतां हजरत मसीह दे सरबंथे च आई दियां न बदकिसमती कनै मुसलमान उंदा ऐसा अर्थ करदे न जे जेहदे नै मसीह दी खुदाई सिद्ध होऐ।
3. यानी तुसैंगी उनें नेक कर्मों दी इतलाह देंग जिनेंगी करने कनै इक मनुक्ख अल्लाह दा नजदीकी होई जंदा ऐ।
4. यानी थुआड़ी शरारतें करी वही (ईशवाणी) दा औना बंद होई गेआ हा। हून उसी मेरे रहें परतियै जारी कीता जाग।

आए दा आं। इस आस्तै तुस अल्लाह दा संयम अखत्यार करो ते मेरा अनुसरण करो ॥ 51 ॥

अल्लाह यकीनन मेरा (बी) रब्ब (ऐ) ते थुआड़ा (बी) रब्ब ऐ। इस लेई तुस ओहदी अबादत करो। एह सिद्धा रस्ता ऐ ॥ 52 ॥

पही जिसलै ईसा नै उंदे इन्कार गी भांपी लैता तां गलाया जे अल्लाह आस्तै केहड़े लोक मेरे मदादी बनदे न? हवारियें गलाया जे अस अल्लाह दे (धर्म दे) मदादी आं। अस अल्लाह पर ईमान रक्खने आं ते तूं गुआह रौह जे अस फरमांबरदार आं ॥ 53 ॥

हे साढ़े रब्ब! जे किश तोह उतारेआ ऐ उस पर अस ईमान लेई आए आं ते अस इस रसूल दे अनुयायी होई चुके दा आं। इस लेई तूं असें गी गुआहें च लिखी लै ॥ 54 ॥

ते उनें (यानी मसीह दे बरोधियें) बी उपाऽ कीते ते अल्लाह नै बी उपाऽ कीते ते अल्लाह सारे उपाऽ करने आहलें शा बेहतर¹ उपाऽ करने आहला ऐ ॥ 55 ॥ (रुकू 5/13)

(उस वक्त गी याद करो) जिसलै अल्लाह नै गलाया, हे ईसा! अ'ऊं तुगी (सभाबक) मौत देड ते तुगी अपने दरबार च सम्मान² देड ते इन्कारियें (दे अलजामें) शा तुगी पवित्र करड ते जेहके तेरे पैरोकार (अनुयायी) न उनेंगी उनें लोकें पर जो मुन्कर न क्यामत दे दिनै तक गालिब रक्खड। पही मेरे कश गै तुसें परतोना होग। उसलै अ'ऊं उनें गल्लें दा जिंदे

إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ فَاعْبُدُوهُ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٥١﴾

فَلَمَّا أَحَسَّ عِيسَى مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ آمَنَّا بِاللَّهِ وَأَشْهَدُ بِأَنَّكَ مُسْلِمُونَ ﴿٥٢﴾

رَبًّا آمَنَّا بِمَا أَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴿٥٣﴾

وَمَكْرُؤًا وَّمَكْرَ اللَّهِ وَاللَّهُ خَيْرٌ الْمَكْرِيْنَ ﴿٥٤﴾

إِذْ قَالَ اللَّهُ لِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ خُذْ زَبْرًا وَارْتَقِهَا وَتَمَاهُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَجَاعِلِ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ ثُمَّ إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأَحْكُمْ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنْتُمْ

1. अर्थ एह ऐ जे हजरत मसीह दे बैरियें उंदे खलाफ खड़जैतर रचे ते अल्लाह नै बी उंदे खड़जैतरे गी त्रुड़ने आस्तै योजना बनाई।

2. मूल शब्द 'रफा' दा अर्थ सत्कार ते प्रतिष्ठा प्रदान करना बी ऐ।

बाँरे तुस मतभेद रखदे ओ थुआड़े बशकार
फैसला करड ॥ 56 ॥

इस आस्तै जेहके लोक काफर न उनें गी
अ'ऊँ इस दुनियां (च बी) ते आखरत च
(बी) सख अज़ाब देड ते उंदा कोई बी
मददगार नेई होग ॥ 57 ॥

ते जेहके लोक मोमिन न ते उनें शुभ ते नेक
कर्म कीते दे न ओह उनेंगी (उंदे कर्म दा)
बदला पूरा (पूरा) देग। ते अल्लाह जालमें
कनै प्रेम नेई करदा ॥ 58 ॥

इसगी यानी आयतें (नशानें) ते हिकमत आहली
शिक्षा गी अस तुगी पढ़ियै सुनाने आं ॥ 59 ॥

(चेता रखखो) ईसा दा हाल अल्लाह कश
यकीनन आदम दे हाल आंगर ऐ उसी (यानी
आदम गी) उसने सुक्की¹ मिट्टी² चा पैदा
कीता, पही उसदे बारे च गलाया जे तू वजूद
च आई जा, ते ओह वजूद च औन लगा
॥ 60 ॥

एह तेरे रब्ब पासेआ सच्च ऐ। इस आस्तै तू
शक्क करने आहलें बिच्चा नेई बन ॥ 61 ॥

हून जो (शख्स) तेरे कश (अल्लाह दा) ज्ञान
आई जाने दे बा'द तेरे कनै उसदे बारे च

فِيهِ تَحْتَلِفُونَ ﴿٥٦﴾

فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَاعَذِّبْهُمْ عَذَابًا
شَدِيدًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ
مِنْ نَّصِيرِينَ ﴿٥٧﴾

وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ وَاللَّهُ لَا يَجِبُ الظَّالِمِينَ ﴿٥٨﴾

ذَلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ الْآيَاتِ وَالذِّكْرِ
الْحَكِيمِ ﴿٥٩﴾

إِنَّ مَثَلَ عِيسَى عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ طَخَفَهُ
مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٦٠﴾

أَنْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِنَ
الْمُمْتَرِينَ ﴿٦١﴾

فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنْ

1. इस शा पता चलदा ऐ जे पवित्र कुरआन दे मताबक हज़रत ईसा बी बाकी लोकें आंगर मिट्टी चा पैदा होए हे ते उनेंगी कोई म्हत्तवपूर्ण बरोशता हासल नथी; की जे जिन्ने लोक मां-प्यो चा पैदा होंदे न ओह कुरआन मताबक मिट्टी चा गै पैदा होंदे न।
2. शतान दे वृत्तांत च ते किश दूर्ई आयतें च आदम दी उत्पत्ति 'तीन' चा दस्सी गेदी ऐ यानी ऐसी मिट्टी जेहदे च इल्हाम (ईशवाणी) दा पानी अचरे (समाए) दा हा, पर इस ज'गा हज़रत आदम ते हज़रत ईसा दी उत्पत्ति 'तुराब' चा दस्सी गेदी ऐ यानी ऐसी मिट्टी जेहदे च ईशवाणी दा पानी अचरे (समाए) दा नथा। इनें दौनीं गल्लें च कोई अंतर नेई ऐ की जे इत्थें आदम दा अर्थ आपूँ हज़रत आदम नेई ते ईसा दा अर्थ बी हज़रत ईसा नेई, बल्के आदम ते आदम दी संतान ते ईसा ते उंदे अनुयायी अर्थ न ते उनें लोकें चा इक वर्ग (तबका) ईशवाणी गी नजर अंदाज करने आह्ला हा। इस आस्तै इनें दौनीं दी रचना तुराब यानी सुक्की-मिट्टी चा दस्सी गेदी ऐ।

बैहस करै तां तू (उसी) गलाई दे (जे) आओ अस अपने पुत्रें गी बुलाचै ते तुस अपने पुत्रें गी, ते अस अपनी जनानियें गी ते तुस अपनी जनानियें गी ते अस अपने लोकें गी ते तुस अपने लोकें गी, पही गिड़गिड़ाइयै दुआऽ करचै ते झूठें पर अल्लाह दी फटकार बरहाचै ॥ 62 ॥

الْعَلِيمُ قُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ آبَاءَنَا
وَأَبَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا
وَأَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَعْنَتَ
اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ ①

यकीनन इय्यै सच्चा ब्यान ऐ। ते अल्लाह दे सिवा कोई बी उपासना दे काबल नेई ते यकीनन अल्लाह गै गालिब (ते) हिकमत आह्ला ऐ ॥ 63 ॥

إِنَّ هَذَا لَهُوَ النَّقْصُ الْحَقُّ وَمَا مِنْ إِلَهٍ
إِلَّا اللَّهُ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ②

पही जेकर ओह फिरी जान तां (याद रखन जे) यकीनन अल्लाह फसाद फलाने आहलें

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلَيْهِمُ بِالْمُفْسِدِينَ ③

1. पवित्र कुरआन दी इस आयत च 'मुबाहिला' दा बर्णन ऐ, जिसदा लफ्जी अर्थ द 'ऊं पक्खें दा इक-दूए गी शाप देना ऐ। मुबाहिला करने शा पैहलें एह जरूरी ऐ जे :-
(क) दमै पक्ख अपने-अपने धर्म ते मत दी सचाई सबूतें राहें इक-दूए पर स्पष्ट करी देन इसदे बा' द जेकर पही बी कोई पक्ख दूए पक्ख दे पंत्व्य गी नेई मन्ने ते हट करै तां ओह इक-दूए गी मुबाहिला आस्तै सद्दी सकदे न।
(ख) मुबाहिला च बरोधियें पासेआ उंदे सरबंधी ते परिवार दे लोक जनानी-मडद ते बच्चें दे अलावा इक बड्डी गिनतरी च उंदे साथियें दा शामल होना बी जरूरी ऐ तां जे मुबाहिला दा प्रभाव विशाल जन-समूह पर पवै ते झूठ ते सच्च दा जाहरा-बाहरा फर्क जाहर होई सकै।
(ग) उस सम्मेलन च दौनी पक्खें दे सरदारें दा होना बी अत्त जरूरी ऐ। एह ठीक नेई जे दो-चार लोक इक पक्ख दे ते दो-चार दूए पक्ख दे मुबाहिले दी योजना बनाई लैन ते पही मदान च आइयै इक-दूए गी शाप देन। इस्लाम दे प्रसिद्ध इतिहासकार मुहम्मद बिन इस्हाक ने अपनी कताब 'सीरत' च लिखे दा ऐ जे नब्रान दे ईसाइयें दा प्रतिनिधि-मंडल जिंदे बारे एह आयत उतरी ही, सट्ट ज्हार दी संख्या च हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम कश आया हा। उनें लोकें च उंदी जाति दे सरदार बी हे जिंदे च 'आक्रिब' (अब्दुल मसीह) ते 'अब्हम' दा नाँस बी लैता जंदा ऐ। 'आक्रिब' उंदा लीडर हा ते मदान दा मुख्क पादरी हा। हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम नै उंदे सामनै मसीह दे खुदा होने दे खंडन ते इक खुदा दे समर्थन च प्रमाण रख्के, जिसलै ओह लोक नेई मन्ने तां तुसं उनें गी मुबाहिले आस्तै गलाया, पर ओह डरी गे। इस पर रसूले करीम नै गलाया जे जेकर एह लोक मुबाहिला करी लेंदे तां इक साल बीतने शा पैहलें इनें लोकें दा सर्वनाश होई जंदा। (तफसीर कबीर भाग 1. सफा-699)
(घ) तुंदे गलाने मूजब मुबाहिला होने पर स'जा जां खुदाई अजाब दी अबधि घट्टी-घट्ट इक साल होनी लोड़दी।
(ङ) मुबाहिले दी प्रार्थना च झूठें पर अल्लाह दी फटकार दी मांग करना जरूरी ऐ।
(च) मुबाहिले दे फलसरूप अजाब दा कोई रूप निश्चत नेई कीता जाई सकदा। एह गल्ल अल्लाह दी इच्छा पर निर्भर ऐ, ओह जनेहा चाह परिणाम प्रकट करै। परिणाम (अजाब) आपू स्पष्ट करी देग जे केहड़ा पक्ख सच्चा हा ते कोहका पक्ख झूठा हा।
(छ) मुबाहिले दे बा' द औने आहले ऐसे अजाब गी अल्लाह दा प्रकोप समझेआ जाग जेहेद च कुसै मनुक्खें दी कोशशें दी लेश-मातर बी संभावना नेई होऐ।

गी चंगी चाल्ली जानदा ऐ ॥ 64 ॥

(रुकू 6/14)

तू आख (जे) हे अहले किताब¹! (कम स कम) इक ऐसी गल्ला पासै ते आई जाओ जो साढ़े ते थुआड़े बशकार बराबर ऐ (ते ओह एह ऐ) जे अस अल्लाह दे सिवा कुसै दी अबादात नेई करचै ते कुसै चीजै गी उस दा शरीक नेई बनाचै ते नां अस अल्लाह गी छोड़ियै आपस च इक-दूए गी रब्ब बनांदे रौहचै। फही जेकर ओह फिरी जान ते उनेंगी आखी देओ जे तुस गुआह र'वो जे अस (खुदा दे) फरमांबरदार आं ॥ 65 ॥

हे अहले किताब! तुस इब्राहीम दे बारे च बैहस की करदे ओ हालांके तौरात ते इञ्जील यकीनन उसदे बा'द उतारियां गेदियां न। फही केह, तुस समझदे नेई? ॥ 66 ॥

सुनो! तुस ओह लोक ओ जो ऐसी गल्लें बाँरे बैहस करन लगे ओ जिंदा तुसें गी किश (बी) पता नेई। हालांके अल्लाह जानदा ऐ ते तुस नेई जानदे ॥ 67 ॥

नां (ते) इब्राहीम यहूदी हा ते नां गै नसरानी² बल्के ओह (खुदा दे अगें) झुकने³ आहला (ते) फरमांबरदार हा ते मुश्रिकें⁴ बिच्चा नथा ॥ 68 ॥

इब्राहीम दे कनै लोके चा ज्यादा तल्लक रक्खने आहले यकीनन ओह लोक न जो उसदे पैरोकार (अनुयायी) न ते (इस दे

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ
سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ
وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا
بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ فَإِنْ تَوَلَّوْا
فَقُولُوا الشُّهُدَا يَا أَيُّهَا الْمُسْلِمُونَ ﴿٦٥﴾

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ
وَمَا أَنْزَلْنَا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ إِلَّا مِنْ
بَعْدِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٦﴾

هَآئِنْتُمْ هُوَآءَ حَآجِّجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ
عِلْمٌ فَلِمَ تُحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ
عِلْمٌ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٧﴾

مَا كَانَ إِبْرَاهِيمَ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا
وَلَكِنْ كَانَ حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ ﴿٦٨﴾

إِنْ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ

1. किताब दा अर्थ ऐ धार्मिक विधान। अहले किताब दा भाव ऐ धार्मिक विधान रक्खने आहले यानी यहूदी ते ईसाई।
2. 'ईसाई' ईसाइयें दे मंतव्य च आस्था रक्खने आहला।
3. मूल शब्द 'हनीफ़ दा अर्थ ऐ आज्ञाकारी, झुकने आहला, एकेश्वरवादी।
4. अनेकेश्वरवादी, अल्लाह गी छोड़ियै जां अल्लाह दे कनै दूई ताकतें गी उस दा शरीक ते उपास्य मनने आहला।

अलावा) एह नबी ते जो लोक (इस पर) ईमान ल्याए। ते अल्लाह मोमिनें दा दोस्त ऐ ॥ 69 ॥

अहले किताब चा इक गरोह एह चांहदा ऐ जे काश! ओह तुसेंगी गुमराह करी देऐ ते ओह अपने आपै गी गै गुमराही च पा करदे न ते समझदे नेई ॥ 70 ॥

अहले किताब! तुस दिखदे (जानदे) होई की अल्लाह दी आयतें दा इन्कार करदे ओ, हालांकि तुस गुआही देई चुके दे ओ ॥ 71 ॥

हे अहले किताब! की तुस जानदे-बुझदे होई सच गी झूठ कनै मलांदे ओ ते सच गी छपालदे ओ? ॥ 72 ॥ (सूकू 7/15)

ते अहले किताब चा इक गरोह आखदा ऐ जे मोमिनें पर जो कुछ उतारेआ गेदा ऐ उस पर ते दिनै दे शुरू च ईमान लेई आओ ते उसदे खीरले हिस्से च (ओहदे शा) इन्कार करी देओ। शायद (इस चाल्ली) ओह फिरी जान ॥ 73 ॥

ते (गलांदे न जे) उस शख्स दे सिवा जो थुआड़े धर्म दी पैरवी करदा होऐ कुसै दी नेई मननो। तू आखी दे (जे) असल हदायत यानी अल्लाह दी हदायत ते एह ऐ जे कुसै गी ऊऐ नेहा गै (किश) मिलै जनेहा जे तुसेंगी मिलेआ हा जां फही ओह थुआड़े रब्ब दे हजूर च थुआड़े कनै झगड़न (इस दे अलावा) आखी दे जे किरपा ते यकीनन अल्लाह दे हलथै च ऐ। ओह जिसी चांहदा ऐ किरपा बख्शदा ऐ ते अल्लाह बौहत बधाने आहला ते बौहत जानने आहला ऐ ॥ 74 ॥

وَهَذَا تَمِيمٌ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاللَّهُ وَلِيُّ
الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٩﴾

وَدَّتْ طَّائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ
يَضُّونَكُمْ وَمَا يَضُّونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ
وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٧٠﴾

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ
وَأَنْتُمْ شَاهِدُونَ ﴿٧١﴾

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَلِيْسُونَ الْحَقَّ
بِالْبَاطِلِ وَتَكْفُرُونَ بِالْحَقِّ وَأَنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ﴿٧٢﴾

وَقَالَتْ طَّائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ آمَنُوا
بِالَّذِي أَنْزَلَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا
وَجَهَ النَّهَارِ وَكَفَرُوا بآخِرَهُ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ﴿٧٣﴾

وَلَا تُؤْمِنُوا إِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِينَكُمْ قُلْ إِنَّ
الْهُدَىٰ هُدَىٰ اللَّهِ أَنْ يُؤْتَىٰ أَحَدٌ مِّثْلَ مَا
أُوْتِيْتُمْ أَوْ يَحَا جُوكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ قُلْ
إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ
وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٧٤﴾

ओह् जिसी चांहदा ऐ (उसी) अपनी रैहमत आस्तै खास करी (चुनी) लैंदा ऐ ते अल्लाह बौहत किरपा करने आहला ऐ ॥ 75 ॥

ते अहले किताब चा (कोई ते) ऐसा ऐ जे जेकर तू उसी (दौलत दा) इक ढेर अमानत दे तौर पर देई देए तां ओह उसी तुगी बापस करी देग ते (कोई) उंदे चा (ऐसा) ऐ जे जेकर तू उसी इक दीनार अमानत दे तौर पर देए तां ओह ओह (बी) तुगी बापस नेई देग। सिवाए इसदे जे तू ओहदे (सिरै) पर खड़ोता र मैं। एह गल्ल इस करी ऐ जे ओह आखदे न जे साढ़े पर अनपढ़े दे बारे च कोई पकड़ नेई ते ओह अल्लाह पर जानी-बुझी झूठ गंढे न ॥ 76 ॥

ऐसा नेई बल्के जो शख्स अपनी प्रतिज्ञा/ करार गी पूरा करै ते संयम अखत्यार करै तां (ओह संयमी ऐ) अल्लाह यकीनन संयमियें कनै प्यार करदा ऐ ॥ 77 ॥

जेहके लोक अल्लाह कनै कीते गेदे अपने बा 'यदे ते कसमें दे बदले च थोड़ी कीमत² लैंदे न उनें लोकें दा आखरत च कोई हिस्सा नेई होग ते क्यामत आहलै रोज अल्लाह उंदे कनै गल्ल नेई करग ते नां उंदे पासै दिक्खग ते नां उनेंगी पवित्तर ठरहाग/गलाग उंदे आस्तै दर्दनाक अजाब (निश्चत) ऐ ॥ 78 ॥

ते उंदे चा यकीनन इक गरोह (ऐसा) ऐ जो अपनी जबानें/भाशें गी कताब (यानी तौरात) दे हवाले कनै मरोड़दा³ ऐ तां जे तुस उसी

يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝

وَمِنَ أَهْلِ الْكِتَابِ مَنْ إِن تَأْمَنهُ
يَقْطُرَ يَدَيْهِ يُؤدِّهِ إِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَنْ إِن
تَأْمَنهُ بِدِينَارٍ أَوْ يَدِّهِ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دَمَّتْ
عَلَيْهِ قَائِمًا ۗ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَيْسَ
عَلَيْنَا فِي الْأَمِينِ سَبِيلٌ ۚ وَيَقُولُونَ عَلَى
اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝

بَلَىٰ مَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ وَاتَّقَىٰ فَإِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ
ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي
الْآخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ
إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يَزَكِّيهِمْ ۚ وَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

وَأَنَّ مِنْهُمْ لَفِرْقًا قَلِيلًا
بِالْكِتَابِ لِيَحْبَبُوهُ مِنَ الْكِتَابِ وَمَا هُوَ

1. उंदा एह गलाना जे अनपढ़े बारे उनेंगी कोई पाप नेई लगग, बिल्कुल झूठी गल्ल ऐ।
2. भौतक संपत्ति जो धर्म दे मकाबले च तुच्छ ऐ। इत्थें एह अर्थ नेई जे धर्म बेचने आस्तै थोड़ा मुल्ल लैना गैर-मनासब ऐ ते मता धन लैना मनासब ऐ।
3. यानी मनुक्खें दे बनाए दे फिकरें गी तौरात दा अध्ययन करने आंगर उच्चारण करदा ऐ तां जे लोकें गी धोखा लग्गी जा जे एह बी तौरात दा गै हिस्सा ऐ।

(जो ओह आखदा ऐ) कताब चा समझो हालांकि ओह कताबा च नेई होंदा। ते ओह आखदे न जे ओह अल्लाह पासेआ ऐ हालांकि ओह अल्लाह पासेआ नेई होंदा ते ओह जानदे (बुझदे) होई अल्लाह पर झूठ घड़दे न ॥ 79 ॥

एह गल्ल कुसै (सच्चे) शख्स गी शोभा देने आहली नेई जे अल्लाह ते उसी कताब, कहुमत ते नुबुव्वत देऐ ते ओह (एह) आखै (जे) तुस अल्लाह गी छोड़ियै मेरे बंदे बनी जाओ। बल्के (ऐसा इन्सान ते इय्यै आखदा ऐ जे) तुस खुदा दे गै होई जाओ की जे तुस (अल्लाह दी) कताबा दी तलीम (शिक्षा) दिंदे ओ ते इस आस्तै जे तुस (उसी) याद करदे ओ ॥ 80 ॥

ते नां (गै ओहदे आस्तै) एह (ममकन ऐ) जे तुसेंगी एह हदायत देऐ ते तुस फरिश्तें ते नबियें गी रब्ब बनाई लैओ। क्या थुआड़े मुसलमान होई जाने दे बा'द ओह तुसेंगी कुफर (अखत्यार करने) दी शिक्षा¹ देग? ॥ 81 ॥ (रुकू 8/16)

ते (उस बेले गी याद करो) जिसलै अल्लाह नै (अहले किताब शा) सारे नबियें² आह्ला पक्का बा'यदा लैता हा जे जो बी कताब ते हिक्मत अ'ऊं तुसेंगी देआं, पही थुआड़े कश कोई (ऐसा) रसूल आवै जो उस कलाम (ईशवाणी) गी पूरा करने आहला होऐ जो थुआड़े कश ऐ तां तुस ओहदे पर जरूर गै ईमान ल्याओ ते जरूर उसदी मदद करेओ (ते) फरमाया हा जे क्या तुस करार करदे ओ (यानी मनदे ओ) ते इस पर (मेरे पासेआ पाई

مِّنَ الْكِتَابِ وَيَقُولُونَ هُمُومِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَاهُم مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٩﴾

مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا لِّي مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ كُونُوا رَبَّيْحِينَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ الْكِتَابَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُونَ ﴿٨٠﴾

وَلَا يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلَائِكَةَ وَالنَّبِيِّنَ أَرْبَابًا ۗ أَيَأْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ﴿٨١﴾

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ لَمَا آتَيْتُكُمْ مِنْ كِتَابٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُّصَدِّقٌ لِمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَتَنْصُرُنَّهُ ۗ قَالَ ۗ أَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلَىٰ ذٰلِكُمْ إِصْرِي ۗ قَالُوا ۗ أَقْرَرْنَا ۗ قَالَ ۗ فَاشْهَدُوا ۗ وَأَنَا مَعَكُمْ

1. मूल शब्द 'अम्र' दा अर्थ ऐ हुकम देना इस दे अलावा आखना ते शिक्षा देना बी ऐ।

2. जो संकल्प सारे रसूल अपने-अपने अनुयायियें शा लेंदे आए न।

दी) मेरी जिम्मेदारी कबूल करते ओ? (ते) उनें गलाया हा, हां अस करार करने आं, गलाया, हून तुस गुआह र'वो ते अ'ऊं बी थुआड़े कनै गुआहें चा (इक गुआह) आं ॥ 82 ॥

हून जो (शख्स) इस बा'यदे दे बा'द मुक्करी जा तां ऐसे लोक गै फ़ासिक़ा¹ होंग ॥ 83 ॥

पही क्या ओह अल्लाह दे धर्म दे सिवा (कोई होर धर्म) चांहदे न हालांके गासें ते धरती च जो (कोई बी) ऐ खुशी कनै (बी) ते लाचारी कनै (बी) उसै दा फरमांबरदार ऐ ते उसै कश परताया जाग ॥ 84 ॥

तूं गलाई दे (जे) अस अल्लाह (पर) ते जे किश साढ़े पर नाजल कीता गोदा ऐ, (ओहदे पर) ते जे किश इब्राहीम ते इस्माइल ते इस्हाक़ ते याक़ूब ते (उसदी) उलाद पर नाजल कीता गोआ हा ते जे किश मूसा गी ते ईसा गी ते (बाकी) सब नबियें गी उंदे रब्ब पासेआ दिता गोआ हा उस पर ईमान रक्खने आं ते उंदे चा कुसै इक गी दूए शा बक्खरा नेई समझदे ते अस उसदे फरमांबरदार आं ॥ 85 ॥

ते जो शख्स इस्लाम दे अलावा कुसै (होर) धर्म गी (अपनाना) चाह तां (ओह याद रक्खै जे) ओह धर्म उस शा कदें बी कबूल नेई कीता जाग ते आखरत बेलै ओह कसारा खाने आहले लोकें चा होग ॥ 86 ॥

जो लोक ईमान आहनने दे बा'द (फी) मुक्कर होई गोदे होन ते गुआही देई चुके दे होन जे (एह) रसूल सच्चा ऐ ते (इसदे अलावा) उंदे

مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٨٢﴾

فَمَنْ تَوَلَّى بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ
الْفَاسِقُونَ ﴿٨٣﴾

أَفَعَيِّرْ دِينَ اللَّهِ يَبْغُونَ وَلَهُ أَسْلَمَ مَنْ
فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا
وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٨٤﴾

قُلْ أَمَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ عَلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ
عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ
وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ
مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَالتَّيْيُوبَ مِنْ
رَبِّهِمْ لَا تُفَرِّقُوا بَيْنَ أَحَدٍ
مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿٨٥﴾

وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ
مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٨٦﴾

كَيْفَ يَهْدِي اللَّهُ قَوْمًا كَفَرُوا بَعْدَ
إِيمَانِهِمْ وَشَهِدُوا أَنَّ الرَّسُولَ حَقٌّ

1. 'फ़ासिक़' दा अर्थ ऐ संकल्प भंग करने आहला, बा'यदा त्रोटने आहला ।

कश स्पष्ट दलीलां (युक्तियां) बी आई चुकी दियां होन उनेंगी अल्लाह कियां हदायत पर आहनै ते अल्लाह (ते) जालम (लोकें) गी हदायत नेई दिंदा ॥ 87 ॥

एह लोक नेह न जे उंदी स'जा एह ऐ जे इंदे पर अल्लाह ते फरिशतें (दी) ते लोकें (दी) सारें दी गै लानत होऐ ॥ 88 ॥

ओह इस (लानत) च रौहगन, नां (ते) उंदे परा अजाब हल्का (घट्ट) कीता जाग ते नां उनेंगी ढिल्ल दिती जाग ॥ 89 ॥

सिवाए उनें लोकें दे जे जो इसदे बा'द तोबा करी लैन ते सुधार करी लैन ते अल्लाह यकीनन बौहत बख्शाने आह्ला (ते) बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 90 ॥

जो लोक ईमान आहनने दे बा'द मुन्कर होई गेदे होन फही ओह कुफर च होर बी बधी गेदे होन उंदी तोबा कदें बी कबूल नेई कीती जाग। ते इथ्यै लोक गुमराह न ॥ 91 ॥

जो लोक मुन्कर होई गेदे होन ते कुफर दी (गै) हालती च मरी गेदे होन, उंदे चा कुसै शा धरती दे बराबर सुन्ना (बी) जिसी ओह फिदय: (बदले) दे तौरै पर पेश करै, कदें बी कबूल नेई कीता जाग। इनें लोकें आस्तै दर्दनाक अजाब (निश्चत) ऐ ते उंदा कोई बी मदादी नेई होग ॥ 92 ॥ (रुकू 9/17)

وَجَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٨٧﴾

أُولَئِكَ جَزَاءُ وَّهُمْ أَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللَّهِ وَالْمَلَكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿٨٨﴾

خَلِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٨٩﴾

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٩٠﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ أزدَادُوا كُفْرًا لَنْ يُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ﴿٩١﴾ وَأُولَئِكَ هُمُ الضَّالُّونَ ﴿٩٢﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِمْ مِلْءُ الْأَرْضِ ذَهَبًا وَلَوْ افْتَدَى بِهِ ﴿٩٣﴾ وَأُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ وَمَالَهُمْ مِنْ نُصْرِينَ ﴿٩٤﴾

तुस कामिल नेकी गी कर्दे बी हासल नेई करी सकदे जिन्ना चिर जे अपनी प्यारी चीजें चा (खुदा आस्तै) खर्च नेई करो। ते जो कोई बी चीज तुस खर्च करो, अल्लाह उसी यकीनन खूब जानदा ऐ ॥ 93 ॥

सारे दा सारा खाना (यानी सब खाद्य पदार्थ) सिवाए उस हिस्से दे उनें पदार्थें दे जो इस्त्राईल¹ (यानी हजरत याक़ूब) नै तौरात दे तुआरे जाने शा पैहलें अपने आस्तै मकरू (ना-पसंद) करार दिते दे हे, बनी इस्त्राईल² आस्तै लहाल हे। तूं आखी दे जे जेकर तुस सच्चे ओ तां तौरात आहनो ते उसी पढ़ो ॥ 94 ॥

हून जो (लोक) इस दे बा'द (बी) अल्लाह बाँरे झूठ घड़न तां ऊरे लोक जालम होंगन ॥ 95 ॥

तूं आख जे अल्लाह नै सच्च गलाए दा ऐ। इस आस्तै तुस इब्राहीम दे धर्म दी, जो (खुदा दे सामनै / अगें) झुके दा रौहने आहला हा, पैरवी करो, ते ओह मुश्रिकें चा नेई हा ॥ 96 ॥

सारें शा पैहला घर³ जो सारे लोकें (दे फायदे) आस्तै बनाया गेदा हा ओह ऐ जो मक्का⁴ च ऐ। ओह सारे ज्हाँन आस्तै बरकत आहला (थाहर) ते हदायत (दा साधन) ऐ ॥ 97 ॥

لَنْ تَتَّالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا لَكُمْ حَبِيبٌ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ۝

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلاَّبِنِّي إِسْرَاءِ يَلَّ إِلَّا مَا حَرَّمَ إِسْرَاءِ يَلَّ عَلَى نَفْسِهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ تُتْرَكَ الشُّرُورَةُ ۗ قُلْ فَأَتُوا بِالشُّورَةِ فَأَتَوْهَا إِنَّ كُفُومًا صَدِيقِينَ ۝

فَمَنْ أَفْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

قُلْ صَدَقَ اللَّهُ ۚ فَاتَّبِعُوا مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبَارَكًا وَهُدًى لِّلْعَالَمِينَ ۝

1. हजरत याक़ूब गी उंदी बमारी कारण किश पदार्थ खाने शा रोकेआ गेआ हा, पर उंदी संतान नै भरम-भलेखे करी उनेंगी इहाम समझी लैता (पैदायश; भाग 32 : आयत 28)
2. इस्त्राईल हजरत याक़ूब दा गुण-वाचक नाँस ऐ। (पैदायश; भाग 32)
3. इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे सारे लोकें गी अपने कश बुलाने आहला सारें शा पैहला धर्म सिर्फ इस्लाम ऐ जो मक्का धर्मा जाहर होआ। ईसाई धर्म दा एह गलाना निराधार ऐ जे ओह मानव समाज आस्तै आए दा ऐ।
4. आयत च 'बक्का' शब्द ऐ, जो अरबी मुहावरे च 'मक्का' गै ऐ, की जे किश थाहरें पर अरबी च 'म' दी ज'गा 'ब' दा प्रयोग करी लैता जंदा ऐ। (फ़तहल्लबयान) अक्रबुलमुवारिद च लिखे दा ऐ जे 'बक्का' मक्का दी गै वादी (बस्ती) दा नाँस ऐ। उस दा एह नाँस उल्लें जनता दी भीड़-भड़के कारण पेई गेदा ऐ।

उस च केई रोशन नशान न (ओह) इब्राहीम दी क्यामगाह (उपासना स्थान) ऐ ते जो ओहदे च दाखल होंदा होऐ ओह अमन च आई जंदा ऐ (यानी सुरक्षत होई जंदा ऐ) ते अल्लाह नै लोकें दा एह करतब्व गलाए दा ऐ जे ओह उस घरे दा हज्ज करन (यानी) जो (बी) उस तक जाने दी तफीक रक्खै ते जो इन्कार करै तां (ओह याद रक्खै जे) अल्लाह सारे ज्ञानें शा बे-परवाह ऐ ॥ 98 ॥

तूं आख (जे) हे अहले किताब! तुस अल्लाह दी आयतें दा इन्कार की करदे ओ, हालांकि अल्लाह थुआड़े कर्में दा नगरान ऐ ॥ 99 ॥

(इस दे अलावा तूं) आख (जे) हे अहले किताब! जो ईमान आहनदा ऐ उसी तुस अल्लाह दे रस्ते शा की रोकदे ओ? तुस त्रेढे चलदे होई इस (त्रेढे रस्ते) गी अपनाना चांहदे ओ हालांकि तुस (उस पर) गुआह ओ ते जे किश तुस करदे ओ अल्लाह ओहदे शा कदें बी बे-खबर नेई ॥ 100 ॥

हे मोमिनो! जेकर तुस इनें लोकें चा जिनेंगी कताब दिती गेदी ही कुसै बी फिरके दी आज्ञा दा पालन करगे ओ तां ओह थुआड़े ईमान लेई औने दे बा'द पही तुसेंगी काफर बनाई देंगन ॥ 101 ॥

ते तुस किस चाल्ली कुफर (इन्कार) करगे ओ जिसलै जे तुस ओह लोक ओ जिनेंगी अल्लाह दियां आयतां पढ़ियै सुनाइयां जंदिंयां न ते तुंदे च उसदा रसूल (मजूद) ऐ ते जो शख्स अल्लाह दी पनाह लै तां (समझो जे) उसी सिद्धे रस्ते पर चलाई दिता गेआ ॥ 102 ॥ (रुकू 10/1)

فِيهِ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ مَّقَامُ إِبْرَاهِيمَ
وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ
حُجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا
وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ⑤

قُلْ يَا هَلْ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ
اللَّهِ وَاللَّهُ شَهِيدٌ عَلَى مَا تَعْمَلُونَ ⑥

قُلْ يَا هَلْ الْكِتَابِ لِمَ تَصُدُّونَ عَنِ
سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ تَبِعُونَهَا عَوجًا وَأَنْتُمْ
شُهَدَاءُ ⑦ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ⑧

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَطِيعُوا فَرِيْقًا مِنَ
الَّذِينَ آوَتْوَا إِلَيْكُمْ يَرُدُّوكُمْ بَعْدَ
إِيمَانِكُمْ كُفْرِينَ ⑨

وَكَيْفَ تَكْفُرُونَ وَأَنْتُمْ تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ
آيَاتُ اللَّهِ وَفِيكُمْ رَسُولُهُ ⑩ وَمَنْ يَعْتَصِمْ
بِاللَّهِ فَقَدْ هُدِيَ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ⑪

हे ईमानदारो (मोमिनो)! अल्लाह दा संयम उसदी सारी शर्तें कनै अखत्यार करो ते तुंदे पर सिर्फ ऐसी हालत च मौत आवै जे तुस पूरे फरमांबरदार होओ ॥ 103 ॥

ते तुस सारे (दे सारे) अल्लाह दी रस्सी गी घुट्टियै पकड़ी लैओ ते खिंड-बिंड नेई होओ ते अल्लाह दा स्थान जो (उसने) तुंदे पर (कीते दा) ऐ याद करो। जे जिसलै तुस (इक-दूए दे) दुश्मन हे उसनै थुआड़े दिलें च प्रेम पैदा करी दिता जिसदे नतीजे च तुस उसदे स्थाननै करी भ्रास-भ्रास बनी गे ते तुस अग्गी दे इक कुंडे दे कंढे पर हे पर उसनै तुसेंगी उस शा बचाई लैता। इस्से चाल्ली अल्लाह थुआड़े आस्ते अपनी आयतें गी ब्यान करदा ऐ तां जे तुस हदायत पाओ ॥ 104 ॥

ते तुंदे चा इक ऐसी जमात होनी चाही दी जिसदा कम सिर्फ एह होऐ जे ओह (लोकें गी) नेकी पासै बुलाउ ते नेक गल्लें दी तलीम देऐ ते बदी शा रोक्के ते इय्यै लोक कामयाब होने आहले न ॥ 105 ॥

ते तुस उनें लोकें आंगर नेई बनो जो जाहरे-बाहरे नशान आई चुकने दे बा'द खिंड-बिंड होई गे ते उनें (आपसी) मत-भेद पैदा करी लैता ते उनें लोकें आस्ते गै (उस दिन) बड्डा अजाब (निश्चत) ऐ ॥ 106 ॥

जिस दिन जे किश चेहरे सफेद होंगन ते किश चेहरे काले होंगन ते जिनें लोकें दे चेहरे काले होई जांगन (उनेंगी गलाया जाग जे) क्या (एह सच्च नेई जे) तुस अपने ईमान आहनने दे बा'द पही काफर होई गे हे। इस आस्ते अपने काफर होने दी ब'जा करी इस अजाब गी चक्खो ॥ 107 ॥

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تَقَاتِهِ
وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ﴿١٠٣﴾

وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا
تَفَرَّقُوا وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ
إِذْ كُنْتُمْ أَعْدَاءً فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ
فَأَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا وَكُنْتُمْ
عَلَى شَفَا حُفْرَةٍ مِنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُمْ
مِنْهَا كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ
لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٠٤﴾

وَلْتَكُنْ مِنْكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ
وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ
الْمُنْكَرِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٠٥﴾

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا
مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَأُولَئِكَ
لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٦﴾

يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ
فَأَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ
أَكْفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ فَذُوقُوا
العَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿١٠٧﴾

ते जिनें लोकें दे चेहरे सफेद होई जांगन ओह अल्लाह दी रहमत च हांगन। ओह ओहदे च गै रौहगन ॥ 108 ॥

एह अल्लाह दियां आयतां न जो सच्च पर अधारत न (ते) जिनेंगी अस तुगी पढ़ियै सुनाने आं ते अल्लाह सारे ज्हांनें पर किसै किसमै दा जुलम करना नेई चांहदा ॥ 109 ॥

ते जे किश गासैं च ऐ ते जे किश धरती च ऐ (सब) अल्लाह दा गै ऐ ते अल्लाह आहली बक्खी गै सारे कम्मैं गी परताया जाग ॥ 110 ॥
(रुकू 11/2)

तुस (सारें शा) बेहतर जमात ओ जिसी लोकें (दे फायदे)¹ आस्तै पैदा कीता गेदा ऐ। तुस नेकी दी हदायत करदे ओ ते बदी शा रोकदे ओ ते अल्लाह पर ईमान रखदे ओ। ते जेकर अहले किताब बी ईमान आहनेदे तां उंदे आस्तै बेहतर हाँदा। उंदे चा किश मोमिन बी हैन ते मते-हारे उंदे चा ना-फरमान न (इन्कारी न) ॥ 111 ॥

एह (लोक) थोढ़ा-हाय दुख देने दे सिवा तुसेंगी कोई नुकसान नेई पुजाई सकदे ते जेकर ओह थुआड़े कन्ने जंग करडन तां थुआड़ी बक्खी पिट्टां फेरियै नस्सी जांगन। पही उनेंगी कुसै पासेआ बी मदद नेई मिली सकग ॥ 112 ॥

जित्थें कुतै बी ओह रौहन उंदे पर फटकार नाजल कीती गेदी ऐ सिवाए इसदे जे ओह अल्लाह दे कुसै करार (दी) जां लोकें दे कुसै करार दी पनाह (शरण) च आई जान (इस फटकार शा बची नेई सकदे) ते ओह अल्लाह दे अजाब दा पातर बनी गेदे न ते

وَأَمَّا الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وَجُوهُهُمْ فَمِنُ
رَحْمَةِ اللَّهِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٠٨﴾

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتَوَهَّأُ عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۖ وَمَا
اللَّهُ يَرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعَالَمِينَ ﴿١٠٩﴾

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ
وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿١١٠﴾

كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ
تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ
الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ۗ وَلَوْ آمَنَ أَهْلُ
الْكِتَابِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۖ مِنْهُمْ
الْمُؤْمِنُونَ ۚ وَكَثَرَهُمُ الْفٰسِقُونَ ﴿١١١﴾

لَنْ يَضُرَّوْكُمْ إِلَّا أَذًى ۖ وَإِنْ
يُقَاتِلُوْكُمْ يُؤَلِّوْكُمْ الْأَدْبَارَ ۚ ثُمَّ
لَا يُضِرُّوْنَ ﴿١١٢﴾

ضَرَبَتْ عَلَيْهِمُ الذَّلَّةُ آيِنَ مَا تُعْفَوْنَ إِلَّا
بِحَبْلِ مِنَ اللَّهِ وَحَبْلِ مِنَ النَّاسِ وَبِأَنُ
بِعَضِّ مِنَ اللَّهِ وَضَرَبَتْ عَلَيْهِمُ
الْمَسْكَنَةُ ۗ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يُكْفَرُونَ

1. यानी मुसलमानों दे सारें शा बेहतर होने दी एह ब'जा ऐ जे उनेंगी सिर्फ अपने फायदे दे बजाऽ सारी दुनियां दे फायदे आस्तै पैदा कीता गेदा ऐ। काश! मुसलमान इस रहस्य (हिक्मत) गी समझन ते इस चाली अपमानत नेई होन।

बे-बसी (दी हालत) उंदे कनै लाजम करी (चपकाई) दिती गोदी ऐ। एह् इस करी (कीता गोदा) ऐ जे ओह् अल्लाह दी आयतें दा इन्कार करदे हे ते बिला-ब'जा नबियें¹ गी कतल करना चांहदे हे (ते) एह् गल्ल उंदे ना-फरमानी करने ते हद शा बधे दे होने करी (उंदे च पाई जंदी) ही ॥ 113 ॥

ओह् सारे (लोक) बराबर नेई न। अहले किताब (कताब आहलें) चा (गै) इक ऐसी जमात बी ऐ जो (अपने करार पर) कायम ऐ। ओह् रातीं बेलै बी अल्लाह दी आयतें गी पढ़दे न ते सजदे² (बी) करदे न ॥ 114 ॥

ओह् अल्लाह (पर) ते औने आहले दिनें (क्यामत) पर ईमान रखदे न ते नेकी दी हदायत करदे न ते बदी शा रोकदे न ते नेक कर्म च इक-दूए शा अगें बधे न ते एह् लोक नेकें (सदाचारियें) चा न ॥ 115 ॥

ते ओह् जो बी नेकी करन, उंदी ना-कदरी नेई कीती जाग। ते अल्लाह संयमियें गी चंगी चाल्ली जानदा ऐ ॥ 116 ॥

जो लोक इन्कारी न उनेंगी नां ते उंदी दौलत ते नां उंदी संतानां अल्लाह दे अजाब शा बचांगन ते ओह् (लोक) अग्गी (च पौने) आहले न। ओह् ओहदे च गै बास करडन ॥ 117 ॥

एह् लोक जे किश इस संसारक जीवण आसतै खर्च करदे न उसदी दशा उस हवा आंगर³ ऐ,

بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقِّ
ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿١١٣﴾

لَيْسُوا سَوَاءً ۗ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ أُمَّةٌ
قَائِمَةٌ يَتَشَاؤُنَ آيَاتِ اللَّهِ أَنْ آتَاءَ الْآيِلِ وَهُمْ
يَسْتَجِدُّونَ ﴿١١٤﴾

يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَأْمُرُونَ
بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَيَسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ ۗ وَأُولَئِكَ مِنَ
الصَّالِحِينَ ﴿١١٥﴾

وَمَا يَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُكْفَرُوا
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ﴿١١٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِي عَنْهُمْ
أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۗ
وَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۗ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١١٧﴾

مَثَلُ مَا يُنْفِقُونَ فِي هَذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

1. 'नबियें दी हत्या' करने दा मतलब हत्या करने दी कोशश ऐ, की जे बनी-इसाईल नै सारे नबियें दी हत्या नेई कीती। इस आसतै असें इतिहासक घटनाएं दे मताबक 'हत्या करने' दी ज'गा 'हत्या करने दी कोशश' अनुवाद कीता ऐ।
2. ईश्वर दी सत्ता अगें झुकना! सिर झुकाना।
3. मतलब एह् ऐ जे मनुकष ते खर्च इस आसतै करदा ऐ जे उसी त्रक्की मिलै, पर एह् लोक दमाजरेपनै नै खर्च करदे न। इस आसतै उंदे खर्च करने दा नतीजा ऊऐ नेहा निकलदा ऐ जनेहा जे उत्तर पासेआ चलने आहली ठंडी-ठार हवा होंदी ऐ जो खेती गी नश्ट-भ्रश्ट करी दिंदी ऐ। इस्सै चाल्ली ओह् खर्च बी उंदे कर्म दा परिणाम बे-कार बनाई दिंदा ऐ।

जेहदे च बड़ी ठंडक होऐ ते ओह इक ऐसी कौम दी खेती पर चलै जिसनै अपने उप्पर अत्याचार कीते दा होऐ, फही ओह उसी तबाह करी देऐ ते अल्लाह नै उनें लोकें पर अत्याचार नेई कीता, हां! एह लोक आपू गै अपने-आपै पर जुलम करा करदे न ॥ 118 ॥

हे मोमिनो! अपने लोकें गी छोड़ियै (दूएँ गी) अपना राजदार दोस्त (भेती) नेई बनाओ। ओह तुंदे कनै बद-सलूकी करने च कोई कमी नेई करदे (ते) थुआड़े दुखै च पौने गी पसंद करदे न। (उंदी) दुश्मनी उंदे चेहरें शा जाहर होई चुकी दी ऐ, ते जे किश उंदे सीनें च छपे दा ऐ ओह (इस शा बी) उप्पर (बद्ध) ऐ। जेकर तुस समझदारी शा कम्म लैने आहले ओ तां असें थुआड़े आसतै अपनी आयतें गी तफसील कनै ब्यान करी दिते दा ऐ ॥ 119 ॥

सुनो! तुस ओह लोक ओ जो उंदे कनै प्रेम करदे ओ हालांके ओह तुंदे कनै प्रेम नेई करदे ते तुस सारी (दी सारी) कताबा पर ईमान आहनदे ओ ते जिसलै ओह तुंदे कनै मिलन तां गलाई दिंदे न जे अस (बी) ईमान रक्खने आं ते जिसलै ओह अलग होंदे न तां थुआड़े खिलाफ गुस्से कनै अपनी आँगलीं टुकदे (दंद क्रीचदे) न। तू (उनेंगी) आखी दे तुस अपने गुस्से करी मरी जाओ। अल्लाह यकीनन छाती दे अंदर छपी दी गल्लें तक गी बी जानदा ऐ ॥ 120 ॥

जेकर तुसेंगी कोई कामयाबी हासल होऐ तां उनेंगी बुरा लगदा ऐ ते जेकर तुसेंगी कोई दुख पुजै तां ओह एहदे नै खुश होंदे न ते जेकर तुस धीरज ते संयम अखत्यार करी ओ तां

كَمَثَلِ رِيحٍ فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُ ۗ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَكِن أَنفُسُهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٨﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا بِطَانَةَ مَنْ دُونِكُمْ لَا يَأْلُونَكُمْ خَبَالًا ۖ وَدُوا مَا عَنِتُّمْ ۗ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ ۗ وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ ۗ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١١٩﴾

هَآئِنْتُمْ أَوْلَاءُ تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ كُلِّهِ ۗ وَإِذَا الْقُومُ قَالَُوا آمَنَّا ۗ وَإِذَا خَلَوْا عَضُّوا عَلَيْكُمُ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ۗ قُلْ مُؤْتُوا عَيْظَكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١٢٠﴾

إِنْ تَمَسَّكُمْ حَسَنَةٌ سَوْهُمْ وَإِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا بِهَا وَإِنْ

उंदी (उलट) चाल तुसेंगी किश बी नुकसान नेई पुजाई सकग ते ओह जे किश बी करदे न, यकीनन अल्लाह उसी भलेआं तबाह-बरबाद करने आह्ला ऐ ॥ 121 ॥
(रुकू 12/3)

ते (उस बेले गी याद कर) जिसलै तूं बडलै-बडलै अपने घरे दे जीवें चा निकलियै इस आसतै गेआ हा जे मोमिनें गी जंग आसतै उंदी निश्चत ज गें पर¹ बट्हाई देएँ ते अल्लाह तेरी (प्रार्थनां) बौहत् सुनने आह्ला (ते तुसें लोकें दे हालातें गी) खूब जानने आह्ला ऐ ॥ 122 ॥

(पही उस बेले गी बी याद कर) जिसलै (जे इनें हालातें गी दिक्खियै) तुंदे चा दो गरोह (दल)² बुजदिली दरस्से पर त्यार होई गे हे हालांके अल्लाह उंदा दोस्त हा ते मोमिनें गी ते अल्लाह पर गै भरोसा रक्खना चाही दा ॥ 123 ॥

ते (इस शा पैहलें) बदर (दी जंग) च जिसलै जे तुस कमजोर हे अल्लाह यकीनन तुसेंगी मदद देई चुके दा ऐ। इस आसतै तुस अल्लाह दा संयम अखत्यार करो तां जे तुस शुकरगजार बनो ॥ 124 ॥

(उस बेले गी बी याद कर) जिसलै तूं मोमिनें गी गलाऽ करदा हा जे क्या थुआड़े आसतै एह (गल्ल) काफ़ी नेई होग जे थुआड़ा रब्ब (गासै थमां) उतारे गेदे त्रै ज्हार फरिश्तें राहें थुआड़ी मदद करै ॥ 125 ॥

की (काफ़ी) नेई होग! जेकर तुस सबर करो ते संयम अखत्यार करो। ते ओह (काफ़र)

تَصْبِرُوا وَاتَّقُوا لَا يَصْرُكُمْ كَيْدُهُمْ
شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ١٢١

وَإِذْ عَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ تُبَوِّئُ
الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ
عَلِيمٌ ١٢٢

إِذْ هَمَّتْ طَآئِفَتَيْنِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلَا
وَاللَّهُ وَلِيَهُمَا وَعَلَى اللَّهِ فَالْتَوَكَّلْ
الْمُؤْمِنُونَ ١٢٣

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرِ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ
فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُشْكُرُونَ ١٢٤

إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَنْ يَكْفِيَكُمْ أَنْ
يُمَدِّدَ كُمْ رَبُّكُمْ بِثَلَاثَةِ آفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ
مُنزِلِينَ ١٢٥

بَلَىٰ إِنَّ تَصْبِرُوا وَاتَّقُوا وَإِيَّا تَوْكُرُمْ مِنْ

1. इस आयत च 'उहद' दे युद्ध दा ब्यौरा ऐ।

2. एह दो दल खजरज बंश चा बनू सल्लम: ते औस बंश चा बनू हारिस: हे।

तुंदे पर इससे बेलै चढ़ाई करी देन तां थुआड़ा रब्ब पंज ज्हार भंकर हमला करने आहले फरिश्तें राहें थुआड़ी मदद करग ॥ 126 ॥

ते अल्लाह नै एह (गल्ल) सिर्फ थुआड़े आसतै शुभ-समाचार¹ दे तौर पर ते इस आसतै जे थुआड़े दिल एहदे राहें संदोख पान, निश्चत कीती दी ऐ ॥ 127 ॥

(ते) इस आसतै (निश्चत कीती दी ऐ) जे तां जे ओह (अल्लाह) मुक्करें दे इक हिस्से गी कट्टी देऐ जां उनेंगी अपमानत करी देऐ तां जे ओह नाकाम बापस जान। नेई ते मदद ते (सिर्फ) अल्लाह दी तरफा गै (औंदी) ऐ जो गालिब (ते) हिक्मत आह्ला ऐ ॥ 128 ॥

तेरा इस मसले/मामले च किश (दखल) नेई (एह सारा मसला/मामला खुदा दे हत्थै च ऐ) चाह तां उंदे पर किरपा करै ते चाह तां उनेंगी अजाब देई देऐ (ते ओह अजाब दे गै हकदार न) की जे ओह जालम न ॥ 129 ॥

ते जे किश गासैं च ऐ ते जे किश धरती च ऐ (सब) अल्लाह दा गै ऐ। ओह जिसी चांहदा ऐ बख्शी दिंदा ऐ ते जिसी चांहदा ऐ अजाब दिंदा ऐ ते अल्लाह बौहत् बख्शाने आह्ला (ते) बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 130 ॥ (रुकू 13/4)

हे ईमानदारो! तुस (अपने धन पर) ब्याज/सूद जो (धन गी) बे-ब्ला बधांदा ऐ, मत² खाओ ते अल्लाह दा संयम अखत्यार करो तां जे तुस कामयाब होई जाओ ॥ 131 ॥

قَوْرِهِمْ هَذَا يُمِدُّكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ
أَلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ ﴿١٢٦﴾

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ
وَ لَا يَتَّظَمِنَنَّ قُلُوبُكُمْ بِهِ ۗ وَمَا النَّصْرُ
إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿١٢٧﴾
لَيَقْطَعَنَّ طَرَفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَاُو
يَكْبِتُهُمْ فَيَنْقَلِبُوا خَائِبِينَ ﴿١٢٨﴾

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ
عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبُهُمْ فَأِنَّهُمْ لَطَمُونَ ﴿١٢٩﴾

وَاللَّهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
يَعْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۗ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٣٠﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَا
أَضْعَافًا مُّضَاعَفَةً ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُونَ ﴿١٣١﴾

1. इस च दस्सेआ गेदा ऐ जे फरिश्तें दा बर्णन सिर्फ इस आसतै ऐ जे सुखने ते कशफ च शुभ-समाचार हासल होने कनै मनुक्खें गी उत्साह दी प्रेरणा मिलदी ऐ नेई ते असल मतलब ते इय्यै हा जे अल्लाह मदद करग।
2. ब्याज मूल धन गी असाानी कनै बधाई दिंदा ऐ। इस आसतै अल्लाह नै गलाया जे तुस ब्याज नेई खा करा करो, जो मैहनत दे बगैरा धन गी बधांदा जंदा ऐ।

ते उस अग्गी शा डरो जो मुन्करें आस्तै त्यार कीती गेदी ऐ ॥ 132 ॥

وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ﴿٣٢﴾

ते अल्लाह (दी) ते इस रसूल दी आज्ञा दा पालन करो तां जे तुंदे पर रैहम कीता जा ॥ 133 ॥

وَاطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٣٣﴾

ते अपने रब्ब पासेआ नाज़ल होने आहली बखिाश (पासै) ते उस जन्नत पासै जिसदी कीमत गास ते धरती न ते जो संयमियें आस्तै त्यार कीती गेदी ऐ, बधो ॥ 134 ॥

وَسَارِعُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ ۙ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٣٤﴾

जो (संयमी) खुशहाली (च बी) ते तंगदस्ती च (बी ख़ुदा दे रस्ते च) खर्च करदे न ते गुस्से गी दबाने आहले ते लोकें गी माफ करने आहले न ते अल्लाह ऐसे उपकार करने आहलें कनै प्रेम करदा ऐ ॥ 135 ॥

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ وَالْكُظُمِينَ الْغَيْظِ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٥﴾

हां! (उनें लोकें आस्तै) जो कोई बुरा कम्म करने दी सूरत च जां अपने आपै पर जुलम करने दी सूरत च अल्लाह गी याद करदे न ते अपने कसूरें (पापें) दी माफी चांहदे न ते अल्लाह दे सिवा कु'न कसूर (पाप) माफ करी सकदा ऐ ते जे किश उनें कीते दा होंदा ऐ ओहदे पर जानी-बुझी जिद्द नेई करदे ॥ 136 ॥

وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ ۗ وَمَن يَغْفِرِ الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ ۗ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَىٰ مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾

एह लोक ऐसे न जे उंदा अजर उंदे रब्ब पासेआ प्राप्त होने/थहोने आहली माफी ते ऐसे बाग होंगन जिंदे हेठ¹ नैहरां बगदियां होंगन ते ओह उंदे च नवास करदे रौंहगन ते कम्म करने आहलें दा (एह) बदला किन्ना गै अच्छा/ बेहतर ऐ ॥ 137 ॥

أُولَٰئِكَ جَزَاءُ وَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۖ مِّن رَّبِّهِمْ وَجَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۗ وَنِعْمَ أَجْرُ الْعَمِلِينَ ﴿٣٧﴾

तुंदे शा पैहलें मते-हारे विधि-विधान होई

كَذَٰلِكَ حَلَّتْ مِن قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۖ فَنَسيروا فِي

1. अर्थ एह ऐ जे ओह नैहरां बागें कनै सरबंधत होंगन ते उंदे च बस्सने आहले उनें नैहरें दे मालक होंगन।

चुके दे न जिंदे नतीजे दिक्खने होन तां धरती पर फिरो ते दिक्खो जे (उनें विधि विधानें गी) झुठलाने/नकारने आहलें दा कैसा (बुरा) परिणाम होआ ॥ 138 ॥

एह (जिकर/कुरआन) लोकें आस्तै बौहत् जाहरी-बाहरी ब्याख्या करने आह्ला ते संयमियें आस्तै हदायत ते नसीहत ऐ ॥ 139 ॥

ते तुस कमजोरी नेई दस्सो ते नां गम करो ते जेकर तुस मोमिन ओ तां तुस गै गालब रौहगे ओ ॥ 140 ॥

जेकर तुसंगी कोई चोट लगगै तां उनें लोकें गी बी ते बैसी गै चोट लगगी चुकी दी ऐ एह (गल्बा दे) दिन ऐसे न जे अस उनेंगी लोकें च बारी-बारी बदलदे रौहने आं (तां जे ओह नसीहत हासल करन) ते तां जे अल्लाह उनें लोकें गी जाहर करी देऐ जो ईमान ल्याए दे न ते तुंदे चा (केइयें गी) गुआह बनाऽ ते अल्लाह जालमें गी पसंद नेई करदा ॥ 141 ॥

ते तां जे जो मोमिन न, उनेंगी अल्लाह पाक ते साफ करी देऐ ते मुन्करें गी तबाह करी देऐ ॥ 142 ॥

क्या तुसें (एह) समझी लेदा ऐ जे तुस जन्नत च दाखल होई जागे ओ हालांके अजें अल्लाह नै तुंदे चा उनें लोकें गी जो मुजाहिद¹ न, जाहर नेई कीता ते नां उनेंगी जो धीरजवान न, अजें उसनै जाहर कीता ऐ ॥ 143 ॥

ते तुस (लोक ते) इस मौत² दी इच्छेआ उसदे समे शा पैहलें करदे होंदे हे। इस लेई

الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكْذِبِينَ ﴿١٣٨﴾

هَذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٩﴾

وَلَا تَهُونُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنْتُمْ الْأَعْلَوْنَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٤٠﴾

إِنْ يَمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهُ ۗ وَتِلْكَ الْأَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۗ وَيَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَتَّخِذُ مِنْكُمْ شُهَدَاءَ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿١٤١﴾

وَلِيُمَجِّصَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَمْحَقَ الْكُفْرِينَ ﴿١٤٢﴾

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُدْخَلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصَّابِرِينَ ﴿١٤٣﴾

وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَتُّونَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ أَنْ

1. मूल शब्द 'मुजाहिद' दा अर्थ ऐ - प्रयत्नशील, कर्मवीर, अल्लाह दे रस्ते च प्रयत्न /कोशश करने आहले।

2. यानी जिहाद ते वीरगति आहली मौत।

(हून) तुसें उसी इस हालत च दिक्खी लेदा ऐ जे तुंदे सामनै उसदे सारे गुण-दोश जाहर होई गेदे न। (फही हून किश लोक उस शा मूह फेरा करदे न?) ॥ 144 ॥ (रुकू 14/5)

ते मुहम्मद सिर्फ इक रसूल ऐ। इस शा पैहले सारे रसूल मौत पाई चुके दे न। इस आस्तै जेकर ओह मौत पाई लै जां कतल करी दिता जा तां क्या तुस अपनी अड्डियें दे भार परतोई जागे ओ? ते जो शख्स अपनी अड्डियें दे भार परतोई जा ओह अल्लाह दा कदें बी किश नुकसान नेई करी सकदा। ते अल्लाह जरूर शुकरगुजारें गी बदला देग ॥ 145 ॥

ते अल्लाह दी आज्ञा दे बगैर कोई जीव नेई मरी सकदा। (की जे अल्लाह नै) इक निश्चत समे आहला फैसला (कीते दा ऐ) ते जो शख्स संसारक बदला चाह तां अस उसी ओहदे चा देगे ते जो शख्स आखरत दा बदला लैना चांहदा होऐ अस उसी ओहदे चा देगे ते शुकरगुजारें गी जरूर बदला देगे ॥ 146 ॥

ते मते-हारे नबी ऐसे (होई चुके दे) न, जिंदे कनै मिलियै (उंदी जमात दे) मते-हारे लोके जंग कीती, फही नां (ते) ओह उस (कश्ट) कारण सुस्त होई गे जो उनेंगी अल्लाह दी राह च पुज्जेआ हा ते नां गै कमजोरी दस्सी ते नां उनें (दुश्मनें दे सामनै) डगमगाना अखत्यार कीता। ते अल्लाह सबर करने आहलें कनै प्रेम करदा ऐ ॥ 147 ॥

ते सिवाए इस गल्ला दे उनें किश (बी) नेई गलाया ते (हे) साढ़े रब्ब! साढ़े कसूर (यानी कुताहियां) ते साढ़े कर्म च साढ़ी ज्यादतियां

تَلْقَوْهُ فَقَدَرَأَ يَتْمُوهُ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ﴿١٤٤﴾

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ أَفَأَيْنُ مَاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَتَّقَلِبْ عَلَىٰ عَقْبَيْهِ فَلَنْ يَبْصُرَ اللَّهَ شَيْئًا وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ ﴿١٤٥﴾

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تَمُوتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ كِتَابًا مُّوجِبًا وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الْآخِرَةِ نُؤْتِهِ مِنْهَا وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ ﴿١٤٦﴾

وَكَأَيِّنْ مِنْ نَبِيِّ قُتِلَ مَعَهُ رَبِّيُونَ كَثِيرٌ فَمَا وَهَنُوا لِمَا أَصَابَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَمَا ضَعُفُوا وَمَا اسْتَكَانُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الصَّابِرِينَ ﴿١٤٧﴾

وَمَا كَانَ قَوْلُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا

असेंगी माफ कर ते साढ़े पैने (पैरे) मजबूत कर ते काफर लोकें दे खलाफ साढ़ी मदद कर ॥ 148 ॥

इस पर अल्लाह नै उनेंगी संसारक बदला (बी) ते आखरत दा सर्वश्रेष्ठ बदला (बी) दिता, ते अल्लाह नेकी करने आहलें कनै प्रेम करदा ऐ ॥ 149 ॥ (रुकू 15/6)

हे मोमिनो! जेकर तुस उनें लोकें दी फरमांबरदारी करगे ओ जो काफर न तां ओह तुसें गी थुआड़ी अडिडियें दे भार (पिछड़े) परताई देंगन जिसदी ब'जा करी तुस घाटे च रौहने आहलें चा होई जागे ओ ॥ 150 ॥

(तुस घाटा खाने आहले नेई) बल्के अल्लाह थुआड़ा मददगार ऐ ते ओह सारे मदद करने आहलें शा बेहतर ऐ ॥ 151 ॥

जेहके लोक मुन्कर न, अस उंदे दिलें च इस ब'जा करी जे उनें उस चीजै गी अल्लाह दा शरीक बनाई दित्ते दा ऐ, जिसदी उसनै कोई दलील यानी सबूत नेई उतारेआ, यकीनन धाक जमाई देगे यानी रोहब पाई देगे ते उंदा ठकाना अग्य ऐ ते जालमें दा ठकाना अत गै बुरा ऐ ॥ 152 ॥

ते अल्लाह नै (उस बेलै) जिसलै जे तुस उसदे हुकमै कनै उनेंगी मारी-मारी उंदा नास करा करदे हे, उसनै थुआड़े कनै अपना बा 'यदा यकीनन पूरा करी दिता इत्थें तक जे जिसलै तुसें सुस्ती शा कम्म लैता ते (अल्लाह दे रसूल दे) हुकमै बारै आपस च झगड़ा कीता ते इसदे बा 'द जे जे किश तुस पसंद करदे हे उसनै तुसेंगी दस्सी दिता हा पही बी तुसें ना-फरमानी शा कम्म लैता (तां उसनै

وَوَيْتٌ أَفْءَامَنَا وَأَنْصَرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿١٤٨﴾

فَأْتَهُمُ اللَّهُ تَوَابًا دُونَ ذَلِكَ وَحَسَنَ تَوَابٍ الْآخِرَةِ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٤٩﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَطِيعُوا الَّذِينَ كَفَرُوا يُرِيدُوا كُفْرَكُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ فَتَقَلِّبُوا خِصْرِينَ ﴿١٥٠﴾

بَلِ اللَّهُ مَوْلَاكُمْ ۖ وَهُوَ خَيْرٌ مِنَ الصِّرِينَ ﴿١٥١﴾

سَنُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَا أَشْرَكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَمَأْوَهُمُ النَّارُ وَبِئْسَ مَثْوَى الظَّالِمِينَ ﴿١٥٢﴾

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللَّهُ وَعْدَهُ إِذْ تَحُسُّوهُمُ بِأَذْنِهِ ۚ حَتَّىٰ إِذَا فِشَلْتُمْ وَتَنَزَّعْتُمْ مِنَ الْأَمْرِ وَعَصَيْتُم مِّن بَعْدِ مَا أَرْكَبْتُمَا تُحِبُّونَ ۚ مِّنْكُمْ مَّن يُرِيدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّن يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ

अपनी मदद रोक़ी दित्ती) तुंदे चा किश लोक संसारक¹ लालच दे चाहवान हे ते किश तुंदे चा आखरत (परलोक) दे चाहवान हे, फी उसनै तुसंगी थुआड़ी परीक्षा लैने आस्तै उंदे (यानी दुश्मनें दे) हमले शा बचाई लैता ते उसनै तुसंगी यकीनन माफ़ करी दित्ता ऐ ते अल्लाह मोमिनें पर बौहत किरपा करने आह्ला ऐ ॥ 153 ॥

जिसलै तुस नसदे जा करदे हे ते कुसै बक्खी मुड़ियै नथे दिखदे। हालांके रसूल थुआड़ी सारे शा पिछली टुकड़ी / दल च (खड़ोते दा) तुसंगी सद्दा करदा हा, इस पर उस (अल्लाह) नै तुसंगी इक दुख² दे बदले च इक होर दुख दित्ता तां जे जे किश तुंदे शा जंदा रेहा ऐ ते जो (दुख) तुसंगी पुजेआ ऐ उस पर तुस दुखी नेई हो ते जो कुछ तुस करदे ओ अल्लाह उसी जानदा ऐ ॥ 154 ॥

फी उसनै इस दुख दे बा'द तुंदे पर दिलें दे सुख-चैन (दी हालत) यानी नींदर नाजल कीती जो तुंदे चा इक गरोह पर छा करदी ही ते इक गरोह ऐसा हा जे उनेंगी उंदी जानें फिकरै³ च पाई रक्खे दा हा। ओह अल्लाह दे बारे च अज्ञानता (ज्हालत) दे बिचारे आंगर झूठे बिचार करा करदे हे ओह आखा करदे हे जे क्या क्हुमत च साढ़ा बी किश (दखल) है? तूं गलाई दे (जे) क्हुमत सारी दी सारी अल्लाह दी ऐ ओह (मुनाफ़िक़)

عَمَّهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۗ وَلَقَدْ عَمَّا عَنْكُمْ ۗ^ط
وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ۝

إِذْ تُصْعِدُونَ وَلَا تَلْوَنَ عَلَى أَحَدٍ
وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِىْ أُخْرَاكُمْ
فَأْتَابَكُمْ عَمَّا بَعِثَ لِكَيْلَا تَحْزَنُوا
عَلَى مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَا آصَابَكُمْ ۗ وَاللَّهُ
خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً
نُّعَاسًا يَغْشَى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۗ
وَطَآئِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنفُسُهُمْ
يَظُنُّونَ بِاللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۗ
يَقُولُونَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ۗ
قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلَّهِ ۗ يُخْفُونَ فِىْ

1. इस कनै संसारक जां युद्ध च लुट्टे दा धन संबद्ध नेई ऐ। बल्के उनें लोकें दा एह बिचार संबद्ध ऐ जेहड़े एह समझदे हे जे अस बी 'मुजाहिद' (योधे) समझे जागे, दस्सेआ जे एह बी संसारक लुब्ध ऐ ॥
2. इस दा मतलब एह ऐ जे जो दिली दुख तुसंगी हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्ललअम दा आदेश त्रोंडियै 'उहद' नांउ दी फ्हाड़ी थमां हटी जाने दा हा, उसदी स'जा तौले गै हार दे रूपै च देई दित्ती तां जे ना-फरमानी दा दुख हल्का सेही होऐ जे अल्लाह नै उससे बेले स'जा देइयै माफ़ करी दित्ता।
3. यानी अपने प्राणें दी चिंता पेदी ही ते इस्लाम दी मान-मर्यादा दी चिंता नथी।

अपने दिलें च ओह किश छपालदे न जिशी ओह तेरे सामने जाहर नेई करदे। ओह गलांदे न जे जेकर साढ़ा (बी) क्हुमत च दखल होंदा तां अस इत्थें नेई मारे जंदे। तूं गलाई दे (जे) जेकर तुस अपने घरें च (बी) रौंहदे, तां बी जिनें लोकें पर युद्ध करना जरूरी ठरहाया गेआ ऐ ओह अपने लेटने दी ज भें पासै (शहीद होइयै) जरूर निकली जंदे (तां जे अल्लाह अपने हुकम गी पूरा करै) ते तां जे जो थुआड़े सीनें च ऐ अल्लाह उस दी परीक्षा करे ते जे किश थुआड़े दिलें च ऐ उसी (पाक-पवित्र ते) साफ करै ते अल्लाह ढंडें दियें गल्लें गी (बी) खूब जानदा ऐ ॥ 155 ॥

जिस रोज दमें लश्कर इक-दूए दे सामने होए हे उस रोज तुंदे चा जिनें पिट्ट फेरी लैती ही उनेंगी शतान नै उंदे किश कमें कारण गयाना चाह्या हा ते यकीनन अल्लाह हून उनेंगी माफ करी चुके दा ऐ ते यकीनन अल्लाह बौहत बखाने आहला (ते) सैहनशील ऐ ॥ 156 ॥ (रुकू 16/7)

हे मोमिनो! तुस उनें लोकें आंगर नेई बनो जो मुन्कर होई गेदे न ते अपने भ्राएं दे बारे च जिसलै ओह देश च (जिहाद आस्तै) निकलन जां युद्ध आस्तै रवान्ना होन तां आखदे न जे जेकर ओह साढ़े कच्छ रौंहदे तां नां मरदे ते नां मारे जंदे। (एह इस आस्तै होआ) जे अल्लाह उंदे इस कथन गी उंदे दिलें च संताप¹ (बसोस/पछोताS) दा मूजब

أَنفُسِهِمْ مَّا لَا يَبُدُّونَ لَكَ يَفْقَهُونَ لَوْ
كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ مَّا قَاتَلْنَا هَهُنَا
قُلْ لَوْ كُنتُمْ فِي مَيُوتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِينَ
كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ
وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ
وَلِيُمَحِّصَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
بِدَاتِ الصُّدُورِ ﴿١٥٥﴾

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى
الْجَمْعَيْنِ إِنَّمَا اسْتَرَأْتَهُمُ الشَّيْطَانُ
بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ
عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٥٦﴾

يَأْيُهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ
كَفَرُوا وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ إِذَا ضَرَبُوا
فِي الْأَرْضِ أَوْ كَانُوا أَعْرَضَىٰ لَوْ كَانُوا
عِنْدَنَا مَا مَاتُوا وَمَا قُتِلُوا لِيَجْعَلَ اللَّهُ
ذَلِكَ حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ وَاللَّهُ يُحْيِي

1. मुन्करें दे कथन दा मकसद एह ऐ जे इस गल्ला गी सुनियै मुसलमान कायर बनी जांगन, पर जिसलै मुसलमान उंदी गल्लें शा प्रभावत नेई होंगन तां ओह आपूं नराश होई जांगन ते उंदी अपनी गै गल्ल उंदे दिलें च संताप दा कारण बनी जाग।

बनाई देए ते अल्लाह (गै) जींदा करदा ऐ
ते मारदा ऐ ते जे किश तुस करदे ओ अल्लाह
उसी दिक्खा करदा ऐ ॥ 157 ॥

ते जेकर तुस अल्लाह दे रस्ते पर मरोई जाओ
जां मरी जाओ तां यकीनन अल्लाह दी (बख्खी
दा थुआड़ी बख्खी औने आहली) बख्खीश ते
रैहमत उस शा जो ओह ज'मा करदे न, बौहत
बेहतर होग ॥ 158 ॥

ते जेकर तुस मरी जाओ जां मारे जाओ तां
तुसेंगी यकीनन अल्लाह (दे गै) कश किट्टा
करियै लेता जाग ॥ 159 ॥

ते तू उस महान रैहमत दी ब'जा कनै (गै)
जो अल्लाह द्वारा (तुगी दित्ती गेदी) ऐ, उंदे
आस्तै तू नर्मदिल आहला ऐं ते जेकर तू बुरे
सभाऽ आहला ते सख्खदिल होंदा तां एह
लोक तेरे लागेआ तित्तर-बित्तर होई जंदे।
इस लेई तू उनेंगी माफ करी दे ते उंदे आस्तै
(खुदा शा) बख्खीश मंग ते व्हूमन (दे
मामलें) च उंदे कनै सलाह (करा) कर।
पही जिसलै तू (कुसै गल्लै दा) पुख्खा इरादा
करी लै तां अल्लाह पर भरोसा कर। अल्लाह
भरोसा करने आहलें कनै यकीनन प्रेम करदा
ऐ ॥ 160 ॥

जेकर अल्लाह थुआड़ी मदद करै तां तुंदे पर
कोई गालिब नेई (आई सकदा) ते जेकर
ओह थुआड़ी मदद करना छोड़ी देए तां उसी
छोड़ियै होर कु'न ऐ जो थुआड़ी मदद करग
ते मोमिनें गी अल्लाह पर (गै) भरोसा करना
चाही दा ॥ 161 ॥

ते कुसै नबी आस्तै एह मनासब नेई जे ओह
ख्यानत करै ते जो शख्स ख्यानत करग ओह

وَيَمِيتُ ۙ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١٥٧﴾

وَلَيْسَ قَتَلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ مَاتُمْ
لَمَغْفِرَةً مِّنَ اللَّهِ وَرَحْمَةً حَيْرٌ مِّمَّا
يَجْمَعُونَ ﴿١٥٨﴾

وَلَيْسَ مَاتُمْ أَوْ قَتَلْتُمْ لِأَنَّ اللَّهَ
مُخْتَرُونَ ﴿١٥٩﴾

فَجَارِحَةً مِّنَ اللَّهِ لَبِئْسَ لَهُمْ وَكُؤُ
كُنْتُمْ فَظًا غَلِيظَ الْقَلْبِ لَا تَقْضُوا
مِن حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ
وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ ۗ
فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ
يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ﴿١٦٠﴾

إِنَّ يَنْصُرْكُمْ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۗ
وَإِنْ يَخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِي
يَنْصُرْكُمْ مِّنْ بَعْدِهِ ۗ وَعَلَى اللَّهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٦١﴾

وَمَا كَانَ لِنَبِيِّ أَنْ يُعَلَّ ۗ وَمَنْ يُعَلَّ يَأْتِ

अपनी ख्यानत राहें हासल कीते गेदे (धन) गी क्यामत आहलै रोज आपू जाहर करी देग। फही हर इक जान गी जो कुछ उसनै कमाए दा होग पूरा-पूरा देई दिता जाग ते उंदे पर कोई जुलम नेई कीता जाग ॥ 162 ॥

क्या ओह शख्स जो अल्लाह दी मरजी मताबक चलदा ऐ उस शख्स आंगर होई सकदा ऐ जो अल्लाह पासेआ (नाजल होने आहले) गुस्से गी लेइयै परतोऐ? ते उस दा ठकाना जहन्नम होऐ ते ओह ज'गा (रौहने दी द्रिस्टी कनै) बौहत बुरी ऐ ॥ 163 ॥

अल्लाह दे घर उंदे आस्तै बक्ख-बक्ख दरजे न ते जे किश ओह करदे न अल्लाह उनेंगी दिक्खा करदा ऐ ॥ 164 ॥

अल्लाह नै मोमिनें चा इक ऐसा रसूल भेजियै, जो उनेंगी उसदे नशान (आयतां) पढ़ियै सुनांदा ऐ ते उनेंगी पवित्तर करदा ऐ ते उनेंगी कताब ते हिकमत सखांदा ऐ, यकीनन उंदे पर स्थान (उपकार) कीता ऐ ते ओह (इस शा पैहलें) यकीनन जाहरी (बाहरी) गुमराही च (पेदे) हे ॥ 165 ॥

ते क्या (एह सच्व नेई जे) जिसलै (बी) तुसेंगी कोई ऐसी तकलीफ पुज्जी जिस शा दूनी तकलीफ तुस (आपू) पुजाई चुके दे हे तां तुसें गलाई दिता जे एह कुर्युआं (आई गेई) ऐ तूं (उनेंगी) गलाई दे जे ओह (आपू) थुआड़ी अपनी बक्खी दा गै आई दी ऐ। अल्लाह यकीनन हर गल्ला पर पूरा पूरा समर्थ ऐ ॥ 166 ॥

ते जिस दिन दमैं दल इक-दूए दे सामनै होए हे (उस रोज) जो (दुख) तुसेंगी पुज्जेआ हा

بِمَا عَمَلْتُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ ثُمَّ تُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦٢﴾

أَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللَّهِ كَمَنْ بَاءَ بِسَخَطٍ مِنَ اللَّهِ وَمَا لَهُ جَهَنَّمَ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٦٣﴾

هُم دَرَجَاتٌ عِنْدَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ بِصِيرَتِهِمْ يَعْمَلُونَ ﴿١٦٤﴾

لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْ أَنفُسِهِمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ ۗ وَإِنْ كَانُوا مِن قَبْلُ لَنفَىٰ صُلَىٰ مُمِينٍ ﴿١٦٥﴾

أَوْ لَمَّا أَصَابَتْكُمْ مُّصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُم مِّثْلَيْهَا قُلْتُمْ أَنَّىٰ هَذَا قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ أَنفُسِكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٦٦﴾

وَمَا أَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ

(ओह) अल्लाह दे हुकम कनै (गै) पुजेआ हा ते इस आस्तै (पुजेआ हा) तां जे ओह मोमिनें ते मुनाफिक्रें (दोगले लोकें) गी जाहर करी देऐ ॥ 167 ॥

ते उनें (मुनाफिक्रें/दोगले लोकें) गी बी जाहर करी देऐ जिनेंगी गलाया गेआ हा जे आओ अल्लाह दे रस्ते पर जंग करो ते (दुश्मन दे हमले गी) रोको (जिस पर) उनें गलाया जे जेकर अस जंग करना जानदे तां जरूर थुआड़े कनै चलदे। ओह (लोक) उस रोज ईमान दी निसबत कुफर दे ज्यादा लागै हे। ओह अपनी जवानी ओह किश आखदे हे जो उंदे दिलें च नेई हा ते जे किश ओह छपालदे न अल्लाह उसी सारें शा ज्यादा जानदा ऐ ॥ 168 ॥

(एह ओह लोक न) जिनें अपने भ्राएं दे बारै ऐसी हालत च जे ओह आपूं (पिच्छें) बेही रेह हे, गलाया हा जे जेकर ओह सादी गल्ल मनदे तां मारे नेई जंदे (मरोंदे) तूं (उनेंगी) गलाई दे जे जेकर तुस सच्चे ओ तां (हून) अपने आपै शा (गै) मौती गी हटाइयै दस्सी देओ ॥ 169 ॥

जो लोक अल्लाह दे रस्ते पर मरोई गे न तुस उनेंगी मोए दे कदें बी नेई समझो। ओह ते अपने रब्ब दे हजर च जींदे न (ते) उनेंगी रिश्क दित्ता जंदा ऐ ॥ 170 ॥

ओह उस पर जो अल्लाह नै उनेंगी अपनी किरपा कनै प्रदान कीते दा ऐ, खुश न ते उनें लोकें बारै (बी) जो हूनै उंदे पिच्छुआं (आइयै) उंदे कनै नेई मिले खुश न (की जे) उनेंगी (ते उंदे म'जब आहलें गी) कोई डर नेई होगे ते नां गै ओह दुखी होंगन ॥ 171 ॥

فَيَاذَنِ اللّٰهَ وَيَلْعَلَمَ اٰمُوْمِيْنَ ۝۱۶۷

وَيَلْعَلَمَ الَّذِيْنَ نَاقَمُوْا ۝۱۶۸ وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ اَدْفَعُوْا ۝۱۶۹ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَا اتَّبَعْنٰكُمْ ۝۱۷۰ هُمْ لِلْكَفْرِ يَوْمِيْذٍ اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۝۱۷۱ يَقُوْلُوْنَ يَا قَوْمِ اِهْمُ مَا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۝۱۷۲ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ۝۱۷۳

الَّذِيْنَ قَالُوْا لَا اٰخُوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا ۝۱۷۴ اَطَاعُوْنَا مَا قَتَلُوْا قُلْ فَاذْرُوْا عَنۢ نَّفْسِكُمْ الْمُوْتِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝۱۷۵

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قَتَلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ۝۱۷۶ بَلْ اَحْيٰۤءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ۝۱۷۷

فَرِحِيْنَ بِمَا اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۝۱۷۸ وَيَسْتَبِشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ ۝۱۷۹ مِّنۢ خَلْفِهِمْ ۝۱۸۰ اَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝۱۸۱

(हां) ओह उस बड़्डी नैमत पर जो अल्लाह पासेआ (उनेंगी प्रदान) होई दी ऐ ते (ओहूदी) किरपा पर ते इस गल्ला पर जे अल्लाह मोमिनें दा अजर / सिला जाया नेई करदा, खुश होआ करदे न ॥ 172 ॥ (रुकू 17/8)

जिनें लोकें अल्लाह ते रसूल दा हुकम अपने जख्मी होने दे बा 'द (बी) कबूल कीता उंदे चा उंदे आसतै, जिनें चंगी चाल्ली अपना फर्ज नभाया (अदा कीता) ऐ ते संयम अखत्यार कीता ऐ, बड़ा अजर ऐ ॥ 173 ॥

(एह) ओह (लोक न) जिनेंगी दुश्मनें गलाया हा जे लोके¹ थुआड़े खलाफ (लश्कर) किट्टा कीते दा ऐ। इस आसतै तुस उंदे शा डरो तां इस (गल्ला) नै उंदे ईमान गी होर बी बधाई दिता ते उनें गलाया जे साढ़े आसतै अल्लाह (दी जात) काफी ऐ ते ओह किन्ना गै कारसाज ऐ ॥ 174 ॥

इस आसतै ओह अल्लाह पासेआ बगैर कुसै नुकसान दे बड़ी नैमत ते बड़ी किरपा लेइये परतोए ते ओह अल्लाह दी मरजी दे मताबक चली पे ते अल्लाह बौहत किरपा करने आहला ऐ ॥ 175 ॥

एह (डराने आहला)सिर्फ (इक) शतान ऐ। ओह अपने दोस्तें गी डराना ऐ जेकर तुस मोमिन ओ तां इंदे (शताने) शा नेई डरो ते मेरे शा डरो ॥ 176 ॥

ते जेहके लोक कुफर च तौले-तौले अग्गे बधा करदे न ओह तुगी दुखी नेई करन!

يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةِ اللَّهِ وَفَضْلِهِ
وَأَنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ ۝^{٧٦}

الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِنْ بَعْدِ
مَا أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا
مِنْهُمْ وَاتَّقُوا أَجْرَ عَظِيمٍ ۝^{٧٧}

الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ
جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ
إِيمَانًا ۖ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ۝^{٧٨}

فَانْقَلَبُوا بِنِعْمَةِ اللَّهِ وَفَضْلِهِ
يَمَسُّهُمْ سُوءٌ ۚ وَاتَّبَعُوا رِضْوَانَ اللَّهِ
وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ ۝^{٧٩}

إِنَّمَا ذَلِكُمُ الشَّيْطَانُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَاءَهُ
فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُوا رَبَّكُمْ إِن كُنْتُمْ
مُؤْمِنِينَ ۝^{٨٠}

وَلَا يَحِزُّكَ الَّذِينَ يَسَارِعُونَ فِي
الْكُفْرِ ۚ إِنَّهُمْ لَنْ يُصِرُّوا لِلَّهِ شِيَاءً

1. मूल शब्द 'अन्नास' दा अर्थ सधारण लोक ऐ, पर इत्थें इस दा अर्थ ऐ ओह लोक जो मुसलमाने दे बैरी हे।

ओह अल्लाह गी कदें बी जोह (नुकसान) नेई पुजाई सकदे। अल्लाह चांहदा ऐ जे आखरत च उंदे आसतै कोई हिस्सा नेई रक्खै ते उंदे आसतै बड्डा अजाब (निश्चत) ऐ ॥ 177 ॥

जिनें लोके ईमान गी छोड़िये कुफर अखत्यार करी लैता ऐ ओह अल्लाह गी कदें बी कोई जोह (नुकसान) नेई पुजाई सकदे ते उनेंगी दर्दनाक अजाब मिलग ॥ 178 ॥

ते जेहके लोक मुन्कर न ओह कदें बी एह नेई समझी लैन जे सादा उनेंगी ढिल्ल देना उंदी जात आसतै बेहतर ऐ। अस उनेंगी जेहकी ढिल्ल दिन्ने आं (तां) उसदा नतीजा सिर्फ (उंदा) गुनाहें च होर प्यादा बधी जाना होग ते उंदे आसतै अपमान जनक अजाब (निश्चत) ऐ ॥ 179 ॥

(एह) ममकन (गै) नथा जे जिस हालत च तुस (लोक) ओ अल्लाह उस पर जिन्ना चिर जे ओह (अल्लाह) मलीन गी पवित्तर शा बक्ख नेई करी दिंदा (तुंदे जनेह) मोमिनें गी छोड़ी दिंदा ते अल्लाह तुसेंगी गैब (परोक्ष) दियें गल्लें शा कदें बी सूचत नथा करी सकदा। हां! अल्लाह अपने रसूलें बिच्चा जिसी चांहदा ऐ चुनी लैंदा ऐ। इस आसतै तुस अल्लाह (पर) ते उसदे रसूलें पर ईमान ल्याओ, ते जेकर तुस ईमान ल्यौगे ते संयम अखत्यार करी लैगे तां तुसेंगी बौहत बड्डा बदला / अजर मिलग ॥ 180 ॥

ते जेहके लोक उस (धन गी देने) च जो अल्लाह नै उनेंगी अपनी किरपा कनै दिते दा ऐ, कंजूसी करदे न ओह अपने आसतै (उसी)

يُرِيدُ اللَّهُ أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حِطًّا فِي
الْآخِرَةِ ۗ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٧٧﴾

إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرُوا الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَنْ
يُضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۗ وَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٨﴾

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّمَا نُمَلِّئُ
لَهُمْ خَيْرًا لَّا أَنفُسَهُمْ ۗ إِنَّمَا نُمَلِّئُ لَهُمْ
لِيُزَادُوا فِي إِثْمِهِمْ ۗ وَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٧٩﴾

مَا كَانَ اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا
أَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ يَمِيزَ الْخَيْثَ مِنَ
الطَّيِّبِ ۗ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى
الْغَيْبِ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَجْعَلِي مِنْ رُسُلِهِ مَنْ
يَشَاءُ ۗ فَأَمُّوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۗ وَإِنْ
تَوَلَّوْا تَتَّبِعُوا فَاكْفَرُوا ۗ جَزَاءُ عَظِيمٍ ﴿٨٠﴾

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخُلُونَ بِمَا أَنفُسُهُمْ
اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرٌ لَّهُمْ ۗ بَلْ هُوَ شَرٌّ

कदें बी चंगा नेई समझन। (चंगा नेई) बल्के ओह उंदे आस्तै बुरा ऐ। जिस धन च ओह कंजूसी बरतदे न क्यामत आहलै रोज यकीनन उसदा लड्डन (तौक) बनाया जाग (ते उंदे गलें च पाया जाग) ते गासं ते धरती दी मीरास (स्वामित्व) अल्लाह आस्तै गै ऐ ते जे (किश) तुस करदे ओ अल्लाह उसी जानदा ऐ। ॥ 181 ॥ (रुकू18/9)

जिनें लोकें गलाए दा ऐ जे अल्लाह¹ ते गरीब ऐ ते अस अमीर आं। अल्लाह नै उंदी (इस) गल्ला गी यकीनन सुनी लैता ऐ, अस उंदी एह गल्ल ते उंदा बिला-ब'जा गै नबियें गी मारने दी ताक च ठले दे रौहना यकीनन लिखियै रखगे ते अस (उनेंगी) गलागे जे जलन आह्ला अजाब चक्खो ॥ 182 ॥

एह (अजाब) जे (किश) थुआड़े हत्थें (कर्म कारण) अगें भेजे दा ऐ उसदे कारण होग ते सचाई एह ऐ जे अल्लाह अपने बंदें पर जुलाम नेई करदा ॥ 183 ॥

जिनें लोकें गलाए दा ऐ जे अल्लाह नै असेंगी यकीनन तकीदी हुकम दिते दा ऐ जे अस (उस बेले तक) कुसै रसूल दी गल्ल नेई मनचै जिन्ना चिर ओह ऐसी कुरबानी (दा हुकम) नेई आहनै जिसी अगग खाई² जंदी होऐ। तूं (उनें गी) आखी दे जे केई रसूल थुआड़े कश मेरे शा पैहलें जाहरा-बाहरा नशान

لَهُمْ سَيِّطُونَ مَا بَخِلُوا بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ وَ لِلّٰهِ مِيرَاتُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ ١٨١

لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوْا اِنَّ اللّٰهَ فَعِيْرٌ وَّ نَحْنُ اَعْنِيَاءُ ۗ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا ۗ وَ قَتَلْتَهُمُ الْاَنْبِيَاءَ بِعَدْرِ حَقٍّ ۗ وَ نَقَوْلُ دُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝ ١٨٢

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ اَيْدِيَكُمْ وَّ اَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلّٰمٍ لِّلْعٰبِدِيْنَ ۝ ١٨٣

الَّذِيْنَ قَالُوْا اِنَّ اللّٰهَ عٰهَدَ اَيْنَا اَلَا نُوْمِنُ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَّاْتِيَنَا بِقُرْبٰنٍ تَاْكُلُهٗ النَّارُ ۗ قُلْ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ وَ بِالذِّكْرِ ۗ قُلْتُمْ فَلِمَ

1. मुसलमानें गी दान देने आस्तै प्रेरणा देने आहली गल्लें गी सुनियै यहूदी गलांदे हे जे पता लग्गा ऐ जे अस अमीर आं ते अल्लाह गरीब। इसदा जवाब दिते दा ऐ जे ओह दिन दूर नेई जिसलै जे थुआड़े धन बगैरा तुंदे शा खूसी लैते जांगन। फही इतिहास शा सिद्ध ऐ जे यहूदी मदीना ते उसदे आसे-पासे दी सारी धन-दौलत छोड़ियै नस्सी गे हे।
2. इस दा एह अर्थ नेई जे अगग कुतुआं आइयै उसी भसम करी दिंदी ही, बल्के बलि देने दा अर्थ एह होंदा हा जे ओह अगगी च जाली जंदी ही ते उसी 'दाह्य बलिदान' गलाया जंदा हा। ऐसे बलिदानें दी प्रथा हिंदुएं, ईरानियें ते यहूदियें च प्रचलत ही।

आहनी चुके दे न ते ओह (चीज) बी जो तुसें ब्यान कीती ऐ। फी जेकर तुस सच्चे ओ तां उनेंगी मारने पर की तुले दे हे? ॥ 184 ॥

फी जेकर ओह तुगी झुठलान तां (केह होआ) तेरे शा पैहलें दे केई रसूलें गी (बी), जो खुल्ले नशान ते चमत्कार ते रोशन शरीअत ल्याए हे, झुठलाया जाई चुके दा ऐ ॥ 185 ॥

हर इक जान मीती दा मजा चक्खने आहली ऐ। ते तुसेंगी सिर्फ क्यामत आहलै ध्याड़े (गै) थुआड़े (कमें दे) पूरे बदले¹ दित्ते जांगन। इस आस्तै जिसी अग्गी शा दूर रक्खेआ जा ते जन्त च दाखल कीता जा ओह कामयाब होई गेआ ते संसारक जिंदगी (दा समान) सिर्फ धोखा देने आह्ला आरजी समान ऐ ॥ 186 ॥

तुसेंगी थुआड़ी धन-दौलत ते थुआड़ी जानें दे बारे च जरूर अजमाया जाग ते तुस जरूर उनें लोकें शा जिनेंगी तुंदे शा पैहलें कताब दित्ती गेई ही ते उंदे शा (बी) जेहके मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) न अत्त दुख (देने आह्ला कलाम) सुनगे ओ, ते जेकर तुस सबर करगे ओ ते संयम अखत्यार करगे ओ तां एह यकीनन हिम्मत आहले कमें चा ऐ ॥ 187 ॥

ते (उस बेले गी याद करो) जिसलै अल्लाह नै उनें लोकें शा बचन लैता हा जिनेंगी कताब दित्ती गेई ही जे तुस जरूर लोकें दे सामनै इस (कताब) गी जाहर करगे ओ ते इसी नेई छपालगे ओ पर इस दे बावजूद उनें इसी अपनी पिट्ठीं पिच्छें सुट्ठी दित्ता ते इसी छोड़ियै थोदी² (हारी) कीमत लेई लैती। जे किश

قَاتَلْتُمُوهُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٨٤﴾

قَاتِلْ كَذَّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ رَسُولٌ
مِّنْ قَبْلِكَ جَاءُوا بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ
وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ﴿١٨٥﴾

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ وَإِنَّمَا تُوَفَّقُونَ
أَجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَمَنْ زُحِرَ
عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ وَمَا
الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْعُرُورِ ﴿١٨٦﴾

لَتَتَّبِعُونَ فِيْ أَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ
وَلَتَسْمَعَنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ
قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا أَذَى كَثِيرًا
وَإِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ ذَلِكَ مِنْ
عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿١٨٧﴾

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْفُمُونَهُ
فَنَبَذُوهُ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ وَاشْتَرَوْهُ
بِمَتَاعٍ قَلِيلٍ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُونَ ﴿١٨٨﴾

1. जेकर संसार च बी बदला मिलदा ऐ, पर ओह पूरा-पूरा बदला नेई होंदा। मोमिनें दी शान दे मताबक बदला जो अल्लाह दी क्रिपा दा खुल्लम-खुल्ला प्रमाण होंदा ऐ, ओह क्यामत आहलै ध्याड़े गै मिली सकदा ऐ।
2. इस आयत दी व्याख्या आस्तै दिक्खी सूर: बकर: आयत नं.175 ।

ओह लैंदे न, ओह किन्ना गै बुरा ऐ ॥ 188 ॥

तू उनें लोकें गी जो अपने कीते पर इतरांदे न ते जेहका कम्म उनें नेई कीता ओहदे बारै बी चांहदे न जे उंदी सराहना कीती जा। तू ऐसा कदें बी नेई समझ जे ओह अजाब शा सुरक्षत न। (ओह पकड़ी लैते जांगन) ते उंदे आस्तै दर्दनाक अजाब (निश्चत) ऐ ॥ 189 ॥

ते गासैं ते धरती दी व्हूमत अल्लाह दी गै ऐ ते अल्लाह हर गल्ल करने च समर्थ ऐ ॥ 190 ॥ (रुकू 19/10)

गासैं ते धरती दी पदायश (सिरजना) च ते रातीं-दिनैं दे अगगें-पिच्छें औने च अकलमदें आस्तै यकीनन केई नशान (मजूद) न ॥ 191 ॥

(ओह अकलमद) जेहके खड़ोते दे ते बैठे दे ते अपने पासैं दे भार लेटे दे अल्लाह गी याद करदे (रौंहदे) न ते गासैं ते धरती दी पदायश (सिरजना) बारै सोच-बचार शा कम्म लैंदे न (ते गलांदे न जे) हे साढ़े रब्ब! तोह एह (संसार) ऐहमें (ब्यर्थ गै) पैदा नेई कीता। तू (ऐसे बे-मकसद कम्म करने शा) पवित्रर ऐं। इस आस्तै तू असेंगी अगगी दे अजाब शा बचाऽ ते साढ़ी जिंदगी गी बे-मकसद बनने शा बचाई लै ॥ 192 ॥

हे साढ़े रब्ब! जिसी तू अगगी च दाखल करगा उसी ते तोह यकीनन अपमानत करी दिता ते जालमें दा कोई बी मददगार नेई होग ॥ 193 ॥

हे साढ़े रब्ब! असें यकीनन इक ऐसे पुकारने आहले दी अवाज सुनी ऐ जो ईमान (देने)

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَا آتَوْا
وَيُجِبُونَ أَنْ يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا
فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِنَ الْعَذَابِ
وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٨٩﴾

وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ
عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٩٠﴾

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَإِخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ لِأُولِي
الْأَبْصَارِ ﴿١٩١﴾

الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَمًا وَقُعُودًا وَعَلَى
جُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَذَا بَاطِلًا
سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٩٢﴾

رَبَّنَا إِنَّكَ مَنْ تَدْخُلِ النَّارَ فَقَدْ
أَخْرَيْتَهُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿١٩٣﴾
رَبَّنَا إِنَّا سَمِعْنَا مَنَادًا يَقُولُ لِلَّذِينَ

आस्तै बुलांदा ऐ (ते गलांदा ऐ) जे अपने रब्ब पर ईमान ल्याओ। इस आस्तै अस ईमान लेई आए। इस आस्तै हे साढ़े रब्ब! तू साढ़े कसूर माफ कर ते साढ़ियां बुराइयां मटाई दे ते असेंगी सदाचारी लोकें कनै (मलाइयै) मौत दे ॥ 194 ॥

ते हे साढ़े रब्ब! असेंगी ओह (किश) दे जिस दा तोह अपने रसूलें (दी जवान) राहें साढ़े कनै बा'यदा कीता हा ते क्यामत आहलै ध्याडै असेंगी अपमानत नेई करेआं। तू अपने बा'यदे दे खलाफ कदें बी नेई करदा ॥ 195 ॥

इस आस्तै उंदे रब्ब नै (एह आखदे होई) उंदी (दुआऽ) सुनी लैती जे अ'ऊं तुंदे चा कुसै कर्म करने आहले दे कर्म गी, चाहे ओह मड़द होऐ जां जनानी, जाया नेई करड। तुस इक-दूए कनै (सरबंध रक्खने आहले) ओ। इस लेई जिनें हिजरत कीती ते उनें गी उंदे घरें चा कड्ढेआ गेआ ते मेरे रस्ते च तकलीफ दिती गेई ते उनें जंग कीती ते मरोई गे, अ'ऊं उंदी बुराइयें (दे असरें) गी उंदे शरीरें चा यकीनन मटाई देगा ते अ'ऊं उनेंगी यकीनन ऐसे बागें च दाखल करड जिंदे हेठ नैहरां बगदियां होडन। (एह इनाम) अल्लाह पासेआ बदले दे रूपै च मिलग ते अल्लाह ते ओह ऐ जेहदे कश सारें शा उत्तम सिला ऐ ॥ 196 ॥

जेहके लोक इन्कारी न उंदा देशें च अजादी कनै फिरना-टुरना तुगी कदें बी धोखे च नेई पाई देऐ ॥ 197 ॥

أَنْ أَمْوَابِكُمْ فَأَمَّا رَبَّنَا فَاعْفُرْنَا
ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَقَّأَمَعَ
الْأَبْرَارِ ﴿١٩٤﴾

رَبَّنَا وَأَيْنَا مَا وَعَدْتَنَا عَلَى رُسُلِكَ وَلَا
تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ
الْمِيعَادَ ﴿١٩٥﴾

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ
عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ
بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۖ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا
وَأُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأُوذُوا فِي
سَبِيلِي وَقَاتَلُوا وَقُتِلُوا لَأُكَفِّرَنَّ
عَنَّهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ تَوَّابًا مِّنْ
عِنْدِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٦﴾

لَا يَعْزُبُ عَنْكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي
الْبِلَادِ ﴿١٩٧﴾

एह आरजी लाह ऐ जिसदे बा'द उंदा ठकाना
ज्हन्म (च) होग ते ओह अत्त गै बुरा ठकाना
ऐ ॥ 198 ॥

مَتَاعٍ قَلِيلٍ ۖ ثُمَّ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ
وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝۱۹۸

पर जिनें लोकें अपने रब्ब दा संयम अखत्यार
कीते दा ऐ उंदे लेई ऐसे बाग न जिंदे हेठ
नैहरां बगदियां न। ओह उंदे च गै रौहडन।
एह अल्लाह पासेआ प्रौहनचारी दे रूपै च
होग ते जे (किश) अल्लाह कश ऐ ओह
नेक (भलेमानस) लोकें आस्तै होर बी बेहतर
ऐ ॥ 199 ॥

لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا بَهْمَ لِهْمِ جُنَّتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
تُرًّا لَا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ ۖ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ
خَيْرٌ لِّلَآبِرَارِ ۝۱۹۹

ते अहले किताब चा किश लोक यकीनन ऐसे
(बी) हैन जो अल्लाह (पर) ते जो (किश)
तेरे पर उतारेआ गेदा ऐ (उस पर) ते जो
(किश) उंदे पर उतारेआ गेआ (ओहदे पर)
ईमान रखदे न ते कनै गै (ओह) अल्लाह दे
सामनै ल्हीमगी दस्सने आहले न ते अल्लाह
दी आयतें दे बदले च थोड़ा¹ मुल्ल नेई लैंदे।
एह ऐसे लोक न जे जिंदे कर्म दा बदला उंदे
रब्ब कश उंदे आस्तै सुरक्षत ऐ। अल्लाह
यकीनन तौले स्थाब करने आहला ऐ ॥ 200 ॥

وَأَنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ
وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِمْ
لُحْشِعِينَ لِلَّهِ لَا يَشْتَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ
ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ
عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝۲००

हे ईमान आहलेओ! सबर शा कम्म लैओ ते
(बैरी शा बधिये / बद्ध) सबर दा प्रदर्शन
करो ते बन्नै (सरहददे) दी नगरानी रक्खो ते
अल्लाह दा संयम अखत्यार करो तां जे तुस
कामयाब होई जाओ ॥ 201 ॥ (रकू 20/11)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَبِرُوا وَصَابِرُوا
وَ رَابِطُوا ۖ وَ اتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُونَ ۝۲०१

०००

1. ओ धर्म दे बदले च संसारक तुच्छ धन कबूल नेई करदे।



सूर : अल्-निसा

एह सूर: मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां इक सौ सत्हत्तर आयातां ते चौहबी रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांउ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ①

हे लोको! अपने रब्ब दा तक्रवा (संयम)
अखत्यार करो जिसनै तुसेंगी इक (गै) जान
चा पैदा कीता ते उसदी जिन्स (जाति) चा गै
उसदा जोड़ा पैदा कीता ते उनें दौनों चा मते-
हारे मड़द-जनानियां (पैदा करियै दुनियां च)
फलाए ते अल्लाह दा संयम (इस आस्तै बी)
अखत्यार करो जे ओहदे राहें तुस आपस च
सुआल करदे ओ ते खास कर रिश्तेदारियें (दे
मामले) च (संयम शा कम्म लैओ) अल्लाह
यकीनन तुंदे पर नगरान ऐ ॥ 2 ॥

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمْ اَرْبَابُ الَّذِي خَلَقَكُمْ
مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّوَحَلَقَ مِنْهَا رَوْجَهَا
وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَاءً ۗ
وَاْتَمَّوْا اللّٰهَ الَّذِي تَسَاءَلُوْنَ بِهِ وَاْلْاَرْحَامَ ۗ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ①

ते जतीमें गी उंदे माल (धन) देई देओ ते
पवित्तर (धन) दे बदले च अपवित्तर (धन)
नेई लैओ ते उंदा माल (धन) अपने धन च
(मलाइयै) नेई खाओ, एह यकीनन बड्डा
गुनाह ऐ ॥ 3 ॥

وَاْتَمَّوْا الْيَسْرٰى اَمْوَالَهُمْ وَّلَا تَتَّبَدُّوْا
الْحَيْثُ بِالطَّيْبِ وَّلَا تَاْكُلُوْا اَمْوَالَهُمْ
اِلٰى اَمْوَالِكُمْ ۗ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ①

1. यानी तुस अल्लाह दे नांउ दा बास्ता देइयै अपनी जरूरतें गी पूरा करने दी इच्छा जाहर करदे ओ।

ते जेकर तुसेंगी एह डर होऐ जे तुस जतीमें दे बारे च न्याऽ नेई करी सकगे ओ तां जो तरीका तुसेंगी पसंद होऐ (अपनाई लैओ यानी जतीमें गो छोड़ियै) दूई जनानियें चा द'ऊं-द'ऊं कनै ते त्र'ऊं-त्र'ऊं कनै ते च'ऊं-च'ऊं कनै नकाह करी लैओ, पर जेकर तुसेंगी एह डर होऐ जे तुस न्याऽ¹ नेई करी सकगे ओ तां इक गै जनानी कनै जां उनें (दासियें) कनै जो थुआड़े हतथै च न, नकाह करो। (एह ढंग इस गल्ला दे) ज्यादा नेड़े ऐ जे तुस जालाम³ नेई होई जाओ ॥ 4 ॥

ते जनानियें गो उंदे मेहर दिली खुशी कनै देई देओ, फही जेकर ओह अपने दिलै दी खुशी कनै ओहदे चा तुसेंगी किश देई देन तां एह जानदे होई जे ओह थुआड़े आस्तै मजे ते नतीजे दे लिहाज कनै अच्छा ऐ, तुस उसी बे-शक्क खाओ ॥ 5 ॥

ते समझ नेई रक्खने आहलें गो अपना ओह धन नेई देओ जिसी अल्लाह नै थुआड़े आस्तै सहा बनाए दा ऐ ते उसै चा उनेंगी खलाओ ते उनेंगी लुआओ ते उनेंगी मनासब ते चंगियां गल्लां आखो ॥ 6 ॥

ते जतीमें दी अजमैश उस बेले तगर करदे र'वो जे ओह ब्याह दी आयु तक पुज्जी जान, उसदे बा'द जेकर तुस उंदे च सूझ-बूझ दिक्खो तां उंदे धन उनेंगी बापस परताई देओ ते उंदे

وَأَنْ خِفْتُمْ أَلَّا تَقْسُطُوا فِي الْيَتَامَىٰ
فَأَنْكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ مِمَّا
وَتِلْكَ وَرُبِعٌ ۚ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تَعْدِلُوا
فَوَاحِدَةٌ أَوْ مَمْلُوكَةٌ أَيَّمَانِكُمْ ۚ ذَلِكَ
أَدْنَىٰ أَلَّا تَعُولُوا ۝

وَأَتُوا النِّسَاءَ صَدُقَاتِهِنَّ نِحْلَةً ۚ فَإِنْ
طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُنَّ نَفْسًا فَكُلُوهُ
هَيْنًا مَّرِيئًا ۝

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَاءَ أَمْوَالَكُمُ الَّتِي جَعَلَ
اللَّهُ لَكُمْ قِيَامًا وَارْزُقُوهُمْ فِيهَا
وَأَكْسُوهُمْ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۝

وَابْتَلُوا الْيَتَامَىٰ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ
فَإِنْ أَسْتَمْتُمْ مِّنْهُمْ رِّشْدًا فَادْفَعُوا
إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا

1. अनाथ जनानियें चा इक शा ज्यादा कनै नकाह करना चंगा नेई, की जे ना-इन्साफी दा डर ऐ। हां! उंदे अलावा दूई जनानियें चा द'ऊं-द'ऊं, त्र'ऊं-त्र'ऊं, च'ऊं-च'ऊं कनै नकाह करी सकदे ओ, की जे उंदे बारस उंदे हक दी रक्खेआ करी सकदे न।
2. नेहियां जनानियां जेहकियां युद्ध च शामिल होन ते युद्ध भूमि च सेना गो युद्ध करने दी प्रेरणा देन ते फही बंदी बनाई लैतियां जान, उनेंगी दासियां गलाया जंदा ऐ।
3. इस चाल्ली दा ब्यहार करियै तुस जुलम ते पापें दे खतरे शा मती हद्दा तगर बची सकदे ओ।

जुआन होई जाने दे डरा कनै उंदे धन नजायज तौरा पर ते तौले-तौले नेई खाई जाओ ते जो कोई धनवान होऐ ओहदे आस्तै मनासब ऐ जे ओह (इस धन दे प्रयोग शा) पूरी चाल्ली बचे दा र'वै, पर जो गरीब होऐ ओह मनासब तौरा पर (इस धन चा) खाई सकदा ऐ, फही जिसलै तुस उनेंगी उंदे धन परताओ तां उंदे (अनाथें दे) सामनै गुआह बनाई लैओ ते स्हाब लैने आस्तै अल्लाह (इक्कला गै) काफी ऐ ॥7॥

ते मड़दें दा बी ते जनानियें दा बी उस धन च इक हिस्सा ऐ जो उंदे मां-प्योऽ ते उंदे करीबी रिश्तेदार छोड़ियै मरी जान, भामें इस (पिता-पुरखी) जैदाद चा थोढ़ा बचे दा होऐ जां ज्यादा। एह इक निश्चत हिस्सा ऐ जो (अल्लाह आहले पासेआ) नियुक्त कीता गेदा ऐ ॥8॥

ते जिसलै (पुशतैनी जैदाद दे) बंडारे मौकै दूए रिश्तेदार ते जतीम ते गरीब लोक बी आई जान तां एहदे चा उनेंगी बी देई देओ ते उनेंगी मनासब ते चिंगियां गल्लां आखो ॥9॥

ते जेहके लोक इस गल्ला शा डरदे होन जे जेकर ओह अपने पिच्छें कमजोर उलाद छोड़ी गे तां उसदा केह बनग ? तां उनेंगी (दूए जतीमें दे बारै बी) अल्लाह दे डर शा कम्म लैना चाही दा ते चाही दा ऐ जे ओह साफ ते सिद्धी गल्ल गलान ॥10॥

जेहके लोक जुलम कनै जतीमें दा माल खंदे न ओह यकीनन अपने दिड्डें च सिर्फ अगग भरदे न ते ओह यकीनन भड़कै करदी अगगी च दाखल होंग ॥11॥ (रकू1/12)

وَبَدَارًا أَنْ يَكْبَرُوا^١ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ^٢ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ^٣ فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهَدُوا عَلَيْهِمْ^٤ وَكَفَى بِاللَّهِ حَسِيبًا^٥

لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبُونَ^٦ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ^٧ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا^٨

وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينُ فَأَرْزُقُوهُمْ مِنْهُ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا^٩

وَلِيَخْشَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكُوا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَةً ضَعِيفًا حَاقُوا عَلَيْهِمْ^{١٠} فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا^{١١}

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا^{١٢} وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا^{١٣}

अल्लाह थुआड़ी उलाद दे बारै तुसेंगी हुकम दिंदा ऐ (जे इक) मड़दै दा (हिस्सा) द'ऊं जनानियें दे हिस्से दे बरोबर ऐ ते जेकर (उलाद) जनानियां (गै जनानियां) होन जेहकियां द'ऊं शा उप्पर होन तां उंदे आसतै (बी) जे किश उस (मरने आहले) नै छोड़े दा होऐ (उसदा) 2/3 हिस्सा निश्चत ऐ ते जेकर इक (गै जनानी) होऐ तां ओहदे आसतै (छोड़ी दी जैदाद दा) अदधा हिस्सा ऐ ते जेकर उस (मरने आहले) दै उलाद होऐ तां उसदे मां-प्योऽ आसतै (यानी) उंदे चा हर इक आसतै उसदी छोड़ी दी जैदाद चा छेमां हिस्सा (निश्चत) ऐ जेकर उसदै उलाद नेई होऐ ते उसदे मां-प्योऽ (गै) बारस होन तां उसदी मां दा त्रीया हिस्सा (निश्चत) ऐ पर जेकर उसदे भ्राऽ (भैन मजूद) होन तां उसदी मां दा छेमां हिस्सा (निश्चत) ऐ (एह सब हिस्से) उसदी बसीहत ते (उसदे कर्जे दे) भुगतान दे बा'द दित्ते जांगन। तुस नेई जानदे जे थुआड़े पुरखें ते थुआड़े पुतरें चा कु'न थुआड़े आसतै ज्यादा लाह देऊ ऐ। एह अल्लाह पासेआ जरूरी करार दिता गेदा ऐ। अल्लाह यकीनन बौहत जानने आहला (ते) हिक्मत आहला ऐ ॥ 12 ॥

ते थुआड़ी जनानियां मरने परेंत जे किश छोड़ी जान, जेकर उंदी उलाद नेई होऐ तां उंदे छोड़े दे धन दा अदधा हिस्सा थुआड़ा ऐ ते जेकर उंदी संतान होऐ तां जे किश उतें छोड़े दा ऐ ओहदे चा चौथा हिस्सा थुआड़ा ऐ। (एह हिस्से उंदी) बसीहत ते कर्जा चकाने दे बा'द (बचे दे धन चा) होंगन। जेकर थुआड़ी उलाद नेई होऐ तां जे किश तुस छोड़ी जाओ

يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ لِلذَّكَرِ
مِثْلَ حَظِّ الْأُنثِيَيْنِ ۚ فَإِن كُنَّ نِسَاءً
فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثُ مَا تَرَكَ ۚ وَإِن
كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۚ وَلَا يُؤْتِيهِ
لِلْكَوْنِ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا الشُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ
إِن كَانَ لَهُ وَوَلَدٌ ۚ فَإِن لَّمْ يَكُنْ لَهُ وَوَلَدٌ
وَوَرِثَةٌ أَبَوَاهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَإِن كَانَ
لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ الشُّدُسُ مِّنْ بَعْدِ وَصِيَّتِهِ
يُوصَىٰ بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۗ وَإِبَاءُكُمْ
وَأَبْنَاؤُكُمْ لَا تَدْرُونَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ
لَكُمْ نَفْعًا فَرِيضَةٌ مِّنَ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٢﴾

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ إِن
لَّمْ يَكُن لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَإِن كَانَ لَّهُنَّ وَوَلَدٌ
فَلِكُمُ الرِّبْعُ مِمَّا تَرَكَنَّ مِّنْ بَعْدِ وَصِيَّتِهِ
يُوصَيْنَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۗ وَلَهُنَّ الرِّبْعُ مِمَّا
تَرَكَتُمْ إِن لَّمْ يَكُنْ لَكُمْ وَوَلَدٌ ۚ فَإِن كَانَ

ओहदे चा चौथा हिस्सा उंदा (उनें जनानियें दा) ऐ ते जेकर तुंदी संतान होऐ तां जे किश तुस छोड़ी जाओ ओहदे चा अठमां हिस्सा उंदा (जनानियें दा) ऐ। (एह हिस्से) थुआड़ी बसीहत ते कर्जा चुकाने दे बा'द होंगन ते जिस मड़द जां जनानी दे छोड़े दे माल दी बंड कीती जंदी ऐ, जेकर उस दा प्योऽ ते कोई संतान नेई होऐ ते उसदा इक भाऽ जां इक भैन¹ होऐ तां उंदे चा हर इक दा छेमां हिस्सा होग ते जेकर ओह इस शा ज्यादा होन तां ओह सारे त्रीये हिस्से च शामिल होंगन। एह हिस्से मरने आहले दी बसीहत ते कर्जा चुकाने दे बा'द बचे दे माल चा होंगन। इस बंडारे च कुसै गी नुकसान पजाने दा मकसद नेई होना चाही दा ते अल्लाह पासेआ तुसेंगी हुकम दिता जंदा ऐ ते अल्लाह बाँहत जानने आहला ते सैहनशील ऐ ॥ 13 ॥

एह अल्लाह दियां (निश्चत कीती दियां) हद्दां न ते जेहके लोक अल्लाह ते उसदे रसूल दे आज्ञाकारी होन उनेंगी ओह ऐसे बागें च दाखल करग जिंदे च नैहरां बगदियां होंगन ते ओह उंदे च गै बास करडन ते इय्यै बड़्डी कामयाबी ऐ ॥ 14 ॥

ते जो शख्स अल्लाह ते उसदे रसूल दी ना-फरमानी करै ते उसदी (निश्चत) हद्दें शा अगमें लंघी जा ओह उसी (नरक दी) अगगी च दाखल करग, जेहदे च ओह चिरे तगर² बास करग ते ओहदे आस्तै अपमान

لَكُمْ وَكَذَلِكَ فَاهَنْ التَّمَنُّنُ مَا تَرَكَتُمْ مِنْ
بَعْدِ وَصِيَّةٍ تَوْصُونَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۖ وَإِنْ
كَانَ رَجُلٌ يُّورِثُ كَلَّةً أَوْ امْرَأَةً وَوَلَةً
أَخٍ أَوْ أُخْتٍ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا
السُّدُسُ ۚ فَإِنْ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ
فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثَّلَاثِ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ
يُّوصَى بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۚ غَيْرَ مُضَارٍّ ۖ
وَصِيَّةً مِنَ اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ ۝

تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۖ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ
وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَلِكَ
الْقَوْلُ الْعَظِيمُ ۝

وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ
حُدُودَهُ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا ۚ وَلَهُ
عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝

1. मूल शब्द 'कलाला' दे जिनें भ्राएं-भैनें दे बारस होने दा इत्थें बर्णन कीता गोदा ऐ ओह ऐसे भैन-भाऽ न जेहके ओहदी मां चा होन।
2. सुर्ग आस्तै बी 'खुलूद' (सदा) शब्द प्रयुक्त होए दा ऐ यानी एह जे सुर्ग च रौहने आहले लोक लम्मे समे तक ओहदे च बास करडन ते नर्क आस्तै बी इय्यै 'खुलूद' शब्द बरते दा ऐ, पर पक्वितर कुर्आन च दूए थाहरें पर इस दा स्पष्टीकरण होए दा ऐ जे सुर्ग-बासी ओहदे च लगातर बास करडन, पर नर्क दे अजाब दी अबधि किश चिरे बा'द खतम होई जाग।

जनक अज्ञाब निश्चत ऐ ॥ 15 ॥
(रुकू 2/13)

ते थुआड़ी जनानियें चा जो बी कुसै ना-पसंद (अश्लील¹) कम्मै दे लागै जान, उंदे बारै च उंदे पर अपनै (रिश्तेदारें ते गुआंढियें) चा चार गुआह ल्याओ, इस आस्तै जेकर ओह (चार गुआह) गुआही देई देन तां तुस उनेंगी अपने घरें च उस बेलै तगर रोकी रक्खो जे उनेंगी मौत आई जा जां अल्लाह उंदे आस्तै कोई दूआ रस्ता कड्ढी देऐ ॥ 16 ॥

ते तुंदे चा जेहके दऊं मड़द अश्लील² कम्मै (झगड़े-फसाद) दे लागै जान तां तुस उनेंगी दुख पजाओ, फही जेकर ओह दमै प्राहचित करी लैन ते (अपना) सुधार करी लैन तां उंदा पीछा छोड़ी देओ। अल्लाह यकीनन बौहत्त गै तोबा कबूल करने आह्ला (ते) बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 17 ॥

तोबा (दा कबूल करना) अल्लाह पर सिर्फ उनें लोकें आस्तै गै जरूरी ऐ जेहके ना-समझी कन्नै बुरा कम्म करी बैठे दे होन, फही ओह तौले गै तोबा करी लैन ते एह लोक ऐसे न जे अल्लाह उंदे पर किरपा करदा ऐ ते अल्लाह बौहत्त जानने आह्ला (ते) हिक्मत आह्ला ऐ ॥ 18 ॥

وَأَلَّتِي يَأْتِيَنِ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِسَائِكُمْ
فَأَسْتَشْهَدُوا عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةً مِنْكُمْ فَإِنْ
شَهِدُوا فَأَمْسِكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ حَتَّى
يَتَوَقَّهِنَّ الْمَوْتُ أَوْ يَجْعَلَ اللَّهُ لَهُنَّ
سَبِيلًا ⑩

وَالَّذِينَ يَأْتِيَنَّهُمْ مَكْرُهُمْ فَادُّوهُمَا فَإِنْ تَابَا
وَأَصْلَحَا فَأَعْرِضُوا عَنْهُمَا ⑪ إِنَّ اللَّهَ كَانَ
تَوَّابًا رَحِيمًا ⑫

إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ
السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِنْ قَرِيبٍ
فَأُولَئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ⑬ وَكَانَ اللَّهُ
عَلِيمًا حَكِيمًا ⑭

1. इस आयत नं० 16 ते अगली आयत नं० 17 च मारुफ (ना-पसंद) कम्मै दी स'जा निश्चत कीती गोदी ऐ। जनानी आस्तै एह जे खानदान दे चार गुआहें दी गुआही पर उसी घरें चा मनमरजी कन्नै निकलने शा रोकेआ जा ते मड़दें आस्तै एह जे सभ्यता सरबंधी रोकां ओहदे पर लाइयां जान। इस च कदें बी कुसै काम-बासना सरबंधी गुनाह दा जिकर नेई ऐ, की जे सूर: नूर च ऐसे गुनाहें दा बर्णन बी कीता गेदा ऐ, पर सूर:नूर च ब्यान कीती गोदी स'जा ते इस आयत च दस्सी गोदी स'जा आपस च बक्ख-बक्ख न। इस आस्तै सेही होंदा ऐ जे इस आयत च जिनें गल्लें दी स'जा ब्यान कीती गोदी ऐ, ओह दुराचार ते बुरे कम्मै सरबंधी गल्लां न।
2. इस आयत दा अर्थ एह ऐ जे जेकर दो मड़द ना-पसंद गल्ल करन तां प्रसंग शा साफ ऐ जे इस थाहरा पर अर्थ झगड़ा ते फसाद ऐ नां के व्यभिचार।

ते तोबा दा कबूल कीता जाना उनें लोकें आस्तै नेई ऐ जेहके पाप करदे गै जंदे न इत्थें तक जे जिसलै उंदे चा कुसै दे सामनै मौती दी घडी आई जंदी ऐ तां आखदा ऐ जे यकीनन हून में तोबा करी लैती ऐ ते नां उनें लोकें आस्तै ऐ जेहके इन्कार करने दी हालत च गै मरी जंदे न। एह लोक ऐसे न जे असें उंदे आस्तै दर्दनाक अजाब त्यार करी रक्खे दा ऐ ॥ 19 ॥

हे ईमानदारो! थुआड़े आस्तै एह जायज नेई जे तुस बदो-बदी जनानियें दे बारस बनी जाओ ते तुस उनेंगी इस मन्शा कनै बी नेई सताओ जे जे किश तुसें उनेंगी दिते दा ऐ, ओहदे चा किश खोही लैओ¹। हां! जेकर ओह जाहरा तौर पर बुरा कम्म करने आहलियां होन (तां उसदे बारे च हुकम पैहलें आई चुके दा ऐ) ते उंदे कनै अच्छा ब्यहार करो ते जेकर ओह तुसेंगी पसंद नेई होन तां (याद रक्खो जे एह) ममकन ऐ जे इक चीज तुसेंगी पसंद नेई होऐ ते अल्लाह ओहदे च मता-हारा बेहतरी दा समान पैदा करी देऐ ॥ 20 ॥

ते जेकर तुस इक लाड़ी दे बदलै दूई लाड़ी बदलना चाहो ते तुस उंदे चा कुसै इक गी माल दा इक ढेर देई चुके दे ओ तां बी उस माल चा किश बी बापस नेई लैओ। क्या तुस ओहदे पर झूठा दोश लाइयें ते जाहरी-बाहरी पाप राहें ओह माल लैगे ओ? ॥ 21 ॥

ते तुस कियां उस माल गी बापस लेई सकदे ओ जिसलै जे तुस आपस च मिली चुके दे

وَلَيْسَتِ الثَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ
السَّيِّئَاتِ حَتَّىٰ إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ
الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي تُبْتُ الْإِنَّ وَلَا الَّذِينَ
يَمُوتُونَ وَهُمْ كُفَّارٌ ۗ أُولَٰئِكَ أَعْتَدْنَا
لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرْتُبُوا
النِّسَاءَ كَرِهًا ۗ وَلَا تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذَهَبُوا
بِبَعْضِ مَا أَنْتُمْ مَوْحُونَ ۖ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ
بِفَاحِشَةٍ مُّبِينَةٍ ۗ وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ
فَإِنْ كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَىٰ أَنْ تَكْرَهُوا
شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا ۝

وَأِنْ أَرَدْتُمْ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ
زَوْجٍ ۖ وَأَنْتُمْ أَحِلَّهِنَّ قِطْرًا ۖ فَلَا تَأْخُذُوا
مِنْهُ سِيئًا ۗ تَأْخُذُوا وَنَهَيْتُمُوهَا ۖ وَأَنْتُمْ مَبِينًا ۝

وَكَيْفَ تَأْخُذُونَهُ وَقَدْ أَفْضَىٰ بَعْضُكُمْ

1. यानी पैहली आयत दे मताबक उनेंगी बाहर निकलने शा रोकी सकदे ओ। उंदा माल खुसने आस्तै ऐसा नेई करो ते एह अर्थ नेई जे जेकर व्यभिचार च ग्रसी दियां होन तां उंदा माल खुसी लैओ।

ओ ते ओह जनानियां तुंदे शा इक पक्का बा'यदा लेई चुकी दियां न ॥ 22 ॥

ते तुस उनें जनानियेँ चा कुसै कनै नकाह नेई करो, जिंदे कनै थुआड़े बब्ब-दादा नकाह करी चुके दे होन, पर जो पैहलें होई गेआ सै होई गेआ। एह (कम्म) यकीनन रोह चढ़ाने आहला हा ते (एह) बौहत बुरी रसम ही ॥ 23 ॥ (रुकू 3/14)

तुंदे आस्तै र्हाम कीतियां गेदियां न थुआड़ियां मामां, थुआड़ियां धीयां, थुआड़ियां भैनां, थुआड़ियां बूआं (फुफ्फेआं), थुआड़ियां मासियां, थुआड़ियां भतीजियां, थुआड़ियां भनेइयां, तुसेंगी दुदध पलैने आहलियां थुआड़ियां मामां, थुआड़ियां दुदधे च शरीक भैनां, थुआड़ियां सस्सां, ते थुआड़ियां मतरेई धीयां जो थुआड़ी उनें लाड़ियेँ चा होन, जिंदे कनै तुस संभोग करी चुके दे ओ ते उंदा थुआड़े घरेँ च लालन-पालन होंदा रेहा होऐ, पर जेकर तुसें उंदी मामेँ कनै संभोग नेई कीते दा होऐ तां तुसेंगी (उंदी कुड़ियेँ/धीरीं कनै नकाह करने च) कोई पाप नेई ते (इससै चाल्ली) थुआड़े उनें पुतरें दियां लाड़ियां जो थुआड़े बीरज चा होन (थुआड़े आस्तै र्हाम न) ते एह बी जे तुस दे'ऊं भैनें गी (लाड़ी दे रूपे च) इक्कै बेलै किट्टे करो। हां! जो बीती गेआ (सो बीती गेआ)। यकीनन अल्लाह बौहत बख्शाने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 24 ॥

إِلَىٰ بَعْضٍ وَأَخَذَ مِنْكُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا ۝

وَلَا تَنْكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُمْ مِنَ النِّسَاءِ
إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۗ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً
وَمَقْتًا ۗ وَسَاءَ سَبِيلًا ۝

حَرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتِكُمْ وَبَنَاتِكُمْ
وَأَخَوَاتِكُمْ وَعَمَّاتِكُمْ وَخَالَاتِكُمْ وَبَنَاتِ
الْأَخِ وَبَنَاتِ الْأَخْتِ وَأُمَّهَاتِكُمُ الَّتِي
أَرْضَعْنَكُمْ وَأَخَوَاتِكُمْ مِنَ الرِّضَاعَةِ
وَأُمَّهَاتِ نِسَائِكُمْ وَرَبَائِبِكُمُ الَّتِي فِي
حُجُورِكُمْ مِنْ نِسَائِكُمُ الَّتِي دَخَلْتُمْ
بِهِنَّ ۚ فَإِنْ لَمْ تَكُونُوا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا
جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۗ وَحَلَائِلَ أَبْنَائِكُمُ
الَّذِينَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ ۗ وَأَنْ تَجْمَعُوا بَيْنَ
الْأَخْتَيْنِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ
عَفُورًا رَحِيمًا ۝

ते (पैहलें गै) ब्दोई दियां जनानियां बी (थुआड़े आस्तै रूहाम न) सवाए उंनं जनानियें दे जेहकियां (दासियें दे रूपै च कैद होइयै) थुआड़े कब्जे च¹ आई जान। अल्लाह दा एह हुकम थुआड़े आस्तै जरूरी (फर्ज़) ऐ ते जेहकियां इंदे (उप्पर दस्सी गेदी जनानियें दे) अलावा होन, ओह थुआड़े आस्तै (नकाह दे बा'द) लहाल (जायज) न। (इस चाल्ली) जे तुस अपने धन (मैहर) कनै उंनेगी हासल करो, शर्त एह ऐ जे तुस ब्याह करने आहले होओ, जनाह² करने आहले नेई होओ। फही (एह शर्त बी ऐ जे) जेकर तुसें उंदे शा लाह लेदा होऐ तां तुस उंनेगी उंदे निरधारत मैहर देई देओ ते मैहर निरधारत होई जाने दे बा'द जिस (कमी-बेशी) पर तुस आपस च समझौता करी लैओ तां उसदे बाँरे च तुसें गी कोई पाप नेई लगग। अल्लाह यकीनन बौहत जानने आहला (ते) हिक्मत आहला ऐ ॥ 25 ॥

ते तुंदे चा जो शख्स अजाद मोमिन जानानी कनै ब्याह करने दी समर्थ बिल्कुल नेई रखदा होऐ तां ओह थुआड़े कब्जे च आई दी दासियें यानी थुआड़ी मोमिन दासियें चा कुसै कनै नकाह करी लै ते अल्लाह थुआड़े ईमान गी सारे शा बद्ध जानदा ऐ। तुस इक-दूए कनै (सरबंध रखदे) ओ। इस लेई उंदे कनै उंदे मालकें दी आज्ञा कनै ब्याह करो ते उंनेगी उंदे मैहर नियम (दस्तूर) मताबक देई देओ, जिसलै जे ओह पवितर आचरण³ आहलियां

وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ كِتَابَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَأَجَلٌ لَّكُمْ مِمَّا وَرَاءَ ذَلِكُمْ أَنْ تَبْتَغُوا بِأَمْوَالِكُمْ مُحْصِنِينَ غَيْرَ مُسْفِحِينَ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهِ مِنْهُنَّ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ فَرِيضَةً وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا تَرَضَيْتُمْ بِهِ مِنْ بَعْدِ الْفَرِيضَةِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا أَنْ يَنْكِحَ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ فَمِنْ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِنْ فِتْيَانِكُمُ الْمُؤْمِنَاتِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَيْمَانِكُمْ بِبَعْضِكُمْ مِنْ بَعْضٍ فَأَنْكِحُوهُنَّ بِأَذْنِ أَهْلِيهِنَّ وَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ

- मतलब एह ऐ जे जिनें जनानियें कनै नकाह जायज ऐ ओह ते नकाह दे बा'द लहाल (जायज) गै होडन, पर पैहली सूची आहली जनानियां नकाह दे कनै बी लहाल (जायज) नेई होई सकदियां। हा! युद्ध च बंदी बनाइयां गेदियां जनानियां नकाह कनै लहाल (जायज) होई सकदियां न, जिसलै जे उंनेगी कोई अजाद नेई कराउ तां फही उंदे शा अजाजत लैने दी लोड़ नेई। कौमी इखलाक (शिश्यचार) गी ठीक रखने आस्तै सरकार ऐसी बंदी जनानियें दा संरक्षक नियुक्त करिये उंदा नकाह करी सकदी ऐ।
- इसदा एह अर्थ नेई जे मोमिन जनाह करग, बल्के मतलब एह ऐ जे अस मोमिन शा इयै मेद करने आं जे ओह ब्याह करदे बेलें पूरी चाल्ली संयम गी ध्यान च रखग ते जनाह दे लागे बी नेई जाग।
- इस दा एह अर्थ नेई जे जेकर ओह नेक चाल-चलन आहलियां होन तां उंदे मैहर देओ, बरना नेई देओ, बल्के अर्थ एह ऐ जे ऐसी गै दासियें कनै ब्याह करो जिंदा पवितर होना तुंदी नजरें च सिद्ध होई चुके दा होऐ ते फही उंदे मैहर अजाद जनानियें आंगर देई देओ।

होन नां के जनाह करने आहलियां जां चोरी-छपै यार बनाने आहलियां होन, पही जिसलै ओह ब्याह दे ब'नन च ब'ज्जी जान ते पही बी ओह कोई बुरा कम्म करी बौहन, तां उंदी स'जा अजाद जनानियें शा अदधी होग। एह (अजाजत) ओहदे आस्तै ए जे तुंदे चा पाप शा डरदा होऐ ते थुआड़ा सबर करना थुआड़े आस्तै बेहतर ऐ ते अल्लाह बौहत बख्शने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 26 ॥ (रुकू 4/1)

अल्लाह चांहदा ऐ जे जेहके लोक तुंदे शा पैहलें होई चुके दे न उंदे रीती-रवाज (तरीके) थुआड़े आस्तै ब्यान करै ते (उंदे बारै) थुआड़ी अगुआई करै ते तुंदे पर देआ करै ते अल्लाह बौहत जानने आहला (ते) हिक्मत आहला ऐ ॥ 27 ॥

ते अल्लाह ते एह चांहदा ऐ जे तुंदे पर किरपा करै, पर जो लोक बिशे-बासनं दा अनुसरण करदे न ओह चांहदे न जे तुस (बदी/दुराचार पासै) बिल्कुल झुकी जाओ ॥ 28 ॥

अल्लाह चांहदा ऐ जे थुआड़ा बोझ तुंदे पर घट्ट करै ते मनुक्ख ते कमजोर पैदा कीता गेदा ऐ ॥ 29 ॥

हे ईमानदारो! तुस अपने माल नजैज तरीके कनै आपस च नेई खाओ। हां! एह जायज गल्ल होग जे (माल दा लैना) आपसी रजामंदी कनै बपार राहें होऐ ते तुस अपने आपै गी कतल नेई करो! अल्लाह यकीनन तुंदे पर बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 30 ॥

مُحْصَنَاتٍ غَيْرٍ مَّسْفُوحَاتٍ وَلَا مُتَّخَذَاتٍ
أَحْدَانٍ ۚ فَإِذَا أَحْصَيْتَ فَإِنَّ أَتَيْنَ
بِقَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى
الْمُحْصَنَاتِ مِنَ الْعَذَابِ ۗ ذَلِكَ لِمَنْ حَسِيَ
الْعَتَىٰ مِنْكُمْ ۗ وَأَنْ تَصِيرُوا خَيْرٌ
لَّكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ الَّذِي
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوبَ عَلَيْكُمْ ۗ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

وَاللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيدُ
الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الشَّهْوَاتِ أَنْ تَمِيلُوا
مَيْلًا عَظِيمًا ۝

يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُخَفِّفَ عَنْكُمْ وَخُلِقَ
الْإِنْسَانُ ضَعِيفًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ
بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً
عَنْ تَرَاضٍ مِنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوا
أَنْفُسَكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ۝

1. दासियें कनै ब्याह करना सिर्फ मजबूरी दी हालत च जायज ऐ की जे ओह दूई कौम ते दूर धर्म कनै सरबंध रखदियां न। बेहतर ते इय्यें ऐ जे अपनी कौम ते अपने धर्म कनै गै सरबंध रक्खने आहली अजाद जनानियें कनै ब्याह कीता जा।

ते जो (शख्स) बी एह (यानी दूए दा माल खाना) ज्यादती ते जुलम दी आदत दी ब'जा कन्नै करग उसी अस जरूर अग्गी च सुटगे ते एह गल्ल अल्लाह आस्तै बौह्त असान ऐ ॥ 31 ॥

जिनं गल्लें शा तुसेंगी रोकेआ जंदा ऐ जेकर तुस उंदे चा बड्डी-बड्डी गल्लें शा दूर र'वो तां अस तुंदे चा तुंदियां कमियां (यानी ऐब) दूर करी देगे ते तुसेंगी सम्मान आहले थाहें च दाखल करगे ॥ 32 ॥

अल्लाह नै तुंदे चा किश लोकें गी दूए किश लोकें पर (जिस गल्ला कारण) प्रधानता देई रक्खी दी ऐ उसदी कामना नेई करो। जे किश मड्डें कमाए दा ऐ ओहदे चा उंदा हिस्सा ऐ ते जे किश जनानियें कमाए दा ऐ उस चा उंदा हिस्सा ऐ ते अल्लाह शा गै उसदी किरपा दा हिस्सा मंगो। अल्लाह हर इक चीजा गी यकीनन बौह्त जानने आह्ला ऐ ॥ 33 ॥

ते असें हर इक (मरने आहले शख्स) द्वारा छोड़े दे माल बारै बारस निरधारत करी दिते दे न, ओह (बारस) मां-प्योऽ ते नजदीकी रिश्तेदार न, ते ओह (खसम जां त्रीमतां) बी जिंदे कन्नै तुस पक्के करार¹ करी चुके दे ओ। इस आस्तै उनेंगी बी उंदे निश्चत हिस्से देई देओ। ते अल्लाह हर इक गल्ला पर यकीनन नगरान ऐ ॥ 34 ॥ (रुकू 5/2)

मड्डे उस प्रधानता कारण जनानियें दे नगरान न जो अल्लाह नै उंदे चा किश लोकें गी दूए किश लोकें पर दित्ती दी ऐ ते इस करी बी

وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ عُذْوًا وَآثًا وَظُلْمًا فَسَوْفَ نُصَلِّيْهِ نَارًا ۗ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿٣١﴾

إِنْ تَجَنَّبُوا كِبَائِرَ مَا تَهْتُونَ عَنْهُ نُكْفِرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُدْخَلًا كَرِيمًا ﴿٣٢﴾

وَلَا تَتَمَتَّوْا مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ ۗ لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا ۗ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبْنَ ۗ وَسَأَلُوا اللَّهَ مِنْ فَضْلِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٣٣﴾

وَلِكُلِّ جَعَلْنَا مَوَالِيَهَا تَرَكَ الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبُونَ ۗ وَالَّذِينَ عَقَدَتْ أَيْمَانُكُمْ فَآتُوهُمْ نَصِيْبَهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ﴿٣٤﴾

الرِّجَالُ قَوْمُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ ۗ وَبِمَا أَنْفَقُوا

1. इस दा अर्थ खसम जां त्रीमतां न ते ओह पवित्तर कुर्आन दे हुकम मताबक बारस न ते हूँ तक बारस गै मन्ने जा करदे न।

जे ओह अपने मालें (धन-दौलत) चा (जनानियें पर) खर्च करी चुके दे न। इस आस्तै नेक जनानियां ओह न जो आज्ञा पालन करने आहलियां होन ते अल्लाह दी मदद कन्नै गुप्त गल्लें दी पड़दादारी बनाई रखवने आहलियां होन, पर जिंदे शा तुसेंगी ना-फरमानी¹ दा भै होऐ तां उनेंगी समझाओ। नसीहत करो ते उनेंगी उंदे बिस्तरें च इक्कले छोड़ी देओ, पही (बी नेई समझन तां) उनेंगी मारो। पही जेकर ओह थुआड़ी आज्ञा दा पालन करन लगी पौन तां उंदे खलाफ कोई ब्हान्ना नेई दूंडो। अल्लाह यकीनन बौहत बुलंद (ते) सारें शा बद्दा ऐ ॥ 35 ॥

ते जेकर तुसेंगी उनें दौनीं (यानी लाड़ी-मरहाजै) दी आपसी (तल्लकाती) बगाड़ होई जाने दा डर होऐ तां इक पैंच उस (यानी मरहाजै) दे रिश्तेदारें चा ते इक पैंच उस (यानी लाड़ी) दे रिश्तेदारें चा नियुक्त करो, पही जेकर ओह दमें (पैंच) सु'ला कराना चाहन तां अल्लाह उनें दौनीं (यानी लाड़ी-मरहाजै) च अनुकूलता पैदा करी देग। अल्लाह यकीनन बौहत जानने आहला (ते) खबरदार ऐ ॥ 36 ॥

ते तुस अल्लाह दी अबादत करो ते कुसै चीजै गी उसदा शरीक नेई बनाओ ते मां-प्योऽ ते नजदीकी रिश्तेदारें, जतीमें, गरीबें, गुआंठी रिश्तेदारें, (बे-तल्लक) (छड़े बाकफ) गुआंठियें, लागै रौहने आहले लोकें, मसाफरें ते जिंदे तुस मालक बनी चुके दे ओ, उंदे सारें पर बी

مِنْ أَمْوَالِهِمْ^ط فَالْصَّالِحَاتُ فَنُتِحَتْ
حَفِظْتُمْ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ^ط
وَالَّتِي تَخَافُونَ نُسُوزَهُنَّ فَعِظُوهُنَّ^ط
وَاهْجُرُوهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاصْرَبُوهُنَّ^ط
فَإِنْ أَعْطَاكُمْ فَلَا تَبْغُوا عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا^ط
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا كَثِيرًا ﴿٣٥﴾

وَإِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوا حَكَمًا
مِّنْ أَهْلِهِ وَحَكَمًا مِّنْ أَهْلِهَا^ط
إِنْ يُرِيدَا إِصْلَاحًا يُوَفِّقِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا^ط
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا خَبِيرًا ﴿٣٦﴾

وَأَعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا
وَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَىٰ
وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ
وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنبِ

1. इत्थें ना-फरमानी दा अर्थ जनाह नेई, बल्के सधारण बुराइयां न जिंदे कारण मनुक्ख अपने गुआंठियें च अपमानत/ बेजत होई जंदा ऐ। इस आस्तै ऐसी स'जा निश्चत कीती जेहदे करी जनानी महल्ले च खुल्ली-डुल्ली नेई फिरी सकै। हा! जेकर मड़द अत्याचार शा कम्म लै तां जनानी गी काजी/जज कश शकैत करने दी अजाजत ऐ।

स्हान (परोपकार) करो ते जो घमंडी ते इतराने आहले होन, उनेंगी अल्लाह कदें बी पसंद नेई करदा ॥ 37 ॥

जो आपू (बी) कंजूसी करदे न ते दूए लोकें गी बी कंजूसी दी प्रेरणा दिंदे न ते जे किश अल्लाह नै अपनी किरपा कनै उनेंगी प्रदान कीते दा ऐ उसी छपालदे न ते असें मुन्करें आस्तै अपमान-जनक अजाब तयार करी रखे दा ऐ ॥ 38 ॥

ते जेहके लोक अपना माल लोकें गी दस्सने आस्तै खर्च करदे न ते ओह नां ते अल्लाह पर ईमान रखदे न ते नां गै पिच्छें औने (आखरत) आहले दिनै पर। (उंदा अन्जाम बुरा होग) ते जिस शख्स दा साथी शतान होऐ (ओह चेता रक्खै जे) ओह बौहत बुरा साथी ऐ ॥ 39 ॥

ते उंदे पर केह (कैहर टुट्टी पौंदा) हा जेकर ओह अल्लाह पर ते पिच्छें औने (आखरत) आहले दिनै पर ईमान लेई औंदे ते जे (किश) अल्लाह नै उनेंगी दिते दा ऐ ओहदे चा (अल्लाह दे रस्ते पर) खर्च करदे, ते अल्लाह उंदे बारै खूब जानकारी रखदा ऐ ॥ 40 ॥

अल्लाह कदें कुसै पर तिल-परमान बी जुलम नेई करग ते जेकर (कुसै दी) कोई नेकी होग तां उसी बधाग ते अपने पासेआ (बी) बौहत बड़डा अजर/ बदला देग ॥ 41 ॥

उस बेलै उंदी केह हालत होग जिसलै अस हर-इक जमात चा इक गुआह लेई औगे ते तुगी इनें लोकें बारै गुआह दे रूपै च लेई औगे ॥ 42 ॥

وَابْنِ السَّبِيلِ ۖ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُورًا ۝

الَّذِينَ يَبْخَلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبَخْلِ وَيَكْتُمُونَ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۗ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا ۝

وَالَّذِينَ يُتَّفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ ۗ وَمَنْ يَكُنِ الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا فَسَاءَ قَرِينًا ۝

وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ آمَنُوا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللَّهُ ۖ وَكَانَ اللَّهُ بِهِمْ عَلِيمًا ۝

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَإِنْ تَكَ حَسَنَةً يَّضْعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَدُنْهُ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَى هَؤُلَاءِ شَهِيدًا ۝

उस रोज जिनें इन्कार कीते दा ऐ ते इस रसूल दी ना-फरमानी कीती दी ऐ, ओह चाहइन जे काश! उनेंगी धरती च दब्बी दिता जंदा। उस रोज ओह अल्लाह शा कोई गल्ल छपाली नेई सकडन ॥ 43 ॥ (रुकू 6/3)

हे ईमानदारो! जिन्ना चिर तुस होशै च नेई होओ उन्ना चिर नमाज़ दे लागै नेई जाओ यानी उस बेले तगर जे जो कुश तुस गलाऽ करदे ओ उसी समझन नेई लगे ते नां गै अपवित्तर होने दी हालत च (नमाज़ पढो) जिन्ना चिर जे शनान नेई करी लैओ, सिवाए इसदे जे तुस रस्तै चला करदे होओ ते जेकर तुस बमार ओ जां सफर च ओ (ते तुस अपवित्तर अवस्था च ओ तां तयम्मूम करी लै करो) जां तुंदे चा कोई सचेता फिरियै आया होऐ (ते पानी नेई मिलै) जां तुस जनानियें कनै हम-बिस्तरी करी चुके दे होओ (यानी तुस भिट्टे ओ) ते तुसंगी पानी नेई मिली सकै, तां पवित्तर मिट्टी कनै तयम्मूम¹ करो, पही (तुस ओह मिट्टी आहले हत्थ) अपने मूहें ते हत्थें पर मलो। अल्लाह यकीनन बौहत बख्शन आहला (ते) माफ करने आहला ऐ ॥ 44 ॥

क्या तुगी उनें लोकें दा हाल नेई पता जिनेंगी (अल्लाह दी) कताब चा किश हिस्सा दिता गेआ हा। ओह गुमराही गी अपनाऽ करदे न ते चांहदे न जे तुस बी असल रस्ते थमां भटकी जाओ ॥ 45 ॥

ते अल्लाह थुआड़े बैरियें गी (थुआड़े शा) बद्ध जानदा ऐ ते अल्लाह दी दोस्ती गै

يَوْمَئِذٍ يَوْمَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصُوا
الرَّسُولَ لَوْ سَمَوِ بِهِمُ الْأَرْضُ
وَلَا يَكْتُمُونَ اللَّهَ حَدِيثًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا الصَّلَاةَ
وَأَنْتُمْ سُكَارَىٰ حَتَّىٰ تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ
وَلَا جُنُبًا إِلَّا عَابِرِي سَبِيلٍ حَتَّىٰ
تَغْتَسِلُوا ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ
سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُم مِّنَ الْغَايِبِ أَوْ
لَسْتُمْ مِنَ النِّسَاءِ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا
صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ
وَأَيْدِيكُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُورًا غَفُورًا ۝

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ
الْكِتَابِ يَشْتَرُونَ الضَّلَاةَ وَيُرِيدُونَ
أَنْ تَضِلُّوا السَّبِيلَ ۝

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَابِكُمْ ۖ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ

1. नमाज़ बगैरा उपासना आस्तै पानी कनै बुजु कीता जंदा ऐ। तयम्मूम बुजु दे बदले च ऐ। सुच्ची मिट्टी पर दमैं हत्थ दो बार मारिये पही उनेंगी मूहें ते हत्थें पर मलने दी क्रिया दा नांऽ तयम्मूम ऐ।

काफी ऐ ते अल्लाह मददगार होने दे स्हाबें बी काफी ऐ ॥ 46 ॥

وَلِيًّا كَأَن يَأْتِيَنَّكَ مِنَ اللَّهِ نَصِيرًا ﴿٤٦﴾

जेहके लोक यहूदी न उंदे चा किश (अल्लाह दी) गल्लें गी उंदी ज'भें थमां अदली-बदली दिंदे न ते गलांदे न जे असें सुनेआ, पर इसदे बावजूद बी असें ना-फरमानी कीती ते (गलांदे न जे) तू सादियां गल्लां सुन! (खुदा दा कलाम) तुगी कदें बी नेई सुनाया जा! ते तू सादा लिहाज कर। एह गल्ल अपनी जबानी झूठ² बोलदे होई ते धर्म पर व्यंग करदे होई गलांदे न ते जेकर ओह इय्यां गलांदे जे असें सुनेआ ते असें मन्नी लैता ते (गलांदे जे) सुन! ते सादे पर (रैहमत दी) नजर कर! तां एह उंदे आस्तै बेहतर ते ज्यादा दरुस्ती (सुधार) दा मूजब होंदा, पर ओह एहदे शा नां सिर्फ बंचत रेह बल्के अल्लाह नै उंदे इन्कार कारण उंदे पर लानत कीती। इस आस्तै ओह ईमान नेई³ आहनदे ॥ 47 ॥

مِنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَأَسْمَعُ غَيْرَ مَسْمُوعٍ وَرَاعِنَا لَيًّا بِأَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِي الدِّينِ ۗ وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَأَسْمَعُ وَانظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَقْوَمًا ۗ وَلَكِن لَّعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٤٧﴾

हे लोको! जिनेगी (अल्लाह दी) कताब दित्ती गेई ही, इस कताबा पर बी जिसी असें हून नाज़ल कीता ऐ ते जो इस वाणी दी पुश्टी करने आहली ऐ जेहकी थुआड़े कश पैहलें शा मजूद ऐ उस (बेले) शा पैहलें ईमान ल्याओ जिसलै जे अस तुंदे चा बड्डे-बड्डे लोकें गी हलाक करी देचै ते उनेंगी उंदी

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا الْكِتَابَ آمَنُوا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّن قَبْلُ ۚ إِنَّ تَطْمَسُّ وَجُوهًا فَتَرَدَّهَا عَلَىٰ أَذْبَارِهَا أَوْ لَنَعَنَّهُمْ كَمَا لَعَنَّا أَصْحَابَ السَّبْتِ ۗ

1. मूल शब्द 'गौरा मुस्मइन' दे दो अर्थ न-(क) तू बुरी गल्ल नेई सुनै। (ख) तू कोई शुभ समाचार नेई सुनै, तू ऐसी गल्ल सुनै जो बरदाशत नेई होई सकै ते एह जे तू बोला होई जाए।
2. यानी मूहा ते 'रायना'- 'सादा लिहाज कर' गलांदे न, पर उंदे दिल इस गल्ला कनै सैहमत नेई होंदे। ओह अपने मनैं च हजरत मुहम्मद मुस्ताफा सल्ललअम गी हीन शख्स समझदे न ते सोचदे न जे असेंगी एहदे शा कोई लाह जां सुबधा नेई चाही दी।
3. अरबी दे मूल शब्द 'कलील' दा अर्थ ऐ - बौहत थोड़ा, पर मुहावरे च इस दा अर्थ ऐ नांस-मातर, रंच-मातर बी नेई, बिल्कुल नेई, आखो ओह बिल्कुल ईमान नेई आहनदे।

पिट्ठीं दे भार फेरी देचै¹ जां जिस चाल्ली असें सब्त आहलें पर लानत² कीती ही इसै चाल्ली उंदे पर बी लानत बर्हाचै ते अल्लाह दी गल्ल (जरूर पूरी) होइयै रौहग ॥ 48 ॥

अल्लाह (इस गल्ला गी) कर्दे बी माफ नेई करग जे कुसै गी ओहदा शरीक बनाया जा, पर जेहका पाप एहदे शा निक्का होग ओह उसी जेहदे आस्तै चाहग माफ करी देग ते जिसनै अल्लाह दे कनै कुसै गी शरीक बनाया होऐ तां (समझो जे) उसनै (बौहत) बड्डी बुराई (दी गल्ल) बनाई ॥ 49 ॥

क्या तुगी उनें लोकें दा हाल नेई सेही जेहके अपने आपे गी पवित्तर गलांदे हे (हालांके एह उंदा हक़ नेई) बल्के अल्लाह जिसी पसंद करदा ऐ उसी पवित्तर ठरहांदा ऐ ते उंदे पर खजूरें दी गुली दी रेखा दे बराबर बी जुलम नेई कीता जाग ॥ 50 ॥

दिक्ख! ओह किस चाल्ली अल्लाह पर झूठ घड़ा करदे न ते एह (झूठ घड़ना) बौहत बड्डा ते खु'ल्ला-डु'ल्ला गुनाह ऐ ॥ 51 ॥ (रुकू 7/4)

क्या तुगी उनें लोकें दा हाल नेई सेही जिनें गी (अल्लाह दी) कताब चा किश हिस्सा दिता गेआ हा जे ओह ब्यर्थ³ गल्लें ते हद्द शा बधने आहलें पर ईमान आहनदे न ते इन्कार करने आहलें दे बाँरे गलांदे न जे एह लोक मोमिनें शा ज्यादा हदायतयाफता न ॥ 52 ॥

وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ۝

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا ۝

الْمَتَرِ إِلَى الَّذِينَ يُزَكُّونَ أَنفُسَهُمْ ۗ بَلِ اللَّهُ يُزَكِّي مَن يَشَاءُ وَلَا يَظْلُمُونَ فَتِيلًا ۝

أَنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۗ وَكَفَىٰ بِهِ إِثْمًا مُّبِينًا ۝

الْمَتَرِ إِلَى الَّذِينَ أَوْتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُؤْمِنُونَ بِالْحَبِيبِ وَالطَّاغُوتِ وَيَقُولُونَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا هَؤُلَاءِ أَهْلَىٰ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا سَبِيلًا ۝

1. यानी उनें गी रूहाई देचै जेहदे नतीजे च उंदा सारा जोश ठंडा पेई जा।
2. इस लानत दे ब्यारे आस्तै दिक्खो सूर: आराफ, आयत 164-167 तक।
3. मूल शब्द 'जिब्त' दा अर्थ ऐसी चीज ऐ जिसदा कोई लाह नेई होऐ। (अक़ब)

एह ओह लोक न जिंदे पर अल्लाह नै फटकार बर्हाई दी ऐ ते अल्लाह जेहदे पर फटकार बर्हांदा ऐ तूं कर्दे बी कुसै गी उस दा मदादी नेई पागा (दिखदा) ॥ 53 ॥

क्या इंदा क्हुमत च कोई हिस्सा है? तां ते ओह लोकें गी खजूरे दी गुली दे सुराखैं (उप्परली लकीरें) बराबर बी हिस्सा नेई देडन ॥ 54 ॥

जां (केह) जे किश अल्लाह नै लोकें गी अपनी किरपा कन्नै प्रदान कीते दा ऐ ओह ओहदे अधार पर उंदे कन्नै ईरखा-द्वेश करदे न? (जेकर ऐसा ऐ) तां असें इब्राहीम दी संतान गी बी कताब ते हिक्मत प्रदान कीती ही ते असें उनेंगी इक बड्डा राज प्रदान कीता हा ॥ 55 ॥

फही उंदे चा किश लोक ते उस (नमीं कताबा) पर ईमान लेई आए ते किश उंदे चा उस शा रुकी गे ते नरक ताप दी द्रिस्टी कन्नै बौहत ज्यादा ऐ ॥ 56 ॥

जिनें लोकें साढ़ी आयतें दा इन्कार कीता ऐ अस तौले (गै) उनेंगी अगगी च सुटगे जदूं कर्दे फही उंदियां खल्लां गली जाडन, अस उनेंगी उंदे अलावा होर खल्लां बदलियै देई देगे (ते अस एह) इस आस्तै (करगे) तां जे ओह अजाब (दा मजा) चक्खन, अल्लाह यकीनन गालिब (ते) हिक्मत आह्ला ऐ ॥ 57 ॥

ते जेहके लोक ईमान ल्याए दे न ते उनें शुभ कर्म कीते दे न, अस उनेंगी ऐसे बागें च दाखल करगे, जिंदे हेर नैहरां बगदियां न! ओह म्हेशां उंदे च गै रौहडन। उंदे आस्तै उंदे

أُولَئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ وَمَنْ يَلْعَنِ اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ نَصِيرًا ﴿٥٣﴾

أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِنَ الْمُلْكِ فَإِذَا لَا يُؤْتُونَ النَّاسَ نَصِيرًا ﴿٥٤﴾

أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلَى مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۗ فَقَدْ آتَيْنَا آلَ إِبْرَاهِيمَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَهُمْ مُلْكًا عَظِيمًا ﴿٥٥﴾

فَعَنَّهُمْ مَنْ آمَنَ بِهِ وَمَنْهُمْ مَنْ صَدَّ عَنْهُ ۗ وَكَفَى بِجَهَنَّمَ سَعِيرًا ﴿٥٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصَلِّيهِمْ نَارًا ۗ كَلَّمَآ نَصَبَتْ جُلُودُهُمْ بَدَلَهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿٥٧﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۗ لَهُمْ فِيهَا

च पवित्रर जोड़े होडन ते अस उनेंगी घनी छामां रौहने आस्तै दाखल करगे ॥ 58 ॥

أَرْوَاحٌ مُّطَهَّرَةٌ ۖ وَنُدَّخِلُهُمْ ظِلًّا
ظَلِيلًا ۝

अल्लाह तुसेंगी यकीनन (इस गल्ला दा) हुकम दिंदा ऐ जे तुस अमानतां उंदे हकदारें दे सपुर्द करो ते (एह जे) तुस लोकें बशकार फैसला करो तां न्यां कनै फैसला करो। अल्लाह जिस गल्ला दी तुसेंगी नसीहत दिंदा ऐ ओह यकीनन बौहत (गै) अच्छी ऐ। अल्लाह यकीनन बौहत सुनने आहला (ते) दिक्खने आहला ऐ ॥ 59 ॥

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ
أَهْلِهَا ۖ وَإِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ أَنْ
تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ ۗ إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ
بِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا بَصِيرًا ۝

हे ईमानदारो! अल्लाह दी आज्ञा दा पालन करो ते रसूल दे ते अपने शासकें दी बी आज्ञा दा पालन करो। फही जेकर थुआड़ा उंदे कनै कदें कोई मत-भेद होई जा तां जेकर तुस अल्लाह ते पिच्छें औने आहले दिनै (आखरत) पर ईमान रखदे ओ तां उसी अल्लाह ते रसूल पासै परताई देओ²। एह गल्ल बौहत बेहतर ते अन्जाम दे लिहाजें बौहत अच्छी ऐ ॥ 60 ॥ (रुकू 8/5)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا
الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَإِن
تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ
وَالرَّسُولِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ ۗ ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۝

क्या तोह उनें लोकें दा हाल नेई दिक्खेआ जेहके दा'चा करदे हे जे जो (किश) तेरे पासै नाजल कीता गेदा ऐ ते (इस दे अलावा) जो तेरे शा पैहलें नाजल कीता गेआ हा, ओह ओहदे पर ईमान लेई आए न ते उसदे बावजूद जे उनें गी हुकम दिता गेआ हा जे सिरफिरे³

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا
بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِنْ قَبْلِكَ
يُرِيدُونَ أَنْ يُبَدِّلُوا كَلِمَاتِ اللَّهِ لِيُحْدِثُوا
أَحَادِيثًا يُبْتِغُونَ فِيهَا مَالًا وَمَا يَكُونُ لَهُمْ
عِلْمٌ بِمَا يُبَدِّلُونَ ۗ

1. इस थाहरा पर राज-प्रबंध दा बर्णन होआ करदा ऐ। इस लेई आयत दा अर्थ एह ऐ जे जिसलै तुस राज-कर्मचारियें दा चुनाऽ करदे होदे ओ तां काबलीयत गी सामनै रक्खा करो ते पक्खपात शा कम्म नेई लैओ। आयत दे दूए हिस्से च चुनोए दे कर्मचारियें गी दस्सेआ गेदा ऐ जे हे राज कर्मचारियो जिसलै तुस चुनोई जाओ तां तुस म्हेशां न्यां गी सामनै रक्खा करो ते पक्खपात शा म्हेशां बचा कर करो, भाए थुआड़े कश औने आहलें चा कोई थुआड़े अपने पक्ख दा होऐ, जां दूए पक्ख दा गै की नेई होऐ।
2. यानी उंदे हुकमैं मताबक मसले गी सुलझाओ।
3. एह आयत ऐसे मुनाफिकें दे सरबंथै च ऐ जो हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम शा फैसला कराने दी बजाऽ दूए लोकें शा फैसला कराना बेहतर समझदे हे।

शा फैसला नेई करान ते उंदे आखे पर नेई चलन। ओह चांहदे न जे उंदे शा गै फैसला करान, की जे शतान चांहदा ऐ जे उनेंगी घोर (खतरनाक) गुमराही च पाई देऐ ॥ 61 ॥

ते जिसलै उनेंगी गलाया जंदा ऐ जे जे-किश अल्लाह नै उतारे दा ऐ ओहदे आहलै पासै ते रसूल आहलै पासै आओ तां तू मुनाफिकेँ गी दिक्खना ऐं जे ओह तेरे शा भलेआं पिच्छें हटी जंदे न ॥ 62 ॥

फी (एह) की (होंदा ऐ जे) जिसलै उंदे पर उंदे कर्म दे नतीजे च कोई मसीबत आई पाँदी ऐ तां ओह (घबराई जंदे न ते) तेरे कश अल्लाह दियां कसमां खंदे होई आँदे न जे असें ते सिर्फ नेक सलूक ते सु'ला कराने दा इरादा कीता हा ॥ 63 ॥

एह ओह लोक न जे जे (किश) उंदे दिलें च ऐ अल्लाह उसी (खूब) जानदा ऐ, इस आस्तै तू उंदे कनै उलझने शा बचदा रौह ते उनेंगी नसीहत कर ते उंदे बारे च प्रभाव पाने आहली गल्ल कर ॥ 64 ॥

ते असें कोई रसूल बी इस मकसद दे बगैर नेई भेजेआ जे अल्लाह दे हुकम कनै उसदी आज्ञा दा पालन कीता जा ते जिसलै उनें अपनी जाणें पर जुलम कीता हा तां जेकर (उसलै) ओह तेरे कश आई जंदे ते अल्लाह शा माफी मंगदे ते रसूल बी उंदे लेई माफ करी देने दी प्रार्थना करदा तां ओह जरूर अल्लाह गी बौहत माफ करने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला पांदे ॥ 65 ॥

इस आस्तै तेरे रब्ब दी सघंद ऐ जे ओह कदें बी ईमानदार नेई होई सकदे जिन्ना चिर जे

وَقَدْ أَمَرُوا أَنْ يَكْفُرُوا بِهِ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا ۝

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ رَأَيْتَ الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنْكَ صُدُودًا ۝

فَكَيْفَ إِذَا أَصَابَتْهُمُ مُصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ تُمْجَأُوا وَكَيْفَ يُحْلِقُونَ ۝ بِاللَّهِ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا إِحْسَانًا وَتَوْفِيقًا ۝

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ ۚ فَأَعْرَضَ عَنْهُمْ وَعَظَّمَهُمْ وَقَالَ لَهُمْ فِىٰ أَنفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا ۝

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَّحِيمًا ۝

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ

ओह हर उस गल्ला च जेहदे बाँरे उंदे च झगडा होई जा, तुगी फैसला करने आहला नेई बनान, ते फही जो फैसला तू करँ ओहदे शा अपने मने च कुसै चाल्ली दी तंगी (दुख) नेई समझन ते पूरी चाल्ली फरमांबरदार नेई बनी जान ॥ 66 ॥

فِيمَا سَجَرَ بَيْنَهُمْ لَمَّا لَاحِدُوا فِي أَنْفُسِهِمْ
حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيَسْلُمُوا تَسْلِيمًا ﴿٦٦﴾

ते जेकर अस उनेंगी एह हुकम दिंदे जे तुस अपने आपै गी कतल¹ करी देओ जां अपने घरें दा निकली² जाओ तां उंदे चा किश गै लोके गी छोड़ियै दूए ऐसा नेई करदे ते जेकर ओह उस कम्मै गी करी लेंदे जेहदा उनेंगी हुकम दिता जंदा ऐ तां उंदे आसतै बेहतर ते ज्यादा द्रिढ़ता दा साधन होंदा ॥ 67 ॥

وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنْ اقْتُلُوا
أَنْفُسَكُمْ أَوْ اخْرَجُوا مِنْ دِيَارِكُمْ مَا
فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِنْهُمْ ۗ وَلَوْ أَنَّهُمْ
فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ
وَإِنَّهُمْ لَشَائِقَاتٌ ﴿٦٧﴾

ते इस सूरत च अस उनेंगी यकीनन अपने पासेआ बौहत बड़डा बदला दिंदे ॥ 68 ॥

وَإِذْ أَلَّامْتَهُمْ مِّنْ لَّدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٦٨﴾

ते (इसदे अलावा) अस उनेंगी जरूर सिद्धा रस्ता दसदे ॥ 69 ॥

وَلَهَدَيْنَاهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿٦٩﴾

ते जेहके (लोक बी) अल्लाह ते उसदे रसूल दी आज्ञा दा पालन करडन ओह उनें लोके च शामिल होडन³ जिनेंगी अल्लाह नै इनाम दिता ऐ यानी नबी, सिद्दीक⁴, शहीद ते सालेह (लोके च शामिल होडन) ते एह लोक (बौहत गै) अच्छे साथी न ॥ 70 ॥

وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ
الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ
وَالصّٰدِقِينَ وَالشّٰهِدَاءِ وَالصّٰلِحِينَ ۗ
وَحَسَنَ أَوْلَٰئِكَ رَفِيقًا ﴿٧٠﴾

एह किरपा अल्लाह आहले पासेआ ऐ ते अल्लाह बौहत जानने आहला ऐ ॥ 71 ॥

ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ ۗ وَكَفَىٰ بِاللّٰهِ
عَلِيمًا ﴿٧١﴾

(रुकू 9/6)

ع
٧١

1. यानी कठोर तपसेआ करो।

2. इसदा अर्थ जिहाद आसतै निकलना ऐ नां के फजूल गै घरें दा निकलना।

3. मूल शब्द 'मआ' दा अर्थ ऐ-कनै बिच्चा / चा। इस जगह 'बिच्चा' अर्थ अभीष्ट ऐ यानी उनें लोके बिच्चा ते उंदे आंगर होडन।

4. 'सिद्दीक' दा अर्थ ऐ-सचवादी, सचाई च कामिल, अपने कथन गी अपने कर्म कनै सच सिद्ध करने आहला, प्रमाणक, जेहदा अंदर-बाहर पवित्र होऐ। आध्यात्मक त्रिशटीकोण कनै सिद्दीकियत दी उपाधी कनै विभूषत।

हे ईमानदारो! अपने बचाऽ (दे समान हर बेलै) त्यार रक्खो ते (भामें) निक्के दलें च (घरें दा) निकलो जां बड्डे दलें दे रूपै च निकलो (म्हेशां अपनी पहाजत दा समान अपने कनै रक्खा करो) ॥ 72 ॥

ते तुंदे चा किश (आदमी) यकीनन ऐसे (बी होंदे) न जेहके (हर कम्मै दे मौके पर) जरूर गै पिच्छें रौहदे न ते जेकर तुसेंगी कोई मसीबत सेही होऐ तां गलांदे न जे अल्लाह नै मेरे पर सहान कीता ऐ अऊं उंदे कनै हाजर नथा ॥ 73 ॥

ते जेकर अल्लाह पासेआ तुसेंगी कोई फ़ज़ल (किरपा दी गल्ल) पुज्जै तां जरूर आखी बौहदे न जे काश! अस बी उंदे कनै होंदे तां जे (बौहत) बड्डी कामयाबी हासल करदे। आखो जे इस शा पैहलें उंदै ते थुआडै बशकार कोई दोस्ती दा सरबंध था गै नेई ॥ 74 ॥

इस आस्तै जो लोक संसारक जीवन गी छोड़ियै आखरत गी अखत्यार करदे न, उनें अल्लाह दे रस्ते पर जंग करनी चाही दी, ते जेहका अल्लाह दे रस्ते पर जंग करै ते पही मारेआ जा जां जिती जा तां उसी अस तौले (गै बौहत) बड्डा अजर/सिला देगे ॥ 75 ॥

ते तुसेंगी केह (होई गेदा) ऐ जे तुस अल्लाह (दे रस्ते) ते उनें कमजोर मड़दें, जनानियें ते बच्चें आस्तै युद्ध¹ नेई करदे? जेहके गलांदे न जे हे साढ़े रब्ब! असेंगी इस बस्ती चा कड्ड जेहदे नवासी जालम न ते अपने पासेआ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اخذُوا حِذْرَكُمْ
فَإِن تَرَوْا ثُبَاتٍ أَوْ أَنْفُرًا فَجِيْعًا ۝

وَإِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَيُبِطَنَّ ۚ فَإِنْ
أَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةٌ قَالُوا قَدْ أَنْعَمَ اللَّهُ
عَلَيْنَا إِذْ لَمْ أَكُنْ مَعَهُمْ شُهَيْدًا ۝

وَلَيْنْ أَصَابَكُمْ فَضَلَّ مِنَ اللَّهِ لَيَقُولَنَّ
كَأَنْ لَمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ
لَيَلْتَنِي كُنْتُ مَعَهُمْ فَأَفُورًا قَوْرًا عَظِيمًا ۝

فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يَشْرُونَ
الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ۗ وَمَنْ يُقَاتِلْ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ
نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ
وَالْوُلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا
مِنْ هَذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ أَهْلُهَا ۚ

1. यानी उनेंगी अजाद करने आस्तै युद्ध की नेई करदे जेहके मुन्करें दे अत्याचारें शा पीड़त न।

साढ़ा कोई दोस्त बनाइयै भेज ते अपने हजूर चा (कुसै गी) साढ़ा मदादी बनाइयै (खड़ा कर) ॥ 76 ॥

जेहके लोक मोमिन न अल्लाह दे रस्ते पर जंग करदे न, ते जेहके काफर न ओह शतान दे रस्ते पर जंग करदे न। इस आस्तै तुस शतान दे दोस्तें कनै जंग करो। यकीनन शतान दा उपाऽ कमजोर होंदा ऐ ॥ 77 ॥ (रुकू 10/7)

क्या तुगी उनें लोकें दा हाल नेई पता जिनेंगी गलाया गेआ हा जे तुस अपने हत्यें गी रोकी रक्खो ते नमाज कायम करो ते जकात/दान देआ करो (पर ओह जंग आहले पासै झुके दे हे) पर जिसलै उंदे लेई युद्ध करना जरूरी ठरहाया गेआ तां उंदे चा अचानक किश लोक दूए लोकें शा उसै चाल्ली डरन लगे जिस चाल्ली खुदा शा डरना चाही दा बल्के उस शा बी ज्यादा ते गलान लगे जे हे साढ़े रब्ब! तोह साढ़े आस्तै जंग करना की जरूरी करार दिता ऐ, की जे नां ते तोह किश चिरे लेई असेंगी (होर) ढिल्ल दिती। तूं गलाई दे (जे) संसारक फायदा तुच्छ चीज ऐ ते जेहका संयम अखत्यार करै ओहदे आस्तै पिच्छें औने आहली जिंदगी बेहतर ऐ ते तुंदे पर खजूरे दी गुली दे अंदैरे दी लकीरि जिन्ना बी जुलम नेई कीता जाग ॥ 78 ॥

तुस जित्थें कुतै बी ओ तुसेंगी मौत आई घेरग, भामें तुस मजबूत किलें च (गै की नेई) र'वो ते जेकर उनेंगी (यानी उप्पर दस्से दे लोकें गी) कोई भलाई पुजदी ऐ तां गलादे न जे एह अल्लाह पासेआ ऐ ते जेकर

وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا ۗ وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ نَصِيرًا ۝

الَّذِينَ آمَنُوا يقاتلون فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۗ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا يقاتلون فِي سَبِيلِ
الطَّاغُوتِ فَقاتلوا أَوْلِيَاءَ الشَّيْطَانِ ۗ إِنَّ
كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا ۝

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ
وَاقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ۗ فَلَمَّا كُتِبَ
عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَخْشَوْنَ
النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً ۗ
وَقَالُوا إِنَّا لَمَكْتُمُ عَلَى الْقِتَالِ لَوْلَا
أَخْرَجْتَنَا إِلَى أَجَلٍ قَرِيبٍ ۗ قُلْ مَتَاعُ
الدُّنْيَا قَلِيلٌ ۗ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِمَنِ اتَّقَى
وَلَا تُظْلَمُونَ فَتِيلًا ۝

أَيِّن مَّا كُتِبُوا يُدْرِكُهُمُ الْمَوْتُ وَلَوْ
كُنْتُمْ فِي بَرْوجٍ مُّسَيِّدَةٍ ۗ وَإِنْ نُصِبْهُمْ
حَسَنَةً يُقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَإِنْ

कोई बुराई पुजदी ऐ तां गलांदे न जे एह तेरे¹ पासेआ ऐ। तू गलाई दे (जे) सब (किश) अल्लाह दी (गै) तरफा ऐ इस आस्तै उनें लोकें गी केह होई गोदा ऐ जे कुसै गल्लै गी समझने दे लागै (तगर) नेई जंदे ॥ 79 ॥

जो भलाई तुगी पुजै ओह ते अल्लाह दी तरफा ऐ ते जो बुराई तुगी पुजै ओह तेरी अपनी तरफा ऐ ते असें तुगी लोकें आस्तै रसूल बनाइयै भेजेआ ऐ ते अल्लाह बौहत अच्छा गुआह ऐ ॥ 80 ॥

जो शख्स रसूल दी आज्ञा दा पालन करै (तां समझो जे) उस नै अल्लाह दी आज्ञा दा पालन कीता ते जेहके लोक मूंह फेरी गे तां (याद र'वै जे) असें तुगी उंदा नगरान बनाइयै नेई भेजेआ ॥ 81 ॥

ते ओह आखदे न (जे साढ़ा कम्म ते) फरमांबरदारी (ऐ) पही जिसलै तेरे कशा उठी जंदे न तां उंदे चा इक दल जे किश तू आखना ऐं उसदे उलट उपाऽ करदा ऐ ते जेहके उपाऽ ओह करदे न अल्लाह उनेंगी सुरक्खत² रखदा जंदा ऐ। इस लेई तू उंदे शा

نُصِبَهُمْ سَيِّئَةً يَقُولُوا هٰذِهِ مِنْ عِنْدِكَ ۗ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ ۗ فَمَالِ هَٰؤُلَاءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ حَدِيثًا ۝

مَا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ۗ وَمَا أَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنَ نَفْسِكَ ۗ وَأَرْسَلْنَاكَ لِلنَّاسِ رَسُولًا ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝

مَنْ يُطِيعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ ۗ وَمَنْ تَوَلَّىٰ فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۝

وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَرُوا مِمَّنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي تَقُولُ ۗ وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّنُونَ ۗ

1. मुनाफिक लोकें दा चलन नेहा गै होंदा ऐ जे ओह सफलता गी अल्लाह कनै संबंधत करदे होई आखदे न जे एह ईश्वर दे प्यारे लोकें दा संप्रदाय ऐ, इसनै ते त्रक्की करनी गै ही, पर कष्ट ते नुकसान आहली गल्ला पर आखदे न जे रसूल शा जां उसदे खलीफे शा भुल्ल होई। एह दुख उससै भुल्लै दा फल ऐ। अल्लाह आखदा ऐ जे सुख-दुख दमें गै अल्लाह पासेआ न, पर सुखै दा सरबंध अल्लाह कनै जोडना ते दुखै दा रसूल कनै, कुदैं इसदा मकसद एह ते नेई जे लोकें दे दिलें चा रसूल दी शरधा, उसदा आदर ते सम्मान जंदा र'वै? पर याद र'वै अल्लाह नै सारी शक्तियें गी नेकी ते भलाई आस्तै पैदा कीते दा ऐ। इस लेई मनुक्ख जिसलै उनें शक्तियें दा दुरुपयोग करदा ऐ तां ओह दुखै च फसी जंदा ऐ। इस लेई मानव जाति गी चाही दा ऐ जे नेकी गी अल्लाह कनै ते बुरी गल्ला गी अपने आपै कनै सरबंधत करै, की जे दुख जां नुकसान उंदे अपने कुकर्म दे कारण ऐ। उसी इमाम जां धार्मिक नेता कनै जोडना मानासब नेई।

एह इक सधारण सिद्धांत दस्सेआ गेदा ऐ ते संबोधत हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम न, पर हर इक शख्स गी चाही दा ऐ जे जो कष्ट उसी पुजै उसी दूए कनै जोडने दी बजाऽ अपने आपै कनै जोडा करै।

2. यानी अल्लाह उंदा स्थाब रखदा जंदा ऐ ते वक्त औने पर उनेंगी ओहदी स'जा देग।

मूंह फेरी लै ते अल्लाह पर भरोसा रख्ख ते अल्लाह गी छोड़ियै (दे अलावा) कुसै दूए कार्य-साधक/कारसाज दी जरूरत नेई ॥ 82 ॥

इस आस्तै क्या ओह (लोक) कुरआन पर सोच-बचार नेई करदे ते (नेई समझदे) जे जेकर ओह अल्लाह दे सिवा कुसै (दूए) दी बक्खी दा होंदा तां ओह यकीनन एहदे च मता-हारा इखलाफ पांदे ॥ 83 ॥

ते जिसलै (बी) उंदे कश शांति जां खौफ दी कोई गल्ल पुजदी ऐ तां ओह उसी फलाई दिंदे न ते जेकर ओह उसी अपने रसूल कश जां अपने हाकमें कश लेई जंदे न तां उंदे चा जेहके (लोक) उस (यानी उस गल्लै दी असलीयत) गी सेही करी लैंदे न उस (दी सचाई) गी पाई लैंदे ते जेकर तुंदे पर अल्लाह दी किरपा ते उसदी रैहमत नेई होंदी तां सिवाए किश-इक दे (बाकी लोक) शतान दे पिच्छें चली पाँदे ॥ 84 ॥

इस आस्तै तू अल्लाह दे रस्ते पर युद्ध कर। तुगी अपनी जान दे सिवा कुसै दूए दा जिम्मेदार नेई ठरहाया जंदा, ते तेरा कम्म सिर्फ एह ऐ जे तू मोमिनै गी प्रेरणा दे, बिल्कुल ममकन ऐ जे अल्लाह मुन्करें दे युद्ध गी रोकी देऐ ते अल्लाह दा युद्ध सारें शा ज्यादा सख्त होंदा ऐ ते ओहदा अजाब बी सारें शा उप्पर होंदा ऐ ॥ 85 ॥

जेहका शख्स अच्छी सफारश करै ओहदे आस्तै ओहदे चा इक हिस्सा होग ते जेहका बुरी सफारश करै ओहदे आस्तै बी ओहदे चा बैसा गै हिस्सा होग ते अल्लाह हर गल्ला पर पूरी समर्थ रखदा ऐ ॥ 86 ॥

فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۖ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝

أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ الْقُرْآنَ ۗ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا ۝

وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ ۖ وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَى أُولِي الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ يَسْتَنْبِطُونَهُ مِنْهُمْ ۗ وَلَوْ لَا فَضَّلَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتَهُ لَا تَبَعْتُمُ الشَّيْطَانَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا تُكَلَّفُ إِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَكْفِكَ بِأَسِ الدِّينِ كَفَرُوا ۗ وَاللَّهُ أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ تَنكِيلًا ۝

مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ نَصِيبٌ مِنْهَا ۗ وَمَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُنْ لَهُ كِفْلٌ مِنْهَا ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝

ते जिसलै तुगी कोई दुआऽ दित्ती जा तां तू ओहदे शा अच्छी दुआऽ देआ कर जां प्ही (घट्ट शा घट्ट) उसी गै परताई दे। अल्लाह यकीनन हर इक गल्ला दा स्हाब लैने आहला ऐ ॥ 87 ॥

अल्लाह ओह सत्ता ऐ जे ओहदे सिवा कोई उपास्य नेई। ओह तुसेंगी बिना कुसै शक्क-शुबह दे क्यामत आहले ध्याडै तगर किट्टा करदा जाग, जिसदे औने च कोई शक्क नेई ते अल्लाह शा बद्ध कोहदी गल्ल सच्च होई सकदी ऐ ॥ 88 ॥ (रुकू 11/8)

ते तुसेंगी केह (होई गोदा) जे तुस मुनाफिकेँ दे बारै दऊं दल बनाऽ करदे ओ? असल च उनें जे किश कमाए दा ऐ ओहदे कारण अल्लाह नै उनें गी उलटा (बुद्धिहीन) करी दित्ता ऐ। क्या अल्लाह नै जिसदा बिनाश करी दिते दा होऐ उसी तुस सिद्धे रस्ते पर ल्यौगे ओ। ते अल्लाह जेहदा बिनाश करी देऐ तू ओहदे आस्तै कोई बी रस्ता नेई पागा ॥ 89 ॥

ओह चांहदे न जे जिस चाल्ली ओह आपू इन्कार करने आहले बनी चुके दे न, काश! तुस बी उसै चाल्ली इन्कार करने आहले बनी जाओ ते दमें बराबर होई जाओ। इस आस्तै जिन्ना चिर ओह अल्लाह दे रस्तै च हिजरत नेई करन तुस उंदे चा कुसै गी दोस्त नेई बनाओ। प्ही जेकर ओह फिरी¹ जान तां तुस उनेंगी पकड़ो ते जित्थे उनेंगी दिक्खो, उनेंगी कतल करी देओ ते नां उंदे चा (कुसैगी) दोस्त बनाओ ते नां मददगार ॥ 90 ॥

وَإِذَا حُيِّئْتُمْ بِهِ حَيُّوا بِأَحْسَنِ
مِنْهَا أَوْ رَدُّوهَا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا ﴿٨٧﴾

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۗ لِيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَى
يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۗ وَمَنْ أَصْدَقُ
مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا ﴿٨٨﴾

فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنَافِقِينَ فِتْنَةٍ وَاللَّهُ
أَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوا ۗ أَتُرِيدُونَ أَنْ
تَهْدُوا مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ ۗ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ
فَلَنْ تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ﴿٨٩﴾

وَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ ۗ كَمَا كَفَرُوا
فَتَكْفُرُونَ سَوَاءٌ فَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ
أَوْلِيَاءَ حَتَّىٰ يَهَاجِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۗ
فَإِنْ تَوَلَّوْا فَعُدُّوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ
وَجَدْتُمُوهُمْ ۗ وَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ
وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿٩٠﴾

1. "फिरी जान" दा अर्थ ऐ जे रसूल दी आज्ञा दा पालन करने बारै साढ़े आदेशें दा इन्कार करन।

उनें लोकें गी छेड़ियै जो (जां ते) कुसै ऐसी कौम कनै सरबंध रखदे होन जिंदे ते थुआड़े बशकार (कोई) समझोता होऐ (ते) ओह थुआड़े कश इस हालत च औन जे तुंदे कनै जंग करने बारै जां अपनी कौम कनै जंग करने बारै उंदे दिलें च तंगी¹ होऐ ते जेकर अल्लाह चांहदा तां यकीनन उनेंगी तुंदे उप्पर गल्बा (प्रभुत्व) देई दिंदा, तां ओह जरूर तुंदे कनै लड़दे इस आस्तै जेकर ओह तुंदे शा अलगग होई जान ते तुंदे कनै जंग नेई करन ते तुंदे कश समझोते दा सनेहा भेजन, तां अल्लाह नै तुंदे आस्तै उंदे खलाफ जुलम करने दा कोई रस्ता खु'ल्ला नेई रक्खेआ ॥ 91 ॥

तुस जरूर (किश) होर लोकें गी (ऐसा) पागे ओ² जे ओह चांहदे न जे तुंदे कनै बी ते अपनी कौम कनै बी अमन कनै रौहन, जिसलै बी उनें गी फ्रितने (यानी फसाद) पासै परताया गेआ (ऐ) तां ओह ओहदे च मूंधे मूंह डगाए जंदे रेह न इस आस्तै जेकर ओह तुंदे शा अलगग नेई होई जान ते तुंदे कश सु'ला दा संदेशा नेई भेजन ते अपने हथ्यें गी रोकी नेई लैन तां तुस उनेंगी पकड़ो ते जिथ्यें कुदै उनेंगी दिक्खो, उनें गी कतल करी देओ ते एह लोक ऐसे न जे असें उंदे खलाफ तुसेंगी रोशन प्रमाण दित्ते दे न ॥ 92 ॥ (रुकू 12/9)

ते एह गल्ल कुसै बी मोमिन गी शोभा नेई

إِلَّا الَّذِينَ يَصِلُونَ إِلَى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ أَوْ جَاءُوكُمْ حَصْرَتٍ صُدُّوهُمْ أَنْ يَفِئَتِكُمْ أَوْ يَقَاتِلُوا قَوْمَهُمْ^١ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقَاتِلُوكُمْ^٢ فَإِنِ اعْتَزَلُوكُمْ فَلَمْ يَفِئَتِكُمْ وَالْقُوا إِلَيْكُمُ السَّلْمَ^٣ فَمَا جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا^٤

سَتَجِدُونَ أَحْرَيْنَ يُرِيدُونَ أَنْ يُأْمِنُوكُمْ وَيَأْمِنُوا قَوْمَهُمْ^١ كُلَّمَا رَدُّوهُ إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكَسُوا فِيهَا^٢ فَإِنَّمَا يَعْتَزِلُوكُمْ وَيُلْقُوا إِلَيْكُمُ السَّلْمَ وَيَكْفُرُوا أَيْدِيَهُمْ فَخَذُّوهُمْ وَأَقْتُلُوهُمْ^٣ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ^٤ وَأُولَئِكَ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا مِّمَّنَّا^٥

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَنْ يَاقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا

1. ओह लोक थुआड़े कनै समझोता करने आहली कौम चा होन ते ओह इस समझोते करी नां ते तुंदे कनै युद्ध करी सकन ते नां गै अपनी कौम कनै।
2. इस आयत च मुनाफिकें दा बर्णन ऐ। इस शा पैहलें इन्कार करने आहलें दी समझोता करने आहली कौम दा जिकर हा। दौनें दी बक्ख-बक्ख परिस्थितियें कारण उंदे कनै कीता जाने आहला ब्यहार बी अलगग-अलगग ऐ।

दिंदी जे ओह कुसै मोमिन दी हत्या करै, सिवाए (इस दे जे) गलती कनै (ऐसा होई जा) ते जेहका (मोमिन) कुसै मोमिन दी भुल्ल-भलेखै हत्या करी देऐ तां (ओहदे पर) इक मोमिन (गलाम गी) अजाद करना ते खून बगाना (वाजब) होग, जेहका उसदे बारसैं गी दित्ता जाग सिवाए इस (सूरत) दे जे ओह उसी बतौर सदका/दान (छोड़ी) देन ते जेकर ओह (मरने आहला) कुसै थुआड़ी दुश्मन कौम चा होऐ ते ओह (आपू) मोमिन होऐ, तां (इस सूत च सिर्फ) इक मोमिन (गलाम) गी अजाद करना (काफ़ी) होग, ते जेकर ओह (मरने आहला) कुसै ऐसी कौम चा होऐ, जेहदे बशकार ते थुआड़े बशकार मुआहिदा (समझोता) होए दा होऐ तां (खूनी आस्तै) खून बगाना (वाजब) होग, जेहका उस (मरने आहले) दे बारसैं गी दित्ता जाग। इसै चाल्ली इक मोमिन (गलाम) दा अजाद करना बी जरूरी होग ते जेहका (एह) समर्थ नेई रखदा होऐ तां (ओहदे आस्तै) दो म्हीन्ने लगातार रोजे रक्खना (वाजब) होग। एह (नरमी) अल्लाह पासेआ किरपा दे तौरै पर ऐ ते अल्लाह बौहत जानने आहला (ते) हिक्मत आहला ऐ ॥ 93 ॥

ते जेहका (शख्स) कुसै मोमिन गी जानी-बुज्जी मारी देऐ तां उसदी स'जा ज्हन्नम होग। ओह उस च चिरै तक पेदा रौहग ते अल्लाह दी ओहदे पर करोपी होग ते उसी (अपने कशा) दूर करी देग ते ओहदे आस्तै बौहत बड्डा अजाब त्यार करग ॥ 94 ॥

हे इमानदारो! जिसलै तुस अल्लाह दी राह च सफर करो तां छान-बीन करी लै करा करो

خَطَاً وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَاً فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ مُسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهَا إِلَّا أَنْ يَصَّدَّقُوا فَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ وَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم مِّيثَاقٌ فَدِيَةٌ مُسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَاءُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً مِّنَ اللَّهِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٩٤﴾

وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خُلْدًا فِيهَا وَعَصَبَ اللَّهِ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا ﴿٩٤﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ

ते जेहका तुसेंगी सलाम करै, उसी (एह) नेई आखा करो जे तूं मोमिन नेई। तुस संसारक¹ जीवन दा समान चांहेदे ओ, इस आस्तै अल्लाह कश नेकां गनीमतां (उपहार) न। इस शा पैहलें तुस (बी) ऐसे गै हे। पही अल्लाह नै तुंदे पर स्हान कीता। इस आस्तै तुंदे आस्तै जरूरी ऐ (जे) तुस छान-बीन करी लै करा करो। जे किश तुस करदे ओ अल्लाह यकीनन उसी जानदा ऐ ॥ 95 ॥

मोमिनं चा ऐसे बेही रौहने आहले जिनें गी कोई कश्ट नेई पुज्जा ते (ओह मोमिन जेहके) अपने जान-माल कनै अल्लाह दे रस्ते पर जिहाद करने आहले न, ओह बराबर नेई होई सकदे। अल्लाह नै अपने जान-माल कनै जिहाद करने आहलें गी (पिच्छें) बेही रौहने आहलें पर प्रधानता दिती दी ऐ ते अल्लाह नै सारें गी गै भलाई दा बचन देई रक्खे दा ऐ ते अल्लाह नै जिहाद करने आहलें गी बौहत बड्डे बदले दा बचन देइयै पिच्छें बेही रौहने आहलें पर (जरूर गै) प्रधानता दिती दी ऐ ॥ 96 ॥

(इस प्रधानता दा अर्थ) उस (अल्लाह) पासेआ बौहत बड्डे सत्कार खिमा/माफी ते देआ दा मिलना ऐ इस्सै चाल्ली ओह बौहत रैहमत करने आहला ऐ ते अल्लाह बौहत बख्शने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 97 ॥ (रुकू 13/10)

जिनें लोकें गी फरिश्तें इस हालत च मौत दिती जे ओह अपनी जानें पर जुलम² करा

اللَّهُ فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْفَىٰ
إَيْكُمْ السَّلَامَ لَسْتَ مُؤْمِنًا تَبَعُونَ
عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ مَعَانِمُ
كَثِيرَةٌ ۖ كَذَلِكَ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلُ فَمَنَّ
اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا
تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝

لَا يَسْتَوِي الْقُعْدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ
غَيْرُ أُولَى الضَّرِّ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۖ فَضَّلَ
اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ
عَلَى الْقُعْدِينَ دَرَجَةً ۖ وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ
الْحُسْنَى ۖ وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى
الْقُعْدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

دَرَجَاتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً ۗ وَكَانَ اللَّهُ
عَفُورًا رَّحِيمًا ۝

إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّيْتُمُ الْمَلَائِكَةَ ظَالِمِينَ

1. यानी जेकर सलाम करने पर शक करो ते उसी धोखेबाज समझो तां उस दा एह अर्थ होग जे तुस संसारक लोभ गी आखरत शा उत्तम मनदे ओ ते चांहेदे ओ जे उसी लड़ाई करने आहला इन्कारी ठरहाइयै ओहदी धन-दौलत पर कब्जा करी लैओ।
2. यानी मुकरें दे देशें च रेहियै तकलीफां बरदाश्त करा करदे हे पर हिजरत नथे करदे।

करदे हे, ओह (इनें गी) आखडन जे तुस केहडे (ख्याल) च हे? ओह (यानी हिजरत करने शा परहेज करने आहले) परते च गलाडन जे अस देश च कमजोर समझे जंदे हे (इस आस्तै हिजरत नेई कीती) ओह (फरिश्ते) जवाब देडन जे क्या अल्लाह दी धरती बसीह/ विशाल नथी? जे तुस एहदे च हिजरत करी जंदे, इस आस्तै इनें लोकें दा ठकाना ज्हनम होगे ते ओह रोहने आस्तै बौहत (गै) बुरी ज'गा ऐ ॥ 98 ॥

हां ओह लोक जेहके मरदें, जनानियें ते बच्चें चा सच्चें गै कमजोर हे ते ओह कुसै उपाऽ दी समर्थ नथे रखदे ते नां गै उनेगी कोई रस्ता सुझदा हा ॥ 99 ॥

इनें लोकें दे बारे खुदा दी बख्शाश लागै ऐ, की जे अल्लाह है गै बौहत माफ करने आहला ते बखाने आहला ॥ 100 ॥

ते जेहका बी (शख्स) अल्लाह दे रस्ते च हिजरत करग ओह देशे च पहाजत दे मते-हारे थाहर ते समुद्धि (दे समान) हासल करग, ते जो (शख्स) अल्लाह ते इसदे रसूल पासै अपने घरा हिजरत करियै निकलै, पही ओहदी मौत होई जा तां (समझो जे) ओहदा अजर/सिला अल्लाह दे जिम्मै होई गेआ ते अल्लाह बौहत (गै) बखाने आहला (ते) बार-बार रहम करने आहला ऐ ॥ 101 ॥ (रुकू 14/11)

ते जेकर तुस डरदे ओ जे काफर तुसंगी तकलीफें नै घेरी लैंडन, तां जिसलै तुस देशे च

أَنْفُسِهِمْ قَالُوا فِئَمَنْ كُنْتُمْ ۖ قَالُوا كُنَّا مُتَضَعِّفِينَ فِي الْأَرْضِ ۗ قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ أَرْضَ اللَّهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوا فِيهَا ۗ فَأُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۗ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿٩٨﴾

إِلَّا السُّتْضَعْفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ
وَالْوُلْدَانِ لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا
يَهْتَدُونَ سَبِيلًا ﴿٩٩﴾

فَأُولَٰئِكَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَعْفُو عَنْهُمْ ۗ
وَكَانَ اللَّهُ عَفُوًّا غَفُورًا ﴿١٠٠﴾

وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ
مُرْعًا كَثِيرًا وَأَسْعَةً ۗ وَمَنْ يُخْرِجْ مِنْ
بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ
يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ ۗ
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿١٠١﴾

وَإِذَا صَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ
عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَاةِ ۗ

सफर करो तां तुसें गी कोई पाप नेई लगगग जे तुस नमाज़ गी घटाई लै करा करो। काफर यकीनन थुआड़े जाहरे-बाहरे दुश्मन न ॥ 102 ॥

إِنْ حَقُمْتُمْ أَنْ يُفَعِّنَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا
إِنَّ الْكُفْرِينَ كَانُوا أَعْدَاءَ مَوْبِينًا ۝

ते जिसलै तू (आपू) उंदे च होऐं ते तू उनेंगी नमाज़ पढाएं तां उंदे चा जमात दे इक हिस्से (आहलें) गी चाही दा ऐ जे तेरे कनै खड़ोन ते अपने हथ्यार लेई लैन, फी जिसलै ओह सजदा करी लैन तां ओह तेरे पिच्छें (पहाजत आस्तै) खड़ोई जान, फी जमात दा इक होर हिस्सा जिसनै नमाज़ नेई पढ़ी (अगें) आई जा ते तेरे कनै नमाज़ पढ़ै ते ओह बी अपने बचास दा समान ते अपने हथ्यार लेई रक्खन। जेहके लोक काफर न ओह चांहदे न जे काश तुस अपने हथ्यारें ते अपने समानें शा बे-खबर होई जाओ ते ओह यकदम गै तुंदे पर आई पौन ते जेकर बरखा कारण तुसेंगी कश्ट होऐ जां तुस बमार होओ तां अपने हथ्यार तुआरी देने पर तुसेंगी कोई पाप नेई लगगग, पर फही बी तुस पूरी चाल्ली चौकस-चकनरे र'वो। अल्लाह नै काफरें आस्तै अपमान जनक अज़ाब यकीनन त्यार करी रक्खे दा ऐ ॥ 103 ॥

وَإِذَا كُنْتُمْ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلَاةَ
فَلْتَقُمْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا
أَسْلِحَتَهُمْ فَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا مِنْ
وَرَاءَ بَيْتِكُمْ وَلْتَأْتِ طَائِفَةٌ أُخْرَى لَمْ
يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا
حُدْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ وَدَالَّذِينَ كَفَرُوا
لَوْ تَغَفَّلُونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ
فَيَمِيلُونَ عَلَيْكُمْ مَيْلَةً وَاحِدَةً ۗ وَلَا
جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ أذىٌ مِنْ
مَطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ مَرْضَى أَنْ تَضَعُوا
أَسْلِحَتَكُمْ وَخُذُوا حُدْرَكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ
أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا ۝

ते जिसलै तुस नमाज़ पढ़ी लैओ तां अल्लाह गी खड़ोते दे, बैठे दे ते पासैं भार लेटे दे चेता करदे र'वो, फही जिसलै तुस साहरे होई जाओ तां नमाज़ गी सुआरियै² पढ़ो। निश्चत समे पर

فَإِذَا قُضِيَتْ الصَّلَاةُ فَادْكُرُوا اللَّهَ قِيَامًا
وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُوبِكُمْ ۗ فَإِذَا
أَطْمَأْنَنْتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ ۗ إِنَّ الصَّلَاةَ

- हज़रत आइशा सिद्दीका दी हदीस ऐ जे पैहलें नमाज़ दो रकअत फर्ज ही, फही सफर च ऊऐ दो रकअत रेही, पर घर रौहने दी अवस्था च चार रकअत करी दिती गई। (बुखारी शरीफ) इस आस्तै नमाज़ गी छोटा करने दा अर्थ ऐ जे ओह तौले-तौले पढ़ी लैती जा तां जे समां थोड़ा लग्गे। इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे जेकर बैरी दे हमले दा डर होऐ तां तुस तौले-तौले नमाज़ पढ़ी लै करो तां बी थुआड़ी नमाज़ ब्यर्थ नेई जाग। जेकर कोई मुसलमान सफर च होऐ तां भामें बैरी दा डर होऐ जां नेई होऐ ओहदे आस्तै दो रकअत नमाज़ पढ़ना गै मनासब ऐ।
- यानी युद्ध ते भै आहली स्थिति आंगर तौले-तौले नमाज़ नेई पढ़ो।

नमाज़ पढ़ना यकीनन मोमिनं आस्तै जरूरी फर्ज़ करार दिते दा ऐ ॥ 104 ॥

ते तुस उस कौम (यानी दुश्मनें) दी तलाश च दिल्ली-मट्ट नेई करो जेकर तुसंगी तकलीफ होंदी ऐ तां जिस चाल्ली तुसंगी तकलीफ होंदी ऐ उनेंगी बी तकलीफ होंदी ऐ ते तुस ते अल्लाह शा उस (असीम किरपा) दी मेद रखदे ओ जिसदी ओह मेद नेई रखदे, ते अल्लाह बौहत (गै) जानने आह्ला (ते) हिक्मत आह्ला ऐ ॥ 105 ॥ (रुकू 15/12)

असें तेरे पासै सचाई पर अधारत एह कताब यकीनन इस आस्तै उतारी ऐ जे तूं लोकें च इस (सचाई) राहें, जेहकी अल्लाह नै तुगी दस्सी ऐ, फैसला करें ते तूं खयानत करने आहलें पासैआ झगड़ने आह्ला नेई बन ॥ 106 ॥

ते अल्लाह शा (इस दी) बख्शीश तलब कर (यानी माफी मंग)। अल्लाह यकीनन बौहत बख्शने आह्ला (ते) बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 107 ॥

ते तूं उनें लोकें पासैआ जो अपने-आप कनै खयानत करदे न, झगड़ा नेई कर। जेहके (लोक) खयानत करने च अगें बधे दे ते बड्डे पापी होन अल्लाह उनेंगी पसंद नेई करदा ॥ 108 ॥

ओह लोकें शा पड़दा रखदे न, पर अल्लाह शा पड़दा नेई रखदे, की जे जिसलै रातीं ओह ऐसी गल्लें बाँरे सलाहीं करा करदे होंदे न जिनें गी अल्लाह पसंद नेई करदा तां ओह उँदै कश होंदा ऐ ते जे किश ओह करा करदे होंदे न, अल्लाह उसी मटाने आह्ला ऐ ॥ 109 ॥

كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَوْقُوتًا ۝

وَلَا تَهْتُوا فِي ابْتِعَاءِ الْقَوْمِ ۖ إِن تَكُونُوا تَأْمِنُونَ فَإِنَّهُمْ يَأْمِنُونَ كَمَا تَأْمِنُونَ ۖ وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ مَا لَا يَرْجُونَ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَا أَرَبَّكَ اللَّهُ ۖ وَلَا تَكُنْ لِلْخَائِبِينَ حَصِيمًا ۝

وَأَسْتَعْفِرِ اللَّهُ ۖ إِن اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

وَلَا تَجَادِلْ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَانُونَ أَنْفُسَهُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا أَثِيمًا ۝

يَسْتَحْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَحْفُونَ مِنَ اللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّتُونَ مَا لَا يَرْضَىٰ مِنَ الْقَوْلِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطًا ۝

सुनो! तुस ओह लोक ओ जो उंदे पासेआ दुन्याबी जिंदगी च झगड़दे रेह ओ, मगर क्यामत आहलै रोज उंदे पासेआ अल्लाह कनै कु'न झगड़ग जां कु'न उनें गी बचाने आहला होग ॥ 110 ॥

ते जो शख्स (बी) कोई पाप करग जां अपने-आपै पर जुलम करग ते उसदे बा'द अल्लाह शा (अपने पापें दी) माफी चाहग (तां) ओह अल्लाह गी बौहत बखाने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला पाग ॥ 111 ॥

ते जेहका शख्स कोई पाप करै, ओहदा कर्म उससे पर (उलटा होइयै) पौग। ते अल्लाह बौहत जानने आहला (ते) हिक्मत आहला ऐ ॥ 112 ॥

ते जेहका शख्स कोई पाप जां गुनाह करै फही कुसै बे-कसूर पर उसदा दोश लाई देऐ तां (समझो जे) उसनै इक झूठ ते खु'ल्ले-डु'ल्ले गुनाह दा बोझ अपने सिर लेई लैता ॥ 113 ॥ (रुकू 16/13)

ते जेकर तेरे पर अल्लाह दी किरपा जां उसदी रैहमत नेई होई तां (ओह यानी दुश्मन अपने बुरे अरादें च कामयाब होई जंदे इस आस्तै) उंदे चा इक गरोह (इस गल्ला दा) पक्का अरादा करी चुके दा हा जे तुगी हलाक करी देऐ ते ओह अपने सिवा कुसै गी हलाक नेई करदे ते तुगी किश बी नुकसान नेई पुजाई सकदे ते अल्लाह नै तेरे पर कताब ते हिक्मत उतारी दी ऐ ते जे किश तूं नथा जानदा तुगी सखाया ऐ ते तेरे पर अल्लाह दी (बौहत) बड्डी किरपा ऐ ॥ 114 ॥

उनें लोके (दे मशबरे) गी छोड़ियै जो सदका

هَاتْتُمْ هَوْلًا جَدْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَمَنْ يُجَادِلِ اللَّهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَمْ مَنْ يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ۝

وَمَنْ يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

وَمَنْ يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبْهُ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

وَمَنْ يَكْسِبْ خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهِ بَرِيئًا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ۝

وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ لَهَمَّتْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ أَنْ يُضَلُّوكَ ۖ وَمَا يُضَلُّونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَصُرُّونَكَ مِنْ شَيْءٍ ۖ وَأَنْزَلَ اللَّهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ۖ وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا ۝

لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّنْ نَّجْوَاهُمْ إِلَّا مَنْ

जां नेक गल्लें जां लोकें च सुधार करने दा हुकम दिंदे न उंदे मते-हारे मशबरे च कोई बी भलाई नेई (होंदी) ते जेहका शख्स अल्लाह दी खुशी हासल करने तै ऐसा करै (यानी नेक मशबरे करै) अस उसी (तौले गै बौहत) बड्डा सिला देगे ॥ 115 ॥

ते जेहका बी शख्स हदायत दे पूरी चाल्ली खुल्ली जाने दे बा'द (इस) रसूल कनै मत-भेद गै करदा रौहग ते मोमिनें दे रस्ते दे अलावा (कुसै होर रस्ते पर) चलग अस उसी उससै चीजै दे पिच्छें लाई देगे जेहदे पिच्छें ओह¹ पेदा होग ते उसी ज्हन्नम च सुटगे ते ओह बौहत बुरा ठकाना ऐ ॥ 116 ॥ (रुकू 17/14)

अल्लाह इस (गुनाह) गी कदें बी नेई बख्शग जे उसदा (कुसै गी) शरीक बनाया जा ते जेहका (गुनाह) इस शा निक्का होग (उसी) जेहदे आस्तै चाहग माफ करी देग ते जेहका शख्स (कुसै गी) अल्लाह दा शरीक बनाऽ तां (समझो जे) ओह (सिद्धे रस्तै शा) बौहत दूर भटकी गेआ ॥ 117 ॥

ओह अल्लाह गी छोड़िगै बे-जान² चीजें दे सिवा (कुसै गी) नेई पुकारदे बल्के ओह सिरफिरे शतान दे सिवा (होर कुसै गी) नेई पुकारदे ॥ 118 ॥

(उस शतान गी) जिसी अल्लाह नै (अपने लागेआ) दूर करी दिते दा ऐ ते (जिसनै एह) गलाया हा जे अ'ऊं तेरे बंदें शा जरूर गै इक निश्चत हिस्सा लैड ॥ 119 ॥

أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ
بَيْنَ النَّاسِ ۗ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ
مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

وَمَنْ يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ
الهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ
نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصَلِّهِ ۖ جَهَنَّمَ ۗ وَسَاءَتْ
مَصِيرًا ۝

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا
دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۗ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ
فَقَدْ صَلَّىٰ صَلًّا بَعِيدًا ۝

إِنْ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهَا إِلَّا إِنثَاءً ۖ وَإِنْ
يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَرِيدًا ۝

لَعَنَهُ اللَّهُ ۗ وَقَالَ لَا تَخْذَنْ مِنْ عِبَادِكِ
نَصِيبًا مَفْرُوضًا ۝

1. यानी ओह रसूल ते थुआडै साथियें गी नश्ट करना चांहदा ऐ। अस ऊऐ बिनाश उसदे भागें च लिखी देगे।
2. असें अरबी मुहावरे दे मताबक मूल शब्द 'इनासा' दा अर्थ बे-जान चीजां कीता ऐ। दिक्खो मुफ़दाते रागिब, लिसानुल अरब, तफ़सीर फ़तहुल्लयान भाग 2 सफा 316)

ते उनेंगी जरूर गै गुमराह करड ते यकीनन उनेंगी (बड़ियां-बड़ियां) मेंदां बी दुआंग/बन्हांग ते उंदे कनै एह खुआहश बी करड जे ओह चौखरें दे कन कट्टन। इसै चाल्ली खुआहश करड जे ओह अल्लाह दी मख्जूक च तब्दीली करन ते जेहका अल्लाह गी छोड़िये शतान गी दोस्त बनाऽ, तां (समझो जे) ओह जाहरा-बाहरा घाटे च पेई गेआ ॥ 120 ॥

ओह (शतान) उंदे कनै बा'यदे करदा ऐ ते उनेंगी मेंदां बन्हांदा ऐ ते शतान उंदे कनै छल-कपट दियें गल्लें दे सिवा कुसै दूई गल्लै दा बा'यदा नेई करदा ॥ 121 ॥

इनें लोकें दा ठकाना ते नरक ऐ ते ओह ओहदे शा नरसन दी ज'गा कुतै नेई पाडन ॥ 122 ॥

ते जेहके लोक ईमान ल्याए न ते उनें नेक कर्म बी कीते न अस उनेंगी जरूर ऐसे बागें च दाखल करगे जिंदे हेठ नैहरां बगदियां हॉडन (ते ओह) उंदे च म्हेशां आस्तै बास करडन (एह) अल्लाह दा सच्चा बा'यदा (ऐ) ते अल्लाह शा बद्ध होर कुस दी गल्ल सच्ची होई सकदी ऐ? ॥ 123 ॥

नां थुआड़ी मनोकामनें दे मताबक (होने आहला) ऐ ते नां कताब आहलें दी मनोकामनें दे मताबक (बल्के) जेहका शख्स कोई पाप करग उसी ओहदे मताबक गै बदला दिता जाग, ते ओह अल्लाह दे सिवा नां कुसै गी अपना दोस्त पाग ते नां मददगार ॥ 124 ॥

وَلَا ضَلَّتْهُمْ وَلَا مَتَّبِعْتَهُمْ وَلَا مَرَّتَهُمْ
فَلْيَبْتَغُوا أَذَانَ الْأَنْعَامِ وَلَا مَرَّتَهُمْ
فَلْيَغَيِّرَنَّ خَلْقَ اللَّهِ وَمَنْ يَتَّخِذِ
الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِنْ دُونِ اللَّهِ فَقَدْ خَسِرَ
خُسْرَانًا مُبِينًا ۝

يَعِدُّهُمْ وَيَمْتَبِعُهُمْ ۝ وَمَا يَعِدُهُمُ
الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ۝

أُولَئِكَ مَا أَوْلَهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُونَ
عَنْهَا مَحِيصًا ۝

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۝ وَعَدَّ اللَّهُ
حَقًّا ۝ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا ۝

لَيْسَ بِأَمَانِيكُمْ وَلَا أَمَانِي أَهْلِ
الْكِتَابِ ۝ مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ بِهِ وَلَا
يَجِدْ لَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝

ते जेहके लोक भामें मड़द होन जां जनानियां मोमिन होने दी हालत च नेक कर्म करइन तां ओह जन्मत/सुर्ग च दाखल होइन ते उंदे पर खजूरे दी गुली दे सुराखै बरोबर (बी) जुलम नेई कीता जाग ॥ 125 ॥

ते उस शख्स दे धर्म शा बद्ध कोहदा धर्म अच्छा (होई सकदा) ऐ जिसनै (खूब) चंगी चाल्ली कर्म करदे होई अपने-आपै गी अल्लाह दे सपुर्द करी दित्ते दा होऐ ते इब्राहीम दे धर्म दी, जो सिद्धे रस्ते पर चलने आहले हे पैरवी (अखत्यार) करी लैती दी होऐ ते अल्लाह नै इब्राहीम गी (अपना) खास दोस्त बनाए दा हा ॥ 126 ॥

ते जे किश गासैं ते जे किश धरती च ऐ (सब) अल्लाह दा ऐ ते अल्लाह हर (इक) चीजा दा पूरा इलम रखदा ऐ ॥ 127 ॥ (रुकू 18/15)

ते लोक तेरे शा (इस शा बद्ध) जनानियें (कनै नकाह) दे बारै (हुकम) पुछदे न। तूं (उनेंगी) आख जे अल्लाह तुसैं गी उंदे बारै अजाजत देई चुके दा ऐ ते जेहका (हुकम इस) कताबा च (दूई¹ ज'गा) तुसैंगी पढ़ियै सुनाया गेआ ऐ ओह उनें जतीम जनानियें बारै ऐ जिनेंगी तुस उंदे निश्चत कीते गेदे हक्क (मैहर) अदा नेई करदे पर उंदे कनै नकाह करना चांहदे ओ ते (इस दे अलावा) कमजोर² बचियें³ दे बारै ऐ ते (तुसैं गी एह हुकम दिता गेआ हा) जे जतीमें कनै इन्साफ आहला

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ
أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ حَسْبُكَ يَدْخُلُونَ
الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ نَقِيرًا ﴿١٢٥﴾

وَمَنْ أَحْسَنُ دِينًا مِّمَّنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ
وَهُوَ مُحْسِنٌ وَاتَّبَعَ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا
وَاتَّخَذَ اللَّهُ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلًا ﴿١٢٦﴾

وَاللَّهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطًا ﴿١٢٧﴾

وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ ۗ قُلِ اللَّهُ
يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ ۚ وَمَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فِي
الْكِتَابِ فِي يَمْحَى النِّسَاءِ الَّتِي لَا تُولَدْنَ
مَا كَتَبَ لهنَّ وَتَرَعِبُونَ أَنْ تَكْفُوهُنَّ
وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الْوُلْدَانِ ۗ وَأَنْ
تَقُومُوا لِلنِّسَاءِ بِالْقِسْطِ ۗ وَمَا تَفَعَّلُوا

1. दिक्खो सूर: निसा आयत 4

2. यानी अनाथ कुड़ियां, की जे ओह आपूं अपने अधिकार नेई लेई सकदियां।

3. मूल शब्द 'विल्दान' संतान यानी धी5-पुतर दौनें आस्तै बोल्लेआ जंदा ऐ, पर इस थाहरा पर एह कुड़ियें कनै सरबंधत ऐ की जे उंदे कनै गै नकाह दी संभावना होंदी ऐ।

ब्यहार करदे र'वो ते जेहका बी तुस नेक कम्म करो (याद रक्खो जे) अल्लाह यकीनन उसी भलेआं जानदा ऐ ॥ 128 ॥

ते जेकर कुसै जनानी गी अपने पति पासेआ बुरा ब्यहार करने जां अपने पासेआ मूंह फेरी लैने दा डर होऐ तां उनें दौनें गी कोई पाप नेई लग्ग जे ओह कुसै चाल्ली आपस च समझोता¹ करी लैन ते समझोता (सारें शा) बेहतर ऐ ते लोकें दे दिलें च कंजूसी² (दा बिचार) पैदा करी दिता गेदा ऐ ते जेकर तुस नेक कम्म करो ते संयम अखत्यार करो तां (चेता रक्खो जे) जे किश तुस करदे ओ उसी यकीनन अल्लाह जानदा ऐ ॥ 129 ॥

ते भामें तुस (न्यांऽ करने दी किन्नी बी) खुआहश करो (तां बी) तुस जनानियें बशकार न्यांऽ नेई करी सकदे इस आस्तै तुस (इक दे गै पासै) भलेआं नेई झुकी³ जाओ (जिसदा नतीजा एह होऐ) जे उस (दूई) गी (बशकार गै) लटकदी (चीजें आंगर) छोड़ी देओ ते जेकर तुस (आपस च) मेल-मलाप पैदा करी लैओ ते संयम अखत्यार करो तां (चेता रक्खो जे) अल्लाह यकीनन बौहत बख्खने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 130 ॥

ते जेकर ओह (दमें) अलग-अलग होई

مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِهِ عَلِيمًا ﴿١٢٨﴾

وَإِنْ أَمْرًا فَخَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُورًا
أَوْ إِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ
يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا وَالصُّلْحُ خَيْرٌ
وَأَحْضَرْتَ الْأَنْفُسَ الشُّحَّ وَإِنْ تُحْسِنُوا
وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿١٢٩﴾

وَلَنْ تَسْتَطِيعُوا أَنْ تَعْدِلُوا بَيْنَ النِّسَاءِ
وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمِيلِ
فَتَذَرُوهُمَا كَالْمِعَاقِقَةِ وَإِنْ تَصْلِحُوا
وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿١٣٠﴾

وَإِنْ يَتَفَرَّقَا يُغْنِ اللَّهُ كِلَا مِنْ سَعَتِهِ^ط

1. जेकर जनानी एह समझै जे गल्ल बिगड़ी जाग ते एह जे दुख बधदा गै रौहग इस आस्तै मनासब इय्यै ऐ जे अ'ऊं अपने अधिकारें चा किश छोड़ी देआं। जेकर न्यायाधीश/जज समझै जे ऐसा करने च कोई इतराज नेई तां ओह ऐसा करने दी अजाजत देई सकदा ऐ।
2. लोक कंजूसी आहले पासै झुके दे रौहदे न ते खर्च करने शा कतरांदे न, भामें खर्च करना लाह देऊ गै की नेई होऐ।
3. सधारण रूपै च बराबरी दा ब्यहार नेई करने दी दशा च इक शा बद्ध जनानियां रक्खने शा रोकेआ गेदा ऐ बरना सारियें कन्ने दिली ब्यहार इक जैसा नेई होई सकदा ते नां गै दिलै पर कोई रोक लगगी सकदी ऐ।

जान तां अल्लाह (उंदे चा) हर इक गी अपने पासेआ बृद्धि प्रदान करियै धनवान बनाई देग ते अल्लाह बाद्धा देने आह्ला (ते) हिक्मत आह्ला ऐ ॥ 131 ॥

ते जे किश गासैं च ऐ ते जे किश धरती च ऐ (सब) अल्लाह दा गै ऐ ते जिनें लोकें गी तुंदे शा पैहलें कताब दिती गेई ही असें उनेंगी (बी) ते तुसें गी (बी) तकीदी हुकम देई रखे (दिते) दा ऐ जे तुस अल्लाह दा संयम अखत्यार करो ते जेकर तुस इन्कार करगे ओ तां (चेता रखो जे) जे किश गासैं च ऐ ते जे किश धरती च ऐ (सब) अल्लाह दा गै ऐ ते अल्लाह बे-न्याज (ते) अन-गिनत तरीफें दा हक्कदार ऐ ॥ 132 ॥

ते जे किश गासैं च ऐ ते जे किश धरती च ऐ (सब) अल्लाह दा गै ऐ ते अल्लाह हर चाल्ली कनै जरूरी पहाजत करने आह्ला ऐ ॥ 133 ॥

हे लोको! जेकर ओह चाह तां तुसेंगी मारी देऐ ते दूए होर लोकें गी लेई आवै ते अल्लाह इस गल्ला पर पूरी चाल्ली समर्थवान ऐ ॥ 134 ॥

जेहका शख्स संसारक बदला चांहदा होऐ (ओह सुनी लै जे) अल्लाह कश संसारक ते आखरत (दोनें किसमें दे) इनाम न ते अल्लाह बौहत सुनने आह्ला (ते) दिक्खने आह्ला ऐ ॥ 135 ॥ (रुकू 19/16)

हे ईमानदारो! तुस पूरी चाल्ली इन्साफ पर कायम रौहने आहले (ते) अल्लाह¹ आस्तै

وَكَانَ اللَّهُ وَاسِعًا حَكِيمًا ﴿٣١﴾

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ
وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ
قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنْ اتَّقُوا اللَّهَ ۗ وَإِنْ
تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَنِيًّا حَمِيدًا ﴿٣٢﴾

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ
وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿٣٣﴾

إِنْ يَشَاءِ يُدْهِبْكُمْ أَيُّهَا النَّاسُ وَيَأْتِ
بِآخَرِينَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ ذَٰلِكُمْ قَدِيرًا ﴿٣٤﴾

مَنْ كَانَ يُرِيدْ تَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ
تَوَابُ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ
سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿٣٥﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ بِالْقِسْطِ
شُهَدَاءَ لِلَّهِ وَلَوْ عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ أَوْ

1. यानी अल्लाह आस्तै सच्ची गुआही देआ करो।

गुआही देने आहले बनी जाओ। जेकर (थुआड़ी गुआही) थुआड़े अपने (खलाफ) जां मापें जां करीबी रिश्तेदारें दे खलाफ (पाँदी) होऐ, जेकर ओह (जेहदे बाँरे गुआही दित्ती गेदी ऐ) अमीर ऐ जां गरीब ऐ (दौनीं सूरतें च) अल्लाह उनें दौनीं दी (तुंदे शा) ज्यादा भलाई करने आहला ऐ। इस आस्तै तुस (कुसै जलील/ तुच्छ/घटिया) खुआहश दी पैरवी (अनुसरण नेई करा करो तां जे तुस न्यांउ करी सको ते जेकर तुस (कुसै शहादत गी) छपालगे ओ जां (सचाई जाहूर करने शा) कतरागे ओ तां (चेता रक्खो जे) जे किश तुस करदे ओ अल्लाह यकीनन उसी जानदा ऐ ॥ 136 ॥

हे ईमानदारो! अल्लाह ते उसदे रसूल (पर) ते इस कताब पर जो उसनै अपने रसूल पर तुआरी दी ऐ ते उस कताबा पर जो उसनै (इस शा) पैहलें उतारी दी ऐ ईमान ल्याओ ते जेहका शख्स अल्लाह ते उसदे फरिश्तें ते उसदी कताबें ते उसदे रसूलें ते बा'द च औने आहले दिनै दा इन्कार करै तां (समझी लैओ जे) ओह परले दरजे दी गुमराही च पेई गेदा ऐ ॥ 137 ॥

ते जेहके लोक ईमान ल्याए ते फही उनें इन्कार करी दित्ता, फही ईमान ल्याए फही इन्कार करी दित्ता फही कुफर च (होर बी) बधी गे, अल्लाह उनेंगी कदें बी माफ नेई करी सकदा ते नां गै उनेंगी (मुक्ति दा) कोई रस्ता दस्सी सकदा ऐ ॥ 138 ॥

तूं मुनाफिकें गी (एह) खबर सुनाई दे जे उंदे आस्तै दर्दनाक अजाब (निश्चत) ऐ ॥ 139 ॥

जेहके मोमिनं गी छोड़ियै काफरें गी (अपना

الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبِينَ ۚ إِن يَكُنْ غَنِيًّا أَوْ
فَقِيرًا فَإِنَّهُ أَوْلَىٰ بِهِمَا ۚ فَلَا تَتَّبِعُوا
الْهَوَىٰ أَن تَعْدِلُوا ۚ وَإِن تَلَّوْا أَوْ تُعْرَضُوا
فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿٣٧﴾

يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
وَالْكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ عَلَىٰ رَسُولِهِ
وَالْكِتَابِ الَّذِي أَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَنْ
يَكْفُرْ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿٣٧﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ آمَنُوا ثُمَّ
كَفَرُوا ثُمَّ أَرَادُوا كُفْرًا ثُمَّ يَكُنُ اللَّهُ
لِيُعْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيُهْدِيَهُمْ سَبِيلًا ﴿٣٨﴾

يَبِّئِ الْمُتَّقِينَ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا

الَّذِينَ يَتَّخِذُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ

दोस्त बनादे न। क्या ओह उंदे शा अपनी इज्जत (सम्मान) चांहेदे न (जेकर ऐसा ऐ) तां (ओह चेता रक्खन जे) इज्जत सारी (दी सारी) अल्लाह दे गै हत्थ ऐ ॥ 140 ॥

ذُونَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ أَيْبَتُّوْنَ عِنْدَهُمْ
الْعِزَّةَ فَإِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۝

ते उसनै इस कताबा च तुंदे आस्तै एह (हुकम) उतारी छुड़े दा ऐ जे जिसलै तुस अल्लाह दी आयतें बारै इन्कार सरबंधी गल्लां सुनो जां उंदे बारै मजाक होंदा सुनो तां (उनें मजाक डुआने आहलें कनै उन्ने चिरै तक) नेई ब'वो जिन्ना चिर जे ओह उस दे सिवा कुसै होरस गल्लै च नेई लगगी पौन। तुस इस (हासा करने आहलें दे लागै बौहने दी) सूत च यकीनन उंदे आंगर समझे जागे ओ। अल्लाह मुनाफ़िक़े ते काफ़रें गी यकीनन ज्हनम च किट्ठे करियै रौहग ॥ 141 ॥

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ أَنْ إِذَا
سَمِعْتُمْ آيَاتَ اللَّهِ يَكْفُرُ بِهَا وَيَسْتَهْزِئُ بِهَا
فَلَا تَقْعُدُوا مَعَهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا فِي
حَدِيثِ عَيْرِهِ ۗ إِنَّكُمْ إِذَا أَنشَأْتُمْ
اللَّهَ جَائِعَ الْمُفْقِينَ وَالْكَافِرِينَ
فِي جَهَنَّمَ جَمِيعًا ۝

(उनें मुनाफ़िक़े गी) जेहके थुआड़े बारै तबाही दे इन्तजार च रौहदे न ते जेकर तुसेंगी अल्लाह पासेआ कोई जीत हासल होऐ तां (तुसें गी) आखदे न जे क्या अस थुआड़े कनै नथे ते जेकर काफ़रें गी (जीत दा) कोई हिस्सा मिलै तां (उनें गी) आखदे न जे क्या अस तुंदे पर ग़ालिब नथे आई गेदे ते (असें) तुसें गी मोमिनें शा (नथा) बचाया। इस बारै अल्लाह थुआड़े बशकार क्यामत आहलै रोज फ़ैसला करग ते अल्लाह काफ़रें गी मोमिनें पर कदें बी गल्बा नेई देग ॥ 142 ॥ (रुकू 20/17)

الَّذِينَ يَتَرَبَّصُونَ بِكُمْ ۚ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ
فَتْحٌ مِنَ اللَّهِ قَالُوا أَلَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ ۗ
وَإِنْ كَانَ لِلْكَافِرِينَ نَصِيبٌ ۙ قَالُوا أَلَمْ
نَسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنْكُمْ وَنَمْنَعُكُمْ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ ۗ قَالَ اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ ۗ وَكُنْ يَجْعَلُ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ عَلَى
الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا ۝

मुनाफ़िक़ यकीनन अल्लाह गी धोखा देना चांहेदे न ते ओह उनेंगी उंदे धोखे दी स'जा देग ते जिसलै ओह नमाज़ (पासै जाने) आस्तै खड़ोंदे न तां सुस्ती कनै खड़ोंदे न। ओह

إِنَّ الْمُفْقِينَ يَخْدَعُونَ اللَّهَ وَهُوَ
خَادِعُهُمْ ۗ وَإِذَا قَامُوا إِلَى الصَّلَاةِ
قَامُوا كَسَالَىٰ ۙ يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا

लोकें गी दखावा दसदे न ते अल्लाह गी घट्टे
गै चेला करदे न ॥ 143 ॥

उंदी हालत (अल्लाह दे ध्यान ते सुस्ती दे)
बिच्च-बिच्च होंदी ऐ। नां ओह् इंदे (इनें
मोमिनें) कन्नै न ते नां ओह् उंदे (काफरे)
कन्नै न ते जिसी अल्लाह हलाक करी देऐ तूं
ओहदे आस्तै कदें बी (मुक्ति दा) कोई रस्ता
नेई पागा ॥ 144 ॥

हे ईमानदारो! मोमिनें गी छोड़ियै काफरे गी
(अपना) दोस्त नेई बनाओ। क्या तुस चांहदे
ओ जे खुदा गी अपने खलाफ खु'ल्ले
(खु'ल्ले) दोश लाने दा मौका देओ ॥ 145 ॥

मुनाफिक यकीनन जहन्नम दी डुग्हाई दे सारे
शा ख'लके हिस्से च होडन ते तूं कदें बी
(कुसैगी) उंदा मददगार नेई पागा ॥ 146 ॥

सिवाए उनें लोकें दे जिनें तोबा (पच्छोताऽ)
करी लैती ते अपना सुधार करी लैता ते अल्लाह
दे राहें (अपनी) पहाजत चाही ते अपनी
अबादत गी अल्लाह आस्तै गै खास करी
दिता। इस आस्तै एह लोक मोमिनें च शामिल
न ते अल्लाह मोमिनें गी तौले गै बौहत बड्डा
अजर / सिला देग ॥ 147 ॥

जेकर तुस शुकर करो ते ईमान लेई आओ तां
अल्लाह तुसें गी अजाब देइयै केह करग? ते
अल्लाह (ते) कदरदान ते बौहत जानने आहला
ऐ ॥ 148 ॥

يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٣٧﴾

مَذْبَدَيْنِ بَيْنَ ذَلِكَ ۗ لَا إِلَى
هُوَاءَ وَلَا إِلَى هُوَاءٍ ۗ وَمَنْ يَصِلِ
اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ﴿١٣٨﴾

يَأْيُهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا
الْكُفْرَيْنَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ
الْمُؤْمِنِينَ ۗ أَتُرِيدُونَ أَنْ تَجْعَلُوا لِلَّهِ
عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا مُبِينًا ﴿١٣٩﴾

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الذَّرِكِ الْأَسْفَلِ مِنَ
النَّارِ ۗ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيرًا ﴿١٤٠﴾

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا
بِاللَّهِ وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلَّهِ فَأُولَٰئِكَ
مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ۗ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللَّهُ
الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١٤١﴾

مَا يَفْعَلُ اللَّهُ بِعَدَابِكُمْ إِنْ
سَكَرْتُمْ وَآمَنْتُمْ ۗ وَكَانَ اللَّهُ
شَاكِرًا عَلِيمًا ﴿١٤٢﴾

अल्लाह बुरी गल्ला दे प्रकट करने गी पसंद नेई करदा, पर जेहदे पर जुलम कीता गेदा होऐ (ओह उस जुलम गी जाहर करी सकदा ऐ) ते अल्लाह बौहत सुनने आहला (ते) बौहत जानने आहला ऐ ॥ 149 ॥

जेकर तुस कुसै नेकी गी जाहर करो जां उसी छपाली जां (कुसै दी) बदी/बुराई गी माफ करो तां (समझी लैओ जे) अल्लाह यकीनन बौहत माफ करने आहला (ते) बौहत शक्तिशाली ऐ ॥ 150 ॥

जेहके लोक अल्लाह दा ते उसदे रसूलें दा इन्कार करदे न ते अल्लाह ते उसदे रसूलें दे बशकार फर्क (विभेद) करना चांहेदे न ते गलांदे न जे अस केइयें (रसूलें) गी मनगे ते केइयें दा इन्कार करगे ते चांहेदे न जे इस दे बिच्चा दा कोई रस्ता अखत्वार करन ॥ 151 ॥

ओह लोक यकीनन पक्के काफर न ते काफरें आस्तै असें अपमानजनक अजाब त्यार कीते दा ऐ ॥ 152 ॥

ते जेहके लोक अल्लाह ते उसदे (सारे) रसूलें पर ईमान लेई आए ते उनें इंदे (रसूलें) चा कुसै इक च (बी) फर्क नेई कीता। ओह लोक ऐसे न जे ओह उनेंगी तौले गै उंदे सिले प्रदान करा ते अल्लाह बौहत बखाने आहला (ते) बार-बार हैम करने आहला ऐ ॥ 153 ॥ (स्कू 21/1)

अहले कताब¹ तेरे शा पुछदे न जे तूं उंदे पर गासै थमां इक कताब नाजल करै (एहदे पर तज्जब नेई कर की जे) उनें मूसा गी इस शा बी बड्डा सुआल कीता हा। उनें उसी गलाया

لَا يُحِبُّ اللَّهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْرِ مِنَ الْقَوْلِ إِلَّا مَنْ ظَلَمَ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ۝

اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تَخْفَوْا عَنْ سُوْرِ فَإِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ۝

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُفْرِقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهِ وَيَقُوْلُوْنَ نُوْمٌ مِّنْ بَعْضٍ وَنَكَفُرُ بِبَعْضٍ لَا يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَمْسُخُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا وَاَعْتَدْنَا لِّلْكَٰفِرِيْنَ عَذٰبًا مَّهِِيْنًا ۝

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهِ وَلَمْ يُفْرِقُوْا بَيْنَ اٰحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

يَسْئَلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوسٰى الْكَبِيْرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْا اِنَّا نَالِلُ اللّٰهَ جَهْرًا فَاَخَذْتَهُمْ

1. अहले कताब दा मतलब ईसाई ते यहूदी न, पर इस धाहरा पर सिर्फ यहूदी अभीष्ट न, की जे अगें इस गल्ला दा बर्णन ऐ जे ओह हजरत मर्यम पर झुटा आरोप लांदे हे ते इनें हजरत मसीह दी सलीब राहें हत्या दी कोशश कीती ते एह यहूदियें दा गै कुकर्म हा, ईसाइयें दा नेई।

हा जे तू असें गी अल्लाह दे सामधाम दर्शन कराऽ। उसलै उंदे जुलम दी ब'जा करी उनेंगी घातक अजाब नै पकड़ी लैता ते उनें बच्छे गी जिसलै जे उंदे कश खु'ल्ले-डु'ल्ले नशान आई चुके दे हे (अपना) उपास्य बनाई लैता। पही असें एह (कसूर) बी दरगुजर करी दिता ते असें मूसा गी खु'ल्ला (खु'ल्ला) गल्बा (प्रभुत्व) प्रदान कीता ॥ 154 ॥

ते असें उंदे शा द्रिढ़ प्रतिज्ञा / सघंद लैंदे होई उंदे पर तूर' गी उच्चा कीता ते असें उनेंगी गलाया जे इस दरोआजे च पूरी फरमांबरदारी करदे होई दाखल होई जाओ ते असें उनें गी (एह बी) गलाया जे सब्त / शनिवार (दे बारे) च कोई ज्यादती नेई करो ते असें उंदे शा इक पक्की सघंद लैती ॥ 155 ॥

पही उंदे अपने बा'यदे गी तोड़ी देने (दी ब'जा करी) ते उंदे अल्लाह दी आयतें दा इन्कार करने ते उंदे नबियें गी कतल² करने दी बिला-ब'जा कोशश (दी ब'जा करी) ते एह (गल्ल) आखने दी ब'जा करी जे साढ़े दिल परदें च न (परदे च) नेई बल्के अल्लाह नै उंदे कुफर दी ब'जा करी उंदे (दिलें) पर मोहर लाई दिती दी ऐ इस आस्तै ओह ईमान बिल्कुल नेई आहन्दे ॥ 156 ॥

इसदे अलावा उंदे कुफर (दी ब'जा करी) ते उंदे मर्यम पर (इक बौहत) बड्डा झूठा इलजाम³ लाने दी ब'जा करी ॥ 157 ॥

الصُّحُقَةَ يُظْلِمُهُمْ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ
مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ فَعَفَوْنَا عَنْ
ذَلِكَ وَأَيُّنَا مُوسَى سُلْطٰنًا مُّبِينًا ﴿١٥٤﴾

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّورَ بِمِيثَاقِهِمْ وَقُلْنَا
لَهُمْ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُلْنَا لَهُمْ
لَا تَعْدُوا فِي السَّبْتِ وَأَحَذْنَا مِنْهُمْ
مِيثَاقًا عَظِيمًا ﴿١٥٥﴾

فَبِمَا تَقْضِيهِمْ مِيثَاقَهُمْ وَكَفَرِهِمْ بِآيَاتِ
اللَّهِ وَقَتْلِهِمُ الْأَنْبِيَاءَ بَعْدِ حَقِّ وَقَوْلِهِمْ
قَوْلُومًا عُتِفَ لَبْلِ طَبَعِ اللَّهِ عَلَيْهَا
بِكْفَرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٥٦﴾

وَبِكْفَرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلَى مَرْيَمَ
بُهْتَانًا عَظِيمًا ﴿١٥٧﴾

1. यानी उनें गी तूर पर्वत कश लेईं गे ते उनेंगी अपने सामनै उच्चा पर्वत लम्बन लगा। हजरत अबूबकर आखदे न जे असें गी सामनै इक उच्ची चटान लम्बी जिसदा साया हा (कुखारी शरीफ, बाब हिज्रत)।
2. इस थाहरा पर सारे नबियें दी हत्या करने दा जिकर ऐ ते सारे इतिहास इस गल्ला पर सैहमत न जे सारे नबियें दी हत्या यहूदियें नेई कीती। इस आस्तै इस थाहरै पर हत्या करने दी कोशशें दा जिकर ऐ। इस ज'गा पर हत्या दा अर्थ हत्या करने दा इशदा ऐ, जे ऐसे कश्ट ते दुख-तकलीफां न जिंदा नतीजा अक्सर हत्या करना निकलदा ऐ।
3. दिक्खो सूर: 'निसा' टिप्पणी आयत नं० 154

ते उंदे (एह गल्ल) आखने दी ब'जा करी जे अल्लाह दे रसूल मसीह-ईसा पुत्तर-मर्यम गी असें यकीनन कतल करी दिता ऐ (एह स'जा उनेंगी मिली ऐ) हालांके नां उनें उसी कतल कीता ते नां उनें उसी सलीब पर टंगियै मारेआ, पर उंदे पर ओह मामला शक्की करार दिता गेआ ते जि'भें लोकेँ इस बारे मत-भेद कीता ऐ ओह यकीनन उस दे बारे आपूं शक्क¹/दुबधा च न ते कोई यकीनी इलम नेई रखदे पर सिर्फ ख्याली गल्लें दे पिच्छें लगगे दे न ते उनें कदें बी उसी कतल नेई कीता ॥ 158 ॥

बल्के अल्लाह नै उसी अपने हजूर च सम्मान जोग ज'गा बख्शी की जे अल्लाह गालिब ते हिक्मत आह्ला ऐ ॥ 159 ॥

अहले कताब चा इक बी नेई जो इस (घटना) पर अपनी मौती² शा पैहलें ईमान नेई आहनदा र'वै ते ओह क्यामत आहलै दिन उंदे पर गुआह होग ॥ 160 ॥

इस आस्तै (उस) जुलम दी ब'जा करी जेहका यहूदियें आहले पासेआ होआ असें ओह पवित्र पदार्थ जेहके (पैहलें) उंदे आस्तै ल्हाल करार दित्ते गेदे हे, उंदे आस्तै र'हाम³ करी दित्ते ते (इस दे अलावा) पही अल्लाह दे रस्ते शा मते-हारें गी रोकने कारण (उनें गी एह स'जा मिली) ॥ 161 ॥

وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلْبُوهُ وَلَكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ احْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا ۝۱۵۸

بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝۱۵۹

وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ الْإِلْيُومَ مَنْ بِهِ قَبْلِ مَوْتِهِ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِدًا ۝۱۶۰

فَقِظْ لِمَنْ مِنَ الَّذِينَ هَادُوا حَرَمًا عَلَيْهِمْ طَبِيتٍ أُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا ۝۱۶۱

1. यानी सब हालात हजरत मसीह दे सलीब पर मरने दे बरुद्ध हे, पर यहूदी चांहदे हे जे मसीह सलीब कर दम त्रोजन इस आस्तै ओह अपने गै भरमै दे शकार होई गे ते ओह मसीह दी सलीब पर मोत होई जाने दा विश्वास करदे रेह ।
2. यानी अहले कताब चा यहूदी ते ईसाई अपनी मौती शा पैहलें एह मनदे रौहगन जे मसीह सलीबा पर मरी गे । यहूदी इस कारण जे ओह मसीह गी लानती सिद्ध करना चांहदे हे ते ईसाई इस आस्तै जे ओह कफ़रग्रा दी नौह एहदे पर रखदे न । अल्लाह आखदा ऐ जे जिसलें उंदे चा कोई शख्स मरग तां ओहदे पर एह भेद खु ल्लोनी जाग जे हजरत मसीह दी मौत सलीब पर नेई होई बल्के ओह सलीब परा जाँदे गै तुआरी लैते गे हे ।
3. यानी हजरत मसीह दी शिक्षा दे इन्कार कारण उंदे आस्तै धर्म दा दरोआजा बंद करी दिता गेआ हा ।

ते उंदे सूदी कारोबार करने दी ब'जा करी बी, हालांके उनें गी इस थमां रोकेआ¹ गोदा हा। (इसदे अलावा) लोकें दे माल गी उंदे द्वारा न्हक्क खाने दी ब'जा करी (उनेंगी एह स'जा थ्दोई) ते असें उंदे चा मुन्करें आस्तै दर्दनाक अजाब त्यार कीते दा ऐ ॥ 162 ॥

पर इंदे (यहूदियें) चा जेहके लोक ज्ञान च पक्के न ओह ते (उंदे अलावा) मोमिन (मुसलमान) उस (ईशवाणी) पर ईमान आहनदे न जो तेरे पर उतारी गेदी ऐ ते जे (किश) तेरे शा पैहलें उतारेआ गेआ हा ते (खास तौरा पर) नमाज गी बिधिवत पढ़ने आहले ते जकात/दान देने आहले ते अल्लाह पर ते बा'द च औने आहले दिनें पर ईमान आहनने आहले लोकें गी अस जरूर (बौहत) बड्डा अजर देगे ॥ 163 ॥ (रुकू 22/2)

जिस चाल्ली असें नूह ते उसदे बा'द (दूए) सारे नबियें पर वह्दी (नाजल) कीती ही, यकीनन तेरे पर (बी) असें वह्दी (नाजल) कीती ऐ ते असें इब्राहीम ते इस्माईल ते इस्हाक ते याकूब ते (उसदी) उलाद ते ईसा ते अय्यूब ते यूनस ते हाारून ते सुलेमान पर (बी) वह्दी (नाजल) कीती ही ते असें दारुद गी (बी) इक कताब दिती ही ॥ 164 ॥

ते केई ऐसे रसूल न जिंदी खबर अस (इस

وَ أَخَذَهُمُ الرَّبُّوْا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَأَكْلِهِمْ
أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ۗ وَأَعْتَدْنَا
لِلْكَافِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا لَّيْمًا ۝

لَكِنِ الرَّسُوْلُوْنَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ
وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ
وَمَا أَنْزَلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيمِيْنَ الصَّلٰوةَ
وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۗ أُولَٰئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ
أَجْرًا عَظِيْمًا ۝

إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَى نُوحٍ
وَالنَّبِيِّنَ مِنْ بَعْدِهِ ۗ وَأَوْحَيْنَا إِلَى
إِبْرٰهِيْمَ وَإِسْمٰعِيْلَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ
وَالْأَسْبَاطِ وَعَيْسَىٰ وَأَيُّوْبَ وَيُوْنُسَ
وَهٰرُونَ وَسُلَيْمٰنَ ۗ وَآتَيْنَا دَاوُدَ رِجْزًا
وَرِسَالًا ۖ قَدْ قَضٰصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ

1. निर्गमन 22:25 ते लैव्यव्यवस्था 25:36:37 च यहूदियें शा ब्याज लैना नजायज करार दिता गोदा ऐ, पर व्यवस्था विवरण नां5 दी कताब 23:20 च यहूदियें गी छोड़ियें दूए लोकें शा इसाइलियें गी ब्याज लैने दी अजाजत दिती गेदी ऐ। असल च एह शब्दें दा हेर-फेर ऐ जेहका कुरआन करीम दे कथन मूजब यहूदियें अपने कारोबार आस्तै बाइबिल च कीते दा ऐ नेई ते अल्लाह नै उनें गी हर चाल्ली दे ब्याजी कारोबार शा रोके दा हा। इस आस्तै जे किश बाइबिल च लिखेआ गोदा ऐ ओह यहूदियें पासेआ शब्दें च हेर-फेर ते तबदीली कारण ऐ।

शा पैहलें) तुगी देख चुके दे आं ते केई ऐसे रसूल न जिंदा जिकर असें तेरे कनै नेई कीता ते अल्लाह नै मूसा कनै चंगी-चाल्ली बड़े शैल तरीके नै गल्ल-बात कीती ही ॥ 165 ॥

असें उनें गी (यानी मूसा कनै जिकरे गेदे रसूलें गी) शुभ-समाचार देने आहले ते डराने आहले रसूल बनाइयै भेजेआ हा तां जे लोकें दा इनें रसूलें दे (अवतार दे) बा'द अल्लाह पर कोई आरोप नेई र'वै ते अल्लाह गालिब (ते) हिक्मत आहला ऐ ॥ 166 ॥

पर अल्लाह उस (कलाम/गल्ल-बात) राहें जो उसनै तेरे पर उतारे दा ऐ गुआही दिंदा ऐ जे उसनै उसी अपने ज्ञान दे अधार पर उतारे दा ऐ ते फरिश्ते (बी) गुआही दिंदे न ते अल्लाह दी गुआही सारें शा उप्पर ऐ ॥ 167 ॥

जिनें लोकें कुफर अखत्यार कीता ऐ ते (लोकें गी) अल्लाह दे रस्ते शा रोकेआ ऐ ओह यकीनन परले दरजे दे गुमराह होई गेदे न ॥ 168 ॥

जिनें कुफर अखत्यार कीता ऐ ते जुलम कीता ऐ अल्लाह उनें गी कदें बी माफ नेई करी सकदा ते नां ओह उनेंगी ज्हन्म दे सिवा कोई रस्ता दस्सी सकदा ऐ ॥ 169 ॥

ओह उस (ज्हन्म) च इक (लम्मे) अरसे तक पेदे रौहगन ते एह (गल्ल) अल्लाह आस्तै असान ऐ ॥ 170 ॥

हे लोको! एह रसूल थुआड़े कश थुआड़े रब्ब पासेआ सच्च लेइयै आई चुके दा ऐ इस आस्तै तुस ईमान लेई आओ। (एह) थुआड़े आस्तै

وَرَسُولًا لَّمْ تَقْضُصْهُمْ عَلَيْكَ ۖ وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَى تَكْلِيمًا ﴿٦٥﴾

رُسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لَعَلَّ
يَكُونُ لِلنَّاسِ عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ
وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿٦٦﴾

لَكِنِ اللَّهُ يَشْهَدُ بِمَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ أَنْزَلَهُ
يَعْلَمُهُ ۗ وَالْمَلِكَةُ يَشْهَدُونَ ۖ وَكَفَى بِاللَّهِ
شَهِيدًا ﴿٦٧﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
قَدْ ضَلُّوا ضَلًّا بَعِيدًا ﴿٦٨﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا لَمْ يَكُنِ اللَّهُ
لِيُغْفِرْ لَهُمْ وَلَا لِيُهْدِيَهُمْ طَرِيقًا ﴿٦٩﴾

إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا
وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿٧٠﴾

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الرَّسُولُ بِالْحَقِّ
مِنْ رَبِّكُمْ فَآمِنُوا خَيْرًا لَكُمْ ۗ وَإِنْ

अच्छा होग ते जेकर तुस इन्कार करगे ओ तां (चेता रक्खो जे) जे किश गासैं ते धरती च ऐ यकीनन अल्लाह दा गै ऐ ते अल्लाह बौहत जानने आह्ला (ते) हिक्मत आह्ला ऐ ॥ 171 ॥

हे अहले कताब¹! तुस अपने धर्म (दे बारे) च हद्द शा नेई बधो ते अल्लाह दे बारे च सच्ची गल्ला दे सिवा (किश) नेई गलाऽ करो। मर्यम दा पुतर ईसा मसीह अल्लाह दा सिर्फ (इक) रसूल हा ते उसदी (इक) बशारत² ही जो उसनै मर्यम पर नाज़ल कीती ही ते ओहदे पासेआ इक रैहमत ही। इस आस्तै तुस अल्लाह (पर) ते उसदे सारे रसूलें पर ईमान ल्याओ ते (इय्यां) नेई आखो जे (खुदा) त्रै न (इस गल्ला शा) बाज़ आई जाओ (एह) थुआड़े आस्तै बेहतर होग। अल्लाह गै इक इक्कला उपास्य ऐ ओह (इस गल्ला शा) पवित्तर ऐ जे ओहदी कोई उलाद होऐ। जे किश गासैं ते धरती च ऐ (सब) उससै दा ऐ ते अल्लाह दी हफाजत दे बा'द होर कुसै हफाजत दी लोड़ नेई ॥ 172 ॥ (रुकू 23/3)

मसीह कदें बी इस (गल्ला) दा बुरा नेई मनाग जे ओह अल्लाह दा इक बंदा (भगत) समझेआ जा ते नां (गै) करीबी फरिश्ते (इस गल्ला दा बुरा मनाडन) ते जेहके (लोक) उस दी अबादत दा बुरा मनान ते घमंड करन ओह (यानी खुदा) जरूर उनें सारें गी अपने हजूर च किट्ठा करग ॥ 173 ॥

تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٦﴾

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ وَلَا
تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ ۗ إِنَّمَا الْمَسِيحُ
عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَلَّمْتُهُ
أَلْقَمَهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِنْهُ فَآمَنُوا
بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۗ وَلَا تَقُولُوا ثَلَاثَةً ۗ انْتَهَوْا
حَيْرَاتِكُمْ ۗ إِنَّمَا اللَّهُ إِلَهٌ وَاحِدٌ سُبْحَانَهُ
أَنْ يَكُونَ لَهُ وَكَدٌّ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ
وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿٦﴾

لَنْ يَسْتَنْكِفَ الْمَسِيحُ أَنْ يَكُونَ عَبْدًا لِلَّهِ
وَلَا الْمَلَائِكَةُ الْمُقَرَّبُونَ ۗ وَمَنْ يَسْتَنْكِفْ
عَنْ عِبَادَتِهِمْ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرْهُمْ إِيَّاهُ
جَمِيعًا ﴿٦﴾

1. इस ज'गा पर अहले कताब दा अर्थ ईसाई न, यहूदी नेई, की जे एह मन्तव्य जिंदा खंडन कीता गेदा ऐ, ईसाइयें दा ऐ।

2. मूल शब्द 'कलिमा' दा अर्थ बशारत यानी शुभ समाचार बी होंदा ऐ। (दिकखो फतहलुब्ब्यान)

फी जेहके लोक मोमिन हे ते उनें नेक (ते ईमान दे मताबक) कर्म कीते हे उनेंगी ओह उंदे पूरे दे पूरे बदले देग ते अपनी किरपा कनै उनें गी (होर बी) ज्यादा देग ते जिनें लोकें बुरा मनाया हा ते घमंड कीता हा उनें गी ओह दर्दनाक अजाब देग ते ओह अल्लाह दे सिवा नां (कुसै गी) अपना दोस्त पाउन ते नां मददगार ॥ 174 ॥

हे लोको! थुआड़े कश थुआड़े रब्ब पासेआ इक खुल्ली दलील आई चुकी दी ऐ ते असें तेरे पासै (इक अत्त) उज्जल नूर तुआरे दा ऐ ॥ 175 ॥

इस आस्तै जेहके लोक अल्लाह पर ईमान ल्याए दे न ते उनें ओहदे राहें (अपना) बचाऽ कीता ऐ उनें गी ओह जरूर अपनी इक बड्डी रहमत ते बड्डी किरपा च दाखल करग ते उनें गी अपनी बक्खी औने आहली इक सिद्धी राह दस्सग ॥ 176 ॥

ओह तेरे शा (इक चाल्ली दे कलाला¹ बारै) फतवा पुछदे न, तू आखी दे जे अल्लाह तुसेंगी (ऐसे) कलाला दे बारै हुकम सुनांदा ऐ। जेकर कोई ऐसा शख्स मरी जा जे ओहदी उलाद नेई होऐ ते ओहदी इक भैन होऐ तां जे किश उसनै छोड़े दा होऐ ओहदा अद्ध उस (भैनु) दा होग ते जेकर (ओह भैन मरी जा ते) ओहदी उलाद नेई होऐ तां ओह (यानी उसदा भ्राऽ) उस (दे सारे माल) दा

فَأَمَّا الَّذِينَ أَمُوا وَعَمَلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۗ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنَفُوا وَاسْتَكْبَرُوا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۗ وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ بُرْهَانٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا مُبِينًا ۝

فَأَمَّا الَّذِينَ أَمَنُوا بِاللَّهِ وَاعْتَصَمُوا بِهِ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِي رَحْمَةٍ مِنْهُ وَفَضْلٍ ۗ وَيَهْدِيهِمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمًا ۝

يَسْتَفْتُونَكَ ۗ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلِمَةِ ۗ إِنَّ أَمْرًا وَأَهْلَكَ لَيْسَ لَهُ وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۗ وَهُوَ يَرِيهَا إِنْ لَمْ يَكُنْ لَهَا وَلَدٌ فَإِنْ كَانَتْ أَثْتَيْنِ فَلَهُمَا الشُّلْثُنِ مِمَّا تَرَكَ ۗ

1. मेरे इक उस्ताद गलांदे होंदे हे जे इस आयत च 'कलाला' दा अर्थ हजरत मसीह न, की जे पैहलें उंदा गै जिकर ऐ। कलाला दे छोड़े दे माल दे बटवारे दे बारे च इक आदेश सूर: निसा आयत 13 च आए दा ऐ जिसदा भाव एह हा जे जेकर कलाला दी मौत होई जा ते जेकर उसदी माऊ चा भैनां-भ्राऽ होन तां उनें गी उस माल दा छेमां जां त्रिय्या हिस्सा थ्दोग पर इस आयत च ऐसे कलाला दा जिकर ऐ जेहदे भैनां-भ्राऽ माता ते पिता दौनें चा होन जां सिर्फ पिता चा।

बारस होग ते जेकर दो भैनां होन ते जे किश उस (भ्राऽ) नै छोड़े दा होऐ उसदा दो बटा त्रै (2/3) हिस्सा उनें भैनें दा होग ते जेकर ओह (बारस) भ्राऽ-भैनां होन, मड़द (बी) ते जनानियां (बी) तां (उंदे चा) मड़दै दा (हिस्सा) द'ऊं जनानियेँ दे हिस्से दे बराबर होग। अल्लाह थुआड़े आस्तै (एह गल्लां) थुआड़े गुमराह होई जाने (दे खदशे) दी बिना पर ब्यान करदा ऐ ते अल्लाह हर इक गल्ला गी खूब जानदा ऐ ॥ 177 ॥ (रुकू 24/4)

وَإِنْ كَانُوا إِخْوَةً رِّجَالًا وَنِسَاءً فَلِلَّذَكَرِ
مِثْلَ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ ۗ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ
أَنْ تَصَلُّوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٧٧﴾

ooo

سُورَةُ الْمَائِدَةِ مَدِينَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ مِائَةٌ وَاحِدٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَسِتَّةَ عَشَرَ كُتُوبًا

सूर: अल् माइद:

एह सूर: मदनी¹ ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत

इस दियां इक सौ इक्की आयतां ते सोलां रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांS लेइयै (पढ़ना) जो बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

हे ईमानदारो! अपने बा'यदे गी पूरा करो। धुआड़े आस्तै चरिंदें (चरने आहलें) दी किसमा दे चौखर सिवाए उंदे जेहके तुसंगी (कुरआन च) पढ़ियै सुनाए जाडन, ल्हाल करार दित्ते गेदे न, पर शर्त एह ऐ जे तुस (इस आज्ञा कारण) एहराम (हाजी दा लाबा) दी हालत च शकार करना जायज नैई समझी लैओ। अल्लाह यकीनन जो चांहदा ऐ फैसला करदा ऐ ॥ 2 ॥

हे ईमानदारो! अल्लाह दे (निश्चत कीते दे) नशानें दा अपमान नैई करो ते नां आदर आहले म्हीन्ने दा ते नां (हरम पासै लेई जाने आहली) कुरबानी दा ते नां (ऐसी कुरबानियें दा) जिंदे गलें च हरम आस्तै कुरबान होने दे नशान दे तौरै पर हार पुआए गेदे होन ते नां बैतुलहराम आहले पासै जाने आहले लोकें दा जेहके अपने रब्ब दी किरपा ते उसदी खुशी दी तलाश च न ते जिसलै तुस एहराम खोहल्ली देओ तां

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَوْفُوا بِالْعُقُودِ ۗ
أُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيمَةُ الْأَنْعَامِ إِلَّا مَا يُبْتَلَى
عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَأَنْتُمْ حُرْمٌ
إِنَّ اللَّهَ يُحْكِمُ مَا يُرِيدُ ②

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْلُوا شَعَائِرَ اللَّهِ
وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَائِدَ
وَلَا آمِنِينَ الْبَيْتِ الْحَرَامِ يَبْتَغُونَ فَضْلًا
مِنْ رَبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ۗ وَإِذَا حَلَلْتُمْ
فَأَصْطَادُوا ۗ وَلَا يُجْرِمَكُمُ شَتَاتُ
قَوْمٍ أَنْ صَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ أَنْ

1. एह सूर: मदनी ऐ। हुदैबिय: दे समझोते परैत परतोदे मौकै नाजल होई ही। इस दा किश हिस्सा मक्का विजय दे साल च ते किश हिस्सा हज्जतुलविदा च नाजल होआ हा।

(बे-शक्क) शकार करो ते कुसै कौम दी (थुआड़े कनै एह) दुश्मनी जे उनें तुसेंगी आदरनीय मस्जिद हराम (काबा) शा रोकेआ हा, तुसेंगी इस गल्ला पर मजबूर नेई करी देऐ जे तुस ज्यादती करो ते तुस नेकी ते संयम (दे कर्मे) च आपस च (इक-दूए दी) मदद करो ते गुनाह ते ज्यादती (दियेँ गल्ले) च (इक-दूए दी) मदद नेई करा करो, ते अल्लाह दा संयम अखत्यार करो, अल्लाह दी स'जा यकीनन सख (हांदी) ऐ ॥ 3 ॥

थुआड़े आस्तै मरदाड़, खून, सुरै दा मास ते ओह (जानवर) जेहदे पर (जिबह करदे बेलै) अल्लाह दे सिवा (कुसै होरस दा) नांउ पुकारेआ गोदा होऐ जां गला घटोने कनै मेरे दा होऐ जां कुसै खुंढे हथ्यारै दे बार कनै मेरे दा होऐ जां उच्चि ज'गा परा रुत्कियै मेरे दा होऐ, जां सिड लगने कनै मेरे दा होऐ जां जिसी (कुसै) हिंसक पशु नै खादे दा होऐ, सिवाए इसदे जे जिसी मरने शा पुज्ज तुसें जिबह करी लेदा होऐ ते जिस (जानवर) गी कुसै मूरती दे सामनै जिबह कीते दा होऐ, र्हाम आखेआ गोदा ऐ ते तीरें राहें हिस्सा सेही करना (बी) ऐसा कम्म करना ना-फरमान्नी (च दाखल) ऐ। जेहके लोक मुकर न ओह अज्ज थुआड़े धर्म (गी नुकसान पुजाने) शा नामेद होई गेदे न। इस आस्तै तुस उंदे शा नेई डरो ते मेरे शा डरो। अज्ज मैं थुआड़े (फायदे) आस्तै थुआड़ा धर्म मकम्मल करी दिता ऐ ते थुआड़े उप्पर अपने उपकार (स्हान) गी पूरा करी दिता ऐ ते थुआड़े लेई धर्म दे तौरै पर इस्लाम गी पसंद कीता ऐ, पर जेहका शख्स भुक्खै (कारण) मजबूर होई जा ते ओह गुनाह आहले पासै झुकने आहला नेई होऐ (ते र्हाम कीती गोदी

تَعْتَدُوا وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ
وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ
وَاتَّقُوا اللَّهَ ۗ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

حَرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّيَّتَهُ وَالذَّمَّ وَكَلِمَةَ
الْخِزْيِيرِ وَمَا أَهَلَ لغيرِ اللَّهِ بِهِ
وَالْمُنْحَقَّةَ وَالْمَوْقُوذَةَ وَالْمُتَرَدِّيَةَ
وَالنَّطِيحَةَ وَمَا أَكَلَ السَّبْعُ إِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ
وَمَا ذَبَحَ عَلَى النَّصْبِ وَأَنْ تَسْتَقْسِمُوا
بِالْأَزْلَامِ ۗ ذَلِكُمْ فَسُقُ ۗ أَلْيَوْمِ يَسِ
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دِينِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ
وَاحْشَوْنَ ۗ أَلْيَوْمِ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ
وَأَتَمَّمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيْتُ
لَكُمْ الْإِسْلَامَ دِينًا فَمَنْ اضْطُرَّ فِي
مَحْضَةٍ غَيْرِ مَجَافٍ لِإِثْمٍ ۗ فَإِنَّ اللَّهَ
عَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

चीजें चा किश खाई लै) तां (चेता रक्खो जे) अल्लाह यकीनन (मजबूरी दी हालत च कीती गेदी गलतियें गी) बौहत बख्शने आह्ला (ते) बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 4 ॥

(मुसलमान) तेरे शा पुछदे न जे उंदे आस्तै केह (किश) ल्हाल ठरहाया गेदा ऐ तां गलाई दे जे थुआड़े आस्तै (सब) पवित्तर चीजां¹ ल्हाल ठरहाइयां गेदियां न ते (इसदे अलावा) शकारी जानवरें चा जिनेंगी तुस शकार करने दी शिक्षा देइयै सधारी लैओ। की जे तुस उनेंगी उस (इलम) राहें सखांदे ओ जो अल्लाह नै तुसेंगी सखाए दा² ऐ। इस आस्तै ओह जिस (शकार) गी थुआड़े आस्तै रोकी रक्खै ओहदे चा खाओ ते उस पर अल्लाह दा नांउ लेई लै करा करो ते अल्लाह दा संयम अख्त्यार करो, अल्लाह यकीनन बौहत तौले स्हाब लैने आह्ला ऐ ॥ 5 ॥

अज्ज थुआड़े आस्तै सब पवित्तर चीजां ल्हाल करी दित्तियां गेदियां न ते थुआड़े आस्तै उनें लोकें दा (पकाए दा) खाना³ जिनेंगी कताब दित्ती गेदी ही, ल्हाल ऐ ते थुआड़ा (पकाए दा) खाना उंदे आस्तै ल्हाल ऐ ते

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أَحَلَّ لَهُمْ قُلْ أَحَلَّ لَكُمْ
الطَّيِّبَاتُ وَمَا عَلَّمْتُم مِّنَ الْجَوَارِحِ
مَكَلَّيْنِ تَعْلَمُونَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ
فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا
اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ
سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

أَيُّومٍ أَحَلَّ لَكُمْ الطَّيِّبَاتُ وَطَعَامُ
الَّذِينَ أَوْتُوا الْكِتَابَ حَلَّ لَكُمْ
وَطَعَامُكُمْ حَلَّ لَهُمْ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ
الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الَّذِينَ أَوْتُوا

1. इस्लाम धर्म दा मूल सिद्धांत एह ऐ जे खाने आहली चीजां ल्हाल न पर शर्त एह ऐ जे ओह पवित्तर ते साफ होन यानी ओह सेहत ते चाल-चलन पर बुरा असर नैई पादियां होन ते समाज च उंदा खादा जाना अशांति दा कारण बी नैई बनै।
2. यानी सधारेआ गेदा शकारी जानवर, जेहका कम्म करदा ऐ ओह उस सखाने आहले दे नांउ कनै मन्सूब होग ते ओह इन्सान ऐ। इस आस्तै सधारे गेदे शकारी जानवर दा मारे दा शकार जिबह कीते गेदे दे बराबर होंदा ऐ। हदीस शरीफ च लिखे दा ऐ जे शकारी जानवर गी छोड़ने शा पैहलें बिस्मिल्लाह पढ़ी लै करा करो तां जे ओहदा मारे दा शकार ल्हाल करार दिते गेदे दे बराबर होई जा।
3. यानी उंदा जिबह कीता गेदा थुआड़े लेई ल्हाल ऐ, शर्त एह ऐ जे उंदे पर तकबीर पढ़ी लैती जा। (बुखारी किताबुस्सैद) एह आदेश इस आस्तै दिता जे तौरात दे मताबक हजरत मूसा दे अनुयायियें दे सारे भोजन बी ऊऐ न जिनेंगी इस्लाम नै जायज गलाए दा ऐ ते जेकर ईसाई हजरत ईसा दी शिक्षा मताबक तौरात दे आदेशें गी अपनात तां ओह बी इसै श्रेणी च आई जेदे न ते जेकर पता लागी जा जे ओह नजेज पदार्थें दा प्रयोग करदे न तां पही उस परिस्थिति मताबक फ़तवा (धर्म दा आदेश) लागू होग, सिर्फ यहूदी जां ईसाई होना काफी नैई होग, की जे केई पुराने ते नमें ईसाई फिरके तौरात दी शिक्षा गी अपनादे न।

पवित्तर/सती मोमिन जनानियां ते जिनें लोकें
गी तुंदे शा पैहलें कताब दिती गई ही उंदे
चा पवित्तर/सती जनानियां जिसलै जे तुस
उनेंगी नकाह करियै आहनदे ओ नां के
बदकारी आस्तै उकसाइयै ते नां (गै) गुप्त
दोस्त (रखेलां) बनाइयै, उनेंगी उंदे मैहर
देई देओ (थुआड़े आस्तै जायज न) ते
जेहका शख्स ईमान रखदे होई कुफर
(अखत्यार) करदा ऐ तां (समझो जे) उस
दे कर्म नश्ट होई गे ते ओह आखरत च
घाटा खाने आहलें चा होई गेआ ॥ 6 ॥
(रुकू 1/5)

हे ईमानदारो! जिसलै तुस नमाज पढ़ने लेई
उट्टो तां अपने मूह (बी) ते आरकें तक
अपने हत्थ (बी) धोई लै करा करो ते
अपने सिरें दा मसा करा करो ते गिट्टें तक
अपने पैर (बी धोई लै करा करो) ते जेकर
तुस जुनबी (भिट्टे) ओ तां न्हाई लै करो,
ते जेकर तुस कसरी (ओ) जां सफरै (दी
हालत) च ओ (ते तुस जुनबी ओ) जां तुंदे
चा कोई (शख्स) सचेता करियै आवै जां
तुसं जनानियें कनै संभोग बी कीते दा होऐ
ते तुसंगी पानी नेई मिलै, तां सुच्ची मिट्टी
कनै तयम्मूम करो ते ओहदे चा (सुच्ची
मिट्टी चा किश मिट्टी लेइयै) अपने मूहें
ते अपने हत्थें गी मलो। अल्लाह तुसंगी
किसै चाल्ली दा कश्ट नेई देना चांहदा, हां!
ओह तुसंगी पवित्तर करना ते तुंदे पर अपने
स्थान गी पूरा करना चांहदा ऐ, तां जे तुस
शुकर करो ॥ 7 ॥

الْكِتَابِ مِنْ قَبْلِكُمْ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ
أُجُورَهُنَّ مُحْصِنِينَ غَيْرَ مُسْفِحِينَ
وَلَا مُتَّخِذِيْ أَخْدَانٍ ۗ وَمَنْ يَكْفُرْ
بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ وَهُوَ فِي
الْآخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ
فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى
الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ
وَارْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ۗ وَاِنْ كُنْتُمْ
جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ۗ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰى اَوْ
عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَاءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِنَ الْغَايِبِ
اَوْ لَمَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَاءً
فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَاَمْسَحُوْا
بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ مِنْهُ ۗ مَا يَرِيْدُ
اللّٰهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ
يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وِلِيَتَّمَ نِعْمَتَهُ
عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝

ते जेहका स्थान अल्लाह दा तुंदे उप्पर ऐ (उसी बी) ते उस पक्के बा'यदे गो (बी) जेहड़ा उसनै तुंदे शा (उस बेलै) लैता हा जिसलै तुसँ गलाया हा जे असँ सुनी लैता ऐ ते अस फरमांबरदार होई गेदे आं, चेता रक्खो ते अल्लाह दा संयम अखत्यार करो, अल्लाह दिलें दियें गल्लें गो (बी) चंगी चाल्ती जानदा ऐ ॥ 8 ॥

हे ईमानदारो! तुस इन्साफ कनै गुआही दिंदे होई अल्लाह (दी खुशी हासल करने) आस्तै खड़े होई जाओ, ते कुसै कौम दी दुश्मनी तुसँगी कदें बी इस गल्ला पर त्यार नेई करी देऐ जे तुस इन्साफ नेई करो। तुस न्यांऽ करो, ओह संयम दे ज्यादा करीब ऐ ते अल्लाह दा संयम अखत्यार करो। जो किश तुस करदे ओ अल्लाह उसी यकीनन जानदा ऐ ॥ 9 ॥

जेहके लोक ईमान ल्याए दे न ते उनें नेक कर्म कीते न उंदे कनै अल्लाह नै बा'यदा कीते दा ऐ जे उंदे आस्तै बख्शाश ते (बौहत्) बड्डा अजर (निश्चत) ऐ ॥ 10 ॥

ते जिनें लोकें कुफर अखत्यार कीता ऐ ते साढ़ी आयतें गो झुठलाए दा ऐ ओह लोक नरक च जाने आहले न ॥ 11 ॥

हे ईमानदारो! तुस अल्लाह दी अपने उप्पर नैमत (उपकार) गो याद करो जेहकी उसनै तुंदे पर (उस बेलै) कीती ही जिसलै जे इक कौम दे लोकें ध्याया हा जे ओह तुंदे पर हत्थ बधाऽ (यानी अत्याचार करै)। उसलै उसनै

وَأَذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ
الَّذِي وَاثَقَكُمْ بِهِ إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا
وَاطَعْنَا وَأَتَقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ
الصُّدُورِ ⑤

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوْمِينَ لِلَّهِ
شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَا
نُ قَوْمٍ عَلَىٰ آلَاتٍ تَعْدِلُونَ إِيَّاهُ هُوَ
أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ
خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ⑥

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ⑦

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ⑧

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ
عَلَيْكُمْ إِذْ هُمْ قَوْمٌ لَّا يَبْسُطُونَ إِلَيْكُمْ
أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاتَّقُوا

उंदे हत्थें गी थुआड़े शा रोकी लैता। इस आस्तै अल्लाह दा संयम अखत्यार करो ते मोमिनं गी अल्लाह पर गै भरोसा रक्खना चाही दा ॥ 12 ॥ (रुकू 2/6)

ते अल्लाह नै यकीनन बनी इस्राईल शा पक्का बा 'यदा लैते दा ऐ ते असें उंदे चा बारां सरदार खड़े कीते हे ते उनेंगी (अल्लाह नै) गलाया हा (जे) जेकर तुस नमाज गी सुआरियै पढ़गे ओ ते जकात देगे ओ ते मेरे रसूलें पर ईमान आहनगे ओ ते उंदी हर चाल्ली दी मदाद करगे ओ ते तुस अल्लाह गी (अपने माल दा) किश हिस्सा कटियै करजे दे तौरै पर देगेओ तां अ'ऊं यकीनन तुंदे कनै आं ते अ'ऊं जरूर तुंदे चा तुंदी बदियां (कसूर) मटाई देंग ते अ'ऊं तुसेंगी सच्चें गै ऐसे बागों च दाखल करड जिंदे अंदर नैहरां बगदियां होंगन, पर जेहका (शख्स) तुंदे चा इसदे बा 'द बी इन्कार शा कम्म लै तां (ओह समझी लै जे) ओह सिद्धे रस्ते शा भटकी गोदा ऐ ॥ 13 ॥

ते उंदे अपने पक्केबा 'यदे गी तोड़ी देने कारण असें उंदे पर लानत कीती ही ते उंदे दिलें गी सख्त करी दिता हा। इस आस्तै ओह (कताबा दे) शब्दें गी उंदी ज'गें परा अदली-बदली दिंदे न ते जिस गल्ला दी उनेंगी नसीहत कीती गई ही ओहदा इक हिस्सा भुलाई बैठे दे न ते तू उंदे किश (इक लोकें) दे सिवा म्हेशां कुसै नां कुसै विश्वासघात दी इतलाह (खबर) पांदा रौहगा। इस आस्तै तू उनेंगी माफ कर ते उनेंगी दरगुजर कर। अल्लाह स्हान करने आहलें कनै सच्चें गै प्यार करदा ऐ ॥ 14 ॥

اللَّهُ ط وَعَلَى اللَّهِ فَايْتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾

وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ۖ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيبًا ۖ وَقَالَ اللَّهُ إِنِّي مَعَكُمْ ۖ لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلَاةَ وَآتَيْتُمُ الزَّكَاةَ وَآمَنْتُمْ بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمْ يُؤْمُرَهُمْ وَأَقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَلَا دَخَلَتْكُمْ جَنَّتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ﴿١١﴾

فَمَا نَقِضَهُمْ مِيثَاقَهُمْ لَعْنَهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَسِيَةً ۖ يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ ۖ وَنَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ ۖ وَلَا تَرَالُ تَطَّلِعُ عَلَى خَائِنَةٍ مِنْهُمْ إِلَّا قَلِيلًا ۖ مِنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَح ۖ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١١﴾

ते जेहके लोक गलांदे न जे अस ईसाई आं, असें उंदे शा बी पक्का बा'यदा लैता हा। पही उनें (बी) जिस गल्ला दी उनेंगी नसीहत कीती ही ओहदा इक हिस्सा भुलाई दिता। उसलै असें उंदे बशकार क्यामत आहले ध्याड़े तगर बैर¹ ते सख्त दुश्मनी पाई दिती ते जे किश ओह करदे हे, अल्लह तौले गै उनेंगी इस बाँरे सूचत करग ॥ 15 ॥

हे अहले कताब! सादा रसूल थुआड़े कश आई चुके दा ऐ (ते) जे किश तुस कताबा चा छपालदे हे ओहदे चा ओह मता-हारा हिस्सा तुसेंगी दसदा ऐ ते मते-हारे कसूरें (गलतियें) गी बी माफ करदा ऐ। (हां) थुआड़े आस्तै अल्लाह पासेआ इक नूर ते इक रोशन कताब आई चुकी दी ऐ ॥ 16 ॥

अल्लाह इस (कुरआन) राहें उनें लोके गी जेहके उसदी खुशी दे रस्ते पर चलदे न, सलामती दे रस्तें पर चलांदा ऐ ते अपने हुकम कनै उनेंगी न्हेंरें चा कड़िढयै लोई (रोशनी) आहले पासै लेई जंदा ऐ ते सिद्धे रस्ते आहले पासै उंदी अगुआनी करदा ऐ ॥ 17 ॥

जेहके लोक आखदे न जे यकीनन मर्यम दा पुतर ईसा² गै अल्लाह ऐ, ओह पक्के काफर हाई गेदे न। तूं (उनेंगी) आखी दे, जेकर अल्लाह³ मर्यम दे पुतर मसीह (गी) ते ओहदी माऊ (गी) ते उनें सारे लोके गी जो धरती च (पाए जंदे) न, हलाक करना चाह

وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرَىٰ أَحَدُنَا
مِيثَاقَهُمْ فَنَسَوْا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ
فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْهَدَاةَ وَالْبَعْضَاءِ إِلَى
يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا
يَصْنَعُونَ ﴿١٥﴾

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ
لَكُمْ كَثِيرًا مِمَّا كُنْتُمْ تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ
وَيَعْفُو عَنْ كَثِيرٍ قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ
نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ ﴿١٦﴾

يَهْدِي بِهِ اللَّهُ مِنَ النَّبِيِّينَ رِضْوَانَهُ سُبُلَ
السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ
بِإِذْنِهِ وَيَهْدِيهِمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿١٧﴾

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ
ابْنُ مَرْيَمَ طُفْلٌ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا
إِنْ أَرَادَ أَنْ يُهْلِكَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ
وَأُمُّهُ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَلِلَّهِ

1. एह कैसी जबरदस्त भविष्यवाणी ऐ जेहेदे च ईसाई जातियें दे आपसी बैर-बरोध दी सूचना दिती गेदी ऐ तां जे मुसलमान अपनी कमजोरी बेल्लै नगश नेई होंन ते इस भविष्यवाणी करी उंदा भरोसा बने दा र'वै।
2. यानी दमै इक्कै जनेह न।
3. एह आयत हजरत ईसा दी मौती दा प्रबल प्रमाण ऐ जे अल्लाह नै हजरत मसीह ते उंदी माता गी मौत देई दिती ऐ।

तां ओहदे मकाबले च कु'न कुसै गल्लै दी ताकत/शक्ति रखदा ऐ? ते गासैं ते धरती ते जे किश उतें दौर्नीं दे मझाटे (पाया जंदा) ऐ, उंदे (सारें) पर अल्लाह दी गै क्हूमत ऐ। ओह जे (किश) चांहदा ऐ पैदा करदा ऐ ते अल्लाह हर गल्ला गी करने दी समर्थ रखदा ऐ ॥ 18 ॥

ते यहूदी ते ईसाई आखदे न जे अस अल्लाह दे पुत्तर (आं) ते उसदे प्यारे आं। तूं आखी दे जे फही ओह थुआड़े गुनाहें कारण तुसंगी अजाब की दिंदा ऐ? (इय्यां नेई ऐ जो तुस आखदे ओ) बल्के जेहके (दूए आदमी) उसनै पैदा कीते दे न तुस (बी) उंदी (गै) चाल्ली दे आदमी ओ। ओह जिसी चांहदा ऐ, बख्शदा ऐ ते जिसी चांहदा ऐ अजाब दिंदा ऐ गासैं ते धरती ते जे किश इंदे (इनें दौर्नीं दे) बश्कार ऐ उंदे (सारें) पर अल्लाह दी गै क्हूमत ऐ ते उससै कश सारें (फिरियै) जाना ऐ ॥ 19 ॥

हे अहले कताब! थुआड़े कश साढ़ा रसूल आई चुके दा ऐ, ओह इक समे तक रसूलें दे औने दा सिलसला बंद रौहने दे बा'द तुंदे कनै (साढ़ी गल्लां) ब्यान करदा ऐ तां जे तुस (एह) नेई आखो जे साढ़े कश नां कोई बशारत (शुभ समाचार) देने आह्ला ते नां गै कोई डराने आह्ला आया ऐ। इस लेई थुआड़े कश इक शुभ-समाचार देने आह्ला ते डराने आह्ला आई गेआ ऐ ते अल्लाह हर इक गल्ला पर पूरी-पूरी समर्थ रखदा ऐ ॥ 20 ॥ (रुकू 3/7)

ते (तुस उस बेले गी याद करो) जिसलै मूसा

مَلِكِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ﴿١٨﴾

وَقَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى نَحْنُ أَبْنَاءُ اللَّهِ
وَآحِبَّاءُهُ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ
بِذُنُوبِكُمْ بَلْ أَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ
يُعْزِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ
مَلِكِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ﴿١٩﴾

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ
لَكُمْ عَلَى فِثْرَةٍ مِّنَ الرَّسُلِ أَنْ تَقُولُوا مَا
جَاءَنَا مِن بَشِيرٍ وَلَا نَذِيرٍ فَقَدْ
جَاءَكُمْ بَشِيرٌ وَنَذِيرٌ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يُقَوْمِ ادْكُرُوا

नै अपनी कौम गी गलाया हा जे हे मेरी कौम ! तुस अल्लाह दे (उस) उपकार गी चेता करो जेहका उसनै (उस बेलै) तुंदे पर कीता हा जिसलै उसनै तुंदे चा नबी नियुक्त कीते हे ते तुसैंगी बादशाह¹ बनाया हा ते तुसैंगी ओह किश दित्ता हा जो दुनिया दी जातिये² चा कुसैंगी नथा दित्ता ॥ 21 ॥

हे मेरी कौम ! (यानी मूसा दी कौम) तुस इस पवित्र कीती गेदी धरती च दाखल होई जाओ जो अल्लाह नै थुआड़े आस्तै लिखी रक्खी दी ऐ ते तुस अपनियां पिट्ठां नेई दस्सेओ बरना तुस घाटा खाइयै परतोगे ओ ॥ 22 ॥

उनें (परते च) गलाया जे हे मूसा ! इस (मुलखै) च यकीनन इक सिरफिरी³ कौम (रौहदी) ऐ ते जिन्ना चिर ओह (लोक) इस देशै चा उठी नेई जान अस ओहदे च कदें बी दाखल नेई होंगे। हां ! जेकर ओह ओहदे चा निकली जान तां अस यकीनन ओहदे च दाखल होई जागे ॥ 23 ॥

(उसलै) जेहके लोक (अल्लाह शा) डरदे हे उंदे चा द'ऊ बंदे⁴ जिंदे पर अल्लाह नै उपकार कीता हा (उनेंगी) गलाया जे तुस (उंदे पर हमला-आवर होइयै) उंदे खलाफ (चढ़ाई करदे होई) इस दर्रोआजे च दाखल होई जाओ। जिसलै तुस ओहदे च दाखल

نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلَ فِيكُمْ أَنْبِيَاءَ
وَجَعَلَ لَكُمْ مُلُوكًا ۗ وَآتَكُمْ مَالَ مُمُوتٍ
أَحَدًا مِّنَ الْعَالَمِينَ ۝

يَقُومِ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي
كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتُدُّوا عَالِي الْأَدْبَارِ كُمْ
فَتَقَبِلُوكُمُوهَا خَيْرِينَ ۝

قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَّارِينَ
وَإِنَّا لَنَنسُدُّهَا عَنْكَ حَتَّىٰ يَخْرُجُوا مِنْهَا
فَإِن يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِنَّا دَاخِلُونَ ۝

قَالَ رَجُلٌ مِّنَ الَّذِينَ يَحَافُونَ أَنْعَمَ اللَّهُ
عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۖ فَإِذَا
دَخَلْتُمُوهُ فَإِنَّكُمْ عَلَيْهِمْ ۗ وَعَلَى اللَّهِ
فَتَوَكَّلُوا ۗ إِن كُنْتُمْ مَوِّمِينَ ۝

1. इतिहास शा सिद्ध होंदा ऐ जे पराने समे च जिसलै इस्राईली लोक अपना देश त्यागियै मिस्र देश पुजे तां उनें उत्थें बल्लें-बल्लें इन्ना कब्जा जमाई लैता जे मिस्र दे राजा बनी गे। बाइबिल च बी लिखे दा ऐ, इस्राईल दी संतान फली-फुल्ली ते अनगिनत ते शक्तिशाली होई गेई ते ओह देश उंदे कनै भरोई गेआ। (निर्गमन 1:14)
2. यानी जिंदा इतिहास इस्राइलियें कश सुरक्खत हा।
3. उस बेलै उत्थें अमालिका ते अरब दियां दूइयां कौमां बसदियां हियां। यहूदी उंदे शा डरी गे।
4. पवित्र कुर'आन मताबक ममकन ऐ हजरत मूसा ते हजरत हारून अभीष्ट न, पर बाइबिल दे मताबक कालब ते यूशा अभीष्ट न जेहके देशै दे हालातें दा पता लैने आस्तै भेजे गे हे। (गिनती भाग 14 आयत 5-6)

होई जागे ओ तां तुस यकीनन विजयी होई जागे ओ ते जेकर तुस मोमिन ओ तां अल्लाह पर (भरोसा करो) फही (अस आखने आं जे उससे पर) भरोसा करो ॥ 24 ॥

उनें गलाया जे हे मूसा! जिच्चर ओह लोका उल्थे न अस कदे बी उस धरती पर पैर नेई रखगे। इस आस्ते तू ते तेरा रब्ब दमें जाओ ते उंदे कनै युद्ध करो। अस ते इससे ज'गा बैठे दे रौहगे ॥ 25 ॥

मूसा नै गलाया जे हे मेरे रब्ब! अ'ऊं अपनी जान ते अपने भ्राऽ दे सिवा कुसै दूए पर किश बी अधिकार नेई रखदा। इस आस्ते तू सादे ते बिद्रोहिये बशकार फर्क करी दे ॥ 26 ॥

(अल्लाह नै) फरमाया, (जेकर तेरी इय्ये इच्छा ऐ तां) यकीनी तौरा पर उनेंगी इस देशे थमां चाली बर्' आस्ते महरूम (बंचत) कीता जंदा ऐ। ओह धरती पर दुखी होइयै भटकदे रौहगन। इस आस्ते तू बागी लोके दा अफसोस नेई कर ॥ 27 ॥ (रुकू 4/8)

ते तू (यानी हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्ललअम) उनेंगी आदम दे द'ऊं पुत्रे दा हाल¹ ठीक-ठीक सुनाऽ (यानी उस बेले दा हाल) जिसले जे उनें दोन्नी इक कुरबानी (बलि) पेश कीती, तां उंदे चा इक दी कुरबानी ते स्वीकार करी लैती गई, पर दूए दी स्वीकार नेई कीती गई। (जिस पर) उसनै अपने भ्राऊ गी गलाया जे अ'ऊं जरूर गै तेरी हत्या करड। (उसनै) परते च गलाया जे अल्लाह ते सिर्फ संयमिये दी कुरबानी गी गै कबूल करदा होंदा ऐ ॥ 28 ॥

قَالُوا لِمُوسَىٰ إِنَّا لَنُؤَدِّعُكَهَا أَبَدًا ۖ وَأَمَّا مَوْسَىٰ فَيَسْأَلُ رَبَّهُ مَا حَسَنٌ لَّنَا ۚ وَالرَّبُّ يَجْعَلُ لِمَن يَشَاءُ سَبِيلًا ۚ ﴿٢٥﴾

قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخِي ۖ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٦﴾

قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً ۖ يَتِيهُونَ فِي الْأَرْضِ ۗ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٧﴾

وَأْتَلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنِ آدَمَ بِالْحَقِّ ۖ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْآخَرِ ۚ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ ۗ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿٢٨﴾

1. इस उपमा च इस्राइलिये ते इस्राइलिये दी तुलना कीती गेदी ऐ। बनी इस्राईल मुहम्मदी नबुव्वत कारण काबील आंगर मुसलमाने कनै ईरखा करदे हे। असल गल्ल एह ऐ जे कुरबानी कबूल करना खुदा दा कम्म ऐ, कुरबानी देने आहले दा नेई।

जेकर तोह मिंगी कतल करने आसतै मेरे पासै हत्थ बधाया तां बी अ'ऊं तुगी कतल करने लेई अपना हत्थ' तेरे पासै कदें बी नेई बधाड। अ'ऊं उस अल्लाह थमां सच्चें गै डरना आं जो सारे ज्हांनें दा रब्ब ऐ ॥ 29 ॥

सच्चें गै अ'ऊं एह चाहना² आं जे तू सदा आसतै मेरा पाप बी ते अपना पाप बी चुक्की लैं जिसदा नतीजा एह होऐ जे तू दोजखियें चा होई जाएं ते इय्यै जालमें दा सिला ऐ ॥ 30 ॥

फो उस भ्राऽ दा दिल (जिसदी कुरबानी कबूल नथी होई) अपने भ्राऊ दा कतल करने आसतै राजी होई गोआ ते उसनै उसी कतल करी दिता जेहदे पर ओह नुकसान उठाने आहल्लें च शामिल होई गोआ ॥ 31 ॥

उसलै अल्लाह नै इक कां³ गी जेहका धरती गी खोतरदा होंदा हा, इस आसतै भेजेआ तां जे ओह उसी दस्सै जे ओह अपने भ्राऊ दी लाशै गी क्रियां छपालैं। उसनै गलाया जे हाय अफसोस! मेरे शा इन्ना बी नेई होई सकेआ जे अ'ऊं इस कां आंगर होई जां ते अपने भ्राऽ दी लाशै गी खट्टी देआं। उसलै ओह पछताने आहल्लें चा होई गोआ ॥ 32 ॥

لَيْسَ بِسَطِّكَ إِلَى يَدِيكَ تَقْتُلُنِي مَا أَنَا بِسَاطِ يَدِيكَ إِلَيْكَ لَا قَتْلَكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿٥﴾

إِنِّي أُرِيدُ أَنْ تَبُوَأَيَّ بَشْرًا وَإِنَّكَ فَتَكُونُ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ وَذَلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ﴿٦﴾

فَطَوَّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٣١﴾

فَبَعَثَ اللَّهُ غُرَابًا يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ كَيْفَ يُورِئِي سَوْءَ أَخِيهِ ۗ قَالَ يُورِيَّتِي أَعْجَزْتُ أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَذَا الْغُرَابِ فَأُورِئِي سَوْءَ أَخِي ۗ فَأَصْبَحَ مِنَ الثَّمِيمِينَ ﴿٣٢﴾

1. इसदा एह अर्थ नेई जे अ'ऊं अपना बचाऽ बी नेई करड बल्के इसदा अर्थ एह ऐ जे अ'ऊं अपना बचाऽ इन्ने सख्त ढंगे कन्यै नेई करड जिसदा नतीजा बैरी दी हत्या दे गै रूपे च निकलदा होऐ।
2. इस दा एह अर्थ नेई जे मेरी एह दिली इच्छा ऐ बल्के इसदा अर्थ एह ऐ जे अ'ऊं अखलाकी (नैतक) मजबूरियें कारण बचाऽ आसतै बी कटोरता शा कम्म नेई लैड जेहदे करी तू मेरे पाप बी चुक्की लैगा। इय्यै हालत यहूदियें दी होई। मुसलमानें सु'ला दा हत्थ बधाया, पर ओह लड़ाई आसतै निकली आए ते मुन्करें गी बी उकसाया (चुआका दिता), आखर च ओह महापापी होई गे ते उनें स'जा भोगी।
3. इतफाकन उत्थें इक उड्डरदा कां आया ते उसनै दूए कां दी लाश दिक्खी ते अपने पंजें ते चुंझा कन्यै मिट्टी खरोतियै ओहदे पर सुट्टी दिती। एह दिक्खियै हत्यारे भ्राऊ दे दिलें च भ्रापा जागी पेआ ते उसनै बरलापी शब्द उचरे। अल्लाह दे उत्थें कां भेजने दा अर्थ सिर्फ इन्ना ऐ जे इक कां अल्लाह दे सधारण नियम मताबक उड्डरदा उत्थें पुज्जी गोआ हा।

इस आस्तै असें बनी इस्राईल लेई जरूरी¹ करी दिता हा जे (ओह हुशयार रौहन) जेहका शख्स कुसै दूए शख्स गी सिवाए इसदे जे जिसनै कुसै दूए शख्स दी हत्या कीती दी होए जां देशै च फसाद फलाए दा होए, मारी देए तां मननो जे उसनै सारे लोकें की हत्या करी दिती ते जेहका उसी जींदा करै तां मननो जे उसनै सारे मानव-समाज गी जींदा करी दिता ते सच्चें-गै साढ़े रसूल उंदे कश जाहरे-बाहरे नशान लेइयै आए हे, पही बी उंदे चा मते-हारे लोक देशै च अत्याचार (ज्यादतियां) करदे जा करदे न ॥ 33 ॥

जेहके लोक अल्लाह ते उसदे रसूल कन्नै युद्ध करदे न ते फसाद फलाने आस्तै (युद्ध दी अगग भटकाने आस्तै) दौड़दे फिरदे न, उंदी मनासब स'जा इय्यै ऐ जे उंदे चा हर-इक गी मौती दे घाट तुआरी दिता जा जां सलीब पर लटकाइयै मौती दी स'जा दिती जा जां उंदे हत्थ ते उंदे पैर बरोध करने कारण कट्टी दिते जान जां उनें गी देशै चा कड्ढी दिता जा²। (जेकर) एह (स'जा मिलदी तां) उंदे आस्तै संसार च बी अपमान दा कारण होंदा ते परलोक च बी उंदे आस्तै बौहत बड्डा अजाब निश्चत ऐ ॥ 34 ॥

पर ओह लोक इस शा पैहलें जे तुस उनेंगी अपने काबू³ च करी लैओ, तोबा करी लैन

مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ كَتَبْنَا عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنَّهُ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ بَعَدَ ذَلِكَ فِي الْأَرْضِ لَمُسْرِقُونَ ﴿٣٤﴾

إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ مِنْ خِلَافٍ أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ذَلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٣٥﴾

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَقْدِرُوا

1. एहदे राहें तौरात दी शिक्षा पासै संकेत कीता गेदा ऐ जे जिसलें कोई शख्स कुसै ऐसे महापुरश दी हत्या करी देए जेहका संसार आस्तै म्हतव रखदा होए तां उसी नेहा गै समझेआ जाग आखो जे उसनै प्राणी मात्र दी हत्या करी दिती।
2. एह सारियां गल्लां दस्सा करदियां न जे एह कम्म सरकार कन्नै संबंथत ऐ नां जे जनता चा जिसदा जी चाह दूए पर फतवा कसिसयै ऐसी स'जा देना लगी पवै।
3. इस आदेश थमां साफ ऐ जे एह आदेश कहुमत आस्तै ऐ, प्रजा आस्तै नेई, की जे पुलस ते सैना सरकार दे गै अधीन होंदी ऐ। प्रजा दे मतेहत नेई होंदी।

तां समझी लैओ जे अल्लाह सच्चें गै बौहत बख्शने आह्ला (ते) बार-बार रैहम करने आह्ला¹ ऐ (इस्सै ब'जा करी उसनै तोबा करने आहल्लें गी स'जा थमां सुरक्षत करी दिता ऐ) ॥ 35 ॥ (रुकू 5/9)

हे ईमानदारो! अल्लाह आस्तै संयम धारण करो ते उसदे हजूर च कुर्ब (नजदीकी) (हासल करने यानी ओहदे तक पुज्जने दे रस्तें गी) तलाश करो ते उसदे रस्ते च कोशश करो तां जे तुस कामयाब होई जाओ ॥ 36 ॥

जेहके लोक मुन्कर न जेकर धरती च जे किश पाया जंदा ऐ ओह सब ते उन्ना गै उसदे कन्नै (होर माल बी) उंदे कश होंदा जे ओह क्यामत आहल्लै ध्याडै अजाब दे बदलै उसी देई दिंदे तां बी उंदे शा कबूल नेई कीता जंदा ते उंदे आस्तै दर्दनाक अजाब निश्चत ऐ ॥ 37 ॥

ओह नरकै दी अग्गी चा निकलना चांहडन, पर ओहदे चा कदें बी निकली² नेई सकडन ते उंदे आस्तै नेई टलने आह्ला अजाब निश्चत ऐ ॥ 38 ॥

ते जेहका शख्स चोर होऐ ते जेहकी जनानी चोर होऐ उनें दौनीं दे हथ्य उस दोश कारण कट्टी देओ जेहका उनें कीते दा ऐ। एह अल्लाह पासेआ स'जा दे रूपै च ऐ ते अल्लाह गालिब ते हिक्मत आह्ला ऐ ॥ 39 ॥

عَلَيْهِمْ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٩﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ
الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُونَ ﴿٣٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَا فِي الْأَرْضِ
جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ
يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا تُقْبَلُ مِنْهُمْ وَلَا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٣٧﴾

يُرِيدُونَ أَنْ يُخْرِجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا لَهُمْ
بِخُرُوجِهَا مِنْهَا وَلَا لَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٣٨﴾

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا
جَزَاءً بِمَا كَسَبَا نَكَالًا إِنَّ اللَّهَ ط وَهُوَ الْعَزِيزُ
رَحِيمٌ ﴿٣٩﴾

1. इस आदेश थमां स्पष्ट ऐ जे इस्लाम धर्म दी नीह रैहम पर ऐ ते जेकर कोई शख्स स'जा भोगने शा पुज्ज प्राहंचित करी लै तां ओहदा पछतावा कबूल करी लैता जंदा ऐ ते ओहदे कन्नै बे-गुनाहें आंगर बरतास कीता जंदा ऐ। मगर चूके दिलें दा हाल खुदा जानदा ऐ ते एह फैसला करना सिर्फ खुदा दा गै कम्म ऐ।
2. मतलब एह ऐ जे अपनी शक्ति कन्नै कोई शख्स नरकै चा बची नेई सकग, पर दूई ज'गा लिखे दा जे अल्लाह रैहम करिये लोकें गी नरकै चा कड्ढी देग। (दिक्खो सूर: अल्-क्रारिअ: रुकू 1/26) यानी मुन्कर आस्तै नरक माऊ दी कुखैं आंगर होग जेहदे चा आखर बच्चा निकली आँदा ऐ।

ते जेहका शख्स जुलम करने दे बा'द तोबा (प्राहचित) करी लै ते सुधार बी करी लै तां यकीनन अल्लाह ओहदे पर किरपा करग। अल्लाह यकीनन बौहत बखशने आहला ते बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 40 ॥

क्या तुगी पता नेई जे अल्लाह ओह सत्ता ऐ जे गासँ ते धरती दी क्हुमत उससै दी ऐ। ओह जिसी चांहदा ऐ अज़ाब दिंदा ऐ ते जिसी (माफ करना) चांहदा ऐ माफ करी दिंदा ऐ ते अल्लाह हर गल्ला दी जिसी ओह करना चाह उसी करने दी पूरी-पूरी समर्थ रखदा ऐ ॥ 41 ॥

हे रसूल! जेहके लोक अपने मुंहा गलांदे न जे अस ईमान ल्याए आं ते उंदे दिल ईमान नेई ल्याए। उंदे चा जेहके लोक इन्कार (दियां गल्लां मन्ने) च तौल करदे न ओह तुगी दुखी नेई करन ते यहूदियें चा बी किश (लोक ऐसे न जेहके) झूठियां गल्लां खूब सुनदे न (ओह) एह गल्लां इक होर गरोह (गी सुनाने) आसै सुनदे न, जेहका तेरे कश नेई आया। ओह (अल्लाह दियें) गल्लें गी उंदे (अपने) ठकाने पर रखे जाने दे बा'द (उंदे अपने थाहँ परा) अदली-बदली¹ दिंदे न। ओह आखदे न जे जेकर तुसँगी इस चाल्ली दा हुकम दिता जा तां मन्नी लैओ ते जेकर तुसँगी इस चाल्ली दा हुकम नेई दिता जा तां ओहदे शा बचो ते उसी नेई मन्ने ते अल्लाह जेहदी परीक्षा लैने दा निश्चा करी लै तां तू ओहदे आसै अल्लाह दे मकाबले च किश बी नेई करी सकगा।

فَمَنْ تَابَ مِنْ بَعْدِ ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٥﴾

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٥﴾

يَأَيُّهَا الرَّسُولُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِينَ قَالُوا آمَنَّا بِأَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنُ قُلُوبُهُمْ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا سَمْعُونَ لِلْكَذِبِ سَمْعُونَ لِقَوْمٍ آخَرِينَ لَمْ يَأْتُوكَ يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ مِنْ بَعْدِ مَوَاضِعِهِ يَقُولُونَ إِنْ أُوْتِينَا هَذَا فَخَدُّوهْ وَإِنْ لَمْ تُؤْتُوهُ فَاخْذُرُوا وَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ فِتْنَتَهُ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهُ مِنْ اللَّهِ شَيْئًا أُولَئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يُطَهِّرْ قُلُوبَهُمْ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٥﴾

1. यानी पबित्तर कुरआन सुनने दे बा'द उसदा गलत अर्थ लोकें च फलांदे न तां जे लोक मुसलमानें पर आरोप लांदे रौहन।

एह लोक ऐसे न जे अल्लाह नै उंदे दिल पवित्तर करने दा बिचार गै नेई कीता, की जे उंदे आस्तै (उंदे कर्म कारण) इस लोक च बी अपमान (निश्चत) ऐ ते आखरत च बी उंदे आस्तै बौहत बड्डा अजाब निश्चत ऐ ॥ 42 ॥

ओह लोक झूठी गल्लें गी खूब सुनदे न ते र्हाम चीजें गी ज्यादा शा ज्यादा मातरा च खंदे न। तां जेकर ओह तेरे कश (कोई झगड़ा लेइयै) औन तां भाएं तूं उंदे झगड़े दा नपटारा कर, भाएं उंदे शा दूर रौह (दौनीं हालतें च) ओह तुगी नुकसान नेई पजाई सकडन ते जेकर तूं फैसला करै तां (सादी नसीहत चेता रक्ख जे) उंदे बश्कार हर हाल च न्यांऽ पूर्ण फैसला कर। अल्लाह यकीनन न्यांऽ करने आहलें कनै प्यार करदा ऐ ॥ 43 ॥

ते ओह तुगी कैसा फैसला करने आहला बनाई सकदे न जिसलै जे उंदे कश उंदे आखे मूजब खुदाई हुकमें पर अधारत¹ तौरात मजूद ऐ। फही इसदे बावजूद बी ओह पिट्ट फेरी लैंदे न। ओह बिल्कुल मोमिन नेई न ॥ 44 ॥ (रुकू 6/10)

असें ते तौरात गी यकीनन हदायत ते नूर कनै भरपूर उतारे दा ह। ओहदे राहें नबी जो साढ़े आज्ञाकारी हे ते (जेहके लोक) ज्ञानी ते विद्वान हे ओह यहूदियें आस्तै इस अधार पर फैसला करदे होंदे हे जे उंदे राहें अल्लाह दी कताब दी रक्खेआ चाही गई ही ते ओह ओहदे संरक्षक हे। इस आस्तै तुस लोकें शा नेई डरो ते मेरे शा डरो ते तुस मेरी आयतें

سَمْعُونَ لِلْكَذِبِ أَكْلُونَ لَسْحَتِ
فَإِنْ جَاءُوكَ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ أَوْ
أَعْرَضْ عَنْهُمْ ۚ وَإِنْ تُعْرَضْ عَنْهُمْ
فَلَنْ يَصْرُوكَ ۚ إِنَّ حُكْمَتَكَ
فَأَحْكُم بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۗ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ
الْمُقْسِطِينَ ﴿٤٣﴾

وَكَيْفَ يُحْكِمُوكَ وَعِنْدَهُمُ التَّورَةُ
فِيهَا حُكْمُ اللَّهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ
وَمَا أُولَئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٤﴾

إِنَّا أَنْزَلْنَا التَّورَةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ
يُحْكَمُ بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا لِلَّذِينَ
هَادُوا وَالرَّبُّبِيُّونَ وَالْأَخْبَارُ بِمَا
اسْتُحْفِظُوا مِنْ كِتَابِ اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ
شُهَدَاءَ ۚ فَلَا تَحْسَبُ النَّاسَ وَاحِدُونَ

1. यानी के मुसलमानों दे अकीदे मताबक तौरात दे किश आदेश हून बी स्हेई न मगर यहूदियें दी नजरें च ते सारी तौरात गै अजतकक सुरक्खत ऐ।

दे बदले च थोड़ा धन नेई लैओ ते जेहके लोक इस (कलाम) दे मताबक निरना नेई करन जो अल्लाह नै उतारे दा ऐ तां असल च ऊरे काफर न ॥ 45 ॥

ते असें उस (तौरात) च उंदा करतबब ठरहाए दा हा जे जान दै बदलै¹ जान, ते अक्खी दे बदलै अक्ख, नक्कै दे बदलै नक्क, कनै दे बदलै कन्न, दंदै दे बट्टै दंद ते इस दे अलावा (जखमें दे बदलै) जखम बराबर दा बदला न। पर जेहका शख्स (अपने) इस (अधिकार) गी छोड़ी देऐ तां (उसदा एह त्याग) ओहदे आस्तै ओहदे पापें गी माफ करने दा साधन बनी जाग ते जेहके लोक इस (कलाम) दे मताबक फैसला नेई करन जेहका जे अल्लाह नै उतारे दा ऐ तां ऊरे (असली) जालम न ॥ 46 ॥

ते असें मर्यम दे पुत्तर ईसा गी जिसलै जे ओह इस (कलाम) गी यानी तौरात गी पूरा करने आहला हा, उंदे (पैहले बर्णत नबियें दे) नक्शे कदम पर भेजेआ ते असें उसी इञ्जील दिती ही जेहदे च हदायत ते नूर हे ते ओह उस तौरात दी तसदीक² करदी ही जेहकी ओहदे सामनै ही यानी ओहदे शा पैहलें आई चुकी दी ही ते ओह संयमियें आस्तै हदायत ते नसीहत ही ॥ 47 ॥

ते इञ्जील आहलें गी चाही दा ऐ जे अल्लाह नै जे (किश) ओहदे च तुआरे दा ऐ ओहदे

وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمًا قَلِيلًا ۖ وَمَنْ لَّمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ ﴿٥﴾

وَكَبَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ ۖ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ قِصَاصًا ۖ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهُ ۖ وَمَنْ لَّمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٥﴾

وَقَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۖ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ ۖ وَآتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ فِيهِ هُدًى وَنُورٌ ۖ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ ۖ وَهُدًى وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٥﴾

وَلِيُحْكَمْ أَهْلَ الْإِنجِيلِ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ

1. तौरात च लिखे दा ऐ - " ते जेहका कोई कुसै आदमी गी मारी देऐ ओह जरूर गै मारी दिता जा ते जेकर कोई गुआंठी गी ऐबदार बनाई देऐ तां जैसा उसनै कीता बैसा गै ओहदे कनै कीता जा यानी अंग-भंग करने दे बदले च अंग-भंग ते अक्खीं दे बदले च अक्ख दे दंदै दे बदले च दंद।" (दिकखो-लव्यव्यवस्था भाग 24 आयत 19-20)

2. यानी तौरात दिवें भविक्खवाणियें गी पूरा करदी ही।

मताबक फैसला करन ते जेहके (लोक) इस (कलाम) दे मताबक फैसला नेई करन जेहका अल्लाह ने उतारे दा ऐ तां ऊऐ (पक्के) बागी न ॥ 48 ॥

ते असें तेरे पर एह कताब (कुरआन) सचाई पर अधारत उतारी ऐ। ओह अपने शा पैहली कताब (दियें गल्लें) गी पूरा करने आहली ऐ ते उसदी रक्खेआ करने आहली ऐ। इस आस्तै तूं इस (कताबा) दे मताबक उंदे बश्कार फैसला कर जो अल्लाह नै (तेरे पर) उतारी ऐ ते जेहका सच्च तेरे पासै आया ऐ उसी छोड़ियै उंदी खुआहशें दी पैरवी नेई कर। असें तुंदे चा हर-इक आस्तै (अपनी-अपनी काबलीयत दे मताबक इल्हामी) पानी तक पुञ्जने दा इक निक्का जां बड्डा¹ रस्ता बनाया ऐ ते जेकर अल्लाह चांहदा तां तुसें (सारें) गी इक गै जमात बनाई दिंदा, पर (इस कलाम दे बारे च) जेहका उसने तुंदे पर उतारे दा ऐ धुआड़ी परीक्षा लैने आस्तै (ऐसा नेई कीता)। इस लेई तुस इक-दूए शा नेकियें च बधने आस्तै मकाबला करो, की जे तुसें सारें गी अल्लाह कश गै परतोइयै जाना ऐ। इस आस्तै ओह तुसेंगी उनें सारी गल्लें शा वाकफ कराग, जिंदे बारे तुस मत-भेद करदे होंदे हे ॥ 49 ॥

ते हे रसूल! तूं उंदे बश्कार इस कलाम राहें फैसला कर जेहका अल्लाह नै (तेरे पर) उतारे दा ऐ ते तूं उंदी खुआहशें दी पैरवी नेई कर ते उंदे शा हुशयार/चकन्ना रौह जे ओह तुगी फ़िले च पाइयै अल्लाह दे उतारे दे कलाम शा दूर नेई लेई जान। इस दे बा'द

فِيهِ ۖ وَمَنْ لَّمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٤٩﴾

وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ وَمُهَيِّمًا عَلَيْهِ فَاحْكُم بَيْنَهُم بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ عَمَّا جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ لِكُلِّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شُرَعًا وَمَهَاجًا ۗ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ لِيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۗ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَفُونَ ﴿٥٠﴾

وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ وَمُهَيِّمًا عَلَيْهِ فَاحْكُم بَيْنَهُم بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ عَمَّا جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ لِكُلِّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شُرَعًا وَمَهَاجًا ۗ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ لِيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۗ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَفُونَ ﴿٥٠﴾

1. इस आयत च दस्सेआ गोदा ऐ जे खुदाई कलाम दे नूर गी हासल करने आस्तै कुरआन करीम च हर शाख्ख दी काबलीयत दे मताबक तलीम मजूद ऐ ते ओह इक कामिल कताब ऐ।

जेकर ओह फिरी जान तां समझी लै जे अल्लाह चांहदा ऐ जे उनेंगी उंदे किश पापे दी ब'जा करी स'जा देऐ ते लोकें चा मते-हारे प्रतिज्ञा भंग करने आहले न ॥ 50 ॥

क्या ओह अल्लाह दे कलाम दे उतरने शा पैहलें दे फैसले गी पसंद करदे न, पर मोमिनें दे बिचार च ते अल्लाह शा बद्ध उत्तम फैसला करने आहला कोई नेई ॥ 51 ॥ (रुकू 7/11)

हे ईमानदारो! यहूदियें ते ईसाइयें गी (अपना) मददगार नेई बनाओ (की जे) उंदे चा किश लोक दूए लोकें दे मददगार न ते तुंदे चा जेहका बी उनेंगी अपना मददगार बनाग, ओह यकीनन उंदे चा गै होग। अल्लाह जालम लोकें गी कदें बी (कामयाबी दा) रस्ता नेई दसदा ॥ 52 ॥

ते तू उनें लोकें गी दिखगा जिंदे दिलें च रोग ऐ जे ओह (एह आखदे होई) उंदे (मुन्करें) पासै दौड़ी-दौड़ियै जंदे न जे अस (इस गल्ला शा) डरने आं जे साढ़े पर कोई मसीबत (नेई) आई जा। इस आस्तै करीब (ममकन) ऐ जे अल्लाह (थुआड़ी) विजय (दे समान/साधन) जां अपने कशा कोई होर गल्ल (प्रकट) करै जेहदे करी ओह उस गल्ला कारण शर्मिदा होई जान जिसी उनें अपने दिलें च छपाली रक्खे दा ऐ ॥ 53 ॥

ते जेहके लोक मोमिन न, गलाडन जे क्या इय्यै ओह लोक न जिनें अल्लाह दियां पक्कियां कसमां खाइयै गलाया हा जे अस पूरी चाल्ली थुआड़े कनै आं, उंदे कर्म नश्ट होई गे। इस आस्तै ओह घाटा खाने आहले होई गे ॥ 54 ॥

أَنْ يُصِيبَهُمْ بَعْضُ ذُنُوبِهِمْ وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ النَّاسِ لَفَاسِقُونَ ﴿٥٠﴾

أَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿٥١﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصْرَى أَوْلِيَاءَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِنْكُمْ فإِنَّهُ مِنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٢﴾

فَتَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَصٌ يُسَارِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَى أَنْ تُصِيبَنَا دَائِرَةٌ فَعَسَى اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِنْ عِنْدِهِ فَيُصِيبُوا عَلَى مَا أَسْرَوْا فِي أَنفُسِهِمْ لَدِيمِينَ ﴿٥٣﴾

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا أَهَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ أَنَّهُمْ لَمَعَكُمْ حِطَّتْ أَعْمَالُهُمْ فَأَصْبَحُوا خُسْرِينَ ﴿٥٤﴾

हे ईमानदारो! तुंदे चा जेहका शख्स अपने धर्म शा मूंह फेरी लै तां (ओह चेतै रक्खै जे) अल्लाह (उसदे बदले च) तौले गै इक ऐसी कौम (दे लोकें) गी लेई औग जिंदे कन्नै ओह प्रेम करदा होग ते ओह ओहदे कन्नै प्रेम करदे होंडन। ओह मोमिनें पर देआ करने आहले होंडन ते मुक्करें दे मकाबले च सख्त होंडन। ओह अल्लाह दे रस्ते पर जिहाद करने आहले होंडन ते कुसै निंदा आहले दी निंदेआ शा नेई डरडन। एह अल्लाह दी अपार किरपा ऐ। ओह जिसी पसंद करदा ऐ उसी (एह किरपा) देई दिंदा ऐ ते अल्लाह समुद्धि बख्खाने आहला (ते) बौहत जानने आहला ऐ ॥ 55 ॥

थुआइ मददगार सिर्फ अल्लाह ते उसदा रसूल ते ओह मोमिन न जेहके नमाज गी कायम रखदे न ते जकात दिंदे न ते (कन्नै गै) ओह पक्के एकेश्वरवादी न ॥ 56 ॥

ते जेहके लोक अल्लाह ते उसदे रसूल गी ते मोमिनें गी अपना मददगार बनांदे न (ओह समझी लैन जे) यकीनन अल्लाह दी जमात गालिब (होइयै रौहने आहली) ऐ ॥ 57 ॥
(रुकू 8/12)

हे ईमानदारो! जिनें लोकें गी तुंदे शा पैहलें कताब दिन्ती गेई ही, उमें गी ते दूए मुक्करें गी अपना मदादी नेई बनाओ, जिनें थुआइ धर्म गी हासे ते खेद दी चीज बनाई रक्खे दा ऐ। जेकर तुस मोमिन ओ तां अल्लाह आस्तै संयम अखत्यार करो ॥ 58 ॥

ते जिसलै तुस लोकें गी नमाज आस्तै सददे ओ तां ओह उसी हासा ते खेद बनाई लैंदे न।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَن يَرْتَدَّ مِنكُمْ عَن دِينِهِ
فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهَ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ
وَيُحِبُّونَهُ أَذِلَّةٌ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعْرَظَةٌ
عَلَى الْكُفْرَيْنِ يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَلَا يَحَاقُونَ لَوْمَةَ لَأِيمٍ ۗ ذَٰلِكَ فَضَّلَ اللَّهُ
يُوتِيهِ مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا
الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ
وَهُمْ رَكِيعُونَ ۝

وَمَنْ يَتَوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا
فَأِنَّ حَرْبَ اللَّهِ هُمُ الْعَلْبُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ
اتَّخَذُوا دِينَكُمْ هُزُؤًا وَلَعِبًا مِّنَ الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ وَالْكَفَّارَ
أَوْلِيَاءَ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ كُنتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوا هَاهُنَا

एह (गल्ल उंदे च) इस आस्तै (पाई जंदी) ऐ जे ओह ऐसे लोक न जेहके अकली शा कम्म नेई लैंदे ॥ 59 ॥

तूं उनेंगी आख जे हे कताब आहलेओ! तुस साढ़े पर इसदे सिवा कोई दोश नेई लाई सकदे जे अस अल्लाह पर ते जेहका कलाम साढ़े पर उतारेआ गेदा ऐ ते जेहका कलाम इस शा पैहलें उतारेआ गेआ हा, ओहदे पर बी ईमान लेई आए आं ते (इसदे अलावा) इस आस्तै (दोश लांदे ओ) जे तुंदे चा मते-हारे (अल्लाह दे) बिद्रीही न ॥ 60 ॥

तूं (उनेंगी) आख जे क्या अ'ऊं तुसेंगी उनें लोकें दी हालत दस्सां जिंदा बदला अल्लाह कश उस शख्स शा बी बुरा ऐ। जिसी तुस पसंद नेई करदे। ओह ऐसे लोक¹ न जिंदे पर अल्लाह नै फटकार बर्हाई दी ऐ ते जिंदे पर उसनै अजाब उतारे दा ऐ ते जिंदे चा केई लोकें गी बांदर ते सूर बनाई दिते दा ऐ ते जिनें शतान दी पूजा कीती ऐ, उनें लोकें दा ठकाना बौहत बुरा ऐ ते ओह सिद्धे रस्ते थमां परले दरजे दे भटके दे न ॥ 61 ॥

ते जिसलै ओह थुआड़े कश आँदे न तां आखदे न जे अस ईमान लेई आए आं, हालांके ओह इन्कार गी अपनांदे होई गै इस्लाम च दाखल होए हे ते पही ओह उस (अकीदे) कनै निकली गे हे ते जे किश ओह छपालदे न उसी अल्लाह (सारे शा) बद्ध जानदा ऐ ॥ 62 ॥

ते तूं उंदे चा मते-हारे गी दिक्खना ऐं जे ओह

وَلَعِبًا ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٥٩﴾

قُلْ يَا هَلْ الْكِتَابِ هَلْ تَتَّقُمُونَ مِمَّا آلَا
أَنْ آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ
مِنْ قَبْلُ ۗ وَإِنَّ أَكْثَرَكُمْ فَسِقُونَ ﴿٦٠﴾

قُلْ هَلْ أَنْتُمْ بِشِرِّ مِنْ ذَٰلِكَ مَثُوبَةٌ
عِنْدَ اللَّهِ ۗ مَنْ لَعَنَهُ اللَّهُ وَعَظِبَ عَلَيْهِ
وَجَعَلَ مِنْهُمْ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ
الطَّاغُوتِ ۗ أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَكَانًا وَأَضَلُّ
عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ﴿٦١﴾

وَإِذَا جَاءَهُمْ قَالُوا آمَنَّا وَقَدْ دَخَلُوا
بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهِ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ
بِمَا كَانُوا يَكْتُمُونَ ﴿٦٢﴾

وَتَرَى كَثِيرًا مِنْهُمْ يُسَارِعُونَ فِي الْإِثْمِ

1. यानी तुस दूएँ गी तुच्छ समझदे ओ, पर असल च तुस आपूँ गै तुच्छ ओ, जिंदे पर ओह अजाब उतरे न उंदा जिकर इससै आयत च कीता गेदा ऐ।

पाप, अत्याचार ते अपने र्हाम खाने आहले पासै दौड़ियै जंदे न। जे किश ओह करदे न, यकीनन ओह बौहत बुरा ऐ ॥ 63 ॥

ज्ञानी ते विद्वान लोक उनेंगी झूठ बोलने ते र्हाम खाने शा की नेई रोकदे? जे किश ओह करदे न ओह यकीनन बौहत बुरा ऐ ॥ 64 ॥

ते यहूदी आखदे न जे अल्लाह दे हत्थ बज्जे दे न। जे किश उनें गलाया ऐ ओहदे कारण उंदे गै हत्थें च बेड़ियां पाइयां जांगन ते उंदे पर फटकार बर्हाई जाग। (ओह झूठ आखदे न) असलीयत एह ऐ जे ओहदे (अल्लाह दे) हत्थ खुल्ले दे न। ओह जिस चाल्ली चांहदा ऐ खर्च करदा ऐ ते जे किश तेरे रब्ब आहले पासेआ तेरे पर उतारेआ गोदा ऐ ओह मते-हारै गी सच्चें गै सरकशी (सिरफिरेपन) ते इन्कार करने च होर बी बधाई देग ते असें क्यामत तक उंदे बशकार द्वेश ते ईरशा पैदा करी दिती दी ऐ। जदू कदें बी उनें युद्ध आसतै कुसै चाल्ली दी अग भटकाई ऐ तां अल्लाह नै उसी स्थाली दिता ऐ ते ओह देशें च फसाद फलाने आसतै नसदे फिरदे न ते अल्लाह फसाद फलाने आहलें गी पसंद नेई करदा ॥ 65 ॥

ते जेकर कताब आहले ईमान लेई ओंदे ते संयम अखत्यार करदे तां अस जरूर उंदियां बुराइयां उंदे शा दूर करी दिंदे ते जरूर उनेंगी (केई किसमें दी) नैमतें आहले बागें च दाखल करदे ॥ 66 ॥

ते जेकर ओह तौरात ते इज्जील गी ते जे किश उंदे रब्ब पासेआ हून उंदे पर उतारेआ गोआ ऐ उसी जाहर करदे रौहदे ते ओह जरूर अपने

وَأَعْدَوَانٍ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٥﴾

لَوْلَا يَنْهَاهُمُ الرَّبُّيُّونَ وَالْأَحْبَارَ عَنْ قَوْلِهِمُ الْإِثْمَ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿٦٦﴾

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلَعْنُوا بِمَا قَالُوا بَلْ يَدُهُ مَبْسُوطَةٌ لِّيُنْفِقَ كَيْفَ يَشَاءُ وَلِيزِيدَنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ مَا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا وَالْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ كُلَّمَا أَوْقَدُوا نَارًا لِلْحَرْبِ أَطْفَأَهَا اللَّهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٦٧﴾

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكَرَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأَدْخَلْنَاهُمْ جَنَّاتِ التَّعِيمِ ﴿٦٦﴾

وَلَوْ أَنَّهُمْ أَقَامُوا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أَنْزَلْنَا إِلَيْهِمْ مِنْ رَبِّهِمْ لَأَكَلُوا مِنْ

उपपरा बी खंदे ते अपने पैरें दे हेठा बी खंदे ।
हां ! उंदे चा इक जमात मध्यवर्गी बी ऐ, पर
उंदे चा मते-हारे लोक नेह न जे जेहका कम्म
ओह करदे न ओह बौहत बुरा ऐ ॥ 67 ॥
(रुकू 9/13)

हे रसूल! तेरे रब्ब पासेआ जेहका कलाम तेरे
पर उतारेआ गेदा ऐ उसी लोकें तक पुजाई दे
ते जेकर तोह ऐसा नेई कीता तां (आखो जे)
तोह ओहदा संदेश बिल्कुल पुजाया गै नेई ते
अल्लाह तुगी लोकें (दे हमलें) शा सुरक्खत
रक्खग। यकीनन अल्लाह इन्कार करने आहलें
गी कदें बी (कामयाबी दा) रस्ता नेई दस्सग
॥ 68 ॥

तूं आखी दे जे हे कताब आहलेओ! जिच्चर तुस
तौरात जां इञ्जील गी ते जे किश थुआड़े रब्ब
पासेआ तुंदे पर उतारेआ गेदा ऐ, उसी जाहर नेई
करगे ओ उच्चर तुस कुसै अच्छी गल्ला पर
कायम नेई ते जे किश तेरे पर तेरे रब्ब पासेआ
उतारेआ गेदा ऐ ओह उंदे चा मते-हारें गी
उददंडता ते कुफर च जरूर गै बधाई देग। इस
आस्तै तूं इस काफर कौम दा अफसोस नेई कर
॥ 69 ॥

जेहके लोक ईमानदार न ते जेहके यहूदी न
ते साबी¹ ते ईसाई न (इंदे चा जेहके बी)

فَوْقَهُمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ مِنْهُمْ
أُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ سَاءٌ
مَا يَعْمَلُونَ ﴿٥﴾

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ
رَبِّكَ ۖ وَإِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ
رِسَالَاتَهُ ۗ وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ۗ
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٥﴾

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَسْتُمْ عَلَى شَيْءٍ حَتَّى
تُقِيمُوا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنزِلَ
إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ ۗ وَلَيُبَيِّنَنَّ كَثِيرًا
مِّنْهُمْ مَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا
وَكَفْرًا ۚ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٥﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِقُونَ

1. अरबें दी प्राचीन कथें शा जो हदीसें च बी दर्ज न, थमां पता लगदा ऐ जे अरब लोक हर उस शख्स गी जेहका यहूदी जां ईसाई ते नथा होंदा, पर अपने आपै गी कताब आहला आखदा हा, उसी साबी गलादि हे। पही जेहका शख्स मुसलमान होई जंदा हा तां मक्का आहले उसी आखदे जे एह साबी होई गेआ ऐ। खोज करने पर इय्यां सेही होंदा ऐ जे साबी लोक हरान कनै सरबंध रखदे हे जेहका हजरत इब्राहीम दे स्थान 'ऊर' थमां फ़लस्तीन जाने आहले रस्ते च ऐ। उनें लोकेंदे रीत-रवाज अरबें आंगर हे। इस आस्तै पक्का विश्वास ऐ जे ओह लोक आद जाति चा हे ते इब्राहीम दी नसल दी कौमें शा प्रभावत हे ते इससै ब'जा करी कताब ते नबियें दा पुरी-चाल्ली आदर करदे हे। इस आस्तै नवाकफ कौमां उनेंगी अहले कताब समझन लगी पेड़्यां हियां।

अल्लाह पर ते बा'द च औने आहले ध्याड़े (क्यामत) पर पूरी चाल्ती ईमान ल्याए ते पही उनें नेक कर्म कीते तां नां उनेंगी (भविक्ख दा) कोई भै¹ होग ते नां उनेंगी (बीते दे समे बारै) दुख होग ॥ 70 ॥

सच्चें गै असें इस्माईल दी संतान शा पक्का वचन लैता हा ते उंदे पासै केई रसूल भेजे हे । जिसलै कदें कोई रसूल उंदे कश उस शिक्षा गी लेइयै आया जिसी उंदे दिल पसंद नथे करदे तां किश रसूलें गी उनें झुठलाई दिता ते किश रसूलें दी ओह हत्या करना चांहदे हे ॥ 71 ॥

ते उनें एह समझेआ जे एहदे नै कोई फसाद नेई होग । इस आस्तै ओह अ'ने ते बैहरे होई गे । अल्लाह नै दबारा देआ-भाव कनै उंदी बक्खी ध्यान दिता, पर पही बी उंदे चा मते-हारे लोक अ'ने ते बोले होई गे । ते जे किश ओह करदे न, अल्लाह उसी दिखदा ऐ ॥ 72 ॥

जिनें लोके एह गलाया ऐ जे सच्चें गै मर्यम दा पुत्र मसीह गै अल्लाह ऐ, ओह जरूर काफर होई गे न ते मसीह नै ते गलाया हा जे हे इस्माईल दी संतान! तुस अल्लाह दी उपासना करो जेहका मेरा बी रब्ब ऐ ते थुआड़ा बी रब्ब ऐ । सच्ची गल्ल इय्यै ऐ जे जो (शाख्स कुसै गी) अल्लाह दा शरीक ठरहाऽ

وَالنَّاصِرِي مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٧٠﴾

لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَارْسَلْنَا إِلَيْهِمْ رَسُولًا قُلْنَا كُلُّكُمْ رَسُولٌ لِمَا لَا تَهْوَى أَنْفُسُهُمْ فَرِيقًا كَذَّبُوا وَفَرِيقًا يَقْتُلُونَ ﴿٧١﴾

وَحَسِبُوا أَلَّا تَكُونَ فِتْنَةٌ فَعَمُوا وَصَمُّوا ثُمَّ تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا وَصَمُّوا كَثِيرٌ مِنْهُمْ وَاللَّهُ يَبْصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٧٢﴾

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ وَقَالَ الْمَسِيحُ بَنِي إِسْرَائِيلَ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ

1. इस थाहरा पर चिंता ते भै शा सुरक्षत रौहना ईमान दा चि'न्न दस्सेआ गोदा ऐ । इस आस्तै आयत दा अर्थ एह नेई जे यहूदी, ईसाई ते साबी मोमिन न, बल्के अर्थ एह ऐ जे सिर्फ मूंहजवानी ईमान बारै मनना गै काफी नेई । एह सब कौमां मूंहजवानी ईमान आहनने दा ढंडोरा पिटदियां न, पर ओहदा कोई सबूत पेश नेई करदियां जे अल्लाह नै बी उंदे ईमान गी मन्नी लैता ऐ । अल्लाह दे मन्नी लैनै दा चि'न्न एह ऐ जे सच्चे मोमिनें गी नां ते भविक्ख सरबंधी चिंता होंदी ऐ ते नां होई दी पिछली त्रुटियें / भुल्लें दा कोई भै । इस आस्तै जिसी एह चि'न्न यानी संतुश्टी प्राप्त होई जा ओह ईमान आहला होग ते जिसी एह संतुश्टी हासल नेई होग ओह सिर्फ मूंहजवानी ईमान आहनने आहला खुआग, पर अल्लाह दे सामनै मोमिन नेई होग ।

तां (समझो जे) अल्लाह नै ओहदे आस्तै सुर्गे
गी रूहाम करी दिता ऐ ते ओहदा ठकाना
जहनम ऐ ते जालमें दा कोई बी मददगार नेई
होग ॥ 73 ॥

जिनें लोकें एह गलाया ऐ जे सच्चें गै अल्लाह
त्र'ऊं चा इक ऐ, ओह सच्चें गै काफर होई
गे ते सिवाए इक उपास्य दे दूआ कोई उपास्य
नेई ते जे किश ओह आखदे न जेकर ओह
ओहदे शा बाज नेई आए तां उंदे चा जिनें
कुफर अखत्यार कीता ऐ उनेंगी जरूर गै
कश्टकारी अजाब मिलग ॥ 74 ॥

फो क्या ओह लोक अल्लाह दे अगमें नेई
झुकदे ते ओहदे शा (अपने पापें दी) माफी
नेई मंगदे? असल च अल्लाह बौहत बख्शाने
आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला
ऐ ॥ 75 ॥

मर्यम दा पुतर मसीह सिर्फ इक रसूल हा।
उस शा पैहले रसूल बी मौत प्राप्त करी गेदे¹
न ते ओहदी माता बड़ी सत्यवती जनानी ही।
ओह दमें खाना² खंदे होंदे हे। दिक्ख! अस
किस चाल्ली उंदे (फायदे आस्तै) दलीलां
ब्यान करने आं, फी दिक्ख!! जे उंदा बिचार
किस चाल्ली बदली दिता जंदा³ ऐ ॥ 76 ॥

तूं आखी दे जे क्या तुस अल्लाह गी छोड़ियै
उंदी पूजा करदे ओ जिंदे च नां ते तुसंगी
नुकसान पजाने दी ताकत ऐ ते नां फायदा

أَصَابِرٍ ۝

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ
ثَلَاثَةٍ وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا إِلَهٌ وَاحِدٌ ۗ
وَإِن لَّمْ يَنْتَهُوا عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونََهُ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ
خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ وَأُمُّهُ صِدِّيقَةٌ
كَانَا نَايِلِينَ الطَّعَامِ ۗ أَنْظُرْ كَيْفَ
نُبِّئِينَ لَهُمُ الْآيَاتِ ثُمَّ أَنْظِرْ أَنَّى يُؤْفَكُونَ ۝

قُلْ اتَّعَبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ
لَكُمْ صَرًّا وَلَا نَفْعًا ۗ وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ

1. मूल शब्द 'खला' दा अर्थ सुर्यवास, मौत जां मृतु ऐ। (लिसानुल अरब) इस लेई एह आयत हजरत मसीह दी मृतु दा सबूत ऐ, की जे पवित्र कुरआन च लिखे दा ऐ जे हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम थमां पैहलें दे सारे रसूलें दा सुर्यवास होई चुके दा ऐ जिंदे च मसीह शामिल न। (सूर: आले-इम्रान रुकू नं० 15)
2. हजरत मसीह दा भोजन करना इस गल्ला दा सबूत ऐ जे ओह अल्लाह नथे। इब्जील इस दा गुआह ऐ। (मरक़स भाग 14 आयत 17-18)
3. यानी सबूतें दे होंदे होई बी धर्म दे ठेकेदार, लोकें गी करस्तै लेई जंदे न।

पजाने दी ते अल्लाह गै ऐ जो बौहत सुनने आहला ते बौहत जानने आहला ऐ ॥ 77 ॥

तू आखी दे जे हे अहले कताब! अपने धर्म दे बारे च नजायज (तौरे पर) अतिशयोक्ति (हद शा ज्यादा गल्लां करने) शा कम्म नेई लैओ! ते उनें लोकें दी खुआहशें दी पैरवी नेई करो जेहके इस शा पैहलें आपू बी गुमराह होई चुके दे न ते उनें होर बी केइयें गी गुमराह कीते दा ऐ ते ओह सिद्धे रस्ते शा भटकी गेदे न ॥ 78 ॥ (रुकू 10/14)

इसाईल दी संतान चा जिनें कुफर अखत्यार कीता ऐ उंदे पर दाऊद ते मर्यम दे पुत्र ईसा दी जबानी फटकार कीती गई ही ते एह इस गल्ला होआ हा जे उनें नाफरमानी कीती ही ते हद शा बधने आहले बनी गेदे हे ॥ 79 ॥

ओह इक-दूए गी कुसै बुरी गल्ला थमां नथे रोकदे जिसी ओह आपू करी चुके दे होन। ओह जे किश करदे हे ओह सच्चें गै बौहत बुरा हा ॥ 80 ॥

तू उंदे चा मते-हरें गी दिखगा जे जेहके लोक मुन्कर न ओह उनेंगी अपना मदादी बनांदे न। उनें अपने आस्तै अपनी मरजी² कनै जे किश अगं भेजे दा ऐ ओह बौहत गै बुरा ऐ, ओह एह ऐ जे अल्लाह उंदे पर रोहें होई गेदा ऐ ते ओह अजाब च पेदे रौहडन ॥ 81 ॥

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ
غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ
صَلُّوا مِنْ قَبْلِ وَأَصْلُوا كَثِيرًا وَصَلُّوا
عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ۝

لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَى
لِسَانِ دَاوُدَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ذَلِكَ بِمَا
عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ۝

كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُنْكَرٍ فَعَلُوهُ
لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

تَرَى كَثِيرًا مِنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِينَ
كَفَرُوا لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ أَنْفُسُهُمْ
أَنْ سَخِطَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ
هُمُ خَالِدُونَ ۝

1. दिखने च ते अतिशयोक्ति मनासब नेई समझी जंदी, पर जेकर कुसै चीजें च नेकां गुण होन तां ओहदे च जेकर कोई शख्स अत्युक्ति शा बी कम्म लै तां बी एह गल्ल ना-मनासब नेई होंदी बल्के ठीक गै मन्नी जंदी ऐ। इस आयत च इस पासै शारा कीता गेदा ऐ जे धर्म अपनै अंदर नेकां ईश्वरी गुण रखदा ऐ ते जेकर कोई शख्स उसदी स्तुति च सधारण तौरा पर अत्युक्ति शा बी कम्म लै तां ओह अतिशयोक्ति मनासब गै होगा।
2. यानी अगं भेजी दी अल्लाह दी नराजगी ऐ जो ऐसी चीज नेई जे इन्सान उसी अपने हितें आस्तै जोड़ी रखे।

ते जेकर ओह अल्लाह पर ते इस रसूल पर ते उस पर जो इस (नबी) पर उतारेआ गेदा ऐ, ईमान आहनदे तां ओह उनेंगी अपना मवादी नेई बनांदे, पर उंदे चा मते-हारे लोक ना-फरमान न ॥ 82 ॥

तू यकीनन यहूदिये ते अनेकेश्वरवादिये गी मोमिनें कनै बैर रखने /साधने च सारे शा बद्ध कठोर दिखगा/पागा ते तू मोमिनें कनै प्रेम करने दी ड्रिस्टी कनै यकीनन उनें लोके गी सारे शा ज्यादा लागै पागा, जेहके एह गलांदे न जे अस नसारा आं। इसदा कारण एह ऐ जे उंदे चा किश (लोक) विद्वान ते तपस्वी न ते इसदे अलावा इस ब'जा करी जे ओह घमंड नेई करदे ॥ 83 ॥

وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللهِ وَالتَّجِيِّ
وَمَا أَنْزَلَ إِلَيْهِ مَا اتَّخَذُواهُمْ أَوْلِيَاءَ
وَلَكِنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ فَسِقُونَ ﴿٥﴾

لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ التَّاسِ عَدَاوَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا
الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۗ وَلَتَجِدَنَّ
أَقْرَبَهُمْ مَوَدَّةً لِلَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ قَالُوا
إِنَّا نَصْرِي ۗ ذَلِكَ بِأَنَّ مِنْهُمْ قِسِيَسِينَ
وَرَهْبَانًا وَآنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٥﴾

ते जिसलै ओह उस (अल्लाह दे कलाम) गी सुनदे न जेहका इस रसूल पर उतारेआ गेदा ऐ तां (हे मुखातब!) तू दिक्खना ऐं जे जो सच्च उनें पनछानी लैते दा ऐ ओहदे कारण उंदियां अक्खीं अत्थरून् बगांदियां न। ओह आखदे न जे हे साढ़े रब्ब! अस ईमान लेई आए आं। इस आस्तै तू साढ़ा नांऽ बी गुआहियें च लिखी लै ॥ 84 ॥

ते (ओह गलांदे न जे) असें गी केह होई गेदा ऐ जे अस अल्लाह पर ते उस सच्च पर जो साढ़े कश आया ऐ, ईमान नेई आहनचै ते असल च साढ़ी एह इच्छा ऐ जे साढ़ा रब्ब असेंगी नेक लोकें च शामिल करै ॥ 85 ॥

इस आस्तै अल्लाह उंदी इस गल्ला दे बदले च उनेंगी नेहा सुर्ग प्रदान करग जेहदे च नैहरां बगदियां होडन। ओह ओहदे च बास करदे रौहडन ते इय्यै नेक लोकें दा बदला ऐ ॥ 86 ॥

ते जिनें लोकें कुफर अखत्यार कीता ऐ ते साढ़ी आयतें गी झुठलाया ऐ ओह लोक दोजखी न ॥ 87 ॥ (रुकू 11/1)

हे ईमान आहनने आहलेओ! जे किश अल्लाह नै थुआड़े आस्तै ल्हाल गलाए दा ऐ तुस ओहदे चा पवित्र पदार्थ र्हाम नेई ठरहाओ ते निश्चत हदें शा अगें नेई बधे ते अल्लाह निश्चत सीमा शा अगें बधने आहलें गी पसंद नेई करदा ॥ 88 ॥

ते जे किश अल्लाह नै तुसेंगी दिते दा ऐ ओहदे चा ल्हाल ते पवित्र चीजां खाओ ते अल्लाह दा संयम अखत्यार करो, जेहदे पर तुस ईमान रखदे ओ ॥ 89 ॥

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنزِلَ إِلَى الرَّسُولِ فَرَأَىٰ عَيْنُهُمْ كَفَيُّضٍ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴿٥٥﴾

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَنْ يُدْخِلَنَا رَبَّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ﴿٥٥﴾

فَأَنبَأَهُمُ اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَنَّتِ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَذَلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿٥٧﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْرِمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٥٨﴾

وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿٥٩﴾

अल्लाह थुआड़ी सघदें चा व्यर्थ सघदें पर तुसेंगी स'जा नेई देग, बल्के थुआड़ी पक्की सघद लैने (ते उसी तोड़ी देने) पर तुसेंगी स'जा देग। इस आस्तै उस (उसी तोड़ने) दा कफ़ारा (बदला) दस्स गरीबें गी दरम्याने दरजे दा खाना खलाना ऐ जेहका तुस अपने टब्बै गी खलांदेओ जां उनें दस्सें दियां पशाकां देना जां दस्सें गलामें दा अजाद करना ऐ। फी जिसी (एह बी असाजी कनै) नेई मिलै तां ओहदे आस्तै त्रै दिन रोजे रक्खना जरूरी ऐ। जिसलै तुस सघदां खाओ (ते फी उनेंगी तोड़ी) तां एह थुआड़ी कसमें दा कफ़ारा (बदला) ऐ ते तुस अपनी कसमें दी पहाजत करा करो। अल्लाह अपनी आयतें गी थुआड़े आस्तै इससै चाल्ली ब्यान करदा ऐ तां जे तुस शुकरगजार बनो ॥ 90 ॥

हे ईमान आहने आहलेओ! शराब, जूआ ते मूर्तियां ते कुराअंदाजी (तीर चलाइयै किसमत अजमाने संबंधी सट्टा) दे तीर सिर्फ नापाक ते शतानी कम्म न। इस आस्तै तुस इंदे शा बचो तां जे तुस कामयाब होई जाओ। ॥ 91 ॥

शतान सिर्फ एह चांहदा ऐ जे ओह थुआड़े बिच्च शराब ते जूए राहें दुश्मनी ते बैर पाई देऐ ते अल्लाह दी याद / अबादत ते नमाज थमां रोकी देऐ। हून क्या तुस (इनें गल्लें शा) रुकी सकदे ओ? ॥ 92 ॥

“ते तुस अल्लाह दी आज्ञा दा बी पालन करो ते इस रसूल दे फरमांबरदार र'वो ते चतन र'वो ते जेकर तुसें (इस चतावनी दे बा'द बी) मूंह फेरी लैते तां समझी लैओ जे साढ़े रसूल दे जिम्मे ते तफ्सील कन्नै हालत दी जानकारी पजाई देना गै ऐ ॥ 93 ॥

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ
وَلَكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُمُ
الْأَيْمَانَ ۖ فَكَفَّارَتُهُ إِطْعَامُ عَشْرَةِ
مَسْكِينٍ مِنْ أَوْسَطِ مَا تَطْعَمُونَ
أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَحْرِيرُ
رَقَبَةٍ ۗ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ
أَيَّامٍ ۗ ذَلِكَ كَفَّارَةُ أَيْمَانِكُمْ إِذَا
حَلَفْتُمْ ۗ وَاحْفَظُوا أَيْمَانَكُمْ ۗ كَذَلِكَ
يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ﴿٥٠﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ
وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلَامُ رِجْسٌ مِنْ
عَمَلِ الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُونَ ﴿٥١﴾

إِنَّمَا يَرِيْدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمُ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ
وَيَصِدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَعَنِ الصَّلَاةِ
فَهَلْ أَنْتُمْ مُتَّبِعُونَ ﴿٥٢﴾

وَاطِيعُوا اللَّهَ وَاطِيعُوا الرَّسُولَ
وَاحْذَرُوا ۚ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَأَعْلَمُوا
أَنَّمَا عَلَى رَسُولِنَا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٥٣﴾

जेहके लोक ईमान ल्याए न ते उनें शुभ कर्म कीते न जिसलै ओह संयम अखत्यार करन ते ईमान ल्यौन ते शुभ कर्म करन, फी संयम (च होर अगें) बधन ते ईमान ल्यौन, फी संयम च (पैहलें शा ज्यादा) ञक्की करन ते परोपकार करन ते जे किश बी ओह खान ओहदे पर उनेंगी कोई पाप नेई लगग ते अल्लाह उपकार करने आहले कनै प्यार करदा ऐ ॥ 94 ॥ (रुकू 12/2)

हे ईमान आहने आहलेओ! अल्लाह इक सधारण जेही गल्ला राहें यानी शकार राहें थुआडी अजमैश करग जेहदे तगर थुआडे हथ ते भाले पुञ्जी सकडन तां जे अल्लाह उनें लोकें गी जाहर करी देऐ जेहके एकांत च ओहदे शा खौफ खंदे न, फी जेहका शख्स एह हुकम सुनने दे बा'द बी ज्यादती शा कम्म लैग तां उसी दर्दनाक अजाब दिता जाग ॥ 95 ॥

हे ईमान आहने आहलेओ! तुस एहराम (हाजी दा लाबा) दी हालत च शकार गी नेई मारो ते तुंदे चा जो कोई जानी-बुञ्जी उसी मारग तां जेहका चौखर उसनै मारे दा होग उससै नेहा चपाया / चौखर उसनै बदले च देना होग। जेहदा फैसला तुंदे चा दऊं न्यांउपसंद शख्स करडन ते जिसी काबा तक कुरबानी (बलि) आसतै पुजाना जरूरी होग ते (जेकर एह करने दी समथ नेई होऐ तां) कफ़्फ़ारा (बदला) देना होग यानी किश गरीबें गी भोजन कराना जां उस दे बरोबर रोजे रक्खना होग तां जे ओह (अपराधी) अपने कुकर्म दे अन्जाम गी भोगै। हां! जेहका (पैहलें) होई चुके दा ऐ, ओह अल्लाह नै माफ करी दिते दा ऐ ते जेहका शख्स फी ऐसा करग अल्लाह उसी (उसदे पापें दी) स'जा देग ते अल्लाह गालिब ते (कुकर्म दी) स'जा देने आहला ऐ ॥ 96 ॥

لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ فِيمَا طَعَمُوا إِذَا مَا اتَّقَوْا وَآمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَآمَنُوا ثُمَّ اتَّقَوْا وَأَحْسَنُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٥﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنِّي لَأَنْتَوُكُمْ اللَّهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَاءَلَهُ أَيَدِيكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَخَافُهُ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٩٥﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَأَنْتُمْ حُرْمٌ ۗ وَمَن قَتَلَهُ مِنْكُمْ مُتَعَمِّدًا فَجَزَاءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهِ ذَوَا عَدْلٍ مِنْكُمْ هَدِيًّا بَلِيغَ الْكَعْبَةِ أَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسْكِينٍ أَوْ عَدْلٌ ذَلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوقَ وَبَالَ أَمْرِهِ ۗ عَفَا اللَّهُ عَمَّا سَلَفَ ۗ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمِ اللَّهُ مِنْهُ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٩٦﴾

समुंदरी शकार करना ते उसी खाना थुआड़े आस्तै ते मसाफरें दे भले आस्तै जायज करार दिता गेदा ऐ, पर जिच्चर तुस एहराम दी हालत च ओ (उच्चर) खुशकी दा शकार थुआड़े आस्तै रूहाम करार दिता गेदा ऐ ते तुस अल्लाह आस्तै संयम अखत्यार करो, जेहदे हजूर च तुसेंगी किट्ठे करियै लेता जाग ॥ 97 ॥

अल्लाह नै काबा यानी सुरखत घरै गी लोकें दी स्थायी त्रक्की दा साधन बनाया ऐ ते सम्मान आहले म्हीने ते बलि/कुरबानी गी ते जिनें चौखरें दे गलैं च पट्टे पाए गेदे न उनें गी बी। एह इस आस्तै (कीता गोआ) ऐ जे तुस समझी लैओ जे जे किश गासैं ते धरती च ऐ अल्लाह उसी जानदा ऐ ॥ 98 ॥

चेता रक्खो जे अल्लाह अजाब देने च बी बड़ा कठोर ऐ ते यकीनन ओह बौहत माफ करने आहला ते मेहरबान बी ऐ ॥ 99 ॥

रसूल आस्तै सिर्फ गल्ल पुजाना (जरूरी) ऐ ते जेहकी (गल्ल अमली तौरा पर) तुंदे शा जाहर होई जंदी ऐ ते ओह बी जेहकी अजें तुंदे शा (अमली तौरा पर) जाहर नेई होई, अल्लाह खूब जानदा ऐ ॥ 100 ॥

तूं गलाई दे जे बेकार ते नकम्मी चीज फायदेमंद चीजें बरोबर नेई होई सकदी, भामें तुसेंगी नकम्मी ते बेकार चीजें दी भरमाली किन्नी गै पसंद होऐ। इस आस्तै हे अकलमंदो! अल्लाह आस्तै संयम अखत्यार करो, तां जे तुस बा- मुराद होई जाओ। ॥ 101 ॥ (रुकू 13/3)

हे मोमिनो! उनें गल्लै बारै सुआल नेई करा करो जेहकियां जेकर तुंदे सामने जाहर करी दितियां जान ते ओह थुआड़े आस्तै कश्ट दा

أَجَلٌ لَّكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۗ وَحُرْمٌ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَادُمْتُمْ حُرْمًا ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٩٧﴾

جَعَلَ اللَّهُ الْكعبةَ اَبْيَتَ الْحَرَامِ قِيَمًا لِلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ ۗ ذَٰلِكَ لِتَعْلَمُوْا اَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٩٨﴾

اعْلَمُوا اَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٩٩﴾

مَا عَلَى الرَّسُولِ اِلَّا الْبَلٰغُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿١٠٠﴾

قُلْ لَا يَسْتَوِي الْخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيثِ ۗ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا اُولِيْ الْاَبْصَارِ لَعَلَّكُمْ تَفْلِحُونَ ﴿١٠١﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَنَ أَشْيَاءَ إِن تَبَدَّلَ لَكُمْ سَوُؤُكُمْ ۗ وَإِن سَأَلُوا عَنْهَا

कारण बनी जान ते जेकर तुस उंदे बाँरे इसलै सुआल करगेओ जिसलै जे कुरआन उतारेआ जा करदा ऐ तां तुंदे सामनै ओह जाहर करी दितियां जाडन। अल्लाह आपूं जानी-बुज्ही उनेंगी ब्यान करने शा रुके दा रेहा ऐ ते अल्लाह बौहत बख्शने आहला ते सूझ-बूझ शा कम्म लैने आहला ऐ ॥ 102 ॥

तुंदे शा पुज्ज इक कौम (दे लोक) ऐसी गल्लैं बाँरे सुआल करी चुके दे न, पर (जिसलै जवाब मिलेआ तां) उनें उस (दे मन्नने) शा इन्कार करी दित्ता ॥ 103 ॥

नां ते अल्लाह नै बहीरः¹ (दे बनाने) दा आदेश दिते दा ऐ नां साइबः² दा, नां वसीलः³ दा, नां हाम⁴ दा पर जेहके लोक मुन्कर न ओह अल्लाह पर झूठ गंठियै दोश लांदे न ते उंदे चा मते-हारे लोक ना-समझ न ॥ 104 ॥

ते जिसलै उनेंगी गलाया जंदा ऐ जे अल्लाह दे उतारे दे कलाम ते उसदे रसूल पासै आओ तां ओह गलांदे न जे असें जिस घासी पर अपने पुरखें गो दिक्खेआ हा ओह साढ़े आस्तै काफी ऐ। क्या जेकर (एह हालत होऐ जे) उंदे पुरखे किश बी नेई जानदे होन ते नां गै स्हेई रस्ते पर चलदे रेह होन। (उसलै बी) ओह अपने हट पर कायम (डटे दे) रौहडन? ॥ 105 ॥

حِينَ يَنْزُلُ الْقُرْآنُ يَسْأَلُكُمْ عَنِ اللَّهِ عَمَّا هُوَ غَنَاهُ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿٥﴾

قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا بِهَا كَافِرِينَ ﴿٧﴾

مَا جَعَلَ اللَّهُ مِنْ بَحِيرَةٍ وَلَا سَائِبَةٍ وَلَا وَصِيلَةٍ وَلَا حَامٍ وَلَا لِكِنِّ الدِّينِ كُفْرًا وَيُفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَأَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٥٤﴾

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ قَالُوا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أُولَٰئِكَ كَانَ أَبَاؤُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿٥٥﴾

1. 'बहीरः' ओह ऊंटनी जेहदे कन्न सी दिते गेदे होन। इस्लाम धर्म शा पैहलें एह प्रथा अरबें च प्रचलत ही जे जिसलै इक ऊंटनी दस्स बच्चे देई दिंदी तां ओह ओहदे कन्न सी दिंदे हे, फी उसी खु'ल्ला छोड़ी दिंदे हे, ओहदे पर नां ते कोई सुआरी करदा हा नां ओहदे पर भार लददेआ जंदा हा। (मुफ्रदात)
2. 'साइबः' ओह ऊंटनी जेहकी चरंदी च खु'ल्ली छोड़ी दित्ती जा ते उसी पनेआसै परा ते चरंदी चा नेई हटाया / रोकेआ जा। इस्लाम धर्म शा पैहलें अरब लोक ऐसा उस बेलें करदे हे जिसलै कोई ऊंटनी पंज बच्चें गी जनम देई लैंदी ही।
3. 'वसीलः' एह बी इस्लाम शा पैहलें दी इक प्रथा ही जे जिसलै इक बक्करी इक्के सभे च नर-मादा दऊ बच्चे जुटडे देऐ तां उंदे चा कुसै गी ज'बा नथे करदे तां जे इक गी जि'बा करने करी दुए गी कश्ट नेई पुज्जै।
4. 'हाम' ओह ऊंट (साहन) जेहदी नसल चा दस्स बच्चे होई जान, उसी अरब लोक छोड़ी दिंदे हे, ओहदे पर नां ते सुआरी करदे हे ते नां गै ओहदे शा कोई दूआ कम्म लैंदे हे ते नां उसी चरंदी चरने ते पनेआसै परा पानी पीने शा रोकदे हे।

हे मोमिनो! तुस अपनी जानें (दी पहाजत) दी चिंता करो। जिसलै तुस हदायत पाई जाओ तां फी कुसै दी गुमराही तुसेंगी कोई नुकसान नेई पुजाई सकग। तुसैं सॉरें गी परितयै अल्लाह कश गै जाना ऐ। इस आस्तै जे किश तुस करदे ओ ओह ओहदे शा तुसेंगी सूचत करग ॥ 106 ॥

हे मोमिनो! जिसलै तुंदे चा कुसै दा अंत (बेला लागै) आई जा तां बसीहत करदे मौकै थुआड़ी आपस दी गुआही (दा ढंग) इय्यां होना चाही दा जे तुंदे चा दऊं न्यांs करने आहले गुआह लैते जान ते दऊं गुआह (जेहके तुसैं मुसलमानें चा नेई होन बल्के) दूए लोके बिच्चा होन। (एह निजम उस हालत च लागू होग) जिसलै जे तुस देशै च सफर करा करदे होओ ते तुसेंगी मौती दी मसीबत आई जा (ते तुसेंगी अपने लोके चा गुआह नेई मिली सकन) ऐसी हालत च तुस उनें दौनों गुआहियें गी नमाज दे बा'द रोकी लैओ ते ओह दमें (इस हालत च जे) तुसेंगी (उंदी गुआही दे बारे च) शक्क होऐ, अल्लाह दी सघंद चुक्कियै गलान जे असें इस (गुआही) राहें अपना कोई फायदा हासल नेई करना ऐ भामें ओह (जिसदे बारै अस गुआही देआ करने आं) सादा करीबी सरबंधी गै की नेई होऐ ते अस अल्लाह दी (निश्चत कीती दी) गुआही (यानी सच बोलने) दे फर्ज गी नेई छपालगे। जेकर अस ऐसा करचै तां (इस हालत च) अस गुनाहगार होगे ॥ 107 ॥

फी जेकर एह (गल्ल) खु'ल्ली (साफ होई) जा जे उनें दौनों (अपने उप्पर) पाप लेई लैता ऐ तां दूए दऊं शखस (यानी) मरने आहले दे (बारसैं चा) जिंदे खलाफ पैहले द'ऊं शखसैं हक कायम कीता हा (गुआही आस्तै) उट्ठन ते ओह अल्लाह दी सघंद खाइयै आखन जे

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ
لَا يَصْرِكُمْ مَنْ صَلَّى إِذَا اهْتَدَيْتُمْ
إِلَى اللَّهِ مَرَجِعَكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٦﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةٌ بَيْنَكُمْ إِذَا
حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ
اِثْنِ ذَوَاعِدِلٍ مِنْكُمْ أَوْ آخَرِ
مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنْتُمْ صَرَبْتُمْ فِي
الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةُ الْمَوْتِ
تَحْسِبُونَهُمَا مِنْ بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمُنِ
بِاللَّهِ إِنْ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ
كَانَ ذَا قُرْبَىٰ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللَّهِ إِنَّا
إِذًا لَمِنَ الْاٰثِمِيْنَ ﴿١٠٧﴾

فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰ أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّا إِثْمًا
فَأَخْرَبَ يُقِيمُنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِينَ
اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأَوْلِيَانِ فَيُقْسِمُنِ بِاللَّهِ
لَشَهَادَتُنَا أَحْسَنُ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا

साढ़ी गुआही पैहली द'ऊं गुआहियें दी गुआही शा ज्यादा सच्ची ऐ ते असें (अपनी गुआही च) कोई ज्यादाती नेई कीती, जेकर असें ऐसा कीता होऐ तां असेंगी जालमें च शमार करना चाही दा ॥ 108 ॥

एह तरीका उनेंगी (यानी पैहली गुआहियें गी) इस गल्ला दे ज्यादा लागै करी देग जे ओह (घटना दे मताबक) ठीक-ठीक गुआही देन, जां (इस गल्ला शा) डरन जे उंदे द्वारा सघंदां खाने दे बा'द कोई दूइयां सघंदां (उंदी सघंदां दे खंडन आस्तै) पेश कीतियां जाडन ते अल्लाह दा संयम अखत्यार करो ते (उसदे हुकमें दा) चंगी चाल्ली पालन करो ते (चेता रक्खो जे) अल्लाह सिरफिरे लोकें गी हदायत नेई दिंदा ॥ 109 ॥ (रुकू 14/4)

ते (उस ध्याड़े गी चेता करो) जिस रोज अल्लाह रसूलें गी किट्ठा करग ते गलाग जे तुसेंगी केह जवाब दिता गेआ हा? ओह गलाडन जे असेंगी हक़ीक़ी (स्टेई) जानकारी नेई ऐ। ग़ैब दियें गल्लें दी (असल) जानकारी सिर्फ तुगी गै ऐ ॥ 110 ॥

उस बेलै अल्लाह (मर्यम दे पुत्र ईसा गी बी) गलाग जे हे मर्यम दे पुत्र ईसा! मैं जेहकी नैमत तेरे पर ते तेरी माऊ पर उतारी ही उसी याद कर यानी जिसलै मैं पवित्र वाणी (वह्नी) कनै तेरी मदद कीती ही। तू लोकें कनै बचपन च बी ते अघेड़ आयु च बी (अध्यात्मक) गल्लां करदा हा ते (उस बेले गी चेता कर) जिसलै मैं तुगी कताब ते हिक्मत (दियां गल्लां) सखाइयां हियां ते तौरात ते इज्जिल सखाई ते जिसलै तू मेरे हुकम कनै मिट्टी¹ (नरम, लहीम भाव रक्खने

اعْتَدَيْتُمْ^١ إِنَّا إِذًا لَنَجْزِيَنَّكَ

ذَلِكَ أَذَىٰ أَنْ يَأْتُوا بِالشَّهَادَةِ عَلَىٰ وَجْهَيْهَا أَوْ يَحْفَاقُوا أَنْ تَرُدَّ آيْمَانُ بَعْدَ آيْمَانِهِمْ^٢ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاسْمَعُوا^٣ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ^٤

يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ قَالَوا لَا عِلْمَ لَنَا^٥ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ^٦

إِذْ قَالَ اللَّهُ لِعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ ادْكُرْ نِعْمَتِي عَلَيْكَ وَعَلَىٰ وَالِدَتِكَ إِذْ أَيَّدتُّكَ بِرُوحِ الْقُدُسِ^٧ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا^٨ وَإِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ^٩ وَإِذْ تَخَلَّقُ مِنَ الطَّيْرِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ بِأَذْنِي فَتَنفَعُ فِيهَا فَتَكُونُ طَيْرًا بِأَذْنِي وَتُبْرِئُ

1. यानी जिस चाल्ली पक्खरू अपने हेठ अंडे रक्खिये उनेंगी धौं देखिये बच्चे कढदा ऐ उससै चाल्ली तू बी मानव समाज बिच्चा अध्यात्मक बिरती आहले लोकें गी अपने संपर्क च लेइयै इक दिन इस काबल बनाई दिना ऐं जे ओह अल्लाह आहली बक्खी अध्यात्मक डुआरी मारन लगी पौंदे न।

आहलें) चा पैंछी¹ दे पैदा करने आंगर मखलूक पैदा करदा हा, फी तू उंदे च फूक मारदा हा तां ओह मेरे हुकम कनै उड्डरने दे काबल बनी जंदे हे ते तू अ-नै ते कोद्दी-कुशटी लोकें गी मेरे हुकम कनै पवित्तर² करार दिंदा हा ते जिसलै तू मेरे हुकम कनै मुड्डें³ गी कढदा हा ते जिसलै इस्राईल (दी संतान) गी (जेहकी तेरा कतल⁴ करने दी ध्याई बैठी दी ही) में तेरे तगर पुज्जने शा रोकी रक्खेआ (उस बेले) जिसलै जे तू उंदे कश युक्तियां / दलीलां लेइयै आया ते उंदे चा मुन्करें गलाया जे एह ते खुल्ले तौरा पर धोखे आहलियां गल्लां न ॥ 111 ॥

ते (उस बेले गी याद कर) जिसलै में तेरे हवारियें (शागिदें) गी वह्मी कीती जे मेरे पर ते मेरे रसूल पर ईमान ल्याओ तां उनें (उस वह्मी दे जवाब च) गलाया, अस ईमान आहनने आं ते तू, गुआह रौह जे अस आज्ञाकारियें च (शामल होई गे) आं ॥ 112 ॥

الْأَكْمَةَ وَالْأَبْرَصَ بِأَذْنِيَّ ۖ وَإِذْ تُخْرِجُ
الْمَوْئِيَّ بِأَذْنِيَّ ۖ وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِيَّ
إِسْرَائِيلَ عَنْكَ إِذْ جِئْتَهُم بِالْبَيِّنَاتِ
فَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّمَنْهُمْ إِنْ هَذَا إِلَّا
سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝

وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ آمِنُوا بِي
وَبِرَسُولِي ۖ قَالُوا الْمَتَا وَاشْهَدْ بِأَنَّا
مُسْلِمُونَ ۝

1. किश विद्वान गलांदे न जे इस आयत थमां सिद्ध होंदा ऐ जे हजरत मसीह अल्लाह आंगर पक्खरू बनांदे होंदे हे, पर आयत दे शब्दें शा एह भाव नै निकलदा, की जे कोई बी पक्खरू मिट्टी चा पक्खरू बनाइयै फी उंदे च फूक मारियै उनेंगी जौंदा नै करी सकदा, बल्के अंडे देइयै उंदे पर बौहदा ते उनेंगी गर्म करियै (धौं देइयै) बच्चे कढदा ऐ। इसै चाली हजरत ईसा करदे होंदे हे जे भीतक सभाऽ आहले लोकें गी अपने संपर्क च आहनियै उनेंगी अध्यात्मिक शिक्षा दिंदे हे ते अपनी पवित्तर वाणी राहें उनेंगी गर्मी पुजांदे हे। इत्थें तक जे धर्म दे नांऽ पर कोरे लोक उंदे संपर्क च आइयै अध्यात्मिक इन्सान बनी जंदे हे ते सारे नबी इयां गै करदे होंदे हे। एहदे च हजरत मसीह दी कोई बशेशता नै ऐ।
2. ब्यौरें आस्तै दिक्खो सूः आले इम्रान टिप्पणी आयत नं. 50
3. किश विद्वान आखदे न जे इस आयत थमां सिद्ध होंदा ऐ जे हजरत मसीह मुड्डें गी जौंदा करदे होंदे हे, पर पवित्तर कुरआन च साफ-साफ लिखे दा ऐ जे मुड्डें गी अल्लाह दे सिवा कोई बी जौंदा नै करी सकदा। (सूः दुखान आयत: 9) हां! मुड्डे जौंदा करने दा शब्द हजरत मुहम्मद मुस्ताफा सल्ललम आस्तै बी प्रयुक्त होए दा ऐ जियां जे "हे मोमिनो! जिसलै अल्लाह ते उसदा रसूल जौंदा करने आस्तै तुसंगी बुलान तां उंदी गल्ल मकी लै करा करो।" (सूः अन्फाल आयत: 25) इस आयत च अध्यात्मिक जीवन अभीष्ट ऐ न के शरीरक जीवन। इस आस्तै हजरत मसीह आस्तै बी इस आयत च अध्यात्मिक मुड्डे जौंदे करदे दा बर्णन ऐ नां के शरीरक मुड्डे।
4. इस शा सिद्ध होंदा ऐ जे यहूदी हजरत मसीह गी सलीब पर मारने च कामयाब नथे होए। विद्वानें दे मत मुताबक इसदा एह अर्थ लैना जे कुसै दूए शख्स दी काया पलट करियै उसी हजरत मसीह दे बदले च सलीब पर लटकाया गेआ हा, मजाक आहली गल्ल ऐ। जेकर कुसै दूए शख्स दी काया पलट करियै उसी सलीब पर लटकाई दिता गेआ हा तां फी यहूदी सच्चे होए, की जे ओह ते इयै समझदे हे जे असं मसीह गी सलीब पर लटकाई दिता ऐ ते ओह सलीब पर गै मरी गेआ हा। फी इस आयत दी ओह ते तसदीक नै करी सकदे। किश लोकें गी इत्थें भलेखा लाया ऐ जे ऐसे सारे शब्द हजरत मसीह आस्तै की बरते जंदे न। इस दा जवाब एह ऐ जे हजरत मसीह दे बारे च भविष्यवाणी ही जे ओह उपमा दे रूपे च गल्लां करा करडन। (मती भाग 13, आयत 1-18) इस आस्तै उंदे बारे च जेहकियां गल्लां पवित्तर कुरआन च आई दियां न ओह इज्जील दे हवाले कन्नै गै आई दियां न।

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै हवारियें (शगिर्दें) गलाया जे हे मर्यम दे पुत्र ईसा! क्या तेरे रब्ब च एह समर्थ है जे ओह साढ़े आस्तै गासै थमां परोसे दा (यानी लगगे-लगाए दा) थाल उतारै? इस पर मसीह नै गलाया जे जेकर तुस (सच्चे) मोमिन ओ तां अल्लाह आस्तै संयम अखत्यार करो ॥ 113 ॥

उनें हवारियें (शगिर्दें) गलाया जे साढ़ी इच्छा ऐ जे अस ओहदे चा खाचै ते साढ़े चित्त प्रसन होई जान (जे साढ़ा अल्लाह ऐसा करी सकने दी समर्थ रखदा ऐ) ते असें गी जकीन होई जा जे तोह साढ़े कनै सच्ची गल्ल कीती ऐ ते अस इस बाँरे गुआही देने दे काबल होई जाचै ॥ 114 ॥

इस पर मर्यम दे पुत्र ईसा नै गलाया जे हे अल्लाह! हे साढ़े रब्ब! साढ़े आस्तै गासा थमां परोसे दा थाल उतार, जो साढ़े (असें ईसाइयें) शा पैहलें! आहलें आस्तै बी ईद होऐ ते पिछलें (बा'द आहलें) आस्तै बी ईद होऐ ते तेरे पासेआ इक चमत्कार होऐ ते तू अपने कशा असेंगी रिशक प्रदान कर। तू रिशक (जीविका) प्रदान करने आहलें चा सारें शा उत्तम ते बधिया रिशक प्रदान करने आहला ऐं ॥ 115 ॥

अल्लाह नै गलाया जे सच्चे गै आऊं तुदे आस्तै ऐसा (परोसे दा/लगगा लगाए दा) थाल उतारड। इस आस्तै जेकर उसदे उतरने दे बा'द तुदे चा जेहका कोई बी ना-शुकरी

إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ لِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُنْزِلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ ۗ قَالَ اتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ كُنتُمْ مَوْمِنِينَ ﴿١١٣﴾

قَالُوا نُرِيدُ أَنْ نَأْكُلَ مِنْهَا وَنَحْفَظَهَا ۗ قَالُوا لَنْ نَأْكُلَ مِنْهَا وَمَا نَكُونُ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿١١٤﴾

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عِيدًا لِأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِنْكَ ۗ وَارْزُقْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿١١٥﴾

قَالَ اللَّهُ إِنَّي مُنْزِلُهَا عَلَيْكُمْ فَمَنْ يَكْفُرْ بَعْدَ مِنْكُمْ فَإِنِّي أَعَذِّبُهُ عَذَابًا لَا أَعَذِّبُهُ أَحَدًا مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿١١٦﴾

1. इस प्रार्थना दे फलस्वरूप ईसाइयें दे पैहले समूह गी इस संसार च रज प्राप्त होआ हा ते खीरले समूह गी बी मिलेआ ऐ, इंदे मझाटले समे च हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दे सेवकें उंदी शक्ति गी चूर-चूर करी दिता हा। हून जिसलै जे पवितर कुरआन दी भविक्खवाणी पूरी होई चुकी दी ऐ तां मुसलमान इक पासै ते ऐसियां गल्लां बधाई-चढ़ाइयै आखदे न जे गासै पर हजरत जिब्रील सुआदले पदार्थ त्यार कराइयै ते फरिस्तें दे सिरें पर रक्खियै संजां-भ्यागा ईसाइयें दे खाने आस्तै आहनदे न ते फी दूए पासै ईसाई अनुशासकें दे अत्याचारें दे बरुद्ध चीख-पुकार बी करदे न।

(किरतघनता) करग तां अ'ऊं उसी ऐसा अजाब देंग जे संसार च कुसै दूई कौम गी ऐसा अजाब¹ नेई देंग ॥ 116 ॥ (रुकू 15/5)

ते जिसलै अल्लाह नै गलाया² जे हे मर्यम दे पुतर ईसा! क्या तोह लोकें कनै गलाया हा जे मिगी ते मेरी माऊ गी अल्लाह दे सिवा दऊं उपास्य (खुदा) बनाई लैओ? तां उसनै जवाब दिता हा जे अस तुगी (कुल्ल त्रुटियें शा) पवित्तर ठरहान्ने आं। मिगी एह शोभा नथा दिंदा जे अ'ऊं ए गल्ल आखदा जेहदा मिगी हक्क नथा ते जेकर में ऐसा गलाया हा तां तुगी उसदा जरूर ज्ञान होग। जेहका किश मेरे मनै च ऐ तू उसी बी जानना ऐं ते जे किश तैरे मनै च ऐ अऊं उसी नेई जानदा। यकीनन तू गैब दिवें सबनीं गल्लें गी चंगी चाल्ली जानना ऐं ॥ 117 ॥

मैं उंदे कनै सिर्फ ऊपे गल्ल कीती ही जेहदा तोह मिगी हुकम दिता हा। यानी एह जे अल्लाह दी उपासना करो जेहका मेरा रबब ऐ ते थुआड़ा बी रबब ऐ। फी जिन्ना चिर अ'ऊं उंदे च रेहा, अ'ऊं उंदा नगरान रेहा, पर जिसलै तोह मिगी मौत देई दिती तां तू गै उंदी देख-भाल करने आह्ला हा (अ'ऊं नथा) ते तू हर-इक चीजै दी देख-भाल करने आह्ला ऐं ॥ 118 ॥

وَإِذْ قَالَ اللَّهُ لِعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ آنتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأَهْلِي الْهَيْمِنِ مِنْ دُونِ اللَّهِ قُلْ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقِّ ۚ إِنْ كُنْتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ ۚ تَعَلَّمْ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۝

مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتُ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنْتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

1. इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे ईसाइयें दे अनेकेश्वरवाद कारण उनेंगी असाधारण/गैर-मामूली अजाब मिलग। (सूर: आले इम्रान आयत: 75) एह गल्ल ईसाई कौम कन्नै सरबंधत ही, हवारीयें (शगिदै) कन्नै नेई। ईसाइयें गी पैहले चरण च रूमी साम्राज्य/कहूमत बेलें बडिडयां-बडिडयां कामयाबियां मिलियां ते खीरले चरण च यानी ठाहरमीं ते उन्नोमीं सदी च बी उनेंगी बडिडयां-बडिडयां कामयाबियां मिलियां।

इस आयत च भविक्खवाणी रहें एह दस्सेआ गेदा ऐ जे अल्लाह अपने बा थदे मताबक उनेंगी बड़ी मती मातरा च खाने जोग पदार्थ प्रदान करग, जेहके उनेंगी संजां-भ्यागा थहोदे रोहडन, पर जेहके लोक इस गल्ला दे होदे होई बी ना-फरमानो करदे रोहडन अल्लाह उ नेंगी सख्त अजाब देग जेहका कुसै होरस गी नेई मिले दा होग। इस आसै इस आयत दा बिशे ईसाइयें दे द'ऊं युगें कनै सरबंध रक्खने आहली भविक्खवाणी कनै ऐ। हवारीयें (शगिदै) कनै इसदा कोई सरबंध नेई। अहली आयत च बी स्पष्ट ऐ जे ए बिशे अनेकेश्वरवादी ईसाइयें कनै सरबंध रखदा ऐ, की जे हवारी अनेकेश्वरवादी नथे।

2. यानी अल्लाह क्यामत आहले थ्याडै ऐसा गलाग। इसदा सबूत ए ऐ जे ईसाइयें मसीह ते उसदी माऊ गी मसीह दी मौती दे बड़े चिरे बा'द अल्लाह ठरहाया/मनेआ हा।

जेकर तू उनेंगी अजाब देना चाह तां ओह तेरे गै बंदे न ते जेकर तू उनेंगी माफ करना चाहें तां तू गालिब ते हिक्मतें आह्ला ऐं
॥ 119 ॥

अल्लाह नै गलाया जे एह दिन ऐसा ऐ जेहदे च सच्च बोलने आहलें गी उंदी सचाई फायदा देग, उनेंगी ऐसे बाग मिलडन जिंदे हेठ नैहरां बगदियां होंडन ओह उंदे च म्हेशां आस्तै बास करडन। अल्लाह उंदे पर खुश होआ ते ओह ओहदे पर खुश होए ते एह इक बौहत बड्डी सफलता ऐ ॥ 120 ॥

गासं ते धरती ते जे किश इनें दौनीं बश्कार ऐ उस सारे दी क्हुमत बी अल्लाह आस्तै गै ऐ ओह हर गल्ल करने दी पूरी-पूरी समर्थ रखदा ऐ ॥ 121 ॥ (रुकू 16/6)

إِنْ تُعَذِّبُهُمْ فَإِنَّهُمْ عَبَادُكَ ۗ
وَإِنْ تُغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١١٩﴾

قَالَ اللَّهُ هَذَا يَوْمٌ يَنْفَعُ الصَّادِقِينَ
صِدْقُهُمْ ۗ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۗ ذَلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ﴿١٢٠﴾

لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُنَّ ۗ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٢١﴾

سُورَةُ الْأَنْعَامِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ مِائَةٌ وَسِتُّ وَسِتُّونَ آيَةٌ وَعِشْرُونَ رُكُوعًا

सूर: अल्-अन्आम

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां इक सौ छिआहट आयतां ते बीह रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांS लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार बार रैहम
करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

हर चाल्ली दी स्तुति दा मालक अल्लाह गै ऐ
जिसनै गासैं ते धरती गी पैदा कीते दा ऐ ते
न्हें ते रोशनी गी बी बनाए दा ऐ, पर इस
गल्ला दे होंदे होई बी मुन्कर लोक अपने रब्ब
दा शरीक बनांदे न ॥ 2 ॥

أَحْمَدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمَاتِ وَالنُّورَ ۚ ثُمَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ①

ओह अल्लाह गै ऐ जिसनै गिल्ली मिट्टी
कनै तुसैंगी पैदा कीता फी (जीवन जीने
आस्तै) इक अबधी नरधारत कीती ते इक
निश्चत अबधी¹ होर बी ऐ जिसदा ज्ञान सिर्फ
उसी (अल्लाह गी) गै ऐ, फी बी तुस शक्क
करदे ओ ॥ 3 ॥

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ طِينٍ ثُمَّ
قَضَىٰ أَجَلًا ۗ وَأَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهُ
ثُمَّ أَنْتُمْ تَمْتَرُونَ ①

ते गासैं ते धरती च ऊऐ अल्लाह ऐ जो
थुआड़ी गुस गल्लें गी बी जानदा ऐ ते थुआड़ी
जाहरी-बाहरी गल्लें गी बी जानदा ऐ ते जे
किश तुस कमांदे ओ उसी बी जानदा
ऐ ॥ 4 ॥

وَهُوَ اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ ۗ
يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ
مَا تَكْسِبُونَ ①

1. यानी सामूहिक रूपै च संसार दे जीवन दा समां।

ते उनें लोकें कश उंदे रब्ब दे नशानें चा कदें
बी कोई नशान नेई आया, पर उंदी रीत इय्यै
रेही ऐ जे ओह ओहदे शा मूंह गै फेरदे रेह
न ॥ 5 ॥

इस आस्तै जिसलै उंदे कश कामिल हक
(कुरआन) आया तां उनें इस दा बी इन्कार
करी दिता। हून इस दा नतीजा एह निकलग
जे जिनें गल्लें दा ओह मजाक¹ दुआंदे होंदे
हे, तौले गै उंदे पूरा होने दे समाचार उनेंगी
मिलन लगी पौडन ॥ 6 ॥

क्या उनेंगी पता नेई जे अस उंदे शा पैहलें
किन्ने गै युगें दे लोकें गी नश्ट करी चुके दे
आं जिनेंगी असं धरती च इन्नी समथं प्रदान
कीती दी ही जिन्नी समथं तुसं गी (इस समे
दे लोकें गी) प्रदान नेई कीती ते असं उंदे पर
बदलें गी मोहलेधार बरखा बरहांदे होई
भेजेआ हा ते उंदे कनै नेहियां नैहरां चलाइयां
हियां जेहकियां उंदे अधीन हियां, फी असं
उनेंगी उंदे पापें कारण नश्ट करी दिता ते उंदे
बा'द इक होर कौम गी पैदा कीता ॥ 7 ॥

ते जेकर अस तरे पर कागजें पर लिखी दी
कताब नाजल करदे जिसी ओह अपने हत्थें
कनै छूही लेंदे, तां फी बी मुन्कर आखदे जे
एह ते इक जाहरा-बाहरा फरेब ऐ ॥ 8 ॥

ते (बरोधी) गलांदे न जे एहदे पर कोई
फरिश्ता² की नेई उतारेआ गेआ ते जेकर अस
कोई फरिश्ता उतारदे तां फैसला गै होई जंदा,
फी उनेंगी कोई ढेल नेई दिती जंदा ॥ 9 ॥

وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا
كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ①

فَقَدْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ ۖ فَسَوْفَ
يَأْتِيهِمْ أَنْبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ①

أَلَمْ يَرَوْا كَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ
قَرْنٍ مَكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ
لَهُمْ وَأَرْسَلْنَا السَّمَاءَ عَلَيْهِمْ مَدْرَارًا
وَوَجَعْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِيًا مِنْ تَحْتِهِمْ
فَآهْلَكْنَاهُمْ بِدُونِهِمْ وَأَنْشَأْنَا مِنْ
بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ①

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قِرْطَابٍ
فَلَمَسُوهُ بِأَيْدِيهِمْ لَقَالُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوا
إِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ①

وَقَالُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ
وَلَوْ أَنْزَلْنَا مَلَكًا لَقُضِيَ الْأَمْرُ
لَهُمْ لَا يَنْظُرُونَ ①

1. यानी उंदे मजाक कारण तौले गै उंदे पर अजाब आई जाग।

2. यानी जिसलै मुन्करें आस्तै कोई फरिश्ता उतारेआ जंदा ऐ तां ओह भ्यानक समाचर लेइयै गै उतरदा ऐ।

ते (एह बी चेता रक्खना चाही दा ऐ जे) जेकर अस इस (नबी) गी फरिशतें च नियुक्त करदे तां बी अस इसी मनुक्खै दा गै रूप प्रदान करदे ते उंदे आस्तै फी बी एह गल्ल संदेहजनक करी दिंदे जिसी ओह हून संदेहजनक (मुशतबह) समझा करदे न ॥ 10 ॥

ते तेरे शा पैहलें जेहके रसूल होई चुके दे न उंदा बी मजाक डुआया गोआ हा। नतीजा एह निकलेआ हा जे उंदे चा जि नें मजाक डुआया हा उनेंगी उसै अजाब¹ नै घेरी लैता जेहदे कनै ओह मौजू लै करदे हे ॥ 11 ॥ (रुकू 1/7)

तू उनेंगी गलाई दे, जरा धरती पर घूमी-फिरी दिक्खो जे झुठलाने आहलें दा केह अनजाम होंदा ऐ। ॥ 12 ॥

तू उंदे शा पुच्छ जे गासैं ते धरती च जे किश बी ऐ ओह कोहदा ऐ? (एहदा जवाब ओह केह देडन! इस आस्तै तू गै उनेंगी) आखी दे जे अल्लाह दा। उसनै अपने आस्तै परोपकार करना जरूरी करी रक्खे दा ऐ। ओह तुसैं गी क्यामत आहले ध्याड़े तगर किट्टे करदा जाग। इस गल्ला च कोई शक्क नेई जे ओह लोक जिनें अपने-आपै गी घाटे च पाई दित्ते दा ऐ, ओह (उस कुकर्म कारण) ईमान नेई ल्यौं² ॥ 13 ॥

ते जे किश रातीं (दे न्हरे) ते दिनै (दी लोई) च मजूद ऐ ओह सारा उस

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنَاهُ رَجُلًا
وَلَلْبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَا يَلْبِسُونَ ⑩

وَلَقَدْ اسْتَهْزَيْتُمْ بِرُسُلِي مِنْ قَبْلِكَ
فَحَاقَ بِاللَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا
بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ⑪

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انظروا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكْذِبِينَ ⑫

قُلْ لِمَنْ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ قُلْ
لِلَّهِ ۗ كَتَبَ عَلَى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۗ
لِيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۗ
الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ
لَا يُؤْمِنُونَ ⑬

وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۗ وَهُوَ

1. यानी जिनें औने आहले अजाबें बारै ओह हासा-मजाक करा करदे हे ओह अजाब आई गे ते मुक्करें दा नाश होई गोआ।
2. यानी ईमान ल्यौने शा बंचत रौहना अल्लाह पासेआ नेई बल्के मनुक्खै दे अपने कुकर्म गै उसी बंचत करी देने दा कारण बनी जंदे न।

(अल्लाह) दा ऐ ते ओह बौहत सुनने आह्ला ते बौहत जानने आह्ला ऐ ॥ 14 ॥

السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ⑩

तू गलाई दे जे क्या अ'ऊं अल्लाह गी छोड़ियै कुसै होरस गी दोस्त बनांऽ! जो (अल्लाह) गासैं ते धरती गी पैदा करने आह्ला ऐ, हालांके ऊऐ (प्राणी मातर गी) खलांदा ऐ, पर (कुसै आहले पासेआ) उसी रिशक प्रदान नेई कीता जंदा। तू गलाई दे जे मिगी हुकम दिता गोदा ऐ जे अ'ऊं सारैं शा बद्ध फरमांबरदार बनी जां ते एह जे (हे रसूल!) तू मुश्रिकें (अनेकेश्वरवादियें) चा नेई बन ॥ 15 ॥

قُلْ أَعْيَرَ اللَّهُ اتَّخَذُ وَلِيًّا فَاطِرِ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُهُ وَلَا
يُطْعَمُهُ قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ
مَنْ أَسْلَمَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُسْرِكِينَ ⑪

तू गलाई दे जे जेकर अ'ऊं अपने रब्ब दी ना-फरमानी करां तां अ'ऊं इक बड्डे दिनै दे अजाब शा डरना आं ॥ 16 ॥

قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ
يَوْمٍ عَظِيمٍ ⑫

जिस शख्स परा ओह अजाब टलाई/टाली दिता गोआ तां (समझी लैओ जे) उस रोज अल्लाह नै ओहदे पर रैहम करी दिता ते एह बौहत बड्डी कामयाबी ऐ ॥ 17 ॥

مَنْ يُّصِرْفَ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ
وَذَلِكَ الْقَوْمُ الْمُبِينُ ⑬

ते जेकर अल्लाह तुगी कोई दुख पुजाऽ तां उसी उस (अल्लाह) दे सिवा कोई दूर करने आह्ला नेई ते जेकर ओह तुगी कोई भलाई पुजाऽ तां बी ओह जिस गल्ला गी करने दी ध्याई लैंदा ऐ, उसी करने दी पूरी-पूरी समर्थ रखदा ऐ ॥ 18 ॥

وَإِنْ يَّمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ
إِلَّا هُوَ ⑭ وَإِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑮

ओह अपने बंदे पर गालिब¹ ऐ ते ओह

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ⑯ وَهُوَ الْحَكِيمُ

1. इत्थें एह सुआल पैदा होदा ऐ जे जिसलै अल्लाह हर गल्ल करने दी पूरी-पूरी समर्थ रखदा ऐ तां फी उससै-लै स'जा की नेई देई दिंदा? इस दा जवाब एह दिता गोदा ऐ जे अल्लाह दूर-दर्शी बी ऐ, महाज्ञानी बी ते सूखमदर्शी बी ऐ। इस आसतै ओह ब्यहार बी इस चाल्ली करदा ऐ जे नतीजा ठीक निकलै तां जे किश लोक हदायत पाई सकन। ओह महाज्ञानी ऐ, उसी पता ऐ जे भविक्ख च नेकां लोक ईमान ल्यौने आहले न। जेकर हून इनं लोकें गी नष्ट करी दिता गोआ तां ओह बी तबाह होई जाडन जेहके बा'द च ईमान ल्यौने आहले न। इस आसतै अल्लाह समर्थ रखने पर बी झट्ट स'जा नेई दिंदा।

बड़ी हिक्मतें आहला ते कुल्ल हालात दी खबर रक्खने आहला ऐ ॥ 19 ॥

الْخَبِيرِ ⑩

तूं आख जे सारें शा बद्ध सच्ची गुआही देने आहला कु'न ऐ? फी (आपू जै जवाब च) गलाई दे जे अल्लाह। ओह मेरे ते थुआड़े बश्कार गुआह ऐ ते मेरे पर एह कुरआन वह्नी कीता गेदा ऐ तां जे अ'ऊं एहदे राहें तुसेंगी ते उनें सारे लोकेंगी जिंदे तगर एह पुज्जै (औने आहले अजाब शा) खबरदार/ सचेत करां। क्या तुस एह गुआही दिंदे ओ जे अल्लाह दे सिवा कोई दूए उपास्य बी हैन? (ते फी अपने पासेआ) आखी दे जे (तुस भामें ऐसी झूठी गुआही दिंदे फिरो) अ'ऊं ते एह गुआही नेई दिंदा। (फी उनेंगी) आखी दे जे ओह अल्लाह ते इक्कला ऐ ते अ'ऊं ते उनें चीजें शा बे-ज़ार¹ आं जिनेंगी तुस अल्लाह दा शरीक मनदे ओ ॥ 20 ॥

قُلْ أَحَىٰ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً ۖ قُلِ اللَّهُ شَهِيدٌ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۖ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَٰذَا الْقُرْآنُ لِأُنذِرَكُمْ بِهِ وَمَنْ بَلَغَ ۗ أَيْتَكُمْ لَتَشْهَدُونَ ۚ أَنْ مَعَ اللَّهِ إِلَهَةٌ ۗ أُخْرَىٰ ۚ قُلْ لَا أَشْهَدُ ۚ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَهٌ وَاحِدٌ وَإِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ⑪

ओह लोक जिनेंगी असें एह कताब दिन्ती ऐ ओह इस (सचाई) गी इस चाल्ली पनछानदे न जिस चाल्ली ओह अपने पुत्तें गी पनछानदे न, पर जेहके लोक घाटे च पेई गे ते अपने-आपै गी बी घाटे च पाई दिता ओह ईमान नेई आहनदे ॥ 21 ॥ (रुकू 2/8)

الَّذِينَ اتَّيَهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ ۗ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ⑫

(ते उस शख्स शा बद्ध अत्याचारी दूआ कु'न होई सकदा ऐ) जो अल्लाह पर झूठ गंढदा ऐ ते उस दी आयतें गी झूठलांदा ऐ। सच्ची गल्ल ते एह ऐ जे जालम लोक कदें बी कामयाब नेई होंदे ॥ 22 ॥

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۗ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ⑬

1. बे-ज़ार-जेहका कुसै गल्लै शा तंग आई गेदा होऐ।

ते जिस रोज अस उनें सारें गी कट्टे करगे, फी जि'नें साढ़े शरीक बनाए दे न उनेंगी आखगे जे थुआड़े बनाए दे ओह शरीक कुत्थें न? जिंदै बारे तुस जोर देइयै आखदे होंदे हे (जे ओह अल्लाह दे शरीक न) ॥ 23 ॥

फी इसदे जवाब च ओह सिर्फ इन्ना गै गलाडन जे अल्लाह दी सोह! जेहका साढ़ा सच्चा रब्ब ऐ, अस ते मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) थे गै नेई ॥ 24 ॥

दिक्ख! (इस मौके पर) ओह अपनी जात्रें दे बारे च किस चाल्त्री झूठ बोलडन ते इस शा पैहलें ओह जे किश घड़दे होंदे हे उनेंगी सब भुल्ली जाग ॥ 25 ॥

ते उंदे चा किश लोक नेह बी हैन जेहके तेरी गल्लें पासै कन्न लाई रखदे न, हालांके असें उंदे दिलें पर पड़दे सुट्टी दिते दे न तां जे ओह इसी नेई समझन ते उंदे कन्न च बोलापन (पैदा करी दिते दा) ऐ ते जेकर ओह हर-इक (चाल्ली दा) चमत्कार दिक्खी बी लैन तां बी ओह ओहदे पर ईमान नेई ल्यौडन। (उंदी हालत) इत्थें तक (पुज्जी दी ऐ) जे ओह जिसले तेरे कश औँदे न तां तेरे कन्न झगड़दे न। मुन्कर लोक गलांदे न जे एह (कुरआन) सिर्फ पैहले' लोकेँ दियां व्हानियां न ॥ 26 ॥

ते ओह एहदे कनै (दूएँ गी बी) रोकदे न ते (आपूँ बी) एहदे शा दूर रौँहदे न, पर ओह सिवाए अपने आपै दे कुसै दा बिनाश नेई करदे, पर ओह समझदे नेई ॥ 27 ॥

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا الْإِينَ شُرَكَاءُ وُكُمُ الَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٢٣﴾

ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتَهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا وَاللَّهِ رَبَّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ ﴿٢٤﴾

أَنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٥﴾

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِنْ يَرَوْا كَلِمَةً لَا يُؤْمِنُوبِهَا حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوكَ يُجَادِلُونَكَ يَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٦﴾

وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْتَوْنَ عَنْهُ وَإِنْ يُهْلِكُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٧﴾

1. मुन्करें दा एह गलाना ऐ बरना पवित्र कुरआन च सब पुरानियां घटनां भविक्खवाणी दे रूपेँ च ब्यान होई दियां न ते इत्थै नेहियां घटनां हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम ते थुआड़े अन्यायियें कन्नै बी घटी दियां न।

ते जेकर तू उ भिंगी (उस बेलै) दिक्खें जिसलै ओह नरक दे सामनै खड़े किते जांडन ते जिसलै ओह गलाडन, काश! असैंगी ईमान दी हालत च बापस परताई दिता जा ते अस भविक्ख च कदें बी अपने रब्ब दे हुकमें गी नेई झुठेरगे। (तां तुगी उंदे झुठेरने दी हकीकत दा पता लग्गी जाग) ॥ 28 ॥

सचाई एह ऐ जे जे किश ओह इस शा पैहलें छपैलदे होंदे हे ओह उंदे पर चंगी चाल्ली जाहर होई गेआ ऐ ते जेकर उनेंगी बापस परताया जंदा तां ओह जरूर (इस गल्ला पासै) आई जंदे जेहदे शा उनेंगी रोकेआ जंदा हा ते सच्चें गै ओह (अपने इस कथन च) झुठे न ॥ 29 ॥

ते ओह गलांदे न जे साढ़े संसारक जीवन दे सिवा कोई होर जीवन नेई ते नां असैंगी (दुबारा जाँदे करियै) दुआलेआ जाग ॥ 30 ॥

ते जेकर तू उनेंगी (उस बैलै) दिक्खें जिसलै उनेंगी उंदे रब्ब सामनै खड़ेआ जाग तां ओह उनेंगी गलाग जे क्या एह (दूआ जीवन) सच्च नेई ऐ? ओह परते च गलाडन जे असैंगी अपने रब्ब दी सोह! की नेई (जरूर सच्च ऐ) ओह गलाग जे, तां तुस अपने इन्कार पर हठ करने (बजिद्द होने) कारण अजाब दा सुआद चक्खो ॥ 31 ॥ (रुकू 3/9)

जिनें लोकें अल्लाह कन्नै मिलने (दी गल्ला) गी झुठलाया ओह लोक घाटा खाने आहले होई गे, इत्थें तक जे जिसलै चानक ओह घड़ी उंदे पर आई जाग तां ओह गलाडन, अफ़सोस! उस कुताही पर जेहकी इस घड़ी दे बाँरे च साढ़े शा होई। उस बेलै अपने बोझ उनें अपनी पिट्टीं पर चुक्के दे होडन! सुनो! जेहका बोझ ओह चुकडन ओह बौहत गै बुरा होग ॥ 32 ॥

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وَقَفُوا عَلَى النَّارِ فَقَالُوا
يَلَيْتُنَا نَرَدُّ وَلَا نُكَذِّبُ بِآيَاتِ رَبِّنَا
وَنُكْفُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

بَلْ بَدَأَهُمْ مَا كَانُوا يُخْفُونَ مِنْ قَبْلُ
وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا هُوَ آعَنَهُ وَآلَهُمْ
لُكْذِبُونَ ۝

وَقَالُوا إِن هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا
نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ۝

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وَقَفُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ قَالَ
أَلَيْسَ هَذَا بِالْحَقِّ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا
قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ
تَكْفُرُونَ ۝

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ ۗ حَتَّىٰ
إِذَا جَاءَتْهُمْ السَّاعَةُ بَعْتَهُ قَالُوا
يَحْسُرُنَّا عَلَىٰ مَا قَرَضْنَا فِيهَا وَهُمْ
يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ
أَلَا سَاءَ مَا يَزُرُونَ ۝

ते संसारक जीवन खेद-तमाशे दे सिवा (होर किश) नेई ऐ ते जेहके लोक संयम अखत्यार करदे न उंदे आस्तै पिच्छें औने अहला घर सच्चें गै बेहतर ऐ, फी क्या तुस अकली शा कम्म नेई लेंदे? ॥ 33 ॥

وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَعِبٌ وَ لَهْوٌ ط
وَلَلْآذَانُ الْآخِرَةُ خَيْرٌ لِلَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ ط
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

अस सच्चें गै जानने आं ते इयै गल्ल सच्च ऐ जे जे किश ओह आखदे न ओह जरूर तुगी दुखी करदा ऐ, की जे ओह, तुगी नेई झुठरेदे बल्के जालम लोक जानी-बुझियै अल्लाह दिवें आयतें दा इन्कार¹ करदे न ॥ 34 ॥

قَدْ عَلِمُوا أَنَّهُ لِيَحْرُكَكَ الَّذِي يَقُولُونَ
فَأَنَّهُمْ لَا يَكْذِبُونَكَ وَلَكِنَّ الظَّالِمِينَ
بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ۝

ते यकीनन तेरे शा पैहले रसूलें की बी झुठरेआ जाई चुके दा ऐ, फी इस दे बावजूद जे उनेंगी झुठरेआ गेआ ते उनेंगी तकलीफ दिती गई तां बी ओह दड़ बटदे (सबर करदे) रेह इत्थें तक जे उंदे कश साढ़ी मदाद पुज्जी गई ते अल्लाह दिवें गल्लें की कोई बदलने आहला नेई ते सच्चें गै तेरे कश रसूलें दे किश समाचार आई चुके दे न ॥ 35 ॥

وَلَقَدْ كَذَّبْتَ رَسُولٌ مِّن قَبْلِكَ فَصَبِرُوا
عَلَىٰ مَا كَذَّبُوا وَأُوذُوا حَتَّىٰ أَنهَمْ
نَصْرْنَا ۖ وَلَا مَبْدَل لِّكَلِمَاتِ اللَّهِ ۗ وَلَقَدْ
جَاءَكَ مِن نَّبِيِّ الْأُمْسَلِينَ ۝

ते जेकर तुगी इनें मुन्करें दा मूंह फेरना मुश्कल सेही होंदा ऐ तां जेकर तेरे च शक्ति ऐ जे धरती च कुसै सुरंगै दी जां गासै बक्खी पौड़ी/सीढ़ी दी तलाश करी सकें ते फी उंदे आस्तै कोई नशान आहनी सकें (तां यकीनन ऐसा करी लै) ते जेकर अल्लाह चांहदा तां उनेंगी जरूर हदायत पर किट्टे करी दिंदा। इस आस्तै तूं अनजान² लोकें चा कदें बी नेई बन ॥ 36 ॥

وَأِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَإِنْ
اسْتَطَعْتَ أَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْأَرْضِ
أَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَاءِ فَتَأْتِيَهُمْ بِآيَةٍ ط
وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدَىٰ فَلَا
تَكُونُنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ ۝

जेहके लोक सुनदे न ऊऐ (गल्लै गी) मनदे न ते जेहके मुड़दे³ न अल्लाह उनेंगी चुक्की

إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ ۗ

1. यानी अल्लाह की झुठरने कारण तुगी दुख होंदा ऐ। तुगी अपनी चैता नेई ऐ।
2. यानी अल्लाह दी इच्छेआ पर संदोख करो।
3. इस आयत शा साबत होंदा ऐ जे पवित्र कुरआन च मुड़दा शब्द दा प्रयोग सचाई शा बंचत रौहने आहले लोकें आस्तै बी होए दा ऐ। इस अर्थ गी विद्वानें हजरत मसीह आस्तै प्रयोग नेई कीता ते पवित्र कुरआन च अनेकेश्वरवाद दे बिचारें गी दाखल करी दिता ऐ।

लैग, फी उनेंगी उसै आहली बक्खी परताया जाग ॥ 37 ॥

ते ओह गलादे न जे इस दे रब्ब पासेआ एहदे पर कोई नशान (चमत्कार) की नेई नाजल कीता गेआ? तूं आखी दे जे यकीनन इस गल्ला दी समर्थ अल्लाह रखदा ऐ जे कोई नशान नाजल करै, पर उंदे चा मते-हारे (इस गल्ला गी) नेई जानदे ॥ 38 ॥

ते धरती पर चलने आहले सारे दे सारे जानवर ते अपने दमै/दोऐ पर मारिये उड्डरने आहले पैछी तेरी जमात आंगर गै जमातां¹ न। असें इस कताबा च किश बी कर्मा² नेई कीती, फी उंदे चा (मानव जाति गी) उंदे रब्ब पासै किट्टे करिये लेता जाग ॥ 39 ॥

ते जिनें लोकें साढ़ी आयतें गी झुठरेआ ऐ ते गूंगे ते बोले न ते न्हें च पेदे न। जिसी अल्लाह चाह गुमराह करी देऐ ते जिसी चाह सिद्धे रास्ते पर कायम करी देऐ ॥ 40 ॥

तूं आख जे तुस दस्सो ते सेही जे जेकर तुंदे पर अल्लाह दा अजाब आई जा ते थुआड़े उप्पर ओह निश्चत घड़ी आई जा तां जेकर तुस सच्चे ओ तां क्या तुस उस बेलै अल्लाह दे सिवा कुसै होर गी पुकारगे ओ? ॥ 41 ॥

नेई! बल्के तुस उसी गै पुकारगेओ, फी जेकर ओह चाहग तां जेहकी तकलीफ दूर करने आस्तै तुस उसी पुकारगे ओ, ओह उसी जरूर गै दूर करी देग ते तुस जिसी (अल्लाह दा) शरीक मनदे ओ, भुल्ली जागे ओ ॥ 42 ॥
(रुकू 4/10)

وَالْمَوْتِ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٣٧﴾

وَقَالُوا لَوْلَا نَزَّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَى أَنْ يُنَزِّلَ آيَةً وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا طَيْرٍ يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّا أُمَّمٌ أَمْثَالِكُمْ مَا قَرَّبْنَا فِي الْكِتَابِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ ﴿٣٩﴾

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا صَمُّ وَبُكْمٌ فِي الظُّلُمَاتِ مَنْ يَشَأِ اللَّهُ يُضِلَّهُ ۗ وَمَنْ يَشَأِ يُجْعَلْهُ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٤٠﴾

قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَنْتُمْ عَدَابُ اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ أَغْبِرَ اللَّهُ تَدْعُونَ ۗ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤١﴾

بَلْ إِلَٰهٌ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِنْ شَاءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ ﴿٤٢﴾

1. यानी अल्लाह दे नियमें मताबक आज्ञाकारी न।
2. यानी हर चाल्गी दी शिक्षा कुरआन च मजूद ऐ।

ते अस तेरे शा पैहली कौमें पासै रसूल भेजी चुके दे आं ते (उनें रसूलें दे औने दे बा'द) असें उनें (मुन्करें) गी इस कारण आर्थक ते शरीरक कष्ट पुजाए¹ हे जे ओह ल्हीमगी अखत्यार करन ॥ 43 ॥

फी ऐसा की नई होआ जे जिसलै उंदे पर साढ़ा अजाब आया हा तां ओह ल्हीमगी अखत्यार करदे, पर उंदे दिल होर बी कठोर होई गे ते ओह जे किश करदे होंदे हे शतान नै उनेंगी ओह खूबसूरत करियै दस्सेआ ॥ 44 ॥

ते फी जिसलै ओह उस गल्ला गी भुल्ली गे जेहदा उनेंगी चेता कराया जंदा हा तां असें उंदे आस्तै हर इक चीजै दे द्वार खीहली दिते, इत्थें तक जे जिसलै ओह ओहदे पर खुश होई गे जो उनेंगी दिता गेदा हा तां असें उनेंगी चान-चक्क अजाब कन्नै जकड़ी दिता जेहदे पर ओह इकदम ना-मेद होई गे ॥ 45 ॥

इस आस्तै जिनें जुलम कीते दा हा उंदी जद् कट्टी दिती गेई ते (साबत होआ जे) सारी तरीफें दा मालक सिर्फ अल्लाह गै ऐ, जो सारे ज्हांनें (लोकें) दा रब्ब ऐ ॥ 46 ॥

तूं गलाई दे जे दस्सो ते सेही जेकर अल्लाह थुआड़ी सुनने ते दिक्खने दी शक्ति गी मटाई देऐ ते थुआड़े दिलें पर मोहर लाई देऐ, तां अल्लाह दे सिवा दूआ कु'न उपास्य ऐ जेहका (नश्ट कीती दी चीज) तुसें गी बापस आहनी देग? दिक्ख! अस किस चाल्ली आयतें गी

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ
فَأَخَذْنَاهُم بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَاءِ لَعَلَّهُمْ
يَتَضَرَّعُونَ ﴿٤٣﴾

فَلَوْلَا إِذْجَاءَهُمْ بِأَسْنَانَتَضَرَّعُوا وَلَكِن
قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٤٤﴾

فَلَمَّا سَأَوْا مَا دُكِّرُوا بِهِ فَتَخَّاعِيَهُمْ
أَبْوَابُ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِمَا
أَوْتُوا أَخَذْنَاهُمْ بَعَثَةٌ فَإِذَا هُمْ قَبْلُوسُونَ ﴿٤٥﴾

فَقُطِعَ دَائِرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا
وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٦﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ
وَأَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ مَنْ
إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِهِ أَنْظُرْ كَيْفَ
نُصِرَفُ الْآيَاتِ ثُمَّ هُمْ يَصْذِقُونَ ﴿٤٧﴾

1. इस शा साबत होंदा ऐ जे अजाब, शिक्षा/नसीहत देने आस्तै आँदा ऐ।

बार-बार (बक्ख-बक्ख रूपें च) ब्यान करने
आं, पर फी बी ओह मूंह फेरियै उठी जंदे न
॥ 47 ॥

तूं गलाई दे जे दस्सो ते सेही जे जेकर
अल्लाह दा अजाब तुंदे पर अचानक (बिना
सूचत कीते) जां जाह्रा तौर आई जा तां क्या
जालम लोकें दे सिवा (कोई हौर शख्स)
हलाक कीता जाग? ॥ 48 ॥

ते अस रसूलें गी सिर्फ खुशखबरी देने ते
डराने आस्तै भेजने आं, फी जेहके (लोक)
ईमान लेई औन ते सुधार करी लैन तां उनेंगी
नां ते (भविक्ख दा) भैऽ होगे ते नां ओह
(पिच्छें होई दी कुताहियें पर) दुखी होडन
॥ 49 ॥

ते जिनें साढ़ी आयतें दा इन्कार कीता ऐ उनेंगी
उंदी ना-फरमानियें कारण अजाब मिलग
॥ 50 ॥

तूं आखी दे जे अ'ऊं तुसेंगी एह नेई आखदा
जे मेरे कश अल्लाह दे खजाने न ते नां (एह
जे) अ'ऊं गैब बारै जानने आहला आं ते नां
अ'ऊं तुसेंगी एह आखना आं जे अ'ऊं
फरिश्ता आं। अ'ऊं ते सिर्फ ओहदी पैरवी
करना आं जो मेरे पासै वही (अकाशवाणी)
नाजल कीती जंदी ऐ। तूं आखी दे जे क्या
अ'त्रा ते सज्झार-सत्था इक बराबर होई सकदे
न? फी क्या तुस सोच-विचार नेई करदे?
॥ 51 ॥ (रुकू 5/11)

ते तूं इस कलाम राहें उनें लोकें गी जेहके इस
गल्ला शा डरदे न जे उनेंगी उंदे रब्ब सामनै
किदठे करियै लेता जाग, जिसलै जे उसदे
सिवा उंदा नां ते कोई मददगार होगे ते नां

قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَكُمْ عَذَابُ اللَّهِ
بَعْتَةً أَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلِكُ إِلَّا الْقَوْمَ
الظَّالِمُونَ ﴿٤٨﴾

وَمَا تُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ
وَمُنذِرِينَ ۚ فَمَنْ أَمِنَ وَأَصْلَحَ فَلَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٤٩﴾

وَالَّذِينَ كَذَبُوا بِالْبَيِّنَاتِ يَمْسُهُمُ الْعَذَابُ
بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٥٠﴾

قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا
أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ إِنِّي مَلَكٌ
ۚ إِن تَتَّبِعُوا إِلَّا مَا يُوْحَىٰ إِلَيَّ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي
الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۗ أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ﴿٥١﴾

وَأَنْذِرْ بِهِ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْ يُحْسَرُوا
إِلَىٰ رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِنْ دُونِهِ وَاِلَىٰ

कोई सफारश करने आहला। इस आस्तै तू उनेंगी सचेत कर (डराऽ) तां जे ओह संयम अखत्यार करन ॥ 52 ॥

ते तू उनें लोकें गी नेई दुतकार जेहके अपने रब्ब दा ध्यान अपने पासै खिचदे होई सजां-भ्यागा उसी पुकारदे न। उंदे स्हाब/लेखे दा कोई हिस्सा बी तैरै जिम्मै नेई ते तेरे स्हाब/लेखे दा कोई हिस्सा उंदे जिम्मै नेई। इस आस्तै जेकर तू उनेंगी दुतकारगा तां तू अत्याचारी होई जागा ॥ 53 ॥

ते असें उनेंगी इक-दूए दे राहें इस चाल्ली अजमाया ऐ तां जे ओह (अजमैश च फसे दे लोक) गलान जे क्या साढ़े चा इनें (तुच्छ) लोकें पर अल्लाह नै उपकार कीता ऐ? क्या अल्लाह उनें लोकें गी सारें शा बद्ध नेई जानदा जेहके शुकरगजार न? ॥ 54 ॥

ते जिसलै ओह लोक तेरे कश औन जेहके साढ़ी आयतें पर ईमान ल्यौंदे न तां तू उनेंगी गलाऽ जे तुंदे पर म्हेशां शांति (सलामती) बनी दी र'वै। थुआड़े रब्ब नै थुआड़े उप्पर रैहम करना अपने आस्तै जरूरी करी लैते दा ऐ। (इस चाल्ली) जे तुंदे चा जेहका शख्स भुल्ल-भुलेखै कोई बुराई करी बौहग ते फी इसदे बा'द ओह तोबा (प्राहचित) करी लैग ते सुधार करी लैग तां उस (अल्लाह) दा गुण एह ऐ जे ओह बौहत बखशने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 55 ॥

ते इससे चाल्ली अस नशानें गी खोहली-खोहली ब्यान करने आं (तां जे सच्च स्पष्ट होई जा) ते मुजरमें दा तरीका जाहर होई जा ॥ 56 ॥ (रुकू 6/12)

وَلَا شَفِيعٌ لَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٥٢﴾

وَلَا تَطْرُدُ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدْوَةِ
وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ ۗ مَا عَلَيْكَ مِنْ
حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ
مِنْ شَيْءٍ ۖ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُونُ مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٣﴾

وَكَذَلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُم بِبَعْضٍ لِّيَقُولُوا
أَهُؤْلَاءُ مِمَّنْ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قُرْآنٌ بَيْنَنَا
وَاللَّيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِالشَّاكِرِينَ ﴿٥٤﴾

وَإِذَا جَاءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْبَيْتِ أَقْبَلْ
سَلَامًا عَلَيْهِمْ كَمَا كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَى نَفْسِهِ
الرَّحْمَةَ ۗ إِنَّهُ مِنْ مَّنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوءًا
بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْ بَعْدِهِمْ وَأَصْلَحَ فَأَنَّهُ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٥﴾

وَكَذَلِكَ نَقُصُّ الْأَيَاتِ وَلِتَسْتَتِينَ
سَبِيلَ الْمُجْرِمِينَ ﴿٥٦﴾

तू उनेंगी गलाई दे जे मिगी बिल्कुल म'ना कीता गेआ ऐ जे अ'ऊं उंदी (उनें झूठे उपास्यें दी) उपासना करां जिनेंगी तुस अल्लाह दे सिवा पुकारदे ओ। तू उनेंगी गलाई दे जे अ'ऊं थुआड़ी तुच्छ कामनाएं दा अनुसरण नेई करदा। (जेकर अ'ऊं ऐसा करां तां) इस सूरत च (समझो जे) अ'ऊं गुमराह होई चुके दां ते अ'ऊं हदायत पाने आहले लोकें चा नेई आं ॥ 57 ॥

तू उनेंगी गलाई दे जे अ'ऊं अपने रब्ब पासेआ ठोस दलील (युक्ति) पर कायम आं ते तुसें इस दलील (युक्ति) दा इन्कार कीता ऐ। (जिस गल्ला दे बारे च तुस तौल करदे ओ ओह मेरे कश नेई ऐ।) फैसला करना ते अल्लाह दे गै अखत्यार च ऐ। ओह सचाई ब्यान करदा ऐ ते ओह फैसला करने च सारें शा अच्छा ऐ ॥ 58 ॥

तू उनेंगी आखी दे जे जिस चीजै दे बारे च तुस जल्दी चांहदे ओ जेकर ओह मेरे कश होंदी तां मेरे ते थुआड़े बशकार इस गल्ला दा नपटारा कदू दा होई चुके दा होंदा ते अल्लाह जालमें गी सारें शा ज्यादा जानदा ऐ (जिसलै चाहग फैसला करी देग) ॥ 59 ॥

ओहदे कश गैब दियां कुंजियां न। उसदे सिवा उनेंगी कोई नेई जानदा ते जे किश जल ते थल च ऐ ओह उसी जानदा ऐ ते कोई पत्ता नेई झड़दा पर उसी ओहदा ज्ञान होंदा ऐ ते धरती दे न्हेंरें च कोई दाना नेई ते नां कोई तर चीज ऐ ते नां खुश्क चीज जेहकी जे पूरी चाल्ली ओहदी पहाजत च नेई होऐ ॥ 60 ॥

ते ऊऐ ऐ जेहका रातीं बेलै थुआड़े प्राण बश च करी लेंदा ऐ ते जे किश दिनें बेलै करदे

قُلْ إِنِّي نُهَيْتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ قُلْ لَا آتِيْعُ أَهْوََاءَكُمْ قَدْ ضَلَلْتُمْ إِذَا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ٥٧

قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّي وَكَذَّبْتُمْ بِهِ مَا عِنْدِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ ٥٨
إِنَّ الْحُكْمَ لِلَّهِ يَقْضِ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ الْفَاصِلِينَ ٥٩

قُلْ تَوَّانَ عِنْدِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ لِقَاضِي الْأَمْرِ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ٦٠

وَعِنْدَهُ مَفَاتِيْحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبُرْجِ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَرْقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٌ فِي ظِلْمَتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ٦٠

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُمْ بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا

ओ, उसी बी जानदा ऐ, फी तुसैंगी दिनै बेलै दुआलदा ऐ तां जे इक अबधी जेहकी निश्चत होई चुकी दी ऐ, पूरी कीती जा जेहदे बाद ओहदे पासै तुसँ परतियै जाना होग ते जे किश तुस करदे रेह ओ ओहदी तुसैंगी खबर देग ॥ 61 ॥ (रुकू 7/13)

جَرَحْتُمْ بِالطَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثْكُمْ فِيهِ
لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَيِّءٌ ثُمَّ إِلَيْهِ
مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ﴿٦١﴾

ते ओह अपने बंदें पर गालिब ऐ ते तुंदे पर नगरान नियुक्त करियै भेजदा¹ रौहदा ऐ इत्थें तक जे जिसलै तुंदे चा कुसैंगी मौत आहनी पकड़दी ऐ तां साढ़े भेजे दे (फरिश्ते) उसदी रूह कब्जे च करी लैंदे न ते ओह आज्ञा पालन करने च कोई कमी नेई करदे ॥ 62 ॥

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَيُرْسِلُ
عَلَيْكُمْ حَفْظَةً ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمْ
الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفْرِطُونَ ﴿٦٢﴾

फी उनेंगी अल्लाह कश परताया जाग जेहका उंदा सच्चा मालक ऐ। सुनो! फैसला करना उससै दे अधिकार च ऐ, ते ओह स्हाब लैंने आहलें चा सारें शा तौले स्हाब लैंने आह्ला ऐ ॥ 63 ॥

ثُمَّ رَدُّوْا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقُّ ۗ أَلَا لَهُ
الْحُكْمُ ۖ وَهُوَ سَرِعٌ الْحَسِيبِينَ ﴿٦٣﴾

ते उनेंगी गलाई दे जे तुसैंगी जल ते थल दी मसीबतें शा कु'न बचांदा ऐ? जिसलै जे तुस उसी अत्त ल्हीमगी कन्नै एकांत च पुकारदे ओ जे जेकर ओह इस बिपता शा साढ़ा बचाऽ करग तां अस जरूर शुकरगजार होई जागे ॥ 64 ॥

قُلْ مَنْ يُنَجِّيكُمْ مِنْ ظُلْمِ الْبَرِّ
وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۗ
لَيْسَ أُنْجَا مِنْ هَذِهِ لَتَكُونَنَّ
مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٦٤﴾

तूं उनेंगी गलाई दे जे अल्लाह गै तुसैंगी इस शा बी ते हर इक (दूई) घबराट शा बी बचांदा ऐ, फी बी तुस शिक (अनेकेश्वरवाद) गी अपनांदे ओ ॥ 65 ॥

قُلْ اللَّهُ يُنَجِّيكُمْ مِنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ
ثُمَّ أَنْتُمْ تُشْرِكُونَ ﴿٦٥﴾

तूं उनेंगी गलाई दे जे ओह इस गल्ला दी बी समर्थ रखदा ऐ जे थुआड़े उप्परा जां थुआड़े

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ

1. यानी रसूल! दिक्खो सूर: निसा आयत: 42 "उस दिन केह होग जिस दिन अस हर-इक जाति चा इक-इक नगरान (रसूल) आहनिचै गुआही देने आस्तै खड़ा करी देगे।"

पैंरें हेठा अजाब उतारै जां तुसेंगी (इक-दूए दे खलाफ) बकख-बकख दलें दे रूपै च आपस च लड़ाई देरे ते तुंदे चा किश लोकें गी किश लोकें राहें कशट पुजाऽ। दिक्ख! अस किस चाल्सी आयतें गी बार-बार ब्यान करने आं तां जे ओह समझन ॥ 66 ॥

ते तेरी कौम दे लोकें इस (मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम दे संदेश) गी झूठा करार दिता ऐ। हालांके ओह सच्चा ऐ। तूं उनेंगी गलाई दे जे अ'ऊं थुआड़ा जिम्मेदार नेई आं ॥ 67 ॥

हर-इक भविकखवाणी दी इक हद्द निश्चत होंदी ऐ ते तुस तौले गै सचाई गी जानी लैगे ओ ॥ 68 ॥

ते जिसलै तूं उनें लोकें गी दिक्खें जेहके साढ़ी आयतें दे बारे च बे-लगाम (खु'ल्ले मूंह) होइयै गल्लां करदे न तां तूं उस बेलै तगर उंदे शा दूर राहै जिन्ना चिर जे ओह इस (अशलील गल्ला) गी छोड़ियै कुसै दूई गल्ला च रुच्छी नेई जान ते जेकर शतान तुगी भुलाई बी देरे तां चेता औने पर तूं अत्याचारी जाति कश नेई बौह ॥ 69 ॥

ते जेहके लोक संयम अखत्यार करदे न उंदे उप्पर उनें (मिथ्यावादी लोकें दे) लेखें दा कोई जिम्मा नेई, बल्के उपदेश देना (उंदे जिम्मै) ऐ तां जे ओह संयम अखत्यार करन ॥ 70 ॥

ते तूं उनें लोकें गी छोड़ी दे जिनें अपने धर्म गी मजाक बनाई लेदा ऐ ते संसारक जीवन नै उनेंगी धोखे च पाई रक्खे दा ऐ ते उनेंगी इस (कुर'आन) दे राहें उपदेश दे तां जे (ऐसा निं होऐ जे) कुसै जानै गी ओहदी कमाई

عَدَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ أَوْ مِّنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ
أَوْ يَلْبَسَكُمْ شِيعًا وَيُذِيقُ بَعْضَكُمْ
بَأْسَ بَعْضٍ ۗ أَنْظُرْ كَيْفَ نَصْرَفُ
الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ ﴿٦٦﴾

وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمَكَ وَهُوَ الْحَقُّ ۗ قُلْ
لَسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ﴿٦٧﴾

لِكُلِّ نَبِيٍّ مَّا سَتَقَرُّ ۗ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾

وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا
فَاعْرِضْ عَنْهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا فِي
حَدِيثِ غَيْرِهِ ۗ وَإِمَّا يُنسِئَنَّكَ الشَّيْطٰنُ
فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرِى مَعَ الْقَوْمِ
الظَّالِمِينَ ﴿٦٩﴾

وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ
شَيْءٍ ۗ وَلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٧٠﴾

وَذَرِ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِيَارِهِمْ لِعِبَادٍ وَلَهُوَا
وَعَرَّتْهُمْ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَذَكَّرَبِهٖ اَنْ
تُبْسَلَ نَفْسٌ مِّمَّا كَسَبَتْ ۗ لَيْسَ لَهَا مِنْ

(कुकर्में) कारण इस चाल्ली तबाही च पाया जा जे अल्लाह दे सिवा उस दा नां कोई मददगार होऐ, ते नां कोई सफ़ारश करने आहला ते जेकर ओह हर चाल्ली दा बदला बी देन तां बी उंदे शा कबूल नेई कीता जाग। एह ऐसे लोक न जिनेंगी उंदी कमाई कारण नश्ट करी दिता जाग ते उनेंगी उंदे इन्कार कारण पीने आस्तै खौलदा पानी (मिलग) ते दर्दनाक अजाब होग ॥ 71 ॥ (रुकू 8/14)

तूं उनेंगी गलाई दे जे क्या अस अल्लाह गी छोड़ियै उसी पुकारचै जेहका नां असेंगी कोई लाह पुजाई सकदा ऐ ते नां हानी ते क्या अल्लाह दी हदायत दे बा'द अस उस शख्स आंगर उनें पैरें परताई दिते जाचै जिसी सिरफिरे लोक बक्हाइयै धरती च लेई गे होन ते ओह र्हान-परेशान होआ करदा होऐ। उस दे किश साथी ते नेह न जेहके उसी (एह आखदे होई) पुकारदे न जे साढ़े कश आ तां जे तूं हदायत पाएं। तूं उनें इन्कारी लोकें गी गलाई दे जे यकीनन अल्लाह दी हदायत गै असल हदायत ऐ ते असेंगी हुकम दिता गेदा ऐ जे अस सारे ज्हानें (सारे लोकें) दे रब्ब दी आज्ञा दा पालन करचै ॥ 72 ॥

ते एह (बी आदेश दिता गेदा ऐ) जे नमाजें गी बिधी मताबक पूरा करा करो ते उस (अल्लाह) गी अपनी ढाल बनाओ ते ऊऐ ऐ जेहदे कश तुस किट्टे करियै लेते जागे ओ ॥ 73 ॥

ते ऊऐ ऐ जिसनै गासें ते धरती गी हक़ ते हिकमत कन्नै पैदा कीता ऐ ते जिस दिन ओह गलाग जे (मेरी इच्छेआ मताबक ऐसा) होई जा (तां उससै चाल्ली) होई जाग। ओहदी

دُونِ اللَّهِ وَلَيْسَ لِشَفِيعٍ عِ وَإِنْ تَعْدِلْ
كُلَّ عَدْلٍ لَا يُؤْخَذُ مِنْهَا أُولَئِكَ الَّذِينَ
أَبْسَلُوا بِمَا كَسَبُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ
حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا
يَكْفُرُونَ ﴿٧١﴾

قُلْ أَدْعُوا مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا
وَلَا يَضُرُّنَا وَتُرَدُّ عَلَيَّ أَحْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ
هَدَانَا اللَّهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ
فِي الْأَرْضِ حَيْرَانًا لَّهٗ أَصْحَابٌ
يَدْعُونَهُ إِلَى الْهُدَى ائْتِنَا قُلْ إِنْ هَدَى
اللَّهُ هُمَا الْهُدَىٰ وَأَمْرًا لِّسَلْمٍ لِّرَبِّ
الْعَالَمِينَ ﴿٧٢﴾

وَأَنْ أَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَهُمْ لَا يُذَوِّ
إِلَيْهِ يُخْسِرُونَ ﴿٧٣﴾

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
بِالْحَقِّ ۗ وَيَوْمَ يَقُولُ كُنْ فَيَكُونُ ۗ قَوْلُهُ

गल्ल पूरी होइयै रौहने आहली ऐ ते जिस दिन बिगल बजाया जाग तां क्हुमत सिर्फ उसै दी होग। ओह गुप्त ते जाहर गल्लें गी जानने आहला ऐ ते ओह हिक्मत अहला ते खबरदार ऐ ॥ 74 ॥

الْحَقُّ ط وَ لَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ ط
عِلْمُ الْعَالَمِينَ وَالشَّهَادَةُ ط وَ هُوَ الْحَكِيمُ
الْخَبِيرُ ٧٤

ते (याद करो) जिसलै इब्राहीम नै अपने पिता आज़र गी एह गलाया जे तूं किश मूरतियें गी उपास्य बनाजा ऐं? अ'ऊं तुगी ते तेरी कौम गी जाहरी-बाहरी गुमराही¹ च पात्रा आं ॥ 75 ॥

وَ إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ أَرَزَرَأْتَتَّخِذُ
أَصْنَامًا إِيهَاءً ؕ إِنِّي أَرَأَيْتَ أَكْرَبُكَ وَ قَوْمَكَ
فِي صُلْبٍ مُّبِينٍ ٧٥

ते इस चाल्ली अस इब्राहीम गी गासैं ते धरती च अपनी क्हुमत दसदे हे (तां जे ओहदा ज्ञान कामिल होऐ) ते तां जे ओह जकीन करने आहलें चा होई जा ॥ 76 ॥

وَ كَذَلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ
السَّمَوَاتِ وَ الْأَرْضِ وَ لِيَكُونُ مِنَ
الْمُؤَقِنِينَ ٧٦

(इक दिन इयां होआ जे) जिसलै ओहदे पर रात छाई गई तां उसनै इक नखतर (तारा) दिक्खेआ, (उसी दिक्खियै) उसनै गलाया जे क्या एह मेरा रब्ब (होई सकदा) ऐ? फी जिसलै ओह (नखतर/तारा) डुब्बी गेआ तां उसनै गलाया जे अ'ऊं डुब्बने आहले गी पसंद नेई करदा ॥ 77 ॥

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَى كَوْكَبًا ؕ قَالَ
هَذَا رَبِّي ؕ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أَحِبُّ
الْأَفْلِينَ ٧٧

(इस दे बा'द) जिसलै उसनै चंदरमां गी चमकदे दिक्खेआ तां उसनै गलाया जे क्या एह मेरा रब्ब (होई सकदा) ऐ? फी जिसलै ओह बी छप्पी गेआ तां उसनै गलाया जे जेकर मेरा रब्ब मिगी हदायत नेई दिंदा तां अ'ऊं यकीनन गुमराह² लोकें चा होंदा ॥ 78 ॥

فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِعًا قَالَ هَذَا رَبِّي ؕ
فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَيْسَ لَّمْ يَهْدِنِي رَبِّي
لَأَكُونَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ ٧٨

फी जिसलै उसनै सूरज गी चमकदे दिक्खेआ तां उसनै गलाया जे क्या एह मेरा रब्ब (होई

فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِعَةً قَالَ هَذَا رَبِّي

1. गुमराही- बुरी राह, पथ-भ्रष्टता।

2. गुमराह-बुरे रस्ते पर जाने आहला, कमागी, पथ-भ्रष्ट।

सकदा) ऐ? यकीनन एह ते सारें शा बड्डा ऐ, फी जिसलै ओह बी डुब्बी गेआ तां उसनै गलाया जे हे मेरी कौम! अ'ऊं सचचें गै उसी पसंद नेई करदा जिसी तुस अल्लाह दा शरीक बनांदे ओ ॥ 79 ॥

यकीनन मैं अपना ध्यान सारे त्रेढे रस्तें शा बचदे होई उस अल्लाह पासै फेरी लैता ऐ, जिसनै गासें ते धरती गी पैदा कीता ऐ ते अ'ऊं मुश्रिकें (अनेकेश्वरवादियें) चा नेई आं ॥ 80 ॥

ते उसदी कौम दे लोकें ओहदे कन्नै वाद-विवाद करियै जीतना चाह्या तां उसनै गलाया जे तुस मेरे कन्नै अल्लाह बारै वाद-विवाद करदे ओ। हालांके उसनै आपूं मी हदायत दिती दी ऐ ते जिसी तुस अल्लाह दा शरीक बनांदे ओ अ'ऊं ओहदे शा नेई डरदा। हां! जेकर मेरा रब्ब कोई गल्ल करने दा निश्चा करी लै (तां ओहदे शा डरना आं) मेरे रब्ब नै हर-इक चीजै गी अपने ज्ञान दे घेरे च लैते दा ऐ, फी बी क्या तुस नेई समझदे? ॥ 81 ॥

ते अ'ऊं ओहदे शा जिसी तुस अल्लाह दा शरीक बनांदे ओ किस चाल्ली डरी सकनां जिसलै जे तुस उस (चीजै) गी अल्लाह दा शरीक बनाने शा नेई डरदे जेहदे बारै च उसनै तुंदे सामनै कोई सबूत नेई उतारेआ (पेश कीता)। इस आस्तै जेकर तुसंगी किश इलम ऐ तां (दस्सो जे) साढ़े दौनीं पक्खें/धड़ें चा केहड़ा पक्ख/धड़ा सारें शा बद्ध सुख-शांती दा हक्कदार ऐ ॥ 82 ॥

जेहके लोक ईमान लेई आए ते उनें अपने ईमान गी अत्याचार कन्नै नेई मलाया, उनें लोकें आस्तै सुख-शांती ऐ ते ऊऐ हदायत पाने आहले न ॥ 83 ॥ (रुकू 9/15)

هَذَا أَكْبَرُ فَلَمَّا أَفَلَتْ قَالَ يَقَوْمِ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٧٩﴾

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٨٠﴾

وَحَاجَّهُ قَوْمُهُ قَالَ أَتُحَاجُّونِي فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدَبْتُ وَلَا أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٨١﴾

وَكَيفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُم بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا فَأَمَّا الْفَرِيقَيْنِ أَحْسَنُ بِالْأَمْنِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٢﴾

الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُمْ مُهْتَدُونَ ﴿٨٣﴾

ते एह साढ़े पासेआ (दिल्ती दी इक) युक्ति ही जेहकी असें इब्राहीम गी ओहदी कौम¹ दे खलाफ सखाई ही। अस जिसी चाहन्ने आं ओहदे दरजे² उच्चे करने आं। यकीनन तेरा रब्ब हिक्मत आह्ला ते बौहत् जानने आह्ला ऐ ॥ 84 ॥

ते असें उस (इब्राहीम) गी इस्हाक ते याकूब प्रदान कीते हे। असें इनें सारे गी हदायत दित्ती ही ते इस शा पैहलें असें नूह गी हदायत दित्ती ही ते ओहदी (इब्राहीम दी) संतान चा दाऊद ते सुलेमान ते अय्यूब ते यूसुफ ते मूसा ते हारून गी बी ते इस्सै चाल्ली अस चंगी-चाल्ली कम्म करने आहलें गी बदला / सिला दिन्ने होन्ने आं ॥ 85 ॥

ते जकरिय्या³ ते यह्या ते ईसा ते इल्ल्यास गी बी (हदायत दित्ती ही)। एह सारे दे सारे नेक लोकें चा हे ॥ 86 ॥

ते इस्माईल ते अल्यसअ ते यूनस ते लूत गी बी हदायत दित्ती ही ते इनें सारे गी असें सारे ज्हांनें/लोकें पर प्रधानता दित्ती ही ॥ 87 ॥

وَتِلْكَ حُجَّتُنَا آتَيْنَهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ ۗ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مِّنْ نَّشَأٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٨٤﴾

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۗ كُلًّا هَدَيْنَا ۗ وَنُوحًا هَدَيْنَا مِن قَبْلُ ۚ وَمِن ذُرِّيَّتِهِ دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَهَارُونَ ۗ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٥﴾

وَرَكَرِيًّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِلْيَاسَ ۗ كُلًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿٨٦﴾

وَإِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَيُونُسَ وَلُوطًا ۗ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٨٧﴾

1. सेही होआ जे इज्जरत इब्राहीम नै दुबधा शा कम्म नेई लैता, बल्के जो उप्पर लिखेआ गेदा ऐ ओह सब अल्लाह दा सखाए दा हा ते अल्लाह शिके दी तलीम नेई दिंदा।
2. दरजा:- उच्चा-नीमा दे क्रम दे बिचर करनै निश्चत थाहर, श्रेणी, मरतबा।
3. हज्जरत जकरिय्या दा जिकर हज्जरत यह्या करनै इस आस्तै कीता गेदा ऐ जे ओह उंदे पिता हे ते हज्जरत ईसा दा इस आस्तै जे हज्जरत यह्या हज्जरत मसीह आस्तै इह्रास (अग्रदूत) हे ते इल्ल्यास दा इस आस्तै जे हज्जरत ईसा दे अवतार शा पैहलें इल्ल्यास दे गासै थमां औने दा समाचार दिता गेदा हा ते हज्जरत इस्माईल दा इस करी जे ओह बी हज्जरत ईसा आंगर जमाली (विनम्र/ल्होम) नबी हे ते अल्यसअ ते यसायह दा इस लेई कीता गेदा ऐ, जे उनेगी/उंदी बी इल्ल्यास कन्नै उपमा दित्ती जंदी ऐ ते हज्जरत यूनस दा इस आस्तै जे उंदी ते हज्जरत मसीह दी घटना गी इक्के जनेहा समझेआ जंदा ऐ। हज्जरत लूत दा बर्णन इस आस्तै कीता गेदा ऐ जे उंदा हज्जरत इस्माईल करनै गुद्दा सरबंध हा। इस आस्तै इत्थें ए आक्षेप नेई होंदा जे एह नबी इक-दूए दे अगर्-पिच्छें आए हे ते कुरआन नै इंदा सारे दा बर्णन इक्के थाहरा पर करी दिते दा ऐ, की जे पवित्र कुरआन नै हिक्मत मताबक इंदा ब्यौरा किट्टा कीते दा ऐ नां कि इतिहासक ट्रिस्टीकोण करनै।

ते असें उंदे बड़के, उंदी संतान ते उंदे भ्राएं
गी बी (हदायत दिती ही) ते असें उनेंगी चुनी
लैता हा ते उनेंगी सिद्धे रस्तै पासै चलाया हा
॥ 88 ॥

अल्लाह दे हदायत देने दा इय्यै ढंग ऐ जेहदे
राहें ओह अपने भगतें चा जिसी चांहदा ऐ
हदायत दिंदा ऐ ते जेकर ओह शिकं
(अनेकेश्वरवाद) गी अपनांदे तां जे किश
ओह कर्म करदे हे उंदे ओह कर्म नश्ट होई
जंदे ॥ 89 ॥

एह ऊऐ लोक न जिनेंगी असें कताब ते
फैसला करने दा ज्ञान ते नुबुव्वत प्रदान
कीती ही। इस आस्तै जेकर ओह लोक इस
(नुबुव्वत) शा इन्कार करन तां असें उसी
इक होर कौम (यानी मुसलमाने) दे सपुर्द
करी दिता ऐ, जेहकी एहदे शा नाबर नेई ऐ
॥ 90 ॥

इनें (उप्पर बर्णत लोके) गी गै अल्लाह नै
हदायत दिती। इस आस्तै तू उंदी हदायत दा
अनुसरण कर। तू उनेंगी गलाई दे अ ऊँ एहदे
पर / आस्तै तुंदे शा कोई मजदूरी नेई मंगदा।
एह ते सिर्फ सारे लोके आस्तै उपदेश/नसीहत
ऐ ॥ 91 ॥ (रुकू 10/16)

ते जिसलै उनें एह गल्ल आखी ही जे
अल्लाह नै कुसै बंदे पर किश नाजल नेई
कीता तां उनें अल्लाह (दे गुणे) दा अंदाजा
इस चाल्ली नेई लाया जिस चाल्ली अंदाजा
लाना चाहीदा हा। तू उनेंगी आखी दे जे ओह
कताब जेहकी मूसा ल्याए हे ओह लोके
आस्तै नूर ते हदायत ही। उसी कुसनै उतारेआ

وَمِنْ آبَائِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَأَحْوَانِهِمْ
وَاجْتَنَبْتَهُمْ وَهَدَيْتَهُمْ إِلَى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيمٍ ۝

ذَلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ
عِبَادِهِ ۖ وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

أُولَئِكَ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ
وَالنَّبُوَّةَ ۚ فَإِنْ يَكْفُرْ بِهَا هَوَاءً فَقَدْ
وَكَلْنَا بِهَا قَوْمًا لَيَسُوْا بِهَا بِكْفِيرِينَ ۝

أُولَئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ فَبِهِدَّتْهُمْ
أَفْتَدَهُ ۖ قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۗ
إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِذْ قَالُوا مَا
أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَى بَشَرٍ مِنْ شَيْءٍ ۖ قُلْ مَنْ
أَنْزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي جَاءَ بِهِ مُوسَى نُورًا
وَهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُونَهُ قَرَاطِيسَ
تُبَدُّوْنَهَا وَتُحْمُونَ كَثِيرًا ۖ وَعَلَّمْتُمْ مَا

हा? तुस उसी ब'रका-ब'रका' करा करदे ओ। उसी प्रकट बी करदे ओ ते (ओहदे चा) केई हिरसे छपालदे बी ओ। असल गल्ल ते एह ऐ जे तुसेंगी ओह किश सखाया गेदा ऐ जिसी नां तुस जानदे हे ते नां थुआड़े पुरखे गै। तूं उनेंगी गलाई दे जे अल्लाह नै (गै) उसी उतारेआ हा फी तूं उनेंगी उंदे झूठ च खेढदे होई छोड़ी दे ॥ 92 ॥

ते एह (कुरआन) इक बड़डी शान आहली कताब (धर्मग्रंथ) ऐ, जिसी असें उतारे दा ऐ। ओह बरकतें दा भंडार ऐ ते जेहका कलाम इस शा पैहलें उतरेआ हा उसी पूरा करने आहला ऐ ते असें इसी इस आस्तै उतारे दा ऐ जे तूं एहदे राहें लोकेंगी हदायत देएं ते तां जे तूं उम्मुल्कुरा (मक्का) आहलें गी ते जेहके इसदे आसै-पासै राँहदे न उनेंगी डराएं ते जेहके लोक बा'द च औने आहली (प्रतिज्ञात) गल्लें² पर ईमान आहनदे न, ओह इस कुरआन पर बी ईमान रखदे न ते ओह अपनी नमाजें दा सदा ध्यान रखदे न ॥ 93 ॥

ते उस शख्स शा बद्ध दूआ कु'न अत्याचारी होई सकदा ऐ जेहका जानी-बुज्जी अल्लाह पर झूठ घड़ै ते एह आखै जे मेरे पर वह्नी उतारी गेदी ऐ, हालांके ओहदे पर वह्नी नेई उतारी गेदी होऐ ते उस शख्स शा बद्ध होर कु'न अत्याचारी होई सकदा ऐ जेहका आखदा ऐ जे जे किश अल्लाह नै उतारे दा ऐ सच्चें गै ऊऐ नेही वाणी अ'ऊं बी उतारी देगा ते जेकर तूं (उस समे गी) दिक्खें जिसलै जे अत्याचारी लोक मौती दा कश्ट

لَمْ تَعْلَمُوا أَنْتُمْ وَلَا آبَاؤُكُمْ قُلِ اللَّهُ
تَمَّ ذَرَّهُمْ فِي حَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ ⑤

وَهَذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مَبْرُكًا مُصَدِّقًا
الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتِلْكَ آيَاتُ الْقُرْآنِ
وَمَنْ حَوَّلَهَا وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ
يُؤْمِنُونَ بِهِ وَهُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ
يَحَافِظُونَ ⑤

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
أَوْ قَالَ أُوحِيَ إِلَيَّ وَلَمْ يُوحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ
وَمَنْ قَالَ سَأُنزِلُ مِثْلَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ
وَلَوْ تَرَى إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ
الْمَوْتِ وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُوا أَيْدِيهِمْ

1. यानी उसदा नपदर करा करदे न।

2. प्रतिज्ञात गल्लां यानी ओह गल्लां जिंदा बा'यदा कीता गेदा होऐ।

झल्ला करदे होडन ते फरिश्ते (एह आखदे होई) अपने हत्थ फलाऽ करदे होडन जे अपनियां जानां कड्डो। जे किश तुस अल्लाह दे बारे च फजूल गल्लां करदे होंदे हे ते उसदी आयतें दे बारे च घमंड शा कम्म लेंदे होंदे हे, अज्ज तुसेंगी ओहदे करी अपमान-जनक अजाब दिता जाग (तां तुगी इक इबरतनाक नजारा लब्भग) ॥ 94 ॥

ते (उस बेलै अस गलागे जे) जिस चाल्ली असें पैहली बार तुसेंगी पैदा कीता हा (उससै चाल्ली हून तुस) कल्ले-कल्ले साढे कश पुज्जे ओ ते जे किश असें तुसेंगी उपकार दे रूपे च प्रदान कीता हा उसी तुसें अपनी पिट्ठीं पिच्छें सुट्टी दिता ऐ ते (एह केह गल्ल ऐ जे) अज्ज अस थुआड़े कन्नै उनें सफारशियें गी नेई दिखदे, जिंदे बारे च तुस दा'वे कन्नै आखदे होंदे हे जे ओह तुंदे (पर क्कूमत करने) च (अल्लाह दे) शरीक न। (हून) थुआड़े आपस दे सारे सरबंध भलेआं दुट्टी चुके दे न ते जे किश तुस गलांदे होंदे हे ओह सब किश थुआड़े शा खूसी लैता गेदा ऐ ॥ 95 ॥ (रुकू 11/17)

यकीनन अल्लाह बीऽ ते गुलियें गी फाड़ने आहला ऐ। ओह सजीव गी निरजीव चा कड्डा ऐ, ते निरजीव गी सजीव चा कड्डने आहला ऐ। थुआड़ा अल्लाह ते नेहा ऐ। इस आसतै दस्सो तुस कुत्थुआं बापस परताए जंदे ओ? ॥ 96 ॥

ओह बडले गी जाहर करने आहला ऐ ते उसनै रातीं गी रमान दा साधन ते सूरज ते चंदरमां गी गणित दा अधार बनाया ऐ। एह अनुमान ओहदा ऐ जेहका गालिब ते बौहत्त जानने आहला ऐ ॥ 97 ॥

أَخْرَجُوا أَنفُسَكُمْ ۖ الْيَوْمَ تُجْرَوْنَ
عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَقُولُونَ عَلَى
اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنتُمْ عَنْ آيَاتِهِ
تَسْتَكْبِرُونَ ﴿٩٥﴾

وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا فَرَادَى كَمَا خَلَقْنَاكُمْ
أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَتَرَكْتُمْ مَا خَوَّلْنَاكُمْ وَرَاءَ
ظُهُورِكُمْ ۗ وَمَا نَرَى مَعَكُمْ
شُفَعَاءَ كُمْ ۖ الَّذِينَ رَعَعْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ
شُرَكَاءُ ۗ لَقَدْ تَقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ
عَنكُمْ مَا كُنتُمْ تَرَعُمُونَ ﴿٩٦﴾

إِنَّ اللَّهَ فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوَى ۙ يُخْرِجُ
الْحَبَّ مِنَ النَّمِيَّةِ وَمَخْرُجَ النَّمِيَّةِ مِنَ
النَّحْيِ ۗ ذَٰلِكُمْ اللَّهُ فَالِقُ ثَوَاقِفِكُمْ ﴿٩٦﴾

فَالِقِ الْإِصْبَاحِ ۗ وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا
وَالشَّمْسِ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۗ ذَٰلِكَ
تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿٩٧﴾

ते ऊरे ऐ जिसनै थुआड़े आस्तै नखत्तरें दी रचना कीती ऐ तां जे तुस उंदे राहें बिपता दे मौकै जल ते थल च राह पाई सको। असें ज्ञान रक्खने आहली कौम आस्तै अपने नशान तफसील कन्नै दस्सी दिते न ॥ 98 ॥

ते ऊरे ऐ जिसनै तुसेंगी इक जान चा पैदा कीता ऐ फी उसनै थुआड़े आस्तै इक अस्थाई¹ नवास-स्थान ते इक लम्मे समे आस्तै नवास-स्थान नियुक्त कीता ऐ। असें सूझ-बूझ आहलें आस्तै सबूत तफसील कन्नै दस्सी दिते न ॥ 99 ॥

ते ऊरे ऐ जिसनै गासै थमां पानी उतारेआ ऐ। फी (दिक्खो किस चाल्ली) ओहदे राहें असें हर भांति दी बनस्पति उगाई ऐ ते ओहदे राहें खेती पैदा कीती, जेहदे चा अस तैह दर तैह दाने कड्डने आं ते खजूरै दे गम्भे चा लटकदे गुच्छे कड्डने आं ते अंगूर ते जैतून ते अनारें दे ऐसे बाग कड्डने आं जिंदे चा किश आपस च इक-दूए कन्नै मिलदे-जुलदे न ते किश इक-दूए शा बक्खरे न। जिसलै (उंदे चा हर चाल्ली दे बूहटें गी) फल पौंदा/लगदा ऐ तां ओहदे फलै गी ते ओहदे पक्कने (दी हालत) गी दिक्खो। यकीनन ओहदे च ईमान आहन्ने आहले लोके आस्तै नेकां नशान मजूद न ॥ 100 ॥

ते उनें अल्लाह दे कन्नै जिन्न शरीक ठरहाए दे न। असल गल्ल ते एह ऐ जे उस (अल्लाह) नै उनेंगी पैदा कीते दा ऐ ते उनें

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ النَّجْمَ لِيَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ اللَّيْلِ وَالْبَحْرِ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٩٨﴾

وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَمُسْتَوْدَعٌ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُفْقَهُونَ ﴿٩٩﴾

وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُخْرَجُ مِنْهُ حَبًّا مَاتِرًا كَبَابًا وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَجَبْتِ مِنْ أَعْنَابٍ وَالزَّيْتُونَ وَالرَّمَانَ مَشْتَبَهَا وَغَيْرَ مُمْتَسِبٍ أَنْظَرُوا إِلَى نَمْرَةٍ إِذَا أُمِرُوا وَيَنْعِهِمْ إِنْ فِي ذُرِّيَّتِكُمْ لآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٠﴾

وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا لَهُ بَنِينَ وَبَنَاتٍ بِغَيْرِ عِلْمٍ ﴿١٠٠﴾

1. (क) अस्थाई नवास-स्थान दा अर्थ कबर ऐ ते लम्मे समे दे नवास-स्थान दा अर्थ मौती दे बाद आहला जीवन ऐ (ख) अस्थाई नावस-स्थान दा अर्थ संसारक जीवन ऐ ते स्थाई जीवन कन्नै पारलौकिक जीवन अभीष्ट ऐ।

ओहदे आस्तै बिना इलम दे झूठ-मूठ गै धीयां-पुतर बनाए दे न। ओह पवित्तर ऐ ते जे किश ओह ब्यान करदे न ओहदे शा ओह बौहत उच्चा ऐ ॥ 101 ॥ (रुकू 12/18)

ओह गासं ते धरती गी बिना कुसै नमूने दे पैदा करने आहला ऐ। ओहदा पुतर कियां होई सकदा ऐ, जिसलै जे ओहदी कोई लाड़ी नेई ही ते उसनै ते हर चीजै गी पैदा कीता ऐ ते ओह हर इक गल्ला गी जानदा ऐ ॥ 102 ॥

एह ऐ थुआड़ा अल्लाह जेहका थुआड़ा रब्ब बी ऐ। उसदे सिवा कोई उपास्य नेई ते ओह हर इक चीजा दा पैदा करने आहला ऐ। इस आस्तै ओहदी अबादत करो ते ओह हर इक गल्लै दा नगरान ऐ ॥ 103 ॥

ओहदे तक नजर नेई पुज्जी सकदी, पर ओह नजर तक पुजदा¹ ऐ ते ओह देआ करने आहला ते सचाई गी जानने आहला ऐ ॥ 104 ॥

थुआड़े रब्ब पासेआ युक्तियां आई चुकी दियां न। इस आस्तै जिसनै सूझ-बूझ शा कम्म लैता (उस दा एह कम्म) ओहदे अपने हित आस्तै गै होग, पर जेहका डींगे रस्तै चलग (ओहदा एह कर्म) ओहदे पर गै पौग ते अऊँ ते थुआड़ा संरक्षक² नेई आं ॥ 105 ॥

ते इसै चाल्ली अस आयतें गी केई चाल्ली नै फेरी-घेरियै आहनने आं (तां जे उंदे पर हुज्जत

١٧
ع
١٨

سُبْحٰنَهُ وَتَعَالٰى عَمَّا يُصِفُوْنَ ﴿١٧﴾

بَدِيعِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَنۡىۤ يَكُوْنُ
لَهُۥ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنۡ لَّهٗ صَاحِبَةً ؕ وَحَاقَ
كُلَّ شَيْءٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٨﴾

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ؕ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
حَاقَ كُلَّ شَيْءٍ فَاَعْبُدُوْهُ ؕ وَهُوَ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٩﴾

لَا تَدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ؕ وَهُوَ يُدْرِكُ
الْاَبْصَارَ ؕ وَهُوَ اللّٰطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿٢٠﴾

قَدْ جَاءَكُمْ بَصٰىرٌ مِّنۡ رَبِّكُمْ ؕ فَمَنْ
اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ؕ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا
وَمَا اَنَاۡ عَلَيۡكُمْ بِخَفِيْظٍ ﴿٢١﴾

وَكَذٰلِكَ نَصِّرُفِ الْاٰيٰتِ وَيَقُوْلُوْا

1. यानी मनुक्ख अपनी बिद्या दे बल पर उसी नेई दिक्खी सकदा। हां! अल्लाह अपनी अपार किरपा कन्नै ओहदे लागै आइयै अपना जलवा दसदा ऐ ते इस चाल्ली मनुक्खें गी ओहदे दर्शन होई जंदे न।
2. यानी तुसंगी थुआड़ी ना-फरमात्री कारण जेहके अजाब पुज्जे, रसूल तुसंगी उंदे शा बचाई नेई सकदा ते नां तुसंगी पाप करने शा जबरदस्ती हटाई/रोकी सकदा ऐ।

(तर्क) कायम होई जा) ते तां जे ओह आखी देन जे तोह पढियै सुनाई दिता ऐ (ते तर्क कायम करी दिता ऐ) ते तां जे अस उसी ज्ञान रक्खने आहली कौम दे फायदे आसै ब्यान करी देचै ॥ 106 ॥

जे किश तेरे रब्ब पासेआ तेरे पर उतारेआ जंदा ऐ ओहदा अनुसरण कर। ओहदे सिवा होर कोई उपास्य नेई ते तू मुश्रिकें (अनेकेश्वरवादियें) शा मूंह फेरी लै ॥ 107 ॥

ते जेकर अल्लाह चांहदा तां ओह शिर्क नेई करदे ते असें तुगी उंदे आसै रक्षक नयुक्त नेई कीता ते नां तू उंदा नगरान मै ऐं ॥ 108 ॥

ते तुस उनेंगी, जिनेंगी ओह अल्लाह दे सिवा (प्रार्थना च) पुकारदे न, गालीं नेई दे नेई ते ओह बैरी बनिचै भुल्ल-भुलेखै अल्लाह गी गालां देडन। इस चाल्ली असें हर-इक कौम दे लोकें गी उंदे कर्म खबसूरत (सुंदर)¹ करियै दस्से न, फी उनेंगी परतोइयै अपने रब्ब कश गै जाना ऐ, जेहदे पर ओह उनेंगी ओहदी खबर देग जे किश ओह करदे होंदे हे ॥ 109 ॥

ते उनें अल्लाह दियां पक्कियां सघदां खादियां जे उंदे कश जेकर कोई नशान आवै तां ओह जरूर गै मन्नी लैडन। तू मोमिनें गी आख जे चमत्कार बी ते ओह चीज² बी अल्लाह कश

دَرَسْتَ وَلِتَّبَيِّنَهُ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٥٦﴾

اتَّبِعْ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿٥٧﴾

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكُوا ۚ وَمَا جَعَلْنَا عَلَيْهِمْ حَفِظًا ۚ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ﴿٥٨﴾

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَيَسُبُّوا اللَّهَ عَدْوًا بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ كَذَلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۖ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ مَرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٥٩﴾

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَتْهُمْ آيَةٌ لَيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا

- जेहकी कौम कुसै कम्मै गी सक्रिय रूपै च अपनाई लैदी ऐ तां ओह कम्म बल्लें-बल्लें उसी अच्छा ते सुंदर लग्गन लगदा ऐ। इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे हून इस कौम दे सभाऽ च शिर्क रची गेदा ऐ। हून एह कौम शिर्क दे खलाफ गल्ल सुनदे गै उतेजत होई जाग ते अल्लाह गी बी गालीं देन लगी पौग।
- यानी उंदे पैहले कुकर्म जेहके उनेंगी ईमान ल्यौने शा बंचत करी देडन ओह अल्लाह कश सुरक्खत न, जिसलै ओह उनेंगी प्रकट करी देग तां उनेंगी पता लगी जाग जे जिच्चर ओह दिलें दा सुधार नेई करी लैन ते शिर्क दी पुरानी आदतें गी नेई छोड़ी देन तां तक कदें बी ईमान नई ल्यौडन।

गै ऐ जेहकी तुसें गी दस्सी देग जे जिसलै नशान आई जान तां ओह (लोक फी बी) ईमान नेई ल्यौडन । ॥ 110 ॥

ते अस लोक उंदे दिलें गी ते उंदी अक्खीं गी इस करी फेरी देगे जे ओह इस (वह्नी) पर पैहली बार ईमान नेई ल्याए ते उनेंगी उंदी उदंडता च भलखोए दे छोड़ी देगे ॥ 111 ॥
(रुकू 13/19)

الْأَيُّتِ عِنْدَ اللَّهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا
جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١١٠﴾

وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ
يُؤْمِنُوا بِآيَةِ أَوَّلِ مَرَّةٍ وَنَنْذِرُهُمْ فِي
طُعْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١١١﴾

ع
١١

ते जेकर अस उंदे पर फरिश्ते उतारदे ते मुड़दे उंदे कन्नै गल्ल-बात करदे ते हर-इक चीजै गी अस उंदै आमनै-सामनै खड़ा करी दिंदे तां बी ओह अल्लाह दी इच्छा दे बिना ईमान नेई आहनदे बल्के उंदे चा मते-हारे मूरख न ॥ 112 ॥

ते इससै चाल्ली असें मनुक्खें ते जिन्नं चा सिरफिरें गी हर-इक नबी दा बैरी बनाई दिता हा उंदे चा किश लोक दूरं गी धोखा देने आस्तै (उंदे दिलें च) बुरे बिचार पांदे न जो सिर्फ चिकनी-चुप्पड़ी दियां गल्लां होंदियां न। जेकर तेरा रब्ब चांहदा तां ओह ऐसा नेई करदे। इस आस्तै तूं उंदे कशा ते उंदे झूठै शा मूंह फेरी लै ॥ 113 ॥

ते (अल्लाह नै एह इस आस्तै चाहया ऐ) तां जे क्यामत औनै पर ईमान नेई रक्खने आहलें दे दिल (अपने कर्म कारण) इय्यै नेही गल्लें पासै झुकन ते तां जे ओह उस झुठ गी चंगा समझन ते तां जे ओह अपने कर्म दा फल दिक्खी लैन ॥ 114 ॥

(तूं गलाई दे जे) क्या अ'ऊं अल्लाह दे सिवा कुसै दूर फैसला करने आह्ले दी तपाश/खोज करां? हालांके उसनै तेरे पर जाहरा-बाहरा कताब उतारी दी ऐ ते जिनेंगी असें कताब दिती दी ऐ ओह जानदे न जे ओह तेरे रब्ब पासेआ सचाई कनै उतारी गेदी ऐ। इस आस्तै तूं शक्क करने आहलें चा नेई बन ॥ 115 ॥

ते तेरे रब्ब दी गल्ल ते सच्च ते त्यांउ कनै पूरी होइयै रौहग की जे ओहदी गल्लें गी कोई बदलने आह्ला नेई ते ओह बौहत सुनने आह्ला ते बौहत जानने आह्ला ऐ ॥ 116 ॥

وَلَوَاتْنَا نَزَّلْنَا إِلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةَ
وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْقُوتِ وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ
قُبُلًا مَا كَانُوا لِيَوْمِئِذٍ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ
وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُونَ ﴿١١٢﴾

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَاطِئِينَ
الْإِنْسِ وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ
زُخْرَفَ الْقَوْلِ عُرُورًا وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ
مَا فَعَلُوهُ قَدْ زُهِمَ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١١٣﴾

وَلِتَصْغَى إِلَيْهِ أَفِيدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِالْآخِرَةِ وَلِيَرِصُوهُ وَلِيَقْتَرِفُوا مَا هُمْ
مُقْتَرِفُونَ ﴿١١٤﴾

أَفَعَيَّرَ اللَّهُ ابْتِغَى حُكْمًا وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ
إِلَيْكُمْ الْكِتَابَ مَفْصَلًا وَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ
الْكِتَابَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنَزَّلٌ مِنْ رَبِّكَ
بِالْحَقِّ فَلَا تَحْكُمُنَّ مِنْ أُمَّمْتَيْنِ ﴿١١٥﴾

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدْلًا
لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَتِهِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١١٦﴾

ते जेकर तू धरती पर बास करने आहले लोकें चा मते-हारें दी गल्ला दा अनुसरण करें तां ओह तुगी अल्लाह दे रस्ते थमां गुमराह करी देडन। ओह सिर्फ भरम-भलेखे दा अनुसरण करदे न ते अटकलें कन्नै गल्लां करदे न ॥ 117 ॥

तेरा रब्ब सच्चें गै उस शख्स गी चंगी-चाल्ली जानदा ऐ, जेहका उस दे रस्ते शा भटकी जंदा ऐ ते ऊरे हदायत पाने आहलें गी बी बेहतर जानदा ऐ ॥ 118 ॥

इस आस्तै जेकर तुस उस दियें आयतें पर ईमान रखदे ओ तां जेहदे पर अल्लाह दा नांउ लैता गेदा ऐ, ओहदे चा खाओ ॥ 119 ॥

ते तुसंगी केह होई गेदा ऐ जे तुस ओहदे चा नेई खंदे ओ जेहदे पर अल्लाह दा नांउ लैता गेदा ऐ हालांके उस (अल्लाह) नै थुआड़े सामनै ओह सारा किश तफसील कन्नै ब्यान करी दित्ते दा ऐ, जो उसनै थुआड़े आस्तै र्हाम कीते दा ऐ, सिवाए इसदे जे तुस बे-बस होई जाओ ते सच्चें गै मते -हारें लोक कुसै सच्चे ज्ञान दे बगैर अपनी खुआहशें दे मताबक दूए लोकें गी गुमराह करदे न। सच्चें गै तेरा रब्ब हद्द शा अगें निकली जाने आहलें गी बेहतर जानदा ऐ ॥ 120 ॥

ते गुनाह दी जाहरी शकल ते उसदी सचाई (दौनी) शा बचो। जेहके लोक पाप करदे न, सच्चें गै जे किश ओह करदे न उनेंगी उसदा बदला दिता जाग ॥ 121 ॥

ते तुस ओहदे चा नेई खाओ जेहदे पर अल्लाह दा नांउ नेई लैता गेआ ते ऐसा करना सच्चें गै ना-फरमात्री ऐ ते शतान अपने दोस्तें दे दिलें च

وَأَنْ تَطْعَ أَكْثَرُ مَنْ فِي الْأَرْضِ
يُضِلُّوكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۗ إِنَّ يَتَّبِعُونَ
إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿١١٧﴾

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَنْ يَضِلُّ عَنْ
سَبِيلِهِ ۗ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١١٨﴾

فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ
كُنْتُمْ بِآيَاتِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿١١٩﴾

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ
عَلَيْهِ وَقَدْ فَضَّلَ لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ
إِلَّا مَا اضْطُرَرْتُمْ إِلَيْهِ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا
لَيُضِلُّونَ بِأَهْوَاءِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ
رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١٢٠﴾

وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ ۗ إِنَّ
الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ سَيَجْزُونَ بِمَا
كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٢١﴾

وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذَكَّرْ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ
وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ ۗ وَإِنَّ الشَّيْطَانَ لَيُوحُوْنَ

सच्चें गै (ऐसे बिचार) पांदे रँहदे न तां जे ओह तुंदे कनै झगड़ा करन ते जेकर तुस उंदी आज्ञा दा पालन करगे ओ तां सच्चें गै तुस अनेकेस्वरवादी बनी जागे ओ ॥ 122 ॥ (स्कू 14/1)

ते क्या जेहका शख्स मुड़दा होऐ फी असें उसी जींदा कीते दा होऐ ते ओहदे आस्तै ऐसा प्रकाश करी दिते दा होऐ जे जेहदे राहें ओह लोकें च चलदा-फिरदा होऐ। ओह उस शख्स आंगर होई सकदा ऐ जेहदी एह दशा ऐ जे ओह न्हें च (पेदा) ऐ ते उंदे चा कुसै बेलै बी नेई निकलदा। इस्सै चाल्ली इन्कारी लोकें आस्तै उंदे कर्म खूबसूरत करियै दस्से गेदे न ॥ 123 ॥

ते असें हर इक बस्ती च उसदे बड़डे-बड़डे मुलजमें गी ऐसा गै बनाई दिते दा ऐ (यानी ओह अपने बुरे कर्म गी चंगा समझदे न) जिसदा नतीजा¹ एह होंदा ऐ जे ओह इस बस्ती च नबियें दे बरुद्ध खड़जैतर करदे/रचदे न, पर असल च ओह अपनी गै जानें दे बरुद्ध खड़जैतर करदे/रचदे न ते ओह समझदे नेई ॥ 124 ॥

ते जिसलै उंदे कश कोई नशान औंदा ऐ तां गलांदे न जे जिच्चर असें गी ऊऐ नेहा कलाम नेई दिता जा जनेहा अल्लाह दे रसूलें गी दिता गेदा ऐ (उच्चर) अस कदें बी ईमान नेई आहनगे, पर अल्लाह बेहतर जानदा ऐ जे ओह अपनी रसालत²/पैगंबरी कुत्थें रक्खै। जिनें लोकें पाप कीते दा ऐ उनेंगी इस करी जे ओह नबियें दे बरुद्ध खड़जैतर करदे/रचदे न, अल्लाह आहले पासेआ जरूर गै अपमान ते सख्त अज्ञाब पुज्जग ॥ 125 ॥

إِلَىٰ أَوْلِيَّيْهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ ۗ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ﴿١٢٢﴾

أَوْ مِنْ كَانَ مِثْلًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَاهُ نُورًا
يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَنْ مَثَلُهُ فِي
الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِنْهَا ۗ كَذَلِكَ
رَبِّنَا لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٣﴾

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكْبَرًا
مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا فِيهَا ۗ وَمَا يَمْكُرُونَ
إِلَّا بِأَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿١٢٤﴾

وَإِذَا جَاءَهُمْ آيَةٌ قَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ حَتَّىٰ
نُؤْتِي مِثْلَ مَا أُوتِيَ رُسُلَ اللَّهِ ۗ اللَّهُ أَعْلَمُ
حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ ۗ سَيُصِيبُ الَّذِينَ
أَجْرَمُوا صَغَارٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعَذَابٌ شَدِيدٌ
بِمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٥﴾

1. एह कोई जुलम/अत्याचार नेई की जे अपयथ दा नतीजा जरूर गै एह होंदा ऐ जे बुरी गल्ल बल्ले-बल्ले चंगी सेही होन लागदी ऐ। इस आस्तै एह कुदरती नतीजा ऐ, बरना अल्लाह कुसै पर जबर/अत्याचार नेई करदा।
2. यानी रसूल बनने जोग कु'न ऐ ते कु'न नेई।

ते जिसी अल्लाह हृदायत देने दा इरादा करी लैंदा ऐ, ओहदा सीन्ना इस्लाम आस्तै खोहली दिंदा ऐ ते जिसी गुमराह करने दा निश्चा करी लैंदा ऐ, ओहदा सीन्ना तंग करी दिंदा ऐ आखो जे ओह उचाई पर चढ़ा करदा ऐ ते इस चाल्ली अल्लाह उनें लोकें पर अजाब नाज़ल करदा ऐ जेहके ईमान नेई आहनदे ॥ 126 ॥

فَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ
لِلْإِسْلَامِ ۖ وَمَنْ يُرِدْ أَنْ يُضِلَّهُ يَجْعَلْ
صَدْرَهُ ضَيِّقًا حَرَجًا كَأَمَّا يُضَعِّدُ فِي
السَّمَاءِ ۗ كَذَلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى
الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٢٦﴾

ते एह तै रब्ब दा सिद्धा स्तता ऐ। अस शिक्षा/नसीहत ह्रासल करने आह्लें आस्तै अपनी आयतें (नशानें) गी तफ्सील वन्नै ब्यान करी चुके दे आं ॥ 127 ॥

وَهَذَا صِرَاطٌ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا ۗ قَدْ فَضَّلْنَا
الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٢٧﴾

उंदे आस्तै उंदे रब्ब कश सलामती (शांति) दा घर त्यार ऐ ते जे किश ओह करदे न ओहदे करी ओह उंदा स्हायक/मदादी ऐ ॥ 128 ॥

لَهُمْ دَارُ السَّلَامِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُمْ وَلِيُّهُمْ
بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٨﴾

ते उस रोज (गी चेता करो) जिसलै ओह उनें सारे लोकें गी किट्ठा करग (फी गलाग) हे जिनें¹ दे गरोह! तुसैं मानव जाति चा मते-हारे लोकें गी अपने कनै मलाई लैता ते उंदी मदद करने आह्ले मनुक्ख² गलाडन जे हे साढ़े रब्ब! साढ़े चा किश लोकें इक-दूए शा फायदा लैता ऐ ते अस अपने उस समे तक पुज्जी चुके दे आं जेहका तोह साढ़े आस्तै निश्चत कीता हा। ओह गलाग (नरकै दी) अग धुआड़ा ठकाना ऐ। एहदे च तस चिर् तगर रौहगे ओ सिवाए इसदे जे अल्लाह किश होर चाह। तेरा रब्ब सच्चें गै हिकमत आह्ला ते बौहत जानने आह्ला ऐ ॥ 129 ॥

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ۗ يَمْعَشَرِ الْجِنَّ
قَدِ اسْتَكْبَرْتُمْ مِنَ الْإِنْسِ ۗ وَقَالَ
أَوْلِيُّهُمْ مِنَ الْإِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمِعْ
بَعْضًا مِّنْ بَعْضٍ ۗ وَبَلَّغْنَا آجَلَنَا الَّذِي أَجَّلْتَ
لَنَا ۗ قَالَ النَّارُ مَثْوَاكُمْ خَالِدِينَ فِيهَا إِلَّا
مَا شَاءَ اللَّهُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٢٩﴾

ते इस चाल्ली अस किश जालमें गी किश दूए लोकें दा, उंदे कर्मों दे अधार पर दोस्त बनाई दिन्ने आं जेहका जे ओह करदे होंदे न ॥ 130 ॥ (रुकू 15/2)

وَكَذَلِكَ نُؤْتِي بَعْضَ الظَّالِمِينَ بَعْضًا
بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٣٠﴾

1. जिनें दा अर्थ बड्डे-बड्डे लोक न।
2. यानी उंदे धड़े दी सधारण जनता।

हे जिन्हें ते इन्सानों दी जमात! क्या तुंदे चा गै थुआड़े कश रसूल नेई आए जेहके तुसेंगी मेरी आयतां पढ़ियै सुनांदे होंदे हे ते तुसेंगी अज्जै दे दिनें दी मलाटी शा डरंदे होंदे हे? ओह गलाडन जे अस अपने खलाफ आपूं गुआही दिने आं ते संसारक जिंदगी नै उनेंगी धोखे च पाई दिता ते उनें अपने खलाफ आपूं एह गुआही दिती जे ओह इन्कारी लोक हे ॥ 131 ॥

एह रसूलें दा भेजना इस करी हा जे तेरा रब्ब शौहरें गी उंदे बशिनंदे दे असावधान (बे-खबर) होने दी हालत च जुलम¹ कन्नै तबाह् नथा करी सकदा² ॥ 132 ॥

ते हर शख्स (जां कौम) आस्ते उसदे कर्म मताबक दरजे निश्चत न ते तेरा रब्ब ओहदे शा बे-खबर नेई जो ओह करदे न ॥ 133 ॥

ते तेरा रब्ब कुसै दा मुल्हाज नेई ते पैहमत करने आहला ऐ। जेकर ओह चाह तां तुसेंगी तबाह् करी देऐ ते जिस चाल्ली उसनें तुसेंगी इक दूई कौम दी नसल चा खड़ा कीते दा ऐ (इस्से चाल्ली) जिसी चाह थुआड़ी तबाही दे बा'द थुआड़ी ज'गा लैने आहला बनाई देऐ ॥ 134 ॥

जिस गल्लै दा तुंदे कनै बा'यदा कीता जा करदा ऐ ओह जरूर होइयै रौहग ते तुस असेंगी कुसै चाल्ली बी असमर्थ नेई बनाई सकदे ॥ 135 ॥

तूं गलाई दे जे हे मेरी कौम दे लोको! तुस अपने तरीके कनै कम्म करो, अ'ऊं बी अपने तरीके कनै कम्म करगा, फी तुसेंगी तौले गै पता लग्गी जाग जे इस घरै (संसार) दा

يَمْخَشِرُ الْجِبِّ وَالْإِنْسِ الْمَيَاتِكُمْ
رُسُلٌ مِنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي
وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَذَا قَالُوا
شَهَدْنَا عَلَىٰ أَنْفُسِنَا وَعَرَّثْتُمْ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا
وَشَهَدُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ﴿١٣١﴾

ذَلِكَ أَنْ لَمْ يَكُنْ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَى
بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا غَفُورُونَ ﴿١٣٢﴾

وَلِكُلِّ دَرَجَةٍ مِمَّا عَمِلُوا وَمَا رَبُّكَ
بِعَاقِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٣﴾

وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۗ إِنْ يَشَاءُ
يُدْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْ بَعْدِكُمْ مَا يَشَاءُ
كَمَا أَنْشَأَكُمْ مِنْ ذُرِّيَةِ قَوْمٍ آخَرِينَ ﴿١٣٤﴾

إِنْ مَا تُوَعَّدُونَ ۗ لَأَتِيَنَّكُمْ
بِعُجْزِينَ ﴿١٣٥﴾

قُلْ يَقَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ ۗ إِنَّ
عَامِلٌ فَسُوفَ تَعْلَمُونَ ۗ مَنْ تَكُونُ لَهُ

1. यानी बगैर नबी भेजे ते युक्तियां स्पष्ट करने दे अजाब उतारना जुलम ते बे-न्याई ऐ।

2. यानी दैवी प्रकोप सचाई दे बारे च सबूत पेश करने ते मानव समाज गी सचेत करने बगैर नेई आँदा। इस्से सिद्धांत दे मताबक अल्लाह अपने पासेआ नबी ते सुधारक भेजदा होंदा ऐ।

नतीजा कोहदे आस्तै बेहतर निकलदा ऐ। सच्ची गल्ल एह् ऐ जे जालम कदें बी कामयाब नेई होंदे ॥ 136 ॥

ते जेहकी खेती ते जानवर अल्लाह नै पैदा कीते दे न उनें ओहदे चा इक हिस्सा अल्लाह आस्तै निश्चत करी दिते दा ऐ, फी अपने गै भरमै मताबक गलांदे न जे इन्ना ते अल्लाह आस्तै ऐ ते इन्ना साढ़े शरीकें आस्तै ऐ, फी ओह एह् गल्ल बी करदे न जे जेहका उंदे (बिचार कनै) शरीकें दा हिस्सा होंदा ऐ ओह ते अल्लाह गी नेई पुजदा, पर जेहका अल्लाह दा हिस्सा ऐ ओह उंदे शरीकें गी पुज्जी जंदा ऐ। ओह् कनेहा बुरा फैसला करदे न ॥ 137 ॥

ते इससै चाल्ली मुश्रिकें (अनेकेश्वरवादियें) चा मते-हारे लोकें गी उंदे शरीकें उंदा सर्वनाश करने आस्तै ते उंदे धर्म गी उंदे पर मुशतबह¹ करियै उनेंगी अपनी संतान दी हत्या करी देना खूबसूरत करियै दस्सेआ हा ते जेकर अल्लाह चांहदा तां ओह् (मुश्रिक) ऐसा नेई करदे। इस आस्तै तूं उंदे शा ते उंदे झूठै थमां मूंह फेरी लै ॥ 138 ॥

ते ओह् अपनी सूझ-बूझ दी बिना पर आखदे न जे फलाना-फलाना जानवर ते खेती ऐसे न जे जिमेंगी खाना बरजत ऐ, उनेंगी सिर्फ ऊऐ खाई सकदा ऐ जिसी अस खाने दी अजाजत देचै ते (गलांदे न जे) किश जानवर नेह न जे जिंदियां पिट्टीं (सुआरी आस्तै) र्हाम करी दिंतियां गेदियां न ते किश जानवर ऐसे न जे उंदे पर अल्लाह दा नांउ नेई लेंदे (उंदा एह् गलाना ते करना) ओहदे (अल्लाह) पर झूठ

عَاقِبَةُ الدَّارِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿١٣٦﴾

وَجَعَلُوا لِلَّهِ مَا ذَرَأَ مِنْ الْحَرْثِ وَالْأَنْعَامِ نَصِيبًا فَقَالُوا هَذَا لِلَّهِ بِرِزْقِهِمْ وَهَذَا لِشُرَكَائِنَا فَمَا كَانَ لِشُرَكَائِهِمْ فَلَا يَصِلُ إِلَى اللَّهِ وَمَا كَانَ لِلَّهِ فَهُوَ يَصِلُ إِلَى شُرَكَائِهِمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿١٣٧﴾

وَكَذَلِكَ زَيْنَ لِكَثِيرٍ مِنَ الْمُشْرِكِينَ قَتْلَ أَوْلَادِهِمْ شُرَكَاؤَهُمْ لِيُرِدُّوهُمْ وَلِيَلْبَسُوا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٨﴾

وَقَالُوا هَذِهِ أَنْعَامٌ وَحَرْثٌ حِجْرٌ لَا يَعْطَمُهَا إِلَّا مَنْ نَشَاءُ بِرِزْقِهِمْ وَأَنْعَامٌ حُرِّمَتْ طَهُورٌهَا وَأَنْعَامٌ لَا يَذْكُرُونَ اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءً عَلَيْهِ سَيَجْزِيهِمْ بِمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٩﴾

1. मुशतबह-संदिग्ध, जेहदे च शकक होऐ, धरम।

घड़ने दे रूपै च होंदा ऐ। ओह उनेंजी उंदे इस झूठ घड़ने कारण जरूर स'जा देग ॥ 139 ॥

ते ओह गलांदे न जे जे किश इनें जानवरें दे दिड्डे (गर्भ) च ऐ ओह सिर्फ साढ़े मड्डे आस्तै ऐ ते सादी जनानियें आस्तै रहाम कीता गेदा ऐ। हां! जेकर ओह मरे दा होऐ तां ओह सब ओहदे च शामिल न। ओह जरूर उनेंजी उंदी गल्ला दी स'जा देग। चेता रक्खो जे ओह हिक्मत आहला ते बौहत जानने आहला ऐ। ॥ 140 ॥

ओह लोक जिनें मूर्खतावश बिना ज्ञान दे अपनी संतान दी हत्या करी दिती ऐ ते जे किश अल्लाह नै उनेंजी प्रदान कीता हा उसी अल्लाह पर झूठ घड़दे होई (अपने आस्तै) रहाम करी लैता ऐ, घाटा खाने आहले होई गे ते गुमराह होई गे न ते ओह हदायत पाने आहलें चा नेई बने ॥ 141 ॥ (रुकू 16/3)

ते ओह अल्लाह गै ऐ जिसनै लकड़ियें दे स्हारै खड़े होने आहले ते स्हारे दे बगैर खड़े होने आहले बाग ते खजूरां ते खेतियां पैदा कीती दियां न, जिंदे सुआद बक्ख-बक्ख न ते जैतून ते अनार गी इस रूपै च पैदा कीते दा ऐ जे ओह आपस च मिलदे-जुलदे बी न ते किश गल्लें च नेई बी मिलदे न। इस आस्तै जिसलै इनें बूटें गी फल लगन तां तुस उंदे फल खाओ ते उस फलै दे कट्टने आहलै रोज उस (अल्लाह) दा हक्क देई देओ¹ ते फजूलखर्ची शा कम्म नेई लैओ की जे ओह फजूलखर्ची करने आहलें गी पसंद नेई करदा ॥ 142 ॥

وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَذِهِ الْأَنْعَامِ خَاصَّةً لِّدُكُورِنَا وَمُحَرَّمٍ عَلَىٰ آرَاجِنَا وَإِن يَكُن مِّمَّا فَهِم فِيهِ شُرَكَاءُ سَيَجْزِيهِمْ وَصَفَهُم ۗ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٤٠﴾

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٤١﴾

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ جَنَّاتٍ مَّعْرُوشَاتٍ وَغَيْرَ مَعْرُوشَاتٍ وَالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا أَكْلُهُ وَالزَّيْتُونَ وَالرَّيْحَانَ مُتَشَابِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۗ كُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ ۗ وَلَا تُسْرِفُوا ۗ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ﴿١٤٢﴾

1. यानी गरीब लोकें दी मदद करो।

ते चौखरें चा लादू जानवर बी न ते निकके बी न। अल्लाह नै जे किश तुसेंगी दिते दा ऐ ओहदे चा खाओ ते शतान दे पैरे दा अनुसरण नेई करो। यकीनन ओह थुआड़ा जाहरा-बाहरा बैरी ऐ ॥ 143 ॥

उसनै अट्ट जोड़ें गी पैदा कीते दा ऐ। दुंबे चा द'ऊं गी ते बक्करे चा द'ऊं गी। तू उनेंगी गलाई दे जे क्या उसनै द'ऊं नरें गी र्हाम करार दिते दा ऐ जां द'ऊं मदीनें गी जां द'ऊं मदीनें दे डिड्डें (गर्भ) जिस चीजै गी बी अपने अंदर लपेटी रखे दा ऐ? (उसी र्हाम करार दिते दा ऐ) जेकर तुस सच्चे ओ तां मिगी कुसै ज्ञान दे अधार पर (एह गल्ल) दरसो ॥ 144 ॥

ते उसनै ऊटे चा द'ऊं गी ते गवै चा द'ऊं गी पैदा कीते दा ऐ। तू उनेंगी आख जे क्या उसनै दौत्री नरें गी र्हाम ठरहाए दा ऐ जां दौत्री मदीनें गी जां मदीनें दे डिड्डें (गर्भ) जिस चीजै गी बी अपने अंदर लपेटी रखे दा ऐ? आखो, क्या तुस उस बेलै मजूद हे जिसलै तुसेंगी अल्लाह नै इस गल्ला दा आदेश दिता हा? (जेकर नेई) तां फी उस शख्स शा बद्ध कु'न जालम होई सकदा ऐ जेहका जानी-बुज्जी अल्लाह पर इस आस्तै झूठ घडै जे ओह लोकें गी बिना ज्ञान दे गुमराह करी देऐ। यकीनन अल्लाह जालम लोकें गी रस्तै नेई पांदा ॥ 145 ॥ (रुकू 17/4)

तू उनेंगी आख जे जे किश मेरे पासै नाजल कीता गेदा ऐ अ'ऊं ते ओहदे च उस शख्स आस्तै जेहका कुसै चीजै गी खाने दा चाहवान होऐ, कोई चीज र्हाम नेई पांदा सिवाए मरदाड़ै जां बगदे खूनै जां सूरे दे मासै दे (सूरे दा मास) इस आस्तै जे ओह अपवित्तर ऐ जां 'फिस्क' गी (र्हाम पात्रा) यानी उस चीजै

وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُولَةً وَفَرْشًا ۖ كَلُوا
مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ
الشَّيْطَانِ ۗ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿١٤٣﴾

ثَمْنِيَةَ أَرْوَاحٍ ۚ مِنَ الضَّانِ اثْنَيْنِ وَمِنَ
المَعزِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ ۗ الذَّكْرَيْنِ حَرَامٌ أَمِ
الْأُنثَيَيْنِ ۗ أَمَا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ
الْأُنثَيَيْنِ ۗ نَبِّؤُنِي ۖ بِعِلْمٍ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ﴿١٤٤﴾

وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ
ۗ الذَّكْرَيْنِ حَرَامٌ أَمِ الْأُنثَيَيْنِ ۗ أَمَا
اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ ۗ أَمْ
كُنْتُمْ شُهَدَاءَ ۗ إِذْ وَضَعَكُمُ اللَّهُ بِهَذَا ۗ
فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
يُضِلُّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٤٥﴾

قُلْ لَا آجِدُ فِي مَا أُوْحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَى
طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ ۖ إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَيْتَةً
أَوْ دَمًا مَسْفُوحًا ۖ أَوْ لَحْمَ خِنزِيرٍ فَإِنَّهُ
رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا ۖ أُهْلٌ لِّغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ۗ فَمَنْ

गी जेहदे पर अल्लाह दे सिवा कुसै दूए दा नांऽ लैता गेदा होऐ, पर जेहका शख्स (उसी खाने आस्तै) बे-बस¹ होई जा, पर ओह शरीअत दा बरोधी नेई होऐ, ते सीमा दा उलंघन करने आहला बी नेई होऐ तां (ओह चेता रक्खै जे) यकीनन तेरा रब्ब बौहत बख्शाने² आहला ते बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 146 ॥

ते जेहके लोक यहूदी न असें उंदे आस्तै नैह³ आहले सब जानवर र्हाम करार दिते हे ते गवै ते भिड़डै-बक्करी चा दौर्नी दी चरबी बी र्हाम⁴ करार देई दित्ती ही सिवाए उस चरबी दे जेहकी उंदी पिट्ठीं जां आंदरें पर होऐ जां जेहकी हड्डी कनै लग्गी दी होऐ। असें एह उनेंगी उंदी ना-फरमात्री दी स'जा दित्ती ही ते अस यकीनन सच्चे आं ॥ 147 ॥

जेकर फी बी ओह तुगी झुटेरन तां तूं उनेंगी गलाई दे जे थुआड़ा रब्ब बौहत बड्डी रैहमत आहला ऐ ते ओहदा अजाब अपराधी लोकें परा हटया नेई जाई सकदा ॥ 148 ॥

जिनें शिर्क कीते दा ऐ ओह लोक जरूर गलाडन जे जेकर अल्लाह चांहदा तां अस ते साढ़े पुरखे शिर्क गी कदें बी नेई अपनादे ते नां गै कुसै चीजै गी र्हाम करार दिंदे। जेहके लोक उंदे शा पैहलें होई चुके दे न उनें बी इसै चाल्ली (साढ़ी वह्मी गी) उस बेले तगर झुटेरेआ हा जिच्चर जे उनें साढ़े अजाब दा सुआद नथा चक्खी लैता। तूं उनेंगी गलाई दे

أَصْطَرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ
عَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٤٦﴾

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَمًا كُلَّ ذِي ظُفْرٍ
وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَمًا عَلَيْهِمْ
شُحُومُهُمْ إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمْ
أَوِ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِحِطْمِ ۗ ذَلِكَ
جَزَاءُهمْ بِبِعْيِهِمْ ۗ وَإِنَّا لَالصِّدِّقُونَ ﴿١٤٧﴾

فَإِنَّ كَذِبُوكَ فَقُلْ رَبُّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ
وَإِسْعَةٍ ۗ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ
الْمُجْرِمِينَ ﴿١٤٨﴾

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا
أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَمْنَا مِنْ
شَيْءٍ ۗ كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا ۗ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ
عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا ۗ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا

1. यानी जे किश इस्लाम नै जायज करार दिते दा ऐ जेकर ओह देशै च उपलब्ध नेई होऐ तां ओह शख्स अपनी जान बचाने आस्तै उन्ना गै खाऽ जेहदे नै जे मौत टली जा।

2. यानी उस शख्स आस्तै कोई स'जा नेई होग।

3. शकारी जानवर।

4. दिक्खी-लैव्यवस्था, ध्याऽ 3: आयत 14-17.

जे क्या थुआड़े कश कोई ऐसा इलम है जिसी तुस असेंगी चुप्य कराने आस्तै पेश करी सको? तुस ते भरम-भलेखे दे सिवा कुसै गल्लै दा अनुसरण नेई करदे ओ ते तुस सिर्फ अटकलें/अंदाजें कत्रै गल्लां करदे ओ ॥ 149 ॥

तूं गलाई दे (थुआड़ियां मूर्खता आहलियां गल्लां सिद्ध करदियां न) जे असरदार दलील सिर्फ अल्लाह दे अधिकार च गै ऐ, ते जेकर ओह चांहदा तां तुसें सारे गी हदायत देई दिंदा ॥ 150 ॥

तूं उनेंगी गलाई दे जे अपनी उनें गुआहियें गी सददो जेहकियां एह गुआही देन जे अल्लाह नै इस (यानी फलानी-फलानी) चीजा गी र्हाम करार दित्ते दा ऐ, फी जेकर ओह गुआही देन तां तूं उंदे कनै शामिल होइयै गुआही नेई दे ते उनें लोकें दियें मनोकामनें दी पैरवी नेई कर जेहके साही आयतें गी झुठलाई चुके दे न ते जेहके लोक बा'द च होने आहली गल्लें पर ईमान नेई आहनदे ते ओह अपने रब्ब दे शरीक बी बनांदे न ॥ 151 ॥ (रुकू 18/5)

तूं उनेंगी आखी दे जे आओ! जेहका थुआड़े रब्ब नै थुआड़े आस्तै र्हाम करार दित्ते दा ऐ ओह अ'ऊं तुसेंगी पढ़ियै सनां। (ओहदा हुकम ऐ) जे तुस ओहदा कोई शरीक नेई बनाओ ते माता-पिता कत्रै नेक व्यवहार करो ते गरीब होई जाने दे डरे अपनी संतान दी हत्या नेई करो। अस तुसेंगी बी रोजी दित्रे आं ते उनेंगी बी ते बुराइयें दे लागै बिल्कुल नेई जाओ नां इंदे चा जाहर (बुराइयें दे) नां छप्पी दी (बुराइयें) दे ते एह जे उस जान गी जिस दी हत्या शा अल्लाह नै रोके दा ऐ (शरीअत जां

الظَّنَّ وَإِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ﴿١٤٩﴾

قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۗ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَيْتُكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٥٠﴾

قُلْ هَلْ مَسَّ شَهَادَتَكُمْ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ هَذَا ۚ فَإِنْ شَهِدُوا فَلَا تَشْهَدُ مَعَهُمْ ۗ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ﴿١٥١﴾

قُلْ نَعَالُوا أَلَّ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ ۗ أَلَّا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالَّذِينَ أَحْسَنَاءَ وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ مِنْ إِمْلَاقٍ ۗ نَحْنُ نُرزِّقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ ۗ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَّنَ ۗ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ ۗ إِلَّا بِالْحَقِّ ۗ ذِكْرُكُمْ وَضَعْتُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١٥١﴾

विधान दी) आज्ञा दे बिना हत्या नेई करो। इस गल्ला दा अल्लाह तुसेंगी तकीदी हुकम दिंदा ऐ तां जे तुस पापें शा रुको (बचो) ॥ 152 ॥

ते (एह हुकम दिंदा ऐ जे) तुस यतीम दे माल कश ओहदे जुआन होने तक बुरे ढंगे (बुरी नीतै) कनै नेई जाओ ते नाप-तोल न्यांऽ कन्नै (पूरे-पूरे) देओ। अस कुसै शख्स गी ओहदी समर्थ शा बद्ध (बाफर) हुकम नेई दिंदे ते जिसलै तुस कोई गल्ल करो तां इन्साफ शा कम्म लैओ, भामें ओह गल्ल अपने नजदीकी शख्स बाँरे गै होऐ ते अल्लाह कनै कीते दे बा'यदे गी बी पूरा करो। ओह इस गल्ला दी तुसेंगी इस आस्तै तकीद करदा ऐ जे तुसेंगी नसीहत हासल होऐ ॥ 153 ॥

ते सच्चें गै एह मेरा सिद्धा रस्ता ऐ। इस आस्तै इस दा अनुसरण करो ते बक्ख-बक्ख रस्तें दे पिच्छें नेई पवो नेई ते ओह तुसेंगी ओहदे (अल्लाह दे) रस्ते शा तांहीं-तुआंहीं लेई जाडन। ओह इस गल्ला दी तुसेंगी इस आस्तै तकीद करदा ऐ जे तुस संयमी बनी जाओ ॥ 154 ॥

ते जिस शख्स नै नेकी गी अखत्यार कीता ऐ ओहदे पर नैमत गी पूरा करने, हर इक गल्ला दी बजाहत करने, हदायत देने ते रैहम करने दे मकसद कनै असें मूसा गी कताब दिति ही तां जे ओह अपने रब्ब दी मलाटी पर ईमान ल्यौन ॥ 155 ॥ (रुकू 19/6)

ते एह (कुरआन) ऐसी कताब ऐ जिसी असें उतारे दा ऐ ते एह बरकत आहली ऐ। इस आस्तै एहदा अनुसरण करो ते संयम अखत्यार करो तां जे तुंदे पर रैहम कीता जा ॥ 156 ॥

وَلَا تَقْرُبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ
أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۗ وَأَوْفُوا بِالْكَيْلِ
وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۗ لَا تَكْلَفُ نَفْسًا إِلَّا
وُسْعَهَا ۗ وَأَذا قُلْتُمْ فَاعْدُوا ۗ أَلَوْ كَانَ ذَا
قُرْبَىٰ ۖ وَيَعْهَدُ اللَّهُ أَوْفُوا ۗ ذِكْرُكُمْ وَصَلُّكُمْ
بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٢﴾

وَأَنْ هَذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ ۗ وَلَا
تَتَّبِعُوا السَّبِيلَ فَتَقَرَّبَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ۗ
ذِكْرُكُمْ وَصَلُّكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٥٣﴾

ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي
أَحْسَنَ وَتَقْوِيلًا لِكُلِّ شَيْءٍ وَهَدَىٰ
وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٥﴾

وَهَذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ فَاتَّبِعُوهُ
وَاتَّقُوا ۗ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٥٦﴾

(तां जे ऐसा निं होऐ जे) तुस (कदें) एह गलाओ जे साढ़े शा पैहलें सिर्फ द'ऊं कौमें¹ पर कताब नाज़ल कीती गई ही ते अस उनेंगी पढ़ने शा भलेआं गाफ़ल (बे-खबर) हे ॥ 157 ॥

जां (इयां नेई) गलाओ जे जेकर साढ़े पर कताब नाज़ल कीती जंदी तां सच्चें गै अस उंदे शा बद्ध हदायत पांदे। इस आस्तै थुआड़े कश थुआड़े रब्ब पासेआ जाहरा-बाहरा दलील ते हदायत ते रैहमत आई गई ऐ। इस आस्तै (याद रक्खो जे) जिसनै अल्लाह दियें आयतें गी झुठलाया ते उंदे (पर ईमान आहनने) शा रुके दा रेहा, ओहदे शा बद्ध जालम कु'न होग। जेहके लोक साढ़ी आयतें (पर ईमान आहनने) शा रुके दे रौहदे न उंदे रुके दे रौहने दी ब'जा करी अस उनेंगी जरूर गै तकलीफदेह अजाब दा दंड देगे ॥ 158 ॥

ओह सिर्फ इस गल्ला गी बलगा करदे न जे उंदे कश फरिश्ते औन जां तेरा रब्ब आवै जां तेरे रब्ब दे किश चमत्कार औन। जिस रोज तेरे रब्ब दे किश चमत्कार प्रकट होइन उस रोज कुसै जान गी जेहकी उस शा पैहलें ईमान नेई ल्याई चुकी दी होग जां अपने ईमान कारण खैर (भलाई) नेई हासल करी चुकी दी होग, ओहदा ईमान आहनना उसी कोई लाह नेई देग/पजाग। तू आख जे तुस इंतजार करो, अस बी यकीनन इंतजार करा करने आं ॥ 159 ॥

أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَنْزَلَ الْكِتَابَ عَلَى طَائِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا وَإِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغَفِيلِينَ ﴿١٥٧﴾

أَوْ تَقُولُوا لَوْ أَنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْهِ الْكِتَابَ لَكُنَّا أَهْدَىٰ مِنْهُمْ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَهَدَىٰ وَرَحْمَةً فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَصَدَفَ عَنْهَا سَنَجْزِي الَّذِينَ يَصْدِفُونَ عَنْ آيَاتِنَا سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ ﴿١٥٨﴾

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِي رَبُّكَ أَوْ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ أَمَنَتْ مِنْ قَبْلٍ أَوْ كَسَبَتْ فِي إِيْمَانِهَا خَيْرًا قُلِ انظُرُوا إِنَّا مُنظِرُونَ ﴿١٥٩﴾

1. यानी यहदियें ते ईसाइयें पर एह अनजान मुश्रिकें दा बिचार हा नेई ते हजरत मसीह आपूं गलांदे न जे ओह तौरत दी गै गल्लें गी पूरा करने आस्तै आए हे ते कोई नमीं शरीअत नेई ल्याए हे। (मती भाग 5 आयत 17) यानी इब्जील कोई शरीअत दी कताब नेई।

जिन्हें लोकें अपने धर्म गी टुकड़े-टुकड़े करी
दिता ते गरोहें च बंडोई गेदे न तेरा उंदे कन्नै
कोई तल्लक नेई ऐ। उंदा लेखा ते सिर्फ
अल्लाह दे हत्थे च ऐ फी जे किश ओह करदे
हे ओह ओहदी उनेंगी खबर देग ॥ 160 ॥

जिन्हें नेकी कीती दी ऐ उस नेकी शा दस्स
गुणा (ज्यादा) उंदा हक्क होंग ते जिन्हें पाप
कमाए दा ऐ, उनेंगी सिर्फ उन्नी गै स'जा दिती
जाग ते उंदे पर किश बी जुलम नेई कीता
जाग ॥ 161 ॥

तूं उनेंगी गलाई दे जे सच्चें गै मेरे रब्ब नै सिद्धे
रस्तै पासे अगुआई कीती ऐ, ऐसे धर्म पासे
जेहदे च कोई त्रेढापन (डींग-त्रेढ़) नेई यानी
इब्राहीम दा धर्म जेहका सचाई पर कायम हा ते
ओह मुश्रिकें बिच्चा नथा ॥ 162 ॥

तूं उनेंगी गलाई दे जे मेरी नमाज ते मेरी कुरबानी
ते मेरी जिंदगी ते मेरी मौत अल्लाह आस्तै गै न
जेहका सारे ज्हाँरें दा रब्ब ऐ ॥ 163 ॥

ते उसदा कोई शरीक नेई ते मिगी इस गल्ला
दा हुकम दिता गेदा ऐ ते अ'ऊँ सारें शा पैहला
फरमांबरदार आं ॥ 164 ॥

तूं आख जे क्या अ'ऊँ अल्लाह दे सिवा
(कुसै होरस दी) रब्ब दे रूपै च मांग करां?
असल च ओह हर चीजै दा पालन-पोशन
करने आहला ऐ ते हर इक जान जे किश
ओह कमांदी ऐ ओहदा (बोझ) उसै पर ऐ
ते कोई बोझ चुक्कने आहला कुसै दूए दा
बोझ नेई चुक्की सकदा¹ फी अपने रब्ब पासे

إِنَّ الَّذِينَ فَرَقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيعًا
كَانَتْ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ ۖ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى
اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿١٦٠﴾

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ مَثَلٍ بِهَا
وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى إِلَّا
مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦١﴾

قُلْ إِنِّي هَدَيْتُ رَبِّي إِلَى صِرَاطٍ
مُسْتَقِيمٍ ۖ دِينًا قِيمًا ۖ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ
حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٦٢﴾

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي
لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٣﴾

لَا شَرِيكَ لَهُ ۚ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ
الْمُسْلِمِينَ ﴿١٦٤﴾

قُلْ أَغْيَرَ اللَّهُ آبُغِي رَبًّا وَهُوَ رَبُّ كُلِّ
شَيْءٍ ۖ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا
وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَى ۗ ثُمَّ إِلَى
رَبِّكُمْ مَرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿١٦٥﴾

1. ईसाई इस आयत रहें एह प्रमाण दिंदे न जे कोई पापी कःफ़ारा (कुसै दा दोश/पाप अपने सिर लेंने दा भाव) नेई होई सकदा ते एह जे इस्लामी शिक्षा दे मताबक सिर्फ हज्रत मसीह गै निरदोश हे, पर इत्थें बोझ चुक्कने आहले दा अर्थ पापी नेई बल्के एह ऐ जे जेहका अल्लाह दे सामने जवाबदेह ऐ ते एह बी जे ओह निरदोश नेई। (लूका 18:19; मती 19:17 ते मरकुस 10:18) इस आस्तै ओह कःफ़ारा नेई होई सकदे।

गै थुआड़ा परतोना होग। फी ओह तुसेंगी उस गल्ला दी खबर देग जेहदे बारै तुम मत-भेद करदे होंदे हे ॥ 165 ॥

ते ऊऐ ऐ जिसनै तुसेंगी संसार च (पैहले लोकें दा) खलीफा (स्थान लैने आह्ला) बनाया ते तुंदे चा किश लोकें गी दूऐ पर दरजें च इस आस्तै प्रधानता दिती जे उसनै तुसेंगी जे किश प्रदान कीता ऐ ओहदे च ओह थुआड़ी अजमैश करै। तेरे रब्ब दी स'जा सच्चें गै तौले आई जंदी ऐ ते ओह सच्चें गै बौह्त बख्शाने आह्ला ते बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 166 ॥ (रुकू 20/7)

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ الْأَرْضِ
وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ
لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ إِنَّ رَبَّكَ
سَرِيعُ الْعِقَابِ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٠٧﴾

०००

سُورَةُ الْأَعْرَافِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ مِائَتَانِ وَسَبْعُ آيَاتٍ وَارْبَعَةٌ وَعِشْرُونَ رُكُوعًا

सूर: अल्-आराफ़

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां दो सौ सत्त आयतां ते चौहबी रूकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो बे-
हद कर्म करने आह्ला ते बार-बार रैहम करने
आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अलिफ़, लाम, मीम, साद¹। अ'ऊं अल्लाह सारें
शा ज्यादा जानने आह्ला ते सच्चा आं ॥ 2 ॥

الْمَصِّ ②

एह (कुर'आन) इक (बड़्डी शान आहली)
कताब ऐ जेहकी तेरे पासै नाज़ल कीती गेदी ऐ
(तोह आपूं नेई बनाई)। इस आस्तै तेरे सीत्रे च
एहदी ब'जा करी कोई तंगी पैदा नेई होऐ। (इस
दे नाज़ल करने दा मकसद एह ऐ जे) तूं एहदे
राहें (सुनने आहलें गी औने आहली बिपता
शा) सोहगा करैं ते एह (कताब) मोमिनें आस्तै
इक अनुदेश ऐ ॥ 3 ॥

كِتَابٌ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِي صَدْرِكَ
حَرَجٌ مِنْهُ لِتُنذِرَ بِهِ وَذِكْرَى
لِلْمُؤْمِنِينَ ③

(अस इनें लोकें गी आखने आं जे) जेहका
कलाम थुआड़े रब्ब पासेआ थुआड़े पासै नाज़ल
कीता गेदा ऐ, ओहदा अनुसरण करो ते उस
(अल्लाह) दे सिवा उंदा अनुसरण नेई करो
जेहके थुआड़े (बिचार च) दूए कारसाज न,
पर तुस लोक बिल्कुल² नसीहत हासल नेई
करदे ॥ 4 ॥

اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ وَلَا
تَتَّبِعُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۗ قَلِيلًا مَّا
تَذَكَّرُونَ ④

1. ब्यारै आस्तै दिक्खो सूर: बकर: टिप्पणी आयत नं. 2; मूल शब्द साद दा अर्थ ऐ 'अ'ऊं सच्चा आं' भाव एह ऐ जे मेरे पासेआ जेहकी तलीम आवैं ओह सच्च पर अधारत होंदी ऐ।
2. मूल शब्द क़लील दा शाब्दक अर्थ ऐ बड़ा थोड़ा। मुहावरे च इस दा भाव बिल्कुल नेई, यानी तिल-परमान बी नेई होंदा ऐ।

ते मतियां-हारियां बस्तियां नेहियां न जिंदा असें सर्वनाश करी दिता। (जेहदी तफसील एह् ऐ जे) उंदे कश साढ़ा अज़ाब रातीं सुत्ते दे जां दपैहरीं बेलै आराम करदे मौकै आया ॥ 5 ॥

इस आस्तै उसलै जिसलै जे साढ़ा अज़ाब उंदे कश आया उंदी जीहबा पर सिर्फ एह् शब्द हे जे अस सच्चें गै जालम हे ॥ 6 ॥

इस लेई अस (उनें लोकें शा बी) जरूर पुछगे जिंदे पासै रसूल भेजे गे हे ते रसूलें शा बी जरूर पुछगे ॥ 7 ॥

फी अस जरूर गै उनेंगी अपनी जानकारी दे मताबक सचाई दसगे, की जे अस कदें बी उनें लोकें शा ओहलै¹ नेई रेह्। (उंदे हालात सदा दिखदे हे) ॥ 8 ॥

ते उस (क्यामत आहलै) ध्याडै सारे कर्मों दा तोल्लेआ जाना इक सच्ची गल्ल ऐ। इस आस्तै जिनें लोकें दे कर्मों दा बोझ भारा होग ओह् लोक कामयाबी हासल करने आह्ले होडन ॥ 9 ॥

ते जिनें लोकें दे बोझ हौले (हल्के) होए तां समझी लैओ, ऐसे लोक अपनी जात्रें गी घाटे च पाने आह्ले न। एह् इस आस्तै होआ जे ओह् साढ़ी आयतें दे बारे च जुलम शा कम्म लेंदे होंदे हे ॥ 10 ॥

ते असें तुसेंगी जरूर धरती च शक्ति प्रदान कीती ही ते ओहदे च थुआड़े आस्तै (भांत-सभांते) जिंदगी गुजराने दे साधन बनाए हे पर तुस बिल्कुल धन्नवाद नेई करदे ॥ 11 ॥
(रुकू 1/8)

وَكَمْ مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا فَجَاءَ هَا بِأَسْنَا
بَيِّنَاتٍ أَوْ هُمْ قَائِلُونَ ۝

فَمَا كَانَ دَعْوَاهُمْ إِذْ جَاءَهُمْ بِأَسْنَا إِلَّا
أَنْ قَالُوا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝

فَلَنَسْأَلَنَّ الَّذِينَ أُرْسِلَ إِلَيْهِمْ
وَلَنَسْأَلَنَّ الْمُرْسَلِينَ ۝

فَلَنَقْضَنَّ عَنْهُمْ بَعْلُهُمْ وَمَا كُنَّا
عَائِبِينَ ۝

وَالْوَزْرُتُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ ۝ فَمَنْ ثَقُلَتْ
مَوَازِينُهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَئِكَ الَّذِينَ
خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا
يَظْلِمُونَ ۝

وَلَقَدْ مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ
فِيهَا مَعَايِشَ ۝ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝

1. यानी सदा उंदा निरीक्षण करदे हे।

ते असें तुसेंगी पैहलें (अस्पष्ट रूपै च) पैदा कीता हा, फी तुसेंगी (थुआड़ी परिस्थिति दे मताबक) रूप प्रदान कीते हे, फी फ़रिशतें गी गलाया हा जे आदम दे आज्ञाकारी बनो। इस पर फ़रिशतें ते आज्ञा दा पालन कीता, पर इब्लीस¹ आज्ञाकारी नेई बनेआ ॥ 12 ॥

(इस पर अल्लाह नै उसी) गलाया जे मेरे हुकम² दे होंदे होई तुगी कुसनै सजद: करने शा रोकेआ हा? उसनै उत्तर दिता जे अ'ऊं ते उस (आदम) शा उत्तम आं। तोह मेरे सभाऽ च अगग रक्खी दी ऐ ते ओहदे सभाऽ च गिल्ली³ मिट्टी दा गुण रक्खे दा ऐ। ॥ 13 ॥

(अल्लाह नै) गलाया जे (जेकर एह गल्ल ऐ तां) तूं इस (सुगुँ) चा निकली जा, की जे तेरे आस्तै मनासब नेई जे तूं एहदे च घमंड शा कम्म लैं। इस आस्तै तूं इत्थूं दा निकली जा। तूं तुच्छ ते नीच लोकें चा ऐं ॥ 14 ॥

उसनै गलाया जे हे मेरे रब्ब! मिगी उस दिनै तक ढेल दे जिसलै जे ओह चुक्के जाइ⁴ ॥ 15 ॥

وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ لَمْ يَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ ۝

قَالَ مَا مَنَعَكَ أَلَّا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ ۚ قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِنْهُ خَلَقْتَنِي مِنْ نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِنْ طِينٍ ۝

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَنْ تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الضَّالِّينَ ۝

قَالَ أَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝

1. इब्लीस ते सजद: आस्तै दिक्खो सूर: बकर: टिप्पणी आयत नं. 35.
2. हालांके हुकम ते सिद्धे रूपै च फ़रिशतें गी हा, पर जिसलै कुसै बड्डे अधिकारी गी हुकम दिता जा तां उसदे मतैहत कर्मचारी ओहदे च शामिल होइं न। पवित्र कुरआन च केई बार गल्लै दा सरबंघ ते हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम कन्नै होंदा ऐ, पर ओहदा अर्थ थुआड़े सारे अनुयायी होंदे न। जियां जे गलाया गेदा ऐ जे जिसलै मापे बुडेर होई जान तां तूं उनेंगी उप्फ तक नेई आख। (सूर: बनी इस्राईल आयत नं० 24) ते असल गल्ल एह ऐ जे तुस अनाथ हे। इस आस्तै एहदा अर्थ थुआड़े अनुयायी न तुस आपूं नेई।
3. यानी गिल्ली मिट्टी आंगर मनुक्खें गी केई चाल्ली दे गुणें च ढालेआ जाई सकदा ऐ। जेकर इक मनुक्ख चाह तां सर्वोत्तम सत्ता दे अधीन बी होई सकदा ऐ, पर मेरे (शतान दे) सभाऽ च तोह अगगी दे गुण रक्खे दे न। इस आस्तै अ'ऊं कुसै दे मतैहत नेई रेही सकदा। इस आस्तै इस आयत दा एह अर्थ नेई जे मानव-समाज दी स्त्रिस्टी मिट्टी कन्नै कीती गेदी ऐ ते शतान दी अगगी कन्नै। बल्के अर्थ एह ऐ जे मानव-प्रकृति च एह गुण रक्खेआ गेदा ऐ जे ओह परिस्थिति दे मताबक ढली जंदा ऐ, पर शतान दे सभाऽ च प्रचंड अगगी आहली उतेजना पाई जंदा ऐ ते ओह ना-फरमान्नी शा कम्म लैंदा ऐ।
4. एहदा एह अर्थ नेई जे क्यामत तक ढेल देरे, बल्के एह अर्थ ऐ जे अध्यात्मक सूझ-बूझ होने तक मिगी ढेल देरे।

(अल्लाह नै) जवाब दिता तुगी (तेरी मांग/
आखे मूजब) डेल दिति गई ऐ ॥ 16 ॥

उसनै गलाया गल्ल इयां ऐ जे तोह मेरा बिनाश¹
कीता ऐ। इस आस्तै अ'ऊं उंदे (मानव-समाज)
आस्तै तेरे सिद्धे रस्ते च बेही जाड ॥ 17 ॥

फी अ'ऊं उंदे सामनेआ, पिच्छुआं, सज्जे जां
खब्बे पासेआ (बक्हाने/भड़काने आस्तै) उंदे
कश औडते तूं उंदे चा मते-हारै गी शुकरगुजार
नेई पागा ॥ 18 ॥

(अल्लाह नै) गलाया जे इत्थुआं निकली जा।
तेरी सदा निंदेआ कीती जाग ते तूं अल्लाह दे
कुर्ब (नेड़मेपनै) शा बी दूर रौहगा ते जेहके बी
इनें लोकें चा तेरा अनुसरण करडन (अ'ऊं उनेंगी
आखना आं जे) तुंदे सारें कनै नरकें गी भरी
देड ॥ 19 ॥

ते हे आदम! (अ'ऊं तुगी आखना आं जे) तूं ते
तेरा साथी सुगै च रौह। इस आस्तै तुस जित्थुआं
चाहो खाओ-पिय्यो² ते इस (म'ना कीते गेदे)
बूहटे³ दे लागै बी नेई जायो। बरना तुस जालम
होई जागे ओ ॥ 20 ॥

इस पर शतान नै उनें दौनीं (आदम ते ओहदे
साथी) दे दिलै च खतोला पैदा करी दिता तां
जे जे किश उंदे नंग चा उंदे आस्तै छपालेआ

قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ﴿١٦﴾

قَالَ فِيمَا آغْوَيْتَنِي لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ
صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿١٧﴾

ثُمَّ لَا تَبِيتُهُمْ مِّنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمَنْ
خَلْفَهُمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ
وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ ﴿١٨﴾

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْمُورًا وَمَا مَذْمُورًا
لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ
مِنْكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٩﴾

وَيَا آدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا
مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ
فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٢٠﴾

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا
مَا وُورِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوَائِهِمَا وَقَالَ مَا

1. इस दा एह अर्थ नेई जे अल्लाह नै शतान दा बिनाश कीता हा, बल्के शतान नै ते अपने कुकर्म कारण आपूं अपना सर्वनाश कीता हा।
2. इस फिकरे शा सेही होंदा ऐ जे शरीअत दी नीह पवितरता पर रक्खी गेदी ऐ। सिर्फ ऊरे पदार्थ र्हाम करार दिते गेदे न जेहके आध्यात्मिक ते शरीरक ट्रिस्टीकोण कनै हानीकारक न।
3. बरजत (म'ना कीते गेदे) बूहटे दा अर्थ ओह आदेश न जिंदे च किश गल्लें शा आदम गी रोकेआ गेआ हा खासकर इब्लीस दी संतान कनै संपर्क रक्खने शा। कुर्आन करीम च लिखे दा ऐ जे पवितर बूहटे दा अर्थ अच्छे आदेश होंदे न। (दिकखो सूर: इब्राहीम आयत: 27) इत्थें बी बरजत बूहटे दा अर्थ ओह आदेश न जिंदे शा बचने आस्तै हजरत आदम गी गलाया गेआ हा ते जिंदे चा इक बड्डा आदेश इब्लीस ते ओहदी संतान शा बचने दा हा।

गेदा हा उसी जाहर¹ करी देये ते गलाया जे इस बूहेत शा थुआड़े रब्ब नै तुसेंगी सिर्फ इस आसतै रोके दा ऐ जे ऐसा निं होऐ जे कुदै तुस दमें फ़रिश्ते बनी जाओ ते तुस दमें अमर² नेई होई जाओ ॥ 21 ॥

ते शतान नै सघंद खाइये उनेंगी गलाया जे अ'ऊं थुआड़ी दौनीं दी भलाई चाहने आहला आं ॥ 22 ॥

फी उनें दौनीं गी धोखा देइये उंदे थारै (थमा) हटाई दिता। फी जिसलै उनें दौनीं उस (बरजत) बूहेत परा किश खाई लैता तां उंदा नंग उंदे पर खु'ल्ली गोआ ते ओह सुगै दी शोभा³ दे समानें गी अपने उप्पर चमकान लगी पे ते उनें दौनीं गी उंदे रब्ब नै बुलाया⁴ ते गलाया जे क्या में तुसें दौनीं गी इस बूहेत शा रोकेआ नथा ते एह नथा गलाया जे शतान थुआड़ा जाहरा-बाहरा दुश्मन ऐ ॥ 23 ॥

उनें दौनीं गलाया जे हे साढ़े रब्ब! असें अपने-आपै पर अत्याचार कीता। जेकर तू असेंगी नेई बख्खागा ते साढ़े पर रैहम नेई करगा तां अस

نَهَكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ إِلَّا أَنْ
تَكُونَا مَلَكَيْنِ أَوْ تَكُونَا مِنَ الْخَالِدِيْنَ ۝

وَقَاَسَمَهُمَا اِنَّيْ لَكُمَْا لِمِنَ النَّصِيْحِيْنَ ۝

فَدَلُّهُمَا بِعُرْوَةٍ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ
بَدَتْ لُهُمَا سَوَاتِلُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفْنَ
عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ وَنَادِيَهُمَا رَبُّهُمَا
اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكَ الشَّجَرَةِ وَاَقُلَّ
لَكُمَْا اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَْا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَا اَنْفُسَنَا وَاِن لَّمْ
تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ

1. बुरे बिचार जित्थें मनुखै दा सर्वनाश करी दिंदे न उत्थें उंदे राहें मनुखै पर ओहदियां कमियां बी जाहर होई जदियां न।
2. बुरे बिचार मनुखै गी एह दसदे न जे जिनें गल्लें शा अल्लाह नै उसी रोके दा ऐ ऊरे करने कनें ओहदी त्रककी ते प्रगति ऐ। इक चोर जां इक गुब्बखोर इय्ये समझदा ऐ जे लोकें दा माल हड़पने कनें गै संसार च उसी सुखी जीवन प्राप्त होई सकदा ऐ।
3. यानी जिसलै मनुखै शा पाप होई जंदे न तां ओहदी अंतरात्मा उसी सचेत करदी ऐ जे दिक्ख! तू किन्ना कमजोर हा। इस कुकर्म नै तुगी कोई लाह नेई पुजाया ते जेकर तू एह कुकर्म नेई बी करदा तां बी तुगी कोई घाटा/तंगी नथी उसलै उस मनुखै गी समझ औंदी ऐ ते ओह सुगै दी शोभा दे समानें यानी उनें कमें राहें अपने पापें गी खट्टने दी कोशश करदा ऐ जिंदे फलसरूप इक मनुख सुगै जाई सकदा ऐ। पवितर कुरआन च मूल शब्द 'वरकिलजन्त' ऐ जेहदा अर्थ शोभा बी होंदा ऐ। आयत दा भाव एह ऐ जे जिनें कर्म कनें सुगै दी शोभा हासल होंदी ऐ ओह कम्म हजरत आदम ते हजरत हव्वा ने करना शुरू करी दिते तां जे उदियां कमियां खदिटयां जान।
4. एहदा एह अर्थ नेई जे पापी लोकें गी असल च कोई इल्हाम होंदा ऐ बल्के अर्थ एह ऐ जे जिसलै तगर मनुखै दे दिले च शर्म ते नदामत पैदा होंदी ऐ तां उंदी शुद्ध आत्मा उनेंगी दसदी ऐ जे जे किश अल्लाह नै गलाया हा ओह भेलआं सच्च हा ते जेहके उसनै कर्म कीते हे ओह गल्ल हे। उसलै ओह नम्मरता पूर्वक प्रार्थनां करना ते माफियां मंगन लगी पींदा ऐ ते खुदा दी अपार किरपा हासल करी लैदा ऐ।

जरूर घाटा खाने आहलें चा होई जागे ॥ 24 ॥

الْخَسِرِينَ ﴿٢٤﴾

उसलै उस (अल्लाह) नै गलाया जे तुस सारे दे सारे इत्थुआं उठी¹ जाओ। तुंदे चा किश लोक दूए किश लोकें दे बैरी होडन ते तुंदे आस्तै इससै धरती च ठकाना² ते किश चिरे तक (भागें च) लाह तुआना होग ॥ 25 ॥

قَالَ اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ
وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَى
حِينٍ ﴿٢٥﴾

फी गलाया जे इससै धरती च तुस जींदे रीहगे ओ ते इससै च मरगे ओ ते इससै चा कड्डे³ जागे ओ ॥ 26 ॥ (रुकू 2/9)

قَالَ فِيهَا تَحْيَوْنَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ وَمِمَّا
تُخْرَجُونَ ﴿٢٦﴾

हे आदम दी संतान! असैं थुआड़े आस्तै इक ऐसा लबास⁴ पैदा⁵ कीता ऐ जेहका थुआड़े छपालने आहले अंगें गी खटदा ऐ ते शोभा दा साधन बी ऐ ते संयम दा लबास ते सारें शा उत्तम लबास ऐ। एह (लबास दा आदेश)

يُنَبِّئُ آدَمَ قَدْ أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ لِبَاسًا
يُؤَارِي سَؤَاتِكُمْ وَيُرِي شَاوِلِبَاسِ
التَّقْوَىٰ ذَٰلِكَ خَيْرٌ ذَٰلِكَ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ

1. इस आयत शा सेही होंदा ऐ जे पैहलें जिनें शतानें दा जिकर होई चुके दा ऐ ओह मनुक्ख गै हे, की जे इस आयत शा सिद्ध होंदा ऐ जे मानव ते दानव दौनीं गी किट्टे गै निकलने दा आदेश हा ते सूचत कीता गेदा हा जे ओह आपस च बैर भावना शा कम्म लै करडन। हून इस संसार च मनुक्ख गै लभदे न, पर शतान कोई बी नजरी नेई आँदा ते फी मनुक्ख गै बैरी न। शतानें दा अपना कोई ऐसा समूह नेई लभदा जेहका मानव-समाज कन्ने बैर ते ईरखा-द्वेषा रखदा होऐ।
2. एहदे शा बी पता लगदा ऐ जे इत्थें मानव-प्राणी दा गै जिकर ऐ ते इब्लीस जां ओहदे अनुयायियें कन्ने सरबंधत इक चाल्ली नै मनुक्ख गै ऐ, की जे अल्लाह आखदा ऐ जे मानव-जाति इब्लीस, शतान ते ओहदा अनुसरण करने आहले इससै संसार च कम्म करडन ते इससै धरती च नबास करने ते कम्म करने आहले सारे दे सारे मनुक्ख गै न।
3. इस आयत शा स्पष्ट ऐ जे कोई मनुक्ख प्रिथ्वी शा बाहर नेई जाई सकदा नां गै गासै पर जाई सकदा ऐ जियां जे किश लोकें दा भरम ऐ जे हजरत ईसा-मसीह ते हजरत इद्रीस गासै पर उठी गेदे न। जेकर ओह दर्में गासै पर बैठे दे न तां फी जां ते एह आयत झूट ऐ जे तुस इससै प्रिथ्वी च जींदे रीहगे ओ जां फी हजरत ईसा ते हजरत इद्रीस मनुक्ख नेई हे। इस आयत शा एह बी सिद्ध होंदा ऐ जे हजरत ईसा ते हजरत इद्रीस ते सारे ऐसे मनुक्ख जिंदे बारे आखेआ जंदा ऐ जे ओह गासै पर मजूद न असल च इससै धरती पर अपना जीवन बतीत करडन, इससै च दब्बे जाडन ते इससै चा दबारा जींदे होइयै उठडन।
4. लिबास - लाने आहले कपड़े-पशाक।
5. मूल शब्द 'अन्जलना दा इक अर्थ पैदा करना बी होंदा ऐ जियां जे पवित्र कुरआन च ऐ, असैं लोहा पैदा कीते दा ऐ। (दिकखी सूर: हदीद आयत नं० 26) ते अल्लाह नै तुंदे पर रसूल उतारे दा ऐ यानी तुंदे कश रसूल भेजे दा ऐ। (सूर: तलाक आयत: 11-12)।

अल्लाह दे आदेशों चा इक आदेश ऐ तां जे तुस नसीहत हासल करो ॥ 27 ॥

हे आदम दी संतान! शतान तुसेंगी (अल्लाह दे रस्ते थमां) भटकई नेई देऐ। जिस चाल्ली जे उसनै थुआड़े मापेँ गी सुगैँ चा कड्ही दिता हा। उसनै उंदे दौर्नीं शा उंदे लबास खूसी लैते हे तां जे उंदे छपालने आहली चीज जाहर करी देऐ। ओह ते उसदा दल¹ तुसेंगी उत्युआं दिखदे न जित्युआं तुस उनेंगी नेई दिखदे। असें शतानेँ गी इन्कार करने आहलें दा दोस्त² बनाए दा ऐ ॥ 28 ॥

ते जिसलै ओह (मुन्कर) लोक कोई बुरा कम्म करदे न तां गलांदे न जे असें अपने पुरखें गी इसै रीति (ढरें) पर पाया हा ते अल्लाह नै असेंगी इसै दा हुकम दित्ते दा ऐ। तूं गलाई दे जे अल्लाह बुरी गल्लें दे करने दा हुकम कदें बी नेई दिंदा। क्या तुस अल्लाह दे बारे च ओह गल्लां झूठ-मूठ गै आखदे ओ जिंदा तुसेंगी आपूं इलम नेई? ॥ 29 ॥

तूं गलाई दे जे मिगी मेरे रब्ब नै न्यांs करने दा हुकम दित्ते दा ऐ ते एह जे हर इक मस्जिद दे लागै (उपासना बेलै) अपना ध्यान ठीक करी लै करा करो ते अल्लाह दी उपासना गी ठीक उसै दा हक्क समझदे होई उसै गी पुकारो। जिस चाल्ली उसनै थुआड़ी शुरुआत कीती ही। तुस फी इक दिन उसै पैहली हालत पासै परतोगे ओ ॥ 30 ॥

उसनै इक गरोह गी हदायत दित्ती दी ऐ, पर इक दूए गरोह पर गुमराही सिद्ध होई चुकी दी ऐ,

لَعَلَّهُمْ يَذْكُرُونَ ﴿٢٧﴾

يٰٓبَنِيٰٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَاۤ اَخْرَجَ اٰبَوٰٓيَكُم مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوَآتِهِمَا ۗ اِنَّهٗ يَرٰكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۗ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيْطٰنِ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٨﴾

وَ اِذْ اَفْعَلُوْا فٰحِشَةً قَالُوْٓا وَجَدْنَا عَلَيْهَاۤ اٰبَآءَنَا وَ اللّٰهُ اَمْرًاۢ بَآئِهًا ۗ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَأْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ اَتَقُوْنَ عَلٰى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٩﴾

قُلْ اَمْرٌ رَبِّيْۙ بِالْقِسْطِ ۗ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَاذْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۗ كَمَاۢ بَدَاۤ اَكُمۡ تَعُوْدُوْنَ ﴿٣٠﴾

فَرِيْقًا هٰدِيْ وَّفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ۗ

1. यानी शतान दी संतान इस संसार च बड़ी धूर्तता शा कम्म लेंदी ऐ ते मोमिनें गी ताड़दी (जाचदी) रौहदी ऐ तां जे उंदे कर्म गी बगाड़ियै लोकें गी सुनान ते तां जे उनेंगी उंदा बैरी बनाई देन।
2. यानी मुन्कर लोक एह प्रेरणा दिंदे न जे प्यो-दादे दियें गल्लें पर डटे दे र'वो, सूझ-बूझ शा कम्म नेई लैओ।

की जे उनें अल्लाह गी छोड़ियै शतानें गी अपना दोस्त बनाई लैते दा ऐ ते ओह इस भलेखे च न जे ओह हदायत पाई चुके दे न ॥ 31 ॥

हे आदम दी संतान! हर-इक मस्जिद दे लागै (उपासना बेलै) जीनत¹ (दे समान) अखत्यार करी लै करा करो ते खाओ-पिय्यो ते फजूल खर्ची नई करो, की जे ओह (अल्लाह) फजूल² खर्च करने आहलें गी पसंद नई करदा ॥ 32 ॥ (रुकू 3/10)

तूं आखी दे जे अल्लाह दी उस सुंदरता गी जिसी उसनै अपने बंदें आस्तै कड्डे दा ऐ, कुसनै र्हाम³ ठरहाए दा ऐ। इस्सै चाल्ली रिशक चा पवित्तर पदार्थें गी बी कुस नै र्हाम⁴ करार दित्ते दा ऐ? तूं गलाई दे जे एह ते असल च इस संसार च बी मोमिनें आस्तै ऐ ते क्यामत आहलै रोज ते सिर्फ उंदे आस्तै गै होडन। इस्सै चाल्ली अस अपनी आयतां ज्ञान रक्खने आहले लोकें आस्तै तफसील कन्नै ब्यान करने आं ॥ 33 ॥

तूं गलाई दे जे मेरे रब्ब नै सिर्फ बुरे कर्मों गी र्हाम करार दित्ते दा ऐ भामें ओह छप्पे दे होन ते भामें जाहरी-बाहरी ते पाप ते बिना हक्क दे उदंडता गी बी र्हाम करार दित्ते दा ऐ ते इस

إِنَّهُمْ اتَّخَذُوا الشَّيْطِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ

اللَّهِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ مُّهْتَدُونَ ①

يُنَبِّئُ أَدَمَ خُذْ وَارِثَتَكَ عَنْ كُلِّ مَسْجِدٍ
وَكُلُوا وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ
الْمُسْرِفِينَ ②

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللَّهِ الَّتِي أَخْرَجَ لِعِبَادِهِ
وَالطَّيِّبَاتِ مِنَ الرِّزْقِ قُلْ هِيَ لِلَّذِينَ
آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ
كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ③

قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّي الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ
وَمَنْهَا وَمَا بَطَّنَ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ
وَأَنْ تُشْرِكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا

1. यानी मस्जिद च आँने शा पैहलें गै अपने मन ते बिचारें गी शुद्ध करी लै करा करो ते शरीर ते अपने लावै गी बी साफ ते पवित्तर करी लै करा करो।
2. मस्जिद कन्नै खाने-पीने ते फजूल खर्ची दा कोई सरबंभ नई सेही होंदा, पर इसी इत्थें ब्यान करने च हिक्मत एह ऐ जे भोजन दा शरीर पर गैहरा असर पोंदा ऐ। उपासना अच्छे ते उपयोगी कर्म दी शक्ति प्रदान करदी ऐ। इस चाल्ली शरीर, आत्मा ते उपासना दा आपस च गैहरा संबंभ ऐ। इस आस्तै दस्से दा ऐ जे विधिवत नमाज पढ़ो तां जे शुभ कर्म करने दी समर्थ प्राप्त होऐ। जेहदे च इक बड्डी शिक्षा एह-ऐ जे खाने-पीने च फजूल खर्ची नई करो।
3. मतलब एह ऐ जे खाने-पीने ते लाबे-लबास आदि च दूशत चीजें दा प्रयोग इस्लाम धर्म दे हुकम दे बरुद्ध ऐ। एह मुश्रिकें ते ईसाइयें दी शिक्षा ही, पर पवित्तर कुरआन दसदा ऐ जे अल्लाह भ्रिस्ट ते गंदा रोहने दी अजाजत नई दिंदा। इसदा हुकम ते म्हेशां पवित्तर ते साफ रोहने आस्तै ऐ।
4. ईसाइयें ते हिंदुएं दा बिचार ऐ जे ईश्वर भगत श्रेष्ठ ते सुआदला भोजन कदें बी नई करदे, पर इस्लाम आखदा ऐ जे कुल्ल पवित्तर भोजन सारे मोमिनें आस्तै जायज न, की जे अल्लाह नै इनें पदार्थें गी प्रयोग च आहनने आस्तै गै पैदा कीते दा ऐ।

गल्ला गी बी जे तुस कुसै ऐसी सत्ता गी अल्लाह दा शरीक करार देओ जेहदी सचाई आस्तै उस नै (अल्लाह नै) कोई दलील नेई उतारी ते इस गल्ला गी बी (नजैज गलाए दा ऐ) जे तुस अल्लाह पर नेह झूठे अलजाम लाओ जिनैगी तुस नेई जानदे ॥ 34 ॥

हर कौम दे खातमे दा समां¹ निश्चत ऐ। इस आस्तै जिसलै उंदे खातमे दा समां आई जा तां ओहदे शा ओह नां ते इक घड़ी पिच्छें रेही सकदे न ते नां गै इक घड़ी अगमें बधी सकदे न ॥ 35 ॥

हे आदम दी संतान! जेकर तुंदे कश तुंदे चा गै रसूल बनाइयै भेजे जान इस चाल्ली जे ओह थुआड़े सामनै मेरियां आयतां पढ़ियै सुनांदे होन, तां जेहके लोक संयम अखत्यार करन ते सुधार करन उनेंगी (औने आहले समं दा) कोई डर नेई होग ते नां ओह होई-बीती दी गल्लें बारे चैता बुझडन ॥ 36 ॥

ते ओह लोक जेहके साढ़ी आयतें गी झुटलांदे न ते घमंड करदे होई उंदे शा मूंह फेरी लैंदे न ओह नरकै च पौने आहले न। ओह ओहदे च चिरे तगर पेदे रौहडन ॥ 37 ॥

इस आस्तै (दस्सो जो) उस शख्स शा बद्ध दूआ कु²न जालम होई सकदा ऐ जेहका अल्लाह पर झूठ² गंढदा होऐ ते अल्लाह दियें

وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ فَإِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٣٥﴾

يُنَوِّىْ أَدَمَ إِمَّا يَأْتِيَنَّكَ رُسُلٌ مِنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا فَمَنْ أَنْقَى وَاصَّلِحْ فَلَا خَوْفَ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٦﴾

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٧﴾

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ أُولَئِكَ يَتْلَوْنَ نَجْمَهُمْ

1. एह मतलब नेई ते तकदीर कनै मुदत निश्चत करी दिती दी ऐ बल्के तकदीर नै कर्म निश्चत करी दिने दे न जिंदे कनै कौम दी उमर घटदी जां बधदी ऐ। जिसलै नेक कर्म शा कौम हटग तां ओह तबाह होई जाग। इस आस्तै मुदत दा मतलब ओह कनून ऐ जेहदे तैहत मुदत लम्मा जां निक्की होदी ऐ।
2. पवित्र कुरआन च इप्रतरा शब्द ऐ। इप्रतरा सच्चा बी होंदा ऐ ते झूठा बी। सच्चा इस हालत च जे जेहकी गल्ल इक शख्स कुसै पासै मन्सूब करदा ऐ, ओह गल्ल होऐ ते सच्ची पर अगले नै ओह गल्ल गलाई दी नेई होऐ। ते झूठा इस सूत्र च जे जेहकी गल्ल अगले कनै मन्सूब कीती जा, होऐ बी झूठी ते अगले नै आखी दी बी नेई होऐ।

आयतें गी झुठलांदा होऐ। ऐसे लोकें गी निश्चत स'जा चा उंदा हिस्सा उनेंगी मिलदा रौह्ग इत्थें तक जे जिसलै उंदे कश साढ़े फरिश्ते उंदे प्राण लैने आस्तै जाडन तां ओह् पुछडन जे ओह् (शरीक) कुत्थें न जिनेंगी तुस अल्लाह दे सिवा पुकारदे हे? उस बेलै एह लोक जवाब देडन जे ओह् ते साढ़े शा गायब होई गे ते ओह् अपने बारै आपूं गुआही देडन जे ओह् मुन्करें च शामिल हे ॥ 38 ॥

(उसलै अल्लाह उनें गी) गलाग जे जाओ ते जाइयै अग्गी च उनें जिनें ते मनुक्खें दे दलें च शामिल होई जाओ जेहके तुंदे शा पैहलें होई चुके दे न। जिसलै कोई कौम अग्गी च दाखल होग तां (अपने शा पैहलकी) भैनू (यानी कौम) पर लानत बरहाग, इत्थें तक जे जिसलै सारे ओह्दे च दाखल होई जाडन तां उंदे चा खीरली (दाखल होने आहली) कौम अपने शा पैहलें आहली कौम बारै गलाग जे हे साढ़े रब्ब! इनें लोकें असेंगी गुमराह कीता। इस आस्तै तूं उनेंगी केई गुणा ज्यादा बधाइयै अजाब दे। इस पर ओह् (अल्लाह) गलाग जे सारें गी गै ज्यादा¹ अजाब मिला करदा ऐ, पर तुस नेई समझदे ॥ 39 ॥

ते (एह्दे पर) उंदे चा पैहली कौम दे लोक अपने शा बा'द च औने आहली कौम दे लोकें गी गलाडन जे तुसेंगी साढ़े पर कोई प्रधानता नथी (जे तुसेंगी घट्ट अजाब दिता जा)। इस आस्तै तुस अपने कुकर्मै कारण अजाब दा सुआद चक्खो ॥ 40 ॥ (रुकू 4/11)

مِّنَ الْكِتَابِ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُمْ رَسُولُنَا
يَتَوْفَوْنَهُمْ قَالُوا إِنَّمَا كُنْتُمْ تَدْعُونَ
مِن دُونِ اللَّهِ قَالُوا صَلُّوا عَلَيْنَا وَشَهِدُوا
عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ﴿٣٨﴾

قَالَ ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ
مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ فِي النَّارِ كُلَّمَا دَخَلَتْ
أُمَّةٌ لَعَنَتْ أُخْتَهَا حَتَّىٰ إِذَا آذَرُكُوا
فِيهَا جَمِيعًا قَالَتْ أَخْرَبَهُمْ لِأَوْلِهِمْ
رَبَّنَا هَؤُلَاءِ أَصَلُّونَا فَآتَيْهِمْ عَذَابًا
ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ قَال لِكُلِّ ضِعْفٍ
وَلَكِن لَّا تَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

وَقَالَتْ أُولُوهُم لِأَخْرَبَهُمْ فَمَا كَانَ
لَكُمْ عَلَيْهَا مِنْ فَضْلٍ فذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا
كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٤٠﴾

1. अजाब म्हेशां ज्यादा गै सेही होँदा ऐ इत्थें तक जे हर बमार समझदा ऐ जे शायद मेरी बमारी ज्यादा ऐ ते दूप दी घट्ट।

ओह लोक जिनें साढ़ी आयतें गी झुठलाए दा ऐ ते घमंड करदे होई उंदे शा मूंह फेरी लैता ऐ, उंदे आस्तै गासै दे दरोआजे नेई खोहले जाडन ते ओह सुर्गे च प्रवेश नेई करी सकडन इर्थें तक जे ऊंट सूई दे नक्के च प्रवेश करै ते अस अपराधियें गी इससै चाल्ली बदला दिन्ने आं ॥ 41 ॥

ते उंदे आस्तै हेठ-उप्पर (रजाई-बिस्तरा) नरक गै होग ते अस इससै चाल्ली जालमें गी बदला दिन्ने आं ॥ 42 ॥

ते जेहके लोक ईमान ल्याए ते उनें शुभ कर्म कीते दे न (उनेंगी चेता र'वै जे) अस कुसै जात्रै पर ओहदी समर्थ शा बद्ध जिम्मेदारी नेई पांदे। ओह लोक जन्नत च दाखल होने आहले न ते ओह ओहदे च म्हेशां आस्तै बास करडन ॥ 43 ॥

ते अस उनें सुर्ग बासियें दे सीन्ने चा (इक-दूए दे प्रति) मलीनता कड्डी देगे ते उंदे दखल ते कब्जे² च नैहरां बगदियां होडन ते ओह गलाडन जे हर चाल्ली दी स्तुति दा हक्कदार सिर्फ अल्लाह गै ऐ जिसनै असेंगी (इस सुर्गे दा) रस्ता दस्सेआ ते जेकर अल्लाह असें गी एहदा रस्ता नेई दसदा तां अस कदें बी एहदा रस्ता नथे पाई (ढूंडी) सकदे। यकीनन साढ़े रब्ब दे रसूल सच्चें गै सच्च लेइयै साढ़े कश आए हे ते उनेंगी उच्ची अवाजै

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْجَمَلَ فِي سِمَةِ الْخِيَاطِ ۗ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ①

لَهُمْ مِنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۗ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ②

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ③

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غَلٍّ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنَّ هَدَانَا اللَّهُ لَقَدْ جَاءَتْ رَسُولَ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۗ وَتُودَعُونَ أَنْ تُبَلَّغُوا الْجَنَّةَ أَوْ رُشِّمُوهَا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ④

1. यानी जिस चाल्ली ऊंटै दा सूई दे नक्के च दाखल होना ना-ममकन ऐ उससै चाल्ली ऐसे पापियें दा सिर्फ अपने कर्म दे अधार पर सुर्गे च दाखल होना बी ना-ममकन होग। हां! जेकर अल्लाह कुसै पर रैहम करै तां गल्ल होर ऐ।
2. संसार दियां नैहरां ते बड्डे-बड्डे जिमिंदारें जां सरकार दियां होंदियां न, पर परलोक च सुर्गबासियें गी पानी देने आहलियें नैहरें पर उंदा गै अधिकार होग।

च गलाई दित्ता जाग जे एह ओह सुर्ग ऐ जेहदा तुसंगी उनें कमें कारण बारस बनाया गेआ ऐ जेहके तुस करदे होंदे हे ॥ 44 ॥

ते सुर्गा आहले लोक नरकै आहलें गी गलाडन जे साढ़े रब्ब नै जेहका बा 'यदा कीता हा, उसगी असें ते सच्चा पाया ऐ। क्या तुसें बी उस बा 'यदे गी सच्चा पाया ऐ जेहका थुआड़े रब्ब नै तुंदे कत्रै कीता हा? इस पर नरकै आहले गलाडन, हां, हां! इस आसतै इक पुकारने आह्ला उंदे बश्कार जोरें गलाग जे इनें जालमें पर खुदा दी लानत होऐ ॥ 45 ॥

जेहके अल्लाह दे रस्ते शा (लोकें गी) रोकदे हे ते इस रस्ते च त्रेढ़ापन दूडदे होंदे हे ते कनै गै परलोक (दे जीवन) दा इन्कार करने आहले हे ॥ 46 ॥

ते उनें दौर्नी (यानी सुर्गबासियें ते दोजखियें) बश्कार इक रोक होग ते आराफ़¹ पर किश लोक ऐसे होडन जेहके सारें गी उंदे चेहरें शा पछानदे होडन। ओह सुर्ग बासियें गी दिक्खियै गलाडन जे तुंदे पर सलामती होऐ, ओह अजें सुर्गो च दाखल नेई होऐ दे होडन पर ओहदे (सुर्गो) च जाने दी मेद रखदे होडन ॥ 47 ॥

जिसलै उंदी (सुर्गबासियें दी) द्रिश्टी नरक बासियें आहली बक्खी फराई जाग तां ओह गलाडन जे हे साढ़े रब्ब! असें गी जालम लोकें चा नेई बनायो ॥ 48 ॥ (रकू 5/12)

ते आराफ़ आहले किश लोकें गी जिनेंगी ओह उंदे चेहरें थमां पछानदे हे गलाडन जे नां ते थुआड़ी तदाद नै तुसें गी कोई लाह पुजाया ते नां

وَنَادَى أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ النَّارِ أَنْ
قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ
وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا قَالُوا نَعَمْ
فَأَذِنَ مَوْدِّنٌ بَيْنَهُمْ أَنْ لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى
الظَّالِمِينَ ﴿٤٤﴾

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَمْنَعُونَهَا
عِوَجًا وَهُمْ بِالْآخِرَةِ كَفُورُونَ ﴿٤٥﴾

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ وَعَلَى الْأَعْرَافِ
رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّا بِسِيمِهِمْ وَنَادُوا
أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ سَلِّمُوا عَلَيْكُمْ
لَمَّا يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ ﴿٤٦﴾

وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ تِلْقَاءَ
أَصْحَابِ النَّارِ قَالُوا رَبَّنَا لَتَجْعَلْنَا مَعَ
الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٤٧﴾

وَنَادَى أَصْحَابُ الْأَعْرَافِ رِجَالًا
يَعْرِفُونَهُمْ بِسِيمِهِمْ قَالُوا مَا أَغْنَىٰ

1. मूल शब्द आराफ़ शा अभीष्ट कामिल न।

गै थुआड़े उनें बड़्डे-बड़्डे दा 'वे' जिंदे आधार पर तुस घमंड करदे होंदे हे ॥ 49 ॥

(फही ओह सुर्ग बासियें आहले पासै अशारा करदे होई नरक-बासियों गी गलाडन) क्या एह ऊरे लोक न जिंदे बाँरे च तुस सघंद खाइयै आखदे होंदे हे जे अल्लाह उंदे कन्नै कदें बी रहमत दा ब्यहार नेई करग। (फही उनें सुर्गबासियें गी जेहके सुर्गे च दाखल होने दी बलगाई च होडन, अल्लाह गलाग जे) जाओ तुस सुर्गे च दाखल होई जाओ, तुसेंगी नां ते औने आहले कल्लै दा कोई भै¹ होग ते नां पिछले कल्लै दी कोई घटना दुखी करग ॥ 50 ॥

ते नरक बासी सुर्ग बासियें बकखी मखातब होइयै गलाडन जे थोढ़ा हारा पानी साढ़ी बकखी बी सुट्टो जां जे किश अल्लाह नै तुसेंगी प्रदान कीते दा ऐ ओहदे चा किश असेंगी बी देओ। (एहदे पर सुर्ग बासी) गलाडन जे अल्लाह नै एह् दमें पदार्थ मुन्करें आस्तै र्हाम करार दिते दे न ॥ 51 ॥

(ऐसे मुन्कर लोक) जिनें अपने धर्म गी हासा-मजाक बनाई रकखे दा हा ते संसारक जीवन नै उनेंगी धोखे च पाई रकखे दा हा। इस आस्तै अज्ज अस बी उनेंगी छोड़ी देगे जिस चाल्ली उनें अपने इस दिनै दे मिलने (दे बिचार) गी छोड़ी रकखे दा हा ते इस ब'जा करी बी जे ओह साढ़ी आयतें दा हठपूर्ण इन्कार करदे हे ॥ 52 ॥

عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ
تَسْتَكْبِرُونَ ۝

أَهْوَاءَ الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَبَالَهُمُ اللَّهُ
بِرَحْمَةٍ ۖ أَذْخَلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفَ
عَلَيْكُمْ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ۝

وَنَادَى أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ
أَفِضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ
قَالُوا إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَهَا عَلَى الْكٰفِرِينَ ۝

الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَهْوًا وَ لَعِبًا
وَعَرَّثَهُمُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا قَالِیَوْمَ نُنَسِّسُهُمْ
كَمَا سَوَّأْنَا یَوْمَ مَهْمُهُمْ هَذَا وَمَا كَانُوا
بِآیَاتِنَا یَجْحَدُونَ ۝

1. मूल शब्द 'खौफ' दा अर्थ ऐ भविष्य च होने आहले कुसै संकट दा भै ते "हुजन" दा अर्थ ऐ दिलै पर होई-बीती दी घटना दे दुख दा असर।

ते असें उनेंगी इक बड्डी शान आहली कताब प्रदान कीती दी ऐ जिसी असें उंदे ज्ञान दे आधार पर तफसील कनै ब्यान करी दित्ते दा ऐ ते ओह मोमिनें आस्तै हदायत ते रैहमत ऐ ॥ 53 ॥

क्या अज्ज एह लोक इस कताबा चा लिखी गेदी गल्लें दी असलीयत खुल्लने दा इंतजार करा करदे न? जिस रोज इस दी सचाई बंदोई जाग तां ओह लोक जिनें इस शा पैहलें इसी छोड़ी दित्ता हा, गलाडन साढ़े रब्ब दे रसूल बिल्कुल सच्च गलादे हे। इस आस्तै क्या साढ़े लेई कोई सफारश करने आहले हैन जेहके साढ़ी सफारश करन ते क्या एह ममकन ऐ जे असेंगी दबारा संसार च भेजेआ जा तां अस जेहके बी कुकर्म करदे होंदे हे उंदी ज'गा दूए नेक कर्म करन लगी पौचै। सच्चें गै ओह लोक (जिंदा जिकर उप्पर होई चुके दा ऐ) घाटे च पेई गेदे न (ते अपनी जान्नें गी बी उनें घाटे च पाई दित्ता) ते जेहकियां गल्लां ओह अपने कशा बनाइयै करदे होंदे हे अज्ज उंदे शा खुसी लैतियां गेइयां ॥ 54 ॥ (रुकू 6/13)

थुआडा रब्ब सच्चें गै अल्लाह गै ऐ जिसनै गासें ते धरती गी छें दौरें च पैदा कीता ऐ, पही ओह राज सिंहासन पर मजबूती कनै कायम होई गेआ। ओह रातीं गी दिनै पर पांदा ऐ जेहका उसी तौले गै पकड़ना चांहदी ऐ ते सूरज गी ते चनै गी ते तारें गी इस चाल्ली पैदा कीता ऐ जे ओह सब उसदे हुकम दे अधीन (बगैर तनखाही) मानव-सेवा दा कम्म करा करदे न¹। सुनो? पैदा करना बी उससै दा कम्म ऐ ते कनून बनाना बी (उससै दा कम्म

وَلَقَدْ جِئْنَهُمْ بِكِتَابٍ فَصَّلْنَاهُ عَلَىٰ عِلْمٍ
هُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٣﴾

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا تَأْوِيلَهُ ۗ يَوْمَ يَأْتِي
تَأْوِيلَهُ يَقُولُ الَّذِينَ نَسُوهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ
جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۗ فَهَلْ لَنَا مِنْ
شَفَعَاءَ فَيَشْفَعُوا لَنَا أَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلْ
غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۗ قَدْ خَسِرُوا
أَنْفُسَهُمْ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا
يَفْتَرُونَ ﴿٥٤﴾

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى
الْعَرْشِ ۗ يُعْشَىٰ لَيْلَ النَّهَارِ يَطْلُبُهُ
حَثِيثًا ۗ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ
مَسْحَرَاتٌ بِأَمْرِهِ ۗ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ
وَالْأَمْرُ ۗ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٥٤﴾

1. मूल शब्द 'मुसख्खर' दा अर्थ ऐ बिना तनखाही दे कम्म करना।

ऐ) अल्लाह बौहत बरकत आहला ऐ जेहका सारे ज्हांनें दा रब्ब ऐ ॥ 55 ॥

तुस अपने रब्ब गी गिड़गड़ाइयै¹ बी ते चुप्प-चपीते बी पुकारो। यकीनन ओह हद्द शा गुजरने आहलें गी पसंद नेई करदा ॥ 56 ॥

ते धरती च उसदे सुधार दे बा'द फसाद नेई फलाओ ते उस (अल्लाह) गी भै ते आशा कनै पुकारो। अल्लाह दी रहमत सच्चें गै भले कम्म करने आहलें (परोपकारियें)² दे लागै ऐ ॥ 57 ॥

ते ऊपे ऐ जेहका हवाएं गी अपनी रहमत शा पैहलें खुशखबरी देने आस्तै भेजदा ऐ इत्थें तक जे जिसलै ओह बोझल (भारी) बदलें गी चुक्की लैंदियां न अस उनेंगी इक मुड़दा³ देश आहले पासै चलाई दिने आं, पही अस उंदे चा पानी उतारने आं पही अस उस पानी राहें हर भांति दे फल पैदा करने आं। इससै चाल्ली अस मुड़दें गी कड्ढने⁴ होने आं तां जे तुस नसीहत हासल करो ॥ 58 ॥

أَدْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۗ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝

وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا
وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا ۗ إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ
قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ۝

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلَ الرِّيحَ بَشْرًا لِّبَيِّنَ يَدَيْ
رَحْمَتِهِ ۗ حَتَّىٰ إِذَا أَقَلَّتْ سَحَابًا لِّثِقَالًا
سُقْنَاهُ لِيَلِدَ مِمِّتٍ فَأَنْزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ
فَأَخْرَجْنَا بِهِ مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۗ كَذَٰلِكَ
نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝

1. सधारण रूपै च विनय पूर्वक प्रार्थना करने आस्तै गिड़गड़ाना शब्द प्रयुक्त कीता गेआ ऐ, की जे सधारण रूपै दी प्रार्थना च गै मनुक्ख बनावट शा कम्म लेई सकदा ऐ, पर गुप्त रूपै च कीती जाने आहली प्रार्थना कनै गिड़गड़ाने दी शर्त नेई लाई, की जे जेहका शख्स एकांत च प्रार्थना जां उपासना करग ओह विनम्रभाव कनै गै करग। उसी कुसै बनावट दी जरूरत नेई होंदी।
2. मूल शब्द मुहसिन दा अर्थ ऐ जेहका सारी शर्तें कनै कम्मै गी पूरा करै। इस आस्तै इस शब्द दे प्रयोग कनै इस पासै शारा कीता गेदा ऐ जे ऐसा शख्स जो अल्लाह गी अपने पापें दी स'जा शा डरियै ते उस दी अपार किरपा दी आशा पर सारी शर्तें कनै उसी पुकारदा ऐ ओहदे पर अल्लाह दी किरपा जरूर गै इनी तौले उतरदी ऐ जे दिक्खने आहला रूहान होई जंदा ऐ।
3. यानी ऐसा देश जेहका बरखां नेई होने करी बंजर (मुड़दा) हा ते खुरकी ते कैहत दा शकार होई चुके दा हा।
4. इस दा एह अर्थ ऐ जे अस मुड़दा कौमें गी त्रक्की प्रदान करने आं इत्थें परलोक दा बर्णन नेई ऐ। जेकर इत्थें परलोक दा बर्णन होंदा तां 'तां जे तुस नसीहत हासल करो' जैसे शब्द नेई होंदे, की जे परलोक ते अक्खीं शा ओहलै ऐ। उत्थें जेहका जीवन मिलग ओहदे कनै मनुक्ख इस संसार च नसीहत हासल नेई करी सकदा।

ते अच्छा देश (जेहदी मिट्टी अच्छी होऐ) अपने रब्ब दे हुकम¹ कनै अपनी बनस्पति कददा ऐ ते जिस देश दी मिट्टी अच्छी नेई होऐ ओहदी पैदावार रद्दी (नकम्मी) निकलदी ऐ। इस चाल्ली अस शुकर करने आहली कौम दे लोकें आस्तै अपनी आयतां तफसील कनै ब्यान करने आं ॥ 59 ॥ (रुकू 7/14)

असैं सच्चें गै नूह गी ओहदी कौम दे लोकें कश रसूल बनाइयै भेजेआ तां उसनै उनेंगी गलाया जे हे मेरी कौम दे लोको! अल्लाह दी उपासना करो। उसदे सिवा थुआड़ा कोई उपास्य नेई। अ'ऊं थुआड़े उप्पर एक बड्डे भारी दिनै दे अजाब दे औने शा डरना आं ॥ 60 ॥

उस दी कौम दे बड्डे लोकें गलाया जे हे नूह! अस तुगी खु'ल्ली गुमराही च पेदा दिक्खा करने आं ॥ 61 ॥

उसलै उस (नूह) नै गलाया जे हे मेरी कौम दे लोको! मेरे च ते कोई गुमराही आहली गल्ल नेई लभदी, बल्के अ'ऊं सारे ज्हांनें दे रब्ब पासेआ रसूल होइयै (बनियै) आए दा आं ॥ 62 ॥

ते तुसेंगी अपने रब्ब दे सनेह पजान्ना आं ते थुआड़ा भला चाह्ना आं ते अल्लाह दे दित्ते दे इलम कनै ओह किश जानानां जो तुस नेई जानदे ॥ 63 ॥

क्या तुस इस गल्ला पर तज्जब बुझदे ओ जे थुआड़े कश थुआड़े रब्ब पासेआ तुंदे चा गै इक आदमी पर इक नसीहत भरोचा कलाम नाजल होए दा ऐ तां जे ओह तुसेंगी सचेत करै ते तां जे तुस संयमी बनी जाओ ते ओहदे फल सरूप तुंदे पर रैहम कीता जा? ॥ 64 ॥

وَالْبَلَدَ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۗ وَالَّذِي خَبَثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا ۗ كَذَلِكَ نَصْرَفُ الْأَيْتِ لِقَوْمٍ يَشْكُرُونَ ﴿٥٩﴾

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنَ الْغَيْرِ ۗ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٦٠﴾

قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي صَلٍّ مُّبِينٍ ﴿٦١﴾

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِي صَلَّةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٢﴾

أَبْلَغُكُمْ رَسُولًا لِّبَنِي وَأَنْصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٣﴾

أَوْ عَجِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٦٤﴾

1. 'अपने रब्ब दे हुकम कनै' दा एह अर्थ नेई जे ओहदे आस्तै खास हुकम नाजल होंदा ऐ, बल्के अर्थ एह ऐ जे जिस चाल्ली दी शक्ति धरती च रक्खी दी होदी ऐ ओहदे मूजब गै ओह पैदावार दिंदो ऐ।

पर फही बी उनें उसी झूठलाया। इस आस्तै असें उसी ते ओहदे साथियें गी इक किरती राहें बचाई लैता ते असें उनें लोकें गी डोबी दित्ता जिनें साढ़ी आयतें दा इन्कार कीता हा, ओह इक अ'न्नी कौम दे लोक हे ॥ 65 ॥ (सूक 8/15)

ते यकीनन असें आद कौम दे लोकें पासै उंदे भ्राऽ हूद गी रसूल बनाइयै भेजेआ हा। उसलै उसनै गलाया जे हे मेरी कौम दे लोको! अल्लाह दी उपासना करो। ओहदे अलावा थुआड़ा दूआ कोई उपास्य नैई। तां केह तुस संयम अखत्यार नैई करदे ॥ 66 ॥

उसलै उस दी कौम दे इन्कारी सरदारें गलाया जे हे हूद! अस तुगी सच्चें गै बेवकूफी दी हालत च दिक्खा करने आं ते यकीनन अस तुगी झूठे लोकें चा समझने आं ॥ 67 ॥

उस (हूद) नै गलाया जे हे मेरी कौम दे लोको! मेरे च ते बे-वकूफी आहली कोई गल्ल नैई, पर (एह जरूर ऐ जे) अ'ऊं सारे लोकें दे रब्ब पासेआ रसूल आं ॥ 68 ॥

अ'ऊं अपने रब्ब दे सदेशे तुसेंगी पुजाना आं ते अ'ऊं तुंदा भला चाहने आहला ते अमानतदार आं ॥ 69 ॥

क्या तुस इस गल्ला पर तज्जब बुझदे ओ ते तुंदे चा गै इक शख्स पर थुआड़े रब्ब पासेआ नसीहत आहली गल्ल नाजल कीती ऐ तां जे ओह तुसें गी औने आहले अजाब शा सोहगा करै? ते चेता रक्खो जे जिसलै उस (अल्लाह) नै तुसेंगी नूह दी कौम दे बा'द ओहदा बारस बनाई दित्ता ते थुआड़े जुस्से गी बौहत मजबूत¹ बनाया हा। इस आस्तै अल्लाह दियें नैमतें गी याद करो तां जे तुस कामयाब होई जाओ। ॥ 70 ॥

فَكَذَّبُوهُ فَأَنْجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي
الْفُلِّ وَأَعْرَفْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ ۝

وَالِي عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا قَالَ يُقَوْمِ
اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ أَفَلَا
تَتَّقُونَ ۝

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ إِنَّا
لَنُرِيكَ فِي سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنَنظُنُّكَ
مِنَ الْكٰذِبِينَ ۝

قَالَ يُقَوْمِ لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ وَلَكِنِّي
رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝

أَبَلْغُكُمْ رَسُولِي وَإِنَّا لَكُم نَاصِحٌ
أَمِينٌ ۝

أَوْعَجِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ
عَلَى رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ ۖ وَاذْكُرُوا
إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِن بَعْدِ قَوْمِ نُوحٍ
وَزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَضْطَةً ۖ فَاذْكُرُوا
آلَاءَ اللَّهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

1. इस आयत दा दूआ अर्थ एह बी ऐ जे थुआड़ी संतान गी बधाया।

उनें गलाया जे हे हूद! क्या तूं साढ़े कश इस आस्तै आया ऐं जे अस अल्लाह (गी इक समझियै उस) दी उपासना करचै ते जिंदी उपासना साढ़े पूर्वज करदे होंदे हे उनेंगी छोड़ी देचै। इस आस्तै जिस गल्ला शा तूं असें गी डरान्ना ऐं, जे कर तूं सच्चा ऐं तां उसी लेई आ ॥ 71 ॥

उसनै गलाया जे थुआड़े रब्ब पासेआ तुंदे पर अज़ाब ते प्रकोप उतरी चुके दा ऐ। क्या तुस उनें नाएँ बाँरे मेरे कनै बैहस करदे ओ जेहके तुसें ते थुआड़े पूर्वजें अपने पासेआ रखबी लैते हे? अल्लाह नै ते उंदे आस्तै कोई सबूत नेई उतारेआ। इस आस्तै तुस बी (मेरे आस्तै) अज़ाब औने दा इंतजार करो, अ'ऊं बी थुआड़े कनै (तुंदे पर अज़ाब औने दा) इंतजार करदा रौहड। (पही दिखगे जे कोहदियां मेदां पूरियां होंदियां न) ॥ 72 ॥

आखर असें उसी ते ओहदे साथियें गी अपनी रैहमत राहें नजात बख्शी ते जिनें लोके साढ़ी आयतें दा इन्कार कीता हा ते मोमिनें च शामिल नथे होए उंदी जड़ तक कट्टी दिती ॥ 73 ॥
(रुकू 9/16)

ते असें समूद कौम पासै उंदे भ्राऽ सालेह गी रसूल बनाइयै भेजेआ हा। उसनै उनें गी गलाया जे हे मेरी कौम दे लोको! अल्लाह दी अबादत करो, ओहदे सिबा थुआड़ा कोई उपास्य नेई, थुआड़े कश थुआड़े रब्ब पासेआ इक खु'ल्ली दलील (युक्ति) आई चुकी दी ऐ। (ओह एह ऐ जे) एह अल्लाह दी कंटनी ऐ जेहकी थुआड़े आस्तै इक नशान दे रूपे च ऐ। इस आस्तै इसी छोड़ी देओ जे अल्लाह दी धरती च चरदी फिरै ते इसी कोई तकलीफ नेई पुजाओ बरना तुसें गी दर्दनाक अज़ाब पुज्जग ॥ 74 ॥

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَنَذْرًا
مَا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا فَاتَّبِعْنَا لَعَلَّ إِن
كُنْتُمْ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ۝۷۱

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَیْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ رِجْسٌ
وَغَضَبٌ ۖ أَتَجَادِلُونَنِي فِيْ اَسْمَاءِ
سَمِیْمُوْهَا اَنْتُمْ وَاَبَاؤُكُمْ مَا نَزَّلَ اللّٰهُ
بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۖ فَانظُرُوْا اِلٰی مَا كُمْ
مِّنَ الْمُنتَظِرِیْنَ ۝۷۲

فَاَنْجَبْنٰهُ وَاَلَّذِیْنَ مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا
وَاقْطَعْنَا دَاۤیْرَ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا
وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِیْنَ ۝۷۳

ج

وَ اِلٰی ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا قَالَ یٰقَوْمِ
اعْبُدُوْا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهِ غَیْرُهٗ ۚ قَدْ
جَاءَتْكُمْ بَیِّنَةٌ مِّنْ رَبِّكُمْ ۚ هٰذِهِ نٰقَةٌ
اللّٰهِ لَكُمْ اٰیَةٌ فَاذْرُوْهَا تَاْكُلْ فِیْ اَرْضِ اللّٰهِ
وَلَا تَسُوْهَا سِوٰیَ فَاِخْذُكُمْ عَذَابُ
الْیَمِّ ۝۷۴

ते याद करो जिसलै उस (अल्लाह) नै तुसेंगी आद कौम दे बा'द उंदा बारस बनाया हा ते धरती पर थुआड़ा इस चाल्ली ठकाना बनाया हा जे तुस ओहदे दब्बडें च किले बनांदे हे ते फ्हाडें गी खोतरियै घर बनांदे हे। इस आस्तै अल्लाह दियें नैमतें गी चेता करो ते धरती पर जानी-बुञ्जी फसाद नेई फलाओ ॥ 75 ॥

इस पर सालेह दी कौम चा उनें बड्डे-बड्डे लोकें जेहके घमंडी हे सालेह दी कौम चा ईमान आह्नुने आह्ले कमजोर लोकें गी गलाया जे क्या तुस सच्चें गै समझदे ओ जे सालेह अपने रब्ब पासेआ रसूल ऐ? उनें गलाया जे अस ते उस शिक्षा पर ईमान रक्खने आं जेहदे कनै ओह भेजेआ गेदा ऐ ॥ 76 ॥

इस पर ओह लोक जिनें घमंड शा कम्म लैता हा बोल्ले जे जिस शिक्षा पर तुस ईमान ल्याए दे ओ अस उसी नेई मनदे ॥ 77 ॥

पही उनें (जोश/गुस्से च आइयै) ऊंटनी¹ दियां खुच्चां (सदां) कट्टी दितियां ते अपने रब्ब दे आदेश दी ना-फरमानी कीती ते गलाया जे हे सालेह! जिस अजाब दे औने दी तूं असेंगी धमकी देआ करना जेकर तूं सच्चा रसूल ऐं तां उसी लेई आ ॥ 78 ॥

इस पर उनेंगी भुंचाल नै आई घेरेआ ते ओह अपने घरें च गोड्डें दे भार पेदे रेही गे² ॥ 79 ॥

وَأذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِنْ سُهُولِهَا قُصُورًا وَتَنْحِتُونَ الْجِبَالَ مِئِمَّةً فَأذْكُرُوا الْآيَةَ اللَّهُ وَلَا تَعْتَوُوا الْأَرْضَ مُفْسِدِينَ ﴿٧٥﴾

قَالَ الْمَلَأَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لِلَّذِينَ اسْتُضِعُوا لِمَنْ أَمَنَ مِنْهُمْ أَتَعْلَمُونَ أَنَّ صَلِحًا مُرْسَلٌ مِنْ رَبِّهِ ط قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلَ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿٧٦﴾

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِي آمَنَّا بِهِ كَفِرُونَ ﴿٧٧﴾

فَعَقَرُوا وَالتَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يُصَلِّحُ اتِّبَانًا بِمَا تَعَدْنَا إِن لَكُنَّ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٧٨﴾

فَأَحَدَتْهُمْ الرِّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جُثَمِينَ ﴿٧٩﴾

1. असल च उनें लोकें गी ऊंटनी कनै ते बैर नथा ते नां गै ऊंटनी दा बध करना इना बड्डा पाप हा, पर हजरत सालेह उस ऊंटनी पर सुआर होइयै देशे च प्रचार करदे होदे हे। उनें लोकें ऊंटनी गी इस आस्तै मारी दिता जे हजरत सालेह दे प्रचार दा कम्म खत्म होई जा ते ओह लोकें च बदनाम होई जा। इस करी उंदे पर अजाब आया।
2. अजाब दे बेलै ओह अपने गोड्डें दे भार प्रार्थना आस्तै झुकी गे, पर ऐसे मौके कीती दी प्रार्थना कम्म नेई औंदी। इस आस्तै उससै हालती च ओह मरी गे ते भुंचाल होने करी उंदे उप्पर मकान डिगगी पे।

उसलै सालेह अपनी कौम दे लोकें गी छोड़ियै दूए पासै गेआ उठी ते गलाया जे हे मेरी कौम दे लोको! में तुसेंगी अपने रब्ब दा सनेहा सनाई दिता हा ते थुआड़े भले दियां गल्लां तुसेंगी दस्सी दितियां हियां, पर तुस लोक भलाई चाहने आहले गी पसंद नेई करदे ॥ 80 ॥

ते असें लूत गी बी (उस दी कौम कश रसूल बनाइयै भेजेआ हा) । जिसलै उसने अपनी कौम दे लोकें गी गलाया जे क्या तुस ऐसी बे-हयाई करदे ओ जे तुंदे शा पैहलकी सारी कौमें चा कुसै नै बी ऐसा नेई कीता ॥ 81 ॥

क्या तुस जनानियें गी छोड़ियै मड़दें कश काम-बासना दे बिचार कनै आँदे ओ? बल्के (असल गल्ल एह ए जे) तुस हद्द शा अगें बधने आहली कौम ओ ॥ 82 ॥

इस पर उसदी कौम दे लोकें सिर्फ एह गलाया जे (हे लोको!) लूत ते ओहदे साथियें गी शैहरे चा कड़्ढी देओ। ओह ऐसे लोक न जेहके अपनी पवित्रता पर इतरांदे न ॥ 83 ॥

इस आस्तै असें उसी ते ओहदे परिवार गी बचाई लैता सिवाए ओहदी घरेआहली दे, की जे ओह पिच्छें रौहने आहलें चा होई गई ॥ 84 ॥

ते असें उंदे पर (भंचाल कारण पत्थरें दी) इक बरखा कीती। इस लेई दिक्ख जालमें दा नतीजा केह निकलेआ² ॥ 85 ॥ (रुकू 10/17)

فَمَوَّلِيْ عَنْهُمْ وَقَالَ يٰۤاَقْرَبُ لَقَدْ اَبْلَغْتُمْ
رِسَالَاتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُمْ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا
تُحِبُّوْنَ النَّصِيْحِيْنَ ۝۸۰

وَلَوْ طَآ اَذَقَالَ لِقَوْمِهٖ اَنَّا تُؤَنَ الْفَاحِشَةَ
مَا سَبَقْتُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝۸۱

اِنَّكُمْ تَتَّبِعُوْنَ الرَّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ
النِّسَاءِ ۗ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ۝۸۲

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖ اِلَّا اَنْ قَالُوْا
اٰخْرَجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۗ اِنَّهُمْ اَنَاسٌ
يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝۸۳

فَاَنْجَيْنَاهُ وَاَهْلَهٗ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۗ كَانَتْ مِنَ
الْغٰبِرِيْنَ ۝۸۴

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۗ فَانظُرْ كَيْفَ
كَانَ عٰقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝۸۵

1. अजाब आँने शा पैहलें हजरत लूत गी दस्सेआ गेआ हा जे उल्थुआं निकली जान, पर उंदियां दऊं धीयां उससें शैहरे च ब्होई दियां हियां। उंदी घरे-आहली नै खुदा दे हुकम गी नेई मन्नेआ ते धीयें दी ममता कारण पिच्छें रेहो गई ते अजाब च फसी गई।
2. हजरत लूत दी कौम दे देशें च इक भ्यंकर भंचाल आया हा। जेहदे कारण धरती दा तखता उलटी गेआ हा। भ्यंकर भंचालें च अक्सर ऐसा गै होंदा ऐ जे मिट्टी सैकड़े फुट्ट उप्पर जाइयै फही खल्ल डिगदी ऐ। आखो जे मिट्टी ते पत्थरें दी बरखा होआ दी होऐ। पुम्पयाई (Pompyai) च बी ऐसा गै होआ ते सन् 1905 ई० च कांगड़े च बी ऐसा गै होआ हा। थोड़ा समां बीतेआ जे काबुल दे उत्तर च इक बड्डा भंचाल आया ते ओहदे च बी ऐसा गै होआ।

ते असें मद्यन¹ पासै उंदे भ्राउ शूऐब गी बी (रसूल बनाइयै) भेजेआ। उसनै गलाया जे हे मेरी कौम! अल्लाह दी अबादत करो! ओहदे सिवा थुआड़ा कोई उपास्य नेई। थुआड़े रब्ब पासेआ इक खु 'ल्ला चमत्कार आई चुके दा ऐ (यानी आपू हज़रत शूऐब)। इस आस्तै चाही दा ऐ जे नाप ते तोल दमें पूरे-पूरे देआ करो ते लोकें गी उंदियां चीजां उंदे हक्क शा घट्ट नेई देआ करो ते देशै च ओहदे सुधार दे बा 'द फसाद नेई फलाओ। जेकर तुस मोमिन ओ तां एह गल्ल थुआड़े आस्तै बौहत बेहतर ऐ ॥ 86 ॥

ते हर रस्ते पर इस नीता कनै नेई ब 'वा करो जे जेहका अल्लाह पर ईमान ल्यावै उसी अल्लाह दे रस्ते शा डराओ ते रोको जां ओहदे च गलतियां पैदा करने दी कोशश करदे रोह ते याद करो जे जिसलै तुस थोढ़े हे तां खुदा नै तुसंगी बधाई दिता ते एह गल्ल सदा नजर च रक्खो जे फसाद फलाने आहलें दा केह अन्जाम होंदा रेहा ऐ? ॥ 87 ॥

ते जेकर तुंदे चा कोई गरोह ओहदे पर ईमान ल्याया ऐ जेहदे कनै अ'ऊं भेजेआ गोदा आं ते कोई गरोह नेहा है जेहका ईमान नेई ल्याया तां सबरै शा कम्म लैओ। इत्थें तक जे अल्लाह साढ़े (मोमिनं ते मुन्करें) च फैसला करी देऐ ते ऊऐ सारें शा बेहतर फैसला करने आह्ला ऐ ॥ 88 ॥

وَالۡیَٰ مَدَیۡنَ اٰخَاہُمۡ شَحِیۡبًا ۙ قَالِ یٰقَومِ
اَعۡبُدُو اللّٰہَ مَا لَکُمۡ مِنَ الۡیَغِیۡرِہٖ ۙ قَد
جَاۡءَ تَکۡمِ بَیِّنَۃً مِّنۡ رَبِّکُمۡ فَاَوۡفُوا
الکِیۡلَ وَالۡمِیزَانَ وَلَا تَمۡخَسُوا النَّاسَ
اَشِیَآءَہُمۡ وَلَا تَفۡسِدُوۡا فِی الْاَرۡضِ بَعۡدَ
اِصۡلَاحِہَا ۙ ذٰلِکُمۡ حَیۡرٌ لَّکُمۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ
مُّؤۡمِنِیۡنَ ﴿۸۶﴾

وَلَا تَقۡعُدُوۡا بِکُلِّ صِرَاطٍ تُوۡعَدُوۡنَ
وَتَصَدُّوۡنَ عَنِ سَبِیۡلِ اللّٰہِ مَنۡ اٰمَنَ بِہِ
وَتَبۡغُوۡنَہَا عِوَجًا ۙ وَاذۡکُرُوۡا اِذۡ کُنۡتُمۡ
قَلِیۡلًا فَکَثَرۡکُمۡ ۙ وَاَنْظُرُوۡا کَیۡفَ کَانَ
عَاقِبَۃُ الْمُفۡسِدِیۡنَ ﴿۸۷﴾

وَ اِنۡ کَانَ طَایۡفَۃً مِّنۡکُمۡ اٰمَنُوۡا بِالَّذِیۡ
اُرۡسِلۡتَ بِہِ ۙ وَ طَایۡفَۃً لَّمۡ یُؤۡمِنُوۡا
فَاَصۡبِرُوۡا حَتّٰی یَحۡکُمَ اللّٰہُ بَیۡنَنَا ۙ وَہُوَ
حَیۡرُ الْحَکِیۡمِیۡنَ ﴿۸۸﴾

1. तौरात शा पता लगदा ऐ ते हज़रत इब्राहीम दी हज़रत सार: ते हज़रत हाज़र: दे अलावा इक होर त्री धर्म पत्नी बी ही। हज़रत इब्राहीम दा इक पुत्र ओहदे गर्भ चा बी पैदा होए दा हा जेहदा नाँउ तुसें मद्यन रक्खेआ हा। ओहदी संतान फैलियै हिजाज़ दे उत्तर ते फ़लस्तीन दे दक्खनी हिस्से च बस्सी गई। हज़रत शूऐब दा अवतार उससै कौम च होआ हा ते उससै कौम दा शहर मद्यन हा जेहदे च ओह रेह हे। मद्यन शहरै दी अबादी ज्यादातर इस्माईली कौम दे लोकें दी ही। (इन्साइक्लोपीडिया आफ वर्तनीक शब्द मद्यन)।

ओहदी कौम चा जेहके लोक घमंडी हे उंदे चा बड्डे लोकें गलाया जे हे शुऐब! अस तुगी ते उनें लोकों गी अपने देशें चा कड्ढी देगे जेहके तरे पर ईमान ल्याए दे न जां तुसें दबारा साढ़े धर्म च परतोई औना होग। इस पर उसने गलाया जे भामें असेंगी एह गल्ल भैड़ी गै लगै (तां क्या पही बी कड्ढी देगे ओ) ॥ 89 ॥

(असल गल्ल एह ऐ जे) जेकर अस परतियै थुआड़े धर्म च आई बी जाचै जिसलै जे अल्लाह नै असेंगी इस शा छुटकारा देई दिते दा ऐ पही बी एह्दा एह मतलब नैई होग जे तुस सच्चे ओ बल्के अस अल्लाह पर झूठ घड़ने आहले होग, पर हून ईमान आहनने दे बा 'द अल्लाह दी इच्छा दे बगैर उस पैहले धर्म पासै परतियै औना साढ़े बस च नैई ऐ। साढ़ा रब्ब हर चीजै दा पूरा इलम रखदा ऐ। अस अल्लाह पर गै भरोसा रक्खने आं ते आखने आं जे हे साढ़े रब्ब! साढ़े ते साढ़ी कौम दे लोकें बश्कार सच्चा फैसला करी दे ते तूं फैसला करने आहलें चा सारें शा बेहतर ऐ ॥ 90 ॥

ते जेहके लोक उस (शुऐब) दी कौम चा इन्कारी हे उंदे सरदारें गलाया जे जेकर तुस शुऐब दे रस्ते पर चलगे ओ तां तुस नुकसान पाने आहलें चा होई जागे ओ ॥ 91 ॥

इस आस्तै उनेंगी इक भंचाल नै पकड़ी लैता ते ओह अपने घरें च गोड्डें भार डिगने दी हालत च पेदे रेह ॥ 92 ॥

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لِنُخْرِجَنَّكَ يَشْعِيبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَا أَوْ لَتَعُوذُنَّ فِي مِلَّتِنَا قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كُرْهَيْنَ ۝

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُمْ بَعْدَ إِذْ نَجَّيْنَا اللَّهُ مِنْهَا وَمَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَعُودَ فِيهَا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ۝

وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لِيَنَّاتَّبَعْتُمْ شَعِيبًا أَنْتُمْ إِذَا لُحْسِرُونَ ۝

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جُثَمِينَ ۝

1. कुसें देशै दी जुलम करने आहली बड्ढी कौम दे लोक घमंड च आइयै निक्की कौमें गी सदा नेहियां गै धर्मकियां दिंदे रौहदे न, हालांके उनेंगी इस गल्ला दा बी पता होंदा ऐ, जे जेकर असें उनें गी देशै चा कड्ढी दिता तां उनेंगी कुतै बी रौहने तै थाहर नैई ध्योग। बदेशी सरकारां उनेंगी अपने देशै च नैई आँन देहन।

ओह लोक जिनें शुऐब गी झुठलाया हा ऐसे तबाह होए आखो जे ओह अपने देशें च बस्से¹ गै नथे। ओह लोक जिनें शुऐब गी झुठलाया हा घाटा खाने आहलें चा होई गे ॥ 93 ॥

इस पर ओह (शुऐब) उंदै शा पिट्ट फेरियै उठी गे ते एह आखदे गे जे हे मेरी कौम दे लोको! में अपने रब्ब दे सनेह तुंदे तक पजाई दिते हे ते तुसेंगी नसीहत करी दिती ही। इस आस्तै हून अ'ऊं मुन्कर कौम पर किस चाल्ली अफसोस जाहर करां ॥ 94 ॥ (रुकू 11/1)

ते असें कुसै शैहै च कोई रसूल नेई भेजेआ (पर ऐसा होआ जे) असें ओहदे च बस्सने आहलें गी सख्ती ते मसीबत कनै पकड़ी लैता तां जे ओह नरम-नीमते होन ते गिड़ाइण ॥ 95 ॥

फही असें उंदे कश्ट-कलेशें गी सुखे च बदली दिता इत्थें तक जे जिसलै ओह त्रक्की करी गे ते गलान लगे जे ऐसे कश्ट-कलेश ते सुख साढ़े पुरखें पर बी औंदे होंदे हे (जेकर साढ़े पर आए तां कोई नमीं गल्ल नेई)। इस आस्तै असें उनेंगी अचानक अजाब कनै पकड़ी लैता ते ओह नथे समझदे जे ऐसा की होआ ॥ 96 ॥

ते जेकर उनें बरितयें दे नवासी ईमान ल्यौंदे ते संयमी बनदे तां अस गासै ते धरती थमां उंदे आस्तै बरकतें दे दरोआजे खोहली दिंदे, पर उनें (नबियें गी) झुठलाया। इस आस्तै असें उनेंगी उंदे कर्मै कारण अजाब च पकड़ी लैता ॥ 97 ॥

الَّذِينَ كَذَّبُوا شَعِيْبًا كَانَ لَّمْ يَعْنُوا فِيهَا ۗ الَّذِينَ كَذَّبُوا شَعِيْبًا كَانُوا هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٣﴾

فَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلَتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۗ فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ۗ ﴿٩٤﴾

وَمَا اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ اِلَّا اٰخِذًا اَهْلَهَا بِاَبْسَآءٍ وَالضَّرَآءِ لَعَلَّهُمْ يَضُرَّعُوْنَ ﴿٩٥﴾

ثُمَّ بَدَلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّى عَفَوْا وَقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَآءُ وَالسَّرَآءُ فَاٰخِذْنَهُمْ بِعُنْتَةٍ وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩٦﴾

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقَرْيٰ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاٰخِذْنَهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٧﴾

1 यानी बड़्डी कौम दे लोक अपने घमंड च निक्की कौम दे लोकें गी अपने देशें चा कड़्डी देना चांहदे न, हालांके बदेशें च उनें लोकें दा कोई ठकाना नेई होदा तां अल्लाह बी उस बड़्डी कौम दे लोकें गी अपने पैदा कीते दे देशें चा कड़्डी दिंदा ऐ यानी उस कौम गी तबाह करी दिंदा ऐ।

क्या इनें शैहरें¹ च रौहने आहले (यानी मक्का ते ओहदे आसे-पासे दे लोक) इस गल्ला शा अन-डर होई गे न जे साढ़ा अजाब उंदे पर रातीं बेलै आई जा जिसलै जे ओह सौआ करदे होडन? ॥ 98 ॥

जां इनें शैहरें दे बासी इस गल्ला शा अन-डर होई गे न जे साढ़ा अजाब उंदे पर दपैहरां बेलै आई जा जिसलै जे ओह खेढा² दे होडन ॥ 99 ॥

क्या ओह अल्लाह दे उपाऽ शा सुरक्खत होई गे न? जेकर ऐसा ऐ तां चेता रक्खन जे घाटा खाने आहली कौम दे सिवा कोई बी कौम अल्लाह दे उपाऽ शा अनजान नेई होंदी ॥ 100 ॥ (रुकू 12/2)

क्या उनें लोकें गी जेहके धरती दे मूल बासियें दे बा'द ओहदे बारस बने, इस गल्ला शा समझ नेई आई जे जेकर अस-चाहचै तां उंदे पापें कारण उंदे पर बी अजाब नाजल करी सकने आं ते उंदे दिलें पर मोहर बी लाई सकने आं जेहदे कारण ओह हदायत सरबंधी गल्लें गी सुनी नेई सकडन ॥ 101 ॥

एह नेहियां बस्तियां न जिंदे समाचार अस तुगी सुनाऽ करने आं ते उंदे कश उंदे चा गै रसूल नशान लेइयै आए हे, पर ओह (एहदे पर बी) ईमान नेई ल्याए, की जे ओह पैहलें गै इन्कार करी चुके दे हे। अल्लाह इसै चाल्ली मुन्करें दे दिलें पर मोहर लांदा ऐ ॥ 102 ॥

أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا
بَيِّنَاتًا وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿٩٨﴾

أَوَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا
ضُحًىٰ وَهُمْ يَلْعَبُونَ ﴿٩٩﴾

أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ ۚ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ
إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٠٠﴾

أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِنْ
بَعْدِ أَهْلِهَا أَن لَّو شَاءَ أَصْبَلْنَاهُمْ
بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ
لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠١﴾

تِلْكَ الْقُرَىٰ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنبَاءِهَا
وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِنْهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۚ فَمَا
كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِنْ قَبْلُ ۗ
كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ
الْكَافِرِينَ ﴿١٠٢﴾

1. हजरत शुऐब दे शैहरें दा नतीजा दिक्खियै फही बी क्या मक्का ते उसदे आसे-पासे दे लोक नसीहत हासल नेई करदे?
2. भारत च दपैहरां बेलै लोक बजारें ते पसारां रेहियै चौसर बगैरा खेढदे न। इयां सेही होंदा ऐ जे ओह कौम बी बपार करदी ही। उंदे च बी नेहा गै कोई रवाज हा।

ते असें उंदे च मते-हारें गी अपनी प्रतिज्ञा (एहेद) दा पालन करने आहला नेई दिक्खेआ बल्के उंदे चा मते-हारें गी प्रतिज्ञा भंग करने आहला गै पाया ॥ 103 ॥

फही असें उनें नबियें दे बा'द मूसा गी अपने नशान देइयै फिरऔन ते उसदे सरदारें कश भेजेआ तां उनें, उंदे (नशानें) कनै जुलम आहला बरताऽ कीता इस आस्तै तूं दिक्ख जे फसाद फलाने आहलें दा अन्जाम केह होआ? ॥ 104 ॥

ते मूसा नै फिरऔन गी गलाया जे अ'ऊं सारे ज्हानें दे रब्ब पासेआ रसूल आं ॥ 105 ॥

ते इस गल्ला दा हक्कदार आं जे अल्लाह दे बारे च सच्ची गल्ला दे सिवा होर कश नेई आखां। अ'ऊं थुआड़े कश थुआड़े रब्ब पासेआ इक खु'ल्ला नशान लेइयै आया आं। इस आस्तै बनी इस्राईल गी मेरे कनै भेजी दे ॥ 106 ॥

उस (फिरऔन) नै गलाया जे जेकर तूं कोई चमत्कार लेइयै आया ऐं तां तूं स्हेई मैहनें च सच्चा ऐं, ते तूं उसी जाहर कर ॥ 107 ॥

इस पर उस (मूसा) नै अपना सोटा (धरती पर) सुट्टी दिता ते अचानक ओह जाहरा-बाहरा इक सप्प लब्बन लगी पेआ ॥ 108 ॥

फही उसनै अपना हत्थ बाहर कडढेआ तां ओह दिक्खने आहलें गी भलेआं सफेद (चिट्टा) लब्बन लगा ॥ 109 ॥ (रुकू 13/3)

इस पर फिरऔन दी कौम दे सरदारें गलाया जे एह कोई बौहत बड्डा घोरी (नामी) जादूंगिर ऐ ॥ 110 ॥

وَمَا وَجَدْنَا إِلَّا كَثْرَهُمْ مِنْ عَهْدِنَا وَإِنْ
وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَسْقِينَ ﴿١٠٣﴾

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ
فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَظَلَمُوا بِهَا فَأَنْظُرْ
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٠٤﴾

وَقَالَ مُوسَىٰ يُفْرِعُونَ إِنِّي رَسُولٌ مِنْ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٥﴾

حَقِيقٌ عَلَىٰ أَنْ لَا أَقُولَ عَلَى اللَّهِ إِلَّا
الْحَقَّ ۖ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَاتٍ مِنْ رَبِّكُمْ
فَأَرْسِلْ مَعِيَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٠٦﴾

قَالَ إِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِآيَةٍ فَأْتِ بِهَا إِنْ
كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿١٠٧﴾

فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿١٠٨﴾

وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بِيضَاءُ لِلنّٰظِرِينَ ﴿١٠٩﴾

قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ إِنَّ هَذَا
لَسِحْرٌ عَلِيمٌ ﴿١١٠﴾

जो तुसेंगी थुआड़े देश थमां बाहर कड्डना चांह्दा ऐ (इस आस्तै एह्दे बारे च) तुस केह् सलाह् दिंदे ओ।
॥ 111 ॥

इस पर सरदारें गलाया जे मूसा ते उस दे भ्रा5 गी किश ढेल देन ते सारे शैहरें च ढंडोरची भेजी देन ॥ 112 ॥

तां जे ओह् थुआड़े कश सारे जानकार जादूगरें गी लेई औन ॥ 113 ॥

ते (इस कोशश दे नतीजे च) सारे जादूगर फिरऔन कश किट्टे होई गे ते उनें गलाया जे जेकर अस गालिब रेह् तां केह् असेंगी किश इनाम बी थ्होगे? ॥ 114 ॥

इस पर उस (फिरऔन) नै गलाया की नेई ते उस दे अलावा तुस मेरे पसंदीदा ते करीबी बी होई जागे ओ ॥ 115 ॥

उनें गलाया हे मूसा! क्या तूं पैहलें सुटगा जां अस (पैहलें) सुट्टने दी जु'रत करचै?
॥ 116 ॥

मूसा नै गलाया जे तुस पैहलें सुट्टो। पही जिसलै उनें अपने सोटे ते रस्सियां सुट्टी दित्ते तां लोकें दी अक्खीं पर जादू करी दित्ता (यानी लोकें दी नजर ब'न्नी दित्ती) ते उनेंगी डराई दित्ता ते उनें लोकें दे सामनै इक बौहत बड्डा जादू पेश कीता
॥ 117 ॥

ते असें मूसा पर वही नाज़ल कीती जे तूं अपना सोटा सुट्टी दे (जिसलै उसनै ऐसा

يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ ۚ
فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿١١١﴾

قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي
الْمَدَائِنِ حُشِرِينَ ﴿١١٢﴾

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سِحْرِ عَلِيمٍ ﴿١١٣﴾

وَجَاءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوا إِنَّ لَنَا
لَأَجْرًا إِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿١١٤﴾

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُتَرَبِّينَ ﴿١١٥﴾

قَالُوا يَا مُوسَى إِمَّا أَنْ تُلْقَى وَإِمَّا أَنْ
تَكُونَ نَحْنُ الْمُلْقِينَ ﴿١١٦﴾

قَالَ أَلْقُوا ۚ فَلَمَّا أَلْقَوْا سَحَرُوا أَعْيُنَ
النَّاسِ وَاسْتَهْبَهُهُمْ وَجَاءَ وَبِسِحْرِ
عَظِيمٍ ﴿١١٧﴾

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۚ

कीता) तां अचानक इयां सेही होआ जे ओह जादूगरेँ दे फरेब गी नींगलदा¹ जा करदा ऐ ॥ 118 ॥

इस आस्तै सचाई जाहूर होई गई ते जादूगरेँ जे किश कीता हा ओह बरबाद होई गेआ ॥ 119 ॥

उसलै ओह (जादूगर) हारी गे ते अपमानत होई गे ॥ 120 ॥

ते ओह (जादूगर) फरमांबरदारी करदे होई सजदे च डिग्गी गे ॥ 121 ॥

ते गलान लगे जे अस सारे लोकें (जहान्नें) दे रब्ब पर ईमान ल्यौने आं ॥ 122 ॥

जेहका मूसा ते हारून दा रब्ब ऐ ॥ 123 ॥

फिरऔन नै गलाया जे बया तुस इस पर ईमान लेई आए, इस शा पैहलें जे अ'ऊं तुसेंगी अजाजत दिदा? (इयां सेही होंदा ऐ जे) एह इक तदबीर (योजना) ऐ, जेहकी तुसें सारे मिलियै शैहुरै च बनाई ऐ, तां जे ओहदे चा ओहदे बशिंदें गी कइद्दी लाओ। इस आस्तै इस दा नतीजा तौले गै तुसेंगी लब्बी जाग ॥ 124 ॥

अ'ऊं थुआड़े हलथें ते पैरेँ गी अपनी नाफरमानी² कारण कट्टी देहू पही तुसें सारेँ गी फांसी (सलीब) पर लटकाई देगा ॥ 125 ॥

उनेँ गलाया (पही केह होग) अस ते अपने रब्ब आहले पासै गै परतियै जाने आहले आं ॥ 126 ॥

فَإِذَا هِيَ تَأْتِقُفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿١١٨﴾

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٩﴾

فَعَلِبُوا هَمَلِكَ وَانْقَلَبُوا صُغِيرِينَ ﴿١٢٠﴾

وَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَجِيدِينَ ﴿١٢١﴾

قَالُوا أَمْ آيَاتُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٢٢﴾

رَبِّ مُوسَى وَهَارُونَ ﴿١٢٣﴾

قَالَ فِرْعَوْنُ أَمْ تُصَبِّهُ قَبْلَ أَنْ أَدْنَى لَكُمْ إِنَّ هَذَا الْمَكْرُ مَكْرٌ تَمُوهُ فِي الْمَدِينَةِ يُخْرِجُوا مِنْهَا أَهْلَهَا فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿١٢٤﴾

لَا قِطْعَانَ أَيْدِيكُمْ وَأَرْجُلِكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَا صَلْبَتِكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٢٥﴾

قَالُوا إِنَّا إِلَى رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ﴿١٢٦﴾

1. भाव एह ऐ जे उंदा प्रभाव तबाह करदी जंदी ही। असल गल्ल एह ऐ जे उनेँ अपनी रसियेँ दे अंदर लोहे दे पेच छपाली रक्खे दे हे ते सोटेँ च पारा भरे दा हा। जेहदे करी ओह हलदे-झुलदे हे जियां अज्ज-कल्ल यूरोप दे खडौने होंदे न। मूसा नै जिसलै उंदे पर अपना सोटा सुट्टेआ तां पेच टुट्टियै खिल्लरी गे ते पारा निकली गेआ जेहदे कर्नै सारा फरेब खु'ल्लो गेआ। इसी मुहावरे च नींगलना गलाया गेदा ऐ।
2. किश विद्वानें मूल शब्द 'खिलाफ' दा अर्थ 'खब्बा ते सजा' हलथ जां उलट दिशाएँ दे हलथ-पैर दस्से दा ऐ, पर इस दा अर्थ नाफरमानी दी ब'जा बी होंदा ऐ ते इय्यै अर्थ असेँ लैते दा ऐ।

ते तू साढ़े कनै सिर्फ़ इस गल्ला पर रोहें ऐं
जे अस अपने रब्ब दे नशानें पर ईमान लेई
आए आं, जिसलै जे ओह साढ़े कश आई
चुके दे न। (ते अस प्रार्थना करने आं जे) हे
साढ़े रब्ब! साढ़े पर सबर नाज़ल कर ते
असेंगी मुसलमान होने दी हालत च मौत दे
॥ 127 ॥ (रुकू 14/4)

ते फ़िरऔन दी कौम चा किश सरदारें गलाया
जे क्या तोह मूसा ते उसदी कौम दे लोकें गी
खुल्ला छोड़ी दिता ऐ जे साढ़े देशें च फ़साद
फ़लान ते तुगी ते तेरे उपास्यें गी छोड़ी देन।
उस (फ़िरऔन) नै गलाया जे अस ज़रूर उंदे
पुत्तरे दी हत्या करगे ते उंदी जनानियें गी जींदे
रखगे ते अस उंदे पर गालिब आं ॥ 128 ॥

इस पर मूसा नै अपनी कौम दे लोकें गी
गलाया जे अल्लाह शा मदद मंगदे र'वो ते
सबर शा कम्म लैओ। देश ते अल्लाह दा ऐ।
ओह अपने बंदें चा जिसी चांहदा ऐ, ओहदा
बारस बनाई दिंदा ऐ ते चंगा अन्जाम संयमियें
दा गै होंदा ऐ ॥ 129 ॥

ओह (मूसा दी कौम दे लोक) बोल्ले जे
तेरे औने शा पैहलें बी असेंगी कश्ट दिता
जंदा हा ते तू जदू दा साढ़े श आए दा ऐं
उसलै शा बी असेंगी कश्ट दिता जंदा ऐ।
उस (मूसा) नै परते च गलाया जे ममकन
ऐ जे थुआड़ा रब्ब थुआड़े दुश्मन गी तबाह
करी देऐ ते देशें च तुसेंगी अपना बारस
बनाई देऐ ते फ़ही दिक्खे जे तुस कनेह् कर्म
करदे ओ ॥ 130 ॥ (रुकू 15/5)

ते असें फ़िरऔन दी कौम दे लोकें गी (मसीबत

وَمَا تَنْقُمُ مِنَّا إِلَّا أَنْ أَمَّنَّا بِإِلْتِ رَبِّنَا لَمَّا
جَاءَنَا رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوْفِقَنَا
مُسْلِمِينَ ﴿١٢٧﴾

وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ أَتَدْرُ
مُوسَى وَقَوْمَهُ لِيُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ
وَيَذَرَكُ وَالْهَتَكَ قَالَ سَنُقَتِّلُ
أَبْنَاءَهُمْ وَنَسْتَحْيِ نِسَاءَهُمْ وَإِنَّا
فَوْقَهُمْ فُوهْرُونَ ﴿١٢٨﴾

قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللَّهِ
وَاصْبِرُوا إِنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ يُورِثُهَا
مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَالْعَاقِبَةُ
لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٢٩﴾

قَالُوا أَوَؤدِنَا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَأْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ
مَا جِئْتَنَا قَالَ عَلَى رَبُّكَ أَنْ يُهْلِكَ
عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْأَرْضِ
فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ﴿١٣٠﴾

وَقَدْ أَخَذْنَا آلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِينَ

आहले) साल्लें ते फलें दी पैदावार च कमी (ते संतान दे मरी जाने) कन्नै पकड़ी लैता तां जे ओह नसीहत हासल करन ॥ 131 ॥

इस आस्तै जिसलै उंदे पर खुशहाली दा समां औंदा तां ओह गलांदे जे एह ते साद्दा हक्क ऐ ते जेकर उंदे पर मसीबत दा समां औंदा तां उसी मूसा ते ओहदे साथियें दी न्हूसत दा फल समझदे हे। खबरदार! उंदी न्हूसत (दा समान) अल्लाह कश सुरक्खत ऐ, पर उंदे चा मते-हारे लोक नेई जानदे ॥ 132 ॥

ते उनें¹ लोकें गलाया जे तूं जिसलै बी कोई चमत्कार (नशान) साढ़े कश ल्यौगा तां जे तूं ओहदे राहें असेंगी धोखा देई सकें तां अस तेरे पर कदें बी ईमान नेई ल्यौगे ॥ 133 ॥

उसलै असें उंदे पर तफान, त्रिडिडयां, जूआं, मीनक ते लहु² भेजेआ। एह बक्ख-बक्ख नशान हे। पही बी उनें घमंड कीता ते ओह मुलजम कौम बनी गे ॥ 134 ॥

ते जिसलै (कदें बी) उंदे पर अजाब नाजल होआ तां ओह करलाई उठदे जे हे मूसा! अपने रब्ब गी ओह सारे बा'यदे चेता कराइयै पुकार, जेहके उसनै तेरे कन्नै कीते दे न जेकर तोह साढ़े परा अजाब दूर करी दिता तां अस तेरे पर ईमान ल्यौगे ते इस्त्राईल दी संतान गी तेरे कन्नै भेजी देगे ॥ 135 ॥

وَنَقِصِّ مِنَ الشَّمْرِ لَعَلَّهُمْ
يَذَكَّرُونَ ﴿٣١﴾

فَإِذَا جَاءَهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَنْ نَأْتِيَنَّهُمْ
وَأَنْ تَصِبَهُمْ سَيِّئَةٌ يَنْظُرُوا بِمُوسَى
وَمَنْ مَعَهُ ۗ أَلَا إِنَّمَا طَرِفْتُمْ عِنْدَ اللَّهِ
وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٢﴾

وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِيَنَا بِهِ مِنْ آيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا
فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٣٣﴾

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ
وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالِدَّمَ ۗ آيَاتٍ
مُّفَصَّلَاتٍ ۗ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا
مُّجْرِمِينَ ﴿٣٤﴾

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا لِمُوسَى
ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدْتَ عِنْدَكَ ۗ لَئِنْ
كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ بِكَ
وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٣٥﴾

1. फिरऔन दी कौम दे लोकें पासै संकेत ऐ।

2. इनें खुदाई कैहरें दा जिकर बाइबिल च बी औंदा ऐ। दिक्खो 'दरेआ लहु बनी गेआ' (निर्गमन भाग 7 आयत 20-21) मीनक ते जूआं (निर्गमन, भाग-8) तफान यानी ऐहन बगैरा (ऊरे भाग 9) त्रिडिडयां (ऊरे भाग 10)

पर जिसलै असें उंदे शा उस बेलै तगरै तै अजाब गी टाली दिता जेहका उंदे आस्तै निश्चत हा तां ओह तौले गै बा'यदा खलाफी करन लगी पे ॥ 136 ॥

इस आस्तै असें उंदे शा (उंदी शारतें गी) बदली लैता ते उनेंगी समुंदरे च गरक¹ करी दिता, की जे ओह साढ़ी आयतें गी झुठलांदे होंदे हे ते उंदे शा बे-परबाही करदे हे ॥ 137 ॥

ते असें उस कौम² गी जिसी कमजोर समझेआ जंदा हा उस देशै³ दे पूरबी ते पच्छमी हिस्सें दा बी बारस बनाई दिता जिसी असें बरकत दिती दी ही ते रब्ब दा बनी इस्राईल कनै कीता गेदा अच्छे शा अच्छा कलाम (बा'यदा) पूरा होई गेआ इस कारण जे उनें (अत्याचार कीते जाने पर) सबर शा कम्म लैता ते फिरऔन ते उस दी कौम दे लोक जे किश बनाऽ करदे हे ते जेहकियां ओह उच्ची-उच्ची अमारतां खडेरा करदे हे उनें सारियें गी असें ढाई (तबाह करी) दिता ॥ 138 ॥

ते असें बनी इस्राईल गी समुंदरे दे पार करी दिता इत्थें तक जे ओह (चलदे-चलदे) इक ऐसी कौम⁴ दे लोकें कश पुज्जे जेहके अपनी मूरतियें दी उपासना च मस्त हे उसलै उनें गलाया जे हे मूसा! साढ़े आस्तै बी किश नेह गै उपास्य बनाई दे जनेह जे इनें लोकें दे उपास्य न। मूसा नै गलाया जे तुस ते इक मूरख कौम ओ ॥ 139 ॥

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الرِّجْزَ إِلَىٰ آجَلٍ هُم بِلُغْوِهِ إِذَا هُمْ يَنْكُتُونَ ﴿١٣٦﴾

فَأَنقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ بِآيَاتِهِمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ ﴿١٣٧﴾

وَأَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضْعَفُونَ مَشَارِقَ الْأَرْضِ وَمَعَارِبَهَا الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنَىٰ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ بِمَا صَبَرُوا وَدَمَرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهُ وَمَا كَانُوا يَعْرُسُونَ ﴿١٣٨﴾

وَجُورَنَا بِبَنِي إِسْرَائِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَوْا عَلَىٰ قَوْمٍ يَعْكُفُونَ عَلَىٰ أَصْنَامِهِمْ ۗ قَالُوا يَا مُوسَىٰ اجْعَلْ لَنَا إِلَهًا كَمَا لَهُمْ آلِهَةٌ ۗ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿١٣٩﴾

1. यानी जिसलै ओह हजरत मूसा गी पकड़ने आस्तै समुंदरे पासै गे हे।
2. यानी हजरत मूसा दी कौम।
3. यानी फ़लस्तीन।
4. ओह फ़लस्तीन दे लोक हे जेहके उसलै मूरती पूजक हे ते ममकन ऐ वतु इस्राईल दी शाखा चा आद जाति दे लोक हे।

जिस कम्मा च ओह् लाग्गे दे न ओह् ते यकीनन तबाह् होने आहला ऐ ते जे किश ओह् करा करदे न सब बेकार चली जाग ॥ 140 ॥

पही गलाया जे क्या अ'ऊं थुआड़े आस्तै अल्लाह दे सिवा कोई होर उपास्य दूंडां! हालांके उसनै तुसैंगी सारे ज्हांन पर प्रधानता दिती दी ऐ ॥ 141 ॥

ते (याद करो) जिसलै असें तुसैंगी फ़िरऔन दे लोकें शा छुटकारा दुआया हा जेहके तुसैंगी बेहद दुखदाई अजाब दिंदे हे। थुआड़े पुत्तरें गी कतल करदे हे ते थुआड़ी जनानियें गी जीदा रखदे हे ते एहदे च थुआड़े रब्ब पासेआ बौहत बड्डा इम्तिहान¹ हा ॥ 142 ॥ (रुकू 16/6)

ते असें² मूसा कनै त्रीह् रातीं दा बा'यदा कीता, पही उनें (त्रीह् रातीं) गी दस्स होर मलाइयै पूरा चालीं करी दिता। इस चाल्ली उसदे रब्ब दा निश्चत बा'यदा चाली रातीं दे रूपै च पूरा होआ ते मूसा नै अपने भ्राऽ हारून गी गलाया जे (मेरे बा'द) मेरी कौम च मेरी नमाइंदगी कर ते उंदे सुधार गी सामनै रक्ख ते फसाद फलाने आहलें दे रस्तै पर नेई चल ॥ 143 ॥

ते जिसलै मूसा साढ़े निश्चत समे मताबक निश्चत थाहरै पर आई गेआ ते ओहदे रब्ब नै ओहदे कनै कलाम कीता ते उस (मूसा)

إِنَّ هَؤُلَاءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيهِ وَبِطِلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤٠﴾

قَالَ أَعْبَرَ اللَّهُ أَبْغَيْكُمْ إِلَهًا وَهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٤١﴾

وَإِذْ أَنْجَيْنَاكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ يَنْتَلُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذُرِّيَّتِكُمْ بَلَاءٌ مِّنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿١٤٢﴾

وَوَعَدْنَا مُوسَى ثَلَاثِينَ لَيْلَةً وَأَتَمَمْنَاهَا بِعَشْرِ فَنَزَلْنَا بِمِيقَاتِ رَبِّهِ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً وَقَالَ مُوسَى لِأَخِيهِ هَارُونَ اخْلُفْنِي فِي قَوْمِي وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٤٣﴾

وَلَمَّا جَاءَ مُوسَى لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ قَالَ رَبِّ أَرِنِي إِلَيْكَ أَنْظُرْ إِلَيْكَ قَالَ نَرُ

1. मूल शब्द 'बलाउन' दा अर्थ इम्तिहान ते इनाम जां उपकार दौनीं चाल्लीं दा ऐ। इत्थें अर्थ एह ऐ जे इस इम्तिहान दे बा'द इक बौहत बड्डा इनाम उनैंगी हासल होने आहला हा।
2. इस थाहरा पर जेहकियां घटनां ब्यान कीतियां गेदियां न ओह जुगराफिये दी तरतीब दे सहाबें नेई होई दियां बल्के इब्रत ते नसीहत गी सामनै रक्खियै कीतियां गेदियां न ते इय्ये पवितर कुर'आन दा असल मकसद ऐ धामें ओह समें ते जुगराफिये दी तरतीब दे सहाबें अगड़-पिच्छड़ होई गेदियां न।

नै गलाया जे हे मेरे रब्ब! (अपना आप) मिगी दस्स तां जे अ'ऊं तेरे दर्शन करां। उसनै परते च गलाया जे तू कदें बी मिगी नेई दिक्खी सकगा, पर फ्हाड़ै आहली बक्खी दिक्ख। जेकर ओह अपने थाहरा पर कायम रेहा तां तू मेरे दर्शन करी लैगा। पही जिसलै उस (मूसा) दे रब्ब नै फ्हाड़ै पर अपना जलबा दस्सेआ (यानी चमत्कार दस्सेआ) तां उसी टुकड़े-टुकड़े करी दिता ते मूसा बे-होश (बसमोह) होइयै डिग्गी पेआ। ओहदे बा'द जिसलै उसी होश आई तां उसनै गलाया जे (हे रब्ब!) तू हर ऐब शा पवित्तर ऐं। अ'ऊं तेरे अगें गै झुकनां ते अ'ऊं (इस युग च) ईमान आहनने आहलें चा सारें शा पैहला मोमिन आं ॥ 144 ॥

अल्लाह नै गलाया जे हे मूसा! मैं तुगी इस युग दे मानव समाज पर पैगंबरी ते अपने कलाम राहें प्रधानता दिती ऐ। इस आस्तै जे किश मैं तुगी प्रदान कीता ऐ उसी घुट्टियै पकड़ी लै ते शुकर करने आहले बंदें च शामिल होई जा ॥ 145 ॥

ते असें ओहदे आस्तै तखतियें पर अपने ऐसे हुकम लिखे जिंदे च हर चाल्ली दी नसीहत ही ते उंदे च (उस समें आस्तै) हर जरूरी चीजा दा ब्यौरा बी हा (ते पही असें उसी गलाया जे) इनें हुकमों गी कस्सियै पकड़ी लै ते अपनी कौम गी बी गलाई दे जे ओहदे उत्तम हिस्सें गी घुट्टियै पकड़ी लैन। अ'ऊं तुगी तौले गै बदकारें दा घर दसगा¹ ॥ 146 ॥

अ'ऊं तौले गै ऐसे लोकें गी अपने नशानें शा बंचत करियै दूर करी देगा जिनें व्यर्थ गै इस

تَرَانِي وَلَكِنْ أَنْظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ
اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ تَرَانِي فَلَمَّا
تَجَلَّى رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَخَرَّ
مُوسَى صَعِقًا فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ
سُبْحَانَكَ تُبْتُ إِلَيْكَ وَأَنَا أَوَّلُ
الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٤٤﴾

قَالَ يُوسَىٰ إِنِّي اضْطَفَيْتُكَ عَلَى
النَّاسِ بِرِسَالَتِي وَبِكَلَامِي ۖ فَخَدُّ
مَا آتَيْتُكَ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿١٤٥﴾

وَكَتَبْنَا لَهُ فِي الْأَنْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ
مَوْعِظَةً وَتَفْصِيلًا لِكُلِّ شَيْءٍ ۖ فَخَذَهَا
بِقُوَّةٍ وَأَمَرَ قَوْمَكِ يَا خَدُّوْا بِأَحْسَنِهَا
سَأُورِيكُمْ دَارَ الْفَاسِقِينَ ﴿١٤٦﴾

سَأَصْرِفُ عَنْ آيَاتِيَ الَّذِينَ يَتَكَبَّرُونَ فِي

1. यानी बदकारियें गी स'जा देइयें उंदे अन्जाम गी प्रकट करी देगा।

संसार च घमंड कीता ऐ ते जेकर ओह हर (ममकन) नशान बी दिक्खी लैन तां बी ओह उनें आयतें पर ईमान नेई ल्यौडन ते जेकर ओह सिद्धा रस्ता दिक्खी बी लैन तां बी उसी कदें बी नेई अपनाडन ते जेकर ओह गुमराही दा रस्ता दिक्खन तां उसी अपनाई लैडन। एहदी ब'जा एह ऐ जे उनें साढ़े हुकमें गी झुठलाया ऐ ते उंदे कनै बे-परबाही करा करदे न ॥ 147 ॥

ते ओह लोक जिनें साढ़ी आयतें गी ते मरने दे बा'द मुलाकात गी झुठलाया ऐ उंदे सारे कर्म जाया होई गे न। ओह सिर्फ अपने कर्म दा बदला पाडन ॥ 148 ॥ (रुकू 17/7)

ते मूसा दी कौम नै ओहदे (सफर¹ पर जाने दे) बा'द अपने गैहनें कनै इक बच्छा बनाई लैता। ओह सिर्फ इक बगैर रूहै दा जिसम हा जेहदे चा सिर्फ इक निरर्थक² अवाज निकलदी³ ही। क्या उनें इन्ना बी बिचार नेई कीता जे ओह उंदे कनै नां ते बुदिध-संगत गल्ल करदा ऐ ते नां गै उनेंगी कोई हदायत दा रस्ता दसदा ऐ। उनें उसी बिला ब'जा गै अपना उपास्य बनाई लैता ते ओह मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) बनी गे ॥ 149 ॥

ते जिसलै ओह शर्मिदा होई गे ते उनें समझी लैता जे ओह गुमराह होई गेदे हे ते उनें गलाया जे जेकर साढ़ा रब्ब साढ़े पर रैहम नेई करग ते असेंगी माफ नेई करग तां अस घाटा खाने आहलें चा होई जागे ॥ 150 ॥

الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَإِنْ يَرَوْا كَلِمَةَ آيَةٍ
لَّا يُؤْمِنُوبَهَا وَإِنْ يَرَوْا سَبِيلَ الرُّشْدِ
لَّا يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا وَإِنْ يَرَوْا سَبِيلَ
الْعِىِّ يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَفِلِينَ ﴿١٤٧﴾

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ
حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ هَلْ يُجْزَوْنَ الْآ
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤٨﴾

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَى مِنْ بَعْدِهِ مِنْ حُلِيِّهِمْ
عِجْلًا جَسَدًا لَهُ خَوَارِطٌ لَمْ يَرَوْا أَنَّهُ
لَا يَكْلِمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا ﴿١٤٩﴾
إِتَّخَذُوهُ وَكَانُوا ظَالِمِينَ ﴿١٥٠﴾

وَلَمَّا سَقِطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ قَدْ
ضَلُّوا قَالُوا لَئِن لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا
وَيَغْفِرْ لَنَا لَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿١٥٠﴾

1. एह ओह सफर ऐ जेहदा जिकर आयत 143 च होई चुके दा ऐ। यानी जिसलै हजरत मूसा अल्लाह दे सादे पर चाली रातीं आसतै फाड़ै पर गे हे।

2. मूल शब्द 'खुवार' दा अर्थ ऐ गौ, बैल, भिड्ड, बक्करी दी अवाज जेहकी निरर्थक होंदी ऐ। (अकरब)

3. यानी ओह बच्छा ऐसा हा जे ओहदे च इक पासेआ हवा जंदी ही ते ओहदे चा सीहटी आंगर अवाज निकलदी ही जिस चाली खड़ौने च होंदी ऐ।

ते जिसलै मूसा गुस्से च ते अत्त दुखी होइयै अपनी कौम कश परतियै आया तां उसनै गलाया जे तुसें मेरे बा'द जेहकी मेरी नमाइंदगी कीती ओह अत्त बुरी ही। क्या तुसें अपने रब्ब दे हुकम बाँरे तौल कीती? (ते घबराई गे जे मूसा हूँ तक की नेई आए) उस बेलै मूसा नै वह्नी आहलियां तखतियां धरती पर रक्खी दित्तियां ते अपने भ्राऊ दे सिरै दे बाल पकड़ियै उसी अपने पासै घसीटना लगे तां उसनै गलाया जे हे मेरे अम्मां जाए! कौम दे लोकें मिगी कमजोर समझेआ ते ममकन हा जे ओह मिगी मारी दिंदे। इस आस्तै तू दुश्मनें गी मेरे खलाफ हस्सने¹ दा मौका नेई दे ते मिगी जालम लोकें च शामिल नेई कर ॥ 151 ॥

(एह सुनियै मूसा नै) गलाया जे हे मेरे रब्ब! मिगी ते मेरे भ्राऊ गी माफ कर ते असें दौर्नीं गी अपनी रैहमत च दाखल करी दे ते तू रैहम करने आहलें च साँरे शा बड्डा ऐं ॥ 152 ॥ (रुकू 18/8)

(इस पर अल्लाह नै गलाया) ओह लोक जिनें बच्छे गी (अबादत आस्तै) चुनी लैता, उंदे पर उंदे रब्ब पासेआ गजब (कैहर) नाजल होग ते उसै चाल्ली संसारक अपमान बी ते अस झूठ गंढने आहलें गी इसै चाल्ली दी स'जा दिन्ने होत्रे आं ॥ 153 ॥

ते ओह लोक जिनें कुकर्म कीते पही (उनें कुकर्म गी छोड़ियै) अल्लाह पासै परतोई आए ते ओहदे पर ईमान लेई आए, तेरा रब्ब सच्चें गै इस तोबा (प्राहचिंत) दे बा'द बौहत बख्शने आहला ते बार-बार रैहम करने आहला साबत होग ॥ 154 ॥

وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُونِي مِن بَعْدِي ۚ أَعَجِلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَالْقَى الْأَنْوَاحَ وَآخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ إِلَيْهِ ۗ قَالَ ابْنَ أُمَّ إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضَعُّوْنِي وَكَادُوا يَفْتُلُونَنِي ۗ فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْأَعْدَاءَ وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٥١﴾

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلَا خِي وَأَدْخِلْنِي رَحْمَتِكَ ۗ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ﴿٥٢﴾

إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيِّئًا لَهُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۗ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ﴿٥٣﴾

وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِن بَعْدِهَا وَأَمَّوْا ۗ إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٤﴾

1. हजरत मूसा अपनी कौम दे शिकं च फसी जाने करी अत्त गुस्से च हे ते उंदा रोह अपने भ्राऊ पर ज्यादा हा जे जिसलै उनें कौम च शिकं दे लक्खन भांपी लैते हे तां उंदे कनै की नथे लड़े-भिड़े? इस आस्तै उंदे पर ज्यादा रोह जाहर कीता तां जे कौम दे बाकी सब्बै लोक डरियै अपना सुधार करी लैन।

ते जिसलै मूसा दा रोह थोढ़ा ठंढा होआ तां उसनै बी ओह तख्तियां (जिंदे पर अल्लाह दे हुकम लिखे गेदे हे) चुक्की लैतियां ते उंदे लेखें च उनें लोकें आस्तै रैहमत ते हदायत ही, जेहके अपने रब्ब शा डरदे न ॥ 155 ॥

ते मूसा नै अपनी कौम दे लोकें चा सहतर आदमियें गी साढ़े निश्चत कीते दे, थाहरे पर आहनने आस्तै चुनी लैता, पही जिसलै उंदे पर भंचाल¹ आया तां उस (मूसा) नै गलाया जे हे मेरे रब्ब! जेकर तू चांहदा तां तू उनें गी बी ते मिगी बी पैहलें गै तबाह करी दिंदा। क्या तू असेंगी मूरखें दी मूरखता दे कर्म दी स'जा च तबाह करना चाहन्ना ऐं? एह (जे किश बी होआ) सिर्फ तेरी इक अजमैश ही तू इनें अजमैशें राहें जिनेंगी चाहन्ना ऐं गुमराह करार दिन्ना ऐं ते जिनें गी चाहन्ना ऐं हदायत दिन्ना ऐं। तू साढ़ा कफ़ील (कम्म बनाने आह्ला) ते दोस्त ऐं। इस आस्तै तू असेंगी बख्शी दे ते साढ़े पर रैहम कर ते तू बख्शने आहलें च सारें शा बेहतर ऐं ॥ 156 ॥

ते तू साढ़े आस्तै इस दुनियां च बी नेकी लिख के आखरी जिंदगी च बी (नेकी लिख) अस ते तेरे पासै आई गेदे आं (इस पर अल्लाह ने) फरमाया जे अ'ऊ अपना अज़ाब जिसी चाहन्ना उसी पजान्ना आं (यानी) जेहका अज़ाब दा हक्कदार होंदा ऐ, ते मेरी रैहमत हर इक चीजा पर छाई दी ऐ। इस आस्तै अ'ऊ जरूर उसी उनें लोकें आस्तै लिखड² जेहके संयम अखत्यार करदे न ते ज़कात/ दान दिंदे न ते जेहके लोक साढ़ी आयतें पर ईमान ल्यौंदे न ॥ 157 ॥

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ
الْأَنْوَاحَ ۗ وَفِي نُسُخَتِهَا هُدًى وَرَحْمَةٌ
لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَهْتَبُونَ ﴿١٥٥﴾

وَاخْتَارَ مُوسَى قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا
لِّمِيقَاتِنَا ۖ فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ
رَبِّ لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُم مِّن قَبْلُ
وَإِيَّائِي ۖ أَتَهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السَّفَهَاءُ مِنَّا ۗ
إِن هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ ۖ تُضِلُّ بِهَا مَن تَشَاءُ
وَتَهْدِي مَن تَشَاءُ ۖ أَنْتَ وَلِيُّنَا
فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الْغَافِرِينَ ﴿١٥٦﴾

وَكَتُبْنَا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي
الْآخِرَةِ إِنَّا هُنَا أَلَيْكَ ۖ قَالَ عَذَابِي
أَصِيبُ بِهِ مَن أَشَاءُ ۗ وَرَحْمَتِي
وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۖ فَسَأْتُكُم بِالدِّينِ
يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُمْ
بِآيَاتِنَا يَوْمُونَ ﴿١٥٧﴾

1. भंचाल ते कुदरती निजमें मताबक आया हा, पर जाति दे शिकं कारण हज़रत मूसा नै ए समझेआ जे शायद असेंगी स'जा देने आस्तै ऐसा होआ।
2. यानी रैहम शा इन्कार करने आहले लोक बी लाह हासल करडन, पर मोमिनें आस्तै ते उसी जरूरी करी दिता गेदा ऐ।

ओह लोक जेहके साढ़े इस रसूल (हज़रत मुहम्मद मुस्ताफा सल्ललअम) दा अनुसरण करदे न जेहका नबी ऐ ते उम्मी (अनपढ़) ऐ। जेहदा जिकर तौरात ते इज्जील च उंदे (यहूदिये ते ईसाइये) कश लिखे दा मजूद ऐ। ओह उनेंगी नेक गल्लें दा हुकम दिंदा ऐ ते बुरी गल्लें शा रोकदा ऐ ते सब पवित्र चीजां उंदे आस्तै लहाल करदा ऐ ते सब बुरी चीजां उंदे आस्तै रूहाम करार दिंदा ऐ ते उंदे (रीति-रवाजे दे) बोझ ते उंदे गलें च पाए दे तौक (लड्डन) उंदे शा दूर करदा ऐ। इस आस्तै जेहके लोक ओहदे पर ईमान ल्याए ते उस गी ताकत पजाई, फही उस गी मदद दिती ते ओह उस नूर दे पिच्छें चली पे, जेहका ओहदे पर नाजल कीता गोआ हा ऊए लोक कामयाब होडन ॥ 158 ॥ (रुकू 19/9)

आख जे हे लोको! अ'ऊ तुंदे कश अल्लाह दा रसूल (बनियै आए दा) आं! गासं ते धरती पर उसी गै बादशाहत हासल ऐ। ओहदे सिवा कोई उपास्य नेई। ओह जींदे बी करदा ऐ ते मारदा बी ऐ। इस आस्तै अल्लाह ते ओहदे रसूल पर ईमान ल्याओ जो नबी बी ऐ ते उम्मी बी। जेहका अल्लाह ते ओहदी गल्लें पर ईमान रखदा ऐ। ओहदा अनुसरण करो तां जे तुस हदायत पाई सको ॥ 159 ॥

ते मूसा दी कौम दे लोके चा एक गरोह ऐसा बी ऐ, जेहका सचाई राहें हदायत पा करदा ऐ, ते ओह इसै दे अधार पर (संसार च) न्यां5 करा करदे न ॥ 160 ॥

ते असें उनेंगी बाहरें कबीलें च बंडी दिता (जेहके हून त्रक्की करियै/बधियै कौमां बनी गेदे न) ते उस (मूसा) दी कौम दे लोके जिसलै ओहदे शा पानी मंगेआ तां असें मूसा

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ
الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِنْدَهُمْ
فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ يَا مَرْهُمْ
بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ
الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ
وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۗ فَاَلَّذِينَ
آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُوا
الْثَّوْرَ الَّذِي أَنْزَلَ مَعَهُ ۗ أُولَٰئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ﴿١٥٨﴾

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ
جَمِيعًا ۗ الَّذِي لَهُ مَلَكُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۗ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۗ
فَأْمُنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِي
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَكَلِمَتِهِ وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ
تَهْتَدُونَ ﴿١٥٩﴾

وَمِنْ قَوْمِ مُوسَى أُمَّةٌ يَهْتَدُونَ بِالْحَقِّ
وَبِهِ يُعْدُونَ ﴿١٦٠﴾

وَقَطَّعَهُمْ أَشْتَى عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أُمَمًا ۗ
وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ إِذِ اسْتَسْقَاهُ
قَوْمَهُ أَنْ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ ۗ

पर बह्नी कीती जे जा ते अपना सोटा (फलाने) पत्थरै पर मार (जिसलै उसनै ऐसा कीता) तां ओहदे चा बारां सीरां फुट्टी पेइयां ते हर कबीले नै अपना-अपना घाट मन्नी लैता ते असें उंदे पर बदलें दी छौं कीती ते असें उंदे आस्तै खुब¹ ते बटेर पैदा कीते ते गलाया जे जे किश असें तुसेंगी दित्ते दा ऐ ओहदे चा पवित्तर चीजां खाओ ते उनें साढ़े पर जुलम नेई कीता, बल्के ओह अपने आपै पर गै जुलम करा करदे हे ॥ 161 ॥

ते याद करो जिसलै उनेंगी गलाया गेआ जे इस अलाके च र²घो ते एहदे चा जिल्थुआं चाहो खाओ ते आखदे जाओ अस बोझ² हल्का कीते जाने आस्तै नवेदन करने आं ते (इस सामने आहले शैहरै दे) दरोआजे च फरमांबरदारी करदे होई दाखल होई जाओ। उसलै अस थुआडियां भुल्लां माफ करी देगे ते पूरी चाल्ली फरमांबरदारी करने आहलें गी होर बी इनाम देगे ॥ 162 ॥

इस पर बनी इस्राईल चा जालम लोकें उस गल्ला गी बदलियै जेहकी उनेंगी आखी गोई ही, इक होर³ गल्ल गलानी शुरू करी दित्ती। उसलै असें उंदे पर उंदे जुलममें कारण गासा थमां अजाब उतारेआ ॥ 163 ॥

(रुकू 20/10)

ते (हे रसूल!) इंदे (बनी इस्राईल) शा उस बस्ती दे बारे च पुच्छ जेहकी समुंदरै दे कंठे ही जिसलै जे ओह सब्ब⁴ (शनिवारै दे दिनै)

فَأَنبَجَسَتْ مِنْهُ أَشْتَكَ عَشْرَةَ عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۖ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْعَمَامَ ۖ وَأَنزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّٰنَ ۖ وَالسَّلَٰوَىٰ ۖ كُلَّوَامِنٍ طَيِّبَةٍ مَّارَرْتُمْكُمْ ۖ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١٦١﴾

وَإذ قِيلَ لَهُمْ اسْكُنُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حِطَّةٌ وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ حَظِيَّتِكُمْ ۖ سَتَرِيْدُ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٦٢﴾

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿١٦٣﴾

وَسَأَلَهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۖ إِذْ يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيهِمْ

1. मूल शब्द 'मन्न-व-सलवा' आस्तै दिक्खो सूर: बकरर: टिप्पणी आयत नं० 58.

2. दिक्खो सूर: बकरर: टिप्पणी आयत नं० 59.

3. बनी इस्राईल गी शैहरै च फरमांबरदारी कनै दाखल होने ते प्रार्थना करने दा हुकम हा, पर उनें हासे-मखौल शा कम्म लैता ते बे-हूदा गल्लां करना शुरू करी दितियां जेहदे करी अजाब आई गेआ।

4. 'सब्त' - शनिवार दे दिनै बारै यहूदियें गी आदेश हा जे उस रोज किसै चाल्ली दा संसारक कम्म नेई करन बल्के अल्लाह गी याद करन।

दे हुकमै बारै ज्यादती शा कम्म लैंदे हे। जिसलै उंदियां मच्छियां सब्ब आहलै ध्याड़े उंदे कश झुंडें दे झुंड¹ बनाइयै औंदियां हियां ते जिस रोज ओह सब्ब नथे मनदे तां ओह नथियां औंदियां। इस चाल्ली अस उंदी ना-फरमात्री कारण उंदा इम्तिहान लैंदे हे ॥ 164 ॥

ते जिसलै उंदे (बनी-इस्राईल) चा इक गरोह ने (दूए गरोह कन्नै) गलाया जे तुस इस कौम दे लोकें गी हुकम की दिंदे ओ जिनेंगी अल्लाह तबाह करने आहला ऐ ते बौहत् बड्डा अजाब देने आहला ऐ? तां उनें परता दिता जे थुआड़े रब्ब दे सामनै बरी होने आस्तै (असें उनें लोकें गी नसीहत करी दिती ही) ते तां जे ओह संयम अखत्यार करन ॥ 165 ॥

इस आस्तै जिसलै उनें लोकें उस नसीहत गी भुलाई दिता जेहकी उनेंगी दिती गेदी ही तां असें उनें लोकें गी जेहके बुरी गल्लें शा रोकदे हे मुक्ति प्रदान करी दिती, पर जेहके लोक जालम हे उनेंगी इक दर्दनाक अजाब च सुट्टी दिता की जे ओह आज्ञा पालन करने शा बाहर निकला करदे हे ॥ 166 ॥

पही जिसलै उनें उनें गल्लें शा बाज औने दी बजाऽ, जिंदे शा उनेंगी रोकेआ गेआ हा, होर बी अगें बधना शुरू करी दिता तां असें उनेंगी गलाया जे तुच्छ (जलील) बांदर² बनी जाओ ॥ 167 ॥

ते याद कर जिसलै तेरे रब्ब नै अलान करी दिता जे ओह उंदे (यहूदियें) पर क्यामत तक

حِيَتَانَهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَعًا وَيَوْمَ لَا
يَسْبِتُونَ لَا تَأْتِيهِمْ كَذَلِكَ نَبْلُوهُمْ
بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٦٤﴾

وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِنْهُمْ لِمَ تَعْبُونَ
قَوْمًا لَا إِلَهَ مِثْلِكُمْ أَوْ مُعَدِّبُهُمْ
عَذَابًا شَدِيدًا قَالُوا مَعذِرَةٌ إِلَىٰ رَبِّكُمْ
وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٦٥﴾

فَلَمَّا سَأَوْا مَا ذَكَرُوا بِآيَةِ النَّبِيِّ الَّذِينَ
يَهُونَ عَنِ السُّوءِ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا
بِعَدَابٍ بَيِّنٍ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٦٦﴾

فَلَمَّا عَتَمُوا عَنْ مَاءِهُوَاعَةِ قُلْنَا لَهُمْ
كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿١٦٧﴾

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لِيُبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ

1. जानवर बी दिनें गी पन्थानी जंदे न। हिंदुएं दे घाटें पर जिस दिन लोक आटा बगैरा पांदे न, उस रोज उर्थे बड़ी संख्या च मच्छियां आई जंदिंयां न।
2. दिक्खो सूर : बकरर : टिप्पणी आयत नं. 77.

ऐसे लोक नयुक्त करदा रौहग जेहके उनेंगी तकलीफ़देह अज़ाब दिंदे रौहडन (फ़ही केह ऐसा गै होआ जां नेई?) सच्चें गै तेरा रब्ब स'जा देने च तौल¹ करदा ऐ ते ओह यकीनन बौहत बख़्शने आहला ते बार-बार रैहम करने आहला बी ऐ ॥ 168 ॥

ते असें उनेंगी धरती पर गरोह दर गरोह फलाई दिन्ते दा ऐ (पर हून बी) उंदे च किश लोक नेक न ते किश बुरे² ते अस उनें गी चंगे ते माड़े हालातें राहें परखदे रौहन्ने आं तां जे ओह (अपनी गल्लियें शा) बाज आई जान ॥ 169 ॥

पर पैहले बनी-इस्राईल दे बा'द किश होर (बनी-इस्राईल) खड़े होई गे न जेहके दिक्खने च ते मूसा दी कताबा दे बारस न, पर ओह असल च इस संसार दी माया समेटदे रौहदे न ते लोकें कनै गलांदे न जे अल्लाह असेंगी जरूर माफ़ करी देग ते जेकर उंदे कश उसै चाल्ली दा किश होर धन आई जा तां ओह उसी बी लैने दी कोशश करदे न। क्या उंदे शा मूसा दी कताबा च एह बचन नथा लैता गेआ जे अल्लाह दे बारे च सिर्फ़ सच्च गलाऽ करन? ते जे किश उस कताबा च ऐ ओह उनें पढ़ी लैता ऐ, ते (एह जानदे न) जे आखरत दा घर संयमियें आस्तै बेहतर ऐ। क्या ओह (इन्नी गल्ल बी) नेई समझदे? ॥ 170 ॥

الْقِيَمَةَ مَنْ يَسْؤُهُمْ سَوْءَ الْعَذَابِ إِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيعُ الْعِقَابِ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٦٨﴾

وَقَطَعْنَهُمْ فِي الْأَرْضِ أُمَّمًا مِنْهُمْ الصَّالِحُونَ وَمِنْهُمْ دُونَ ذَلِكَ وَبَلَوْنَهُمْ بِالْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٦٩﴾

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَرِثُوا الْكِتَابَ يَأْخُذُونَ عَرَصَ هَذَا الْأَدْنَى وَيَقُولُونَ سَيُغْفَرُ لَنَا وَإِنْ يَأْتِهِمْ عَرَصٌ مِثْلَهُ يَأْخُذُوهُ أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِيثَاقُ الْكِتَابِ أَنْ لَا يَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوا مَا فِيهِ وَالذَّارُ الْأَخِرَةُ حَيْرٌ لِلَّذِينَ يَنْتَقِمُونَ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٧٠﴾

1. पवित्र क़ुरआन शा सिद्ध होंदा ऐ जे अल्लाह स'जा देने च बड़ा ढिल्ला ऐ। इस आस्तै इस आयत दा सिर्फ़ एह अर्थ ऐ जे जिसलै अल्लाह इन्सान गी स'जा दिंदा ऐ तां ओह तौले गै उसी पकड़ी लैदी ऐ ते कोई चीज ओहदे रस्ते च रोक नेई बनदी। इस आयत दा एह अर्थ नेई जे इद्धर कुसै नै पाप कीता ते उद्धर अज़ाब च घिरी गेआ।
2. एहदे शा साबत होआ जे एह बांदर मनुक्ख गै हे सिर्फ़ उंदे गुण बांदरें आंगर होई गेदे हे। बरना बांदरें दे नेक होने दा केह अर्थ? क्या बांदर बी नमाजां पढ़दे होंदे हे जां सजदा करदे होंदे हे ते जकात दिंदे होंदे हे?

ते जिनें लोकें मूसा दी कताबा गी मजबूती कन्नै पकड़े दा ऐ ते उनें नमाज़ गी कायम रखवे दा ऐ अस ऐसे नेक लोकें दे अजर / सिले जाया नेई करगे ॥ 171 ॥

ते जिसलै असें ष्हाड़ै गी उंदे उप्पर¹ चुक्केआ (तनेआ), आखो जे ओह एक सायबान हा ते उनें समझेआ जे ओह उंदे उप्पर पौने गै आहला ऐ ते असें गलाया जे जे किश असें तुसेंगी दिने दा ऐ, उसी घोटियै पकड़ी लैओ ते जे किश ओहदे च ऐ उसी याद रखखो तां जे तुस संयमी बनी जाओ ॥ 172 ॥ (स्कू 21/11)

ते जिसलै तेरे रब्ब नै बनी आदम दियें पिट्ठीं चा उंदी संतान गी कइहेआ ते उनेंगी उंदी जानें पर गुआह ठरहाया (ते पुच्छेआ) क्या अ'ऊं थुआड़ा रब्ब नेई? उनें गलाया जे हां-हां! अस (इस गल्ला दी) गुआही दिने आं (असें एह इस आस्तै कीता) तां जे तुस क्यामत आहलै रोज कुतै एह नेई गलान लगे जे अस ते इस (तलीम) शा भलेआं अनजान हे ॥ 173 ॥

जां एह गलाई देओ जे (साढ़े जमाने शा पैहलें) सिर्फ साढ़े बब्ब-दादें शिक कीता हा ते अस ते उंदे बा'द इक कमजोर नसल हे। क्या तू असेंगी उनें लोकें दे कर्म दे बदले च हलाक करगा जेहके झूठे हे? ॥ 174 ॥

ते इसै चाल्ली अस आयतें गी तफसील कन्नै ब्यान करने आं ते (मेद रखवने आं) जे ओह (इक्करी) अपनी गलतियें शा रूकी जाडन ॥ 175 ॥

وَالَّذِينَ يُمَسِّكُونَ بِالْكِتَابِ وَأَقَامُوا
الصَّلَاةَ إِنَّا لَا نَضِيعُ أَجْرَ الْمُصْلِحِينَ ﴿٧١﴾

وَإِذْ تَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهُ ظِلَّةٌ
وَظَنُّوا أَنَّهُ وَاقِعٌ بِهِمْ ؕ خُذُوا مَا
آتَيْنَكُمْ بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُونَ ﴿٧٢﴾

وَإِذْ أَخَذَرَبُّكَ مِنْ بَنِي آدَمَ مِنْ
ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَى
أَنفُسِهِمْ ؕ أَسْتَبِرُّكُمْ ؕ قَالُوا بَلَىٰ
شَهِدْنَا أَن تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا
عَنْ هَذَا غَافِلِينَ ﴿٧٣﴾

أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ
وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِنْ بَعْدِهِمْ ؕ أَفَتُهْلِكُنَا
بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُونَ ﴿٧٤﴾

وَكَذَلِكَ نَقُصُّلِ الْآيَاتِ وَلَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ﴿٧٥﴾

1. यानी उंदे प्रमुख लोकें गी तूर पर्वत दे ख'ल्ल (पैरें च) खडेरी दिता हा तां जे ओह बी उसदा नजारा दिक्खी लैन। (खरूज 19:17) जिसलै पर्वत दे ख'ल्ल मनुक्ख खड़ोंदा ऐ तां इयां सेही होंदा ऐ आखो जे पर्वत सायबान आंगर ओहदे उप्पर ऐ।

ते तू उनेंगी उस शख्स दा हाल पढ़ियै सुनाऽ जिसी असें अपने नशान दिते हे पही ओह उंदे शा तलैहटियै बक्खरा¹ होई गेआ हा। इस आस्तै शतान ओहदे पिच्छें पेई गेआ हा ते ओह गुमराह लोकें च शामिल होई गेआ ॥ 176 ॥

ते जेकर अस चांहदे तां उनें नशानें राहें उसी श्रेष्ठता प्रदान करी दिंदे, पर ओह आपूं धरती पासै झुकी गेआ ते अपनी खाहशें दे मगर चली पेआ। इस आस्तै ओहदी हालत उस कुत्ते आंगर ऐ जिसी मारने आस्तै तू कोई चीज चुक्के तां बी ओह हौंकदा ऐ ते जेकर तू उसी छोड़ी देऐं तां बी हौंकदा रौंहदा ऐ। इय्यै हालत उस कौम दे लोकें दी ऐ जेहके साढ़े नशानें गी झुठलांदे न। इस आस्तै तू एह हालत उनेंगी सुनाऽ तां जे ओह किश सोचन-समझन ॥ 177 ॥

उस कौम दे लोकें दी हालत बौहत बुरी ऐ जिनें साढ़ी आयतें गी झुठलाया ऐ ते ओह इस कम्मै राहें सिर्फ अपनी जानें पर जुलम करदे हे ॥ 178 ॥

जिनें गी अल्लाह हदायत देऐ ओह गै हदायत पाने आहले होंदे न ते जिनेंगी गुमराह करी देऐ, ऊऐ लोक घाटा खाने आहले होंदे न ॥ 179 ॥

ते असें जिनें ते इन्सानें गी रैहमत आस्तै पैदा कीता ऐ, पर नतीजा एह निकलदा ऐ जे उंदे चा ज्यादातर लोक जहन्नम दे पात्तर बनी

وَأَتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ الَّذِي آتَيْنَاهُ آيَاتِنَا فَاسْتَخَفَّ
مِنْهَا فَاتَّبَعَهُ الشَّيْطَانُ فَكَانَ مِنَ
الْعٰوِيْنَ ۝۱۷۶

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَاهُ بِهَا وَلَكِنَّهُ أَخْلَدَ
إِلَى الْأَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوَاهُ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ
الْكَلْبِ إِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ أَوْ
تَتَرَكُهُ يَلْهَثُ ذَلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَاقْضِصْ الْقِصَصَ
لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝۱۷۷

سَاءَ مَثَلًا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
وَأَنفُسُهُمْ كَانُوا بِظُلْمٍ مُّوْنَ ۝۱۷۸

مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيٌّ وَمَنْ
يَضِلَّ فَأُولَئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ۝۱۷۹

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ
وَالْإِنْسِ لَهُمْ قُلُوبٌ لَا يَفْقَهُونَ بِهَا

1. तौरात ते भाष्यकार 'बलअम् बाऊर' नांऽ दे इक शख्स दा हाल ब्यान करदे न जेहिदयां घटनां इस परिस्थिति कन्ने मिलदियां-जुलदियां न, पर असल च एह इक त्रिस्टांत ऐ (मसाल ऐ)। जेहका बी कोई शख्स अपने-आपे गी ऐसा बनाई लै एह उपमा उससै पर पूरी उतरग ते ऊऐ 'बलअम् बाऊर' बनी जाग।

जंदे न, की जे उंदे दिल ते हैन, पर ओह उंदे कनै समझदे नेई, उंदियां अक्खीं ते हैन, पर ओह उंदे कनै दिखदे नेई, उंदे कन ते हैन, पर ओह उंदे कनै सुनदे नेई। ओह लोक डंगरें आंगर न बल्के उंदे शा बी बुरे न। (असल गल्ल एह ऐ जे) ओह बिल्कुल मूर्ख न ॥ 180 ॥

ते अल्लाह दे नेकां अच्छे गुण न। इस आस्ते तुस उनें गुणें राहें ओहदे अगें प्रार्थनां करा करो ते उनें लोकें गी छोड़ी देओ जेहके ओहदे गुणें दे बारे च गलत (ते मनघड़त) गल्लां करदे न। उनेंगी उंदे कमें दा बदला दित्ता जाग ॥ 181 ॥

ते जो मख्लूक असें पैदा कीती दी ऐ, ओहदे चा इक गरोह ऐसा ऐ जेहका सच्च राहें लोकें गी हदायत दिंदा ऐ ते सचाई दे अधार पर गै फैसला करदा ऐ ॥ 182 ॥ (रुकू 22/12)

ते ओह लोक जो साढ़ी आयतें गी झुठलांदे न अस उनेंगी बल्लें-बल्लें ऐसे रस्ते चैं हलाकत पासै खिचदे होई आहनगे, जिनें गी ओह नेई जानदे ॥ 183 ॥

ते अ'ऊं (किश चिर) उनें गी ढिल्ल देआ करना। मेरा उपाऽ बड़ा मजबूत ऐ ॥ 184 ॥

क्या ओह एह नेई सोचदे जे उंदे साथी (हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम) गी किसै चाल्ली दा जनून नेई ऐ। ओह ते जाहरा-बाहरा सचेत करने आहला ऐ ॥ 185 ॥

क्या ओह गासें ते धरती दी बादशाहत पर गौर नेई करदे ते हर उस चीजा पर जिसी अल्लाह नै पैदा कीते दा ऐ (ते इस गल्ला

وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ
أَذَانٌ لَا يَسْمَعُونَ بِهَا ۗ أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ
بَلْ هُمْ أَصْلٌ ۗ أُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٨٠﴾

وَاللّٰهُ الْاَسْمَاءُ الْاِحْسٰى فَاذْعُوْهُ بِهَا
وَذَرُوْا الَّذِيْنَ يُلٰجِدُوْنَ فِيْ اَسْمَائِهِمْ
سَيَجْزُوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٨١﴾

وَمِمَّنْ خَلَقْنَا اُمَّةً يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهِ
يَعْدِلُوْنَ ﴿١٨٢﴾

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ
مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٣﴾

وَاْمَلِيْ لَهُمْ ۗ اِنَّ كَيْدِيْۤ اَمِيْنٌ ﴿١٨٤﴾

اَوْ لَمْ يَنْفَكِرُوْا سَبَّ مَا بِصٰحِحِهِمْ مِّنْ
جِنَّةٍ ۗ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مِّمِّيْنٌ ﴿١٨٥﴾

اَوْ لَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۗ وَاَنْ

पर बी जे) शायद उंदी तबाही दा समां लागै आई गेदा ऐ। फही ओह इस खुल्ली गल्ला दे बा'द किस गल्ला दे अधार पर ईमान ल्यौडन ? ॥ 186 ॥

जिसी अल्लाह गुमराह करार देऐ उसी कोई बी हदायत देने आहला नेई ते ओह उनेंगी अपनी उदंडता¹ च भटकदे होई छोड़ी दिंदा ऐ ॥ 187 ॥

(हे रसूल!) तेरे बरोधी तेरे शा क्यामत दे बारे सुआल करदे न जे ओह कदूँ औंग, तू गलाई दे जे इसदा इलम सिर्फ मेरे रब्ब गी ऐ। उसी ओहदे अपने समें पर सिर्फ ऊरे जाहर करग (हां) ओह गासैं च बी ते धरती च बी भारी होग ते थुआड़े कश चानक गै आई जाग। ओह तेरे शा क्यामत दे बारे च बी इस चाल्ली सुआल करदे न जे आखो तेरे पर बी ओहदा समां जानने दी धुन सुआर ऐ। तू गलाई दे (मेरे आसतै ते इन्ना काफ़ी ऐ) जे उस दा पता सिर्फ अल्लाह गी ऐ, पर मते-हारे लोक इसी नेई जानदे ॥ 188 ॥

फही तू गलाई दे जे अ'ऊं अपनी जान आसतै नां ते कुसै लाह दा मालक आं ते नां कुसै नुकसान दा। हां! मिगी ऊरे थ्वोग जो अल्लाह गी पसंद होग ते जेकर मिगी गैब दा पता होंदा तां अपने आसतै भलाइयें चा मतियें-हारियें गी समेटी लैंदा ते मिगी कदें कोई तकलीफ नेई पुजदी, पर अ'ऊं ते सिर्फ मोमिनें गी सचेत करने आहला ते खुशाखबरी देने आहला आं ॥ 189 ॥ (रुकू 23/13)

ऊरे ऐ जिसनै तुसंगी इक जान चा पैदा कीते दा ऐ ते उरसै दी किसमै चा ओहदा जोड़ा

عَلَىٰ أَنْ يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ ۖ
فِي آيِ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٦﴾

مَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ ۗ وَيَذَرُهُمْ
فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٨٧﴾

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسُهَا ۗ قُلْ
إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي ۖ لَا يُجَلِّيهَا
يُوقِتُهَا إِلَّا هُوَ ۗ ثَقُلَتْ فِي السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۗ لَا تَأْتِيكُمْ إِلَّا بَغْتَةً ۗ
يَسْأَلُونَكَ كَأَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۗ قُلْ إِنَّمَا
عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنْ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٨﴾

قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا
إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۗ وَلَوْ كُنْتَ أَعْلَمُ
الْغَيْبِ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۗ وَمَا
مَسْنَى السُّوءِ ۗ إِن أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ
لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٩﴾

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ

1. यानी जो सरकशी करदा ऐ उसी हदायत नेई दिंदा, पर जेहका तोबा करदा ऐ उसी हदायत दिंदा ऐ।

बनाया ऐ तां जे ओह ओहदे कन्नै लगाऽ रक्खियै सकून (शांति) हासल करै। इस आस्तै जिसलै ओह उसी खट्टी लैंदा ऐ तां ओह थोड़ा हारा बोझ चुक्की लैंदी ऐ ते उसी लेइयै फिरदी ऐ। पही जिसलै ओह किश बोझल होंदी जंदी ऐ तां दमें (मड़द-जनानी) अपने अल्लाह अगमें, जो उंदा रब्ब ऐ, प्रार्थनां करदे न जे जेकर तू असेंगी इक नरोआ बच्चा देगा तां अस तेरे शुकरगजार बंदे बनी जागे। ॥ 190 ॥

पर जिसलै ओह उनेंगी नरोआ बच्चा प्रदान करदा ऐ तां ओह दमें उस संतान चा जेहकी उनेंगी अल्लाह नै प्रदान कीती दी होंदी ऐ ओहदे शरीक बनाना लगी पौंदे न, पर अल्लाह उंदे शिर्क थमां बौहत्त उप्पर ऐ ॥ 191 ॥

क्या ओह उनेंगी अल्लाह दा शरीक बनादे न जेहके किश बी पैदा नेई करी सकदे, बल्के ओह आपूं पैदा कीते जंदे न ॥ 192 ॥

ते ओह उंदी (मुश्रिकें दी) किश मदाद करने दी जरा बी ताकत नेई रखदे ते नां अपनी जानें दी मदद करी सकदे न ॥ 193 ॥

ते जेकर तू उनें झूठे उपास्यें गी हदायत पासै बुलाएं तां ओह थुआड़ा अनुसरण नेई करी सकडन। थुआड़ा उनेंगी बुलाना जां चुप्प रौहना उंदे आस्तै इक-बराबर ऐ ॥ 194 ॥

जिनें लोकें गी तुस अल्लाह दे सिवा बुलांदे ओ ओह थुआड़े आंगर गै बंदे न। इस आस्तै तुस उनेंगी पुकारदे जाओ ते जेकर तुस सच्चे ओ तां ओह थुआड़े बुलारे दा जवाब ते देइयै दस्सन? ॥ 195 ॥

وَجَعَلْ مِنْهَا زُوجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا فَلَمَّا تَغَشَّهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيًّا فَمَرَّتْ بِهِ
فَلَمَّا أَثْقَلَتْ دَعَا اللَّهَ رَبِّهَا لِيَنْ أَيْتِنَا
صَالِحًا لِنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿١٩٠﴾

فَلَمَّا أَتَاهُمَا صَالِحًا جَعَلَالَهُ شُرَكَاءَ فِيمَا
أَتَاهُمَا ۚ فَتَعَلَّى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٩١﴾

أَيُّشْرِكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ سَيِّئًا وَهُمْ
يُخْلِقُونَ ﴿١٩٢﴾

وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَا
أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ﴿١٩٣﴾

وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَى
لَا يَتَّبِعُوكُمْ سِوَاءَ عَلَيْكُمْ
أَدْعَاؤُهُمْ أَمْ أَنْتُمْ صَامِتُونَ ﴿١٩٤﴾

إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ
أَمْثَلُكُمْ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْمَعُوا كَلِمَ
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٩٥﴾

क्या उंदे पैर हैन जिंदे कनै ओह चलदे न जां उंदे हत्थ हैन जिंदे कनै ओह पकड़दे न ते उंदियां अक्खीं हैन जिंदे कनै ओह दिखदे न जां उंदे कन्न हैन जिंदे कनै ओह सुनदे न ? तूं उनेंगी गलाई दे जे अपने सारे शरीकें गी बुलाई लैओ ते फही सारे मिलियै मेरे खलाफ खड़जैत्तर रचो ते मिगी कोई ढिल्ल बी नेई देओ ॥ 196 ॥

मेरा दोस्त यकीनन ओह खुदा ऐ जिसनै एह कामिल कताब उतारी दी ऐ ते ओह नेक लोकें दा साथ दिंदा ऐ ॥ 197 ॥

ते ओह लोक जिनेंगी तुस उस दे सिवा पुकारदे ओ ओह नां ते थुआड़ी मदद करने दी तफीक रखदे न ते नां अपनी जानें दी मदद करी सकदे न ॥ 198 ॥

ते जेकर तुस उनेंगी हदायत आहले पासै बुलाओ तां ओह सुनी नेई सकदे, ते तूं उनेंगी इय्यां दिक्खना ऐं जे आखो ओह तुगी दिक्खा करदे न। असल च ओह तुगी नेई दिक्खा करदे ॥ 199 ॥

(हे नबी! सदा) सैहनशीलता शा कम्म लै। मनुक्खी फितरत दे मताबक गल्लें दा हुकम दिंदा रौह ते मूख् लोकें शा मूह फेरी लै ॥ 200 ॥

ते जेकर शतान पासेआ तुगी कोई दुख पुजै तां तूं अल्लाह शा शरण मंग, जो बौहत् सुनने आह्ला ते बौहत् जानने आह्ला ऐ ॥ 201 ॥

यकीनन ओह लोक जिनें उस बेलै संयम अखत्यार कीता जिसलै उनेंगी शतान आहले

أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَّمْشُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَّبْتَطِشُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يَّبْصُرُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ أُذُنٌ يَّسْمَعُونَ بِهَا ۗ قُلْ اذْعُوا شُرَكَاءَ كُمْ تَمَّ كَيْدُونَ فَلَا تَنْظُرُونَ ﴿١٩٦﴾

إِنَّ وَلِيََّ اللَّهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ ۗ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ ﴿١٩٧﴾

وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْمَعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَا أَنْفُسَهُمْ يَبْصُرُونَ ﴿١٩٨﴾

وَأِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَسْمَعُوا ۚ وَتَرْهَهُمْ يَنْظُرُونَ ۚ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٩٩﴾

خَذَّ الْعَمَلُ وَأَمْرًا بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ ﴿٢٠٠﴾

وَمَا يَنْزَعُكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْعٌ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۗ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٠١﴾

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَبِيفٌ مِّنْ

पासेआ औने आहला कोई ख्याल मसूस होआ ते ओह सचेत होईं गे ते उंदियां अक्खीं खु'ल्ली गेइयां (ओह हदायत पाई लेंदे न) ॥ 202 ॥

ते इनें मुन्करे दे भाई-भ्राउ ते उनें गी गुमराही पासै खिचदे न ते पही कुसै चाली दी कोई कसर बाकी नेई रखदे ॥ 203 ॥

ते जिसलै तू उंदे कश कोई खु'ल्ली नशान्नी नेई ल्यामैं तां गलांदे न जे तू उस नशान्नी गी की नेई खिचियै लेई आया? तू गलाई दे जे अ'ऊं ते सिर्फ अपने रब्ब पासेआ अपने उप्पर उतरने आहली वह्वी दा अनुसरण करना। एह वह्वी थुआड़े रब्ब पासेआ दलीलें कनै पूर्ण ऐ ते मोमिनें आसै हदायत बी ऐ ते रैहमत बी ऐ ॥ 204 ॥

ते (हे लोको!) जिसलै कुरआन पढ़ेआ जा, तां उसी सुना करो ते चुप्प र'वा करो तां जे तुंदे पर रैहम कीता जा ॥ 205 ॥

ते (हे नबी!) तू अपने मनै च अपने रब्ब गी लहीमगी कनै ते भैउ कनै याद करदा र'वा कर ते हौली अवाजा च संजा-भ्यागा (ऐसा करा कर) ते कदें बी अचेत (असावधान) लोकें च शामिल नेई हो ॥ 206 ॥

जेहके लोक तेरे रब्ब दे लागै न, यकीनन ओह अपने रब्ब दी अबादत शा अपने-आपै गी बड्डा नेई समझदे ते उसदी स्तुति करदे रौहदे न ते ओहदे सामनै सजदे करदे रौहदे न ॥ 207 ॥ (रुकू 24/14)

الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُبْصِرُوْنَ ﴿٢٠٢﴾

وَ اٰخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِى الْعِىِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ ﴿٢٠٣﴾

وَ اِذَا لَمْ تَاْتِيْهِمْ بَايَةٌ فَالُوْا لُوْلٰا اَجْتَبَيْتُهَا ۗ قُلْ اِنَّمَا اتَّبِعُ مَا يُوْحٰى اِلَيّْ مِنْ رَبِّىْ ۗ هٰذَا بَصٰىرٌ مِّنْ رَبِّكُمْ وَ هٰدٰى وَ رَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠٤﴾

وَ اِذْ اَقْرَأَ الْقُرْءَانَ فَاسْمِعُوْا لَهٗ وَ اَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٢٠٥﴾

وَ اذْكُرْ رَبَّكَ فِى نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَ خِيفَةً وَ دُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَ الْاَصَالِ وَ لَا تَكُنْ مِنَ الْغٰفِلِيْنَ ﴿٢٠٦﴾

اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَ يَسِيْحُوْنَ لَهُ لَهٗ يَسْجُدُوْنَ ﴿٢٠٧﴾

ooo

سُورَةُ الْأَنْفَالِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ سِتٌّ وَسَعُونَ آيَةً وَعَشْرَةٌ رُكُوعَاتٍ

सूर: अल्-अन्फाल

एह सूर : मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां छिहत्तर आयतां ते दस्स रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नां5 लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला ते बार-बार रैहम
करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

(हे रसूल!) लोक तेरे शा गनीमत दे धन
बाँरे सुआल पुछदे न तू (उनेंगी) गलाई दे
जे गनीमत दा धन अल्लाह ते ओहदे रसूल
आस्तै ऐ। इस आस्तै अल्लाह दा संयम
अखत्यार करो ते आपस च सुधार दी
कोशश करो ते जेकर तुस मोमिन ओ तां
अल्लाह ते ओहदे रसूल दी आज्ञा दा पालन
करो ॥ 2 ॥

मोमिन ते सिर्फ ऊरे न जे जिसलै (उंदे सामनै)
अल्लाह दा जिकर कीता जा तां उंदे दिल डरी
जान ते जिसलै उंदे सामनै उस दियां आयतां
पढ़ियां जान तां ओह अपने ईमान गी होर बी
बधाई देन। इस दे अलावा (मोमिन ओह न)
जेहके अपने रब्ब पर भरोसा रखदे न ॥ 3 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَنْفَالِ قُلِ الْأَنْفَالُ لِلَّهِ
وَالرَّسُولِ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَصْلِحُوا ذَاتَ
بَيْنِكُمْ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِن
كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ①

إِنَّمَا الْمَوْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا دُكِرَ اللَّهُ
وَجِلَّتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تَلَّيْتْ عَلَيْهِمْ آيَةٌ
زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ①

(इससै चाल्ही असली मोमिन ऊऐ न) जेहके (शरै मताबक) नमाजां पढ़े न ते जे किश असैं उनेंगी दित्ते दा ऐ, ओहदे चा खर्च करदे न ॥ 4 ॥

एह लोक गै सच्चे मोमिन न। उंदे आस्तै उंदे रब्ब कश बड्डे उच्चे दरजे ते मुक्ति दा समान ते इज्जत आहली रोजी ऐ ॥ 5 ॥

एह (इनाम उनेंगी) इस कारण (मिलग) जे तेरे रब्ब नै तुगी इक खास मकसद कनै तेरे धरै थमां कड्डे दा ऐ ते मोमिनें चा इक गरोह गी एह बौहत बुरा¹ लग्गा करदा हा ॥ 6 ॥

ओह² तेरे कनै सच्च बंदोई औने दे बा'द इस चाल्ही बैहस करदे न आखो जे (इस्लाम दा सादा) उनेंगी मौती पासै धक्की जा करदा ऐ ते (इय्यां सेही होंदा ऐ जे) ओह (उस मौती गी सामनै अपनी अक्खी) दिक्खा करदे न ॥ 7 ॥

ते (उस समे गी याद करो) जिसलै अल्लाह द'ऊं दलें चा इक दा बा'यदा करदा हा जे ओह तुगी मिलग (यानी उंदे कनै टाकरा होग) ते तेरी इच्छा एह ही जे जिस दल कश हथ्यार नैई न ओह तेरे कनै मिलै ते अल्लाह एह चांहदा हा जे ओह अपने हुकमें राहें

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ﴿٤﴾

أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٥﴾

كَمَا أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكُرْهُوْنَ ﴿٦﴾

يُجَادِلُونَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَأَنَّمَا يُسَاقُونَ إِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ﴿٧﴾

وَإِذْ يُعِيذُكُمُ اللَّهُ إِحْدَى الظَّلَامَاتِ ۖ إِنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشُّوْكَةِ تَكُونُ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكَافِرِينَ ﴿٨﴾

1. इस आयत कनै ईसाइयें दे ओह इतराज मुक्की जंदे न जे मुसलमान गनीमत दे लालच पिच्छें हमले करदे हे, की जे पवित्र कुर'आन दा कथन ऐ जे मोमिन जिहाद करने शा नैई डरदे, पर खून-खराबे दी ब'जा करी एहदे कनै नफरत करदे हे।
2. यानी इन्कार करने आहले लोक। मोमिन लोक ते युद्ध गी पसंद नैई करदे, पर ओह अल्लाहा दा हुकम मनने आस्तै त्यार हे जियां जे पैहलें आहली ते दूइयें केई आयतें शा साबत होंदा ऐ। किश विद्वानें एहदा अर्थ एह कीते दा ऐ जे सहाबा जिहाद दे हुकम पर हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. कनै बैहस करदे हे जे एह हुकम की मिलेआ ऐ, पर एह गल्ल पवित्र कुर'आन ते इतिहास थमां निराधार सिद्ध होंदी ऐ।

सच्च गी सच्च साबत करी देऐ ते मुन्करें दी
जढ़ कट्टी देऐ ॥ 8 ॥

तां जे ओह इस चाल्ही सचाई गी कायम करी
देऐ ते झूठ दा सर्वनाश करी देऐ। भामें मुलजम
लोक उस्सी पसंद नेई बी करदे होन ॥ 9 ॥

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै जे
तुस अपने रब्ब अमर्गें प्रार्थना करदे हे। इस पर
थुआड़े रब्ब नै थुआड़ी प्रार्थनें गी सुनेआ (ते
गलाया जे) अ'ऊं ज्हारें फरिश्तें राहें थुआड़ी
मदद करड जिंदा लश्कर दे बा'द लश्कर बधा
करदा होग ॥ 10 ॥

ते अल्लाह नै इसी सिर्फ शुभ-समाचार¹ दे
रूपै च नाजल कीता हा तां जे एहदे राहें
थुआड़े दिल संदोख बुज्जान ते मदद ते सिर्फ
अल्लाह कशा गै औंदी ऐ (फरिश्ते ते सिर्फ
इक लखन-मात्तर न)। अल्लाह यकीनन
बौहत गालिब ते हिक्मत आहला ऐ ॥ 11 ॥
(रुकू 1/15)

(एह नशान उस बेले बंदोआ) जिसलै जे
अल्लाह (अपने पासेआ) अमन-शांति ते संदोख
दा शुभ-समाचार देने आस्तै तुंदे पर ऊंघ
(नींदै दा घोट) उतारा करदा हा ते तुंदे पर
बदलें चा पानी बरहाऽ करदा हा तां जे ओहदे
राहें² तुसंगी पवित्र करी देऐ ते शतान दी
गंदगी (यानी ओहदे डर) गी तुंदे शा दूर करी

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُطْلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ
الْمُجْرِمُونَ ﴿٩﴾

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ
أَنِّي مُّمَدِّدُكُمْ بِأَنْفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ
مُرْدِفِينَ ﴿١٠﴾

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرًا وَيَنْزِلُ
قُلُوبِكُمْ ۖ وَمَا نَصَرَ الْأَمَنُ عِنْدَ
اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿١١﴾

إِذْ يُغَشِّيكُمُ التُّعَاسُ أَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنزِلُ
عَلَيْكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَ كُفْرًا بِهِ
وَيَذْهَبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطَانِ
وَلِيَرْبِطَ عَلَى قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ

1. एह अर्थ नेई जे सच्चें-मुच्चें फरिश्ते गै मुन्कर लोकें कनै युद्ध करडन, बल्के जेकर फरिश्तें दी मदद कशफ च दस्ती जा तां ओहदा अर्थ एह होंदा ऐ जे सर्व शक्तिमान अल्लाह जरूर मदद करग ते इस चाल्ही मोमिन गी शुभ-समाचार मिली जंदा ऐ।
2. एह 'बद्र' दी लड़ाई दी घटना ऐ ते बद्र दे थाहरा पर मोमिनें ते मुन्करें बशकार रेतू दा इक मदान हा जेहदे पारें चीकनी मिट्टी ही। बरखा होने करी रेत जम्मी गई ते चीकनी मिट्टी च तलैहट होई गई। लड़ाई शुरू होने दे बा'द मुसलमानें दे पैरे ते चंगी चाल्ही जम्मे दे रेह पर बैरी दी सैनक स्हायता जिसलै पिच्छुआं आई तां तलैहटू कारण उंदे पैरे तलैहटन लगे हे। इस आस्तै मदाद पुञ्जी नथी सकदी। दूप पासै जिसलै मुसलमान हमला करदे तां मुन्कर लोक नसदे मौकें चीकनी मिट्टी दी तलैहटू च फसी जंदे हे।

देए ते तां जे थुआड़े दिलें गी मजबूत करी देए, ते इस (बरखा) राहें थुआड़े पैरें गी मजबूत करी देए ॥ 12 ॥

(एह ओहू समां हा) जिसलै तेरा रब्ब फरिशतें गी बी वह्नी करा करदा हा जे अ'ऊं थुआड़े कन्नै आं। इस आसतै तुस मोमिनें दे पैरे जमाई रक्खो। अ'ऊं इन्कारी लोकें दे दिलें च धाक बट्हाई देड। इस लेई (हे मोमिनो!) तुस उंदी मुंडियें पर बार करदे जाओ ते उंदे पोर-पोर पर चोटां लांदे जाओ ॥ 13 ॥

ऐसा इस करी होग जे उनें अल्लाह ते ओहदे रसूल दा बरोध कीता ते जेहका कोई अल्लाह ते ओहदे रसूल दा बरोध करदा ऐ (उसी समझी लैना चाही दा जे) अल्लाह बौह्त सख्त स'जा' देने आहला ऐ ॥ 14 ॥

(हे लोको सुनो! अल्लाह दी स'जा) ऐसी गै होंदी ऐ। इस लेई उसी चक्खो ते (चेता रक्खो जे) मुन्कर लोकें गी सच्चें गै अग्गी दा अजाब पुज्जने आहला ऐ ॥ 15 ॥

हे मोमिनो! जिसलै थुआड़ी सैना दे रूपै च मुन्कर लोकें कन्नै टाकरा होऐ तां उनें गी कदें बी पिट्ट नेई दस्सा करो ॥ 16 ॥

ते जेहका कोई ऐसे मौके पर पिट्ट दस्सग, सिवाए इसदे जे ओह युद्ध आसतै ज'गा बदला करदा होऐ जां कुसै (मुसलमान) दल पासै ओहदी सहायता आसतै जा करदा होऐ ते

الْأَقْدَامِ 17

إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَأَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَخَبِتُوا الَّذِينَ آمَنُوا سَأَلْنِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَأَضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ 17

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ 18

ذَلِكَ فَمَنْ قُوَّةُ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ 19

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ الَّذِينَ كَفَرُوا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوهُمْ إِلَّا ذُبَابًا 20

وَمَنْ يُؤَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبرَةً إِلَّا مَتَحَرِّفًا لِقِتَالٍ أَوْ مَتَحَرِّزًا إِلَى فِتْنَةٍ فَقَدْ بَاءَ

1. इस दा एह अर्थ नेई जे अल्लाह दे जेहके कलेश (स'जा)न उंदे चा कठोर सा कठोर स'जा दिंदा ऐ, बल्के अर्थ एह ऐ जे अल्लाह दियां सब्भै सजाहीं सख्त होंदियां न।

ओह अल्लाह दा प्रकोप लेइयै परतोग ते ओहदा ठकाना नरक होग ते ओह बस्सोआं दी ट्रिस्टी कन्नै बौहत बुरा ठकाना ऐ ॥ 17 ॥

इस लेई (चेता रक्खो जे) इनें (इन्कारी लोकें) गी तुसें नथा मारेआ बल्के अल्लाह नै मारेआ हा ते जिसलै तोह कैकरियां छंडियां हियां तां तोह नथियां छंडियां बल्के अल्लाह नै छंडियां हियां जेहदा नतीजा एह होआ जे उस (अल्लाह) नै ओहदे राहें मोमिनें पर इक बौहत बड्डा उपकार कीता ते यकीनन अल्लाह बौहत सुनने आहला ते बौहत जानने आहला ऐ ॥ 18 ॥

एह गल्ल उससै चाली होग (जिस चाली असें गलाया हा) ते अल्लाह यकीनन मुन्करें दियें चालें गी कमजोर करने आहला ऐ ॥ 19 ॥

हे मक्का दे मुन्कर लोको! जेकर तुस विजय दा नशान मंगदे हे, तां लैओ विजय (जित) थुआड़े कश आई गई ऐ, ते जेकर तुस हून बी रुकी जाओ तां यकीनन एह थुआड़े लेई बेहतर होग। जेकर तुस (शरारत पासै) परतोगे ओ तां अस बी (स'जा आहले पासै) परतोगे ते थुआड़ा जत्था किन्ना बी शक्तिशाली होग ओह तुसेंगी किश बी लाह नेई पजग। अल्लाह मोमिनें दे कन्नै ऐ ॥ 20 ॥ (रकू 2/16)

हे मोमिनो! अल्लाह ते ओहदे रसूल दे फरमांबरदार बने दे र'वो ते उंदे चा कुसै शा बी मूंह नेई फेरो, इस हालत च जे तुस (ओहदा हुकम) सुना करदे ओ ॥ 21 ॥

بِعَضِّبِ مِنَ اللَّهِ وَمَا لَهُ جَهَنَّمُ وَبِسِ الْمَصِيرِ ۝

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَاءً حَسًّا إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

ذِكْرِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ مُوهِنٌ كَيْدِ الْكَافِرِينَ ۝

إِنْ تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَاءَكُمْ الْفَتْحُ وَإِنْ تَنْتَهُوا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَإِنْ تَعُودُوا نَعَذِّبْكُمْ وَلَنْ نُعْزِبَكُمْ فَإِنَّكُمْ سَيِّئَاتٌ لَّوْ كَثُرْتُمْ وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَوَلَّوْا عَنَّهُ وَاتَّقُوا لَكُمْ لَعْنَةَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ ۝

1. बद्र दी लड़ाई मौकै मुट्ट-हारे मुसलमानों पर जिसलै दुश्मन दी बौहत बड्डी फौज दा हमला होआ तां हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम नै निक्के-निक्के कैकरें दी इक मुट्ट भरियै दुश्मन दी फौजै पासै छंडी ही। इससै बेल्लै अल्लाह दे हुकम मताबक थुआड़े पिच्छुआं मुन्कर लोकें पासै आंधी जनेही चली ते सारे कैकर उड्डरियै मुन्कर लोकें पर पे ते ओह अक्खीं च रेत भरोई जाने करी किश बी नथे दिक्खी सकदे। इत्थें इससै घटना पासै संकेत कीता गेदा ऐ।

ते उनें लोकें, आंगर नेईं होई जाओ जिनें एह गलाया हा जे अस सुनने आं, पर ओह नेईं सुनदे ॥ 22 ॥

अल्लाह दे लागै ओह लोक जानवरें शा बी नफिट्ट न जेहके गूंगे ते बोले न, जेहके किश बी समझ नेईं रखदे ॥ 23 ॥

ते जेकर अल्लाह उंदे च (मुन्करें च) किश बी भलाई दिखदा तां उनेंगी कुरआन सनाई दिंदा ते जेकर उनेंगी इसै हालती च कुरआन सुनाई दिंदा तां बी ओह पिट्ट फेरी लैंदे ते (कुरआन शा) मूंह मोड़ी लैंदे ॥ 24 ॥

हे मोमिनो! अल्लाह ते ओहदे रसूल दी गल्ल सुनो जिसलै जे ओह तुसेंगी जीवन¹ प्रदान करने आस्तै सददै ते एह समझी लैओ जे अल्लाह मनुक्खै ते ओहदे दिलै बश्कार आई जंदा ऐ ते एह जे तुसेंगी जींदे करियै उसै आहली बक्खी परताया जाग ॥ 25 ॥

ते उस फित्ने (फसाद) थमां डरदे र'वो जेहका तुंदे चा खास करियै जालमें गी गै नेईं (बल्के सारें गी) लपेटग ते चेता रखओ जे अल्लाह दा अजाब यकीनन बौहत सख्त होंदा ऐ ॥ 26 ॥

ते (याद करो) जिसलै तुस थोड़े हे ते धरती पर कमजोर समझे जंदे हे ते डरदे हे जे लोक तुसेंगी उड़कियै नेईं लेईं जान। फही इस गल्ला दे होंदे होई बी उसनै तुसेंगी (मदीना च) थाहर दिता ते अपने पासेआ मदद करियै थुआड़ा समर्थन कीता ते पवित्तर चीजें कनै तुसेंगी रोजी प्रदान कीती तां जे शुकर करने आहले बनी जाओ ॥ 27 ॥

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿٢٢﴾

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الضَّمُّ
الْبُكْمُ الَّذِينَ لَا يُعْقِلُونَ ﴿٢٣﴾

وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَأَسْمَعَهُمْ
وَلَوْ سَمِعَهُمْ لَتَبَتُوا وَأَهُمْ مَعَ رِضْوَانٍ ﴿٢٤﴾

يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ
وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ
وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٥﴾

وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا
مِنْكُمْ خَاصَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ﴿٢٦﴾

وَإِذْ كُرُوا إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُسْتَضْعَفُونَ
فِي الْأَرْضِ تَخَافُونَ أَنْ يَتَخَفَّكُمْ
النَّاسُ فَأَلْوَبَكُمْ وَأَيْدِيكُمْ يُنْصِرِهِمْ
وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ﴿٢٧﴾

1. सेही होंदा ऐ जे इक मनुक्ख दूर अध्यात्मक मुड़दा मनुक्खै गी हदायत देख्यै गै जींदा करी सकदा ऐ नां के कबरें च दब्बे दे मुड़दें गी जींदा करियै।

हे मोमिनो! अल्लाह ते ओहदे रसूल दी ख्यानत नेई करा करो ते नां अपनी अमानतें च ख्यानत करो इस हालत च जे तुस जानदे-बुझदे ओ¹ ॥ 28 ॥

ते चेता रक्खो जे थुआड़े माल ते थुआड़ियां उलादां सिर्फ इक फ़ित्ना न ते अल्लाह ओह सत्ता ऐ जेहदे कश बौहत् बड्डा अजर/सिला ऐ ॥ 29 ॥ (रुकू 3/17)

हे मोमिनो! जेकर तुस अल्लाह आस्तै संयम अख्तयार करगे ओ तां ओह थुआड़े आस्तै इक बौहत् बड्डा कसौटी (दा समान) पैदा करी देग ते थुआड़ी कमजोरियें गी दूर करी देग ते तुसंगी बख्शी देग ते अल्लाह बौहत् बड्डा किरपा करने आहला ऐ ॥ 30 ॥

ते (हे रसूल! उस बेले गी याद कर)जिसलै जे मुन्कर लोक तेरे बाँरे योजनां बनाऽ करदे हे तां जे तुगी बंदी² बनाई लैन, जां तेरा खून करी देन जां तुगी (मक्का थमां)कड्ढी लान। ओह बी योजनां बनाऽ करदे हे ते अल्लाह बी योजना बनाऽ करदा हा ते अल्लाह योजनां बनाने आहलें चा सारें शा बेह्तर योजनां बनाने आहला ऐ ॥ 31 ॥

ते जिसलै उनेंगी साड़ियां आयतां पड़िये सुनाइयां जदियां न तां ओह गलांदे न (बस्स रौहन

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَخُونُوا اللَّهَ
وَالرَّسُولَ وَتَخُونُوا أَمْتِكُمْ وَأَنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾

وَاعْلَمُوا أَنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ
فِتْنَةٌ وَأَنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٢٩﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ
لَكُمْ فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٣٠﴾

وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا
لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يَخْرِجُوكَ
وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ وَاللَّهُ
خَيْرُ الْمَكْرِينِ ﴿٣١﴾

وَإِذْ تُتْلَىٰ عَلَيْهِمُ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا

1. इसदा एह अर्थ नेई जे बगैर समझे-बुझे ख्यानत करना जायज ऐ बल्कि अर्थ एह ऐ जे तुंदे सामनै सचाई जाहर होई चुकी दी ऐ। जेकर इयदे बा'द बी ख्यानत करगे ओ तां इस ब'जा करी सख्त स'जा पागे ओ।
2. यानी धरै च बंदी बनाई देन, पर ओह एहदे च नकाम रेह। दूई योजना हत्या करने दी ही ओह ओहदे च बी नकाम रेह। त्री योजना देशें थमां कड्ढी देने दी ही, ओहदे च कामयाब होई गे, पर अल्लाह नै मदीना दे शैहरियें दे दिल हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम आस्तै खोहली दित्ते। तुसंगी मक्का आहलें दा घरा कड्ढी देना गै उंदी तबाहो दा कारण बनी गेआ।

देओ) असें थुआड़ी गल्ल सुनी लैती, जेकर अस चाहचै तां इस चाछी दा कलाम अस बी बनाई सकने आं। एह (कुरआन) ते सिर्फ पैहले लोके दियां गल्लं न ॥ 32 ॥

ते (याद कर)जिसलै उनें गलाया जे हे अल्लाह! जेकर तेरे पासेआ इय्यै धर्म सच्चा ऐ तां साढ़े पर गासै थमां पत्थर बर्हाऽ जां असंगी कोई दूआ होर दुखें भरोचा अज़ाब¹ दे ॥ 33 ॥

पर अल्लाह उनेंगी इस हालत च अज़ाब नथा देई सकदा जिसलै जे तू उंदे च बराजमान हा ते नां अल्लाह उनेंगी इस हालत च अज़ाब देई सकदा हा जिसलै जे ओह इस्ताफ़ार² (प्राहचिंत)करा करदे होन ॥ 34 ॥

ते क्या उनेंगी कोई हक्क है जे जेहदे अधार पर ओह इज्जत आहली मस्जिद (काबा)थमां लोके गी रोकदे न, तां पही बी अल्लाह उनेंगी अज़ाब नेई देग ? ते असल च ओह ओहदे मुत्वल्ली (प्रबंधक)नेई। ओहदे (असली) मुत्वल्ली ते सिर्फ संयमी लोक गै न, पर मुन्कर लोके चा मते-हारे लोक इस गल्ल गी नेई समझदे ॥ 35 ॥

ते काबा दे लागे उंदी नमाज सिर्फ सीटियां ते ताड़ियां बजाने दे सिवा किश नेई। इस लेई हे पापियो! अपने इन्कार कारण अज़ाब दा सुआद चक्खो ॥ 36 ॥

जिनें इन्कार कीता ऐ ओह सच्चे गै अपने धन

لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَذَا إِنْ هَذَا إِلَّا
أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٢﴾

وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَذَا هُوَ الْحَقُّ
مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ
السَّمَاءِ وَإِنَّنَّا بِعَذَابِ أَلِيمٍ ﴿٣٣﴾

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ
وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ
يَسْتَغْفِرُونَ ﴿٣٤﴾

وَمَا لَهُمْ آلَا يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ وَهُمْ
يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا
أَوْلِيَاءَهُ إِنْ أَوْلِيَاؤُهُ إِلَّا الْمُتَّقُونَ
وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٥﴾

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً
وَتَصَدِيَةً فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ
تَكْفُرُونَ ﴿٣٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ

1. इस थाहरा पर बद्र दी लड़ाई दा जिकर ऐ। उस मौके अबूजहल नै इय्यै नेह शब्दे च प्रार्थना कीती ही। फलसरूप ओह स'जा पाइयै मारेआ गोआ।
2. आयत दा भाव एह ऐ जे प्राहचिंत ते ओह पैहले गै नथे करदे। जेकर तू बी उत्युआं उठी गोआ तां उंदे बचने दे दमें साधन खतम होई जाडन ते ओह बे-सहारा रहिये तबाह होई जाडन।

लोकें गी अल्लाह दे रस्ते थमां रोकने आस्तै खर्च करदे न। ओह इससै चाल्त्री अपने धन खर्च करदे जाडन। फ्ही आखर च इय्यै (खर्च) उंदे आस्तै पछतावे दा कारण बनी जाग ते ओह र्हाई दिते जाडन ते जिनें लोकें इन्कार कीता ऐ उनेंगी किट्टे करिये नरकै आहले पासै लेता जाग ॥ 37 ॥

तां जे अल्लाह सुच्चे (पवित्र) ते भिट्टे (अपवित्र) च फर्क करी देऐ ते भिट्टी (अपवित्र) चीजें दे किश हिस्सें गी इक दूए दे उप्पर रखदा जाऽ, फ्ही सारें गी इक ठाले दे रूपै च बनाई देऐ ते फ्ही उस सारे ठाले गी नरकै दी अग्गी च पाई देऐ। (सुनो!) इय्यै लोक घाटा खाने आहले न ॥ 38 ॥ (रुकू 4/18)

तूं मुन्कर लोकें गी गलाई दे जे जेकर ओह बाज आई जान तां जेहका (कसूर) उंदे शा पैहलें होई चुके दा ऐ ओह उनेंगी माफ करी दित्ता जाग ते जेकर ओह (उनें करतूतें गी) बार-बार करडन तां जेहका बरताऽ पैहले लोकें कनै होई चुके दा ऐ ऊऐ उंदे कनै बी कीता जाग ॥ 39 ॥

ते उंदे (इन्कारी लोकें) कनै लडदे जाओ, इत्थें तक जे जबर दा नांऽ-नशान बाकी नैई र'वै ते धर्म सारे दा सारा सिर्फ अल्लाह आस्तै गै होई जा ते जेकर ओह रुकी जान तां सच्चे गै अल्लाह उंदे कर्म गी दिखदा ऐ ॥ 40 ॥

ते जेकर ओह पिट्ट दस्सी जान तां समझी लैओ जे अल्लाह सच्चे गै थुआड़ा हामी ऐ, ओह सर्वश्रेष्ठ हामी ते सर्वश्रेष्ठ मददगार ऐ ॥ 41 ॥

لِيُضِدُّوْا عَنْ سَبِيلِ اللّٰهِ ۗ فَسَيُفْقُوْهَا
ثُمَّ يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ حَسْرَةٌ ۗ ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْسَرُوْنَ ۝۳۷

لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ
الْخَبِيْثَ بَعْضُهُ عَلٰٓى بَعْضٍ فَيَرْكُمُهُ
جَمِيْعًا فَيَجْعَلُهُ فِىۡ جَهَنَّمَ ۗ اُوْلٰٓئِكَ
هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝۳۸

قُلْ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِنْ يَنْتَهُوْا
يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۗ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا
فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاُوْلٰٓئِيْنَ ۝۳۹

وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةً
وَيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهُ لِلّٰهِ ۗ فَاِنْ اَنْتَهُوْا
فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝۴۰

وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاَعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ مُوَلِّمُكُمْ
نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝۴۱

तां समझी लैओ जे जे किश बी तुसैंगी गनीमत दे रूपै च मिलै ओहदे चा अल्लाह जां ओहदे रसूल आस्तै, ते (रसूल दे) करीबी¹ लोकें, अनार्थें, गरीबें ते मसाफरें आस्तै पंजमां हिस्सा ऐ। जेकर तुस अल्लाह पर ईमान रखदे ओ ते ओहदे पर बी जेहका असं अपने बंदे पर सच्च ते झूठ च फैसला करी देने आहले ध्याड़े नाजल कीता हा, जिस रोज जे दमैं फौजां लड़ने आस्तै आमनै-सामनै होइयां हियां (तां एहदे पर चलो/अमल करो) ते अल्लाह हर इक चीजा पर क़ादिर (समर्थ रखने आहला) ऐ ॥ 42 ॥

(उस रोज) जिसलै जे तुस (रण-भूमि दे) उरले कंठे पर हे ते ओह (बैरी) परले कंठे पर हे ते काफ़ला (यात्री दल) तुंदे शा ख'लकी बक्खी हा ते जेकर तुस उंदे कनै बा'यदा बी करदे तां बी थुआड़ा (लड़ाई करने दे) समे दे बारे च उंदे कनै मत-भेद होई जंदा (पर अल्लाह नै तुसैंगी किट्टे करी दिता) तां जे ओह उस गल्ल गी पूरा करी देऐ जिसी पूरा करने दा उसनै निश्चा करी लैता हा। (एह चमत्कार इस आस्तै बी दस्सेआ गेआ हा) जे ओह शख्स जेहका दलील कनै हलाक होई चुके दा ऐ हलाक होई जा ते जेहका दलील राहें जींदा होई चुके दा ऐ, जींदा होई जा ते अल्लाह यकीनन बौहत सुनने आहला ते बौहत जानने आहला ऐ ॥ 43 ॥

(एह उस समे दी घटना ऐ) जिसलै जे अल्लाह नै तेरे सुखने¹ च उंदी (बैरियें दी) संख्या घट्ट करियै दस्सी ही ते जेकर ओह

وَاعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ لِلَّهِ خُمُسَهُ وَاللِّرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۚ إِن كُنْتُمْ آمَنْتُمْ بِاللَّهِ وَمَا أُنزَلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ التَّقَىٰ الْجَمْعِ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤٢﴾

إِذْ أَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوَىٰ وَالرَّكْبُ أَسْفَلَ مِنْكُمْ ۗ وَلَوْ تَوَاعَدْتُمْ لِاخْتَفَاتُمْ فِي الْمِيعَادِ ۗ وَلَكِنَّ لِيَفْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا لِيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَن بَيْتِنَا وَيْحَىٰ مَنْ حَىٰ عَن بَيْتِنَا ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٤٣﴾

إِذْ يُرِيكُهُمُ اللَّهُ فِي مَتَابِكِ قَلِيلًا ۗ وَلَوْ أَرَاكَهُمْ كَثِيرًا لَّفَشَلْتُمْ

1. इसदा दूआ अर्थ एह बी होई सकदा ऐ जे सरबंधियों ते रिस्तेदारें आस्तै।
2. सुखने च बैरी दी तदाद घट्ट करियै दस्से जाने दा संकेत एह होँदा ऐ जे बैरी पर जित हासल होग ते जेकर बैरी दी गिनती ज्यादा दस्सी जा तां संकेत एह होँदा ऐ जे जित बैरी दी होग।

मुगती संख्या च दस्से जंदे तां तुस जरूर कमजोरी दसदे ते इस समस्सेआ (यानी युद्ध) दे बारे च आपस-च झगड़दे (जे युद्ध कीता जा जां नेई) पर अल्लाह नै तुसंगी सुरक्खत रक्खेआ (की जे) ओह दिलें दे भेतें गी चंगी-चाली जानदा ऐ ॥ 44 ॥

ते (याद करो) जिसलै ओह (अल्लाह) लड़ाई बेलै उनें (बैरियें) गी थुआड़ी नजरें च कमजोर¹ दस्सा करदा हा ते तुसंगी उंदी नजरें च कमजोर² दस्सा करदा हा तां जे ओह उस गल्ल गी पूरा करी देऐ जेहदा ओह फैसला करी चुके दा ऐ ते सब गल्ल अल्लाह कश गै परताइयां जाडन ॥ 45 ॥ (रुकू 5/1)

हे मोमिनो! जिसलै तुस बैरी दी कुसै सैना दे सामनै आओ तां अपने पैरे जमाई रक्खो ते अल्लाह गी बौहल³ याद करा करो तां जे तुस कामयाब होई जाओ ॥ 46 ॥

ते अल्लाह ते ओहदे रसूल दी आज्ञा दा पालन करदे र'वा करो ते आपस च मत-भेद नेई रक्खा करो जेकर तुस ऐसा करगे ओ तां दिल छोड़ी बौहगे ओ ते थुआड़ी ताकत जंदी रौहग, ते सबर करदे रौह अल्लाह यकीनन सबर करने आहलें दे कनै ऐ ॥ 47 ॥

ते उनें लोकें आंगर नेई बनो जेहके अपने घरें थमां इतरांदे होई ते लोकें गी (अपनी वीरता

وَلَسْتَزَاعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَلَكِنَّ اللَّهَ
سَلَّمَ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ④

وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ التَّفَيْتُمْ فِي
أَعْيُنِكُمْ قَيْلًا وَيُقَلِّلُكُمْ فِي
أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضَى اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا ⑤
وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ⑥

يَأْيَاهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً
فَاتَّبَعُوا وَادْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا أَلْعَلَّكُمْ
تُفْلِحُونَ ⑦

وَاطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا
فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ
وَاصْبِرُوا ⑧ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ⑨

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا

1. इस ज' गा जाग्रत अवस्था दा बर्णन ऐ सुखने दा नेई। अरबी भाशा च 'कलील'शब्द दा अर्थ कमजोर बी होंदा ऐ ते मतलब एह ऐ जे थुआड़े दिल इन्ने निडर बनाई दिते गे हे जे मुन्कर लोकें दी संख्या ज्यादा होने पर बी तुस उनेंगी तुच्छ समझदे हे ते शेरें आंगर तुसें उंदे पर हमला करदे होई उनेंगी तबाह करी दिता।
2. यानी मोमिन अपने ईमान कारण बैरियें गी डरपोक ते कमजोर समझदे हे ते बैरी ईरखा-द्वेष ते घमंड कारण मोमिनें दी ईमानी ताकत गी नजर अंदाज करा करदे हे।
3. अल्लाह गी याद करने कनै दिलै पर अल्लाह दे गुणें दा प्रकाश पौंदा ऐ ते ईमान ते हिम्मत-हौसला बधदा ऐ।

ते धार्मिक शान) दस्सेने आस्तै निकलन ते जेहके लोके गी अल्लाह दे रस्ते थमां रोकदे न, अल्लाह नेह लोके दे कर्मे गी तबाह करने दा फैसला करी चुके दा ऐ ॥ 48 ॥

ते (याद करो) जिसलै इन्कारी लोके गी शतान नै उंदे कर्म शैल बनाइयै दस्से ते गलाया जे अज्ज लोके चा कोई बी तुंदे पर गालिब नेई आई सकदा ते अ'ऊं थुआड़ा संरक्षक (थुआड़े पिच्छें/कनै) आं, पही जिसलै दमै लश्कर इक-दूए दे आमनै-सामनै होए तां ओह (शतान) अपनी अड्डियें पर फिरी गेआ ते गलान लगा जे अ'ऊं तुदे शा बे-जार (विरक्त) आं, मिगी ओह किश लम्बा करदा ऐ, जो तुसेंगी नेई लभदा। अ'ऊं अल्लाह शा डरना आं ते अल्लाह दा अजाब सख्त होंदा ऐ ॥ 49 ॥ (रुकू 6/2)

ते (याद करो) जिसलै मुनाफिक ते जिंदे दिलें च रोग हा गलांदे हे जे इनें मुसलमानें गी इंदे धर्म नै घमंडी¹ बनाई दिता ऐ। हालांके जेहका शख्स अल्लाह पर भरोसा करदा ऐ ओह दिक्खी लेंदा ऐ जे अल्लाह बड़ा गालिब ते हिकमत आहला ऐ ॥ 50 ॥

काश! तूं उस बेले दा बिचार करै जिसलै फरिश्ते मुन्करें दी जान कढदे न ते उंदे मूहें ते पिट्टी पर (एह आखदे होई) सट्टां मारदे न जे जलने आहले अजाब दा मजा चक्खो ॥ 51 ॥

एह अजाब थुआड़े हल्यें दी पैहली करतूतें दा नतीजा ऐ (एह समझी लैओ जे) अल्लाह

مَنْ دِيَارِهِمْ بَطْرًا وَرِثَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۝

وَإِذْ زَيْنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمْ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَكُمْ فَلَمَّا تَرَ آتِ الْفِتْنَيْنِ نَكَصَ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ وَقَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِّنْكُمْ إِنِّي أَرَىٰ مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

إِذْ يَقُولُ الْمُنْفِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هُوَ لَاءٌ دِيْنَهُمْ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ۝

ذَلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ

1. मुन्कर लोके दी सैना नै घमंडी बनियै लड़ाई आस्तै प्रस्थान कीता हा की जे ओह मुसलमानें गी अपने आंगर गै घमंडी समझदे हे, पर उनेंगी मुसलमानें दे ईमान दा असर/प्रभाव नथा लभदा।

अपने बंदें पर लेश-मातर बी जुलम नेई करदा ।

॥ 52 ॥

थुआड़ी दुरगत फिरऔन दी कौम दे लोकें ते उंदे शा पैहले लोकें जैसी होग, उनें अल्लाह दियें आयतें दा इन्कार कीता हा। इस आस्तै अल्लाह नै उनेंगी उंदे पापें कारण पकड़ी लैता हा। अल्लाह यकीनन बड़ी ताकत आहला ते सख्त स'जा देने आहला ऐ ॥ 53 ॥

एह (इस आस्तै होग) जे अल्लाह जिसलै कदें कुसै कौम गी इनाम दिंदा ऐ तां उस इनाम गी (उसलै तोड़ी) नेई बदलदा जिच्चर जे ओह कौम आपू अपने दिलै दी हालत नेई बदली¹ लै। यकीनन अल्लाह बौहत सुनने आहला ते बौहत जानने आहला ऐ ॥ 54 ॥

(हे मुन्कर लोको! थुआड़ी दुरगत बी) फिरऔन दी कौम दे लोकें ते उंदे शा पैहलके लोकें आंगर होग। उनें अपने रब्ब दियें आयतें गी झुटलाया हा, उसलै असें उंदे पापें कारण उंदा सर्वनाश करी दिता ते असें फिरऔन दी कौम गी डोबी दिता, की जे ओह सारे गै जालम हे ॥ 55 ॥

अल्लाह दे लागै (नजरें च) ओह लोक जानवरें शा बी गे-गुजरे दे न जिनें (खुदा दियें आयतें दा) इन्कार कीता ते ओह ईमान नेई आहनदे ॥ 56 ॥

بِظُلْمٍ لِّلْعَالَمِينَ

كَذَابِ آلِ فِرْعَوْنَ ۗ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ
إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً
اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُعَيِّرُوْا مَا
بِاَنْفُسِهِمْ ۗ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝

كَذَابِ آلِ فِرْعَوْنَ ۗ وَالَّذِينَ
مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ كَذَّبُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ
فَأَهْلَكْنَاهُمْ ۖ بِذُنُوبِهِمْ وَأَعْرَفْنَا
آلَ فِرْعَوْنَ ۖ وَكُلَّ كَانُوا ظٰلِمِيْنَ ۝

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الَّذِينَ كَفَرُوا
فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

1. मुसलमानें गी इस आयत थमां एह भलेखा लागे दा ऐ जे जिच्चर कोई कौम संसारक साधन नेई जुटाई लै, उसी त्रक्की नेई मिलदी, पर इस आयत च एह दस्सेआ गेदा ऐ जे अल्लाह जिसलै कुसै कौम गी कोई इनाम प्रदान करदा ऐ तां उस इनाम गी उस बेलै तगर नेई खूसदा जिच्चर जे उस कौम दे दिलें च बगाड़ नेई पैदा होई जा ते जेहका अर्थ इस थमां मुसलमान समझा करदे न ओह ते सारे नबियें दे बेलै झुट साबत होई चुके दा ऐ, यानी संसारक साधनें दे नेई होने पर बी ते अपने घरें दा साग धन अल्लाह दे रस्ते च खर्च करी देने पर बी रसूलें दे अनुयायी म्हेशां त्रक्की करदे रेह ते बैरियें पर विजय हासल करदे रेह। हां! दूई आयतें च बी इस बिशे दा जिकर आए दा ऐ जे मोमिनें कुदरती निजमें गी नजर अंदाज नेई करना चाही दा, पर ओह ते कुदरती सिद्धांतें चा इक निजम ऐ, ओह कोई रहानी निजम नेई ऐ।

ओह लोक जिंदे कनै तोह बा'यदा कीता, पर ओह हर बार अपना बा'यदा तोड़ी दिंदे न ते (खुदा दा) संयम अखत्यार नेई करदे ॥ 57 ॥

इस आस्तै जेकर तूं लड़ाई च उंदे पर काबू पाई लें तां उंदे राहें उनेंगी बी नसाई¹ दे जेहके लश्कर उंदे पिच्छें न तां जे ओह-नसीहत हासल करन ॥ 58 ॥

ते जेकर तुगी कूसै कौम पासेआ समझोता जोड़ी देने दा डर होऐ तां तूं इस चाली उस समझोते गी खतम करी दे जेहदे नै ओह समझी लैन जे हून तुस दमैं (पकख अपनी-अपनी पाबंदियें शा) अजाद ओ। अल्लाह ख्यानत करने आहलें गी पसंद नेई करदा ॥ 59 ॥ (रुकू 7/3)

ते इन्कारी कदें बी एह ख्याल नेई करन जे ओह (अपने छल-कपट कनै) अगें बधी गेदे न। ओह मोमिनें गी कदें बी बे-बस नेई बनाई सकदे ॥ 60 ॥

ते (हे मुसलमानो! चाही दा ऐ जे) तुस उंदे (लड़ने आहलें) आस्तै जित्थें तक होई सकै अपनी ताकतों किट्ठियां करी। अनुशासन राहें बी ते सरहददें पर छौनियां बनाइयै बी। इनें छौनियें राहें तुस अल्लाह दे बैरियें गी ते अपने बैरियें गी डरांदे ओ ते इंदे अलावा दूए बैरियें गी बी, जेहके उंदे (सरहददी दुश्मनं) शा परें न, जिनेंगी तुस नेई जानदे² पर अल्लाह उनें गी

الَّذِينَ عَاهَدْتَ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُونَ
عَاهِدَهُمْ فِي كُلِّ مَرَّةٍ وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ ﴿٥٧﴾

فَأَمَّا تَشَقَّقْتَهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ
مَنْ خَلَفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿٥٨﴾

وَأَمَّا تَخَافُ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْزِلْ
إِلَيْهِمْ عَلَى سَوَاءٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ
الْخَائِنِينَ ﴿٥٩﴾

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا
إِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُونَ ﴿٦٠﴾

وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ
وَمِنْ رِبَاطِ الْحَيْلِ تُرْهَبُونَ بِهِ وَعَدُوا اللَّهَ
وَعَدَوْكُمْ وَأَخْرَجُوا مِنْ دُونِهِمْ
تَحْمُلُونَهُمْ اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ ۗ وَمَا تُنْفِقُوا
مِنْ شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ

1. यानी ऐसी हुशयारी ते ईमानदारी कनै युद्ध करो जे दूर-दूर तगर बैरी कंबी / डरी जान ते कोई अगें आइयें हमला करने दी जु'रत नेई करी सकै।
2. इस च रोम दे सम्राट कैसर ते ईरान दे सम्राट किस्सा दे लश्करें पासैं संकेत ऐ ते दस्सेआ गेदा ऐ जे थुआड़ा फर्ज सिर्फ अरब दे बैससं गी गै उपदेश देना नेई, बल्के तुसं कैसर ते किस्सा दी सैनक शक्ति कनै बी लोहा लैना होग। इस आस्तै उंदे दिलें च बी आतंक जमाना चाही दा।

जानदा ऐ ते जे किश तुस अल्लाह दे रस्ते पर खर्च करगे ओ ओह् तुसेंगी ओहदा पूरा-पूरा बदला देग ते थुआड़े कन्ने ना-इंसाफी दा ब्यहार नेई कीता जाग ॥ 61 ॥

ते (जेकर थुआड़ी युद्ध सरबन्धी त्यारियें गी दिक्खियै) दुश्मन सु'ला करने पासै झुकन तां (हे रसूल!) तूं बी सु'ला पासै आई जा ते अल्लाह पर भरोसा रखव¹। अल्लाह सच्चें गै बौहत प्रार्थनां सुनने आहला ते बौहत जानने आहला ऐ ॥ 62 ॥

ते जेकर ओह् मनै च एह् इरादा रखदे होन जे बा'द च तुगी धोखा देन तां (चेता रखव जे) अल्लाह तेरे आस्तै सच्चें गै काफी ऐ। ऊरे ऐ जिसने तुगी मोमिनं दी मदद ते अपनी मदद राहें मजबूत कीता ॥ 63 ॥

ते उंदे दिलें गी आपस च ब'न्नी दित्ता²। जेकर तूं उंदे आस्तै जे किश धरती च ऐ खर्च करी दिंदा तां बी उंदे दिलें गी इस चाली नथा ब'न्नी सकदा, पर अल्लाह नै उंदे च आपसी प्रेम (ते तेरे कन्ने बी प्रेम) पैदा करी दित्ता। ओह् सच्चें गै गालिब ते हिक्मत आहला ऐ ॥ 64 ॥

हे नबी! अल्लाह ते ओह् मोमिन जेहके तेरे अनुयायी बनी चुके दे न तेरे आस्तै काफी न ॥ 65 ॥ (रुकू 8/4)

हे नबी! मोमिनं गी मुन्करें कन्ने युद्ध करने दी बार-बार प्रबल प्रेरना (हल्लाशेरी) दिंदा

وَأَنْتُمْ لَا تَظْلُمُونَ ﴿٦١﴾

وَإِنْ جَعَلُوا لِلْسَّلَامِ فَاجْتَبَاهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۗ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٢﴾

وَإِنْ يُرِيدُوا أَنْ يَخُدُّوكَ فَإِنْ حَسِبَكَ اللَّهُ ۗ هُوَ الَّذِي أَيْدِكَ بِضَرْمِهِ وَإِلْمُومِينَ ﴿٦٣﴾

وَأَلْفَ بَيْنٍ قُلُوبِهِمْ ۗ لَوْ أَنْفَقْتَ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَا أَلْفَتْ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ أَلْفَ بَيْنَهُمْ ۗ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٤﴾

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٥﴾

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى

1. इस बिचार कन्ने तुस नेई डरो जे ओह् लोक उसदे बा'द छल-कपट दा ब्यहार करड न।

2. इत्थें तक जे सहाबा हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम दे पसीने दी ज'गा पर अपने प्राण तक देने शा परहेज नथे करदे।

रौह। जेकर तुंदे चा बीह¹ धीरजवान मोमिन होंड न तां ओह दो सौ (मुन्कर लोकें)पर जित हासल करडन ते जेकर इक सौ धीरजवान मोमिन होडन तां इक ज्हार मुन्कर लोकें पर जित हासल करडन, की जे ओह नेह लोक न जेहके समझदे नेई (जिसलै जे मोमिन समझी-बुज्झियै अपने ईमान पर कायम न) ॥ 66 ॥

अल्लाह नै अजें थुआड़ा बोझ हल्का करी दिता ऐ ते समझी लैता ऐ जे तुंदे च अजें किश कमजोरी ऐ (यानी सब मोमिन भलेआं मोमिन नेई होए)। इस आस्तै जेकर तुंदे चा सौ धीरजवान मोमिन होन तां दो सौ मुन्कर लोकें पर विजय² हासल करडन ते जेकर तुंदे चा इक ज्हार धीरजवान मोमिन होडन तां ओह अल्लाह दी आज्ञा मताबक दो ज्हार बैरियें पर विजय हासल करडन ते अल्लाह धीरजवान लोकें दे कनै ऐ ॥ 67 ॥

कुसै नबी दी एह शान नेई जे ओह बंदी बनाऽ जिच्चर जे ओह देशै च खून नेई बगाई लै³। (जेकर तुस बाकायदा जंग कीते बगैर

الْقِتَالِ اِنَّ يَكُنْ مِنْكُمْ عَشْرُونَ صَبْرُونَ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ وَاِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ يَغْلِبُوا اَلْقَائِمِْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝

اَلَّذِيْنَ خَفَّفَ اللهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا اِلَّا اِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوا مِائَتَيْنِ وَاِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللهِ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِيْنَ ۝

مَا كَانَ لِنَبِيِّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهُ اَسْرٰى حَتّٰى يَمْخِضَ فِي الْاَرْضِ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ

1. इत्थें अल्लाह नै दस्से दा ऐ जे मोमिन अपने शा दस्स गुना ज्यादा मुन्कर लोकें पर विजय हासल करड न, की जे उस बेले तगर उंदा ईमान होर बी बधी चुके दा होग ते अल्लाह दे बा'यदे बी पूरे होई चुके दे होडन। एह गल्ल बर्तमान परिस्थिति दे बा'द होग। बर्तमान दशा च उंदे ईमान ते अल्लाह दे बा'यदें दे मताबक उंनंगी अपने शा दूने बैरियें पर विजय हासल होग।
2. अल्लाह दा एह हुकम ईमान पर आधारत ऐ। कैसर ते किस्सा दे कनै लड़ाइयें च अपने शा दस्स गुना छोड़ियै अस्सी गुना ते सौ-सौ गुना ज्यादा बैरियें कनै मुसलमानें लोहा लैता ते उंनंगी रूहाया। इसदा कारण एह ऐ जे उंनं सहाबा दा समां बी दिक्खे दा हा ते हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम दे बा'द नमें-नमें नशान ते चमत्कार बी दिक्खे हे।
3. इसदा एह अर्थ नेई जे रसूल खून बगाऽ करन, की जे इसदे खलाफ कुर'आन च तलीम मूजद ऐ। इस आयत दा सिर्फ एह अर्थ ऐ जे जेकर ओह (नबी)बैरियें दे हमलें कारण अपनी फ्हाजत आस्तै खून बगाने पर मजबूर कीता जा तां ऐसी स्थिति च ओह बंदी बी बनाई सकदा ऐ। सारांश एह जे चेचा ध्यान इस गल्ल पर दिता गेदा ऐ जे निजमें मताबक युद्ध दे बगैर बंदी बनाना नजैज ऐ। जेकर द'ऊँ कौमें दे लोकें बश्कार घोर युद्ध होई जा तां ओहदे बा'द बंदी बनाना मनासब होई सकदा ऐ।

कैदी बनागे ओ) तां तुस संसारक धन दे लोभी करार दित्ते जागे ओ। हालांके अल्लाह थुआड़े आस्तै परलोक दियां नैमतां चांहदा ऐ। अल्लाह बड़ा गालिब ते बड़ी हिक्मत आहला ऐ ॥ 68 ॥

ते जेकर अल्लाह आहले पासेआ इस शा पैहलें इक जाहरा-बाहरा हुकम¹ नेई आई चुके दा होंदा तां जे किश तुसें (कैदियें दा) फ़िद्यः लैता हा ओहदे कारण तुसेंगी बड़ा अज़ाब पुजदा ॥ 69 ॥

इस आस्तै (फ़िद्यः लैने दे सरबंधे च हुकम पैहलें आई चुके दा ऐ) जे किश तुसेंगी गनीमत दे रूपे च मिले ते ओह अल्लाह दे हुकमे मताबक लहाल ते पवित्तर होऐ तां उसी खाओ ते अल्लाह आस्तै संयम अखत्यार करो। अल्लाह बौहत बख़शने आहला ते बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 70 ॥ (रुकू 9/5)

हे नबी! जेहके लोक थुआड़े हथें च कैदियें दे रूपे च न उनेंगी गलाई देओ जे जेकर अल्लाह थुआड़े दिलें च भलाई दिक्खग तां जे किश तुंदे शा (युद्ध दी स'जा दे रूपे च) लैता गेदा ऐ ओहदे शा बेहतर तुसेंगी प्रदान करग ते (इसदे अलावा) थुआड़े पाप बी माफ करी देग ते अल्लाह बौहत बख़शने आहला ते बार-बार रैहम करने आहला ऐ। ॥ 71 ॥

ते जेकर ओह (अजाद होने दे बा'द) तेरे कनै विश्वासघात करने दा बिचार रखदे होन तां समझी लैओ जे ओह इस शा पैहलें अल्लाह कनै बी विश्वासघात करी चुके दे न, पही बी उनेंगी उसनै थुआड़े कब्जे च देई दिता ते अल्लाह बौहत जानने आहला ते बड़ी हिक्मत आहला ऐ ॥ 72 ॥

الذُّنْيَا وَاللَّهُ يَرِيدُ الْآخِرَةَ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٨﴾

لَوْلَا كُتِبَ مِنَ اللَّهِ سَبَقٌ لَمَسَّكُمْ فِيمَا آخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٦٩﴾

فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٧٠﴾

يَأَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِمَنْ فِي أَيْدِيكُمْ مِنَ الْأَسْرَىٰ ۚ إِنَّ يَعْلَمُ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا يُؤْتِيكُمْ خَيْرًا مِّمَّا أُخَذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٧١﴾

وَإِنْ يَرِيدُوا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٧٢﴾

1. फ़िद्यः लैता पैहलें थमां गै जायज करार दिता जाई चुके दा ऐ। इस आस्तै जेहके विद्वान एह लिखदे न जे अल्लाह हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम पर फ़िद्यः लैने कारण रोहें होआ, ओह बड़े भलेखे च न। हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. नै ऊऐ कम्म कीते दा ऐ जिसी करने दा अल्लाह नै उनेंगी हुकम दिता हा।

ओह लोक जेहके ईमान ल्याए न ते जिनें हिजरत कीती ते अल्लाह दे रस्ते पर अपने तन-मन-धन थमां जिहाद कीता ते जिनें (हिजरत करने आहलें गी अपने घरें च) शरण दिती जां उंदी मदद कीती ऐ, उंदे च किश लोक दूएं दे दिली दोस्त न ते ओह लोक जेहके ईमान आहनी चुके दे न ते उनें हिजरत नेई कीती उंदे कनै दिली दोस्ती करना थुआड़ा कम्म नेई जिचर जे ओह हिजरत नेई करन ते जेकर ओह तरे शा धर्म दे बारे च मदाद मंगन तां उंदी मदद करना थुआड़ा फरज ऐ सिवाए ऐसी कौम दे जे जेहदे ते थुआड़े बशकार कोई समझोता होई चुके दा होऐ ते अल्लाह थुआड़े कर्मे गी दिक्बा करदा ऐ ॥ 73 ॥

ते जिनें लोकें इन्कार कीता ऐ ओह आपस च इक-दूए दे दोस्त न। जेकर तुस ऊऐ किश जेहदी असें आज्ञा दिती दी ऐ, नेई करो तां धरती पर बड्डा फसाद ते फित्ला (अशांति) फैली जाग ॥ 74 ॥

ते ओह लोक जेहके ईमान ल्याए दे न ते जिनें हिजरत कीती दी ऐ ते जिनें अल्लाह दे रस्ते पर जिहाद कीते दा ऐ, जां जिनें (हिजरत करने आहलें गी) अपने घरें च शरण दिती दी ऐ ते उंदी मदद कीती दी ऐ, ऊऐ सच्चे मोमिन न। उंदे गुनाह बी माफ कीते जाडन ते उनें गी उत्तम रिशक बी मिलग ॥ 75 ॥

ते जेहके लोक (इस बेले दे बा'द) ईमान ल्यौडन ते हिजरत बी करडन ते थुआड़े कनै मिलियै जिहाद करडन ओह बी थुआड़ी जमात चा समझे जाडन ते किश करीबी सरबंधी दूए लोकें दी निस्वत अल्लाह दी कताब दे मताबक ज्यादा करीबी होंदे न। अल्लाह हर गल्ले गी खूब जानदा ऐ ॥ 76 ॥ (रकू 10/6)

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ أَوْوُوا وَانصَرُوا أُولَئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَهَاجِرُوا مَا لَكُمْ مِنْ وَلَايَتِهِمْ مِنْ شَيْءٍ حَتَّى يُهَاجِرُوا وَإِنْ اسْتَنْصَرُوكُمْ فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ إِلَّا عَلَى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ٧٣

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِعَهْدِهِمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٌ إِلَّا اتَّفَعَلُوهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ ٧٤

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ أَوْوُوا وَانصَرُوا أُولَئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ٧٥

وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ بَعْدِ وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا مَعَكُمْ فَأُولَئِكَ مِنْكُمْ وَأُولَئِكَ الْأَرْحَامُ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ٧٦

سُورَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَتِسْعٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَسِتَّةٌ وَعِشْرُونَ رُكُوعًا

सूर: अल्-तौब:

एह सूर: मदनी ऐ ते इस दियां इक सौ नत्तरी
आयतां ते सोलां रुकू न।

अल्लाह ते ओहदे रसूल पासेआ (इनें आयतें च) उनें मुश्रिकें (अनेकेश्वरवादियें) दे अलजाम शा मुक्त होने¹ दा इलान कीता जंदा ऐ जिंदे कन्नै तुसें शर्त लाई दी ही (जे थुआड़ी जित्त होग ते उंदी हार) ॥ 1 ॥

بَرَاءَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ
عَهِدْتُمْ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

1. मूल शब्द 'बराअतुन' दे दो अर्थ न-(क) विरक्त होना यानी बे-जार होना ते (ख) अलजाम गी दूर करना। इस जगह अलजाम गी दूर करना बेहतर अर्थ ऐ।

इस आयत च मक्का-बासियें गी दस्सेआ गोदा ऐ जे तुस हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम पर एह अलजाम लांदे होंदे हे जे थुआड़ा एह आखना हा जे अ'ऊं मक्का दा रसूल आं, जेहदी भविक्खवाणी हजरत इब्राहीम नै कीती ही एह किय्यां सच्च होई सकदा ऐ, जिसलै जे तुस मदीना उठी गेदे हे ? गल्ल एह ऐ जे हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम पवित्तर कुरआन गहें ते आपूं बी एह गलांदे होंदे हे जे मक्का शैहर दबांरा मुसलमानें गी दिता जाग। एह भविक्खवाणी पूरी चाल्ली पूरी होई जाग जे अ'ऊं मक्का दा नबी आं। इस आस्तै इस आयत च दस्सेआ गोदा ऐ जे हून अल्लाह नै अरब देश दी विजय दे बा'द हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम गी इस अलजाम थमां मुक्त करी दिता ऐ ते तुस ते तुंदे साथी इस अलजाम शा मुक्त होई चुके दे ओ।

इस सूर: दी आयत नं० 3, 5, 13. जिंदे च मुश्रिकें कन्नै युद्ध करने दा हुकम दिता गोदा ऐ उंदे च उंदे पर किये चाल्ली दा कोई जुलम नेई कीता गेआ, की जे इस सूर: दे शुरू च गै दस्सेआ गोदा ऐ जे जिनें लोकें कन्नै तुसें समझोता कीते दा ऐ तुस उंदे समझोते गी भंग नेई करगे ओ, पर उस समझोते गी ओहदी मनेआद तगर पूरा करना होग, पर समझोता करने आहले उनें मुश्रिकें दे सिवा जेहके दूए लोक थुआड़े कन्नै युद्ध करा करदे न ते उनें अजे तक युद्ध बंद नेई कीता, उंदे कन्नै उच्चर युद्ध करदे रोहना जरूरी ऐ जिच्चर जे ओह युद्ध बंद नेई करी देन। एह सिद्धांत सारे संसार नै मन्नी लैते दा ऐ। इस आस्तै जेकर इस सूर: च एह गल्ल गलाई गेदी ऐ जे युद्ध करने आहलें कन्नै तुस उच्चर युद्ध करदे र'बो जिच्चर जे ओह आपूं युद्ध बंद नेई करी देन जां थुआड़े कन्नै सु ला जां ऐमनी दा समझोता नेई करी लैन, तां एह गल्ल भलेआं न्यांs-संगत ऐ। एहदे च जुलम दी लेश-मातर बी तलीम नेई।

इस आस्तै अरब देशै च च'ऊं म्हीने¹ तगर घूमि-फिरियै दिक्खी लैओ ते समझी लैओ जे तुस अल्लाह गी हराई नेई सकदे ते एह बी समझी लैओ जे अल्लाह इन्कार करने आहल्लें गी अपमानत करियै छोड़ग। ॥ 2 ॥

فَسَيُجَازِفُ الْأَرْضَ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ
وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ
وَإِنَّ اللَّهَ مُخْرِئُ الْكَافِرِينَ ١٠

1. इस आयत च जिनें लोकें गी च'ऊं म्हीनें दी छूट दिती गेदी ऐ उंदे कन्नें सरबंधत ओह मुश्रिक (अनेकेसरवादी) न जिनें मुसलमानें कन्नें कोई समझौता नथा कीता ते उनें मुसलमानें दे खलाफ क्रियात्मक रूपै च जंग जारी रखी दी ही। इस आस्तै जेहके लोक ऐसे होन उंदा कोई हक्क नथा जे ओह अरब देशै च रौहदे, की जे उनें सरकार दे खलाफ जंग जारी रखी दी ही ते ऐसे लोकें गी कोई सरकार अपने देशै च नेई रौहन दिंदी। इत्थें कुसै शख्स गी एह शंका होई सकदी ऐ, जे च'ऊं म्हीनें बाद मक्का बासियें गी कइदी दित्ते जाने दा हुकम की दिता गेआ हा? शंका दे समाधान आस्तै एह चेता रखना चाही दा ऐ जे ऐसा हुकम पवित्र कुरआन च कुतै नेई ऐ, बल्के च'ऊं म्हीनें दी आज्ञा दा बर्णन ऐ जे च'ऊं म्हीनें तक सारे अरब च घूमि-फिरियै दिक्खी लैओ जे सारा अरब देश इस्लामी छत्र-छाया च जाई चुके दा ऐ ते थुआड़े सब इलजाम झूठे साबत होई चुके दे न। बाकी रेही एह गल्ल जे चार म्हीनें बीनेने परंत केह होग ? इसदा कुरआन मजोद च कुतै बी बर्णन नेई, पर जेकर एह मन्नी बी लैता जा जे च'ऊं म्हीनें दे बा'द उंदे निकलने दा गै हुकम हा तां बी एह कोई अत्याचार नेई, की जे एह ऐसे लोक हे जिनें हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम ते तुंदे साथियें गी मक्का थमां कइदी दिता जिनसलै जे ओह बी मक्का दे शौहरी हे ? इस आस्तै उनें जे किस कीता हा ऊरे नेहा बरताऽ उंदे कन्नें बी कीता गेआ। फी इस गल्ला पर बी बिचार करना चाही दा जे हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम नै उनें मुश्रिकें दी उलाद गी मक्का च रौहने दी अजाजत देई दिती ही। जियां अनुजहल जेहका जे मुश्रिक दे इस्लाम दा सारें शा बड्दा बैरी हा। मक्का विजय होई जाने दे मौकें ओहदे पुत्र इक्रमा नै मक्का थमां नरिसयै एबेसीनिया जाने दा इरादा करी लैता ते ओहदी घरेआहली हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम कश आई ते उसनै प्रार्थना कीती जे हे अल्लाह दे रसूल ! थुआड़ा जाति आऽ जेकर थुआड़े देशै च र'वै तां बेहतर ऐ जां ईसाइयें दे देशै च उठी जा तां बेहतर ऐ ? तुसं गलाया जे में उसी नेई कइदेआ। तां उस गलाया हे अल्लाह दे रसूल ! ओह डरियै नस्सी गेआ ऐ क्या अ'ऊं उसी बापस परताई आघां ? तुसं गलाया हां! लेई आ। ओह फी गलान लगी जे हे अल्लाह दे रसूल ! ओह बड़ा गैरतमद इन्सान ऐ ओह एह गल्ल कदें बी नेई मन्नग जे जिच्चर इस्लाम दी सचाई उसी समझा नेई आवै ओह उसी मन्नी लै। क्या ओह मुश्रिक होंदे होई थुआड़े राज च रेही सकदा ऐ ? तुसं गलाया हां! रेही सकदा ऐ। उसलै ओह उठी गेई ते अपने पति इक्रमा गी समझाइयै बापस लेई आई। पैहलें ते इक्रमा नै जकीन नेई कीता, पर घरेआहली दे भरोसा दुआने पर ते जिद्द करने पर बापस आई गेआ। ओहदी लाड़ी उसी हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम दी सेवा च लेई आई। इक्रमा नै गलाया जे हे अल्लाह दे रसूल ! मेरी लाड़ी दा आखना ऐ जे तुसं मिगी मक्का च रौहने दी इजाजत देई दिती ऐ ? तुसं गलाया जे हां! सच्च ऐ। फी उस पुच्छेआ, हे अल्लाह दे रसूल ! जिच्चर इस्लाम दी सचाई मेरी समझा च नेई आवै अ'ऊं उसी मन्नी (कबूली) नेई सकदा, क्या मीगी गैर-मुसलम ते मुश्रिक होने दी हालत च मक्का च रौहने दी अजाजत होग ? तुसं गलाया जे हां ! इस पर ओह झट्ट गलाई उट्टेआ, "ला इलाहा इल्लइल्लाहु मुहम्मदररसूलुल्लाह" (यानि अल्लाह दे सिवा कोई उपास्य नेई ते मुहम्मद अल्लाह दे रसूल न) तुसं गलाया एह केह ! हूने ते तू एह गलाऽ करादा हा जे इस्लाम मेरी समझा च नेई आया ? उसनै गलाया जे हे अल्लाह दे रसूल ! तुसं अपने सारें शा बड्डे ते इस्लाम दे पुराने बैरी दे पुत्र कन्नें एह बरताऽ कीता ऐ जे ओह मुश्रिक होंदे होई बी मक्का च रेही सकदा ऐ, ऐसा ब्यहार सच्चे रसूल दे सिवा होर कोई नेई करी सकदा। इस आस्तै थुआड़े इस फैसले करी मेरा मन पवित्र होई गेआ ऐ ते मिगी पता लगगी गेआ ऐ जे तुस सच्चे रसूल ओ। इस घटना शा साबत होंदा ऐ जे हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम बी इत्थै समझदे हे जे इस सूर: दा एह अर्थ नेई जे मुश्रिकें गी अरब थमां कइदी दिता जा बल्के सिर्फ फसाद फलाने आहले लोकें गी कइदने दी आज्ञा ऐ। जेहके मुकर इस गल्ला आस्तै त्यार होन जे ओह मुसलमानें कन्नें प्रेम-भाईचारे कन्नें रौहडन उनेंगी कइदने दा कुतै बी आदेश नेई ऐ। पवित्र कुरआन दे शब्द ते हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दा ब्यहार साबत करदे न जे इस सूर: च मुकर लोकें गी जबर ते अत्याचार कन्नें कइदने दा कोई हुकम नेई बल्के ऐसे लोकें गी कइदने दा हुकम ऐ जेहके झूठे ते उददंडी (सिफिरे) होन ते मुसलमानें दे खलाफ खड्जैतर रचदे रौहदे होन। ऐसे लोकें गी संसार दियां सब सरकारां अपने देशै थमां कइदी लांदिंया न ते एहदे च कुसै चाल्दी दी कोई बुराई नेई समझी जंदी। एह उनें लोकें दी अपानी करतूत होंदी ऐ ते अपने कुकर्म दा फल उनेंगी आपूं गै भोगना पाँदा ऐ।

अल्लाह ते उसदे रसूल पासेआ सारे लोकेँ च हज्जे अकबर¹ (बड्डे हज्ज) दे ध्याडै एह अलान कीता जंदा ऐ जे अल्लाह ते उसदा रसूल मुश्रिकेँ (दे सारे अलजामेँ) शा बरी होई चुके दे न (ते एह जे मक्का फ'ता होई चुके दा ऐ)। इस आसतै जेकर तुस (इस चमत्कार गी दिक्खियै) तोबा करो तां एह थुआड़े आसतै सारेँ शा बेहतर होग ते जेकर तुस पिट्ट फेरी लैओ तां समझी लैओ जे तुस कदं बी अल्लाह गी र्हाई नेई सकदे ते तू मुन्कर लोकेँ गी खबर देई दे जे उंदे आसतै दर्दनाक अजाब निश्चत ऐ ॥ 3 ॥

हां! मुश्रिकेँ चा जिंदे कनै थुआड़ा समझोता ऐ, फी उनेँ थुआड़े कनै होए दे कुसै बी समझोते गी नेई जोड़ेआ ते नां थुआड़े खलाफ कुसै दी मदद गै कीती, तां तुस उंदे कनै कीते गेदे समझोते गी ओहदी निश्चत मनेआद तगर नभाओ (ते उनेँगी देश धमां नेई कइठो)। अल्लाह यकीनन संयमियेँ गी पसंद करदा ऐ ॥ 4 ॥

इस आसतै जिसलै ओह चार महीने² बतीत होई जान जिंदे च (अरब दे मुन्कर लोकेँ कनै उप्परली आयतेँ च) लड़ाई करने शा रोकेआ गोआ हा (पर ओह तां बी समझोता करने आसतै नेई आए बल्के उनेँ लड़ाई जारी रक्खी ही) तां मुश्रिकेँ दे इस खास दल गी जित्थेँ बी दिक्खो कतल करो जां उनेँगी बंदी बनाई लैओ ते उनेँगी (उंदे किलेँ च) बंद करी देओ ते हर घात आहली ज'गा उंदी तक्का च बेही जाओ। इस आसतै जेकर ओह तोबा करन ते नमाज़ कायम करन ते जकात

وَأَذَانٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ وَرَسُولُهُ ۚ فَإِن تَبَتُّمُ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ وَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَأَعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝

إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُضُوا عَهْدَهُمْ سِيئًا وَلَمْ يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتِمُّوا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مَدَّتِهِمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝

فَإِذَا انْسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرْمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخُذُوهُمْ وَأَحْضُرُوهُمْ وَأَقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصِدٍ ۚ فَإِن تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

1. हज्जे अकबर आम तौरा पर उस हज्ज गी गलाया जंदा ऐ जेहका शुक्करवारें आवै, पर इस थाहरा पर उस हज्ज गी बी हज्जे अकबर गलाया गेदा ऐ जेहका मक्का फ'ता होने दे दूरे साल होआ हा, की जे इंदे शा पैहले हज्ज मुन्कर लोकेँ दे अनुशासन च होंदे हे, पर एह पैहला हज्ज हा जेहका इस्लामी राज च होआ।

2. यानी निश्चत चार महीने जिंदे च उनेँगी देश भरेँ च घूमने-फिरने दी अजाजत दिती गई ऐ।

देन तां उंदा रस्ता छोड़ी देओ¹। अल्लाह सच्चें गै बौहत बख्शाने आह्ला ते बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ। ॥ 5 ॥

ते जेकर मुश्रिकें चा कोई शख्स तेरे शा शरण मंगै तां तू उसी शरण दे, इत्थें तक जे ओह अल्लाह दियां गल्लां सुनी लै। ओहदे बा'द उसी ओहदे सुरखत थाहरै तगर पुजाई दे, की जे ओह ऐसी कौम दे लोक न जिनेंगी (असलीयत दा) इलम नेई ॥ 6 ॥ (रुकू 1/7)

अल्लाह ते ओहदे रसूल दा मुश्रिकें कनै किस चाल्ली समझोता होई सकदा² ऐ सिवाए उनें मुश्रिकें³ दे जिंदे कनै थुआड़ा समझोता मस्जिदे हराम कश होआ हा। इस आस्तै जिच्चर ओह (थुआड़े कनै) अपने समझोते पर कायम रौहन तुस बी उंदे कनै कीते गेदे समझोते पर कायम र'वो। यकीनन अल्लाह (समझोता तोड़ने शा) बचने आहलें गी गै पसंद करदा ऐ। ॥ 7 ॥

(हां ! इस चाल्ली दे मुश्रिकें गी) कोई छूट किस चाल्ली दिती जाई सकदी ऐ, की जे ओह जेकर तुंदे पर गालिब आई जान तां थुआड़ी कुसै रिश्तेदारी जां थुआड़े कुसै समझोते दी परवाह नेई करडन। ओह तुसेंगी अपनी

وَأَنَّ أَحَدًا مِّنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ
فَأَجْرُهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ كَلِمَ اللَّهِ ثُمَّ ابْلِغْهُ
مَأْمَنَهُ ۗ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦﴾

كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِنْدَ
اللَّهِ وَعِنْدَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ
عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ فَمَا اسْتَقَامُوا لَكُمْ
فَأَسْتَقِيمُوا لَهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٧﴾

كَيْفَ وَإِنْ يَظْهَرُونَ عَلَيْكُمْ لَا يَنْقُضُوا
فِيكُمْ إِلَّا الْوَلَايَةَ ۗ يَرْضُونَكُمْ
بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَىٰ قُلُوبُهُمْ ۗ

1. एहदे शा एह नतीजा नेई निकलदा जे मुन्कर लोके कनै उसलै तगर जंग करदे रैहना चाही दा जिच्चर ओह मुसलमान नेई होई जान, पर इस थाहरा पर सधारण मुन्कर लोके दा जिकर नेई बल्के उनें खास मुन्कर लोके दा जिकर ऐ जेहके अट्ट साल तगर हजरत मुहम्मद मुस्ताफा सल्लअम कनै जंग करदे रेह ते मक्का फ'ता होई जाने दे बा'द बी उनें मुसलमाने कनै समझोता करने आहली बखी कोई ध्यान नेई दिता।
2. मक्का बासी एह गल्ल फलादे हे जे सारे मुन्करे गी माफी मिली चुकी दी ऐ ते उंदे कनै समझोता होई चुके दा ऐ। पवित्रर कुरआन दा गलाना ऐ जे एह गल्ल झूठी ऐ, की जे जिच्चर ओह आपू अधीन होइयै समझोता करने दी प्रार्थना नेई करन उंदे कनै कोई समझोता कियां कीता जाई सकदा ऐ।
3. यानी उनें मुश्रिकें कनै समझोता कायम ऐ जिनें सिर्फ मक्का दी विजय गी गै समझोते दा अधार नथा करार दिता बल्के अपने आस्तै प्रार्थना करियै शरण दिते जाने दी घोशना करोआई लैती ही।

जबानी गल्लें कनै खुश करदे न। असल च उंदे दिल इनें गल्लें गी नेई मनदे ते उंदे चा ज्यादातर लोक समझोते भंग¹ करने आहले होंदे न ॥ 8 ॥

उनें अल्लाह दियें आयतें दे बदले च तुच्छ कीमत बसूल कीती ऐ ते ओहदे रस्ते शा लोकें गी रोकेआ ऐ। सच्चें गै उंदे कर्म बौहत बुरे न ॥ 9 ॥

ओह कुसै मोमिन दे बारे च कुसै रिश्ते-नाते दा लिहाज नेई करदे ते नां गै कुसै बा'यदे दा ते ओह हद्द शा बधी चुके दे न ॥ 10 ॥

इस आसतै जेकर ओह तोबा करी लैन ते नमाजें गी कायम करी लैन ते जकात देन तां ओह थुआड़े धर्म-भ्राऽ न ते अस अपनियां आयतां जानकारी रक्खने आहले लोकें आसतै तफसील कनै ब्यान करने आं ॥ 11 ॥

ते जेकर ओह लोक अपने बचन ते प्रतिज्ञा दे बा'द अपनी कसमें गी तोड़ी देन ते थुआड़े धर्म दा मजाक डुआन तां ऐसे मुन्करें दे सरदारें कनै जंग करो तां जे ओह शरारतें शा बाज आई जान की जे उंदी कसमें दा कोई भरोसा नेई ॥ 12 ॥

हे मोमिनो ! क्या तुस उस कौम कनै जंग नेई करगे ओ जिनें अपनी कसमें गी तोड़ी दिता ते रसूल गी (ओहदे घरे धमां) कड्डी देने दा फैसला करी लैता ते थुआड़े कनै जंग छेड़ने च उनें गै पैहल कीती ही। क्या तुस उंदे शा डरदे ओ ? जेकर तुस मोमिन ओ तां समझी लैओ जे अल्लाह इस गल्ला दा ज्यादा हक्कदार ऐ ते तुस उसै शा डरो ॥ 13 ॥

وَ أَكْثَرَهُمْ فَسِقُونَ ۝

اِشْتَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَوَسَدُوا عَنْ سَبِيلِهِ ۗ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلَّا وَّلَا ذِمَّةً ۗ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ۝

فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَخِوَا نَكُمْ فِي الدِّينِ ۗ وَتَفَصَّلِ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝

وَإِنْ نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ مِنْ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا أَیْمَةَ الْكُفْرِ ۗ إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُونَ ۝

أَلَا تَتَّقَاتِلُونَ قَوْمًا نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُمْ بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۗ أَتَخْشَوْنَهُمْ ۗ قَالَ اللَّهُ أَلَمْ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَوْهُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

1. एह कोरी कल्पना नेई। इस्लामी इतिहास दा इक-इक सफा इस दा गुआह ऐ।

उंदे कनै जंग करो। अल्लाह उनेंगी थुआड़े हथें राहें अज़ाब दुआग ते उनेंगी अपमानत करग ते तुसेंगी उंदे पर ग़लबा प्रदान करग ते इस चाल्ली मोमिनं दे दिलें गी (सदमें ते खौफ शा) नजात देग ॥ 14 ॥

ते उंदे (बरोधियें दे) दिलें चा गुस्से गी दूर करी देग ते अल्लाह जेहदे पर चंहदा ऐ किरपा करदा ऐ ते अल्लाह बौहत जानने आहला ते बड़ी हिक्मत आहला ऐ ॥ 15 ॥

क्या तुस समझदे ओ जे तुसेंगी इय्यां गै छोड़ी दिता जाग, हालांके अल्लाह नै हूनै तगर उनें लोकें गी जिनें तुंदे कनै जिहाद कीता ऐ (उनें लोकें दे मकाबले च जिनें जिहाद नेई कीता) जाहर नेई कीता, जेहके अल्लाह ते ओहदे रसूल ते मोमिनं दे बरुद्ध मुक्करें कनै गुप्त रूपे च सांठ-गांठ नेई करदे ते अल्लाह थुआड़े कर्म शा चंगी-चाल्ली वाकफ़ ऐ ॥ 16 ॥ (रुकू 2/8)

ऐसे मुश्रिकें गी कोई हक्क हासल नेई जे ओह अल्लाह दियें मस्जिदें गी अबाद करन जिसलें जे ओह अपने खलाफ आपू गै इन्कार दी गुआही देआ करदे न। इय्यै लोक न जिंदे कर्म अकारथ चली गे ते ओह (नरकै दी) अग्गी च इक लम्मे समे तगर बास करडन ॥ 17 ॥

अल्लाह दियें मस्जिदें गी ते ऊरे अबाद करदा ऐ जेहका अल्लाह ते आखरत आहले ध्याड़े पर ईमान रखदा ऐ ते नमाज़ गी कायम करदा ऐ ते जकात दिंदा ऐ जां अल्लाह दे सिवा कुसै शा नेई डरदा। इस आसतै ममकन ऐ जे एह नेह लोक कामयाबी आहले पासै लेते जान ॥ 18 ॥

فَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَيُخْرِجُهُمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ ﴿٩﴾

وَيَذْهَبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ وَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٥﴾

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ وَلِجَنَّةٍ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَنْ يَعْمُرُوا مَسْجِدَ اللَّهِ شَاهِدِينَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِم بِالْكَفْرِ ۗ أُولَٰئِكَ حِطَّتْ أَعْمَالُهُمْ ۗ وَفِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ ﴿١٧﴾

إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسْجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَلَمْ يَحْشَ إِلَّا اللَّهَ ۗ فَعَسَىٰ أُولَٰئِكَ أَنْ يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ﴿١٨﴾

क्या तुसें हाजियें गी पानी पलैने ते काबा गी अबाद रक्खने दे कम्मै गी उस शख्स¹ दे कम्मै आंगर समझी लैता ऐ जेहका अल्लाह ते आखरत दे ध्याड़े पर पूरा-पूरा ईमान रखदा ऐ ते उसनै अल्लाह दे रस्ते पर जिहाद कीता। अल्लाह दे कोल एह् दमै गरोह् इक-बरोबर नेई ते अल्लाह जालम कौम गी कदें बी कामयाबी पासै नेई लेंदा ॥ 19 ॥

जेहके लोक ईमान ल्याए ते उनें हिजरत कीती फी अल्लाह दे रस्ते पर अपने धन ते अपनी जान्नें राहें जिहाद कीता ओह् अल्लाह दे कोल बौहत बड्डा दरजा रखदे न ते ऊरे लोक कामयाब होने आहले न ॥ 20 ॥

उंदा रब्ब उनेंगी अपनी बौहत बड्डी रैहमत दी खबर दिंदा ऐ ते अपनी खुशी जां ऐसी जन्तों दी बी जिंदे च उंदे आस्तै रौहने आहली नैमत होग ॥ 21 ॥

ओह् उंदे च म्हेशां आस्तै बास करदे रौहडन। (याद रक्खो जे) अल्लाह कश सच्चें गै बौहत बड्डा अजर/सिला ऐ ॥ 22 ॥

हे मोमिनो ! अपने बब्बें, दादें ते भ्राएं गी अपना हकीकी (सच्चा) दोस्त नेई बनाओ जेकर ओह् ईमान दी निस्वत कुफर कनै ज्यादा प्रेम करदे होन ते तुंदे चा जेहके लोक उंदे कनै ऐसी दोस्ती करडन तां ओह् सच्चें गै जालम होडन ॥ 23 ॥

أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ أَمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَجَاهَدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَوُونَ عِنْدَ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٩﴾

الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ أَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللَّهِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿١٠﴾

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِنْهُ وَرِضْوَانٍ وَجَّئْتِ لَهُمْ فِيهَا نَجِيمٌ مُّقِيمٌ ﴿١١﴾

خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٢﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا آبَاءَكُمْ وَإِخْوَانَكُمْ أَوْلِيَاءَ إِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْإِيمَانِ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِنْكُمْ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿١٣﴾

1. किश कमजोर लोक जेहके हिजरत शा डरदे हे, पर मक्का च हाजियें दी सेवा करदे होंदे हे, मक्का फ'ता होई जाने पर हिजरत करने आहले किश लोकें पर अपनी प्रधानता ते शान जतान लगे। इस आयत च अल्लाह नै उंदे इस बिचार दा खंडन कीते दा ऐ जे हिजरत करने आहले ते मुजाहिद बौहत बड्डी शान आहले न ते दूए लोक उंदे सम्मान गी हासल नेई करी सकदे।

तू (मोमिनें गी) गलाई दे जे जेकर थुआड़े पूर्वज ते थुआड़े पुत्तर ते थुआड़े भ्राउं जां थुआड़ियां लाड़ियां (जनानियां) ते थुआड़े दूए रिश्तेदार ते ओह धन जेहका तुसें कमाए दा ऐ ते ओह कारोबार (बपार) जिंदे च तुसेंगी नुकसान होने दा डर लगगे दा ऐ जां ओह भवन जिनेंगी तुस पसंद करदे ओ, जेकर तुसेंगी अल्लाह ते उसदे रसूल जां ओहदे रस्ते पर जिहाद करने दी निस्बत ज्यादा प्यारे होन, तां तुस इंतजार करो (बलगो) इत्थें तक जे अल्लाह अपना फैसला जाहूर करी देऐ ते अल्लाह आज्ञा भंग करने आहली कौम गी कर्दे बी कामयाबी दा रस्ता नेई दसदा ॥ 24 ॥ (रुकू 3/9)

अल्लाह नेकां मौके पर थुआड़ी मदद करी चुके दा ऐ खास तौर पर हुनैन (दी लड़ाई) आहले ध्याड़े जिसलै जे थुआड़ी बड्डी जमात नै तुसेंगी घमंडी बनाई दिता हा। फी ओह (बड्डी जमात) थुआड़े कुसै कम्म नेई आई ते धरती लम्मी चैड़ी होने पर बी थुआड़े आस्तै तंग होई (घटी) गई ते तुसें पिट्ट दसदे होई मूह फेरी लैता ॥ 25 ॥

ते अल्लाह नै अपने रसूल ते मोमिनें पर अपने पासेआ शांति उतारी ते नेह लश्कर बी उतारे जिनें गी तुस दिक्खा नथे करदे ते इन्कारी लोकें गी अजाब पुजाया ते इन्कारी लोकें दा इत्थै बदला होंदा ऐ ॥ 26 ॥

ते अल्लाह ऐसी स'जा दे बा'द जेहदे पर चांहदा ऐ रैहम करी दिंदा ऐ ते अल्लाह बौहत बख्शने आहला ते बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 27 ॥

قُلْ إِنْ كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ
وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ
وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ
كَسَادَهَا وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ
إِلَيْكُمْ مِنْ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي
سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّى يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿٩﴾

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ
وَيَوْمَ حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ
فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمْ
الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَابَسَتْ
مُدْبِرِينَ ﴿٩﴾

ثُمَّ أَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ
وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْزَلَ جُودًا لَمْ
تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۗ وَذَلِكَ
جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ﴿٩﴾

ثُمَّ يَتُوبُ اللَّهُ مَنْ بَعْدَ ذَلِكَ عَلَى مَنْ
يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٠﴾

हे मोमिनो! असल च मुश्रिक गंदे¹ (ते अपवित्तर) न। इस आसतै ओह इस बरि दे बा 'द मस्जिद-हराम (काबा) कश नेई जान ते जेकर तुसेंगी गुरबत² दा खतरा होऐ ते ओह (अल्लाह) चाह तां तुसेंगी अपनी किरपा कनै जरूर मालामाल करी देग। यकीनन अल्लाह बौहत जानने आह्ला ते हिक्मत आह्ला ऐ ॥ 28 ॥

जेहके लोक अल्लाह ते आखरत दे ध्याड़े पर ईमान नेई आहनदे ते उस चीजै गी रहाम करार नेई दिंदे जिसी अल्लाह ते ओहदे रसूल नै रहाम करार दिते दा ऐ ते नां गै सच्चे धर्म गी अपनांदे न यानी ओह लोक जिनेंगी कताब दित्ती गेदी ऐ उंदे कनै युद्ध³ करो जिच्चर जे ओह अपनी मरजी कनै जजिया (सुरक्षा कर) नेई देन ते जिन्ना चिर ओह थुआड़े अधीन नेई आई जान ॥ 29 ॥ (रुकू 4/10)

ते यहूदी गलांदे न जे उजैर अल्लाह दा पुत्तर ऐ ते ईसाई गलांदे न जे मसीह अल्लाह दा पुत्तर ऐ। एह सिर्फ उंदे मूहां निकली दी गप्प ऐ। ओह अपने शा पैहलके इन्कारी लोके आहलियां गल्लां करा करदे न। अल्लाह उनेंगी हलाक करै, ओह (सचाई शा) कियां दूर होंदे जा करदे न ॥ 30 ॥

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هَذَا ۖ وَإِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيكُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ إِنْ شَاءَ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ
وَرَسُولُهُ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حَتَّى يُعْطُوا
الْجِزْيَةَ عَنْ يَدٍ وَهُمْ صَاغِرُونَ ۝

وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُرْيٌ ابْنُ اللَّهِ وَقَالَتِ
النَّصْرَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللَّهِ ۗ ذَلِكَ قَوْلُهُمْ
بِأَفْوَاهِهِمْ ۗ يَصْهَوْنَ قَوْلَ الَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْ قَبْلِ قَتْلِهِمْ اللَّهُ ۗ أَلَى
يُوقَفُونَ ۝

1. यानी उंदे बिचारे च शिकं दी गंदगी भरी दी ऐ।
2. यानी मुन्करें दे उठी जाने दे कारण बपार घटी जाने दा बिचार होऐ ते एह जे ओहदे कनै आमदन बी घट्ट होई जाग।
3. इस दा एह अर्थ नेई जे यहूदिये कनै बिला-ब'जा लड़ाई छेड़ी जा। युद्ध सरबंधी शरतां दूई ज'गा पर ब्यान कीतियां गेदियां न। उंदे चा इक बड्डी शर्त एह ऐ जे जिसलें दुशमन जालमाना हमला करी देऐ तां मुसलमान सिर्फ बचाउ करी सकदा ऐ। इस आसतै जेकर बैरी हमला करै तां ओहदे कनै जिहाद करना जायज ऐ, पर जेकर ओह हारी जा ते अधीनता स्वीकार करिये सुरक्षा कर (जिजिया) देने आसतै राजी होई जा तां युद्ध लमकाया नेई जा बल्के ओहदी पैहली भुल्लें गी बी माफ करी देना चाही दा।

उन्हें अपने विद्वानों ते राहबिं (सन्यासियों) गी अल्लाह दे सिवा अपना रब्ब बनाई लैता ऐ। इससै चाल्ली मर्यम दे पुत्तर मसीह गी बी। हालांके उनेंगी सिर्फ एह हुकम दिता गोआ हा जे ओह इक अल्लाह दी अबादत करन जेहदे अलावा होर कोई उपास्य नेई। ओह उंदे शिर्क शा पवित्रर ऐ ॥ 31 ॥

ओह चांहदे न जे अल्लाह दे नूर गी अपने मूंहां फूकां मारी बुझाई देन ते अल्लाह अपने नूर गी पूरा करने दे सिवा दूई हर गल्ला शा इन्कार करदा ऐ। भामें इन्कारी लोकें गी किन्ना गै बुरा लग्गै ॥ 32 ॥

ऊरे ऐ जिसनै अपने रसूल गी हदायत ते सच्चा धर्म देइयै भेजेआ तां जे उसी दूए सारे धर्म पर गालिब करी देरे भामें एह गल्ल मुश्रिके गी बुरी लग्गै ॥ 33 ॥

हे मोमिनो ! मते-हारे अहबार (विद्वान) ते राहबि¹ (सन्यासी) दूए लोकें दा धन नवाजब ढंगै कनै हड़प्प करदे न ते लोकें गी अल्लाह दे रस्ते थमां रोकदे न ते ओह लोक बी जेहके सुन्ना-चांदी जोड़दे न पर अल्लाह दे रस्ते पर खर्च नेई करदे उनेंगी दर्दनाक अजाब दी खबर दे ॥ 34 ॥

(एह अजाब) उस रोज होग जिसलै जे उस (किट्ठे कीते गेदे सुन्ने ते चांदी) पर ज्हनम दी अग्न भड़काई जाग फी उस (सुन्ने ते चांदी) कनै उंदे मत्थें, ते पासें ते पिट्ठी पर

إِخْتَدَوْا أَحْبَارَهُمْ وَرَبُّهُمْ أَرْبَابًا
مِّنْ دُونِ اللَّهِ وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَمَا
أَمْرُو إِلَّا لِيَعْبُدُوا إِلَهًا وَاحِدًا لَا إِلَهَ
إِلَّا هُوَ سُبْحَانَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ⑩

يُرِيدُونَ أَن يُضْفَعُوا تُورَ اللَّهِ
بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى اللَّهُ إِلَّا أَن يُتِمَّ نُورَهُ
وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ⑪

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ
الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ ۗ وَلَوْ كَرِهَ
الْمُشْرِكُونَ ⑫

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْأَحْبَارِ
وَالرُّهْبَانِ لَيَأْكُلُونَ أَمْوَالَ النَّاسِ
بِالْبَاطِلِ وَيُضَدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۗ
وَالَّذِينَ يَكْتَنِرُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ
وَلَا يُفْقَوْنَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۗ قَبَسْرُهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ⑬

يَوْمَ يُحْمَىٰ عَلَيْهَا فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَتَكْوَىٰ بِهَا
جِبَاهُهُمْ وَجُوبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ ۗ هَذَا

1. राहबि-साधु, सन्यासी ते यहूदी मंदरें दे पुजारी।

दी खराबी (शतान पासेआ) इनेंगी खूबसूरत करियै दस्सी गेदी ऐ ते अल्लाह मुन्कर कौम गी कामयाबी दा रस्ता नेई दसदा ॥ 37 ॥
(रुकू 5/11)

हे मोमिनो! तुसें गी केह् होई गेदा ऐ जे जिसलै तुसेंगी गलाया जंदा ऐ जे अल्लाह दे रस्ते पर लड़ने आस्तै (सारे मिलियै) निकलो तां तुस लोक अपने मुलख (दे प्रेम/मोह) आहले पासै झुकी जंदे ओ क्या तुस आखरत दे मकाबले च संसारक जीवन पसंद करदे ओ ? (जेकर ऐसा ऐ) तां चेता रक्खो जे संसारक जीवन दा समान आखरत दे मकाबले च सिर्फ इक तुच्छ चीज ऐ ॥ 38 ॥

जेकर तुस (सारे मिलियै अल्लाह दे रस्ते पर) लड़ने आस्तै नेई निकलगे ओ तां ओह तुसेंगी दर्दनाक अजाब देग ते थुआड़े सिवा इक दूई (होर) कौम गी बदलियै लेई औग ते तुस उसी (यानी अल्लाह गी) कोई नुकसान नेई पजाई सकगे ओ ते अल्लाह हर चीजा पर (जिसी करने दा ओह् इरादा/निश्चा करै) पूरी-पूरी समर्थ रखदा ऐ ॥ 39 ॥

जेकर तुस इस रसूल दी मदद नेई करो तां (चेता रक्खो जे) अल्लाह उस बेलै बी ओहदी मदद करी चुके दा ऐ जिसलै उसी इन्कार करने आहले लोकें द'ऊं चा इक स्हाबें देशै चा कइठी दिते दा हा जिसलै जे ओह् दमें गुफा च हे ते जिसलै ओह् अपने साथी (अबूबकर) कनै गलाऽ करदा हा जे पिछली भुल्लै-चुकै पर दुखी नेई हो। यकीनन अल्लाह साढ़े कनै ऐ। इस आस्तै अल्लाह नै ओहदे पर अपने पासेआ शांति उतारी ते नेह् लश्करें कनै ओहदी मदद कीती जिनेंगी तुस नथे दिखदे ते उनें

ع

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمْ
انفِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَتَأْقِلْتُمْ إِلَى
الْأَرْضِ ۗ أَرْضَيْتُمْ بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ
الْآخِرَةِ ۗ فَمَا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فِي
الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٣٨﴾

إِلَّا تَنْفِرُوا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۗ
وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ
شَيْئًا ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٩﴾

إِلَّا تَضُرُّوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ
الَّذِينَ كَفَرُوا تَائِيًا ثَمِينًا إِذْ هَمَّ فِي الْعَارِ
إِذ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْرَبْ إِنَّ اللَّهَ
مَعَنَا فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ
بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ

लोकें दी गल्लै गी नीचा दस्सी दिता जिनें इन्कार गी अपनाया हा ते अल्लाह दी गै गल्ल उच्चि होइयै रौहदी ऐ ते अल्लाह बड़ा गालिब ते हिक्मत आह्ला ऐ ॥ 40 ॥

हे मोमिनो ! जिहाद आस्तै निकली जाओ, भामें थुआड़े श अस्तर-शस्तर होन जां नेई ते अपने तन-मन-धन कनै अल्लाह दे रस्ते पर जिहाद करो। जेकर तुस जानदे ओ तां एह थुआड़े आस्तै बौहत बेहतर होग ॥ 41 ॥

जेकर तौले गै प्राप्त होने आह्ला लाह जां सफर निक्का होंदा तां एह लोक जरूर गै तेरे पिच्छें चली पौदे, पर उनेंगी सफर लम्मा सेही होआ, पर (हून ओह तेरी बापसी दे बाद) अल्लाह दियां सघदां खाइयै गलाडन जे जेकर साड़े बस च होंदा तां अस जरूर थुआड़े कनै निकली जंदे (एह लोक) अपनी जानें गी हलाक करदे न ते अल्लाह जानदा ऐ जे एह झूठे न ॥ 42 ॥ (रुकू 6/12)

अल्लाह नै तेरी गल्लती दे बुरे असर गी मटाई दिता ते तुगी इज्जत दिती। पर आखर तुसैं उनेंगी पिच्छें रौहने दी अजाजत की दिती ही ? (तुस उंदे कनै जाने पर जोर दिंदे) इत्थें तक जे सच्चे लोक तेरे आस्तै बाँदे होई जंदे ते तूं झूठे लोकें गी बी पन्छानी लैंदा ॥ 43 ॥

जेहके लोक अल्लाह ते आखरत दे ध्याड़ै पर ईमान रखदे न ओह अपने जान-माल कनै जिहाद करने शा बचने दी अजाजत नेई मंगदे। अल्लाह चंगी-चाल्ली संयमियें गी जानदा ऐ ॥ 44 ॥

पिच्छें रौहने दी अजाजत सिर्फ ओह मंगदे न जेहके जे अल्लाह ते आखरत आहले ध्याड़े

كَفَرُوا السُّفُلَىٰ ۗ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ
الْعُلْيَا ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

انْفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا
بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۗ
ذُرِّيَّتَكُمْ حَيْرَانًا كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا
لَاتَّبَعُوكَ وَلَكِنْ بَعَدَتْ عَلَيْهِمُ
الشُّقَّةُ ۗ وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا
لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ يُهْلِكُونَ أَنْفُسَهُمْ ۗ
وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝

عَفَا اللَّهُ عَنْكَ لِمَ أَذِنْتَ لَهُمْ حَتَّى
يَتَّبِعِينَ لَكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَتَعْلَمُ
الْكَاذِبِينَ ۝

لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ
وَأَنْفُسِهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ۝

إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ

पर ईमान नेई आहनदे ते उंदे दिलें च शक्क पैदा होई गेदे न। इस आस्तै ओह् अपने शक्क-शु'बें दी ब'जा करी कदें तांह होंदे न ते कदें तुआंह ॥ 45 ॥

ते जेकर ओह् लड़ाई आस्तै निकलने दा पक्का इरादा करदे तां ओह्दे आस्तै किश त्यारी बी करदे, पर अल्लाह नै लड़ाई आस्तै उंदा निकलना पसंद नेई कीता। इस आस्तै उनेंगी उंदे थाहें पर गै बट्हाई दिता ते उनेंगी एह् गलाई दिता गोआ (यानी उंदे मुन्कर दोस्तें गलाया) जे जेहके लोक बेही रेहदे न उंदे कन्ने गै तुस बी बेही र'वो ॥ 46 ॥

जेकर ओह् थुआड़े कन्ने मिलिये निकलदे तां गड़बड़ ते फसाद फलाने दे सिवा थुआड़ी किश बी मदद नेई करदे ते ओह् थुआड़े बशकार (फसाद फलाने आस्तै) खूब घोड़े दुड़ादे जां थुआड़े अंदर फ़िल्ता पैदा करने दी खाहश/चाह करदे ते तुंदे च बी किश ऐसे लोक मजूद न जेहके उंदे तगर पुज्जने आस्तै गल्लां सुनदे न ते अल्लाह जालमें गी खूब (भलेआं) जानदा ऐ ॥ 47 ॥

उनें इस शा पैहलें बी फ़िल्ता पैदा करना चाहया हा ते तेरे आस्तै हालात गी केई चाल्लीं नै बदलेआ हा इत्थें तक जे सच्च आई गोआ ते अल्लाह दा फैसला जाहर होई गोआ ते ओह् उस फैसले गी पसंद नथे करदे ॥ 48 ॥

ते उंदे चा किश मुनाफ़िक़ ऐसे बी हैन जेहके गलांदे न जे असेंगी (पिच्छें रौहने दी) अजाजत दिती जा ते असेंगी (लड़ाई च जाने दी) परीक्षा च नेई पाओ। चेता रक्खो जे एह् लोक पैहलें शा गै बिपता च धिरी चुके दे न ते नरक सच्चें गै मुन्कर लोकें दा नाश करने आहला ऐ ॥ 49 ॥

وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ فَمَهْمُ فِي رِيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُونَ ⑤

وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً
وَلَكِنْ كَرِهَ اللَّهُ انْبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ
وَقِيلَ اقْعُدُوا مَعَ الْقَاعِدِينَ ⑥

لَوْ خَرَجُوا فِيكُمْ مَا زَادُوكُمْ إِلَّا خَبَالًا
وَأَوْصَعُوا خَلَّكُمْ يَبْغُونَكُمْ
الْفِتْنَةَ ۗ وَفِيكُمْ سَمْعُونَ لَهُمْ ۗ وَاللَّهُ
عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ⑦

لَقَدْ ابْتَعُوا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلِ وَقَلْبُوا لَكَ
الْأُمُورَ حَتَّى جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ
وَهُمْ كَرِهُونَ ⑧

وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ ائْذَنْ لِي وَلَا تَنْتَقِبْ لِي
أَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا ۗ وَإِنَّ جَهَنَّمَ
لَمَحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ⑨

जेकर तुगी कोई लाह पुजै तां उनेगी बुरा लगदा ऐ ते जेकर तेरे पर कोई बिपता आई पवै तां गलांदे न जे असें ते पैहलें शा गै इनें औने आहले दिनें दा इंतजाम करी लैता हा ते ओह खुशी-खुशी पिट्ट फेरियै उठी जंदे न ॥ 50 ॥

तूं उनेगी गलाई दे जे असेंगी ते ऊरे पुजदा/ श्होंदा ऐ जेहका अल्लाह नै साढ़े आस्तै निश्चत करी रक्खे दा ऐ। ऊरे साढ़े कम्म करने आहला ऐ ते मोमिनें गी चाही दा ऐ जे ओह अल्लाह पर गै भरोसा रक्खन ॥ 51 ॥

तूं उनेगी आखी दे जे तुस द'ऊं भलाइयें¹ चा इक दे सिवा साढ़े बारे च कुसै दूई गल्ला दा इंतजार नेई करदे ते अस थुआड़े आस्तै सिर्फ इस गल्ला दा इंतजार करने आं जे अल्लाह तुसेंगी अपने पासेआ जां साढ़े हल्थें अजाब पजाग। इस आस्तै तुस बी इंतजार करो अस बी थुआड़े कनै इंतजार करगे ॥ 52 ॥

तूं उनेगी गलाई दे जे भाएं खुश-रजाई खर्च करो ते भाएं मुटमरजी कनै, तुंदे शा कुसै रूपै च बी (थुआड़ा) दान कबूल नेई कीता जाग की जे तुस ते आज्ञा भंग करने आहली कौम ओ ॥ 53 ॥

ते अल्लाह जां ओहदे रसूल दे इन्कार दे सिवा ते इस गल्ला दे सिवा जे ओह नमाज बड़ी सुस्ती कनै पढ़दे हे ते अल्लाह दे रस्ते पर मुटमरजी कनै खर्च करदे हे उंदे दान कबूल करने गी कुस नै रोके दा ऐ ॥ 54 ॥

إِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ^٤ وَإِنْ تُصِبْكَ مُصِيبَةٌ يَقُولُوا قَدْ أَحَدْنَا أَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَهُمْ فَرِحُونَ^٥

قُلْ لَنْ يُصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا هُوَ مَوْلَانَا^٦ وَعَلَى اللَّهِ فليتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ^٧

قُلْ هَلْ تَرَبُّصُونَ بِنَا إِلَّا أَحَدَى الْحُسَيْنِينَ^٨ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ أَنْ يُصِيبَكُمْ اللَّهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهِ أَوْ بَأَيْدِينَا^٩ فَتَرَبَّصُوا إِنَّا مَعَكُمْ مُتَرَبِّصُونَ^{١٠}

قُلْ أَنْفِقُوا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا لَنْ يُتَقَبَلَ مِنْكُمْ^{١١} إِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فَاسِقِينَ^{١٢}

وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَتُهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَبِرَسُولِهِ وَلَا يَأْتُونَ الصَّلَاةَ إِلَّا وَهُمْ كَسَالَى وَلَا يُنْفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ كَرِهُونَ^{١٣}

1. यानी ओह जां ते एह मेद लाई बैठे दे न जे अस युद्ध च वीरगति पाई जाचै जेहकी साढ़े आस्तै शहादत ते सम्मान ऐ जां युद्ध दा दूआ रूप जो विजय ऐ ओह बी साढ़े आस्तै शुभ ऐ।

इस आस्तै तू उंदे मालें (धन-दौलत) ते उंदी उलादें पर रूहान नेई हो। अल्लाह सिर्फ एह चांहदा ऐ जे इस धन ते संतान राहें उनेंगी इसै संसार च अज़ाब देऐ ते उंदे प्राण ऐसे मौकें निकलन जे ओह इन्कारी गै हों ॥ 55 ॥

فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ
إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَتَرْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ
كَافِرُونَ ﴿٥٥﴾

ते ओह इस गल्ला पर अल्लाह दियां सघंदां चुकदे न जे ओह तुंदे चा गै न। असल च ओह तुंदे चा नेई न बल्के ओह इक ऐसा गरोह ऐ जेहका बौहत डरपोक ऐ ॥ 56 ॥

وَيَخْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَمِنكُمْ وَمَا
هُمْ بِمِنكُمْ وَلَكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَفْرُقُونَ ﴿٥٦﴾

जेकर ओह कोई पनाह दी ज'गा जां छप्पी रौहने आस्तै गुफा जां बेही रौहने आस्तै कोई ठकाना पान/हासल करन तां ओह पिट्ट फेरियै दौड़दे होई तुआंह उठी जाडन ॥ 57 ॥

لَوْ يَجِدُونَ مَلْجَأً أَوْ مَخْرَجًا أَوْ
مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُونَ ﴿٥٧﴾

ते उंदे चा किश (मुनाफ़िक) नेह न जेहके दान दे बारे च तेरे पर अलजाम लांदे न। जेकर उस माल चा उनेंगी किश देई दिता जा तां ओह खुश होई जंदे न ते जेकर ओहदे चा किश नेई दिता जा तां झट्ट नराज होई जंदे न ॥ 58 ॥

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ فَإِنْ
أَعْطُوا مِنْهَا رِضْوَانًا لَّمْ يَعْطُوا
مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ ﴿٥٨﴾

ते जेकर ओह अल्लाह जां ओहदे रसूल दे दिते दे पर खुश होई जंदे ते एह आखदे जे अल्लाह गै साढ़े आस्तै काफ़ी ऐ (जेकर साढ़े पर कोई तंगी आई तां) अल्लाह अपनी किरपा कन्ने असेंगी देग ते (इसै चाल्ती) ओहदा रसूल बी। अस ते अपने अल्लाह पासै झुकने आहले आं (तां एह उंदे आस्तै बेहतर होंदा) ॥ 59 ॥ (रुकू 7/13)

وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ
وَرَسُولُهُ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا
اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَرَسُولُهُ إِنَّا إِلَى اللَّهِ
رُغَبُونَ ﴿٥٩﴾

सदके (दान) ते सिर्फ गरीबें ते मुल्हाजें आस्तै न ते उंदे आस्तै जेहके दान किट्टा करने लेई नियुक्त कीते गेदे न। इस दे अलावा उंदे

إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسْكِينِ
وَالْعَمِلِينَ عَلَيْهَا وَالْمَوْلَىٰ قُلُوبُهُمْ فِي

आस्तै जिंदे दिलें गी (अपने कन्नै¹) मलाना अभीष्ट होऐ ते इस्सै चाल्ली कैदियें ते कर्जदारें आस्तै ते (उंदे आस्तै जेहके) अल्लाह दे रस्ते पर युद्ध करदे न ते मसाफरें आस्तै न। एह् अल्लाह पासेआ कायम कीता गेदा फर्ज ऐ ते अल्लाह बौहत जानने आह्ला ते बड़ी हिकमत आह्ला ऐ ॥ 60 ॥

ते उंदे चा किश (मुनाफिक) नेह बी हैन जेहके नबी गी दुख दिंदे न ते गलांदे न जे ओह ते सिर्फ (कन्न गै) कन्न² ऐ। तू गलाई दे जे ओह कन्न ते सिर्फ थुआड़ी भलाई³ सुनने आस्तै न ते ओह अल्लाह पर ईमान रखदा ऐ ते तुंदे चा जेहके मोमिन न उंदे (बा'यदें) पर बी भरोसा रखदा ऐ ते मोमिनें आस्तै रैहमत दा कारण ऐ ते ओह लोक जेहके अल्लाह दे रसूल गी दुख दिंदे न उंदे आस्तै दर्दनाक अजाब ऐ ॥ 61 ॥

ओह तुसंगी खुश करने आस्तै अल्लाह दियां कसमां खंदे न, हालांके अल्लाह ते ओहदा रसूल बी ज्यादा हक्कदार न जे उनेंगी खुश रखवेआ जा, पर शर्त एह् ऐ जे एह् मुनाफिक सच्चे मोमिन होन ॥ 62 ॥

क्या उनेंगी एह् पता नेई जे जेहका कोई अल्लाह ते ओहदे रसूल दा बरोध करदा ऐ ओहदे आस्तै जहन्नम दी अग (निश्चत) ऐ। ओह ओहदे च बास म्हेशां तै करग ते एह् बौहत बड़्हा अपमान ऐ ॥ 63 ॥

الرِّقَابِ وَالنَّعْرَمِينَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَابْنِ السَّبِيلِ فَرِيضَةً مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ
عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٠﴾

وَمَنَّهُمُ الَّذِينَ يُؤَدُّونَ الثَّيْبَ وَيَقُولُونَ
هُوَ أَذًى طُفْلٌ أَذَنٌ خَيْرٌ لَّكُمْ يُؤْمِنُ
بِاللَّهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِينَ وَرَحْمَةٌ
لِّلَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ يُؤَدُّونَ
رَسُولَ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١١﴾

يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ لِيُرْضَوْكُمْ وَاللَّهُ
وَرَسُولُهُ أَحَقُّ أَنْ يُرْضَوْهُ إِنْ كَانُوا
مُؤْمِنِينَ ﴿١٢﴾

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّهُ مَن يُحَادِدِ اللَّهَ
وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا
ذَلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيمُ ﴿١٣﴾

1. ऐसे गैर-मुस्लम जो इस्लाम दी सचाई दा अनुसंधान करना चाहन तां इस प्रसंग कन्नै उंदी किश मदद कीती जा। इसदा एह् अर्थ नेई जे गैर-मुस्लम गी गुज्ज देइयै खरीदेआ जाई सकदा ऐ।
2. यानी लोकें दियां शकायतां गै सुनदा रौहदा ऐ।
3. यानी सुनदा ते जरूर ऐ, पर ओह थुआड़ी भलाई आस्तै सुनदा ऐ तां जे थुआड़ा कल्याण करै ते इस चाल्ली सुनाने आह्ले लोकें पर उपकार करदा ऐ।

मुनाफ़िक़ दखावे दे तौरा पर डर दा प्रदर्शन करदे न जे उंदे खलाफ़ कोई ऐसी सूर: नेई उतरे जेहकी उनेंगी (ते मुसलमानें गी) उस गल्लै शा बाकफ़ करी देरे जेहकी उंदे दिलें च छप्यी दी ऐ। तूं गलाई दे जे मजाक लैंदे जाओ। अल्लाह (सचाई दे तौर पर) इस गल्ला गी जाहर करी देग, जेहदे (प्रकट होने) शा तुस (दखावे दे तौर) डरदे ओ ॥ 64 ॥

ते जेकर तूं उंदे शा पुच्छें (जे तुस नेहियां गल्लां की करदे ओ) तां ओह जरूर इय्यै जवाब देउन जे अस ते सिर्फ़ हासा-मजाक करदे हे। तां तूं उनेंगी गलाई दे जे क्या तुस अल्लाह ते उस दियें आयतें ते उसदे रसूल कनै हासा-मजाक करदे हे ? ॥ 65 ॥

हून कोई ब्हान्ना नेई करो। तुसें ईमान आहनने दे बा'द इन्कार कीता ऐ। (इस आस्तै) एहदी स'जा भोगो। जेकर अस तुंदे चा इक गरोह गी माफ़ करी देचै ते दूए गरोह गी अजाब देचै इस आस्तै जे ओह मुलजम हे (तां एह सादा कम्म ऐ) ॥ 66 ॥ (रुकू 8/14)

मुनाफ़िक़ मड़द ते मुनाफ़िक़ जनानियां आपस च सरबंध रखदे न। ओह भैड़ियां गल्लां करने दा हुकम दिंदे न ते चंगी गल्लें दे खलाफ़ तलीम दिंदे न ते अपने हत्यें गी (अल्लाह दे रस्ते पर खर्च करने शा) रोकदे न। उनें अल्लाह गी छोड़ी दिता ऐ। इस लेई अल्लाह नै बी उनेंगी छोड़ी दिता ऐ। यकीनन मुनाफ़िक़ ना-फरमांबरदार न ॥ 67 ॥

अल्लाह नै मुनाफ़िक़ मड़दें, मुनाफ़िक़ जनानियें ते मुकरें कनै ज्हनम दी अग्गी दा बा'यदा करी रक्खे दा ऐ। ओह ओहदे च बास करडन।

يَحْذَرُ الْمُنْفِقُونَ أَنْ تَنْزَلَ عَلَيْهِمْ
سُورَةٌ تَنْبِئُهُمْ بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ ۗ قُلِ
اسْتَهْزِءُوا بِاللَّهِ مُخْرِجًا مَا تَحْذَرُونَ ۝

وَلَيْبَسَ نَحْوُصٌ وَتَلْعَبُ ۗ قُلِ ابِللّٰه وَايْتِه
وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ۝

لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ
اِيْمَانِكُمْ ۗ اِنْ تَعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ
مِّنْكُمْ يُعَذِّبْ طَآئِفَةً اٰلَهُمْ كَانُوْا
مُجْرِمِيْنَ ۝

الْمُنْفِقُونَ وَالْمُنْفِقَاتُ بِعُضْمٍ مِّنْ
بَعْضٍ يُأْمُرُونَ بِالْمُكْرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ اَيْدِيَهُمْ نَسُوا
اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ۗ اِنَّ الْمُنْفِقِيْنَ هُمُ
الْفٰسِقُوْنَ ۝

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُنْفِقَاتِ وَالْكٰفَرَ

ऊरे उंदे आस्तै काफ़ी ऐ ते (इस दे सिवा) अल्लाह नै उनेंगी अपने पासेआ दुतकारी बी दिते दा ऐ ते उंदे आस्तै इक कायम रौहने आहला अज़ाब निश्चत ऐ ॥ 68 ॥

(हे मुनाफ़िक्को ! एह अज़ाब) उनें लोकें (दी स'जा) आंगर होंग जेहके तुंदे शा पैहलें होई चुके दे न। ओह तुंदे शा ज्यादा बलवान हे ते ज्यादा धनवान हे ते ज्यादा टब्बरदार हे। इस आस्तै उनें अपने हिस्से मताबक लाह लैता ते तुसें अपने हिस्से मताबक लाह लैता, जिस चाल्ली जे तुंदे शा पैहले लोकें अपने हिस्से मताबक लाह लैता हा ते तुसें उसै चाल्ली हासा-मजाक कीता जिस चाल्ली उनें लोकें हासा-मजाक कीता हा। उंदे लोक ते परलोक सरबन्धी सारे कर्म नश्ट होई गे ते ओह लोक घाटा खाने आहले लोकें च शामिल होई गे ॥ 69 ॥

क्या इनें लोकें कश उंदियां (उनें लोकें दियां) खबरां नेई आइयां जेहके इंदे शा पैहलें होई चुके दे न यानी नूह, आद, समूद ते इब्राहीम दी कौम दे ते मद्यन दे लोके दे ते उलटाई गेदी बस्तियें दे लोकें (यानी लूत दी कौम) दियां खबरां। उंदे कश उंदे रसूल जाहरा-बाहरा चमत्कार लेइयै आए हे, (पर उनें इन्कार करी दिता ते स'जा भोगी)। अल्लाह नै उंदे पर जुलम नेई कीता बल्के ओह आपूं गै अपनी जानें पर जुलम करा करदे हे ॥ 70 ॥

ते मोमिन मड़द ते मोमिन जनानियां आपस च इक-दूए दे दोस्त न। ओह भलाई दा हुकम दिंदे न ते भैड़ियें गल्लें शा रोकदे न ते नमाज़ कायम करदे न ते जकात दिंदे न ते अल्लाह

نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا هِيَ حَسْبُهُمْ
وَلَعَنَهُمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۝

كَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً
وَكَثُرَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ فَاسْتَمْتَعُوا
بِخَلْقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلْقِكُمْ كَمَا
اسْتَمْتَعَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلْقِهِمْ
وَخُصْتُمْ كَالَّذِينَ خَاصُّوا أَوْلِيَّكَ
حِطَّتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۝
وَأَوْلِيَّكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝

أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ
نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَقَوْمِ إِبْرَاهِيمَ
وَأَصْحَابِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَتَتْهُمْ
رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۚ فَمَا كَانَ اللَّهُ
لِيُعْظِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ
يُظْلِمُونَ ۝

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ
بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ

ते उसदे रसूल दी आज्ञा दा पालन करदे न। एह् ऐसे लोक न जे अल्लाह जरूर उंदे पर रहम करग। अल्लाह गालिब ते बड़ी हिक्मत आहला ऐ ॥ 71 ॥

अल्लाह नै मोमिन मड़दें ते मोमिन जनानियें कनै ऐसी जन्तें दे बा'यदे कीते दे न, जिंदे हेठ नैहरां बगदियां न। ओह् उंदे च म्हेशां बास करडन ते सदा कायम रौहने आहली जन्तें च पवित्र नवास-स्थानें दा बी बा'यदा कीते दा ऐ ते उंदे अलावा अल्लाह दी खुशी सारें शा बड्डा इनाम ऐ (जेहका उनेंगी थ्हाग) ते ओहदा मिलना इक बौहत बड्डी कामयाबी ऐ ॥ 72 ॥ (रुकू 9/15)

हे नबी ! मुन्कर लोकें ते मुनाफिक्रें कनै जिहाद करो ते (पक्का प्रबंध करियै) उंदे पर सख्ती (कनै हमला) करो। उंदा ठकाना नरक ऐ ते ओह् (रौहने आसतै) बौहत बुरी ज'गा ऐ ॥ 73 ॥

ओह् अल्लाह दियां कसमां खंदे न जे उनें कोई बुरी गल्ल नेई आखी। हालांके उनें कुफर दी गल्ल आखी ऐ ते इस्लाम गी मन्नी लैने दे बा'द इन्कार कीता ऐ ते इस्लाम धर्म दे खलाफ ऐसी बुरी गल्लें दा इरादा कीता ऐ जिनेंगी ओह् हासल नेई करी सकदे ते उनें मुसलमानें कनै सिर्फ इस आसतै दुश्मनी कीती जे अल्लाह ते ओहदे रसूल नै उनेंगी अपनी किरपा कनै मालदार बनाई दिता हा। इस आसतै जेकर ओह् तोबा करन तां उंदे आसतै बेहतर होग ते जेकर ओह् पिट्ट फेरियै उठी जान तां अल्लाह उनेंगी संसार च बी ते आखरत च बी दर्दनाक अजाब देग ते इस ज्हांन च नां कोई उंदा दोस्त होग ते नां गै मददगार ॥ 74 ॥

الرَّكُوعَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
أُولَئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ
عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾

وَعَدَّ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
وَمَسْكِنٍ ظَنِيْبَةٍ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ
وَرِضْوَانٍ مِّنَ اللَّهِ أَكْبَرَ ذَلِكَ هُوَ
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٧٢﴾

يَأْتِيهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ
وَاعْلَظْ عَلَيْهِمْ وَمَا لَهُمْ جَهَنَّمَ
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٧٣﴾

يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ مَا قَالُوا وَلَقَدْ قَالُوا
كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ
وَهُمْ مُّوَابِمَا كَفَرُوا وَمَا نَقَمُوا إِلَّا
أَنْ أَغْنَاهُمْ اللَّهُ وَرَسُولُهُ مِنْ فَضْلِهِ
فَلَنْ يَتُوبُوا إِلَيْكَ خَيْرَ إِلْتِمَاسٍ
يُعِدُّ لَهُمُ اللَّهُ عَذَابًا أَلِيمًا فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ فِي الْأَرْضِ مِنْ وَلِيٍّ
وَلَا نَصِيرٍ ﴿٧٤﴾

ते इंदे च (किश लोक) ऐसे बी हैन जेहके अल्लाह कनै एह बा'यदा करदे न जे जेकर ओह (अल्लाह) असेंगी अपनी किरपा कनै किश देग तां अस जरूर उसदे रस्ते पर दान करगे ते अस जरूर भले-मानस बनी जागे ॥ 75 ॥

ते जिसलै अल्लाह नै उनेंगी अपनी किरपा कनै धन प्रदान कीता तां उनें (ओहदे रस्ते पर खर्च करने च) कंजूसी कीती ते अपनी पुरानी घासी पासै परतोई गे ते (अल्लाह ते रसूल दिये गल्लें शा) बे-परवाही करदे होई पिट्ट फेरी लैती ॥ 76 ॥

इस आस्तै (नतीजा एह होआ जे) उसनै उंदे दिलें च उस दिनै तगर फुट्ट पाई दिती जिस रोज जे ओह ओहदे नै मलाटी करडन, की जे उनें जेहका बा'यदा अल्लाह कनै कीता हा ओहदी खलाफबरजी कीती ते इस करी जे ओह झूठ बोलदे होंदे हे ॥ 77 ॥

क्या उनेंगी पता नथा जे अल्लाह उंदे गुप्त ते जाहस मशबरें गी बी जानदा ऐ ते एह जे अल्लाह पूरी चाल्ली गैब दिये गल्लें शा वाकफ ऐ ॥ 78 ॥

एह (मुनाफिक्र गै) न जेहके मोमिनें चा खुशी कनै बधी-चढ़ी दान करने आहले लोकें पर तन्ज करदे न ते उंदा बी मौजू कसदे न जेहके अपनी (मैहनत कनै) कमाई दी धन-दौलत दे अलावा कोई समर्थ नेई रखदे। अल्लाह उनें (उंदे चा कट्टर बैरिये) गी मजाक दी स'जा देग ते उनेंगी दर्दनाक अज्ञाब पुज्जग ॥ 79 ॥

وَمَنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنۡ اٰتٰنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَنصَّدُقْنَ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٩﴾

فَلَمَّآ اٰتٰهُمْ مِّنۡ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿١٠﴾

فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِىۡ قُلُوْبِهِمْ اِلَىۡ يَوْمٍ يَّلْقَوْنَہٗ بِمَا اٰخَفَوْا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿٧٧﴾

اَلَمْ يَعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلٰمُ الْغُیُوْبِ ﴿٧٨﴾

الَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُضْطَوِّعِيْنَ مِنْ الْمُؤْمِنِيْنَ فِى الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ۗ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٩﴾

तू उंदे आस्तै माफी मंग जां नेई मंग (उंदे आस्तै इक बरोबर ऐ)। जेकर तू उंदे आस्तै स्हत्तर¹ बार बी माफ करी देने दी प्रार्थना करगा तां बी अल्लाह उनेंगी कदें माफ नेई करग। एह इस लेई होग जे उनें अल्लाह ते रसूल दा इन्कार कीता ते अल्लाह आजा भंग करने आहली कौम गी कदें बी कामयाबी दा रस्ता नेई दसदा ॥ 80 ॥ (रुकू 10/16)

अल्लाह दे रसूल दे हुकम दे खलाफ (जिहाद शा) पिच्छें छोड़े गेदे मुनाफिक़ लोक अपनी ज'गा बेही रोहने पर अत खुश न ते उनें अपने प्राणें ते अपने धन कनै जिहाद करना बुरा समझेआ हा ते इक-दूए कनै गलाया हा जे ऐसी गर्मी च युद्ध आस्तै किट्टे होइयै नेई निकलो। तू उनेंगी गलाई दे जे नरकै दी अग (इस गर्मी शा बी) मती तेज ऐ। काश ! ओह इस गल्ला गी समझन ॥ 81 ॥

इस आस्तै चाही दा ऐ जे ओह अपने छल-कपट पर थोढ़ा खुश ते होन पर (अपने कर्में दे सिले पर) मता रोन ॥ 82 ॥

फी जेकर अल्लाह तुगी उंदे चा कुसै इक गरोह पासै परताई लेई आवै ते ओह लोक (कुसै होने आहली) जंग आस्तै जाने दी अजाजत मंगन तां तू उनेंगी गलाई दे जे भविक्ख च तुसंगी मेरे कनै युद्ध आस्तै जाने दी कदें बी अजाजत नेई होग ते तुस कदें बी मेरे कनै मिलियै बैरी कनै युद्ध नेई करी सकगे ओ (की जे) तुस पैहली बार (पिच्छें) बेही रोहने पर खुश होई गे हे। इस आस्तै (आयंदा) पिच्छें रेही जाने आहलें कनै म्हेशां बेही र'वा करो ॥ 83 ॥

اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝

فَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلَافَ رَسُولِ اللَّهِ وَكَرِهُوا أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَالُوا لَا تَنْفِرُوا فِي الْحَرِّ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ حَرًّا لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ ۝

فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَوَيْبُكُوا كَثِيرًا جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

فَإِنْ رَجَعَكَ اللَّهُ إِلَى طَائِفَةٍ مِنْهُمْ فَاسْتَأْذَنُوكَ لِلْخُرُوجِ فَقُلْ لَنْ تَخْرُجُوا مَعِيَ أَبَدًا وَلَنْ تُنْقَاتُوا مَعِيَ عَدُوًّا إِنَّكُمْ رَضِيتُمْ بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوا مَعَ الْخُلَفَاءِ ۝

1. एह अरबी दा मुहावरा ऐ जियां जे सङ्घे देशें च 'सौ बार' दा मुहावरा प्रचलत ऐ। भाव एह ऐ जे भाएं किन्नी बारी बी उंदे आस्तै प्रार्थना करो अल्लाह उंदे बारे च कदें बी प्रार्थना कबूल नेई करग।

ते जेकर उंदे चा कोई मरी जा तां ओहदी नमाज़ (जनाजा) नेई पढ़ा कर ते नां ओहदी कबरे पर (प्रार्थना आस्तै) खड़ोआ कर, की जे उनें अल्लाह ते ओहदे रसूल दा इन्कार कीता ते ऐसी हालत च मरे न जिसलै जे ओह ना-फरमांबरदार होआ करदे हे ॥ 84 ॥

ते उंदे धन-दौलत ते उंदी संतान तुगी रहानगी च नेई पान। अल्लाह उनेंगी इंदे राहें इस लोक च दुख पुजाना चांहदा ऐ ते उंदे प्राण इस हालत च निकलन जे ओह मुन्कर गै होन ॥ 85 ॥

ते जिसलै कोई सूर: (इस हुकम कनै) नाज़ल होंदी ऐ जे अल्लाह पर ईमान ल्याओ ते ओहदे रसूल कनै मिलियै जिहाद करो तां उंदे चा मालदार लोक तेरे शा अजाजत मंगन लगी पौंदे न ते गलांदे न जे-असेंगी पिच्छें छोड़ी जाओ तां जे अस इनें लोके कनै रौहचै जेहके जे पिच्छें बौहने आहले होडन ॥ 86 ॥

ओह इस गल्ला पर खुश न जे पिच्छें बेही रौहने आहले कबीलें च शामिल होई जान ते उंदे दिलें पर मोहर करी (यानी लाई) दित्ती गेई ऐ। इस आस्तै ओह (अपने कुकर्में दी ब'जा करी) नेई समझदे ॥ 87 ॥

पर एह रसूल (यानी हज़रत मुहम्मद मुस्ताफ़ा सल्लअम) ते ओह जेहके एहदे कनै (अल्लाह पर) ईमान ल्याए न ते जिनें अपनी धन-दौलत ते अपनी जानें राहें जिहाद कीता ऐ उंदे आस्तै हर चाल्ली दियां भलाइयां न ते ऊरे आखर कामयाब होने आहले न ॥ 88 ॥

وَلَا تَصِلْ عَلَىٰ أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا
وَلَا تَقُمْ عَلَىٰ قَبْرِهِ ۗ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ
وَرَسُولِهِ وَمَاتُوا وَهُمْ فَسِقُونَ ﴿٨٤﴾

وَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ ۗ إِنَّمَا
يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا
وَتَرْهَقَ أَنْفُسَهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿٨٥﴾

وَإِذَا أَنْزَلَتْ سُورَةٌ أَنْ أَمِنُوا بِاللَّهِ
وَجَاهَدُوا مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذَنَكَ أُولُو
الظُّلُمِ مِنْهُمْ وَقَالُوا ذَرْنَا نَعْمُكَ مَعَ
الْقَعْدِيِّينَ ﴿٨٦﴾

رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ
وَطَبَعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ قَهْمٌ لَا يَقْفَهُونَ ﴿٨٧﴾

لَكِنِ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ
جَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۗ وَأُولَٰئِكَ
لَهُمُ الْخَيْرَاتُ ۗ وَأُولَٰئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ﴿٨٨﴾

अल्लाह नै उंदे आस्तै ऐसे सुर्ग त्यार कीते दे न जिंदे हेठ नैहरां बगदियां न। ओह उनें बागों च म्हेशां बास करडन। एह बौहत बड्डी कामयाबी ऐ ॥ 89 ॥ (रुकू 11/17)

ते मदीना शैहरै दे आसे-पासे दे जंगलें (ते निक्के ग्राएं-पिंडें) दे बासियें चा ब्हान्ना बनाने आहले किश लोक आइयै आखदे न जे उनेंगी बी पिच्छें रौहने दी अजाजत दिती जा ते ओह लोक जेहके अल्लाह ते ओहदे रसूल कनै झूठ बोलदे न (बगैर अजाजत लैते गै) पिच्छें बेही रेह न। उंदे चा मुन्कर लोकें गी सच्चें गै दर्दनाक अज़ाब पुज्जग ॥ 90 ॥

(पर हे रसूल !) जेहके स्हेई मैहनें च कमजोर न ते बमार न ते जिंदे कोल रस्ते दा खर्च नेई ऐ, उंदे पर (पिच्छें रेही जाने करी) कोई दोश नेई जिसलै जे ओह अल्लाह ते ओहदे रसूल दे सच्चे शरधालू न। (एह परोपकारी लोक न) ते परोपकारी लोकें पर कोई इलजाम नेई ते अल्लाह बौहत बख्शाने आहला ते बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 91 ॥

ते नां उनें लोकें पर (कोई इलजाम ऐ) जेहके तैरे कश उसलै आए जिसलै जे जंग दा अलान कीता गेदा हा तां जे तू उनेंगी कोई सुआरी¹ देयें, तां तोह जवाब दिता जे मेरे कश कोई चीज नेई ऐ जेहदे पर अ'ऊं तुसेंगी सुआर करां ते (एह जवाब सुनियै) ओह उठी गे ते

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

وَجَاءَ الْمُعَذِّرُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَى وَلَا عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يَنْفِقُونَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ سَبِيلٍ وَاللَّهُ عَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا أَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَا أَجِدُ مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوْا وَأَعْيَيْتَهُمْ تَقْيِضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوا مَا يَنْفِقُونَ ۝

- हदीसें च इनें लोकें दा जिकर इय्यां औंदा ऐ जे उनें गलाया जे अल्लाह दी सोह ! अस सुआरी दी प्रार्थना लेइयै नथे गे बल्के सुआरी कनै साढ़ा मतलब नुक्कां बगैरा हा तां जे उनेंगी लाइयै अस तपदी बड्गाटी आहली धरती पर चली सकचै। पवित्र कुर'आन दे शब्द बी इसी बरदाशत करदे न, की जे उंदा शब्दी अर्थ इय्यै ऐ जे असेंगी कोई ऐसी चीज देओ जिसी अधार बनाइयै अस लड़ाई आहली ज'गा तगर पुज्जी सकचै ते एहदे शा नुक्कां बगैरा बी समझियां जाई सकदियां न। ओह ऐसी गुरबत दा समां हा जे हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. मुजाहिदें गी जोड़े जां चपल तक बी नथे देई सकदे। (फ़तह्लबयान)

दुखै कारण उंदी अक्खीं चा अत्थरूं बगा करदे हे जे अफसोस! उंदे कश किश नेई जिस्सी ओह् (अल्लाह दे रस्ते पर) खर्च करन ॥ 92 ॥

अलजाम सिर्फ उनें लोकें पर ऐ जेहके इस हालत च अजाजत मंगदे न जे ओह् मालदार होंदे न, ओह् पिच्छें बेही रौहने आहले कबीलें कनै (बेही रैहने पर) राजी होई गे ते अल्लाह नै उंदे दिलें पर मोहर करी दित्ती, पर ओह् (ऐसे न जे) समझदे गै नेई ॥ 93 ॥

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ
وَهُمْ أَغْيَاءٌ رَّضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ
الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ
فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٩٣﴾

जिसलै तुस लड़ाई थमां परतोइयै बापस इंदै कश औंदे ओ तां ओह थुआड़े कश आइयै केई चाल्ली दे बहाने बनांदे न। तू उनेंगी गलाई दे जे बहाने नेई बनाओ। अस (थुआड़े बहाने गी) कदें नेई मनगे। अल्लाह नै असंगी थुआड़े हालातें दी खबर देई दित्ती ऐ ते अल्लाह ते उसदा रसूल थुआड़े कर्म गी भांपदे (जाचदे) रौहडन, फी तुसंगी जाहरी-बाहरी जां गुप्त गल्लें गी जानने आहले अल्लाह दे सामनै लेता जाग, इस आस्तै ओह तुसंगी थुआड़े कर्म दी असलीयत शा वाकफ कराग ॥ 94 ॥

जिसलै तुस उंदे पासै परतोगे ओ तां ओह थुआड़े सामनै अल्लाह दियां कसमां खाडन तां जे तुस उनेंगी माफ करी देओ। इस आस्तै (अस बी तुसंगी आखने आं जे) तुस उनेंगी माफ करी देओ, की जे ओह गंदे न ते उंदे कर्म कारण उंदा नवास-स्थान पैहलें थमां गै जहन्नम निश्चत होई चुके दा ऐ ॥ 95 ॥

ओह थुआड़े सामनै कसमां खाडन तां जे तुस उंदे पर खुश होई जाओ। इस आस्तै जेकर तुस उंदे पर खुश बी होई जाओ तां बी अल्लाह ना-फरमान लोके पर खुश नेई होग ॥ 96 ॥

ग्राएं (ते जंगलें) च रौहने आहले अरब लोक इन्कार करने च ते मुनाफिकत च (सारे अरबें शा) बधी चुके दे न ते (मूर्खता दे कारण) इस गल्ला दे हक्कदार न जे जे किश अल्लाह नै अपने रसूल पर उतारे दा ऐ ओहदी हददें गी नेई पन्धानी सकन ते अल्लाह बौहत जानने आहला ते हिक्मत आहला ऐ ॥ 97 ॥

يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ ۖ
إِلَيْهِمْ قُلْ لَا تَعْتَذِرُوا لَنْ نُؤْمِنَ لَكُمْ
قَدْ نَبَأَ اللَّهُ مِنْ أَعْبَارِكُمْ ۖ وَسَيَرَى اللَّهُ
عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ﴿٩٤﴾

سَيَخْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا انْقَلَبْتُمْ
إِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوا عَنْهُمْ ۖ فَأَعْرِضُوا
عَنْهُمْ ۗ إِنَّهُمْ رَجِسٌ ۖ وَمَا وَهُمْ
بِعِزَّةِ جَزَاءِ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٩٥﴾

يَخْلِفُونَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَإِنْ
تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَىٰ عَنِ
الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٩٦﴾

الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا وَأَجْدَرُ
أَلَّا يَعْلَمُوا حُدُودَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ
رَسُولِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٩٧﴾

ते ग्राएँ (ते जंगलें) च रौहने आहले (अरब) लोकें चा किश लोक ऐसे बी हैन जेहके अल्लाह दे रस्ते पर खर्च कीते दे धन गी चट्टी समझदे न ते थुआड़े आस्तै (समानी) गरदशें दे इंतजार च रौहदे न। (सुनो!) बुरी गरदश उंदे पर गै औग ते अल्लाह खूब सुनने आह्ला ते जानने आह्ला ऐ ॥ 98 ॥

ते ग्राएँ (ते जंगलें) च रौहने आहले (अरब) लोकें चा किश लोक ऐसे बी हैन जेहके अल्लाह पर ते आखरत दे ध्याड़े पर इमान रखदे न ते जे किश (खुदा दे रस्ते पर) खर्च करदे न ओह उसी अल्लाह दी नजदीकी ते रसूल दियें प्रार्थनें दी प्राप्ति दा साधन समझदे न। सुनो! एह कर्म उंदे लेई जरूर अल्लाह दी नजदीकी दा अधार बनग। अल्लाह जरूर उनेंगी अपनी रैहमत च दाखल करग। की जे अल्लाह बौहत बख्शने आह्ला ते बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 99 ॥ (रुकू 12/1)

ते मुहाजरीन ते अन्सार चा जेहके लोक अगमें निकलने आहले न ते ओह लोक बी जिनें पूरी चाल्ली आज्ञा पालन करदे होई उंदा अनुसरण कीता अल्लाह उंदे पर खुश होई गेआ ते ओह अल्लाह पर खुश होई गे। उस (अल्लाह) नै उंदे आस्तै ऐसा सुर्ग त्यार कीते दा ऐ जेहदे हेठ नैहरां बगदियां न। ओह उंदे च म्हेशां आस्तै बास करडन। एह बौहत बड़्डी कामयाबी ऐ ॥100 ॥

ते ग्राएँ (ते जंगलें) च रौहने आहले (अरब) लोकें चा जेहके थुआड़े आसै-पासै रौहदे न मुनाफ़िक बी न ते मदीना दे बासियें चा बी

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَن يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَابِرَ ۗ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٩٨﴾

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرْبًا عِنْدَ اللَّهِ
وَصَلَوَاتِ الرَّسُولِ ۗ أَلَا إِنَّهَا قُرْبَةٌ
لَّهُمْ ۗ سَيُدْخِلُهُمُ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ ۗ إِنَّ
اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٩٩﴾

وَالسَّبِقُونَ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ
وَالْأَنْصَارِ وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَانٍ ۗ
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ وَأَعَدَّ
لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ
فِيهَا أَبَدًا ۗ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٠٠﴾

وَمَنْ حَوْلَكُم مِّنَ الْأَعْرَابِ
مُنَافِقُونَ ۗ وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ مَرَدُوا
عَلَيْكُمْ وَكُفِرُوا بِكُمُ الْإِسْلَامَ

(किश लोक ऐसे न) जेहके मुनाफ़िकत पर हठ करदे न। तू उनेंगी नेई जानदा, पर अस उनेंगी जानने आं। अस उनेंगी दो बार¹ अज़ाब देगे। फी ओह इक बौहत बड़डे अज़ाब आहले पासै परताए जाडन ॥ 101 ॥

ते किश दूए लोक नेह न जिनें अपने गुनाहें गी कबूल करी लैता। उनें भले कर्म गी किश दूए बुरे कर्म कनै मलाई दिते दा हा। लागै (ममकन) ऐ जे अल्लाह उंदे पर अपनी किरपा करी देऐ। अल्लाह बौहत बख़्शने आहला ते बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 102 ॥

(हे रसूल!) इनें मोमिनें दे धन चा सदका लै तां जे तू उनेंगी पवित्र करै ते उंदी त्रक़ी दे साधन उपलब्ध करै ते उंदे आस्तै प्रार्थना बी करदा रौह, की जे तेरी प्रार्थना उंदे संदोख दा कारण ऐ ते अल्लाह तेरी प्रार्थनें गी बौहत सुनने आहला (ते हालात गी) जानने आहला ऐ ॥ 103 ॥

क्या उनेंगी पता नेई जे अल्लाह गै ऐ जेहका अपने भगतें दी तोबा (प्राहचि़त) गी कबूल करदा ऐ ते उंदे शा सदके (दान) बी लैदा² ऐ (रसूल नेई लैदा) ते अल्लाह गै ऐ जेहका तोबा कबूल करने आहला ते बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 104 ॥

ते उनेंगी गलाई दे जे अपनी ज'गा कम्म करदे जाओ। अल्लाह ते ओहदा रसूल ते मोमिन लोक जरूर थुआड़े कर्म दी सचाई गी दिखदे

عَلَى التَّفَاقُحِ ۖ لَا تَعْلَمُهُمْ نَحْنُ
نَعْلَمُهُمْ ۖ سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ
يُرَدُّوْنَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ﴿٩﴾

وَآخِرُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا
عَمَلًا صَالِحًا وَآخِرَسِيئًا ۖ عَسَىٰ لِلّٰهِ أَنْ
يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۗ إِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٠﴾

خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ
وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۗ إِنَّ
صَلَوَاتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ۗ وَاللّٰهُ سَمِيعٌ
عَلِيمٌ ﴿١٠﴾

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ
عَنْ عِبَادِهِ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ ۗ وَاللّٰهُ هُوَ
التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١١﴾

وَقُلِ اعْمَلُوا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ
وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ ۗ وَسُرَدُّوْنَ إِلَىٰ

1. पैहली बार जिसलै जे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लैहि वसल्लम वसल्लम वसल्लम दी बफात (सुर्गबास) दे बा'द मुनाफ़िके ते उंदे साथिये दी तबाही होई, दूई बार ते इनें मुनाफ़िके दी मेदें दा भंडार गै तबाह होई गेआ यानी ईसाई धर्म अपनाने आहले अरबें दा सर्वनाश होआ।
2. सदका जां दान गरीब ते परबस्स लोकें आस्तै खर्च कीता जंदा ऐ। ओह नां ते अल्लाह आस्तै खर्च होंदा ऐ ते नां ओहदे रसूल आस्तै।

रौहडन ते तुस जरूर गै हाजर ते गैब (जाहर ते गुप्त) दे जानने आहले अल्लाह पासै परताए जागे ओ ते ओह थुआड़े कर्म दी सचाई तुसंगी दस्सग ॥ 105 ॥

ते किश ऐसे लोक बी हैन जेहके खुदा दे हुकम दे इंतजार च छोड़े¹ गेदे न। (उसी पूरा अखत्यार ऐ जे) भामें उनेंगी अज्ञाब देऐ जां उंदी तोबा कबूल करै ते अल्लाह जानने आहला ते हिक्मत आहला ऐ ॥ 106 ॥

ते ओह लोक जिनें² इक मस्जिद नुकसान पुजाने, कुफर दा प्रचार करने ते मोमिमें बशकार फुट्ट पाने आस्तै बनाई ऐ ते जेहका शख्स अल्लाह ते ओहदे रसूल कनै लड़ी चुके दा ऐ ओहदे आस्तै घात लाइयै बौहने दा थाहर बनाने आस्तै ओह जरूर सघंद चुकडन जे इस मस्जिद दे बनाने च साढ़ा मकसद सिर्फ भलाई करना हा ते अल्लाह गुआही दिंदा ऐ जे ओह जरूर गै झूठ बोल्ला करदे न ॥ 107 ॥

(हे नबी!) तूं इस (मस्जिद) च कदें बी नेई खड़ोऽ। ओह मस्जिद जेहदी नीह पैहले दिने शा गै संयम पर रखी गेदी ऐ एह ज्यादा हक्क रखदी ऐ जे तूं ओहदे च (नमाज पढ़ने आस्तै) खड़ा होऐं। ओहदे च (औने आहले) ऐसे लोक न जिंदी खाहश एह ऐ जे ओह

عَلَيْهِ الْعَيْبُ وَالشَّهَادَةُ فَيَنْبِتُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۞

وَأَخْرُوكَ مُرَجُونَ لِأَمْرِ اللَّهِ إِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَإِمَّا يَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلَيْهِمْ حَكِيمٌ ۞

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَكُفْرًا وَتَفْرِيقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَإِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ مِنْ قَبْلُ ۚ وَيَخْلِفْنَ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا الْحُسْنَىٰ ۗ وَاللَّهُ يَسْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۞

لَا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا ۗ لِمَسْجِدٍ أُسِّسَ عَلَى التَّمْوِيلِ مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُومَ فِيهِ ۗ فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَنْ يَتَّظَّهُرُوا ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُتَّظِّهِرِينَ ۞

1. यानी उदै खलाफ कोई कारबाई नेई कीती जाग जिच्चर जे अल्लाह दा हुकम नेई आई जा।
2. जिसलै इस्लाम धर्म त्रक्की करी गेआ ते मुनाफिक नराश होई गे। तां उनेंगी अबू-आमिर राहिब नै सनेहा भजेआ जे मेरे आस्तै मुसलमानें शा अलग इक भवन दा निर्मान करो, उस थाहरा पर आइयै सलाह करियें रोम दे बादशाह कैसर कश जाड ते ओहदे लश्कर राहें मदीना पर हमला कराई देड। उस बेलै मस्जिद-नबवी दे सिवा इक होर मस्जिद मदीना दे कंढे पर मुसलमानें दी ही (खालस मोमिनें दी ही)। मुनाफिकें अबू-आमिर गी छपालने आस्तै इक बक्ख मस्जिद बनाई ते हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम गी ओहदे च नमाज पढ़ाने दी प्रार्थना कीती, पर अल्लाह नै उनेंगी म'ना करी दिता। अबू-आमिर नै मूर्खतावश एह समझेआ जे कुसै शख्स नै जसूसी करी दिती ऐ ते ओह मदीना छोड़ियै नस्सी गेआ। ओहदा नस्सी जाना मुसलमानों ते रूमियें बशकार जंग दा मूजब बनेआ ते मुसलमानें दी विजय होई।

बिल्कुल पवित्र होई जान ते अल्लाह पूरी चाल्ली नै पवित्र-पाक रौहने आहलें गी पसंद करदा ऐ ॥ 108 ॥

क्या ओह शख्स ज्यादा अच्छा ऐ जो अपने मकानै दी नीह अल्लाह दे संयम ते रजामंदी पर रखदा ऐ जां ओह शख्स जो अपने मकानै दी नीह इक तलैहटमें कंढे पर (यानी ल्हेसमें दंदे पर) जेहका डिग्गा (फट्टा) करदा होंदा ऐ? फी ओह कंढा (दंदा) उस मकानै समेत नरकै दी अग्गी च डिग्गी जंदा ऐ ते अल्लाह जालम कौम गी (कामयाबी दा) रस्ता नेई दसदा ॥ 109 ॥

ओह नीह जेहकी उनें रक्खी ही ओह उंदे दिलें च म्हेशां दुबधा दा कारण बनी रौहग, सिवाए इस दे जे उंदे दिल टुकड़े-टुकड़े होई जान (ओह मरी जान) ते अल्लाह बौहत् जानने आहला ते बड़ी हिक्मत आहला ऐ ॥ 110 ॥ (रुकू 13/2)

अल्लाह नै मोमिनें शा उंदी जानें ते उंदे माल-सबाबें गी (इस बा'यदे कनै) खरीदी लैते दा ऐ जे उनेंगी जन्त थोग, की जे ओह अल्लाह दे रस्ते पर लड़दे न। (इस आस्तै जां ते ओह) अपने बैरियें गी मारी दिंदे न जां आपूं मरोई जंदे न। एह इक ऐसा बा'यदा ऐ जिसी पूरा करना उस (अल्लाह) आस्तै जरूरी ऐ ते तौरात जां इज्जील (च बी ब्यान कीता गेदा ऐ) ते कुर'आन च बी ते अल्लाह शा बद्ध अपने बा'यदे गी पूरा करने आहला दूआ कु'न होई सकदा ऐ? इस आस्तै (हे मोमिनो!) अपने इस सौदे पर खुश होई जाओ, जेहका तुसैं कीता ऐ ते इय्यै ओह बड्डी कामयाबी ऐ (जेहदा मोमिनें कनै बा'यदा कीता गेदा ऐ) ॥ 111 ॥

أَفَمَنْ أَسَّسَ بُيُوتَهُ عَلَى تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ
وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَمْ مَنْ أَسَّسَ بُيُوتَهُ عَلَىٰ
شِقَاجِرٍ هَارٍ فَأَنْهَارِهِ فِي نَارٍ جَهَنَّمَ ۖ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٩﴾

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَوَّأَ رِيبِيَّةَ
فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ ۖ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١١٠﴾

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ
وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۖ
يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ
وَيُقْتَلُونَ ۖ وَعَدَّ اللَّهُ حَقًّا فِي الشُّورَةِ
وَالْإِنجِيلِ وَالْقُرْآنِ ۖ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ
مِنَ اللَّهِ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي
بَايَعْتُمْ بِهِ ۖ وَذَلِكَ هُوَ الْقَوْلُ الْعَظِيمُ ﴿١١١﴾

(जेहके लोक) तोबा करने आहले न, अबादत करने आहले न, अल्लाह दी तरीफ करने आहले न, (अल्लाह दे रस्ते पर) जातरा करने आहले न, रकू करने आहले न, सजदा करने आहले न, चंगियें गल्लें दा हुकम देने आहले न ते भैड़ियें (बुरियें) गल्लें शा रोकने आहले न ते अल्लाह दियें हद्दें दी रक्खेआ करने आहले न, तू ऐसे मोमिनें गी बशारत (शुभ-समाचार) देई दे ॥ 112 ॥

नबी ते मोमिनें दी शान दे खलाफ हा जे ओह मुश्रिकें आस्तै माफी दी प्रार्थना करदे, भामें ओह करीबी रिश्तेदार की नेई होन, इस गल्ला दे जाहर होई जाने दे बा'द जे ओह (मुश्रिक) दोजखी न ॥ 113 ॥

ते इब्राहीम दा अपने पिता आस्तै माफी दी प्रार्थना करना सिर्फ इस आस्तै हा जे उसने ओहदे कन्ने इक बा'यदा कीते दा हा, मगर जिसलै ओहदे सामने जाहर होई गेआ जे ओह अल्लाह दा दुश्मन ऐ तां ओह उस बा'यदे शा पूरी चाल्ली अलग्ग होई गेआ। इब्राहीम बौहत गै नर्मदिल ते समझदार हा ॥ 114 ॥

ते एह अल्लाह दी शान दे खलाफ ऐ जे ओह कुसै कौम गी हदायत देने दे बा'द गुमराह करार देऐ, जिच्चर जे ओह उंदे सामने ओह गल्लां निं दस्सी देऐ जिंदे शा उनेंगी बचना चाही दा। अल्लाह हर-इक चीजै गी जानदा ऐ ॥ 115 ॥

गासें ते धरती दी बादशाहत सच्चें गै अल्लाह दी गै ऐ। ओह जींदा बी करदा ऐ ते मारदा बी ऐ ते अल्लाह दे सिवा नां थुआड़ा कोई दोस्त ऐ ते नां मददगार ॥ 116 ॥

التَّائِبُونَ الْعِبَادُونَ الْحَمِدُونَ السَّاجِدُونَ
الرُّكُّعُونَ السَّجِدُونَ الْأَمْرُونَ
بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ
الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ
يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أَوْلَىٰ
قُرْبَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ
أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿١١٣﴾

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأبيه إِلَّا
عَنْ مَوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ
أَنَّهُ عَدُوٌّ لِلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۗ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ
لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ﴿١١٤﴾

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ
حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُمْ مَا يَتَّقُونَ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾

إِنَّ اللَّهَ لَهُ مَلَائِكَةُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ
يُحْيِي وَيُمِيتُ ۗ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ
مِنْ وَّلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١١٦﴾

अल्लाह नै नबी, मुहाजरीन ते अन्सार पर बड़ी किरपा कीती दी ऐ (यानी उनें लोकें पर) जिनें उस मसीबत दी घड़ी च उस (नबी) दा अनुसरण कीता जिसलै जे उंदे चा किश लोकें दे दिल भरमे च पेई गेदे हे। उसनै दबारा उंदे (कमजोर लोकें) पर बी किरपा कीती। सच्चे गै ओह उंदे (मोमिनें) कनै प्यार करने आह्ला ते बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 117 ॥

لَقَدْ تَابَ اللَّهُ عَلَى التَّيِّبِ وَالْمُهَاجِرِينَ
وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ
مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبَ فَرِيقٍ مِّنْهُمْ
ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ إِنَّهُ يَرْءُوفٌ
رَّحِيمٌ ﴿١١﴾

इससै चाल्ली उसनै उनें त्रौनें' पर बी (किरपा कीती) जेहके जे पिच्छें छोड़े गे हे इत्थें तक जे धरत विशाल होंदे होई बी उंदे आस्तै तंग होई गेई ते उंदियां जान्नां उंदे पर बोझ बनी गेइयां ते उनें एह समझी लैता जे हून अल्लाह दे अजाब (कैहर-करोपी) शा बचने आस्तै सिवाए उसदे होर कोई पनाह नेई। ते उंदी हालत दिक्खियै अल्लाह नै उंदे पर किरपा कीती तां जे ओह बी तोबा करन। खुदा सच्चे गै बार-बार तोबा कबूल करने आह्ला ते बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 118 ॥ (रुकू 14/3)

وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خَلَفُوا حَتَّىٰ إِذَا
صَافَتْ عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ
وَصَافَتْ عَلَيْهِمْ أَنفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَن لَّا
مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ
لِيَتُوبُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٢﴾

हे मोमिनो! अल्लाह आस्तै संयम अखत्यार करो ते सादकें (सच्चे लोकें) च शामिल होई जाओ ॥ 119 ॥

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ
الصَّادِقِينَ ﴿١٩﴾

मदीना दे नवासी ते जेहके लोक उंदे आसै-पासै (प्राई ते जंगली) रौहदे न उंदे आस्तै एह मनासब नथा जे अल्लाह दे रसूल गी इक्कले छोड़ियै आपूं पिच्छें रेही जंदे ते नां एह जे ओहदी जान शा बे-परबाह होइयै अपनी जानें दी चिंता च पेई जंदे। एह (फैसला) इस आस्तै कीता जंदा ऐ जे अल्लाह दे रस्ते च उंदे आस्तै

مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِنَ
الْأَعْرَابِ أَن يَتَخَلَّفُوا عَن رَّسُولِ اللَّهِ
وَلَا يَرْعَبُوا بِأَنفُسِهِمْ عَن نَّفْسِهِ ذَلِكَ
بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ظَمَأٌ وَلَا نَصَبٌ وَلَا

1. एह उनें त्र'ऊं सहाबा (साथियें) पासै संकेत ऐ जेहके मुनाफिक्र ते नथे, पर गलती दी ब'जा कनै तबूक नांउ दी लड़ाई च हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम कनै जाने शा पिच्छें रेही गे हे। असल च ओह पक्के मोमिन हे। इस आस्तै उनेंगी हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम नै अल्लाह दे हुकम मताबक स'जा दित्ती ते जेहके मुनाफिक्र हे उनेंगी स'जा दित्ते बगैर छोड़ी दित्ता हा।

त्रेह, हुट्टन जां भुक्ख (लगने) दी कोई घड़ी नेई औंदी ते नां गै ओह कुसै जमीनै पर चलदे न जेहदे करी इन्कारी लोकें गी रोह चढ़दा होऐ ते नां ओह बैरी पर कोई विजय हासल करदे न जे उंदे आसतै इसदे बदले च कोई नां कोई नेकी नेई लिखी जंदी होऐ। अल्लाह उपकारी लोकें दा अजर (बदला) कदें बी जाया नेई करदा ॥ 120 ॥

ते ओह अल्लाह दे रस्ते च किश बी थोढ़ा हारा जां मता ज्यादा खचं नेई करदे ते नां ओह कुसै वादी गी पार करदे न, पर (तौले गै उंदी कर्म-सूची च) ओह नेकी लिखी लैती जंदी ऐ तां जे अल्लाह उंदे कर्में दा उत्तम शा उत्तम सिला प्रदान करै ॥ 121 ॥

ते मोमिनें आसतै एह ममकन नथा जे ओह सारे दे सारे (किट्टे होइयै धार्मिक तलीम आसतै) निकली पौंदे। इस आसतै ऐसा की नेई होआ जे उंदे चा इक गरोह निकली पौंदा तां जे ओह पूरी चाल्ली धार्मिक तलीम ग्रैहण करदे (सिखदे) ते बापस परतोइयै अपनी कौम दे लोकें गी (अधर्म शा) सोहगा करदे तां जे ओह (गुमराही शा) डरना लगन ॥ 122 ॥ (रुकू 15/4)

हे मोमिनो! उनें मुन्कर लोकें कनै जंग करो जेहके थुआड़े आसै-पासै रौंहदे न ते चाही दा ऐ जे ओह थुआड़े अंदर मजबूती मसूस करन ते समझी लैओ जे अल्लाह संयमियें दे कनै ऐ ॥ 123 ॥

ते जिसलै कोई सूर: उतरदी ऐ तां उंदे चा किश (मुनाफ़िक) गलांदे न जे इस सूर: नै तुंदे चा कोहदा ईमान बधाया ऐ? इस आसतै (याद रक्खो जे) जेहके लोक मोमिन न (उंदे पैहले ईमान दे नतीजे च) इस सूर: नै उंदे ईमान गी होर बी बधाया ऐ ते ओह खुशी हासल करा करदे न ॥ 124 ॥

مَخْمَصَةً فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطَّؤُونَ مَوْطِنًا
يَعْبُطُ الْكُفَّارُ وَلَا يَتَّوْنُ مِنْ عَدُوِّنِيًّا
إِلَّا كَتَبَ لَهُمْ بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ ۗ إِنَّ اللَّهَ
لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٢٠﴾

وَلَا يُنْفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً
وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًّا إِلَّا كَتَبَ لَهُمْ
لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢١﴾

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنْفِرُوا كَافَّةً ۗ
فَلَوْلَا نَفْرٌ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِنْهُمْ طَائِفَةٌ
لَيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلَيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا
رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿١٢٢﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُمْ
مِنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا فِيكُمْ غُلظَةً ۗ
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٢٣﴾

وَإِذَا مَا أَنْزَلَتْ سُورَةً فَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ
أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَذِهِ إِيْمَانًا ۗ فَأَمَّا
الَّذِينَ آمَنُوا فَزَادَتْهُمْ إِيْمَانًا وَهُمْ
يَسْتَبْشِرُونَ ﴿١٢٤﴾

ते जिन्हें लोकेँ दे दिलें च रोग ऐ इस सूः नै उंदी (पैहली) गंदगी पर होर बी गंदगी चढ़ाई दिती ऐ इत्थें तक जे ओह ऐसी हालत च मरडन जे ओह काफर होडन ॥ 125 ॥

क्या ओह दिखदे नेई जे उंदी हर साल इक जां दो बार अजमेश कीती जंदी ऐ, फी बी ओह तोबा नेई करदे ते नां नसीहत हासल करदे न ॥ 126 ॥

ते जिसलै कोई सूः नाजल होंदी ऐ तां उंदे चा किश लोक इक-दूए गी दिक्खन लगी पाँदे न तां जे ओह सेही करन जे क्या कोई शख्स तुसेंगी दिक्खा ते नेई करदा। फी (तसल्ली करियै) एह (लोक सभा चा) उठी जंदे न। अल्लाह नै उंदे दिलें गी फेरी दिता ऐ की जे ओह ऐसे लोक न जेहके नेई समझदे ॥ 127 ॥

(हे मोमिनो!) थुआड़ै कश थुआड़ी गै कौम चा इक शख्स रसूल बनियै आया ऐ। थुआड़ा तकलीफ च पौना ओहदे आस्तै बरदाशत शा बाहर ऐ ते ओह थुआड़े आस्तै भलाई दा बे-हद भुक्खा ऐ ते मोमिनें कन्नै प्यार करने आह्ला ते बौहत कर्म करने आह्ला ऐ ॥ 128 ॥

इस आस्तै जेकर ओह फिरी जान तां तू गलाई दे जे मेरे आस्तै अल्लाह काफी ऐ। ओहदे सिवा होर कोई उपास्य नेई। मेरा उससै पर भरोसा ऐ ते ओह बड़डे अर्श (सिंहासन) दा रब्ब ऐ ॥ 129 ॥ (रकू 16/5)

وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ
فَرَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا
وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿٩﴾

أُولَٰئِكَ يَرْوَنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ
مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ
يَذْكُرُونَ ﴿١٠﴾

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ
بَعْضٍ ۖ هَلْ يَرِيكُمْ مِنْ أَحَدٍ ثُمَّ
انصَرَفُوا ۗ صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ بِأَنَّهُمْ
قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ﴿١١﴾

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ
عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ
عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿١٢﴾

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ ۚ لَا إِلَهَ
إِلَّا هُوَ ۗ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ
الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿١٣﴾



सूर: यूनस

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां इक सौ दस्स आयतां ते जारां रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला ते बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ①

अलिफ, लाम, रा। अ'ऊं अल्लाह दिक्खने
आहला आं। एह (यानी इस सूर: दियां आयतां)
कामिल (ते) पूरी हिक्मत आहली कताब
दियां आयतां न ॥ 2 ॥

الرَّحْمٰنِ تِلْكَ اٰیٰتِ الْكِتٰبِ الْحَكِیْمِ ①

क्या लोकें आस्तै साढ़ा उंदे चा गै इक शख्स
पर एह वह्नी करना जे लोकें गी सोहगा कर
ते जेहके लोक ईमान ल्याए दे न उनेंगी शुभ-
समाचार सुनाऽ जे उंदे आस्तै उंदे रब्ब कश
जाहरा ते गुप्त तौरा पर कामिल ते उच्चा दरजा
ऐ (ऐसी) अजीब गल्ल ही जे इनें मुन्करें
गलाई दिता जे एह शख्स ज़रूर गै जाहरा-
बाहरा धोखेबाज ऐ ? ॥ 3 ॥

اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَا اِلٰی رَجُلٍ
مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا
اَنْ لَّهُمْ قَدَمٌ صٰدِقٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ قَالَ
الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسَجْرٌ مِّمَّیْنٍ ①

सच्चें गै थुआड़ा रब्ब अल्लाह ऐ जिसनै गासें
ते धरती दी रचना छें दौरें च कीती, ओहदे
बा'द ओह अर्श (सिंहासन) पर कायम होआ।
ओह हर गल्ला दा प्रबंध करदा ऐ। ओहदे
हजूर च कोई बी कुसै दी सफारश करने
आहला नेई होई सकदा सिवाए ओहदी अजाजत
दे (सुनो!) एह अल्लाह अनंत सिफतें आहला
ऐ ते ऊऐ थुआड़ा रब्ब ऐ। इस आस्तै तुस

اِنَّ رَبَّكُمْ اللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ فِیْ سِتَّةِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰی
عَلٰی الْعَرْشِ ۗ یَدْبُرُ الْاَمْرَ ۗ مَا مِنْ شَفِیْعٍ
اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ۗ ذٰلِكُمْ اللّٰهُ رَبُّكُمْ
فَاعْبُدُوْهُ ۗ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ①

उस्सै दी अबादत करो। क्या तुस (इनें गल्लें दे बावजूद) फी बी नसीहत हासल नेई करगे ओ? ॥ 4 ॥

तुसें सारे गै उस्सै कश परतियै जाना ऐ। एह अल्लाह दा बा'यदा ऐ जेहका पूरा होइयै रौहने आह्ला ऐ। ओह सच्चें गै मिश्टी दी रचना करदा ऐ, फी उसी दरहांदा (परतांदा) ऐ तां जे जेहके लोक ईमान ल्याए ते उनें नेक (ते स्थिति दे मताबक) कर्म कीते उनेंगी पूरा-पूरा अजर प्रदान करै ते जिनें लोकें इन्कार कीता उंदे आस्तै उब्बलदा पानी पीने आस्तै होग ते इक दर्दनाक अजाब होग की जे ओह इन्कार (कुफर) करदे जंदे होंदे हे ॥ 5 ॥

ऊऐ ऐ जिसनै सूरज गी निजी रोशनी आह्ला ते चंदरमां गी नूर आह्ला बनाया ऐ ते इक अंदाजे दे मताबक ओहदियां राशियां बनाई दियां न तां जे तुसेंगी साल्लें दी गिनती ते स्हाब दा पता लगगै। इस सिलसले गी अल्लाह नै हक्क ते हिक्मत कनै पैदा कीते दा ऐ। ओह आयतें गी इलम आह्ले लोकें आस्तै तफसील कनै ब्यान करदा ऐ ॥ 6 ॥

रातीं ते दिनै दे अगें-पिच्छें औने ते जे किश अल्लाह नै गासें ते धरती च पैदा कीते दा ऐ, ओहदे च संयमी लोकें आस्तै यकीनी तौर पर मते-हारे नशान मजूद न ॥ 7 ॥

जेहके लोक साढ़े कनै मिलने दी मेद नेई रखदे ते इस संसारक जीवन पर मोहत होई गेदे न जां इस्सै पर संदोखी होई गेदे न ते फी जेहके लोक साढ़े नशानें शा गाफिल होई गेदे न ॥ 8 ॥

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا
إِنَّ يَوْمَ يَدْعُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيَجْزِيَ
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ
وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝

هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسُ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ
نُورًا وَقَدَرَهُ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ
وَالْحِسَابَ ۚ مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ
يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝

إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ
اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لآيَاتٍ لِّقَوْمٍ
يَتَّقُونَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا
بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَأَطْمَأَنَّنُوا بِهَا وَالَّذِينَ
هُمْ عَنِ آيَاتِنَا غَفْلُونَ ۝

इन्हें सारे दा ठकाना इंदी अपनी कमाई दी ब'जा कनै यकीनन दोजख दी अग ए ॥ 9 ॥

जेहके लोक ईमान ल्याए ते उनें नेक (ते स्थिति दे मताबक) कर्म कीते, उनेंगी उंदा रब्ब उंदे ईमान दी ब'जा करी (कामयाबी दे रस्तै पासै) हदायत देग ते सुख देने आहली जनतें च (दाखल करग जिंदे च) उंदे गै अधिकार च नैहरां बगदियां होडन ॥ 10 ॥

उंदे (उनें जनतें) च (अल्लाह दे सामनै) उंदी पुकार एह होग जे हे अल्लाह! तू पवित्रर ऐं। उंदी (इक-दूए आस्तै) एह दुआऽ होग। जे तुंदे पर म्हेशां आस्तै सलामती होऐ ते अखीर च ओह उच्चवी अवाजै च एह गलाडन जे सारी तरीफें दा हक्कदार सिर्फ अल्लाह गै ऐ जेहका सारे ज्हांनें दा रब्ब ऐ ॥ 11 ॥ (रुकू 1/6)

ते जेकर अल्लाह लोकें गी उंदे बुरे कर्में दा फल उसै चाल्ली तौले देई दिंदा जिस चाल्ली जे ओह धन तौले हासल करने च तौल (काहल) करदे न तां उंदे जीवन दा आखरी समां उंदे पर कदूं दा आहनेआ जाई चुके दा होंदा (पर असेंगी ऐसा पसंद नेई)। इस आस्तै असें उनें लोकें गी जेहके साढ़ी मलाटी दी मेद नेई रखदे न इस हालत च छोड़ी दिता ऐ जे ओह अपनी उददंडता च भटकदे फिरा करदे न ॥ 12 ॥

ते जिसलै मनुक्खै गी कोई दुख पुजदा ऐ तां

أُولَئِكَ مَاؤُهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٩﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِإِيمَانِهِمْ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿١٠﴾

دَعْوَاهُمْ فِيهَا سُبْحَانَ اللَّهِ مَعَهُمْ وَنَحْيَاهُمْ فِيهَا سَلَامًا ۖ وَأُخْرٍ دَعْوَاهُمْ أَنْ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١١﴾

وَلَوْ يُعِجِلُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَفُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجْلُهُمْ ۗ فَمَنْ ذُو الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٢﴾

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنبَةٍ

1. सुर्गें च बास करने पर उंदे मूंहा इनें शब्दें दे सिवा जे 'सारी तरीफें दा मालक सिर्फ अल्लाह गै ऐ' होर किश नेई निकलग, की जे ओह अपने उजर पर पूरी चाल्ली संदोखी होडन। एहदा इक होर अर्थ एह ऐ जे मोमिनें दा अन्जाम इय्यै नेहा उत्तम होंदा ऐ जे आखरी नतीजे बेलै ओह अल्लाह दी स्तुति ते ओहदी पवित्रता दे गुणें दा गान करदे न आखो जे ओह म्हेशां कामयाबी हासल करदे रौहदे न।

ओह अपने पासे दे भार लेटे दे जां बैठे दे जां खड़ोते दे असेंगी पुकारदा ऐ, ओहदे बा'द जिसलै अस ओहदी तकलीफ ओहदे शा दूर करी दिन्ने आं तां ओह (इस चाल्ली कन्नी कट्टी/कतराइयै) उठी जंदा ऐ जे आखो उसनै अपने कुसै कश्ट-कलेश गी जेहका उसी पुज्जेआ हा, दूर करने आस्तै असेंगी पुकारेआ गै नथा। इसै चाल्ली सारी हद्दें शा बधी जाने आहलें गी जे किश ओह करदे होंदे न खूबसूरत करियै दस्सेआ गेदा ऐ ॥ 13 ॥

ते अस यकीनी तौरा पर तुंदे शा पैहलें केई कौंमि गी हलाक करी चुके दे आं जिसलै जे उंदे कश रसूल जाहरे-बाहरे नशान लेइयै आए हे, पर फी बी ओह ईमान नेई ल्याए, बल्के उनें जुलम गै कीता हा। अस मुलजम लोकें गी इसै चाल्ली बदला दिन्ने होन्ने आं ॥ 14 ॥

फी असें तुसेंगी उंदे बा'द धरती च उंदा थाहर लैने आहला बनाया तां जे अस दिखचै जे तुस कनेह कर्म करदे ओ? ॥ 15 ॥

ते जिसलै उनेंगी सादियां रोशन आयतां पढ़ियै सुनाइयां जंदियां न तां जेहके लोक सादी मलाटी दी मेद नेई रखदे ओह गलाई दिंदे न जे (हे मुहम्मद!) तूं एहदे अलावा कोई होर कुरआन लेई आ जां एहदे च गै किश तबदीली करी दे। तूं उनेंगी गलाई दे जे एह मेरा कम्म नेई जे अ'ऊं अपने पासेआ एहदे च कुसै चाल्ली दी कोई तबदीली करी देआं। अ'ऊं ते उस वह्यी दा अनुसरण करना आं जेहकी मेरे पर उतारी जंदी ऐ ते जेकर अ'ऊं अपने रब्ब दी ना-फरमान्नी करां तां अ'ऊं इक बड्डे भारे दिने दे अजाब शा डरना आं (जे ओह मिगी पकड़ी नेई लै) ॥ 16 ॥

أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ
صُرَّةَ مَرْكَانٍ لَّمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ صُرِّمَسَّهُ^ط
كَذَلِكَ نُزَيِّنُ لِلْمُؤْسِرِينَ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ^{١٥}

وَلَقَدْ أَهَلَكْنَا الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا
ظَلَمُوا^١ وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ
وَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا^٢ كَذَلِكَ نَجْزِي
الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ^{١٤}

ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ حَلَيفَ فِي الْأَرْضِ مِنْ
بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ^{١٥}

وَإِذْ أَنْتَلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ^١ قَالَ الَّذِينَ
لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا أَنْتَ بِقُرْآنٍ غَيْرِ هَذَا
أَوْ بَدِّلْهُ^٢ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَبَدِّلَهُ مِنْ
تَلْقَائِي^٣ نَفْسِي^٤ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ
إِلَيَّ^٥ إِنْ أَحَافُ^٦ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ^٧

ते तू उनेंगी गलाई दे जे जेकर अल्लाह दी इय्यै मरजी होंदी (जे इसदी ज'गा कोई होर तलीम दिती जा) तां अ'ऊं इस (कुरआन) गी थुआड़े सामनै पढ़ियै नेई सुनांदा ते नां ओह तुसंगी इस तलीम शा आगाह करदा। सच्च तां एह ऐ जे अ'ऊं इस शा पैहले अपनी आयु दा इक लम्मा अरसा¹ तुंदे च बतीत करी चुके दा आं। क्या फी बी तुस सूझ-बूझ शा कम्म नेई लेंदे? ॥ 17 ॥

फी (तुससै दस्सो जे) जेहका शख्त अल्लाह पर झूठ गंढै जां ओहदे नशानें गी झूठलाऽ तां ओहदे शा बद्ध दूआ कु'न जालम होई सकदा ऐ? (सारांश) एह यकीनी गल्ल ऐ जे मुलजम लोक कामयाब नेई होंदे ॥ 18 ॥

ते एह लोक अल्लाह गी छोड़ियै ऐसी चीजै दी पूजा करदे न जेहकी नां ते इनेंगी नुकसान पजांदी ऐ ते नां फायदा दिंदी ऐ ते गलांदे न जे एह (साढ़े उपास्य) अल्लाह दे हजूर च साढ़े सफारशी न। तू उनेंगी गलाई दे जे क्या तुस अल्लाह गी ओह गल्ल दसदे ओ जेहदे² गासैं ते धरती च होने दा उसी कोई पता नेई। ओह पवित्र ऐ जे उंदे शरीक टरहाने शा बौहत उच्चा ऐ ॥ 19 ॥

ते सारे लोक इक गै गरोह³ हे, फी उनें आपस च मत-भेद पैदा करी लैता ते जेहकी गल्ल तेरे रब्ब पासैआ पैहलें (बा'यदे दे रूपै च) आई चुकी⁴ दी ऐ जेकर ओह

قُلْ نُوْشَاءُ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُمْ عَلَيْهِمْ وَلَا اَدْرٰكُمْ بِهِۦ ۗ فَقَدْ لَيْسَتْ فِيْكُمْ عُمْرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝۱۱

فَمَنْ اَظْلَمَ مِمَّنْ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِآيٰتِهٖ ۗ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمَجْرِمُوْنَ ۝۱۲

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَصْرِهُمُ وَلَا يَقْنَعُوْنَ ۗ هَؤُلَاءِ سَفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ۗ قُلْ اَسْتَبِيْنُ اللّٰهَ بِمَا لَا يَضِلُّ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ۗ سُبْحٰنَهٗ وَتَعَالٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝۱۳

وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّا اُمَّةً وَّاحِدَةً ۗ فَاخْتَلَفُوْا ۗ وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ

1. यानी क्या तुस लोक मेरे पिछले जीवन पर विचार नेई करदे जे अल्लाह ते बौहत बड़ड़ी गल्ल ऐ में ते कुसै मनुक्खै कनै बी कदें कोई झूठी गल्ल नेई कीती।
2. यानी जेहदा खुदा गी इलम नेई ओह गल्ल होई गै क्रियां सकदी ऐ।
3. यानी सारे लोक कुफर ते जलालत च इक मत हे। ब्यारे आसतै दिक्खो सूर: बकर: टिप्पणी आयत नं० 214.
4. एह इस ईशवाणी पासै संकेत ऐ जे मेरी रैहमत सारें पर छाई दी ऐ। (आराफ आयत नं० 157)

रकावट नेई बनदी तां जिस गल्ला च ओह मत-भेद करा करदे न उसदे बारे च उंदे बशकार मता पैहलें थमां गै फैसला करी दित्ता गेदा होंदा ॥ 20 ॥

ते ओह गलांदे न जे इस रसूल पर ओहदे रब्ब पासेआ कोई नशान नाज़ल की नेई कित्ता गेआ? तूं उनेंगी गलाई दे जे ग़ैब दी हर गल्ला दा इलम अल्लाह गी गै ऐ। इस आस्तै तुस उसदा इन्तजार करो। अ'ऊं बी तुंदे कनै इन्तजार करने आहलें चा आं ॥ 21 ॥ (रुकू 2/7)

ते जिसलै अस लोकें गी कुसै तकलीफ दे बा'द जेहकी उनेंगी पुज्जी चुकी दी होऐ, अपनी रैहमत दा मजा चखाने आं तां तौले गै उंदे पासेआ साढ़ी आयतें दे खलाफ कोई नां कोई उपाऽ होन लगदा ऐ। तूं उनेंगी गलाई दे जे अल्लाह दा उपाऽ तौले गै (कारगर) सिद्ध होई जंदा ऐ ते तुस जेहके उपाऽ करदे ओ साढ़े भेजे दे फरिश्ते उनेंगी लिखदे रौहदे न ॥ 22 ॥

ओह (अल्लाह) गै ऐ जेहका तुसेंगी (समर्थ प्रदान करियै) जल ते थल च चलांदा ऐ इत्थें तक जे जिसलै तुस किरितयें च (सुआर) होंदे ओ ते ओह माफक हवा राहें उनेंगी लेइयै जा करदियां होंदियां न ते ओह उंदे चलने पर इतराऽ करदे होंदे न, तां अचानक उंदे पर इक तेज हवा आई जंदी ऐ ते हर पासेआ उंदे पर लैहरां चढ़न लगदियां न ते ओह समझन लगदे न जे हून ओह मौती दे मूहै च आई गे न, तां (नेह मौकें पर) ओह अपने आज्ञापालन गी अल्लाह आस्तै चेचे तौर पर खास (टकोधा) करदे होई उसी

رَبِّكَ لَقَضَىٰ بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٠﴾

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّمَا الْعَيْبُ لِلَّهِ فَانظُرُوا ۚ
إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ﴿٢١﴾

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ مَسَّهُمْ إِذْ أَلَّهُمْ مَكْرًا فِي آيَاتِنَا قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۗ إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ ﴿٢٢﴾

هُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۗ حَتَّىٰ إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلِكِ وَجَرَّتْ بِكُمْ بِرِيحٌ طَيِّبَةٌ وَفَرِحْتُمْ بِهَا جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ ۚ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ لَبِئْسَ أَجْيَتَنَا مِنْ هَذِهِ لَتَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٢٣﴾

पुकारदे न जे हे अल्लाह! जेकर तोह असें
गी इस मसीबत शा बचाई लैता तां अस जरूर
गै तेरे शुकर गजार लोके च शामिल होई जागे
॥ 23 ॥

फी जिसलै ओह उनेंगी इस (अजाब थमां)
कड़िदयै धरती पर पुजाई दिंदा ऐ तां ओह
न्हक्क गै धरती पर उपदर करन लगदे न। (हे
लोको!) थुआड़ा सिर्फ इससै संसारक जीवन
गी पसंद करना थुआड़ी जानें पर (मसीबत
बनिथै) पौग, फी साढ़े कश परतिथै तुसें औना
होग उसलै जे किश तुस करदे रेह होंगे ओ
ओहदे बारे अस तुसेंगी सूचत करगे ॥ 24 ॥

इस संसारक जीवन दी हालत ते उस पानी
आंगर ऐ जिसी असें बदलें थमां बरहाए दा
होऐ, फी ओहदे कनै धरती दी बनस्पति मिली
गेदी होऐ जिसी मनुक्ख ते पशु-पैछी खंदे न,
इत्थें तक जे जिसलै धरती नै अपनी कमाल
दरजे दी जीनत (खूबसूरती) गी पाई लैता ते
खूबसूरत होई गेई ते ओहदे मालके एह समझी
लैता जे हून ओह ओहदे पर कब्जा जमाई चुके
दे न तां ओहदे पर रातीं जां दिनें साढ़ा (अजाब
दे बारे च) हुकम आई गोआ ते असें उसी
बाड़्ढी कीते दे खेतरे (नाड़कै) आंगर बनाई
दिता, आखो जे उत्थें कल्ल किश बी नथा।
इस आस्तै जेहके लोक सूझ-बूझ शा कम्म
लैंदे न उंदे आस्तै अस अपनियां आयतां
तफसील कनै ब्यान करने आं ॥ 25 ॥

ते अल्लाह सलामती (शांति) दे घरै बक्खी
बुलांदा ऐ ते ओह जिसी पसंद करदा ऐ उसी
सिद्धे रस्तै चलाइयै सच्ची मंजल तक पुजाई
दिंदा ऐ ॥ 26 ॥

فَلَمَّا أَخْبَهُمْ إِذَا هُمْ يَبْعُونَ فِي الْأَرْضِ
بِعَدْرِ الْحَقِّ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَعَيْتُمْ
عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ
إِنِّي أَمْرٌ جَعَلْتُكُمْ فِتْنَةً لِّكُمْ بِمَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ⑤

إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنْزَلْنَاهُ مِنْ
السَّمَاءِ فَخَاطَطَ بِهِ بَثُّ الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ
النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ حَتَّىٰ إِذَا أَخَذَتِ
الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ
أَهْلُهَا أَنَّهُمْ قَدِرُونَ عَلَيْهَا أَتَاهَا
أَمْرٌ نَّالِيًّا أَوْ تَهَارًا فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا
كَانَ لَمْ تَعْنِ بِالْأَمْسِ كَذَلِكَ نُقِصِّلُ
الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ⑤

وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَىٰ دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي مَنْ
يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ⑥

उनें लोकें दा अन्जाम बेहतर होग जिनें अच्छे (नेक) कम्म कीते ते (इसदे अलावा) उंदे आस्तै दूए इनाम बी होडन। उंदे चेहरें पर नां ते कालख छाई दी होग ते नां अपमान दे नशान गै होडन। एह लोक सुगुं दे बासी न ते ओहदे च म्हेशां आस्तै बास करडन ॥ 27 ॥

ते जिनें पाप कीते दे होडन उंदे आस्तै पाप दा बदला उससै पाप दे बराबर होग ते उनेंगी जिल्लत पुज्जग ते उनेंगी अल्लाह दे अज्जाब शा बचाने आह्ला बी कोई नेई होग (ते उंदी हालत ऐसी होग) आखो जे उंदे चेहरें पर रातीं दे काले टुकड़े¹ सुट्टी दिते गेदे न। एह लोक अगगी च रौहने आहले न। ओहदे च चि्रै तगर बास करडन ॥ 28 ॥

ते हे लोको! उस दिनै गी याद करो जिस दिन अस उनें सारे (मुन्कर) लोकें गी कठेरगे, फी जिनें शिर्क कीते दा होग अस उनेंगी गलागे जे तुस ते थुआड़े (बनाए दे अल्लाह दे) शरीक (हिस्सेदार) दूर खड़ोई र'वो, फी अस उंदे च बी आपसी दूरी पाई देगे ते उंदे (बनाए दे अल्लाह दे) शरीक उनेंगी गलाडन जे तुस साढ़ी अबादत (ते बिल्कुल) नथे करदे होंदे ॥ 29 ॥

इस आस्तै साढ़े ते थुआड़े बश्कार अल्लाह गै काफ़ी गुआह ऐ अस थुआड़ी पूजा थमां भलेआं बे-खबर हे ॥ 30 ॥

उसलै उत्यें हर इक शख्स अपने राहे दे दा मजा चक्खग ते उनेंगी उंदे सच्चे सुआमी अल्लाह कश परताइयै आहनेआ जाग ते जे किश ओह अपने पासेआ घड़दे हे ओह सब उनेंगी भुल्ली जाग ॥ 31 ॥ (रकू 3/8)

لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ ۗ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ ۗ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٠﴾

وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ يَمِثِلُهَا ۖ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۖ مَا لَهُمْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۗ كَأَنَّمَا أُغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطْعًا مِّنَ اللَّيْلِ مُظْلِمًا ۗ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣١﴾

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَاءُكُمْ ۖ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَاءُهُمْ مَا كُنْتُمْ إِلَّا نَا تَعْبُدُونَ ﴿٣٢﴾

فَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغْفِيلِينَ ﴿٣٣﴾

هُنَالِكَ تَبْلُغُوا كُلَّ نَفْسٍ مَّا أَسْلَفَتْ ۗ وَرُدُّوْا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقُّ ۖ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٣٤﴾

1. यानी उंदे चेहेरै बाँहत काले होडन।

तू उनेंगी आख (जे दस्सो) गास ते धरती थमां तुसेंगी रोजी कु'न प्रदान करदा ऐ ते कर्ने ते अक्खीं पर कोहदा कब्जा ऐ ते कु'न इक निरजीव चीजै चा सजीव चीजै गी कढदा ऐ ते सजीव चीजै चा निरजीव चीजै गी कढदा ऐ ते कु'न ऐ जेहका एह सारा प्रबंध (इंतजाम) करदा ऐ? इस पर ओह जरूर गलाइन जे अल्लाह (करदा ऐ) उसलै उनेंगी आख जे फी ब'जा केह ऐ जे तुस संयम अखत्यार नेई करदे ॥ 32 ॥

इस आस्तै ओह अल्लाह गै ऐ जो ऐसा करदा ऐ। असल च ऊऐ थुआड़ा रब्ब ऐ ते सचाई गी छोड़ियै गुमराही दे सिवा केह मिली सकदा ऐ। इस लेई (दस्सो ते सेही जे) तुस किस चाल्ली (तांह-तुआंह) फेरे जा करदे ओ? ॥ 33 ॥

इससै चाल्ली जिनें लोकें इन्कार अखत्यार कीता ऐ उंदे पर तेरे रब्ब दा कथन पूरा होई गेआ ऐ जे ओह ईमान नेई आहनदे ॥ 34 ॥

तू उनेंगी आख जे क्या थुआड़े (बनाए दे) शरीकें चा कोई इक बी नेहा है जो पैहली बार पैदा करदा होऐ, ते फी उस पैदायश गी दुरहांदा होऐ? तू उनेंगी आख जे अल्लाह गै ऐ जो पैहली बार पैदा करदा ऐ ते फी उस (पैदायश) गी दुरहांदा¹ बी रौहदा ऐ। इस आस्तै दस्सो जे फी बी तुसेंगी केहड़े पासै फेरेआ जा करदा ऐ? ॥ 35 ॥

तू (उनेंगी एह बी) आख (जे) क्या थुआड़े (बनाए दे) शरीकें चा कोई (बी नेहा) है जेहका लोकें गी सचाई दी बत्त दसदा होऐ?

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
أَمْ مَنْ يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَنْ
يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ
مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدْبِرُ الْأَمْرَ ۗ فَسَيَقُولُونَ
اللَّهُ ۗ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣٥﴾

فَذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۗ فَمَاذَا بَعَدَ
الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالُ ۗ فَأَنْتَى تُصْرَفُونَ ﴿٣٦﴾

كَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ
فَسَقُوا أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٧﴾

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَبْدُوا
الْخَلْقَ ثُمَّ يَعْبُدُهِ ۗ قُلِ اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ
ثُمَّ يَعْبُدُهِ ۗ فَأَنْتَى تُفَكَّرُونَ ﴿٣٨﴾

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَهْدِي إِلَى
الْحَقِّ ۗ قُلِ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ ۗ أَفَمَنْ

1. यानी सिस्टी (रचना) करदा रौहदा ऐ।

(ओह ते इस दा केह जवाब देडन) तू (आपूँ गै उनेंगी) आखी दे जे अल्लाह (गै ऐ जो) लोकें की सचाई दी बत दसदा ऐ। क्या ओह (अल्लाह) जो सचाई दी बत दसदा ऐ इस गल्ला दा ज्यादा हक्कदार ऐ जे ओहदे हुकमें दा अनुसरण कीता जा जाँ ओह (बनाए दे उपास्य) जेहके आपूँ बी सिद्धा रस्ता नेई पाई सकदे जिच्चर जे उनेंगी सचाई दी बत दस्सी नेई जा। दस्सो, तुसेंगी होई केह गोदा ऐ, तुस कनेह फैसले करदे होंदे ओ? ॥ 36 ॥

ते उंदे चा मते-हारे लोक अपने भरम दे सिवा कुसै दा अनुसरण नेई करदे। हालांके भरम सचाई दे मकाबले च लेश-मातर बी कम्म नेई दिंदा। जे किश एह करदे न अल्लाह उसी चंगी-चाल्ली जानदा ऐ ॥ 37 ॥

ते इस कुरआन दा अल्लाह दे सिवा कुसै दूए दुआरा झूठे तौरा पर बनाई लैता जाना ना-ममकन ऐ बल्के एह ते उस (वाणी) दा समर्थक ऐ जो इस शा पैहलें आई चुकी बी ऐ ते (अल्लाह दी) कताबा च जे किश होना लोड़चदा ऐ उसदा ब्यौरा दिंदा ऐ ते एहदे च बी कोई शक्क नेई जे एह सारे ज्हाँनें दे रब्ब पासेआ आए दा ऐ ॥ 38 ॥

क्या ओह गलांदे न जे इस नै इसी अपने पासेआ घड़ी लैता ऐ? तू उनेंगी गलाई दे जे जेकर तुस सच्चे ओ ताँ एहदे आंगर कोई इक्क गै सूः लेई आओ ते अल्लाह गी छोड़ियै तुस जिसी बुलाने दी समर्थ रखदे ओ (अपनी मदद आसै) बुलाई लैओ ॥ 39 ॥

असल च उनें इक ऐसी गल्ला गी झूठलाया ऐ जेहदा पूरा इलम उनें हासल गै नथा कीता ते नां

يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ أَحْسَنُ أَنْ يُتَّبَعَ أَمَّنْ لَا يَهْدِي إِلَّا إِلَى الْآبِثِّ يَهْدِي ۚ فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿٣٦﴾

وَمَا يُتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٣٧﴾

وَمَا كَانَ هَذَا الْقُرْآنُ أَنْ يُتَّيَرَى مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ نَصَدِيقِي الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلِ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٨﴾

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأَنزَلْنَاهُ سُورَةً مِثْلَهُ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٩﴾

بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِصُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا

अजै तगर उंदे पर उसदी असलीयत गै जाहर होई दी ही। जेहके लोक उंदे शा पैहलें हे उनें बी इससै चाल्ली झुठलाया हा। फी दिक्ख! उनें जालमें दा अन्जाम केह होआ हा ॥ 40 ॥

ते उंदे (इसाइयें) चा किश लोक नेह न जेहके एहदे पर ईमान¹ ल्यौडन ते किश नेह न जेहके एहदे पर ईमान नेई ल्यौडन ते तेरा रब्ब फसाद करने आहलें गी चंगी-चाल्ली जानदा ऐ ॥ 41 ॥ (रुकू 4/9)

जेकर ओह तुगी झुठलान तां तू उनेंगी आख जे मेरा कर्म मेरे आस्तै (लाह जां नुकसान आहला) होग ते थुआड़ा कर्म थुआड़े लेई। जे किश अ'ऊं करना आं ओहदी जिम्मेवारी तुंदे पर नेई ते जे किश तुस करदे ओ ओहदी जिम्मेवारी मेरे पर नेई ॥ 42 ॥

उंदे चा किश लोक ऐसे न जेहके तेरी गल्लें पासै हर बेल्लै कन्न लाई रखदे न। तां क्या तू ऐसे बोलें गी जेहके अकली शा कम्म नेई लेंदे (अपनी गल्ल) सुनाई सकगा ? ॥ 43 ॥

ते उंदे चा किश लोक ऐसे न जेहके तेरे पासै (अक्खीं लाइयै) दिखदे रौहदे न। तां क्या तू इनें अ'न्नं गी जिनेंगी किश बी नेई लभदा रस्ता दस्सी सकगा ? ॥ 44 ॥

यकीनन अल्लाह लोकें पर किश बी जुलम नेई करदा बल्के लोक आपू गै अपने आपै पर जुलम करदे न ॥ 45 ॥

ते जिस रोज ओह उनेंगी ऐसी हालत च किट्टा करग आखो जे ओह मसूस करदे होंडन जे ओह दिनें दी इक घड़ी दे सिवा (संसार च) नथे रेह। उस रोज उनेंगी इक-

يَأْتِيَهُمْ تَأْوِيلُهُ ۚ كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ①

وَمِنْهُمْ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهِ ۗ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ ②

وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ إِنِّي عَمَلِي وَإِلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۗ أَنْتُمْ بَرِيئُونَ مِمَّا أَعْمَلُ وَأَنَا بَرِيءٌ مِمَّا تَعْمَلُونَ ③

وَمِنْهُمْ مَنْ يُسْمِعُونَ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصَّمَّمَ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ④

وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ ۗ أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُمْى وَلَوْ كَانُوا لَا يُبْصِرُونَ ⑤

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَلَكِنَّ النَّاسَ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ⑥

وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ كَأَن لَّمْ يَلْبَسُوا إِلَّا سَاعَةً مِنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ ⑦

1. ए इक भविक्खवाणी ऐ जे कुसै ना कुसै बेल्लै ईसाइयें चा मते-सारे कुर'आन पर ईमान ल्यौडन।

दूए (दी हालत) दा इलम होई जाग (याद रक्खो) जिनें लोकें अल्लाह दे सामने हाजर होने (दी गल्ला) गी झुठलाया ते उनें हदायत गी कबूल नेई कीता, उनें घाटा गै खादा ॥ 46 ॥

ते अस उंदे कनै जिस अजाब गी भेजने दा बा'यदा करने आं जेकर अस तुगी ओहदा किश अंश दस्सी देचै (तां तूं बी दिक्खी लैग्गा) ते जेकर अस (उस शा पैहलें) तुगी मौत देई देचै तां (बी तुगी मौती दे बा'द बी इसदी असलीयत दा इलम होई जाग ते हालांके) उनें साढ़े कश गै परतियै औना ऐ (तां उनेंगी बी इस गल्ला दी सचाई दा इलम होई जाग) ते (याद रक्खो जे) जे किश ओह करदे न अल्लाह उसी चंगी-चाल्ली जानदा ऐ ॥ 47 ॥

ते हर इक कौम आस्तै इक नां इक रसूल (दा औना जरूरी होंदा) ऐ। इस आस्तै जिसलै उंदे रसूल दा अवतार होंदा ऐ तां उंदे बश्कार इन्साफ कनै फैसला करी दिता जंदा ऐ ते उंदे पर कोई जुलम नेई कीता जंदा ॥ 48 ॥

ते ओह गलादे न जे जेकर तुस सच्चे ओ तां एह बा'यदा कदूं पूर होग? ॥ 49 ॥

तूं उनेंगी आख जे अ'कं ते आपूं अल्लाह दी मरजी दे बगैर अपने आस्तै बी नां ते कुसै नुकसान दा ते नां कुसै लाह दा हक्क रक्खना आं (हां! एह सच्च ऐ जे) हर कौम दे लोकें (दे स'जा भोगने) आस्तै इक समां निश्चत ऐ। जिसलै ओह घड़ी आई जंदी ऐ तां फी नां कोई ओहदे शा पल-भर पिच्छें रहियै बची सकदा ऐ ते नां गै अग्गें बधीयै बची सकदा ऐ ॥ 50 ॥

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِإِلْقَاءِ اللَّهِ
وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ⑩

وَإِنَّمَا نُرِيكُ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ
سَوَفَيُتَنَبَأُ فَالْيَوْمَ نَجْزِيهِمْ نَجْمًا اللَّهُ شَهِيدٌ
عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ⑪

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَسُولٌ ۚ فَإِذَا جَاءَ
رَسُولُهُمُ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُونَ ⑫

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ⑬

قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا
مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۖ إِذَا جَاءَ
أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا
يَسْتَقْدِمُونَ ⑭

तू उनेंगी गलाई दे जे दस्सो ते सेही जे जेकर ओहदा अजाब रातीं जां दिनें (थुआड़े दिखदे-दिखदे) तुंदे पर आई जा तां पापी लोक ओहदे शा किय्यां नस्सी (बची) सकडन? ॥ 51 ॥

फी क्या जिसलै ओह (अजाब) आई जाग तां (उस बेल्लै) तुस ओहदे पर ईमान ल्यौगे ओ? (इसदा कोई लाह् नेई होग। उस बेल्लै ते तुसेंगी गलाया जाग जे) क्या हून ईमान आहनदे ओ जिसलै जे तुस (इस शा पैहलें) उस दे तौला औने दी मांग करदे रेह ओ? ॥ 52 ॥

फी जिनें लोकें जुलम कीते दा होग उनेंगी गलाया जाग जे तुस स्थाई अजाब दा मजा चकखो। तुसेंगी थुआड़े कर्मे दे सिवा कुसै होर चीजा दा बदला नेई दिता जा करदा ॥ 53 ॥

ते ओह तेरे शा पुछदे न जे क्या ओह (अजाब) औंग बी? तू उनेंगी गलाई दे जे हां! मिगी अपने रब्ब दी सघंद ऐ जे ओह जरूर गै औने आहला ऐ ते तुस (अल्लाह गी) ऐसा करने शा असमर्थ नेई बनाई सकदे ॥ 54 ॥ (रुकू 5/10)

ते जेकर हर-इक जालम गी सब किश मिली जंदा जेहका जे धरती च ऐ तां ओह उसी देइये अपने आपै गी मुक्त कराने दी हर ममकन कोशश करदा (यानी जेकर ऐसा होई सकदा पर ऐसा नेई होई सकग) ते ओह जिसलै अजाब गी दिखडन तां ओह अपनी शर्मिंदगी गी छपालडन ते उंदे दरम्यान इन्साफ कनै फैसला करी दिता जाग ते उंदे पर किश बी जुलम नेई कीता जाग ॥ 55 ॥

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيِّنَاتًا أَوْ هَارًا مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٥١﴾

أَتُمْ إِذَا مَا وَقَعَ مِنْكُمْ بِهِ طَأْتُنْ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٥٢﴾

تَمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ تُجْرُونَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٥٣﴾

وَيَسْتَبِشُونَكَ أَحَقُّ هُوَ قُلْ إِي وَرَبِّي ﴿٥٤﴾ إِنَّهُ لَحَقٌّ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٥٥﴾

وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ طَوَّاسَرُوا التَّدَامَةَ كَمَارًا أَوَّ الْعَذَابِ وَقَضَى بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٥٥﴾

सुनो! जे किश गासैं ते धरती च ऐ यकीनन ओह सब अल्लाह दा गै ऐ ते अल्लाह दा बा'यदा यकीनन गै पूरा होने आहला ऐ, पर उंदे चा मते-हारे लोक नेई जानदे ॥ 56 ॥

ओह जींदा करदा ऐ ते मारदा ऐ ते उससै कश तुसेंगी परताया जाग ॥ 57 ॥

हे लोको! यकीनन थुआड़े रब्ब पासेआ थुआड़े कश इक ऐसी कताब आई चुकी दी ऐ जेहकी (सरासर) नसीहत ऐ ते ओह सीनीं च मजूद होने आहली बमारियें गी दूर करने आहली ते ईमान आहनने आहलें आस्तै हदायत ते रैहमत ऐ ॥ 58 ॥

तूं उनेंगी गलाई दे जे एह सब अल्लाह दी गै किरपा ऐ ते ओहदी रैहमत कनै संबंधत ऐ। इस आस्तै उनेंगी इससै पर खुश होना चाहीदा। जेहका धन ओह किट्ठा करा करदे न ओहदे शा एह नैमत कुतै ज्यादा बेहतर ऐ ॥ 59 ॥

तूं उनेंगी आख जे क्या तुसैं कदें एह गल्ल सोची ऐ जे अल्लाह नै थुआड़े आस्तै गासा थमां रिशक (जीविका) उतारे दा ऐ, फी तुसैं ओहदे चा किश चीजां र्हाम ते किश ल्हाल करार दिती दियां न। तूं उनें गी गलाऽ जे क्या अल्लाह नै तुसेंगी (इस गल्ला दी) अजाजत दिती दी ऐ जां तुस अल्लाह पर झूठ घड़ा करदे ओ? ॥ 60 ॥

जेहके लोक अल्लाह पर झूठ गंढदे न उंदा क्यामत आहले धयाड़े बाँरे केह बिचार ऐ? अल्लाह सच्चें गै लोकें गी बड्डे-बड्डे इनाम देने आहला ऐ, पर उंदे चा मते-हारे लोक शुकर नेई करदे ॥ 61 ॥ (रुकू 6/11)

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ
أَلَا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلٰكِنْ اَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَ تِكْمُ مَوْعِظَةٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ وَشَفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۗ وَهُدًى
وَّرَحْمَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝

قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذٰلِكَ
فَلْيَفْرَحُوْا ۗ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝

قُلْ اَرَأَيْتُمْ مَا اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ
فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَحَلٰلًا ۗ قُلْ اللّٰهُ
اٰذِنٌ لِّكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ۝

وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ
الْكُذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَدُوْ فَضْلٍ
عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنْ اَكْثَرُهُمْ لَا
يَشْكُرُوْنَ ۝

ते तू नां ते कुसै कम्मै गी लगे दा होन्ना ऐं, नां इस कताबा चा कुरआन दा कोई हिस्सा पढ़ना होन्ना ऐं ते नां गै तुस लोक कोई होर कम्म करा करदे होंदे ओ, पर इनें सब हालतें च जिसलै तुस अपने कम्मं च पूरे ध्यान कन्नै लगे दे होंदे ओ तां अस तुसैगी दिक्खा करने होन्ने आं ते धरती जां गासै च लेश-मातर चीज बी तेरे रब्ब शा ओहलै नेई होंदी ते नां (गै कण शा) कोई निककी जां कोई बड्डी चीज ऐसी ऐ जो (हर इक सचाई गी) तफसील कन्नै दस्सने आहली इस कताबा च (मजूद) नेई होऐ ॥ 62 ॥

सुनो! जेहके लोक अल्लाह कन्नै सच्चा प्रेम करने आहले न उनेंगी नां ते कोई भै होंदा ऐ, ते नां ओह फिकरमंद होंदे न ॥ 63 ॥

(यानी ओह लोक) जेहके ईमान ल्याए ते सदा हर हाल च संयम अपनाई रखदे न ॥ 64 ॥

(अल्लाह पासेआ) उंदे आस्तै इस लोक च बी शुभ समाचार ऐ ते परलोक च बी। अल्लाह दियें गल्लें च कोई बी तबदीली नेई होई सकदी। इय्यै ओह कामयाबी ऐ जेहकी बड्डी शान आहली ऐ ॥ 65 ॥

ते चाही दा ऐ जे तुसैगी उंदी कोई गल्ल दुख नेई पजाऽ, की जे प्रभुता ते सिर्फ अल्लाह गी गै हासल ऐ ते ओह बौहत सुनने आहला ते बौहत जानने आहला ऐ ॥ 66 ॥

सुनो! जो बी गासैं ते धरती च मजूद ऐ ओह सब अल्लाह दा गै ऐ जेहके लोक अल्लाह दे सिवा (दुई चीजें गी) पुकारदे न ओह असल च अल्लाह दे शरीकें दी पैरवी नेई करदे बल्के

وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُوا مِنْهُ مِنْ قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ ۗ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ مِثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٦٦﴾

إِنَّا أَوْيَاءُ اللَّهِ لَخَوْفٍ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٣﴾

الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٦٤﴾

لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۗ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۗ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٦٥﴾

وَلَا يَحْزَنُكَ قَوْلُهُمْ ۗ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۗ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٦﴾

إِنَّا لِلَّهِ مِنَ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ ۗ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ

सच्च एह ऐ जे ओह सिर्फ अपने भरम दी गै पैखी करदे न ते ओह सिर्फ अटकलें (ते ढकोसलें) शा कम्म लैंदे न ॥ 67 ॥

ओह (अल्लाह) गै ऐ जिसनै थुआड़े आस्तै रातीं गी इस आस्तै न्हेरखी बनाए दा ऐ जे ओहदे च तुस रमान करो ते एहदे मकाबले च दिनै गी (कम्म-काज आस्तै) रोशन बनाए दा ऐ। जेहके लोक (सच्ची गल्ला गी) सुनदे (ते ओहदे शा लाह ठुआंदि) न उंदे आस्तै इस नजाम च सच्चें गै नेकां नशान न ॥ 68 ॥

ते उनें (ते इत्थें तक) गलाई दिता जे अल्लाह नै बी अपने आस्तै संतान बनाई लैती दी ऐ। (हालांके अस मुसलमान ते उस्सी) इस गल्ला शा पवित्रर मनन्ने आं। ओह बड़ा बे-न्याज ऐ (यानी कुसै दा मुत्ताज नेई)। जे किश गासैं ते धरती च ऐ सब उस्सै दा ऐ। (जेहदा दा'वा तुस करदे ओ) इस दा थुआड़े कश कोई बी सबूत नेई ऐ, तां क्या तुस अल्लाह दे बारे च ऐसी गल्ल आखदे ओ जिसदे बारे च तुस किश बी नेई जानदे? ॥ 69 ॥

तू उनेंगी आख जे जेहके लोक अल्लाह पर झूठ घड़दे न ओह कदें बी सफल नेई होंदे ॥ 70 ॥

संसार च (उंदा हिस्सा किश दिनें आस्तै) लाह हासल करना ऐ फी उनेंगी साढ़े कश गै परतियै औना होग, फी इस कारण जे ओह इन्कार करदे (रौहदे) न अस उनेंगी सख्त अजाब दा मजा चखागे ॥ 71 ॥ (रुकू 7/12)

ते तू उनेंगी नूह दा हाल बी सुनाऽ, की जे उसनै अपनी कौम कन्नै गलाया हा जे हे

دُونَ اللَّهِ شُرَكَاءُ ۗ إِنَّ يَتَّبِعُونَ إِلَّا
الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٦٧﴾

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ آيَاتٍ لِتَسْكُنُوا فِيهَا
وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ
لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٦٨﴾

قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهُ ۗ هُوَ
الْغَنِيُّ ۗ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ ۗ إِنَّ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا
أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٩﴾

قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ
لَا يَفْلِحُونَ ﴿٧٠﴾

مَتَاعٍ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ
نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا
يَكْفُرُونَ ﴿٧١﴾

وَأَنذَرْتَهُمْ نَبَأَ نُوْحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ ۖ

मेरी कौम दे लोको! जेकर तुसिंगी मेरा (अल्लाह पासेआ दिता गेदा) पद जां अल्लाह दे चमत्कारें राहें मेरा तुसिंगी (थुआड़ा फर्ज) चेता कराना बुरा लगदा ऐ तां याद रक्खो जे अ'ऊं सिर्फ अल्लाह पर भरोसा रक्खना आं ते तुस अपने बनाए दे (अल्लाह दे) शरीकें समेत अपनी गल्ल (पक्की करने दे सारे साधन) कठेरी लैओ ते थुआड़ी गल्ल (कुसै द्रिश्टीकोण कन्नै बी) तुदे पर मुश्तबह (संदिग्ध) नेई रौहनी चाही दी। फी उसी मेरे पर लागू करी देओ ते मिगी कोई मोह्लत नेई देओ ॥ 72 ॥

जेकर फी बी तुस मूह फेरी लैओ तां इस च मेरा कोई नुकसान नेई (बल्के थुआड़ा गै ऐ) की जे में (इसदे बदले च) तुदे शा कोई अजर नेई मंगेआ। मेरा अजर अल्लाह दे सिवा होर कुसै पर नेई ऐ ते मिगी हुकम दिता गेदा ऐ जे अ'ऊं पूरी चाल्ली ओहदी आज्ञा दा सच्चा पालन करने आह्ले लोकें चा बनी जां ॥ 73 ॥

इस पर बी उनें उसी झुठलाई दिता। उसलै असें उसी ते ओहदे कन्नै किशती च बौहने आहलें गी बचाई लैता ते उनेंगी पैह्ले लोकें दा थाहर लैने आह्ला बनाई दिता, पर जिनें लोकें साढ़ी आयतें गी झुठलाया हा उनेंगी असें डोबी दिता। इस आस्तै दिक्खो! जिनें लोकें गी (इस अजाब दे बारे च) जानकारी देई दिती गई ही उंदा अन्जाम कैसा होआ? ॥ 74 ॥

फी उसदे बा'द असें होर बी केई रसूल अपनी-अपनी कौम कश भेजे ते ओह उंदे कश जाहरा-बाहरा नशान लेइयै आए तां

يُقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَقَامِي
وَتَذَكِّرِيْ بِآيَاتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ
فَاجْتَمِعُوا اَمْرَكُمْ وَشُرَّكَاءُكُمْ ثُمَّ لَا
يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوا
اِلَيَّْ وَلَا تَنْظُرُوْنَ ۷۲

فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُمْ مِنْ اَجْرٍ اِنْ
اَجْرِيْ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ
مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۷۳

فَكَذَّبُوهُ فَجَبَّيْنَاهُ وَمَنْ مَّعَهُ فِي الْمَلِكِ
وَجَعَلْنَاهُمْ خَلِيْفًا وَاَعْرَفْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوا
بِآيَاتِنَا فَاَنْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُذْرَبِيْنَ ۷۴

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ رُسُلًا اِلَى قَوْمِهِمْ
فَجَاءَهُمْ وَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوْا

ओह लोक उंदे पर इस करी ईमान नेई ल्याए जे ओह (इस शा पैहलें) उस सचाई गी झुठलाई चुके दे हे। अस हद्द शा बधने आहलें दे दिलें पर इसै चाल्ली मोहर लाने होने आं ॥ 75 ॥

फी उंदे बा'द असें मूसा ते हारून गी अपने चमत्कार देइयै फिरऔन ते ओहदी कौम दे बड्डे लोकें कश भेजेआ तां उनें घमंड अखत्यार करी लैता ते ओह लोक पैहलें थमां गै इक मुलजम कौम दे लोक हे ॥ 76 ॥

फी जिसलै साढ़े पासेआ उंदे कश हक्क (सच्च) आया तां उनें गलाई दिता जे एह जरूर गै (भाईचारे गी) कट्टी देने आहला फरेब ऐ ॥ 77 ॥

इस पर मूसा नै उनेंगी गलाया जे क्या तुस हक्क दे बारे च ऐसा आखदे ओ ते ओह बी उस बेलै जिसलै जे ओह थुआड़े कश आई चुके दा ऐ। क्या एह फरेब होई सकदा ऐ? हालांके फरेब करने आहले कदें सफल नेई होंदे ॥ 78 ॥

उनें गलाया जे क्या तूं साढ़े कश इस लेई आया ऐं जे जिस गल्ला (घासी) पर असें अपने बड़कें गी पाया ऐ ओहदे शा असें गी हटाई देऐं ते तुसें दौनें गी देश च बड़ाई हासल होई जा? ते अस ते तेरे पर कदें बी ईमान नेई आहनगे ॥ 79 ॥

ते फिरऔन नै (अपने लोकें गी) गलाया जे तुस मेरे कश (देश-भरै दे) सारे कसबी जादूगरें गी लेई आओ ॥ 80 ॥

इस आस्तै जिसलै सारे जादूगर लोक आए तां मूसा नै उनेंगी गलाया जे किस तुसें सुट्टना ऐ सुट्टो ॥ 81 ॥

بِمَا كَذَّبُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ ۖ كَذَلِكَ نَنْظُرُ عَلَى قُلُوبِ الْمُتَعْتِبِينَ ﴿٧٥﴾

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمُ مُوسَى وَهَارُونَ إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ بِالْبَيِّنَاتِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُجْرِمِينَ ﴿٧٦﴾

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧٧﴾

قَالَ مُوسَى أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ ۖ أَسِحْرٌ هَذَا وَلَا يُفْلِحُ السَّحْرُونَ ﴿٧٨﴾

قَالُوا أَجِئْنَا بِتِلْكَ آيَاتِنَا وَعَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا وَتَكُونُ لَكُمْ أَلِكْرِيَاءٍ فِي الْأَرْضِ ۖ وَمَا نَحْنُ لَكُمْ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٧٩﴾

وَقَالَ فِرْعَوْنُ اسْتَوِي بِكُلِّ سِحْرِ عَلِيمٍ ﴿٨٠﴾

فَلَمَّا جَاءَ السَّحْرَةَ قَالَ لَهُمْ مُوسَى أَتَقُولُوا مَا آتَيْتُمْ مُلْقُونَ ﴿٨١﴾

इस पर जिसलै उनें जे किश सुटटना हा सुट्टी दिता तां मूसा नै गलाया जे जे किश तुसैं लोकें पेश कीता ऐ पूरे दा पूरा फरेब ऐ ते अल्लाह उसी जरूर मटाई देग। अल्लाह बगाड़ पैदा करने आहलें दियें कारबाइयें गी कदें बी कामयाब नेई होन दिंदा ॥ 82 ॥

ते अल्लाह अपने बचन राहें सचाई गी कायम करदा ऐ, भामें मुलजम लोक इस गल्ला गी ना-पसंद गै करन ॥ 83 ॥ (रुकू 8/13)

फी बी इसदी कौम दे किश गै नौ-जुआन ओहदे पर ईमान ल्याए बाकी दूए लोकें फ़िरऔन ते अपनी कौम दे बड्डे लोकें दे डरैं मूसा दी फरमांबरदारी अखल्यार नेई कीती जे ओह उनेंगी कुसै मसीबती च नेई पाई देन ते फ़िरऔन यकीनी तौरा पर जालम हा ते हद्द शा बर्धी जाने आहलें चा हा ॥ 84 ॥

ते मूसा नै अपनी कौम दे लोकें गी गलाया जे हे मेरी कौम दे लोको! जेकर एह गल्ल सच्च ऐ जे तुस अल्लाह पर ईमान ल्याए दे ओ ते जेकर तुस (एहदे कनै) अल्लाह दे सच्चे फरमांबरदार बी ओ तां उसै पर भरोसा रक्खो ॥ 85 ॥

इस पर उनें गलाया जे अस अल्लाह पर गै भरोसा रक्खने आं। हे साढ़े रब्ब! असेंगी इनें जालम लोकें आस्तै फ़िल्ता (दा साधन) नेई बनाऽ ॥ 86 ॥

ते अपनी रैहमत कनै असेंगी काफर लोकें शा बचाई लै ॥ 87 ॥

ते असें मूसा ते ओहदे भ्राऽ पासै वही भेजी जे तुस मिस्र च अपनी कौम दे लोकें आस्तै किश मकान्नें दी ज'गा चुनी लैओ ते तुस सारे

فَلَمَّا أَتَقُوا قَالَ مُوسَىٰ مَا جِئْتُم بِهٖ
السِّحْرُ ۗ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا
يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ ۝

وَيُحَقِّقُ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ
الْمُجْرِمُونَ ۝

فَمَا أَمَرَ مُوسَىٰ إِلَّا ذُرِّيَّةً مِّن قَوْمِهِ
عَلَىٰ خَوْفٍ مِّن فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِمَا أَن
يَقْتُلَهُمْ ۗ وَإِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ
وَأَنَّهُ لَمِنَ الْمُسْرِفِينَ ۝

وَقَالَ مُوسَىٰ يَقَوْمِ إِن كُنتُمْ ممتنعين بالله
فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا إِن كُنتُمْ مُسْلِمِينَ ۝

فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا
فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

وَجِئْنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ وَأَخِيهِ أَنْ تَبَوَّأَا
لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بَيْتًا وَاجْعَلُوا

लोक अपने घर आमनै-सामनै बनाओ ते उंदे च शैल करियै नमाज पढ़ा करो ते (एह बी वही कीती जे हे मूसा!) तूं मोमिनं गी (कामयाबी दा) शुभ-समाचार सुनाई दे ॥ 88 ॥

ते मूसा नै गलाया जे हे मेरे रब्ब! तोह फ़िराँन ते ओहदी कौम दे बड्डे लोकें गी संसारक जीवन च शोभा (दा समान) ते धन-दौलत देई रखी दी ऐ, पर हे मेरे रब्ब! नतीजा एह निकला करदा ऐ जे ओह तेरे रस्ते शा लोकें गी भटकाऽ करदे न। इस आस्तै हे साढ़े रब्ब! उंदी धन-दौलत गी बरबाद करी दे ते उंदे दिलें पर बी स'जा नाज़ल कर जिसदा एह नतीजा निकलै जे जिच्चर ओह दर्दनाक अज़ाब नेई दिक्खी लैन, ईमान नेई ल्यौन! ॥ 89 ॥

(इस पर अल्लाह नै) गलाया जे थुआड़ी प्रार्थना कबूल करी लैती गेई ऐ। इस आस्तै तुस दमें धीरज शा कम्म लैओ ते जेहके लोक इलम नेई रखदे उंदे रस्ते दा अनुसरण कदें बी नेई करो ॥ 90 ॥

ते असें बनी-इस्राईल गी समुंदरै चा पार कीता ते फ़िराँन ते ओहदी सैना नै घमंड ते जुलम राहें उंदा पीछा कीता, इत्थें तक जे जिसलै उसी (ते ओहदी सैना गी) डुब्बने दी बिपता नै आई पकड़ेआ तां उसनै गलाया जे जेहदे पर बनी-इस्राईल ईमान ल्याए न, अ'ऊं बी ओहदे पर ईमान ल्यौन्ना आं। ओहदे सिवा कोई बी उपास्य

يَوْمَ تَكُفُّ قِبَلَهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَبَشِّرِ
الْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٨﴾

وَقَالَ مُوسَى رَبَّنَا إِنَّكَ آتَيْتَ فِرْعَوْنَ
وَمَلَآءَهُ زِينَةً وَأَمْوَالًا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
رَبَّنَا لِصَلُّوا عَن سَيِّئِكَ رَبَّنَا طَمَسْ
عَلَى أَمْوَالِهِمْ وَأَشْدُّ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَلَا
يُؤْمِنُوا حَتَّى يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٨٩﴾

قَالَ قَدْ أُجِيبَت دَعْوَتُكُمْ فَاَسْتَقِيمَا
وَلَا تَتَّبِعِنَّ سِبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٩٠﴾

وَجُورَنَا بِبَنِي إِسْرَائِيلَ الْبُحْرَ فَأَتَبَهُمُ
فِرْعَوْنَ وَجُودُهُ بَغِيًّا وَعَدْوًا حَتَّى إِذَا
أَدْرَكَهُ الْغُرْقُ قَالَ آمَنْتُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ
إِلَّا الَّذِي آمَنْتُ بِهِ بَنُو إِسْرَائِيلَ وَأَنَا

1. इस दा एह अर्थ नेई जे अल्लाह जबरदस्ती लोकें पर अज़ाब उतारदा ऐ, बल्के भाव एह ऐ जे ओह लोक गुमराही च इन्ने बधी चुके दे न जे ईमान आहने दे सरबंधे च उनेंगी अल्लाह पासेआ ढेल नेई मिलनी चाही दी। हां! अज़ाबें गी दिक्खिये ओह आपू गे तोबा करी लैन तां एह उंदे आस्तै बेहतर ऐ।

नेई ते अ 'ऊं सच्ची फरमांबरदारी अखत्यार करने आहलें चा (होन्ना) आं ॥ 91 ॥

(असें गलाया जे) क्या तूं हून ईमान आह्नना ऐं, हालांके पैहलें तोह ना-फरमान्नी कीती ते तूं दंगा-फसाद करने आहलें चा हा ॥ 92 ॥

इस आस्तै हून अस तेरे शरीर गी सुरक्खत करियै तुगी¹ (इक चाल्ली दी) मुक्ति देगे, तां जे जेहके लोक तेरे बा'द औने आहले न उंदे आस्तै तूं इक नशान² होऐं ते लोकें चा मते-हारे लोक साढ़े नशानें शा बे-खबर न ॥ 93 ॥ (रुकू 9/14)

ते बे-शक्क असें बनी-इस्राईल गी जाहरा-बाहरा ते गुप्त हर चाल्ली दे गुणें आहला श्रेष्ठ स्थान प्रदान कीता हा ते उनें गी हर भांती दे उत्तम (बधिया) पदार्थ बी दिते हे, फी उस बेल्लै³ तक जे उंदे कश स्हेई इलम आई गेआ उनें कुसै गल्ला च इखल्लाफ (मत-भेद) नेई कीता। तेरा रब्ब उंदै बशकार इस गल्ला दे बारे च क्यामत आहलै रोज जरूर गै फैसला करी देग जिस गल्ला बारै ओह हून मत-भेद⁴ शा कम्म लै करदे न ॥ 94 ॥

फी जेकर तूं (हे कुरआन पढ़ने⁵ आहलेआ!) इस वाणी कारण शक्क च ऐं, जे असें तेरे पर

مِنَ الْمُسْلِمِينَ ⑩

أَلَّنْ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلَ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ⑪

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِبَدْنِكَ لِيَتَكُونَ لِمَنْ خَلَقْنَا آيَةً ۖ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ عَنَّا يَسْتَأْذِنُونَ ⑫

وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ مُبَوَّأً صَدِيقٍ وَرَزَقْنَاهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ ۖ فَمَا اتَّخَلَفُوا حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْعِلْمُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ⑬

فَإِنْ كُنْتَ فِي شَكٍّ مِّمَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ

1. इस आयत गहें हूनै तक कुरआन दी सचाई सिद्ध होआ करदी ऐ, की जे मिस्र दे सम्राट फिराऊन दे समुंदरे च डुब्बने दे बा'द ओहदी लाश तुप्पियै कइडी गेई ते अज्ज-तक्क सुरक्खत रक्खी गेदी ऐ ते अज्ज-कल्ल मिस्र दे अजैबधरे च मजूद ऐ।
2. यानी शिक्षा देने दा साधन।
3. यानी जिसलै बी ओहदे कश रसूल आए तां उनें इखल्लाफ शा कम्म लैता। रसूलें दी शिक्षा औने शा पैहलें ओह परानी घासी पर चलदे रेह।
4. यानी हजरत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. कनै सारें शा बइडा मत-भेद हा। क्यामत आहलै ध्याइँ एहदा फैसला जरूर होग।
5. एह संकेत कुरआन करीम पढ़ने आहलें पासै ऐ नां के हजरत मुहम्मद मुस्ताफ़ा सल्लल्लाम आस्तै, की जे ओह पवित्र कुरआन दे ब्यान मताबक हर शक्क शा परें न। उंदे बारे कुरआन करीम च लिखे दा ऐ जे "अ 'ऊं सारें शा पैहला फरमांबरदार आं।" (सूर: अलअन्आम आयत: 128)

उतारे दा ऐ तां तूं उनें लोकें गी पुच्छ जेहके तेरे शा पैहलें इस कताबा गी पढ़ा करदे न। (ते तुगी पता लगगी जाग जे) यकीनन तेरे रब्ब पासेआ तुगी इक सचाई दिती गई ऐ। इस लेई तूं शक्क करने आहलें चा नेई बन ॥ 95 ॥

ते तूं उनें लोकें चा कदें बी नेई बन जिनें अल्लाह दियें आयतें गी झुठलाई दिता ऐ बरना तूं घाटा खाने आहलें चा होई जागा ॥ 96 ॥

जिनें लोकें दे बारे च तेरे रब्ब पासेआ (हलाकत दी) खबर आई चुकी दी ऐ ओह कदें बी ईमान नेई ल्यौंडन ॥ 97 ॥

ते जेकर उंदे कश हर किसमै दे नशान आई बी जान तां बी ओह उस बेल्लै तक ईमान नेई ल्यौंडन जिच्चर दर्दनाक अज्ञाब दिक्खी नेई लैन ॥ 98 ॥

ते यूनस दी कौम दे सिवा की कोई होर ऐसी बस्ती नेई होई जेहकी सारी दी सारी ईमान लेई औं दी ते ओहदा ईमान लेई औना ओहदे आस्तै फायदेमंद होंदा। जिसलै ओह (यूनस दी कौम दे लोक) ईमान लेई आए तां असें उंदे परा इस लोक दे जीवन दे अपमान-जनक अज्ञाब गी दूर करी दिता ते उनें गी इक समे तगर हर चाल्ली दे सुख प्रदान कीते ॥ 99 ॥

ते जेकर अल्लाह हदायत दे बारे च अपनी गै इच्छा गी लागू करदा तां धरती दे सब लोक ईमान लेई औं दे। (इस आस्तै जिसलै अल्लाह बी मजबूर नेई करदा) तां क्या तूं लोकें गी इन्ना मजबूर करगा जे ओह मोमिन बनी जान।

॥ 100 ॥

فَسَأَلِ الَّذِينَ يَفْرءُونَ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكَ لَقَدْ جَاءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿٩٥﴾

وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ فَتَكُونُوا مِنَ الْخٰسِرِينَ ﴿٩٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٩٧﴾

وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٩٨﴾

فَلَوْلَا كَانَتْ قُرْبَىٰ أَمِنْتَ فَنَفَعَهَا إِيمَانُهَا إِلَّا قَوْمَ يُونُسَ لَمَّا آمَنُوا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخُرْبِيِّ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٩٩﴾

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَأَمَنَّ مِنَ فِي الْأَرْضِ كُلَّهُمْ جَمِيعًا لَاقَأْتِ تَكْرِيهَ النَّاسِ حَتَّىٰ يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿١٠٠﴾

ते अल्लाह दी आज्ञा दे बगैर कुसै दे बस्स च नेई जे ओह ईमान ल्यावै ते ओह अपना गजब उनें लोकें पर नाज़ल करदा ऐ जेहके अकल रखदे होई बी ओहदे शा कम्म नेई लेंदे ॥ 101 ॥

तूं उनेंगी आख जे दिक्खो! गासैं ते धरती च केह् होआ करदा ऐ ते सारे नशान भामें शांति आहले होन जां डराने आहले, ऐसे लोकें गी लाह् नेई पुजांदे जेहके ईमान नेई आहनने पर अड़े दे होन ॥ 102 ॥

फी केह् एह् लोक अपने शा पैहलें होने आहले लोकें दे बुरे ध्याडें जनेह् दिनें दे सिवा कुसै दूई चीजा दा इंतजार करा करदे न? तूं उनेंगी आख जे अच्छा! (जेकर ओह गै नमूना दिक्खना ऐ तां) फी तुस लोक किश इंतजार करो। सच्चें गै अ'ऊं बी तुंदे कनै इंतजार करने आहलें बिच्चा आं ॥ 103 ॥

ते (जिसलै ओह अजाब आई जाग तां उस बेल्लै) अस अपने रसूलें ते उंदे पर ईमान ल्यौने आहलें गी बचाई लैगे। इससै चाल्ली साढ़े आस्तै जरूरी ऐ जे अस मोमिनें दी पहाजत करने होन्ने आं ॥ 104 ॥ (रुकू 10/15)

तूं आख जे हे लोको! जेकर तुस मेरे धर्म दे बारे च कुसै चाल्ली दी शंका च ओ तां (सुनो!) तुस अल्लाह गी छोड़ियै जिंदी (जिनें उपास्यें दी) उपासना करदे ओ अ'ऊं उंदी उपासना नेई करदा, बल्के अ'ऊं अल्लाह दी उपासना करना आं जेहका तुसेंगी मौत देग ते मिगी हुकम दिता गेदा ऐ जे अ'ऊं ईमान आहनने आहलें चा बनां ॥ 105 ॥

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُوْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ
وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٠٥﴾

قُلْ انظُرُوا مَاذَا فِي السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَمَا تُعْزِي الْأَيُّمُ وَالنَّذْرُ
عَنْ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٦﴾

فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ
خَلَّوْا مِنْ قَبْلِهِمْ قُلْ فَانظُرُوا إِلَىٰ
مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ﴿١٠٧﴾

ثُمَّ نَبِّئِ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا كَذَلِكَ
حَقًّا عَلَيْنَا نَحْمَدُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٨﴾

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِنْ
دِينِي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ
دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي
يَتَوَقَّعُكُمْ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٩﴾

ते (इस फरमान दे पजाने दा बी हुकम दिता गेदा ऐ जे हे संबोधत!) तू हर चाल्ली दे बगाड़े शा बचियै सदा आस्तै अपना ध्यान धर्म आस्तै अर्पत करी दे ते तू मुश्रिकें (अनेकेश्वरवादियें) चा नेई बन ॥ 106 ॥

ते तू अल्लाह दे सिवा कुसै गी बी नेई पुकार जेहका नां ते तुगी कोई लाह पुजाई सकदा ऐ ते नां कोई नुकसान गै। जेकर तोह ऐसा कीता तां फी तू यकीनन जालमें च शमार होगा ॥ 107 ॥

ते जेकर अल्लाह तुगी कोई तकलीफ पुजाऽ तां ओहदे (अल्लाह दे) सिवा कोई बी उसी दूर करने आहला नेई ते जेकर ओह तेरे आस्तै कोई भलाई चाह तां ओहदी किरपा गी रोकने आहला बी कोई नेई। ओह अपने भगतें चा जिसी चांहदा ऐ उसी अपनी किरपा प्रदान करदा ऐ ते ओह बौहत गै बखाने आहला ते बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 108 ॥

तू उनेंगी आख जे हे लोको! थुआड़े कश थुआड़े रब्ब पासेआ सचाई आई गेई ऐ। इस आस्तै जो शख्स (ओहदी दस्सी दी) हदायत दा अनुसरण करदा ऐ तां ओह अपने गै भले आस्तै उसी अपनांदा ऐ ते जो कोई इस रस्ते शा भटकती जा तां ओहदा भटकना ओहदे आस्तै गै (नुकसानदेह) होग ते अ'ऊं थुआड़ा कोई जिम्मेवार नेई आं। ॥ 109 ॥

ते जे किश तेरे पासै वह्वी नाजल कीती जंदी ऐ तू ओहदा अनुसरण कर ते सबर शा कम्म लै इत्थें तक जे अल्लाह फैसला करी देऐ ते ओह सब फैसला करने आहलें शा बेहतर फैसला करने आहला ऐ ॥ 110 ॥ (रुकू 11/16)

وَأَنْ أَقِمُّ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا
وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ
وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ
إِذَا مِنَ الظَّالِمِينَ ۝

وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ
إِلَّا هُوَ ۚ وَإِنْ يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ
لِفَضْلِهِ يُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۗ
وَهُوَ الْعَفُورُ الرَّحِيمُ ۝

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الْحَقُّ مِنْ
رَبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي
لِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا
وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ۝

وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتَّىٰ
يَحْكُمَ اللَّهُ ۗ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۝



सूर: हूद

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां इक सौ चौहबी आयतां ते दस रकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नां5 लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला ते बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अलिफ, लाम, रा¹। अ'ऊं अल्लाह दिक्खने
आहला आं। एह ऐसी कताब ऐ जेहदियें
आयतें गी मुहकम (सुद्रिढ़) बनाया गोआ ऐ
ते इस दे अलावा उनेंगी स्पष्ट रूपै च ब्यान
कीता गोआ ऐ ते एह हिक्मत आहले ते बौहत
जानने आहले (अल्लाह) पासेआ न ॥ 2 ॥

الرَّاهِدِ كِتَابٌ أُحْكِمَتْ آيَاتُهُ ثُمَّ فُصِّلَتْ
مِنْ لَدُنِّ حَكِيمٍ خَبِيرٍ ①

(ते एहदे च एह तलीम दित्ती गेदी ऐ जे) तुस
अल्लाह दे सिवा कुसै दी अबादत नेई करो।
सच्चें गै अ'ऊं अल्लाह पासेआ तुसें गी सचेत
करने आहला ते म्हत्तवपूर्ण समाचार देने आहला
बनाइयै भेजेआ गेदा आं ॥ 3 ॥

أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۗ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ
نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ ①

ते (एह बी तलीम दित्ती गेदी ऐ जे) तुस
अपने रब्ब शा बखिाश मंगो ते ओहदे पासै
(सच्चे दिलै कनै) झुको उसलै ओह तुसेंगी
इक निश्चत समे तक सुख-शांति दे अच्छे
साधन प्रदान करग ते हर-इक प्रधानता आहले
शख्स गी अपनी किरपा प्रदान करग ते जेकर
तुस मूंह फेरी लैगे ओ तां यकीनन अ'ऊं

وَأَن اسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ
يُمَتِّعْكُمْ مَتَاعًا حَسَنًا إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى
وَيُؤْتِ كُلَّ ذِي فَضْلٍ فَضْلَهُ ۗ وَإِن تَوَلَّوْا
فَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيرٍ ①

1. ब्याँरे आस्तै दिक्खो सूर : बकर - टिप्पनी आयत नं. 2

थुआड़े उप्पर इक भयंकर अजाब दे औने दे
दिनै शा डरनां आं ॥ 4 ॥

तुसैं सारें गी अल्लाह कश गै परतियै जाना ऐ
ते ओह हर इक गल्ला पर पूरी-पूरी समर्थ
रखदा ऐ ॥ 5 ॥

सुनो! यकीनन ओह अपने सीनैं गी इस आस्तै
मोड़दे रौहदे न जे उस (अल्लाह) शा छप्पे दे
रौहन। सुनो! जिसलै ओह अपने कप्पड़े लांदि
न उस बेल्लै बी ओह जे किश छपालदे न ते
जे किश जाहर करदे न ओह उसी जानदा ऐ।
ओह यकीनन दिलें दे सारे भेतें गी बी चंगी
चाल्ली जानदा ऐ ॥ 6 ॥

إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

أَلَا إِنَّهُمْ يَتَّبِعُونَ صُدُورَهُمْ لَيَسْتَخْفُوا
مِنْهُ ۗ أَلَا جِنَّةٌ يَسْتَعْتِبُونَ شَيْبَهُمْ ۗ
يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۗ
إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

ते धरती च कोई बी ऐसा जीवधारी नेई ऐ जेहदा रिश्क (जीविका) अल्लाह दे जिम्मै नेई होऐ। ओह उसदे आरजी! नवास-स्थान ते उसदे पक्के (स्थाई) नवास-स्थान गी जानदा ऐ। एह सब किश जाहर करी देने आहली कताब च (मजूद) ऐ ॥ 7 ॥

وَمَامِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ①

ते ऊऐ ऐ जिसनै गासँ ते धरती गी छँ दौरँ च पैदा कीता ऐ तां जे ओह थुआड़ा इम्तेहान लै जे तुंदे चा कोहदे कर्म ज्यादा अच्छे न ते ओहदा अर्श² पानी पर ऐ ते एह यकीनी गल्ल ऐ जे जेकर तू उनेंगी गलाए जे तुस मरने दे बा 'द जरूर दुआले जागे ओ तां जिनँ लोके इन्कार कीता ऐ ओह सघंदां खाई-खाइयै गलाडन जे ए बा 'यदा सिर्फ इक धोखा ऐ ॥ 8 ॥

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۗ وَلَئِنْ قُلْتُمْ إِنَّكُمْ مَعْبُوثُونَ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ①

ते एह बी अटल गल्ल ऐ जे जेकर अस इस अज़ाब गी इक निश्चत समे तगर पिच्छँ हटाई रखचै तां ओह जरूर गलाडन जे केहड़ी गल्ल इसी रोका करदी ऐ? सुनो! जिसलै ओह अज़ाब उंदे पर आई जाग तां फी ओह उंदे शा दूर नेई कीता जाग ते जिस अज़ाब पर ओह हसदे होंदे हे ओह उनेंगी घेरी लैग ॥ 9 ॥ (रुकू 1/1)

وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَىٰ أُمَّةٍ مَّعْدُودَةٍ لَيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ ۗ أَلَّا يَوْمَ يَأْتِيهِمْ لَيْسٌ مَّصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ①

ते जेकर अस इन्सान गी अपने पासेआ (कुसै चाल्ली दी) रैहमत (दा मजा) चखाचै (ते) फी अस ओहदे शा हटाई लैचै तां ओह बड़ा गै ना-मेद ते किरतघन होई जंदा ऐ ॥ 10 ॥

وَلَئِنْ آذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ زَعَرْنَا مِنْهُ ۗ إِنَّهُ لَيَكْفُرُ ②

1. अस्थाई ते स्थाई शब्दें दे अर्थ आस्तै दिक्खो सूर: अन्आम टिप्पणी आयत नं.99

2. अर्श दा मतलब कहुमत जां ओहदा असूल होंदा ऐ ते पानी शब्द पवित्र कुरआन च वह्मी आस्तै बोल्लेआ जंदा ऐ। इस आस्तै आयत दा मतलब एह होआ जे अल्लाह दी कहुमत दा असूल वह्मी राहँ अपने हुकमँ गी लागू करना ऐ, एह अर्थ नेई जे भीतक पानी पर ओहदा कोई संघासन रखे दा ऐ। अल्लाह दे बारे च ते एह आँदा ऐ जे ओहदे आंगर कोई बी चीज नेई। इस आस्तै भीतकता पर ओहदा अंदाजा लाना ठीक नेई।

ते जेकर अस कुसै मसीबत दे बा'द जेहकी उसी पुज्जी दी होऐ उसी कुसै (बड्डी) नैमत दा मजा चखाचै तां ओह गलान लगदा ऐ जे हून मेरियां सब तकलीफां मेरे शा दूर होई गेइयां न। सच्चें गै ओह बौहत इतराने आह्ला ते बौहत गै फखर (घमंड) करने आह्ला ऐ ॥ 11 ॥

सिवाए उनें लोकें दे जेहेके सबर अखत्यार करन ते शुभ कर्म करन। इय्ये ऐसे लोक न जिंदे आस्तै मुक्ति दा बौहत बड्डा अजर (सिला) (निश्चत) ऐ ॥ 12 ॥

इस आस्तै ममकन ऐ (इन्कारी लोक तैरे शा एह मेद रखदे न) जे तूं उस वही दा जेहकी तैरे पर उतारी जंदी ऐ, किश हिस्सा (लोकें तक पजाने दी बजाऽ उसी) छोड़ी देने पर त्यार होई जा (पर ऐसा कदं नेई होई सकदा) ते (ओह एह बी मेद रखदे न जे) उंदे इस अतराज दी ब'जा करी जे ओहदे पर कोई खजाना की नेई उतरेआ जां ओहदे कश कोई फरिश्ता की नेई आया? तेरा दिल तंग होई जा। तूं सिर्फ सोहगा करने आह्ला ऐ ते अल्लाह हर गल्ला दा कारसाज ऐ ॥ 13 ॥

क्या ओह गलांदे न जे उसनै इस कताबा गी अपने पासेआ बनाई लैता ऐ? तूं उनेंगी आख जेकर तुस (इस ब्यान च) सच्चे ओ तां तुस बी एहदे आंगर दस्स सूरतां अपने पासेआ बनाई ल्याओ ते अल्लाह दे सिवा जिसी (बी अपनी मदद आस्तै) आहनेने दी ताकत होऐ उसी बुलाई लैओ ॥ 14 ॥

इस आस्तै जेकर ओह थुआड़ी एह गल्ल कबूल नेई करन तां समझी लैओ जे जेहका

وَلَيْسَ أَذْفُهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ صَرَآءِ مَسْتَهُ
لَيَقُولُنَّ ذَهَبَ السَّيِّئَاتِ عَنِّي إِنَّهُ
لَفَرِحَ فَخُورًا ۝۱۱

إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
أُولَئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝۱۱

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضُ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ
وَصَآئِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَنْ يَقُولُوا لَوْلَا
أُنزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ جَاءَ مَعَهُ مَلَكٌ
إِنَّمَا أَنْتَ نَذِيرٌ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
وَكَوْنٍ ۝۱۱

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ
سُورٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرِيَتٍ ۖ وَادْعُوا مَنِ
اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ۝۱۱

فَالَمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَأَعْلَمُوا أَنَّمَا

कलाम तुंदे पर उतारेआ गोआ ऐ अल्लाह दे खास इलम पर अधारत ऐ ते एह जे उस दे सिवा कोई हस्ती बी उपासना दे लायक नेई। इस आस्तै क्या तुस पूरी चाल्ली फरमांबरदार बनगे ओ (जां नेई?) ॥ 15 ॥

जेहके लोक संसारक जीवन (दे साधन) गी ते ओहदी शोभा गी अपना मकसद बनाडन उनेंगी अस उंदे कमें दा फल इस्सै जीवन च पूरा-पूरा देगे ते उनेंगी एहदे शा घट्ट नेई दिता जाग ॥ 16 ॥

इय्ये ओह लोक न जिंदे आस्तै आखरत च नरक दी अग्गी दे सिवा होर किश नेई होग ते जे किश उनें इस संसारक जीवन आस्तै कीते दा होग ओह उस (आखरत) च ब्यर्थ उठी जाग ते जे किश ओह करदे रेह होडन ओह सारा तबाह होई जाग ॥ 17 ॥

इस आस्तै क्या ओह शख्स¹ जेहका अपने रब्ब पासेआ इक रोशन दलील पर (कायम) ऐ ते जेहदे पिच्छें बी उस (अल्लाह) पासेआ इक गुआह² आंग (जेहका उसदा फरमांबरदार होग) ते ओहदे शा पैहलें बी मूसा दी कताब आई चुकी दी ऐ (जेहकी ओहदा समर्थन करा करदी ही ते) जेहकी (इस ईश वाणी शा पैहलें) लोके आस्तै इमाम ते रैहमत ही (क्या ओह इक झूठे आंगर होई सकदा ऐ?) ओह (यानी मूसा दे सच्चे अनुयायी) उस पर (जरूर गै इक रोज) ईमान लेई औडन ते इनें बरोधी

أَنْزَلَ يَعْلَمُ اللَّهُ وَأَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
فَقَهْلَ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝

مَنْ كَانَ يَرْيِدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزَيَّنَّهَا
نُوفٍ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا
لَا يَخْشَوْنَ ۝

أُولَئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا
النَّارُ ۗ وَحَبِطَ مَا صَبَّحُوا فِيهَا وَابْطُلَ مَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

أَقَمْنَا كَانَ عَلَى بَيْنَةٍ مِنْ رَبِّهِ وَيَسْتَلُوهُ
شَاهِدٌ مِنْهُ وَمِنْ قَبْلِهِ كَتَبَ مُوسَى إِمَامًا
وَرَحْمَةً ۗ أُولَئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۗ وَمَنْ
يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْرَابِ فَالْتَأْرُ مَوْعِدُهُ ۗ
فَلَاتِكُ فِي مَرِيَّةٍ مِنْهُ ۗ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ
رَبِّكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

1. यानी हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व.।

2. यानी एहदे अनुयायिये चा बी इक सुधारक पैदा होग जेहका अपनी ईश वाणी राहें ओहदा समर्थन करग। आखो हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दी मदद आस्तै त्रै गुआह न- (1) एह आपू अपने कश युक्तियां ते स्पष्ट दलीलां रखदा ऐ।

(2) ओहदे अनुयायिये चा औलिया ते ईश भागत पैदा होदे रौहडन जेहके ओहदी सचाई पर गुआही होडन । 3. एहदे शा पैहलें हजरत मूसा दी कताब ओहदी सचाई पर गुआही देआ करदी ऐ।

दलें चा जो कोई इन्कार करता रौहग तां नरक ओहदा बा'यदा कीता गेदा ठकाना ऐ। इस आस्तै (हे मुखातब!) तूं इसदे बारे च कुसै शक्क च नेई पौ। यकीनन ओह सच्च ऐ ते तेरे रब्ब पासेआ ऐ, पर मते-हारे लोक ईमान नेई आहनदे ॥ 18 ॥

ते उस शख्स शा बद्ध होर कु'न जालम होई सकदा ऐ जेहका अल्लाह पर झूठ घडै। ऐसे लोक अपने रब्ब दे सामनै पेश कीते जाडन ते सारे गुआह गलाडन जे एह ओह लोक न जिनें अपने रब्ब पर झूठ घड़ेआ हा। सुनो! इनें जालमें पर अल्लाह दी फटकार ऐ ॥ 19 ॥

एह ओह लोक न जेहके दूएँ गी अल्लाह पासै (जाने आहले) रस्ते थमां रोकदे न ते ओहदे च बगाड़ा पैदा करना चांहदे न ते इय्यै लोक बा'द च औने आहली घड़ी दे (सारें शा) बड्डे मुन्कर न ॥ 20 ॥

एह लोक देशै च (अल्लाह दी) जमात गी कमजोर नेई करी सकदे ते नां गै अल्लाह गी छोड़ियै उंदा कोई दोस्त होंदा ऐ। इनें गी दूना अज्ञाब दित्ता जंदा ऐ (संसार च बी ते आखरत/ परलोक च बी) नां ते ओह किश सुनी सुकदे न ते नां किश दिक्खी सकदे न ॥ 21 ॥

इय्यै ओह लोक न जिनें अपने-आपै गी घाटे च पाया ते जिस मकसद आस्तै ओह अल्लाह पर झूठ घड़दे होंदे हे ओह उंदे शा जंदा रेहा ॥ 22 ॥

एह पक्की गल्ल ऐ जे आखरत च सारें शा ज्यादा घाटा खाने आहले ऊऐ होडन ॥ 23 ॥

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
أُولَٰئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ
الْأَشْهَادُ هَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ
رَبِّهِمْ ۗ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ۝

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنِ سَبِيلِ اللَّهِ
وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۗ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ
كٰفِرُونَ ۝

أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي
الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ
أَوْلِيَاءَ ۗ يُضْعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ۗ مَا
كَانُوا يَصْطَرِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا
يُبْصِرُونَ ۝

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ
وَصَلَّ عَنْهُمْ مِمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمْ
الْأَخْسَرُونَ ۝

जेहके लोक ईमान ल्याए ते उनें नेक (ते परिस्थिति दे मताबक) कर्म कीते ते ओह् अपने रब्ब दे सामनें झुकी गे ओह् जरूर गै सुर्ग च रौहने आहले न। ओह् ओहदे च म्हेशां आस्तै बास करडन ॥ 24 ॥

इनें दौन्नी दलें दी हालत अ'नें, सज्जर-सत्यें ,बोलें ते खूब सुनने आहलें आंगर ऐ। क्या इनें दौन्नी दी हालत इक-बराबर होई सकदी ऐ? क्या तुस फी बी नेई सोचदे ? ॥ 25 ॥ (रुकू 2/2)

ते असें गै नूह गी ओहदी कौम कश (रसूल बनाइयै) भेजेआ हा। (उसने उनेंगी गलाया हा) सुनी लैओ! अ'ऊं थुहाड़े कश जाहरी रूपै च सचेत करने आहला बनाइयै भेजेआ गेदा आं ॥ 26 ॥

(इस सनेह् कनै) जे तुस अल्लाह दे सिवा कुसै दी अबादत नेई करो। यकीनन अ'ऊं थुआड़े उप्पर इक बड्डे तकलीफ देने आहले दिनै दे अजाब (दे औने)शा डरना आं ॥ 27 ॥

इस पर उंदे चा सरदारें ,जिनें ओहदी कौम चा ओह्दा इन्कार कीता हा। उसी गलाया जे अस तुगी अपने जनेह् इक शख्स शा बद्ध किश नेई समझदे ते नां अस एह् दिक्खने आं जे साढ़े चा तुच्छ लब्बने आहले लोके दे सिवा कुसै प्रतिशठत (नामी) शख्स नै तेरा अनुसरण कीता होऐ ते अस अपने उप्पर कुसै किसमा दी बशेशता तेरे च नेई पान्ने आं, बल्के साढ़ा विश्वास ऐ जे तुस झूठे ओ ॥ 28 ॥

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
وَآخَبَتُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿۲۴﴾

مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصْمَىٰ
وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ ۗ هَلْ يَسْتَوِينَ
مَثَلًا ۗ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿۲۵﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ ۖ إِنِّي لَكُمْ
نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿۲۶﴾

أَنْ لَا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۗ إِنِّي أَخَافُ
عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمِ الْيَوْمِ ﴿۲۷﴾

فَقَالَ الْمَلَأَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا
نُرِيدُ إِلَّا بَشَرًا مِثْلَنَا وَمَا نُرِيدُ
أَتَّبِعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَادْنَا بِآدَى
الرَّأْيِ ۗ وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ
بَلْ نُنظِّكُمْ كَذِبِينَ ﴿۲۸﴾

उसनै गलाया जे हे मेरी कौम दे लोको! जरा दस्सो ते सेही जे (जेकर एह साबत होई जा जे) मेरा दा'वा अपने रब्ब पासेआ दित्ते दे कुसै स्पष्ट चमत्कार पर अधारत ऐ ते उसनै मिगी अपने पासेआ इक बौहत बड्डी र्हेमत प्रदान कीती दी ऐ ते ओह तुंद्दे पर शक्क आहली रेही ऐ (तां थुआड़ा केह हाल होग?) क्या अस उस (स्पष्ट चमत्कार) गी तुंद्दे शा जबरन मनाई लौगे, भामें तुस उसी पसंद¹ नेई करगे ओ? ॥ 29 ॥

ते हे मेरी कौम दे लोको! अ'ऊं एहदे आसतै तुंद्दे शा कोई माल नेई मंगदा। मेरा बदला अल्लाह दे सिवा कुसै दूए पर (किश) नेई ऐ ते अ'ऊं उनें लोकें गी जेहके मेरे पर ईमान ल्याई चुके दे न कदें बी नेई दुतकारडा। ओह ते अपने रब्ब कनै मिलने आहले न, पर थुहाड़ा उनेंगी तुच्छ समझना मेरे पर एह सिद्ध करदा ऐ जे तुस मूरख लोक ओ ॥ 30 ॥

ते हे मेरी कौम दे लोको! जेकर अ'ऊं इनें रद्द करी देआं (तां इस कम्मै पर) अल्लाह पासेआ (औने आहली स'जा शा मिगी बचाने आसतै) कु'न मेरी मदद करग। क्या तुस (फी बी) नेई समझदे ? ॥ 31 ॥

ते अ'ऊं तुसेंगी एह नेई आखदा जे अल्लाह दे खजाने मेरे कश न ते नां एह जे अ'ऊं गैब दा इलम रक्खना आं ते नां अ'ऊं एह आखना आं जे अ'ऊं फरिश्ता आं ते नां अ'ऊं उनें लोकें दे बारे च जिनेंगी थुआड़ियां नजरं त्रिणा कनै दिखदियां न, एह आखना आं जे अल्लाह उनेंगी कदें कोई भलाई नसीब नेई करग। जे किश उंदे मनै च ऐ उसी अल्लाह सारें शा बद्ध जानदा ऐ। जेकर अ'ऊं थुआड़ी गल्ला कनै सैहमत होई जां तां अ'ऊं यकीनन जालमें च शामिल होई जाऊ ॥ 32 ॥

قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ
مِّن رَّبِّي وَأُنزِي رَحْمَةً مِّن عِنْدِي
فَقَمَيْتَ عَلَيْكُمْ ۖ أَنْزَلْنَاكُمْ مَوَهَا
وَأَنْتُمْ لَهَا كَرِهُونَ ﴿۲۹﴾

وَيَقَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَا لَالِ إِن
أَجْرِي إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَمَا أَنَا بِظَارِدِ
الَّذِينَ آمَنُوا ۖ إِنَّهُمْ مُلْقُوا رَبِّهِمْ
وَلَكِنِّي أَرَأَيْتُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ﴿۳۰﴾

وَيَقَوْمِ مَن يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ
ظَرَرْتَهُمْ ۖ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿۳۱﴾

وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا
أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ إِنِّي مَلَكٌ وَلَا
أَقُولُ لِلَّذِينَ تَرَدُّرَىٰ أَعْيُنُكُمْ لَنْ
يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا ۗ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِي
أَنْفُسِهِمْ ۗ إِنِّي إِذًا لِّمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿۳۲﴾

1. धर्म गी जबरन मनोआना नबियें दी रीत नेई ऐ।

उनें गलाया जे हे नूह! तू साढ़े कन्नै बैहस करी चुके दा ऐं, बल्के खूब बैहसी चुके दा ऐं हून इय्यै रेही गोआ ऐ जे जेकर तू सच्चें चा ऐं तां तू जिस अज्जाब शा असंगी डरान्ना ऐं उसी साढ़े पर लेई आ ॥ 33 ॥

उसनै गलाया जे जेकर अल्लाह चाहग तां उसी लेई ओग ते तुस उसी ओहदे आहनने शा कदें बी आजज (असमर्थ) नेई करी सकदे ॥ 34 ॥

ते जेकर अ'ऊं थुहाड़ा भला बी चांह तां मेरा भला चाहना तुसंगी अल्लाह दे अज्जाब शा बचाने च लाह् नेई देग । जेकर अल्लाह एह चांहदा होऐ जे ओह थुहाड़ा सर्वनाश करै तां फी बी ओह थुहाड़ा रब्ब ऐ ते उससै कश तुसंगी परताया जाग ॥ 35 ॥

क्या ओह गलांदे न जे उसनै इस (अज्जाब दे बा'यदे)गी अपने पासेआ घड़ी लैता ऐ? तू उनेंगी आख जे जेकर में उसी अपने पासेआ घड़ी लैता ऐ तां मेरे इस खतरनाक जुलमै दा दंड जरूर मिगी गै मिलग (पर थुआड़े पापें दी स'जा मिगी नेई मिलग) की जे जेहका घोर पाप तुस करदे ओ उंदे शा अ'ऊं बेजार आं ॥ 36 ॥ (रुकू 3/3)

ते नूह पासै एह बी वह्नी कीती गई ही जे जेहके लोक ईमान आहनी चुके दे न उंदे सिवा तेरी कौम चा हून कोई होर शख्स तेरे पर कदें बी ईमान नेई ल्यौग । इस आस्तै जे किश ओह करा करदे न ओहदी ब'जा करी तू बसोस नेई कर ॥ 37 ॥

ते तू साढ़ी अक्खीं दे सामनै ते साढ़ी वह्नी दे मताबक किशती बनाऽ ते जिनें लोकें जुलम

قَالُوا يَتَّبِعُونَ آلَ إِبْرَاهِيمَ مَا لَكُمْ بِهِ عِزٌّ وَرَحْمَةٌ يَا إِبْرَاهِيمُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَلا تَتَّبِع آلَكَ فِي الدِّينِ مَا لَكَ بِهِ أَسْرَابَةٌ فَاتَّبِعْ مَنَافِعَ اللَّهِ لَئِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ٣٣

قَالَ إِنَّمَا يَتَّبِعُكُمْ بِهِ اللَّهُ إِنْ شَاءَ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ٣٤

وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِي إِنْ أَرَدْتُ أَنْ أُنصَحَ لَكُمْ إِنْ كَانَ اللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يُعْوِيَكُمْ هُوَ رَبُّكُمْ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ٣٥

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ إِنْ افْتَرَيْتُهُ فَعَلَىٰ إِجْرَامِي وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تُجْرِمُونَ ٣٦

وَأَوْحِ إِلَىٰ نُوْحٍ أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا مَنْ قَدْ آمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ٣٧

وَاصْبِرِ لِقَوْلِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَوْفَ نُلْقِيكَ

दा रस्ता अखत्यार कीते दा ऐ उंदे बारे च मेरे कनै कोई गल्ल नेई कर। ओह जरूर गै गरक कीते जाडन ॥ 38 ॥

ते ओह (नूह) साढ़े हुकमै मताबक किशती बानांदा जंदा हा ते जिसलै बी ओहदी कौम चा बड्डे लोकें दा कोई गरोह ओहदे कशा लंघदा हा तां ओह ओहदे पर हसदा हा। इस पर उसनै उनेंगी गलाया जे जेकर अज्ज तुस लोक साढ़े पर हसदे ओ तां कल्ल अस बी थुहाड़ा मौजू डुआगे आं जियां जे अज्ज तुस साढ़ा मौजू डुआऽ करदे ओ ॥ 39 ॥

फी तुसेंगी तौले गै पता लग्गी जाग जे ओह केहड़ा (गरोह) ऐ जेहदे पर ऐसा अजाब आवा करदा ऐ जेहका उसी अपमानत करी देग ते जेहदे पर स्थाई अजाब नाजल होआ करदा ऐ ॥ 40 ॥

इत्थें तक जे जिसलै साढ़ा (अजाब दा) हुकम¹ आई जा ते चश्मे फुट्टियै बगी पौन तां अस गलागे जे हर भांती दे जानवरें चा नर-मादा इक-इक जोड़ा इस किशती च सुआर करी दे ते अपना टब्बर-टोर बी, सिवाए उसदे जिसदी तबाही दे सरबंथे च (इस भयंकर अजाब दे औने शा) पैहलें गै साढ़ा अटल हुकम आई चुके दा ऐ ते जेहके तेरे पर ईमान ल्याई चुके दे न उनेंगी बी सुआर करी लै ते ओहदे पर थोड़े-हारे लोकें दे सिवा कोई बी ईमान नथा ल्याए दा ॥ 41 ॥

फी जिसलै तफान आई गेआ तां उसनै (अपने साथियें गी) गलाया जे इस किशती च सुआर

وَلَا تَخَاطَبِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا^٤
إِنَّهُمْ مُعْرِضُونَ^٥

وَيَضَعُ الْمَلَكُ^٦ وَكَلَّمَ مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأَ
مِنْ قَوْمِهِ سَخِرَ وَإِنَّمَا^٧ قَالَ إِنْ
تَسَخَرُوا مِنِّي أَنَا سَخِرَ مِنْكُمْ كَمَا
تَسَخَرُونَ^٨

فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ^٩ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ
يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ^{١٠}

حَتَّى إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التُّهُورُ^{١١} لَقْنَا
أَحْمِلَ فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَئِشَيْنِ
وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ
أَمِنَ^{١٢} وَمَا أَمِنَ مَعَهُ إِلَّا قَلِيلٌ^{١٣}

وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ مَجْرِبَهَا

وَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكْرِبُونَ

1. इस थाहरा पर भूत कालक क्रिया दा शब्द बरतोए दा ऐ, पर पवित्र कुरआन अक्सर भविष्यवाणियों च भूतकाल शब्द दा प्रयोग करदा ऐ सिर्फ एह दस्सने आस्तें जे एह ऐसी यकीनी गल्ल ऐ जियां जे बीते दे समे च घटी दी कोई गल्ल यकीनी होंदी ऐ।

होई जाओ। इस दा चलना ते इसदा उरहाया जाना अल्लाह दे शुभ नां० दी बरकत कनै नै होग। मेरा रब्ब यकीनन बौहत बख्शने आह्ला ते बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 42 ॥

ते ओह (किशती) फ्हाड़ें आंगर उच्ची लैहरें पर उनेंगी लेई जा करदी ही ते उस बेल्लै नूह नै अपने पुतरे गी पुकारेआ जिसलै जे ओह (ओहदे शा अलग्ग) दूई बकबी उठी गेआ हा जे हे मेरे पुतर ! साड़े कनै सुआर होई जा ते मुन्कर लोके कनै नेई हो (जा) ॥ 43 ॥

उसने गलाया जे अ'ऊं हूनै कुसै फ्हाड़े पर जाइयै ठैह्रड (ते पनाह लैड) जेहका मिगी इस पानी शा बचाई लैग। उस (नूह) नै गलाया जे अल्लाह दे (इस अजाब दे) हुकम शा अज्ज कोई बी कुसै गी बचाने आह्ला नेई सवाए उसदे जेहदे पर ओह (आपू) रैहम करी देरे। उसै बेल्ले इक लैहर उंदे मझाटे आई गई ते ओह गरक कीते जाने आहलें च शामिल होई गेआ ॥ 44 ॥

इसदे बा'द (धरती गी बी) गलाई दिता गेआ जे हे धरती ! हून तूं अपने पानी गी नींगली (पी) जा ते (गासै गी बी जे) हे आकाश। तूं (हून ब'रने शा) थम्होई जा ते पानी सकाई दिता गेआ ते एह मामला खतम करी दिता गेआ ते ओह किशती जूदी' नां० दे फ्हाड़े पर स्की गई ते गलाई दिता गेआ जे हे अजाब दे फरिश्तो ! जालम लोके आस्तै बिनाश निश्चत करी देओ ॥ 45 ॥

ते नूह नै अपने रब्ब गी पुकारेआ ते गलाया जे हे मेरे रब्ब ! यकीनन मेरा पुतर मेरे परिवार चा

وَمُرْسَهَا ۗ إِنَّ رَبِّي لَعَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٤٣﴾

وَهِيَ تَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۗ
وَنَادَى نُوحٌ ابْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ يُبَيِّنُ
أَرْكَبَ مَعَنَا وَلَا تَكُنْ مَعَ الْكَافِرِينَ ﴿٤٤﴾

قَالَ سَاوِيَ إِلَىٰ جَيْبِ يَعْصِمُنِي مِنَ
الْمَاءِ ۗ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ
إِلَّا مَنْ رَحِمَهُ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ
فَكَانَ مِنَ الْمَحْرُوقِينَ ﴿٤٥﴾

وَقِيلَ يَا أَرْضُ ابْلَعِي مَاءَكِ وَيَسْمَاءِ
أَقْلَعِي وَغِيضَ الْمَاءِ وَقُضِيَ الْأَمْرُ
وَاسْتَوَتْ عَلَىٰ الْجُودِيِّ وَقِيلَ بُعْدًا
لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٤٦﴾

وَنَادَى نُوحٌ رَبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي

1. गलादे न जे जूदी इक फ्हाड़े दा नां० हा/ एह ज 'गा मजूदा खोज दे मताबक आरमीनिया च ऐ।

ऐ ते तेरा बा'यदा बी अत्त गै सच्चा ऐ ते तूँ फैसला करने आहले सारें शा उप्पर (बेहतर ते दरुस्त) फैसला करने आहला ऐँ ॥ 46 ॥

अल्लाह नै गलाया जे हे नूह ! ओह तेरे परिवार चा बिल्कुल नेई, की जे ओह यकीनन बुरे कर्म करने आहला ऐ। इस आस्तै तूँ मेरे अगगें ऐसी प्रार्थना नेई कर जेहदे बारे च तुगी मेरे पासेआ जानकारी नेई दिती गेई होऐ ते अ'ऊं तुगी नसीहत करना आं जे मूरखें आंगर कदें बी कम्म नेई कर ॥ 47 ॥

नूह नै गलाया जे हे मेरे रब्ब ! अ'ऊं इस बारै तेरी पनाह चाहन्नां जे तुगी कोई ऐसा सुआल करां जेहदे बारे च मिगी असली इलम हासल नेई होऐ ते जेकर तूँ पैहलें होई चुकी दी मेरी भुल्ल माफ नेई करै ते रैहम नेई करै तां अ'ऊं घाटा खाने आहलें चा होई जाड ॥ 48 ॥

(इस पर उसी) गलाया गेआ जे हे नूह ! तूँ साढ़े पासेआ (प्रदान कीती गेदी) सलामती ते भांत-सभांती बरकतें कन्नै जो तेरे पर ते तेरे कन्नै आहले सम्प्रदायें¹ (वर्गें) पर (उतारियां गेदियां) न सफर² कर ते किश सम्प्रदाय (वर्ग) नेह बी हैन जिनेंगी अस जरूर गै (दुनियां दा आरजी) समान प्रदान करगे (मगर) फी उंदे पर साढ़े पासेआ दर्दनाक अजाब औग ॥ 49 ॥

एह³ (डराने आहला कथन) गौब दी म्हत्तवपूर्ण खबरें चा ऐ जिनेंगी अस तेरे पर वही राहें

مِنْ أَهْلِي وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنْتَ
أَحْكَمُ الْحَكَمِينَ ⑩

قَالَ يُؤُوحُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ إِنَّهُ
عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ فَلَا تَسْأَلْنِي مَا لَيْسَ
لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنِّي أَعِظُكَ أَنْ تَكُونَ
مِنَ الْجَاهِلِينَ ⑪

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا
لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ وَإِلَّا تَغْفِرْ لِي
وَتَرْحَمَنِي أَكُنُّ مِنَ الْخَسِرِينَ ⑫

قِيلَ يُؤُوحُ اھْبِطْ بِسَلْمٍ مِنَّا وَبَرَكَتٍ
عَلَيْكَ وَعَلَىٰ أُمَمٍ مِّمَّنْ مَعَكَ وَأُمَمٌ
سَنُرِيهِمْ نُورًا يُمَسِّهُم مِّنَّا عَذَابَ
الْيَمِّ ⑬

تِلْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ مَا

1. पता चलेआ ऐ जे हजरत नूह दी नुबुव्वत दा समां इक लम्मे अरसे तगर रेहा ते ओहदे समे च केई धार्मिक सम्प्रदाय बने ते बिगड़े।
2. इस थाहरा पर सफर दा मतलब किशती दा सफर नेई बल्के नुबुव्वत दे समे दा सफर ऐ।
3. एह हजरत नूह दी कहानी दा ब्यौरा नेई बल्के हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम दी कौम पर औने आहले अजाब दी खबर दिती जा करदी ऐ।

उतारने आं। तू इस शा पैहलें इनेंगी नथा जानदा ते नां तेरी कौम दे लोक गै जानदे हे। इस आस्तै तू सबर शा कम्म लै। अच्छा अन्जाम सच्चें गै संयम अखत्यार करने आहलें दा गै होंदा ऐ ॥ 50 ॥ (रुकू 4/4)

ते असें आद कौम कश उंदे भ्राऽ हृद गी रसूल बनाइयै भेजेआ हा। उसनै उनेंगी गलाया जे हे मेरी कौम दे लोको! तुस अल्लाह दी अबादत करो। उसदे सिवा थुआड़ा कोई उपास्य नेई ऐ (ओहदे शरीक बनाने च) तुस सिर्फ झूठ घड़ने आहले ओ ॥ 51 ॥

हे मेरी कौम! अऊं इस कम्मा दा तुंदे शा कोई बदला नेई मंगदा। मेरा बदला उस हस्ती दे जिम्मै ऐ जिसनै मिगी पैदा कीते दा ऐ। क्या फी बी तुस अकली शा कम्म नेई लैंदे ॥ 52 ॥

ते हे मेरी कौम! तुस अपने रब्ब शा माफी दी प्रार्थना करो फी ओहदे अगें झुकी जाओ जेहदे नतीजे च ओह थुआड़े आस्तै खूब ब'रने आहला बदल भेजग ते तुसेंगी ताकत दे बा'द ताकत (समृद्धि ते खुशहाली) प्रदान करग। इस आस्तै तुस मुलजम बनियै अल्लाह शा मूह नेई फेरो ॥ 53 ॥

उनें गलाया जे हे हृद! तू साढ़े सामनै (अपने दा 'वे दा) कोई जाहरा-बाहरा सबूत नेई ल्याया ते अस सिर्फ तेरे आखने पर अपने उपास्य देवतें गी छोड़ी नेई सकदे ते नां गै अस तेरे पर ईमान ल्यौगे ॥ 54 ॥

(तेरे बारे च) अस इसदे सिवा होर किश नेई आखदे जे साढ़े उपास्यें चा कोई उपास्य बुरे

كُنْتَ تَعْلَمَهَا أَنْتَ وَلَا قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ هَذَا فَاصْبِرْ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٥٠﴾

وَالَّذِي عَادِيَ أَخَاهُمْ هُوْدًا قَالَ يُقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنَ الْوَعْبَادَةِ إِنَّ أَنْتُمْ إِلَّا مُفْتَرُونَ ﴿٥١﴾

يُقَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِنْ أَجَرْتِ إِلَّا عَلَى الَّذِي فَطَرَنِي أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٥٢﴾

وَيُقَوْمِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا وَيزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِينَ ﴿٥٣﴾

قَالُوا يَهُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ بِتَارِكِي آلِهَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٥٤﴾

إِنْ نَقُولُ إِلَّا اعْتَرَاكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا

बिचार कनै तेरे पिच्छें पेईं गेआ ऐ। उसनै गलाया जे अ'ऊं अल्लाह दी इस गल्ला दा गुआह करार दिन्ना ते तुस बी गुआह र'चो जे जिस कुसै गी तुस अल्लाह दा शरीक करार दिंदे ओ अ'ऊं ओहदे शा बेजार (बिरक्त) आं ॥ 55 ॥

(इस आसतै जेकर एह मेरी भुल्ल ऐ) तां उस (अल्लाह) दे सिवा तुस सब मिलियै मेरे खलाफ खड़जैतर रचो ते मिगी कोई डिल्लि नैई देओ ॥ 56 ॥

अ'ऊं अल्लाह पर भरोसा करना जो मेरा बी रब्ब ऐ ते थुआड़ बी रब्ब ऐ ते आखना जे धरती पर चलने-फिरने आहला कोई बी जीव-जैतु ऐसा नैई जेहदी चोटी (दे बाल) उस (अल्लाह) नै पकड़ी' दी नैई होऐ। मेरा रब्ब यकीनन मोमिनें दी मदद आसतै सिद्धे रस्ते पर खड़ोते दा ऐ (ते अपने पासै औने आहलें दी फहाजत करार करदा ऐ) ॥ 57 ॥

इस आसतै जेकर तुस मेरे शा मूंह फेरी लैगे ओ तां एहदे च मेरा कोई नुकसान नैई, की जे जेहकी तलीम देइयै मिगी तुंदे कश भेजेआ गेदा ऐ ओह अ'ऊं तुंदे तक पजाई चुके दा आं ते (जेकर तुस मूंह फेरी लैगे ओ तां) मेरा रब्ब कुसै दूई कौम गी थुआड़ी ज'गा लैने आहला बनाई देग ते तुस उसी किश बी नुकसान नैई पजाई सकगे ओ। यकीनन मेरा रब्ब हर चीजै दा म्हाफज (रक्षक) ऐ ॥ 58 ॥

ते जिसलै साढ़ा (अजाब दा) हुकम आई गेआ तां उस बेल्लै असें हूद गी बी ते जेहके लोक ओहदे पर ईमान ल्याई चुके दे हे उनेंगी बी (उस अजाब शा) अपनी रैहमत कनै बचाई लैता ते असें उनेंगी इक भयंकर अजाब शा बचाई लैता ॥ 59 ॥

يَسُوءٌ ۙ قَالَ إِنِّي أَشْهَدُ اللَّهَ وَأَشْهَدُ وَا
أَنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٥٥﴾

مِنْ دُونِهِ فَكَيْدُونِ جَمِيعًا ثُمَّ
لَا تُنْظَرُونَ ﴿٥٦﴾

إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ
مَا مِنْ دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا
إِنَّ رَبِّي عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٧﴾

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ مَا أَرْسَلْتُ بِهِ
إِلَيْكُمْ ۗ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ
وَلَا تَصْرُوهُ شَيْئًا ۗ إِنَّ رَبِّي عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿٥٨﴾

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ
آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَنَجَّيْنَاهُمْ مِّنْ
عَذَابِ عَلِيِّظٍ ﴿٥٩﴾

1. यानी ओहदे बस जां काबू च नैई होऐ।

ते एह (घमंडी) आद गै हे जिनें (जानी-बुझी) अपने रब्ब दे नशानें दा इन्कार कीता हा ते ओहदे रसूलें दी ना-फरमानी कीती ही ते हर-इक उद्दंडी ते सच्च दे बैरी दी आज्ञा दा अनुसरण (पैरवी) करन लगी पे हे ॥ 60 ॥

उंदे पिच्छें इस दुनियां च बी लानत लाई दिती ऐ ते क्यामत आहलै रोज बी (लाई दिती जाग) सुनो! आद नै यकीनन अपने रब्ब (दे स्थानें) दी ना-शुकरी कीती ही। सुनो! (अस अज्ञाब दे फरिश्तें गी गलाने आं जे) आद यानी हूद दी कौम आस्तै लानत निश्चत करी देओ ॥ 61 ॥ (रुकू 5/5)

ते समूद कश असें उंदे भ्राउ सालेह गी भेजेआ हा। उसनै उनेंगी गलाया जे हे मेरी कौम दे लोको! तुस अल्लाह दी अबादत करो, ओहदे अलावा थुआड़ा कोई बी उपास्य नैई। उससै नै तुसेंगी धरती चा ठुआलेआ (ते श्रेष्ठता प्रदान कीती) ते ओहदे च तुसेंगी बसाया। इस आस्तै तुस ओहदे शा माफी मंगो ते पूरी चाल्ती ओहदे अगें झुकी जाओ। यकीनन मेरा रब्ब बौहत करीब ऐ ते प्रार्थनां कबूल करने आहला ऐ ॥ 62 ॥

उनें गलाया हे सालेह! इस शा पैहलें ते तूं साढे बशकार आशा दा केंदर (समझेआ जंदा) हा। हून क्या तूं (इस अकलमंदी दे बावजूद बी) असेंगी इस गल्ला शा रोकना ऐं जे अस ऐसी चीजा दी अबादत करचै जेहदी अबादत साढे बब्ब-दादा करदे आए न? ते (सच्च ते एह ऐ जे) जिस गल्ला पासै तूं असेंगी बुलान्ना ऐं ओहदे बारै च अस इक बे-चैन करी देने आहले शक्क च पेई गेदे आं ॥ 63 ॥

وَتِلْكَ عَادٌ جَحَدُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهُ وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كِبِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ۝

وَاسْتَبِعُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۝ أَلَا إِنَّ عَادًا كَفَرُوا رَبَّهُمْ ۝
أَلَا بَعْدَ الْعَادِ قَوْمٌ هُودٍ ۝

۝

وَإِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا قَالَ يَقَوْمِ ۝
اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ ۝ هُوَ
أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ
فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوا لَهُمْ تَتوبوا إِلَيْهِ ۝
إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ مُجِيبٌ ۝

قَالُوا يٰصَالِحُ كَدُ مَنَّا قَدِ سَمْنَا فِينَا مَرْجُوا قَبْلَ
هَذَا أَتَنهْنَا أَنْ نَعْبُدَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا
وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَا إِلَيْهِ
مُرِيبٍ ۝

उसने गलाया जे हे मेरी कौम दे लोको! (दस्सो ते सेही) जेकर अ'ऊं अपने रब्ब पासेआ थ्होए दे कुसै साफ-शफाफ सबूत पर आं तां उसने मिगी अपनी तरफ इक खास र्हेमत प्रदान कीती दी ऐ तां (ओहदे होंदे होई) जेकर अ'ऊं ओहदी ना-फरमानी करं तां अल्लाह दे मकाबले च कु'न मेरी मदद करग। तां ते तुस मिगी घाटे दे सिवा कुसै दूर्इ गल्ला च नेई बधागे ओ ॥ 64 ॥

ते हे मेरी कौम दे लोको! एह ऊंटनी' ओह ऐ जिसी अल्लाह नै थुआड़े आस्तै इक नशान बनाया ऐ। इस आस्तै तुस उसी अजाद फिरना देओ तां जे एह अल्लाह दी धरती च (चली-फिरिये) खा-पिय्ये ते इसी कोई तकलीफ नेई पजाओ बरना तुसेंगी तौले औने आहला इक अजाब पकड़ी लैग ॥ 65 ॥

इस पर उनें तलोआरी कन्ने ओहदियां सढ़ां (लतां) बड्ढी दित्तियां, जेहदे पर उसने उनेंगी गलाया जे तुस त्रै दिन (तक) अपने घरें च (अपने हासल कीते दे समाने दा) लाह लेई लैओ। एह बा'यदा ऐसा बा'यदा ऐ जेहका झूठा नेई होग ॥ 66 ॥

फो जिसलै साढ़ (अजाब दे बारे च) हुकम आई गेआ तां असें सालेह गी ते ओहदे पर ईमान आहनने आहलें गी अपनी खास र्हेमत राहें हर मसीबत शा खास कर उस ध्याड़े दी रूसवाई (अपमानता) शा बचाई लैता। यकीनन तेरा रब्ब बौहत शक्तिशाली ते समर्थवान ऐ ॥ 67 ॥

قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ
مِّن رَّبِّي وَالتَّبَيَّنْ مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يُضْمِرُنِي
مِنَ اللَّهِ إِنْ عَصَيْتُهُ ۗ فَمَا تَزِيدُونَنِي
عَيْرًا مَّحْسِينًا ۝۱۱

وَيَقَوْمِ هَذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةٌ فَذَرُوهَا
تَأْكُلْ فِي أََرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمْسُوهَا بِسُوءٍ
فَيَا حَذِّكُمْ عَذَابَ قَرِيبٍ ۝۱۲

فَعَقَرُوهَا وَقَالَ تَمَتَّعُوا فِي دَارِكُمْ
ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ ۖ ذٰلِكَ وَعَدَّ عَيْرًا مَّكْدُوبٍ ۝۱۳

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا صَالِحًا وَالَّذِينَ
آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَمِن خِزْيِ
يَوْمِنَا ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۝۱۴

- हजरत सालेह उस ऊंटनी पर सुआर होइयें सफर ते प्रचार करदे होंदे हे। अल्लाह नै उस ऊंटनी गी उंदी कौम दे लोकें आस्तै नशान बनाई दिता ते गलाया जे एहदा कतल करी देने दा एह अर्थ होग जे तुस लोक हजरत सालेह दे धर्म-प्रचार गी रोकदे ओ। एह ऐसा कम्म ऐ जेहदे पर अजाब दा औना निर्भर ऐ।

ते जिन्हें जुलम कीता हा उनेंगी उस अजाब नै पकड़ी लैता ते ओह अपने-अपने घरें च (अजाब कारण) धरती कनै चिमटे' दे होई गे (यानी धरती कनै गै लगगे दे रेही गे)

॥ 68 ॥

आखो जे ओह उस देश च कदें बस्से गै नथे। सुनो! समूद ने अपने रब्ब दे स्थानें दी ना-शुकरी कीती ही। सुनो! (अजाब दे फरिश्तें गी हुकम दिता गेआ जे) समूद आस्तै लानत निश्चत करी देओ ॥ 69 ॥ (रुकू 6/6)

ते यकीनन साढ़े दूत इब्राहीम कश शुभ-सूचना ल्याए हे ते गलाया हा जे साढ़े पासेआ तुसेंगी सलाम होऐ। उसनै गलाया जे थुआड़े आस्तै बी म्हेशां दी सलामती होऐ। फी ओह तौले गै भुन्नेआ गेदा इक बच्छा लेई आया ॥ 70 ॥

इस आस्तै उसनै जिसलै उंदे हत्थें गी दिक्खेआ जे ओहदे (खाने) तगर नेई पुजदे तां उसने उंदे इस ब्यहार गी गैर-ममूली² समझेआ ते एहदे शा खतरा मसूस कीता³। इस पर उनें गलाया जे तूं खौफ नेई कर। असेंगी ते लूत दी कौम कश भेजेआ गेदा ऐ ॥ 71 ॥

ते ओहदी घरैआहली बी लागै गै खड़ोती दी ही, इस पर ओह बी घबराई⁴ तां असें उसी ओहदी तसल्ली आस्तै इस्हाक ते इस्हाक दे बा'द याक़ूब दे पैदा होने दा शुभ-समाचार सुनाया ॥ 72 ॥

وَآخِذْ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جُثِمِينَ ﴿١٢﴾

كَانَ لَمْ يَعْتَوِفِهَا ۖ أَلَا إِنَّ تَمُودًا كَفَرُوا رَبَّهُمْ ۗ أَلَا بَعْدَ التَّمُودِ ﴿١٣﴾

وَلَقَدْ جَاءَتْ رُسُلْنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبَشْرَى قَالُوا سَلَمًا ۗ قَالَ سَلَّمَ فَمَا لَبِثَ أَنْ جَاءَ بِعِجْلٍ حَنِينٍ ﴿١٤﴾

فَلَمَّا رَأَى أَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ إِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۗ قَالُوا لَا تَخَفْ إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَى قَوْمٍ لُوطٍ ﴿١٥﴾

وَأَمْرَأَتُهُ قَائِمَةٌ فَصَحَّكَتُ فَبَشَّرْنَاهَا بِإِسْحَاقَ ۗ وَمِنْ وَرَاءِ إِسْحَاقَ يَعْقُوبَ ﴿١٦﴾

1. मूल शब्द जासेमीन आस्तै दिक्खो सूर: आराफ टिप्पणी आयत नं. 79
2. इस दा इक अर्थ एह बी ऐ जे उनेंगी बचित्तर प्रकृति दे मनुख समझेआ।
3. यानी होई सकदा ऐ जे ओह कोई अशुभ समाचार लेइयै आए दे न।
4. मूल शब्द जहिकत दा अर्थ बे-चैन होई जाना बी हौदा ऐ।

उसने गलाया जे हाय! मेरी बद-किसमती! क्या अ'ऊं (बच्चे गी) जनम देख हालांके अ'ऊं बुड्डी होई चुकी दी आं ते मेघा घरैआहला बी बुड़ापे दी हालत च ऐ? एह गल्ल सच्चें गै अजीब ऐ ॥ 73 ॥

उनें गलाया जे क्या तू अल्लाह दी गल्ला पर तज्जब (रहानगी) बुज्जनी ऐं? हे उस घरे आहलेओ! तुंदे पर ते अल्लाह दी रैहमत ते ओहदियां हर चाल्ली दियां बरकतां नाजल होआ करदियां न (इस आस्तै थुआड़े लेई ते एह गल्ल अजीब नेई होनी चाही दी)। ओह यकीनन बौहत गै तरीफे आहला ते बड़े गौरव आहला ऐ ॥ 74 ॥

फी जिसलै इब्राहीम दी घबराट दूर होई गेई ते उसी शुभ समाचार बी मिली गेआ तां ओह फी लूत दी कौम दे बारे च साढ़े कनै लड़न लगा ॥ 75 ॥

इब्राहीम अति-पेंच सैहनशील, दर्दमंद (दिल रक्खने आहला) ते साढ़े सामनै बार-बार झुकने आहला हा ॥ 76 ॥

(इस पर असें उसी गलाया जे) हे इब्राहीम! तू इस (सफारश) शा रुकी जा, की जे तेरे रब्ब दा आखरी हुकम आई चुके दा ऐ, ते इनें मुन्करें दी ऐसी हालत ऐ जे इंदे पर नेई टलने आहला अजाब आइयै रौहग ॥ 77 ॥

ते जिसलै साढ़े भेजे दे दूत लूत कश आए तां उसी उंदे कारण गम' (दुख) होआ ते उसने

قَالَتْ يَوَيْلَىٰٓ أَيْدِيَّ وَأَنَا عَجُوزٌ وَهَذَا بَعْلِي شَيْخًا ۖ إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عَجِيبٌ ۝

قَالُوا اتَّعَجِبِينَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ رَحِمَتِ اللَّهُ وَبَرَكَتُهُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ ۖ إِنَّهُ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ ۝

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْعُ وَجَاءتْهُ الْبُشْرَىٰ يُجَادِلُنَا فِي قَوْمِ لُوطٍ ۝

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّاهٌ مُنِيبٌ ۝

يَا إِبْرَاهِيمُ أَعْرِضْ عَنْ هَذَا ۖ إِنَّهُ قَدْ جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ ۖ وَإِنَّهُمْ لَابْتِهِمُ عَذَابَ غَيْرِ مَرْدُودٍ ۝

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيءَ بِهِمْ

1. हजरत लूत हजरत इब्राहीम दे भतीजे हे। ओह पैहलें इराक देश च बास करदे हे फी फ़लस्तीन च रौहन लगे। इस देश च ओह ओपरे हे। उंदी कौम नै उनेंगी ओपरे लोकें गी अपने कश उरहाने शा रोके दा हा। दिक्खो सूर: हिज्र आयत 7, पर ओह प्रौहनचारी नभाने दी आदत शा मजबूर हे जिसलै उनें महान दिक्खे ते बिचार कीता जे ओह उनेंगी अपने घर लेई गे तां कौम दे लोक नराज होई जाउन। इस आस्तै उनेंगी इस बिचार कनै दुख होआ।

अपने दिलै च तंगी मसूस कीती ते गलाया जे अज्जै दा ध्याड़ा बौहत् सख्खा सेही होंदा ऐ ॥ 78 ॥

ते ओहदी कौम दे लोक (रोहै च) दौड़दे ओहदे कश आए ते (एह पैह्ला मौका नथा) पैहलें बी ओह लोक अतिऐत्त घोर पाप करदे हे। उसनै गलाया जे हे मेरी कौम दी लोको! एह मेरियां धिय्यां (जो थुआड़े गै घर्चें च ब्याही दिती दियां) न। ओह थुआड़े आस्तै (ते थुआड़ी इज्जत बचाने आस्तै) अत्त पवित्तर दिलें ते पवित्तर ख्यालें आहलियां न। इस आस्तै तुस अल्लाह दा संयम अखत्यार करो ते मेरे मम्हानें (प्रौहर्नें) दी मजूदगी च मिगी अपमानत नेई करो। क्या तुंदे चा कोई बी समझदार आदमी नेई ऐ? ॥ 79 ॥

ओह बोल्ले जे यकीनन तुगी पता लग्गी चुके दा ऐ जे तेरी धीरीं^१ दे बारे च असेंगी कोई हक्क हासल नेई ऐ ते जे किश अस चाहन्ने आं तूं उसी जानना ऐ ॥ 80 ॥

उसने गलाया जे काश! मिगी थुआड़े मकाबले च किसै किसम दी कोई ताकत हासल होंदी तां अ'ऊं थुआड़ा मकाबला करदा, पर जेकर एह नेई तां फी इय्यै इक रस्ता बाकी ऐ जे अ'ऊं इक शक्तिशाली सत्ता दा स्हार^२ लैं ॥ 81 ॥

وَصَاقَ بِهِمْ ذُرْعًا وَقَالَ هَذَا يَوْمٌ عَصِيبٌ ۝

وَجَاءَهُ قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ ۖ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ ۖ قَالَ يَاقَوْمِ هَؤُلَاءِ بَنَاتٌ هُنَّ أِظْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزَوْنَ فِي صَيْفِي ۖ أَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيدٌ ۝

قَالُوا لَقَدْ عَلِمْتَمَا لَآ فِي بَنَاتِكَ مِنْ حَقٍّ ۖ وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيدُ ۝

قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةٌ أَوْ آوِيٌّ إِلَيَّ رُكْنٍ سِدِّي ۝

- हज्रत लूत दियां दऊं धीयां उससै शैहर ब्याही दियां हियां (अहदनामा कदीम पैदाइश भाग 19 आयत 15) किश मुसलमान टिप्पणीकार भलेखे च एह अर्थ लैंदे न जे मेरी कुड़ियें कनै भोग-बलास करी लैंओ, पर मेरे प्रौहर्नें गी किश नेई गलाओ। एह इक बे-हद खतरनाक बचार ऐ ते इस नबी दी ज्ञात पर हमला ऐ। आयत दा सार साफ ऐ ते जियां पवित्तर कुरआन ते बाइबिल शा जाहर ऐ जे उनें लोकें गी रोह इस गल्ला दा हा जे ओह ओपरे लोकें गी अपनै घर की लेई आए। एह मन्शा नथी जे उनें मम्हानें कनै भोग-बलास करन। तौरात मूजब हज्रत लूत दियां दऊं कुड़ियां पैहलें थमां गे उनें लोकें च ब्याही दियां हियां, उंदे पासै संकेत करना हज्रत लूत गी मूरख बनाना ऐ। हज्रत लूत सिर्फ एह आखदे न जे इनें कुड़ियें दी मजूदगी शा तुस समझी सकदे ओ जे अ'ऊं जां मेरे प्रौहर्नें तुंदे कनै कोई गद्दारी नेई करगे। इस आस्तै खाह-मखाह घबराने की ओ।
- यानी ओह ते पैहलें गै साहियां धीयां-नूहां न। असें ते ओपरे-अनजान प्रौहर्नें पर इतराज कीता ऐ।
- यानी थुआड़े बुरे कर्म शा सुरक्षत रोहने आस्तै अल्लाह अगे प्रार्थना करा।

इस पर उनें (मम्हानें) गलाया जे हे लूत! यकीनन अस तेरे रब्ब दे भेजे दे। दूत आं ते अस जानने आं जे ओह तेरे तक कर्दे बी नेई पुज्जी सकदे। (उंदी तबाही दा समां आई चुके दा ऐ) इस आस्तै तू रातीं दे कुसै पैहर अपना टब्बर लेइयै इत्थुआं तौले उठी जा ते तुंदे चा कोई जना बी तांह-तुआंह नेई दिक्खै। इस चाल्ली तुस सुरक्षत रौहगे ओ! हां! तेरी लाड़ी ऐसी ऐ जे जेहका अजाब उंदे पर आए दा ऐ, ओह ओहदे पर बी औने आहला ऐ ते उंदी तबाही दा निश्चत समां औने आहली भ्याग ऐ ते क्या भ्याग लागै नेई ऐ? ॥ 82 ॥

फी जिसलै साढ़ा (अजाब सरबंधी) हुकम आई गेआ तां असें उस बस्ती गी उलट-पलट करी दिता ते ओहदे पर सुक्की मिट्टी दे बने दे पत्थरें दी लगातार बरखा बर्हाई ॥ 83 ॥

जो तेरे रब्ब दे इलम च (उंदे आस्तै गै) निश्चत कीते गेदे हे ते एह अजाब इनै जालमें शा बी दूर नेई ॥ 84 ॥ (रुकू 7/7)

ते मद्यन कौम कश असें उंदे भ्राऽ शुऐब गी (नबी बनाइयै) भेजेआ। उसनै उनेंगी गलाया जे हे मेरी कौम दे लोको! तुस अल्लाह दी अबादत करो। ओहदे अलावा थुआड़ा कोई बी उपास्य नेई ते नाप ते तोल च कमी नेई करा करो। अ'ऊं (इसलै) यकीनन तुसेंगी अच्छी हालत च दिक्खा करना ते (कनै गै) अ'ऊं थुआड़े बारे च तबाही करने आहले दिनै दे अजाब थमां डरा करना ॥ 85 ॥

قَالُوا يَلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يُّصَلِّوْا
اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الْاَيْلِ
وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا اَمْرًا تَكُ
اِنَّهٗ مُصِيبُهَا مَا اَصَابَهُمْ ۗ اِنَّ
مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ۗ اَلَيْسَ الصُّبْحُ
بِقَرِيْبٍ ﴿۸۱﴾

فَلَمَّا جَاءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا
وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيلٍ
مَّنصُودٍ ﴿۸۲﴾

مُسَوِّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ۗ وَمَا هِيَ مِنَ
الظَّالِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ﴿۸۳﴾

وَ اِلَى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يُقَوْمِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۗ وَلَا
تَتَّقُوا الْمَكِّيَالَ وَالْمِيزَانَ ۗ اِنِّي
اُرْسِكُمْ بِغَيْرِ وَاِنِّيْ اَخَافُ عَلَيْكُمْ
عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ ﴿۸۴﴾

1. ओह शख्स देश-भगत हे जिनेंगी अल्लाह नै इस आस्तै भेजे दा हा जे की जे ओह बदेसी न इस आस्तै इनें लोके दी अगुआई च कोई ठकाना पाई सकन ते परेशान नेई हौन।

2. यानी हजरत मुहम्मद मुस्ताफा सल्ललअम दे समे दे जालमें शा एह अजाब टली नेई सकदा।

ते हे मेरी कौम दे लोको! तुस माप ते तोल
गी इन्साफ कनै पूरा करा करो। ते लोकेँ गी
उंदियाँ चीजाँ घट्ट नेई देआ करो। ते फसादी
बनियै धरती च खराबी नेई फलाओ ॥ 86 ॥

जेकर तुस सच्चे मोमिन ओ तां (यकीन रक्खो
जे) अल्लाह दा (थुआड़े कश) बाकी छोड़े
दा धन गै थुआड़े आस्तै ज्यादा बेहतर (ते
मुबारक) ऐ ते अ'ऊं थुआड़े पर कोई नगरान
(बनाइयै) नेई (भेजेआ गेदा। अ'ऊं ते सिर्फ
इक उपदेशक आं) ॥ 87 ॥

उनेँ गलाया जे हे शुऐब! क्या तुगी तेरी नमाज
हुकम दिंदी ऐ जे जिस चीजै दी साढ़े पुरखे
अबादत करदे आए न उसी अस छोड़ी देचै?
जां इस (गल्ला) गी (छोड़ी देचै) जे अपनी
धन-दौलत दे बारे च जो कुछ चाहचै करचै।
जेकर एह सच्च ऐ तां ते तू सच्चै गै बड़ा
अकलमंद (ते समझदार) आदमी ऐं ॥ 88 ॥

उसनै गलाया जे हे मेरी कौम दे लोको! भला
दस्सो ते सेही जेकर एह (साबत होई जा)
जे अ'ऊं (अपने दा'बे दी नीह) अपने रब्ब
दी दिती दी कुसै रोशन दलील पर रक्खनां ते
उसनै मिगी अपने कशा बेहतर (ते पसंदीदा)
रिश्क दिते दा ऐ (तां तुस कल्लै गी अल्लाह
दे सामनै केह जवाब देगे ओ?) ते अ'ऊं एह
नेई चांहदा जे जिस गल्ला शा अ'ऊं तुसेंगी
रोकां (ओहदे शा तुस रुकी जाओ ते आपूं
अ'ऊं) थुआड़े खलाफ' उससै गल्ला गी करने
दी कोशश करां? अ'ऊं ते सिर्फ सुधार करने
दे सिवा, जेहदी जिन्नी मेरे च शक्ति ऐ, होर
किश नेई चांहदा ते मेरा तफीक पाना अल्लाह

وَيَقَوْمٍ أَوْتَوْا الْمَكِّيَّ وَالْمِيزَانَ
بِالنَّسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ
وَلَا تَعْتَوُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٥٧﴾
بَقِيَّتُ اللَّهِ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
مُؤْمِنِينَ ۗ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ﴿٥٨﴾

قَالُوا لَيْسَ غَيْبٌ أَصْلُوْنَاكَ تَأْمُرُكَ أَنْ
تَتْرَكَ مَا يَعْْبُدُ آبَاؤُنَا وَأَنْ نَّفْعَلَ فِي
أَمْوَالِنَا مَا نَشَاءُ ۗ إِنَّكَ لَأَنْتَ الْحَلِيمُ
الرَّشِيدُ ﴿٥٩﴾

قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ
مِّن رَّبِّي وَرَرَقْتُمْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ۗ وَمَا
أُرِيدُ أَنْ أَحَالِفَكُمْ إِلَىٰ مَا أَنْهَكُمْ
عَنْهُ ۗ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا
اسْتِطَعْتُ ۗ وَمَا تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ ۗ
عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ﴿٦٠﴾

1. मुन्कर लोकेँ एह समझेआ जे शुऐब असेंगी धोखा देइयै अपना बपार बधाना चांहदा ऐ। हजरत शुऐब नै इस बिचार दा खंडन करदे होई जेहका जवाब दिता ओह इस आयत च ब्यान कीता गेदा ऐ।

(दी गै किरपा ते रैहम) कनै संबंधत ऐ।
उससै पर मेरा भरोसा ऐ ते अ'ऊं उससै दे
अगों बार-बार झुकना आं ॥ 89 ॥

ते हे मेरी कौम दे लोको! (दिक्खेओ कुतै
थुआड़ी) मेरे कनै दुश्मनी तुसेंगी इस गल्ला
आस्तै नेई पलैरे (उकसाऽ) जे तुस ऊऐ नेही
बिपता नेई स्हेड़ी लैओ जनेही जे नूह दी
कौम, जां हूद दी कौम जां, सालेह दी कौम
दे लोके पर बिपता आई ही ते लूत दी कौम
ते तुंदे शा किश ऐसी दूर बी नेई ऐ ॥ 90 ॥

ते तुस अपने रब्ब अगों माफी आस्तै प्रार्थना
करो ते फी ओहदे अगों पूरी चाल्ली झुकी
जाओ। यकीनन मेरा रब्ब बार-बार रैहम करने
आह्ला ते बौहत गै प्रेम करने आह्ला ऐ ॥ 91 ॥

उनें गलाया जे हे शुऐब! जे किश तू आखना
एँ ओहदे चा मता-हारा हिस्सा साढ़ी समझा
च नेई आँदा ते अस तुगी अपने बशकार इक
कमजोर शख्स समझने आं। ते जेकर तेरा
गरोह नेई होंदा तां अस तेरे पर पथरैद¹
करी दिंदे ते तू आपू बी साढ़ी नजरें च
कोई इज्जत दे काबल वजूद (शख्स) नेई एँ
॥ 92 ॥

उसने गलाया जे हे मेरी कौम दे लोको! क्या
मेरा गरोह² थुआड़ी नजरें च अल्लाह दी निसबत
ज्यादा इज्जत दे काबल ऐ? हालांके तुसें
ओहदे शा मूह फेरी रक्खे दा ऐ ते जे किश
तुस करदे ओ मेरा रब्ब उसी चंगी चाल्ली
जानदा ऐ ॥ 93 ॥

وَيَقَوْمٍ لَا يُجْرِمَكُمُ شِقَاقِ أَنْ
يُصِيبَكُم مِّثْلُ مَا أَصَابَ قَوْمَ نُوحٍ أَوْ
قَوْمِ هُودٍ أَوْ قَوْمِ صَالِحٍ وَمَا قَوْمُ لُوطٍ
مِّنْكُمْ بِيَعِيدٍ ①

وَاسْتَغْفِرُوا رَبَّكُم ثُمَّ تَوَبُّوا إِلَيْهِ ① إِنَّ
رَبِّي رَحِيمٌ وَدُودٌ ①

قَالُوا الشَّعِيبُ مَا نَفَقَهُ كَثِيرًا مَّا
تَقُولُ وَإِنَّا لَنَرِيكَ فِينَا صَعِيفًا ① وَتَوَلَّى
رَهْطَكَ لَرَجْمِكَ ① وَمَا أَنْتَ عَلَيْنَا
بِعَزِيزٍ ①

قَالَ يَقَوْمِ أَرَهْطِي ① أَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّن
اللَّهِ ① وَاتَّخَذْتُمُوهُ وَرَاءَكُمْ ظَهْرِيًّا ①
إِنَّ رَبِّي بِمَا تَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ①

1. मुलजम गी धरती च अद्धा दब्बियै लोके द्वारा पत्थर मारी - मारी उसी मारी देने दी इक स 'जा जेहकी अरब देशें च प्रचलत ही।
2. मूल शब्द 'रहत' ऐसे गरोह गी आखदे न जेहदे च त्रै शा नौ तगर पुरश गै पुरश (मड़द) होन जनानी कोई नेई होऐ यानी सिर्फ मड़दें दा जल्था।

हे मेरी कौम दे लोको ! तुस अपनी ज'गा अपना कम्म करदे जाओ अ'ऊं बी अपनी ज'गा पर अपना कम्म करा करनां। तुसेंगी तौले गै पता लगगी जाग जे ओह कु'न ऐ जेहदे पर अपमान जनक अजाब औंदा ऐ ते कु'न झूठा ऐ (ते कु'न सच्चा) ते तुस (बी अपने ते मेरे अन्जाम दा) इन्तजार करो। अ'ऊं बी यकीनन थुआड़े कनै (नतीजे दा) इन्तजार करड ॥ 94 ॥

ते जिसलै साढ़ा (अजाब सरबंधी) हुकम आई पुजा तां असें शुऐव गी ते उनें लोकें गी जेहके ओहदे पर ईमान ल्याए दे हे अपनी खास रैहमत कनै (उस अजाब शा) बचाई लैता ते जिनें जुलम (दा रस्ता) अखत्यार कीते दा हा उनेंगी उस अजाब नै पकड़ी लैता ते ओह अपने-अपने घरेँ धरती कनै चिमटे दे गै तबाह होई गे ॥ 95 ॥

आखो जे ओह उनें घरेँ च कदे बस्से गै नथे। सुनो! मद्यन आस्तै बी अल्लाह नै लानत निश्चत कीती ही जियां जे उसनै समूद आस्तै लानत निश्चत कीती ही ॥ 96 ॥ (रुकू 8/8)

ते यकीनन असें मूसा गी हर चाल्ली दे चमत्कार ते रोशन दलील देखै भेजेआ हा ॥ 97 ॥

फ़िरऔन ते उसदी कौम दे बड्डे लोकें कश(भेजेआ हा) पर उनें (मूसा गी छोड़ियै) फ़िरऔन दे हुकम दी पैरवी कीती ते फ़िरऔन दा हुकम कदे बी स्हेई नथा ॥ 98 ॥

क्यामत आहलै ध्याड़े ओह (फ़िरऔन) अपनी कौम दे अगमें-अगमें चलग ते ओह उनेंगी नरकै दी अग्गी च जाई उतारग (यानी नरकै दी अग्गी च लेई जाग), फी ओह घाट बी ते ओहदे च

وَيَقَوْمٌ أَعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي
عَامِلٌ سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۚ مَنْ يَأْتِيهِ
عَذَابٌ يُعْزِيهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ
وَارْتَقِبُوا إِنِّي مَعَكُمْ رَقِيبٌ ۝

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا ۖ وَالَّذِينَ
آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَأَخَذَتِ الَّذِينَ
ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ
جُثَمِينَ ۝

كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۚ الْأَبْعَدُ الْمَدِينِ
كَمَا بَعْدَتْ ثَمُودُ ۝

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَنِ
مُؤَيِّنِينَ ۝

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاتَّبَعُوا أَمْرَ
فِرْعَوْنَ ۖ وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ۝

يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَأَوْرَدَهُمُ
النَّارَ ۖ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُودُ ۝

(ओहदे पर) उतरने आहले बी बुरे होडन
॥ 99 ॥

ते इस संसार च बी उंदे पिच्छें लानत लाई
दिती गेई ऐ ते क्यामत आहलै रोज बी लाई
दिती जाग। एह इनाम' जेहका उनेगी दित्ता
जाने आहला ऐ बौहत गै बुरा ऐ ॥ 100 ॥

एह (तबाह कीती गेदी) बस्तियें दे समाचारें
दा इक हिस्सा ऐ। अस उसी तेरे सामनै ब्यान
करने आं। उंदे चा किश (बस्तियां अजे तक)
खड़ोती दियां न(यानी उंदे नशान मजूद न)
ते किश तबाही दी हालत च न (यानी उंदे
नशान तक मिटी गेदे न) ॥ 101 ॥

ते असैं उंदे पर कोई जुलम नथा कीता बल्के
उनें आपूं गै अपनी जानें पर जुलम कीता हा।
फी जिसलै तेरे रब्ब (दे अजाब) दा हुकम
आई गेआ तां उनें उंदे उपास्यें जिनेंगी ओह
अल्लाह दे सिवा पुकारदे होंदे हे, लेश मातर बी
फ्रायदा नेई पुजाया ते तबाही च पाने दे सिवा
उनें (कुसै गल्ला च) उनेंगी नेई बधाया ॥ 102 ॥

ते तेरे रब्ब दी पकड़ (जिसलै ओह बस्तियें
गी इस हालत च जे ओह जुलम पर जुलम
करा दियां होन, पकड़दा ऐ) इससै चाल्ली
होंदी ऐ ते यकीनन ओहदी पकड़ बड़ी गै
दर्दनाक ते सख्त होंदी ऐ ॥ 103 ॥

जेहका शख्स आखरत (महा प्रलेआ) दे अजाब
शा डरदा होऐ, यकीनन ओहदे आस्तै खुदा दी
पकड़ च इक (इबरत नाक/नसीहत कराने
आहला) नशान पाया जंदा ऐ। एह इक ऐसा
दिन (औने आहला) ऐ जेहदे आस्तै लोके

وَأَتَّبِعُوا فِي هَذِهِ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ
بِئْسَ الرَّفْدُ الْمَرْفُودُ ﴿۹۹﴾

ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْقُرَى نَقُصُّهُ عَلَيْكَ مِنْهَا
قَابِئُمٌ وَحَصِيدٌ ﴿۱۰۰﴾

وَمَا ظَلَمْنَهُمْ وَلَكِنْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ
فَمَا أَغْنَتْ عَنْهُمْ آلِهَتُهُمُ الَّتِي يَدْعُونَ
مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ لَمَّا جَاءَ أَمْرُ
رَبِّكَ ۖ وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ تَتَابِعٍ ﴿۱۰۱﴾

وَكَذَلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَى
وَهِيَ ظَالِمَةٌ ۖ إِنَّ أَخْذَهُ أَلِيمٌ شَدِيدٌ ﴿۱۰۲﴾

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِمَنْ خَافَ عَذَابَ
الْآخِرَةِ ۖ ذَلِكَ يَوْمٌ مَجْمُوعٌ لِّلَّهِ
النَّاسُ وَذَلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُودٌ ﴿۱۰۳﴾

1. तनज दे तौरें पर स'जा दा नांइ इनाम रक्खे दा ऐ, की जे मुन्कर लोक संसार च इय्यै आखदे होंदे न जे अल्लाह कश
बी असंगी चिंगियां चीजों मिलडन।

गी ज'मा कीता जाग ते एह् ऐसा दिन होग
जिसी सारे लोक दिखडन। ॥ 104 ॥

ते अस उसी सिर्फ इक निश्चत समे तगर पिच्छें
सुट्टा करने आं ॥ 105 ॥

जिस बेल्लै ओह् आई जाग कोई बी उस
(अल्लाह) दी आज्ञा दे बिना गल्ल नई करी
सकग। फी उंदे चा किश ते बद-नसीब साबत
होडन ते किश खुश-नसीब होडन ॥ 106 ॥

इस आस्तै जेहके बद-नसीब साबत होडन
ओह् अग्गी च (दाखल) होडन । ओहदे च
कदें ते उंदे पीड़ा कनै लम्मे साह निकला
करदे होडन ते कदें हिचकी दी हालत आंगर
साह (निकला करदे होडन) ॥ 107 ॥

ओह् ओहदे च उस बेल्ले तगर बास करदे
रौहडन जिच्चर जे धरती ते गास कायम' न
सिवाए उस अरसे दे जेहका तेरा रब्ब चाह।
तेरा रब्ब जो चांहदा ऐ उसी पूरा करियै रौहदा
ऐ ॥ 108 ॥

ते जेहके खुश-नसीब होडन ओह् सुर्गे च
उच्चर बास करडन जिच्चर गास ते धरती कायम
न, सिवाए उस बेल्ले दे जो तेरा रब्ब चाह।
एह् ऐसी देन ऐ जो कदें खतम' नई कीती
जाग ॥ 109 ॥

इस आस्तै (हे मुखातब) ! जेहकी अबादत
एह् लोक करदे न तूं ओहदे झूठ होने च कुसै
चाल्ली दा शक्क नई कर। एह् उससै चाल्ली
दी अबादत करदे न जिस चाल्ली दी अबादत

وَمَا نُؤَخِّرُهُ إِلَّا لِأَجَلٍ مُّعَدُّودٍ ۝۱

يَوْمَ يَأْتِ لَا تَكَلُمُنَّ نَفْسٌ إِلَّا بِآذِنِهِ ۝۲
فَمِنْهُمْ شَقِيحٌ وَاسْعِيدٌ ۝۳

فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُوا فَمِنَ النَّارِ لَهُمْ فِيهَا
رَفِيرٌ وَسَهِيقٌ ۝۴

خَلِيدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمَوَاتُ
وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ ۝۵ إِنَّ رَبَّكَ
فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ ۝۶

وَأَمَّا الَّذِينَ سَعِدُوا فَمِنَ الْجَنَّةِ خَالِدِينَ
فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا
مَا شَاءَ رَبُّكَ ۝۷ عَطَاءٌ غَيْرَ مَجْدُوذٍ ۝۸

فَلَاتِكَ فِي مَرِيَّةٍ وَمَا يَعْبُدُ هُوَ إِلَّا
مَا يَعْبُدُونَ إِلَّا كَمَا يَعْبُدُ آبَاءَهُمْ
مِّن قَبْلُ ۝۹ وَإِنَّا لَمَوْفُوهُم نَصِيبُهُم

1. एह् सिर्फ इक मुहावय ऐ बरना कुर'आन करीम शा इय्यै साबत ऐ जे इक दिन नरकें चा सारे नरक बासी निकली जाडन ।
2. पवित्र कुर'आन शा सिद्ध होदा ऐ जे सुर्ग बासियें दे गास ते धरती सदा कायम रौहडन ते उंदा इनाम कदें खतम नई होग। इस आस्तै एह् वाक्य सिर्फ खुदाई अदब आस्तै ऐ ।

उंदे शा पैहलें उंदे पुरखे करदे होंदे हे ते अस यकीनन उनेंगी बी उंदा पूरा-पूरा हिस्सा देगे, जेहदे चा किश बी घट्ट नेई कीता जाग ॥ 110 ॥ (रूकू 9/9)

ते यकीनन असें मूसा गी (मत -भेद मटाने आस्तै) कताब (यानी तौरात) दिती ही। फी किश मुद्दत दे बा'द ओहदे बारे च बी मत-भेद कीता गेआ ते जेकर ओह (रैहमत दे बा'यदे आहली) गल्ल जो तेरे रब्ब पासेआ पैहले थमां उतरी चुकी दी ऐ (रोक) नेई होंदी तां उंदे बश्कार कदूं दा फैसला कीता जाई चुके दा होंदा ते हून ते ओह इस (कताब यानी कुरआन) दे बारे च बी बे-चैन करी देने आहले इक शक्क च (पेदे) न ॥ 111 ॥

ते यकीनन तेरा रब्ब उनेंगी उंदे कमें दा पूरा-पूरा फल देग ते जे किश ओह करदे न उसगी ओह चंगी चाल्ली जानदा ऐ ॥ 112 ॥

इस आस्तै (हे रसूल !) तू उनें लोकें समेत जेहके तेरे कनै मिलियै (साढ़े पासै) झुके न उससै चाल्ली सिद्धे रस्ते पर कायम रौह जिस चाल्ली तुगी हुकम दिता गेदा ऐ ते हे मोमिनो ! तुस कदें बी हद्द शा नेई बधो। जे किश तुस करदे ओ ओह (खुदा) उसी दिक्खा करदा ऐ ॥ 113 ॥

ते तुस उनें लोकें पासै नेई झुको जिनें जुलम कीता ऐ बरना तुसेंगी बी नरकै दी अग लपेट च लेई लैग ते (उस बेल्लै) अल्लाह दे सिवा थुआड़ा कोई बी दोस्त नेई होग ते नां गै तुसेंगी कुसै दूई बक्खी दा कोई मदद मिलग ॥ 114 ॥

ع
ه

عَبْرَ مَقْصُودٍ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَآخْتَلَفَ فِيهِ ۝
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَفُضِيَ
بَيْنَهُمْ ۝ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مِرْيَبٍ ۝

وَإِنْ كُنَّا لَأَنبِئُوكَ بِمَا نَعْمَلُ وَإِنَّا لَنَافِعُونَ ۝

فَأَسْتَقِمْ كَمَا أَمَرْتُ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ
وَلَا تَطْغَوْا ۝ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

وَلَا تَرْكَبُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمْ
النَّارُ ۝ وَمَا لَكُمْ مِمَّنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ
تُمْ لَا تُنصَرُونَ ۝

ते (हे मुखातब!) तू दिनें दे दौनीं कंठें (संजां-भ्यागा) ते रातीं दे बक्ख-बक्ख हिस्सें (निश्चत समैं) च शैल ढंगा कनै नमाज पढ़ा कर। यकीनन नेकियां बुराइयें गी दूर करी दिंदियां न। एह (तलीम अल्लाह गी) याद रखने आह्ले आस्तै इक नसीहत ऐ ॥ 115 ॥

ते सबर शा कम्म लै, की जे अल्लाह सदाचारियें दे बदले गी कदें बी जाया नेई करदा होंदा ॥ 116 ॥

फी इनें कौमें चा जेहकियां तुंदे शा पैहले युगें च हियां, की ऐसे अकलमंद लोक नेई निकले जेहके लोकें गी देशै च बगाड़ पैदा करने शा रोकदे सिवाए थोड़े हारे लोकें दे जिनेंगी असें (उंदे पापें शा रुकने ते दूषं गी रोकने कारण) बचाई लैता ते जिनें जुलम गी अपनाई लैता हा ओह उस (धन-दौलत दे मजे) च ब्यस्त होई गे जेहदे च उनेंगी संतुश्टी प्रदान कीती गई ही। इस आस्तै ओह मुलजम होई गे ॥ 117 ॥

ते तेरा रब्ब कदें बी ऐसा नेई ऐ जे (देशै दी) अबादियें गी इस हालत च तबाह करी देऐ जे उंदे च रौहने आह्ले सुधार दे कम्म करा करदे होन ॥ 118 ॥

ते जेकर तेरा रब्ब अपनी मरजी लागू करदा तां सारे लोकें गी इक्क गै जमात बनाई दिंदा (पर उसनै ऐसा नेई कीता ते उनेंगी उंदी अकली दे स्हारै छोड़ी दिता ऐ) ओह म्हेशां मत-भेद करदे रौहडन ॥ 119 ॥

सिवाए उनें लोकें दे जिंदे पर तेरे रब्ब नै रैहम कीता ऐ । ते इससै (रैहम) आस्तै उसनै

وَاقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي النَّهَارِ وَرُفَعًا مِّنَ اللَّيْلِ ۚ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُدْهَبْنَ السَّيِّئَاتِ ۚ ذٰلِكَ ذِكْرِي لِلذَّكْرِیْنَ ۝۱۱

وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۝۱۱۶

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِن قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةٍ يَنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّنْ أَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أَتَرَفُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ۝۱۱۷

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا مُصْلِحُونَ ۝۱۱۸

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۚ وَلَا يَرَاؤُونَ مُخْتَلِفِينَ ۝۱۱۹

إِلَّا مَن رَّحِمَ رَبُّكَ ۚ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۚ

उनेंगी पैदा कीते दा ऐ। (मत-भेद करने आहलें दे सरबंभै च) तेरे रब्ब दा एह गलाना जरूर पूरा होगे जे यकीनन अ'ऊं जिन्नें ते मनुक्खें कन्नै नरकै गी भरी देइ॥ 120 ॥

ते तेरे दिलै गी मजबूत बनाने आस्तै अस तेरे सामनै नबियें दे सोरे म्हत्तबपूर्ण समाचार ब्यान करने आं ते इस (सूर:) च ओह सब्भे गल्लां तेरे पर नाजल होई गेइयां न जेहकियां सच्च ते हिवमत कन्नै भरी दियां न ते नसीहत करने आहली ते मोमिनें गी उंदे फर्ज चेता कराने आहलियां न ॥ 121 ॥

ते तू उनें लोकें गी जेहके ईमान नेई आहनदे गलाई दे जे तुस अपने हालातें मताबक कर्म करो ते अस बी अपने हालातें मताबक कर्म करोगे ॥ 122 ॥

ते तुस इंतजार करो, अस बी इंतजार करा करने आं ॥ 123 ॥

ते गासैं ते धरती दा गौब सिर्फ अल्लाह गी हासल ऐ ते सब गल्लां (अन्जाम दे लिहाज कन्नै) आखर उस्सै कश परतियै जंदियां न। इस आस्तै तू उस्सै दी अबादत कर ते उस्सै पर भरोसा रक्ख ते तेरा रब्ब उनें कर्म शा कदें बी अनजान नेई जेहके तुस करदे ओ ॥ 124 ॥ (रुकू 10/10)

وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَا مُلْجَأَ لَكُمْ جَهَنَّمَ
مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١٢﴾

وَكَلَّا تَقْصُصَ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الرُّسُلِ مَا
تُثَبِّتُ بِهِ فُؤَادَكَ ۖ وَجَاءَكَ فِي هَذِهِ
الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٣﴾

وَقُلْ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ أَعْمَلُوا عَلَى
مَكَاتِبِكُمْ ۖ إِنَّا عَامِلُونَ ﴿١٤﴾

وَانْتَظِرُوا ۗ إِنَّا مُنْتَظِرُونَ ﴿١٥﴾

وَاللَّهُ غَيْبُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَيْهِ
يُرْجَعُ الْأُمُورُ كُلُّهَا فاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ
عَلَيْهِ ۗ وَمَا رَبُّكَ بِعَافٍ لِمَا نَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾

سُورَةُ يُوسُفَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ مِائَةٌ وَاثْنَا عَشْرَةَ آيَةٌ وَاثْنَا عَشَرَ كُورَةً

सूर: यूसुफ

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां इक सौ बारां आयतां ते बारां रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नां5 लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला ते बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

अ'ऊं अल्लाह दिक्खने आहला आं। एह
(सचाई गी) रोशन करने आहली कताबा दियां
आयतां न ॥ 2 ॥

الرُّسُلَ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝

अपने अर्थे गी चंगी चाल्ली स्पष्ट करने आहले
कुरआन गी असें उतारेआ ऐ तां जे तुस सूझ-
बूझ शा कम्म लैओ ॥ 3 ॥

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُونَ ۝

अस तेरे कश हर-इक गल्ला गी बेहतर ढंगै
कन्नै ब्यान करने आं, की जे असें इस कुरआन
गी तेरे पासै (सचाइयें पर अधारत) वह्नी राहें
उतारेआ ऐ ते इस शा पैहलें तू (इनें सचाइयें
शा) बे-खबर (यानी अनजान) लोकें च
शामल हा ॥ 4 ॥

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ أَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَا
أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ هَذَا الْقُرْآنَ وَإِنْ كُنْتَ
مِنْ قَبْلِهِ لَمَنِ الْغَفْلِينَ ۝

(तू उस बेल्ले गी याद कर) जिसलै यूसुफ
नै अपने पिता गी गलाया हा जे हे मेरे पिता!
(यकीन मनने) मैं (सुखने च) जारां नखतरें
ते सूरज ते चंदरमां गी दिक्खेआ ऐ (ते होर
रहानगी आहली गल्ल एह ऐ जे) मैं उनें

إِذْقَالَ يُوسُفَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ
أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
رَأَيْتُهُمْ لِي سَاجِدِينَ ۝

गी अपने सामनै सजदा करदे होई दिक्खेआ ऐ ॥ 5 ॥

उसनै गलाया हे मेरे प्यारे पुत्र ! अपना एह सुखना अपने भ्राएं दे सामनै ब्यान नेई करेआं बरना ओह तेरे बारै जरूर कोई मुखालफाना उपाऽ करडन की जे शतान यकीनन मनुक्खै दा जाहरी-बाहरी दुश्मन ऐ ॥ 6 ॥

ते (जियां जे तोह दिक्खेआ ऐ) उससै चाल्ली तेरा रब्ब तुगी चुनी लैग ते अपनी गल्लें दा इलम तुगी प्रदान करग ते तेरे पर ते याकूब दी सारी संतान पर इससै चाल्ली अपने इनाम गी पूरा करग जियां जे उसनै इस शा पैहलें ते द'ऊं पुरखें इब्राहीम ते इस्हाक़ पर पूरा कीता हा। यकीनन तेरा रब्ब बौहत जानने आह्ला ते हिक्मत आह्ला ऐ ॥ 7 ॥
(रुकू 1/11)

यूसुफ़ ते ओहदे भ्राएं दियें घटनाएं च (सचाई दे) जिज्ञासुएं आस्तै यकीनन केई नशान मजूद न ॥ 8 ॥

(यानी उस बेल्ले दियें घटनाएं च) जिसलै उनें (यानी यूसुफ़ दे भ्राएं इक-दूए गी) गलाया जे यकीनन यूसुफ़ ते ओहदा भ्राऽ सादी निसबत साढ़े पिता गी ज्यादा प्यारे न, हालांके अस इक शक्तिशाली जमात आं। (इस मामले च) साढ़े पिता जाहरी-बाहरी भुल्लै च फसे दे न ॥ 9 ॥

(इस आस्तै जां ते) यूसुफ़ गी कतल करी देओ जां उसी कुसै दूए देश च दूर सुदटी देओ। (ऐसा करगे ओ) तां थुआड़े पिता दा ध्यान खास तौरा पर थुआड़ी बक्खी होई

قَالَ يَبْنَى لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلَى
إِخْوَتِكَ فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا ۗ إِنَّ
الشَّيْطَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝

وَكَذَلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ
تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيَتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ
وَعَلَىٰ آلِ يَعْقُوبَ كَمَا أَتَمَّهَا عَلَىٰ أَبَوَيْكَ
مِنْ قَبْلِ إِبْرَاهِيمَ ۚ وَاسْمُكَ ۗ إِنَّ رَبَّكَ
عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٍ
لِّلسَّالِفِينَ ۝

إِذْ قَالُوا لِيُوسُفَ وَأَخُوهُ أَحَبُّ إِلَيْنَا
أَيْنَمَا نُنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ۗ إِنَّ آبَاءَنَا لَفِي
صَلِيلٍ مُّبِينٍ ۝

اقتُلُوا يُوسُفَ وَأَظْهِرُوهُ أَرْضًا يَخْلِ
لَكُمْ وَجْهَ أَبِيكُمْ وَتَكُونُوا مِنْ بَعْدِهِ

1. हजरत यूसुफ़ ते बिनयामीन माता-पिता चा सक्के भ्राऽ हे ते दूए जारां भ्राऽ उंदे मतरेंऽ भ्राऽ हे।

जाग ते (इस कम्पै शा डरने दी कोई ब'जा नेई की जे) एहदे बा'द (तोबा/प्राहचिit करियै फी) तुस इक नेक गरौह बनी सकगे ओ ॥ 10 ॥

इस पर उंदे चा इक गलाने आहले नै गलाया जे तुस यूसुफ़ दी हत्या नेई करो ते जेकर तुसँ किश करना गै ऐ तां उसी कुसै बौल्ली (बाई) दी तैह च (थल्लै) सुट्टी देओ। कुसै जातरी दल दा कोई शख्स उसी दिक्खियै कड्डी लैग (इस चाल्ली बगौर हत्या दे थुआड़ा मकसद पूरा होई जाग) ॥ 11 ॥

फी उनें (अपने पिता गी) गलाया जे हे साढ़े पिता ! तुसंगी साढ़े बारे च केह शक्क ऐ जे तुस यूसुफ़ दे बारे च साढ़े उप्पर यकीन नेई करदे? हालांके अस ओहदे नै दिली प्रेम करने आं ॥ 12 ॥

कल्ल बडलै उसी साढ़े कनै सैर करने आसतै बाहर भेजेओ, ओह उर्थे खु'ल्ला खाग-पीग ते खेढग ते अस ओहदी पहाजत करगे ॥ 13 ॥

उस (यानी याक़ूब) नै गलाया जे यकीनन उसी थुआड़ा (अपने कनै) लेई जाना मिगी फिकरै च पांदा ऐ ते अ'ऊँ इस गल्ला शा बी डरना जे कुतै ऐसी हालत च जे तुस ओहदी बे-ध्यानी करो ते उसी कोई भेड़िया (जनौर) गै आइयै नेई खाई जा ॥ 14 ॥

ओह गलान लगे जे जेकर इस गल्ला दे होंदे होई बी जे अस इक शक्तिशाली जत्था आं, उसी भेड़िया खाई जा । तां अल्लाह दी सोह! ऐसी हालत च ते अस यकीनन घाटे च पौने आहले होगे ॥ 15 ॥

قَوْمًا صَالِحِينَ ⑩

قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ
وَأَقْوَاهُ فِي غَيْبَتِ الْجَبِّ يَلْتَقِطُهُ
بَعْضُ السَّيَّارَةِ إِنْ كُنْتُمْ فَعِلِينَ ⑪

قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَى يُوسُفَ
وَإِنَّا لَهُ لَنَصِحُونَ ⑫

أَرْسَلَهُ مَعَنَا عَدَا يَرْتَعُ وَيَلْعَبُ وَإِنَّا
لَهُ لَحَفِظُونَ ⑬

قَالَ إِنْ لَيْسَ لِي حِزْبٌ نِّبَى أَنْ تَذْهَبُوا بِهِ
وَإِحَافَ أَنْ يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ
غَافِلُونَ ⑭

قَالُوا لَيْسَ لِي حِزْبٌ نِّبَى أَنْ تَذْهَبُوا بِهِ
وَإِحَافَ أَنْ يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ
غَافِلُونَ ⑮

फी जिसलै ओह उसी लेई गे ते उसी कुसै बौल्ली दी तैही च (थल्लै) सुट्टी देने पर इक-राऽ होइयै फैसला करी लैता तां इद्धर उनें अपना इरादा पूरा कीता ते उद्धर असें ओहदे पर वह्नी (राहें एह शुभ-समाचार) नाजल कीती जे तू (यानी यूसुफ) सुरक्षत रौहग्गा ते उनेंगी उंदे इस बुरे कम्मै दी जानकारी देग्गा ते ओह इस गल्ला गी नथे समझदे ॥ 16 ॥

ते ओह संजा (न्हारा पेदे) बेल्लै अपने पिता कश राँदे होई आए ॥ 17 ॥

ते गलाया जे हे साढ़े पिता! यकीन जानेओ अस जाइयै खेढने ते इक-दूए शा बधी-चढ़ियै दौड़न लगे ते यूसुफ गी अपने समानै कश छोड़ी गे तां (खुदा दी करनी ऐसी होई जे) उसी इक भेड़िया खाई गेआ। (ते एह ते अस जानने आं जे) तुसें साढ़ी गल्ला गी सच्च नेई मन्ना भामें अस उस गल्ला च सच्चे (गै की नेई) होंगे ॥ 18 ॥

ते (उसी भरोसा दुआने आस्तै) ओह ओहदे (यूसुफ दे) कुरते पर झूठें-मूठें लहु लाइयै लेई आए (जिसी दिक्खियै) उसने गलाया जे (एह गल्ल सच्च नेई ऐ) बल्के थुआड़े मनें थुआड़े आस्तै इक ऐसी (बुरी) गल्ला गी खूबसूरत करियै दस्सेआ ऐ जिसी तुस करी चुके दे ओ। हून (मेरे आस्तै) पूरी चाल्ली सबर करना गै मनासब ऐ ते जेहकी गल्ल तुस ब्यान करदे ओ (उसी दूर करने आस्तै) ओहदे आस्तै अल्लाह थमां गै मदद मंगी जाई सकदी ऐ। (इस आस्तै ओहदे शा गै मंगी जाग) ॥ 19 ॥

ते इन्ने च इक काफला आया ते उनें अपने पानी आहने आहले आदमी गी भेजेआ ते

فَمَا ذَمُّوْا بِهِ وَاَجْمَعُوْا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ فِيْ
عَيْبَتِ الْجَبِّ ؕ وَاَوْحَيْنَا اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ
بِاَمْرِهُمْ هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝۱۶

وَجَاءُ وَاٰبَاهُمْ عِشَاءً يَّبْكُوْنَ ۝۱۷

قَالُوْا يَا اٰبَانَا اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا
يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَتْ الذُّبُّ ؕ وَمَا
اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ۝۱۸

وَجَاءُ وَعَلَى قَمِيصِهِ بِدَمٍ كَذِبٍ ۝۱۹
بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۝۲۰
فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ۝۲۱ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعٰنُ ۝۲۲
عَلَى مَا
تَصِفُوْنَ ۝۲۳

وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ
فَادُلُّوْهُ ۝۲۴ قَالَ يَبْنَؤِيْ هٰذَا عَلِمْتُ

उसनै उस बौल्ली पर जाइयै अपना डोल सुट्टेआ (ते जिसलै उसी बौल्ली च इक जागत लब्भा) तां उसनै (काफले आहलें गी) गलाया, (हे काफले आहलेओ ! लैओ) खुश-खबरी (सुनो! ते दिक्खो मिगी) एह इक जागत (श्होआ) ऐ ते उनें (यानी काफले आहलें) उसी इक तजारती /बपारी माल समझदे होई छपाली लैता ते जे किश ओह करदे हे उसी अल्लाह खूब जानदा हा ॥ 20 ॥

ते (इसदे बा'द जिसलै यूसुफ़ दे भ्राएं गी यूसुफ़ दे पकड़ोई जाने दा पता लग्गा तां) उनें उसी (अपना गुलाम दस्सियै) किश थोढ़ी -हारी कीमत यानी किश गिनती दे दिरहमें दे बदलै (उस्सै काफले आहलें कश उसी) बेची दिता ते ओह उस (थोढ़ी कीमत') आस्तै बी कोई लालची नथे ॥ 21 ॥ (रुकू 2/12)

ते मिस्र (दे बासियें) चा जिस शख्स नै उसी खरीदेआ उसनै अपनी जनानी गी गलाया जे एहदे रौहने दे स्थान गी बा-इज्जत बनाऽ। मेद ऐ, जे एह जागत साढ़े आस्तै फायदेमंद सिद्ध होगे जां अस इसी अपना पुत्तर गै बनाई लैगे ते इस चाल्ली असें यूसुफ़ गी उस देश च आदर ते सम्मान दिता ते(असें उसी एह आदर दा स्थान) इस आस्तै बी दिता तां जे अस उसी सुखने दे फलादेश दा इलम देचै ते अल्लाह (अपनी गल्ल पूरी करने दी) पूरी समर्थ रखदा ऐ, पर मते-हारे लोक इस (सचाई) गी नेई जानदे ॥ 22 ॥

ते जिसलै ओह अपनी शक्ति ते मजबूती दी आयु गी पुज्जा (यानी जुआन होआ) तां असें

وَأَسْرُوهُ بِضَاعَةً ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٢٠﴾

وَأَسْرُوهُ بِثَمَنِ بَحْشٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ ۖ وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ ﴿٢١﴾

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي مَثْوَاهُ عَسَىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَكَدًّا ۖ وَكَذَلِكَ مَكَانًا يُوسَفُ فِي الْأَرْضِ ۖ وَنُعَلِّمُهُ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ عَلَىٰ أَمْرِهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٢﴾

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۖ

1. यानी यूसुफ़ गी अपने देशें चा कड़हने आस्तै बेचेआ बरना उनेंगी पैसें दा कोई लालच नथा।

उसी फैसला (करने दी समझ) ते खास इलम बख़्शोआ ते(स्हेई) सदाचारियें गी अस इस्यै चाल्ली बदला दिन्ने होन्ने आं ॥ 23 ॥

ते जिस जनानी दे घरे च ओह रौहदा हा उसनै ओहदे शा ओहदी मरजी दे खलाफ इक कम्म कराना चाह्या ते (उस घरे दे) सारे दरोआजे बंद करी दित्ते ते गलाया जे(मेरे कश) आई जा! उसनै गलाया जे अ'ऊं (ऐसा करने कनै) अल्लाह दी पनाह चाहन्ना यकीनन ओह मेरा रब्ब ऐ। उसनै गै मेरे रौहने दा थाहर (रिहाश) अच्छा बनाया ऐ। सच्ची गल्ल इय्यै ऐ जे जालम लोक कामयाब नेई होंदे ॥ 24 ॥

ते उस जनानी नै ओहदे आस्तै अपना पक्का इरादा करी लैता ते उस (यूसुफ़) नै बी उस जनानी दे बारे च (यानी ओहदे शा सुरक्षत रौहने दा) पक्का इरादा करी लैता ते जेकर उसनै अपने रब्ब दा रोशन नशान नेई दिक्खे दा होंदा (तां ओह ऐसा पक्का इरादा नथा करी सकदा) फी ऐसा गै होआ तां जे अस ओहदे शा (चा) हर -इक बदी ते बे -हयाई दी गल्ला गी दूर करी देचै। यकीनन ओह साढ़े भगतें ते (पवित्तर कीते गेदे) बंदें चा हा ॥ 25 ॥

ते ओह दमें दरोआजे पासै नस्से ते इस (कशमकश/ खिच्चो-खिच्ची च उस जनानी) नै उस दे कुरते गी पिच्छुआं पाड़ी दित्ता (जिसलै ओह दरोआजे तक पुज्जे तां) उनें दरोआजे च उस जनानी दे घरैआले गी दिक्खेआ जिस पर उस जनानी नै अपने घरैआले गी गलाया जे जेहका शख्स थुआड़ी जनानी कनै बुरा कम्म करना चाह ओहदी स'जा सिवाए इसदे होर किश नेई (होनी चाही दी) जे उसी

وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٧﴾

وَرَأَوْتُهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَنْ نَفْسِهِ
وَعَلَّقْتَ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْت لَكَ ۗ
قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ ۗ
إِنَّهُ لَا يَفْصِحُ الظَّالِمُونَ ﴿١٨﴾

وَلَقَدْ هَمَمْتُ بِهِ ۗ وَهُمْ بِهَالُوا لَأَنْرَأ
بُرْهَانَ رَبِّي ۗ كَذَلِكَ لِيَصْرِفَ عَنْهُ
السُّوءَ وَالْفَحْشَاءَ ۗ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا
الْمُخْلِصِينَ ﴿١٩﴾

وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَیْصَهُ مِنْ دُبُرٍ
وَأَنْفِيَآ سَيِّدَاهَا لَدَا الْبَابِ ۗ قَالَتْ مَا
جَزَاءُ مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَنْ
يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٠﴾

कैद करी दिता जा जां उसी कोई होर दर्दनाक अज़ाब दिता जा ॥ 26 ॥

उस (यूसुफ़) नै गलाया जे (गल्ल एह नेई) बल्के इसनै मेरी मरजी दे खलाफ इक कम्म कराना चाह्या हा ते उस (जनानी) दे गै कटुंबै चा इक गुआह नै गुआही दिती जे (इस जनानी दे कप्पड़े ठीक न, पर इस शख्स दा कुरता फट्टे दा ऐ) जेकर एहदा कुरता अगुआं पाड़ेआ गेदा ऐ तां इस जनानी नै सच्च गलाया ऐ ते यकीनन ओह शख्स झूठा ऐ ॥ 27 ॥

ते जेकर इस (मड़द) दा कुरता पिच्छुआं पाड़ेआ गेदा ऐ तां इस (जनानी) नै झूठ बोल्लेआ ऐ ते ओह (मड़द) यकीनन सच्चा ऐ ॥ 28 ॥

इस आसतै जिसलै ओहदे घरैआले नै ओहदे (यानी यूसुफ़ दे) कुरते गी दिक्खेआ जे ओह पिच्छुआं पाड़ेआ गेदा ऐ तां उसनै अपनी जनानी गी गलाया जे यकीनन एह (झगड़ा) तेरी चलाकी कन्नै पैदा होआ ऐ। यकीनन तुसैं जनानियें दी चलाकी बौहत बड़डी होंदी ऐ ॥ 29 ॥

हे युसुफ़! तू इस (जनानी दी शरारत) शा अक्खी बंद करी लै ते तू (हे औरत!) अपने कसूर दी माफी मंग । यकीनन तू जालमें (ते गुनाहगारें) चा ऐं ॥ 30 ॥ (रकू 3/13)

ते उस शैहरै दी किश जनानियें (इक-दूई कन्नै) गलाया (जे) अजीज़' दी जनानी अपने गलाम शा ओहदी मरजी दे खलाफ बुरा कम्म कराना चांहदी ऐ ते ओहदे प्रेम नै ओहदे दिलै

قَالَ هِيَ رَاوَدْتُنِي عَنْ نَفْسِي وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ أَهْلِهَا إِن كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٣٠﴾

وَإِن كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٣١﴾

فَلَمَّا رَأَى قَمِيصَهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِنْ كَيْدِكِنَّ ۗ إِنَّ كَيْدَكِنَّ عَظِيمٌ ﴿٣٢﴾

يُوسُفُ أَعْرَضَ عَنْ هَذَا ۖ وَاسْتَغْفَرَ لِي لِذُنُوبِكِ ۗ إِنَّكَ كُنْتَ مِنَ الْخَاطِئِينَ ﴿٣٣﴾

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَنْ نَفْسِهِ ۖ قَدْ شَغَفَهَا

1. मिस्र देश दे राज च इक ओहदे दा नाँस अजीज़ हा जेहका मंत्री (Minister) दे बगबर हा।

दी ग़रहाइयें च घर करी लैता ऐ। अस (इस मामले च) उसी जाहरी-बाहरी गलती पर दिक्खनियां आं ॥ 31 ॥

ते जिसलै उसनै उंदी घसूसें (कानाफूसियें) दी खबर सुनी तां उनेंगी (धाम खाने दा) सादा भेजेआ ते उंदे (बौहने) आस्तै इक खास गद्दी (बैसक) त्यार कीती ते (जिसलै ओह-आइयां तां) उंदे चा हर इक गी (खाने गी कट्टने आस्तै इक-इक) छुरी दिती ते (यूसुफ़ गी) गलाया (जे) इंदे सामनै आ। इस पर जिसलै उनें उसी दिक्खेआ तां उसी बौहत बड़डी शान दा इन्सान पाया ते उसी दिक्खियै (रहानगी कन्नै) अपने हत्य कट्टे¹ ते गलाया (जे एह शख्स सिर्फ) अल्लाह आस्तै (बुराई च पौने शा) बचेआ ऐ। एह ते इन्सान (है गै) नेई। एह ते सिर्फ इक आदर जोग फरिश्ता ऐ ॥ 32 ॥

(इस पर) उस (जनानी) नै उनेंगी गलाया जे एह ऊपे (शख्स) ऐ जेहदे बारे च तुस मेरी निंदेआ करदियां ओ ते मैं एहदे शा एहदी मरजी दे खलाफ (इक बुरा) कम्म कराने दी कोशश जरूर कीती ही (पर) इस पर (बी) एह बचे दा रेहा ते जेकर इसनै ओह गल्ल, जेहदे आस्तै अ'ऊ इसी हुकम दिन्नी आं, नेई कीती तां यकीनन इसी कैद करी दिता जाग ते यकीनन ओह जलील होग ॥ 33 ॥

(एह सुनियै) उस (यूसुफ़) नै (दुआस करदे होई) गलाया जे हे, मेरे रब्ब! जिस गल्ला पासै ओह मिगी बुलादियां न ओहदी निसबत कैद खान्नै च जाना मिगी ज्यादा पसंद ऐ ते जेकर

حَبَابًا إِنَّا لَنَرُّهَا فِي صَلِّ مُبِينًا ﴿٣١﴾

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ
إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَأً وَآتَتْ كُلَّ
وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا وَقَالَتِ اخْرُجْ
عَلَيْهِنَّ^١ فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْتَهُ وَقَطَّعْنَ
أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَذَا بَشَرًا
إِن هَذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ﴿٣٢﴾

قَالَتْ فَذَلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّنِي فِيهِ وَلَقَدْ
رَأَوُذَّةً عَنْ نَفْسِهِ فَأَسْتَعْصَمَ^١ وَلَئِن
لَّمْ يَفْعَلْ مَا أَمَرَهُ لَيَسْجُنَنَّ وَيَكُونًا
مِّنَ الصَّغِيرِينَ ﴿٣٣﴾

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا
يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ^٢ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي

1. यानी उनें अपनियां औंगलीं अपने ददें नै दबाई लैतियां।

तू उंदी तदबीरें दे बुरे नतीजे गी मेरे परा दूर नेई करगा तां अ'ऊं उंदे पासै झुकी जाड ते मूरखें चा होई जाड॥ 34 ॥

इस पर ओहदे रब्ब नै ओहदी दुआऽ सुनी लैती ते उंदी तदबीर दे बुरे नतीजे गी ओहदे परा हटाई दिता। यकीनन ऊरे ऐ जो बौहत गै दुआई (प्रार्थनां) सुनने आहला ते लोकें दे हालात गी खूब जानने आहला ऐ॥ 35 ॥

फी उंदी (लोकें दी यानी कौम दे सरदारें दी) इनें गल्लें गी दिक्खने दे बा'द एह राऽ होई गेई जे (बदनामी गी दूर करने आस्तै) ओह उसी (कम स कम) किश चिअै आस्तै जरूर कैद करी देन ॥ 36 ॥ (रुकू 4/14)

ते कैदखाने च दऊं जुआन होर बी ओहदे कन्नै दाखल होए जिंदे चा इक नै उसी एह गलाया जे अ'ऊं (सुखने च) अपने आपै गी(इस दशा च) दिक्खना जे अ'ऊं अंगूर नचोड़ा करना ते दूर नै गलाया जे अ'ऊं (सुखने च) अपने आपै गी(इस दशा च) दिक्खना जे मैं अपने सिरै पर रुट्टियां चुक्की दियां न जिंदे चा पैछी खा करदे न। फी उनें दौनीं उसी गलाया जे तुस असेंगी एहदी असलीयत दस्सो। यकीनन अस तुसें गी नेक लोकें चा समझने आं॥ 37 ॥

उसनै गलाया जे इस बेल्ले दा खाना अजे नेई औग ते अ'ऊं ओहदे औने शा पैहलें तुसेंगी इस (सुखने) दी असलीयत दस्सी देड। एह (सुखने दा फलादेश दस्सने दी काबलीयत मेरे च) इस आस्तै ऐ जे मेरे रब्ब नै मिगी एहदा इलम दित्ते दा ऐ। मैं उनें लोकें दा धर्म

كَيْدَهُنَّ أَصَبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُنْ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٣٤﴾

فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٥﴾

ثُمَّ بَدَأَ لَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا رَأَوُا الْآيَاتِ لَيْسَ جُنَّتَهُ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٣٦﴾

وَدَخَلَ مَعَهُ السَّجْنَ فَتَيْنٍ ۖ قَالَ أَحَدُهُمَا إِنِّي أَرِنِّي عُصْرَ خَمْرًا ۖ وَقَالَ الْآخَرُ إِنِّي أَرِنِّي أَحْمِلُ فَوْقَ رَأْسِي خُبْرًا تَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ نَبِينًا ۖ بِتَأْوِيلِهِ ۚ إِنَّا نُرِيكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٧﴾

قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرَرُّقِنِهِ إِلَّا نَبَأٌ لَكُمَا بِتَأْوِيلِهِ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَكُمَا ۗ ذَلِكُمْ مِمَّا عَلَّمَنِي رَبِّي إِنِّي تَرَكْتُ مِلَّةَ

1. यानी तेरी गै मदद कन्नै अ'ऊं बची सकना बरना तेरी मदद दे बगैरा एह ममकन नेई ऐ जे अ'ऊं मूरखें आहले कम्म करन लगां।

छोड़ी दिते दा ऐ जेहके अल्लाह पर ईमान नेई रखदे ते ओह क्यामत शा बी इन्कारी न ॥ 38 ॥

ते में अपने बड़कें यानी इब्राहीम, इस्हाक़ ते याक़ूब दे सन्मार्ग दी पैरवी अखत्यार कीती ऐ। असेंगी कुसै चीजा गी बी अल्लाह दा शरीक ठरहाने (बनाने) दा हक्क नेई ऐ। एह (एकेश्वरवाद दी तलीम दा मिलना) साढ़े आस्तै ते दूए लोकें आस्तै अल्लाह दियें खास किरपें चा इक किरपा ऐ, पर मते-हारे लोक ओहदे स्थानें दा शुकर नेई करदे ॥ 39 ॥

हे मेरे कैदखाने दे दोऐ साथियो! क्या इक-दूए कनै मतभेद रक्खने आहले रब्ब बेहतर न जां अल्लाह जेहका कल्ला ते पूरा-पूरा प्रभुत्व रक्खने आहला ऐ? ॥ 40 ॥

तुस उसी छोड़ियै कुसै दी अबादत नेई करदे ओ सिवाए किश थोढ़े-हारे नाएं दे, जिनेंगी तुसें ते थुआड़े पुरखें बनाई रक्खे दा ऐ, ते जिंदे बारे च अल्लाह नै कोई सबूत नेई नाजल कीता। (याद रक्खो) फैसला करना अल्लाह दे सिवा कुसै दे अखत्यार च नेई ऐ ते उसनै एह हुकम दिते दा ऐ जे तुस ओहदे सिवा कुसै दी अबादत नेई करो। इय्यै स्हेई धर्म ऐ, पर मते-हारे लोक नेई जानदे ॥ 41 ॥

हे कैदखाने दे मेरे दोऐ साथियो! (हून अपने सुखने दा फल सुनो)! तुंदे चा इक ते अपने मालक गी शराब पलैऽ कय करग ते दूए गी फांसी चाढ़ियै मारेआ जाग, फी पैँछी ओहदे सिरै थमां (मास बगौरा) खाडन। (लैओ) जिस गल्ला दे बारे च तुस पुच्छा करदे हे ओहदा फैसला करी दित्ता गेआ ऐ ॥ 42 ॥

قَوْرًا لِّيُؤْمِنُوا بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ
هُم كَفِرُونَ ﴿٣٨﴾

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِيْ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ
وَيَعْقُوْبَ ط مَا كَانَ لَنَا اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ
مِنْ شَيْءٍ ط ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا
وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٩﴾

يٰصٰحِبِ السِّجْنِ ؕ اَرْبَابٌ مُّتَّفَرِّقُوْنَ
حَيْرًا مِّمَّ اللّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٤٠﴾

مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِہِ اِلَّا اَسْمَاءُ
سَمَّيْتُمُوْهَا اَنْتُمْ وَاَبَاؤُكُمْ مَا اَنْزَلَ
اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ط اِنْ الْحُكْمُ اِلَّا
لِلّٰهِ ط اَمْرًا لَّا تَعْبُدُوْا اِلَّا اِيَّاهُ ط ذٰلِكَ
الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾

يٰصٰحِبِ السِّجْنِ اَمَّا اَحَدُكُمْ فَيَسْتَعِيْ
رَبَّهٖ حَمْرًا ط وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصَلِّبُ فَتَاكُلُ
الطَّيْرُ مِنْ رَاسِهٖ ط قَضٰى اَمْرًا لَّذِيْ فِيْهِ
نَسْتَفْتِيْنَ ﴿٤٢﴾

ते उसनै उंदे चा उस शख्स गी जेहदे बारे च ओहदा बिचार हा जे ओह छुटकारा पाने आहला ऐ, गलाया जे अपने मालक अगमें मेरा जिकर बी करेआं, पर शतान नै उस (छुटकारा पाने आहले कैदी) गी ओहदे मालक अगमें एह जिकर करना भुलाई दिता ते ओह (यूसुफ़) केई साल कैदखाने च पेदा रेहा ॥ 43 ॥ (रुकू 5/15)

ते (किश अरसे दे बा'द) बादशाह नै (अपने दरबारियें गी) गलाया (जे) अ'ऊं (सुखने च) सत्त तगड़ियां (मुट्टियां-ताजियां) गमां दिक्खना। जिनेंगी सत्त पतलियां (गमां) खा करदियां न ते सत्त (तरोताजा ते) हरे सिट्टे (दिक्खना) ते किश होर (सिट्टे बी जेहके) सुक्के दे (न दिक्खनां) हे सरदारो! जेकर तुस सुखने दा फल दस्सना जानदे ओ तां मिगी मेरे इस सुखने दा ठीक मतलब दस्सो? ॥ 44 ॥

उनें गलाया जे एह ते पुट्टे-सिद्धे फजूल सुखने न ते अस लोक नेह पुट्टे-सिद्धे सुखनें दी असलीयत नेई जानदे ॥ 45 ॥

ते उनें (द'ऊं कैदियें) चा उसनै जिसी छुटकारा मिले दा हा ते जिसनै इक अरसे दे बा'द (यूसुफ़ दे कनै अपनी बीती दी घटना गी) याद कीता तां गलाया जे इसदी असलीयत अ'ऊं तुसेंगी सनाड। इस आस्तै तुस (एहदी असलीयत जानने आस्तै) मिगी भेजो ॥ 46 ॥

(ते उसनै जाइयै यूसुफ़ गी गलाया जे) हे यूसुफ़! हे सत्तवादी ! असेंगी उनें सत्तें मुट्टियें गमें गी (सुखने च) दिक्खने दे बारे च जिनेंगी सत्त पतलियां (गमां) खाई जान ते सत्त

وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِي عِنْدَ رَبِّكَ فَأَنَسَهُ الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِينَ ﴿٤٣﴾

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَى سَبْعَ بَقَرَاتٍ سَوِيًّا يَا كُلُّهُنَّ سَبْعَ عَجَائِفٍ وَسَبْعَ سُنْبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخْرٍ يُبْسِتُ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي رُءْيَايَ إِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا بَاطِعِينَ ﴿٤٤﴾

قَالُوا أَضْعَافٌ أُخْلَافٌ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَحْلَامِ بِعِلْمَيْنِ ﴿٤٥﴾

وَقَالَ الَّذِي نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُمْ بِتَأْوِيلِهِ فَأَرْسِلُونِ ﴿٤٦﴾

يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ سَوِيًّا يَا كُلُّهُنَّ سَبْعَ عَجَائِفٍ وَسَبْعِ

सैल्ले सिट्टे ते उंदे मकाबले च किश होर सुक्के सिट्टें दे बारे च बस्तार कनै दस्स तां जे अ'ऊं उनें लोके कश जां जे उनेंगी सुखने दे फलादेश दा इलम होई जा ॥ 47 ॥

उसनै गलाया जे तुस लगातार सत्त साल सख्त मैहनत कनै खेती करगे ओ। इस आस्तै इस अरसे च जे किश तुस कट्टो ओहदे चा थोढ़े-हारे हिस्से गी जेहका तुस खाई लैओ। बाकी दे सारे गी ओहदे सिट्टें च रौहन देओ ॥ 48 ॥

फी एहदे बा'द सत्त सख्त (तंगी दे) साल औडन ते उस थोढ़ी मातरा गी छोड़ियै जिसी तुस ज'मा करी लैगे ओ ओह उस सारे गल्ले (अनाज) गी खाई जाडन जेहका तुसें पैहलें थमां उस अरसे आस्तै किट्टा करियै रक्खे दा होग ॥ 49 ॥

फी इसदे बा'द इक ऐसा साल औग जेहदे च लोके दी फरेआद' सुनी जाग ते ओह खुशहाल होई जाडन ते उस हालत च ओह इक-दूए गी तोहफे² देडन ॥ 50 ॥ (रुकू 6/16)

ते बादशाह नै (एह गल्ल सुनियै उनेंगी) गलाया जे तुस उसी मेरे कश लेई आओ। इस आस्तै जिसलै (बादशाह दा) दूत ओहदे कश आया तां उस (यूसुफ) नै उस दूत गी गलाया जे तू अपने मालक कश परतियै जा ते ओहदे शा पुच्छ जे जिनें जनानिये अपने हत्थ कट्टे हे उंदी इसलै केह हालत ऐ। मेरा रब्ब उंदे मनसूबे गी यकीनन खूब जानने आहला ऐ ॥ 51 ॥

سُئِبِلَتْ حُضْرًا وَآخَرَ يُبْسِتِ لَعَلَّ
أَرْجِعَ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٤٧﴾

قَالَ تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَابًّا فَمَا
حَصَدْتُمْ فَذَرَوْهُ فِي سُنْبُلَةٍ إِلَّا قَلِيلًا
مِمَّا تَأْكُلُونَ ﴿٤٨﴾

ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ سَبْعٌ شِدَادًا يَأْكُلْنَ
مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّا
تَحْصِنُونَ ﴿٤٩﴾

ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَامٌ فِيهِ
يَعَثَّ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْصِرُونَ ﴿٥٠﴾

وَقَالَ الْمَلِكُ اسْتَوْفِ بِهِ فَلَمَّا جَاءَهُ
الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ فَسَأَلَهُ مَا
بِالْبَسُوتِ الَّتِي قَطَعْنَ أَيْدِيَهُنَّ إِنَّ
رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ﴿٥١﴾

1. मूल शब्द यूगास दा इक अर्थ पुकार सुनना बी होंदा ऐ।

2. मूल शब्द यासेरून दा सधारण अर्थ नचोड़ना होंदा ऐ, पर शब्द कोश च एहदा अर्थ तोहफा भेंट करना बी लिखे दा ऐ जेहका खुशी दे मौके भेंट कीता जंदा ऐ। काल (कैहत साल्ली) दे बा'द सारे देश च खुशी दा जशन मनाना गै हा ते इक-दूए गी तोहफे बी देने गै हे। इस आस्तै असें मूल शब्द दा अर्थ एह कीता ऐ जे ओह इक-दूए गी तोहफे भेंट करडन।

(एह सनेहा सुनियै) उसनै (यानी बादशाह नै) उनें (जनानियें) गी गलाया जे थुआड़ी (उस गल्ला दी) असलीयत केह ही जिसलै जे तुसें यूसुफ़ शा ओहदी मरजी दे खलाफ इक बुरा कम्म कराने दी कोशश' कीती ही? उनें जनानियें गलाया जे ओह अल्लाह दी खातर (कुकर्म करने शा) डरेआ हा ते ओहदे च बुराई आहली कोई गल्ल असेंगी नथी लब्धी। उसलै अज़ीज़ दी जनानी नै गलाया जे हून सचाई भलेआं खुल्ली गई ऐ में गै ओहदी मरजी दे खलाफ बुरा कम्म कराने दी कोशश कीती ही। यकीनन ओह सत्तवादियें चा ऐ ॥ 52 ॥

ते यूसुफ़ नै उसी एह बी गलाया जे में एह गल्ल इस आस्तै आखी ऐ जे उस (अज़ीज़) गी पता लगगी जा जे में ओहदी गैर-हाजरी च ओहदे कनै कोई धोखा (विश्वासघात) नेई कीता ते एह जे मेरा ईमान ऐ जे अल्लाह धोखा करने आहलें दी योजना गी कामयाबी प्रदान नेई करदा ॥ 53 ॥

قَالَ مَا خَطْبُكَ إِنَّ دِرَاوَدَ ثَقُفَ يُوْسُفَ
عَنْ نَفْسِهِ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا
عَلَيْهِ مِنْ سُوْءٍ قَالَتْ اَمْرًا تَ الْعَزِيْزِ
اِنَّكَ حَصْحَصَ الْحَقُّ اَنَا رَاوَدْتُهُ عَنْ
نَفْسِهِ وَاِنَّهُ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٥٢﴾

ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّيْ لَمَّ اَخْتُهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ
اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخٰٓئِنِيْنَ ﴿٥٣﴾

1. उनें जनानियें कोई बुरा कम्म नथा करोआना चाहया बल्के यूसुफ़ दे मालक दी लाड़ी दी कामना ही, पर ओह जनानियां मालक दी लाड़ी दियां स्हेलियां हियां ते उनें सच्ची गुआही गी छपाली रक्खेआ । इस आस्तै उनेंगी बी दोशी करार दिता वेदा ऐ।

ते अ'ऊं अपने आपै गी (हर चाल्ली दी गलती शा) बरी करार नेई दिंदा, की जे मन बुरी गल्लें दा हुकम देने च बड़ा दलेर ऐ सिवाए उसदे जेहदे पर मेरा रब्ब रैहम करै। मेरा रब्ब (कमजोरियें-त्रुटियें पर) बौहत पड़दा पाने आहला ऐ ते बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 54 ॥

ते बादशाह नै हुकम दिता जे उस (यूसुफ) गी मेरे कश ल्याओ तां जे अ'ऊं उसी अपने खास कम्में आसतै चुनी लैं। (जिसलै हजरत यूसुफ आए) तां उसने (यानी बादशाह नै) उस कनै गल्ल-बात कीती तां (उनेंगी हर चाल्ली काबल दिक्खियै इय्यां) गलाया जे तूं अज्जै शा साढ़े इत्थें इज्जत आहले औहदे आहला ते यकीन दे काबल लोके च शमार होग्गा ॥ 55 ॥

(इस पर यूसुफ नै) गलाया जे मिगी देशै दे खजानें दा अफसर नयुक्त करी देओ, की जे अ'ऊं सच्चें गै (खजानें दी) चंगी-चाल्ली पहाजत करने आहला ते (उनेंगी खचं करने दे कारणें गी बी) चंगी चाल्ली जानने आहला आं ॥ 56 ॥

ते इस चाल्ली असें (मनासब हालात पैदा करियै) यूसुफ गी उस देश च इक अखत्यार आहला औहदा प्रदान कीता। ओह (अपनी मरजी मताबक) जित्थें कुतै चांहदा, रैहदा। अस जिसी चाहने आं (इस्से संसार च गै) अपनी रैहमत प्रदान करने आं ते अस सदाचारियें दा अजर जाया नेई करने होने आं ॥ 57 ॥

ते (इस संसारक अजर दे अलावा) बा'द च औने आहले जीवन दा सिला ईमान आहलने आहलें ते अल्लाह आसतै संयम अखत्यार करने आहलें आसतै कुतै (ज्यादा) बधी-चढ़ियै होग्ग ॥ 58 ॥ (रुकू 7/1)

وَمَا أBRئِي نَفْسِي ۚ إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوءِ ۗ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّي ۗ إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٤﴾

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ ۖ اسْتَخْلَصَهُ لِنَفْسِي ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهُ قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ﴿٥٥﴾

قَالَ اجْعَلْنِي عَلَى خَزَائِنِ الْأَرْضِ ۗ إِنِّي حَفِيظٌ عَلَيْمُ ﴿٥٦﴾

وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ ۖ يَتَّبِعُوا أَمْرًا حَيْثُ يَشَاءُ ۗ لِنُصِيبَ بِرَحْمَتِنَا مَن نَّشَاءُ ۗ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٧﴾

وَلَا جُرَّ الْأَخْرَةَ خَيْرٌ لِلَّذِينَ آمَنُوا ۖ وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٨﴾

ते (इस कैहत् साल्ली दे अरसे च) यूसुफ़ दे भ्राऽ बी (इस देशै च) आए ते ओहदे सामनै हाजर होए ते उसनै उनेंगी दिखदे गै पनछानी लैता पर ओह उसी नेई पनछानी सके ॥ 59 ॥

ते जिसलै उसनै उनेंगी उंदा समान देखै बापसी आस्तै त्यार कीता तां उनें गी गलाया जे थुआड़े पिता पासेआ जेहका थुआड़ा इक होर भ्राऽ ऐ हून उसी बी अपने कनै लेइयै मेरे कश आयो। क्या तुस दिखदे नेई जे अ'ऊं पूरा माप दिनां ते अ'ऊं परौहनें दी सेवा करने आहलें चा सारें शा बेहतर आं ॥ 60 ॥

ते जेकर तुस उसी मेरे कश नेई लेई आए तां (समझी लैओ जे) मेरे कश तुसेंगी तोल्लियै देने आस्तै किश नेई होग ते (इस सूरत च) तुस मेरे कश नेई आयो ॥ 61 ॥

उनें गलाया जे अस ओहदे पिता गी ओहदे बारे च पसेरने दी जरूर कोशश करगे ते अस यकीनन एह कम्म करियै रौहगे ॥ 62 ॥

ते उसनै (यूसुफ़ नै) अपने गुलामें गी गलाई दिता जे इनें लोकें दा सरमाया उंदे बोरें च रक्खी/पाई देओ, ममकन ऐ जे जिसलै ओह बापस परतोइयै अपने घरे आहलें कश जान तां इस उपकार गी मन्नन ते होई सकदा ऐ ओह (इस्सै कारण) दबारा बापस औन ॥ 63 ॥

इस आस्तै जिसलै ओह बापस परतोइयै अपने पिता कश गे तां उनें गलाया जे हे साढ़े पिता! असेंगी अगमें आस्तै गल्ला (अनाज)देने शा रोकी दिता गेआ ऐ। इस आस्तै हून साढ़े भ्राऽ (बिनयामीन) गी बी साढ़े कनै भेजी देओ तां जे अस दबारा गल्ला लेई सकचै ते अस यकीनन ओहदी पहाजत करगे ॥ 64 ॥

وَجَاءَ إِخْوَةَ يُوسُفَ فَدَخَلُوا عَلَيْهِ
فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ﴿٥٩﴾

وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُونِي
بِأَخٍ لَّكُمْ مِّنْ أَبِيكُمْ ؕ أَلَا تَرَوْنَ أَنِّي
أَوْفَى الْكَيْلِ وَأَنَّا خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ﴿٦٠﴾

فَإِن لَّمْ تَأْتُونِي بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِي
وَلَا تَقْرَبُونِ ﴿٦١﴾

قَالُوا سَرَّوْا دُعَاةَ آبَاءِهِ وَإِنَّا لَفَاعِلُونَ ﴿٦٢﴾

وَقَالَ لِفَتْيَانِهِ اجْعَلُوا بِصَاعَتِهِمْ فِي
رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا انْقَلَبُوا
إِلَىٰ أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٦٣﴾

فَلَمَّا رَجَعُوا إِلَىٰ أَبِيهِمْ قَالُوا يَا بَانَا مَنِعٌ
مِّنَّا الْكَيْلُ فَأَرْسِلْ مَعَنَا آخَانًا نَّكْتُلُ
وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ ﴿٦٤﴾

उस (याकूब) नै गलाया जे (तुस्सै दस्सो) क्या अ'ऊं इसी थुआड़े सपुर्द करी सकनां सिवाए इसदे जे इसदा ऊरे नतीजा निकलै जेहका इस शा पैहलें एहदे भ्राऽ गी थुआड़े सपुर्द करने दा निकलेआ हा। इस आस्तै (अ'ऊं इसी थुआड़े सपुर्द ते करनां, पर इस विश्वास कनै जे तुस नेई बल्के) अल्लाह गै बेहतर पहाजत करने आह्ला ऐ ते ऊरे सारें शा बद्ध रहम करने आह्ला ऐ ॥ 65 ॥

फी जिसलै उनें अपना समान खोहल्लेआ तां दिक्खेआ जे उंंदी दौलत उनेंगी बापस करी दिती गेई ऐ तां उनें गलाया जे हे साढ़े पिता! (इस शा बद्ध) साढ़ी होर केह इच्छा होई सकदी ऐ? (दिक्खो) एह साढ़ी दौलत ऐ। एह बी असेंगी बापस करी दिती गेई ऐ। (जेकर साढ़े कनै साढ़ा भ्राऽ बी जाग तां) अस अपने परिवार आस्तै गल्ला (अनाज) ल्यौगे ते अपने भ्राऽ दी (हर चाल्ली नै) पहाजत बी करगे ते इक ऊंटे दा भार बद्ध बी ल्यौगे। एह भार (जेहका असेंगी मुफ्त/सींदी मिलग) इक बड्डी नैमत ऐ ॥ 66 ॥

उसनै गलाया जे अ'ऊं इसी थुआड़े कनै कदें बी नेई भेजड जिचर तुस अल्लाह पासेआ निश्चत (कसम खाइयै मेरे कनै एह) पक्क बा'यदा नेई करे जे तुस उसी जरूर गै मेरे कश बापस ल्यौगे ओ, सिवाए इसदे जे तुस सोरे गै कुसै बिपता च फसी जाओ, फी जिसलै उनें उसी अपना पक्क बा'यदा देई दिता तां उसनै गलाया जे जे-किश अस इस बेल्लै कर कसे आं अल्लाह इसदा नगसन ऐ ॥ 67 ॥

ते उस (याकूब नै उनेंगी गलाया जे हे मेरे बच्चेओ! तुस शैहरे दे इक गै दरोआजे चा किट्टे

قَالَ هَلْ آمَنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا آمَنُتُمْ عَلَىٰ أَخِيهِ مِن قَبْلُ ۗ فَاللَّهُ خَيْرٌ حَفِظًا ۗ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ﴿١٣﴾

وَلَمَّا فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِصَاعَتِهِمْ رُدَّتْ إِلَيْهِمْ ۗ قَالُوا يَا أَبَانَا مَا نَبْغِي ۗ هَذِهِ بِصَاعَتُنَا رُدَّتْ إِلَيْنَا ۗ وَنَمِيرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَا وَنَزِدُكَ دَكِيلًا بَعِيرٍ ۗ ذَٰلِكَ كَيْلٌ لِّسَيْرٍ ﴿١٤﴾

قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتَّىٰ تُؤْتُونِ مَوْثِقًا مِّنَ اللَّهِ تَتَأْتِي بِهِ إِلَّا أَنْ يُحَاطَ بِكُمْ ۗ فَلَمَّا آتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿١٥﴾

وَقَالَ يَبْنَئِي لَأَنْتُمْ خُلُومِن بَابٍ وَوَاحِدٍ

अंदर नेई जायो बल्के बक्ख-बक्ख¹ दरोआजें चा अंदर जायो ते अ'ऊं अल्लाह दी पकड़ शा (बचाने आस्तै) किश बी थुआड़ी मदद नेई करी सकदा। फ़ैसला करना (असल च) अल्लाह दा गै कम्म ऐ। मैं उसै पर भरोसा कीता ऐ ते सब भरोसा करने आहलें गी उसै पर भरोसा करना चाही दा ॥ 68 ॥

ते जिसलै ओह उस योजना दे मताबक जेहदा हुकम उंदे पिता नै उनेंगी दित्ता हा, शैहरै च दाखल होए तां (ओह मकसद पूरा होई गेआ जेहदे आस्तै उनेंगी हुकम दित्ता गेआ हा पर) याकूब अपने उपाऽ कनै उनेंगी (पुत्तरे गी) अल्लाह दी तरकीब शा बचाई नथा सकदा । हां! पर याकूब दे दिलै च इक तलब ही जिसी उसनै (इस रूपै च) पूरा² करी लैता ते की जे असें उसी (याकूब गी) इलम प्रदान कीता हा। ओह बड़ा ज्ञानी हा पर अक्सर (मते-हारे) लोक (इस सचाई गी) नेई जानदे ॥ 69 ॥ (रुकू 8/2)

ते जिसलै ओह यूसुफ दे सामनै पेश होए तां उसनै अपने भ्राऊ गी अपने कश ज'गा दित्ती (बद्हाया) ते गलाया जे यकीनन अ'ऊं गै तेरा (गुआचे दा) भ्राऽ आं। इस आस्तै जे किश ओह करदे रेह न ओहदे कारण हून तूं दुखी नेई हो ॥ 70 ॥

وَادْخُلُوا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ۗ وَمَا
اَغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۗ اِنْ
الْحُكْمَ اِلَّا اللّٰهُ ۗ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَعَلَيْهِ
فَتَيْتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٦٨﴾

وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوهُمْ
مَا كَانِ يَعْزِي عَنْهُمْ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا
حَاجَةً فِي نَفْسِ يَعْقُوبَ قَضَاهَا ۗ وَاِنَّهُ
لَدُوْعِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنَاهُ وَلَكِنْ اَكْثَرَ
النّٰسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦٩﴾

وَلَمَّا دَخَلُوا عَلٰى يُوْسُفَ اَوٰى اِلَيْهِ
اَخَاهُ قَالَ اِنِّىْ اَنَا اَخُوكَ فَلَا تَبْتِئِسْ
بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٧٠﴾

1. इय्यां सेही होंदा ऐ जे सारी घटनाएं गी सुनियै हजरत याकूब गी यकीन होई गेआ हा जे गल्ला बंडने आहला यूसुफ गै ऐ नेई ते फ़िराओन दे कुसै बजीर (मंत्री) गी केह पेदी ही जे ओह यूसुफ दे भ्राऽ बिनयामीन गी आहनने पर जोर दिंदा। इस आस्तै हजरत याकूब नै एह चाहया जे सारे भ्राऽ शैहरै च बक्ख-बक्ख दरोआजें जें जान तां जे फौजी सपाही बिनयामीन गी दूए भ्राएं शा पैहलें यूसुफ कनै मलाई सकन ते दमें भ्राऽ आपस च पन्थन कडिहयै इक-दूए दा हाल पुच्छी सकन।
2. ते इस चाल्गी दूए पुत्तरे शा पैहलें बिनयामीन गी हजरत यूसुफ कनै मलाने च कामयाब होई गेआ।

फी जिसलै उसनै उनेगी उंदा समान देइयै (बापसी आस्तै) त्यार कीता, तां उसनै (पानी पीने दा इक) कटोरा (बी) अपने भ्राऽ दे बोरे' च रक्खी दिता फी (इय्यां होआ जे) कुसै सरकारी ढंडोरची नै इलान कीता जे हे काफले आहलेओ! तुस सच्चें गै चोर ओ ॥ 71 ॥

उनें (यानी यूसुफ दे भ्राएँ) ओहके (शाही करिदें) पासै रख करियै गलाया जे तुस कोहकी चीज गुआची दी मिथदे ओ? ॥ 72 ॥

उनें गलाया जे साढ़ा गल्ला मापने² दा शाही भांडा गुआची गेआ ऐ ते जेहका शख्स उसी (तुप्पियै) लेई आवै तां इक ऊंटे दे भारे जिन्ना गल्ला ओहदा इनाम होग ते (ढंडोरची नै एह बी गलाया जे) अ'ऊं इस इनाम दा जिम्मेदार आं ॥ 73 ॥

उनें गलाया जे अल्लाह दी सोंह! तुस जानदे ओ जे अस इत्थें इस आस्तै नेई आए जे देशें च फसाद करचै ते नां गै अस चोर आं ॥ 74 ॥

उनें गलाया जे जेकर तुस झूठे साबत होए तां इस (चोरी) दी केह स'जा होग? ॥ 75 ॥

उनें गलाया जे एहदी स'जा एह ऐ जे जिस शख्स दे समान चा ओह (भांडा) मिलै (ओह आपू गै) उस कर्म दा बदला होऐ । अस

فَلَمَّا جَهَّزَهُم بِجَهَّازِهِمْ جَلَّ السَّيِّئَاتِ فِي رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَيَّتُهَا الْعِزْرُ إِنَّكُمْ لَسْرِقُونَ ﴿٧١﴾

قَالُوا وَإِنَّا لَفَعَلْنَا لَمَّا ذَاتَ تَفْقُدُونَ ﴿٧٢﴾

قَالُوا لَئِن فَتَدَّ صَوَاعِ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَاءَ بِهِ حِمْلُ بَعِيرٍ وَأَنَا بِهِ زَعِيمٌ ﴿٧٣﴾

قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كُنَّا سَارِقِينَ ﴿٧٤﴾

قَالُوا فَمَا جَزَاءُؤُهُ إِنْ كُنْتُمْ كَذِبِينَ ﴿٧٥﴾

قَالُوا جَزَاءُؤُهُ مَنْ وُجِدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ جَزَاءُؤُهُ كَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٧٦﴾

1. एहदा एह मतलब नेई जे बिनयामीन गी फसाने आस्तै ऐसा कीता गेआ, बल्के अर्थ एह ऐ जे हजरत यूसुफ नै पीने आपसै पानी मंगेआ हा, फी भलेखे नै ओह भांडा उस बोरे च रक्खी दिता जेहका ओहदे भ्राऊ दा हा। इय्यां सेही होंदा ऐ जे यूसुफ नै थक्कियै पीने आस्तै पानी मंगेआ, नौकर पानी लेई आए, पानी पीने दे बा'द उसनै भलेखे नै ओह भांडा जेहका पानी पीने दे कम्म बी आँदा हा ते मापने दे कम्म बी, अपने भ्राऊ दे बोरे च रक्खी दिता । साढ़े इस युगै च बी आम तौर पर गल्ला ते दुद्ध भांडें कन्नै मापे जंदे न ते ओह भांडे पानी पीने दे कम्म बी आँदे न ।
2. किश लोकें दा गलाना ऐ जे, गुआचेआ ते उंदा पानी पीने दा भांडा हा, पर ढंडोरा फेरेआ गेआ गल्ला मापने आहले भांडें बारै । सेही होंदा ऐ जे हजरत यूसुफ नै पानी पीने दा भांडा रक्खना चाहया हा, पर भलेखे कन्नै गल्ला मापने दा भांडा रक्खी दिता, पर एह खुलासा ठीक नेई ऐ । असल च मूल शब्द 'सुवाअ' दा अर्थ मापने दा भांडा बी होंदा ऐ ते पानी पीने दा भांडा बी । इस आस्तै इक्कै शब्दे दा अनुवाद मापने दा भांडा बी ऐ ते पानी पीने दा भांडा बी ।

लोक ते इसै चाल्ली जालमें गी स'जा दिन्ने होन्ने आं ॥ 76 ॥

इस आस्तै उसनै (यानी ढंडोरची नै) ओहदे (यानी यूसुफ दे) भ्राऊ दे बोरे शा पैहलें उंदे (दूएँ) भ्राएँ दे बोरे गी दिक्खना शुरू कीता। फी ओहदे भ्राऊ दे बोरे (गी दिक्खेआ ते ओहदे च उस भांडे गी दिक्खियै उस) चा उसी कड्ढेआ। इस चाल्ली असें यूसुफ आस्तै (इक) उपाऽ कीता (बरना) ओह बादशाह दे कनून दे अंदर (रौहदे होई) अपने भ्राऊ गी अल्लाह दे उपाऽ दे बगैर रोकी नथा सकदा। अस जेहदे चाहन्ने आं दरजे उच्चे करने आं ते (सच्च एह ऐ जे) हर इलम आहले दे उप्पर (ओहदे शा) ज्यादा इलम आहली हस्ती (मजूद) ऐ ॥ 77 ॥

उनें (यूसुफ दे भ्राएँ) गलाया जे जेकर इसनै चोरी कीती होऐ तां (किश तज्जब नेई की जे) इसदा इक भ्राऽ पैहलें (बी) चोरी करी चुके दा ऐ। इस पर यूसुफ नै (अपने दिलै दी गल्लै गी) अपने दिलै च छपैली रक्खेआ ते उंदे पर उसी जाहर नेई कीता। (हां! दिलै च इन्ना) गलाया (जे) तुस (लोक) बड़े बदबख्त ओ ते जेहकी गल्ल तुस आखदे ओ उसी अल्लाह (गै) बेहतर जानदा ऐ ॥ 78 ॥

فَبَدَأَ بِأَوْعِيَّتِهِمْ قَبْلَ وَعَاءِ آخِيهِ ثُمَّ
اسْتَسْرَجَهَا مِنْ وِعَاءِ آخِيهِ كَذَلِكَ
كِدْنَا لِيُوسُفَ مَا كَانَ لِيَأْخُذَ أَخَاهُ فِي
دِينِ الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ نَرْفَعُ
دَرَجَاتٍ مَّنْ نَّشَاءُ وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ
عَلِيمٌ ﴿٧٧﴾

قَالُوا إِن يَسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَّهُ مِنْ
قَبْلُ فَأَسْرَهَا يُوسُفُ فِي نَفْسِهِ وَلَمْ
يُبَيِّدْهَا لَهُمْ قَالَ أَنْتُمْ شَرُّ مَكَانٍ وَاللَّهُ
أَعْلَمُ بِمَا تَصِفُونَ ﴿٧٨﴾

1. नौकर एह समझी चुके दे हे जे बिनयामीन हजरत यूसुफ दी नजरें च सम्मान आहले ते सर्वप्रिय न। इस आस्तै उनें ओहदे बोरे दी जाच सारे शा बा 'द च कीती, पर अल्लाह नै यूसुफ शा भुल्ल कराइयै मापने दे भांडे गी जेहका पानी पीने दे कम्म बी औंदा हा, ओहदे भ्राऊ दे बोरे च रखोआई दिता हा। एह अल्लाह दी इक योजना ही नां के हजरत यूसुफ दी। इसै आस्तै अल्लाह आखदा ऐ जे एह उपाऽ असें यूसुफ आस्तै कीता हा तां जे ओह अपने भ्राऊ गी रोकियै अपने कश रक्खी सके, बरना सरकारी विधान दे मताबक कुसै दोश दे बगैर ओह उसी रोकी नथा सकदा। इस आयत शा साबत हौंदा ऐ जे हजरत यूसुफ नै कुसै फरेब शा कम्म नेई लैता बल्के अल्लाह नै ओहदे शा भुल्ल करोआई दिती तां जे ओह अपने भ्राऊ गी रोकी सके। भ्राऊ गी बी नुकसान नेई पुजेआ, की जे उसी मंत्रियें दा सम्पर्क ते सम्मान हासल होआ।

उत्तें गलाया जे हे सरदार! इसदा इक बौहत बुड्ढा (बुड्ढा झूड) प्यो ऐ (उसी एहदे सदमे शा बचाने आस्तै) तुस एहदी ज'गा साढे चा कुसै इक गी पकड़ी लैओ। अस तुसैं गी यकीनन परोपकारियें चा समझने आं ॥ 79 ॥

उसनै गलाया जे अस उस शख्स गी छोड़ियै जेहदे कश असेंगी अपनी चीज लब्धी ऐ, कुसै दूए गी पकड़ने शा खुदा दी शरण चाहने आं। जेकर अस ऐसा करचै तां अस यकीनन जालमें चा होगे ॥ 80 ॥ (रुकू 9/3)

इस आस्तै जिसलै ओह ओहदे (यानी यूसुफ) शा ना-मेद होई गे तां आपस च गल्लां करदे होई लोके शा अलगा होई गे। उसलै उंदे चा बड्ढे नै गलाया जे क्या तुसैंगी पता नेई जे थुआड़े पिता नै तुंदे शा पक्का बचन लेदा ऐ जेहदी पुश्टी/तसदीक अल्लाह दी सघंद कनै (खाइयै) कीती गेदी ऐ ते एह जे तुस इस शा पैहलें यूसुफ दे बारे च बी भुल्ल करी चुके दे ओ। इस आस्तै जिच्चर मेरा पिता मिगी (खास तौरा पर) अजाजत नेई देऐ जां आपूं अल्लाह मेरे आस्तै कोई रस्ता नेई कड्ढी देऐ, अ'ऊं इस देशै गी नेई छोड़ड ते ओह (अल्लाह) फैसला करने आहलें चा सारें शा बेहतर फैसला करने आहला ऐ ॥ 81 ॥

तुस अपने पिता कश परतोई जाओ ते जाइयै उसी आखो जे हे साढे पिता! थुआड़े निक्के जागतै जरूर चोरी कीती दी ऐ ते असें थुआड़े कनै ऊऐ सनाया ऐ जेहदा असेंगी इलम ऐ ते अस अपनी नजरें/अकखें शा ओहलै आहली गल्ला दी पहाजत नथे करी सकदे ॥ 82 ॥

قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَبًا شَيْخًا
كَبِيرًا فَخُذْ أَحَدَنَا مَكَانَهُ إِنَّا نَرَاكَ
مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٧٩﴾

قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَنْ نَأْخُذَ إِلا مَن وَجَدْنَا
مَتَاعًا عِنْدَهُ إِلا إِذَا الظَّالِمُونَ ﴿٨٠﴾

قَالَمَا اسْتَيْسَسُوا مِنْهُ خَلَصُوا نَجِيًّا قَالَ
كَبِيرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ أَبَاكُمْ قَدْ أَخَذَ
عَلَيْكُمْ مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ وَمِن قَبْلُ مَا
فَرَّطْتُمْ فِي يُوسُفَ قُلْنَا أَبْرَحَ
الْأَرْضَ حَتَّى يَأْذَنَ لِي أَبِي أَوْ يَحْكَمَ اللَّهُ
لِي وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿٨١﴾

إِرْجِعُوا إِلَىٰ آبَائِكُمْ فَقُولُوا يَا أَبَانَا إِنَّ
ابْنَكَ سَرَقَ وَمَا شَهِدْنَا إِلا بِمَا عَلِمْنَا
وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حَافِظِينَ ﴿٨٢﴾

ते तुस बशक्क इनें लोकेँ शा बी पुच्छी लैओ जिंदे च अस रौहदे हे ते उस काफले शा बी जेहदे साथेँ अस आए आं ते यकीन जानेओ जे अस इस गल्ला च सच्चे आं ॥ 83 ॥

उसनै (यानी याकूब नै) गलाया (जे एह गल्ल स्हेई) नेई (सेही होंदी) बल्के सेही होंदा ऐ, थुआड़े मनै दियेँ इच्छाएं नै कोई गल्ल खूबसूरत करियै तुसेँगी दस्सी ऐ। इस आसतै हून मेरे लेई इय्यै रेही गोआ ऐ जे चंगी चाल्ती। सबर करां। एह ना-ममकन नेई जे अल्लाह उनें सारेँ गी मेरे कश लेई आवै। यकीनन ऊऐ ऐ जो खूब जानने आहला ते हिक्मत आहला ऐ॥ 84 ॥

ते उसनै अपना मूह उंदे शा फेरी लैता (ते नकेबलै जाइयै दुआऽ कीती) ते गलाया जे हे (मेरे खुदा!) यूसुफ दे बारे च अऊं फी फरेआद करना ते दुखै कारण ओहदी अक्खीं च अत्थरूँ² भरोई आए, पर ओह अपने दुख गी (मेशां अपने दिलै दे) अंदर (गै) दबाई³ रखदा हा॥ 85 ॥

ओ आखन लगे जे अल्लाह दी सघंद! (इयां लगदा ऐ जे) तुस उन्ने चिरे तगर यूसुफ दी चर्चा करदे रौहगे ओ जिच्चर जे तुस बमार नेई पेई जाओ जां आखरी साह नेई लेई लैओ। ॥ 86 ॥

وَسَلِّ الْقَرْيَةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا وَالْعَيْرَ الَّتِي
أَقْبَلْنَا فِيهَا ۗ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿١٣﴾

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا ۗ
فَصَبِّرْ جَمِيلًا ۗ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَنِي
بِهِمْ جَمِيعًا ۗ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿١٤﴾

وَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَا سَفَى عَلَى
يُوسُفَ وَإِيصَّتْ عَيْنُهُ مِنَ الْحُرْنِ
فَهُوَ كَظِيمٌ ﴿١٥﴾

قَالُوا تَاللَّهِ تَفْتَوْنَا نَدْكُرُّ يُوسُفَ حَتَّى
تَكُونَ حَرَضًا أَوْ تَكُونَ مِنَ الْهَالِكِينَ ﴿١٦﴾

1. यानी बिनयामीन दी दुश्मनी कारण इक सधारण नेही घटना गी चोरी करार देई दिता गोआ।
2. मूल शब्द दा अर्थ शब्द कोश च अक्खीं दा अत्थरुएं नै भरोई जाना बी लिखे दा ऐ ते इय्यै अर्थ असें कीता ऐ, की जे नबी दे सम्मान गी सामनै रखदे होई इय्यै अर्थ स्हेई ऐ। ओह अल्लाह अगें दुआऽ करदे होई रोई पौंदा ऐ जियां जे साढ़े रसूले करीम हजरत मुहम्मद मुस्ताफा सल्लअम रोई पौंदे होंदे हे।
3. यानी अल्लाह दे सिवा कुसै दूए पर जाहर नथा करदा ।

उसने गलाया जे में अपनी पेशानी ते दुख-दर्द दी फरेआद अल्लाह अगमें गै करनां ते अल्लाह नै गै मी ए सूझ-बूझ दिती दी ऐ जो तुंदे कश नेई ऐ। ॥ 87 ॥

हे मेरे बच्चेओ! जाओ ते जाइयै यूसुफ ते ओदे भ्राउ गी तुप्पो। अल्लाह दी किरपा कनै तुस नराश नेई होगे। असल गल्ल एह ऐ जे अल्लाह दी मेहर शा नाबर लोकें दे अलावा होर कोई बी नराश नेई होंदा। ॥ 88 ॥

तां जदू ओ (परतियै फी) उस (यूसुफ) कश आए तां उसने आखेआ जे हे सरदार! असंगी ते साढ़े परिवार गी बड़ी तंगी पुज्जी ऐ ते असें बिल्कुल थोड़ा हारा सरमाया गै आंहदे दा ऐ। इस आस्तै तुस (परोपकार दे रूप च) असंगी (साढ़ी मांग मताबक) गल्ला देई देओ ते किश दान दे रूपै च (बी किश ज्यादा) देओ। यकीनन अल्लाह दान देने आहले गी बदले च मता किश दिंदा ऐ। ॥ 89 ॥

उसनै आखेआ जे क्या तुसंगी अपना ओह बरताउ चेता ऐ जो तुसं यूसुफ ते ओहदे भ्राउ, कनै कीता हा जद के तुस (अपने बुरे कर्म दे बुरे परिणाम थमां) अनजान हे। ॥ 90 ॥

ओह बोल्ले जे क्या सच्चें गै तुस गै यूसुफ ओ? उसनै आखेआ जे हां! में गै यूसुफ आं ते एह मेरा भ्राउ ऐ। अल्लाह नै साढ़े पर अपार किरपा कीती दी ऐ। सच्ची गल्ल एह ऐ जे जेहका (आदमी) धीरजै शा कम्म लै ते सबर करी लै तां अल्लाह ऐसे परोपकारियें दा हक्क कदें बी नेई रखदा ॥ 91 ॥

قَالَ إِنَّمَا أَشْكُوا بَثِّي وَحُزْنِي إِلَى اللَّهِ
وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٧﴾

يٰبَنِيَّ اذْهَبُوا فَتَحَسَّسُوا مِنْ يُّوسُفَ
وَآخِيهِ وَلَا تَأَيَّسُوا مِنْ رُّوحِ اللَّهِ
إِنَّهُ لَا يَأَيَّسُ مِنْ رُّوحِ اللَّهِ إِلَّا
الْقَوْمُ الْكٰفِرُونَ ﴿٨٨﴾

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ
مَسَّنَا وَأَهْلَنَّا الضَّرَّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ
مُرْجَبَةٍ فَأَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ
عَلَيْنَا ۗ إِنَّ اللَّهَ بِجُرَى الْمُتَصَدِّقِينَ ﴿٨٩﴾

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَا فَعَلْتُمْ بِيُوسُفَ
وَآخِيهِ إِذْ أَنْتُمْ جَاهِلُونَ ﴿٩٠﴾

قَالُوا ۗ إِنَّكَ لَأَنْتَ يُّوسُفَ ۗ قَالَ أَنَا
يُّوسُفَ وَهٰذَا أَخِي ۗ قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا ۗ
إِنَّهُ مَنْ يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ
أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٩١﴾

उठें आखेआ, जे असेंगी अल्लाह दी सघंद ऐ, अल्लाह नै तुसेंगी साढ़े शा उप्पर दरजा दिते दा ऐ अस पक्के गुनाहगार हे। ॥ 92 ॥

उसने आखेआ जे हून तेरे पर कुसै किसमा दी लानत-मलामत¹ नेई होग ते अल्लाह बी तुसेंगी बख्शी देग ओह सारे रैहम-दिला आहलें शा बी उप्पर रैहम-दिल ऐ। ॥ 93 ॥

तुस मेरा एह कुर्ता लेई जाओ ते इसी मेरे पिता हुंदे सामनै रक्खेओ। इसी दिक्खवै ओह मेरे बाँरे सब किश² जान्नी जांडन ते तुस अपना सारा टब्बर बी मेरे कश लेई आवेओ ॥ 94 ॥
(रुकू 10/4)

ते जिसलै (उंदा) काफला (मिसर थमां) चलेआ तां उंदे पिता नै लोकें गी गलाया जे ऐसा निं होऐ जे तुस मिगी झूठेरन लगे, तां (में एह जरूर आखड जे) मिगी यूसुफ दी खुशबू आवा दी ऐ ॥ 95 ॥

उठें (लोकें) आखेआ जे यकीनन तुगी अपनी पिछली भुल्लै दा पछतावा सताऽ करदा ऐ ॥ 96 ॥

इस आस्तै जि'यां (यूसुफ दे मिली जाने दा) शुभ समाचार देने आहला (हजरत याकूब कश) आया तां उसने उस (कुर्ते) गी उसदे

قَالُوا تَأْتِيكَ اللَّهُ لَقَدْ أَتَىٰكَ اللَّهُ عَلَيَّا وَإِنْ كُنَّا لَخٰطِئِينَ ﴿١٠﴾

قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمْ الْيَوْمَ يُغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ ۖ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ﴿١١﴾

إِذْ هَبُوا بَاقِيصِي هَذَا فَاَلْقَوْهُ عَلَىٰ وَجْهِ أَبِي يَأْتِ بِصِيرَةٍ ۖ وَأَنْتَ بِيْءٌ بِأَهْلِكَ ۖ أَجْمَعِينَ ﴿١٢﴾

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ رِيْحَ يُوسُفَ لَوْلَا أَنْ تُقِنْدُونِ ﴿١٣﴾

قَالُوا تَأْتِيكَ اللَّهُ إِنَّكَ نَفِيْ صَلِّكَ الْقَدِيمِ ﴿١٤﴾

فَلَمَّا أَنْ جَاءَ الْبَشِيرُ أَلْقَاهُ عَلَىٰ وَجْهِهِ فَارْتَدَّ بَصِيرًا ۖ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ إِنِّي

1. इस जगह इतिहास दी उस घटना दा अध्ययन बी करी लैना चाहिदा जो मक्का दी विजय दे बाद इक्रमा ते हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. कने बीती। हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दा खिमादान जकीनन हजरत यूसुफ दे खिमादान शा मता ज्यादा हा की जे हजरत यूसुफ ने अपने पिता दे पुत्रे गी माफ कीता हा, पर हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. ने अपने कट्टर दुश्मन दे पुत्रे गी माफ कीता।
2. हजरत यूसुफ गी जकीन हा जे मेरे पिता गी अजे तक एह कुर्ता याद होना जेहका में गिरफतार होने मौके लाए दा हा! जिसलै कुर्ता उंदे सामने रक्खेआ जाहग तां ओह समझी जांडन जे यूसुफ जाँदा ऐ ते एह ओहदा गै पुराना कुर्ता ऐ।

सामनै रक्खी दित्ता, जेहदे नै ओह सारी गल्ल समझी गेआ ते आक्खेआ जे-केह में तुदे नै नथा आक्खेआ जे में अल्लाह दी किरपा कनै ओह सब जानना जो तुस नेई जानदे ॥ 97 ॥

उसलै उनें (अर्थात् यूसुफ दे भ्राएं) आक्खेआ जे-हे पिता हजूर! तुस साढ़े आस्तै (अल्लाह अगें) साढ़े गुनाहें दी माफी बाँरे प्रार्थना करो। अस सच्चें गै अपराधी आं। ॥ 98 ॥

उसनै आक्खेआ जे में थुआड़े आस्तै जरूर रब्ब अगें माफ करी देने दी प्रार्थना करड। यकीनन ओ बड़ा बख्शानहार ऐ ते बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 99 ॥

फी जद् ओ यूसुफ कश पुजे तां उसनै अपने माता-पिता गी अपने कश थाहर दित्ता ते गलाया जे अल्लाह दी इच्छा मताबक तुस सारे दे सारे मिसर च अमन-अमान कनै दाखल होई जाओ ॥ 100 ॥

ते उसनै अपने माता-पिता गी अपने सिंहासन पर बठायी ते ओ सारे इसदे कारण (अल्लाह दा शुकुर करदे होई) सजदा च डिग्गी पे ते उस (यूसुफ) नै आक्खेआ जे हे मेरे पिता-एह मेरे पैहलें दिक्खे दे सुखने दा फलादेश¹ ऐ। अल्लाह नै उसी पूरा करी दित्ता ऐ ते उसनै मेरे पर एह बड़ा रहान कीता ऐ, की जे उसनै पैहलें मिगी क़ैदखाने चा कड्डेआ, फी तुसेंगी जंगलै चा कड्डेथै (मेरे कश) आंह्दा इसदे बावजूद जे शतान नै मेरे ते मेरे

أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿۱۱﴾

قَالُوا يَا أَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا كُنَّا خَاطِئِينَ ﴿۱۲﴾

قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ الْعَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿۱۳﴾

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَىٰ إِلَيْهِ أَبُويَهُ وَقَالَ ادْخُلُوا مِصْرَ إِن شَاءَ اللَّهُ أَمِينِينَ ﴿۱۴﴾

وَرَفَعَ أَبُويَهُ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوا لَهُ سَاجِدًا وَقَالَ يَا بَتِ هَذَا وَوَيْلٌ لِّرُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا وَقَدْ أَحْسَنَ بِي إِذْ أَخْرَجَنِي مِنَ السِّجْنِ وَجَاءَ بِكُمْ مِنَ الْبَدْوِ مِنْ بَعْدِ أَنْ نَزَغَ

1. हजरत यूसुफ नै सुखने च दिक्खेआ हा जे सारे नखतर ते चन्न-सूरज मेरे कारण सजदा करा दे न। एह गल्ल पूरी होई गई। ते अज्ज तुस लोक मेरे मिली जाने दी खुशी च अल्लाह गी सजदा करा करदे ओ।

भ्राएँ बशकार फुट्ट पाई दित्ती दी ही। मेरा रब्ब जेह्दे नै चांहदा ऐ किरपा दा ब्यहार करदा ऐ। यकीनन ओह बड़ा जानी-जान ऐ ते हिकमत आह्ला ऐ ॥ 101 ॥

ऐ मेरे रब्ब! तोह् मिगी क्हुमत दा इक हिस्सा बी दित्ते दा ऐ ते स्वप्न- फल दा बी किश इलम तूं मिगी बख्खो दा ऐ। हे धरती ते गासैं दे सिरजनहार! तूं गै इस लोक ते परलोक च मेरा मददगार ऐं। (जिसलै बी मेरा खीरी बेला आवै) तूं मिगी पूर्ण आज्ञाकारी होने दी दशा च मौत दे ते नेक (लोकें) कनै मलाई दे ॥ 102 ॥

(हे साढ़े रसूल) ए गैबी समाचारें¹ (पेशगोई) बिच्चा ऐ जिसी अस वह्नी (दे द्वारा तेरे पर जाहर) करने आं ते जिसलै ओ (यानी तेरे बैरी तेरे बरुद्ध) योजनां बनांदे (खड़जैतर रचदे) आखर सब इक-राऽ होए हे तां तूं (उस बेलै) उंदे कच्छ नेई हा ॥ 103 ॥

ते चाहे तेरी (किन्नी बी) इच्छा होऐ (जे सारे लोक सचाई दी राह पर चलने आह्ले बनी जान) फी बी मते सारे लोक कदैं बी इस (धर्म-ईमान दे) रस्तै नेई चलडन ॥ 104 ॥

ते तूं इस (शिक्षा ते प्रचार) दे बारे च उंदे शा किश बदला निं मंगदा। एह ते सारे ज्हानैं (ते सारे लोकें) आस्तै इक नसीहत (प्रतिशठा) दा कारण ऐ ॥ 105 ॥ (रुकू 11/5)

الشَّيْطٰنُ بَيْنِي وَبَيْنَ اٰحْوٰتِي ۗ اِنَّ رَبِّيۡ
لَطِيْفٌ لِّمَآيَسَآءٍ ۗ اِنَّهُ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝

رَبِّ قَدْ اَتَيْتَنِي مِنَ الْمَلِكِ وَعَلَّمَنِي مِنْ
تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۗ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۗ اَنْتَ وَاَلِيٌّ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۗ
تَوْفَّقْنِيۡ مُسْلِمًا وَّاٰحِقَّنِيۡ بِالصّٰلِحِيْنَ ۝

ذٰلِكَ مِنْ اَنْبَاِ الْعَقِيْبِ نُوْحِيْهِ اَيْكَ ۗ وَمَا
كُنْتُ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْا اَمْرَهُمْ
وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ۝

وَمَا اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ
يٰمُؤْمِنِيْنَ ۝

وَمَا سَأَلْتَهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۗ اِنَّ هُوَ اِلَّا
ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝

1. अर्थात् एह इक कहानी नेई बल्के इक भविष्यवाणी ऐ जे तेरे कनै बी ऐसा गै होने आह्ला ऐ। फी समा औने पर ऐसा गै होआ।

ते आसमानें ते जमीन च किन्ने गै नशान न जिंदे कन्नुआं ए लोक मूह फेरियै लंघी जंदे न ॥ 106 ॥

ते उंदे चा मते सारे लोक अल्लाह पर ईमान नेई रखदे पर इस हालत च ओ कनै-कनै शिर्क बी करदे जंदे न ॥ 107 ॥

तां के एह लोक इस गल्ला शा निडर (ते सुरकखत) होई गेदे न जे उंदे पर अल्लाह दे अजाबें चा कोई इक अजाब आई जा ते अचानक उंदे पर ओह घड़ी आई जा (जेहदी सूचना पैहलें गै दिती जाई चुकी ऐ) ते उनेगी पता बी नेई लगै। ॥ 108 ॥

तूं आख जे एह मेरा रस्ता¹ ऐ। में ते अल्लाह आहले पासै बुलाना ते जिनें सच्चे मनै मेरा अनुसरण कीता ऐ, में ते ओ सारे दे सारे अटल विश्वास² पर कायम आं। अल्लाह पाक ऐ ते में मुश्रिकें बिच्चा नेई आं ॥ 109 ॥

ते तेरे शा पैहलें बी अस (लोकें दी हदायत आस्तै सदा) इनें (संसार दी) बस्तियें च रौहने आहले पुरशें गी गै, जिंदे पर अस अपनी वहबी उतारदे हे, रसूल बनाइयै भेजदे रेह आं। तां केह इनें लोकें धरती पर फिरी-टुरियै नेई दिक्खेआ जे जेहके लोक इंदे शा पैहलें (नबियें दे बरोधी) हे, उंदा परिणाम कैसा निकलेआ हा? यकीनन आखरत दा घर उनें लोकें आस्तै अति उत्तम ऐ जिनें

وَكَايِن مِّن مِّنَ آيَاتِ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
يَمُرُّونَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ ﴿١٠٦﴾

وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْ
مُشْرِكُونَ ﴿١٠٧﴾

أَفَأَمَّا إِنْ تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ
اللَّهِ أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ
لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٠٨﴾

قُلْ هُدِيَ سَبِيلِي إِلَى اللَّهِ عَلَىٰ
بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي وَسُبْحَانَ اللَّهِ
وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٩﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُوحِي
إِلَيْهِمْ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ أَفَلَمْ يَسِيرُوا
فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ
لِّلَّذِينَ اتَّقَوْا أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١١٠﴾

1. अर्थात् मेरा ब्यहार अल्लाह दे सच्चे रस्तै पासै लोकें गी प्रेम-पूर्वक बुलाना ऐ नां के उंदे पर अत्याचार करना।
2. अर्थात् अस हर गल्ला गी युक्ति ते प्रमाण कनै मन्ना करने आं। कपोल-कल्पत गल्लें जां ढकोंसलें दे अधार पर ईमान नेई आनदे।

संयम शा कम्म लैता । फी केह तुस समझदारी
शा कम्म नेई लैदे ॥ 110 ॥

ते जिसलै (इक पासै ते) रसूल उंदे शा
नराश¹ होई गे ते (दूई बक्खी) उंदा (इन्कार
करने आहले लोकें दा) एह बचार पक्का
होई गेआ जे उंदे कन्नै (वह्नी दे नांऽ पर)
झूठी गल्लां आखियां जा करदियां न तां
(उसलै) उंदे (रसूलें) कश साढ़ी मदद पुज्जी
गेई ते जिनें गी अस बचाना चांहदे हे, उनेंगी
बचाई लैता ते साढ़ा अजाब अपराधी लोकें
परा कदें बी हटाय़ा नेई जाई सकदा ॥ 111 ॥

यकीनन इनें लोकें दी चर्चा च अक्लमंदें आस्तै
शिक्षा ऐ। एह ऐसी गल्ल नेई ऐ जो मनघड़त
होऐ, बल्के एह अपने शा पैहलें आहली
(अल्लाह दी कताब दी भविक्खवाणियें) गी
पूर्ण रूप च पूरा करने आहली ऐ ते हर इक
गल्ला गी बिस्तारपूर्ण बर्णन करने आहली ऐ
ते जेहके लोक ईमान आहनदे न उंदे आस्तै
हदायत ते रैहमत ऐ ॥ 112 ॥ (रुकू 12/6)

حَتَّىٰ إِذَا اسْتَيْسَسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ
قَدْ كُذِّبُوا جَاءَهُمْ نَصْرُنَا فَنُجِّيَ مَنْ
نَّشَاءُ ۗ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ
الْمُجْرِمِينَ ﴿١١١﴾

تَقَدَّكَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِأُولِي
الْأَبْصَارِ ۗ مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَكِن
تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ
شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١١٢﴾

1. किश भाष्यकार लिखदे न जे जिसलै रसूल खुदाई अजाबें दे औने पर नराश होई गे पर असें ए अर्थ लैते
दा ऐ जे जिसलै रसूल लोकें दे ईमान आहनने शा नराश होई गे ते इन्कार करने आहलें बी विश्वास करी
लैता जे उनेंगी जे किश सुनाया जा करदा ऐ ओ वह्नी नेई ऐ बल्के ओ रसूल दी मनघड़त ते झूठी गल्लां
न।



सूर: अल्-रअद

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
एहदियां चरताली आयतां ते छे रुकु न।

में अल्लाह दा नांऽ लेइयै, जेहका अनंत किरपा करने आहला ऐ, बार-बार देआ करने आहला ऐ (पढ़ना) ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ①

अलिफ़, लाम, मीम, रा।¹ में अल्लाह बड़ा जानने आहला, बड़ा दिक्खने आहला आं। एह कामल कताब दियां आयतां न ते जेहका कलाम तेरे रब्ब पासेआ तेरे पर उतारेआ गेआ ऐ, ओह बिल्कुल सच्च ऐ, पर मते सारे लोक एहदे थमां नाबर न ॥ 2 ॥

الْمَرِّۙ تِلْكَ اٰیٰتِ الْكِتٰبِ الَّذِیۙ
اَنْزَلَ اِلَیْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یُؤْمِنُوْنَ ②

अल्लाह ओह ऐ जिसनै बगैर थ'म्मै-थम्होड़ें आसमानें गी उच्चा रखे दा ऐ, जो तुस दिक्खा बी करदे ओ ते फी ओह अर्श (सर्वोच्च सिंहासन) पर बराजमान होआ ते उसने सूर्य ते चंद्रमा गी थुआड़ी सेवा च लाई रखे दा ऐ। फी हर इक नखत्तर इक निश्चत अबधि तगर (अपने क्रम मताबक) चला करदा ऐ। ओह अल्लाह हर इक गल्ला दा प्रबंध करदा ऐ ते अपनी आयतां खोहली-खोहली ब्यान करदा ऐ तां जे तुस लोक अपने रब्ब कनै मिलने दा पूरा-पूरा यकीन रखखो ॥ 3 ॥

اللّٰهُ الَّذِیۙ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَیْرِ عَمَدٍ
تَّرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰی عَلٰی الْعَرْشِ وَسَخَّرَ
السَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۗ كُلٌّ لِّیَّجْرِیۗ لِاٰجَلٍ
مُّسَمًّی ۗ یُذَبِّرُ الْاَمْرَ یَفْصَلُ الْاٰیٰتِ
لَعَلَّكُمْ یَلْقَآءَ رَبِّكُمْ تُوَفُّوْنَ ③

1. तफसील आस्तै दिक्खो सूर:-बक्रा: आयत 2

ते (अल्लाह) ऊरे ऐ जिसनै धरती गी फलाए दा ऐ, ओहदे च मजबूती कनै खड़ोते रौहने आहले पर्वत ते नदियां बनाई दियां न। ओहदे च हर भांति दे फलें दियां (नर-मादा) दमें किसमां बनाई दियां न। ओह राती गी दिनै पर आहनी सुटदा ऐ। जेहके लोक सूझ-बूझ शा कम्म लेंदे न। उंदे आस्तै यकीनन इस गल्ला च नेकां नशान (रहस्य) पाए जंदे न (मजूद न) ॥ 4 ॥

ते धरती च इक-दूए दे लागै नेकां किसमें दे टुकड़े न ते केई भांती दे अंगूरें दे बाग, (केई किसमें दियां) खेतियां ते भांत-सभांते खजूरें दे बूहटे न। (जिंदे चा किश) इक-इक जड़ै थमां केई-केई शाखां कडढने आहले होंदे न ते किश इक-इक जड़ै थमां केई-केई निकलने आहलें दे उल्ट (इक गै तनै आहले) होंदे न। जिनें गी इक्कै पानी कनै घालेआ जंदा ऐ ते अस (इस पर बी) फलें दे स्हाबं उंदे चा केई बूहटें गी दूए दी निस्वत बधिया बनाने आं। इस गल्ला च उनें लोकें आस्तै जेहके बुद्धि शा कम्म लेंदे न, केई चाल्ली दे नशान न (रहस्य मजूद न) ॥ 5 ॥

ते (हे श्रोता) जेकर तुगी (इनें सच्च दे बरोधियें पर) रहानगी होऐ तां (ठीक गै ऐ, की जे) उंदा एह आखना जे क्या, जदूं अस मरियै मिट्टी होई जागे तां असेंगी सच्चें गै फी कुसै नमें जन्म च औना होग, तेरी गल्ला शा बी ज्यादा रहानगी आहला ऐ। एह ऊरे लोक न जिनें अपने रब्ब गी मनने शा इन्कार करी दिता, एह ओह लोक न जिंदी गरदनें च लड्डन (तौक्र) पैदे हॉडन ते एह लोक नरक दी अग्गी च पौने आहले न, ओह ओहदे च (सदियें तक) पेदे रौहडन ॥ 6 ॥

وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَمِنْ كُلِّ الشَّجَرِ جَعَلَ فِيهَا رَوْحِينَ وَجَبِينِ اثْنَيْنِ يُغْشَى اللَّيْلُ النَّهَارَ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝

وَفِي الْأَرْضِ قِطْعٌ مُّتَجَوِّرَةٌ وَجَبْتِ مِنْ أَعْنَابٍ وَزُرْعٌ وَنَخِيلٌ صَوَّانٌ وَعَايِرٌ صَوَّانٌ يُسْقَى بِمَاءٍ وَاحِدٍ ۚ وَنَفْصٌ بَعْضُهَا عَلَى بَعْضٍ فِي الْأَكْلِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

وَأَنْ تَجِبَ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ إِذْ أَكْنَا ثُرْبَاءً ثَانَلْفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ أَوْلِيكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ ۚ وَأَوْلِيكَ الْأَعْمَلُ فِيَّ أَعْنَاقِهِمْ ۚ وَأَوْلِيكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

ते ओह तेरे शा भलाई दी निसबत बुराई दे तौले औने दी मंग करा करदे न। हालांके इंदे शा पैहलें (ऐसे लोकें पर) हर चाल्ली दे नसीहतू आहले अजाब आई चुके दे न, ते तेरा रब्ब सचें गै लोकें गी उंदे अत्याचारें दे बावजूद बी (बिना कुसै शक्क शुबह दे) माफ करने आहला ऐ ते इससै चाल्ली तेरा रब्ब सख्त स'जा देने आहला ऐ ॥ 7 ॥

ते जेहके लोकें इन्कार कीता ऐ, आखदे न एहदे पर उसदे रब्ब पासेआ कोई नशान की नेई तुआरेआ गोआ? हालांके तूं सिर्फ सचेत करने आहला ते डराने आहला ऐ? ते हर इक जाति आस्तै (अल्लाह पासेआ) इक मार्ग दर्शक भेजेआ जाई चुके दा ऐ ॥ 8 ॥
(रुकू 1/7)

अल्लाह उसी (चंगी चाल्ली) जानदा ऐ जिसी हर मादा (बतौर हमल) चुक्की रखदी ऐ ते (उसी बी) जिसी गर्भाशय खराब करी (गराई) दिंदे न ते (उसी बी) जिसी ओह बधांदे न, उस कश जरूरता मताबक हर चीज मजूद ऐ ॥ 9 ॥

ओह छप्पे दे ते बंदोए दे, दौनें गी जानने आहला ऐ। ओह बड़े सम्मान आहला ते बड़ी शान आहला ऐ ॥ 10 ॥

तुंदे चा जेहड़ा गल्ला गी छपांदा ऐ ते ओह बी जेहका उसी जाहूर करदा ऐ (उसदे ज्ञान दे मताबक ओह दमें) बराबर न ते ओह बी जेहका रातीं छप्पी रौहदा ऐ ते जेहका दिनें चलदा ऐ (बराबर न) ॥ 11 ॥

ओहदे आहले पासेआ इस रसूल दे अगों बी ते उसदे पिच्छें बी (इक-दूए दे कनै-कनै)

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ
وَقَدْ خَلَّتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثَلُطُ وَإِنَّ
رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلَى ظُلْمِهِمْ
وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ
عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ ۚ إِنَّمَا أَنْتَ مُنذِرٌ
وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝

اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثَىٰ وَمَا تَغِيصُ
الْأَرْحَامُ وَمَا تَرْدَاؤُا وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ
بِمِقْدَارٍ ۝

عَلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرِ الْمُتَعَالِ ۝

سَوَاءٌ مِنْكُمْ مَنْ أَسْرَ الْقَوْلِ وَمَنْ جَهَرَ
بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِأُتَيْلٍ وَسَارِبٍ
بِالْهَارِ ۝

لَهُ مَعْقِبَاتٌ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ

औने आहला (फ़रिश्ते दा) इक दल (रक्षा आस्तै) नयुक्त ऐ, जेहका अल्लाह दे आदेश मताबक इस दी रक्षा करा करदा ऐ। अल्लाह कदें बी कुसै जाति दी हालत गी नेई बदलदा, जद तक के ओह् आपूं अपनी हालत गी नेई बदलै^१ ते जिसलै अल्लाह कुसै जाति आस्तै अज़ाब भेजने दा फैसला करी लैदा ऐ तां उस अज़ाब गी हटाने आहला कोई नेई होंदा ते नां गै उसदे सिवा उंदा कोई दूआ मददगार होई सकदा ऐ ॥ 12 ॥

ऊऐ ऐ जेहका तुसंगी बिजली (दी चमक) दसदा ऐ। डर आस्तै बी ते लालच आस्तै बी ते इक बोझल बदल गी (उच्चा) चुक्की दिंदा ऐ ॥ 13 ॥

ते (बिजली दी) कड़क उसदी स्तुति दे कनै-कनै उसदी पवितरता दा गुणगान बी करदी ऐ ते फरिश्ते बी उसदे भै कारण ऐसा गै करदे न ते ओह् कड़कदी बिजलियां बी भेजदा ऐ, फी जिंदे पर ओह् चांहदा ऐ, उनेंगी सुटदा ऐ ते ओह् अल्लाह दे बारे च झगड़ा करदे होंदे न, हालांके ओह् सख्त अज़ाब देने आहला ऐ ॥ 14 ॥

नेई टलने आहला बुलावा उस्सै दा ऐ ते जिनंगी ओह् लोक उसदे सिवा पुकारदे न ओह् पुकार दा कोई उत्तर नेई दिंदे पर उंदा कम्म उस व्यक्ति आंगर ऐ जेहका अपने दमें हत्थ पानी आहले पासै बधाऽ करदा होऐ तां जे ओह् (पानी) ओहदे मूहै तक पुज्जी जा पर ओह् पानी ओहदे मूहै तक कदें बी नेई पुज्जग ते इन्कार करने आहले लोकें दी चीख-पुकार ब्यर्थ चली जाग ॥ 15 ॥

يَخْفَضُونَهُ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا بِأَنفُسِهِمْ ۗ وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءًا ۖ فَلَا مَرَدَّ لَهُ ۗ وَمَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَالٍ ۝

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ الْبَرْقَ حَوَافًا وَطَمَعًا وَيُنشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۝

وَيَسِّخُ الرَّعْدَ بِحُجْمِهِ وَالْمَلَائِكَةَ مِنْ خِيفَتِهِ ۗ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَنْ يَشَاءُ وَهُمْ يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ ۗ وَهُوَ شَدِيدُ الْمِحَالِ ۝

لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۗ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُمْ بِشَيْءٍ إِلَّا كَبَاسِطٍ كَفْمِيهِ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْدَأَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهِمْ ۗ وَمَا دَعَاءُ الْكُفْرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝

1. बिवरण आस्तै दिक्खो सूर: अन्फ़ाल टिप्पणी आयत 54

ते जेहके (वजूद) आसमानें च न जां जमीन च न, उंदे साये बी खुशी कनै जां दुखी होइयै, हर संज-सवैरे अल्लाह गी गै सजदा¹ करदे न ॥ 16 ॥

तूं उनेंगी आखी दे जे (दस्सो) आसमानें ते जमीन दा रब्ब कु'न ऐ? (इसदा जवाब ओह ते केह देंडन) तूं (आपूं गै) आखी दे जे-अल्लाह! (फी तूं उनेंगी) आखी दे जे क्या फी बी उस (अल्लाह) दे सिवा तुसें अपने आस्तै ऐसे मददगार बनाई रखे दे न जेहके आपूं अपने आप गी बी नफा पुजाने दी शक्ति नेई रखदे ते नां गै कुसै नुक्सान गी रोक्ने दी? ते उनेंगी आखी दे जे क्या अ'न्ना ते सज़्ज़र (दिक्खने आहला) बराबर होई सकदा ऐ? जां क्या न्हेरा ते लो बराबर होई सकदी ऐ? क्या उनें अल्लाह दे ऐसे शरीक (साझी) बनाई रखे दे न जिनें उसदे आंगर कोई ऐसी मखलूक पैदा (सिरजना) कीती ऐ जेहदे करियै (उसदी ते दूए शरीके (साझिये) दी) पैदा कीती दी मखलूक उंदे आस्तै मुशतबह (संदिग्ध) होई गोई होऐ? तूं उनेंगी आखी दे जे अल्लाह गै हर चीजा दा सिरजनहार ऐ ते ओह पूरी चाल्ली इक्कला (ते हर-इक चीजा पर) कामिल (संपूर्ण) अधिकार रखने आहला ऐ ॥ 17 ॥

उसनै गासै थमां किश पानी तुआरेआ, फी ओदे ने केई वादियां रुढ़न लगियां ते उस हाडै दे उप्पर औने आहली झग चुक्की लैती ते जिस धातु गी ओह कोई बंधा जां घरेलू प्रयोग दा समान बनाने आस्तै अग्गी च तपांदे न उस धातु

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّ كَرْهًا وَّ ظَلَمَهُمۡ بِالْغَدُوۡرِ وَاِلۡصٰٓاٰلِ ۝۱۶

قُلۡ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ قُلۡ اللّٰهُ قُلۡ اَفَاَتَّخَذْتُمۡ مِنْ دُوۡنِهٖۤ اَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُوۡنَ لِاَنۡفُسِهِمۡ نَفَعًا وَّ اِلۡصِرَآٓةً قُلۡ هَلۡ يَسْتَوِي الۡاَعۡمٰى وَّ الْبَصِيۡرُ اَمْ هَلۡ تَسْتَوِي الظُّلُمٰتُ وَّ النُّوۡرُ اَمْ جَعَلُوۡا لِلّٰهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوۡا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخٰلِقُ عَلَيْهِمۡ قُلۡ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝۱۷

اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتۡ اَوۡدِيَةً يَّقَدِّرۡهَا فَاَحْتَمَلَ السَّيۡلُ رَبِّدَاۡرًاۢ بِيۡاُ وَّحٰٓا يُوۡفِقُوۡنَ عَلَيْهِ فِى النَّارِ اِتِّعَآءَ حِلِيَّةٍ اَوْ

1. इस दा एह मतलब नेई जे ओह मनुक्खै आंगर सजदा करदे न। सजदा दा अर्थ आज्ञा-पालन करना होँदा ऐ ते आयत दा ए मतलब ऐ जे सारी कायनात रात-दिन कुदरती कानून दी आज्ञा दा पालन करने च लग्गी दी ऐ।

च बी उस हाड़ै जनेही झग्ग होंदी ऐ। अल्लाह इस्से चाल्ली सच्च ते झूठ दे फर्क गी स्पष्ट करदा ऐ। फी सुट्टी गेदी झग्ग नश्ट होई जंदी ऐ, पर जेहड्डी चीज मानव-समाज आस्तै फायदेमंद होंदी ऐ ओह प्रिथ्वी च स्थित रौहदी ऐ। अल्लाह सारी गल्लें गी इस्से चाल्ली (खोहलियै) ब्यान करदा ऐ ॥ 18 ॥

जिनें लोकें अपने रब्ब दी आज्ञा दा पालन कीता उंदे आस्तै कामयाबी ऐ ते जिनें उसदी आज्ञा दा पालन नेई कीता (उंदी हालत ऐसी होगे जे) जे किश बी प्रिथ्वी च है जेकर ओह सारे दा सारा उंदा होंदा ते उसदे बराबर होर बी, तां ओह ओह सारा धन देइयै (अजाब थमां) बचने दी कोशश करदे। उंदे आस्तै बुरे परिणाम आहला सहाब निश्चत ऐ ते उंदा ठकाना नरक ऐ ते ओह बास करने दी द्रिष्टी कनै अत्त गै बुरा स्थान ऐ ॥ 19 ॥ (रुकू 2/8)

जेहड्डी आदमी जानदा ऐ जे जेहका कलाम तेरे रब्ब पासेआ तेरे पासै तुआरेआ गेआ ऐ ओह बिल्कुल सच्च ऐ, तां क्या ओह उस आदमी जैसा (होई सकदा) ऐ जेहका अ'न्ना ऐ? (नेई, की जे) बुद्धिमान गै उपदेश प्राप्त करदे न ॥ 20 ॥

ऐसे लोक जेहके अल्लाह कनै कीते दे बा'यदे गी पूरा करदे न ते उस पक्के बा'यदे गी नेई तोड़दे ॥ 21 ॥

ते जेहके लोक उनें सरबंधें गी सदा कायम रखदे न जिनेंगी कायम रखवने दा अल्लाह ने आदेश दिते दा ऐ ओह अपने रब्ब शा डरदे न ते बुरे परिणाम आहले सहाब थमां भै खंदे न ॥ 22 ॥

مَتَاعَ رَبِّدٍ مِّثْلَهُ ۗ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۗ فَأَمَّا الرِّبْدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً ۗ وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ ۗ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ۝

لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنَىٰ ۗ وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ ۗ أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ ۗ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۗ وَبِئْسَ الْمِهَادِءُ ۝

أَفَمَنْ يَعْلَمُ أَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۗ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَٰئِكَ الْأَنْبِيَاءُ ۝

الَّذِينَ يُؤْفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَقْتَضُونَ الْمِيثَاقَ ۝

وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ۝

1. अर्थात् अल्लाह पासेआ बिपता औने दे फलसरूप जेहके लोक फायदामंद होंडन ओह सुरक्कत रखे जांडन, पर जेहके लोक नकारा ते पतित होंडन उंदा सर्वनाश करी दिता जाग।

ते ओह लोक जिनें अपने रब्ब दी खुशी पाने आस्तै धीरज थमां कम्म लैता ऐ ते नमाज गी चंगी चाल्ली पूरा कीता ऐ ते जे किश असें उनेंगी दिता ऐ ओहदे चा छपियै (बी) ते जाहरा बी (साही राह पर) खर्च कीता ऐ ते (जेहके) बदी गी नेकी राहें दूर करदे (रौहदे) न उंदे आस्तै उस घरै दा उत्तम परिणाम निश्चत ऐ ॥ 23 ॥

अर्थात् मुस्तकिल रिहायश दे बाग जिंदे च ओह (आपू बी) दाखल होंडन ते उंदे कन्नै उंदे पुरखें ते उंदी नीमतें ते उंदी नसलें चा बी (ओह लोक) जिनें नेकी गी अपनाए दा होग (उस च दाखल होडन) ते हर दरवाजे थमां फ़रिश्ते उंदे कश औडन ॥ 24 ॥

(ते आखडन) थुआड़े आस्तै सलामती ऐ, की जे तुस धीरजवान रेह। इस आस्तै (हून दिक्खो, थुआड़े आस्तै) इस घर दा किन्ना अच्छा परिणाम ऐ ॥ 25 ॥

ते जेहके लोक अल्लाह दे (कन्नै कीते गेदे) पुखा ऐहद गी पक्के इकरार दे बा'द त्रोड़ी दिंदे न ते अल्लाह ने जिस रिश्ते गी कायम रक्खने दा आदेश दिता हा उसी तोड़ी दिंदे न ते धरती पर फ़साद करदे न, उंदे आस्तै (अल्लाह पासेआ) दुतकार निश्चत ऐ ते उंदे आस्तै इक बुरा घर बी निश्चत ऐ ॥ 26 ॥

अल्लाह जेहदे आस्तै चांहदा ऐ (ओहदे आस्तै) रिज़क बधाई दिंदा ऐ ते जिंदे आस्तै चांहदा ऐ (उं'दे आस्तै) तंगी करी दिंदा ऐ ते एह लोक संसारक जीवन पर गै खुश होई गेदे न, हालांके एह संसारक जीवन आखरत दे मकाबले च ममूली हारा ते अस्थायै समान ऐ

॥ 27 ॥ (रुकू 3/9)

وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِعَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ
وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ
سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ
السَّيِّئَةِ أُولَئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿۱۳﴾

جَبَّتْ عَدْنٌ يَدْخُلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ
مِنْ آبَائِهِمْ وَازْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّتِهِمْ
وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ ﴿۱۳﴾

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ
عُقْبَى الدَّارِ ﴿۱۳﴾

وَالَّذِينَ يَقْتُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ
بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ
بِهِ أَنْ يُوْصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ
أُولَئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ﴿۱۴﴾

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ
وَفَرِحُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيَاةُ
الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ ﴿۱۴﴾

ते जिन्हें लोकें (तेरा) इन्कार कीता ऐ ओह आखदे न जे एहदे रब्ब पासेआ कोई नशान की नेई तुआरेआ गोआ? तू आखी दे जे अल्लाह जिसी चांहदा ऐ उसदा बिनाश करी दिंदा ऐ ते जो(ओहदे पासै) झुकदा ऐ उसी अपने पासै औने दा रस्ता दस्सी दिंदा ऐ ॥ 28 ॥

अर्थात जेहड़े लोक ईमान ल्याए होन ते उंदे दिल अल्लाह दी याद शा खुशी मसूसदे होन(उनेंगी हदायत दिंदा ऐ)। इस आस्तै समझी लैओ जे अल्लाह दी याद शा गै दिल संतुश्टी पांदे न ॥ 29 ॥

जेहके लोक ईमान ल्याए न ते उनें शुभ (ते परिस्थिति दे मताबक) कर्म कीते दे न उंदे आस्तै परमानंद ऐ ते लौटने (बापसी) दा उत्तम स्थान निश्चत ऐ ॥ 30 ॥

इस्सै (किसम दा अन्जाम पाने) लेई असें तुगी इक ऐसी कौम च भेजेआ ऐ जेहदे शा पैहलें केई जातियां (औने आहले दी राह दिखदी) होई चुकी दियां न तां जे जो (कलाम) असें तेरे पासै वह्नी कीता ऐ तू ओह उनेंगी पढ़ियै सुनाऽ की जे ओह रहमान (खुदा) दी मेहर दा इन्कार करा करदे न। तू आख एह मेरा रब्ब ऐ, इसदे सिवा कोई पूजने जोग नेई। में ओहदे पर गै भरोसा कीता ऐ ते हर पल उस दे गै अगमें झुकना ॥ 31 ॥

ते जेकर कोई ऐसा कुरआन होऐ जेहदे द्वारा (निशान दे रूपे च) पबर्तें गी (उंदे मूल स्थानें थमां हटाइयै) चलाया गोआ होऐ जां उसदे द्वारा धरती दे टुकड़े-टुकड़े कीते गे होन जां उसदे द्वारा मुड़दें कनै गल्ल -बात कीती गेई होऐ तां के एह लोक उस पर ईमान ल्यौंडन? (कदें

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ
آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ ۗ قُلْ إِنْ اللَّهُ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ
وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ أُنَابَ ۗ

الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ
اللَّهِ ۗ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ۗ

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَىٰ
لَهُمْ وَحَسُنَ مَا فِي

كَذَلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهَا أُمَمٌ لِّتَتْلُوا عَلَيْهِمُ الذِّكْرَ
أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ
بِالرَّحْمَنِ ۗ قُلْ هُوَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَتَابِ ۗ

وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ
قُطِعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كَلِمَةٌ بِهِ الْمَوْتُ
بَلْ لِلَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا ۗ أَفَلَمْ يَأْتَسِبْ

बी नेई) बल्के (ईमान ल्यौने दा) फैसला पूरे तौरा पर अल्लाह दे हत्थें च ऐ।¹ क्या जो (लोक) ईमान ल्याए न उ'नेंगी (अजें तक) पता नेई चलेआ जेकर अल्लाह चांहदा तां सारे लोकें गी हदायत देई दिंदा। ते (हे रसूल!) जिनें लोकें तेरा इन्कार कीता ऐ तां उंदे पर इस लेई सदा गै कोई ना कोई मसीबत औंदी रौहग जां उंदे घरें दे लागै उतरदी रौहग, इत्थें तक जे अल्लाह दा आखरी बांयदा (यानि मक्का दी बिजे) आई जाग अल्लाह इस बा'यदे दे बरुद्ध कदें बी नेई करोग ॥ 32 ॥ (रुकू 4/10)

ते तेरे शा पैहले (औने आहले) रसूलें कन्ने (बी) मखौल कीता गेआ हा जिस पर में उनें लोकें गी जिनें इन्कार कीता हा(किश समे आस्तै) ढिल्ल दिती, फी में उंदा बिनाश करी दिता । हून दिक्खो मेरी स'जा कैसी (सख्त) ही ॥ 33 ॥

तां केह ओह (अल्लाह) जो हर- इक आदमी दे कर्म दा नगरान ऐ (उंदे शा निं पुच्छग) ते उ'नें ते अल्लाह दे नेकां शरीक (बी) बनाए दे न उनेंगी आखो -तुस इंदे (बनावटी खुदाएं दे) नांउ (ते) दस्सो। जां क्या तुस (लोक) इस (खुदा) गी कोई ऐसी गल्ल दसगे जेहकी प्रिथ्वी पर मजूद ते है, पर ओह (उसी) जानदा नेई जां तुस सिर्फ एह गल्लां मूहा करदे ओ? बल्के जिनें लोकें इन्कार कीते दा ऐ, उनेंगी उंदी अपनी गै फरेबकारी खूबसूरत (शक्ल च) दस्सी गेई ऐ ते उनेंगी स्हेई रस्ते थमां हटाई दिता गेआ ऐ ते जिसी अल्लाह नश्ट करै उसी रस्ता दस्सने आहला कोई नेई (मिली सकदा) ॥ 34 ॥

الَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَوَيْشَاءَ اللَّهُ لَهُدَى
النَّاسِ جَمِيعًا ۗ وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا
تُصِيبُهُمْ بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ
قَرِيبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتَّىٰ يَأْتِيَ وَعْدَ اللَّهِ ۗ
إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۝

وَلَقَدْ اسْتَهْزَيْتَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ
فَأَمَلَيْتَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْتَهُمْ
فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝

أَفَمَنْ هُوَ قَائِمٌ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ بِمَا
كَسَبَتْ ۗ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ ۗ قُلْ
سَمُّوهُمْ ۗ أَمْ تُنَبِّئُونَهُ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي
الْأَرْضِ أَمْ بَيَّظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ لَبِ لِّرِينَ
لِلَّذِينَ كَفَرُوا مَكْرَهُمْ وَصَدُّوا عَنِ
السَّبِيلِ ۗ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ
مِنْ هَادٍ ۝

1. अर्थात् इन्कार करने आहलें पर अजाब पर अजाब औग ते इक लश्कर दे बा'द दूआ लश्कर चढ़ाई करग। ते आखरी लश्कर उंदे घरें दे लागै जाई उतरग। यानि मक्का पर हमला होग।

उंदे आस्तै इक अजाब(ते) इससै जीवन च निश्चत ऐ ते आखरत दा अजाब ते यकीनन होर (बी) सख्त होना ऐ। ते उनेंगी अल्लाह (दे अजाब) थमां बचाने आह्ला कोई बी नेई होग ॥ 35 ॥

संयमी लोकें गी मसाल दे तौरा पर जिस जन्त दा बा'यदा दिता गोदा ऐ ओ (एह ऐ जे) उसदे (बूहदें दे साए) थल्लै नैहरां बगा दियां होड न। उसदा फल बी म्हेशां रौहने आह्ला होग ते उसदा साया (बी)। एह उनें लोकें दा परिणाम होग जिनें संयम अखत्यार कीता ते इन्कार करने आहल्लें दा अंजाम (दोज़ख दी) अग होग ॥ 36 ॥

ते जिनें लोकें गी असें एह कताब दिती ऐ ओह इस (कलामे इलाही) थमां जो तैरे पर नाजल कीता गेआ ऐ, खुश होंदे न, इनें (मुखतलिफ) गरोहें चा (किश) ऐसे (बी) न जेहडे इसदे किश हिस्से दा इन्कार करदे न। तूं आख-मिगी (ते) इय्यै हुकम दिता गोदा ऐ जे अ'ऊं अल्लाह दी अबादत करां ते कुसैगी इसदा शरीक नेई बनां। अ'ऊं इससै पासै(तुसैंगी) बुलान्ना ते अ'ऊं बी इससै पासै झुकना ॥ 37 ॥

ते इससै चाल्ली असें इसी (कुरआन गी) बिस्तार कनै आदेश दे रूपै च उतारेआ ऐ ते (हे मुखातब) जे तूं इस इलम दे बा'द, जेहका तुगी हासल होई चुकेआ ऐ, इनें इन्कार करने आहल्लें दी इच्छेआएँ दी पैरवी कीती, तां अल्लाह दे मकाबले च तेरा नां (ते) कोई दोस्त होग ते नां (गै) कोई बचाने आह्ला (होग) ॥ 38 ॥ (रूकू 5/11)

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَعَذَابٌ
الْآخِرَةُ أَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ
مِنْ وَّاقٍ ۝

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وَعَدَ الْمُتَّقُونَ ۗ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۗ أَكْثُهَا دَائِمٌ
وَوَظَلُّهَا ۗ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِينَ اتَّقَوْا ۗ
وَوَعُقْبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ ۝

وَالَّذِينَ اتَّيَهُمُ الْكِتَابُ يَفْرَحُونَ بِمَا
أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمِنَ الْأَحْرَابِ مَنْ يُنْكِرُ
بَعْضَهُ ۗ قُلْ إِنَّمَا أَمْرُهُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ
وَلَا أُشْرِكَ بِهِ ۗ إِلَيْهِ أَدْعُوا وَإِلَيْهِ
مَأبٍ ۝

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ۗ وَلَئِنْ
اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ مَا جَاءَكَ مِنَ
الْعِلْمِ ۗ لَمَّا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَّاقٍ ۝
ع

ते असें तेरे शा पैहलें (बी) केई रसूल भेजे हे ते उनेंगी बीबियां ते बच्चे बी दिते हे ते कुसै रसूल आस्तै ममकन नेई हा जे ओह अल्लाह दी आज्ञा दे बिना (अपनी कौम दे लागै) कोई नशान ल्यौंदा। हर इक कार्यक्रम आस्तै इक समां निश्चत ऐ ॥ 39 ॥

जिस चीजा गी अल्लाह चांहदा ऐ, मटांदा ऐ ते (जिसी चांहदा ऐ) कायम रखदा ऐ ते उससै कश सब आदेशें दा मूल (जद्) ऐ ॥ 40 ॥

ते जिस (अजाब दे भेजने) दा अस उंदे कनै बा'यदा करने आं, जे अस उसदा कोई हिस्सा तेरे सामनै भेजियै तुगी दस्सी देचै (तां तूं बी उंदा अंजाम दिक्खी लैगा) ते (जे) अस (इस घड़ी शा पैहलें) तुगी मौत देई देचै (तां मरने दे बा'द तुगी उस दी असलीयत दा इलम होई जाग की जे) तेरे जिम्मै सिर्फ (साढ़े हुकम ते पैगाम) पुजाना ऐ ते उंदे शा स्हाब लैना साढ़ा कम्म ऐ ॥ 41 ॥

ते केह् उनें नेई दिक्खेआ जे अस मुलख गी (चपासेआ) सबनें पासेआ घटांदे आवा करने आं ते फैसला ते अल्लाह करदा ऐ। कोई इस दे फैसले गी बदलने आहला नेई। ते ओह तौले स्हाब लैने आहला ऐ ॥ 42 ॥

ते जेहके लोक इंदे शा पैहलें हे, उनें (बी नबियें दे खलाफ) उपाऽ कीते हे (पर उंदी कोई पेश निं चली)। इस आस्तै उपाऽ करना बी पूरी चाल्ली अल्लाह दे गै अधिकार च ऐ। हर शख्स जे किश (बी) करदा ऐ ओह

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً ۖ وَمَا كَانَ لِرُسُلٍ أَنْ يَأْتِيَ بَايِعَةً إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ لِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ ﴿٣٩﴾

يَمْحُوا اللَّهُ مَا يَشَاءُ وَيُشِيتُ ۗ وَعِنْدَهُ أُمُّ الْكِتَابِ ﴿٤٠﴾

وَإِنَّمَا نُرِيَّتُكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ تَوَفَّيْنَاكَ فَأِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلْغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ﴿٤١﴾

أَوْ لَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۗ وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهِ ۗ وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٤٢﴾

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلَّهِ الْمَكْرُ جَمِيعًا ۗ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۗ وَسَيَعْلَمُ الْكُفْرُ لِمَنْ

1. अर्थात् इक पासै ते मुलख दे कनारे मुसलमानें दे हल्थ आवा करदे न। दूए पासै प्रभावशाली ते प्रमुख घरां दे नौ जुआन इस्लाम धर्म ग्रैहन करा करदे न। जियां अमर बिन आस, ख़ालिद बिन वलीद, हज़रत उमर ते हज़रत अली बैगैरा।

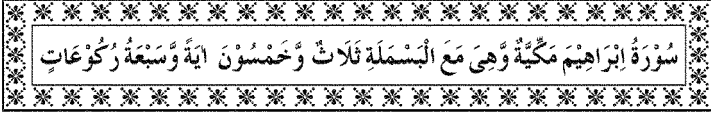
(अल्लाह) उसी जानदा ऐ ते इनें काफरें गी
तौले गै पता लगगी जाग जे उस औने आहले
घरै दा (अच्छा) अंजाम कोहदे आस्तै ऐ
॥ 43 ॥

ते जिनें लोकें तेरा इन्कार कीता ऐ ओह
आखदे न जे तूं खुदा दा भेजे दा नेई ऐं, तूं
उनेंगी आख (जे) अल्लाह मेरे ते तुंदे बश्कार
काफी गुआह ऐ ते (इस्सै चाल्ली) ओह
(शख्स बी गुआह) ऐ जिस कश इस
(मकद्दस) कताब दा इलम (आई चुके
दा) ऐ ॥ 44 ॥ (रुकू 6/12)

عُقْبَى الدَّارِ ﴿۱۳﴾

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ مُرْسَلًا ۖ
قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۗ
وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ الْكِتَابِ ۗ

ooo



सूर: इब्राहीम

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां तरुजा आयतां ते सत्त रुकू न।

(में) अल्लाह दा नाऽ लोइयै, जो बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रेहम करने आहला ऐ (पढ़ना) ॥ 1 ॥

अ'ऊ' अल्लाह दिक्खने आहला आं। (एह) इक कताब ऐ जिसी असें तेरे पर इस लेई तुआरेआ ऐ जे तू सारे लोकें गी इंदे रब्ब दे हुकम कनै न्हेर-गफार चा कडिदयै लोई आहली बक्खी लेई आवैं। यानी प्रभुत्वशाली ते स्तुतियें आहले अल्लाह दे रस्ते पासै (लेई आवैं) ॥ 2 ॥

(ओह सर्व शक्तिमान ते तरीफें आहला खुदा) अल्लाह गै ऐ। (ते) जेहका किश आसमानें च ऐ ते जेहका जमीन च ऐ, सब उस दा ऐ। ते (इसदा) इन्कार करने आहलें आस्तै इक सख्त अजाब निश्चत ऐ ॥ 3 ॥

जो (इन्कार करने आहले) आखरत दे मकाबले च इस संसारक जीवन गी तरजीह दिंदे न ते (दूए लोकें गी बी) अल्लाह दे रस्ते थमां रोकदे न ते इसी (अर्थात् संसारक जीवन गी अपने मनै दे) टेढ़ेपन राहें हासल करना चांहदे न। एह लोक दूर दी गुमराही च (पेदे) न ॥ 4 ॥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ①

الرَّكْبُ كَاتِبٌ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ
النَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ لِیَأْذَنَ
رَبِّهِمْ إِلَى صِرَاطِ الْعَزِیْزِ الْحَمِیْدِ ①

اللّٰهُ الَّذِیْ لَهُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا
فِی الْاَرْضِ ۗ وَوِیْلٌ لِّلْکٰفِرِیْنَ مِنْ
عَذٰبٍ شَدِیْدٍ ①

الَّذِیْنَ یَسْتَجِبُوْنَ الْحَیْوةَ الدُّنْیَا عَلٰی
الْاٰخِرَةِ وَیَصُدُّوْنَ عَنِ سَبِیْلِ اللّٰهِ
وَبِغْوَئِهَا عَوجًا ۗ اُولٰٓئِكَ فِی
صَلٰٓئِ بَعِیْدٍ ①

1. विवरण आस्तै दिक्खो सूर: बकर: टिप्पणी आयत 2

ते हर इक रसूल गी असें उस दी कौम दी जवान च गै (वह्नी देखै) भेजेआ ऐ तां जे ओह इनें गी (साहियां गल्लां) खोह्लियै दसै। फी (इस उपाऽ दे बा'द) अल्लाह जिसी (हलाक करना) चांहदा ऐ हलाक करदा ऐ ते जिसी (कामयाब करना) चांहदा ऐ, उसी मंजिले मकसूद पर पुजाई दिंदा ऐ। ते ओह पूरे तौर पर गालब (ते) हिक्मत आहला (अर्थात् प्रभुत्वशाली ते तत्त्वदर्शी) ऐ ॥ 5 ॥

ते (तेरे शा पैहलें) असें मूसा गी बी अपने नशानें कनै (एह हुकम देखै) भेजेआ हा जे अपनी कौम गी न्हेर-गफार च काड्ढियै रोशनी च लेई आ ते उनेंगी अल्लाह दे इनाम ते उसदे अजाबें दा चेता कराऽ। (की जे) बिला शुबह इस च हर इक पूरे साबर (ते) पूरे शुकरगुजार आस्तै केई नशान (पाए जंदे) न ॥ 6 ॥

ते (हे श्रोता तूं उस वक्त गी बी याद कर) जिसलै मूसा ने अपनी कौम गी आखेआ हा (जे-ऐ मेरी कौम!) तुस अपने आप उप्पर अल्लाह दा (उस वक्त दा) इनाम याद करो जदूं उसने तुसेंगी फिराउन दे साथियें शा इस हालत च बचाया हा जे ओह तुसेंगी सख्त अजाब दिंदे हे। थुआड़े पुतरें गी मारी दिंदे हे। ते थुआड़ी त्रीमतें गी जिंदा रखदे हे ते इस च थुआड़े रब्ब पासेआ (थुआड़े आस्तै) बड्ढा भारी इम्तेहान हा ॥ 7 ॥ (रूकू 1/13)

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै थुआड़े रब्ब नै (नबियें द्वारा) ऐलान कीता हा जे (ऐ लोको) अगर तुस शुकरगुजार बने तां में तुसेंगी होर बी ज्यादा देंग ते जे तुसें नाशुकरी कीती तां (याद रखो) मेरा अजाब यकीनत बड़ा सख्त (होंदा) ऐ ॥ 8 ॥

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا بِلِسَانٍ
قَوْمِهِ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ فَيُضِلَّ اللَّهُ مَنْ
يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا أَنْ أَخْرِجْ
قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ
وَذَكِّرْهُمْ بِآيَاتِنَا إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ
اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ أَخْرَجَكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ
يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ وَيَدْعُونَ
أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي
ذَلِكَ بَلَاءٌ مِنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ۝

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ
لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ
إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ۝

ते मूसा ने (अपनी कौम गी एह बी) आखेआ हा (जे) जेकर तुस ते जेहके (दूए लोक) धरती पर बसदे न सब (सारे दे सारे) इन्कार करी देओ तां (उस च खुदा दा कोई नुक्सान नेई होई सकदा, की जे) अल्लाह यकीनन बे-न्याऊ (ते) अत्त गै तरीफे आहला ऐ ॥ 9 ॥

जेहके लोक तुंदे शा पैहलें हे यानी नूह दी कौम ते आद ते समूद जां जेहके लोक उंदे बा'द होए, क्या उंदे बारै दिल कंबाई देने आहली खबर, तुंदे तक नेई पुञ्जी (ओह ऐसे मटाए गे जे) अल्लाह दे सिवा (हून) उनेंगी कोई (बी) नेई जानदा। (जिसलै) उंदे कश उंदे रसूल (साढ़े) रोशन नशान लेइयै आए-तां उनें उंदी गल्ल नीं मन्नी ते आखेआ (जे) जिस (तालीम) कनै तुगी भेजेआ गेआ ऐ उस दा (ते) अस इन्कार करी चुके दे आं ते जिस गल्ला बख्खी तूं असेंगी बुलाऽ करना एं उसदे मतल्लक अस इक-बे-चैन करी देने आहले शक्क च (पेदे) आं ॥ 10 ॥

उंदे पैगंबरें (उनेंगी) आखेआ (जे) क्या तुसेंगी अल्लाह दे बारै कोई शक्क ऐ जिसनै ए धरती ते गास पैदा कीते दे न। ओह तुसेंगी इस आस्तै बुला करदा ऐ तां जे ओह थुआड़े गुनाहें चा किश¹ गुनाह बख्खी देऐ ते इक निश्चत समे तक तुसेंगी ढिल्ल देऐ। उनें गलाया (जे) तूं (ते) साढ़े आहला लेखा गै इन्सान

وَقَالَ مُوسَىٰ إِنَّ تَكْفُرًا وَأَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا فَأِنَّ اللَّهَ لَعَنِي حَمِيدٌ ①

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُؤُا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمٌ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودٌ وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ أَلا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ جَاءَهُمْ رَسُولُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا أَيْدِيَهُمْ فِي أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِمَّا تَدْعُونَنَا إِلَيْهِ مُرِيبٌ ①

قَالَتْ رُسُلُهُمْ أَفِي اللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخَّرَكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَيٍّ قَالُوا لَإِن أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ

1. किश दा एह मतलब नेई जे अल्लाह सिर्फ किश गुनाहें गी बख्खादा ऐ। बाकियें गी नेई बख्खादा। बल्के मतलब एह ऐ जे किश गुनाह जो इन्सानें कनै तल्लक रक्खने आहले होंदे न, जिना चिर लोक उनें गुनाहें दी माफी दूए लोकें शा नेई मंगी लैंदे, उना चिर ओह माफ नेई होंदे। हां जिसलै कसूर करने आहले माफी मंगी लैन ते शर्मिंदा होई जान, तां अल्लाह आपूं अपने बंदे दे दिलें च प्रेरणा दिंदा ऐ जे ओह अपने उप्पर जुलम करने आहले लोकें गी बख्खीयै अल्लाह दे हीर इनामें दे हक्कदार बनाऽ, ते ए इना सस्ता सौंदा ऐ जे ओह उसी जरूर कबूल करी लैंदे न।

एँ। तुस चाँहदे ओ जे जिस चीजा दी पूजा साढ़े पुरखे करदे आए न, असेंगी उस शा हटाई देगा। इस लेई (जेकर इस मामले च तू सच्चा ऐं तां) साढ़े कश कोई रोशन नशान लेई आ ॥ 11 ॥

उंदे पैगंबरें उनेंगी आखेआ (जे एह सच्च ऐ जे) अस थुआडै जनेह (गै) मनुक्ख आं पर (कनै गै एह बी सच्च ऐ जे) अल्लाह अपने बंदें चा जिस पर चाँहदा ऐ, (खास) स्थान करदा ऐ-ते एह गल्ल साढ़े अखल्यार च नेई ऐ जे अल्लाह दे हुकम दे बिना थुआडै कश कोई नशान ल्यौचै ते मोमिनें गी अल्लाह पर गै भरोसा रक्खना चाहिदा ॥ 12 ॥

ते असेंगी (होए दा) केह ऐ जे अस अल्लाह पर भरोसा नीं करचै, हालांके उसने साढ़े (साढ़ी परिस्थियें मताबक मनासब) रस्ते असेंगी दस्से न ते जेहका थूं तूसें असेंगी दित्ते दा ऐ उस पर अस यकीनन सबर करदे रौहगे। ते भरोसा करने आहलें गी ते अल्लाह पर गै भरोसा करना चाहिदा ॥ 13 ॥ (रुकू 2/14)

ते जिनें लोके इन्कार कीता! उनें अपने (अपने जमान्ने दे) पैगंबरें गी आखेआ जे अस तुसेंगी जरूर अपने देश चा कड्ढी देगे जां तुस (मजबूर होइयै) साढ़े म'जब च बापस आई जागे (तां इनें तकलीफें शा बची सकगे) जिस पर उंदे रब्ब नै उंदे पर वह्मी नाज़ल कीती (जे) अस इनें जालमें गी यकीनन हलाक करी देगे ॥ 14 ॥

ते उंदी (हलाकत/सर्वनाश) दे बा'द उस देश च जरूर तुसेंगी बसाई देगे। एह (बा'यदा) उसदे हक्क च ऐ जो मेरे मकाम (पदवी) शा

مُنُنَا تُرِيدُونَ أَنْ تَصُدُّونَا عَمَّا كَانَ
يَعْبُدُ آبَاؤُنَا فَأَتُونَا بِسُلْطَنٍ مُّبِينٍ ①

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِنْ نَحْنُ إِلَّا بَشَرٌ
مِثْلُكُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ
مِنْ عِبَادِهِ وَمَا كَانَ لَنَا أَنْ نَأْتِيَكُمْ
بِسُلْطَنٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَىٰ اللَّهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ②

وَمَا لَنَا أَلَّا تَتَوَكَّلَ عَلَىٰ اللَّهِ وَقَدْ هَدَانَا
سُبُلَنَا وَنَصَرِينَا عَلَىٰ مَا أَذَيْتُمُونَا
وَعَلَىٰ اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ③

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِرُسُلِهِمْ
لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُوذُنَّ فِي
مِلَّتِنَا فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَهَا لِكِنَّ
الظَّالِمِينَ ④

وَلَنَسُكِّنَنَّكُمْ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ذَٰلِكَ
لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعِيدِ ⑤

डरै ते एहदे अलावा मेरी डराने आहली
भविक्खवाणियें शा डरै ॥ 15 ॥

ते उनें (अपनी) फतह आस्तै दुआऽ कीती ते
(नतीजा ए होआ जे) हर इक उद्दंडी, घमंडी
ते सचाई दा दुश्मन ना-काम रेहा ॥ 16 ॥

उस (दुनियावी अजाब) दे बा'द (उस आस्तै)
ज्हन्म (दा अजाब बी निश्चत) ऐ ते (उत्थें)
उसी खरपदा पानी पलेआया जाग ॥ 17 ॥

ओह उसी थोढ़ा -थोढ़ा करियै पीग ते उसी
असानी कनै नींगली निं सकग ते हर जगह
(ते हर पासेआ) उस पर मौत औग पर ओह
मरग नेई ते उस दे अलावा बी(उस आस्तै)
इक सख्त अजाब (निश्चत) ऐ ॥ 18 ॥

उनें लोकें दी मसाल जिनें अपने रब्ब (दे
हुकमें) दा इन्कार कीता ऐ (एह ऐ जे) उंदे
कर्म उस राख आंगर न जिसी इक न्हेरी-
झक्खड आहलै दिन हवा तेजी कनै (डुआई)
लेई गेई होऐ जे किश उनें (अपने भविक्ख
आस्तै) कमाया ऐ। ओहदे चा कोई हिस्सा
(बी) उंदे हत्थ नेई औग। इयै परले दरजे दी
तबाही ऐ ॥ 19 ॥

(हे श्रोता!) क्या, तोह दिक्खेआ नेई, जे
अल्लाह नै गासैं ते धरती गी हक्क ते हिक्मत
कनै पैदा कीते दा ऐ। जेकर ओह चाह तां
तुसेंगी हलाक करी देऐ ते (थुआड़ी जगह
पर) कोई होर नमीं मखूलक लेई आवै ॥ 20 ॥

ते एह गल्ल अल्लाह आस्तै कोई मुश्कल नेई
ऐ ॥ 21 ॥

ते ओह सब अल्लाह दे सामनै आई खड्डोडन।
उसलै (उंदे चा) कमजोर (समझे जाने आहले)

وَأَسْتَقْسِمُوا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ①

مِنْ وَّرَائِهِمْ جَهَنَّمُ وَيَسْتَفِي مِنْ
مَاءٍ صَدِيدٍ ②

يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ
الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ
وَمِنْ وَّرَائِهِمْ عَذَابٌ غَلِيظٌ ③

مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ
كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ
عَاصِفٍ ④ لَا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا
عَلَى شَيْءٍ ⑤ ذَلِكَ هُوَ الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ⑥

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
بِالْحَقِّ ⑦ إِنَّ يَسَاءَ يُدْهِبِكُمْ وَيَأْتِ
بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ⑧

وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ⑨

وَبَرَزُوا لِلَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعِفَاءُ

तकब्बर (घमंड) करने आहलें गी आखडन (जे) अस ते तुंदे मगर (पिच्छें) चलने आहले हे। इस लेई क्या तुस अल्लाह दे अजाब चा (इस बेलै) किश साढ़े शा दूर करी सकदे ओ। ओह (परते च) आखडन अमर अल्लाह असें गी हदायत दिंदा तां अस (बी) तुसेंगी हदायत दिंदे (पर हून केह होई सकदा ऐ) साढ़ा बे-सबरी दस्सना जां साढ़ा सबर करना(इस बेलै) साढ़े आस्तै बरोबर ऐ (ते) साढ़े आस्तै बचाऽ दी कोई सूरत नेई ऐ ॥ 22 ॥ (रुकू 3/15)

ते जिसलै सारी गल्लें दा फैसला करी दिता जाग तां शतान (लोकेंगी) आखग (जे) अल्लाह नै यकीनन तुंदे कनै अटल बा'यदा कीते दा हा ते में (बी) तुंदे कनै (इक) बा'यदा कीता हा, मगर में ओह (बा'यदा) थुआड़े कनै पूरा नेई कीता ते मेरा तुंदे पर कोई अधिकार नेई हा, हां में तुसेंगी अपने पासे बुलाया ते तुसें मेरा आखा मनी लैता इस लेई(हून) मेरी निंदा निं करो बल्के अपने आप दी निंदा करो। (इस बेलै) नां अऊं थुआड़ी फरेआद सुनी सकनां ते नां तुस मेरी फरेआद सुनी सकदे ओ। तुसें जेहका मिगी अल्लाह दा शरीक बनाई रख्खे दा हा। अऊं थुआड़ी गल्ला गी पैहलें गै नकारी चुके दा आं (उस पर खुदा फरमांदा ऐ जे इस किसमा दा शिर्क करने आहलें) जालमें आस्तै यकीनन दर्दनाक अजाब (निश्चत) ऐ ॥ 23 ॥

ते जेहके लोक ईमान लेई आए दे होडन ते उनें (नेक ते) मनासब कम्म कीते दे होडन उनेंगी उंदे रब्ब दे हुक्म कनै, ऐसे बागें च, जिंदे (छौरें) हेठ नेहरां बगदियां होडन, दाखल

لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا وَالَّذِينَ كَانُوا لَكُمْ تَبَعًا
فَهَلْ أَنْتُمْ مُّغْنُونَ عَنْكُمْ عَذَابَ اللَّهِ
مِنْ شَيْءٍ قَالُوا لَوْ هَدَّ سَنَا اللَّهُ
لَهَدَيْنَاكُمْ سِوَا عِزِّ عَلَيْنَا أَجْرُ عَنَّا أَمْ
صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيصٍ ۝

وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَمَّا قُضِيَ الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ
وَعَدَكُمْ وَعَدَ الْحَقُّ وَوَعَدْتُكُمْ
فَأَخْلَفْتُكُمْ وَمَا كَانَ لِي عَلَيْكُمْ مِنْ
سُلْطٰنٍ إِلَّا أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ
لِي فَلَا تَلُمُونِي وَلُومُوا أَنْفُسَكُمْ
مَا أَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَا أَنْتُمْ
بِمُصْرِخِي إِنْ كَفَرْتُمْ بِمَا
أَشْرَكْتُمُونِ مِنْ قَبْلُ إِنَّ الظَّالِمِينَ
لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

وَأَدْخِلِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ

कीता जाग ते ओह उंदे च (जन्तें च) बसदे जाडन ते उल्लें (इक-दूए आसतै एह) दुआऽ होग (जे तुंदे पर) सलामती (होए) ॥ 24 ॥

(हे श्रोता!) क्या तोह नेई दिक्खेआ, (जे) अल्लाह ने किस चाल्ली इक पवित्तर कलाम दे बारै च हकीकत गी ब्यान कीते दा ऐ ओह इक पवित्तर बूहटे आंहगर होंदा ऐ जिस दी जढ़ (मजबूती कनै) कायम होंदी ऐ ते उसदी (हर इक) शाख गासै दी बुलंदी तक (पुज्जी दी होंदी) ऐ ॥ 25 ॥

ओह (बूटा) हर बेलै अपने रब्ब दे हुकम कनै अपना (ताजा)¹ फल दिंदा ऐ ते अल्लाह लोकें आसतै (उंदी जरूरता दी) सारी गल्लां ब्यान करदा ऐ तां जे ओह नसीहत हासल करन ॥ 26 ॥

ते बुरी गल्ला दा हाल बुरे बूहटे आंगर ऐ जिसगी धरती थमां पुट्टियै² सुट्टी दिता गेदा होए (ते) जिसी (कुतै बी) चैन (हासल) नेई होए ॥ 27 ॥

जेहके लोक ईमान ल्याए दे न उनेंगी अल्लाह उस कायम रौहने आहली (ते पाक) गल्ला राहें (उस) संसारक जीवन च (बी) मजबूती प्रदान करदा ऐ ते आखरत (दी जिंदगी) च बी (प्रदान करग) ते जालमें गी अल्लाह हलाक करदा ऐ ते अल्लाह जो चांहदा ऐ करदा ऐ ॥ 28 ॥ (रुकू 4/16)

خَلِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ تَحِيَّهُمْ فِيهَا
سَلَامٌ ۝

الْمَ تَرَكَيْفَ صَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً
طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ
وَقَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ۝

تَوَاتٍ أَكْلَهَا كُلِّ حِينٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا
وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُونَ ۝

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ
اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا
مِنْ قَرَارٍ ۝

يُنَبِّئُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللَّهُ
الظَّالِمِينَ ۗ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ۝

1. इस आयत च एह दस्सेआ गेदा ऐ जे इस्लाम धर्म दे पवित्तर बूहटे दा मतलब ऐ जे इस च सदा खुदा दे मनने आहले लोक पैदा होदे रौहडन। मगर दूर धर्म च नेई। एह इस गल्ला दा सबूत होग, जे उनें धर्म दा ईश्वर कनै संपर्क समाप्त होई चुके दा ऐ।
2. यानी उसी पौश्टक गजा मिलना बंद होई गई होऐ ते ओह सुक्का करदा होऐ।

(हे श्रोता!) क्या तोह उनें लोकेँ (दी हालत) गी (धरोइयै) नेई दिक्खेआ जिनेँ नाशुकरी कनै अल्लाह दी नैमत गी बदली दिता (ते आपू बी हलाक होए) ते अपनी कौम गी (बी) हलाकत दे घरेँ च (लेई) आंदा ॥ 29 ॥

यानी ज्हनम च, ओह उस च दाखल होडन ते ओह जगह (रौहने दे लिहाज कनै) बड़ी बुरी ऐ ॥ 30 ॥

ते उनें अल्लाह दे बराबर शरीक बनाई लेदे न तां जे (लोकेँगी) उस दे रस्ते शा भटकाई देन, तूँ (उनेँगी) आख (जे अच्छा, किश दिन) आरजी फायदा लेई लैओ। फी तुसेँगी यकीनन (दोज़ख दी) अगगी पासै जाना पौग ॥ 31 ॥

(हे रसूल!) मेरे उनें बंदेँ कनै, जेहके ईमान आहनी चुके दे न, आख-जे ओह उस दिनै दे औने शा पैहलें, जिस च नां कोई बपार होग ते नां गै कोई गैहरी दोस्ती कम्म औग! नमाज़ गी शैल चाल्ली पढ़ा करन ते जो कुछ असेँ उनें गी दिते दा ऐ ओहदे च चोरी छप्यै (बी) ते जाहरा-बाहरा (बी साढ़े रस्ते च) खर्च करा करन ॥ 32 ॥

अल्लाह ओह (हस्ती) ऐ जिसनै धरती ते गास पैदा कीते दे न ते बदलेँ राहें बरखा बरहाइयै ओहदे जरीयै थुआड़े आस्तै फलेँ (दी किसमें) राहें रिशक पैदा कीते दा ऐ। ते उसनै किशितयें गी (चलाने आहली हवा गी) बिना उजरत थुआड़ी खिदमत च लाए दा ऐ तां जे ओह उसदे हुकम कनै समुंदरै च चलन। ते (इस्सै चाल्ली) दरेआएँ गी (बी) उसनै बिना उजरत थुआड़ी खिदमत च लाई रक्खे दा ऐ ॥ 33 ॥

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا
وَأَحَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ۖ

جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا ۗ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ۖ

وَجَعَلُوا لِلَّهِ أَنْدَادًا لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِهِ ۗ
قُلْ تَمَتُّعُوا فَإِنَّ مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ ۖ

قُلْ لِعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَيُنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً مِمَّنْ
قَبْلُ أَنْ يَأْتِيَهُمْ يَوْمٌ لَا بَيْعَ فِيهِ وَلَا خُلُوفٌ ۖ

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ
الشَّجَرَاتِ رِزْقًا لَكُمْ ۗ وَسَخَّرَ لَكُمْ
الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۗ
وَسَخَّرَ لَكُمْ الْأَنْهَارَ ۖ

ते सूरज ते चंद्रमा गी (बी), ओह (दमें) लगातार (अपना फर्ज नभांदे होई) कम्म करा करदे न ते उसने रात ते दिन गी (बी) बिना उजरत थुआड़ी खिदमत च लाई रक्खे दा ऐ ॥ 34 ॥

ते जे किश (बी) तुसें उस शा मंगेआ उस ने तुसेंगी दिता ऐ ते जेकर तुस अल्लाह दे स्थान गिनन लगी तां उंदी गिनती नेई करी सकगे। इन्सान यकीनन बड़ा गै जालम (ते) बड़ा गै ना-शुकरगजार ऐ ॥ 35 ॥ (रुकू 5/17)

ते (हे श्रोता! उस वक्त गी याद कर) जिसलै इब्राहीम ने (दुआऽ करदे होई) आखेआ हा (जे) ऐ मेरे रब्ब! इस शैहर (यानी मक्का) गी अमन आहली जगह बनाऽ ते मिगी ते मेरे पुत्रें गी इस गल्ला शा दूर रक्ख जे अस झूठे उपास्यें दी उपासना करचै ॥ 36 ॥

ऐ मेरे रब्ब! उनें यकीनन मते-सारे लोकें गी गुमराह करी रक्खे दा ऐ। इस लेई जिसनै मेरी पैरवी कीती ओह (ते) मेरे नै (तल्लक रखदा) ऐ ते जिसनै मेरी नाफरमानी कीती (उसदे बारै बी मेरी इयै अरज ऐ जे उसी बखशी देना की जे) तूं यकीनन बड़ा गै बखशने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐं ॥ 37 ॥

ऐ साढ़े रब्ब! में अपनी उलाद चा किश गी तेरे आदरजोग (मोजज) घैरे दे लागै इक ऐसी बादी च, जित्थें कोई खेती नेई होंदी, आनियै बसाया ऐ। ऐ मेरे रब्ब! (में ऐसा इस आस्तै कीता ऐ) तां जे ओह शैल चाल्ली नै नमाज पढ़ी सकन। इस लेई तूं लोकें दे दिल उंदे पासै झुकाई दे ते उनेंगी बक्ख-बक्ख फलें दा रिशक दिंदा रौह तां जे ओह (म्हेशां तेरा) शुकर करदे रौहन ॥ 38 ॥

وَسَخَّرَ لَكُمْ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
دَائِبِينَ ۗ وَسَخَّرَ لَكُمْ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۗ

وَأَتَّكُم مِّن كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ ۗ
وَإِن تَعَدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تَحْصُوهَا ۗ
إِنَّ الْإِنْسَانَ لَضَلُومٌ كَفَّارٌ ۗ

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا الْبَلَدَ
أَمِنًا ۖ وَاجْنُبْنِي وَبَنِيَّ أَنْ نَعْبُدَ
الْأَصْنَامَ ۗ

رَبِّ إِنَّهُمْ أَصْلَحْنَاهُ مِن النَّاسِ ۗ
فَمَنْ تَبِعَنِي فَإِنَّهُ مِنِّي ۗ وَمَنْ عَصَانِي
فَإِنَّكَ عَفُورٌ رَّحِيمٌ ۗ

رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِي بُوَادِعَ
ذِي زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا
لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِنَ
النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ
مِنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ۗ

ऐ साढ़े रब्ब! जो कुछ अस छपालने आं ते जो कुछ अस जाहर करने आं तूं यकीनन सब किश गै जानना ऐं ते अल्लाह शा कोई चीज नां जमीन च छप्पी दी रेही सकदी ऐ ते नां आसमान च ॥ 39 ॥

हर (चाल्ली दी) तारीफ दा अल्लाह गै हक्कदार ऐ। जिसनै (मेरे) बढ़ापे दे बावजूद मिगी (दो पुत्र) इस्माईल ते इस्हाक अता कीते न। मेरा रब्ब (बड़ा गै) दुआई सुनने आहला ऐ ॥ 40 ॥

ऐ मेरे रब्ब! मिगी ते मेरी उलाद (चा हर इक) गी शैल चाल्ली नै नमाज अदा करने आहला बनाऽ। (ऐ) साढ़े रब्ब! (साढ़े पर किरपा कर ते) मेरी दुआऽ कबूल कर ॥ 41 ॥

(ऐ) साढ़े रब्ब! जिस दिन स्हाब होन लगै उस दिन मिगी ते मेरे मापें (माता-पिता) गी ते सारे मोमिनैं गी माफ करी देना ॥ 42 ॥
(रुकू 6/18)

ते (ऐ श्रोता) एह जालम (मक्का आहले) जो कुछ करा करदे न उस शा तूं अल्लाह गी कदें बी बे-खबर नेई समझ। ओह उनेंगी सिर्फ उस दिन तक ढिल्ल देआ करदा ऐ। जिस दिन (उंदे) आने (रहानगी कनै) टडोए दे रेही जाडन ॥ 43 ॥

(ओ) अपने सिरें गी उप्पर चुक्कयै घबराए दे दौड़ा करदे होडन (ते) उंदी नजरां (परतोइयै) बापस नेई औडन ते उंदे दिल (आसैं-मेदें शा) खाल्ली होडन ॥ 44 ॥

ते तूं उनें लोके गी उस दिन शा डराऽ जदूं उंदे पर ओह अजाब औग (जिस दा बा'यदा

رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا نُعْلِنُ ۗ
وَمَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ
وَلَا فِي السَّمَاءِ ﴿٣٩﴾

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ
إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ ۗ إِنَّ رَبِّي
لَسَمِيعٌ الدُّعَاءِ ﴿٤٠﴾

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ
ذُرِّيَّتِي ۗ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ﴿٤١﴾

رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ
يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ﴿٤٢﴾

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ
الظَّالِمُونَ ۗ إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ
تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ﴿٤٣﴾

مُهْطِعِينَ مُقْنِعِينَ رِعًا وَسِهِمًا لَا يَرْتَدُّ
إِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۗ وَأَفِئْتُهُمْ هَوَاجِرًا ﴿٤٤﴾

وَأَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَا تِيهِمُ الْعَذَابُ

कीता गेदा ऐ) जिनें लोकें जुलम (दा तरीका अखत्यार) कीते दा होग (उस बेलै) आखडन जे ऐ साढ़े रब्ब! साढ़े मामले गी कुसै (होर) करीबी मनेआद तक पिच्छें पाई दे जे अस तेरे पासेआ आए दे सादे गी कबूल करगे ते (तेरे) रसूलें दी पैरवी करगे (जेहदे पर उनेंगी जवाब थ्होग जे क्या अजें हुज्जत¹ दे पूरा होने च कोई कसर बाकी ऐ?) ते क्या तुसें पैहलें कसम (पर कसम) नथी खादी जे तुंदा कदें पतन नेई होग ॥ 45 ॥

हालांके तुसें उनें लोकें दे घरें गी अपना घर बनाए दा ऐ जिनें (तुंदा शा पैहलें) अपनी जानें पर जुलम कीता हा ते तुंदा पर एह गल्ल चंगी चाल्ली रोशन होई चुकी दी ही जे उंदा कनै असें कैसा ब्यहार कीता हा ते अस सारी गल्लां तुंदा आसतै खोह्लियै ब्यान करी चुके दे आं ॥ 46 ॥

ते एह(लोक) अपना (हर इक) उपाऽ करी चुके दे न ते उंदा(हर) उपाऽ अल्लाह कश (महफूज²)ऐ ते चाहे उंदा योजना ऐसी होऐ जे उसदे नतीजे च फ्हाड़ (बी अपनी जगह थमां) टली जान (एह तेरा कोई नुक्सान नेई करी सकदे) ॥ 47 ॥

इस लेई (हे श्रोता!) तूं अल्लाह गी अपने रसूलें कनै अपने बा'यदे दे खलाफ (मामला) करने आहला कदें बी नेई समझ। अल्लाह यकीनन गालिब (ते बुरे कम्में दी) स'जा देने आहला ऐ ॥ 48 ॥

فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا آخِرْنَا إِلَىٰ
أَجَلٍ قَرِيبٍ ۗ لَنُجِيبَ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعَ
الرَّسُولَ ۗ أَوَلَمْ تَكُونُوا أَقْسَمْتُمْ مِّنْ
قَبْلِ مَا لَكُم مِّنْ زَوَالٍ ۖ

وَسَكَنتُمْ فِي مَسْكِنٍ الَّذِينَ ظَلَمُوا
أَنفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ
وَوَصَرَبْنَا لَكُمْ الْآمَثَالَ ۖ

وَقَدْ مَكَرُوا وَمَكَرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ
مَكْرُهُمْ ۗ وَإِن كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُولَ
مِنْهُ الْجِبَالُ ۖ

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخْلِفًا وَعْدِهِ ۗ رُسُلُهُ
إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۖ

1. हुज्जत दा अर्थ ऐ प्रमाण, युक्ति, तर्क, दलील। भाव एह ऐ जे क्या प्रमाण दे पूरा होने च किश कमी रेही गेदी ऐ?
2. अर्थात् ओह भुलाई नेई गई बल्के अल्लाह गी खूब याद ऐ।

(ते ओह दिन जरूर औने आहला ऐ) जिस दिन धरती ते गास गी बदलियै दूए धरती ते गास कायम कीते जाडन। ते एह(लोक) अल्लाह दे सामनै पेश होडन जो कल्ला (ते हर इक चीजा पर) कामल गलबा रक्खने आहला ऐ ॥ 49 ॥

ते उस दिन तू उनें मुजरमें गी जंजीरें च जकड़े दे दिखगा ॥ 50 ॥

उंदे कुर्ते (जियां) तारकोल/लुक्के दे बने दे (काले स्याह) होडन ते (दोजख दी) अगग उंदे मूहें गी खट्टा करदी होग ॥ 51 ॥

(एह इस आस्तै होग) जे अल्लाह हर शख्स गी जो कुछ उसनै (अपने आस्तै) कीता होग, उसदा बदला देऐ। अल्लाह यकीनन तौले स्हाब लैने आहला ऐ ॥ 52 ॥

एह (जिकर) लोकें (गी नसीहत हासल करने) लेई काफी ऐ ते इस गल्ला लेई (बी) जे उनें गी (औने आहले अजाब थमां पूरी चाल्ली) चौकस-चकन्ने कीता जा ते इस आस्तै (बी) जे उनेंगी पता लगगी जा जे अल्लाह गै सिर्फ इक स्हेई उपास्य ऐ ते इस आस्तै (बी) जे अकली आहले (लोक) नसीहत हासल करन ॥ 53 ॥ (रुकू 7/19)

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ
وَالسَّمَوَاتُ وَبَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ
الْقَهَّارِ ۝

وَتَرَى الْمَجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُّقْرَّنِينَ
فِي الْأَصْفَادِ ۝

سَرَابِلُهُمْ مِنْ قَطْرَانٍ وَتَعْشَى
وُجُوهُهُمْ النَّارُ ۝

لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ ۝
إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

هَذَا بَلَاغٌ لِلنَّاسِ وَلِيُنذَرُوا بِهِ
وَلِيَعْلَمُوا أَنَّمَا هُوَ إِلَهٌ وَاحِدٌ
وَلِيَذُكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ۝

سُورَةُ الْحَجَرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ مِائَةٌ آيَةٌ وَسِتَّةٌ رُكُوعَاتٌ

सूर: अल्-हिज्र

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इसदी इक सौ आयतां ते छे रकू न।

(में) अल्लाह दा नांउ लेइये जो बे-हद कर्म
करने आहला ते बार-बार रैहम करने आहला
ऐ (पढ़ना) ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

में अल्लाह दिक्खने आहला¹ आं। एह
(इक) कामल कताब ते (अपने अर्थें गी)
खोहलियै दस्सने आहले कुरआन दियां
आयतां न ॥ 2 ॥

الرَّحْمٰنُ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَقُرْآنٍ
مُّبِينٍ ①

जिनें लोकें (इस कुरआन दा) इन्कार कीता ऐ
ओह कर्दे-कर्दे एह इच्छा करदे न जे काश ओह
(बी इस दी) फरमांबरदारी अखत्यार करने
आहले होंदे ॥ 3 ॥

رَبِّمَا يُوذُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كَانُوا
مُسْلِمِينَ ②

तूं उनेंगी खाने-पीने ते वक्ती साधनें शा नफा
लैने च ब्यस्त रौहन दे ते (उनेंगी छोड़ी दे ते
उंदी झूठी) आसां-मेदां उनेंगी बे-परवाह
करदियां रौहन की जे ओह तौले (गै कहीकत)
जानी जाडन ॥ 4 ॥

ذَرَهُمْ يَأْكُلُوا وَيَتَمَتَّعُوا وَيُلْهِمُهُمُ
الْأَمَلَ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ③

ते असें कर्दे कुसै बस्ती गी बगैर इसदे जे
इस दे मतल्लक (पैहलें थमां) इक निश्चत
फैसला होई चुके दा होऐ, तबाह नेई कीता
॥ 5 ॥

وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا
كِتَابٌ مُّعَلِّمٌ ④

1. विवरण आस्तै दिक्खो सूर: बकर: नोट आयत -2

कोई कौम बी अपनी (हलाकत दी) मनेआद थमां नरसी (करी बची) नेई सकदी ते नां गै पिच्छें रेही (करी उस शा बची) सकदी ऐ ॥ 6 ॥

ते उनें (बड़े जोरें) आखेआ (जे) ओह शख्स जेहदे पर एह जिकर तुआरेआ गेआ ऐ, तूं यकीनन दीवाना ऐं ॥ 7 ॥

जेकर तूं सच्चा ऐं तां फरिशतें गी साढ़े कश की नेई आहनदा? ॥ 8 ॥

(क्या उनेंगी पता नेई जे) अस (जदूं बी) फरिशतें गी (उतारने आं तां) सचाई दे मताबक उतारने आं ते (जिसलै उनेंगी काफरें आस्तै उतारने आं तां) उस बैले उनेंगी (यानी काफरें गी जरा बी) मोहलत नेई दिती जंदी ॥ 9 ॥

इस जिकर(यानी कुरआन) गी असें गै उतारे दा ऐ अस यकीनन इस दी पहाजत करगे ॥ 10 ॥

ते असें अगले (जमाने दे) लोकें दी जमातें च (बी) तेरे शा पैहलें रसूल भेजे हे ॥ 11 ॥

ते जेहका बी रसूल उंदे कश औंदा हा, ओह उसदा मजाक डुआंदे हे ॥ 12 ॥

इससै चाल्ली अस इस (मजाक दी आदत) गी मुजरमें दे दिलें च मजबूती कनै गड्डी दिने आं ॥ 13 ॥

एह (लोक) इस (कुरआन) पर ईमान नेई आहनदे हालांके पैहले आहलें (दे मतल्लक अल्लाह) दी रीति बीती चुकी दी ऐ ॥ 14 ॥

ते जेकर (मसाल आस्तै) अस उंदे पर (शनाखत दी) कोई आसमानी राह खोहली (बी) दिंदे ते उस थमां (फायदा लेइयै) हकीकत गी समझन बी लगदे ॥ 15 ॥

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ①

وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ②

لَوْ مَا تَأْتِيَنَا بِآيَاتِكَ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ③

مَا نُزِّلَ الْمَلِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِلَّا مُمْطَرِينَ ④

إِنَّا نَحْنُ نُزِّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ⑤

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي شِعْرِ الْأَوَّلِينَ ⑥

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ⑦

كَذَلِكَ نَسْأَلُكَ فِي قُلُوبِ الْمَجْرِمِينَ ⑧

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ⑨

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ⑩

तां (बी) ओह (इयै) आखदे(जे) सिर्फ साढ़ी नजरें पर परदा सुट्टेआ गेदा ऐ (बरना हकीकत किश नेई) बल्के साढ़े (लोकें) पर (कोई) जादू करी दिता गेदा ऐ ॥ 16 ॥ रकू (1/1)

ते यकीनन असें आसमान च (तारें दियां) केई मंजलां बनाई दियां न ते असें उसी दिक्खने आहलें आस्तै खूबसूरत बनाया ऐ ॥ 17 ॥

ते (इसदे अलावा) असें उसी हर इक उददंडी/धमूली (ते) दुत्कारे गेदे (लोकें दी पौहच) थमां महफूज (सुरक्षत) करी दित्ते दा ऐ ॥ 18 ॥

मगर जो शख्स चोरी-छप्पे(अल्लाह दी वह्नी चा) कोई गल्ल सुनी लै (ते उसी त्रोड़ी-मरोड़ियै (लोकें च फलाऽ) तां उसदे पिच्छें इक रोशन शोला' लाई दिता जंदा ऐ ॥ 19 ॥

ते असें जमीन गी फ़ैलाए दा ऐ ते इस च असें मजबूती नै खडुत्त फ़ाड़ कायम कीते दे न ते (इसदे अलावा) असें इस च हर किसमै दी मनासब चीजें गी (पैदा कीता ते) बधाया ऐ ॥ 20 ॥

ते इस च असें धुआड़े आस्तै ते (हर) उस (प्राणी) आस्तै जिसी तुस रिजक नेई दिंदे जिंदगी दी जरूरत दे समान पैदा कीते दे न ॥ 21 ॥

ते कोई चीज ऐसी नेई जिस दे (असीम) खजाने साढ़े कश नेई होन। पर अस इसी इक निश्चत अंदाजे मताबक गै उतारने आं ॥ 22 ॥

لَقَالُوا إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُورُونَ ﴿١٦﴾

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَرَازِيئَهَا لِلنَّظِيرِينَ ﴿١٧﴾

وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ﴿١٨﴾

إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاتَّبَعَهُ شَهَابٌ مُّمِينٌ ﴿١٩﴾

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْرُؤٍ ﴿٢٠﴾

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَنْ نَسْتَمُ لَهُ يَرْزُقِينَ ﴿٢١﴾

وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا نُنزِّلُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ﴿٢٢﴾

1. यानी जो पबित्र कुरआन नाजल होई चुके दा ऐ तां बरोधी लोक एहदे चा किश हिस्सा लेइयै दूए लोकें च इस चाल्ली फलांदे न जे उस कर्ने बरोध दी अग भड़की उट्टे, पर अल्लाह उंदी शरारत गी दिखदा ऐ। जिसलै कोई आदमी ऐसा करदा ऐ तां अल्लाह उसदी शरारत गी जाहर करने आस्तै अलौकिक रूप च ऐसा प्रकाश करी दिंदा ऐ जेहदे कर्ने छल-कपट दा सारा भेत खु तल्ली जंदा ऐ ते शरारती काफ़र दा पतन होई जंदा ऐ।

ते असें (भाप गी) उप्पर चुक्कने आहली हवामां (बी) छोड़ी दियां न ते (इंदे राहें) असें बदलें चा पानी उतारेआ ऐ। फी ओह तुसेंगी पलाया ऐ ते तुस आपूं उसी महफूज नेई रक्खी सकदे हे(पर इस चाल्ली असें उसी महफूज करी दिता ऐ) ॥ 23 ॥

ते यकीनन अस गै जींदा करने ते मारने आं ते अस गै (सारें दे)बारस आं ॥ 24 ॥

ते अस तुंदे चा अगें निकली जाने आहलें गी(बी) जानने आं ते (इस्से चाल्ली) अस(तुंदे शा) पिच्छें रेही जाने आहलें गी (बी) जानने आं ॥ 25 ॥

ते यकीनन तेरा रब्ब गै इनेंगी(कठेरग) ज'मा करग ओह हिक्मत आहला ते (बड़ा) जानने आहला ऐ ॥ 26 ॥ (रुकू 2/2)

ते असें इन्सान गी अवाज देने आहली मिट्टी कनै, यानी स्याह गारे कनै, जिस दा रूप-सरूप तबदील होई गेदा हा, पैदा कीते दा ऐ ॥ 27 ॥

ते (इस शा) पैहलें जिनें गी असें सख्त? गर्म हवा (लूह) दी अग्गी कनै पैदा कीता हा ॥ 28 ॥

ते (हे श्रोता उस बेले गी याद कर) जदूं तेरे रब्ब नै फरिशतें गी आखेआ हा (जे) अ'ऊं अवाज देने आहली मिट्टी यानी स्याह गारे कनै जिस दा रूप-सरूप तबदील होई चुकेदा होऐ, इक बशर (मनुक्ख) पैदा करने आहला आं ॥ 29 ॥

وَأَرْسَلْنَا الرِّيحَ لَوَاقِحَ فَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنُكُمُوهُ وَمَا أَنْتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ۝

وَأَنَّا نَبْخُلُكَ نَجْيًا وَنُمِيتُكَ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ۝

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنْكُمُ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ۝

وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ۝

وَالْبَجَانَ خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَارِ السَّمُومِ ۝

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ۝

1. यानी बदलें राहें मिट्टा पानी महफूज होंदा ऐ। जेकर एह साधन (तरीका)नेई होंदा तां नां दरेआ ते नैहरां होंदिया नां खुहें च पानी महफूज होंदा ते लोक तरेहाए दे मरी जंदे ते खेतर सुक्की जंदे।
2. जिनें अर्थात् मते लोकें च गुस्सा पैदा कीता गेआ ऐ। दिक्खने च आया ऐ जे मते-हारे लोकें च आदतन रोह उंबली पौंदा ऐ ते ओह अपने खलाफ गल्ल नेई सुनी सकदे।

इस आस्तै जिसलै में उसी पूरा करीं देआं ते उस (दे दिलै) च अपना कलाम पाई देआं तां तुस सारे उसदे कनै' सजदा करदे होई (अल्लाह दे हजूर च) डिगि जायो ॥ 30 ॥

जेहदे पर सारे दे सारे फरिश्तें(उसदे कनै खुदा गी) सजदा कीता ॥ 31 ॥

सिवाए इब्लीस दे(जे) उसने(खुदा गी सच्चा) सजदा करने आहलें कनै (होइयै) सजदा करने थमां इन्कार कीता ॥ 32 ॥

(इस पर खुदा ने) फरमाया (जे) ऐ इब्लीस! तुगी केह होआ जे तू (अल्लाह गी) सजदा करने आहलें कनै नेई होंदा ॥ 33 ॥

उसने आखेआ, अऊं ऐसा नेई, जे इक ऐसे बशर दे तौर तरीके पर चलियै फरमांबरदारी अखत्यार करां, जिसी तोह अवाज देने आहली मिट्टी कनै, यानी ऐसे स्याह गारे कनै, जिसदा रूप-सरूप तबदील होई चुके दा हा, पैदा कीते दा ऐ ॥ 34 ॥

फरमाया (जेकर तेरा एह ख्याल ऐ) तां तू इस (थाहरे) थमां निकली जा, की जे तू यकीनन दुतकारे दा ऐं ॥ 35 ॥

ते (याद रक्ख जे) जज्जा ते स'जा (यानी क्यामत) दे दिनै तक तेरे पर (मेरी) लानत रौहग ॥ 36 ॥

उसने आखेआ(जे) हे मेरे रब्ब (जेकर तू तौले मिगी स'जा नेई दिंदा तां) तू मिगी उंदे (दबारा) दुआले जाने दे दिनै तक मोहलत² दे ॥ 37 ॥

فَادَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُوحِي
فَقَعُوا لَهُ السَّجِدِينَ ۝

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ۝

إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ أَبَىٰ أَنْ يَكُونَ
مَعَ السَّجِدِينَ ۝

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ
مَعَ السَّجِدِينَ ۝

قَالَ لَمْ أَكُنْ لِأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ
مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ۝

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ۝

وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ۝

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ
يُبْعَثُونَ ۝

1. यानी जिस चाल्ली हजरत आदम सिर्फ खुदा दी अबादत करग, तुस बी सिर्फ खुदा दी अबादत करेओ।

2. ब्यौरे आस्तै दिक्खो सूर: आराफ़ टिप्पणी आयत -15

फरमाया : तू मोहलत पाने आहलें बिच्चा
होगा ॥ 38 ॥

उस्सै निश्चत समे तक(जिस दा जिकर उप्पर
होई चुके दा ऐ) ॥ 39 ॥

उसने आखेआ (जे) हे मेरे रब्ब, इस आस्तै
जे तोह् मिंगी गुमराह् करार दिता ऐ, अऊं
जरूर उंदे आस्तै दुनियां च (गुमराही गी)
खुबसूरत करियै दसगा ते उनें सारें गी गुमराह्
करी देगा ॥ 40 ॥

मगर जो तेरे शरखालू भगत न (ते जेहके मेरे फरेख
च नेई आई सकदे ओह बची जाडन) ॥ 41 ॥

(फी) फरमाया (जे) मेरे पासै औने दा इय्यै
सिद्धा रस्ता ऐ ॥ 42 ॥

जेहके मेरे बंदे न उंदे पर तेरा कदें बी प्रभाव
नेई होग। हां ऐसे लोक जेहकेतेरे पिच्छें चलन
यानी आपूं गुमराह् होन, (उंदी गल्ल बक्ख
ऐ) ॥ 43 ॥

ते यकीनन जहन्म उनें सारें दे(आस्तै) बा'यदे
दी जगह ऐ ॥ 44 ॥

उसदे सत्त दरोआजे न(ते उसदे) हर दरोआजे
आस्तै उंदे(इन्कार करने आहलें) चा इक
निश्चत हिस्सा होग ॥ 45 ॥ (रुकू 3/3)

संयमी (लोक) यकीनन बागें ते चशमें (आहले
थाहरे) च दाखल होडन ॥ 46 ॥

(उनेंगी आखेआ जाग जे) तुस सलामती कनै
बे-खौफ होइयै (ते बिना खतरें दे) इंदे च
दाखल होई जाओ ॥ 47 ॥

ते उंदे सीनें च जेहका कीना (बगैरा) बी
होग, उसी अस कड्डी देगे। ओह भाई-भास

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿٣٨﴾

إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿٣٩﴾

قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ
فِي الْأَرْضِ وَلَا أَغْوِيَهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٠﴾

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤١﴾

قَالَ هَذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤٢﴾

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَنٌ
إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ﴿٤٣﴾

وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٤﴾

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ
جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ﴿٤٥﴾

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٦﴾

أَدْخُلُوهَا بِسَلَامٍ أَوْ يَنِينَ ﴿٤٧﴾

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غِلٍّ

बनियै (जन्नत च रौहडन ते) सिंहासनें पर
इक-दूए दे सामनै(बैठे दे) होडन ॥ 48 ॥

नां उनेंगी उंदे च कोई हुट्टन होग ते नां उनेंगी
उंदे चा कदें कड्डेआ जाग ॥ 49 ॥

(हे पैगंबर!) मेरे बंदें गी आगाह करी दे जे
अऊं बड़ा गै बख्शनहार (ते) बार-बार रैहम
करने आहला आं ॥ 50 ॥

ते एह जे मेरा अजाब गै (रहेई मैहनें च)
दर्दनाक अजाब (होंदा) ऐ ॥ 51 ॥

ते उनेंगी इब्राहीम दे मम्हानें बारै (बी) आगाह
कर ॥ 52 ॥

जिसलै ओह उस दे लागै आप ते आखेआ
(जे अस तुसेंगी) सलाम (आखने आं) तां
उसनै गलाया (जे) अस ते तेरे औने दी बजह
करी डरा करने आं ॥ 53 ॥

उनें आखेआ (जे) तूं डर नेई, अस तुगी इक
बड़े बड्डे ज्ञान (पाने) आहले जागतै दा शुभ
समाचार दिन्ने आं ॥ 54 ॥

उसनै आखेआ (जे) क्या तुसें मेरे बुड्डा होई
जाने दे बावजूद मिगी एह शुभ समाचार दिता
ऐ? इस लेई (दस्सो जे) किस बिना पर तुस
मिगी (एह) शुभ-समाचार दिंदे ओ ॥ 55 ॥

उनें आखेआ (जे) असें तुगी सचाई दी बिना
पर शुभ समाचार दिता ऐ। इस आस्तै तूं ना-
मेद नेई हो ॥ 56 ॥

उसने आखेआ (जे अऊं किस गल्ला ना-मेद
होई सकना) फी गुमराहें दे सिवा अपने रब्ब
दी रैहमत शा कु'न ना-मेद होंदा ऐ ॥ 57 ॥

إِحْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٤٨﴾

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَسَبٌ وَلَا مَا هُمْ مِنْهَا
بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٩﴾

نَبِيِّ عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْعَفْوَурُ الرَّحِيمُ ﴿٥٠﴾

وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ﴿٥١﴾

وَيَبَيِّنُهُم عَن صَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ﴿٥٢﴾

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ إِنَّا
مِنْكُمْ وَجِلُونَ ﴿٥٣﴾

قَالُوا لَا تَوَجَّلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِعِلْمِ
عَلِيمٍ ﴿٥٤﴾

قَالَ أَبَشِّرْهُمُونِي عَلَىٰ أَنْ مَسَّنِيَ الْكِبَرُ
فِيمَا تُبَشِّرُونَ ﴿٥٥﴾

قَالُوا أَبَشِّرْكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُن مِّنَ
الْفٰطِنِينَ ﴿٥٦﴾

قَالَ وَمَنْ يَقْضِ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّي
إِلَّا الصَّائُونَ ﴿٥٧﴾

(फी) आखेआ (जे अच्छा) तां हे (खुदा दे) फरिश्तो! (ओह) थुआड़ा टकोहदा म्हत्तवपूर्ण कम्म केह ऐ? (जेहदे आस्तै तुसेंगी भेजेआ गेआ ऐ) ॥ 58 ॥

उनें आखेआ (जे) असेंगी इक मुजरम कौम पासै (उंदी हलाकत आस्तै भेजेआ गेदा ऐ) ॥ 59 ॥

सवाए लूत दे अनुयायिये दे (जे) उनें सारे गी अस बचाई लैगे ॥ 60 ॥

हां उसदी बीबी दे बारै साढ़ा अंदाजा ऐ जे ओह पिच्छे रौहने (ते हलाक होने) आहलें बिच्चा होग ॥ 61 ॥ (रुकू 4/4)

फी जिसलै साढ़े भेजे दे लोक लूत ते ओदे अनुयाइयें कश आए ॥ 62 ॥

तां उसने (उनेंगी) आखेआ (जे) तुस (इस अलाके च) अजनबी (सेही होंदे) ओ ॥ 63 ॥

उनें आखेआ (असल) गल्ल एह ऐ जे अस थुआड़े कश उस (अजाब) दी खबर लेइयै आए आं जिसदे बारै एह (लोक) शक्क करदे रेह न ॥ 64 ॥

ते अस थुआड़ै कश पक्की खबर ल्याए दे आं ते अस सच्चे आं ॥ 65 ॥

इस लेई तुस रातीं दे खीरले पैहरै च (कुसै बेलै) अपने घरे आहलें गी लेइयै (इत्थुआं) चली जाओ। ते (आपुं) उंदे पिच्छे-पिच्छे र'वो ते तुंदे चा कोई पिच्छे मुड़ियै नई दिक्खै ते जित्थे जाने दा हुकम तुसेंगी दिता जंदा ऐ (सब उत्थें) उठी जाओ ॥ 66 ॥

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٨﴾

قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٥٩﴾

إِلَّا آلَ لُوطٍ إِنَّا لَمَنْجُوهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٦٠﴾

إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَرْنَا لَهَا لَيْمَنِ الْغَابِرِينَ ﴿٦١﴾

فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ﴿٦٢﴾

قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّكَرُونَ ﴿٦٣﴾

قَالُوا بَلْ جِئْنَاكَ بِمَا كَانُوا فِيهِ يَمْتَرُونَ ﴿٦٤﴾

وَآتَيْكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٦٥﴾

فَأَسِرْ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ اللَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ وَامْضُوا حَيْثُ تُؤْمَرُونَ ﴿٦٦﴾

1. इस आदेश कर्नै हजरत लूत दे परिवारै पर उपकार कीता ऐ जे जेकर पिच्छे मुड़ियै दिखइन तां ममकन ऐ जे पिच्छे रेही जाने आहली ब्याहता धीयें ते जमातरे कारण कुसै दा मन पिरधली जा।

ते एह गल्ल असें उसी पक्के तौरा पर दस्सी दित्ती ते इनें लोकें दी जड़ (सवेर होंदे गै) कट्टी दित्ती जाग ॥ 67 ॥

ते उस शैहरा दे लोक खुशियां' मनांदे होई उस (यानी लूत) कश आए (इस मन्शा कनै जे हून उसी पकड़ने दा मौका मिली गेआ ऐ) ॥ 68 ॥

(जेहदे पर) उसने (उंदे कनै) आखेआ (जे) एह लोक मेरे मम्हान न। तुस (इनेंगी डराइयै) मेरा अनादर नेई करो ॥ 69 ॥

ते अल्लाह दा खौफ अखत्यार करो, ते मिगी जलील निं करो ॥ 70 ॥

उनें आखेआ-क्या असें तुगी हर ऐरे-गैरे गी अपनै कश टरहाने थमां रोकेआ नथा ॥ 71 ॥

उसने आखेआ (जे) जेकर तुसें (मैरे खलाफ) किश करना (गै) होऐ तां एह मेरी धीयां (तुंदे च मजूद गै) न (जेहकियां जमानत² आस्तै काफी न) ॥ 72 ॥

(हे साढ़े नबी!) तेरी जिंदगी दी कसम (जे) एह (तेरे बरोधी बी) यकीनन (इंदे आहला लेखा) अपनी बदमस्ती च बैहका करदे न ॥ 73 ॥

इस पर उस (बा'यदे मताबक) अजाब ने उनेंगी (यानी लूत दी कौम गी) दिन चढ़दे (गै) पकड़ी लैता ॥ 74 ॥

وَقَصَيْنَا إِلَيْهِ ذَلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هَوْلَاءِ
مَقْطُوعٌ مُّصْحِحِينَ ﴿٦٧﴾

وَجَاءَ أَهْلَ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٦٨﴾

قَالَ إِنَّ هَؤُلَاءِ صِيفِي فَلَا تَقْضَوْنِي ﴿٦٩﴾

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْرُونَ ﴿٧٠﴾

قَالُوا أَوَلَمْ نُنْهَكَ عَنِ الْعَالَمِينَ ﴿٧١﴾

قَالَ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي إِنْ كُنْتُمْ فَعِلِينَ ﴿٧٢﴾

لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَتِهِمْ
يَعْمَهُونَ ﴿٧٣﴾

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ﴿٧٤﴾

1. तौरात ते कुरआन मजीद मताबक पैहलें लिखेआ जाई चुके दा ऐ जे ओह लोक हजरत लूत गी रोकदे हे जे ओह अनजान मम्हानें गी घर नेई आहना करन, पर हजरत लूत परीहनचारी दे धर्म दा पालन करने आस्तै कुदरती तौरा पर मजबूर हे। इस आस्तै जिसलै ओह रोकने पर बी परीहनें गी अपनै घर ल्याए तां उंदी जाति दे लोक नच्च-त्रप्य करदे उंदे कश आए जे हून लूत साढ़े काबू च आई गेआ ऐ ते हून इसी स'जा देने दा मौका असेंगी मिली जाग।
2. ब्यौरे आस्तै दिक्खो सूर: हूद टिप्पणी आयत 79

जिस पर असें उस बस्ती दी उप्परली सतह
गी उसदी ख'लकी सतह करी दिता ते उंदे पर
गीहटें कन्नै बने दे पत्थरें दी बरखा
बरहाई ॥ 75 ॥

इस (जिकर) च समझदारी कशा कम्म लैने
आहलें आस्तै यकीनन केई नशान न ॥ 76 ॥

ते ओह (कोई गुमनाम जगह नेई बल्के) इक
बड्डे स्थाई रस्ते पर (बाकेआ) 1 ऐ ॥ 77 ॥

इस (घटना) च मोमिनें (दे फयदे) आस्तै यकीनन
इक नशान (मजूद) ऐ ॥ 78 ॥

ते ऐका² आहले (बी) यकीनन जालम हे
॥ 79 ॥

इस आस्तै असें उनेंगी बी (इससै चाल्ली सख्त)
स'जा दिती ही ते एह दमै (जगहां) इक (साफ
ते) बाँदे रस्ते पर (बाकेआ) न ॥ 80 ॥ (रुकू
5/5)

हिज्र³ आहलें (बी) यकीनन (साढ़े) पैगंबरें
गी झुठेरेआ हा ॥ 81 ॥

ते उनेंगी (बी) असें अपने (हर चाल्ली दे)
नशान दिते हे जेहदा नतीजा (उलटा) एह
होआ जे ओह उंदे शा (विमुख) ओहलै होई
गे ॥ 82 ॥

ते ओह पहाड़ें दे किश हिस्सें गी कट्टियै
अमन कन्नै (जिंदगी बसर करदे होई) मकान
बनांदे हे ॥ 83 ॥

فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ
حِجَابًا مِّنْ سَجِيلٍ ﴿٧٥﴾

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِينَ ﴿٧٦﴾

وَأَنَّهَا لِبَسِينٍ لِّمُقِيمٍ ﴿٧٧﴾

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٨﴾

وَإِنْ كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ ظَالِمِينَ ﴿٧٩﴾

فَأَنقَمْنَا مِنْهُمُ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ
مُّبِينٍ ﴿٨٠﴾

وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسِلِينَ ﴿٨١﴾

وَآتَيْنَهُمُ آيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٨٢﴾

وَكَانُوا يُحِبُّونَ مِنَ الْجِبَالِ بَيْوتًا
أَمِينًا ﴿٨٣﴾

1. हिजाज़ थमां शाम देश गी जाने आहले रस्ते पर स्थित ऐ।
2. हजरत शुऐब दी जाति दा दुआ नांउ ऐका आहले बी ऐ। ऐका घने जंगलै गी बी आखदे न ते ऐसे जंगलै गी बी जेहदे च बेरें ते पीलू दे घने बूहटे होन। ऐसा लगदा ऐ जे मद्यन दे लागै कोई घना जंगल हा जेहदे च दौनें किसमें दे एह बूहटे बड्डे मती गिनतरी च हे। इस लेई मद्यन बासियें गी 'ऐका आहले' आखेआ जंदा हा।
3. हिज्र दा मतलब ओह घेग, किला जां नगर होंदा ऐ जिस दे चौनें पासै पत्थरें दा परकोटा होऐ। 'हिज्र आहले' दा मतलब समूद अर्थात् हजरत सालेह दी जाति दा नगर ऐ इसी 'हिज्र' इस लेई आखदे न जे उस नगरें दा परकोटा बड्डा मजबूत हा।

ते (बा'यदे दे मताबक) सवेर होंदे (गै) उस (निश्चत) अज़ाब नै उनेंगी पकड़ी लैता ॥ 84 ॥

ते जेहका (माल) ओह ज'मा करदे रौंहदे हे उसने उनेंगी (उस बेलै) किश बी फायदा नेई दिता ॥ 85 ॥

ते असें गासें ते धरती गी ते जे किश इनें दौनें दे बश्कार ऐ हक (ते हिकमत) कन्ने पैदा कीता ऐ ते ओह (बा'यदे आहली) घड़ी यकीनन औने आहली ऐ इस आसतै तूं (उंदी ज्यादतियें गी) दरगुजर कर ॥ 86 ॥

यकीनन तेरा रब्ब मता किश पैदा करने आहला (ते) खूब जानने आहला ऐ ॥ 87 ॥

ते असें यकीनन तुगी दुरहाई' जाने आहली सत्त (आयतां) ते बड़ी बड़्डी प्रतिशठा आहला कुर'आन दिता ऐ ॥ 88 ॥

ते जेहका असें उंदे चा केई गरोहें गी (आरजी न'फा दा) समान दिता ऐ उस पासै अक्खीं' फाड़ी-फाड़ी नेई दिक्ख। ते (उंदी तबाही पर) दुखी नेई हो ते मोमिनें पर अपना (दयालू) शफकत दा (हत्थ) बाजू झुकाई रक्ख ॥ 89 ॥

तूं आखी दे जे अ'ऊं खु'ल्लम खु'ल्ला हुशयार करने आहला आं ॥ 90 ॥

इस आसतै जे (खुदा आखदा ऐ जे) असें इंदे (लोकें) आसतै (बी) अज़ाब मुकरर करी रक्खे दा ऐ जिनें (हज़रत मुहम्मद स.अ.व. दे खलाफ

فَأَخَذْتَهُمُ الصَّيْحَةَ مُصْبِحِينَ ﴿٨٤﴾

فَمَا أَعْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٥﴾

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ ۗ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَأْتِيَةٌ ۖ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيلَ ﴿٨٦﴾

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلْقُ الْعَلِيمُ ﴿٨٧﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِ وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ﴿٨٨﴾

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ ۗ وَخَفِصْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٩﴾

وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ﴿٩٠﴾

كَمَا أَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِينَ ﴿٩١﴾

1. सूर: 'फ़ातिहः' जिसदी सत्त आयतां नमाजें च बार-बार पहियां जंदियां न। मूल शब्द 'मसानी' गी ध्यान रखदे होई इस आयत दे केई दूर अर्थ बी होई सकदे न। (क) असें तुगी ऐसी सत्त आयतां प्रदान कीती दियां न जिंदे च पूरे तौर पर अल्लाह दी स्तुति दा गुणगान होए दा ऐ। (ख) तुगी ऐसी सत्त आयतां दिती दियां न जिंदे च अल्लाह ते बंदे दे आपसी सरबंधें पर लो पाई गोदी ऐ।
2. हे नबी! इन्कार करने आहलें दे धन गी र्हानगी कन्ने नेई दिक्ख, की जे उंदा सर्वनाश निश्चत होई चुके दा ऐ। इस लेई नां ते उनेंगी एह धन कोई फायदा देग ते नां तेरा उंदे आसतै दुखी होना उनेंगी फायदा देग। इस आसतै एह बचार अपने दिलें चा कड़्ढी दे।

मनसूखें च अपनी) ड्यूटियां' तकसीम करी
लेदियां हियां ॥ 91 ॥

(यानी) ओह (लोक) जिनें कुरआन गी झूठी
गल्लें दा मजमूआ (संकलन) कसर दिता हा ॥ 92 ॥

सो तेरे रब्ब दी कसम! अस इनें सारें शा
जवाब तलबी करगे ॥ 93 ॥

उनें कर्ममें दे बारै जेहके ओह करदे रौहदे हे
॥ 94 ॥

इस लेई जिस गल्ला (दे पुजाने) दा तुगी
हुकम दिता जंदा ऐ ओह खोहलियै (लोकें
गी) सनाई दे ते इनें मुश्रिकें (दी गल्ला) शा
मूंह फेरी लै ॥ 95 ॥

अस यकीनन तुगी इनें मशकरियां करने आहलें
(दी शरारत) शा महफूज रखगे ॥ 96 ॥

जेहके अल्लाह दे कनै दूए होर केई उपास्य
बनाऽ करदे न, ओह तौले गै (इस दा नतीजा)
समझी जाडन ॥ 97 ॥

ते अस यकीनन जानने आं जे जो कुछ ओह
आखदे न, ओहदे कनै तेरा दिल तंग पौंदा ऐ
॥ 98 ॥

इस आसतै तूं अपने रब्ब दी स्तुति करदे होई
(उसदी) पवित्रता दा गुणगान कर ते (उस
दे) कामिल फरमांबरदारें चा बन ॥ 99 ॥

ते अपने रब्ब दी अबादत करदा रौह, इत्थें
तक जे तेरे पर मौत (दी घड़ी) आई जा
॥ 100 ॥ (रुकू 6/6)

الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ۝

فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۝

عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

فَأَصْدَعُ بِمَا تُؤْمَرُ وَاعْرِضْ
عَنِ الْمُشْرِكِينَ ۝

إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ۝

الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ ۚ
فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝

وَلَقَدْ نَعَلْنَاكَ إِذْ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا
يَقُولُونَ ۝

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ ۝

وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ۝

०००

سُورَةُ التَّحْلِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ مِائَةٌ وَتِسْعٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَسِتَّةٌ وَعِشْرُونَ كُورًا

सूर: अल्-नहल

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत इस
दी इक सौ नत्ती आयतां ते सोलां रुकू न।

(में) अल्लाह दा नांउ लेइयै जो बेहद कर्म
करने आहला ते बार-बार रैहम करने आहला
ऐ (पढ़ना) ॥ 1 ॥

(ऐ इन्कार करने आहलेओ) अल्लाह दा हुकम
औने गै आहला ऐ इस आस्तै (हून) तुस
उसदे तौले औने दा मतालबा नेई करो। ओह
पाक (जात) ऐ ते जो (गल्लां) ओह (काफर)
शिक दे बारै आखदे न, ओह उंदे शा दूर
उप्पर ऐ ॥ 2 ॥

ओह फरिशतें गी अपने बंदें पर, जिनेंगी ओह
पसंद करदा ऐ अपनी मरजी कनै कलाम
देइयै उतारदा ऐ (ते रसूलें गी आखदा ऐ) जे
(लोकें गी) आगाह करी देओ जे गल्ल इय्यै
स्हेई ऐ जे मेरे सिवा कोई बी (सच्चा) उपास्य
नेई। इस आस्तै तुस (मसीबतें शा) अपने
बचाऽ दा साधन मिगी गै बनाओ ॥ 3 ॥

उसने गासैं ते धरती गी हक्क (ते हिकमत)
कनै पैदा कीते दा ऐ (ते) उंदे शिक दे
बिचारें शा ओह दूर उप्पर ऐ ॥ 4 ॥

उसने इन्सान गी इक (बूंद) बीरज थमां पैदा
कीते दा ऐ फी ओह (अपने आपै गी इन्ना

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

أَتَى أَمْرُ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ سُبْحَانَهُ
وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ②

يُنزِّلُ الْمَلَائِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِ عَلَى
مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ أَنْ أَنْذِرُوا أَنَّهُ
لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاتَّقُونِ ③

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ④
تَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ⑤

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا

बड्डा समझन लगदा ऐ जे साढ़े बारे च)
जाहरा-बाहरा झगड़ने आह्ला बनी जंदा
ऐ ॥ 5 ॥

एहदे अलावा चौखरें गी (अल्लाह नै पैदा
कीते दा ऐ ते उनेंगी) ऐसा बनाए दा ऐ जे
उंदे च थुआड़े आस्तै गर्मी दा समान ऐ ते
(होर बी) केई फायदे न ते तुस (उंदे गोशत
दा) किश हिस्सा खंदे ओ ॥ 6 ॥

ते (इस दे अलावा) जिसलै तुस उनेंगी चारियै
संजा (उंदे घरें/स्थानें आहले पासै) बापस
आनदे ओ तां उस च इक किसम दी जीनत
(शोभा) दा समान होंदा ऐ इससै चाल्ली उस
बेलै जिसलै तुस उनेंगी (बडलै) चरने आस्तै
(अजाद) छोड़दे ओ (तां उस च बी थुआड़े
आस्तै जीनत/शोभा ते बड़ाई दा समान होंदा
ऐ) ॥ 7 ॥

ते ओह थुआड़े भार चुक्कियै उस (दरेखड़े)
शैहरै तक बी लेई जंदे न। जित्थें तक तुस
अपनी जान्नै गी कश्ट झल्ले बगैर नेई लेई
जाई सकदे थुआड़ा रब्ब यकीनन (तुंदे पर)
अती ऐंत शफकत (किरपा) करने आह्ला
(ते) बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 8 ॥

ते उसनै घोड़ें, खच्चरें ते गधें गी (बी) थुआड़ी
सुआरी आस्तै ते (इस दे अलावा) जीनत (ते
शान) आस्तै (पैदा कीते दा ऐ) ते (आइंदा
बी) ओह (थुआड़े आस्तै सुआरी दा होर
समान') जिसी तुस (अजें) नेई जानदे, पैदा
करग ॥ 9 ॥

ते (तुसेंगी) दीन दी सिदधी राह (दस्सना)
अल्लाह दे गै जिम्मै ऐ ते (इस दी जरूरत इस

مَوْحَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ۝

وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا لَكُمْ فِيْهَا رِفْقٌ
وَمَنْفَعٌ وَمِنْهَا تَاْكُوْنٌ ۝

وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تَرِيْحُوْنَ
وَحِيْنَ تَسْرِحُوْنَ ۝

وَتَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلَىٰ بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا
بِلِغِيْهِۗ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ۗ اِنَّ رَبَّكُمْ
لَرَءُوفٌ رَّحِيْمٌ ۝

وَالْحَيْلِ وَالْبِغَالِ وَالْحَمِيْرِ لَتَرْكَبُوْهَا
وَزِيْنَةٌ ۗ وَيَخْلُقْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

وَعَلَىٰ اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَابِرٌ ۗ

1. इस आयत च खुल्ले तीरा पर बस्स, रेल, समुंदरी ते हवाई जहाज ते दूई विज्ञानक खोजें दी भविकखवाणी कीती गेदी ऐ।

आस्तै ऐ जे) उंदे (यानी दीन दे रस्तें) चा किश टेढे (होंदे) न पर जेकर ओ (अल्लाह) अपनी इच्छा लागू करदा तां तुसैं सारें गी हदायत (गै) दिंदा ॥ 10 ॥ (रुकू 1/7)

(अल्लाह) ओह गै ते है जिसनै बदलें चा पानी तुआरेआ ऐ। उसै चा थुआड़े पीने दा (पानी उपलब्ध होंदा) ऐ ते उसै कनै ओह रुक्ख-बूटे (बी त्यार) होंदे न जिंदा तुस (माल-डंगरें गी) चारा पांदे ओ ॥ 11 ॥

ओह इस दे राहें गै थुआड़े आस्तै खेती, जैतून ते खजूर दे बूटे ते अंगूर ते (दूए) हर किसमा दे फल पैदा करदा ऐ उनें लोकें आस्तै जो सोच-विचार शा कम्म लैंदे न, उस च यकीनन इक (टकोहदा) नशान (पाया जंदा) ऐ ॥ 12 ॥

ते उसने रात ते दिन गी ते सूरज ते चन्न गी थुआड़े आस्तै खिदमत पर लाई रक्खे दा ऐ ते (दूए) सारे (ग्रैह ते) तारे (बी) उसदे हुकम कनै (थुआड़ी) खिदमत पर लगे दे न, जेहके सूझ-समझ शा कम्म लैंदे न उंदे आस्तै यकीनन केई नशान (पाए जंदे) न ॥ 13 ॥

ते जेहकियां भांत-सभांती किसमें दियां चीजां उसनै थुआड़े आस्तै धरती पर पैदा कीती दियां न (ओह सब थुआड़े कम्म आवा करदियां न) उनें (चीजें दी पैदाइश) च (बी) उनें लोकें आस्तै जो नसीहत हासल करदे न, यकीनन इक नशान (पाया जंदा) ऐ ॥ 14 ॥

उस्सा नै समुंदर गी (बी थुआड़ी) खिदमत पर लाई रक्खे दा ऐ तां जे तुस ओहदे चा (मच्छी दा) ताजा गोशत खाओ ते ओहदे चा

وَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٠﴾

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لَكُمْ مِنْهُ شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ﴿١١﴾

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٢﴾

وَسَخَّرَ لَكُمْ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنَّجُومَ مَسْخَرَاتٍ بِأَمْرِهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٣﴾

وَمَا ذَرَأَ لَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَذَكَّرُونَ ﴿١٤﴾

وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَأْكُلُوا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُوا مِنْهُ حَبْلَةً تَلْبَسُونَهَا

गैहनें (दा समान बी) कड़हो जिनेंगी तुस (लोक) पाने दे कम्म लांदे ओ ते (हे श्रोता) तू उस च किशितयें गी पानी चीरदे (ते तेजी कन्नै चलदे) होई दिक्खनां ऐं (जो इस आसतै चलदियां न जे तुस समुंदरी सफर तै करो) ते तां जे तुस उसदे दूए होर फ़ज़ल (उपकार) (बी) तलाश करो ते तां जे तुस उसदा शुकर अदा करो ॥ 15 ॥

ते उसने धरती पर (द्रिढ़) फ़ाड़ बनाए दे न, इस गल्ला करी जे ओह (घूमदे होई) तुसेंगी चक्करें' च नेई पा ते (उसनै थुआड़े आसतै) केई दरेआ (बगाए दे न) ते केई (खुशकी दे) रस्ते (बी बनाए दे) न तां जे तुस (असान्नी कन्नै अपनी मंज़ल मक्सूद तक) रस्ता हासल करी सको ॥ 16 ॥

ते (इंदे अलावा उसनै) केई (होर) अलामतां बी (कायम कीती दियां न) ते सतारें राहें (बी) ओह (लोक) राह पांदे न ॥ 17 ॥

फी (दस्सो ते सेही जे) क्या जो पैदा करदा ऐ ओह उस जैसा होई सकदा ऐ जो (कुछ बी) पैदा नेई करदा, क्या तुस फी (बी) नेई समझदे ॥ 18 ॥

ते जेकर तुस अल्लाह दे स्हानें दी गिनती करन लागो तां (कदें बी) तुस उंदी गिनती नेई करी सकगे। अल्लाह यकीनन बड़ा (गै) बख़्शने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 19 ॥

وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَازِرَ فِيهِ وَاسْتَبَعُوا
مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٥﴾

وَأَلْقَى فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ
تَمِيدَ بِكُمْ وَأَنْهَارًا وَسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ
تَهْتَدُونَ ﴿١٦﴾

وَعَلَّمَتْهُ وَالْبِطْجِمْ هُمُ يَهْتَدُونَ ﴿١٧﴾

أَفَمَنْ يَخْلُقُ كَمَنْ لَا يَخْلُقُ
أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٨﴾

وَإِنْ تَعَدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصَوْهَا
إِنَّ اللَّهَ لَعَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٩﴾

1. इसदा दूआ अर्थ एह ऐ जे अल्लाह ने धरती च मजबूत पर्वत कायम कीते दे न तां ते ओह तुसेंगी उंदे राहें खाने-पीने दा समान देऐ, की जे समुंदर, पर्वत ते नदियें दा जीवका कन्नै गैहरा सरबंध ऐ।

ते जो कुछ तुस छपालदे ओ ते जो कुछ तुस जाहर करदे ओ, अल्लाह उस (सब) गी जानदा ऐ ॥ 20 ॥

ते अल्लाह दे सिवा जिनें (नकली उपास्यें) गी ओह पुकारदे न ओह किश (बी) पैदा नेई करी सकदे ते (इस शा बी बधिया एह ऐ जे) ओह आपूं पैदा कीते जंदे न ॥ 21 ॥

ओह (सब) मुर्दे न नां के जिंदा। ते ओह (एह बी) नेई जानदे जे कुसलै (दबारा) चुक्की लैते जाडन ॥ 22 ॥ (रुकू 2/8)

(इस आस्तै चंगी चाल्ली याद रक्खो जे) थुआड़ा उपास्य इक गै उपास्य ऐ ते जेहके लोक आखरत पर ईमान नेई आनदे उंदे दिल (हक थमां ना आशना) सचाई थमां न-वाकफ न ते ओह घमंड शा कम्म लै करदे न ॥ 23 ॥

एह यकीनी गल्ल ऐ जे जो कुछ ओह पर्दे च (रक्खियै) करदे न (उसी बी) ते जो कुछ ओह जाहरा-बाहरा (तौर) करदे न (उसी बी) अल्लाह जानदा ऐ। ओह घमंड करने आहलें गी हरगिज पसंद नेई करदा ॥ 24 ॥

ते जदूं उनेंगी आखेआ जंदा ऐ (जे) ओह (कलाम) जो थुआड़े रब्ब नै तुआरे दा ऐ क्या (किन्ना गै) शानदार ऐ ते ओह आखदे न जे एह (खुदा दा कलाम नेई बल्के) पैहले लोकें दियां कहानियां न ॥ 25 ॥

इस (धोखे दा) नतीजा एह निकलग जे ओह क्यामत आहलै रोज अपने बोझ (बी) सारे (दे सारे) चुकडन ते उनें मूर्खें दे बोझ बी, जिनेंगी ओह गुमराह करार करदे न। सुनो! जो बोझ ओह चुक्का करदे न ओह बड़ा गै बुरा ऐ ॥ 26 ॥ (रुकू 3/9)

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسْرُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۝

وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُوْنَ ۝

اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَاءٍ ۚ وَمَا يُعْمَرُوْنَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ۝

اَلِهٰكُمُ اللّٰهُ وَاٰحَدًا ۙ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّكْرَرَةٌ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ۝

لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسْرُوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۙ اِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ۝

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَاذَا اَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوْا اَسَاطِيْرُ الْاَوْلِيْنَ ۝

لِيَحْمِلُوْا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ وَمِنْ اَوْزَارِ الَّذِيْنَ يُضَلُّوْنَهُمْ يَغِيْرُ عِلْمٍ ۙ اَلَا سَاءَ مَا يَزُرُوْنَ ۝

जेहके लोक उंदे शा पैहलें हे उनें (बी अपने-अपने जमाने दे नबियें दे बरुद्ध) तदबीरां कीतियां हियां जिसदे नतीजे च अल्लाह उंदी (तदबीरें दी) अमारतें दी बुनियादें दे लागै (उनेंगी तबाह करने आस्तै) आया जिस दी बजह कनै छत्त उंदे उप्परा उंदे उप्परा आई पे ते (उसदा एह) अजाब उंदे पर इस रस्तै आया जिसगी ओह जानदे बी नेई हे ॥ 27 ॥

फी ओह क्यामत आहलै रोज उनेंगी अपमानत करग ते आखग (जे हून) कुत्थें न ओह मेरे शरीक जिंदी बजह कनै तुस (मेरे नबियें कनै) दुश्मनी (ते मखालफत) रखदे हे। (ते) जिनेंगी इलम दित्ते दा होग ओह (उस बेलै) आखडन जे अज्ज काफरें पर यकीनन रुसवाई ते मसीबत (औने आहली) ऐ ॥ 28 ॥

(उनें काफरें दी) रूहें गी फरिश्ते (ऐन) उस बेलै, जिस बेलै अपनी जानें पर जुलम करा करदे होंदे न, कव्दे न। इस पर ओह (एह आखियै) सुलह करने दा रस्ता अपनांदे न (जे) अस (ते) कोई (बी) बुराई (दा कम्म) नथे करदे होंदे (उसलै उनेंगी आखेआ जाग जे गल्ल) इयां नेई, बल्के (इसदे उल्ट ऐ, याद रक्खो) जो कुछ तुस करदे हे, उसी अल्लाह खूब जानदा ऐ ॥ 29 ॥

इस आस्तै (हून) तुस जहन्नम दे दरोआजें बिच्चा उस च म्हेशां आस्तै ठकाना बनांदे होई, दाखल होई जाओ, की जे तकब्बर (घमंड) करने आहलें दा ठकाना बड़ा गै बुरा (होंदा) ऐ ॥ 30 ॥

ते (जिसलै) उनें लोकें जिनें तकवा (संयम दा तरीका) अखत्वार कीते दा ऐ, आखेआ

قَدَّمَكَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَأَتَى اللَّهَ
بُيُوتَهُمْ مِنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ
مِنْ فَوْقِهِمْ وَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ
لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٧﴾

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُخْزِيهِمْ وَيَقُولُ أَيْنَ
شُرَكَاءِى الَّذِينَ كُنْتُمْ تُشَاقِقُونَ فِيهِمْ
قَالَ الَّذِينَ أَوْتُوا الْعِلْمَ إِنَّ الْخِزْيَ
الْيَوْمَ وَالسُّوءَ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٢٨﴾

الَّذِينَ تَتَوَفَّوهُمْ الْمَلَكَةُ ظَالِمِي
أَنْفُسِهِمْ قَالُوا لَسَلَّمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ
مِنْ سُوءٍ بَلَى إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ﴿٢٩﴾

فَادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا
فَلَيْسَ مَسْئُورَ الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٣٠﴾

وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا مَاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ

गेआ (जे) थुआड़े रब्ब नै किन्ना (शानदार कलाम) उतारे दा ऐ (तां) उनें गलाया (हां-हां किन्ना गै) बेहतर (कलाम ऐ) जिनें नेकोकारी (सदाचार) (दी राह) अखत्यार कीती उंदे आस्तै इस दुनियां (दी जिंदगी) च (बी) भलाई (मकददर) ऐ ते आखरत दा घर (ते उंदे आस्तै) होर बी बेहतर होग ते तकवा (संयम) अखत्यार करने आहलें दा घर यकीनन बड़ा (गै) अच्छा (होंदा) ऐ ॥ 31 ॥

(ओह घर) मुस्तकिल रिहायश दे बाग (न) जिंदे च ओह दाखल होडन उंदे (बागें) हेठ नैहरां बगदियां होडन। उंदे (बागें) च जो कुछ ओह चाहडन, उनेंगी मिलग (याद रक्खो) तकवा (संयम) अखत्यार करने आहलें गी अल्लाह इससै चाल्ली फल दिंदा रौहदा ऐ ॥ 32 ॥

(ओह संयमी) जिंदे प्राण फरिश्ते इस हालत च, जे ओह पाक नफस होन, (एह) आखदे होई कढदे न जे (हून) थुआड़े आस्तै सलामती (गै सलामती) ऐ (लैओ हून अपने नेक) कर्म दे बदले च तुस जन्त च दाखल होई जाओ ॥ 33 ॥

एह (काफर लोक) इस गल्ला दे सिवा कुस दा इंतजार करा करदे न जे फरिश्ते उंदे कश (समान्नी/गासी अज़ाब लेइयै) औन। जां तेरे रब्ब दा (फैसलाकुन) हुकम आई जा। इससै चाल्ली उनें लोकें कीता हा जो उंदे शा पैहले (जमानें दे) हे ते अल्लाह नै उंदे पर कोई जुलम नथा कीता बल्के ओह (आपू गै) अपनी जानें पर जुल्म करदे हे ॥ 34 ॥

قَالُوا خَيْرًا لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا
حَسَنَةً ۗ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ ۗ وَلَنِعْمَ
دَارُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣١﴾

جَنَّتْ عَدْنٌ يَدْخُلُونَهَا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ ۗ كَذَلِكَ
يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٢﴾

الَّذِينَ تَتَوَفَّوهُمُ الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ ۗ
يَقُولُونَ سَلِّمْ عَلَيْكُمْ ۗ إِذْ خَلُوا الْجَنَّةَ بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٣﴾

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ
أَوْ يَأْتِيَ أَمْرٌ رَبِّكَ ۗ كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ وَ مَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ
وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٣٤﴾

इस आस्तै उंदे कर्मै दी स'जा नै उनेंगी आई पकड़ेआ ते जिस (अज्ञाब दी खबरा) पर ओह मजाक लेंदे होंदे हे उससै नै उनेंगी घेरी लैता (ते तबाह् करी दिता) ॥ 35 ॥ (रुकू 4/10)

ते जिनें लोकें शिकं (दा तरीका अखत्यार) कीता। उनें (एह बी) आखे दा ऐ जे जेकर अल्लाह (इय्यै) चांहदा (जे उसदे सिवा कुसै दी अबादत नेई कीती जा) तां नां अस उस दे सिवा कुसै चीजा दी अबादत करदे नां साढ़े बब्ब-दादा ऐसा करदे ते नां (गै) अस उसदे (फरमाने/आदेश दे) बगैर कुसै चीजा गी (खुद ब खुद) हराम ठरहांदे जेहके (लोक) उंदे शा पैहलें (सचाई दे दुश्मन) हे उनें (बी) ऐसा गै कीता हा, भला (एह इन्ना बी नेई सोचदे जे) रसूलें पर (खुदा दा पैगाम) पुजाई देने दे सिवा होर के जिम्मेदारी ऐ ॥ 36 ॥

ते असैं यकीनन हर कौम च (कोई नां कोई) रसूल (एह हुकम देइयै) भेजेआ ऐ जे (हे लोको!) तुस अल्लाह दी अबादत करो ते हर हद शा बधने' आहले कनै कनाराकश र'वो, इस पर उंदे चा किश (ते) ऐसे (अच्छे साबत) होए जे उनेंगी अल्लाह नै हदायत दिती ते किश ऐसे जे उंदे पर हलाकत बाजब होई गेई। इस आस्तै तुस (सारे) मुल्खै च फिरो ते दिक्खो जे (नबियें गी) झुठेरने आहलें दा अनजाम कनेहा होआ हा ॥ 37 ॥

(हे रसूल) अगर तूं उंदी (लोकें दी) हदायत दी बड़ी खुआहश रक्खना ऐं तां (समझी लै

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ
مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿١٦﴾

وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا
عَبَدْنَا مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ نَحْنُ وَلَا
آبَاؤُنَا وَلَا حَرَمْنَا مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ ۗ
كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ
فَهَلْ عَلَى الرَّسْلِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿١٦﴾

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنْ
اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الصَّاطِعَاتِ ۗ فَمِنْهُمْ
مَنْ هَدَى اللَّهُ وَمِنْهُمْ مَنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ
الضَّلَاةُ ۗ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿١٦﴾

إِنْ تَحْرِصْ عَلَى هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ

1. मूल शब्द 'तागूत' दा अर्थ ऐ - उद्दंड आदमी जां सीमा दा उलंघन करने आहला ते ऐसा आदमी जो लोकें गी नेकी शा रोक्कें।

जे) जेहके लोक (दूरेँ गी जानियै) गुमराह करा करदे होन उनेंगी अल्लाह कदेँ बी हदायत नेई दिंदा ते नां उंदा कोई मददगार होंदा ऐ ॥ 38 ॥

لَا يَهْدِي مَنْ يُضِلُّ وَمَا لَهُمْ
مِنْ نَّصِيرِينَ ۝

ते उनेँ अल्लाह दी बड़ी पक्की सघंदां खादियां न (जे) जेहका मरी जा अल्लाह उसी (फी कदेँ) जींदा नेई करग, (मगर हकीकत) एह नेई। एह (ते इक ऐसा) बा'यदा ऐ जिसी (पूरा करने दा) ओह (अल्लाह) जिम्मेदार ऐ, पर अक्सर लोक (इस हकीकत गी) नेई जानदे ॥ 39 ॥

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ إِيْمَانِهِمْ لَا يَبْعَثُ
اللَّهُ مَنْ يَمُوتُ بَلَىٰ وَعَدَا عَلَيْهِ حَقًّا
وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

(एह जिंदगी दुबारा इस लेई होग जे) ओह उंदे पर इस (हकीकत) गी जाहर करै जिस च ओह (अज्ज) इखलाफ करा करदे न ते जिनेँ लोकेँ कुफर (दा तरीका) अखत्यार कीते दा ऐ उनेंगी पता लग्गी जा जे ओह झूठे हे ॥ 40 ॥

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يُخْتَلَفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ
الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كٰذِبِينَ ۝

सादा कम्म कुसै (ऐसी) चीजा दे बारै जिस (दे करने) दा अस अरादा करचै, सिर्फ एह होंदा ऐ जे अस उसदे बारै आखी दिन्ने आं जे 'होई जा' ते ओह होई जंदी ऐ ॥ 41 ॥ (रुकू 5/11)

إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَنْ نَقُولَ لَهُ
كُنْ فَيَكُونُ ۝

ते जिनेँ लोकेँ इसदे बा'द जे उंदे पर जुलम कीता गेआ, अल्लाह आस्तै हिजरत' अखत्यार कीती (असेंगी अपनी जात दी सघंद ऐ जे) अस उनेंगी जरूर दुनियां च अच्छी जगह देगे ते आखरत दा सिला (फल) ते होर बी बड्डा होग, काश एह (इन्कार करने आहले इस हकीकत गी) जानदे ॥ 42 ॥

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا
ظَلَمُوا لَنَبْوَيْنَهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً
وَلَا جَزَاءَ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا
يَعْلَمُونَ ۝

1. हिजरत-अपना देश छोड़ियै कुसै दूरै जगह जाइयै बास करना।

जेहके (जुल्में दा नशाना बनीयै बी) धीरजवान बने दे रोहन ते (जो म्हेशां गै) अपने रब्ब पर भरोसा करदे न ॥ 43 ॥

ते अस तेरे शा पैहलें (बी म्हेशां) मर्दे गी गै रसूल बनाइयै भेजदे होंदे हे ते अस उंदे आहले पासै वह्नी करदे हे ते (ऐ इन्कार करने आहलेओ!) जेकर तुस (इस हकीकत गी) नेई जानदे तां उस (अल्लाह दे भेजे दे) जिंकर (गी मन्नेने) आहलें शा (गै) पुच्छी लैओ (तां जे तुस हकीकत गी जानी सको) ॥ 44 ॥

(असैं उनेंगी) रोशन नशानात ते (इल्हामी) कताबां देइयै (भेजेआ हा) ते तेरे पर असैं एह जिंकर (कामल) नाजल कीता ऐ तां जे तू सारे लोकें गी ओह (अल्लाह दा फरमान) जो (तेरे द्वारा) उंदे पासै नाजल कीता गेआ ऐ, तफसील कन्नें दस्सें ते तां जे ओह (ओहदे पर) बिचार करन ॥ 45 ॥

फी केह जेहके लोक (तेरे खलाफ) बुरे मनसूबे (योजनां) बनांदे आए न ओह इस गल्ला शा अमन च न जे अल्लाह उनेंगी इस मुलखै च (गै) जलील (ते रुसवा) करी देऐ जां ओह अजाब (जिस दी खबर दिती जाई चुकी दी ऐ) उंदे पर (इस रस्तै) आई जा जिंसगी ओह जानदे गै नेई होन ॥ 46 ॥

जां ओह उनेंगी उंदे सफरें च तबाह करै इस लेई (ओह याद रक्खन जे) ओह (कदें बी अल्लाह गी उनें गल्लें दे पूरा करने शा) आजज (असमर्थ) नेई पाडन ॥ 47 ॥

जां ओह उनेंगी आस्ता-आस्ता घटांदे होई हलाक करी देऐ की जे थुआड़ा रब्ब यकीनन

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٤٣﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رَجُلًا نُوحِيَ إِلَيْهِمْ فَسَلِّتُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٤٤﴾

بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۗ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٥﴾

أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ يَخْسِفَ اللَّهُ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٤٦﴾

أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقْلِبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٤٧﴾

أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَىٰ تَخَوُّفٍ ۗ فَإِنَّ رَبَّكُمْ

(मोमिनें पर) बड़ा (गै) मेहर करने आह्ला
(ते) बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 48 ॥

ते केह् बावजूद इसदे जे ओह जलील होआ करदे न उनें (कदे) अल्लाह दे हजूर च (नर्मी कनै) झुकदे होई, जो कुछ बी अल्लाह नै (उंदे आस्ते) पैदा कीते दा ऐ, उसी गौर कनै नेई दिक्खेआ जे उसदे साये सज्जे पासेआ ते उत्तरी दिशें च इद्धर-उद्धर' होआ करदे न (बस्स इसै चाल्ली हजरत मुहम्मद स.अ.व. दा साया बधग ते ओह काफर (इन्कार करने आह्ले) जलील होइयै रौहडन ॥ 49 ॥

ते जो (कुछ बी) गासें च ऐ, ते (इसदे अलावा) धरती पर जो बी जानदार (मजूद) न ते (तमाम) फरिश्ते बी अल्लाह दे हजूर च गै झुकदे रौहदे न ते ओह बड़ाई नेई करदे ॥ 50 ॥

ओह अपने रब्ब कनै जो उंदे पर गालब ऐ, डरदे रौहदे न ते जिस गल्ला दा उनेंगी हुकम दिता जंदा ऐ (ऊऐ) करदे न ॥ 51 ॥ (रुकू 6/12)

ते अल्लाह नै (म्हेशां हर कौम गी इय्यै) फरमाया ऐ (जे) तुस दो उपास्य नेई बनाओ। ओह (यानी सच्चा उपास्य ते) इक गै ऐ बस्स तुस मेरे शा गै (डरो) फी (में) तुसेंगी आखना जे) मेरे शा गै डरो ॥ 52 ॥

ते जो कुछ (बी) गासें ते धरती च (पाया जंदा) ऐ सब उसै दी मलकीयत ऐ ते

كِرْءُوفٍ رَّحِيمٍ ①

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ
يَتَفَقَّهُوْا ظِلُّهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَالِ لِلسُّجْدِ
لِلَّهِ وَهُمْ ذَكَرُونَ ②

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ مِنْ دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةِ وَهُمْ
لَا يَسْتَكْبِرُونَ ③

يَخَافُونَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ
مَا يُؤْمَرُونَ ④

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَهَيْنِ اثْنَيْنِ ⑤
هُوَ إِلَهُ وَاحِدٌ ⑥ فَإِنِّي فَأَرْهَبُونَ ⑦

وَلَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ

1. इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे जिस चाल्ली कुदरती निजमें मताबक छाया घटदी-बधदी ऐ ते आखरकार लोप होई जंदा ऐ, इसै चाल्ली मक्का दे इन्कार करने आह्लें दा हाल होग अर्थात् उंदा आतंक, प्रभाव, प्रतिष्ठा कीर्ती ते यश बगैरा छाया आंगर घटदे-घटदे खतम होई जाडन ते उसदे उल्ट हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दी छाया क्रमशः बधदी रौहग ते उसदे कारण इन्कार करने आह्ले लोक अपमानत होई जाडन।

फरमांबरदारी सदा उसै दा हक्क ऐ तां केह
तुस अल्लाह दे सिवा होर दूए बजूदें गी अपने
बचाऽ दा साधन बनांदे ओ ॥ 53 ॥

ते जो बी नैमत तुसैं गी मिली दी ऐ ओह
अल्लाह दे पासेआ गै ऐ फी जिसलै तुसैंगी
(कोई तंगी ते) तकलीफ पुजदी ऐ तां (उस
बेलै बी) तुस उसै दे हजूर च फरेआद करदे
ओ ॥ 54 ॥

फी जिसलै ओह तुंदी उस तकलीफ गी दूर
करी दिंदा ऐ तां तुंदे चा किश लोक झट्ट
(दूएंगी) अपने रब्ब दा शरीक ठरहान लगी
पौंदे न ॥ 55 ॥

नतीजा एह होंदा ऐ जे जो कुछ असें उनेंगी
दित्ते दा ऐ ओह उस दा इन्कार करी दिंदे न।
अच्छा! तुस आरजी (ते वक्ती चीजें शा)
फायदा लेई लैओ ते (उस दा अनजाम बी)
तुस तौले गै जानी जागे ॥ 56 ॥

ते जो कुछ असें उनेंगी दित्ते दा ऐ ओहदे चा
इक हिस्सा ओह (अपने) इनें (झूठे उपास्यें)
आसतै मखसूस करी दिंदे न जिंदी (हकीकत)
बारै ओह (किश) इलम नेई रखदे। अल्लाह
दी सघंद, जो कुछ तुस (झूठे शा कम्म लेइयै)
अपने पासेआ बनांदे रेह ओ (इक दिन)
उसदी पुच्छ-गिच्छ तुंदे शा यकीनन कीती
जाग ॥ 57 ॥

ते ओह अल्लाह आहले पासै कुड़ियां मनसूब
करदे न (याद रक्खो) ओह (ऐसी गल्लें
शा) पाक ऐ ते (मजे दी गल्ल एह ऐ जे)
उनेंगी ओह कुछ हासल ऐ जो ओह चांहदे
न (यानी जागत) ॥ 58 ॥

وَاصْبًا ۙ أَفَعَيَّرَ اللَّهُ تَتَقُونَ ﴿٥٣﴾

وَمَا يَكُم مِّنْ نِّعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ تُمْرًا إِذَا
مَسَّكُمُ الضَّرُّ فَأَلَيْهِ تَجْرُونَ ﴿٥٤﴾

تُمْرًا إِذَا كَشَفَ الضَّرَّ عَنْكُمْ إِذَا فَرِيقٌ
مِّنْكُمْ يَرِيهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٥٥﴾

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ ۙ فَتَمَتَّعُوا
فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٥٦﴾

وَيَجْعَلُونَ لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا مِّمَّا
رَزَقْنَاهُمْ ۙ تَاللَّهِ لَتَسألَنَّ عَمَّا كُنتُمْ
تَفْتَرُونَ ﴿٥٧﴾

وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ الْبَنَاتِ سُبْحٰنَ ۚ وَلَهُمْ مَا
يَشْتَهُونَ ﴿٥٨﴾

ते (उस दे मकाबले च उंदा एह हाल ऐ जे) जिसलै उंदे चा कुसै गी कुड़ी (पैदा होने) दी खबर मिली जा तां उसदा मूंह काला स्याह होई जंदा ऐ ते ओह अतिऐंतत दुखी होई जंदा ऐ ॥ 59 ॥

(ते) जिस गल्लै दी उसी खबर दिती गेई ऐ उसदी बदनामी शा डरदे ओह लोकें शा छपदा (फिरदा) ऐ (ओह सोचदा ऐ जे) आया, ओह उसी (पेश औने आहली) जिल्लत दे बावजूद (जींदा) रौहन देऐ जां उसी (कुदै) मिट्टी च दब्बी देऐ। सुनो! जेहकी राऽ ओह कायम करदे न, बौहत बुरी ऐ ॥ 60 ॥

जेहके लोक आखरत पर ईमान नेई आहनदे, उंदी हालत बौहत बुरी ऐ। ते हर इक उत्तम सिफत (ते शान) अल्लाह दी गै ऐ ते ऊऐ ग़ालिब (ते) हिकमत आह्ला ऐ ॥ 61 ॥ (रुकू 7/13)

ते जेकर अल्लाह (दा एह निजम होंदा जे ओह) लोकें गी उंदे (शुरूआती) जुलमें पर (फटक्क) पकड़ी लैदा (ते तोबा करने आस्तै मोहलत नेई दिंदा) तां ओह इस (धरती) पर कुसै जानदार गी (जींदा) नेई छोड़दा मगर (उसदा निजम एह ऐ जे) ओह (सुधरने आस्तै) उनेंगी निश्चत समे तगर मोहलत दिंदा (रौंहदा) ऐ फी जिसलै उंदी स'जा दा बेला आई जंदा ऐ तां ओह नां ते इक घड़ी पिच्छें रेही/बची सकदे न ते नां (उस शा) अगें निकली (बची) सकदे न ॥ 62 ॥

ते ओह अल्लाह आस्तै ओह चीज तज़बीज़ करदे न जिसी ओह (आपू अपने आस्तै) ना-पसंद करदे न ते उंदी जबानां (बड़ी दलेरी

وَإِذْ أُنشِرَ أَحَدَهُم بِالْأُنثَىٰ ظَلَّ وَجْهَهُ
مُسُوذًا ۖ وَهُوَ كَظِيمٌ ۝

يَنوَارِي مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوءِ مَا بُشِّرَبِهِ ۖ
أَيْمَسِكُهُ عَلَىٰ هُونٍ أَمْ يَدُسُّهُ فِي
الْثَّرَابِ ۖ أَلْأَسَاءُ مَا يَحْكُمُونَ ۝

لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ مَثَلُ
السُّوءِ ۗ وَ لِلَّهِ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ ۗ وَهُوَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمَ مَا
تَرَكَ عَلَيْهِمْ دَابَّةً وَلَكِنْ يُؤَخِّرُهُمْ
إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا
يَسْتَخِرُونَ سَاعَةً ۚ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ۝

وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ مَا يَكْرَهُونَ وَتَصِفُ

शा कम्म लेइयै) झूठ बोलदियां न जे उनेंगी जरूर भलाई मिलग (मगर एह) अटल गल्ल ए जे उंदे आस्तै (दोजख दी) अग (दा अजाब पक्का) ऐ ते एह जे उनेंगी (उस च) छोड़ी दिता जाग ॥ 63 ॥

अल्लाह दी कसम! असें तेरे शा पैहली तमाम जातियें पासे रसूल भेजे हे। फी शतान नै उंदे (बुरे) कर्म खूबसूरत करियै दस्से, इस आस्तै अज्ज ऊऐ उंदा आका (बने दा) ऐ ते (ओह उसदे पिच्छें जा करदे न) उंदे आस्तै इक दर्दनाक अजाब (पक्का) ऐ ॥ 64 ॥

ते असें इस कताब गी तेरे पर इस आस्तै उतारेआ ऐ जे जिस गल्ला दे मतल्लक उनें (आपस च) इखतलाफ (पैदा) करी लैता ऐ उस (दी असल हकीकत) गी तू उंदे पर रोशन करैं ते (इसदे अलावा) जो (उस पर) ईमान ल्यौन उंदे आस्तै एह (कताब) हदायत ते रैहमत (दा मूजब) बनै ॥ 65 ॥

ते अल्लाह नै (गै) गासे थमां पानी तुआरेआ ऐ ते उसदे राहें उसनै धरती गी उसदे मुर्दा (बंजर) होई जाने परैंत (नमें सिरेआ) जींदा कीता ऐ। जेहके लोक (सच्ची गल्ला गी) सुनदे (ते उसी कबूल करने आस्तै त्यार होई जंदे) न उंदे आस्तै एहदे च यकीनन इक (बौहत बड्डा) नशान पाया जंदा ऐ ॥ 66 ॥ (रुकू 8/14)

ते तुंदे आस्तै चौखरें च (बी) यकीनन नसीहत हासल करने दा समान (मजूद) ऐ। (केह तुस दिखदे नेई जे) जे किश उंदे डिड्डें च (गंद बगैरा भरोचे दा) होंदा ऐ ओहदे चा यानी गोहे-गूतर ते खूनै दे बिच्चा दा अस

أَلْسِنَتَهُمُ الْكُذِبُ إِنَّ لَهُمُ الْحُسَىٰ لَا جَرَمَ أَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَأَنَّهُمْ مُّفْرَطُونَ ﴿٦٣﴾

تَاللَّهِ لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَرَئِينَ لَهُمُ الشَّيْطَانَ أَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمْ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٤﴾

وَمَا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ إِلَّا يُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي اخْتَلَفُوا فِيهِ ۖ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٦٥﴾

وَاللَّهُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٦٦﴾

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۗ لَتُسْقِيَكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهِ مِن بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَائِبِغًا لِلشَّرِيبِ ﴿٦٧﴾

तुसेंगी पीने आस्तै (पाक ते) साफ दुद्ध (प्रदान करी) दिन्ने आं, जो पीने आहलें आस्तै सुआदला (ते) गले चा असान्नी कन्ने उतरने आह्ला (होंदा) ऐ ॥ 67 ॥

ते खजूरे दे फले ते अंगूरे दी तुस शराब (बी) बनांदे ओ ते उत्तम जीवका बी। जेहके लोक अकली शा कम्म लेंदे न उंदे आस्तै यकीनन इक (बड्डा) नशान पाया जंदा ऐ ॥ 68 ॥

ते तेरे रब्ब नै गणै दी मक्खी (गणोली) पासै वह्नी कीती जे तू प्हाड़ें च ते बूहटें पर ते जेहके (अंगूरे बगैरा आस्तै लोक) सहारे बनाई लेंदे न, उंदे च (अपने) घर बनाऽ ॥ 69 ॥

फी हर किसमै दे फुल्लें चा (थोड़ा-थोड़ा लेइयै) खा ते अपने रब्ब दे (दस्से दे) तरीकें पर जो (तेरे आस्तै) असान (कीते गेदे) न, चल। इंदे (मक्खियें दे) ढिड्डें चा (थुआड़े) पीने दी इक चीज निकलदी ऐ जो केई रंगें दी होंदी ऐ (ते) उस च लोकें आस्तै शफा' (दी खासीयत रक्खी गेदी) ऐ। जेहके लोक सूझ-बूझ शा कम्म लेंदे न, उंदे आस्तै इस च यकीनन केई नशान (पाए जंदे) न ॥ 70 ॥

ते अल्लाह नै तुसेंगी पैदा कीते दा ऐ, फी ओह तुंदी रूहें गी कढदा ऐ ते तुंदे चा किश (आदमी) ऐसे बी होंदे न जे ओह उमर दी भैड़ी हालत पासै परताई दित्ते जंदे न जिसदे नतीजे च ओह इलम (आहले होने) दे बा'द (फी) ला-इलम होई जंदे न। अल्लाह यकीनन बड़ा जानने आह्ला (ते) हर गल्ला गी पूरा करने च समर्थ ऐ ॥ 71 ॥ (रुकू 9/15)

وَمِنْ ثَمَرَاتِ النَّخِيلِ وَالْأَعْنَابِ
تَتَّخِذُونَ مِنْهُ سَكَرًا وَرِزْقًا حَسَنًا إِنَّ فِي
ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٦٨﴾

وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِ اتَّخِذِي مِنَ
الْجِبَالِ بَيْوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا
يَعْرِشُونَ ﴿٦٩﴾

ثُمَّ كُلِي مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ فَاسْلُكِي سُبُلَ
رَبِّكِ ذُلُلًا يَخْرُجُ مِنْهَا بَطُونُهَا
وَسَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِلنَّاسِ
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٧٠﴾

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفَّاكُمْ ۗ وَمِنْكُمْ
مَّن يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْدَلِ الْعُمَرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ
بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿٧١﴾

1. शैहद केई रोगें च दुआई दा कम्म करदा ऐ।

ते अल्लाह नै तुंदे चा केइयें गी केइयें शा रिजक ज्यादा दिते दा ऐ ते जिनें लोकें गी आम लोकें शा उपर रखे दा ऐ ओह अपना (थोए दा) रिशक (कुसै बी सूत च) उंदे पासै, जिंदे पर उंदे सज्जे हल्थ काबज़' न, लौटाने आहले नेई, जिस दा नतीजा एह होआ जे ओह उस धन च बराबर (दे हिस्सेदार) होई जान। फी केह ओह (इस सचाई गी जानने दे बावजूद) अल्लाह दी नैमत दा इन्कार करदे न ॥ 72 ॥

ते अल्लाह ने थुआड़े आस्तै तुंदे चा (यानी थुआड़े आंगर गै जज़वात रखने आहली) बीबियां बनाई दियां न ते (इस दे अलावा) उसनै थुआड़ी बीबियें चा थुआड़े आस्तै पुत्तर ते पोतरे पैदा कीते दे न ते उसनै तुसैंगी तमाम (किसम दी) पवित्तर चीजें चा रिजक बख्खो दा ऐ। क्या फी (बी) इक नाश होने आहली चीजें पर ओह ईमान रखडन ते अल्लाह दी नैमतें दा ओह इन्कार करी देडन ॥ 73 ॥

ते ओह अल्लाह गी छोड़ियै ऐसी चीजें दी पूजा करदे न जेहकी उनेंगी गासैं ते धरती चा किश बी देने दा कोई अधिकार नेई रखदियां ते नां रखी सकदियां न ॥ 74 ॥

इस लेई (हे मुश्रिको) तुस अल्लाह दे बारे मनघड़त गल्लां नेई करो। यकीनन अल्लाह सब किश जानदा ऐ, पर तुस किश बी नेई जानदे ॥ 75 ॥

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۗ فَمَا الَّذِينَ فُضِّلُوا بِرَأْدِي رِزْقِهِمْ عَلَىٰ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيهِ سَوَاءٌ ۗ أَفَبِعِزَّةِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٧٢﴾

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا ۚ وَجَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ بَنِينَ وَبَنَاتًا ۚ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ ۗ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَتِ اللَّهِ هُمْ يَكْفُرُونَ ﴿٧٣﴾

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِنَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا ۚ وَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٧٤﴾
فَلَا تَصْرِبُوا لِلّٰهِ الْأَمْثَالَ ۗ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾

1. अर्थात् ऐसे सभारन आदमी जो बड़डे लोकें दे दास जां सताथारी गुट जां प्रभावशाली लोकें दे अधीन होन।
2. थुआड़ी बीबियां ऐसे माता-पिता दियां थीयां न जो थुआड़े आंगर गै मनुक्ख न। इस लेई उनें बीबियें दे मनोभाव बी थुआड़े आंगर गै न।

अल्लाह (थुआड़े समझाने आस्तै) इक ऐसे बंदे दी हालत ब्यान करदा ऐ, जो दास होऐ (ते) जो किसै गल्लै दी (बी) ताकत नेई रखदा होऐ ते (उसदे मकाबले च उस बंदे दी हालत बी) जिसी असें अपने पासेआ अच्छा-खासा रिज़क दित्ते दा होऐ ते ओह ओहदे चा छप्पे-गुञ्जे तौरा पर (बी) ते अलानियां तौरा पर (बी साढ़ी राह च) खर्च करदा होऐ। क्या ओह दौनें (चाल्लीं दे लोक) बराबर होई सकदे न? (कदें बी नेई) हर तारीफ दा अल्लाह गै हक्कदार ऐ पर उंदे चा (अक्सर लोक) नेई जानदे ॥ 76 ॥

ते अल्लाह दो होर बंदें दी दशा दा बर्णन करदा ऐ जिंदे चा इक ते गूंगा होऐ जेहका कुसै गल्लै दी समर्थ नेई रखदा होऐ ते ओह अपने मालके पर ब्यर्थ दा बोझ होऐ, जतांह बी (उसदा आका) उसी भेजै (ओह) कोई भलाई कमाइयै नेई आहनै, (बस्स) क्या ओह (शख्स) ते ओह (दूआ) शख्स जो इन्साफ करने दा हुकम दिंदा होऐ ते ओह (आपू बी) सिद्धे रस्ते पर (कायम) होऐ, आपस च बराबर होई सकदे न ॥ 77 ॥ (रुकू 10/16)

ते गासैं ते धरती दे गैब दा इलाम अल्लाह गी गै (हासल) ऐ। ते उस (बा'यदे आहली) घडी (दी आमद) दा मामला ते इय्यां गै ऐ जियां अक्खीं दा झमकना। बल्के ओह (उस शा बी) घट्ट शा घट्ट (समे च घटत होई जाने आहला ऐ) अल्लाह यकीनन हर गल्ला दे करने दी पूरी-पूरी समर्थ रखदा ऐ ॥ 78 ॥

ते अल्लाह नै तुसेंगी थुआड़ी मामें दे डिड्डें च इस हालती च पैदा कीते दा ऐ जे तुस

وَصَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا عَبْدًا مَمْلُوكًا لَا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ وَمَنْ رَزَقْنَاهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَجَهْرًا ۗ هَلْ يَسْتَوُونَ ۗ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۗ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿۷۶﴾

وَصَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَجُلَيْنِ أَحَدَهُمَا أَبْكَمٌ لَا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ وَهُوَ كَلٌّ عَلَى مَوْلَاهُ ۙ أَيْنَمَا يُوَجِّههُ لَا يَأْتِ بِخَيْرٍ ۗ هَلْ يَسْتَوِي هُوَ وَمَنْ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ ۗ وَهُوَ عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿۷۷﴾

ع ۱१

وَلِلَّهِ غَيْبُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿۷۸﴾

وَاللَّهُ أَخْرَجَكُمْ مِنْ بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ

किश बी नथे जानदे ते उसनै थुआड़े आस्तै कन्न ते अकखीं ते दिल पैदा कीते दे न तां जे तुस शुकर अदा करो ॥ 79 ॥

क्या उनें परिदें गी जो गसै दी फिजा दे अंदर बिना उजरत कम्मा पर लाए दे न, (गौर कन्नै) नेई दिक्खेआ। उनेंगी (तुंदे पर आई पौने ते नोची खाने शा) अल्लाह दे सिवा (होर) कोई नेई रोका करदा। जेहके लोक ईमान रखदे न उंदे आस्तै इस च यकीनन केई नशान (पाए जंदे) न ॥ 80 ॥

ते अल्लाह नै थुआड़े आस्तै थुआड़े घरें गी नबास दा साधन बनाए दा ऐ ते उसनै चौखरें दी खल्लें कन्नै (बी) थुआड़े आस्तै घर बनाए दे न। जिनैंगी तुस सफरै मौके हल्का-फुलका पांदे (समझदे) ओ ते (इसदे अलावा) अपने क्याम दे बेलै (उंदे शा फायदा लैंदे ओ) ते उनें (जानवरें दी) बरीक ते मुट्टी उनें ते उंदे बालें गी बी मुस्तकिल समान ते इक वक्त तक आरजी समान बनाने दा साधन बनाए दा ऐ ॥ 81 ॥

ते अल्लाह नै जो कुछ पैदा कीते दा ऐ ओहदे च उसने थुआड़े आस्तै केई साया देने आहिलयां चीजां बनाई दियां न (जिंदे हेत तुस अराम करदे ओ) ते फ्हाड़ें च (बी) थुआड़े आस्तै पनाह दियां जगहां बनाई दियां न ते इसदे अलावा उसने थुआड़े आस्तै केई किसमें दियां कमीजां बनाई दियां न जो तुसेंगी गर्मी' शा बचांदियां न ते केई कमीजां (यानी कबच) ऐसियां न जो तुसेंगी थुआड़ी (आपसी) जंग

لَا تَعْلَمُونَ سَيِّئًا وَجَعَلْ لَكُمْ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

أَلَمْ يَرَوْا إِلَى الظِّيرِ مُسْحَرَاتٍ فِي جَوْ السَّمَاءِ ط مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا اللَّهُ ط إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ بُيُوتِكُمْ سَكَنًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنْ جُلُودِ الْأَعْمَامِ بُيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ إِقَامَتِكُمْ وَمِنْ أَصْوَابِهَا وَأَوْبَارِهَا وَأَشْعَارِهَا أَثَانًا وَمَتَاعًا إِلَى حِينٍ ۝

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِمَّا خَلَقَ ظِلَالًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنَ الْجِبَالِ أَكْنَانًا وَجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيلَ تَقِيكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيلَ تَقِيكُمُ بَأْسَكُمْ ط كَذَلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُونَ ۝

1. इत्थें सिर्फ गर्मी दा बर्णन कीते दा ऐ, पर अरबी भाशा दे मुहाबरे मताबक आयत दा एह अर्थ ऐ जे अल्लाह नै ऐसे कपड़े बी बनाए दे न जेहके गर्मी शा बचांदे न ते नेह कपड़े बी जेहके सर्दी शा बचांदे न।

(दी सख्खी) शा बचांदियां न। इसै चाल्ली ओह तुंदे पर अपने (रुहानी) इनाम गी (बी) पूरा करदा ऐ तां जे तुस (उसदे) कामल फरमांबरदार बनो ॥ 82 ॥

बस्स अगर ओह (हून बी) फिरी जान तां (उस दी ब'जा कनै, हे नबी! तेरे पर इलजाम नेई औग की जे) तैरे जिम्मै सिर्फ गल्ला गी तफसील कनै पुजाई देना ऐ ॥ 83 ॥

ओह अल्लाह दे (इस) इनाम गी (बखूबी) पनछानदे न मगर फी (बी) उसदा इन्कार कर करदे न ते उंदे चा ते केई पक्के काफर न ॥ 84 ॥ (स्कु 11/17)

ते (उस दिनै गी बी याद करो) जिस दिन अस हर इक कौम च इक गुआह खड़ा करगे। फी (उस बेलै) उनें लोकें गी जिनें कुफर (दा रस्ता) अखत्यार कीते दा ऐ (ब्हान्ने बनाने जां हरजाने दी) अजाजत नेई दित्ती जाग ते नां (गै) उंदा कोई ब्हान्ना कबूल कीता जाग ॥ 85 ॥

ते जिनें लोकें जुल्म (दा तरीका अखत्यार) कीते दा ऐ ओह जिसलै उस अजाब गी (जिसदा बा'यदा कीता गेदा ऐ) दिखडन तां (उसलै) नां (ते) ओह (अजाब) उंदे परा घटाया जाग ते नां (गै) उनेंगी मोहलत दित्ती जाग ॥ 86 ॥

ते जिनें लोकें (अल्लाह दे) शरीक बनाए दे न। जिसलै ओह अपने (बनाए दे) शरीकें गी दिखडन तां आखडन (जे) हे साढ़े रब्ब! एह साढ़े (बनाए दे) शरीक न, जिनेंगी अस तुगी छोड़ियै पुकारा करदे हे, जेहेदे पर ओह (बनाए गेदे शरीक तौले गै) उनेंगी आखडन (जे) तुस यकीनन झूठे ओ ॥ 87 ॥

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٨٢﴾

يَعْرِفُونَ نِعْمَتَ اللَّهِ ثُمَّ يُنْكِرُونَهَا
وَآكْثَرَهُمُ الْكٰفِرُونَ ﴿٨٣﴾

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا
يُؤَدُّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ
يُسْتَعْبَدُونَ ﴿٨٤﴾

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفِّفُ
عَنَّهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٨٥﴾

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شَرَكَاءَهُمْ قَالُوا
رَبَّنَا هَؤُلَاءِ شُرَكَاءُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُوا
مِنْ دُونِكَ ۖ قَالِقَوْلِ إِلَيْهِمُ الْقَوْلُ إِن كُمْ
لَكَذِبُونَ ﴿٨٦﴾

ते उस दिन ओह (जालम तौले गै) अल्लाह दे हजूर च (अपने) आज्ञाकारी होने दा इजहार करडन ते ओह (सब किश) जिसी ओह अपने पल्लेआ घड़दे होंदे हे, उंदे (दमागें) चा गायब होई जाग ॥ 88 ॥

जिनें लोकें (आपूं बी) कुफर (दा तरीका) अखत्यार कीते दा ऐ ते (दूएँ गी बी) अल्लाह दी राह थमां रोके दा ऐ, उनेंगी अस उस अज्ञाब थमां बी उप्पर इक होर अज्ञाब देगे की जे ओह (म्हेशां) फसाद (दे कम्म) करदे हे ॥ 89 ॥

ते (उस दिनै गी बी याद करो) जिस दिन अस हर कौम दे अंदर उंदे खलाफ आपूं उंदे चा गै इक गुआह खडेगे ते (हे रसूल) तुगी अस उंदे (सारें दे) खलाफ गुआह बनाइयै आहनगे ते असें एह कताब तैरे पर हर इक गल्ला गी तफसील कनै ब्यान करने आस्तै ते (सारे लोकें दी) रैहनमाई आस्तै ते (उंदे उप्पर) रैहमत करने ते कामल फरमांबरदारी अखत्यार करने आहलें गी खुश-खबरी देने आस्तै उतारी दी ऐ ॥ 90 ॥ (रुकू 12/18)

अल्लाह यकीनन न्यांउ दा ते स्थान दा ते (गैर रिश्तेदारें गी बी)सबके नातेदारें आंगर (समझने ते उससै चाल्ली मदद) देने दा हुकम दिंदा ऐ ते (हर इक किसमै दी) बे-हयाई ते गैर मनासब गल्लें ते बगावत शा रोकदा ऐ, ओह तुसेंगी नसीहत करदा ऐ तां जे तुस समझी जाओ ॥ 91 ॥

ते (चाहिदा ऐ जे) अल्लाह दे (कनै कीते दे अपने) बा'यदे गी जिसलै तुसें (ओहदे कनै कोई) बा'यदा कीते दा होऐ, पूरा करो

وَأَلْقُوا إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ السَّلَمَ وَصَلَ
عَنَّهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٨٩﴾

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ
زَدْنَهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا
يُفْسِدُونَ ﴿٩٠﴾

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ
أَنفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَىٰ هَؤُلَاءِ
وَنُرْسِلُ عَلَيْكَ الرِّبَابَ ثَابِتًا كَلِمَةً
وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ﴿٩١﴾

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ
ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَتَذَكَّرُونَ ﴿٩٢﴾

وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ وَلَا تَفْضُوا
الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ

ते कसमें गी उंदे पुख्ता करने दे बा'द, जिसलै के तुसें अल्लाह गी (उसदी कसम खाइयै) अपना जामिन बनाई लेदा होऐ, मत तोड़दे होवो। जो कुछ तुस करदे ओ अल्लाह उसी यकीनन जानदा ऐ ॥ 92 ॥

ते उस जनानी आंगर नेई बनो जिसनै अपने कते दे सूतरे गी उसदे मजबूत होई जाने दे बा'द कट्टियै टुकड़े-टुकड़े करी दिता हा उससै चाल्ली जे तुस अपनी कसमें गी फरेब राहें आपस च रसूख बधाने दा जरीया बनाई लैओ। इस डरें जे कोई कौम कुसै दूरै कौम दे मकाबले च ज्यादा ताकतवर नेई होई जा अल्लाह तां सिर्फ इस बेलै तुसेंगी इनें हुकमें राहें अजमाऽ करदा ऐ ते क्यामत आहलै रोज तुंदे पर इनें गल्लें दी सारी हकीकत जरूर खोहली देग जिंदे बारै तुस इख्तलाफ रखदे हे ॥ 93 ॥

जेकर अल्लाह अपनी (गै) मरजी लागू करदा तां ओह तुसें (सारें) गी इक गै जमात बनांदा। पर (ओह ऐसा नेई करदा बल्के) जो शख्स (गुमराही गी) चांहदा ऐ, उसी ओह गुमराह करदा ऐ ते जो (हदायत गी) चांहदा ऐ उसी ओह हदायत दिंदा ऐ ते जो कुछ तुस करा करदे ओ उसदे बारै (क्यामत आहलै दिन) तुंदे शा पुच्छेआ जाग ॥ 94 ॥

ते तुस अपनी कसमें गी आपस च फरेब करने दा जरीया नेई बनाओ बरना (थुआड़ा) कदम इसदै बा'द जे ओह (खूब मजबूती कनै) जम्मी चुके दा होऐ (फी) ति'लकी जाग ते तुस बुरा अंजाम दिखगे ओ। की जे तुसें (इस चाल्ली होर लोकें गी बी) अल्लाह दी राह थमां रोकेआ ते तुंदे पर बड़ा अजाब (नाजल) होग ॥ 95 ॥

عَلَيْكُمْ كَفِيلًا ۖ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿١١﴾

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِي نَقَصَتْ غُرْلَهَا مِنْ
بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْكَاثًا تَتَّخِذُونَ آيْمَانَكُمْ
دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَنْ تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَى
مِنْ أُمَّةٍ ۖ إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ ۖ وَلَيُبَيِّنَنَّ
لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَا كُنتُمْ فِيهِ
تَخْتَلِفُونَ ﴿١٢﴾

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً
وَلَكِنْ يَصِلُ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۗ
وَلَتَسْأَلَنَّ عَمَّا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٣﴾

وَلَا تَتَّخِذُوا آيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ
فَتَنزِلَ قَدَمًا بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا
السَّوَاءَ بِمَا صَدَدْتُمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۗ
وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٤﴾

ते तुस अल्लाह दे (कनै कीते दे) बा'यदे दे बदले च तुच्छ (ते थोढ़ी हारी) कीमत (आहली चीज) नेई लैओ। जे तुस सूझ-बूझ रखदे ओ तां समझी लैओ जे जो किश अल्लाह कश ऐ ओह् थुआड़े आस्तै यकीनन (इस कशा केई गुणां) बेहतर ऐ ॥ 96 ॥

जो कुछ थुआड़े कश ऐ ओह् खतम होई जाग ते जो कुछ अल्लाह कश ऐ ओह् (म्हेशां) रौहने आह्ला ऐ ते (असंगी अपनी जात दी कसम ऐ जे) जेहके लोक धीरजवान रेह न अस उनेंगी यकीनन उंदे चंगे कमें मताबक (उंदे सारे अच्छे कमें दा) बदला देगे ॥ 97 ॥

जो कोई मोमिन होने दी हालत च नेक ते मनासब कर्म करग, मर्द होऐ जां औरत अस उसगी यकीनन इक पाक-पवित्रर जिंदगी प्रदान करगे ते अस उनें (सारे लोकें) गी उंदे चंगे कमें मताबक (उंदे सारे कमें दा) बदला देगे ॥ 98 ॥

(हे श्रोता!) जिसलै तू कुरआन पढ़न लगैं तां दुत्कारे दे शतान (दी बुराई) थमां (बची रौहने आस्तै) अल्लाह दी पनाह मंगी लै कर ॥ 99 ॥

(सच्ची) गल्ल यकीनन इय्यै ऐ जे जेहके लोक ईमान ल्याए न ओह् अपने रब्ब (दी पनाह) पर भरोसा रखदे न, उंदे पर उसदा/शतान दा कोई अधिकार नेई ऐ ॥ 100 ॥

उस दा अधिकार सिर्फ उनें लोकें पर (होंदा) ऐ जो उस कनै दोस्ती रखदे न ते जो उस दी ब'जा कनै शिर्क करदे न ॥ 101 ॥ (रुकू 13/19)

ते जिसलै अस कुसै नशान दी ज'गा पर कोई होर नशान आहने आं ते (ओहदे च केह

وَلَا تَسْتُرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ تَمَنَّا فُلَيْلًا ۗ إِنَّمَا عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ ۗ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِينَ صَبَرُوا أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٧﴾

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۗ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٨﴾

فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٩٩﴾

إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿١٠٠﴾

إِنَّمَا سُلْطٰنُهُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَكَّلُونَ ۗ وَالَّذِينَ هُمْ بِهِ مُشْرِكُونَ ﴿١٠١﴾

وَإِذَا بَدَأْنَا آيَةً مَّكَانَ آيَةٍ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ

शक्क ऐ जे) अल्लाह जो कुछ उतारदा ऐ उस (दी जरूरत) गी ओह (सारें शा) बेहतर जानदा ऐ ते (उस मौकें पर बरोधी) आखदे न जे तूं मनघड़त झूठी गल्लां करने आह्ला ऐं, (मगर सचाई एह् नेई) बल्के उंदे चा मतें गी इलम नेई ऐ ॥ 102 ॥

तूं (ऐसे लोकें गी) आख (जे) रूहुलकुदुस ने उसी तेरे रब्ब पासेआ हक (ते हिकमत) कन्ने उतारेआ ऐ तां जे जो लोक ईमान ल्याए न उनेंगी ओह (ईमान पर) म्हेशां लेई कायम करी देऐ ते (उसदे अलावा उसनै) फरमांबरदारें दी (होर) रैहनमाई आस्तै ते उनेंगी शुभ समाचार देने आस्तै उसी उतारेआ ऐ ॥ 103 ॥

ते अस यकीनन जानने आं जे ओह आखदे न (जे एह् वह्नी इलाही/अल्लाह दा कलाम नेई बल्के) इक आदमी उसी सखांदा ऐ (पर ओह नेई समझदे जे) जिस शख्स पासै ओह (इशारा करदे न ते उंदे दमाग उस पासै) झुकदे न, उसदी जबान अजामी (गैर अरबी) ऐ ते एह (कुरआनी जबान ते खूब) रोशन (करियै दस्सने आहली) अरबी जबान ऐ ॥ 104 ॥

जेहके लोक अल्लाह दे नशां पर ईमान नेई आहनदे, अल्लाह उनेंगी हदायत नेई दिंदा, ते उंदे आस्तै दर्दनाक अजाब (पक्का) ऐ ॥ 105 ॥

झूठ ऊऐ लोक घड़दे न जो अल्लाह दे नशां पर ईमान नेई रखदे ते इयै लोक भलेआं झूठे होंदे न ॥ 106 ॥

जेहके लोक अपने ईमान आहनने दे बा'द अल्लाह दा इन्कार करन सवाए उंदे जिनेंगी (कुफर पर) मजबूर कीता गेआ होऐ पर उंदा

بِمَا يَتَزَلُّ قَاتُوا إِيْمًا أَنْتَ مُفْتَرٍ ۖ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٢﴾

قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ الْقُدُسِ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ آمَنُوا وَهُدًى وَبُشْرَى لِّلْمُسْلِمِينَ ﴿١٠٣﴾

وَلَقَدْ نَعَلِمُ أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهُ بَشَرٌ ۖ لِّسَانُ الَّذِي يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ أَعْجِبُ ۖ وَهُدَى لِّلسَانِ عَرَبِيٍّ مُّبِينٍ ﴿١٠٤﴾

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ لَا يَهْدِيهِمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٥﴾

إِنَّمَا يُفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ۗ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكٰذِبُونَ ﴿١٠٦﴾

مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيْمَانِهِ إِلَّا مَنْ

दिल ईमान पर संतुष्ट होऐ (ओह पकड़ च नेई औडन) हां! ओह जिनें (अपना) सीना कुफर आस्तै खोहली दिता होऐ, उंदे पर अल्लाह दा (बौहत) बड़डा कैहर/करोप (नाजल) होग। ते उंदे लेई बड़ा भारी अजाब (पक्का) ऐ ॥ 107 ॥

ते एह इस कारण होग ते उनें इस संसारक जीवन कनै प्रेम करियै उसी आखरत पर प्रधानता दिती ते (होर इस ब'जा कनै जे) अल्लाह कुफर अखत्यार करने आहले लोकें गी हदायत नेई दिंदा ॥ 108 ॥

एह ओह लोक न जिंदे (कुफर दी ब'जा कनै उंदे) दिलें, कनै ते अक्की पर अल्लाह नै मोहर लाई दिती दी ऐ ते एह लोक गै न जेहके पूरे गाफल न ॥ 109 ॥

ते एहदे च कोई शक्क नेई जे ओह आखरत च (सारें शा बाधू) घाटे-च रौहने आहले होडन ॥ 110 ॥

ते तेरा रब्ब यकीनन उनें लोकें आस्तै जेहके दुखें च सुट्टे जाने दे बा'द हिजरत करी गे, फी उनें जिहाद कीता ते (अपने बा'यदे पर) डटे दे रेह। (हां) तेरा रब्ब यकीनन उस (शर्त गी पूरा करने) दे बा'द (उंदे आस्तै) बड़ा बख्शनहार (ते) बार-बार रैहम करने आहला (साबत) होग ॥ 111 ॥ (रुकू 14/20)

(एह बदला खास तौर पर उस दिन जाहर होग) जिस दिन हर शख्स अपनी जान बाँर झगड़दे होई आँग ते हर शख्स ने जे किश कीते दा होग (उस दा बदला) उसी पूरा-पूरा दिता जाग। ते उंदे पर (कुसै रूप च बी) जुल्म नेई कीता जाग ॥ 112 ॥

أَكْرَهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَكِنْ
مَنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ
غَضَبٌ مِنَ اللَّهِ وَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا
عَلَى الْآخِرَةِ ۗ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝

أُولَئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ
وَسَمِعَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ ۖ وَأُولَئِكَ هُمُ
الْغٰفِلُونَ ۝

لَا جَرَمَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُونَ ۝

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا مِن بَعْدِ مَا
فَعَلْتُمْ أَتَمَّ جَهْدًا وَأَوْصَبَرًا ۗ إِنَّ رَبَّكَ
مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ نَفْسٍ نُّجَادِلُ عَنْ نَفْسِهَا
وَتُؤْفَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُونَ ۝

ते अल्लाह (तुसेंगी समझाने आस्तै) इक बस्ती¹ दा हाल ब्यान करदा ऐ जिसी (हर चाल्ली दा) अमन हासल ऐ ते संतुश्टी बी नसीब ऐ, हर पासेआ उस दा रिज़क उसी बड़ी मातरा च पुज्जा करदा ऐ। फी (बी) उसनै अल्लाह दी नैमतें दी ना-शुकरी कीती ऐ, उस (दी इस ना-शुकरी) पर अल्लाह ने उस (दे बशिरें) पर उंदे अपने (घनौने) कर्में दी ब'जा करी भुख्ख ते खौफ दा लबास नाज़ल कीता ऐ ॥ 113 ॥

ते यकीनन उंदे कश उंदे चा गै (साढ़ा) इक रसूल आई चुके दा ऐ, मगर उनें उसी झुठेरेआ। जेहदे पर उस हालत च, जे ओह जुलम करा करदे हे, (साढ़े) अजाब नै उनेंगी आई घेरेआ ॥ 114 ॥

इस आस्तै जो लहाल ते पवित्तर धन अल्लाह नै तुसेंगी दित्ते दा ऐ तुस ओहदे चा खाओ ते अल्लाह दी नैमत दा, जेकर तुस उससै दी अबादत करदे ओ, शुकर करो ॥ 115 ॥

उसने तुंदे पर सिर्फ मुरदाड़, खून, सूरे दा मास ते (हर) उस चीजे गी र्हाम कीते दा ऐ जेहदे पर अल्लाह दे सिवा कुसै होर दा नांउ लैता गेआ होऐ ते जेहका शख्स (उंदे चा कुसै चीजा दे खाने पर) मजबूर कीता जा, ऐसी परिस्थिति च जे ओह (शरीअत दा) मकाबला करने आहला नेई होऐ ते नां हद्द शा बधने आहला होऐ तां (चेता र'वै जे) अल्लाह बड़ा गै बख्खानहार (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 116 ॥

ते अपनी जबानें दे झुठे बयानें कारण (एह) मत आखो जे एह लहाल ऐ ते एह र्हाम ऐ

وَصَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا قَرِيَةً كَانَتْ أَمِنَةً
مُظْمِئَةً يَأْتِيهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِنْ كُلِّ
مَكَانٍ فَكَفَّرَتْ بِأَنْعَمِ اللَّهِ فَأَذَقَهَا اللَّهُ
نِيَّاسَ الْجُوعِ وَالْخَوْفَ بِمَا كَانُوا
يَصْنَعُونَ ﴿١١٣﴾

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ
فَأَحَدَهُمُ الْعَذَابَ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١١٤﴾

فَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمْ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا
وَأَشْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ
تَعْبُدُونَ ﴿١١٥﴾

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ
الْخَنزِيرِ وَمَا أَهْلَ لَيْعٍ لِلَّهِ بِهِ فَمَنْ
اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَحِيمٌ ﴿١١٦﴾

وَلَا تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمْ

1. इत्थें बस्ती दा सरबंध पवित्तर मक्का नगर ऐ।

(तां ऐसा नीं होऐ) तुस अल्लाह पर झूठ घड़ने आहले बनी जाओ। जेहके लोक अल्लाह पर झूठ घड़दे न ओह कदें बी कामयाब नेई होंदे ॥ 117 ॥

(एह दुनियां) थोढ़ा हारा आरजी समान ऐ ते (उस झूठ दे नतीजे च) उंदे आसतै दर्दनाक अजाब (पक्का) ऐ। (इस आसतै ओहदे कशा बचना चाहिदा) ॥ 118 ॥

ते जिनें लोकें यहूदी धर्म अखत्यार कीता हा उंदे पर (बी) असें इस शा पैहलें ओह (सारी) चीजां रूहाम कीतियां हियां जिंदा जिकर असें तेरे कनै कीता ऐ ते असें उंदे पर (एह हुकम देइयै) जुल्म नथा कीता बल्के ओह (उनें हुकमें गी तोड़ियै) अपनी जात्रें पर जुल्म करदे रौहदे हे ॥ 119 ॥

फी (याद रक्खो जे) जिनें लोकें बे-खबरी दी हालत च (कोई) बुराई कीती होऐ (ते) फी उसदे बा'द (ओह उस शा) तोबा करी लैन ते (अपनी गलती दा) सुधार बी करी लैन, उंदे हक च तेरा रब्ब (इनें शर्तें गी पूरा करी लैनै परैत्त) बड़ा गै बख्शनहार (ते) बार-बार रैहम करने आह्ला (साबत) होग ॥ 120 ॥
(रुकू 15/21)

इब्राहीम यकीनन हर इक भलाई गी कठेरने आहला, अल्लाह आसतै ल्हीमगी (नीमताई) अखत्यार करने आहला (ते) म्हेशां खुदा दी कामल फरमांबरदारी करने आहला हा, ते ओह मुश्रिकें बिच्चा नेई हा ॥ 121 ॥

(ओह) उस (अल्लाह) दी नैमतें दा शुकरगुजार हा, उस (दे रब्ब) ने उसी चुनी

الْكُذِبِ هَذَا حَلَالٌ وَ هَذَا حَرَامٌ
تَتَفَتَّرُوا عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ إِنَّ الَّذِينَ
يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿١١٧﴾
مَتَاعٌ قَلِيلٌ وَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١١٨﴾

وَ عَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَمًا مَّا قَصَصْنَا
عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَ مَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ
كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٩﴾

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا السُّوءَ
بِحَهَالَةٍ لَّمَّا تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا
إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٢٠﴾

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِلَّهِ حَنِيفًا
وَ لَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٢١﴾

شَاكِرًا لِأَنْعَمِهِ ۗ اجْتَبَاهُ وَ هَدَاهُ إِلَى

लैते दा हा ते इक सिद्धे रस्तै पासै उस दी अगुआई कीती ही ॥ 122 ॥

صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿١٢٢﴾

ते असें उसी इस दुनियां च (बी बड़ी) कामयाबी बख्शी ही, ते ओह आखरत च (बी) यकीनन सदाचारी लोकें बिच्चा होग ॥ 123 ॥

وَأَتَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۗ وَإِنَّهُ فِي
الْآخِرَةِ لِمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١٢٣﴾

ते (हे रसूल) असें तुगी वही राहें हुकम दिता हा जे (साढ़ी) कामल फरमांबरदारी पर म्हेशां कायम राहने आहले इब्राहीम दे सिद्धातिं दी पैरवी कर ते (ऐ मक्का आहलेओ, जानदे ओ जे) ओह मुश्रिकें बिच्चा नेई हा ॥ 124 ॥

ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنْ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ
حَنِيفًا ۗ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٢٤﴾

सब (दी बिपता) उनें लोकें पर गै सुट्टी गेई ही जिनें उस दा बरोध कीता हा ते तेरा रब्ब उस गल्ला बारे जिस दा ओह बरोध करदे हे, यकीनन क्यामत आहलै दिन फैसला करग ॥ 125 ॥

إِنَّمَا جَعَلَ السَّبَبُ عَلَى الَّذِينَ اتَّخَفُوا
فِيهِ ۗ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٢٥﴾

(ते हे रसूल) तू (लोकें गी) हिक्मत ते चंगी नसीहत राहें अपने रब्ब दी राह पासै सद्द। ते इस तरीके कनै जेहका सारें थमां बधिया ऐ, उंदे कनै (उंदे बरोध बारै) बैहस कर। तेरा रब्ब उनेंगी (बी) जो उस दे रस्तै थमां भटकी गेदे न। (सारें शा) बेहतर जानदा ऐ ते उनेंगी बी जो हदायत पादे न ॥ 126 ॥

أَدْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحُكْمَةِ
وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ ۗ وَجَادِلْهُمْ بَالَّتِي
هِيَ أَحْسَنُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ
بِمَنْ صَلَّى عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ
بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١٢٦﴾

जेकर तुस (लोक ज्यादाती करने आहले लोकें गी) स'जा देओ तां जिन्नी तुंदे पर ज्यादाती कीती गेदी होऐ तुस उन्नी (गै) स'जा देओ ते (असेंगी अपनी जात दी सघंद ऐ जे) जेकर तुस सबर करगे ओ तां सबर करने आहलें दे हक्क च ओह (यानी सबर करना) बेहतर होग ॥ 127 ॥

وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا
عُوقِبْتُمْ بِهِ ۗ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ
خَيْرٌ لِلصَّابِرِينَ ﴿١٢٧﴾

ते (हे रसूल) तू सबर शा कम्म लै ते तेरा सबर करना अल्लाह (दी मदद) कन्नै गै (होई सकदा) ऐ ते तू (उनें लोकें दी हालतीं पर) दुखी नेई हो ते जेहके बुरे उपाऽ ओह करदे न उंदी ब'जा करी तकलीफ मसूस नेई कर ॥ 128 ॥

ते याद रक्ख जे अल्लाह यकीनन उनें लोकें कन्नै होंदा ऐ जिनें संयम (दा तरीका) अखत्यार कीते दा होऐ ते जेहके सदाचारी होन ॥ 129 ॥ (रुकू 16/22)

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٨﴾

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَالَّذِينَ هُمْ مُحْسِنُونَ ﴿١٢٩﴾

०००



सूर: बनी इस्राईल

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दी इक सौ बारां आयतां ते बारां रुकून।

(में) अल्लाह दा नाऽ लेइयै जो बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रहम करने आहला ऐ (पढ़ना) ॥ 1 ॥

(में) उस (खुदा) दी पबितरता (ब्यान करन लगां) जेहका रातीं बेलै अपने बंदे गी (उस) मस्जिदे हराम (यानी खाना काबा) थमां मस्जिदे-अक़सा (यानी बैतुल मुक़ददस) दूर आहली मस्जिद तगर जिसदे आसे-पासे गी (बी) असें बरकत दिती दी ऐ, (इस आस्तै) लेई गोआ तां जे अस उसी अपने किश चमत्कार दसचै। यकीनन (ऊऐ) खुदा ऐ जो (अपने बंदे दी पुकार गी) खूब सुनने आहला (ते उंदी हालतें गी) खूब दिक्खने आहला ऐ ॥ 2 ॥

ते असें मूसा गी कताब (यानी तौरात) प्रदान कीती ही ते उसगी असें बनी इस्राईल आस्तै हदायत (दा साधन) बनाया हा (ते ओहदे च उनें हुकम दिता हा) जे तुस मेरे सिवा कुसै गी (अपना) कारसाज (कार्य-साधक) नेई बनाओ ॥ 3 ॥

(ते एह बी आखेआ हा जे) हे उनें लोकें दी नसल! जिनेंगी असें नूह दे कनै (किशती

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنْ آيَاتِنَا إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ①

وَأْتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ آلًا تَتَّخِذُوا مِنْ دُونِي وَكَيْلًا ①

ذُرِّيَّةً مِّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ إِنَّهُ كَانَ

पर) सुआर कीता हा। (याद रक्खो जे)ओह यकीनन(साढ़ा) बड़ा शुकरगुजार बंदा हा (इस लेई) तुस बी शुकरगुजार बनो ॥ 4 ॥

ते असें कताब च बनी इस्राईल गी एह गल्ल (खोहलियै) दस्सी दिती ही जे तुस यकीनन उस देश च दो बार फसाद करगे ओ ते यकीनन तुस बड़ी बड्डी उद्दंडता दा प्रदर्शन करगे ओ ॥ 5 ॥

ते जिसलें उतें दीं (बारी दे फसादें) चा पैहली बारी दा बा'यदा (पूरा करने दा मौका) आया तां असें किश अपने ऐसे बंदें गी (तुसेंगी दबाने आस्तै) तुंदे मकाबले च खडेरी दिता जेहके महा योधे' हे ते ओह थुआड़े घरै च जाई बड़े ते एह बा'यदा (सच्चें गै) पूरा होइयै रौहने आहला हा ॥ 6 ॥

(उसदे बा'द) फी असें'तुसेंगी (दुश्मन उप्पर)हमला करने दी ताकत प्रदान कीती ते असें थुआड़ी मदद धन-दौलत ते पुत्तरें राहें कीती ते थुआड़े जत्थे गी बी(पैहलें शा) बधाई दिता ॥ 7 ॥

(सुनो!) जेकर तुस सदाचारी बनगे तां सदाचारी बनियै अपने-आपै गी गै फायदा पुजागेओ, ते जेकर तुस बुरे कर्म करगेओ तां(बी) अपने आस्तै(बुरा करगे ओ)³ फी

عَبْدًا شَكُورًا ①

وَقَصَيْنَا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ فِي الْكِتَابِ
لَتُفْسِدُنَّ فِي الْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ
عُلُوًّا كَبِيرًا ①

فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولَاهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ
عِبَادًا لَنَا أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ فَجَاسُوا
خِلَالَ الدِّيَارِ ① وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُولًا ①

ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكُرَّةَ عَلَيْهِمْ
وَآمَدَدْنَاكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَجَعَلْنَاكُمْ
أَكْثَرًا نَفِيرًا ①

إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنْتُمْ لِأَنْفُسِكُمْ ③
وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا ① فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ

1. एह बाबिल दे राजा नबुकद-नजर दे हमले दा जिकर ऐ जिसने फ़लस्तीन उप्पर हमला करियै सद्कियाह गी हरया हा ते उस दियां अक्खी कड्डी दितियां हियां (सलातीन भाग-2, आयत: 25)
2. इस च 'मेद' ते 'फ़ारिस' दे सम्राट दा जिकर ऐ जिसने बाबिल पर हमला करियै नबुकद-नजर दे कटुंब दा सर्वनाश करी दिता ते बनी इस्राईल कन्ने गुप्त समझौता करी लैता। फी उस समझौते दे मताबक नहमिया नबी दे राहें दुबारा बैतुलमुकद्दस गी बसाया। (नहमिया 1 ते 2)
3. इस तबाही दे दूए बा'यदे दा मतलब रोम दे राजकमार टाईटस दा हमला ऐ, जिसने इस आस्तै फ़लस्तीन पर हमला कीता हा जे उसी दस्सेआ गेआ हा जे यहूदी, रोम दी हकूमत खलाफ बगाबत करने आहले न। एह घटना सलीब दी घटना थमां रहतर साल बा'द दी ऐ। (दिकखो इन्साइक्लो-पॉडिया ब्रिटैनिका, शब्द 'ज्यू' ते हिस्ट्री आफ दी वर्ल्ड) उस बेले टाईटस नै बैतुलमुकद्दस दी सख्त हतक कीती ही ते मस्जिद च सूरै दी कुरबानी दिती ही।

जिसलै दूई बारी आहले बा'यदे दे पूरा होने दा वक्त आई गेआ तां जे ओह (थुआड़े बैरी) थुआड़े प्रतिशठत लोकें कनै बुरा ब्यहार करन ते उसै चाल्ली मस्जिद च दाखल होन जिस चाल्ली ओह पैहली बारी ओहदे च दाखल होए हे ते जेहकी चीज हत्थ आवै उसी भलेआं नश्ट करी देन (तां एह गल्ल बी पूरी होई गई) ॥ 8 ॥

(हून बी) किश दूर नेई (बल्के ऐन ममकन ऐ) जे थुआड़ा रब्ब तुंदे पर रैहम करी देऐ ते जेकर तुस (फी अपने गल्ल रबेइये पासै) मुड़े तां अस बी (अपनी स'जा पासै) परतोई जागे ते (याद रक्खो जे) जहन्नाम गी असें काफरें आस्तै कैदखाना बनाया ऐ ॥ 9 ॥

एह कुरआन यकीनन उस (राह) पासै अगुआई करदा ऐ जो सारें शा ज्यादा दरुस्त (चंगा) ऐ ते मोमिनें गी जो परिस्थिति मताबक कर्म करदे न, शुभ समाचार दिंदा ऐ जे उंदे आस्तै (बड़ा) बड़डा प्रतिफल (पक्का)ऐ ॥ 10 ॥

ते (कुरआन) एह (बी आखदा ऐ) जे जेहके लोक आखरत पर ईमान नेई आहनदे उंदे आस्तै असें दर्दनाक अजाब तयार कीते दा ऐ ॥ 11 ॥ (रुकू1/1)

ते इन्सान बुराई गी(उसै जोश कनै) बुलांदा ऐ जिस जोश कनै अल्लाह उस(बंदे) गी भलाई पासै बुला करदा होंदा ऐ ते इन्सान बड़ा गै काह्ला(सिद्ध होए दा) ऐ ॥ 12 ॥

ते असें रात ते दिन दौं नशान बनाए दे न। इस चाल्ली नै जे राती आहले नशान दे असर गी ते असें मटाई दिता ते दिनै आहले नशान गी असें प्रकाश देने आहला बनाई दिता तां जे

الْآخِرَةَ لِيُسْوَءَ أَوْجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُبَيِّرُوا مَا عَلَوْا تَتْبِيرًا ۝

عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يَرْحَمَكُمْ وَإِنْ عَدْتُمُو عَدْنَا وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا ۝

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ۝

وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ آعَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

وَيَدْعُ الْإِنْسَانَ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ ۖ وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا ۝

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَاتَيْنِ فَمَحْوَنَاتٍ آيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً

तुस खुदा दी मेहर गी तलाश करो ते (असानी कन्नै) साल्लें दी गिनती ते स्हाब लाई (जानी) सको ते असें हर इक चीजै गी तफसील कन्नै ब्यान करी दित्ते दा ऐ ॥ 13 ॥

ते असें हर इन्सान दी गरदनै च उस दे कर्म ब'न्नी दित्ते न ते अस क्यामत आहलै रोज उस (दे कर्म) दी इक कताब कडिह्यै उसदे सामनै रक्खी देगे जिसी ओह (भलेआं) खु'ल्ली दी दिक्खग ॥ 14 ॥

(ते उसी आखेआ जाग) अपनी कताब (आपू) पढ़ (ते दिक्खी लै) अज्ज अपना लेखा लेने आस्तै तू आपू गै काफी ऐं ॥ 15 ॥

(इस आस्तै याद रक्खो जे) जेहड़ा हदायत गी कबूल करग उस दा हदायत पाना उससै (दे अपने) आस्तै फायदामंद ऐ ते जो (उस हदायत गी नेई मन्नियै) गुमराह होग, उसदा गुमराह होना उससै (दी जात) आस्तै भारा पौग ते कोई भार चुक्कने आहली जान कुसै दूई (जानै) दा भार नेई चुक्कग ते अस (कुसै कौम पर) कदें बी अजाब नेई भेजदे जिन्ना चिर (उंदे पासै) कोई रसूल नेई भेजी लैचै ॥ 16 ॥

ते जिसलै अस कुसै बस्ती गी तबाह करने दा इरादा करचै तां (पैहलें) अस उस दे धनी लोकें गी (नेकी करने दा) हुकम दिन्ने आं जेहदे पर ओह (उल्ला) उस (बस्ती) च ना-फरमानी (दी राह) अखत्यार करी लेंदे न, उसलै उस बस्ती दे बारै सादा कलाम पूरा होई जंदा ऐ ते अस उसी पूरी चाल्ली तबाह करी दिन्ने आं ॥ 17 ॥

تَّبَتَّبَعُوا فَضَّلًا مِّن رَّبِّكُمْ وَتَعَلَّمُوا
عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابِ ۗ وَكُلُّ شَيْءٍ
فَصَلَّنَا تَفْصِيلًا ۝۱۳

وَكُلَّ إِنسَانٍ أَلْمَمْنَاهُ طَبْرَهُ فِي عُنُقِهِ ۗ
وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ
مَشُورًا ۝۱۴

اقْرَأْ كِتَابَكَ ۗ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ
حَسِيبًا ۝۱۵

مِن اهْتَدَىٰ فَإِلْمًا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۗ وَمَن
صَلَّ فَإِنَّمَا يَصِلُّ عَلَيْهَا ۗ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ
وِزْرَ أُخْرَىٰ ۗ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ
تَبْعَثَ رَسُولًا ۝۱۶

وَإِذَا أَرَدْنَا أَن نُّهْلِكَ قَرْيَةً أَمَرْنَا
مُثْرَفِيهَا فَفَسَقُوا فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ
فدَمَّرْنَاهَا تَدْمِيرًا ۝۱۷

1. मूल शब्द 'तायर' दा अर्थ पैंछी ते कर्म होंदा ऐ। (अक्ररब) गरदन च कर्म ब'न्ने दा मतलब एह ऐ जे कर्म करने आहले गी अपने कर्म दा सिला पक्क भोगना पौंदा ऐ।

ते (उस्सै निजम मताबक) असें नूह (दी कौम गी ते उस) दे बा'द (इक दे बा'द दूर्ई) बड़ी सारी नसलें गी तबाह कीता ते तेरा रब्ब अपने बँदें दे गुनाहें पर (चंगी चाल्ली)नजर रक्खने आह्ला(ऐ ते उनेंगी) खूब दिखदा ऐ ॥ 18 ॥

जो शख्स (सिर्फ)दुनियां दा चाहवान होऐ, अस उस किसम दे लोकें चा जिसगी चाहने आं इस लोक च गै, उसी तौले थ्होने आह्ला(दुनियाबी) फायदा देई दिने आं इसदे बा'द ओहदे आस्तै ज्हन्म (दा अजाब) निश्चत करी दिने आं जिस च ओह् (अपने उप्पर) अलजाम लुआइयै ते दुतकारे खाइयै दाखल होई जंदा ऐ ॥ 19 ॥

ते जिनें लोकें ईमान दी हालत च आखरत दी खुआहश कीती ते ओहदे आस्तै ओहदे मताबक कोशश (बी) कीती ते (याद रक्खो) इयै नेह लोक न जिंदी कोशश दी क्रदर कीती जाग ॥ 20 ॥

अस सारें गी मदद दिने आं, उनेंगी बी (यानी दीन आहलें गी बी) ते उनें गी बी (यानी दुनियादारें गी बी) (ते एह मदद) तेरे रब्ब दी मेहर करियै ऐ ते तेरे रब्ब दी मेहर (कुसै खास गरोह्/वर्ग बशेश) शा रोकी नेई जाग ॥ 21 ॥

दिक्ख! असें किस चाल्ली (संसारक साधनें दी ट्रिस्टी कनै बी) उंदे चा किश लोकें गी दूए किश लोकें दी निसबत प्रधानता देई रक्खी दी ऐ ते यकीनन परलोक दा जीवन ते होर बी बड्डे दरजे आह्ला ते सम्मान आह्ला होग ॥ 22 ॥

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِنْ بَعْدِ نُوحٍ ۗ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَيْرًا بَصِيرًا ﴿١٨﴾

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِمَنْ نُرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهُ جَهَنَّمَ يَصْلَاهَا مَنْ مَدَّ مَوْماً مَدْحُورًا ﴿١٩﴾

وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَشْكُورًا ﴿٢٠﴾

كُلًّا نُمِدُّهُؤُلَاءَ وَهُؤُلَاءَ مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ ۗ وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَخْظُورًا ﴿٢١﴾

أَنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۗ وَلِلْآخِرَةِ أَكْبَرُ دَرَجَاتٍ وَأَكْبَرُ تَفْضِيلًا ﴿٢٢﴾

इस आस्तै (हे श्रोता!) अल्लाह दे कन्नै कोई दूआ उपास्य नेई बनाऽ, जे ऐसा करगा तां तूं अपने उप्पर अलजाम लुआइयै (ते) खुदाऽ दी मदद थमां महरूम (बंचत) होइयै बेही रौहगा ॥ 23 ॥ (रुकू 2/2)

तेरे रब्ब नै (इस गल्ला दा) तकीदी हुकम दित्ते दा ऐ जे तुस उस दे सिवा कुसै दूए दी अबादत नेई करो ते (इस दे अलावा एह जे अपने) मापें (माता-पिता) कन्नै चंगा सलूक करो, जेकर उंदे चा कुसै इक पर जां उनें दीनें पर तेरी जिंदगी च बढ़ापा आई जा, तूं उनेंगी उंदी कुसै गल्ला पर (बुरा मनांदे होई) उफ्र' तक नेई आख ते नां उनेंगी किश आख (झिड़क) ते उंदे अगमें (सदा) नर्म-नीमता होइयै गल्ल कर ॥ 24 ॥

ते दया भाव कन्नै उंदे सामनै ल्हीमगी आहला आचरण कर ते (उंदे आस्तै प्रार्थता करदे मौकै) आखा कर जे हे मेरे रब्ब! इंदै पर किरपा कर, की जे इनें बचपन च मेरा पालन पोशन कीता हा ॥ 25 ॥

जे किश बी थुआड़े दिलें च ऐ उसी थुआड़ा रब्ब सारें शा बद्ध जानदा ऐ। जेकर तुस सदाचारी होग्गे (तां याद रक्खो) ओह बार-बार झुकने आहलें गी बड़ा गै बख्शने आहला ऐ ॥ 26 ॥

ते नजदीकी रिश्तेदार गी ते बे-आसरे ते मसाफर गी उंदा हक्क देओ ते कुसै रूप च बी फजूल खर्च नेई करो ॥ 27 ॥

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَقْعَدَ
مَذْمُومًا مَّحْدُورًا ۝

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ
وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۖ إِمَّا يَبُلُغَنَّ عِنْدَكَ
الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَيْهِمَا فَلَا تَقُلْ
لَهُمَا آفٌ وَلَا تَهْرُهُمَا وَقُلْ لَهُمَا
قَوْلًا كَرِيمًا ۝

وَاحْفَظْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ
وَقُلْ رَبِّ ارْحَمَهُمَا كَمَا رَبَّيْنِي
صَغِيرًا ۝

رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِي نُفُوسِكُمْ ۖ إِنَّ
تَكُونُوا صَالِحِينَ فَإِنَّهُ كَانَ لِلْأَوَّابِينَ
عَفْوًا ۝

وَاتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمَسْكِينِ
وَابْنِ السَّبِيلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيرًا ۝

1. इस आयत थमां सिद्ध होदा ऐ जे पवित्र कुरआन च केई थाहरें पर संबोधन ते हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह स.अ.व. गी कीता जंदा ऐ पर उसदा मन्शा थुआड़े अनुयायी होंदे च, की जे एह हुकम माता-पिता कन्नै चंगा ब्यहार करने दा ऐ ते थुआड़े पिता हुंदा सुर्गबास थुआड़े जम्मेन शा पैहलें होई गेआ हा ते थुआड़ी माता थुआड़े जुआन गभरू होने शा पैहलें गै सुर्ग सधारी गेइयां हियां।

फजूल खर्च करने आहले लोक यकीनन शतानें दे भ्राऽ होंदे न ते शतान अपने रब्ब दा सारें शा बद्ध ना-शुकरी करने आहला ऐ ॥ 28 ॥

ते जेकर तू अपने रब्ब दी कुसै बड़ी बड्डी रहमत गी हासल करने आसतै, जिसदी तू आस लाई दी होऐ, उनें (रिश्तेदारें-संबंधियें) शा मूह् फेरी लें (तां मूह् फेरना ते ठीक ऐ पर) उसलै बी उंदे कनै ल्हीमगी नै गल्ल कर ॥ 29 ॥

ते तू नां ते अपना हत्थ (कंजूसी कनै) ब'न्नियै अपनै गल पाई लै ते नां गै (फजूल खर्च करदे मौकै) उसी भलेआं खु'ल्ला छुड़ी दे, नेई ते तू मलामत दा नशाना बनियै जां थक्की हुट्टियै बेही जाग्गा ॥ 30 ॥

तेरा रब्ब जेहदे आसतै चांहदा ऐ, रिजक बधाई दिंदा ऐ ते जेहदे आसतै चांहदा ऐ तंगी करी दिंदा ऐ। ओह यकीनन अपने बंदे (दी हालतें) गी जानने आहला (ते) दिक्खने आहला ऐ ॥ 31 ॥ (सूकू 3/3)

ते तुस गरीबी दे डरें अपनी संतान दी हत्या नेई करो उनेंगी (बी) अस गै रिशक दिन्ने आं ते तुसेंगी बी (अस गै दिन्ने आं) उनेंगी कत्ल करना यकीनन बड़ा बड्डा अपराध ऐ ॥ 32 ॥

ते ब्यभिचार दे लागै (बी) नेई जाओ, ओह यकीनन इक खु'ल्लम-खु'ल्ली बे-हयाई ते बड़ा बुरा रस्ता ऐ ॥ 33 ॥

ते जिस जान गी (मारना) अल्लाह नै रहाम गलाए दा ऐ उसी (शरीअत दे) हक दे सिवा

إِنَّ الْمُبَدِّرِينَ كَانُوا الْشَّيْطَانِ ط
وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا ۝

وَأَمَّا تَعْرِضُكَ عَنْهُمْ ابْتِغَاءَ رَحْمَةٍ مِّن رَّبِّكَ تَرْجُوهَا فَقُلْ لَهُمْ قَوْلًا مَّيْسُورًا ۝

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ
وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبُسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا
مَّحْسُورًا ۝

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ
وَيَقْدِرُ ۗ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا
بَصِيرًا ۝

وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ ۗ
نَحْنُ نَرِزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ ۗ إِنَّ قَتْلَهُمْ
كَانَ خِطَاءً كَبِيرًا ۝

وَلَا تَقْرَبُوا الرِّزْلَىٰ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً ۗ
وَسَاءَ سَبِيلًا ۝

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا

1. अर्थात् अपने सक्के, साक संबंधियें शा मूह् फेरी लैना कंजूसी करियै नेई होऐ बल्के इस आसतै होऐ जे में अल्लाह थमां रोजी च बढोतरी आसतै प्रार्थना करा करना ते मिगी पूरी मेद ऐ जे ओह मिगी यकीनन मिली जाग! उस बेलै तक नेई चांहदे होई अऊं मजबूर होइयै मूह् फेरा करना।

कत्ल नेई करो ते जो शख्स बिना कुसै कसूर दे मारेआ जा, उसदे बारस गी असैं क्रिसास' (बदला लैने) दा अखत्यार दिते दा ऐ, इस आस्तै (ओहदे लेई एह हदायत ऐ जे) ओह (खूनी गी) कत्ल करने च (साढ़ी निश्चत कीती गेदी) हद थमां अगमें नेई बधै (जेकर ओह हद दे अंदर रौहग) तां यकीनन (साढ़ी) मदद उसी मिलदी रौहग ॥ 34 ॥

ते तुस उस ढंगै गी छोड़ियै जेहका (अनाथ दे पक्ख च) उत्तम होऐ (कुसै होर चाल्ली) यतीम दे सैसे-धेले दे लागै नेई फड़को, इत्थें तक जे ओह आपूं जुआन होई जा ते अपना बा'यदा पूरा करो, (की जे) हर-इक बा'यदे दे बारै (इक नां इक दिन) पुच्छेआ जरूर जाग ॥ 35 ॥

ते जिसलै तुस (कुसै गी किश) मापियै देन लागो तां पूरा मापा करो ते (जिसलै तोल्लियै देओ तां बी) सिद्धे ब्रक्कड़ी कनै तोल्लियै देआ करो, एह गल्ल सारें शा बेहतर ते अनजाम दे स्हाबें बी सारें शा अच्छी ऐ ॥ 36 ॥

ते (हे श्रोता!) जिस गल्ला दा तुगी पता नेई होऐ उसदा पीछा नेई करा कर (की जे) कन, अक्खीं ते दिल, इंदे सबनीं बारै (तुगी) पुच्छेआ जाग ॥ 37 ॥

ते धरती पर आकड़ियै नेई चल, की जे इस चाल्ली नां ते तूं देश दी आखरी सीमा तक पुज्जी सकना ऐं ते नां तूं (इस चाल्ली कौम दे) सरदारों दे उच्चे दर्जे गी हासल करी सकना ऐं ॥ 38 ॥

بِالْحَقِّ وَمَنْ قَتَلَ مُطْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا لَوْلِيَّهِ سُلْطٰنًا فَلَا يَسْرِفُ فِي الْقَتْلِ ۝
إِنَّهُ كَانَ مَنصُورًا ۝

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۖ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ ۚ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا ۝

وَأَوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ۚ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۝

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۚ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولٰٓئِكَ كَانَ عِنْدَهُ مَسْئُولًا ۝

وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۚ إِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ۝

1. 'क्रिसास' आस्तै दिक्खो सूर: बकरर: टिप्पणी आयत 178

2. मूल शब्द 'जबल' दा अर्थ सरदार बी होंदा ऐ। (अक्ररब) आयत दा अर्थ एह ऐ जे अहंकार कनै आकड़ियै चलने कनै नां ते आदमी देश दे लोकें दी पकड़ थमां बची सकदा ऐ ते नां बड़ा बड़ा विद्वान गै बनी सकदा ऐ ते नां जाति दा सरदार गै।

इंदे (हुकमें) चा हर इक (कर्म) दी बुरी
सूरत तेरे रब्ब गी पसंद नेई ऐ ॥ 39 ॥

كُلُّ ذَلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ
مَكْرُوهًا ①

एह (शानदार तालीम)उस (इलम ते) हिकमत
दा इक हिस्सा ऐ जो तेरे रब्ब नै वह्नी राहें तेरे
पासै भेजी ऐ ते तू अल्लाह दे कनै कोई होर
उपास्य नेई बनाऽ, बरना तू मलामत दा नशाना
बनियै (ते) दुतकारे दा दोज्जख (नरक) च
सुट्टी दिता जागा ॥ 40 ॥

ذَلِكَ مِمَّا أَوْحَى إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ
الْحِكْمَةِ ۗ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ
فَتُلْفَىٰ فِي جَهَنَّمَ مَلُومًا مَّدْحُورًا ①

क्या थुआड़े रब्ब नै तुसेंगी पुत्तरे दी नैमत
आसतै चुनी लैता ऐ, ते (आपू) उसने किश
फ़रिशतें गी (अपनी) कुड़ियां बनाई लैता ऐ,
यकीनन तुस (एह) बड़ी (खतरनाक) गल्ल
आखा करदे ओ ॥ 41 ॥ (रुकू 4/4)

أَفَأَصْفُكُمْ رَبُّكُمُ بِالْبَنِينَ وَاتَّخَذَ
مِنَ الْمَلَائِكَةِ إِنَاثًا ۗ إِنَّكُمْ تَقُولُونَ
قَوْلًا عَظِيمًا ①

ते असें इस कुरआन च (हर इक गल्ला गी)
इस आसतै बार-बार ब्यान कीता ऐ जे ओह
(एहदे शा) नसीहत हासल करन, पर (बावजूद
इस दे) ओह (कुरआन) उनेंगी (घमंड ते)
नफरत च गै बधाऽ करदा ऐ ॥ 42 ॥

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ
لِيَذَّكَّرُوا ۗ وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ①

तू आखी दे (जे) जेकर उंदे कौल मताबक
उस (अल्लाह) कनै (कोई) होर उपास्य
(बी) होंदे तां उस सूरत च ओह (मुश्रिक
उनें अपास्यें दी मदद कनै) अर्श आहले
खुदा तक (पुज्जने दा) कोई रस्ता जरूर' ढूंडी
लैंदे ॥ 43 ॥

قُلْ لَوْ كَانَ مَعَهُ آلِهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذًا
لَأَبْتَغُوا إِلَيَّ ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ①

ओह उंदी (मुश्रिकें दी) शिक दी गल्लें थमां
पवित्तर ते बड़ा गै उच्चा ऐ ॥ 44 ॥

سُبْحٰنَهُ وَعَلَىٰ عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ①

सतें गासें ते धरती ते जो उंदे च (बसने
आहले) न उस दी स्तुति करदे न ते (दुनियां

تَسْبِيحَ لَهُ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَالْأَرْضِ

1. अर्थात् उंदा एह आखना ऐ जे असें शिक गी इस लेई अपनाया ऐ जे असेंगी अल्लाह दी नजदीकी हासल होई सकै। (सूर: जुमर रुकू-1) जेकर एह गल्ल सच्च ऐ तां उनेंगी अल्लाह दी नजदीकी की हासल नेई होंदी।

दी) हर चीज उस दी तरीफ करदे होई (उसदी) स्तुति करदी ऐ, पर तुस उंदी (चीजें दी) स्तुति गी नेई समझदे, ओह यकीनन पापें गी खट्टने आहला ते बड़ा (गै) बखानहार ऐ ॥ 45 ॥

ते तू जिसलै कुरआन गी पढ़ना ऐं तां (उस बेलै) अस तैरे ते उनें लोके दे मझाटै, जो आखरत पर ईमान नेई रखदे, इक बे-मलूम (ते आम नजरें बशकार छपे दा) पर्दा सुट्टी दिन्ने आं ॥ 46 ॥

ते अस उंदे दिलें पर केई परदे सुट्टी दिन्ने आं तां जे ओह' इस (सचाई) गी समझी निं सकन ते उंदे कनें च बैहरापन (पैदा करी दिता) ऐ ते जिसलै तू कुरआन च अपने रब्ब गी, जो इक गै ऐ, याद करना ऐं, तां ओह घिणा कनै अपनी पिट्ठां फेरियै उठी जंदे न ॥ 47 ॥

(ते) जिस बेलै ओह (सधारण तौर पर) तेरी गल्ला गी सुना करदे होंदे न ते जिस गरज कनै ओह तेरी गल्लां सुना करदे होंदे न, अस उसदी हकीकत गी चंगी चाल्ली जानने आं, ते (इस दे अलावा) जिसलै ओह आपसी काना-फूसी (फुस-फुस) करा करदे होंदे न (उसदा बी इलम असेंगी होंदा ऐ ते) जिसलै ओह जालम (इक-दूए कनै) आखा करदे होंदे न (जे) तुस इक धोखा खादे दे शखस पिच्छें फिरा करदे ओ (तां उस बेलै बी अस सुना करदे होन्ने आं) ॥ 48 ॥

दिक्ख! उनें तेरे बारे च किस चाल्ली दियां गल्लां घड़ी लैतियां न जिंदे नतीजे च ओह

وَمَنْ فِيهِنَّ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا يَسْبُحُ بِحَمْدِهِ وَلَكِنْ لَا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَمُورًا ۝

وَإِذَا قُرَأَتِ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُورًا ۝

وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۝ وَإِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَوَّاعًا عَلَى آذَانِهِمْ نُفُورًا ۝

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْمَعُونَ بِهٖ إِذْ يَسْمَعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوَى إِذْ يَقُولُ الظَّالِمُونَ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ۝

أَنْظُرْ كَيْفَ صَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ

1. अर्थात् उंदे दिल गंदे न। इस लेई अस उनेंगी इस्लाम आहन्ने शा इस आस्ते रोका करने आं जे उंदे बुरे कर्म कारण इस्लाम धर्म दी बदनामी नेई होऐ।

गुमराह् होई गे न ते (हून) उनेंगी (हदायत हासल करने आस्तै) कोई रस्ता नेई सुझदा ॥ 49 ॥

ते उनें (एह बी) आखेआ ऐ (जे) जिसलै अस (मरिये) हड्डियं होई जागे ते किश अरसे बा'द गलियै हड्डियें दा (बी) चूरा बनी जागे (तां असें गी नमें सिरेआ जींदा कीता जाग) ते क्या सच्चें गै असेंगी इक नमीं मखलूक दी सूरत च दुआलेआ जाग? ॥ 50 ॥

तूं (उनेंगी) आख (जे) तुस (भामें) पत्थर बनी जाओ जां लोहा ॥ 51 ॥

जां कोई होर नेही मखलूक जो थुआड़े दिलें च इनें पदार्थें शा बी ज्यादा कठोर (सख्त) लभदी होऐ, तां बी तुसेंगी दबारा जींदा कीता जाग, एह सुनियै ओह जरूर आखडन (जे) कु'न असेंगी दबारा (जींदा करियै बजूद च) आहनग। तूं (उनेंगी) आख (जे) ऊऐ (अल्लाह) जिसनै तुसेंगी पैहली बार पैदा कीता हा। इस पर ओह जरूर तज्जब (रहानगी) कनै तेरे पासै (दिखदे होई) सिर लहाडन ते आखडन (जे) एह (जींदा कीते जाने दी गल्ल) कुसलै पूरी होग? (जिसलै ओह एह आखडन तां) तूं (उनेंगी) आख (जे) बिल्कुल ममकन ऐ जे ओह (बेला हून) लागै! (आई गेदा) होऐ ॥ 52 ॥

(एह बा'यदा² उस दिन पूरा होग) जिस दिन ओह तुसेंगी बुलाग तां तुस ओहदा गुणगान

فَصَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ۝

وَقَالُوا إِذًا كُنَّا عِظَامًا وَرَفَاتًا إِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ۝

قُلْ كُونُوا حِجَارَةً أَوْ حَدِيدًا ۝

أَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ ۚ
فَسَيَقُولُونَ مَنْ يُعِيدُنَا ۖ قُلِ الَّذِي
فَطَرَكُمُ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُونَ
إِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَى هُوَ
قُلْ عَسَى أَنْ يَكُونَ قَرِيبًا ۝

يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَدِيثِهِ

1. इस थमां पता लगदा ऐ जे एह आयत संसार दे बिनाश ते उसदे बा'द दे जीवन कनै सरबंध रखदी ऐ, की जे आखरत दे जीवन दे बारे च ते इन्कार करने आहले लोक समझी बी नेई सकदे हे जे उस दा समां लागै आई चुके दा ऐ, तां अजे हड्डियें दे चूर-पूरा होने दा बेला गै आया हा। इस लेई इस जगह पर इस्सै लोक दा राजनीतिक जां जाती पतन (मौत) ते फी दबारा उन्नति करना दस्से दा ऐ।
2. असल च इत्थें अरब देश आहलें दा इस्लाम धर्म धारण करियै नमां जीवन पाने ते उन्नति (तरक्की) करने दा बर्गन ऐ।

करदे होई उस दा हुकम मनगे ओ (ते फौरन हाजर होई जागे ओ) ते तुस समझा करदे होगे ओ जे तुस (संसार च) थोड़ा चिर गै ठैहरे हे ॥ 53 ॥ (सूक् 5/5)

ते तूं मेरे बंदें गी आख जे ऊरे गल्ल करान जो (सारें शा) ज्यादा अच्छी होऐ (की जे) शतान यकीनन उंदे बशकार (फुट्ट पुआंदा रौहदा ऐ। शतान इन्सान दा जाहरा-बाहरा दुश्मन ऐ ॥ 54 ॥

थुआड़ा रब्ब तुसेंगी (सारें शा) ज्यादा जानदा ऐ, जे ओह चाहग तां तुंदे उप्पर रैहम करग ते जेकर ओह चाहग तां तुसेंगी अजाब देग ते (हे रसूल!) असें तुगी उंदा जिम्मेदार बनाइयै नेई भेजेआ ॥ 55 ॥

ते जो (वजूद बी) गासं जां धरती च (रौहने आहले) न, उनेंगी थुआड़ा रब्ब (सारें शा) ज्यादा जानदा ऐ ते असें यकीनन नबियें बिच्चा किश नबियें गी (दूए नबियें पर) प्रधानता दिस्ती दी ऐ ते दाऊद गी (बी) असें जबूर' प्रदान कीती ही ॥ 56 ॥

तूं (उनेंगी) आख (जे) जिनें लोकें दे बारे च थुआड़ा दा 'वा ऐ जे ओह उस (अल्लाह) दे सिवा उपास्य न, उनेंगी (अपनी मदद आसतै) पुकारो (तां तुसेंगी पता लगगी जाग जे) नां ओह (थुआड़ी कोई) तकलीफ हरने दा अखत्थार रखदे न ते नां (थुआड़ी हालत च) कोई तब्दीली पैदा करने दी (ताकत रखदे न) ॥ 57 ॥

وَتَنْظُرُونَ إِن لَّبِئْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا ۝

وَقُلْ لِّعِبَادِي يَقُولُوا الَّذِي هِيَ أَحْسَنُ ۝
إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْزِعُ بَيْنَهُمْ ۝ إِنَّ الشَّيْطَانَ
كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِينًا ۝

رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ ۝ إِنَّ يَسَاءَ يَرِحْكُمْ أَوْ
إِنَّ يَسَاءَ يُعَذِّبْكُمْ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ
وَكِيلًا ۝

وَرَبَّلَكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۝ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّينَ
عَلَى بَعْضٍ وَأَتَيْنَا دَاوُدَ رِبُورًا ۝

قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ رَعِمْتُمْ مِنْ دُونِهِ فَلَا
يَمْلِكُونَ كَشْفِ الضَّرِّ عَنْكُمْ وَلَا
حَوْثِيلًا ۝

1. किश लोक 'जबूर' गी शरीअत दी कताब समझदे न, पर 'जबूर' दा अर्थ टुकड़ा बी होंदा ऐ। इस लेई 'जबूर' दा मतलब ऐ छोटे-छोटे टुकड़ें च उपदेश देना। 'जबूर' दे पढ़ने कनै स्पष्ट ऐ जे ओह ऐसी गै कताब ऐ।

ओह लोक जिनेंगी ओह पुकारदे न, ओह बी अपने रब्ब दी नजदीकी हासल करने आस्तै कोई साधन ढूँडदे न (यानी एह दिखदे रौँहदे न) जे कु 'न खुदा दा ज्यादा प्यारा ऐ (तां जे अस उसदी मदद लैचै) ते ओह सदा उसदी रैहमत दे मेदवार रौँहदे न ते उसदे अज़ाब थमां डरदे रौँहदे न। तेरे रब्ब दा अज़ाब यकीनन ऐसा ऐ जिस थमां खौफ खादा जंदा ऐ ॥ 58 ॥

ते (सारी धरती? पर) कोई ऐसी बस्ती नेई (होग) जिसी अस क्यामत आहल्ले ध्याड़े शा पैहल्लें तबाह नेई करी देचै जां उसी बड़ा सख्त अज़ाब नेई देचै। एह गल्ल अल्लाह दी कताब च (पैहल्लें थमां) लिखी गेदी ऐ ॥ 59 ॥

(क्या) असेंगी नशान प्रकट करने च, इस गल्ला दे सिवा कोई होर गल्ल रोक बनी/रोकी सकदी ऐ जे पैहलके लोकें (इनें नशानें गी) झुठलाई दिता हा (ते उंदे थमां कोई फायदा नथा लैता, पर नशान प्रकट करने च एह गल्ल किश म्हतव नेई रखदी)। जिसलै असें समूद जाति दे लोकें गी इक ऊंटनी रोशन नशान दे रूपै च दिती तां उनें ओहदे पर अत्याचार कीता ते अस नशानें गी (बुरे परिणाम शा) डराने आस्तै गै प्रकट करने होन्ने आं ॥ 60 ॥

ते जिसलै असें तुगी आखेआ हा जे तेरा रब्ब जरूर गै इनें लोकें गी तबाह (करने दा फैसला)

أَوَّلِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ ۗ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ۝

وَإِنَّ مِنْ قَرِيْبٍ إِلَّا نَحْنُ مَهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ أَوْ مَعْدِبُوهَا عَذَابًا سَدِيدًا ۗ كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ۝

وَمَا مَنَعَنَا أَنْ نُرْسِلَ بِالْآلِيْتِ إِلَّا أَنْ كَذَّبَ بِهَا الْأَوْلُونَ ۗ وَآتَيْنَا مُوْدًا ثِقَالَ مَبْصُرَةً فَظَلَمُوا بِهَا ۗ وَمَا نُرْسِلُ بِالْآلِيْتِ إِلَّا تَحْوِيْفًا ۝

وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ ۗ

1. सेही होंदा ऐ जे इस थाहरा पर मनघड़त उपास्यें कन्ने सरबंघत नबी जां फरिश्ते न जिनेंगी मुश्रिक अल्लाह दा साझी ठरहांदे हे नेई ते मूर्तियें उप्पर एह आयत लागू नेई होई सकदी।
2. इस जगह एह भविष्यवाणी ऐ जे आखरी जुग च सारी दुनियां च अल्लाह दा अज़ाब आँग ते हज़रत मसीह दे मूजब इक जाति दूई जाति पर चढ़ाई करग। पवित्र कुरआन दे मूजब बिपतां आँउन ते संसार इस चाल्ली लगातार मसीहतें च घिरे दा रौँह जे मनुक्ख समाज र्हान-परेशान रेही जाग। (सूर: नाज़िआत आयत 7-8)

करी चुके दा ऐ (तां बी उनें कोई फायदा नेई लैता) ते जेहका सुखना असें तुगी दस्सेआ हा, उसी बी ते उस बूहटे¹ गी बी जिसी कुरआन च लानत आहला दस्सेआ गेदा ऐ। असें लोकें आस्ते इम्तिहान दा साधन बनाया हा ते (इस पर बी) अस उनेंगी डरांदे रौह्ने आं, फी बी ओह (सादा डराना) इनेंगी इक भ्यानक उद्दंडता पासै बधांदा रौह्दा ऐ ॥ 61 ॥ (रुकू 6/6)

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै असें फरिश्तें गी आखेआ हा (जे) तुस आदम कनै (मिलियै) सजदा करो तां उनें (इस हुकम मताबक आदम कनै मिलियै) सजदा कीता हा, पर इब्लीस ने (नथा कीता)। (उसनै) आखेआ हा (जे) क्या में उस आदमी कनै मिलियै सजदा करां जिसी तोह चिक्कड़े चा पैदा कीते दा ऐ? ॥ 62 ॥

ते उसनै एह बी आखेआ (हे अल्लाह! तू गै) मिगी दस्स जे क्या एह (मेरा आदेशक/हाकम होई सकदा) ऐ? जिसी तोह मेरे उपपर प्रधानता देई दिती ऐ। जेकर तोह मिगी क्यामत आहले दिनै तक ढिल्ल दिती तां मिगी तेरी गै सोह! अऊं उस दी सारी संतान गी अपने बस च करी लैगा, सबाऽ थोड़े-होरे लोकें दे (जिनेंगी तूं बचाई लै) ॥ 63 ॥

وَمَا جَعَلْنَا الرَّءْيَا الَّتِي أَرَيْتَكَ إِلَّا فِتْنَةً
لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ ۗ
وَنُحُوفُهُمْ ۖ فَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا
كَبِيرًا ۝

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ
فَسَجَدُوا ۗ اِلَّا اِبْلٰسَ ۗ قَالَ ؕ اَسْجُدْ لِمَنْ
خَلَقْت طٰٓغِيًا ۝

قَالَ اَرَاۤءَيْتَ هٰذَا الَّذِي كَرَّمْت عَلٰٓى
لٰٓئِن اٰخَرْتِنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَآخْتَنٰكُنَّ
دُرِّيَّةً اِلَّا قَلِيْلًا ۝

1. शूल शब्द 'शजर:' दा मतलब बैस्स ते जाति बी होंदा ऐ, जियां बैस्स जां पुरखे दी बैस्साबली गी "शजर:-ए-नसब" आखेदे न। (अकरब) कुरआन च यहूदिये पर लानत कीती गेदी ऐ। इस आस्ते इत्थे इंदा गै जिकर ऐ।
2. इत्थे सुखने ते लानत आहले बूहटे दा किट्टा जिकर कीता गेदा ऐ। इस कनै बिशे भलेआं स्पष्ट होई जंदा ऐ, की जे सुखना इसै सूर: च 'इम्रा' दी घटना च बर्णन होए दा ऐ ते 'इम्रा' कशफी जां तन्द्रावस्था दी ओह जातरा ही जेहकी फ़लस्तीन पासै होई जो यहूदिये दा स्थान हा ते फटकारे गेदे बूहटे दा मतलब बी यहूदी गै न। इस लेई दौनें दे किट्टा बर्णन करने कनै इक घटना नै दूई घटना दा मूल मकसद प्रकट करी दिता।

(अल्लाह नै) आखेआ, जा! (परें हो) की जे तेरी बी ते उनें लोकें चा जो तेरी पैरवी करडन, (उंदी बी) स'जा जहन्म ऐ (ते एह) पूरा-पूरा बदला (ऐ) ॥ 64 ॥

ते (असें आखेआ जे जा!) इंदे चा जिस पर तेरा बस चलै, उसी अपनी अवाज कनै फरेब करियै (अपने पासै) बुला ते अपने सुआरें ते प्यादें गी उंदे पर चाढ़ी दे ते (उंदी) धन-दौलत ते संतान च उंदा हिस्सेदार बन ते उंदे कनै (झूटे) बा'यदे कर (ते फी अपनी कोशशें दा नतीजा दिक्ख) ते शतान जेहके बी बा'यदे करदा ऐ, फरेब दी नीत कनै गै करदा ऐ ॥ 65 ॥

पर जो मेरे बंदे न, उंदे पर तूं कदें बी काबू नेई पाई सकदा ते (हे मेरे बंदे!) तेरा रब्ब कम्म सुआरने च तेरे आस्तै काफी ऐ ॥ 66 ॥

(ते हे मेरे बंदो!) थुआड़ा रब्ब (ते) ओह ऐ जो थुआड़े आस्तै समुंदरें च किशियां चलांदा ऐ तां जे तुस उस दी किरपा ते फजल गी हूंडो। ओह यकीनन तुंदे पर बार-बार देआ करने आहला ऐ ॥ 67 ॥

ते जिसलै समुंद्र च (तुफानै कारण) तुसें गी कश्ट पुजै तां उसदे सिवा (दूए वजूद) जिनेंगी तुस पुकारदे ओ (थुआड़े दमागें चा) गायब होई जंदे न। फी जिसलै ओह तुसेंगी बचाइयै खुशकी पर आहनदा ऐ तां तुस (ओहदे पासेआ) मूंह फेरी लैंदे ओ ते मनुक्ख बड़ा गै किरतघन ऐ ॥ 68 ॥

क्या फी तुस (एह समझदे ओ जे तुस) इस गल्ला शा पूरी चाल्ली निश्चित होई चुके दे ओ जे ओह (जां ते) तुसें गी खुशकी दे कंदै

قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَاءٌ وَّكَمٍ جَزَاءً مَّوْفُورًا ۝۱۵

وَاسْتَفْزِرْ مِنْ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكِهِمْ فِي الْاَمْوَالِ وَاْلْاَوْلَادِ وَعَدْتَهُمْ ۗ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُورًا ۝۱۵

اِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ۗ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيلًا ۝۱۶

رَبُّكُمْ الَّذِي يُرِيكُمْ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۗ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ۝۱۷

وَاِذَا مَسَّكُمُ الضَّرُّ فِي الْبَحْرِ رَضَلْ مَنْ تَدْعُوْنَ اِلَّا اِيَّاهُ ۗ فَلَمَّا نَجَّكُمْ اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ ۗ وَكَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ۝۱۸

اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يُخَسِّفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا

(धरती च) धसाई देरे जां तुंदे पर पत्थरें दी बरखा करै ते फी तुस अपना कोई मदादी (जां हमायती) नेई पाओ ॥ 69 ॥

जां तुस इस गल्ला शा बे-खौफ ओ जे ओह तुसिंगी (फी) दूई बार उस (समुंद्र) च लेई जा ते तुंदे पर इक तुफान छोड़ी देरे ते थुआड़े इन्कार करने कारण तुसिंगी डोबी देरे, फी उस (अजाब) पर तुस साढ़े बरुद्ध अपना कोई मदादी नेई पाओ ॥ 70 ॥

ते असें आदम दी संतान गी (बड़ी) इज्जत दिती दी ऐ ते उंदे आसतै जल ते थल च सुआरी दे साधन पैदा कीते दे न ते उनेंगी पवित्र पदार्थें दा रिशक प्रदान कीते दा ऐ ते जो मखलूक असें पैदा कीती दी ऐ ओहदे चा इक बड्डे हिस्से पर उनेंगी असें बड़ी प्रधानता प्रदान कीती दी ऐ ॥ 71 ॥ (रुकू 7/7)

ते (उस दिनै गी बी याद करो) जिस दिन अस हर इक गरोह गी उसदे नेता समेत बुलागे, फी जिंदे सज्जे हत्थै च उंदे कर्मै दी कताब दिती जाग, ओह (बड़े शौक्र कनै) अपनी कताब पढ़उन ते उंदे पर रत्ती-भर (बी) जुल्म नेई कीता जाग ॥ 72 ॥

ते जेहका आदमी इस (संसार) च अ'न्ना' रौहग, ओह परलोक च बी अ'न्ना रौहग ते फी अपनी चाल-ढाल च बी सारें शा बद्ध भटके दा रौहग ॥ 73 ॥

ते करीब/ममकन हा जे उस (कलाम) दे कारण जो असें तेरे उप्पर वह्नी राहें उतारे दा ऐ ओह

لَكُمْ وَكَيْلًا ۝

أَمْ أَمْنُكُمْ أَنْ يُعِيدَكُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَى
فَرِيَسَلْ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِنَ الرِّيحِ
فَيَغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ لَّئِمَّا تَجِدُوا
لَكُمْ عَلَيْنَابِهِ تَبِيْعًا ۝

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ
وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ
عَلَى كَثِيرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ۝

يَوْمَ نَدْعُوا كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمامِهِمْ فَمَنْ
أُوْفِيَ كِتَابُهُ بِيَمِينِهِ فَأُولَئِكَ يَقْرَءُونَ
كُتُبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ۝

وَمَنْ كَانَ فِي هَذِهِ أَعْمَى فَهَوِي فِي الْأَخْرَةِ
أَعْمَى وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۝

وَإِنْ كَادُوا لَيَفْتِنُونَكَ عَنِ الَّذِي

1. इस आयत च सधारण दिश्टी गोचर होने आह्ला अ'न्नापन स्हेई (अभीष्ट) नेई बल्के इस दा एह मतलब ऐ जे जिस आदमी ने संसार च ज्ञान ते अंतरदिश्टी कनै कम्म नेई लैता ओह परलोक च बी आध्यात्मक दिश्टी कनै महरूम (शा बाहजू) रौहग ते अल्लाह दा दर्शन नेई करी सकग। इस लेई इस दा अर्थ सिर्फ आध्यात्मक अ'न्नापन ऐ।

तुगी सख्त शा सख्त अजाब च पाई दिंदे तां जे तू (उंदे शा डरियै) इस कलाम दे सिवा किश दूई गल्लां (अपने पासेआ) घड़ियै साढ़े पासै संबोधत करी देणें ते (जेकर तू ऐसा करदा तां) ओह ऐसी दशा च तुगी यकीनन गै अपना पक्का मित्र बनाई लैंदे ॥ 74 ॥

ते जेकर अस तुगी (कुरआन देइयै) मजबूत नेई करी चुके दे होंदे तां बी तू (ईश-वाणी दे बिना बी) उंदी गल्लें पर मता-घट्ट ध्यान दिंदा (पर हून ते तुगी ईश-वाणी ने स्हेई रस्ता सुझाई दिता ऐ) ॥ 75 ॥

ते जेकर तू (उंदे बिचार मताबक) झूठ घड़ने आहला होंदा तां ऐसी दशा च अस तुगी जीवन दा घोर संकट ते मौती दा सख्त अजाब चखांदे ते तू साढ़े मकाबले पर अपना कोई बी मदादी नीं पांदा (ढूंडी सकदा) ॥ 76 ॥

ते ओह यकीनन तुगी इस देसै चा कड्ढी लाने आस्तै केई चाल्लीं दे हीले करदे रौहदे न तां जे तुगी डराइयै देसै चा बाहर कड्ढी देन, पर (जेकर ऐसा होआ तां) ओह (आपू बी) तेरे बा'द किश चिर गै सुरक्खत रौहडन (ते तौले गै तबाह होई जाडन) ॥ 77 ॥

एह ब्यहार साढ़े उस ब्यहार दे मताबक होग जो असें तेरे शा पैहलके (होई गेदे) अपने रसूलें (दी जातियें) कनै कीता हा ते तू साढ़े कम्म करने दे तरीकें च किसै चाल्ली दा बी कोई फर्क नेई दिखगा ॥ 78 ॥ (रुकू 8/8)

तू सूरज घरोंदे (मौकै) शा लेइयै रातीं गुप्प-हेरा होई जाने तक (बक्ख-बक्ख घड़ियें च) चंगी-चाल्ली नमाज पढ़ा कर ते (सवैरे) बडलै कुरआन पढ़ने गी बी (जरूरी समझ)।

أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ لَتَقْتَرِي عَلَيْنَا غَيْرَهُ
وَإِذَا لَا تَخَذُوكَ خَلِيلًا ۝

وَلَوْلَا أَنْ تَبْتُلَنَا لَقَد كُنتَ تَرَكُنَ
إِلَيْهِمْ شَيْئًا قَلِيلًا ۝

إِذَا لَا ذَقْنَاكَ ضَعْفَ الْحَيَاةِ وَضَعْفَ
الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُكَ عَلَيْنَا نَصِيرًا ۝

وَإِنْ كَادُوا لَيَسْتَفْرِزُواكَ مِنَ الْأَرْضِ
لِيُخْرِجُوكَ مِنْهَا وَإِذَا لَا يَلْبَثُونَ
خَلْفَكَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

سِنَّةٍ مَنْ قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُسُلِنَا
وَلَا تَجِدُ لَسُنَّتِنَا تَحْوِيلًا ۝

أَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِ الشَّمْسِ إِلَى عَسَقِ
الْيَلِّ وَقُرْآنَ الْفَجْرِ ۝ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ

बडलै (कुर'आन) दा पढ़ना यकीनन (अल्लाह दे हजूर च इक) उत्तम (प्यारा) कर्म ऐ ॥ 79 ॥

كَانَ مَشْهُودًا ۝

ते रातीं बेलै किश सेई लैने बा'द इस (कुर'आन) राहें जागा कर जेहका तैरे पर इक खास उपकार ऐ। (इस चाल्ली) पूरी मेद ऐ जे तेरा रब्ब तुगी प्रशंसा आहले (सनमान जोग) थाहरै पर खडेरी देरे ॥ 80 ॥

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَجَدَ بِهَا نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسَىٰ أَن يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا ۝

ते आखी दे, हे मेरे रब्ब! मिगी ठीक चाल्ली (दबारा मक्का च) दाखल' कर ते पिच्छें रौहने आहली अच्छी याद दे रूप च गै मक्का थमां कड्ड ते अपने पासेआ मेरा कोई मदादी (ते) गुआह नयुक्त² कर ॥ 81 ॥

وَقُلْ رَبِّ أَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ۝

ते सारे लोकें गी आखी दे जे हून सच्च आई गेआ ऐ ते झूठ नस्सी गेआ ऐ ते झूठ ते है गै नस्सी जाने आह्ला ॥ 82 ॥

وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَرَهَقَ الْبَاطِلُ ۗ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ۝

ते अस कुर'आन बिच्चा बल्लें-बल्लें ओह शिक्षा उतारा करने आं जो मोमिनं आस्तै शफा ते रैहमत (दा मूजब) ऐ, पर जालमें गी सिर्फ घाटे च गै बधांती ऐ ॥ 83 ॥

وَتُنزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شَفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۗ وَلَا يَزِيْدُ الظَّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ۝

ते जिसलै अस मनुक्खै गी इनाम प्रदान करचै तां ओह विमुख होई जंदा ऐ ते अपने पैहलू गी उस शा दूर करी लैंदा ऐ ते जिसलै उसी तकलीफ पुजै तां ओह अति-ऐंत नराश होई जंदा ऐ ॥ 84 ॥

وَإِذَا نَعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَتَأْبِيْجٰنِيْهِ ۗ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرْكَٰنَ يُوَسْوِسُ ۝

- हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. मक्का शैहरै थमां निकले ते पैहलें हे ते फी मदीना शैहरै च दाखल होए पर अल्लाह नै दाखल होने दा बर्णन पैहलें कीता ऐ ते निकलने दा उसदे बा'द। दाखल करने दा मतलब मदीना च दाखल होना नै बल्के मक्का विजय करिये दबारा उस च प्रवेश करना अभीष्ट ऐ। इस चाल्ली अल्लाह नै तुसंगी उस दुख-सुख थमां बचाई लैता जो मक्का छोड़ने करी तुसंगी पुजौ सकदा हा। यानी मक्का छोड़दे गै तुसंगी दस्सी दिता जे तुस दबाय मक्का च औंगे ओ॥
- इस च हजरत अबू-बकर पासै शारा ऐ ते प्रार्थना सखाई ऐ जे हे अल्लाह। मिगी अपने पासेआ सचाई दा गुआह ते मदादी प्रदान कर।

तू उनेंगी आखी दे जे साढ़े चा हर इक गरोह् अपने-अपने ढंगें कम्म करा करदा ऐ। इस लेई (अपने रब्ब उप्पर गै फैसला छोड़ी देओ) की जे थुआड़ा रब्ब उस मनुक्खै गी चंगी-चाल्ली जानदा ऐ जो ठीक रस्ते पर ऐ। (इस लेई उसदा फैसला सच्चे दी सचाई गी जरूर रोशन करी देग) ॥ 85 ॥ (रुकू 9/9)

ते ओह तेरे शा रूह (आत्मा) बारै सुआल करदे न। तू उनेंगी आख जे रूह मेरे रब्ब दे हुकम कन्ने (पैदा होई दी) ऐ ते तुसंगी (उस दे बारै) बड़ा थोड़ा इलम दिता गेदा ऐ ॥ 86 ॥

ते जेकर अस चाहचै तां यकीनन जो (अल्लाह दा कलाम) असें तेरे पर बह्वी (राहें नाजल) कीते दा ऐ उसी (इस संसार चा) चुक्की लैचै। फी तू इस गल्ला च साढ़े खलाफ अपने आस्तै कोई कम्म बनाने आह्ला नेई पागा ॥ 87 ॥

सिवाए इस दे जे तेरे रब्ब दी (खास) रैहमत होऐ (जो इसी बापस लेई आवै, मगर एह कुरआन मिटी नेई सकदा की जे) तेरे पर तेरे रब्ब दी अपार मेहर ऐ ॥ 88 ॥

तू उनें गी आख जे जेकर इन्सान (बी) ते जिन्न' (बी) इस कुरआन जैसी कोई दूई कताब आहनने आस्तै किट्टे होई जान तां (बी) ओह इयै नेही कताब नेई आहनी सकउन, चाहे ओह इक-दूए दे मदादी (गै की नेई) बनी जान ॥ 89 ॥

ते असें इस कुरआन च यकीनन हर इक (जरूरी) गल्लै गी बक्ख-बक्ख रूपें च ब्यान

قُلْ كَلَّا يَعْْمَلُ عَلَىٰ شَاكِلَتِهِ ۖ فَرَبُّكُمْ
أَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ أَهْدَىٰ سَبِيلًا ۖ ﴿١٥﴾

وَيَسْتَأْذِنُكَ عَنِ الرُّوحِ ۖ قُلِ الرُّوحُ
مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ
إِلَّا قَلِيلًا ۖ ﴿١٦﴾

وَلَيْسَ شَيْئًا لَّنْذَهَبَنَّ بِالَّذِي أَوْحَيْنَا
إِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُكَ بِهِ عَلِيمًا وَكَيْلًا ۖ ﴿١٧﴾

إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۖ إِنَّ فَضْلَهُ
كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا ۖ ﴿١٨﴾

قُل لِّبِنِ اجْتَمَعَتِ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَىٰ
أَنْ يَأْتُوا بِمِثْلِ هَذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ
بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ
ظَاهِرًا ۖ ﴿١٩﴾

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ

कीते दा ऐ, फी बी बड़े-हारे लोकें (इस दे बाँरे) कुफर दा रस्ता अपनाने दे सिवा सारी गल्लें दा इन्कार करी दिता ऐ ॥ 90 ॥

ते उनें (एह बी) आखे दा ऐ (जे) अस कदें बी तेरी (कोई) गल्ले नेईं मनगे, जदू तक (ऐसा नेईं होऐ जे) तू साढ़े आस्तै धरती चा कोई सुंभ (चश्मा) नेईं बगाईं देरें ॥ 91 ॥

जां तेरा खजूरें ते अंगूरें दा कोई बागु होऐ ते ओहदे च खूब (मतियां) नैहरा बगाईं देरें ॥ 92 ॥

जां जियां तेरा आखना ऐ, तू साढ़े उप्पर गासै दे टुकड़े सुट्टी देरें जां फी अल्लाह ते फरिशतें गी (साढ़े) सामनै आहनी खडेरी देरें ॥ 93 ॥

जां तेरा सुन्ने दा कोई घर होऐ, जां तू गासै पर चढ़ी जाए ते अस तेरे (गासै पर) चढ़ी जाने पर बी ईमान नेईं आहनगे जां तक जे तू (उप्पर जाइयै) साढ़े पर कोई कताब (नेईं) उतारें जिसी अस (आपू) पढ़ी लैचै तू (उनेंगी) आख (जे) मेरा रब्ब (ऐसी गल्लें शा) पाक ऐ अऊं (ते) सिर्फ मानव रसूल आं (गासै पर नेईं जाईं सकदा) ॥ 94 ॥ (रुकू 10/10)

ते उनें लोकें गी उस हदायत पर, जो उंदे कश आई, ईमान आहनने च सिर्फ इस गल्ला नै

مِنْ كُلِّ مِثْلٍ فَأَلْبَىٰ أَكْثَرَ النَّاسِ
إِلَّا كُفُورًا ۝

وَقَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ تَفْجُرَ لَنَا
مِنَ الْأَرْضِ يَنْبُوعًا ۝

أَوْ تَكُونَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ تَحْتِهَا عَيْنٌ
فَتَفْجُرَ الْأَنْهَارَ خِلْفَهَا تَفْجِيرًا ۝

أَوْ تُسْقِطَ السَّمَاءَ كَمَا زَعَمَتْ عَلَيْنَا
كِسْفًا أَوْ تَأْتِي بِلِلٍّ مِّنَ الْمَلَكِ قَبِيلًا ۝

أَوْ يَكُونَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ رُّحْرَفٍ أَوْ
تَرْفٌ فِي السَّمَاءِ ۖ وَلَنْ نُؤْمِنَ لِرُقَيْبِكَ
حَتَّىٰ تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتَابًا نَّقْرُؤُهُ ۗ
قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيَ هَلْ كُنْتُ إِلَّا
بَشَرًا رَسُولًا ۝

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمْ

1. इस दा मतलब अज्ञाब ऐ।

2. इस आयत थमां साफ-स्पष्ट ऐ जे 'मेराज' दा चमत्कार बी इन्कार करने आहलें आस्तै काफी नेईं हा। ओह इस गल्ला पर अड़े दे हे जे गासै पर जाने दी गल्ले अस उसलें गै मनगे जिसलें तुस इक कताब गी उप्पर उतारियै लेईं आओ जिसी अस बूहियै दिखचै ते पढ़ी सकचै, नेईं तां छड़ा एह आखी देना जे अऊं गासै पर गेआ हा, साढ़े आस्तै काफी नेईं होग।

3. अर्थात् इक मानव-रसूल गासै पर नेईं जाईं सकदा ऐ। रूहानगी ऐ जे मुसलमान इस सचाईं दे होंदे होईं बी हजरत मसीह गी इस्सै भौतक शरीर समेत गासै पर जाँदा मनदे न, जिसलें के ओह कुरआन दे कथन मताबक सिर्फ इक मानव-रसूल हे।

रोके दा ऐ, जे उनें (अपने दिलें च) आखेआ (जे) क्या अल्लाह ने इक बंदे गी रसूल बनाइयै भेजी दिता ऐ ॥ 95 ॥

तूं (उनेंगी) आख जे अगर धरती पर फरिश्ते (बसदे) होंदे जेहके धरती पर इत्मीनान (मजे) कनै चलदे-फिरदे तां (उस सूरत च) अस जरूर उंदे पर गासै थमां कुसै फरिश्ते गी (गै) रसूल बनाइयै उतारदे ॥ 96 ॥

तूं (उनेंगी) आख (जे) मेरे ते थुआड़े बिच गुआह दे तौरा पर अल्लाह गै काफी ऐ। ओह अपने बंदें गी जानने आह्ला (ते) दिक्खने आह्ला ऐ ॥ 97 ॥

ते जिसी अल्लाह हदायत देऐ ऊऐ हदायत पर होंदा ऐ ते जिसी ओह गुमराह करी देऐ तां तुगी उसदे (यानी अल्लाह दे) बराबर उस व्यक्ति दा कोई बी मदादी नेई मिलग ते क्यामत आहलै दिन अस उनेंगी उंदी इच्छाएं (ते नीतें) मताबक अ'न्ने, गूंगे ते बैहरे होने दी हालत च किट्टा करगे। उंदा ठकाना ज्हन्म होग। जिसलै बी ओह (ज्हन्म थोढ़ा) ठंढा होग तां उंदे आस्तै अजाब गी होर तेज करी दिता जाग जो (अजाब दे) भड़कने आहली अग्गी दा होग ॥ 98 ॥

एह (अग्ग) उंदे (गै) कर्म दा सिला होग, की जे उनें साढ़े नशानें दा इन्कार कीता ते आखेआ जे क्या जिसलै अस मरने परेंत हड्डियां ते चूरा-चूरा होई जागे (तां असेंगी दबारा नमां जीवन प्रदान कीता जाग ते) सचें गै असें गी इक नमां मखलूक दे रूपै च दुआलेआ जाग ॥ 99 ॥

क्या ओह (अजें तक) समझी नेई सके जे ओह (हस्ती) जिसनै गासै ते धरती गी पैदा कीते दा ऐ, इस गल्ला दी समर्थ रखदा ऐ जे

سِيحْنُ الَّذِي ١٥ بَنَى إِسْرَائِيلَ ١٧

الَّذِي قَالَ إِنَّا بَعَثْنَا لِقَوْمِكَ رَسُولًا ٥

قُلْ تَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّهُ يَحْكُمُ لِقَوْمٍ يُحْكِمُونَ ٥
مُظْمِئِينَ نَزَّلْنَا عَلَيْهِمُ مِنَ السَّمَاءِ مَلَكًا رَسُولًا ٥

قُلْ كَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ٥
إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ٥

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَمُهْتَدٍ وَمَنْ يُضِلَّهُ
فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِهِ ٥
وَنَحْسَرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ
عُمِيًّا وَأَبْكَمًا وَأَصْمًا ٥
مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ
كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنَاهُمْ سَعِيرًا ٥

ذَلِكَ جَزَاءُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا
وَقَالُوا إِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا إِنْ
أَنْتَ إِلَّا مَجْهُرَةٌ ٥

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ

ओह इंदै जनेह (होर लोक) पैदा करै ते एहदे च कोई शक नई जे उसने इंदे आस्तै इक समां निश्चत कीते दा ऐ फी बी उनें जालमें सिर्फ ना-शुकरी दा रस्ता अखत्यार करी लैते दा ऐ ॥ 100 ॥

तूं (उनेंगी) आख (जे) अगर तुस मेरे रब्ब दी रहमत दे (अपार) भंडारें दे (बी) मालक होंदे तां (बी) तुस (उंदे) खर्च होई जाने दे डरें (उनेंगी) रोकी गै रखदे ते इन्सान बड़ा गै कजूस ऐ ॥ 101 ॥ (रुकू 11/11)

ते असें मूसा गी नौ रोशन नशान' प्रदान कीते हे। इस लेई तूं बनी इस्राईल थमां (उनें हालातें बारै)पुच्छ जिसलै ओह (मूसा) उंदे (मिन्न बासियें) पासै आया हा तां फिरऔन नै उस कनै आखेआ हा (जे) हे मूसा! यकीनन अरुं तुगी धोखे च फसे दा समझा करना ॥ 102 ॥

उसनै जवाब दिता (जे) तुगी यकीनन इलम होई चुके दा ऐ जे इनें (नशानें) गी सिर्फ गासैं ते धरती दे रब्ब नै (आध्यात्मक) द्रिस्टी प्रदान करने आह्ला बनाइयै उतारेआ ऐ ते हे फिरऔन! तेरे बारे च मेरा विश्वास ऐ जे तूं (अपने बुरे अरादें च) नकाम ते नामुराद रौहगा ॥ 103 ॥

इस पर उसनै उनेंगी (यानी मूसा ते उस दी कौम गी) मुल्खै थमां कड्डी लाने दा इरादा करी लैता। इसदा नतीजा एह होआ जे असें उसी ते जेहके ओहदे कनै हे, सारें गी गरक करी दिता ॥ 104 ॥

ते उसदे (डुब्बी मरनै) बा'द बनी इस्राईल गी असें आखी दिता (जे) तुस उस (बा'यदे

وَجَعَلْ لَهُمْ أَجَلًا لَا رَيْبَ فِيهِ ۖ فَأَبَى الظَّالِمُونَ إِلَّا كُفُورًا ۝

قُلْ لَوْ أَنُّكُمْ تَمْلِكُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي إِذًا لَأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنْفَاقِ ۗ وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَتُورًا ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ فَسَأَلَ بَنِي إِسْرَائِيلَ إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ يُمُوسَى مَسْحُورًا ۝

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَمَا أَنزَلَ هَؤُلَاءِ إِلَّا رَبَّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بَصَائِرَ وَإِنِّي لَأَظُنُّكَ يُفْرَعُونَ مُتَّبِعًا ۝

فَأَرَادَ أَنْ يَنْتَفِرَ مِنْهُنَّ الْأَرْضِ فَاعْرَفْنَاهُ مِنْ مَعَهُ جَمِيعًا ۝

وَقُلْنَا مَنْ بَعْدِهِ لِبَنِي إِسْرَائِيلَ اسْكُنُوا

आहले फ़लस्तीन) देश च जाइयै सुखै नै र'वो। फी जिसलै (मुसलमानें आस्तै) दूई' बार अजाब दा बा'यदा पूरा होने दा समां और तां अस तुसें सारे' गी किट्ठा करियै उत्ये' लेई औगे ॥ 105 ॥

الْأَرْضِ فَإِذَا جَاءَ وَعَدُ الْآخِرَةِ
جُنَاتِكُمْ لِفَيْمًا ۞

ते असें इस कुर'आन गी हक्र ते हिकमत कनै उतारेआ ऐ ते एह सच्च ते हिकमत कनै गै उतारेआ ऐ ते असें तुगी सिर्फ शुभ समाचार देने आहला ते अजाब थमां सोहगे करने आहला बनाइयै भेजेआ ऐ ॥ 106 ॥

وَبِالْحَقِّ أَنْزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَّلْنَا
وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۞

ते असें इसी कुर'आन बनाया ऐ ते इसदे टुकड़े-टुकड़े कीते न (यानी सूरातां बनाई दियां न) तां जे तूं इसी असान्नी कनै ते आस्ता-आस्ता लोके' गी पढ़ियै सुनाई सकै ते असें इसी थोड़ा-थोड़ा करियै उतारेआ ऐ ॥ 107 ॥

وَقَرَأْنَا فَرَقَهُ يَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَى
مَكْثٍ وَنَزَّلْنَاهُ تَنْزِيلًا ۞

तूं उनेंगी आख जे तुस एहदे पर ईमान आहनो जां नैई आहनो। जिनें लोके' गी इस (दे उतरने) थमां पैहलें (इल्हामी कताबें जां शुद्ध सभाऽ द्वारा) ज्ञान दिता गेआ ऐ। जिसलै उंदे सामने इसी पढ़ेआ जंदा ऐ तां ओह इसी सुनियै पूरी चाल्ली आज्ञा-पालन करदे होई मत्ये' दे भार डिग्गी पौंदे न ॥ 108 ॥

قُلْ أُمْتُوبَةٍ أَوْ لَا تُؤْمِنُوا إِنَّا لِلَّذِينَ
أُوتُوا الْحِلْمَ مِنْ قَبْلِهِ إِذَا يُثَلَّى عَلَيْهِمْ
يَخِرُّونَ لِلذَّاقَانِ سُجَّدًا ۞

ते ओह आखदे न साढ़ा रब्ब (त्रुटियें थमां) पवित्तर ऐ ते साढ़े रब्ब दी प्रतिज्ञा यकीनन' पूरी होइयै रौहने आहली ऐ ॥ 109 ॥

وَيَقُولُونَ سُبْحَانَ رَبِّئَاِنِ كَانَ وَعَدُ رَبِّنَا
لَمَفْعُولًا ۞

1. एहदे शा पैहलें बी मूल शब्द 'वादुल आखिरा' बरतोए दा ऐ जेहका यहूदियें दे सरबंधे' च हा। इस दे बा 'द दुबारा एह शब्द इस्तमाल होए दा ऐ। इस लेई एहदे थमां स्पष्ट ऐ जे एह दूई प्रतिज्ञा कोई होर ऐ जेहकी सिर्फ मुसलमानें दे सरबंध च गै होई सकदी ऐ। इस आस्ते असें मुसलमानें दा शब्द ब्रैकट च लिखी दिता ऐ। इस बिशे गी पैहले भाश्यकारें बी लिखे दा ऐ। दिक्को 'फ़तहूल्बयान' जेहकी असल च अल्लामा शूकानी दी रची दी ऐ।
2. यहूदियें गी त्री बार फ़लस्तीन च आहनगे। इस भविकखवाणी मूजब इम्राइलियें अजकल फ़लस्तीन उप्पर अपना कब्जा जमाई लैते दा ऐ।
3. इस ज'गा एह दस्सेआ गेदा ऐ जे जेहके यहूदी कुर'आन मजीद पर ईमान आहनी चुके दे न ओह इस गल्ला पर बी ईमान आहनदे न जे ओह इक बार परतियै फ़लस्तीन च प्रवेश करडन।

ते जिसलै ओह मत्थें दे भार डिग्गी पौंदे न तां रोंदे जंदे न ते एह कुरआन उंदी ल्हीमगी गी होर बी बधांदा जंदा ऐ ॥ 110 ॥

﴿۱۱۰﴾

तूं उनेंगी¹ आखी दे जे चाहे तुस (खुदा गी) अल्लाह आखियै बुलाओ जां रहमान। जेहका बी नांs लेइयै उसी बुलाओ (बुलाई सकदे ओ) की जे सब उत्तम गुण उसै दे न ते अपनी प्रार्थना दे शब्द उच्ची अवाज च नेई आखियै ते नां गै हौली अवाजै कनै, बल्के इस दे बिच्च-बिच्च² (बिचला) कोई रस्ता अखत्यार करी लै कर ॥ 111 ॥

ते (सारे संसार गी सुनाई-सुनाइयै) आखी दे जे हर इक स्तुति दा अधिकारी अल्लाह गै जिसदी नां ते संतान ऐ ते नां गै शासन च उसदा कोई भ्याल ऐ ते नां उसी असमर्थ दिक्खियै (ते ओहदे पर देआ करदे होई) कोई उसदा मित्तर बनदा ऐ (बल्के जेहका बी ओहदा मित्तर बनदा ऐ ओहदे थमां मदद लैने आस्तै बनदा ऐ) ते तूं चंगी चाल्ली ओहदी बड़ेआई ब्यान कर ॥ 112 ॥ (रुकू 12/12)

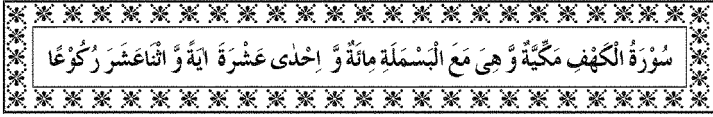
وَيَخْرُونَ لِلاذْقَانِ يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ حُشُونًا ۝

قُلِ ادْعُوا اللهَ اَوْ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ۚ اَيُّا مَاتَ دَعْوَا فَلَہِ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰی ۚ وَلَا تَجْهَرُ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافُتْ بِہَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّہٗ شَرِيْكَ فِی الْمَلٰٓئِكِ وَّلَمْ يَكُنْ لَّہٗ وَاوِيٌّ مِّنَ الذَّلٰلِ وَكَبِيْرًا ۝

ooo

1. अर्थात् ईसाइयें गी जो यहूदियें दा इक हिस्सा न ते ओह अल्लाह दे रहमान-गुण गी नेई मनदे। ईसाइयें दी कताबें च बिस्मिल्लाह शब्द ते लिखे दा होंदा ऐ, पर रहमान शब्द नेई लिखदे, की जे रहमान दा गुण उंदे बुनियादी अकीदे कफ़ारा दा खंडन करदा ऐ।
2. बड़ी उच्ची अवाज च प्रार्थना करने थमां इस आस्तै रोकेआ जे एहदे च दखावा होई सकदा ऐ ते बिल्कुल हौली अवाज च इस आस्तै रोकेआ जे बड़ी आस्ता पढ़ने कनै गल्ल भुल्ली जंदी ऐ ते तवज्जा कायम नेई रोंहदी।



सूर: अल् कहफ़

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां इक सौ जारां आयतां ते बारां रुकू न।

में अल्लाह दा नांउ लेइयै (पढ़ना) जो अनंत
किरपा करने आह्ला (ते) बार-बार रैहम
करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

हर इक स्तुति दा सिर्फ अल्लाह गै हकदार ऐ
जिसनै एह कताब अपने बंदे पर तुआरी दी ऐ
ते इस च कोई टेढ़ापन नेई रक्खेआ ॥ 2 ॥

(ते उसने इसी) सच्च कन्नै ओत-प्रोत ते
ठीक-ठीक रस्ता दस्सने आहली बनाइयै उतारे
दा ऐ तां जे ओह लोकें गी उस (अल्लाह)
पासेआ औने आहले इक सख्त अजाब थमां
सूचत करै ते ईमान आहनने आहलें गी, जेहके
नेक कम्म करदे न, शुभ समाचार देऐ जे उंदे
आस्तै अल्लाह पासेआ अच्छा बदला निश्चत
ऐ ॥ 3 ॥

ओह इस (बदले दी) ज'गा म्हेशां रौहडन
॥ 4 ॥

ते (उसनै इसी इस आस्तै बी उतारे दा ऐ) तां
जे ओह उनें लोकें गी (औने आहले अजाब
थमां) सोहगा करै जेहके एह आखदे न जे
अल्लाह नै (फलाने आदमी गी) पुत्तर बनाई
लैता ऐ ॥ 5 ॥

उनेंगी इस बारे किश बी पता नेई ते नां गै उंदे
पुरखें गी कोई पता हा। एह बड़ी बड़डी

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ
وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا ②

قِيمًا لِّيُنذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا لِمَنْ لَدُنْهُ
وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ
الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ③

مَا كَيْفَ فِيهِ آيَاتُ ④

وَيُنذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ⑤

مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ وَلَا لِآبَائِهِمْ ⑥

ध्यानक गल्ल ऐ जेहकी उंदे मूहां निकला करदी ऐ, पर ओह सिर्फ झूठ बोल्ला करदे न ॥ 6 ॥

كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ
إِنْ يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ٦

जेकर ओह इस म्हतवपूर्ण कलाम उप्पर ईमान नेई आहनन तां क्या तू उंदी चिंता च अपनी जान गुआई देगा? ॥ 7 ॥

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسِكَ عَلَىٰ آثَارِهِمْ
إِنَّ لَمْ يَأْمُرُوا بِهَذَا الْحَدِيثِ أَسَفًا ٧

जे किश इस धरती उप्पर है यकीनन उसी असें गै उसदी शोभा दा साधन बनाया ऐ तां जे अस उंदा (धरती दे बशिंदें दा) इम्तिहान लैचै जे उंदे चा कु'न सारें शा अच्छा कम्म करने आह्ला ऐ ॥ 8 ॥

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَّهَا
لِيَبْلُوَهُمْ آيُهُمْ أَحْسَنَ عَمَلًا ٨

ते जो कुछ इस धरती पर है यकीनन अस उसी इक दिन मटाइयै बीरान सतह बनाई देगे ॥ 9 ॥

وَإِنَّا لَجَاعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ٩

क्या तू समझना ऐं जे कहफ़' ते रक़ीम' आह्ले (लोक) साढे नशांनं चा कोई अचंभा (नशांन)

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ

1. मूल शब्द 'कहफ़' दा अर्थ ऐ-

(क) घरें आंगर, घरोंदा। (ख) फ़ाड़ खोतरियै बनाया गेदा मकान।

(ग) लिखना। (घ) शरणगार।

2. मूल शब्द 'अरक़ीम' दा अर्थ ऐ-

(क) मुट्टा, सुंदर ते सुस्पष्ट (साफ-साफ) लिखे दा।

(ख) कुसै चीजै पर चित्तर बनाना।

(ग) लिखना। (घ) अंकत करना। इतिहास, उल्लेख ते बक्ख-बक्ख भाष्य 'कहफ़' आहलें दा सरबंध शुरू दे ईसाइयें कन्नै जोड़दे न। साढ़ी खोज मताबक कहफ़ आहले लोक शुरू दे ईसाई हे। ओह केई सदियें तक अत्याचारें च (उत्पीड़ित) गलतान रेह। अत्याचारें दी शुरुआत इक हवारी द्वारा होई। राजा डिसीस दे राजकाल (249 थमां 251ई०) च एह अत्याचार अपनी चर्म सीमा तक पुज्जी चुके दे हे। ईसाइयें गी कनून बनाइयै दंड दिता जंदा हा। उनें गी कैदखाने च ठोकेआ जंदा हा, फी उंदा कल्ल करी दिता जंदा हा। (इन्साइकलोपीडिया आफ़ ब्रिटेनिका शब्द डिसीस ते कलीसिया दा इतिहास) राजा गलीस दे राज काल (311 ई०) च उनेंगी माफ़ करी दिता गेआ। उसनै अपने खीरी साहें मौकै उस कनून गी रद्द करी दिता जो ईसाइयें दे बरुद्ध हा। फ़लस्तीन राजा दे समै उनें अत्याचारें गी कनून बनाइयै रोकी दिता गेआ ते फी थ्यूडोसीस दे राज-काल च ईसाइयें सधापण रूप च तरक्की कीती। एह लोक इक अल्लाह गी मन्नेने आहले हे ते हज़रत ईसा गी अल्लाह दा रसूल मनदे हे। ओह अत्याचारें थमां बचने आस्तै गुफ़ाएं च जाई छपे, जिनेंगी कैटा कोम्बज आखदे न, जो रोम देश च इस्कन्द्रिया दे आसै-पासै माल्टा, सिस्ली ते नेपल्स दे लागै, तुपियां जाई चुकी दियां न। उनें गुफ़ाएं च नेकां शिलालेख बी मिले न जिंदे च उस बेले दी परिस्थितियां मूरती भाशा च अंकत न। ओह लोक उनें गुफ़ाएं दे मूहें पर कुत्ते बी रखदे हे तां जे कुत्ते दे भौंकने कन्नै अजनबी लोकें दे औने दा पता चली सकै। सुरक्षा आस्तै होर बी केई साधन जुटाए गेदे हे। (कैटा कोम्बज आफ़ रोम, लेखक मिस्टर वंजमैन स्काट)।

हे (जे जिंदी मसाल (अर्थात् उदाहरण) फी कदें बी नेई मिली सकदी होऐ) ॥ 10 ॥

जिसलै उनें किश जुआन-गभरुएं खु'ल्ली गुफा च शरण लैती ते (प्रार्थना करदे होई) उनें आखेआ जे हे साढ़े रब्ब! असंगी अपने पासेआ खास रहमत प्रदान कर ते साढ़े आस्तै इस बेलै बाँरे हदायत ते भलाई दे साधन त्यार कर ॥ 11 ॥

जेहदे पर असें उनेंगी उस खु'ल्ली गुफा च गिनती दे किश साल्लें आस्तै बाहरी गल्लां सुनने थमां महरूम करी दिता ॥ 12 ॥

फी असें उनेंगी उठाया (जगाया) तां जे अस जानी सकचै जे जिन्ना चिर ओह उत्यें ठैहरे दे रेह हे उसी (मसीह गी) दौनें अनुयायी दलें चा कु'न केहड़ा दल ज्यादा याद रक्खने आहला ऐ ॥ 13 ॥ (रुकू 1/13)

हून अस उंदा महत्तवपूर्ण समाचार तेरे सामनै स्हेई-स्हेई ब्यान करने आं। ओह किश गै गभरू हे जेहके अपने रब्ब पर सच्चा ईमान लेई आए हे। असें उनेंगी हदायत च होर बी बधाया हा ॥ 14 ॥

ते जिसलै ओह (अपना देश छोड़ने आस्तै) उट्टे तां असें उंदे दिलें गी मजबूत बनाई दिता उसलै उनें इक-दूए गी आखेआ जे साढ़ा रब्ब ते गासैं ते धरती दा रब्ब ऐ। अस ओहदे अलावा कुसै दूए उपास्य गी कदें बी नेई पुकारगे नेई ते अस इक हक़ थमां दूर परें दी गल्ल करने आहले होगे ॥ 15 ॥

इनें (साढ़ी जाति दे) लोकें सच्चे उपास्य गी छोड़ियै (अपने आस्तै) दूए उपास्य बनाई

وَالرَّاقِمِ ۗ كَانُوا مِنَّا عَجَبًا ۝

إِذْ أَوَى الْفِتْيَةَ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا
رَبَّنَا آتِنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا
مِن أَمْرِنَا رَشَدًا ۝

فَصَرَبْنَا عَلَىٰ آذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ
عَدَدًا ۝

ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ الْجَرْبِينَ أَحْسَى
لِمَا لَبِئُوا أَمَدًا ۝

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم بِالْحَقِّ ۗ إِنَّهُمْ
فِيئَتِيَّ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ۝

وَرَبَطْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا
رَبَّنَا رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَنْ نَدْعُوكَ
مِن دُونِهَا لَقَدْ قَلْنَا إِذَا شَطَطًا ۝

هَؤُلَاءِ قَوْمًا اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ

लैते न। ओह उंदी सचाई पर की कोई रोशन ते ठोस सबूत पेश नेई करदे? फी (ओह की नेई समझदे जे) जेहका मनुक्ख अल्लाह उप्पर झूठ घड़े ओहदे थमां बदध अत्याचारी दूआ कु'न होई सकदा ऐ? ॥ 16 ॥

ते हून जिसलै के तुस ओहदे शा ते उस चीजै शा बी जिसदी ओह अल्लाह दे अलावा पूजा करदे न, कनारा करी लैता ऐ तां हून तुस इस खु'ल्ली प्हाड़ी पनाहगाह च बैठे रौह। (ऐसा करगे ओ तां) थुआड़ा रब्ब अपनी रैहमत दी कोई राह थुआड़े आस्तै खोहली देग ते थुआड़े आस्तै थुआड़े इस मामले च कोई स्थूलत दा समान पैदा करी देग ॥ 17 ॥

ते (हे श्रोता!) तू सूरज गी दिक्खना ऐं जे जिसलै ओह चढ़दा ऐ तां उंदी खु'ल्ली गुफा' आहली पनाहगाह दे सज्जे पासेआ थोढ़ा हटियै लंघदा ऐ ते जिसलै ओह अस्त होंदा ऐ तां उंदे खब्बे पासेआ थोढ़ा हटियै लंघदा ऐ ते ओह उस गुफा दे अंदर इक खु'ल्लै थाहर रौहदे हे। एह गल्ल अल्लाह (दी मदद) दे नशानें चा इक नशान ऐ। जिसी अल्लाह हदायत दी राह दससै ऊऐ हदायत पर होंदा ऐ ते जिसी ओह गुमराह करै तां तू उसदा कदें कोई दोस्त (ते) मार्ग दर्शक नेई पागा (दिखगा) ॥ 18 ॥ (रुकू 2/14)

ते (हे श्रोता!) तू उनेगी जागा करदे समझना ऐं, हालांके ओह सुते दे न। अस² उनेगी सज्जे

لَوْلَا يَأْتُونَ عَلَيْهِمُ بِسَاطِنٍ بَيْنِ يَدَيْهِمْ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝

وَإِذْ اعْتَرَّتْهُمُ مَوْتُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَأَوْا إِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهِ وَيَهَيِّئْ لَكُمْ مِنْ أَمْرِكُمْ مَرْفَقًا ۝

وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَتْ تَوَارِعًا مِّنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَقَرُّصُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِّنْهُ ۚ ذَلِكَ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ لَعَلَّ الْمُتَدَبِّرِينَ يَتَذَكَّرُونَ ۝

۝

وَتَحْسَبُهُمْ آيِقَاطًا وَهُمْ رُقُودٌ ۝

1. कहफ़ - गुफा आहला थाहर इस चाल्ली हा जे सूरज बडलै उंदे सज्जे पासेआ होइयै लंघी जंदा हा ते संजा बी खब्बे पासेआ लंघदा हा।
2. अर्थात् इक बेलै कहफ़ आहलें दा दुनियां भर च सारै प्रसार होई जाग ते एह फैलीं जाने आहली जाति यूरोप दे ईसाई न। इस लेई कहफ़ कन्ने संबंधत (अभीष्ट) इयै यूरोपियन न।

पासै बी फेरगे ते खब्बे पासै बी, उंदा कुत्ता¹ बी (उंदे लागै) बेहड़ै हत्थ फलाए दे मजूद रौहग। जेकर तू उंदे हालात दा बाकफ होई जाए तां तू उंदे शा नस्सने² लेई अपनी पिट्ट फेरी लै, ते उंदा दबदबा ते आतंक तेरे उप्पर छाई जा ॥ 19 ॥

ते इससै चाल्ली असें उनेंगी (बे-बसी दी हालत थमां) चुक्केआ, एहदे पर ओह इक-दूए कनै रूहानगी नै सुआल करन लगे। उंदे चा इक नै आखेआ जे तुस इत्थें किन्ना चिर ठैहरे दे रेह ओ? (जेहके उसदे श्रोता हे) ओह बोल्ले जे अस इक दिन जां किश चिरे आस्तै ठैहरे दे आं। (फी) उनें (यानी दूए) आखेआ (जे) जेहका (अरसा) तुस (इत्थें) ठैहरे दे रेह ओ उसी थुआदा रब्ब (गै) बेहतर जानदा ऐ। इस आस्तै (इस बैहस गी छोड़ो)³ एह अपने पुराने सिक्के देइयै अपने चा कुसै इक गी इस शैहरे बक्खी भेजो ओह (जाइयै) दिक्खै जे इस शैहर च कुस दा गल्ला सारें शा अच्छा ऐ। फी (जिसदा गल्ला सारें शा अच्छा होऐ) उस शा किश खाने दा समान लेई आवै ते ओह हुशयारी कनै (लोकें दी) भेद भरोची गल्लां जानने दी कोशश करै ते थुआड़े बारै कुसैगी (कुसै बी सूरत च) पता नेई लगन देरे ॥ 20 ॥

की जे जेकर ओह तुंदे पर गल्बा पाई लैन तां यकीनन तुसैंगी पथरैदू करी देडन जां (जबरन) तुसैंगी अपने म'जब च दाखल करी लैडन ते

وَوَقَّلْبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَذَاتَ الشِّمَالِ
وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ
لَوِاطَلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا
وَلَمَلَّيْتَ مِنْهُمْ رُعبًا ۝

وَكَذَلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا بَيْنَهُمْ
قَائِلِينَ مِنْهُمْ كَمَا لَبِثْتُمْ قَالُوا لَبِثْنَا
يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَالُوا رَبُّكُمْ
أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ قَابَعْتُوا أَحَدَكُمْ
يُورِقِكُمْ هَذِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ فَلْيَنْظُرْ
أَيُّهَا أَرْكَى طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِنْهُ
وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ۝

أَنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ
أَوْ يَحْدِقُونَكُمْ فِي مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوا

1. पालतू कुत्ते जिसलै घरै दी रखोआली आस्तै बाहर बाँहदे न तां धरती पर अपने हत्थ फलाइयै बाँहदे न। यूरोप दे मते-सारे लोक कुत्ते पालदे न। इत्थें इससै पासै संकेत कीता गेदा ऐ।
2. पच्छिम जां उत्तर दे बासी पूर्व जां दक्खन दे लोकें थमां इस चाल्ली बवियै रौहडन जे उंदे घरें च बिना सूचना दित्ते जाना, पूर्व दे लोकें आस्तै नाममकन होग।
3. अर्थात् जिसलै कहफ़ आहलें पर संसार दा इतिहास भलेआं स्पष्ट होई गेआ ते उनेंगी पैहलें दी निसबत किश शांति लब्धी तां उनें अपने पुराने सिक्के देइयै अपने चा किश लोकें गी गल्ला खरीदने आस्तै भेजेआ।

इस सूत्र च तुस कदें (बी) कामयाब नेई होई सकगे ॥ 21 ॥

إِذَا أَبَدًا ①

ते इससै चाल्ली असें (लोकें गी) उंदे (हालात थमां) जानकारी कराई ऐ तां जे उनेंगी पता लगै जे अल्लाह दा बा'यदा पूरा होई रौहने आहला ऐ ते (एह बी) जे उस (निश्चत) घड़ी (दे औने) च किश बी शक्क नेई (ते उस बेले गी बी चेता करो) जिसलै ओह अपने कमै बारै आपू-चें गल्ल -बात करन लगे ते उनें (इक-दूए कनै) आखेआ (जे) तुस इंदे रौहने आहले थाहरै पर कोई अमारत बनाओ। उंदा रब्ब (उंदी हालत गी) सारें शा बेहतर जानदा हा। आखरकार जिनें अपनी गल्ल-बात पर बिजे पाई लैती उनें गलाया जे अस ते उंदे नवास स्थान पर मस्जिद' (गै) बनागे ॥ 22 ॥

ओह (लोक जो हकीकत थमां बे-खबर न जरूर) गैब बारै अटकल पचू गल्लां करदे होई (कदें) आखडन (जे ओह सिर्फ) त्रै (आदमी) हे। जिंदे कनै चौथा उंदा कुत्ता हा ते (कदें^२ एह) आखडन (जे ओह) पंज हे जिंदे कनै छेमां उंदा कुत्ता हा ते (उंदे चा किश इयां बी) आखडन (जे ओह) सत्त हे ते उंदे कनै अठमां उंदा कुत्ता^३ हा। तू (उनेंगी) आख (जे) उंदी (स्हेई) गिनती गी अल्लाह (गै) बेहतर जानदा ऐ। (ते) थोढ़े^४ लोकें दे सिवा उनेंगी कोई नेई जानदा। इस आसतै तू

وَكَذَلِكَ أَعْتَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا ۗ إِذِيتَنَّا زُعُونَ بَيْنَهُمْ أَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِمْ بُيُوتًا ۗ رَبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ ۗ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَسْجِدًا ۖ

سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ ۗ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ۗ قُلْ رَبِّيَ أَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ ۗ فَلَا تُمَارِفْهُمْ إِلَّا مَرَاءً ظَاهِرًا ۗ وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِمْ مِنْهُمْ أَحَدًا ۖ

1. इत्थें मस्जिद दा मतलब गिरजा ऐ, की जे ईसाई लोक मस्जिद दी जगह गिरजा बनांदे न ते हून बी केटा कोम्बज दे द्वार पर गिरजा घर बने दा ऐ जेहदे च कहफ़ आहले रौहदे न।
2. एह पुरानी गुफें दे बक्ख-बक्ख कमरें दा व्योरा ऐ। किश कमरें दे शिलालेख दसदे न जे उत्थें त्रैं आदमियें पनाह लैती ही। इससै चाल्ली बक्ख-बक्ख कमरें बारै बक्ख-बक्ख गिनती दस्सी गेदी ऐ।
3. केटा कोम्बज च पनाह लैने आहले ईसाइयें कनै हर थाहर कुत्ता बी दस्सेआ गेदा ऐ।
4. कुरआन मजौद दसदा ऐ जे कहफ़ आहलें दी संख्या गी सिर्फ थोढ़े हारे लोक जानदे न, पर रूहानगी एह ऐ जे भाष्य ते टीकां दिखचै तां इयां लगदा ऐ जे कहफ़ आहलें दी गिनती दी जानकारी बच्चे-बच्चे गी ऐ।

उंदे बाँरे तगड़ी बैहस दे अलावा कोई बैहस
नेई कर। ते उंदे बाँरे उंदे चा कुसै थमां सचाई
बाँरे नेई पुच्छ ॥ 23 ॥ (रुकू 3/15)

ते तूँ' कुसै गल्लै बाँरे (पक्के तोरा पर) कदें
नेई आख (जे) अ'कं कल्ल एह (कम्म)
जरूर करगा ॥ 24 ॥

हां! (सिर्फ इस चाल्ली करगा) जिस चाल्ली
अल्लाह चाहग। ते जदूँ कुसै बेलै तूँ भुल्ली
जाएँ (तां याद आई जाने पर) अपने रब्ब (दे
बा'यदे) गी याद (करी लै) कर ते आखी
देआ कर (जे मिगी पूरी) मेद ऐ जे मेरा रब्ब
(आखर मिगी कामयाब करी देग ते) मिगी
इस रस्तै उप्पर चलाग जेहका हदायत पाने दे
लिहाज्ज कनै इस (रस्ते) थमां (जो मेरा सोचे
दा ऐ) ज्यादा करीब होग ॥ 25 ॥

ते (किश लोक एह बी आखदे न जे) ओह
अपनी खु'ल्ली पनाह-गाह च त्रै सौ साल'
तक रेह हे ते (इस अरसे पर) नौ (साल)
उनें होर बधाए हे ॥ 26 ॥

तूँ (उनेंगी) आख (जे) जिन्ना (अरसा गुफा
च) ओह ठैहरे दे रेह उसी अल्लाह (गै)
बेहतर जानदा ऐ। गासें ते धरती दे गैब दी
जानकारी उससै गी ऐ, ओह खूब दिक्खने
आहला ते खूब सुनने आहला ऐ। उनें लोकें

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَيْءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَٰلِكَ
عَدَاً ۚ

إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۗ وَاذْكُرْ رَبَّكَ إِذَا
سَبَّيْتَ وَقُلْ عَسَىٰ أَنْ يَهْدِيَنِّي رَبِّي
لِأَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ۝

وَلَيْسُوا فِي كُفْرِهِمْ ثَلَاثَ مِائَةٍ سِنِينَ
وَأَزْدًا وَاتَّسَعًا ۝

قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَيْسُوا لَهُ غَيْبِ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ أَنْصِرْ بِهِ وَأَسْمَعْ
مَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ ۗ وَلَا يُشْرِكُ

1. कहफ़ आहलें जां ईसाइयें दा मकाबला मुसलमान अपनी शक्ति कनै नेई करी सकडन बल्के अल्लाह दी मदद कनै गै करी सकडन। इस आस्तै जिसलै उंदे मकाबले दा समां आई जा तां बड्डे बोल नेई बोलो जे अस एह-एह करी देगे, बल्के एह आखा करी जे जेकर अल्लाह चाह तां अस उंदा मकाबला इस-इस चाल्ली करगे।
2. इतिहास थमां पता लगदा ऐ जे ईसाइयें पर बक्ख-बक्ख देशें च केई मौकें पर अत्याचार होए हे। इक बारी रोम च उंदे पर मते अत्याचार होए तां दूए समे च इस्कन्दिया च, की जे इस्कन्दिया बी रोम आहलें दे अधीन आई गेदा हा। इनें अत्याचारें दे करियै कदें ते ओह लम्मे समे तक गुफा च छपने पर मजबूर होए ते कदें थोडे समे आसलै। लोकें अज्ञानता करी कष्टें दे थोड़े-थोड़े समे गी लगातार ते स्थाई समझी लैता ते फी अनुमान लान लगे, उनें अनुमानें दा इस आयत च खंडन कीता गेदा ऐ जे एह अनुमान बक्ख-बक्ख समें गी सामने रक्खियै लाया गेदा ऐ, नेई तां सारा समां जो इस जाति पर बीतेआ, उसदा इलम सिर्फ अल्लाह गी गै ऐ।

दा उस दे सिवा कोई भी मददगार नेई ऐ ते ओह अपने हुकम (ते अपने फैसलें) च कुसै गी (अपना) शरीक नेई बनांदा ॥ 27 ॥

ते तेरे रब्ब दी कताब बिच्चा जो (हिस्सा) तेरे पर वह्वी (राहें नाज़ल) होंदा ऐ उसी पढ़ (ते लोकें गी सुनाऽ) उसदी गल्लें गी कोई भी तब्दील करी सकने आह्ला नेई ऐ ते उसी छोड़ियै तुगी पनाह गितै थाहर कोई भी नेई मिलग ॥ 28 ॥

ते अपने आपै गी उनें लोकें कनै रक्ख जो अपने रब्ब दी खुशी चांहदे होई संजां-भ्यागा उसी पुकारदे न ते तेरी नजरां उनेंगी¹ पिच्छें छोड़ियै अगमें नेई निकली जान (ते जेकर तू ऐसा करगा तां) तू संसारक जीवन दी शोभा (लिशक-मिशक) दा चाहने आह्ला होगगा ते जिसदे दिल गी असैं अपनी याद कनै गाफल करी दिते दा होऐ ते उसने अपनी तुच्छ खाहिशें दी पैरवी अखत्पार कीती दी होऐ ते उस दा मामला हद्द थमां बधी चुके दा होऐ, उसदी फरमांबरदारी नेई कर ॥ 29 ॥

ते (लोकें गी) आखी दे (जे) एह सचाई थुआड़े रब्ब पासेआ गै (नाज़ल होई दी) ऐ, इस लेई जो चाह (उस पर) ईमान लेई आवै ते जो चाह (उस दा) इन्कार करी देऐ (मगर एह याद रक्खै जे) असैं जालमें आस्तै यकीनन इक अगग त्यार कीती दी ऐ जिस दी चारदवारी नै (हून बी) उनेंगी घेरी रक्खे दा ऐ ते जेकर ओह फरेआद करडन तां ऐसे पानी कनै उंदी फरेआद सुनी जाग जेहका पिरघले दे तांबे आंगर होग (ते) चेहरें गी झुलसी देग। ओह बौहत बुरी पीने दी चीज होग ते ओह (अगग) बुरा ठकाना होग ॥ 30 ॥

فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ۝

وَإِنَّ مَا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۚ
لَا مَبْدَلَ لِكَلِمَتِهِ ۗ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُونِهِ
مُلْتَحَدًا ۝

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ
رَبَّهُمْ بِالْعَدْوَةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ
وَجْهَهُ وَلَا تَعْدُ عَيْنُكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ
زِينَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۗ وَلَا تَطْغِ مِنْ
أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ
وَكَانَ امْرَأَةً قُرْطًا ۝

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ ۗ فَمَنْ شَاءَ
فَلْيُؤْمِنْ وَمَنْ شَاءَ فَلْيُكْفُرْ ۗ إِنَّا
أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا ۗ أَحَاطَ بِهِمْ
سُرَادِقُهَا ۗ وَإِنْ يَسْتَعِينُوا يَأْتُوا بِمَاءٍ
كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ ۗ بِئْسَ
الشَّرَابُ ۗ وَسَاءَتْ مَرْتَفَعًا ۝

1. अर्थात् सहाबा दे बलिदानें गी नेई धुल्लेओ।

(हां) जेहके लोक ईमान ल्याए न ते उनें नेक (ते मनासब) कर्म कीते दे न (ओह यकीनन बड़े ईनाम पाडन) जिनें चंगे कम्म कीते दे होन अस उंदा ईनाम (प्रतिफल) कदें बी जाया नेई करदे ॥ 31 ॥

(हां! हां!) इनें लोकें आसतै स्थाई नबास दे बाग (निश्चत न)। (उंदे च) उंदे (अपने इंतजाम दे) खल्ल नैहरां बगदियां होडन। उंदे आसतै उंदे च सुन्ये दे कंगनें दी किसमै दे बंधे-गैहने बनोआए जाडन ते ओह बरीक रेशम दे ते मुट्टे रेशम दे सब्ज कपड़े लाडन। ओह उस सुर्ग च सज्जे-सजाए दे पलंगें उप्पर तकिये रक्खियै बैठे दे होडन। एह किन्ना अच्छा बदला ऐ ते ओह बड़ा गै अच्छा ठकाना ऐ ॥ 32 ॥ (सकू 4/16)

ते तू उंदे सामनै उनें दौं आदमियें दी हालत ब्यान कर जिंदे चा इक गी असें अंगुरें दे दो बाग? दित्ते हे ते असें उनें बागें गी चपासेआ खजूरें दे बूहटें कनै घेरी रक्खेआ हा ते असें उंदे (दौनें दी सम्पत्ति) बिच किश खेती बी पैदा कीती ही ॥ 33 ॥

उनें दौनें बागें अपना भरपूर फल दित्ता ते ओहदे चा किश बी घट्ट नेई कीता ते असें उंदे दौनें बश्कार इक नैहर^३ बगाई ही ॥ 34 ॥

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ۝

أُولَئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيُلبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ نِعْمَ الثَّوَابُ ۗ وَحَسَّتْ مُرْتَفَقًا ۝

وَأَضْرِبُ لَهُمْ مَثَلًا رَجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَاهُمَا بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زُرْعًا ۝

كَلَّمَا الْجِنَّتَيْنِ اتَتْهُمَا وَلَهُ نَقْلُهُمُ مِنْهُ سَيِّئًا وَفَجَّرْنَا خِلْفَهُمَا نَهْرًا ۝

1. दौनें आदमियें दा मतलब मुसलमान ते ईसाई जातियां न।
2. बाग दा मतलब इम्राईली जाति गी मिलने आहली दौलत ते संतान (उलाद) ऐ। इथ्वें इम्राईली जाति दे दौं दलें दा जिकर ऐ ते मतलब एह ऐ जे ईसाई जाति दी पैहली बार तरक्की दे बा'द उंदी कमजोरी दा समां आँग फी दबारा भौतिक उन्नति करन लगी पौडन।
3. 'नैहर' दा मतलब हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाम दा युग ऐ जिंदे द्वारा हजरत मूसा ते हजरत ईसा दी हकीकी तालीम दा किश हिस्सा जिंदा (बाकी) रेहा।

ते उस आदमी गी बड़ा फल मिलदा होंदा हा ।
इस करी उसनै अपने साथी ¹ गी ओहदे कनै
गल्लां करदे होई (फखर कनै)आखेआ जे
दिक्ख ! तेरी निसबत मेरा धन ज्यादा ऐ ते मेरा
जत्था बी इज्जत आह्ला ऐ ॥ 35 ॥

ते इक बार ओह (ईसाई) अपनी जान पर
अत्याचार करदे होई अपने बागै च गेआ ते
उसने (अपने साथी कनै)आखेआ जे अऊं
एह नेई समझदा जे मेरा एह बाग कदें तबाह
होग ॥ 36 ॥

ते अऊं नेई समझदा जे ओह(तबाही दे बा'यदे
आहली)घड़ी कदें औने आहली ऐ ते मिगी
जेकर मेरे रब्ब पासै परताई बी दिता जा तां
यकीनन अऊं (उत्थें बी)इस शा बेहतर ठकाना
पाई लैख ॥ 37 ॥

उस दे साथी नै ओहदे कनै सुआल-जवाब
करदे होई आखेआ(जे) क्या तोह उस (हस्ती)
दा इन्कार करी दिता ऐ जिसनै तुगी(सारें शा
पैहलें) मिट्टी थमां (ते) फी बीरज थमां पैदा
कीता ते फी उसनै तुगी पूरा आदमी बनाया
॥ 38 ॥

(तेरा ते एह हाल ऐ) पर (अऊं ते एह
आखना जे) हक़ ते एह ऐ जे अल्लाह गै
मेरा रब्ब ऐ ते अऊं कुसै गी (बी) अपने रब्ब
दा शरीक नेई बनांदा ॥ 39 ॥

ते जिसलै तूं अपने बागै च आया हा तां की
निं तूं आखेआ (जे ऊऐ होग) जो अल्लाह
चाहग (की जे) अल्लाह (दी गै किरपा)
कनै हर इक शक्ति (हासल होंदी) ऐ जेकर
तूं मिगी अपनी निसबत धन ते उलाद च घट्ट
समझना ऐं ॥ 40 ॥

وَكَانَ لَهُ نَمْرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ
يُحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَأَعَزُّ
نَفَرًا ﴿٣٥﴾

وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ قَالَ
مَا أَظُنُّ أَنْ تَبِيدَ هَذِهِ أَبَدًا ﴿٣٦﴾

وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِن
رُّدِدْتُ إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا مِّمَّا
مُنْقَلَبًا ﴿٣٧﴾

قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ
أَكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ
ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّلَكَ رَجُلًا ﴿٣٨﴾

لِكِنَّا هُوَ اللَّهُ رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِرَبِّي
أَحَدًا ﴿٣٩﴾

وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَاءَ
اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ إِنَّ تَرَنَّا أَنَا أَقَلُّ
مِنْكَ مَالًا وَوَلَدًا ﴿٤٠﴾

1. अंत च ईसाइयें उन्नति कीती, ते मुसलमानें गी ताहना मारेआ जे साढ़ी कौम ज्यादा ताकतवर ऐ।

तां बिल्कुल ममकन ऐ, जे मेरा¹ रब्ब मिगी तेरे बागै थमां कोई बेहतर (बाग) देई देऐ ते उस (तेरे बागै) पर उप्परा दा कोई अग्गी दी चंगारी सुट्टै। जेहदी ब'जा कनै ओह पद्धरा ते पथरीला मदान बनी जा ॥ 41 ॥

जां उसदा पानी² खुश्क होई जा ते फी तूँ (यानी इस्लाम दा दुश्मन) उसी तुप्पने दी बी सकत नेई पाई सकै (फी इय्यां गै होआ) ॥ 42 ॥

ते उसदे सारे फलें गी तबाह करी दिता गेआ ते ओह (यानी बागै दा मालक) इस हाल च, जे ओह (बाग) अपने स्हारें पर डिगे दा पेदा हा उस (धन-दौलत) दी ब'जा कनै, जो उसनै उस (बागै दी तरक्की) आस्तै खर्च कीता हा, अपने दमैं हत्थ मलन लगा ते आखन लगा(जे) अफसोस! मैं कुसै गी अपने रब्ब दा शरीक नेई बनांदा जां नेई बनाए दा होंदा ॥ 43 ॥

ते उस बेलै कोई जत्था बी ओहदे कनै नेई होआ जेहका अल्लाह दे सिवा ओहदी मदद करदा ते नां ओह बदला गै लेई सकेआ ॥ 44 ॥

ऐसे मौके पर मदद अल्लाह दी गै (फायदेमंद) होंदी ऐ जो स्हेई (हकीकी) उपास्य ऐ ते ओह बदला/सिला देने च बी सारें शा अच्छा ऐ ते (अच्छा) अनजाम (पैदा करने) दी द्रिष्टी कनै बी सारें शा अच्छा ऐ ॥ 45 ॥ (रुकू 5/17)

فَعَلَىٰ رَبِّي أَنِّي يُؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّن جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّن السَّمَاءِ فَتُصْبِحُ صَعِيدًا زَلَقًا ۝

أَوْ يُصْبِحَ مَا وَهَا غُورًا فَلَنْ نَسْتَطِيعَ لَهُ طَلَبًا ۝

وَأَحِيطَ بِشَحْمِهِ فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلَىٰ مَا أَنفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَيَقُولُ يَا لَيْتَنِي لَمْ أُشْرِكْ بِرَبِّي أَحَدًا ۝

وَلَمْ تَكُن لَّهُ فِتْنَةً يُّضَرُّونَهُ مِن دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ۝

هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلَّهِ الْحَقِّ ۗ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَخَيْرٌ عُقْبًا ۝

1. एह इस्लाम दे बारै भक्विकखाणी ऐ जे ओह दिक्खने च कमजोर होंदे होई बी बड़ी प्रतिशदा ते शान हासल करग ते मसीह जां मूसा दी जाति दा बाग गासी अग्नी कनै तबाह होई जाग।
2. पानी सुक्की जाने दा मतलब ईश-वाणी दा सिलसला बंद होई जाना ऐ।

ते तू उंदे सामनै इस संसारक जीवन दी हालत(बी) तफसील कनै ब्यान कर, (जे ओह) उस पानी आंगर (ऐ) जिसी असें बदलें राहें बर्हाया, फी ओदे च धरती दी वनस्पति (जड़ी-बूटी) मिली गई। फी (आखर) ओह (भोए दा) चूरा बनी गई जिसी हवामां डुआरदियां (फिरदियां) न ते अल्लाह हर गल्ल करने दी ताकत रक्खने आहला ऐ ॥ 46 ॥

धन-दौलत ते पुत्तर इस दुनियाबी जिंदगी दी शोभा न ते बाकी रोहने आहले नेक (ते मनासब) कम्म (गै जेहके इनें चीजें थमां लैते जान) तेरे रब्ब दे लागै सिले दे लिहाज कनै (बी) बेहतर न ते आस दे लिहाजें (बी) बेहतर न ॥ 47 ॥

ते (उस दिन बी उंदे बेहतर नतीजे निकलडन) जिस दिन अस इनें फाड़ें गी(अपने अपने थाहरा थमां) चलाई देगे ते तू धरती दे सारे नवासियें गी(इक-दूए दे मकाबले च जंग आस्तै) निकलदे होई दिखगा ते अस इनें (सारें) गी कट्ठा' करगे ते उंदे बिच्चा कुसै गी (बी बाकी) नेई रोहन देगे ॥ 48 ॥

ते ओह रीहग ब'ने दे तेरे रब्ब दे सामनै पेश कीते जाडन (ते उनेंगी आखेआ जाग जे) दिक्खी लैओ तुस (इस्से चाल्ली कमजोरी दी हालत च) साढ़े कश आई गे ओ (जिस हालत च) असें तुसें गी पैहली बार पैदा कीता हा (ते तुसें गी एह मेद नथी) बल्के तुसेंगी दा'वा हा जे अस थुआड़े आस्तै कोई बा'यदे (दे पूरा होने) दी घड़ी निश्चत नेई करगे ॥ 49 ॥

وَأَضْرَبَ لَهُمُ مَثَلَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَا
أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ
الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا تَذْرُوهُ
الرِّيحُ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
مُّقْتَدِرًا ①

أَمْأَلُ وَالْبَنُونَ زِينَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَالْبَقِيَّةُ الصَّالِحَاتُ حَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ
ثَوَابًا وَحَيْرٌ أَمَلًا ②

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ
بَارِزَةً ۗ وَحَسْرَتُهُمْ فَلَمْ يُعَادِرْ مِنْهُمْ
أَحَدًا ③

وَعَرَضُوا عَلَىٰ رَبِّكَ صَفًّا ۖ لَقَدْ جِئْتُمُونَا
كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ بَلْ
رَعِمْتُمْ ۖ إِنَّنْ نَجْعَلُ لَكُمْ مَوْعِدًا ④

1. यानी इक लड़ाई दे मदान च, जां दूए लफ्जें च एह जे उस बेलें सब कौमां आपस च समझोते करियें इक बड़ी बड़्डी आलमगीर(विश्व युद्ध) जंग आस्तै त्यार होई जाडन।

ते (उंदे कर्मै दी) कताब (उंदे सामनै) रक्खी दित्ती जाग। इस लेई (हे श्रोता!) तू इन्हें अपराधियें गी, दिखगा जे जो किश उस च लिखे दा होग, ओह ओहदी ब'जा करी डरडन ते (उस बेलै) ओह आखडन जे(हाय अफसोस) थुआडी तबाही (सामनै खड़ोती दी ऐ) इस कताबा गी केह (होए दा) ऐ (जे) एह नां कुसै निक्की गल्ला गी घेरे बगैर छोड़दी ऐ ते नां कुसै बड़्डी गल्लै गी ते जो कुछ उनें कीता(दा) होग उसी अपने सामनै मजूद पाडन ते तेरा रब्ब कुसै उप्पर जुल्म नेई करदा ॥ 50 ॥ (रुकू 6/18)

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै असें फरिशतें कन्नै आखेआ हा जे तुस आदम दे कन्नै (मिलियै) सजदा करो। इस पर उनें (ते उस हुकम मताबक उसदे कन्नै होइयै) सजदा कीता मगर इब्लीस नै (नेई कीता) ओह जिन्हें¹ बिच्चा हा इस लेई उसनै (अपनी फितरत मताबक) अपने रब्ब दे हुकम दी ना-फरमानी कीती। (हे मेरे बंदो!) क्या तुस मिगी छोड़ियै उस (शतान) गी ते उस दी नसल गी (अपने) दोस्त बनान लगेओ, हालांकि ओह थुआड़े दुश्मन न। ओह (शतान) जालमें आस्तै अत्त बुरा सिला साबत होए दा ऐ ॥ 51 ॥

में नां उनेंगी गासें ते धरती दी पैदाइश (दे मौके) पर हाजर कीता हा ते नां (आपूं) उंदी (अपनी) जानें दी पैदाइश दे मौके उप्पर। ते नां गै अऊं गुमराह करने आहलें गी (अपना) मददगार बनाई सकदा हा ॥ 52 ॥

وَوَضَعَ الْكِتَابَ فَعَرَى الْمَجْرِمِينَ
مُشْفِقِينَ ۖ وَإِيَّاهِ وَيَقُولُونَ يَا
يَلْتَنَّا مَا لِ
هَذَا الْكِتَابِ لَا يَعَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا
كَبِيرَةً ۗ إِلَّا أَحْصَاهَا وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا
حَاضِرًا ۗ وَلَا يَظْلُمُ رَبُّكَ أَحَدًا ۝

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ
فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۗ كَانَ مِنَ الْجِنِّ
فَفَسَقَ عَنْ أَمْرِ رَبِّهِ ۗ أَفَتَتَّخِذُونَهُ
وَدَّرِيئَتَهُ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِي وَهُمْ لَكُمْ
عَدُوٌّ ۗ بئس للظَّالِمِينَ بَدَلًا ۝

مَا أَشْهَدْتُهُمْ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَلَا خَلْقَ أَنْفُسِهِمْ ۗ وَمَا كُنْتُمْ مَتَّخِذِينَ
الْمُضِلِّينَ عَصَدًا ۝

1. अर्थात् अमीर ते उद्दंडी लोकें बिच्चा हा (ब्यौरे आस्तै दिक्खो सूर: अनुआम टिप्पणी आयत 129)।

ते (उस ध्याइँ गी बी याद करो) जिस रोज ओह (खुदा मुश्रिकें गी) आखग जे हून तुस मेरे (उनें) शरीकें गी बुलाओ जिंदे (शरीक होने) बारै तुस दा'वा ब'न्दे हे जिस पर ओह उनेंगी बुलाडन मगर ओह उनेंगी (कोई) जवाब नेई देडन ते उंदे (ते उंदे बनाए दे शरीकें) मझाटै अस इक आड़ खड़ी करी देगे ॥ 53 ॥

ते मुजरम उस अग्नी गी दिखडन ते समझी जाडन जे ओह ओहदे च पौने आहले न ते ओह ओहदे शा पिच्छें हटने तै कोई जगह नेई पाई सकडन ॥ 54 ॥ (रुकू 7/19)

ते असें इस कुरआन च लोकें आस्तै यकीनन हर इक (जरूरी) गल्लै गी बक्ख-बक्ख रूपें च ब्यान कीते दा ऐ ते (ऐसा करदे बी की नेई, की जे) इन्सान सारें थमां बड्डा झगडालू ते बैहसी ऐ ॥ 55 ॥

ते इनें लोकें गी जिसलै इंदे कश हदायत आई तां (ओहदे पर) ईमान आहनने ते अपने रब्ब थमां खिमा मंगने कशा सिर्फ इस गल्ला नै रोकेआ जे पैहलके लोकें जनेह हालाल उंदे उपपर (बी) औन जां फी उंदे सामनै अजाब आइयै खड़ोई जा ॥ 56 ॥

ते अस रसूलें गी सिर्फ शुभ समाचार देने आहला ते (अजाब दे औने बारै) सोहगा करने आहला बनाइयै भेजने आं। ते जिनें लोकें इन्कार कीते दा ऐ ओह झूठ गी साधन बनाइयै इस आस्तै झगडदे न जे उस राहें सच्च गी मटाई देन ते उनें मेरे नशानें (ते) मेरी चतावनी गी हासे दा नशाना बनाई लैता ऐ ॥ 57 ॥

وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَاءِيَ الَّذِينَ
رَعِمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ
وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَوْبِقًا ۝۳۰

وَرَأَى الْمُجْرِمُونَ النَّارَ فَظَنُّوا أَنَّهُمْ
مَوَاقِعُهَا وَلَمْ يَجِدُوا عِنْدَهَا مَصْرَفًا ۝۳۱

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ مِنْ
كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ
جَدَلًا ۝۳۲

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمْ
الْهُدَىٰ وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ
تَأْتِيَهُمْ سُنَّةٌ الْأُولِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمْ
الْعَذَابُ قُبُلًا ۝۳۳

وَمَا تُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مَبَشِّرِينَ
وَمُنذِرِينَ ۚ وَيَجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِابْطِلٍ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا
الْبِئْسَ وَمَا أَنْزَرُوا هُزُونًَا ۝۳۴

ते उस शख्स थमां ज्यादा जालम होर कु'न (होई सकदा) ऐ जिसी उसदे रब्ब दे नशानें राहें समझाया गोआ (पर) फी (बी) ओह उस थमां विमुख होई गोआ ते जो कुछ उसदे हथें (कमाइये) अगें भेजे दा हा उसी उसनै भुलाई दिता। उनें लोकें दे दिलें पर असें यकीनन केई परदे सुट्टी दिते दे न तां जे ओह उसी नेई समझन' ते उंदे कनै च बैहरापन (बोलापन) (पैदा करी दिता ऐ) ते जेकर तूं उनेंगी हदायत पासै बुलाएं तां (ओह तेरे कनै इनी ईरखा रखदे न जे) उस सूरत च ओह हदायत गी (बी) कदें कबूल नेई करडन ॥ 58 ॥

ते तेरा रब्ब बड़ा गै बख़्शाने आहला (ते बड़ा गै) रैहम करने आहला ऐ। जेकर ओह उंदे (बुरे) कर्म कारण उनेंगी हलाक करना चांहदा तां ओह उंदे पर झट्ट अज़ाब नाज़ल करी दिंदा। (मगर ओह ऐसा नेई करदा) बल्के उंदे आस्तै इक मनेआद (समां) निश्चत ऐ इसदे अलावा (यानी इस थमां पैहलें जे ओह अज़ाब भुगती लैन) ओह कदें बी कोई पनाहगाह नेई पाई सकडन ॥ 59 ॥

ते ओह बस्तियां जिनेंगी असें उंदे जुलमें दी ब'जा करी तबाह करी दिता हा (उंदे आस्तै इबरत/सबक दा मूजब होई सकदियां हियां) ते असें उंदी तबाही आस्तै पैहलें थमां गै इक समां निश्चत करी दिते दा हा (तां जे ओह जेकर चाहन तां तोबा करी लैन) ॥ 60 ॥ (रुकू 8/20)

ते (उस वक्त गी बी याद करो) जिसलै मूसा नै अपने नौजुआन' साथी गी आखेआ हा

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ دُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ
فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدُهُ ۗ إِنَّا
جَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ
وَفِي أَذَانِهِمْ وَقْرًا ۗ وَإِنْ تَدْعُهُمْ إِلَى
الْهُدَىٰ فَلَنْ يَهْتَدُوا إِذًا أَبَدًا ﴿٥٨﴾

وَرَبَّكَ الْعَمُورُ ذُو الرَّحْمَةِ ۗ لَوْ
يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوا لَعَجَلْتَهُمْ
الْعَذَابِ ۗ بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ لَّنْ يَجِدُوا
مِنْ دُونِهِ مَوْبِلًا ﴿٥٩﴾

وَتِلْكَ الْقُرَىٰ أَهْلَكْتَهُم لَمَّا ظَلَمُوا
وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِم مَّوْعِدًا ﴿٦٠﴾

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتْنِهِ لَا آخِرُ حَتَّىٰ

1. ब्यौरे आस्तै दिक्खो सूर: बनी इस्राईल टिप्पणी आयत 47

2. "नौजुआन साथी" हज़रत मसीह न जो मूसवी दी जातरा च उंदे कनै हे।

(जे) अऊं (जिस रस्ते उप्पर जा करना, उस पर कायम रहने थमां) नेई टलछ इत्थें तक ते उनें दौनें समुंदरें दे संगम' उप्पर पुञ्जी जां जां सदियें तक (अग्गें गै अग्गें) चलदा र'मां ॥ 61 ॥

इस आस्ते जिसलै ओह (दमें) उनें दौनें (समुंदरें)² दे संगम पर (अर्थात् हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम दे जुग तक) पुजे तां ओह अपनी मच्छी³ (उत्थें) भुल्ली गे। जिस पर उस (मच्छी) नै तेजी कनै नसदे होई समुंदरें च अपनी राह लैती ॥ 62 ॥

फी जिसलै ओह (उस जगह थमां) अग्गें निकली गे⁴ तां उस (यानी मूसा) नै अपने नौजुआन (साथी) गी गलाया (जे) साढ़ा सवरे दा खाना (साढ़ी न्हारी) असेंगी देओ। असें गी यकीनन अपने उस सफर दी ब'जा करी थकावट होई गेदी ऐ ॥ 63 ॥

उसनै आखेआ (जे) दस्सो (हून केह होग) जिसलै अस (रमान करने आस्ते) उस चट्टान⁵ उप्पर रुके तां अऊं मच्छी (दा ख्याल) भुल्ली गेआ ते मिगी एह गल्ल शतान दे सिवा कुसै

أَبْلَغَ مَجْمَعِ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضَى حُقُبًا ۝

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنَهُمَا نِسِيَا حُوتَهُمَا
فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ۝

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتَاهُ إِنِّي جَدَّاءَنَا
لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَصَبًا ۝

قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ
فَلِئِنِّي نَسِيتُ الْحُوتَ وَمَا أَنْسِينِيهِ إِلَّا

1. इस आयत च उस जुग बक्खी संकेत ऐ जिसलै जे हजरत मूसा दा जुग समाप्त होआ ते हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दा जुग शुरु होआ। बे-शक्क बिच गै हजरत मसीह आए, पर ओह हजरत मूसा दे अधीन नबी हे।
2. अर्थात् हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम ते हजरत मूसा दा जुग आपस च इक-दूए कनै मिले। तां हजरत ईसा दी जाति नै अपनी अबादतगाहें दे असली मकसद गी भुलाई दिता ते जिसलै ईसाई जाति थमां उपासना दा उद्देश गुआची गेआ तां फरिश्तें समझी लैता जे हून उस आखरी सुधारक दा समां आई गेआ ऐ जिसदा बा'यदा दिता गेआ हा ते ओह अल्लाह दे आदेश कनै हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम उप्पर उतरना लगी ऐ।
3. मूल शब्द 'हूत' यानी मछली दा अर्थ उपासना घर ऐ। मछली गी सुखने च दिक्खेआ जा तां उसदा मतलब भले लोकें दी अबादतगाह होवा ऐ।
4. एह हजरत मूसा दा मेराज ऐ यानी अति सूख तन्द्रावस्था दा द्रिश्य (करफ) जेहदे च अपने अधीन होने आहले मसीह गी बी दिक्खेआ ते अपना स्थान लैने आहले रसूल हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दे बी दर्शन कीते।
5. जिसलै तरक्की करने दे साधन हत्थ आई जाने पर जाति दे लोक भोग-बिलास च पेई गे तां ओह अबादतगाह दा असल उद्देश खोही बैठे।

नै नेई भुलाई जे अऊं उसदा ख्याल रखदा ते उसनै समुंदर च अजीब ढंगै नै अपनी राह लेई लैती ॥ 64 ॥

उसनै आखेआ (जे) इय्यै ओह ज'गा ऐ जिसदी असैंगी तलाश ही। फी ओह अपने पैरें दे नशान (पैरा लांदे) दिखदे' होई बापस परतोए ॥ 65 ॥

तां उनें साढ़े (भगतें) बंदें चा इक ऐसा बंदा^१ (उत्थें)दिखेआ जिसी असें अपने हजूर थमां रहमत (दी सीरत) बख्शी दी ही ते उसी असें अपने पासेआ (खास) इलम (बी) प्रदान कीते दा हा ॥ 66 ॥

मूसा ने उसी आखेआ (जे) क्या अऊं इस (मकसद) आसतै थुआड़े कनै चली सकना जेहका इलम तुसैंगी प्रदान होए दा ऐ ओहदे बिच्चा किश भलाई (दियां गल्लां) मिगी बी सखाओ ॥ 67 ॥

उसनै आखेआ (जे) तूं मेरे कनै रहियै कदें बी सबर नेई करी सकगा ॥ 68 ॥

ते जिस गल्लै दे इलम दा तोह अबूर हासल नेई कीता उस उप्पर तूं सबर करी (बी) कियां सकना ऐं? ॥ 69 ॥

उसनै आखेआ (जे) जेकर अल्लाह नै चाहया तां तुस मिगी धीरजवान पागे ते अऊं थुआड़े कुसै बी हुकम दी ना-फरमानी नेई करगा ॥ 70 ॥

उस (रुहानी बजुर्ग) नै आखेआ (जे) अच्छा जिसलै तूं मेरे कनै चला दा होऐं तां तूं कुसै

الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ ۗ وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ
فِي الْبَحْرِ عَجَبًا ۝

قَالَ ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبِغُ ۚ فَارْتَدَّا عَلَى
آثَارِهِمَا قَصَصًا ۝

فَوَجَدَا عَبْدًا مِنْ عِبَادِنَا آتَيْنَاهُ رَحْمَةً
مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنَاهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ۝

قَالَ لَهُ مُوسَى هَلْ أَتَّبِعُكَ عَلَىٰ أَنْ
تُعَلِّمَنِي وَمَا عَلَّمْتَنِي رَشْدًا ۝

قَالَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝

وَكَيفَ تَصْبِرُ عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ
خَبْرًا ۝

قَالَ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا
وَلَا أَعْصِي لَكَ أَمْرًا ۝

قَالَ فَإِنَّكَ ابْتَعْتَنِي فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ

1. अर्थात् ऐसी भविष्यवाणियां अपने पिछें छोड़ियां जो हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दे प्रकट होने दी सूचना दिंदियां हियां तां जे उंदी जाति उनें भविष्यवाणियें कारण सोहगी होई जा।
2. एहदा सरबंभ हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लाम कनै ऐ। जिंदे शुभ दर्शन हजरत मूसा गी उंदे मेराज राहें होए हे।

चीजा बाँरे, जिन्ना चिर के अऊं उस बाँरे तेरे कन्नै जिकर करने दी पैहल नेई करां, मिगी सुआल नेई करेआं ॥ 71 ॥ (रुकू 9/21)

फ़ी ओह् (दमैँ उल्थुआं) चली पे। इत्थैँ तक जे जिसलैँ ओह् किशती च सुआर होए तां उस (खुदा दे भगत) नै उस (किशती) च सुराख करी दिता। इस पर उस (मूसा) नै आखेआ (जे) क्या तुसेँ इस आस्तैँ सुराख कीता ऐ जे तुस उस दे अंदर बेहियैँ जाने आहले गी गरक करी देओ। तुसेँ यकीनन (एह्) इक गैर-मनासब कम्म कीता ऐ ॥ 72 ॥

उस (खुदा दे भगत) नै आखेआ (जे) क्या मैं (तुगी) आखे दा नथा (जे) तूँ मेरे कन्नै रेहियैँ कदें बी सबर नेई करी सकगा ॥ 73 ॥

इस पर उस (मूसा) नै आखेआ (जे इस बार) तुस मिगी नेई पकड़ो। की जे अऊं (थुआड़ी हदायत गी) भुल्ली गोदा हा ते तुस मेरी (इस) गल्ला दे कारण मेरे उप्पर सख्ती नेई करेओ ॥ 74 ॥

फ़ी ओह् (दमैँ उल्थु) चली पे। इत्थैँ तक जे ओह् जिसलैँ इक लड़के¹ (जागतैँ) गी मिले तां उस (खुदा दे बंदे) नै उसी मारी दिता। (एह्दे पर) उसनैँ (यानी मूसा नै) आखेआ (जे) क्या (एह् सच्च नेई ऐ जे) तुसेँ (इस बेलैँ) इक पवित्तर (ते बे-गुनाह्) शख्स गी बगैर कुसैँ (दा खून करने दे) बदले च (न्हक्क गै) मारी दिता ऐ तुसेँ यकीनन (एह्) बौहत बुरा कम्म कीता ऐ ॥ 75 ॥

حَتَّىٰ

حَتَّىٰ أَحَدَيْتَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ۖ

فَأَنْطَلَقَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا ۖ قَالَ أَخْرِقْنَاهَا لِنُعْرِقَ أَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِمْرًا ۖ

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۖ

قَالَ لَا تَأْخِذْ بِمَا نَسِيتَ وَلَا تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عَسْرًا ۗ

فَأَنْطَلَقَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا لَقِيَا غُلَامًا فَقَتَلَهُ ۖ قَالَ أَقْتَلْتَنِي فَمَا رَكَبْتَهُ بِغَيْرِ نَفْسٍ ۖ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا كَبِيرًا ۖ

1. सुखने दे फ़लादेश दे मताबक 'लड़के' दा अर्थ नंद ते शक्ति होंदा ऐ। इस लेई लड़के दी हत्या करने दा मतलब एह ऐ जे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ललअम नै ऐसे पदार्थ बरतने थमां रोके दा ऐ जेहके नंद ते शक्ति पैदा करदे न जियां शराब पीना, जूआ खेठना बगैरा होर ते होर अजकल दे मुसलमान बी अतराज करदे न जे इस्लाम नै लाट्टी ते बीमा थमां रोकियैँ नंद ते ऐशप्रस्ती उप्पर करारा बार कीते दा ऐ।

उस (खुदा दे प्यारे) नै आखेआ (जे) क्या मैं तुगी आखे दा नथा (जे) तूं मेरे कन्नै रेहियै कदें बी सबर नेई करी सकगा ॥ 76 ॥

उस (यानी मूसा) नै आखेआ (जे) जेकर इसदे बा'द मैं कुसै गल्ला बारै तुंदे थमां पुच्छेआ तां (बशक्क) तुस मिगी अपने कन्नै नेई रक्खेओ (ते इस सूरात च) तुस यकीनन मेरी अपनी राए' दे मताबक मजबूर समझे जाने दी हद्द तगर पुज्जी चुके दे होगेओ ॥ 77 ॥

फी ओह (उत्थुआं बी) चली पे, इल्यें तक जे जिसलै ओह इक बस्ती दे लोकें कश पुज्जे तां उस (बस्ती) दे बशिनदें थमां उनें खाना मंगेआ, पर उनें उनेंगी (अपने) मम्हान बनाने थमां इन्कार करी दिता। फी उनें उस (बस्ती) च इक ऐसी कंध दिक्खी जो ढौने गै आहली ही। उस (खुदा दे बंदे) नै उसी ठीक करी दिता (इस पर) उस (यानी मूसा नै आखेआ (जे) जेकर तुस चांहदे तां यकीनन इसदी किश (नां किश) मजदूरी लेई सकदे हे ॥ 78 ॥

उस (खुदा दे बंदे) नै आखेआ (जे) एह मेरे दरम्यान ते तेरे दरम्यान जुदाई (दा वक्त) ऐ जिस गल्ला पर तूं सबर नेई करी सकेआ अऊं हूनै तुगी उस दी हक्कीकत थमां अगाह करना ॥ 79 ॥

ओह किशती ते किश मिसकीन² लोकें दी ही जेहके दरेआ च कम्म करदे न ते उंदे सामनै

قَالَ الْمَأْمُورُ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ
مَعِيَ صَبْرًا ۝

قَالَ إِنَّ سَأَلْتِكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا
تُصِجْنِي ۚ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا ۝

فَأَنْطَلَقْنَا حَتَّىٰ إِذَا آتَيْنَا أَهْلَ قَرْيَةٍ
اسْتَطَعْنَا أَهْلَهَا فَبَرَوْنَا أَنْ يُصِيفُوا هَمَّا
فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقَضَ
فَأَقَامَهُ ۗ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَمَخَّدْتَ عَلَيْهِ
أَجْرًا ۝

قَالَ هَذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ ۚ
سَأَتَّبِعُكَ بِأَوْيَلِ مَالٍ مَسْتَطِيعَ عَلَيْهِ
صَبْرًا ۝

أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسْكِينٍ

1. एहदे च एह संकेत ऐ जे हजरत मुहम्मद मुस्ताफा सल्लअम यहदियें ते ईसाइयें कन्नै सहयोग दान यानी मदादी दान दी अपील करडन, पर ओह उसी ठुकराई देडन। इस्लाम दा इतिहास इस गल्ला दा गुआह ऐ।
2. मिसकीन लोकें दा अभिप्राय मुसलमान न जेहके नर्म दिल हे। किशती च सुराख करी देने दा मकसद हा जे अपना धन ज़कात बगैरा नेक कम्म च लाइयै गरीबें ते बे-सहारा लोकें दे भले आसतै खर्च करडन।

(दरेआ पार) इक (अत्याचारी) राजा' हा जेहका हर इक किशती गी जबरदस्ती खूसी लौंदा हा, इस आस्तै मैं चाहया जे उसी ऐबदार करी देआं ॥ 80 ॥

ते (एह जेहकी) जागतै (आहली घटना ऐ तां उस) दी हकीकत एह ऐ जे उसदे मा-बब्ब² दमैं मोमिन हे। उस पर (उस दी एह हालत दिक्खियै) अस डरे जे ऐसा निं होऐ (बड्डे होइयै) उंदे उप्पर उद्दंडता ते कुफर दा अलजाम लुआई देऐ ॥ 81 ॥

इस लेई असें चाहया जे उंदा रब्ब उनेंगी उस (जागतै) थमां पवित्रता रैहम ते इन्साफ दे लिहाजें बेहतर (जागत बदलियै) देई देऐ ॥ 82 ॥

ते (ओह) कंध³ उस शैहरै दे द'ऊं यतीम जागतें दी ही ते ओहदे हेठ उंदा किश खजाना (दबोए दा) हा। ते उंदा पिता (इक) नेक (शख्स) हा। इस आस्तै तेरे रब्ब नै चाहया

يَعْمَلُونَ فِي الْبُحْرِ فَأَرَدْتُ أَنْ أَعِيبَهَا
وَكَانَ وَرَاءَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ
غَصَبًا ۝

وَأَمَّا الْعُلَمَاءُ فَكَانَ أَبُوهُمُ مُؤْمِنِينَ فَخَشِينَا
أَنْ يُرِيَهُمْ مَا طَغَيْنَا وَأَكْفُرًا ۝

فَأَرَدْنَا أَنْ يُبَدِّلَهَا رَبُّنَا حَبِيرًا مِّنْهُ
زَكْوَةً وَأَقْرَبَ رَحْمًا ۝

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي
الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزٌ لَهُمَا وَكَانَ

1. राजा दा मतलब कैसर ते किम्ना हे जेहके अरब देश उप्पर सिर्फ इस आस्तै चढ़ाई नथे करदे जे ओह देश बंजर ते रेगस्थान हा। अल्लाह नै इसी हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. आस्तै सुरक्षत रखे दा हा।
2. पैहलें दस्सेआ जाई चुके दा ऐ जे मूल शब्द गुलाम दा मतलब गति, शक्ति ते मूरखता बगैरा गुण न जेहके हर शख्स च पाए जंदे न। असल च आंतरक ज्ञान सरबंधी एह गल्लां न, भौतक सरबंधी नैई न। इस आस्तै इनें शक्तियें दे माता-पिता बी उसरैं चाल्ली दे होने चाही दे। एह शक्तियां मनुखैं दे शरीर ते आत्मा थमां पैदा होंदियां न। इस लेई गति, शक्ति ते मूरखता दे माता-पिता मोमिन होने दा अर्थ एह ऐ जे मनुखैं च तरक्की करने दा मादा मता पाया जंदा ऐ। बड्डे-बड्डे मुश्कल कम्म करने ते खतरें गी बरदाशत करने दी हिम्मत उंदे च पाई जंदी ऐ, पर एह शक्तियां मनुखैं गी अल्लाह दी नजदीकी प्राप्त करने आस्तै प्रदान कीती गेदियां न। जेकर इनें शक्तियें गी बे-लगाप छोड़ी दिता जा तां फी एह शक्तियां मनुखैं गी पापें आहली बक्खी लेई जंदियां न ते उसदा सर्वनाश करी दिंदियां न। इस आस्तै अल्लाह नै इस्लामी शरीअत द्वारा इनें त्रीनें शक्तियें दी हत्या कराई दिती दी ऐ तां जे उसदे बा'द मनुखैं दे अंदर दे जेहका (बी) जजबा कम्म करै, ओह सदाचार नेकी ते संयम दी हद्द अंदर रखै। (तातिरल्लु अन्आम)।
3. कंध (दीवार) दा मतलब यहूदियें ते ईसाइयें दे महापुराण न अर्थात् हजरत मूसा ते हजरत ईसा ते उंदे पिता दा मतलब हजरत इब्राहीम ते धन दा मतलब ओह ज्ञान रूपी खजाना ऐ जिसी हजरत ईसा ते हजरत मूसा दा जातियें सुरक्षत रखे दा हा, पर इनें लोकें दी लापरवाही ते ध्यान नैई देने दी ब'जा करी ओहदे नश्ट होने ते जाया जाने दा खबरा पैदा होई गेआ हा। उसलै उसी हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. ने सुरक्षत करी दिता अर्थात् तौरात ते इज्जील दी मूल शिक्षा गी सुरक्षत रखेआ तां जे हून बी यहूदी ते ईसाइयें दी चेतना शक्ति जागै, ओह उस थमां लाभ लेइयै हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. पर ईमान लेई औन।

जे ओह जुआन होई लैन, ते (बड़डे होइयै) अपने खजानै गी (आपुं) कइहन। तेरे रब्ब आहले पासेआ (उंदे उप्पर खास) रहम (होआ) ऐ ते एह (कम्म) में अपने-आप नेई कीता। एह उस गल्ला दी सचाई ऐ जेहदे पर तूं सबर नथा करी सकेआ ॥ 83 ॥ (रुकू 10/1)

ते ओह तेरे थमां जुल्करनैन² दे बारै बी सुआल पुछदे न, तूं (उनेंगी) आख (जे) अऊं जरूर उस बारै किश जिकर थुआड़े सामनै करगा ॥ 84 ॥

असें यकीनन उसी धरती पर हकूमत बख्शी ही ते असें उसी हर इक चीज (दी प्राप्ति) दा जरीया अता कीते दा हा ॥ 85 ॥

उसलै ओह इक रस्तै पर चली पेआ ॥ 86 ॥

इत्थें तक जे जिसलै ओह सूरज दे घरोने आहली ज'गा पुज्जा तां उसनै ऐसा दिक्खेआ (पाया) जे ओह इक गंदले³ चश्मे च डुब्बा करदा ऐ ते उस नै उस दे लागै किश लाके⁴(अबाद) दिक्खे (उस पर) असें (उसी) आखेआ (जे) हे जुल्करनैन! तुगी अज्ञाजत ऐ ते उनेंगी अज्ञाब दे जां उंदे बारै च अच्छे ब्यहार थमां कम्म लै ॥ 87 ॥

أَبُوهُمَا صَالِحًا ۖ فَرَادَرَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا
أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَثْرَهُمَا ۗ رَحْمَةً
مِّن رَّبِّكَ ۗ وَمَا مَعْلَمَةٌ عَنْ أَمْرِي ۗ ذَلِكَ
تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۗ ﴿٨٣﴾

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْقُرْنَيْنِ ۗ قُلْ
سَأَتْلُوا عَلَيْكُمْ مِنهٗ ذِكْرًا ۗ ﴿٨٤﴾

إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَاتَيْنَاهُ مِنْ
كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۗ ﴿٨٥﴾
فَاتَّبَعَ سَبَبًا ۗ ﴿٨٦﴾

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَرْبَعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا
تُعْرَبُ فِي عَيْنٍ حَمِئَةٍ ۗ وَوَجَدَ عِنْدَهَا
قَوْمًا ۗ قُلْنَا يَا ذَا الْقُرْنَيْنِ إِنَّمَا أَنْتَ تُعَذِّبُ
وَإِنَّمَا أَنْتَ تُجَدِّدُ فِيهِمْ حُسْنًا ۗ ﴿٨٧﴾

1. यानी अल्लाह तआला दी वब्बी कनै कीता ऐ।
2. 'जुल्करनैन' खोरस सम्राट दा नांऽ ऐ जो मेद ते फ़ारस दा बादशाह हा। उसी जुल्करनैन इस लेई आखेआ जंदा हा जे दानियाल नबी नै उसदे बारे च सुखना दिक्खेआ हा जे द'ऊं संडोड़ियें आहला भिड्डू रस्ते च खडोते दा ऐ जिसदे बारै च फ़रिश्ते नै गलाया जे एह मेद ते फ़ारस दा बादशाह ऐ। (दानीयाल बाब 8 आयत 20)
3. इस थमां मुराद काले सागर दा ओह अलाका ऐ जित्थें जुल्करनैन गेआ हा। ते जित्थें पानी स्याह होने दी ब'जा कनै गंदला सेही होंदा ऐ। इस लेई उसी काला सागर आखदे न।
4. उस थाहर जेहकी कौमां अबाद हियां। उनें मेद ते फ़ारस दी कामयाबी दे बा'द दूई कौमें कनै मिलियै "खोरस" यीनी जुल्करनैन उप्पर हमला करी दिता फलसरूप खोरस नै बी उंदे उप्पर चढ़ाई कीती ते उनेंगी अपने अधीन करी लैता।

उसनै आखेआ (हां अऊं इय्यां गै करगा ते) जेहका जुलम करग उसी ते अस जरूर स'जा देगे। फी ओह् अपने रब्ब आहले पासै परताया जाग ते ओह् उसी सख्त स'जा देग ॥ 88 ॥

ते जेहका ईमान लेई ओग ते नेक (ते मनासब) कम्म करग ओहदे आस्तै (खुदा दे घर उसदे सतकर्म दे बदले च) अच्छा सिला (निश्चत) ऐ। ते अस (बी) जरूर ओहदे आस्तै अपने हुकम कन्नै असान्नी आहली गल्ल आखगे ॥ 89 ॥

फी ओह् इक रस्तै पर चली पेआ ॥ 90 ॥

इत्थें तक जे जिसलै ओह् सूरज निकलने आहलै थाहर पुजा तां उसनै ऐसे लोकें' उप्पर चढ़दा दिक्खेआ, जिंदे आस्तै असें (उंदे ते) उस (सूरज) दे मझाटै कोई परदा' नेई बनाए दा हा ॥ 91 ॥

(एह् घटना ठीक) इससै चाल्ली ऐ ते असें सारे हालातें दा पता खूब रक्खे दा ऐ ॥ 92 ॥

फी ओह् इक रस्तै पर चली पेआ ॥ 93 ॥

इत्थें तक जे जिसलै ओह् द'ऊं फ्हाड़ें दे मझाटै पुजा, तां उसनै उंदे इससै पासै किश लोक दिक्खे जेहके बड़ी मुश्कलें उसदी गल्ल समझदे हे ॥ 94 ॥

उनें आखेआ (जे) हे जुल्करनैन! याजूज ते माजूज यकीनन उस देशै च फसाद भड़काऽ करदे न इस लेई क्या अस (लोक) तुंदे आस्तै

قَالَ آمَا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نَعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا نَّكَرًا ﴿٨٨﴾

وَأَمَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءٌ الْحَسَنَىٰ وَسَنُقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٩﴾

ثُمَّ اتَّبَعَ سَبَبًا ﴿٩٠﴾

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطَّلِعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَمْ يَجْعَلْ لَهُمْ مِّنْ دُونِهَا سِتْرًا ﴿٩١﴾

كَذَٰلِكَ ۗ وَقَدْ أَحْطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩٢﴾

ثُمَّ اتَّبَعَ سَبَبًا ﴿٩٣﴾

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُونِهِمَا قَوْمًا لَّا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ﴿٩٤﴾

قَالُوا يَا جُوجُ مَا جُوجُ مَفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ فَهَلْ

1. इस कन्नै मुगद बलोचिस्तान ते अफगानिस्तान दा अलाका ऐ जो खोरस नै फतह कीता हा ते ओह् काले सागर थमां मशरक आहली भेठा ऐ।

2. अर्थात् ओह् मदान्नी अलाके दे लोक हे।

किश कर (टैक्स) इस शरता उप्पर निरधारत करी देखै जे तुस साढ़े मज़ाटै ते उंदे मज़ाटै इक रोक बनाई देओ ॥ 95 ॥

उसनै आखेआ (जे) इस (किसम दे कम्मं) दे बारै मेरे रब्ब नै जो ताकत मिगी बख्शी दी ऐ ओह् (दुश्मनें दे उपायें थमां) बड़ी बेहतर ऐ इस आस्तै तुस मिगी हर ममकन मदाद देओ तां जे अऊं थुआड़े मज़ाटै ते उंदे मज़ाटै इक रोक बनाई देआं ॥ 96 ॥

तुस मिगी लोहे' दे टुकड़े देओ (फी ओह् रोक त्यार होन लगी) इत्थें तक जे जिसलै उसने (फ्हाड़ी दी) उनें (द'ऊं) चोटियें मज़ाटे बराबरी' पैदा करी दित्ती। तां उसनै (उनेंगी) आखेआ (जे हून उस पर अग्ग) बालो। इत्थें तक जे जिसलै उसनै उसी (बिल्कुल) अग्गी आंगर लाल करी दित्ता तां (उनेंगी) आखेआ (जे हून) मिगी (पिरघले दा) त्रामा (आनी) देओ, तां जे अऊं (उसी) ओहदे पर सुट्टी देआं ॥ 97 ॥

इस आस्तै (जिसलै ओह् कंध (दबार) त्यार होई गई तां) ओह् (यानी याजूज ते माजूज) ओहदे पर चढ़ी नैई सके, ते नां ओहदे च कोई सुराख करी सके ॥ 98 ॥

(इस पर) उसनै आखेआ (जे) एह् (कम्म सिर्फ) मेरे रब्ब दे खास स्हान करियै (होआ) ऐ फी जिसलै (विश्व व्यापी अज़ाब दे बारै)

نَجْعَلْ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ۝

قَالَ مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي حَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۝

أَتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا ۖ قَالَ أَتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ۝

فَمَا اسْطَاعُوا أَنْ يَظْهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ۝

قَالَ هَذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَبِّي ۖ فَادَّا

1. यानी दीवार धातै दी बननी ऐ तुस अलाके दे लोक ओ धात आनी देओ। बाकी इन्जीनियरिंग दा कम्म मेरे आदमी करडन।
2. जित्थें चुल्करनैन नै दीवार बनाई उत्थें इक पासै हरा सागर ऐ ते दूए पासै कोह्-काफ़। ते एह् दमें चीजं दपासै रोक दा कम्म देआ करदियां हियां। सिर्फ मज़ाटला दरा सुरक्षत नैई हा।
3. इक पासै समुंदर हा ते इक पासै फ्हाड़। इनें दीनें च बराबरी दा केह् मैहना? इस लेई याद रक्खना चाहिदा जे इत्थें बराबरी थमां मुराद ऐ जे मज़ाटले खुल्ले मदान गी दीवार कनै बंद करी दित्ता तां दुश्मन नां फ्हाड़ली बख्शी दा आई सकेआ ते नां समुंदरै पासेआ। इस चाल्ली रोक दे स्हाबें बराबरी होई गई।

मेरे रब्ब दा ब'यदा (पूरा होने उप्पर) औंग तां ओह् उस (रोक) गी (तोड़ियै) धरती कन्नै मिले दा इक टिब्बा नेहा बनाई देग। ते मेरे रब्ब दा बा'यदा (जरूर) पूरा होइयै रौहने आहला ऐ ॥ 99 ॥

ते (जिसलै उसदे पूरा होने दा बेला औंग तां) उस बेलै अस उनेंगी इक-दूए दे खलाफ' कुदिदयै हमला करने आस्तै छोड़ी देगे ते बिगल बजाया जाग उसलै अस उनें (सारें) गी किट्ठा करी देगे ॥ 100 ॥

ते अस उस रोज ज्हन्म गी काफ़रें दे बिल्कुल सामनै लेई औंगे ॥ 101 ॥

(ओह काफ़र) जिंदियां अक्खीं मेरे जिकर (यानी क़ुरआन करीम) दी तरफा (गफ़लत / लापरवाही दे) परदे च हियां। ते ओह सुनने दी ताकत (बी) नथे रखदे ॥ 102 ॥ (रुकू 11/2)

(तां) केह (एह सब किश दिक्खियै) फी (बी) ओह लोक जिनें (कुफर दा तरीका) अखत्यार कीते दा ऐ एह समझदे न जे ओह मिगी छोड़ियै मेरे बंदें गी मदादी बनाई सकडन। असें काफ़रें दे इनाम (यानी सिले) आस्तै ज्हन्म त्यार करी रखे दा ऐ ॥ 103 ॥

तूं (उनेंगी) आख (जे) केह अस तुसेंगी इनें लोकें बाँरे सूचत करचै जो कर्म दे लिहाजें सारें शा बद्ध घाटा खाने आहले न ॥ 104 ॥

جَاءَ وَعَدْرِيُّ جَعَلَهُ دَكَّاءً ۗ وَكَانَ وَعَدْرِيُّ حَقًّا ۝

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعَهُمُ جَمْعًا ۝

وَعَرَّضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِلْكَافِرِينَ عَرَضًا ۝

الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَنِ ذِكْرِي وَكَانُوا لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا ۝

أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِنْ دُونِي أَوْلِيَاءَ ۗ إِنَّا أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا ۝

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ۝

1. यानी आखरी युग च याजूज ते माजूज आपस च लड़ी पौडन। जियां के अज-कल होआ करदा ऐ जे रूस जिसगी बाइबिल च याजूज करार दिता गेदा ऐ ते इंगलैण्ड जिसी बाइबिल च माजूज करार दिता गेदा ऐ (दिक्खी हिजकील बाब 39) एह दमें अज-कल क़ुरआनी आयत दे मताबक आपसी जंग दियां त्यारियां करा करदे न।

(एह ओह लोक न) जिंदी (पूरी) कोशश इस संसारक जीवन च गै गायब होई गई ऐ ते (ओहदे कनै) ओह (एह बी) समझदे न जे ओह चंगा कम्म करा करदे न ॥ 105 ॥

एह ओह लोक न जिनें अपने रब्ब दे नशानें दा ते उस कनै मिलने दा इन्कार करी दित्ते दा ऐ इस लेई उंदे (सारे) कर्म डिगिगयै (इस्सै दुनियां च) रेही गे न, इस आस्तै क्यामत आहलै रोज अस उनेंगी किश बी बुक़त/महतब नेई देगे ॥ 106 ॥

एह उंदा बदला (यानी) जहन्नम इस करी होग जे उनें कुफर (दा तरीका) अखत्यार कीता। ते मेरे नशानें ते मेरे रसूलें गी (अपने) हासे दा नशान्ना बनाई लैता ॥ 107 ॥

जेहके लोक ईमान ल्याए न ते उनें नेक (ते मनासब) कर्म कीते दे न उंदा ठकाना यकीनन फ़िरदौस नांऽ दे सुर्ग होडन ॥ 108 ॥

ओह उंदे च नवास करदे रैहडन (ते) उंदे शा अलगग होना नेई चाहडन ॥ 109 ॥

तू उनेंगी आख (जे) जेकर (हर इक) समुंदर मेरे रब्ब दियां गल्लां लिखने आस्तै स्याही बनी जंदा तां मेरे रब्ब दियां गल्लां खतम होने शा पुज्ज (हर) समुंदर (पूरे दा पूरा) खतम होई जंदा तां बी (उसी) बधाने आस्तै अस उन्ना (गै) होर (पानी समुंदर च) आनी सुटदे ॥ 110 ॥

तू (उनेंगी) आख (जे) अऊं सिर्फ तुंदे आंगरा गै इक आदमी आं, (फक्क सिर्फ एह ऐ जे) मेरे पासै (एह) वही (नाजल) कीती जंदी

الَّذِينَ ضَلَّ سَعِيَّهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ۝

أُولَئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا تُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَرَنًا ۝

ذَلِكَ جَزَاءُ الَّذِينَ جَاءَهُم بِمَا كَفَرُوا وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَرُسُلِي هُرُوفًا ۝

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۝

خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ۝

قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مَدَادًا لَكَلِمَتِ رَبِّي لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنفَدَ كَلِمَتِ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَدًا ۝

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ وَاحِدٌ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا

ऐ ते शुआड़ा उपास्य इक्क गै (सच्चा) उपास्य
 ऐ इस आस्तै जो शख्स अपने रब्ब कनै
 मिलने दी मेद रखदा होऐ उसी चाहिदा ऐ जे
 नेक (ते मनासब) कम्म करै ते अपने रब्ब दी
 अबादत च कुसै गी बी शरीक नैई बनाऽ
 ॥ 111 ॥ (रुकू 12/3)

لِقَاءَ رَبِّهِمْ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا

ع 3

يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ۞

ooo



सूर: मरयम

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दी नढ़िनुएं आयतां ते छे रुकू न।

(मैं) अल्लाह दा नाऽ लेइयै जो बे-हद कर्म
करने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला
ऐ (पढ़ना) ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

काफ, हा, या, ऐन, साद' ॥ 2 ॥

كَهَيْصِ ①

(इस सूर: च) तेरे रब्ब दी (उस) रैहमत दा
जिकर ऐ जो उसने अपने बंदे ज़करिय्या पर
(उस बेलै) कीती ॥ 3 ॥

ذَكَرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهُ زَكَرِيَّا ①

जिसलै उसनै अपने रब्ब गी बल्लें जनेही
पुकारेआ ॥ 4 ॥

إِذْ نَادَى رَبَّهُ نِدَاءً خَفِيًّا ①

(ते) आखेआ, हे मेरे रब्ब (मेरी हालत ते
यकीनन ऐसी ऐ जे) मेरी सारी हड्डियां
(तक) कमजोर होई गेदियां न ते (मेरा) सिर
बढ़ापे दी ब'जा कनै भटकी उट्टे दा ऐ ते
हे मेरे रब्ब! अऊं कदें बी तेरे थमां दुआमां
मंगने दी ब'जा कनै नकाम (ते नामुराद) नेई
रेहा ॥ 5 ॥

قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّي وَاشْتَعَلَ
الرَّأْسُ شَيْبًا وَلَمْ أَكُنْ بِدُعَائِكَ رَبِّ
شَقِيًّا ①

ते अऊं यकीनन अपने रिश्तेदारें थमां
अपने(मरने दे) बा'द (दे सलूक थमां) डरनां

وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَرَائِي ①

1. एह पंजै खंडाक्षर न। काफ=काफी, सर्वस्व, हा=हादी, पथ प्रदर्शक, या=संबोधन दा चि'न, ऐन =अलीम, सर्वज्ञ, साद=सादिक, सत्यवादी। अर्थात् हे सर्वज्ञ सत्यवादी अल्लाह! तू सारें दा पथप्रदर्शक ते सर्वस्व ऐं। ब्यारे आस्ते दिक्खो सूर: बकर: टिप्पणी आयत -2

ते मेरी धरै-आहली बांझ ऐ, इस लेई तूं मिगी
अपने पासेआ इक दोस्त (यानी पुत्तर) अता
कर ॥ 6 ॥

जो मेरा बी बारस होऐ ते याकूब दी संतान(थमां
जो दीन ते संयम असेंगी-बिरसे च मिले दा
ऐ उस) दा बी बारस होऐ। ते हे मेरे रब्ब!
उसी(अपना) प्यारा (वजूद) बनायो ॥ 7 ॥

(उस पर अल्लाह नै फरमाया) हे ज़करिय्या!
अस तुगी इक जागतै दी सूचना दिने आं (जो
जुआनी दी उमरी तोड़ी पुज्ग ते) उस दा
नांऽ (खुदा दी तरफा) यहा होग। असें इस
शा पैहलें कुसै गी इस नांऽ कनै याद नेई
कीता ॥ 8 ॥

(ज़करिय्या नै) आखेआ -हे मेरे रब्ब ! में
घर जागत कियां होई सकदा ऐ, हालांके मेरी
धरै -आहली बांझ ऐ ते अऊं बुड्ढा झूड़ होई
चुके दा आं ॥ 9 ॥

(इल्हाम आहनने आहले फरिश्ते नै) गलाया
(जे जिस चाल्ली तूं आखा करना ठीक उसै
चाल्ली ऐ मगर) तेरा रब्ब आखदा ऐ जे एह
(गल्ल) मेरे आस्तै असान ऐ ते (दिक्ख)
अऊं तुगी इस शा पैहलें पैदा करी चुके दा आं
हालांके तूं किश बी नेई हा ॥ 10 ॥

(ज़करिय्या नै) आखेआ, हे मेरे रब्ब! मिगी
कोई हुकम दे! फरमाया तेरे आस्तै एह हुकम
ऐ जे तूं लगातार त्रै रातां लोके कनै गल्ल-
बात नेई कर ॥ 11 ॥

उसदे बा'द (ज़करिय्या) मेहराव थमां निकलियै
अपनी बरादरी दे लोके कश गे ते उनेगी

وَكَانَتْ أُمْرَاتِي عَاقِرًا فَهَبْ لِي
مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا ۝

يُرِيئِي وَيَرِيئُ مِنْ آلِ يَعْقُوبَ ۖ وَاجْعَلْهُ
رَبِّ رَضِيًّا ۝

يُزَكِّرِيَا إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ اسْمُهُ
يَحْيَىٰ لَمْ نَجْعَلْ لَهُ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝

قَالَ رَبِّ إِنِّي يَكُونُ فِي عَلَمٍ وَكَانَتْ
أُمْرَاتِي عَاقِرًا وَقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ
عِتِيًّا ۝

قَالَ كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَىٰ هَيْئٍ
وَقَدْ خَلَقْتِكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ سَيِّئًا ۝

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِي آيَةً ۖ قَالَ آيَتُكَ أَلَّا
تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلَاثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنَ الْمِحْرَابِ فَأَوْحَىٰ

बल्लें जनेही आखेआ जे संजा-भ्यागा' अल्लाह दी स्तुति करदे र'बा करो ॥ 12 ॥

إِلَيْهِمْ أَنْ سَيُخَوَّبُكُمْ وَأَوْعِشِيًّا ۝

(उसदे बा'द यह्या पैदा होई गोआ ते असें उसी गलाया) हे यह्या ! तू (अल्लाह दी) कताबे गी मजबूती कनै पकड़ी लै ते असें उसी हौली बरेसू च गै (अपने) हुकम कनै सम्मानत कीता हा ॥ 13 ॥

يُحْيِي خُذَالِكِ سَبِّبُ قُوَّةٍ وَأَتَيْنَهُ
الْحُكْمَ صَبِيًّا ۝

(ते एह गल्ल) सादे पासेआ बतौर मेहरवानी (ते दया दे ही) ते (उसी) पवित्र करने आस्तै (ही) ते ओह बड़ा संयमी हा ॥ 14 ॥

وَحَنَانًا مِنْ لَدُنَّا وَزَكَاةً وَكَانَ تَقِيًّا ۝

ओह अपने मापें कनै नेक सलूक करने आहला हा ते जालम ते ना-फरमान (गल्ल नेई मन्ने आहला) नेई हा ॥ 15 ॥

وَأَبْرَأًا بَوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا
عَصِيًّا ۝

ते जिसलै ओह पैदा' होआ उसलै बी ओहदे पर सलामती ही, ते जिसलै ओह मरी जाग ते जिसलै ओह जौंदा करिये दुआलेआ जाग (तां बी उस पर सलामती होग) ॥ 16 ॥ (रुकू 1/4)

وَسَلَّمَ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوتُ
وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۝

ते तू (इस) कताब च मर्यम दा (जो) जिकर (औंदा ऐ उसी) ब्यान कर (खास तौरा पर इस गल्ला गी जे) जिसलै ओह अपने रिश्तेदारें थमां पूर्वी (पासै इक) ज'गा उठी गई ॥ 17 ॥

وَأَذْكَرًا فِي الْكِتَابِ مَرْيَمَ إِذِ انْتَبَذَتْ
مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرِيفًا ۝

ते (अपने ते) उंदे (यानी रिश्तेदारें दे) मझाटै इक परदा सुट्टी दिता। (यानी उंदे कनै सरबंध तोड़ियै अपने आपै गी छपैली दिता)

فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُونِهِمْ حِجَابًا
فَأَرْسَلْنَا إِلَيْهَا رُوحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا

1. संजा-भ्यागा कनै दिनें ते राती दा सारा समां अभीस्ट ऐ। मूल शब्द 'बुकरतन' ते 'अशिय्यन' दा इयै अर्थ ऐ।
2. इससै सूर: दी आयत 34 च हजरत मसीह बारै जिकर औंदा ऐ जे जिसलै मेरा जनम होआ तां बी मेरे पर सलामती ही ते जिसलै अकं मरगा तां बी मेरे पर सलामती होग। ईसाई इस थमां मसीह दी प्रधानता सिद्ध करदे न ते एह नेई दिखदे जे हजरत यह्या दे बारै इयै गल्ल अल्लाह नै हजरत जकरिय्या कनै कांती हो। इस आस्तै जेकर एह प्रधानता ऐ तां इस थमां हजरत यह्या दी प्रधानता हजरत मसीह थमां बद्ध साबत होंदी ऐ।

उस बेलै असें उस पासै अपना कलाम आहनने आहला फरिश्ता (यानी जिब्राईल) भेजेआ ते ओह उसदे सामनै इक तंदरुस्त मनुक्खै दे रूपै च प्रकट होआ ॥ 18 ॥

(मर्यम नै उसी) आखेआ, अऊं तेरे शा रहमान खुदा दी पनाह मंगनी आं, जेकर तेरे अंदर किश बी संयम ऐ ॥ 19 ॥

(इस पर उस फरिश्ते नै) आखेआ, अऊं ते सिर्फ तेरे रब्ब दा भेजे दा पैगंबर आं तां जे अऊं तुगी (वह्नी दे मताबक) इक पवित्रर जागत देआं (जेहका जुआन होग) (जुआनी दी आयु तगर पुजग) ॥ 20 ॥

(मर्यम नै) आखेआ! मिगी जागत कियां होई सकदा ऐ। हालांके अजे तक मिगी कुसै मरदै नेई छूहता। ते अऊं कदें बदकारी दे कम्मै च नेई पेई ॥ 21 ॥

(फरिश्ते नै) आखेआ (गल्ल) इस्से चाल्ली ऐ (जिस चाल्ली तूं दस्सी, मगर) तेरे रब्ब नै एह आखे दा ऐ जे एह (कम्म) मेरे आस्तै असान ऐ ते (अस' इस आस्तै एह जागत पैदा करगे) तां जे उसी लोकें आस्तै इक नशान बनाचै ते अपने पासेआ रहमत (दा मूजब बी बनाचै) ते एह (फैसला) सादी तकदीर च होई चुके दा ऐ ॥ 22 ॥

इस पर मर्यम ने (अपने पेट च) उस (बच्चे) गी चुक्की लैता ते फी उसी लेइयै दूर मकात्रे पासै उठी गई ॥ 23 ॥

ते (जिसलै ओह उत्थें पुजी तां) उसी पीड़ां लगियां (ते उसी) मजबूर करियै इक खजूर

بَشَّرَ سَوِيًّا ۝۱۹

قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمَنِ مِنْكَ
إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ۝۱۹

قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ لِأَهَبَ لَكِ
عُلْمًا زَكِيًّا ۝۲۰

قَالَتْ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلْمٌ وَلَمْ يَمَسِّنِي
بَشْرًا ۝۲۱ وَلَمْ أَكْ بَغِيًّا ۝۲۲

قَالَ كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَىٰ هَيْئٍ
وَلِنَجْعَلَهُ آيَةً لِلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِنَّا
وَكَانَ امْرَأًا مَّقْضِيًّا ۝۲۳

فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَدَتْ بِهِ مَكَانًا قَصِيًّا ۝۲۴

فَأَجَاءَهَا الْمَخَاضُ إِلَىٰ جِذْعِ النَّخْلَةِ ۝۲۵

1. यूरोप दे केई डाक्टरें इस गल्ला दी घोशना कीती दी ऐ जे कुआरी दे पेट चा जागत पीदा होना नाममकन गै नेई बल्के इस दियां केई मसालां यकीनी तौरा पर चकित्सा शास्तर दे सहाबें साबत होई चुकी दियां न।

दे तने पासै लेईं गेईं (जिसलै मर्यम गी यकीन होईं गेआ जे उसगी बच्चा होने आह्ला ऐ तां उसनै दुनियां दी ऑंगल चकोने दा ख्याल करियै) आखेआ! काश! अऊं एह्दे शा पैहलें मरी जंदी। ते मेरी याद मटाईं दिती जंदी ॥ 24 ॥

इस पर उस (फरिश्ते) नै उसी ख'लकी' भेठा बुलाया ते आखेआ जे (हे औरत) चिंता निं कर, अल्लाह नै तेरी ख'लकी बक्खी इक सूहटा बगाए दा ऐ (ओह्दे कश जा ते अपनी ते बच्चे दी सफाईं कर) ॥ 25 ॥

ते (ओह) खजूर (जो तेरे लागै होग उस) दी टाहली (पट्टा) पकड़ियै अपने पासै ल्हाऽ ओह तेरे उप्पर ताजा फल (खजूरे) केरग ॥ 26 ॥

इस लेईं (उनेंगी) खाओ ते (चश्मे दा पानी बी) पिच्यो ते (आपू न्हाइयै बच्चे गी बडेरियै) अपनी अक्खीं उंडियां करो, फी जेकर (इस अरसे दरान) तू कुसै मरदै गी दिक्खें तां अक्खी दे, मैं रहमान (खुदा) आस्तै (इक) रोजे दी मन्नत मन्नी दी ऐ इस लेईं अज्ज मैं कुसै इन्सान कन्ने गल्ल नेईं करनी? ऐ ॥ 27 ॥

इस दे बा'द ओह उसी लेइयै अपनी कौम कश सवार^९ कराइयै लेईं आईं। जिनें गलाया, हे मर्यम! तोह बौहत बुरा कम्म कीता ऐ ॥ 28 ॥

قَالَتْ يَلَيْتَنِي مِتُّ قَبْلَ هَذَا وَكُنْتُ نَسِيًّا نَسِيًّا ۝۱۶

فَأَذِيهَا مِنْ تَحْتِهَا أَلَّا تَحْزَنِي قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ۝۱۷

وَهَزَمَكَ الْمَخْلَقَةُ تَلْقَطُ عَلَيْكَ زُطْبًا جَنِيًّا ۝۱۸

فَكُلِي وَاشْرَبِي وَقَرِّي عَيْنًا فَمَا تَرَيْنَ مِنَ الْبَشَرِ أَحَدًا فَقُوْنِي إِنْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمَنِ صَوْمًا فَلَنْ أُكَلِمَ الْيَوْمَ أَنْسِيًّا ۝۱۹

قَالَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُ ۝۲۰ قَالُوا لِمَرْيَمَ لَقَدْ جِئْتِ سَيِّئًا فَرِيًّا ۝۲۱

1. बाइबिल ते फ़लस्तीन दे जुगराफिये थमां पता लगदा ऐ जे मर्यम नै जिसलै बच्चे गी जनम दिता तां उनेंगी उंदे होने आहले पति "बैते-लहम" लेईं गे हे जो उस बेलें इक फ्हाड़ी पर बाकेआ हा। जेह्दी ख'लकी बक्खी इक चश्मा हा। उससै पासेआ मर्यम गी अवाज आईं जेहकी इक फरिश्ते नै दिती ही।
2. यानी इस चाल्ली रोजा रक्खियै लोकें दे सुआलें शा अपनी जान छड़ाओ।
3. इस आयत च एह् दस्सेआ गेदा ऐ जे जिसलै हजरत ईसा मसीह जुआन होए ते उनें अल्लाह पासेआ नबुव्वत दी पदवी प्रास करी लैती तां उंदी माता उनेंगी लेइयै अपनी जाति दे लोकें कश आईं।

हे हारून दी भैन! तेरा पिता ते बुरा आदमी
नेई हा, ते तेरी मां बी बदकार नेई ही ॥ 29 ॥

इस पर उसनै उस (बच्चे) पासै शारा कीता,
उस पर लोकें गलाया, अस एहदे कनै किस
चाल्ली गल्लां करचै जेहका (कल्ल तक)
पंघुटै बौहने आहला बच्चा हा ॥ 30 ॥

(एह सुनियै मर्यम दे पुत्र नै) गलाया जे
अऊं अल्लाह दा बंदा आं ते उसनै मिगी
कताब बख्शी दी ऐ ते मिगी नबी बनाए दा
ऐ ॥ 31 ॥

ते अऊं जित्थें कुतै बी आं उसनै मिगी बरकत
आहला (वजूद) बनाए दा ऐ ते जदू तक
अऊं जींदा आं मिगी नमाज़ ते ज़कात दी
तकीद कीती दी ऐ ॥ 32 ॥

ते मिगी अपनी माता कनै नेक सलूक करने
आहला बनाए दा ऐ ते मिगी जालम ते बद-
किसमत नेई बनाए दा ऐ ॥ 33 ॥

ते जिस दिन अऊं पैदा होआ हा उस दिन बी
मेरे उप्पर सलामती नाज़ल होई ही ते जिसलै
अऊं मरगा ते जिसलै मिगी जींदा करियै
टुआलेआ जाग (उस बेलै बी मेरे पर सलामती
नाज़ल कीती जाग) ॥ 34 ॥

(दिक्खो) एह (असल च) मर्यम दा पुत्र
ईसा ऐ ते एह (उसदी असल) सच्ची घटना
ऐ जेहदे बारै ओह (लोक) इखलाफ करा
करदे न ॥ 35 ॥

يَأْتَتْ هُرُونَ مَا كَانَ لَأَبِيكَ أَمْرًا سَوْءًا
وَمَا كَانَتْ أُمَّتٍ بَغِيًّا ۝

فَأَسَارَتْ إِلَيْهِ قَالُوا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ
كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ۝

قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ ۝ أُتِنِيَ الْكِتَابَ
وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ۝

وَجَعَلَنِي مُبْرَكًا آيِنَ مَا كُنْتُ
وَأَوْصِنِي بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ مَا دُمْتُ
حَيًّا ۝

وَبَرًّا بِوَالِدَتِي ۝ وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا
شَقِيًّا ۝

وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَيَوْمَ أَمُوتُ
وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ۝

ذَلِكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۝ قَوْلَ الْحَقِّ
الَّذِي فِيهِ يَمْتَرُونَ ۝

1. हज़रत मर्यम गी हज़रत हारून दी भैन आखेआ गेदा ऐ। ईसाई इतराज करदे न जे कुर'आन नै मुखता बश हज़रत ईसा दी माता गी ओह मर्यम समझी लैता ऐ जो हज़रत मूसा ते हज़रत हारून दी भैन हौं, पर उंदा इतराज ठीक नेई। सारी जातियें च एह प्रथा प्रचलत ऐ जे बच्चें दे नांउ पुरखें दे नाएँ पर रक्खे जंदे न। जेकर हज़रत मर्यम दे कुसै भ्राऊं दा नांउ हारून होऐ तां इस च केह रहानगी ऐ। उसी मूसा दा भ्राउ साबत करना ते आपूँ ईसाइयें दी मनघड़त गल्ल ऐ। पवित्र कुर'आन नै ऐसा नेई गलाया। इयै सुआल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. थमां पुच्छेआ गेदा हा ते उर्नें बी इयै जवाब दिता हा। (दिक्खो फ़तहलुबयान प्रति 6 सफा 16)

खुदा दी शान दै एह खलाफ ऐ जे ओह कोई पुत्तर बनाऽ। ओह इस गल्ला थमां पाक ऐ ओह जिसलै कदें कुसै गल्लै दा फैसला करदा ऐ तां आखदा ऐ (इयां) होई जा तां उआं गै होन लगी पाँदा ऐ (फी उसी मदद आसतै पुत्तर बनाने दी केह लोड़ ऐ) ॥ 36 ॥

ते अल्लाह मेरा बी रब्ब ऐ ते थुआड़ा बी रब्ब ऐ। उससै दी अबादत करो इयै सिद्धा रस्ता ऐ ॥ 37 ॥

मगर बक्ख-बक्ख गरोहें (टोलिखें) आपस च इखलाफ कीता (ते सचाई गी छोड़ी दित्ता) इस लेई जिनें लोकेँ इक बड्डे ध्याड़ै हाजर होने थमां इन्कार कीता उंदे पर अजाब नाजल होग ॥ 38 ॥

जिस दिन ओह साढ़े हज़ूर च(सामनै) हाजर होइन उस दिन उंदी सुनने दी शक्ति बड़ी तेज होग ते नजरां बी बड़ियां तेज होइन पर ओह जालम अजब बड़ी भारी गुमराही च फसे दे न ॥ 39 ॥

ते उनें गी उस दिनै थमां डराऽ जिस दिन (अफसोस ते) मयूसी छाई दी होग (यानी क्यामत दे दिनै थमां) जिसलै सारी गल्लें दा फैसला होई जाग ते (हून ते) एह लोक ग़फ़लत च (पेदे) न ते ईमान नेई आहनदे ॥ 40 ॥

अस यकीनन (सारी) धरती दे बी बारस होगे ते उनें लोकेँ दे बी जेहेक इस पर रौहदे न ते (आखरकार) सारे लोक साढ़े पासै गै परताइयै ल्यांदे जाडन ॥ 41 ॥ (रुकू 2/5)

ते तूँ कुरआन करीम दे मताबक इब्राहीम दा जिकर कर। ओह यकीनन बड़ा सच्चा हा ते नबी हा ॥ 42 ॥

مَا كَانَ لِلَّهِ أَنْ يَتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ سَخْنَةً ۗ
إِذَا قُضِيَ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ
فَيَكُونُ ﴿٣٦﴾

وَإِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۗ
هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٣٧﴾

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۗ
فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ مَّشْهَدِ
يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٣٨﴾

أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصُرْ يَوْمَ يَأْتُونَنا لَكِنِ
الظَّالِمُونَ أَيُّومٍ فِي ضَلالٍ مُبِينٍ ﴿٣٩﴾

وَآنذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ
الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا
يُؤْمِنُونَ ﴿٤٠﴾

إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْها وَإِنَّا
بِهِ لَصَدِيقُونَ ﴿٤١﴾

وَإذْ كُنَّا فِي الْكُتُبِ إِبْرَاهِيمَ ۗ إِنَّهُ كَانَ
صِدِّيقًا نَبِيًّا ﴿٤٢﴾

(ते तू उस बेले गी बी याद कर। ते लोकें दे सामनै ब्यान कर) जिसलै इब्राहीम ने अपने पिता गी आखेआ हा जे हे मेरे पिता! तुस की उनें चीजें दी पूजा करदे ओ जो नां सुनदियां न ते नां दिखदियां न ते नां तुंदी कुसै तकलीफ गी दूर करने दी समर्थ रखदियां न ॥ 43 ॥

हे मेरे पिता! मिगी इक खास इलम अता कीता गेदा ऐ जो तुसेंगी नेई मिले दा। इस आस्तै (बावजूद इस दे जे अऊं तुंदा पुत्तर आं) तुस मेरा अनुसरण करो। अऊं तुसेंगी सिद्धा रस्ता दसगा ॥ 44 ॥

हे मेरे पिता! शतान दी अबादत नेई करो, शतान यकीनन खुदा-ए-रहमान दा ना-फरमान ऐ ॥ 45 ॥

हे मेरे पिता! अऊं डरना जे तुसेंगी खुदा-ए-रहमान पासेआ (ना फरमानी दी ब'जा करी) कोई अज़ाब नेई पुज्जै, जेहदे नतीजे च तुस शतान दे दोस्त बनी जाओ ॥ 46 ॥

इस पर (इब्राहीम दे पिता नै) गलाया, हे इब्राहीम! क्या तू मेरे उपास्थें कनै नफ़रत करा करना ऐं ते इब्राहीम! जेकर तू बाज नेई आया तां अऊं तेरे पर जरूर पथरैद करी देड ते (बेहतर ऐ जे) तू किश चिरे आस्तै मेरी नजरें थमां दूर (ओहलै) होई जा (तां जे गुस्से च अऊं किश करी निं ब'मां) ॥ 47 ॥

(इस पर इब्राहीम नै) आखेआ अच्छा मेरे पासेआ तुंदे पर म्हेशां सलामती दी दुआऽ पुजदी र'वै (यानी अऊं तुंदे थमां अलग्ग होई जन्मां) अऊं अपने रब्ब अगें तुंदे आस्तै जरूर माफी दी दुआऽ करड, ओह मेरे उप्पर बड़ा मेहरबान ऐ ॥ 48 ॥

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ۗ ﴿٤٣﴾

يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ۗ ﴿٤٤﴾

يَا أَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ ۗ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَنِ عَصِيًّا ۗ ﴿٤٥﴾

يَا أَبَتِ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يَمَسَّكَ عَذَابٌ مِنَ الرَّحْمَنِ فَتَكُونَ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا ۗ ﴿٤٦﴾

قَالَ أَرَأَيْتَ أَنْتَ عَنْ الْهَيْقِ
يَا أَبْرَاهِيمَ ۗ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهَ لِأَرْجَمَتِكَ
وَأَهْجُرَنِي مَلِيًّا ۗ ﴿٤٧﴾

قَالَ سَلِّمْ عَلَيْكَ ۗ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّي ۗ إِنَّهُ كَانَ بِنِي حَفِيًّا ۗ ﴿٤٨﴾

ते (हे पिता!) अरुं तुसेंगी ते जिनें (बजूदें) गी तुस अल्लाह दे सिवा पूजदे ओ सारें गी छोड़ी देगा ते सिर्फ अपने रब्ब दे हजूर च दुआऽ मंगगा (ते) यकीनन अरुं अपने रब्ब दे हजूर च दुआऽ करने दी ब'जा करी बद-नसीब नेई बनगा ॥ 49 ॥

फी जिसलै (इब्राहीम) उंदे (यानी अपने लोकें) थमां ते जिंदी ओह अल्लाह दे सिवा पूजा करदे हे (उंदे थमां बी) जुदा होई गेआ, तां असें उसी इस्हाक ते (उसदे बा'द) याकूब अता कीते ते उनें सारें गी असें गै नबी बनाया ॥ 50 ॥

ते असें उनेंगी अपनी रहमत बिच्चा इक (बड़डा) हिस्सा अता कीता ते असें उंदे आस्तै म्हेशां कायम रहने आहली अब्बल दरजे दी याद कायम कीती ॥ 51 ॥ (रुकू 3/6)

ते तू कुर'आन' दे मताबक मूसा दा बी जिकर कर, ओह साहा चुने दा बंदा हा ते रसूल (ते) नबी हा ॥ 52 ॥

ते असें मूसा गी तूर (पर्वत) दी सच्ची बक्खी दा पुकारेआ ते उसी अपने भेद दसदे होई अपने करीब करी लैता ॥ 53 ॥

ते असें उस (मूसा) गी अपनी रहमत कनै ओहदा भ्राऽ हारून नबी बनाइयै (मदादी दे तौरै पर) दिता ॥ 54 ॥

ते तू कुर'आन दे मताबक इस्माईल दा बी जिकर कर, ओह बी यकीनन सच्चे बा'यदें आह्ला हा ते रसूल (ते) नबी हा ॥ 55 ॥

وَاعْتَرِ لَكُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
وَأَدْعُوا رَبِّي عَسَىٰ أَلَّا أَكُونَ بِدُعَاءِ
رَبِّي شَقِيًّا ۝۱۹

فَلَمَّا اعْتَرَاهُمُ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ
دُونِ اللَّهِ وَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ
وَكَوَلَّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ۝۲۰

وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِنْ رَحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ
لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ۝۲۱

وَأذْكَرُ فِي الْكِتَابِ مَوْسَىٰ ۚ إِنَّهُ كَانَ
مُخْلِصًا وَقَانَ رَسُولًا نَبِيًّا ۝۲۲

وَنَادَيْتُهِ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ الْأَيْمَنِ
وَقَرَّبْتُهُ نَجِيًّا ۝۲۳

وَوَهَبْنَا لَهُ مِنْ رَحْمَتِنَا أَخَاهُ هَارُونَ
نَبِيًّا ۝۲۴

وَأذْكَرُ فِي الْكِتَابِ إِسْمَاعِيلَ ۚ إِنَّهُ كَانَ
صَادِقَ الْوَعْدِ وَقَانَ رَسُولًا نَبِيًّا ۝۲۵

1. कुर'आन च जिकर करने दा एह अर्थ ऐ जे कुर'आन मजीद उंदी घटनाएं दा स्हेई बर्णन करदा ऐ, पर बाइबिल उनें घटनाएं गी गलत ते बधाई-चढ़ाइयै ब्यान करदी ऐ। इस आस्तै कुर'आन मजीद ने सुधार करने दी जरूरत मसूस कीती। इस लेई स्हेई इतिहास सामनें औना लोड़चदा ऐ बरना बाइबिल दे ब्यान कनै दुनियां गुमाराह होग।

ते अपने परिवार गी नमाज़ ते ज़कात दी खास तकीद करदा रौंहदा हा ते अपने रब्ब गी बड़ा पसंद हा ॥ 56 ॥

وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُ بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ
وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهِ مَرْضِيًّا ۝

ते तू कुरआन दे मताबक इद्रीस दा बी जिकर कर, ओह बी सच्चा नबी हा ॥ 57 ॥

وَإِذْ كُنَّا فِي الْكُتُبِ إِدْرِيسَ إِنَّهُ كَانَ
صِدْقًا نَبِيًّا ۝

ते असें उसी सर्वोच्च (सारें शा उच्ची) ज'गा तक पुजाया हा ॥ 58 ॥

وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۝

एह सारे दे सारे ओह लोक हे, जिंदे पर खुदा नै नबियें बिच्चा इन्आम कीता हा। उंदे (नबियें) बिच्चा जेहके आदम दी उलाद हे ते जेहके उनें लोकें दी उलाद हे जिनेंगी असें नूह दे कनै किरती राहें बचाया ते इब्राहीम ते याकूब दी (उलाद हे) ते उनें (लोकें) बिच्चा हे जिनें गी असें हदायत दिती ते अपने आस्तै चुनी लैता हा। जिसलै उंदे उप्पर खुदा-ए-रहमान दा कलाम पढ़ेआ जंदा हा, तां ओह सजदा करदे होई ते रोंदे होई (धरती पर) डिग्गी पौंदे हे ॥ 59 ॥

أُولَئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ
النَّبِيِّينَ مِنْ ذُرِّيَةِ آدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا
مَعَ نُوحٍ وَمِنْ ذُرِّيَةِ إِبْرَاهِيمَ
وَإِسْرَائِيلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا
إِذَا تَلَى عَلَيْهِمْ آيَاتِ الرَّحْمَنِ خَرُّوا
سُجَّدًا وَبُكْيًا ۝

फी उंदे बा'द इक ऐसी नसल आई जिनें नमाज़ गी जाया करी दिता ते अपनी इच्छाएं दे पिच्छें पेई गे। इस लेई ओह तौले गे गुमराही दे मकाम तक पुज्जी जाडन ॥ 60 ॥

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا
الصَّلَاةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهْوَاتِ فَسُوفَ
يَلْقَوْنَ عَذَابًا ۝

सिवाए उस दे जेहका तोबा करी लैग ते ईमान लेई औग ते नेक कर्म करग। ऐसे (लोक) जन्नत च दाखल होडन ते उंदे उप्पर कोई जुलम नेई कीता जाग ॥ 61 ॥

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا
فَأُولَئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ
شَيْئًا ۝

यानी (उनें जन्नतें च) जो म्देशां रौहने आहलियां न ते जिंदा (खुदा-ए) रहमान नै अपने बंदें कनै ऐसे मौकै बा'यदा कीता ऐ

جَبَّتْ عَدْنُ الَّتِي وَعَدَ الرَّحْمَنُ عِبَادَهُ

जिसलै के ओह उंदी नजरें शा बी ओहलै¹ न।
यकीनन खुदा दा बा'यदा पूरा होइयै रौहदा ऐ
॥ 62 ॥

ओह उंदे (जन्तें) च कोई अनर्थ गल्ल नेई
सुनडन बल्के सिर्फ सलामती (ते अमन दियां
गल्लां सुनडन) ते उंदे (जन्तें) च उनेंगी
संजां-सवैरै रिशक मिलग ॥ 63 ॥

एह ओह जन्त ऐ जिसदा बारस अस अपने
बंदें बिच्चा उनें गी बनागे जेहके संयमी होडन
॥ 64 ॥

ते (फरिश्ते उनेंगी आखडन जे) अस ते सिर्फ
थुआड़े रब्ब दे हुकम कनै उतरने आं ते जे
किश साढ़े अगें ऐ ते जे किश साढ़े पिच्छें ऐ
ते जे किश इनें दौत्रें (दिशें) बशकार ऐ सब
किश खुदा दा ऐ ते थुआड़ा रब्ब भुल्लने
आहला नेई ॥ 65 ॥

(ओह) गासें दा (बी) रब्ब ऐ ते धरती दा
बी (रब्ब) ते जे किश उनें दौनीं बशकार
(ऐ) इस लेई (हे मुसलमान) उसदी अबादत
कर ते उसदी अबादत उप्पर म्हेशां कायम
रौह। क्या तूं ओहदे जनेही सिफतें आहले
कुसै होर गी जानना ऐं ॥ 66 ॥ (रुकू 4/7)

ते इन्सान म्हेशां एह आखदा रौहग जे क्या
जिसलै अऊं मरी जाड तां फी जीवादान देइयै
दुआली लैता जाड'² ॥ 67 ॥

क्या इन्सान गी एह (गल्ल) याद नेई जे असें
उसगी इस थमां पैहलें पैदा कीता हा ते (उस
बेलै) ओह कोई चीज नेई हा ॥ 68 ॥

بِالْغَيْبِ ۗ إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًا ۝

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا إِلَّا سَلَامًا ۗ وَلَهُمْ
رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ۝

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا
مَنْ كَانَ تَقِيًّا ۝

وَمَا نُنَزِّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ۗ لَهُ مَا
بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَلِكَ ۗ
وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۝

رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ ۗ هَلْ تَعْلَمُ
لَهُ سَمِيًّا ۝

وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ ۖ إِذَا مَا مِثُّ لَسَوْفَ
أُخْرَجُ حَيًّا ۝

أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ
وَلَمْ يَكُ مِثًّا ۝

1. एह आयत बी दसदी ऐ जे एह मुसलमानें दी तरक्की दे बावत (बारे) ऐ बरना अगले ज्हाँ दी जन्तें दा
मुसलमानें गी जिंदगी च कदें बी इलम नेई होई सकदा हा।

इस लेई तेरे रब्ब दी कसम अस (जो तेरे रब्ब आं) उनें लोकें गी (फी इक बार) दुआलगे ते शतानें गी बी (दुआलगे ते) फी उनें सांरें गी ज्हनम दे चपासै ऐसी सूरत च हाजर करगे जे ओह गोडें दे भार डिगो' दे होडन ॥ 69 ॥

فَوَرَبِّكَ لَنَحْضُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ۝

फी अस हर इक गरोह बिच्चा ऐसे लोकें गी अलग्ग करी लैगे जो (खुदा-ए) रहमान दे सख्त दुश्मन हे ॥ 70 ॥

ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمَنِ عِتِيًّا ۝

ते अस खूब जानने आं जे उंदे चा कु'न दोजख (नरक) च जाने दे ज्यादा काबल ऐ ॥ 71 ॥

ثُمَّ لَنُنْخِثَنَّ أَهْلَهُم بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا صِلِيًّا ۝

ते तुंदे बिच्चा हर शख्स ओहदे (दोजख) च' जाने आहला ऐ। एह खुदा दा ऐसा पक्का बा 'यदा ऐ जेहका होइयै रौहग ॥ 72 ॥

وَإِنْ مِنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ۝

ते अस संयमियें गी बचाई लैगे, ते जालमें गी उस च गोडें दे भार पेदे छोड़ी देगे ॥ 73 ॥

ثُمَّ نُتَجِّى الَّذِينَ اتَّقَوْا وَنَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ۝

ते जिसलै उनेंगी साढी खु'ल्ली-खु'ल्ली आयतां पढ़ियै सुनाइयां जंदियां न, तां काफर मोमिनें गी आखदे न (दस्सो हां) साढे दौनें फिरकें बिच्चा केहड़ा फिरका दरजे दे लिहाज कनै बेहतर ते किट्ठे बौहने आहले मित्तरें दी दिश्टी कनै अच्छा ऐ ॥ 74 ॥

وَإِذْ أَتَىٰ عَلَيْهِمُ الْيَتْمَانِيَّةُ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَأَحْسَنُ نَدِيًّا ۝

ते असें उंदे थमां पैहलके बड़े सारे जमाने दे लोकें गी हलाक कीते दा ऐ जेहके समानें दे लिहाज कनै ते जाहरी शान-शौकत दे लिहाज कनै उनें लोकें थमां अच्छे हे ॥ 75 ॥

وَكَمُ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ أَحْسَنُ أَثَاثًا وَرِعْيًا ۝

1. अर्थात् ओह नम्रता पूर्वक दुआड करा करदे होडन।
2. कुर'आन मजीद थमां पता लगदा ऐ जे नरक दो न। इक इस लोक दा दूआ परलोक दा। मोमिन इस संसार च गै नरक भोगी लैदा ऐ अर्थात् इन्कार करने आहले लोक उनेंगी केई चाल्लीं दे कश्ट ते दुख दिंदे न। दैवी दुख बी मोमिनें आस्तै नरके बरोबर ऐ जियां के हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. नै बुखार गी बी मोमिन आस्तै इक चाल्ली दी नरके दी अग ठरहाए (गलाए) दा ऐ। (फ़तहुलबयान भाग6 सफा 36)

तू आखी दे जे जेहका शख्स गुमराही च (पेदा) होऐ (खुदा-ए) रहमान उसी इक अरसे तक ढिल्ल दिंदा रौहदा ऐ। इत्थें तक जे जिसलै ऐसे लोकें दे सामनै ओह अजाब आई जाग जिस दा उंदे कनै बा 'यदा कीता गेदा हा (यानी) जां संसारक अजाब जां (कौमी) पूरे तौर तबाही उस बेलै ओह सेही करी जाडन जे केहड़ा शख्स सम्मान दे लिहाजें बुरा ऐ ते दोस्तें दे लिहाजें कमजोर ऐ ॥ 76 ॥

ते अल्लाह जिनें हदायत पाई दी होग उनें लोकें गी हदायत च बधांदा जाग ते बाकी रौहने आहले नेक कर्म खुदा दी नजर च सारे बेहतर न। सिले दे लिहाजें बी ते अन्जाम दे लिहाजें बी ॥ 77 ॥

क्या तोह कदें उस शख्स दी हालत उप्पर गौर निं कीती जिसनै साढ़े नशानें दा इन्कार कीता ते आखेआ जे मिगी यकीनन मता सारा' माल ते मते-हारे पुत्तर दिते जाडन ॥ 78 ॥

क्या उसनै गैब (दा हाल) सेही करी लैता ऐ जां (खुदा-ए) रहमान थमां कोई बा 'यदा लेई लैता ऐ ॥ 79 ॥

ऐसा कदें बी नेई^२ होग। अस उसदे इस वचन गी सुरक्षत रखगे ते उसदे अजाब गी लम्मा करी देगे ॥ 80 ॥

ते जिस चीजा उप्पर ओह घमंड^३ करा करदा ऐ उस दे बारस अस बनी जागे ते ओह साढ़े कश इक्कला गै औग ॥ 81 ॥

قُلْ مَنْ كَانَ فِي الصَّلَاةِ فَلْيُمَدِّدْ لَهُ
الرَّحْمَنُ مَدًّا حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا
يُوعَدُونَ ۖ إِنَّمَا الْعَذَابُ وَإِنَّمَا السَّاعَةُ ۗ^٤
فَسَبِّعْمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضْعَفُ
جُنْدًا ۖ

وَيَزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى ۗ^٥
وَالْبَقِيَّةُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ
ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَّرَدًّا ۖ

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ
لَأُوتَيْنَ مَالًا وَوَلَدًا ۖ

أَظَلَعَ الْغَيْبِ أَمْ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ
عَهْدًا ۗ

كَلَّا ۗ سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ
مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ۗ

وَنُرْسِلُهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ۖ

1. इस आयत च ईसाइयें दा जिकर ऐ जिंदा एह अकीदा ऐ जे हजरत मसीह दे औने परैत मौत दा सिलसला खत्म होई जाग ते इसै दुनियां च ईसाई लोक अमर जीवन पाडन। आखो जेहकी तरक्की उनें गी हून हासल ऐ ओह क्यामत तक रौहग।
2. अर्थात् ईसाइयें दा एह मनना गलत ऐ, की जे जेकर ओह मरडन तां बी स 'जा पाडन ते जेकर संसार च जींदे रौहडन तां बी अल्लाह उनें गी दंड देने दा कोई नां कोई ढंग कइदी लैग।
3. यानी उसी जिनें चीजें पर घमंड ऐ खुदा उंदा बारस होई जाग। यानी उंदे थमां खूसियै अपने प्यारे बंदें गी देई देग। इस च इस्लाम दी तरक्की बारे भविष्यवाणी कीती गेदी ऐ।

ते उनें लोकेँ अल्लाह दे अलावा बड़े हारे उपास्य बनाई लेदे न, इस मेद कनै जे ओह इनें लोकेँ आस्तै इज्जत दा मूजब बनडन ॥ 82 ॥

ऐसा कदें बी नेई होग, ओह उपास्य इक दिन उंदी अबादतें दा इन्कार करी देडन। ते उंदे खलाफ खड़ोई जाडन ॥ 83 ॥ (रुकू 5/8)

क्या तुगी पता नेई जे असें शतानें गी छोड़ी रक्खे दा ऐ जे ओह काफरें गी उकसांदे रौहन ॥ 84 ॥

इस लेई तूँ उंदै खलाफ जल्दी च कोई कदम नेई चुक्क, असें उंदी तबाही दे दिन गिनी रक्खे दे न ॥ 85 ॥

जिस दिन अस संयमियें गी जींदा करियै (खुदा-ए) रहमान दे हजूर च किट्ठे करियै लेई जागे ॥ 86 ॥

ते मुजरमें गी हिकदे होई ज्हनम पासै लेई जागे ॥ 87 ॥

उस दिन कुसै गी शफ़ात (सफारश) दा अखत्यार नेई होग, सवाए उस दे जिसनै (खुदा-ए) रहमान थमां प्रण लेई रक्खे दा ऐ ॥ 88 ॥

ते एह (लोक) आखदे न जे (खुदा-ए) रहमान नै पुत्तर बनाई लेदा ऐ ॥ 89 ॥

(तूँ आखी दे) तुस इक बड़ी सख्त गल्ल करे करदे ओ ॥ 90 ॥

ममकन ऐ जे (थुआड़ी गल्ला कनै) गास फटिटयै डिग्गी पौन ते धरती टुकड़े-टुकड़े होई जा ते फ्हाड़ चूरो-चूर होइयै (धरती पर) जाई पौन ॥ 91 ॥

इस आस्तै जे उनें लोकेँ (खुदा ए) रहमान दा पुत्तर करार दिते दा ऐ ॥ 92 ॥

وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ إِلَهًا لِيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ۗ

كَلَّا سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ۗ

أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيَاطِينَ عَلَى الْكُفْرِينَ تَوَرَّوهُمْ أَزًّا ۗ

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَذَابًا ۗ

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَنِ وَفَدًّا ۗ

وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ إِلَى جَهَنَّمَ وَرِثًا ۗ

لَا يَمْلِكُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ۗ

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا ۗ

لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِذَا ۗ

تَكَادَ السَّمَوَاتُ يَتَّقَطْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ۗ

أَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمَنِ وَلَدًا ۗ

ते (खुदा ए) रहमान दी शान दे एह बिल्कुल खलाफ ऐ जे ओह कोई पुत्र बनाऽ ॥ 93 ॥

وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمَنِ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ۗ

की जे हर इक जो गासैं ते धरती च ऐ ओह (खुदा-ए) रहमान दे हजूर च गुलाम दी सूरत च हाजर होने आहला ऐ ॥ 94 ॥

إِنَّ كُلَّ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا أَتَى الرَّحْمَنَ عَبْدًا ۗ

(खुदा नै) उनेंगी घेरी रक्खे दा ऐ ते गिने दा ऐ ॥ 95 ॥

لَقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ۗ

ते क्यामत आहलै रोज ओह सारे दे सारे कल्ले' (कल्ले) उस दी खिदमत च हाजर होऽन ॥ 96 ॥

وَكُلُّهُمْ أَتِيهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَرْدًا ۗ

यकीनन ओह लोक जो ईमान ल्याए न ते जिनें नेक कर्म कीते दे न (खुदा ए) रहमान उंदे आस्तै अथाह प्रेम पैदा करग ॥ 97 ॥

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَنُ وُدًّا ۗ

1. इस आयत थमां साबत होंदा ऐ जे इस च संसारक अजाबें दे अलावा आखरत दे अजाब दा बी जिकर ऐ। जिसी हर शख्स अपने कर्म मताबक भुगतग। हां जेकर कल्ले-कल्ले दा मतलब हर इक कौम होऐ तां फी एह आयत उस दुनियां दे अजाबें पर बी लागू होई सकदी ऐ।
2. वुद्द उस म्हब्बत गी आखदे न जो किल्ले आंगर दिलैं च गडोई दी होऐ। इस आस्तै इस आयत दे मैहने अरबी जवान दे लिहाजें इयां बनदे न जे मोमिनें दे दिलें च अल्लाह तआला अपना प्रेम किल्ले आंगर गड्डी देग। जां एह जे अपने दिल च मोमिनें दा प्रेम किल्ले आंगर गड्डी देग। जां एह जे मोमिनें दे दिलें च बनी नूह इन्सान दा प्रेम किल्ले आंगर गड्डी देग। ते इस दे नतीजे च बनी नूह इन्सान दे दिलैं च मुसलमानें दा प्रेम किल्ले आंगर गडोई जाग। इस करी इस दी मसाल रोम दी बिजें च मिलदी ऐ इक बारी जदू ईसाई लश्कर बड़ी तदाद च अगमें बंधेआ ते मुसलमानें समझेआ जे हून अस इंदा मकाबला नेई करी सकदे तां जो रपेआ मुसलमानें देश दी फहाजत आस्तै टैक्स दे तीरा पर बसूल कीते दा हा ओह सब देश दे लोकें गी बापस करी दिता इस दा असर ईसाइयें ते यहूदियें उप्पर इन्ना पेआ जे ओह मुसलमानें दे लश्कर गी रोंदे होई बिदा करन गे ते पादरी बी ते दूए लोक बी दुआऽ करदे जंदे हे जे खुदा मुसलमानें गी परतियै बापस आहनें ते यहूदी इन्ने मतासर हे ते ओह आखदे हे जे खुदा दी कसम अस अपनी जानां देई देगे मगर ईसाई लश्कर गी शैहरें च दाखल नेई हौन देगे। फ्रतहुल् बयान सफा-143 प्रेम दी एह अमली नसीहत मसीह दी तालीम थमां किन्नी शानदार ऐ। मसीह नै ते सिर्फ जबान्नी आखेआ हा जे खुदा प्रेम ऐ मगर मुसलमानें अमली तौर साबत करी दिता जे खुदा प्रेम ऐ ते मसीह नै प्रेम दा लफज इस्तेमाल कीता ते कुरआन मजोद नै 'वुद्द' दा लफज इस्तेमाल कीता जो उस थमां मता शदीद ऐ ते प्रेम दे लफज थमां केई गुणा ज्यादा प्रेम पर निरभर करदा ऐ। की जे प्रेम दा अर्थ ऐ जे दिलैं च इक दाना फुट्टी आया। मगर 'वुद्द' दा अर्थ ऐ जे प्रेम इन्ना शदीद होई गेआ जे ओह किल्ले आंगर खुब्बी गेआ। इस आस्तै कुजा इंजील दी प्रेम बारै शिक्षा ते कुजा कुरआन मजोद दी प्रेम बारै शिक्षा। दौनें च जमीन-असमान दा फर्क ऐ।

इस आस्तै असें ते इस (कुरआन) गी तेरी
जबान च असान करियै उतारेआ ऐ तां जे तूं
एहदे राहें संयमियें गी शुभ समाचार देऐं ते
एहदे राहें लड़ाकू कौम गी सोहगा करै ॥ 98 ॥

ते किन्नी गै उम्मतां (अर्थात् संप्रदाय) न जो
उंदे थमां पैहलें होई चुकी दियां न ते अस
उनेंगी हलाक करी चुके दे आं क्या तूं उंदे चा
कुसै गी बी कुसै इंदरी द्वारा मसूस करी सकना
ऐं जां उंदी भिनक सुनी सकना ऐं ॥ 99 ॥ ?
(रुकू 6/9)

فَأَنمَّا يَسِرُّنَّهِ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ
وَتُنذِرَ بِهِ قَوْمًا لُدًّا ﴿۱۰﴾

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ
هَلْ خَسَّتْ مِنْهُمْ مِّنْ أُمَّةٍ أَوْ سَمِعُوا
لَهُمْ رِكْزًا ﴿۱۱﴾

ooo



सूर : ताहा

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां इक सौ छिती आयतां ते अट्ठ रुकू न।

(मैं) अल्लाह दा नांऽ लेइयै जो बे-हद कर्म
करने आहला (ते) बार-बार रहम करने आहला
ऐ (पढ़ना) ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

हे संपूर्ण शक्तियें आहले! महापुरश ॥ 2 ॥

طه ①

असें तेरे पर (एह) कुरआन इस आस्तै नाजल
नेई कीता जे तू दुख च फसी जाएं ॥ 3 ॥

مَا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَشْقَى ①

(एह ते) सिर्फ (खुदा थमां) डरने आहले
इन्सान आस्तै पथ-प्रदर्शन ते हदायत (आस्तै)
ऐ ॥ 4 ॥

إِلَّا تَذَكَّرَ لِمَنْ يَشَاءُ ①

(कुरआन) ओहदे पासेआ तुआरेआ गेदा ऐ
जिसनै धरती ते उच्चे गासैं गी पैदा कीते दा
ऐ ॥ 5 ॥

تَنْزِيلًا مِمَّنْ خَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّمَوَاتِ
الْعُلَى ①

(ओह) रहमान (ऐ जो) अर्श पर पक्के तौरा
पर कायम होई गेदा ऐ ॥ 6 ॥

الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى ①

गासैं ते धरती च जो कुछ ऐ, ते ओह बी जो
इनें दौनै मझाटे ऐ उस्से दा ऐ इसदे अलावा
(ओह बी) जो गिल्ली मिट्टी दे थल्ले ऐ ॥ 7 ॥

لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرَى ①

1. मूल शब्द 'ताहा' खंडाक्षरें चा नेई ऐ बल्के अरब देश दे बक्ख-बक्ख घरानें च इस शब्द दा अर्थ ऐ-संपूर्ण शक्तियें आहला पुरश। (फ़तहल्लुबयान) संपूर्ण शक्तियें आहले व्यक्ति कनै इस पासैं संकेत कीता गेदा ऐ जे पुरशाथं दे सारे गुण, बीरता, धीरता, दानशीलता ते पाप बिरती दा पूरा मकाबला करने आहला। इनें गुणें च हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. गै सारें शा बद्ध समर्थ न। अर्थात् इक सर्वश्रेष्ठ पुरश च जो-जो गुण होने लोइचदे न ओह सारे दे सारे तुंदे च उत्तम रूप च मजबूद हे।

ते जेकर तू उच्ची अवाज च बोल्लें (तां इस कन्नै कोई फर्क नई पौंदा) की जे ओह गुस गल्लै गी बी जानदा ऐ ते जो भलेआं गुस होंदी ऐ (उसी बी जानदा ऐ) ॥ 8 ॥

وَأَنْ تَجْهَرُ بِأَنْفُولٍ فَإِنَّهُ يَعْلَمُ السِّرَّ
وَأَخْفَى ①

अल्लाह (ओह जात/हस्ती ऐ जे उस) दे सिवा कोई उपास्य नई। ओहदे च नेकां सदगुण (सिफतां) न ॥ 9 ॥

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْأَسْمَاءُ
الْحُسْنَى ①

ते (उस दे सबूत च अस आखने आं जे) क्या तेरे कश मूसा दी घटना पुज्जी ऐ (जां नई) ॥ 10 ॥

وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ①

(यानी) जिसलै उसनै इक अग्नि दिक्खी तां उसनै अपने घरे आहलें गी आखेआ (अपनी ज'गा) रुकी र'वो। मैं इक अग्नि' दिक्खी ऐ ममकन ऐ जे अऊं उलथें जाइयै उस अग्नि चा कोई अंगारा' थुआड़े आस्तै बी लेई आमां जां अग्नि पर (अपने आस्तै कोई रुहानी) हदायत हासल करां ॥ 11 ॥

إِذْ رَأَى نَارًا فَقَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا الْبَيْتَ
أَنْتُمْ نَارًا أَلْعَلَّ أَنْتُمْ مِمَّنَّ يَقْبِئِينَ
أَوْ أَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ①

फी जिसलै ओह उस (अग्नि) कश पुज्जेआ तां उसी अवाज' दिती गेई जे हे मूसा! ॥ 12 ॥

فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ يَمُوسَى ①

अऊं तेरा रब्ब आं, इस आस्तै तू अपनी दमें जुत्तियां' तुआरी दे, की जे तू उस पाक वादी 'तुवा' च ऐं ॥ 13 ॥

إِنِّي أَنَا رَبُّكَ فَاصْلَعْ نَعْلَيْكَ ② إِنَّكَ
بِأَلْوَادِ الْمُقَدَّسِ طَوًى ③

1. लफ्ज 'इक अग्नि' थमां पता लगदा ऐ जे हजरत मूसा आपूं बी उसी कशफ समझदे हे। की जे जेकर ओह आम अग्नि होंदी तां ओह 'इक अग्नि' नई आखदे बल्के अग्नि आखदे ते सचाई एह ऐ जे उनेंगी इक ज्योति लब्बी ही जो अग्नि दी शकली च ही। हजरत मूसा मसूस करदे हे जे जो कुछ नजरी आया ऐ ओह खुदा तआला दा इक करिश्मा ऐ। तां गै उनें रिश्तेदारें गी गलाया जे मैं इक अग्नि दिक्खी ऐ।
2. की जे ओह नजारा अग्नि दी शकली च हा इस आस्तै उसदे बारे च सारे शब्द रूपक ब'नियै बोल्ले गे हे यानी जेकर एह करिश्मा कुसै खास शख्स आस्तै ऐ तां अऊं अपने आस्तै हदायत हासल करड' ते जेकर एह ज्योति कौम आस्तै ऐ तां अऊं थुआड़े आस्तै रोशनी ते हदायत ते तालीम (शिक्षा) दे साधन लेई औड' जेहदे शा तुस फायदा लेई सकगे ओ।
3. इस दा एह मतलब नई जे अग्नि च अल्लाह हा, बल्के मतलब एह ऐ जे अग्नि दा नजारा दस्सने आह्ला अल्लाह हा।
4. जुत्तियें दा मतलब संसारक ब्यहार ऐ। संसारक ब्यहार रिश्ते-नातें दे करियें बी होंदे न ते जाति दे कारण बी होंदे न। इस आस्तै सरबध द'ऊं चाल्लें दे होंदे न जिनेगी दमें जुत्तियां शब्द बरातिये दस्सेआ गेदा ऐ।

ते मैं तुगी (अपने आस्तै) चुनी लैता ऐ। इस आस्तै तेरे पासै जो वही कीती जंदी ऐ उस गी तूं सुन (ते ओहदे पर अमल कर) ॥ 14 ॥

अऊं यकीनन अल्लाह आं, मेरे सिवा कोई उपास्य नेई। इस लेई तूं मेरी गै अबादत कर, ते मेरी याद आस्तै नमाज कायम कर ॥ 15 ॥

क्यामत यकीनन औने आहली ऐ। ममकन ऐ जे अऊं उसी जाहर करी देआं, तां जे हर इक जीवै गी ओहदे अपने कर्म मताबक सिला दिता जा ॥ 16 ॥

इस आस्तै जो (शख्स) क्यामत पर ईमान नेई रखदा ओह अपनी इच्छाएँ दे मगर चलदा ऐ तुगी क्यामत पर ईमान आहने थमां रोकी नेई देऐ, जिसदे नतीजे च तूं हलाक होई जाएँ ॥ 17 ॥

ते (असें उस बेलै मूसा गी आखेआ जे) हे मूसा! एह तेरे सज्जे हल्यै च केह ऐ? ॥ 18 ॥

(उसनै) आखेआ एह मेरा सोटा ऐ, अऊं एहदा सहारा लैनां ते एहदे कनै अपनी बक्करियें आस्तै (बूहटें दे) पत्तर झाड़ना ते इसदे अलावा बी एहदे च मेरे लेई फायदे (छप्पे दे) न ॥ 19 ॥

उस पर उस (खुदा) नै फरमाया, हे मूसा! इस सोटे गी धरती पर सुट्टी दे ॥ 20 ॥

इस पर उसनै उसी धरती उप्पर सुट्टी दिता। जिस दे बा'द उसनै अचानक दिक्खेआ जे ओह सप्प ऐ ते दौड़ा करदा ऐ ॥ 21 ॥

इस पर (अल्लाह नै) फरमाया, इसी पकड़ी लै ते डर नेई। अस इसी फी इसदी पैहली हालती च लेई औने आं ॥ 22 ॥

وَأَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوحَى ①

إِنِّي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي ②
وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي ③

إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزَىٰ
كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعَىٰ ④

فَلَا يَصُدُّكَ عَنْهَا مَنْ لَّيَؤُمُّ بِهَا
وَاتَّبَعِ هَوَاهُ فَتَرْدَىٰ ⑤

وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يُمُوسَىٰ ⑥

قَالَ هِيَ عَصَايَ أَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَآمَّسُ
بِهَاعْلَىٰ عَنِّي وَلِي فِيهَا مَارِبٌ أُخْرَىٰ ⑦

قَالَ لَقِهَا يُمُوسَىٰ ⑧

فَأَلْقَاهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعَىٰ ⑨

قَالَ خُذْهَا وَلَا تَحْضِفْهُنَّ سَعِيدُهَا
سِيرَتَهَا الْأُولَىٰ ⑩

ते अपने हथै गी कच्ची हेठ दबाई लै। जिसलै उसी कढगा तां ओह सफेद होग मगर बगैर कुसै रोगै¹ दे, एह इक होर नशान होग ॥ 23 ॥

(ते अस एह इस आसतै करगे) तां जे उस दे नतीजे च अस तुगी अपने बड्डे-बड्डे नशान दसगे ॥ 24 ॥

तूं फिरऔन पासै जा, की जे उसनै उददंडता दा ब्यहार अखत्यार कीते दा ऐ ॥ 25 ॥ (रुकू 1/10)

(इस पर मूसा नै) आखेआ, हे मेरे रब्ब! मेरा सीना खोहली दे ॥ 26 ॥

ते जेहकी जिम्मेदारी मेरे उप्पर पाई गई ऐ उसी पूरा करना मेरे आसतै असान करी दे ॥ 27 ॥

ते जेकर मेरी जबान उप्पर कोई गंढ होऐ तां उसी बी खोहली दे ॥ 28 ॥

(इत्थें तक जे) लोक मेरी गल्ल असान्नी कन्नै समझन लगी पौन ॥ 29 ॥

ते मेरे परिवार बिच्चा मेरा इक नायब (मदादी) बनाऽ ॥ 30 ॥

(यानी) हारून गी जो मेरा भ्राऽ ऐ ॥ 31 ॥

ओहदे राहें मेरी ताकत गी मजबूत कर ॥ 32 ॥

ते उसी मेरे कम्मै च शरीक कर ॥ 33 ॥

तां जे अस दमैं ज्यादा शा ज्यादा तेरी स्तुति करचै ॥ 34 ॥

وَأَصْمَمُ يَدَكَ إِلَى جَنَاحِكَ تَخْرُجُ بَيِّضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ آيَةً أُخْرَى ۝

لِتُرِيكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَى ۝

إِذْ هَبَّ إِلَى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَى ۝

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ۝

وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ۝

وَاخْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لِسَانِي ۝

يَقْفَهُوا قَوْلِي ۝

وَاجْعَلْ لِي وِزِيرًا مِّنْ أَهْلِي ۝

هُرُونَ أَخِي ۝

اشْدُدْ بِهِ أَزْرِي ۝

وَأَشْرِكْهُ فِي أَمْرِي ۝

كَيْ نَسِيحَكَ كَثِيرًا ۝

1. हजरत मूसा दी कताब तौरात ने एह जुलम कीते दा ऐ जे हथ सफेद होने दा कारण कोढ़ दस्से दा ऐ (दिक्खो बाइबिल बाब 4 आयत 6) पर कुरआन मजीद जो हजरत इस्माईल दी संतान दे इक महापुरा उप्पर उतारेआ गेदा ऐ, ओह हजरत मूसा पर लाए गेदे इस अलजाम गी दूर करदा ऐ ते दसदा ऐ जे हथ सफेद ते कड्डेआ हा, पर उसदा सफेद होना कुसै रोगै कारण नथा।

ते ज्यादा शा ज्यादा तुगी याद करचै ॥ 35 ॥

وَتَذُكْرِكَ كَثِيرًا ۝

तू असेंगी खूब दिक्खा करना ऐं ॥ 36 ॥

إِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيرًا ۝

(अल्लाह नै) फरमाया, हे मूसा! जे किश तोह मंगेआ, तुगी दिता गेआ ऐ ॥ 37 ॥

قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يُمُوسَى ۝

ते अस (इस शा पैहलें) इक बारी होर बी तेरे उप्पर स्थान करी चुके दे आं ॥ 38 ॥

وَلَقَدْ مَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَى ۝

जिसलै असें तेरी मां उप्पर वह्नी राहें सब किश उतारी' दिता जो (ऐसे मौकै) उतारना जरूरी हा ॥ 39 ॥

إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ مَا يُوحَىٰ ۝

(जिसदी तफसील एह ऐ) जे इस (मूसा) गी ताबूत च रक्खी दे फी उस (ताबूत) गी दरेआ च रोहड़ी दे। फी (उस दे बा'द इयां होऐ जे) दरेआ साढ़े हुकम कनै उस (ताबूत) गी कंढै तक पुजाई देऐ (तां जे) उसगी ओह शख्स लेई जा जो मेरा बी ते उस (मूसा) दा बी दुश्मन ऐ ते तेरे पर मैं अपने पासेआ प्रेम नाज़ल कीता (यानी तेरे आस्तै लोकें दे दिलें च प्रेम पैदा कीता) ते उसदा नतीजा एह होआ जे तू साढ़ी अक्खीं सामनै पलेआ² ऐं ॥ 40 ॥

أَن آقْذِفِيهِ فِي التَّابُوتِ فَآقْذِفِيهِ فِي الْيَمِّ
فَلْيَلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّي
وَعَدُوٌّ لَّهُ ۝ وَالْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّمِّي
وَلِتُصْنَعَ عَلَىٰ عَيْنِي ۝

(एह उस बेलै होआ) जिसलै तेरी भैन (कनै-कनै) चलदी जंदी ही ते आखदी जंदी ही जे हे लोको! क्या अ'ऊं तुसेंगी उस जनानी दा पता दस्सां जो इसी पाली लैग ते इस चाल्ली

إِذْ تَمْشِي أُنْحَاكَ فْتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ
عَلَىٰ مَنْ يَكْفُلُهُ ۝ فَرَجَعْنَاكَ إِلَىٰ أُمِّكَ

1. यूरोप दे किश विद्वान एह इतराज करदे न जे हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. नै बाइबिल दियां गल्लां मदीने जाने दे बा'द यहूदियें थमां सुनियें कुर'आन च लिखी दियां न। असल च हजरत ईसा दे हालात सूर: मर्यम च आए न ते हजरत मूसा दे सूर: ताहा च। एह दमैं सूरतां इस्लाम दे शुरुआती काल दियां न। (बुखारी शरीफ) इस आस्तै एह इतराज ठीक नेई ऐ जे मदीने दे यहूदियें थमां सुनियें तुसें एह हालात ब्यान कीते। बल्के यहूदियें कनै मिलने थमां बड़ी पैहलें अल्लाह नै तुसेंगी इनें सारे हालातें थमां बा-खबर करी दिता हा।
2. यानी साढ़ी नगरानी च! (दिक्खो अकरब)

असें तुगी तेरी मां पासै लौटाई दिता, तां जे उस दियां अक्खीं ठंडियां होई जान ते ओह गम नेई करै। ते (हे मूसा!) तोह इक आदमी गी कतल करी दिता हा। फी असें तुगी उस गम थमां नजात (मुक्ति) बखशी ते असें तुगी होर केई इम्तिहान्नें च पाइयै चंगी चाल्ली अजमाया जिसदे बा'द तूं केई साल मद्यन दे लोकें च रेहा। फी हे मूसा! (बल्लें-बल्लें) तूं उस आयु तक पुज्जी गेआ जो साढ़ा कम्म करने दे काबल होंदी ऐ ॥ 41 ॥

ते मैं तुगी अपने आस्तै (रुहानी तरक्की दिंदे-दिंदे) त्यार कीता ॥ 42 ॥

(इस लेई जिसलै तूं उस आयु तक पुज्जी गेआ तां मैं तुगी आखेआ जे) तूं ते तेरा भ्राऽ मेरे नशान लेइयै जाओ ते मिगी याद करने च कोई कुताही नेई करयो ॥ 43 ॥

तुस दमैं फिरऔन कश जाओ, की जे उसनै उददंडता अखत्यार करी लैती दी ऐ ॥ 44 ॥

ते तुस दमैं उस कनै लहीमगी कनै गल्ल-बात करो, ममकन ऐ जे ओह समझी जा जां (साढ़े शा) डरन लगै ॥ 45 ॥

दौनैं अरज कीती, हे साढ़े रब्ब! अस डरने आं जे ओह साढ़े उप्पर ज्यादती नेई करै जां साढ़े उप्पर हद्दा बाहरी सख्ती नेई करै ॥ 46 ॥

(अल्लाह नै) फरमाया तुस दमैं बिल्कुल नेई डरो, अऊं थुआड़ै कनै आं (थुआड़ियां प्रार्थनां बी) सुनना ते (थुआड़ी हालत बी) दिक्खना ॥ 47 ॥

इस लेई दमैं उस कश चली जाओ ते उसी आखो अस दमैं तेरे रब्ब दे रसूल आं! इस

كِي تَقَرَّرَ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنُ ۗ وَقَتَّتْ
نَفْسًا فَجَيْلِكَ مِنَ الْعَمْرِ وَقَتَّتْ
فُتُونًا ۗ فَلَبِثْتَ سِنِينَ فِي أَهْلِ مَدْيَنَ ۗ
ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ يُمُوسَىٰ ۝

وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِي ۝

إِذْ هَبَّ آتَتْ وَآخُوكَ بِالْيَمِينِ وَلَا تَنِيَّا
فِي ذِكْرِي ۝

إِذْ هَبَّ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۝

فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهُ يَتَذَكَّرُ
أَوْ يَخْشَىٰ ۝

قَالَا رَبَّنَا إِنَّا نَخَافُ أَنْ يُفْرِطَ عَلَيْنَا
أَوْ أَنْ يَطَّغَىٰ ۝

قَالَ لَا تَخَافَا إِنِّي مَعَكُمْ ۚ أَسْمِعْ
وَأَرَىٰ ۝

فَأْتِيَهُ فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّكَ فَأَرْسِلْ

लेई साढ़े कन्नै बनी इस्माईल गी भेजी देऐ ते उनेंगी कश्ट नेई देऐ। अस तेरे कश तेरे रब्ब पासेआ इक बड़डा नशान लेइयै आए आं ते (तुगी दस्सने आं जे) जो (शख्स साढ़ी आंहदी दी) हदायत दे पिच्छें चलग (खुदा पासेआ) ओहदे उप्पर सलामती नाजल होग ॥ 48 ॥

साढ़े उप्पर एह वह्यी नाजल कीती गोदी ऐ जे जो कोई (खुदा दे नशान गी) झूठा आखग ते पिट्ट फेरी लैग, ओहदे उप्पर अजाब नाजल होग ॥ 49 ॥

इस पर (फिरऔन नै) आखेआ, हे मूसा! थुआड़ा दौनें दा रब्ब कु'न ऐ? ॥ 50 ॥

(मूसा नै) आखेआ, साढ़ा रब्ब ओह ऐ जिसनै हर चीजै गी (उसदी जरूरत दे मताबक) अंग प्रदान कीते दे न ते फी उनें अंगें थमां कम्म लैने दा तरीका सखाए दा ऐ ॥ 51 ॥

(फिरऔन नै) आखेआ! (अगर एह गल्ल ऐ) तां पैहले लोकें दी केह हालत ही (यानी ओह ते इनें गल्लें गी नथे मनदे) उंदे कन्नै केह सलूक होग? ॥ 52 ॥

(मूसा नै आखेआ) उनें लोकें दा इलम ते मेरे रब्ब गी ऐ (उनें सारे दियां परिस्थितियां ओहदी) कताब च सुरक्षत न। मेरा रब्ब नां ते भटकदा ऐ, नां गै भुलदा ऐ ॥ 53 ॥

(ऊरे ऐ) जिसनै इस धरती गी थुआड़े आस्तै फर्श दे रूपै च बनाया ऐ ते थुआड़े आस्तै इस च रस्ते बी बनाए दे न ते गासै थमां पानी तुआरेआ ऐ, फी (तू उनेंगी एह बी आख जे) असें उस पानी राहें केई चाल्ली दियें वनस्पतियें दे जोड़े पैदा कीते दे न ॥ 54 ॥

مَعَنَا بِنِي إِسْرَائِيلَ ۖ وَلَا تُعَذِّبُهُمْ ۗ
قَدْ جِئْنَاكَ بِآيَةٍ مِنْ رَبِّكَ ۖ وَالسَّلَامُ عَلَيَّ
مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَى ۝

إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَى
مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّى ۝

قَالَ فَمَنْ رَبُّكُمْ يَا مُوسَى ۝

قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَى كُلَّ شَيْءٍ حَلْقَهُ
تَمَّ هُدَى ۝

قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَى ۝

قَالَ عَلِمَهَا عِنْدَ رَبِّي فِي كِتَابٍ
لَا يَصِلُ رَّبِّي وَلَا يَسْمَعُ ۝

الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ مَهْدًا وَأَسْلَكَ
لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
فَأَخْرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِنْ نَبَاتٍ شَتَّى ۝

इस आस्तै तुस बी खाओ ते अपने चौखरें गी बी चारो। एहदे च समझदारी आहलें आस्तै केई नशान न ॥ 55 ॥ (रुकू 2/11)

असें तुगी इस धरती चा पैदा कीते दा ऐ ते इससै च तुगी बापस परताई देगे ते इससै चा तुगी दूई बारी कढगे ॥ 56 ॥

ते असें उस (फ़िरऔन) गी अपने हर चाल्ली दे नशान दस्से, पर ओह फी बी झुठेरने दा हठ करदा रेहा ते इन्कार गै करदा रेहा ॥ 57 ॥

ते आखन लगा (हे मूसा!) क्या तू साढ़े कश इस आस्तै आया ऐं जे तू अपनी जादुई चमत्कारी गल्लें राहें असेंगी साढ़ी धरती थमां कड्डी देऐं ॥ 58 ॥

(जेकर एह गल्ल ऐ) तां अस बी तेरे मकाबले च ऊऐ नेहा करिश्मा/ जादू करगे। इस लेई तू साढ़े बरकार ते अपने बरकार इक (समां ते) थाहर नियुक्त कर, नां अस उस थमां पिच्छें हटचै, नां तू हटै ओह (इक ऐसा) मकान (होऐ जो) साढ़े ते तेरे बरकार इक-बराबर होऐ ॥ 59 ॥

(इस पर मूसा नै) आखेआ! जे थुआड़े (साढ़े) किट्टे होने दा दिन (थुआड़ी) ईद दा दिन होऐ ते जरा हारा सूरज चढ़ने उप्पर लोकें गी ज'मा कीता जा ॥ 60 ॥

इस पर फ़िरऔन पिट्ट मोडियै उठी गेआ ते जो उपाऽ उस थमां ममकन होई सकदे हे उसनै कीते ते फी (मूसा पासै) परतोआ ॥ 61 ॥

(उस लै) मूसा नै उनेंगी गलाया,हे लोको! थुआड़ा निश्ट पटोऐ, अल्लाह उप्पर झूठ नेई थोपो ऐसा नेई होऐ जे ओह तुसें गी अज्ञाब

كُلُوا وَارْزَعُوا أَنْعَمْنَا^ط إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي التَّهَيُّ^ع

مِنهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَى^{٥٦}

وَلَقَدْ آرَيْنَاهُ الْآيَاتِ كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَى^{٥٧}

قَالَ أَجِئْتَنَا بِسِحْرٍ مِّنْ أَرْضِنَا
بِسِحْرِكَ يَمُوسَى^{٥٨}

فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهِ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا
وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا
أَنْتَ مَكَانًا سَوِيًّا^{٥٩}

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمَ الزَّيْنَةِ وَأَنْ يُحَشَّرَ
النَّاسُ صُحًى^{٦٠}

فَقَوْلِي فِرْعَوْنَ فَجَمَعَ كَيْدَهُ ثُمَّ أَتَى^{٦١}

قَالَ لَهُمْ مُوسَى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا
عَلَى اللَّهِ كَذِبًا فَيُسْحِتْكُمْ بِعَذَابٍ^ع

राहें पीह सुट्टे, ते जो कोई (खुदा पर) झूठ
घडदा ऐ ओह नकाम होई जंदा ऐ ॥ 62 ॥

एह सुनियै (फिरऔन ते उसदे साथी) आपस
च लड़न लगे ते गुप्त मनसूबे बनान लगे
॥ 63 ॥

(ते) उनें गलाया जे एह दमै (मूसा ते हारून)
ते किश बी नेई सिर्फ जादुगर न, (जो) एह
चांहदे न तुसेंगी थुआड़ी धरती परा अपने जादू
दे जोरें कड्ढी लान ते थुआड़े श्रेष्ठ धर्म गी
तबाह करी देन ॥ 64 ॥

इस आस्तै चाही दा ऐ जे तुस बी अपने उपाऽ
सोची लैओ। फी सारे दे सारे इक जत्थे दे
रूपै च आओ ते जो (शख्स) अज्ज जीतग
ओह जरूर सफलता हासल करग ॥ 65 ॥

(इस पर उनें लोके जिनैंगी मूसा दे मकाबले
आस्तै फिरऔन नै सददे दा हा) गलाया जे
हे मूसा! जां तू (अपना उपाऽ) सुट्ट (यानी
जाहर कर) जां अस तेरे थमां पैहलें सुट्टचै
॥ 66 ॥

(उसलै मूसा नै) गलाया (बेहतर एह ऐ) जे
तुस (अपना उपाऽ) सुट्टो (यानी जाहर करो)
इस आस्तै (उनें जेहके उपाऽ कीते) ओहदे
नतीजे च उंदी रस्सियां ते उंदे सोटे मूसा गी
(उंदे माया-जाल कारण) इयां लब्धन लगे
आखो जे ओह दौड़ा करदे होन ॥ 67 ॥

ते मूसा अंदरो-अंदर डरी जन गेआ ॥ 68 ॥

(उसलै) असें वह्नी कीती (हे मूसा!) डर नेई,
की जे तू गै गालब औगगा ॥ 69 ॥

ते जो कुछ तेरे सज्जे हत्थै च ऐ उसगी धरती
पर सुट्टी दे। जे किश उनें कीते दा ऐ उस

وَقَدْ حَابَّ مِّنْ أَفْتَرَى ۝۱۷

فَتَنَّا زَعَوْا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَ أَسْرَوْا
التَّجْوَى ۝۱۷

قَالُوا إِنَّ هَذَا لَسِحْرَانِ يَرِيدَانِ أَنْ
يُخْرِجَكُم مِّنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا
وَيَذْهَبَا بِطَرِيقَتِكُمُ الْمُثَلَى ۝۱۸

فَأَجْمِعُوا كَيْدَكُمْ ثُمَّ اتُّوَاصِفًا ۝
وَقَدْ أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَى ۝۱۹

قَالُوا يَمُوسَى إِمَّا أَنْ تُلْقَى وَ إِمَّا
أَنْ تَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَى ۝۲۰

قَالَ بَلْ أَلْقُوا ۝ فَإِذَا جِبَالُهُمْ
وَعَصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ
أَنَّهُمْ سَالِحَى ۝۲۱

فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُّوسَى ۝۲۲

قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَى ۝۲۳

وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا

सारे गी ओह नींगली जाग (यानी उसदा भांडा फोड़ी देग) उनें जे किश कीते दा ऐ ओह ते छल-कपट करने आहले लोकें दा छल ऐ ते कपटी जिस पासेआ बी औंग (खुदा दे मकाबले च) कामयाब नेई होई सकदा ॥ 70 ॥

इस लेई (जिसलै मूसा दे सोटा सुट्टने दे बा'द फिरऔन द्वारा सद्दे गेदे) चालबाज (अपनी कमजोरी समझी गे तां ओह अपने जमीर दी अवाज थमां) सजदे च डिग्गी पे ते आखन लगे अस हारून ते मूसा दे रब्ब पर ईमान ल्यौने आं ॥ 71 ॥

(इस पर फिरऔन नै) आखेआ, क्या तुस मेरे हुकम थमां पैहलें गै उस पर ईमान आहनदे ओ (पता लगगी गेआ ऐ जे) ओह थुआड़ा सरदार ऐ जिसनै तुसेंगी एह चलाकियां सखाई दियां न। इस लेई (इस छल-कपट दे सिले च) अऊं थुआड़े हत्थ-पैर (अपनी) खलाफबरजी दी ब'जा करी कट्टी देड ते (अऊं तुसेंगी) खजूर दे तने कनै ब'निनयै सलीब पर लटकाई देग्गा ते तुसेंगी पता लगगी जाग जे साढ़े चा कु'न ज्यादा सख्त ते चिरै तक रौहने आहला अजाब देई सकदा ऐ ॥ 72 ॥

इस पर उनें (यानी जादुगिरे जां फिरऔन दे पैहले साथियें) गलाया, अस तुगी उनें नशानें पर प्रधानता नेई देई सकदे जो (खुदा पासेआ) साढ़े कश आए न ते नां उस (खुदा) पर जिसनै असेंगी पैदा कीता। इस लेई जो तेरा बस चली सकदा ऐ चलाई लै तूं सिर्फ इस दुनियां दी जिंदगी गी खत्म करी सकना ऐ ॥ 73 ॥

अस (हून) अपने रब्ब पर ईमान आहनी चुके दे आं तां जे ओह साढ़े गुनाहें गी माफ करी

صَنَعُوا ۗ إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدٌ سِحْرٍ ۗ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَى ۝

فَأَلْقَى السَّحْرَةَ سُجَّدًا قَالُوا أَمَّا بِرَبِّ هَارُونَ وَمُوسَى ۝

قَالَ امْسُؤْلُهُ قَبْلَ أَنْ أَدْنَى لَكُمْ ۗ إِنَّهُ لَكَبِيرٌ كَرَّمَ الَّذِي عَلَّمَكُمْ السَّحْرَ ۗ فَلَا قَطْعَ أَيْدِيكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ وَلَا وَصَلَتِكُمْ فِي جُدُوعِ الثُّخْلِ ۗ وَتَعَلَّمْنَا أَيُّنَا أَشَدَّ عَذَابًا وَآبَتِي ۝

قَالُوا لَنْ نُؤْتِيَكَ عَلَى مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي فَطَرَنَا فَاقْضِ مَا أَنْتَ قَاضٍ ۗ إِنَّمَا تَقْضِي هَذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۗ

إِنَّا أَمَّا بِرَبِّنَا لِيَعْفِرَ لَنَا خَطِيئَتَنَا وَمَا

देऐ ते उस धोखेबाजी (दे मकाबले) गी बी माफ करी देऐ जेहदे आसतै तोह असेंगी मजबूर कीता हा ते अल्लाह सारें शा बेहतर ऐ ते सारें शा ज्यादा कायम रौहने आहला ऐ ॥ 74 ॥

सचाई एह ऐ जे जो कोई शख्स अपने रब्ब दे सामनै मुजरम दी हैसियत च हाजर होंदा ऐ, उसी यकीनन ज्हनम मिलदा ऐ नां ओह ओहदे च मरदा ऐ नां जोंदा रौहदा ऐ ॥ 75 ॥

ते जो शख्स मोमिन होने दी हालत च जिसलै जे ओह कनै-कनै नेक कर्म बी करदा होग उस (खुदा) कश औग तां ऐसा हर शख्स उत्तम स्थान पाग ॥ 76 ॥

(ओह स्थान) म्हेशां रौहने आहले बाग (होडन) जिंदे ख'ल्ल नैह्यां बगदियां होडन (ते) ओह उंदे च चिरै तगर रौहडन ते एह उस (शख्स) दा मनासब बदला ऐ जो पवित्तरता अखत्यार करदा ऐ ॥ 77 ॥ (रुकू 3/12)

ते असें मूसा गी वही कीती ही जे मेरे बंदें (यानी अपनी कौम) गी रातों दे न्हरे च कइहयै लेई जा, फी उनेंगी समुंदर च इक रस्ता दस्स जो खुशक होऐ नां तुगी एह डर होग जे कोई (शख्स) आइयै पिच्छुआं पकड़ी लै ते नां तुस (समुंदर दी तबाही थमां) डरगे ओ (इस पर मूसा अपनी कौम गी लेइयै समुंदरें पासै गे) ॥ 78 ॥

ते फिरऔन अपने लश्कर लेइयै उंदे पिच्छें-पिच्छें चलेआ ते समुंदर ने उसगी ते उसदे साथियें गी बिल्कुल खट्टी लैता ॥ 79 ॥

ते फिरऔन नै अपनी कौम गी गुमराह कीता ते हदायत दा तरीका नेई दस्सेआ ॥ 80 ॥

أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ الْبَحْرِ وَاللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْقَى ۝

إِنَّهُ مَنْ يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَى ۝

وَمَنْ يَأْتِهِ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ الْعُلَى ۝

جَبَّتْ عَدْنٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَلِكَ جَزَاءُ مَنْ تَزَكَّى ۝

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي فَاصْرِبْ لَهُمْ طَرِيقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا لَا تَخَفْ دَرَكًا وَلَا تَخْشَى ۝

فَأَنجَيْنَاهُمْ فِرْعَوْنَ بِجُودِهِ فَغَشِيَهُمْ مِنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ۝

وَأَصَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُ وَمَا هَدَى ۝

हे बनी इस्राईल! अस तुगी तेरे दुश्मनं शा छुटकारा दुआई चुके दे आं ते इसदे बा'द अस तेरे कन्नै तूर पर्वत दे सज्जे पासै मकाबले पर इक बा'यदा' करी चुके दे आं ते असं तेरे उप्पर तुरंजबीन ते बटेर बी उतारे हे (तां जे तेरे आसतै खुराक मुहैया करन) ॥ 81 ॥

(ते आखेआ हा जे) जो कुछ असं तुसेंगी दित्ते दा ऐ ओहदे चा पवित्र चीजां खाओ। ते उस (रिशक) दे बारे च अत्याचार थमां कम्म नेई लैना, तां जे ऐसा नेई होऐ जे तुंदे उप्पर मेरा प्रकोप उतरै ते जेहदे पर मेरा प्रकोप उतरदा ऐ। ओह (उच्चे दरजे थमां) गिरी जंदा ऐ ॥ 82 ॥

ते जेहका आदमी तोबा करै ते ईमान ल्यावै ते उसदे मताबक मनासब कर्म (बी) करै ते हदायत पाई जा तां अ'ऊं उसदे (बड्डे थमां बड्डे) गुनाह माफ करी दिन्ना होन्ना ॥ 83 ॥

ते (असं आखेआ) हे मूसा! तुस अपनी जाति दे लोकें गी छोड़ियै केहदे आसतै तौले-तौले आई गे ओ? ॥ 84 ॥

(मूसा नै परते च) आखेआ जे ओह (लोक) पिच्छे-पिच्छे आवा दे न ते हे मेरे रब्ब! अ'ऊं तेरे कश इस आसतै तौले आयां तां जे तू (मेरे इस कम्मा पर) खुश होई जाएं ॥ 85 ॥

يٰۤاَيُّهَا اِسْرَائِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَاَوْعَدْنَاكُمْ جَانِبَ الْقُلُوْبِ الْاَيْمَنِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّٰنَ وَالسَّلٰوٰى ۝١

كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْعَوْا فِيْهِ فَيَجِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۗ وَمَنْ يَّجِلَّ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ هَوٰى ۝١

وَإِنِّي لَعَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَىٰ ۝٢

وَمَا اَعْجَلَكْ عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى ۝٣

قَالَ هُمْ اَوْلَآءِ عَلٰى اَثَرِيْ وَعَجِلْتُ اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰى ۝٤

1. मुकाबले पर अल्लाह दा बा'यदा एह हा जे जेकर इस्राईल दी संतान अपनी कताब तौरात पर आचरण करदी रौहग तां अल्लाह उनेंगी बरकत देग पर इस्राईल दी संतान दे दूए भाग ईसाइयें उनें आदेशें चा 'सब्त' अर्थात् शनिवार गी छोड़ी दिता जियां के आपूं ईसाई विद्वान इसी मनदे न। ईसाइयें इक रूमी राजा दे आखने पर शनिवार गी जो 'सब्त' दा दिन हा बदलियै ऐतवार दे दिनें गी "सब्त" दा दिन घोशत कीता। दूए पासै यहूदियें इस चाल्ली प्रतिज्ञा भंग कीती जे अजरा नबी गी खुदा बनाई लैता, फी सधारण जनता ते अलग्ग रेही बार-बार हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. दी हत्या करने दे प्रयत्न कीते गे, हालांके थुआड़े औने दा बा'यदा तौरात च हा। तुंदे शा पैहलें हजरत मसीह दी हत्या करने दे प्रयास बी कीते गे हे।

(इस पर खुदा नै) आखेआ, असें तेरी कौम गी तेरे बा'द इक अजमैश च पाई दिता ऐ ते सामिरी नै उनेंगी गुमराह करी दिता ऐ ॥ 86 ॥

इस पर मूसा अपनी कौम पासै गुस्से कनै भरे दे उदास-उदास परतोई आए (ते अपनी कौम गी) आखेआ, हे मेरी कौम! क्या थुआड़े रब्ब नै थुआड़े कनै इक अच्छा बा'यदा नथा कीता क्या उस बा'यदे दे पूरा होने च कोई देर होई गई ही जां तुस चांहदे हे जे थुआड़ै उप्पर थुआड़े रब्ब पासेआ कोई प्रकोप नाजल होऐ, सो तुसें मेरे बा'यदे गी रद्द करी दिता ॥ 87 ॥

उनें आखेआ असें तेरे बा'यदे गी अपनी मरजी कनै रद्द नेई कीता बल्के फ़िरऔन दी कौम दे गैहनें दा जेहका बोझ साढ़े उप्पर लद्दी दिता गोआ हा। उसगी असें सुट्टी दिता ते इसै चाल्ली सामिरी नै बी उसगी सुट्टी दिता ॥ 88 ॥

फी उसनै उंदे आस्तै (यानी साढ़े आस्तै) इक बच्चे दा पुतला त्यार कीता हा, जेहदे चा इक निरर्थक अवाज निकलदी ही फी (उसनै ते ओहदे साथिये) आखेआ जे एह थुआड़ा बी ते मूसा दा बी खुदा ऐ ते ओह इसी भुल्ली (पिच्छें छुड़ी) गोआ ऐ ॥ 89 ॥

(बे-शक्क सामिरी ते उसदे साथिये ऐसा कीता) मगर क्या ओह आपू नेई दिखदे हे जे ओह बच्चा उंदी कुसै गल्लै दा जवाब नथा दिंदा ते नां उनेंगी कोई नुक्सान पुजाई सकदा ऐ ते नां फायदा पुजाई सकदा ऐ ॥ 90 ॥ (रुकू 4/13)

قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْ بَعْدِكَ
وَأَصْلَهُمُ السَّامِرِيُّ ۝

فَرَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ
أَسْفًا ۖ قَالَ يُقَوْمِ أَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ
وَعَدًّا حَسَنًا ۚ أَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ أَمْ
أَرَدْتُمْ أَن يَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ ۖ فَأَخْلَفْتُمُ مَّوْعِدِي ۝

قَالُوا مَا أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلِكِنَا
وَلَكِنَّا حَمَلْنَا أَوْزَارًا مِّنْ زِينَةِ الْقَوْمِ
فَقَدَفُنَّهَا فَكَذَلِكَ أَلْقَى السَّامِرِيُّ ۝

فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَهُ خُورٌ
فَقَالُوا هَذَا إِلَهُكُمْ وَإِلَهُ مُوسَىٰ
فَسَىٰ ۝

أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُ لَا يُرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا
وَلَا يَمْلِكُ لَهُمْ صَرًّا وَلَا نَفْعًا ۝

ते हारून नै (मूसा दे बापस औने शा बी) पैहलें उनेंगी आखी दिते दा हा जे मेरी कौम! तुसैं गी इस (बच्चे) राहें अजमाइश च पाया गेआ ऐ ते थुआड़ा रब्ब ते रहमान (खुदा) ऐ। इस लेई मेरा अनुसरण करो ते मेरे हुकम गी मनो (ते शिर्क नेई करो) ॥ 91 ॥

(मगर उस जिद्दी कौम नै) आखेआ, जिच्चर मूसा साढ़ै पासै बापस नेई आवै अस बराबर इस दी पूजा च लगगे रौहगे आं ॥ 92 ॥

(जिसलै मूसा बापस आए तां उनें हारून गी) आखेआ हे हारून! जिसलै तोह अपनी कौम गी गुमराह होंदे दिक्खेआ हा तां तुगी कुस नै म'ना कीता हा? ॥ 93 ॥

जे तूं मेरे पद-चि'नैं पर नेई चलैं? क्या तोह मेरे हुकम दी ना-फरमानी कीती? ॥ 94 ॥

(हारून नै) आखेआ, हे मेरी मां दे पुत्तर! नां मेरी दाढ़ी (दे बाल) पकड़ ते नां मेरे सिरै दे बाल/सराल (पकड़) अऊं ते इस गल्ला थमां डरी गेदा हा जे तूं एह निं आखैं जे तोह बनी इस्राईल कनै फुट्ट पाई दित्ती ऐ ते मेरी गल्ला दा ख्याल नेई रक्खेआ (जे कौम च संगठन र'वै) ॥ 95 ॥

(इस पर मूसा सामिरी कनै मुखातब होए ते) गलाया हे सामिरी! तेरा केह मामला ऐ? ॥ 96 ॥

उसने आखेआ, मैं ओह किश दिक्खेआ जो इनें लोकें नथा दिक्खे दा ते मैं उस रसूल (यानी मूसा) दियें गल्लें चा किश अपनाई लैतियां (ते किश नेई अपनाइयां) फी (जिसलै वक्त आया तां) मैं इनें (अपनाई दियें गल्लें) गी बी छोड़ी दित्ता ते मेरे अंतस नै इयै चीज मिगी अच्छी करियै दस्सी ही ॥ 97 ॥

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هُرُونٌ مِنْ قَبْلِ يَاقَوْمِ إِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهِ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمَنُ فَاتَّبِعُونِي وَأَطِيعُوا أَمْرِي ۝

قَالُوا لَنْ نَبْرَحَ عَلَيْهِ عَافِيْنَ حَتَّىٰ يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَىٰ ۝

قَالَ يَهُرُونَ مَا مَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوا ۝

أَلَا تَتَّبِعِنَ أَفَعَصَيْتَ أَمْرِي ۝

قَالَ يَبْنَؤُمْ لَا تَأْخُذْ بِلِحِيَّتِي وَلَا يَرَأْسِي إِنِّي خَشِيتُ أَنْ تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِي ۝

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يَا مَرْيَمُ ۝

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا بِهِ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَلِكَ سَوَّلْتِ لِىْ نَفْسِي ۝

(मूसा नै) आखेआ, अच्छा तू जा, तेरी इस दुनियां च इयै स'जा ऐ जे तू इस (दुनियां) च हर इक गी ए आखदा र'मैं जे (मिगी) छूहो नेई (यानी मिगी मूसा नै गंदा करार देई दित्ते दा ऐ) ते (मूसा नै सामिरी गी एह बी आखेआ जे) तेरे आस्तै इक समां निश्चत ऐ (यानी स'जा दा) जिसी तू टलाई नेई सकगा ते तू अपने उपास्य पासै दिक्ख जेहदे सामने बेहियै तू उसदी पूजा करदा होंदा हा, अस उसी जलागे' ते फी उसगी समुंदरे च सुट्टी देगे ॥ 98 ॥

थुआड़ा उपास्य ते सिर्फ अल्लाह ऐ जिसदे सिवा होर कोई उपास्य नेई, ओह हर इक चीजै गी जानदा ऐ ॥ 99 ॥

इस चाल्ली अस तेरै सामने पैहले लोके दियां खबरां ब्यान करने आं ते असें तुगी अपने पासेआ जिक्क (यानी कुर्आन) अता कीता ऐ ॥ 100 ॥

जो एहदे शा मूह फेरी लैग ओह क्यामत आहलै ध्याड़े इक बौहत बड़डा बोझ चुक्कग। ॥ 101 ॥

(ऐसे लोक) इस हालत च क्या चिरै तगर रौहडन ते क्यामत आहलै ध्याड़े एह (बोझ) होर बी कश्टकारी होग। ॥ 102 ॥

जिस दिन बिगल बजाया जाग ते उस दिन मुजरमैं गी अस इस हालत च उठागे जे उदियां अक्खीं नीलियां' होडन ॥ 103 ॥

قَالَ فَاذْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيَاةِ أَنْ تَقُولَ لَا مِسَاسَ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَنْ تُخْلَفَهُ ۚ وَانظُرْ إِلَى إِلْهِكَ الَّذِي ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا لَنُحَرِّقَنَّهُ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿٩٨﴾

إِنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿٩٩﴾

كَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ آتَيْنَاكَ مِنْ لَدُنَّا ذِكْرًا ﴿١٠٠﴾

مَنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وِزْرًا ﴿١٠١﴾

خَلْدَيْنَ فِيهِ ۚ وَسَاءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حِمْلًا ﴿١٠٢﴾

يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ﴿١٠٣﴾

1. ईसाई लेखक एह इतराज करदे न जे बच्छा ते सुन्ने दा हा ते सुन्ना जलियै सुआह नेई होई सकदा। इसदा उत्तर एह ऐ जे सामिरी दा मकसद धोखा देना हा। इस लेई उस बच्चे दे पुतले दे मूहें च ते पूछल च लक्कड़ी दे खोल लाने जरूरी हे तां जे हवा दे औने-जाने पर अवाज निकलै। इस लेई जिसलै पुतला फूकेआ गेआ तां कनै गै लक्कड़ी दे खोल बी सुआह होई गे; जिसी हजरत मूसा नै सुन्ने दी रेतू कनै गै दरेआ च सुटाई दित्ता।
2. इत्थें एह गल्ल स्पष्ट करी दित्ती गेई ऐ जे इत्थें यूरोपी जातियें दा बर्णन ऐ जिंदियां अक्खीं नीलियां होंदियां न। आगली आयत च दस्सेआ गोदा ऐ जे ओह अपनी तरक्की दे बा'द त्रट्टी/बरबादी बेलें आखडन जे अस ते सिर्फ दस्स रेहदे आं यानी दस्स सदियां ते यूरोपी कोमें दी तरक्की दा समां बी इन्ना गै बनदा ऐ।

ओह आपस च बल्लें-बल्लें गल्लां करडन जे तुस ते सिर्फ दस्स (सदियां इस दुनियां च हाकम) रेह ओ ॥ 104 ॥

अस उसगी खूब जानने आं जो ओह आखडन जिसलै उंदे चा सारें शा ज्यादा¹ उंदे धर्म पर चलने आह्ला आखग जे तुस ते सिर्फ थोड़ा हारा समां² गै ठैहरे रेह ओ ॥ 105 ॥
(रुकू 5/14)

ते ओह तेरे शा फ्हाड़ें³ बारै पुछदे न तू आखी दे जे उनेंगी मेरा रब्ब पुट्टियै सुट्टी देग ॥ 106 ॥

ते उनेंगी इक पदधरा मदान बनाइयै रक्खी देग ॥ 107 ॥

ते नां ते तू ओहदे च कोई मोड़ दिखगा ते नां कोई उचाई ॥ 108 ॥

उस दिन लोक पुकारने आहले दे पिच्छें चली पौडन जिस दी तलीम च कोई जुटी⁴ नेई होग ते रहमान (खुदा दी अवाज) दे मकाबले च (इन्सानें दियां) अवाजां दबोई जाडन उसलै तू सवाए खुसर-फुसर⁵ दै किश निं सुनी सकगा ॥ 109 ॥

يَخَافَتُونَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ﴿١٠٤﴾

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ
أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٥﴾

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا
رَبِّي يَنْسِفُهَا ﴿١٠٦﴾

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٧﴾

لَا تَرَى فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ﴿١٠٨﴾

يَوْمَ يَدْعِيهِ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ
وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَنِ فَلَا
تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٩﴾

1. पोप जां ऐसा गै कोई बड्डा ईसाई।
2. जिसलै अजाब औंदा ऐ तां अराम ते तरक्की दा समां बड़ा थोड़ा सेही होंदा ऐ। इसै पासै इस आयत च इशारा ऐ।
3. अर्थात् बड्डे ते शक्तिशाली लोक। (अक्रब)
4. यानी जिसलै दूई जातियें दी तबाही होनी शुरू होई जाग ते फ्हाड़ें जनेही मजबूत कौमां तबाह होइयै मलिया-मेट होई जाडन। उसलै लोक नबी गी मन्नन लगी पौडन जेहदी तलीम च कोई जुटी नेई होग। यानी हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह स.अ.व., जियां के पवित्र कुरआन च कुरआनी तालीम बारै बार-बार तरीफ औंदा ऐ।
5. यानी डरै दे मारे अवाजां दबोई जाडन।

उस दिन शफ़ाअत' (सफ़ारश) सिवाए उसदे जिसदे हक़ च शफ़ाअत करने दी अजाजत रहमान (ख़ुदा) देग ते जिसदे हक़ च गल्ल करणे गी ओह पसंद करग, कुसैगी बी फायदा नेई देग ॥ 110 ॥

ओह जो कुछ उंदे अगें औने आहला ऐ उसगी बी जानदा ऐ ते जे किश उंदे पिच्छें बीती चुके दा ऐ उसगी बी जानदा ऐ ते ओह अपने इलम राहें उस (ख़ुदा) दा घराओ नेई करी सकदे ॥ 111 ॥

ते (उस दिन) जिंदा ते कायम रौहने ते कायम रक्खने आहले (ख़ुदा) दे सामनै सारे बड्डे लोक (अदब कनै) झुकी जाडन ते जो जुलम करग ओह नकाम रौहग ॥ 112 ॥

ते जिसने वक्त दी जरूरत मताबक कर्म कीते दे होडन ते ओह मोमिन बी होग, ओह नां ते कुसै किसम दे जुलम शा डरग ते नां कुसै किसम दी हक्क तलफ़ी (हक्क मरोने) थमां ॥ 113 ॥

ते इसै चाल्ली असें इस (कताब) गी अरबी जबान दे क़ुरआन दी सूरत च उतारे दा ऐ ते इस च हर चाल्ली सचेत करने आहली गल्लें गी तफ़सील कनै ब्यान कीते दा ऐ तां जे एह संयम धारण करन जां एह (क़ुरआन) उंदे आस्तै (ख़ुदा दी) याद दा समान (नमें सिरेआ) पैदा करै ॥ 114 ॥

يَوْمَئِذٍ لَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ
الرَّحْمَنُ وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ﴿١١٠﴾

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا
يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ﴿١١١﴾

وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ۗ وَقَدْ
خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١٢﴾

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَلَا يَخْفُ ظُلْمًا وَلَا هُمْصًا ﴿١١٣﴾

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا وَصَرَّفْنَا
فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ
يُحَدِّثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٤﴾

1. इस आयत च ईसाइयें दे मंतव्य दा खंडन कीता गेदा ऐ जे ओह हजरत मसीह गी 'शफ़ी' (सफ़ारश करने आहला) आखदे न, बल्के इस आयत च हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. दे शफ़ी होने दी घोशना कीती गेदी ऐ, की जे सिर्फ़ ऊऐ न जेहके रहमान पर ईमान आहनने दे संबंध च जोर दिंदे न ते जिंदा सफ़ारश गी क़ुरआन नै मनासब मन्ने दा ऐ, पर ईसाई धर्म इस दे बरुद्ध रहमानियत दे गुण दा इन्कार करदा ऐ। इस आस्तै इस आयत च सफ़ारश दी अजाजत सिर्फ़ हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. गी गै दिती गेदी ऐ।

इस लेई अल्लाह जो बादशाह ऐ, बड़ी शान आहला ऐ ते म्हेशां कायम रौहने आहला ऐ ते तू कुरआन (दी वही) उतरने थमां पैहलें इसदे बारै जल्दी थमां कम्म निं लै ते (म्हेशां एह) आखदा रौह जे हे मेरे रब्ब! मेरे इलम गी बधाऽ ॥ 115 ॥

ते असें इस शा पैहलें आदमी गी (इक गल्ला दी) तकीद कीती ही मगर ओह भुल्ली गेआ ते असें भलेआं जाची लैता जे उसदे दिलै च साढ़ा हुकम तोड़ने बारै कोई पुख्या इरादा नेई हा ॥ 116 ॥ (रुकू 6/15)

ते (एह बी याद करो जे) जिसलै असें फरिश्तें गी आखेआ जे आदम (दी पदायश दे शुक्रिये च खुदा) गी सजदा करो तां इब्लीस दे सिवा सारें सजदा कीता। उसने इन्कार कीता ॥ 117 ॥

उस पर असें (आदम गी) आखेआ, हे आदम! एह (इब्लीस) यकीनन तेरा ते तेरे साथियें दा दुश्मन ऐ। इस लेई तुसें दौनें (गरोहें) गी एह जन्नत थमां कइढी निं देऐ उसदे नतीजे च तू (ते तेय हर साथी) मसीबत च पेई जा ॥ 118 ॥

यकीनन इस' (जन्नत) च तेरे आस्तै एह (पक्का) ऐ तू भुक्खा-नंगा नेई र'भें (ते नां तेरे साथी) ॥ 119 ॥

ते नां तू प्यासा र'भें ते नां धुप्पा च जलें ॥ 120 ॥

इस पर शतान नै उसदे दिलै च भरम? पाई दिता (ते) आखेआ, हे आदम! क्या अऊं

فَعَلَى اللَّهِ الْمَلِكُ الْحَقُّ وَلَا تَعْجَلْ
بِالْقُرْآنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُقْضَى إِلَيْكَ
وَحْيُهُ وَقُلْ رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا ۝

وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَى آدَمَ مِنْ قَبْلِ فَسَيِّ وَكَمْ
نَجِدْهُ عَزْمًا ۝

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ
فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۝

فَقُلْنَا يَا آدَمُ إِنَّ هَذَا عَدُوٌّ لَكَ
وَلِرِوَجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكَ مِنَ الْجَنَّةِ
فَتَشْفَى ۝

إِنَّ لَكَ الْأَتَجُوعَ فِيهَا وَلَا تَعْرَى ۝

وَآنْتَكَ لَا تَطْمَؤُنُ فِيهَا وَلَا تَصْحَى ۝

فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ الشَّيْطَانُ قَالَ يَا آدَمُ هَلْ

1. इयां सेही होंदा ऐ जे एह सारें थमां पैहलकी शिक्षा ऐ जो हजरत आदम गी मिली ही। यानी तेरी कहुमत दा कनून ऐसा होऐ जे उस दा इस-इस चाल्ती नतीजा निकलै।
2. दिक्खो सूर:आराफ टिप्पणी आयत 21 नोट 5

तुगी इक ऐसे बूहटे दा पता देआं जो सदा-
बहार ऐ ते ऐसी बादशाही (दा पता देआं) जो
कदें फनाह् नेईं होग ॥ 121 ॥

उस पर उतें दौनें (यानी आदम ते उसदे
साथियें) उस बूहटे परा किश खादा (यानी
उसदा मजा/सुआद चकखेआ) जिस पर उंदी
दौनें दियां कमजोरियां उंदे पर खु 'ल्ली गेइयां
ते ओह् दमें अपने उप्पर जन्नत दी शोभा दे
समान' (अर्थात् शुभ कर्म) लपेटन लगी पे ते
आदम ने अपने रब्ब दी ना-फरमान्नी कीती
इस आस्तै ओह् स्हेईं रस्ते थमां भटकी गेआ
॥ 122 ॥

उस दे बा'द उसदे रब्ब नै उसी चुनी लैता ते
ओह्दे उप्पर रैह्म दी नगाह् पाई ते स्हेईं
तरीकाकार दस्सी दिता ॥ 123 ॥

(ते खुदा नै) आखेआ, तुस दमें (गरोह्) इस
थमां सारे दे सारे निकली जाओ। तुंदे चा केईं
केइयें दे दुश्मन होउन इस लेईं अगर थुआड़े
कश मेरी तरफा हदायत आवै ते जेह्का मेरी
हदायत पर चलग ओह् कदें बी गुमराह् नेईं
होग ते नां कदें तबाही च पौग ॥ 124 ॥

ते जेह्का शख्स मेरे चेता कराने दे बावजूद
मूंह फेरी लैग। उसी दुखें भरोचा जीवन मिलग
ते क्यामत आह्लै ध्याड़े अस उसी अ'न्ने दे
रूपै च दुआलगे ॥ 125 ॥

(जिस पर) ओह् आखग, हे मेरे रब्ब! तोह्
मिगी अ'न्ना बनाइयै की दुआलेआ, हालांके
अऊं ते चंगी चाल्ली दिक्खी सकदा हा ॥ 126 ॥

أَدُلُّكَ عَلَى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ
لَّا يَبْلَى ۝۱۱

فَأَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتَ لَهُمَا سَوْآتُهُمَا وَطَفِقَا
يَخُصِمُنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ
وَعَصَىٰ أَدُمُ رَبَّهُ فَعَوَىٰ ۝۱۲

ثُمَّ اجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدَىٰ ۝۱۳

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيعًا بَعْضُكُمْ
لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فِيمَا يَأْتِيَنَّكُمْ مِنِّي هُدًى
۝۱۴ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَىٰ ۝۱۵

وَمَنْ أَعْرَضَ عَن ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً
ضَنْكًا وَنَحْسَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَعْمَىٰ ۝۱۶

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَىٰ وَقَدْ كُنْتُ
بَصِيرًا ۝۱۷

(उस पर खुदा) फरमाग, तेरे कश बी ते मेरी आयतां आइयां हियां जिनेंगी तोह भुलाई दिता हा इस लेई अज्ज तुगी बी (खुदा दी रैहमत दे बटबारै मौकै) छोड़ी दिता जाग ॥ 127 ॥

ते जेहका खुदाई कनून थमां बाहर होई जंदा ऐ ते अपने रब्ब दी आयतें पर ईमान नेई आहनुदा, ओहदे कनै इयां गै होंदा ऐ ते (एह ते सिर्फ दुन्याबी सलूक ऐ) आखरत दा अजाब इस थमां बी ज्यादा सख्त ते चिरै तक चलने आहला ऐ ॥ 128 ॥

क्या इनें लोकें गी (इस गल्ला थमां) हदायत हासल नेई होई जे इंदे थमां पैहलें होई चुकी दी कौमें बिच्चा मती-सारियें गी असें हलाक करी दिता। एह (लोक) उंदे घरें च चलदे-फिरदे न एहदे च अकली आहले लोकें आसतै बड़े नशान न ॥ 129 ॥ (रुकू 7/16)

ते जेकर इक गल्ल तेरे रब्ब पासेआ पैहलें नेई होई चुकी दी होंदी ते समां बी निश्चत नेई होई चुके दा होंदा तां (इनें कौमें आसतै) अजाब स्थाई बनी जंदा (ते इक लम्मे अरसे तगर जारी रौहदा) ॥ 130 ॥

इस लेई जो कुछ एह (लोक) आखदे न तूं ओहदे पर सबर कर (की जे तेरे रब्ब दी इयै रीति ऐ जे रैहम थमां कम्म लैता जा) ते सूरज चढ़ने ते डुब्बने थमां पैहलें उसदी प्रशंसा दे कनै-कनै उसदी स्तुति बी करा कर ते रातीं दे बक्ख-बक्ख हिस्सें च बी ते (इस्सै चाल्ली) दिनै दे सारे हिस्सें च बी उस दी स्तुति करा कर, तां जे (उसदी किरपा गी हासल करियै) तूं खुश होई जाएं ॥ 131 ॥

قَالَ كَذَلِكَ أَتَتْكَ آيَاتُنَا فَنَسِيَهَا ۗ
وَكَذَلِكَ الْيَوْمَ تُنسى ﴿١٢٧﴾

وَكَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِرْ مِنْ
بِآيَاتِ رَبِّهِ ۗ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَدُّ
وَأَبْقَى ﴿١٢٨﴾

أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمَا أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مَنِ
الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسْجِدِهِمْ ۗ إِنَّ فِي
ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي التَّلَهِىٰ ﴿١٢٩﴾

وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَكَانَ
لِزَامًا وَاجِلًا مُّسَيِّئًا ﴿١٣٠﴾

فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ
قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا ۗ
وَمِنْ أَنَايِ الْأَيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ النَّهَارِ
لَعَلَّكَ تَرْضَىٰ ﴿١٣١﴾

ते असें उनें लोकें चा किश लोकें गी संसारक जीवन दी चमक-दमक दे समान देई रक्खे दे न तू उंदे पासै अपनियां दमै अक्खीं फाड़ी-फाड़ी नेई दिक्ख, (की जे एह समान उनेंगी इस आस्तै दिता गोदा ऐ) जे अस ओहदे राहें उंदी अजमाइश लैचै, ते तेरे रब्ब दा दिते दा रिशक सारें शा अच्छा ते सदा आस्तै रौहने आहला ऐ ॥ 132 ॥

ते तू अपने परिवार गी नमाज़ दी तकीद करदा रौह ते तू आपूं बी उस (नमाज़) पर कायम रौह। अस तेरे शा रिशक नेई मंगदे, बल्के अस तुगी रिशक देआ करने आं ते संयम दा नतीजा गै बेहतर होंदा ऐ ॥ 133 ॥

ते ओह आखदे न जे की ओह साढ़े कश अपने रब्ब पासेआ कोई नशान नेई आहनदा। क्या इंदे कश ऐसा नशान नेई आया, जैसा के पैहली कताबें च ब्यान होई चुके दा ऐ ॥ 134 ॥

ते जेकर अस उनेंगी उस (रसूल) थमां पैहलें कुसै अज़ाब राहें हलाक करी दिंदे तां ओह आखदे, हे साढ़े रब्ब! तोह साढ़े पासै कोई रसूल की नेई भेजेआ। (जेकर तू ऐसा करदा) तां अस तेरे नशानें पिच्छें चली पौंदे। इस शा पैहलें जे अस जलील ते रुसवा (पतित) होई जंदे ॥ 135 ॥

तू आखी दे, हर इक शख्स अपने अंजाम दे इंतजार च ऐ इस लेई तुस बी (अपने अंजाम दा) इंतजार करदे रौह। ते तुस तौले गै सेही करी लैगे ओ जे केहड़ा शख्स सिद्धे रस्ते उप्पर चलने आहलें ते हदायत पाने आहलें बिच्चा ऐ (ते केहड़ा नेई) ॥ 136 ॥ (रुकू 8/17)

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْتَابِهِ
أَزْوَاجًا مِنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
لِنَفْسِهِمْ فِيهِ ۗ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ
وَأَبْلَغُ ﴿١٣٢﴾

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا
لَا تَسْأَلْكَ رِزْقًا نَحْنُ نَرْزُقُكَ ۗ
وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ ﴿١٣٣﴾

وَقَالُوا لَوْلَا آتَيْنَا بآيَةٍ مِنْ رَبِّهِ ۗ
أَوَلَمْ تَأْتِهِم بَيِّنَةٌ مَا فِي الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ﴿١٣٤﴾

وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُمْ بِعَذَابٍ مِنْ قَبْلِهِ
لَقَالُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا
فَتَتَّبِعَ آيَاتِكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنذِلَ
وَنَحْزَىٰ ﴿١٣٥﴾

قُلْ كُلٌّ مُتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوا
فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ أَصْحَابُ الصِّرَاطِ
السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَىٰ ﴿١٣٦﴾

سُورَةُ الْأَنْبِيَاءِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ مِائَةٌ وَثَلَاثٌ عَشْرَةٌ آيَةٌ وَسَبْعَةٌ رُكُوعَاتٌ

सूर: अल्-अम्बिया

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां इक सौ तेरां आयतां ते सत्त रुकू न।

मैं अल्लाह दा नांS लेइयै (पढ़ना) जो बे-
हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

लोकें थमां सहाब लैने दा मौका लागै आई
चुके दा ऐ मगर ओह (फी बी) गफलत च
(पेदे) न ते मूंह फेरा करदे न ॥ 2 ॥

उंदे कश उंदे रब्ब पासेआ कदें बी कोई नमीं
याद दिहानी (अर्थात् अनुस्मरण) नेई औंदी पर
ओह उसी सुनदे बी जंदे न ते उसदा मौजू बी
डुआंदे जंदे न ॥ 3 ॥

उंदे दिल गफलत (ला परबाही) च पेदे न।
ओह लोक जिनें जुलम कीता, छप्ये-गुञ्जे
सलाह-सूतर करदे रौंहदे न (ते आखदे न) जे
(दिखदे नेई) एह शख्स तुंदे आंगर गै इक मनुक्ख
ऐ फी की तुस इसदी फरेबी गल्लें च औंदे ओ,
हालांके तुस चंगी चाल्ली जानदे ओ ॥ 4 ॥

(इनें गल्लें गी सुनियै हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह
स.अ.व. नै) आखेआ मेरा रब्ब जानदा ऐ उनें
सारी गल्लें गी जो गासै च (आखियां जंदियां
न) ते (उनें गी बी) जो धरती उप्पर (आखियां
जंदियां) न ते ओह बड़ा सुनने आहला (ते)
बड़ा जानने आहला ऐ ॥ 5 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ مُّعْرِضُونَ ②

مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنْ رَبِّهِمْ مُحَدَّثٍ
إِلَّا اسْتَمَعُوهُ وَهُمْ يَلْعَبُونَ ③

لَاهِيَةً قُلُوبُهُمْ ④ وَأَسْرَأَ النَّجْوَى
الَّذِينَ ظَلَمُوا ⑤ هَلْ هَذَا إِلَّا بَشْرٌ
مِثْلَكُمْ ⑥ اقْتَاتُونَ السَّحْرَ وَأَنْتُمْ
تُبْصِرُونَ ⑦

قُلْ رَبِّي يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاءِ
وَالْأَرْضِ ⑧ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ⑨

बल्के उनें (यानी बरोधियें) ते इत्थें तक आखी दिता ऐ जे एह (कलाम) ते परेशान सुखने न। बल्के (परेशान सुखने बी नेई) इसनै बदो-बदी एह गल्लां अपने पासेआ बनाई लैतियां न बल्के ओह इक कवि-सभाऽ रक्खने आहला आदमी ऐ (जेहदे दमाकै च केई चाल्ली दे ख्याल उठदे रौहदे न) इस लेई चाही दा ऐ जे साढै कश कोई नशान लेई आवे जिस चाल्ली जे पैहले रसूल¹ चमत्कारें कन्नै भेजे गे हे ॥ 6 ॥

इंदे थमां पैहली बस्तियें बिच्चा बी जिनेंगी असें हलाक करी दिता हा कोई ईमान नथा ल्याया तां फी के एह ईमान लेई औडन ॥ 7 ॥

ते अस तेरे शा पैहलें (बी म्हेशां) मरदें गी गै रसूल बनाइयै भेजदे होंदे हे ते अस इंदे पासै वह्नी करदे हे ते (हे इन्कार करने आहलेओ!) अगर तुस (एह गल्ल) नेई जानदे तां कताब आहलें थमां पुच्छियै दिक्खी लैओ ॥ 8 ॥

ते असें इनें रसूलें गी ऐसा जिसम नथा दित्ते दा जे ओह खाना नेई खंदे होन ते नां ओह सधारण आयु भोगने आहले लोक हे ॥ 9 ॥

ते असें जो बा 'यदा उंदे कन्नै कीते दा हा उसी पूरा करिये दस्सेआ ते उनेंगी ते उंदे सिवा जिनेंगी चाह्या (दुश्मनं थमां) मुक्ति दित्ती ते जेहके हद थमां अगं बधने आहले हे उनेंगी हलाक करी दिता ॥ 10 ॥

असें थुआड़े पासै इक ऐसी कताब उतारी ऐ जेहदे च थुआड़ी महानता दे समान न क्या तुस बुद्धी थमां कम्म नेई लेंदे ॥ 11 ॥ (रुकू 1/1)

بَلْ قَالُوا أَضْغَاتُ أَحْلَامٍ بَلِ افْتِرَاءُهُ
بَلْ هُوَ شَاعِرٌ فَلْيَأْتِنَا بِآيَةٍ كَمَا
أُرْسِلَ الْأَوْلُونَ ①

مَا آمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِنْ قَرِيْبَةٍ أَهْلَكْنَاهَا
أَفَهُمْ يُؤْمِنُونَ ②

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي
إِلَيْهِمْ فَسَلُّوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ
لَا تَعْلَمُونَ ③

وَمَا جَعَلْنَاهُمْ جَسَدًا لِأَيَّاكُمْ لَوْ لَطَعَامٌ
وَمَا كَانُوا خَالِدِينَ ④

ثُمَّ صَدَقْنَاهُمُ الْوَعْدَ فَأَنْجَيْنَاهُمْ وَمَنْ
نَشَاءُ وَأَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِينَ ⑤

لَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ كِتَابًا فِيهِ ذِكْرُكُمْ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ⑥

1. मक्का नवासी काफ़र अल्लाह पासेआ भेजे जाने आहले रसूलें गी नथे मनदे। उंदा एह इतराज तन्जिया ऐ, उसदा मतलब एह ऐ जे तू आपू आखना जे पैहले रसूलें केई नशान आहदे हे, फी तू की नशान नेई आहनदा।

ते किनियां गै बस्तियां न जो जुलम करदियां
होंदियां हियां जे असें उनें गी कट्टियै रक्खी
दिता ते उंदे बा'द इक होर कौम पैदा करी
दिती ॥ 12 ॥

इस लेई जिसलै (हलाक होने आहले लोकें)
साढ़े अजाब गी मसूस कीता तां (ओहदे थमां
बचने आसतै) दौड़न लगे ॥ 13 ॥

(उसलै असें गलाया) दौड़ो नेई, ते उनें चीजे
पासै जिंदे राहें तुस सुखी जीवन गुजारी सकदे
हे ते अपने घरें पासै बापस जाओ तां जे
थुआड़े शा थुआड़े कर्मे बारै सुआल कीता जा
॥ 14 ॥

इस दा उनें एह जवाब दिता जे ऐ अफसोस!
अस ते (जिंदगी भर) जुलम गै करदे रेह
॥ 15 ॥

ते ओह इयै गल्ल आखदे रेह, इथें तक जे
असें उनेंगी इक बड्ढी गेदी फसलै आंगर
करी दिता। जेह्दी सारी शोभा बरबाद होई
चुकी दी ही ॥ 16 ॥

ते असें गासै गी ते धरती गी ते जे किश इनें
दौनें दे बश्कार ऐ। सिर्फ खेढ दे तौर पर पैदा
नेई कीता (बल्के इंदी रचना बिच्च इक खास
मकसद हा) ॥ 17 ॥

जेकर असें कोई दिल खुश करने दा कोई
आयोजन करना होंदा, तां उसी अस अपने
कश गै रखदे ॥ 18 ॥

पर अस ते सच्च गी झूठे उप्पर देई मारने आं
तां ओह उसदा सिर तोड़ी दिंदा ऐ ते ओह
(झूठ) झट्ट गै नस्सी जंदा ऐ ते तेरे पर तेरी
गल्ला कारण अफसोस ऐ ॥ 19 ॥

وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً
وَأَنْشَأْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا آخَرِينَ ۝۱۲

فَلَمَّا أَحْسَبُوا بَأْسَنَا إِذَا هُمْ مِنْهَا
يَرْكُضُونَ ۝۱۳

لَا تَرْكُضُوا وَارْجِعُوا إِلَىٰ مَا أُتْرِفْتُمْ
فِيهِ وَمَسْكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝۱۴

قَالُوا يَا وَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝۱۵

فَمَا زَالَتْ تِلْكَ دَعْوَاهُمْ حَتَّىٰ جَعَلْنَاهُمْ
حَصِيدًا لِّحَمِيدٍ ۝۱۶

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
لِعِبِينَ ۝۱۷

لَوْ أَرَدْنَا أَنْ نَتَّخِذَ لَهُمْ آيَاتٍ فَآتَيْنَاهُ
مِنْ لَدُنَّا ۗ إِنَّ كُنَّا لَفَاعِلِينَ ۝۱۸

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ
فَإِذَا هُوَ رَهَقٌ ۗ وَلَكُمْ الْوَيْلُ مِمَّا
تَصِفُونَ ۝۱۹

ते जेहके बी वजूद गासै च न ते धरती च न सब उससै दे न ते जेहके उसदे लागै न ओह उस दी अबादत थमां मूह नेई मोड़दे ते नां (उस थमां) थकदे न ॥ 20 ॥

ओह रातीं बी ते दिनें बी स्तुति करदे न ते ओह इस थमां नेई रुकदे ॥ 21 ॥

क्या इनें लोकें धरती थमां उपास्य बनाई लैते न ते ओह (मखलूकात यानी संसार ते इस च होने आहली सारी चीजें गी) पैदा करदे न ॥ 22 ॥

अगर इनें दौनें (यानी धरती ते गास) च अल्लाह दे सिवा होर बी उपास्य' होंदे तां एह दमै तबाह होई जंदे। इस लेई अल्लाह जो (अर्श) गासै दा बी रब्ब ऐ सारी नुटियें शा पाक ऐ ते इनें (गल्लें) शा बी जो ओह आखदे न ॥ 23 ॥

जो कुछ ओह करदा ऐ उसदे बारे ओह कुसै गी जवाबदेह नेई होंदा। हालांके ओह (लोक) जवाबदेह होंदे न ॥ 24 ॥

क्या उनें इस दे सिवा उपास्य बनाई लेदे न? तां आखी दे जे अपना प्रमाण ल्याओ। एह (कुरआन) ते उंदे आसतै बी, जो मैरे कनै न, सम्मान' दा साधन ऐ ते जेहके मेरे शा पैहलें होई चुके दे न उंदे आसतै बी प्रतिशदा दा कारण ऐ मगर इंदे चा मते-हारे लोक सच्च गी नेई पनछानदे इस लेई इस थमां मूह फेरदे न ॥ 25 ॥

وَلَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ عِنْدَهُ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ﴿٢٠﴾

يُسَبِّحُونَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُونَ ﴿٢١﴾

أَمْ اتَّخَذُوا إِلَهًا مِّنَ الْأَرْضِ هُمْ يُنشِرُونَ ﴿٢٢﴾

لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلِهَةٌ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا ۗ فَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٢٣﴾

لَا يُسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ ﴿٢٤﴾

أَمْ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ ۗ هَذَا ذِكْرٌ مِّن مَّعِيَ وَذِكْرٌ مِّن قَبْلِي ۗ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ الْحَقَّ ۗ هُمْ مَعْرِضُونَ ﴿٢٥﴾

1. अर्थात् इक शा बद्द उपास्यें आसतै जरूरी हा जे उंदे चा हर इक उपास्य इक नमां सूर्य मंडल बनांदा। बरना उंदे चा कोई बी उपास्य नेई ठरहाया जाई सकदा ते जेकर इक थमां बद्द सूर्य मंडल होंदे तां कुदरत दे कनू न बी बक्ख-बक्ख होंदे। जिसदा ब'जा करी दुनियां चक्करें च पेई जंदी ते तबाह होई जंदी।
2. 'पैहले लोकें आसतै' इस चाल्ती जे पैहले रसूलें बारे उंदे अनुयाइयें जो जो झूठ घड़ी रक्खे दे हे कुरआन नै ओह सब दूर करी दिते न ते इस चाल्ती पैहलकें ते खीरलें आसतै शर्फ दा मूजब (यानी सम्मान दा साधन) बनी गेआ।

ते असें तेरे शा पैहलें जिन्ने बी रसूल भेजे दे न अस उंदे चा हर-इक पासै एह वह्नी करदे हे जे हकीकत एह ऐ जे अऊं इक गै खुदा आं। इस लेई (सिर्फ) मेरी गै उपासना करो ॥ 26 ॥

ते (एह लोक) आखदे न जे रहमान (खुदा) नै पुत्तर बनाई लेदा ऐ (उंदी गल्ल सहेई नेई) ओह ते हर कमजोरी शा पाक ऐ। सच्च एह ऐ जे (जिनें गी एह पुत्तर आखदे न) ओह खुदा दे किश बंदे न जिनें गी खुदा पासेआ इज्जत मिली दी ऐ ॥ 27 ॥

ओह खुदा दे आखे थमां इक शब्द बी बद्ध नेई आखदे ते ओह ओहदे हुकमें दा पालन करदे न ॥ 28 ॥

ओह (खुदा) उस गी बी जानदा ऐ जो भविक्ख च उंदे अगं औने आह्ला ऐ ते उसी बी जो ओह पिच्छें छोड़ी आए न ते ओह सिवाए उसदे, जेहदे आस्तै खुदा नै एह गल्ल पसंद कीती होऐ, कुसै आस्तै शफ़ाअत (सफारश) नेई करदे ते ओह उसदे खौफ कनै कंबदे रौहदे न ॥ 29 ॥

ते जो बी उंदे बिच्चा एह आखै जे अऊं खुदा दे सिवा उपास्य आं अस उसी ज्हन्नम च सुट्टी देगे ते अस जालमें गी इयै सिला दिंदे रौहन्ने आं ॥ 30 ॥ (रुकू 2/2)

क्या काफ़रें एह नेई दिक्खेआ जे धरती ते गास दमें बंद हे, इस लेई असें उसी खोहली¹ दिता

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا نُوحِيَ إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ﴿٢٦﴾

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهُ ۗ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ﴿٢٧﴾

لَا يَسْقُونَهُ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِأَمْرِهِ يَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنْ ارْتَضَىٰ وَهُمْ مِنَ خَشِيَّتِهِ مُسْتَفْقُونَ ﴿٢٩﴾

وَمَنْ يَقُلْ مِنْهُمْ إِنِّي إِلَهٌ مِنْ دُونِهِ فَذٰلِكَ نَجْزِيهِمْ جَهَنَّمَ ۗ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣٠﴾

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ إِنَّ السَّمٰوٰتِ

1. अर्थात् जिन्ना चिर अल्लाह नै वह्नी नेई ही भेजी गास ते धरती दी हदायत पाने दा कोई साधन नेई हा, मगर जिसलें असें उसी खोहलेआ ते वह्नी नाजल कीती उसलें हदायत दे साधन पैदा होई गे ते साबत होई गेआ जे अल्लाह दी वह्नी दे बग़ेर कोई जीवन नेई। एहानगी दी गल्ल ऐ जे लोक फी बी ईमान नेई आहनदे। मजूदा साईस नै बी एह साबत करी दिता ऐ जे जिसलें कोई नमां सूर्य जगत पैदा होंदा ऐ तां पैहलें ओह इक गेंद (खिन्नु) आंगर होंदा ऐ। फी अंदरूनी चक्कर कनै उसदे कंठे (कनारे) दूरे-दूरे तकर छंडे जंदे न ते नमं मंडल बनी जंदे न जो अंदरूनी धुरी दे चबक्खे चक्कर खान लगी पौदे न ते इक नमां सूर्य-मंडल बनी जंदा ऐ।

ते असें पानी राहें हर सजीव चीजै गी जौंदा
कीता ऐ। इस लेई क्या ओह ईमान नेई आह्नुदे?
॥ 31 ॥

ते असें धरती च प्हाड़ बनाए तां जे ऐसा निं
होऐ जे ओह (यानी धरती) उंदै (यानी धरती
आहलें) समेत सख्ख भुंचाल कनै ग्रसित होई
जा। ते असें धरती पर खुल्ले-डुल्ले रस्ते बी
बनाए तां जे एह लोक उंदै राहें (बक्ख-बक्ख
थाहरें तक) पुज्जी सकन ॥ 32 ॥

ते असें गासै गी इक मजबूत छत्त (यानी रक्षा
दा साधन) बनाया ऐ ते फी बी ओह उसदे
नशानें (यानी गासै थमां जाहर होने आहले
नशानें) थमां (जेहके उंदै फायदे आसतै न)
मूंह मोड़ी लेंदे न ॥ 33 ॥

ते ऊऐ ऐ जिसनै रात ते दिन गी ते सूरज
ते चन्नै गी पैदा कीते दा ऐ। एह सब
(अकाश दे सियारे यानी ग्रैह) अपने-अपने
अक्स पर बिना कुसै रोक-रकावट चला
करदे न ॥ 34 ॥

ते तेरे शा पैहलें असें कुसै बी शख्स गी मती
लम्मी आयु नेई बख्शी। जेकर तू मरी जाएं तां
क्या ओह गैर-ममूली आयु हासल करियै जींदे
रेही सकदे न ॥ 35 ॥

हर जान मौत चक्खने आहली ऐ। ते अस
तेरी परीक्षा चंगी ते बुरी परिस्थितियें च
करगे ते आखर च तुगी साढ़े पासै गै
परताइयै ल्यांदा जाग ॥ 36 ॥

ते जिसलै तुगी काफर दिखदे न तां तुगी सिर्फ
इक तुच्छ चीज समझदे न (ते आखदे न)
क्या इयै शख्स ऐ जो थुआड़े उपास्यें दियां
त्रुटियां गनांदा ऐ। हालांके ओह आपूं रहमान
(खुदा) दे जिकर दा इन्कार करदे न ॥ 37 ॥

وَالْأَرْضِ كَانَتْ رَتْقًا فَفَتَقْنَاهُمَا ۖ وَجَعَلْنَا
مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ أَفَلَا
يُؤْمِنُونَ ۝

وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ
تَمِيدَ بِهِمْ ۖ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سَبِيلًا
لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ۝

وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَفًّا مَّحْفُوظًا ۖ وَهُمْ
عَنِ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ۝

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ ۗ كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۝

وَمَا جَعَلْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مِنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۗ
أَقَابِينَ ۖ مَتَّ فَهُمْ الْخُلْدُونَ ۝

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۗ
وَبَلَّوْكُمْ بِالْحَيْرِ وَالْأَخْيَرِ ۖ فِتْنَةً ۗ
وَإِنَّا تُرْجِعُونَ ۝

وَإِذْ أَرَأَيْتَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ يَتَّخِذُونَكَ
الْأَهْزُومَ ۗ أَلْهَذَا الَّذِي يَذَّكَّرُ آلِهَتَكُمْ ۗ
وَهُمْ يَذَّكَّرُ الرَّحْمَنَ ۗ هُمْ كَفَرُونَ ۝

इन्सान दे अंदर काहलपुने दा मादा रक्खेआ गेदा ऐ, इस लेई (याद रक्खो) अऊं तुसंगी अपने नशान दसगा, इस आस्तै तुस काहलपुने थमां कम्म नेई लैओ ॥ 38 ॥

ते (सुनियै) ओह आखदे न जे जेकर तुस लोक (यानी मुसलमान) सच्चे ओ तां एह बा'यदा कद् पूरा होग ॥ 39 ॥

जेकर काफर लोक इस घड़ी गी जानी लैंदे जिसलै के ओह अपने मूहें ते अपनी पिट्ठी परा अगग हटाई नेई सकडन ते नां कुसै द्वारा उंदी मदाद कीती जाग (तां ओह इन्नी शेखी निं मारदे) ॥ 40 ॥

पर (ओह अजाब) अचानक गै उंदे कश आई जाग ते उनेंगी रूहान करी देग इस आस्तै ओह उसी रद्द करने च समर्थ नेई होडन ते नां उनेंगी (कोई) मोहलत दिती जाग ॥ 41 ॥

ते तेरे शा पैहलें जेहके रसूल होई चुके दे न उंदा बी मजाक डुआया गेआ हा, पर नतीजा एह होआ जे जिनें (लोकें) उनें रसूलें दा मौजू डुआया हा उनेंगी उनें गल्लें गै आइयै घेरी लैता जिंदे राहें ओह नबियें दा मौजू डुआंदे होंदे हे ॥ 42 ॥ (रुकू 3/3)

तूं आखी दे जे तुसं गी रातीं जां दिनै बेलै रहमान/खुदा दी पकड़ै थमां कु'न बचाई सकदा ऐ? पर (सचाई एह ऐ जे) ओह अपने रब्ब दे जिकर थमां मूह मोड़ा करदे न ॥ 43 ॥

क्या उंदा समर्थन करने आहले कोई (सच्चे) उपास्य हैन जेहके उनेंगी साढ़े अजाब थमां बचाई लैडन? ओह (उपास्य) ते आपू अपनी जानें दी बी रक्षा नेई करी सकदे ते नां साढ़े मकाबले च कोई उंदा साथ देई सकदा ऐ ॥ 44 ॥

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۗ سَآوِرِكُمْ أَيَّتِي فَلَا تَسْتَعْجَلُونَ ﴿٣٨﴾

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٩﴾

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ لَا يَكْفُونَ عَنْ وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يَنْصُرُونَ ﴿٤٠﴾

بَلْ تَأْتِيهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٤١﴾

وَلَقَدْ اسْتَهْزَأَ بِرَسُولٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٤٢﴾

قُلْ مَنْ يَكْفُرْكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمَنِ ۗ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مَعْرِضُونَ ﴿٤٣﴾

أَمْ لَهُمُ الْهَيْةُ تَمَّعَهُمْ مِنْ دُونِنَا ۗ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَ أَنفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِمَّا يُصْحَبُونَ ﴿٤٤﴾

सचाई एह ऐ जे असें उनेंगी बी ते उंदे बब्ब-
दादें गी बी बड़ा माल-मत्ता दिते दा हा। इत्थें
तक जे उंदे पर इक लम्मा अरसा बीती गोआ।
इस लेई क्या ओह नेई दिखदे जे अस उंदे
देशै पासै बधा करने आं ते उसी कनारें^१ थमां
घटांदे जा करने आं। तां केह (इस थमां इयै
नतीजा निकलदा ऐ जे) ओह (साढ़े पर)
गालब आई जाडन? ॥ 45 ॥

तूं उनेंगी आखी दे जे अऊं ते तुसेंगी वह्वी राहें
सचेत करा करना ते (चंगी चाल्ली जानना
जे) जिसलै (रुहानी) बैहरें गी सोहगा कीता
जा तां ओह अवाज नेई सुनी सकदे ॥ 46 ॥

ते जेकर उनेंगी तेरे रब्ब दे अजाब दी गर्मी दा
कोई थपेड़ा छहोई जा तां ओह जरूर आखडन,
साढ़े पर अफसोस! अस ते जुलम गै करदे रेह
॥ 47 ॥

ते अस क्यामत आहलै रोज ऐसे तोल दे
साधन (यानी पूरा तोलने आहले साधन) पैदा
करगे जे जिंदे कारण कुसै जान पर रत्ती हारा
जुलम बी नेई कीता जाग ते जेकर इक राई
दे दाने बरोबर (कोई कर्म) होग तां अस
(उसगी) पेश करी देगे ते अस लेखा लैने च
काफ़ी (समर्थ) आं ॥ 48 ॥

ते असें मूसा ते हारून गी सच्च ते झूठ च फर्क
करी देने आहला नशान बख्शे दा हा ते रोशनी
बख्शी दी ही। ते संयमियें आसै इक याद
दुआने (कराने) आहली शिक्षा बख्शी दी ही
॥ 49 ॥

ओह (संयमी) जो अपने रब्ब थमां ग़ैब च
(ओहलै बी) डरदे न ते जेहके जज़ा ते स'ज़ा
(यानी इनाम ते दंड) थोने दी निश्चत घड़ी
थमां बी डरदे रौहदे न ॥ 50 ॥

بَلْ مَتَّعْنَاهُمَا هَوًىٰ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ طَالَ
عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي
الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَفِهَا أَفَهُمُ
الْغَالِبُونَ ﴿۴۵﴾

قُلْ إِنَّمَا أُنذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ وَلَا يَسْمَعُ
الصَّمُّ الدُّعَاءَ إِذَا مَا يُنذَرُونَ ﴿۴۶﴾

وَلَيْسَ مَسْئَلَهُمْ تَفْحَةً مِنْ عَذَابِ
رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ يَا لَيْلًا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿۴۷﴾

وَنَصَّعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ
فَلَا تَظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَإِنْ كَانَ مِثْقَالَ
حَبَّةٍ مِنْ حَرْدَلٍ آتَيْنَاهَا وَكَفَىٰ بِنَا
حُسْبِينَ ﴿۴۸﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ وَهَارُونَ الْفُرْقَانَ
وَضِيَاءً وَذِكْرًا لِّلْمُتَّقِينَ ﴿۴۹﴾

الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِنْ
السَّاعَةِ مُشْفِقُونَ ﴿۵۰﴾

1. यानी देश दियां हद्दां ते नमीं नसलां मुसलमानें दे अधीन आँदियां जा करदियां न।

ते एह (कुरआन) चेता कराने आहली इक ऐसी कताब ऐ, जिस च सारी गासी (शमानी) कताबें दियां खुबियां (गुण) बगियै आई गेदियां होन उसी असें उतारे दा ऐ इस लेई क्या तुस ऐसी कताब दा इन्कार करदे ओ? ॥ 51 ॥
(रुकू 4/4)

ते असें इस थमां पैहलें इब्राहीम गी अच्छी सूझ-बूझ ते योग्यता प्रदान कीती ही, ते अस उस दी अंदरूनी हालत थमां वाकफ हे ॥ 52 ॥

जिसलै उसनै अपने पिता ते अपनी कौम गी आखेआ, जे एह कनेहियां मूरतां न जिंदे अगें तुस बैठे दे रौहदे ओ? ॥ 53 ॥

उनें गलाया असें अपने बब्ब-दादे गी दिक्खेआ हा जे ओह इंदी अबादत करदे हे ॥ 54 ॥

उसनै आखेआ, तां तुस बी ते थुआड़े (बड़के) बब्ब-दादे बी इक खुल्ली गुमराही च जकड़ोए दे हे ॥ 55 ॥

उनें गलाया, क्या तूं साढ़े कश इक हकीकत लेइयै आया ऐं जां तूं साढ़े कनै मजाक करा करना ऐं ॥ 56 ॥

(इब्राहीम नै) गलाया सच्च एह ऐ जे थुआड़ा रब्ब शमानें दा बी रब्ब ऐ ते धरती दा बी रब्ब ऐ (ऊऐ ऐ) जिसनै इनेंगी पैदा कीते दा ऐ ते अऊं थुआड़े सामनै इस गल्ला दा गुआह आं ॥ 57 ॥

ते उसनै गलाया, खुदा दी कसम! जिसलै तुस पिट्ट फेरियै उठी जागे ओ तां अऊं थुआड़ी मूरतियें बरुद्ध इक पक्की योजना बनागा ॥ 58 ॥

फी उसनै उंदे (मूरतियें दे) टुकड़े-टुकड़े करी दित्ते सवाए उंदे चा बड़्डी (मूरतियें)

وَهَذَا ذِكْرٌ مُّبْرَكٍ أَنْزَلْنَاهُ وَأَنْتُمْ لَهُ مُّكْرِمُونَ ﴿٥١﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا إِبْرَاهِيمَ رُسُدَهُ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهِ عَالِمِينَ ﴿٥٢﴾

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا هَذِهِ التَّمَاثِيلُ الَّتِي أَنْتُمْ لَهَا عَاكِفُونَ ﴿٥٣﴾

قَالُوا وَجَدْنَا آبَاءَنَا لَهَا عَابِدِينَ ﴿٥٤﴾

قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٥٥﴾

قَالُوا اجْنُبْنَا بِالْحَقِّ أُمَّ آنتَ مِنَ اللَّهِ الْعَيْنِ ﴿٥٦﴾

قَالَ بَلْ يَبْتَغِي رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الَّذِي فَطَرَهُمْ أَنِّي وَأَنَا عَلَىٰ ذُرِّيَّتِهِ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٥٧﴾

وَتَاللَّهِ لَأَكِيدَنَّ أَصْنَامَكُمْ بَعْدَ أَنْ تُوَلُّوا مُدْبِرِينَ ﴿٥٨﴾

فَجَعَلَهُمْ جُودًا إِلَّا كَثِيرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ

दे तां जे ओह् (इक बारी फी) ओह्दे कश
औन ॥ 59 ॥

إِلَيْهِ يَرْجِعُونَ ﴿٥٩﴾

इस पर उनें गलाया जे साढ़े उपास्ये कनै एह
ब्यहार कुसनै कीता ऐ ऐसा करने आह्ला
यकीनन जालमें बिच्चा ऐ ॥ 60 ॥

قَالُوا مَنْ فَعَلَ هَذَا بِآلِهَتِنَا إِنَّهُ لَمِنَ
الظَّالِمِينَ ﴿٦٠﴾

(उसलै किश दूए लोकें) गलाया, असें इक
जुआन गभरू गी जिसदा नांऽ इब्राहीम ऐ,
उंदी कमजोरियां दसदे सुनेआ ऐ ॥ 61 ॥

قَالُوا سَمِعْنَا فَتًى يَذُكُرُهُمْ يُقَالُ لَهُ
إِبْرَاهِيمُ ﴿٦١﴾

(उसलै कौम दे सरदारें) गलाया, (जेकर
एह गल्ल ऐ तां) उस शख्स गी सारे लोकें
दे सामनै आह्नो तां जे ओह् (उस दे बारै)
कोई फैसला करन ॥ 62 ॥

قَالُوا فَأْتُوا بِهِ عَلَىٰ أَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَشْهَدُونَ ﴿٦٢﴾

फी उनें गलाया, हे इब्राहीम! क्या तोह् साढ़े
उपास्ये दी एह् हालत बनाई ऐ ? ॥ 63 ॥

قَالُوا ءَأَنْتَ فَعَلْتَ هَذَا بِآلِهَتِنَا
يَا بَرَاهِيمُ ﴿٦٣﴾

इब्राहीम नै गलाया जे (आखर) कुसै करने
आह्ले नै ते एह् कम्म जरूर कीते दा ऐ। एह्
सारें शा बड्डा बुत्त सामनै खड़ोते दा ऐ जेकर
ओह् बोल्ली सकदे होन तां उंदे शा (यानी
इस बुत्त थमां बी ते दूए बुत्तें थमां बी) पुच्छी
दिकखो ॥ 64 ॥

قَالَ بَلْ فَعَلَهُ كَبِيرُهُمْ هَذَا
فَسَأَلُوهُمْ إِنْ كَانُوا يَبْتَاطِقُونَ ﴿٦٤﴾

इस पर उनें अपने सरदारें पासै ध्यान दिता ते
गलाया-सच्ची गल्ल तां इय्ये ऐ जे जालम तुस
गै ओ ॥ 65 ॥

فَرَجَعُوا إِلَىٰ أَنفُسِهِمْ فَقَالُوا إِنَّكُمْ أَنْتُمُ
الظَّالِمُونَ ﴿٦٥﴾

ते ओह् लोक सिरें दे भार खडेरी दित्ते गे
(यानी ला-जवाब करी दित्ते गे) ते उनें गलाया
जे तू जानना ऐं जे एह् (बुत्त) बोलदे नेई न
॥ 66 ॥

ثُمَّ نَكَّسُوا عَلَىٰ رُءُوسِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتُمْ
مَا هُمُؤَلَاءُ يَبْتَاطِقُونَ ﴿٦٦﴾

(इब्राहीम नै) आखेआ तां केह् तुस अल्लाह
दे सिवा ऐसी शै दी उपासना करदे ओ जेहकी

قَالَ أَفَقَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا

नां ते तुसेंगी फायदा देई सकदी ऐ, नां नुकसान पुजाई सकदी ऐ ॥ 67 ॥

لَا يَفْعَلُكُمْ شَيْئًا وَلَا يَضُرُّكُمْ ۝

(अस) थुआड़े पर अफसोस (करने आं) ते उस पर बी जिसदी तुस अल्लाह दे सिवा अबादत करदे ओ, क्या तुस अकली शा कम्म नेई लेंदे ॥ 68 ॥

أَقْبَلْتُمْ وَلِمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۝
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

(इस पर ओह रोहें होइयै) बोल्ले-इस शख्स गी जाली देओ ते अपने उपास्यें दी मदद करो, जेकर तुसें किश करने दा इरादा कीते दा ऐ ॥ 69 ॥

قَالُوا حَرِّقُوهُ وَانصُرُوا آلِهَتَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ فاعِلِينَ ۝

उसलै असें गलाया, हे अग्नि! तू इब्राहीम दी खातर ठंडी बी होई जा ते एहदे आसतै सलामती दा मूजब बी बनी जा ॥ 70 ॥

قُلْنَا يَا رَاكُونَ بَرِّدًا وَسَلَامًا عَلَى إِبْرَاهِيمَ ۝

ते उनें एहदे कनै किश बुरा ब्यहार करना चाह्या मगर असें उनेंगी नकाम बनाई दित्ता ॥ 71 ॥

وَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَخْسَرِينَ ۝

ते असें उसी बी ते लूत गी बी उस धरती पासै लेई जाइयै बचाई लैता जेहदे च असें सारे ज्हांनें आसतै बरकतां रक्खी दियां हियां ॥ 72 ॥

وَنَجَّيْنَاهُ وَلُوطًا إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا لِلْعَالَمِينَ ۝

ते असें उसी इस्हाक बी प्रदान कीता ते याकूब बी पोतरे दे रूपै च (प्रदान कीता) ते असें सारे गी नेक बनाया ॥ 73 ॥

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً ۝
وَكُلًّا جَعَلْنَا صَالِحِينَ ۝

ते असें उनेंगी (लोकें दा) इमाम/मुखिया बनाया। ओह साढ़े हुकमै कनै उनेंगी हदायत दिंदे हे ते असें उंदे पासै नेक कम्म करने ते नमाज कायम करने ते जकात (दान) देने आसतै वह्नी कीती ते ओह सारे साढ़े उपासक हे ॥ 74 ॥

وَجَعَلْنَاهُمْ أَيْمَةً يَهْتَدُونَ بِأَمْرِنَا
وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَإِقَامَ
الصَّلَاةِ وَإِيتَاءَ الزَّكَاةِ وَكَانُوا
تَنَاعِدِينَ ۝

ते (असें उसी) लूत (बी बख्शेआ) जिसी असें हुकम' बी अता कीता ते इलम बी। ते

وَلُوطًا آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَنَجَّيْنَاهُ

1. मूल शब्द हुकम दा अर्थ ऐ जे उनेंगी ऐसा ज्ञान प्रदान कीता जेहदे राहें ओह लोकें दे फैसले करी सकदे हे।

उसी उस बस्ती थमां मुक्ति दित्ती जेहकी अत्त गै गंदे कम्म करदी ही ओह (यानी लूत दे शैहरे च रौहने आहले) इक बड़ी बुरी कौम यानी ना-फरमान हे ॥ 75 ॥

ते असें उसी (यानी लूत गी) अपनी रैहमत च दाखल कीता ओह साढ़े नेक बंदे बिच्चा हा ॥ 76 ॥ (रुकू 5/5)

ते (याद कर) नूह गी जिसलै उसनै इस (यानी इब्राहीम दी घटना) शा पैहलें (असेंगी) पुकारेआ। ते ओहदी दुआ सुनी। इस लेई असें उसगी बी ते ओहदे परिवार गी बी इक बड़्डी घबराट थमां मुक्ति दित्ती ॥ 77 ॥

ते असें उसदी उस कौम दे मकाबले मदद कीती जिसनै साढ़ी नशानियें गी झुठेरेआ हा। ओह बौहत बुरी कौम ही इस लेई असें उनें सारें गी गरक करी दित्ता ॥ 78 ॥

ते (याद कर) दाऊद गी बी ते सुलेमान गी बी जिसलै जे ओह दमै इक खेती दे झगड़े बारै फैसला करा करदे हे। उस बेल्लै जिसलै जे इक कौम दे सधारण' लोक उसी खाई गे हे (यानी तबाह करी गे हे) ते अस उंदे फैसले दे गुआह हे ॥ 79 ॥

असें असल मामला सुलेमान गी समझाई दित्ता। ते सारें गी गै असें हुकम ते इलम प्रदान कीता (फैसला करने दी शक्ति ते ज्ञान प्रदान कीता हा) ते असें दाऊद दे कन्नै पर्वत बासियें (यानी चरिंदें ते परिंदें) गी बी कम्म लाई

مِنَ انْقَرِيَةِ الَّتِي كَانَتْ تَعْمَلُ الْخَبِيثَۃَ ۗ
اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا سُوْٓءَ فِسْقِيْنَ ۝۷۵

وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمٰتِنَا ۗ اِنَّهٗ مِنْ
الصّٰلِحِيْنَ ۝۷۶

وَتُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلِ فَاَسْتَجَبْنَا
لَهٗ فَنَجَّيْنٰهٖ وَاهْلَهٗ مِنَ الْكُرْبِ
الْعَظِيْمِ ۝۷۷

وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِآيٰتِنَا ۗ
اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا سُوْٓءَ فَاَعْرَفْنٰهُمْ
اَجْمَعِيْنَ ۝۷۸

وَدَاوُدَ وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمْنَ فِي الْحَرْثِ
اِذْ نَفَسَتْ فِيْهِ عَنَمُ الْقَوْمِ ۗ وَكُنَّا
لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ۝۷۹

فَقَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۗ وَكَلَّاۗا اَنْتَبٰحُكُمَّا
وَءَعْلَمًا ۗ وَسَخَّرْنَا مَعَ دَاوُدَ الْجِبَالَ
يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ۗ وَكُنَّا فَاعِلِيْنَ ۝۸۰

1. मूल शब्द 'गनम' दा अर्थ भिड्ड-बक्करियां होंदा ऐ मुहावरे च अक्सर सधारण लोकें गी भिड्ड-बक्करियां गै आखेआ जंदा ऐ। आयत दा भाव एह ऐ जे हजरत दाऊद दे गुआंठी सधारण लोक डाकू बगैरा उंदे देश दे लोकें गी नुकसान पुजांदे हे। हजरत दाऊद नै अपने देश दी रक्षा आस्तै उंदे हमलें गी रोकेआ ते उनें अड़ोस-पड़ोस दे लोकें कन्नै समझोता करियै अपने देश गी उंदे हमलें थमां बचाई लैता।

दिता हा ओह सब अल्लाह दी स्तुति करदे हे
ते अस एह सब किश करने दी समर्थ रखदे
हे ॥ 80 ॥

ते असें उसी इक लबास¹ बनाने दा गुर सखाया
हा तां जे ओह लड़ाई च थुआड़े प्राणों दी रक्षा
करै। इस लेई क्या तुस शुकुरगजार बनगे ओ?
॥ 81 ॥

ते असें सुलेमान आस्तै तेज चलने आहली
हवा गी बी उसदे अधीन करी रखे दा हा।
जेहकी उसदे हुकमै मताबक उस धरती पासै
चलदी² ही जेहदे च असें बरकत रक्खी दी ही
ते अस सब किश जानने आं ॥ 82 ॥

ते किश उददंडी³ (सिर फिरे) लोक ऐसे हे
जेहके ओहदे आस्तै समुंदरे च गोते लादे हे
ते एहदे अलावा होर बी कम्म करदे हे ते
अस उंदे आस्तै नगरानी दा कम्म करदे हे
॥ 83 ॥

ते (तू) अघ्यूब (गी बी याद कर) जिसलै
उसनै अपने रब्ब गी पुकारियै गलाया जे मेरी
दशा एह ऐ जे मिगी तकलीफ नै आई घेरे दा
ऐ ते हे खुदा! तू ते सारे रैहम करने आहलें
थमां ज्यादा रैहम करने आहला ऐं ॥ 84 ॥

इस लेई असें उसदी दुआ⁴ सुनी ते जो तकलीफ
उसी पुजी दी ही उसी दूर करी दिता ते उसी
उसदा परिवार बी दिता ते उंदे अलावा अपने

وَعَلَّمْنَاهُ صَعَاةَ بُنُوسٍ لِّكُمْ
لِيُخَوِّسَكُمْ مِنْ بَأْسِكُمْ ۗ فَهَلْ أَنْتُمْ
شَاكِرُونَ ﴿٨٠﴾

وَلِسُلَيْمَانَ الرِّيحَ عَاصِفَةً تَجْرِي
بِأَمْرِهِ إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا
وَكَتَبْنَا بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمِينَ ﴿٨١﴾

وَمِنَ الشَّيْطَانِ مَنْ يَعْوِضُونَ لَهُ
وَيَعْمَلُونَ عَمَلًا دُونَ ذَلِكَ ۗ وَكَتَبْنَا لَهُمُ
حَفِظِينَ ﴿٨٣﴾

وَأَيُّوبَ إِذْ نَادَى رَبَّهُ أَلَيْسَ لِي بِمَسْنِي الضُّرِّ
وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ﴿٨٤﴾

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَكَشَفْنَا مَا بِهِ مِنْ ضُرِّ
وَأْتَيْنَاهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً

1. लड़ाई मौकै रक्षा आस्तै कबच बनाना सखाया हा।

2. हजरत सुलेमान दे समुंदरी जहाज शाम देश दे उत्तरी हिस्से थमां समान लेइयै दक्खन पासै आँदे होंदे हे यानी फ़लस्तीन पासै। इस आयत च उसै पासै संकेत ऐ।

3. इस ज 'गा मूल शब्द 'शतान' बिद्रोहिये ते उददंडिये आस्तै बरतोए दा ऐ। फ़ारस दी खाड़ी दे कंठे बास करने आहले घमंडी लोक सुलेमान दी सेवा करदे होंदे हे ते ओहदे आस्तै फ़ारस दी खाड़ी थमां मोती कड़्डी आहनदे हे जेहके बहरीन ते मस्कद दे अलाकें च मती मातरा च होंदे न ते बड़ी कसरत कनै कड़्ढे जंदे न।

पासेआ किरपा करदे होई होर बी प्रदान कीते ते असें इस घटना गी उपासना करने आहलें आस्तै इक नसीहत दा मूजब बनाया ऐ ॥ 85 ॥

ते इस्माईल' गी बी (याद कर) ते इद्रीस गी बी ते जुलुकिःपल गी बी। एह सारे दे सारे सबर करने आहले हे ॥ 86 ॥

ते असें इनें सारें गी अपनी रैहमत च दाखल कीता हा ते ओह सब सदाचारी हे ॥ 87 ॥

ते जन्नून (अर्थात् यूनुस गी बी याद कर) जिसलै ओह गुस्से दी हालत च उठी गेआ ते दिलै च पूरा यकीन हा जे अस उसी तंग नेई करगे। इस लेई उसने असें गी बिपता दे समै पुकारेआ (ते आखेआ) जे तेरे सिवा कोई उपास्य नेई तूं पाक ऐं। अऊं यकीनन जुलम करने आहलें बिच्चा हा ॥ 88 ॥

इस लेई असें उसदी प्रार्थना गी सुनेआ ते गम थमां छुटकारा दिता ते अस इस्सै चाल्ली मोमिनें गी छुटकारा दिंदे रौहने आं ॥ 89 ॥

ते ज़कारिया' गी बी (याद कर) जिसलै उसनै अपने रब्ब गी पुकारेआ हा ते आखेआ हा हे मेरे रब्ब! मिगी इक्कला नेई छोड़। ते तूं बारस होने आहलें च सारें थमां बेहतर ऐं ॥ 90 ॥

ते असें उसदी दुआऽ सुनी ते उसी यह्या प्रदान कीता ते ओहदी घरे-आहली गी ओहदी खातर नरोआ करी दिता। ओह सारे लोक नेक कम्म

مَنْ عِنْدَنَا وَذِكْرَى لِلْعَبِيدِينَ ۝

وَاسْمِعِيلَ وَادْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ۝ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ۝

وَادْخَلْنٰهُمْ فِي رَحْمَتِنَا ۝ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝

وَذَا النُّوْنِ ۝ اِذْ ذَهَبَ مَعْاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِي الظُّلُمٰتِ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۝ اِنِّيْ كُنْتُ مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۝ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْعَمْرِ ۝ وَكَذٰلِكَ نُنْجِي الْمَوْمِنِيْنَ ۝

وَزَكَرِيَّا ۝ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا ۝ وَاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ۝

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۝ وَوَهَبْنَا لَهٗ يٰحْيٰى ۝ وَاصْلَحْنَا لَهٗ رُوْحَهٗ ۝ اِنَّهُمْ كَانُوْا

1. इस ज'गा इस्माईल, इद्रीस ते जुलुकिःपल दा बर्णन किट्ठा कीता गेदा ऐ। हालांके एह बक्ख-बक्ख समें दे नबीं न। किट्ठा जिकर करने दी ब'जा एह ऐ जे एह सब नबीं गैर तशरीह हे (यानी इनेगी शरीअत यानी धार्मक विधान नेई हा मिले दा) ते मसीबतें दा शकार होए। पवितर कुुरआन नै बी इंदे सारें च इक जैसा गुण करार दिते दा ऐ। इस्सै कारण अगें जन्नून दा बी बर्णन कीता गेदा ऐ।
2. हजरत ज़कारिया दा जिकर इस थाहर इस आस्तै कीता ऐ जे एहदे बा'द हजरत मर्यम ते उसदे पुतरें दा बर्णन ऐ जो हजरत ज़कारिया दे समे दे ते उंदे रिश्तेदार हे।

करने च तौल करदे हे ते असेंगी प्रेम ते भै कन्नै पुकारदे हे ते साद्दी खातर नमरता- पूर्ण जिंदगी बसर करदे हे ॥ 91 ॥

ते उस जनानी! गी बी(याद कर) जिसने अपने नामूस(सतीत्व) दी रक्षा कीती इस लेई असें ओहदे पर अपना किश कलाम नाज़ल कीता ते उसगी ते ओहदे पुत्तरे गी दुनियां आस्तै इक नशान² बनाया ॥ 92 ॥

एह थुआड़ा संप्रदाय इक गै संप्रदाय ऐ। ते अऊं थुआड़ा रब्ब आं । इस लेई तुस मेरी गै अबादत करो ॥ 93 ॥

ते उनें (यानी नबिये दे बरोधिये) अपने दीन (धर्म) गी टुकड़े-टुकड़े (करियै अपनी इच्छा मताबक इक टुकड़े गी अखत्यार) करी लैता ऐ(हालांके) ओह सारे साढ़े पासै परताए जाने आहले न ॥ 94 ॥ (रुकू 6/6)

इस लेई जेहका आदमी परिस्थिति मताबक कर्म करग ते कन्नै गै ओह मोमिन बी होग, तां उसदी कोशश गी रद्द नेई कीता जाग ते अस ओहदे नेक कर्मे गी लिखियै रखगे ॥ 95 ॥

ते हर इक बस्ती जिसी असें हलाक (तबाह) कीते दा ऐ ओहदे आस्तै एह फैसला करी दिता गेदा ऐ जे उसदे बसनीक परतियै इस दुनियां च नेई औडन ॥ 96 ॥

इर्थे³ तक जे जिसलै याजूज ते माजूज आस्तै दरोआजा खोहली दिता जाग ते ओह हर इक

يُسْرِعُونَ فِي الْحَيْرِتِ وَيَدْعُونَنَا رَعَبًا
وَرَهَبًا ۖ وَكَانُوا لَنَا حُشِيِّينَ ۝

وَالَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهَا
مِنْ رُوحِنَا وَجَعَلْنَاهَا وَابْنَهَا آيَةً
لِّلْعَالَمِينَ ۝

إِنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ وَأَنَا
رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ ۝

وَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ۖ كُلٌّ لِّإِيْتَا
رُجْعُونِ ۝

فَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَلَا كُفْرَانَ لِسَعِيهِ ۚ وَإِنَّا لَهُ كَاتِبُونَ ۝

وَحَرَّمَ عَلَىٰ قَرِيْبَةٍ أَهْلِكْنَاهَا أَنْتُمْ
لَا يَرْجِعُونَ ۝

حَتَّىٰ إِذَا قُتِحَتْ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ

1. स्त्री (जनानी) शब्द राहें हजरत मर्यम पासै संकेत कीता गेदा ऐ जिनें अपने आपैगी बुराई थमां दूर रक्खेआ ।
2. बदकिस्मती कन्नै मुसलमाने एह समझी लैता ऐ जे हजरत मर्यम ते हजरत ईसा मसीह दे सिबा दूआ कोई आदमी नशान जां चमत्कार नेई हा। हालांके कुरआन मजीद दे हर खंड दा नाँस आयत जां चमत्कार ऐ। इस लेई हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. जिंदे पर सारा कुरआन उतारे दा ऐ सारा चमत्कारें दा भंडार ऐ।
3. इस दा एह मतलब नेई जे याजूज ते माजूज थमां पैहलें दियां सारियां कौमां जींदियां होई जाडन बल्के इसदा एह मतलब ऐ जे याजूज ते माजूज जिसलै सारे संसार च छाई जाडन तां पिछडी दी जातिये च दबारा चुस्ती-फुरती ते आत्म सम्मान जागी जाडन ते ओह दबारा तरक्की करन लगी पौडन। जैसा के अज-कल होआ करदा ऐ। इसै दा नाँस इस थाहर पुनरुत्थान रक्खेआ गेदा ऐ।

प्लाड़ी ते हर इक समुंदरै दी लैहरें परा दलांघां
भरदे संसार च फैली जाडन ॥ 97 ॥

ते (अल्लाह दा) सच्चा बा'यदा लागै आई
जाग तां उस बेलै काफरें दियां अक्खीं फट्टी'
दी फट्टी रेही जांडन ते ओह आखडन । साढ़े
पर अफसोस! अस ते इस ध्याड़े दे बारै बड़ी
भुल्ल च पेदे रेह बल्के अस लोक ते जालम
हे ॥ 98 ॥

(उस बेलै आखेआ जाग जे) तुस बी ते जिनें
चीजें दी अल्लाह दे सिवा उपासना करदे ओ
सारी दी सारी ज्हनम² दा बालन बनडन तुस
सारे ओहदे च दाखल होंगे ॥ 99 ॥

जेकर एह (झूठे उपास्य जिनेंगी तुस खुदा
मनदे ओ) सच्चें गै खुदा होंदे तां एह लोक
ज्हनम च की जंदे ते एह सारे उस च युगें
तक पेदे रौहडन ॥ 100 ॥

ओह ओहदे च करलाडन ते ओह ओहदे च
(समझाने आहलें³ बिच्चा कुसै दी) गल्ल नेई
सुनडन ॥ 101 ॥

यकीनन ओह लोक जिंदे बारै साढ़े पासेआ
नेक बरताऽ करने दा बा'यदा होई चुके दा ऐ
ओह उस नरक थमां दूर रक्खे जाडन ॥ 102 ॥

ओह उसदी अवाज तक नेई सुनडन ते ओह
उस (हालत)च जिसी उंदे दिल चांहदे न,
म्हेशां रौहडन ॥ 103 ॥

وَهُمْ مِنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّبْسُؤُونَ ﴿٩٧﴾

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاذَاهِيَ شَاحِصَةً
أَبْصَارَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ يُوَلِّتُنَا قَدَكُنَّا فِي
عُقُلَةٍ ۖ مِنْ هَذَا بَلْ كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٩٨﴾

إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
حَصْبُ جَهَنَّمَ ۖ أَنْتُمْ لَهَا وَرِدُونَ ﴿٩٩﴾

لَوْ كَانَ هُوَ آلَ اللَّهِ مَا وَرَدُوا هَا ۖ وَكُلٌّ
فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٠٠﴾

لَهُمْ فِيهَا زَوَاجٌ وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠١﴾

إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِنَّا الْحُسْنَىٰ
أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ﴿١٠٢﴾

لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا ۖ وَهُمْ فِي مَا
اشْتَهَتْ أَنفُسُهُمْ خَالِدُونَ ﴿١٠٣﴾

1. अर्थात् इन्कार करने आहलें बिच्चा जेहके लोक एह समझदे न जे पददलित जातियें गी असें सदा लेई खत्म करी दिता ऐ, उंदा पुनरुत्थान होंदे ते उनेंगी तरक्की करदे दिक्खियै रूहान रेही जाडन।
2. परलोक दा नरक ते नेई लभदा, पर इस आयत च नरक दा मतलब ओह अपमान ऐ जो कुरआन मजीद उतरने दे बा'द इन्कार करने आहलें गी पुजने आहला हा ते लम्मे समे तगर उंदे कर्नै लग्गे दा रौहने आहला हा। जियां के विश्व दा इतिहास इस दा साखी ऐ।
3. अर्थात् उस बेलै ईमान आहना किश बी फायदा नेई देग।

बड्डी परेशानी दा समां बी उनेंगी दुखी नेई करग ते फ़रिश्ते उंदे कनै मिलडन ते आखडन एह थुआड़ा ओह दिन ऐ जिस दा थुआड़े कनै बा'यदा कीता गोआ हा ॥ 104 ॥

जिस दिन अस गासै गी इस चाल्ली लपेटी देगे जिस चाल्ली बेही-खाते लेख गी लपेटी लैंदे न। जिस चाल्ली असें थुआड़ी पैदायश गी पैहली बार शुरू कीता हा उससै चाल्ली फी उसी दुरहागे' एह असें अपने उप्पर जरूरी करी रखे दा ऐ। अस ऐसा गै करने दा इरादा रखने आं ॥ 105 ॥

ते असें ज़बूर च किश उपदेशें दे बा'द एह लिखी दिते दा ऐ जे पवित्र धरती (फ़लस्तीन) दे बारस मेरे नेक लोक होडन ॥ 106 ॥

इस (भविष्यवाणी)च उस जाति आस्तै इक संदेश' ऐ जो उपासना करने आहली ऐ ॥ 107 ॥

ते असें तुगी दुनियां आस्तै सिर्फ रैहमत' बनाइयै भेजे दा ऐ ॥ 108 ॥

तूं आखी दे जे मेरे पर ते सिर्फ एह वही होदी ऐ जे थुआड़ा खुदा इक ऐ। क्या तुस एह गल्ल मनगे ओ(जां नेई) ॥ 109 ॥

इस पर जेकर ओह पिट्ट फेरी लैन तां तूं उनेंगी आखी दे जे मैं तुसें (मोमिनें ते काफरें) गी बराबर खबर देई दित्ती ऐ ते अरुं नेई

لَا يَحْزَنُهُمُ الْفَرَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّهُمُ الْمَلَائِكَةُ هَذَا يَوْمُكُمْ الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿١٠٤﴾

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجْلِ لِلْكِتَابِ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نَعِيدُهُ ۗ وَعَدَّا عَلَيْنَا ۗ إِنَّا كُنَّا فَعْلِينَ ﴿١٠٥﴾

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ﴿١٠٦﴾

إِنَّ فِي هَذَا لَبَلَعًا لِقَوْمٍ غٰبِينَ ﴿١٠٧﴾

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِينَ ﴿١٠٨﴾

قُلْ إِنَّمَا يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ وَاحِدٌ ۚ فَهَلْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ﴿١٠٩﴾

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَعَلَّيْنَا أَنْتُمْ عَلَىٰ سَوَآءٍ ۗ وَإِنَّ أَدْرِيَ أَقْرَبَ أَمْ بَعِيدٌ مَّا

1. अर्थात् इस युग दा बिनाश करी दिता जाग ते नमीं जातियां जनम लैडन ते तरक्की करडन । जैसा इस युग च होआ करदा ऐ जे अफ्रीका जिसी अज्ञात ते पिछड़े दा देश समझेआ जंदा हा हून ओहदे च नमें-जीवन दे कनै-कनै तरक्की दा संचार होआ करदा ऐ।
2. मुसलमानें गी इस थमां सब्क लैना चाही दा। जेकर ओह फ़लस्तीन लैना चांहदे न तां सदाचारी बनन।
3. एह गल्ल ठीक ऐ जे भामें आखरी दिनें यहूदी इक बार फ़लस्तीन उप्पर कब्जा करी लैडन । मगर मुसलमानें गी नराश नेई होना चाही दा। की जे उंदा नबी रैहमत बनियै आया ऐ। ओहदे कनै संबंघ रखना मुसलमानें गी घाटे च नेई पाग।

जानदा जे ओह गल्ल जेहदा तुंदे कन्नै बा 'यदा
कीता गेआ हा लागै ऐ जां दूर ॥ 110 ॥

تَوَعَدُونَ ﴿١١٠﴾

अल्लाह खु 'ल्ली गल्लै गी बी जानदा ऐ ते
जो तुस छपालदे ओ उसी बी जानदा ऐ
॥ 111 ॥

إِنَّهُ يُعَلِّمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ
مَا تَكْتُمُونَ ﴿١١١﴾

ते अऊं नेई जानदा जे ओह (गल्ल जो उप्पर
ब्यान कीती गेदी ऐ) शायद थुआड़े आस्तै इक
अजमैश ते (ओहदे कन्नै) इक अरसे तगर
तुसेंगी फायदा पुजाने दा इरादा ऐ (जां म्हेशां-
म्हेशां¹ आस्तै) ॥ 112 ॥

وَإِنْ أَدْرَىٰ لَعَلَّهُ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ
إِلَىٰ حِينٍ ﴿١١٢﴾

(इस वह्नी दे औने पर हजरत मुहम्मद
रसूलुल्लाह स.अ.व. ने) फरमाया हे मेरे रब्ब!
तू सच्च दे मताबक फैसला² करी दे। ते साढ़ा
रब्ब ते रहमान ऐ। ते (हे काफ़रो) जो गल्लां
तुस करदे ओ उंदे खलाफ उससै थमां मदद
मंगी जंदी ऐ ॥ 113 ॥ (रुकू 7/7)

قُلْ رَبِّ احْكُم بِالْحَقِّ ۗ وَرَبُّنَا
الرَّحْمَنُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا
تَصِفُونَ ﴿١١٣﴾

०००

1. अर्थात् फी कदें यहूदी फ़लस्तीन च दाखल नेई होडन।
2. इस आयत च अल्लाह नै हजरत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. राहें मुसलमानें आस्तै पैहलें गै प्रार्थना करवाई दित्ती दी ऐ जे अल्लाह उनेंगी फ़लस्तीन देई देऐ ते उंदी सचाई साबत करी देऐ। असेंगी पूरा यकीन ऐ हजरत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. दी प्रार्थना कदें बी रद्द नेई होग ते लोक अपनी अक्खीं दिक्खी लैडन जे किस चाल्ली हजरत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. दी प्रार्थना मंजूर होई। इम्राईल गी नां रूस फायदा देई सकग ते नां अमरीका।

سُورَةُ الْحَجِّ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ تِسْعٌ وَ سَبْعُونَ آيَةً وَ عَشْرَةٌ رُكُوعَاتٌ

सूर: अल्-हज्ज

एह सूर: मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां उनासी आयतां ते दस रुकू न।

मैं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो बे-
हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

हे लोको! तुस अपने रब्ब आस्तै संयम धारण
करो। की जे फैसले आहला भंचाल' बड़ी
बड़्डी चीज ऐ ॥ 2 ॥

जिस दिन' तुस उसी दिखगे ओ हर दुद्ध
पलैने आहली औरत जिसगी दुद्ध पलाऽ करदी
होग उसी भुल्ली जाग ते हर पटाली जनानी
अपना गर्भ गराई देग ते तू लोकें गी दिखगा
जे ओह मतबाले आंगर न, हालांकि ओह
मतबाले नेई होडन पर अल्लाह दा अजाब
बड़ा सख्त ऐ ॥ 3 ॥

ते लोकें च किश ऐसे बी होंदे न। जो अल्लाह
बाँरे इलम नेई होने पर बी बैहस करदे न ते
हर इक उददंडी (सिरफिरे) ते सचाई थमां दूर
मनुक्खै दे पिच्छें चली पौंदे न ॥ 4 ॥

(असल च) उंदे (उददंडिये/सिर-फिरे) ते
सचाई थमां दूर लोकें) बाँरे फैसला होई चुके

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ ۖ إِنَّ رُزْقَ لَ
السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ①

يَوْمَ تَرُوهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّا
أَرْضَعَتْ وَ تَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا
وَ تَرَى النَّاسَ سُكَرَىٰ وَ مَا هُمْ
بِسُكَرَىٰ وَلَكِنَّ عَذَابَ اللَّهِ شَدِيدٌ ①

وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللَّهِ
بِغَيْرِ عِلْمٍ وَ يَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطَانٍ مَّارِيْدٍ ①

كُتِبَ عَلَيْهِ أَنَّهُ مَنْ تَوَلَّاهُ فَأَنَّهٗ يُضِلُّهٗ

1. यानी आखरी मसीबत जेहदे कर्ने दुनियां दे झगड़े खतम होई जाडन।

2. यानी जिसलै ओह दिन होग तां दुनियां दा एह हाल होग।

दा ऐ जे जो (शख्स) बी ऐसे आदमियें बिच्चा कुसै कनै दोस्ती करग ओह (उददंडी/ सिरफिरा ते सचाई थमां दूर शख्स) उसगी बी गुमराह करी देग ते दोजख दे अजाब पासै लेई जाग ॥ 5 ॥

हे लोको! जेकर तुस दूई बार तुआले जाने बाँरे शक्क च ओ तां (याद रक्खो) असें तुसेंगी पैहलें मिट्टी थमां पैदा कीता हा फी बीरज थमां, फी तरक्की देइयै इक ऐसी अवस्था थमां जो चमकी जाने दा गुण रखदी ही। फी ऐसी अवस्था थमां जो मासै दी इक बोटी आंगर बी ही। किश चिँरे तक ते ओह पूरी चाल्ली इक बोटी दी शकलै च रेही ते किश चिँरे तक नाकस (अधूरी) बोटी दे रूपै च रेही तां जे अस तुंदे पर (सचाई) जाहर करी देचै ते अस जिस चीजा गी चाहने आं गभांशें च इक निश्चत समे तक कायम करी दिने आं। फी अस तुसें गी इक बच्चे दी शक्ली च कइढने आं। (फी बधांदे जन्ने आं) जिस दा नतीजा एह निकलदा ऐ जे तुस अपनी मजबूती दी आयु (यानी जुआनी) तक पुज्जी जंदे ओ ते तुंदे बिच्चा किश लोक ऐसे होंदे न जो अपनी सधारण आयु तक पुज्जियै मरी जंदे न ते किश ऐसे बी होंदे न जो बुढ़ापे दी आखरी सीमा तक पुज्जी जंदे न। तां जे बड़ा सारा ज्ञान हासल करने परैत इलम थमां बिल्कुल कोरे होई जान। ते तू धरती गी दिक्खना ऐं जे ओह (कदें-कदें) अपनी सारी शक्ति खोही दिंदी ऐ। फी जिसलै अस ओहदे उप्पर पानी बरहाने आं तां ओह जोश च आई जंदी ऐ ते बधन लगदी ऐ ते हर चाल्ली दियां खेतियां उगान लगदी ऐ ॥ 6 ॥

وَيَهْدِيهِ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ۝

يَأْتِيهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّنَ
الْبُعْثِ فَإِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِّن تَرَابٍ ثُمَّ
مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِّن عِلْقَةٍ ثُمَّ مِّن مُّضْغَةٍ
مُّخَلَّقَةٍ وَغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ
وَتَقَرَّرُ فِي الْأَرْحَامِ مَا نَشَاءُ إِلَىٰ آجَلٍ
مُّسَيَّئٍ ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ
لِتَبْلُغُوا أَشَدَّكُمْ ۗ وَمِنْكُمْ مَّن يَتُوفَىٰ
وَمِنْكُمْ مَّن يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْدَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا
يَعْلَمَ مِّن بَعْدِ عِلْمٍ شَيْئًا ۗ وَتَرَىٰ الْأَرْضَ
هَامِدَةً فَاذًا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ
وَرَبَّتْ وَأَنْبَتَتْ مِنْ كُلِّ رَوْحٍ يَهْبِجُ ۝

एह इस करियै होंदा ऐ जे (जाहर कीता जा) अल्लाह गै कायम रौहने आहली ते कायम रक्खने आहली हस्ती ऐ ते ओह मुरदें गी जौंदा करदा ऐ ते ओह हर गल्ल करने च समर्थ ऐ ॥ 7 ॥

ते हर चीजै लेई जेहका समां निश्चत ऐ ओह जरूर आइयै रौहना ऐ एहदे च कोई शक्क नेई जे अल्लाह यकीनन उनेंगी जो कबरें च न दबारा दुआलग ॥ 8 ॥

ते लोकें च किश ऐसे बी होंदे न, जो अल्लाह बारै बिना इलम, बिना हदायत ते बिना कुसै रोशन कताबा दे इस हालत च बैहस करदे न ॥ 9 ॥

ओह अपने पैहलू मोड़ी रक्खे दे (होंदे) न (यानी घमंड जाहर करदे न) तां जे अल्लाह दे रस्ते थमां लोकें गी गुमराह करन। ऐसे लोकें आसतै इस संसार च बी जिल्लत होग ते क्यामत आहलै ध्याड़ै बी अस उनेंगी जलने आहला अजाब पुजागे ॥ 10 ॥

थुआड़े हत्थें जो कुछ पैहलें कीता हा। उसदे नतीजे च एह गल्ल जाहर होग ते (इस थमां) पता लगग जे अल्लाह अपने बंदें उप्पर कदें बी कुसै किसमै दा जुलम नेई करदा ॥ 11 ॥ (रुकू 1/8)

ते लोकें बिच्चा (किश) नेह बी होंदे न जेहके अल्लाह दी अबादत सिर्फ बे-दिली कन्नै करदे न। इस लेई जेकर उनेंगी कोई फायदा पुज्जी जा तां ओह ओहदे (अबादत) पर खुश होई जंदे न ते जेकर उनेंगी कोई तकलीफ पुज्जै तां मूंह मोड़ियै फिरी जंदे

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّهُ يُخِي الْمَوْتَىٰ
وَأَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٧﴾

وَأَنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ لَا رَيْبَ فِيهَا وَأَنَّ اللَّهَ
يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُورِ ﴿٨﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ
عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّنِيرٍ ﴿٩﴾

ثَانِي عَطْفِهِ يُضِلُّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
لَهُ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَنَذِيقُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿١٠﴾

ذَلِكَ بِمَا قَدَّمْتَ يَدَكَ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ
بِظَلَامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿١١﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُعْبِدُ اللَّهَ عَلَىٰ حَرْفٍ
فَإِنْ أَصَابَهُ خَيْرٌ اطْمَأَنَّ بِهِ وَإِنْ
أَصَابَتْهُ فِتْنَةٌ انْقَلَبَ عَلَىٰ وَجْهِهِ
خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةَ ۗ ذَٰلِكَ هُوَ

न, ओह् संसार च बी घाटे च रौहदे न ते परलोक च बी, ते इयै खु 'ल्लम-खु 'ल्ला घाटा ऐ ॥ 12 ॥

ओह् अल्लाह दे बगैर ऐसी चीजै गी पुकारदे न जेहकी उनेंगी नां ते नुकसान पुजांदी ऐ ते नां लाभ दिंदी ऐ ते इयै हद दरजे दी गुमराही ऐ ॥ 13 ॥

ओ उस (शख्स) गी पुकारदे न। जिसदी हानी उसदे लाभ थमां ज्यादा करीब ऐ ऐसा आक्रा (सुआमी) बी बड़ा बुरा ऐ ते ऐसे साथी बी बड़े बुरे न ॥ 14 ॥

अल्लाह यकीनन मोमिनें गी जेहके परिस्थिति मताबक नेक कर्म बी करदे न, ऐसे बागें च दाखल करग, जिंदे (साए) च नैहरां बगदियां न। अल्लाह जो चाह करदा ऐ ॥ 15 ॥

जेहका आदमी एह यकीन रखदा ऐ जे अल्लाह उस दी (यानी हज्रत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दी) कदें बी मदद नैई करग। नां दुनियां च नां आखरत च तां उसी चाही दा ऐ जे ओह् इक रस्सी गासै तगर लेई जा (ते ओहदे उप्पर चढ़ी जा) ते फी उसी कटटी' देऐ। फी ओह् दिक्खै जे क्या उसदा उपाऽ इस गल्लै गी दूर करी देग जेहकी उसी रोह चढ़ाऽ करदी ऐ (यानी हज्रत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. गी गासै च मिलने आहली मदद ते बिजय) ॥ 16 ॥

ते असैं इससै चाल्ली इस (कुरआन) गी खु 'ल्ले-खु 'ल्ले नशान बनाइयै नाज़ल कीते दा ऐ ते अल्लाह यकीनन जिसदे बारै इरादा करदा ऐ उसी स्हेई रस्ता दस्सी दिंदा ऐ ॥ 17 ॥

الْخُسْرَانَ الْمُبِينِ ۝

يَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْصُرُهُ وَ مَا لَا يَنْفَعُهُ ۚ ذَلِكَ هُوَ الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ۝

يَدْعُوا مَنْ صَرَّهُ أَقْرَبُ مِنْ نَفْعِهِ ۚ لَيْسَ الْمَوْلَىٰ وَ لَيْسَ الْعَشِيرُ ۝

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ أَمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ۝

مَنْ كَانَ يَظُنُّ أَنْ لَنْ يَنْصُرَهُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ إِلَى السَّمَاءِ ثُمَّ لِيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدَهُ مَا يَغِيظُ ۝

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يُرِيدُ ۝

1. यानी धरती पर डिग्री पवै। की जे उसदी आशा कदें पूरी नैई होग। इस लेई उसदी मौत गै उसी मयूसी दिक्खने थमां बचाई सकदी ऐ।

यकीनन जेहके लोक (हज्रत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. पर) ईमान ल्याए ते ओह लोक जेहके यहूदी बनी गे ते साबी ते ईसाई ते मजूसी ते ओह लोक बी जिनें शिक गी अपनाया। अल्लाह यकीनन उंदे मज़ाटे क्यामत आहलै रोज फैसला करी देग। अल्लाह यकीनन हर इक चीजै दा नगरान ऐ ॥ 18 ॥

(हे इस्लाम दे बरोधी) क्या तू नेई दिखदा जे जेहका कोई बी गासै च ऐ ओह अल्लाह दी फरमांबरदारी करदा ऐ ते इसै चाल्ली जेहका कोई धरती च ऐ ते सूरज बी ते चन्न बी ते तारे बी ते फ़ाड़ बी ते बूहटे बी ते चौखर बी ते लोकें बिच्चा बी मते-सारे। पर लोकें बिच्चा इक बड़डा गरोह ऐसा ऐ जेहेदें बारै अज़ाब दा फैसला होई चुके दा ऐ ते जिसी खुदा जलील करे उसी कोई इज्जत देने आहला नेई। अल्लाह जो कुछ चांहदा ऐ करदा ऐ ॥ 19 ॥

एह दो आपस च बरोध करने आहले गरोह। ऐसे न जो अपने रब्ब बारै झगड़ा करदे न। इस लेई जो अल्लाह दे गुणें दा इन्कार करने आहले काफर न उंदे आसतै अग्नि दे कपड़े (लबास) बनाए जाडन ते उंदे सिरें उप्पर खौलदा पानी सुट्टेआ जाग ॥ 20 ॥

(इत्थें तक जे) उस गर्म पानी कारण जो कुछ उंदे डिड्डै च ऐ ओह बी गली जाग ते उंदे चमड़े बी (गली जाडन) ॥ 21 ॥

ते उंदे आसतै लोहे दे थोड़े (त्यार कीते जाडन) ॥ 22 ॥

जिसलै ओह दुख ते चिंता कारण उस अज़ाब बिच्चा निकलने दी कोशश करडन तां फी

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِغِينَ
وَالنُّصْرَى وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا
إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

الْمَرْتَرَانَ اللَّهُ يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ
وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ
وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ
وَالدَّوَابُّ وَكَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ ۗ وَكَثِيرٌ
حَقٌّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۗ وَمَنْ يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ
مِن مَّكْرَمٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ يُفَعِّلُ مَا يَشَاءُ ۗ

هَذِهِ حَصْنٌ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ
فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّن
نَّارٍ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوسِهِمْ
الْحَمِيمُ ۗ

يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ ۗ

وَلَهُمْ مَقَامِعٌ مِّنْ حَدِيدٍ ۗ

كَلِمًا أَرَادُوا أَنْ يَخْرِجُوا مِنْهَا مِنْ

1. अर्थात् ईमान आहनने आहले ते इन्कार करने आहले।

उस्सै पासै परताई दित्ते जाडन (ते गलाया जाग) जालने आहला अजाब भोगदे जाओ ॥ 23 ॥ (रुकू 2/9)

अल्लाह यकीनन मोमिनें गी जेहके परिस्थिति मताबक नेक कर्म बी करदे न ऐसे बागें च रक्खग। जिंदे (साए) च नैह्रां बगा करदियां होडन। उनेंगी उंदे च (बागें च) सुन्ने दे जड़ाऊ कंगन पुआए जाडन ते सुच्चे मोती बी। ते उंदा लबास उंदे च रेशमी होग ॥ 24 ॥

ते उनेंगी पबित्तर गल्लें पासै रस्ता दरसेआ जाग ते प्रशंसा दे जोग अच्छे कम्मैं दा ढंग सखाया जाग ॥ 25 ॥

(पर) ओह लोक जो काफर न ते अल्लाह दी राह पासै ते अल्लाह दे घरे (काबा) पासै जाने थमां रोकदे¹ न (हालांके ओह अल्लाह दा घर ऐसा ऐ जिसी असें सारे लोकें दी भलाई आस्तै बनाए दा ऐ) उंदे आस्तै बी जो ओहदे च बेहियै अल्लाह दी अबादत करदे न ते उंदे आस्तै बी जो जंगलै च रौंहेदे न ते जेहका आदमी उस च अत्याचार राहें बगाड़ पैदा करना चाहग। अस उसी दर्दनाक अजाब देगे ॥ 26 ॥ (रुकू 3/10)

ते (याद कर) जिसलै असें इब्राहीम गी बैतुल्लाह (काबा)² दे स्थान पर नबास करने दा मौका दित्ता (ते गलाया) जे कुसै चीजै गी सादा शरीक नेई बनाऽ ते भेरे घरे गी तवाफ़

عَمِّ أَعْيَدُوا فِيهَا ۖ وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٢٣﴾

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُجَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٢٤﴾

وَهُدُوا إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۖ وَهُدُوا إِلَى صِرَاطِ الْحَمِيدِ ﴿٢٥﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْبَادِ ۗ وَمَنْ يَرِدْ فِيهِ بِالْحَادِ بِظُلْمٍ نَذَقْهُ مِنْ عَذَابِ الْيَجْرِ ﴿٢٦﴾

وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ أَنْ لَا تُشْرِكْ بِي شَيْئًا وَطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ

1. मूल शब्द अल्-आकिफ़ ते बा'द दा एह अर्थ ऐ जे बैतुल्लाह (काबा) दा द्वार हर इक आदमी आस्तै खु'ल्ला ऐ, चाहे ओह मक्का नबासी होऐ जां मक्का थमां बाहरा, संसार दे कुसै बी हिस्से दा रौंहेने आहला होऐ। एहदे च धनवान, गरीब, पूर्बी-पच्छमी ते काले-गोरे दा कोई भेद-भाव नेई। इक चाकर इक राजा ते मूढे कन्नै मूढा मेलियै नमाज पढ़ी सकदा ऐ।
2. इस आयत च इस्लामी नमाज दा चित्तर खिच्चेआ गेदा ऐ, जेहदे च क्रियाम, रूकू ते सजद: बगैरा कीता जंदा ऐ।

(प्रदक्खन) करने आहलें आस्तै ते खड़ोइयै अबादत करने आहलें आस्तै ते रुकू करने आहलें आस्तै ते सजदा करने आहलें आस्तै, पाक कर ॥ 27 ॥

ते सारे लोकें च अलान करी दे जे ओ हज्ज दी नीत कनै तेरे कश आवा करन, पैदल बी ते ऐसी सुआरी पर बी जेहकी जो लम्मी जातरा कारण पतली होई गेदी होऐ (ऐसी सुआरियां) दूरै-दूरै थमां डूहगे रस्तें थमां होंदे होई औडन ॥ 28 ॥

तां जे ओह (यानी औने आहले) उनें नफें गी दिक्खन जेहके उंदे आस्तै (निश्चत कीते गेदे) न ते किश निश्चत दिनें च उनें नैमतें कारण अल्लाह गी याद करन जेहकियां असें उनें गी दिती दियां न (यानी) बड्डे जानवरें दे रूपै च (जियां ऊंट, गौ बगैरा) इस आस्तै चाही दा ऐ जे ओह उंदा मास खान ते तकलीफ च पेदे ते गरीबें गी खलान ॥ 29 ॥

फो अपनी मैल-कुचैल दूर करन ते अपनी मनौतां पूरियां करन ते पुराने घर (यानी काबा) दा तवाफ़ (प्रदक्खन) करन ॥ 30 ॥

गल्ल एह ऐ, जे जो शख्स अल्लाह दे निश्चत कीते गेदे सम्मानत थाहरें दा आदर करदा ऐ तां एह गल्ल उसदे रब्ब दे लागै ओहदे आस्तै चंगी होंदी ऐ ते हे मोमिनो! थुआड़े आस्तै (सारे) चौखर ल्हाल मन्ने गे न सवाए उंदै जिंदा रूहाम होना कुरआन च दस्सेआ जाई चुके दा ऐ इस लेई चाही दा ऐ जे तुस मूरती-पूजा दे शिकं थमां बचो ॥ 31 ॥

ते (इस्सै चाल्ली) अपनी अबादत ते फरमांबरदारी सिर्फ अल्लाह आस्तै मखसूस

وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿١٧﴾

وَإِذْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَا نُوحُ رَجَا لَا
وَعَلَىٰ كُلِّ صَامِرٍ يَأْتِينَ مِنْ كُلِّ
فَجٍّ عَمِيقٍ ﴿١٨﴾

لِيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ
اللَّهِ فِي أَيَّامٍ مَّعْلُومَةٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ
مِّنْ بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ ﴿١٩﴾ فَكُلُوا مِنْهَا
وَاطْعَمُوا الْبَاطِسَ الْفَقِيرِ ﴿٢٠﴾

ثُمَّ لِيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلِيُؤْتُوا أُذُنَهُمْ
وَلِيُصَوِّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿٢١﴾

ذَلِكَ وَمَنْ يُعْظَمْ حُرْمَتِ اللَّهِ فَهُوَ
خَيْرٌ لَهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۗ وَأُحِلَّتْ لَكُمْ
الْأَنْعَامُ إِلَّا مَا يُشْبِهُ عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا
الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا
قَوْلَ الزُّورِ ﴿٢٢﴾

حُقِّقَاءَ اللَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ ۗ وَمَنْ

करदे होई झूठ बोलने थमां बचो। (ते) तुस खुदा दा शरीक कुसै गी नेई बनाओ ते जेहका अल्लाह दा शरीक कुसै गी बनांदा ऐ ओह गासै थमां डिग्गी जंदा ऐ ते परिदे उसी चुक्कियै लेई जंदे न। ते हवा उसी कुसै दूर-दरेडे थाहर सुट्टी दिंदी ऐ ॥ 32 ॥

सच्च एह ऐ जे जो शख्स अल्लाह दी निश्चत कीती दी नशानियें दी इज्जत करग उस दे (इस कर्म गी) दिलें दा तकवा मन्नेआ जाग ॥ 33 ॥

(याद रक्खो जे) इनें कुरबानियें (जानवरें) थमां इक अरसे तक लाभ हासल करना थुआड़े आस्तै जायज ऐ फी उनेंगी अल्लाह दे पुराने घर (काबा) तक पुजाना जरूरी ऐ ॥ 34 ॥ (रुकू 4/11)

ते असें हर जाति आस्तै बलि देने दा इक ढंग निश्चत कीते दा ऐ तां जे ओह लोक उनें चौखरें पर जो अल्लाह नै उनेंगी प्रदान कीते दे न अल्लाह दा नांS लैन। (इस लेई याद रक्खो जे) थुआड़ा उपास्य इक गै ऐ। इस आस्तै तुस उस्सै दी आज्ञा दा पालन करो ते जो अल्लाह आस्तै नम्मरता प्रकट करने आह्ले न उनेंगी शुभ-समाचार सुनाई दे ॥ 35 ॥

ऐसे लोकें गी जे जिसलै उंदे सामनै अल्लाह दा नांS लैता जा तां उंदे दिल कंबी उठदे न ते उनें लोकें गी बी (शुभ समाचार सुनाई दे) जेहके अपने उप्पर औने आहली बिपतें मौकै बी धीरज धारण करदे न ते नमाज कायम करदे न ते असें जे किश उनेंगी दित्ते दा ऐ (साढ़ी खुशी आस्तै) ओहदे बिच्चा खर्च करदे न ॥ 36 ॥

يُشْرِكُ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخَطَّفَهُ الطَّيْرُ أَوْ تَهْوَى بِهِ الرِّيحُ فِي مَكَانٍ سَحِيقٍ ۝

ذَلِكَ وَمَنْ يُعْظَمْ شَعَائِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوبِ ۝

لَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحْلُهَا إِلَىٰ الْبَيْتِ الْحَتِيقِ ۝

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنَسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ ۗ قَالَ لَهُمْ اللَّهُ وَإِحْدَ فَلَهُ أَسْلِمُوا ۗ وَيَبِيرِ الْمُحْتَبِينَ ۝

الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمُ وَالصَّابِرِينَ عَلَىٰ مَا آصَابَهُمُ وَالْمُقِيمِي الصَّلَاةِ ۗ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۝

ते असें कुरबानी दे ऊंटें गी थुआड़े आस्तै अल्लाह दा सम्मानत नशान बनाए दा ऐ उंदे च थुआड़े आस्तै बौहत भलाई ऐ। इस लेई उनेंगी पंक्तिबद्ध करिये उंदे पर खुदा दा नांऽ लैओ ते जिसलै उंदे पैहलू (धड़) धरती पर लग्गी जान (छहोई जान)तां उंदे (मासै) बिच्चा आपूं बी खाओ ते उनेंगी बी खलाओ जो अपनी गुरबत पर धीरज धारण करी चुके दे न ते उनेंगी बी खलाओ जो अपनी गुरबत कारण परेशान न इससै चाल्ली असें थुआड़े फायदे आस्तै इनें जानवरें गी बनाए दा ऐ तां जे तुस शुकरगज्जार बनो ॥ 37 ॥

(याद रक्खो) इनें कुरबानिये दे मास ते रक्त अल्लाह तक नेई पुजदे, पर थुआड़े दिलै दा तकवा (संयम) अल्लाह तक पुजदा ऐ। (असल च) इस चाल्ली अल्लाह ने इनें कुरबानिये गी थुआड़ी सेवा च लाई रक्खे दा ऐ तां जे तुस अल्लाह दी हदायत दे कारण उस दी बड़ाई दा बर्णन करो ते तूं इस्लाम दे आदेशें गी पूरी चाल्ली अदा करने आहलें गी शुभ समाचार दे ॥ 38 ॥

अल्लाह यकीनन उनें लोकें पासेआ जो ईमान ल्याए न बचाऽ दा समान करदा रौहग। अल्लाह यकीनन हर खयानत करने आहले (ते) इन्कार करने आहले गी पसंद नेई करदा ॥ 39 ॥ (रुकू 5/12)

ओह लोक जिंदे कनै (बिला ब'जा) जंग कीती जा करदी ऐ उनें गी बी (जंग करने दी) अजाजत दिती जंदी ऐ की जे उंदे उप्पर जुलम कीता गेआ ऐ ते अल्लाह उंदी मदद करने दी समर्थ रखदा ऐ ॥ 40 ॥

وَالْبَدَنَ جَعَلْنَاهَا لَكُمْ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ لَكُمْ فِيهَا حَيْرٌ ۗ فَأَذْكُرُوا لِلَّهِ عَلَيْهَا صَوَافٍ ۚ فَإِذَا وَجَبَتْ جُنُوبُهَا فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعَمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ۗ كَذَلِكَ سَخَّرْنَاهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٣٧﴾

كُنْ يَتَّالِ اللَّهُ لِحُومِهَا وَلَا دِمَآؤَهَا وَلَكِنْ يَتَّالِ التَّمْوَى مِنْكُمْ ۗ كَذَلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَى مَا هَدَيْكُمْ ۗ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٨﴾

إِنَّ اللَّهَ يُدْفِعُ عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُورٍ ﴿٣٩﴾

أَذِنَ لِلَّذِينَ يُقْتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظَلَمُوا ۗ وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ ﴿٤٠﴾

(एह ओह लोक न) जिनेंजी उंदे घेँ थमां सिर्फ उंदा इन्ना आखने पर जे अल्लाह साद्धा रब्ब ऐ बगैर कुसै जायज ब'जा दे कड्डेआ गोआ जेकर अल्लाह उंदे (इन्कार करने आहलें) बिच्चा किश लोकें गी दूएँ द्वारा (शगरत कन्ने) नेईं रोकदा तां गिरजे ते यहूदियें दी अबादतगाहीं, ते मस्जिदां जिंदे च अल्लाह दे नांउ दी बड़ी स्तुति होंदी ऐ बरबाद करी दित्ते जंदे ते अल्लाह यकीनन उसदी मदद करग जो उस (दे दीन) दी मदद करग। अल्लाह यकीनन बड़ा ताकतवर (ते) समर्थवान ऐ ॥ 41 ॥

एह (यानी मुहाजर मुसलमान यानी अपना देश छोड़िये आए दे) ओह लोक न जे जेकर अस उनेंजी दुनियां च ताकत प्रदान करचै तां ओह नमाजें गी कायम करडन ते जकातां देडन ते भली गल्लें दा हुकम देडन ते बुरी गल्लें थमां रोकडन। ते हर गल्लै दा अंजाम खुदा दे हत्थै च ऐ ॥ 42 ॥

ते जेकर (एह दुश्मन) तुगी झुठेरेदे न, तां इंदे थमां पैहलें नूह दी कौम नै बी, ते आद ते समूद नै बी ॥ 43 ॥

ते इब्राहीम दी कौम नै बी ते लूत दी जाति नै बी ॥ 44 ॥

ते मद्दन आहलें बी (अपने-अपने समे दे नबियें गी) झुठेरेआ हा ते मूसा गी बी झुठेरेआ गोआ हा। इस लेईं मैं इन्कार करने आहलें गी किश ढिल्ल दित्ती, फी उनेंजी पकड़ी लैता। इस लेईं मेरा इन्कार करना कैसा भयानक सिद्ध होआ ॥ 45 ॥

ते किन्नी गै बस्तियां न जिनेंजी असें इस दशा च नश्ट कीता हा जे ओह अत्याचार करा

الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا أَنْ يَقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَفَسَدَتِ الصَّوَامِعُ وَبِيْعٌ وَصَلَوَاتٌ وَمَسْجِدٌ يُذَكِّرُ فِيهَا اسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا ۗ وَلَيُنْصِرَنَّ اللَّهُ مَن يَنصُرُهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٤١﴾

الَّذِينَ إِنَّ مَكَّتَهُمْ فِي الْأَرْضِ
أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَآمَرُوا
بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۗ
وَلِلَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ﴿٤٢﴾

وَإِنْ يَكْذِبُواكَ فَكُذِّبَتْ قَبْلَهُمْ
قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَثَمُودٌ ﴿٤٣﴾
وَقَوْمُ إِبْرَاهِيمَ وَقَوْمُ لُوطٍ ﴿٤٤﴾

وَأَصْحَابُ مَدْيَنَ ۗ وَكَذَّبَ مُوسَى
فَأَمَلَيْتَ لِلْكَافِرِينَ ۗ ثُمَّ أَخَذْتَهُمْ
فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٥﴾

فَكَأَيُّنَ مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا وَهِيَ

दियां हियां ओह अज्ज अपनी छतें उप्पर डिग्गी दियां पेदियां न ते किन्ने गै खूह न जेहके बेकार होई चुके दे न ते किन्ने गै उच्चे-उच्चे किले न जो नश्ट होई चुके दे न ॥ 46 ॥

क्या ओह धरती उप्पर चली-फिरिये नेई दिखदे तां जे उनेंगी ऐसे दिल मिली जान जो (इनें गल्लें गी) समझने आहले होन जां कन्न थहोई जान जो (इनें गल्लें गी) सुनने आहले होन। की जे सच्ची गल्ल एह ऐ जे दिक्खने आहली (जाहरी) अक्खीं अ'नियां नेई होंदियां बल्के दिल अ'ने होंदे न, जो सीनै च होंदे न ॥ 47 ॥

एह लोक अजाब मंगने च काहल करदे न। ते अल्लाह कदें अपना बा'यदा झूठा नेई करदा ते (कोई) कोई दिन अल्लाह दा थुआड़ी गिनती दे ज्हार बरिं दे बरोबर होंदा ऐ ॥ 48 ॥

ते किन्नी गै बस्तियां न जिनेंगी (पैहलें ते) मैं ढिल्ल दित्ती हालांके ओह अत्याचार करा दियां हियां। फी मैं उनेंगी पकड़ी लैता ते मेरी गै बक्खी सारें परतिये औना ऐ ॥ 49 ॥ (रुकू 6/13)

तूं आखी दे, हे लोको! अऊं थुआड़े कश सिर्फ इक हुशयार करने आहले दी हैसियत कनै आए दा आं ॥ 50 ॥

इस लेई जो ईमान ल्यौडन ते उसदे (ईमान दे) मताबक कर्म बी करडन, उनेंगी (अल्लाह पासेआ) खिमा ते इज्जत आहली रोजी मिलग ॥ 51 ॥

ते ओह लोक जिनें साढ़े नशानें बारै (इस मन्शा कनै) प्रयल कीता जे (ओह असेंगी)

ظَالِمَةٌ فِيهَا خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا وَيَبُرُّ
مُعْطَلَةٌ وَقَصْرِ مَشِيدٍ ﴿٤٦﴾

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَتَكُونُ لَهُمْ
قُلُوبٌ يَعْقِلُونَ بِهَا أَوْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ
بِهَا ۚ فَلَيْسَ لَهَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلَكِنْ
تَتَعَمَّى الْقُلُوبُ الَّتِي فِي الصُّدُورِ ﴿٤٧﴾

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُخْلِفَ
اللَّهُ وَعْدَهُ ۗ وَإِنْ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَأَلْفِ
سَنَةٍ وَمِمَّا تَعُدُّونَ ﴿٤٨﴾

وَكَأَيُّنَ مِنْ قَرْيَةٍ أَمَلَيْتُ لَهَا وَهِيَ
ظَالِمَةٌ ثُمَّ أَخَذْنَا إِلَيْهَا مِنَ الْمَصِيرِ ﴿٤٩﴾

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا لَكُمْ
نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٥٠﴾

فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ
مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٥١﴾

وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُجْرِبِينَ أُولَٰئِكَ

असमर्थ बनाई देन, ओह लोक नरकै च पौने
आहले न ॥ 52 ॥

أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝

ते असें तेरे थमां पैहलें¹ नां कोई रसूल भेजेआ,
नां गै नबी, पर जिसलै बी उसने कोई इच्छा²
कीती तां शतान नै उसदी इच्छा दे रस्ते च रोड़े
अटकाए। फी अल्लाह उसगी जो शतान पांदा
ऐ मटाई दिंदा ऐ ते जेहके उसदे अपने चमत्कार
होंदे न उनेंगी पक्का करी दिंदा ऐ ते अल्लाह
बड़ा जानने आहला ते हिक्मत आहला ऐ
॥ 53 ॥

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ وَلَا
نَبِيٍّ إِلَّا إِذَا تَمَنَّى أَلْقَى الشَّيْطَانُ فِي
أُمْنِيَّتِهِ ۚ فَيَنسُخُ اللَّهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ
ثُمَّ يُحْكِمُ اللَّهُ آيَتَهُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
حَكِيمٌ ۝

नतीजा एह होंदा ऐ जे जो मुश्कलां शतान
पांदा (खडेरदा) ऐ ओह उनें लोकें आस्तै
ठोकर दा कारण बनी जंदिंयां न जिंदे दिलें च
बमारी होंदी ऐ ते जिंदे दिल सख्ख होंदे न ते
अत्याचारी लोक (हर खुदाई गल्लै दा) सख्ख
बरोध करने पर तुले दे रौहदे न ॥ 54 ॥

لِيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ فِتْنَةً
لِلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ
وَالْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ
لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ۝

ते (एह सब किश इस आस्तै होंदा ऐ) तां जे
ओह लोक जेहके सूझ-बूझ आहले होंदे न
समझी लैन जे ओह (यानी कुरआन) तेरे रब्ब
पासेआ कामल सचाई ऐ ते ओह उस पर
ईमान लेई औन ते उंदे दिल उसदे अगमें झुकी
जान ते अल्लाह मोमिनें गी जरूर सिद्धे रस्ते
पासै हदायत देने आहला ऐ ॥ 55 ॥

وَلْيَعْلَمَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ
رَبِّكَ فَيُؤْمِنُوا بِهِ فَتُخْبِتَ لَهُ قُلُوبُهُمْ ۗ
وَإِنَّ اللَّهَ لَهُ الْهَادِ الَّذِينَ آمَنُوا إِلَى
صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

ते काफर उस (कुरआन) बारै उस बेलै तगर
जे (तबाही दी) घड़ी अचानक आई जा जां
उंदे कश उस दिनै दा अजाब आई जा जो

وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مَرِيَّةٍ مِنْهُ
حَتَّى تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ

1. इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे नबी योजनां बनांदे न ते शतान उनेंगी मटाना चांहदे न पर अल्लाह नबियें दी योजनां गी सफल बनांदा ऐ शतान असफल रेही जंदा ऐ। एह ब्यहार हर नबी कनै होआ ते सारें शा बड़दा साढ़े नबी हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. कनै होआ, जो सारे नबियें दे शिरोमणि हे।
2. मूल शब्द 'उम्नियतुन' दा अर्थ इच्छा दे सिवा इरादा बी होंदा ऐ। (ताज) मतलब एह ऐ जे हर नबी संसार दे सुधार दा इरादा करदा ऐ, पर शतान हर इक नबी दे रस्ते च ते उसदी इच्छा दे पूरा होने दे रस्ते च बिघन पांदा ऐ।

अपने पिच्छें किश निं रौहन दिंदा, शक्क च पेदे रौहडन ॥ 56 ॥

عَذَابٌ يَوْمٍ عَقِيمٍ ﴿٥٦﴾

उस दिन सारी बादशाहत (कहूमत) अल्लाह दी गै होग, ओह उंदे बशकर फैसला करग। इस लेई मोमिन जो ईमान दे मताबक कर्म बी करदे होडन। ओह नैमत आहली जन्नतें च बास करडन ॥ 57 ॥

أَمَلْتُ يَوْمَئِذٍ لَّيْسَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ط
فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي ط
جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٥٧﴾

ते काफर ते साढ़ी आयतें गी झुटेरने आहले ते ओह लोक न जिंदे आस्तै जिल्लत दा अजाब (निश्चत) ऐ ॥ 58 ॥ (रुकू 7/14)

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأُولَٰئِكَ ط
لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٥٨﴾

ते ओह लोक जो अल्लाह दे रस्ते च हिजरत करदे न, फी मरोई जंदे न जां सधारण मौत मरी जंदे न। अल्लाह उनें गी अति उत्तम इनाम देग ते अल्लाह इनाम बख्शने आहलें च सारें थमां अच्छा ऐ ॥ 59 ॥

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قُتِلُوا ط
أَوْ مَاتُوا لَيَرْزُقْنَهُمُ اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا ط
وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ الرَّزُقِينَ ﴿٥٩﴾

ओह जरूर उनेंगी ऐसी ज'गा दाखल करग। जिसे ओह पसंद करडन ते अल्लाह बौहत जानने आहला (ते) बौहत समझ रखने आहला ऐ ॥ 60 ॥

لَيَدْخُلْنَهُمْ مُّدْخَلًا يَرْضَوْنَ ط
وَإِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿٦٠﴾

एह गल्ल इसै चाल्ली ऐ जे जेहका शख्स उन्नी गै स'जा देऐ जिन्नी उसी तकलीफ दिती गेई ही मगर बाबजूद इस दे (उसदा दुश्मन) उल्टा उस पर चढ़ी आवै तां अल्लाह जरूर उसदी मदद करग। अल्लाह यकीनन बौहत माफ करने आहला (ते) बौहत बख्शने आहला ऐ ॥ 61 ॥

ذَٰلِكَ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ بِهِ ط
تُحِبُّ بِنِحَىٰ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَهُ اللَّهُ ط
وَإِنَّ اللَّهَ لَعَفُوفٌ عَفُورٌ ﴿٦١﴾

एह (स'जा ते जज्जा दा सिलसला) इस लेई (चलदा) ऐ जे साबत होई जा जे अल्लाह रातीं गी दिनै च दाखल करी दिंदा ऐ ते दिनै गी रातीं च दाखल करी दिंदा ऐ। ते अल्लाह

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ ط
النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٦٢﴾

यकीनन (दुआमां) सुनने आहला (ते हालात) दिक्खने आहला ऐ ॥ 62 ॥

एह (दुआमां) सुनना ते हालात दी जानकारी रख्खना) इस लेई ऐ जे अल्लाह अपनी सत्ता च कायम ऐ ते दूए पदार्थ गी बी कायम रख्खदा ऐ ते इस लेई जे जिस चीजा गी ओह् अल्लाह दे सिवा पुकारदे न ओह् तबाह् होने आहली ऐ ते इस आस्तै जे अल्लाह गै सारें थमां उप्पर ऐ ते सारें शा बड्डा ऐ ॥ 63 ॥

क्या तोह दिक्खेआ नेई जे अल्लाह नै गासै थमां पानी उतारेआ ऐ। जेहदे कनै धरती सैलम-सैली होई जंदी ऐ। अल्लाह यकीनन (अपने बंदें कनै) मेहर आहला सलूक करने आहला ऐ ते (उंदे हालातें थमां) बौहत बा-खबर ऐ ॥ 64 ॥

जो कुछ गासैं च ऐ ते जो कुछ धरती च ऐ ओह् सब उसदा ऐ ते अल्लाह यकीनन अपने सिवा सारे वजूदें दी मदद थमां बे-न्याज ते तरीफें दा मालक ऐ ॥ 65 ॥ (रुकू 8/15)

क्या तोह नेई दिक्खेआ जे जो कुछ बी धरती च ऐ अल्लाह नै उसी थुआड़ी सेवा च बिना उज्जत लाई रख्खे दा ऐ ते किरितयां बी समुंदर च ओहदे हुकम कनै चलदियां न ते उसनै गासैं' गी रोकी रख्खे दा ऐ जे कुदै धरती पर उसदे हुकम बगैर डिग्गी नेई पवै अल्लाह यकीनन लोकें पर किरपा करने आहला ते बार-बार देआ करने आहला ऐ ॥ 66 ॥

ते ऊरे ऐ जिसनै तुसेंगी जीदा कीता। फी तुसेंगी मारग फी तुसेंगी जीदा करग। इन्सान यकीनन बड़ा ना-शुकरा ऐ ॥ 67 ॥

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ اَبْطٰلٌ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٦٢﴾

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۙ فَصَبَّحَ الْاَرْضَ مُخْضَرَّةً ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿٦٣﴾

لَهُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٦٤﴾

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ وَاَلْتَمَكَّتْ تَجْرِيْ فِى الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۗ وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلٰى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۗ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٥﴾

وَهُوَ الَّذِىْ اَحْيَاكُمْ اِذَا كُمْ مَيِّتًا ثُمَّ يَمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَحْيِيْكُمْ ۗ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ﴿٦٦﴾

1. यानी अज्ञाब आस्तै बंदशां लाई दित्ती दियां न जे उसदे खास हुकमै बगैर दुनिया पर अज्ञाब नेई आवै।

असैं हर संप्रदाय (मत) आस्तै अबादत दा इक तरीका निश्चत कीते दा ऐ जिसदे मलाबक ओह चलदे न इस लेई इस तरीके (यानी इस्लाम) बाँरे ओह तेरे कन्नै बैहस नेई करन (की जे एह खुदा दा निश्चत कीते दा ऐ) ते तू (उनेंगी) अपने रब्ब पासै बुला की जे तू सिद्धे रस्ते पर ऐ ॥ 68 ॥

ते अगर ओह तेरे कन्नै बैहस करन तां आखी दे जे अल्लाह थुआड़े कर्म थमां भलेआं बाकफ ऐ ॥ 69 ॥

अल्लाह (मेरे ते थुआड़े बशकार) क्यामत आहलै रोज उनें गल्लें दा फैसला करग जिंदे बाँरे तुस इखत्लाफ (मत-भेद) रखदे ओ ॥ 70 ॥

(हे मुहम्मद रसूल अल्लाह!) क्या तुगी पता नेई जे अल्लाह हर चीजै गी जो गास ते धरती च ऐ जानदा ऐ। एह सब किश इक कताबा च लिखे दा मजूद ऐ ते इस चाल्ली (कुसै कनून गी सुरक्षत) करी देना अल्लाह आस्तै असान ऐ ॥ 71 ॥

ते ओह लोक अल्लाह दे सिवा उनें चीजें दी अबादत करदे न जिंदे आस्तै उसनै कोई दलील नेई उतारी ते जिंदे बाँरे उनेंगी किसै किसम दा कोई इलम हासल नेई ते जालमें दा कोई मददगार नेई होग ॥ 72 ॥

ते जिसलै उंदे सामनै साढ़ी खु'ल्ली-खु'ल्ली आयतां पढ़ियां जंदिंयां न तां तू इन्कार करने आहले लोकें दे चेहरें पर (साफ-साफ) ना-पसंदी (दे चि'न) दिक्खना ऐं। इयां सेही होंदा ऐ जे ओह उनें लोकें पर हमला करी देडन, जेहके उनेंगी साढ़ी आयतां पढ़ियै सुनाऽ

رِكْلِ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ
فَلَا يَتَاذَعُكَ فِي الْأَمْرِ وَادْعُ إِلَى
رَبِّكَ ۗ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى مُّسْتَقِيمٍ ﴿٦٨﴾

وَأَنْ جَدُّوكَ فَقَلَّ اللَّهُ أَعْلَمَ بِمَا
تَعْمَلُونَ ﴿٦٩﴾

اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا
كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٧٠﴾

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ
وَالْأَرْضِ ۗ إِنَّ ذَلِكَ فِي كِتَابٍ ۗ إِنَّ ذَلِكَ
عَلَىٰ اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧١﴾

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يَنْزِلْ بِهِ
سُطْرًا ۗ وَمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهِ عِلْمٌ ۗ وَمَا
لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ ﴿٧٢﴾

وَإِذْ تَتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ نَعْرِفُ فِي
وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ۗ يَكَادُّونَ
يَسْطُورًا بِالَّذِينَ يَسْتَوُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا

करदे होंदे न। तू आखी दे जे क्या अऊं तुसें गी इस दशा थमां बी बद्ध इक बुरी दशा दी सूचना देआं? ते ओह ऐ नरकै च पौना। अल्लाह नै उसदी प्रतिज्ञा इन्कार करने आहले लोकें कनै कीती दी ऐ ते ओह बुरा ठकाना ऐ ॥ 73 ॥ (रुकू 9/16)

हे लोको! इक गल्ल तुसेंगी दस्सी जंदी ऐ तुस उसी गौर कनै सुनो! तुस जिनेंगी अल्लाह दे सिवा पुकारदे ओ। ओह इक मक्खी बी पैदा नेई करी सकडन भामें सारे दे सारे किट्टे होई जान, ते जेकर इक मक्खी उंदे सामने कोई चीज चुक्कियै लेई जा तां ओह उसी उंदे थमां छड़काई नेई सकदे। एह दुआमां मंगने आहला (बी) ते जेहदे थमां दुआमां मंगियां जंदियां न (ओह बी) किने कमजोर न ॥ 74 ॥

उनें लोकें अल्लाह (दियें सिफतें) दा ठीक चाल्ली अंदाजा नेई लाया। अल्लाह ते यकीनन बड़ी ताकत आहला ते बड़ा गालब (प्रभुत्वशाली) ऐ ॥ 75 ॥

अल्लाह फरिश्तें बिच्चा अपने रसूल चुनदा ऐ ते (इस्सै चाल्ली) इन्सानें बिच्चा (बी) अल्लाह बौहत (दुआमां) सुनने आहला ते (हालात गी) बौहत दिक्खने आहला ऐ ॥ 76 ॥

जो कुछ उंदे सामनै ऐ उसी बी ओह जानदा ऐ ते जो कुछ ओह पिच्छें करी आए दे न उसी बी जानदा ऐ ते सारे मामले (कम्म) उससै आहले पासै परताए जंदे न ॥ 77 ॥

हे मोमिनो! रुकू करो, सजदा करो, ते अपने रब्ब दी अबादत करो ते नेक कम्म करो तां जे तुस अपने मकसद गी पाई (हासल करी) सको ॥ 78 ॥

قُلْ أَقَاتِبْتُكُمْ بِشِرِّ مَنِ ذُرِكُمْ ۖ النَّارُ ۖ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۗ

يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاستَمِعُوا لَهُ ۗ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوْ اجْتَمَعُوا لَهُ ۗ وَإِنْ يَسْأَلُهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَا يَسْتَفِيدُوهُ مِنْهُ ۗ ضَعُفَ الظَّالِمُ وَالْمَطْلُوبُ ۗ

مَا قَدَّرَ وَاللَّهُ حَقَّ قَدْرِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ۗ

اللَّهُ يَصْطَفِي مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ النَّاسِ ۗ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۗ

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۗ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا وَاعْبُدُوا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۗ

ते अल्लाह दे रस्ते च ऐसी कोशश करो जो मकम्मल होऐ, की जे उससै नै तुसेंगी गौरव प्रदान कीते दा ऐ ते धर्म (दी तलीम) च थुआड़े पर कोई तंगी दा पैहलू अखत्यार नेई कीता। (हे मोमिनो!) अपने पिता इब्राहीम दे धर्म (दीन) गी (अखत्यार करो की जे) अल्लाह नै थुआड़ा नांऽ मुसलमान रक्खे दा ऐ। इस कताबा च बी ते इस शा पैहली कताबें च बी, तां जे रसूल तुंदे पर गुआह् होऐ ते तुस बाकी दुनियां पर गुआह् र'वो ते नमाज गी कायम करो, ते जकात देओ ते अल्लाह गी मजबूती कनै पकड़ी लैओ। ओह थुआड़ा आक्रा (सुआमी) ऐ। इस आस्तै ओह किन्ना गै चंगा सुआमी ऐ ते किन्ना गै चंगा मददगार ऐ ॥ 79 ॥ (रुकू 10/17)

وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ ۗ هُوَ
اجْتَبَاكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ
مِنْ حَرَجٍ ۗ مِلَّةَ أَبِيكُمْ إِبْرَاهِيمَ ۗ هُوَ
سَمَّكُمْ الْمُسْلِمِينَ ۗ مِنْ قَبْلُ وَفِي هَذَا
لِيَكُونَ الرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ
وَتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ ۚ فَأَقِيمُوا
الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاعْتَصِمُوا
بِاللَّهِ ۗ هُوَ مَوْلَاكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلَىٰ
وَنِعْمَ النَّصِيرُ ﴿٧٩﴾

سُورَةُ الْمُؤْمِنُونَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ مِائَةٌ وَتِسْعَ عَشْرَةَ آيَةً وَسِتَّةٌ وَرُكُوعَاتٌ

सूर: अल्-मोमिनून

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां इक सौ उन्नी आयतां ते छे रुकू न ।

मैं अल्लाह दा नांस लेइयै (पढ़ना) जो बे-
हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

कामिल मोमिनैं अपने उद्देश गी पाई लैता
॥ 2 ॥

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ①

ओह (मोमिन) जो अपनी नमाजें च नमरता
दा ढंग अखत्यार करदे न ॥ 3 ॥

وَالَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خُشِعُونَ ①

ते जेहके ब्यर्थ गल्लैं थमां बचदे न ॥ 4 ॥

وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُونَ ①

ते जेहके बा-कायदा जकात दिंदे न ॥ 5 ॥

وَالَّذِينَ هُمْ لِلزَّكَاةِ فَاعِلُونَ ①

ते जेहके अपने शर्मगाहें (गुप्त अंगें) दी रक्षा
करदे न ॥ 6 ॥

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَفْئُوتِهِمْ حَافِظُونَ ①

सिवाए अपनी बीबियें (लाड़ियें) दे जां जिंदे
मालक उंदे सज्जे¹ हत्थ होए दे न । इस आस्तै
ऐसे लोकें दी कुसै चाल्ली दी कोई निंदेआ
नेई कीती जाग ॥ 7 ॥

إِلَّا عَلَىٰ أَرْوَاحِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ

أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ①

ते जेहके लोक इसदे सिवा कुसै होर गल्लै दी
इच्छा करन तां ओह लोक ज्यादाती करने
आहले होडन ॥ 8 ॥

فَمَنِ ابْتغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ

الْعَادُونَ ①

1. अर्थात् तुसैं लड़ाई दे बा'द जिनैं जनानियें पर अधिकार पाई लेदा होऐ। फी नां ते ओह आपू अजाद होइयां
होन ते नां दूए लोकें उनेंगी अजाद कराया होऐ अर्थात् थुआड़े अधिकार च आई दियां जनानियां।

ते ओह लोक (अर्थात कामिल मोमिन) जो अपनी अमानतें ते अपनी प्रतिज्ञें दा ख्याल रखदे न ॥ 9 ॥

ते जेहके लोक अपनी नमाजें दी पहाजत करदे रौहदे न ॥ 10 ॥

इयै लोक असल बारस न ॥ 11 ॥

जेहके फ़िरदौस (उप्परले सुर्ग) दे बारस होडन ओह ओहदे च म्हेशां आस्तै रौहडन ॥ 12 ॥

ते असें मनुक्खें गी गिल्ली मिट्टी दे सत कनै बनाया ॥ 13 ॥

पही उसी इक ठैहरने आहली ज'गा च बीरज दे रूपै च रक्खेआ ॥ 14 ॥

फी बीरज गी तरक्की देइयै ऐसा रूप प्रदान कीता ते ओह चमकने आहला इक पदार्थ बनी गेआ, फी उस चिमटने आहले पदार्थ गी मासै दी इक बोटी बनाई दिता, फी असें इस दे बा'द उस बोटी गी हड्डियें दे रूपै च बदली दिता, फी असें उनें हड्डियै उप्पर मास चाढ़ेआ। फी उसी इक होर रूपै¹ च बदली दिता। इस आस्तै बड़ी गै बरकत आहला ऐ ओह खुदा जो सारें शा अच्छा पैदा करने आहला ऐ ॥ 15 ॥

फी तुस लोक इसदे बा'द मरने आहले ओ ॥ 16 ॥

फी तुस क्यामत आहलै रोज दुआले जाने आहले ओ ॥ 17 ॥

ते असें थुआड़े उप्पर (दे दर्जे आस्तै) सत (रुहानी) रस्ते बनाए न। ते अस (अपनी) मख्लूक थमां गाफ़िल नेई रेह ॥ 18 ॥

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رِعُونَ ﴿٩﴾

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَوَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿١٠﴾

أُولَٰئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ ﴿١١﴾

الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٢﴾

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِنْ سُلَالَةٍ مِّنْ طِينٍ ﴿١٣﴾

ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نَظْمَةً فِي قُرَارٍ مَّكِينٍ ﴿١٤﴾

ثُمَّ خَلَقْنَا النَّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَاقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظْمًا فَكَسْنَا الْعِظْمَ لَحْمًا ثُمَّ أَنشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ ۗ فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ﴿١٥﴾

ثُمَّ إِنَّكُمْ بَعْدَ ذَلِكَ لَمَيِّتُونَ ﴿١٦﴾

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تُبْعَثُونَ ﴿١٧﴾

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقَ ۗ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غَافِلِينَ ﴿١٨﴾

1. अर्थात् इन्सानो बजुद मकम्मल करी दिता।

ते असें गासै थमां इक अंदाजे मताबक पानी उतारेआ ऐ! फी उसी धरती च रोकी (उरहाई) दिता ऐ ते अस उसी चुक्की लैने दी शक्ति बी रक्खने आं ॥ 19 ॥

फी असें थुआड़े आस्तै ओहदे थमां खजूरें ते अंगूरें दे बाग बनाए। उंदे च थुआड़े आस्तै मते-सारे फल (पैदा कीते दे) न ते उंदे चा तुस खंदे ओ ॥ 20 ॥

ते (असें थुआड़े आस्तै) ओह पेड़¹ (बूहटा) बी (उगाए दा ऐ) जो तूरे-सीना (सीना नांउ दा ढाड़) थमां निकलदा ऐ जो अपने अंदर तेल लेइयै उगदा ऐ ते खाने आहलें आस्तै सालन (सलूना) लेइयै बी ॥ 21 ॥

ते थुआड़े आस्तै चपाएं च बड़ी शिक्षा (दा समान) ऐ। अस तुसें गी उस चीजा कनै जो उंदे ढिड्डें च होंदी ऐ पलाने आं ते उनें चौखरें च थुआड़े आस्तै होर बी नेकां फायदे न ते तुस उंदे बिच्चा केइयें गी खंदे बी ओ ॥ 22 ॥

ते तुस उंदे पर ते किशितयें उप्पर सुआर करए जंदे ओ ॥ 23 ॥ (स्कू 1/1)

ते असें नूह गी उसदी कौम दे लोकें पासै भेजेआ। उसनै आखेआ जे हे मेरी कौम दे लोको ! अल्लाह दी अबादत करो। उस दे अलावा थुआड़ा होर कोई उपास्य नेई। क्या तुस ओहदे आस्तै संयम धारण नेई करदे ॥ 24 ॥

इस पर उसदी जाति बिच्चा इन्कार करने आहलें दे सरदारें आखेआ जे एह बंदा ते

وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَسْكَنَتْهُ
فِي الْأَرْضِ ۗ وَإِنَّا عَلَىٰ ذَهَابٍ بِهِ
لَقَدِيرُونَ ﴿١٩﴾

فَأَنْشَأْنَا لَكُمْ بِهِ جَنَّتٍ مِّنْ تُخَيْلٍ
وَأَعْتَابٍ لَّكُمْ فِيهَا فَاوَاكِهِ كَثِيرَةٌ ۗ
وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٢٠﴾

وَشَجَرَةٍ تَخْرُجُ مِنْ طُورِ سَيْنَاءَ
تُثَبِّتُ بِالذَّهْنِ وَصَبِغٍ لِللَّاكِلِينَ ﴿٢١﴾

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۗ نُسْقِيكُمْ
مِمَّا فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ
كَثِيرَةٌ ۗ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٢٢﴾

وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٢٣﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ
يُقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنِّ الْإِغْيَرَةِ ۗ
أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٢٤﴾

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ

1. इत्थें जैतून दे बूहटे दा बर्णन ऐ जेहदे चा तेल निकलदा ऐ ते ओह तेल खाने च बी बरतेआ जंदा ऐ।

सिर्फ थुआड़े जनेहा इक बंदा ऐ जो चांहदा ऐ जे थुआड़े उप्पर प्रधानता अखत्यार करै। जेकर अल्लाह पैगंबर भेजना चांहदा तां फरिश्तें गी उतारदा। असें अपने पैहले बब्ब-दादें च ते इस चाल्ली दी कोई गल्ल होंदी नेई सुनी ॥ 25 ॥

एह ते सिर्फ इक आदमी ऐ जिसी जनून (उन्माद) होई गेदा ऐ। इस आस्तै किश समें तक इसदे नतीजे दा इंतजार करो ॥ 26 ॥

(उस पर नूह नै) आखेआ जे हे मेरे रब्ब! मेरी मदद कर, की जे एह लोक मिगी झुठेरा करदे न ॥ 27 ॥

इस आस्तै असें ओहदे पासै वह्मी कीती जे (असें तुगी जिस) किशती (दे बनाने दा हुकम दिते दा ऐ उस) गी साढ़ी अक्खीं सामनै ते साढ़ी वह्मी दे मताबक बनाऽ। इस आस्तै जिसलै साढ़ा (अजाब दा) हुकम आई जा ते धरती दा चश्मा फुट्टी पवै तां उस किशती च सारे जानवरें दा इक-इक जोड़ा (जिसदा अस हुकम देचै) रक्खी लै ते अपने परिवार दे लोकें गी बी सुआर करी दे सिवाए उंदै जिंदे बरुद्ध साढ़ा हुकम पैहलें थमां उतरी चुके दा ऐ ते जिनें जुलम कीते दा ऐ उंदे बारै मेरे कनै कोई गल्ल नेई कर, की जे ओह ते जरूर गरक कीते जाडन ॥ 28 ॥

इस आस्तै जिसलै तूं ते तेरे साथी किशती च चंगी चाल्ली बेही जाओ तां तुंदे चा हर इक एह आखे जे सारी स्तुतियें दा हकदार अल्लाह नै ऐ जिसनै असें गी जालम लोकें थमां छुटकारा दुआया ॥ 29 ॥

ते (किशती उप्परा उतरदे मौकै) आख जे हे मेरे रब्ब! तूं मिगी (इस किशती थमां) ऐसी हालत

مَا هَذَا إِلَّا بَشْرٌ مِّثْلُكُمْ لَا يُرِيدُ أَنْ يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً مَّا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي آبَائِنَا الْأُولَى ۝

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جِنَّةٌ فُتَرَ بِبَصْوَاهِ حَتَّىٰ حِينٍ ۝

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ۝

فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنْ اضْمَعْ الْقُلُوبَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحَيْنَا فِإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُورُ ۚ فَاسْأَلْ فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ اثْنَتَيْنِ وَأَهْلَكَ الْأَمْنَ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۖ وَلَا تَخَاطَبُنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۗ إِنَّهُمْ مُّعْرِضُونَ ۝

فَإِذَا السَّوَابُاتُ أَنْتَ وَمَنْ مَعَكَ عَلَى الْقُلُوبِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي نَجَّيْنَا مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

وَقُلِ رَبِّ أَنْزِلْنِي مُنْزَلًا مُّبْرَكًا وَأَنْتَ

च तुआर जे मेरे उप्पर मती-सारी बरकतां उतरा करदियां होन ते (मिगी इस दुआऽ दी बी केह जरूरत ऐ जिसलै जे) सारे उतारने आहलें कशा तेरा वजूद बेहतर ऐ ॥ 30 ॥

एहदे च मते-सारे नशान न ते अस यकीनन बंदें दा इम्तिहान लैने आहले आं ॥ 31 ॥

फी असें उंदे बा'द केई कौमां पैदा कीतियां ॥ 32 ॥

ते असें उंदे च उंदे बिच्चा (एह संदेश दिंदे होई) रसूल भेजेआ जे अल्लाह दी अबादत करो। उस दे सिवा थुआड़ा कोई दूआ उपास्य नेई। क्या तुस उस दे राहें अपने आप गी हलाकत थमां बचांदे नेई ॥ 33 ॥

(रुकू 2/2)

ते उस (नमें रसूल) दी जाति बिच्चा जिनें इन्कार कीता हा ते मरने परैत अल्लाह कनै मिलने दा बी इन्कार कीता हा ते जिनेंगी असें इस लोक च मालदार बनाया उंदे सरदारें आखेआ जे एह तां थुआड़े आंगर इक मनुक्ख ऐ। उंदे (पदार्थ) बिच्चा खंदा ऐ जो तुस खंदे ओ ते उंदे (पानियें) बिच्चा पींदा ऐ जो तुस पींदे ओ ॥ 34 ॥

ते जेकर तुस अपनै जनेह बंदे दी गल्ल मनगे ओ तां तुस खसारे च रौहने आहलें बिच्चा होई जागे ओ ॥ 35 ॥

क्या ओह थुआड़े कनै एह बा'यदा करदा ऐ जे जिसलै तुस मरी जागे ओ ते मिट्टी होई जागे ओ ते हड्डियां बनी जागे ओ तां तुस (दबारा जींदे करियै) कड्ढे जागे ओ ॥ 36 ॥

خَيْرَ الْمُنْزِلِينَ ۝

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ وَإِن كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ۝

كَمْ أَنشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ۝

فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ أَنِ اعْبُدُوا
اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ أَفَلَا
تَتَّقُونَ ۝

وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا
وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا الْآخِرَةِ وَأَتْرَفْنَاهُمْ
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ
مِثْلُكُمْ لَا يَأْكُلُ مِمَّا تَأْكُلُونَ مِنْهُ
وَيَشْرَبُ مِمَّا شَرَبْتُمْ ۝

وَلَيْنَ أَطْعَمْتُمْ بَشَرًا مِثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذًا
لَخَسِرُونَ ۝

أَيُّدِكُمْ أَنْتُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا
وَءَعْظَامًا أَنْتُمْ مَخْرُجُونَ ۝

जिस गल्ला दा तुंदे कन्नै बा'यदा कीता जंदा
ऐ ओह बुद्धि (समझदारी) थमां मता गै दूर
ऐ ते ओह मन्नै काबल गल्ल नेई ऐ ॥ 37 ॥

साढ़ा जीवन ते सिर्फ इससै दुनियां दा जीवन
ऐ। कदें ते अस मुर्दा हालत च होने आं ते
कदें जींदी हालत च ते अस मरने दे बा'द
दबारा कदें बी तुआले नेई जागे ॥ 38 ॥

एह ते सिर्फ इक इक्कला आदमी ऐ जो
अल्लाह पर झूठ घड़दा ऐ ते अस इस (दियें
गल्लें) गी कदें नेई मनगे ॥ 39 ॥

इस पर उसनै गलाया जे हे मेरे रबब! इनें
लोकें मिगी झुठेरी दिता ऐ। इस लेई तूं मेरी
मदद कर ॥ 40 ॥

(उसलै खुदा नै) फरमाया-एह लोक थोड़े गै
चिरे च शरमिंदा होई जाडन ॥ 41 ॥

ते उनेंगी इक अजाब नै पकड़ी लैता जेहदे
बाँरे पक्की खबर दिती गेदी ही ते असें उनेंगी
कूड़ा-करकट बनाई दिता (ते फरिशतें गी हुकम
दिता जे) जालमें आसतै खुदा दी फटकार (तै
करी देओ) ॥ 42 ॥

फी उंदे बा'द असें केई जातियां होर पैदा
कीतियां ॥ 43 ॥

कोई कौम अपने समे थमां अगें नेई बधदी
ते नां उस समे थमां पिच्छें रेही (बची)
सकदी ऐ ॥ 44 ॥

फी असें लगातार अपने रसूल भेजे। जदूं कुसै
कौम कश उसदा रसूल औंदा हा तां ओह
उसी झुठेरेदे हे। इस आसतै अस उंदे बिच्चा
गै किश लोकें गी किश दूर लोकें दे पिच्छें
भेजदे जंदे हे (यानी उंदा सर्वनाश करदे जंदे
हे) ते असें उनें सारें गी बीते समे दियां

هَيَّاهَاتْ هَيَّاهَاتْ لِمَا تُوْعَدُونَ ﴿٣٧﴾

إِنَّ هِيَ إِلَّا حَيَاتُ الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا
وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿٣٨﴾

إِنَّ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
وَمَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٣٩﴾

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونَ ﴿٤٠﴾

قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ لِيُصْبِحُنَّ نَادِمِينَ ﴿٤١﴾

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنَهُمْ
غُثَاءً ۗ فَبَعْدَ اللَّقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٤٢﴾

ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرُونًا آخَرِينَ ﴿٤٣﴾

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا
يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٤٤﴾

ثُمَّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرًا ۗ كُلَّمَا جَاءَ أُمَّةٌ
رَّسُولَهَا كَذَّبُوهُ فَاتَّبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا

वहानियाँ¹ बनाइयै रक्खी दिता (ते उंदे बारै फरिशतें गी हुक़म दिता जे) जेहके लोक ईमान नेई ल्याए अल्लाह दा शाप (तै करी देओ) ॥ 45 ॥

उसदे बा'द असें मूसा ते उसदे भ्राउ हारून गी अपने नशान ते खु'ल्लाम-खु'ल्ला प्रभुत्व देइयै भेजेआ ॥ 46 ॥

फ़िराऊन ते उसदे सरदारों पासै। इस आस्तै उनें घमंड कीता ते ओह उददंडी (सिरफिरे) लोकें आंगर होई गे ॥ 47 ॥

फ़ी उनें गलाया जे क्या अस अपनै जनेह दौं बंदें पर ईमान ल्यौचे ? जिसलै जे इंदी दौनें दी कौम साढ़ी गुलामी करा करदी ऐ ॥ 48 ॥

इस आस्तै उनें लोकें उनें दौनें (मूसा ते हारून) गी झुठलाई दिता। नतीजा एह होआ जे ओह बी हलाक होने आहले लोकें बिच्चा होई गे ॥ 49 ॥

ते असें मूसा गी (ओह) कताब दिती (जिसी सारे जानदे न) तां जे ओह (ते उसदी कौम) हदायत हासल करन ॥ 50 ॥

ते असें मर्यम दे पुतर ते उसदी मां गी इक नशान बनाया ते असें उनें दौनें गी इक उच्चे² थाहरै पर शरण दिती जेहकी रौहेन (बस्सोआं) दे काबल ते बगदे पानियै आहली ही ॥ 51 ॥ (रुकू 3/3)

(ते असें गलाया जे) हे रसूलो! पवित्र पदार्थें बिच्चा खाओ ते परिस्थिति मताबक कर्म करो ते जो तुस करदे ओ अ'ऊं उसी जाननां ॥ 52 ॥

وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ ۚ فَبِعَدَا لِقَوْمٍ
لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٤٥﴾

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ بِآيَاتِنَا
وَسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ﴿٤٦﴾

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاسْتَكْبَرُوا
وَكَانُوا قَوْمًا عَالِينَ ﴿٤٧﴾

فَقَالُوا أَنُؤْمِنُ بِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا
وَقَوْمَهُمَا لَنَا عِبَدُونَ ﴿٤٨﴾

فَكَذَّبُوهُمَا فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِينَ ﴿٤٩﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ
يَهْتَدُونَ ﴿٥٠﴾

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ آيَةً
وَآوَيْنَهُمَا إِلَىٰ رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ
وَمَعِينٍ ﴿٥١﴾

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ كُلُوا مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَاعْمَلُوا
صَالِحًا ۗ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٥٢﴾

1. अर्थात् उंदा नांउ-नशान संसार च नेई रेहा।

2. इतिहास रहें साबत होई चुके दा ऐ जे एह उच्चा थाहर कश्मीर हा। बाइबिल, यहूदियें ते हिंदुएं दे ऐतिहासक ग्रंथें दे उल्लेखें थमां इस गल्लै दी पुष्टी होई चुकी दी ऐ।

ते थुआड़ा एह गरोह (अर्थात् नबियें दा) इक गै गरोह ऐ ते अ'ऊं थुआड़ा रब्ब आं। इस लेई तुस बिनाश थमां बचने आसतै मिगी अपनी ढाल बनाओ ॥ 53 ॥

जेहदे पर उनें (अर्थात् इन्कार करने आहले काफ़रें) शरीअत गी टुकड़े-टुकड़े करी दित्ता ते हर गरोह नै जेहका टुकड़ा अपने आसतै पसंद कीता ओहदे पर फखर करन लगी पेआ ॥ 54 ॥

इस लेई तू उनेंगी इक समे (अरसे) तक अपनी भुल्लै च पेदे रौह्न दे ॥ 55 ॥

क्या ओह एह ख्याल करदे न जे साढ़ा उनेंगी धन ते पुत्तरे कन्नै मदाद देना ॥ 56 ॥

उनेंगी कम्मैं च तौले-तौले पाना ऐ? (ऐसा नेई) बल्के ओह (सचाई गी) नेई समझदे ॥ 57 ॥

ओह लोक जो अपने रब्ब दे डरें कंबदे न ॥ 58 ॥

ते ओह लोक जो अपने रब्ब दियें आयतें पर ईमान आहनदे न ॥ 59 ॥

ते जेहके अपने रब्ब दा कुसै गी शरीक नेई बनांदे ॥ 60 ॥

ते जो (अल्लाह द्वारा दित्ती गेदी) धन-दौलत (गरीबें आसतै) खर्च करदे न ते उंदे दिल इस गल्ला थमां डरदे रौहदे न जे उनें इक दिन बापस परतियै अपने रब्ब कश जाना ऐ ॥ 61 ॥

इयै लोक नेकियें च तौल करने आहले न ते ओह उंदे (नेकियें) पासै आपस च इक-दूए थमां अगें बधदे जा करदे न ॥ 62 ॥

وَأَنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُونِ ۝

فَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ۝

فَدَرَهُمْ فِي غَمَرَاتِهِمْ حَتَّىٰ حِينٍ ۝

أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُم بِهِ مِنْ مَّالٍ وَبَيْنِينَ ۝

نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرَاتِ ۗ بَلْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ هُمْ مِنْ خَشِيَةِ رَبِّهِمْ ۝

وَالَّذِينَ هُمْ يَأْتِي رَبَّهُمْ يُؤْمِنُونَ ۝

وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ۝

وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوْا وَقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ ۝

أَتُهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ۝

أُولَٰئِكَ يُسْرِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَهُمْ لَهَا سٰٓئِقُونَ ۝

ते अस कुसै जात्रा दे जिम्मै उसदी थबीक थमां बद्ध कम्म नेई लांदे ते साढ़े कश कर्म दी इक सूची ऐ जेहकी सच्चो-सच्च गल्लै गी साफ करी दिंदी ऐ ते उंदे पर कोई जुलम नेई कीता जाग ॥ 63 ॥

पर उंदे दिल ते उस शिक्षा बाँरे ग़फ़लत च पेदे न ते उस दे सिवा होर बी उंदे पासै मते-हारे (बुरे) कर्म न जेहके ओह करा करदे न ॥ 64 ॥

इत्थें तक जे जिसलै अस उंदे बिच्चा धनी लोकें गी अज़ाब च जकड़ी लैन्ने आं तां अचानक ओह फ़रेआद करन लगी पौंदे न ॥ 65 ॥

(उस बेलै अस उनेंगी आखने आं) अज्ज फ़रेआद नेई करो। साढ़े पासेआ तुसें गी कोई मदाद नेई मिलग ॥ 66 ॥

तुसेंगी मेरी आयतां पढ़ियै सुनाइयां जंदियां हियां, पर तुस उंदे पासे ध्यान नेई देइयै बे-परवाही करदे होई ॥ 67 ॥

ते ब्यर्थ गल्लां करदे होई ते ओहदे थमां मूह फेरदे होई अपनी अड्डियें दे भार फिरी जंदे होंदे हे ॥ 68 ॥

क्या इनें लोकें इस कलाम (क़ुरआन) पर बिचार नेई कीता ते उनेंगी ओह (बा 'यदा) मिली गेआ ऐ जो इंदे पुरखें गी नथा मिलेआ ॥ 69 ॥

ते क्या उनें अपने रसूल गी नेई पछानेआ जेहदे कारण ओह उसदा इन्कार करा करदे न ॥ 70 ॥

क्या ओह आखदे न जे उसी जनून ऐ? (पर ऐसी गल्ल नेई) बल्के ओह उंदे कश हक्क

وَلَا تُكَلِّفْ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا
كِتَابٌ يُنطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٣﴾

بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي عَمْرَةٍ مِّنْ هَذَا وَلَهُمْ
أَعْمَالٌ مِّنْ دُونِ ذَلِكَ هُمْ لَهَا عَمَلُونَ ﴿٦٤﴾

حَتَّىٰ إِذَا آخَذْنَا مَتْرَفِهِمْ بِالْعَذَابِ
إِذْهُمْ يُجْعَرُونَ ﴿٦٥﴾

لَا تَجْرُوا الْيَوْمَ إِنَّكُمْ مِّنْ أَهْلِ تَنْصُرُونَ ﴿٦٦﴾

قَدْ كَانَتْ آيَةُ رَبِّكَ عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلَىٰ
أَعْقَابِكُمْ تَنْكُصُونَ ﴿٦٧﴾

مُسْتَكْبِرِينَ تَبِ سَمِرًا تَهْجُرُونَ ﴿٦٨﴾

أَقَلَّمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ أَمْ جَاءَهُمْ مَا
لَمْ يَأْتِ آبَاءَهُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٩﴾

أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُ
مُنْكَرُونَ ﴿٧٠﴾

أَمْ يَقُولُونَ بِهِ جِنَّةٌ بَلْ جَاءَهُمُ بِالْحَقِّ

(सचाई) लेइयै आया ऐ ते उंदे बिच्चा मते-
सारे लोक उस हक़ गी पसंद नेई करदे
॥ 71 ॥

ते जेकर हक़ उंदी खुआहिशें दे पिच्छें चलदा
ते गास ते धरती ते जो उंदे अंदर बास करदा
ऐ सब तबाह होई जंदे सचाई एह ऐ जे अस
उंदे कश उंदे सम्मान दा समान लेइयै आए
आं, पर ओह अपने सम्मान दे समानें थमां
मूंह फेरा करदे न ॥ 72 ॥

क्या तूं उंदे थमां कोई तावाना (अर्थात् दंड)
मंगना ऐं ? (ऐसा नेई होई सकदा) की जे
तेरे रब्व दा दिते दा धन बड़ा अच्छा ऐ ओह
(रब्व) अच्छी थमां अच्छी रोजी देने आह्ला
ऐ ॥ 73 ॥

ते तूं उनें गी सिद्धे रस्ते पासै बुलाना ऐं
॥ 74 ॥

ते जेहके लोक आखरत पर ईमान नेई आहनदे
ओह (सच्चे) रस्ते थमां हटने आह्ले न
॥ 75 ॥

ते जेकर अस उंदे पर देआ करियै जेहका
कश्ट उनें गी पुज्जा करदा ऐ दूर करी देचै तां
ओह अपनी शरारतां होर बी बधाई देडन
॥ 76 ॥

ते असैं उनेंगी सख्त अज़ाब कनै जकड़ी
रक्खे दा ऐ, फी बी ओह अपने रब्व दे सामनै
नमरता कनै नेई झुके ते नां गै ओहदे सामनै
गिड़गड़ाए ॥ 77 ॥

इत्थें तक जे जिसलै अस उंदे उप्पर इक सख्त
अज़ाब दा द्वार खोहली देगे तां ओह

وَ أَكْثَرَهُمْ لِلْحَقِّ كَرِهُونَ ﴿٧١﴾

وَلَوْ اتَّبَعَ الْحَقُّ أَهْوَاءَهُمْ لَفَسَدَتِ
السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۗ بَلْ
أَتَيْنَهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ
مُعْرِضُونَ ﴿٧٢﴾

أَمْ سَأَلْتَهُم خَرْجًا فَخَرَّاجٌ رَبِّكَ خَيْرٌ
وَهُوَ خَيْرُ الرَّزَاقِينَ ﴿٧٣﴾

وَإِنَّكَ لَتَدْعُوهُمْ إِلَى صِرَاطٍ
مُسْتَقِيمٍ ﴿٧٤﴾

وَإِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ
الصِّرَاطِ لَنُكَيِّبُونَ ﴿٧٥﴾

وَلَوْ رَحِمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِنْ
ضُرٍّ لَلْجُؤِ فِي طُعْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿٧٦﴾

وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوا
لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُونَ ﴿٧٧﴾

حَتَّىٰ إِذَا فَمَحْنَا عَلَيْهِمُ أَبْأَدًا عَذَابٍ
شَدِيدٍ إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ﴿٧٨﴾

नराश होइयै बेही जाडन ॥ 78 ॥ (रुकू 4/4)

ते ओह अल्लाह गै ऐ जिसनै थुआड़े आस्तै कन्न, अक्खीं ते दिल पैदा कीते दे न, पर तुस लेश मातर (बाल परमान) बी धन्नवाद नेई करदे ॥ 79 ॥

ते ऊऐ ऐ जिसनै धरती उप्पर तुसेंगी फलाई दिते दा ऐ ते फी तुस ओहदे पासै किट्टे कीते जागेओ ॥ 80 ॥

ते ऊऐ ऐ जेहका तुसेंगी जींदा करदा ऐ ते ऊऐ तुसेंगी मारग ते रातीं-दिनै दा अगें-पिच्छें औना उस्सै दे अधिकार च ऐ। क्या तुस अक्ली थमां कम्म नेई लैंदे? ॥ 81 ॥

सचाई एह ऐ जे ओह ऊऐ गल्ल आखदे न जेहकी उंदे पैहले लोकें आखी ही ॥ 82 ॥

उनें गलाया हा जे क्या जिसलै अस मरी जागे ते मिट्टी होई जागे ते हड्डियां बनी जागे तां अस फी दुआली दिते जागे ? ॥ 83 ॥

इस थमां पैहलें इस्सै गल्लै दा बा'यदा साढ़े कन्नै ते साढ़े बब्ब-दादें कन्नै कीता गोआ हा (मगर ऐसा नेई होआ) एह ते सिर्फ पैहले लोकें दियां व्हानियां न ॥ 84 ॥

तू आखी दे जे जेकर तुस जानदे ओ तां (दस्सो ते सेही) एह सारी धरती ते जे किश एहदे बिच्च ऐ कुस दा ऐ ? ॥ 85 ॥

यकीनन ओह (इस दे जवाब च) आखडन अल्लाह दा। इस पर तू (उनेंगी) आखी दे, क्या तुस समझ थमां कम्म नेई लैंदे ? ॥ 86 ॥

وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ
وَالْأَفْئِدَةَ ۗ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٧٩﴾

وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ
تُحْشَرُونَ ﴿٨٠﴾

وَهُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ
الْيَلِيلِ وَالنَّهَارِ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٨١﴾

بَلْ قَالُوا مِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُونَ ﴿٨٢﴾

قَالُوا إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا
إِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿٨٣﴾

لَقَدْ وَعَدْنَا نَحْنُ وَآبَاءُ نَاهَذَا مِنْ قَبْلُ
إِنْ هَذَا إِلَّا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٨٤﴾

قُلْ لِمَنِ الْأَرْضُ وَمَنْ فِيهَا إِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ﴿٨٥﴾

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۗ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٨٦﴾

(फी) तू (उनेंगी) आखी दे सतें गासैं ते बड्डे अर्श (अर्थात सिंहासन) दा रब्ब कु'न ऐ ? ॥ 87 ॥

पर ओह आखडन जे (एह सब) अल्लाह दे न। तू आखी दे जे क्या फी बी तुस (उस अल्लाह दी मदाद लेइयै तबाही थमां) बचने दी कोशश नेई करदे ? ॥ 88 ॥

तू आखी दे जे हर चीजै दी बादशाही कुस दे हत्थै च ऐ ते ओह सब गी शरण दिंदा ऐ। हां ! उसदे अजाब दे खलाफ कोई दूआ पनाह नेई देई सकदा। जेकर तुस जानदे ओ (तां इसी समझी सकदे ओ) ॥ 89 ॥

ओह (एह सुआल सुनियै) फटक्क आखडन, एह सब किश अल्लाह दे अखत्यार च ऐ। इस पर तू आखी दे जे फी तुसैं गी भलकेरियै (धोखा देइयै) कुत्थें लेता जा करदा ऐ ? ॥ 90 ॥

असल च अस उंदे कश हक्र (सचाई) ल्याए दे आं ते ओह यकीनन उस दा इन्कार करने आहले न ॥ 91 ॥

अल्लाह नै कुसै गी पुतर नेई बनाया ते नां ओहदे कनै कोई उपास्य गै ऐ (जेकर ऐसा होंदा तां) हर इक उपास्य अपने पैदा कीते गेदे पदार्थै गी अलग करियै लेई जंदा ते उंदे बिच्चा किश उपास्य दूएं पर हल्ला बोल्ली दिंदे। जो गल्लां ओह करदे न अल्लाह उंदे थमां पाक ऐ ॥ 92 ॥

ओह गैब दा बी इलम रखदा ऐ ते जाहर दा बी (इलम रखदा ऐ)। इस लेई जिनेंगी ओह ओहदा शरीक बनांदे न उंदे थमां ओह बौहत उच्चा ऐ ॥ 93 ॥ (रकू 5/5)

قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿٨٧﴾

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۗ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٨٨﴾

قُلْ مَنْ بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ يُجِزُّهُ وَيَجَارُّ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٩﴾

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۗ قُلْ فَأَنَّى تُسْحَرُونَ ﴿٩٠﴾

بَلْ آتَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٩١﴾

مَا اتَّخَذَ اللَّهُ مِنْ وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنْ إِلَهٍ إِذْ أَنْزَلَ مِنْ سَمَاءٍ مَقَامًا مَعْلُومًا لِيُنزِّلَ فِيهَا الْقُرْآنَ بِإِذْنِ رَبِّهِ فَالْحَكِيمُ ﴿٩٢﴾

عَلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعَلَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٩٣﴾

तू आखी दे जे हे मेरे रब्ब! जेकर तू मिगी मेरे जीवन च ओह किश दस्सी देईं जिसदा उंदे कन्नै बा'यदा कीता जा करदा ऐ ॥ 94 ॥

तां हे मेरे रब्ब! तू मिगी जालम कौम दे लोकें बिच्चा नेई बनायां ॥ 95 ॥

ते अस इस गल्ला दी समर्थ रक्खने आं जे उंदे कन्नै जेहका बा'यदा करने आं ओह तुगी दस्सी' देचै ॥ 96 ॥

तू उंदी बुरी गल्लें गी ऐसी (जवाबी) गल्लें कन्नै दूर कर जो बे-हद शैल होन। अस उंदी गल्लें गी चंगी चाल्ली जानने आं ॥ 97 ॥

ते तू आखी दे जे हे मेरे रब्ब! अ'ऊं शरारती लोकें दी शरारत थमां तेरी शरण चाहन्नां ॥ 98 ॥

ते हे मेरे रब्ब! अ'ऊं तेरी शरण चाहन्नां ओहदे कन्नै बी जे ओह मेरे सामनै आई जान ॥ 99 ॥

ते उस बेलै जिस बेलै उंदे बिच्चा कुसै दी मौत आई जाग, ओह आखग हे मेरे रब्ब! मिगी (संसार च) बापस परताई दे, मिगी बापस परताई दे, मिगी बापस परताई दे ॥ 100 ॥

तां जे अ'ऊं (उस थाहरै पर) जिसी अ'ऊं छोड़ी आए दा आं (अर्थात् संसार च) परिस्थिति दे मताबक कर्म करां (पर ऐसा कदें बी नेई होई सकदा)। एह सिर्फ इक जबानी गल्ल ऐ जिसी ओह आखा करदे न ते उंदे पिच्छें इक परदा² ऐ जेहका उस रोज तक पेदा

قُلْ رَبِّ اِمَّا تُرِيِّي مَا يُوْعَدُوْنَ ۝۱۴

رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الظَّالِمِيْنَ ۝۱۵
وَ اِنَّا عَلٰى اَنْ تُرِيْكَ مَا نَعِدُهُمْ
لَقَدِرُوْنَ ۝۱۶

اِذْفَعْ بِاَلَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السِّيْئَةِ ۝۱۷
اَعْلَمْ بِمَا يَصِفُوْنَ ۝۱۸

وَقُلْ رَبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ
الشَّيْطٰنِ ۝۱۹

وَ اَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّخْضُرُوْنَ ۝۲۰

حَتّٰى اِذَا جَآءَ اَحَدُهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ
ارْجِعُوْنَ ۝۲۱

لَعَلِّيْ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيمَا تَرَكْتُ كَلَّا ۝۲۲
اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا ۝۲۳ وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ
بَرْزَخٌ اِلَى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝۲۴

1. अर्थात् तेरे जीवन च अज़ाब दा बा'यदा पूरा करी देचै।

2. एहदा एह मतलब नेई जे दबारा तुआले जाने आहलै ध्याडै इसै थाहर परताए (बापस भेजे) जाउन, बल्के मतलब एह ऐ जे उस ध्याडै ते परलोक दी समस्या शुरू होई जाग, बापस परतोने दा सुआल गै पैदा नेई होग ते उस दिने तक उंदी आत्माएं दे बापस परतोने दे रस्ते च अल्लाह नै रोक लाई रक्खी दी ऐ अर्थात् मुड़दे जींदे होइयै इस संसार च बापस आई गै नेई सकदे। हून ओह लोक बिचार करन जेहके एह आखदे न 'बली' ते 'नबी' मुड़दें गी जींदा करदे रौहदे न।

रौह्ग जिसलै जे ओह् दबारा ठुआले जाडन ।
(इस आसतै ओह् जौदे करियै दबारा इस संसार
च नेई परताए जाडन) ॥ 101 ॥

फी जिसलै बिगल बजाया जाग तां उस दिन
उंदे बिच्च नातेदारी दा कोई बी सरबंघ नेई
रेहदा होग ते नां ओह् इक-दूए दा हाल-चाल
पुछडन ॥ 102 ॥

जिंदे कर्मै दा बोझ भारा होई जाग ओह् लोक
कामयाब होडन ॥ 103 ॥

ते जिंदे बोझ हौले होई जाडन ओह् लोक
घाटे च रौहडन (ते अपनी जान्ने दी तबाही
करडन) ते सदा नरकै च रौहडन ॥ 104 ॥

उंदे मूहें गी अगिन झुलसी देग ते ओहदे च उंदा
मूंह काला होई जाग ॥ 105 ॥

(ते आखेआ जाग जे) क्या थुआड़े सामनै
मेरी आयतां नथियां पढ़ियां जंदियां ते तुस उंदा
इन्कार नथे करदे हौंदे? ॥ 106 ॥

ओह् आखडन जे हे साढ़े रब्ब! साढ़ी बद-
किसमती साढ़े उप्पर छाई गेदी ही ते अस इक
पथभ्रष्ट संप्रदाय हे ॥ 107 ॥

हे साढ़े रब्ब! असैंगी इस नरकै थमां कड्ह ।
ते जेकर अस (इनें पापें पासै) फी परतोचै तां
अस जालम होगे ॥ 108 ॥

(अल्लाह आखग जे दूर होई जाओ ते) नरकै
च चली जाओ ते मेरे कनै गल्ल निं करो
(यानी मेरै मूंह नेई लगगो) ॥ 109 ॥

فَاذْأَنْفَحْ فِي الصُّورِ فَلَا أَنْسَابَ بَيْنَهُمْ
يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ ﴿١٠١﴾

فَمَنْ ثَقَلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ﴿١٠٢﴾

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَئِكَ الَّذِينَ
خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ﴿١٠٣﴾

تَلْفَحُ وَجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا
كُلِبُونَ ﴿١٠٤﴾

أَلَمْ تَكُنْ أَيْبَىٰ تُثَلِّ عَلَىٰ كُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا
تُكْذِبُونَ ﴿١٠٥﴾

قَالُوا رَبَّنَا عَبَّتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا
ضَالِّينَ ﴿١٠٦﴾

رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنَّا
ظَالِمُونَ ﴿١٠٧﴾

قَالَ احْسَبُوا فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ ﴿١٠٨﴾

गल्ल एह ऐ जे मेरे बंदें बिच्चा इक गरोह (टोल्ला) ऐसा हा जो आखदा हा जे हे साढ़े रब्ब! अस ईमान ल्याए आं। इस आस्तै तू असेंगी माफ कर ते साढ़े पर देआ कर ते तू सारे रैह्मदिलें शा बी रैह्मदिल ऐं ॥ 110 ॥

पर तुसें उनेंगी हासे दा नशाना (थाहर) बनाई लैता इत्थें तक जे उनें (शुआड़े हासे-मजाक दा पात्र बनियै) तुसेंगी मेरी याद भुलाई दिती ते तुस उंदा सदा मौजू लैंदे रेह ॥ 111 ॥

अ'ऊं उनेंगी उंदे धीरज दा अज्ज मनासब सिला देड । यकीनन ओह कामयाब होडन ॥ 112 ॥

फी ओह (अल्लाह) आखग जे तुस किन्ना चिर धरती उप्पर रेह ओ? ॥ 113 ॥

ओह आखडन जे अस इक दिन जां इक दिनें दा किश हिस्सा धरती उप्पर रेह आं। तू गिनने आहलें थमां पुच्छी लै ॥ 114 ॥

(इस पर अल्लाह) आखग जे जेकर तुस अक्ली थमां कम्म लैओ तां बड़ा थोड़ा¹ समां रेह ओ ॥ 115 ॥

क्या तुस एह समझदे होंदे हे जे असें तुसेंगी बिना कुसै मकसद दे पैदा कीते दा ऐ ते तुस साढ़े पासै परताए नेई जागे ओ? ॥ 116 ॥

इस आस्तै अल्लाह बड़ी समझ आहला बादशाह, कायम रक्खने आहला ते कायम

إِنَّهٗ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِي يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّحِيمِينَ ﴿١١٠﴾

فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سِحْرِيًّا حَتَّىٰ أَنْسَوَكُمُ ذِكْرِي وَكُنْتُمْ مِنْهُمْ تَضْحَكُونَ ﴿١١١﴾

إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا إِنَّهُمْ هُمُ الْفَائِرُونَ ﴿١١٢﴾

فَلَكُمْ لِبِئْسَتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَسِينَ ﴿١١٣﴾

قَالُوا لِمَئِذَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسَأَلِ الْعَادِينَ ﴿١١٤﴾

فَلِإِنْ لَّبِئْسَتُمْ إِلَّا قَلِيلًا لَّوَأَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١٥﴾

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٦﴾

فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ

1. पारलौकिक जीवन दी निसबत संसारक जीवन बड़ा गै थोड़ा ऐ ते दुक्खें कर्ने भरोचा दा होने करी सुखै दा समां होर बी थोड़ा सेही होंदा ऐ।

रौहने आहला ऐ। उसदे सिवा कोई उपास्य
नेई। ओह् अर्शे करीम¹ दा रब्ब ऐ ॥ 117 ॥

رَبِّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ﴿١١٧﴾

ते जो कोई अल्लाह दे सिवा कुसै दूए उपास्य
गी पुकारै जिसदी (सचाई पर) कोई युक्ति
नेई, तां उसदा लेखा उसदे रब्ब कश ऐ।
असलीयत एह् ऐ जे इन्कार करने आहले
लोक कदे सफल नेई होंदे ॥ 118 ॥

وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ
لَهُ بِهِ ۗ فَأَلْهَمَّا جِسَابَهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۗ إِنَّهُ
لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُونَ ﴿١١٨﴾

ते तूं आखी दे जे हे मेरे रब्ब! माफ कर ते
देआ कर ते तूं सारें थमां बद्ध देआ करने
आहला ऐं ॥ 119 ॥ (सकू 6/6)

وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ
الرَّحِيمِينَ ﴿١١٩﴾

०००

1. अर्शे करीम:-इज्जत आहला तख्दा, महिमाशाली सिंहासन।

سُورَةُ النُّورِ مَدْيَنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ خَمْسٌ وَسِتُّونَ آيَةً وَتَسَعَةُ رُكُوعَاتٍ

सूर: अल्-नूर

एह सूर: मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां पैंहट आयतां ते नौ रूकू न।

मैं अल्लाह दा नांs लेइयै (पढ़ना) जो बे-
हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

एह इक ऐसी सूर: ऐ जो असें उतारी ऐ ते
(जेहदे पर अमल करना) असें फर्ज (अत
जरूरी) कीता (यानी सुझाया) ऐ ते एहदे च
असें रोशन आदेश ब्यान कीते दे न तां जे तुस
नसीहत हासल करो ॥ 2 ॥

व्यभिचार करने आहली जनानी ते व्यभिचार
करने आहला मनुक्ख (जेकर उंदे पर इलजाम
साबत होई जा तां) उंदे चा हर इक गी सौ
कोड़े लाओ ते जेकर तुस अल्लाह ते आखरत
आहले ध्याड़े पर ईमान आहनदे ओ तां अल्लाह
दे आदेश गी पूरा करने च इनें दौनें चाल्ली
दे अपराधिये दे बारै तुसें गी तरस नेई आवै
ते चाही दा ऐ जे इनें दौनें दे दंड गी मोमिनें
दा इक गरोह (टोल्ला) दिक्खै ॥ 3 ॥

ते इक व्यभिचारी (पुरुष) व्यभिचारणी जां
शिकं करने आहली (जनानी) दे सिवा कुसै
कनै संभोग नेई करदा ते नां व्यभिचारणी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ①

سُورَةٌ أَنْزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنْزَلْنَا فِيهَا
آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ①

الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ
مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ وَلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا
رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللّٰهِ إِنَّكُمْ تُمْمَوْنَ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ② وَلَيَشْهَدَ عَدَابُهُمَا
طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ③

الزَّانِي لَا يَنْجِحُ الْإِزَانِيَةَ أَوْ مُشْرِكَةً ④
وَالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَا إِلَّا زَانٍ

(जनानी) व्यभिचारी जां शिर्क करने आहले (पुरश) दे सिवा कुसै दूए कनै संभोग¹ करदी ऐ ते मोमिनं आस्तै एह गल्ल र्हाम सिद्ध कीती गेदी ऐ ॥ 4 ॥

ते जेहके लोक नेक चलन आहली (पाक दामन) जनानियें पर इलजाम लांदे न। फी चार गुआह नेई भुगताई सकदे तां (उंदी स'जा एह ऐ जे) उनेंगी अस्सीं कोड़े लाओ ते उंदी गुआही कदें कबूल नेई करो। ते ओह लोक (अपने इस कुकर्म दे कारण इस्लामी शरीअत दी) पालमा थमां खारज न ॥ 5 ॥

सिवाए उनें लोकें दे जो बा'द च तोबा करी लैन ते सुधार करी लैन। इस आस्तै (ऐसा करने पर) अल्लाह यकीनन बौहूत बख्शाने आहला ते बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 6 ॥

ते जेहके लोक अपनी जनानियें पर इलजाम लांदे न ते उंदे कश सिवाए अपने वजूद दे होर कोई गुआह नेई होंदा तां ऐसे लोकें बिच्चा हर शख्स गी ऐसी गुआही देनी चाही दी जेहकी अल्लाह दी कसम खाइयै च'ऊं गुआहियें पर अधारत होऐ ते (हर-इक गुआही च) ओह एह आखै जे ओह सचाई आहलें बिच्चा ऐ ॥ 7 ॥

أَوْ مُشْرِكٍ^٤ وَحَرِّمَ^٥ ذَلِكَ عَلَى
الْمُؤْمِنِينَ^٦

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا
بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَاجْلِدُوهُمْ ثَمَانِينَ
جَلْدَةً وَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا^٧
وَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ^٨

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا^٩
فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ^{١٠}

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَرْوَاحَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ
لَهُمْ شُهَدَاءُ إِلَّا أَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ
أَحَدِهِمْ أَرْبَعٌ شَهَدَاتٍ بِاللَّهِ^{١١} إِنَّهُ
لَمِنَ الصَّادِقِينَ^{١٢}

1. मूल शब्द 'निकाह' दा मतलब ओह घोशना होंदी ऐ जो इस्लामी शरीअत दे मताबक इक पुरश ते इक जनानी गी जोड़ा बनाने दे बारे कीती जंदी ऐ, पर अरबी च निकाह दा अर्थ अक्सर जनानी-मड़दें दा आपस च संभोग करना होंदा ऐ। इस अर्थ गी ध्यान च नेई रक्खियै लोकें इस आयत दा मजाकिया अर्थ लेई लैते दा ऐ। इस दा सिद्धा-सिद्धा अर्थ एह ऐ जे जिसलें कोई पुरश व्यभिचारणी कनै संभोग करग तां ओह व्यभिचारी गै होग। उस जनानी दा पति नेई होई सकदा। जेकर पति होऐ तां जनानी व्यभिचारणी नेई होग। इस्सै चाल्ली इसदे उल्ट गल्ल ऐ। ओह जनानी उस्सै दशा च व्यभिचारणी खुआई सकदी ऐ जिसलें जे ओह अपने पति गी छोड़िये कुसै दूए आदमी कनै संभोग करे ते जिसलें इक पराई जनानी पराए मड़दें कनै संभोग करग तां ओह मड़द व्यभिचारी ते ओह जनानी व्यभिचारणी खुआडन। एह गल्ल सभावक घटनें दे बरुद्ध ऐ जे व्यभिचारणी कनै व्यभिचारी दे सिवा दूआ कोई मड़द ब्याह नेई करग। संसार च ज़हारां प्रमाण इसदे बरुद्ध मिलदे न जे केई लोक बेस्वाएं कनै इस लेई ब्याह करी लेंदे न जे उनें जनानियें दा सुधार होई जा ते बा'द च ओह प्राहचिह करियें सुधरी बी जंदियां न, पर ब्याह दे मौकें तोड़ी ओह व्यभिचारणी गै खुआदियां न।

ते पंजमीं (गुआही) च (आखै) जे जेकर ओह झूठें बिच्चा होऐ तां ओहदे पर अल्लाह दी फटकार होऐ ॥ 8 ॥

ते ओह पत्नी (जेहदे पर उस दा पति इलजाम ला) च 'ऊं गुआहियें द्वारा जेहकियां कसम खाइयै दितियां गेदियां होन अपने आपै थमां अजाब गी एह आखदे होई दूर करै जे ओह (पति) झूठा ऐ ॥ 9 ॥

ते पंजमीं (कसम) इस चाल्ली (खा) जे अल्लाह दा अजाब उस जनानी पर पवै, जेकर ओह (इलजाम लाने आहला पति) सच्चा ऐ ॥ 10 ॥

ते जेकर अल्लाह दी मेहर जां उसदी रैहमत तुंदे पर नेई होंदी ते ऐसा नेई होंदा जे अल्लाह बौहत मेहर करने आहला (ते) बड़ी हिक्मतें आहला ऐ (तां तुस लोक तबाह होई जंदे) ॥ 11 ॥ (रुकू 1/7)

ओह लोक जिनें इक बड़ा बड़डा झूठा कलैकक लाया हा, तुंदे बिच्चा गै इक गरोह (टोल्ला) ऐ तुस उसी अपने आस्तै बुरा नेई समझो बल्के ओह थोआड़े आस्तै बड़ा चंगा ऐ (की जे ओहदे करियै गै तुसं गी हिक्मत भरोची इक शिक्षा मिली ऐ)। उंदे बिच्चा हर इक शख्स गी जिस मातरा च उसने पाप कीते दा हा उस दी स'जा मिली जाग ते जेहका शख्स उस पाप दे बड्डे हिस्से दा जिम्मेदार हा उसी बौहत बड़डा अजाब थहोग ॥ 12 ॥

जिसलै तुसं एह गल्ल सुनी ही तां मोमिन मडुदें ते मोमिन औरतें (जनानियें) की नेई अपनी जाति दे बाँरे अच्छा बचार कीता ते एह आखी दिता जे एह ते बौहत बड़डा (नि'रा लंब) झूठ ऐ ॥ 13 ॥

وَالْحَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝

وَيَذَرُوْا عَنْهَا الْعَذَابَ اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهَدٰتٍ بِاللّٰهِ اِنَّهُ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝

وَالْحَامِسَةُ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَا اِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝

وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَاَنْ اللّٰهُ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ۝

اِنَّ الَّذِيْنَ جَاءُوْا بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ لَا نَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ لِكُلِّ اِمْرٍ مِّنْهُمْ مَّا اَكْتَسَبَ مِنَ الْاِثْمِ ۗ وَالَّذِيْ تَوَلٰى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝

لَوْ لَا اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِنَّ خَيْرًا ۙ وَقَالُوْا هٰذَا اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ۝

ते ओह (झूठ फलाने आहले) लोक की नेई इस पर चार गुआह ल्याए? इस आस्तै जिसलै के ओह चार गुआह नेई ल्याए तां ओह अल्लाह दे फैसले मताबक झूठे न ॥ 14 ॥

ते जेकर तुंदे पर अल्लाह दी मेहर ते रैहमत इस लोक ते परलोक च नेई होंदी तां तुसंगी इस कम्म (दी ब'जा) कनै जेहदे च तुस पेई गेदे हे तां तुसंगी बौहत बड्डा अजाब पुजदा ॥ 15 ॥

(इस ब'जा करी जे) तुस उस (गल्ला) गी इक-दूए थमां लेइयै कनो-कन पजांदे गे ते अपने मोमिनं कनै एह आखन लगी पे जे जिसदा तुसंगी कोई इलाम नेई हा (खुदा तुंदे पर नराज होआ) ते तुस उस गल्लै गी ममूली समझदे हे हालांके ओह अल्लाह दे कोल बौहत बड्डी ही ॥ 16 ॥

ते के नेई होआ जे जिसलै तुसें ओह गल्ल सुनी ही तां फौरन आखी दिता जे एह साढ़ा कम्म नेई जे अस इस गल्ला गी अगैं दरहाचे, हे अल्लाह! तूं बड़ा पवित्तर ऐं एह बौहत बड्डा झूठा आरोप ऐ ॥ 17 ॥

जेकर तुस मोमिन ओ तां अल्लाह तुसंगी इस चाल्ली दी गल्ल करने थमां सदा-सदा आस्तै रोकदा ऐ ॥ 18 ॥

ते अल्लाह थुआड़े आस्तै अपने हुकम ब्यान करदा ऐ ते अल्लाह बौहत जानने आहला (ते) हिक्मत आहला ऐ ॥ 19 ॥

यकीनन जेहके लोक चांहदे न जे मोमिनै¹ च बुराई फैली जा उंदे आस्तै बड़ा दर्दनाक अजाब ऐ दुनियां च बी ते आखरत च बी ते अल्लाह

لَوْلَا جَاءُوا عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ ۚ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا بِالشُّهَدَاءِ فَأُولَئِكَ عِنْدَ اللَّهِ هُمُ الْكَاذِبُونَ ①

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِي مَا أَفَضْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ②

إِذْ تَلَقَّوْنَهُ بِأَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُمْ مَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَتَحْسَبُونَهُ هَيِّنًا ۗ وَهُوَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمٌ ③

وَلَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُمْ مَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَتَكَلَّمَ بِهَذَا ۗ سُبْحَانَكَ هَذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ ④

يَعْظُمُ اللَّهُ أَنْ تَعُودُوا لِمِثْلِهِ أَبَدًا ۗ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ⑤

وَيَسِّرُ اللَّهُ لَكُمْ الْأَيَاتِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ⑥

إِنَّ الَّذِينَ يُجِبُونَ أَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ⑦

1. बिना जाचे-परखे दे झूठा कलैक लाने ते उसी फलाने कनै लोकं च बुराहयें ते पापं कनै घिणा घट्ट होई जंदा ऐ ते लोक अशलील गल्लां करने दी जु'रत करन लगी पाँदे न।

जानदा ऐ ते तुस नेई जानदे ॥ 20 ॥

ते जेकर अल्लाह दी किरपा ते रैहम तुंदे पर नेई होंदा ते जेकर अल्लाह बौहत मेहरबान (ते) बार-बार रैहम करने आह्ला नेई होंदा (तां तुस मसीबती च पेई जंदे) ॥ 21 ॥ (रुकू 2/8)

हे मोमिनो! शतान दे पिच्छें नेई चलो। ते जेहका कोई शतान दे पिच्छें चलदा ऐ तां ओह समझी लै जे शतान बुराइयें ते ना-पसंद गल्लां करने दा हुकम दिंदा ऐ ते जेकर अल्लाह दी किरपा ते रैहम तुंदे उप्पर नेई होंदा तां कर्दे बी तुंदे बिच्चा कोई पवित्तर नेई होंदा। पर अल्लाह जिस गी चांहदा ऐ पवित्तर बनाई दिंदा ऐ ते अल्लाह बौहत दुआमां सुनने आह्ला बौहत जानने आह्ला ऐ ॥ 22 ॥

ते तुंदे बिच्चा (दीन ते दुनियां च) प्रधानता रक्खने आहले ते धनवान लोक सघंद नेई खान जे ओह अपने रिश्तेदारों ते गरीब-मसकीनें ते अल्लाह दे रस्ते च हिजरत करने आहले लोकें दी मदद नेई करडन ते चाही दा ऐ जे ओह सैहनशीलता थमां कम्म लैन ते दरगुजर करन क्या तुस नेई चांहदे जे अल्लाह थुआड़े कसूर माफ करै। ते अल्लाह बौहत माफ करने आह्ला (ते) बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 23 ॥

ओह लोक जेहके पवित्तर जनानियें पर इलजाम लांदे न। जेहके (शरारत करने आहले दी शरारत थमां) बे-खबर न ते ईमानदार न उंदे पर संसार च ते आखरत च लानत कीती जाग ते उंदे आस्तै बड़ा अजाब होग ॥ 24 ॥

الدُّنْيَا وَالْآخِرَةَ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٠﴾

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ رءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٢١﴾

يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوتِ الشَّيْطَانِ ۗ وَمَنْ يَتَّبِعْ خُطُوتِ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ ۗ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ مَا زَكَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ أَبَدًا ۗ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٢﴾

وَلَا يَأْتِلْ أَوْلُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۗ وَيُحْفُوا وَيُصَفِّحُوا ۗ أَلَا يُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٣﴾

إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لَعُنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٢٤﴾

जिस दिन उंदी जबानां, हथ्ये ते पैर उंदे कर्मै दे बाँरे उंदे बरुद्ध गुआही देडन जेहके ओह करदे होंदे हे ॥ 25 ॥

तां उस दिन अल्लाह उनेंगी उंदा ठीक-ठीक सिला देग ते ओह समझी जाडन जे अल्लाह गै पूर्ण सच्च ऐ ऐसा सच्च जो अपने-आपै गी आपू जाहर करी दिंदा ऐ ॥ 26 ॥

बुरियां गल्लां¹ बुरे लोकें आस्तै न ते बुरे लोक बुरी गल्लें आस्तै न ते पवित्तर गल्लां पवित्तर लोकें आस्तै ते पवित्तर लोक पवित्तर गल्लें आस्तै न। एह सारे लोक उनें गल्लें थमां पवित्तर न जो बैरी आखदे न। इंदे आस्तै बखिाश ते इज्जत आहली रोजी (पक्की) ऐ ॥ 27 ॥ (रुकू 3/9)

हे मोमिनो! अपने घरें दे अलावा दूए घरें च उन्ना चिर दाखल नेई होआ करो जिन्ना चिर अजाजत नेई लेई लैओ। ते (दाखल होने शा पैहलें) उनें घरें च बस्सने आहलें गी सलाम नेई करी लैओ। एह थुआडे आस्तै चंगा होग ते इस (गल्लै) दा नतीजा एह होग जे तुस (नेक गल्लें गी म्हेशां) याद रखगे ओ ॥ 28 ॥

ते जेकर तुस उनें घरें च कुसै गी नेई दिक्खो, तां बी उंदे च दाखल नेई होओ जिन्ना चिर जे तुसेंगी (घरें आहलें पासेआ) अजाजत नेई मिली गेदी होऐ। ते जेकर (कोई घरें च होऐ ते) तुसें गी आखेआ जा जे इस बेलै चली

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ
وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٥﴾

يَوْمَ يَمِيزُ يَوْمَ قِيَهُمُ اللَّهُ دِيَهُمُ الْحَقُّ
وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ﴿٢٦﴾

الْحَيْثُ لِلْحَيْثِينَ وَالْحَيْثُونَ
لِلْحَيْثِثِ وَالطَّيِّبَاتِ لِلطَّيِّبِينَ
وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ وَأُولَئِكَ
مُبرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ لَهُمْ
مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٢٧﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا
غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّى تَسْتَأْذِنُوا وَتَسَلِّمُوا
عَلَى أَهْلِهَا ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٢٨﴾

فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا
حَتَّى يُؤْذَنَ لَكُمْ وَإِنْ قِيلَ لَكُمْ
ارْجِعُوا فَارْجِعُوا هُوَ أَزْكَى لَكُمْ وَاللَّهُ

1. केई टीकाकार इस आयत दा एह अर्थ कढदे न जे पवित पुरश पवित जनानियें आस्तै न ते पवित जनानियां पवित पुरशें आस्तै न, पर एह ठीक नेई ऐ। अरबी च 'गल्लां' ते 'कर्म' दमें स्त्रीलिंग दे तौर पर बरतोदे न नेई ते कोई व्यभिचारणी कुसै भले मानस मनुक्खें गी धोखा देइवै उस कनै ब्याह करी लै तां ओहदे च मड़दे दा के दोश? इसै चाली इस दे उलट बी समझी लैओ। पवित्तर कुरआन ते सिर्फ एह गल्ल आखदा ऐ जे जेहके नेकियें च मशूर होन उंदे उप्पर व्यभिचार दा दोश नेई लाओ, की जे एह गल्ल बुदिध संगत ऐ जे नेक मड़द ते नेक जनानियां शुभ कर्म गै करडन।

जाओ तां तुस बापस आई जाओ, एह थुआड़े आस्तै अत्त गै बेहतर होग, ते अल्लाह थुआड़े कम्मैं गी भलेआं जानदा ऐ ॥ 29 ॥

थुआड़े आस्तै ऐसे घरें च दाखल होना पाप नेई जिंदे च कोई नेई रौहदा होऐ ते थुआड़ा समान उंदे च पेदा ऐ ते अल्लाह उसी बी जानदा ऐ जिसी तुस जाहर करदे ओ ते उसी बी जिसी तुस छपालदे ओ ॥ 30 ॥

तूं मोमिनें कन्नै आखी दे जे ओह अपनी नजरं नीमियां रक्खा करन ते अपने गुप्त अंगें दी पहाजत करा करन, एह उंदे आस्तै बड़ी पवित्रता दा मूजब (साधन) होग। जे किश ओह करदे न अल्लाह उसी चंगी चाल्ली जानदा ऐ ॥ 31 ॥

ते मोमिन औरतें गी आखी दे जे ओह बी अपनी नजरं नीमियां रक्खा करन ते अपने गुप्त अंगें दी रक्षा करा करन ते अपनी खूबसूरती गी जाहर नेई करा करन सवाए उसदे जो मजबूरी ते बे-बसी कन्नै अपनै-आप जाहर¹ होई जा ते ओह अपने दपट्टें गी छत्तियें उप्परा फेरियै उनेंगी खट्टियै लपेटा करन, (यानी दपट्टे कन्नै खट्टी लै करन), ते ओह सिर्फ अपने पतियें (खसमैं), अपने बब्बें जां अपने घरै आहल्लें दे बब्बें (सौहरे) जां अपने पुत्तरें जां अपने घरै आहल्लें दे पुत्तरें (सकूतरें) जां अपने भ्राएं जां अपने भ्राएं दे पुत्तरें (भतरीयें) जां अपनी भैनें दे पुत्तरें (भनैऽ) जां अपने जैसी जनानियें जां जिंदे घरैआहले उंदे सज्जे हत्थ होए दे न जां ऐसे मतैहत मडदें पर जो अजैं जुआन नेई होए दे जां ऐसे बच्चें पर जिनें गी अजैं जनानियें दे खास सरबंधें दा

بِمَا تَعْمَلُونَ عَلَيْهِمُ ۝

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتًا
غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَكُمْ وَاللَّهُ
يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَعْضُوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ
وَيَحْفَظُوا أَرْوَاحَهُمْ ذَلِكَ أَرَادَ لَهُمْ
إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ۝

وَقُلْ لِلْمُؤْمِنَاتِ يَحْضُنْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ
وَيَحْفَظْنَ أَرْوَاجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ
زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ
بِحِجْرِهِنَّ عَلَى جُجُوبِهِنَّ وَلَا يُبْدِينَ
زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُوثِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ
أَوْ آبَاءَ بُعُوثِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِ
بُعُوثِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي إِخْوَانِهِنَّ
أَوْ بَنِي أَخَوَاتِهِنَّ أَوْ نِسَائِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ
أَيْمَانُهُنَّ أَوِ الشَّعْبِ غَيْرِ أُولِي الْأَرْبَابَةِ

1. जियां कद्द ते मुट्टा जां पतलापन।

इलम नेई हासल होए दा होए, अपनी खबसूरती जाहर करी सकदियां न (ते इंदे अलावा कुसै पर बी जाहर नेई करन) ते अपने पैरें गी (जोरें धरती पर) इस आस्तै नेई पटका करन जे ओह चीज जाहर होई जा जिसी ओह अपनी खबसूरती बिच्चा छपाला करदियां होन, ते हे मोमिनो! सारे दे सारे अल्लाह पासै रुजूअ (झुका) करो तां जे तुस कामयाब होई जाओ ॥ 32 ॥

ते तुंदे बिच्चा जो बिधवां न ते जो थुआड़े अपने दासै जां दासियै बिच्चा नेक होन उंदे ब्याह कराई देआ करो। जेकर ओह गरीब न तां अल्लाह अपनी किरपा कनै उनेंगी धनवान बनाई देग ते अल्लाह बौहत बधी-चढ़ियै देने आहला (ते) बौहत जानने आहला ऐ ॥ 33 ॥

ते चाही दा ऐ जे ओह लोक जो नकाह करने दी तफकीक नेई रखदे ओह पवित्रता अखत्यार करन इत्थें तक जे अल्लाह उनेंगी धनवान बनाई देऐ। थुआड़े दासै बिच्चा जेहके लोक मुकातबत (सुतंत्रता दे समझोते) दी मांग करन जेकर तुस उंदे च भलाई¹ दिक्खो तां उंदे कनै मुकातबत करी लैओ ते (जेकर ओहदे कश पूरा धन नेई होऐ तां) जेहका धन तुसेंगी अल्लाह नै दिते दा ऐ ओहदे बिच्चा किश धन देई (उंदी सुतंत्रता ममकन बनाई) देओ ते तुस अपनी दासियै गी व्यभिचार आस्तै मजबूर नेई करो, जेकर ओह पवित्र² रौहना

مِنَ الرِّجَالِ أَوْ الظُّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَى عَوْرَتِ النِّسَاءِ وَلَا يَصْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِنْ زِينَتِهِنَّ ۗ وَتَوَوُّؤُا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيَّةَ الْمُوْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

وَأَنْكِحُوا الْأَيَامَىٰ مِنْكُمْ وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ ۗ إِنْ يَكُونُوا فُقَرَاءَ يُعْنِهِمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝

وَلَيْسَتَعَفِيفِ الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّىٰ يُعْنِيَهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۗ وَالَّذِينَ يَبْتِغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا مَكَتَ آيَاتُكُمْ فَكَأَيُّؤُمُهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۗ وَأَتَوْهُم مِّنْ مَّالِ اللَّهِ الَّذِي آتَاكُمْ ۗ وَلَا تُكْرِهُوا فَتِيَّتَكُمْ عَلَى الْبِعَاءِ

1. जिसलै जे ओह धन लुटाने आहले ते उसदा दुरुपयोग करने आहले नेई होन, जां अवारा ते कामी/बदचलन नेई होन, पर जेकर मालक इस गल्ला आस्तै नेई होऐ तां मुकातबत चाहे आहला दास क्राजी (न्यायधीश) द्वारा सुतंत्रता हासल करी सकदा ऐ, की जे सुतंत्रता उसदा हक ऐ।
2. जेकर दासियें दी इच्छा ब्याह करने दी होऐ तां उनेंगी इस गल्ला थमां नेई रोको, की जे ब्याह थमां रोकने दा नतीजा पापाचार ते व्यभिचार निकलग।

चांहदियां होन तां जे तुस एहदे राहें संसारक¹ जीवन दा समान किट्ठा करो ते जेहका उनेंगी मजबूर करै तां अल्लाह उनें जनानियें दी मजबूरी दे बा'द बौहत बख्शाने आह्ला ते बार-बार रेहम करने आहला? ऐ (ओह उनें जनानियें गी नेई पकड़ग) ॥ 34 ॥

ते असें थुआड़े पर खु'ल्लम-खु'ल्ले नशान उतारे दे न ते जेहके लोक तुंदे थमां पैहलें होई चुके दे न उंदे हालात बी ब्यान कीते दे न ते संयमियें आसतै नसीहतें आहली गल्लां बी ब्यान कीती दियां न ॥ 35 ॥ (रकू 4/10)

अल्लाह गासैं दा बी नूर ऐ ते धरती दा बी। उसदे नूर दा विवरण³ एह ऐ जे जियां इक तौकड़ा होऐ जेहदे च इक दियाया पेदा होऐ (ते ओह) दियाया इक शीशे दे ग्लोब दे थल्लै (बिच्च) होऐ (ते) ओह ग्लोब ऐसा चमकीला होऐ आखो ओह इक चमकदा सतारा ऐ (ते) ओह (दियाया) इक ऐसे बरकत आहले बूहटे (जैतून) दा तेल (पाइयै बालेआ) गेदा होऐ जे ओह (बूहटा⁴) नां ते पूर्वी होऐ ते नां गै पच्छमी। ममकन ऐ जे उसदा तेल भामें उसी अगिन नेई बी छहोई होऐ/भड़की उट्टै (एह दियाया) बड़े-सारे नूरें (ज्योतियें) दा पुंज (सेही होंदा) ऐ अल्लाह अपने नूर दी राह

إِنْ أَرَدْنَا تَحْصِنًا لَتَبْتَغُوا عَرَصَ
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَنْ يُكْرِهْنَنَّ فَإِنَّ
اللَّهَ مِنْ بَعْدِ إِكْرَاهِهِمْ غَفُورٌ رَحِيمٌ ⑤

وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُبَيِّنَاتٍ وَمَثَلًا
مِّنَ الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً
لِّلْمُتَّقِينَ ⑥

اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ① مَثَلُ
نُورِهِ كَمِشْكُوَةٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ ②
فِي رُجَاةٍ ③ الرَّجَاةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ
دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِن شَجَرَةٍ مُّبَارَكَةٍ زَيْتُونَةٍ
لَّا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ ④ يَكَادُ رِيحُهَا
يُضِيءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ نُورٌ عَلَى
نُورٍ ⑤ يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَن يَشَاءُ ⑥
وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ ⑦ وَاللَّهُ

1. यानी पराई जनानियें गी दासियां बनाइयै अपने घरें च नौकरें दा कम्म नेई लैओ तां जे तुस इस चाल्ली उनेंगी अपने नौकर बनाई रखखो।
2. कुर'आन मजीद दा आदेश ऐ जे दासियें दा ब्याह करो, पर जेकर मालक इस च अड़चन बनदा ऐ तां ओह गुनाहगार होग नां के औरत।
3. यानी जो शिक्षा अल्लाह आहले पासेआ औंदी ऐ ओहदा दूई शिक्षाएं कनै मकाबला करना इयां गै ऐ जियां इक मिट्टी दे दिव्ये दा इक रिफ्लैक्टर जां प्रतिबिंबक लैय कनै।
4. पूरब ते पच्छम कनै सरबंध नेई रखखने आहले बूहटे दा मतलब ऐसी शिक्षा ऐ जेहदे च नां ते पूरब दे रौहने आहलें गी प्रधानता दिती गेदी होऐ ते नां पच्छम बासियें दा पक्ख लैता गेदा होऐ। एह शिक्षा सिर्फ कुर'आन मजीद दी गै ऐ।

उनेंगी गै दसदा ऐ जिनेंगी ओह चांहदा ऐ ते अल्लाह लोकें आस्तै (सारी जरूरी) गल्लां ब्यान करदा ऐ। ते अल्लाह हर इक चीजै गी भलेआं जानदा ऐ ॥ 36 ॥

एह दिख्ये! ऐसे घरें च न जे अल्लाह नै उनेंगी उच्चा कीते जाने दा आदेश देई दिते दा ऐ ते उंदे च उस (अल्लाह) दा नांS लैता जंदा ऐ ते ओहदी स्तुति दा गुण-गान कीता जंदा ऐ, दिनै बी ते राती बी ॥ 37 ॥

किश लोक जिनें गी, अल्लाह दे जिकर कनै ते नमाज दे कायम करने कनै ते जकात देने कनै, नां बपार ते नां सौदा बेचना गाफल करदा ऐ ओह उस ध्याड़े थमां डरदे न जेहदे च दिल उलटोई जाडन ते नजरां परतोई जाडन ॥ 38 ॥

नतीजा एह होग जे अल्लाह उनेंगी उंदे कर्म दा बेहतर थमां बेहतर सिला प्रदान करग ते उनेंगी अपनी किरपा कनै (धन ते जन यानी संतान) बाधा पाग ते अल्लाह जिसी चांहदा ऐ बिना स्हाब कीते दे गै रिशक दिंदा ऐ ॥ 39 ॥

ते ओह लोक जिनें कुफर कीता उंदे कर्म इक बियाबान सराब² आहला लेखा न जिसी प्यासा पानी समझदा ऐ इत्थें तक जे जिसलै ओह ओहदे लागै आई पुजदा ऐ तां ओह उसी किश बी नेई पांदा ते अल्लाह गी उसदे लागै दिक्खी लैंदा ऐ उसलै अल्लाह उसी उसदा पूरा-पूरा स्हाब चकाई दिंदा ऐ ते अल्लाह बौहत जल्दी स्हाब चकाने आहलें बिच्चा ऐ ॥ 40 ॥

بِكُلِّ شَيْءٍ عَلَيْهِ ۝

فِي مَبُوتٍ أَدَانَ اللَّهُ أَنْ تَرْفَعَ وَيُذَكِّرَ فِيهَا
اسْمُهُ لِيَسْبَحَ لَهُ فِيهَا بِالْعُدْوِ وَالْأَصَالِ ۝

رَجَالٌ لَا تُلْهِيمُهُمْ تِجَارَةً وَلَا بَيْعًا عَنْ
ذِكْرِ اللَّهِ وَاقَامِ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ
يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ
وَالْأَبْصَارُ ۝

لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا
وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ يَرْزُقُ
مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ
بِقِيعَةٍ يَحْسَبُهُ الظَّمْآنُ مَاءً ۖ حَتَّىٰ إِذَا
جَاءَهُ لَمْ يَجِدْهُ سَيْئًا ۖ وَوَجَدَ اللَّهُ عِنْدَهُ
فَوْقَهُ حِسَابَهُ ۗ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

1. अल्लाह दे नूर दा प्रमाण एह होग जे जिनें घरें च ओह नूर अर्थात् कुरआन मजीद दी शिक्षा होग ओह संसार च सम्मान हासल करडन ते उंदे च हर बेलै अल्लाह दी उपासना कीती जंदा रौहग।

2. रेतें दा ओह मदान जित्थें पानी दा धोखा होंदा ऐ। मृग तृष्णा।

जां (उनें काफरें दे कर्में दी हालत) उनें न्हेरें आंगर ऐ जो इक गैहरे समुंदर पर छाए दे होंदे न जेहदियां लैहरां उट्टा करदियां होंदियां न ते लैहरें उप्पर होर लैहरां उट्टा करदियां होंदियां न ते उंदे सारें उप्पर इक बदल होंदा ऐ एह् ऐसे न्हरे होंदे न जो इक-दूए दे उप्पर छाए दे होंदे न। जिसलै इन्सान अपना हत्थ कढदा ऐ तां कोशश करने दे बावजूद बी उसी दिक्खी नेई सकदा ते अल्लाह जिसी नूर (ज्योति) प्रदान नेई करै उसगी कुतूँ दा बी नूर नेई मिलदा ॥ 41 ॥ (रुकू 5/11)

क्या तूं दिखदा नेई जे अल्लाह ओह् ऐ जे जेहके बी गासैं ते धरती च रौहदे न सारे उससै दी स्तुति (गुण गान) करदे न ते उससै दे सामनै पैंछी पंक्ति-बदथ होइयै हाजर न। उंदे बिच्चा हर इक (अपनी-अपनी पैदाइश दे मताबक) अपनी नमाज ते अपनी उपासना गी जानदा ऐ ते जे किश ओह् करदे न अल्लाह उसी भलेआं जानदा ऐ ॥ 42 ॥

ते गासैं ते धरती दी बादशाहत अल्लाह दी गै ऐ ते अल्लाह कश गै सारें परतियै बापस जाना ऐ ॥ 43 ॥

क्या तोह् नेई दिक्खेआ जे अल्लाह बदलें गी आस्ता-आस्ता हिक्कियै (खिद्दियै) आहनदा ऐ। फी उनेंगी इक-दूए कनै मलाई दिंदा ऐ ते फी तैह दर तैह बनाई दिंदा ऐ फी तूं दिक्खना ऐं जे उंदे बिच्चा बरखा ब'रन लगदी ऐ ते ओह् बदलें बिच्चा बड़्डी-बड़्डी चीजां सुटदा ऐ जिंदे बिच्चा किश ऐहनू दे गोलें आंगर होंदियां न ते उनेंगी जिस (कौम) तक चांहदा ऐ पुजाई दिंदा ऐ ते जेहदे थमां चांहदा ऐ रोकी लैंदा ऐ करीब होंदा (ममकन) ऐ जे उसदी बिजली दी रोशनी किश अक्खीं गी अ'न्ना करी देऐ ॥ 44 ॥

أَوْ كُظِّمَتْ فِي بَحْرٍ لَّجِيٍّ يَحْشَاهُ مَوْجٌ
مِّنْ فَوْقِهِ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهِ سَحَابٌ
ظَلَمْتَ بَعْضَهَا فَوْقَ بَعْضٍ ۖ إِذَا
أَخْرَجَ يَدَهُ لَمْ يَكْذِبْهَا وَمَنْ لَّمْ
يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِنْ نُّورٍ ۝

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرِ أَصْفَتْ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ
صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا
يَفْعَلُونَ ۝

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَإِلَى
اللَّهِ الْمَصِيرُ ۝

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُرْجِي سَحَابًا لَّمْ يُؤَلَّفْ
بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ
يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ ۗ وَيُنزِلُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ
جِبَالٍ فِيهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ
وَيَصْرِفُهُ عَنِ مَنْ يَشَاءُ ۗ يَكَادُ سَنَابِرُهُ
يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ۝

अल्लाह राती ते दिनें गी चक्कर दिंदा (घुमांदा) रौंहदा ऐ। ओहदे च अक्ली आहले लोकें आस्तै बड़ी इबरत (शिक्षा/नसीहत) ऐ ॥ 45 ॥

ते अल्लाह नै हर चलने आहले जानवर गी पानी थमां पैदा कीते दा ऐ इस आस्तै किश ते ऐसे न जेहके डिड्डै दे भार चलदे न ते किश नेह न जेहके (अपने) द'ऊं पैरें पर चलदे न ते किश ऐसे न जेहके च'ऊं पैरें पर चलदे न। अल्लाह जो चांहदा ऐ पैदा करदा ऐ ते अल्लाह हर इक गल्ला गी करने च समर्थ ऐ ॥ 46 ॥

असें खु'ल्लम-खु'ल्ले नशान उतारे दे न ते अल्लाह जिसी चांहदा ऐ सिद्धे रस्तै पासै हदायत दिंदा ऐ ॥ 47 ॥

ते ओह आखदे न अस अल्लाह ते ओहदे रसूल पर ईमान ल्याए, ते असें आज्ञा पालन करने दी कसम खाई लैती। फी उंदे बिच्चा इक गरोह (टोल्ला) उसदे बाद (अपनी प्रतिज्ञा थमां) फिरी जंदा ऐ। ते ऐसे लोक कदें बी मोमिन नेई ॥ 48 ॥

ते जिसलै उनेंगी अल्लाह ते उसदे रसूल पासै इस आस्तै बुलाया जंदा ऐ तां जे ओह उंदे बशकार फैसले करै तां उंदे बिच्चा इक गरोह मूंह फेरन लगादा ऐ ॥ 49 ॥

ते जेकर कोई गल्ल उंदे हक्क च होऐ तां ओह फौरन आज्ञा-पालन दा प्रदर्शन करदे होई आई जंदे न ॥ 50 ॥

क्या उंदे दिलें च कोई रोग ऐ जां ओह भरमै च पेदे न जां ओह डरदे न जे अल्लाह ते उसदा रसूल उंदे उप्पर अत्याचार करग ? ऐसा कदें बी नेई होई सकदा बल्के ओह आपू गै अत्याचारी न ॥ 51 ॥ (रकू 6/12)

يُقَلِّبُ اللَّهُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ۝٤٥

وَاللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِّن مَّاءٍ ۖ فَمِنْهُمْ مَّن يَّمْشِي عَلَىٰ يَمْسِيٍّ وَعَلَىٰ ظَنَبِهِ ۗ وَمِنْهُمْ مَّن يَّمْشِي عَلَىٰ رِجْلَيْنِ ۗ وَمِنْهُمْ مَّن يَّمْشِي عَلَىٰ أَرْبَعٍ ۗ يَخْلُقُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝٤٦

لَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ مُّبِينَاتٍ ۗ وَاللَّهُ يَهْدِي مَن يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝٤٧

وَيَقُولُونَ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَأَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ مِّن بَعْدِ ذَلِكَ ۗ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ۝٤٨

وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُونَ ۝٤٩

وَإِنْ يَكُنْ لَهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوا إِلَيْهِ مُذْعِنِينَ ۝٥٠

أَفِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ أَمْ ارْتَابُوا أَمْ يَخَافُونَ أَنْ يَحْيِفَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولُهُ ۗ بَلْ أُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝٥١

जिसलै मोमिन अल्लाह ते उसदे रसूल पासै बुलाए जान तां जे ओह उँदै बशकार फैसला करन तां उँदा जवाब एह होंदा ऐ जे असें सुनेआ ते असें मन्नी लैता ते ऊऐ लोक कामयाब होंदे आए न ॥ 52 ॥

ते जेहके लोक अल्लाह ते उसदे रसूल दी आज्ञा दा पालन करन ते अल्लाह थमां डरन ते ओहदे आस्तै संयम धारण करन, ओह कामयाब होई जंदे न ॥ 53 ॥

ते ओह लोक अल्लाह दियां पक्कियां कसमां खंदे न जे जेकर तू उनेंगी आदेश देरें तां ओह फौरन घरें थमां निकली जाडन। तुस आखी देओ जे कसमां नेई खाओ। साढ़ा हुकम ते थुआड़े आस्तै सिर्फ आज्ञा-पालन करने दा ऐ जिसी सधारण तौरा पर आज्ञापालन आखदे न। यकीनन अल्लाह उस दी जो तुस करदे ओ खबर रखदा ऐ ॥ 54 ॥

तू आख जे अल्लाह ते उसदे रसूल दी आज्ञा दा पालन करो। इस लेई जेकर ओह मूह मोड़ी लैन तां उस (रसूल) पर सिर्फ उसदी जिम्मेदारी ऐ जो उसदे जिम्मे लाया गेदा ऐ ते थुआड़े उप्पर उसदी जिम्मेदारी ऐ जो थुआड़े जिम्मे लाया गेदा ऐ ते जेकर तुस उसदी आज्ञा दा पालन करो तां हदायत पाई लैगे ते रसूल दे जिम्मे ते गल्लै गी तफसील कनै पुजाना ऐ ॥ 55 ॥

अल्लाह नै थुआड़े बिच्चा ईमान आहनने आहलें ते परिस्थिति दे मताबक कर्म करने आहलें कनै प्रतिज्ञा कीती दी ऐ जे ओह उनेंगी धरती पर खलीफा¹ (अधिनायक) बनाई देग जिस

إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَنْ يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۗ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥٢﴾

وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَخْشَ اللَّهَ وَيَتَّقْهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٥٣﴾

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجْنَ ۗ قُلْ لَا تُفْسِمُوا طَاعَةَ مَعْرُوفَةً ۗ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٥٤﴾

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۗ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ۗ وَإِنْ تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا ۗ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٥٥﴾

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَيَسَّخِرَنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا

1. शब्द ते सधारण ऐ, पर अर्थ एह ऐ जे तुँदे बिच्चा अधिनायक नयुक्त करग। एह अरबी भाशा दा निजम ऐ जे कदें शब्द ते सधारण होदें न, पर उँदे कनै सरबंधत (अभीष्ट) इक बशेश व्यक्ति होंदा ऐ ते कदें इक व्यक्ति दा बर्णन होंदा ऐ, पर ओहदा अर्थ इक संप्रदाय होंदा ऐ।

चाल्ली इंदे थमां पैहलके लोकें गी खलीफा¹ बनाया हा, ते जो धर्म उसने उंदे आस्तै पसंद कीते दा ऐ उसी ओह उंदे आस्तै ब्रिदता कनै कायम करी देग ते ओह उंदे खौफ दी हालत दे बा'द उंदे आस्तै शांती दी हालत बदली देग। ओह मेरी अबादत करडन ते कुसै गी बी मेरा शरीक नेई बनाडन ते जो लोक उसदे बा'द बी इन्कार करडन ओह ना-फरमानें बिच्चा करार दित्ते जाडन ॥ 56 ॥

ते तुस सारे नमाजें गी कायम करो ते जकात देओ ते इस रसूल दा अनुसरण करो तां जे तुंदे उप्पर देआ कीती जा ॥ 57 ॥

(हे श्रोता!) एह ख्याल कदें निं कर जे इन्कार करने आहले लोक अपने उपाएं कनै असंगी धरती पर असमर्थ बनाई देडन। उंदा ठकाना ते नरक ऐ ते ओह बौहत बुरा ठकाना ऐ ॥ 58 ॥ (रुकू 7/13)

हे मोमिनो! चाही दा ऐ जे ओह लोक जिंदे मालक थुआड़े सज्जे हत्थ न (अर्थात् दास-दासियां) ते ओह लोक जो अजें जुआन-गभरू नेई होए, ओह त्रै बार आज्ञा लेइयै अंदर आवा करन। बडले दी नमाज थमां पैहलें ते जिसलै तुस दपैहरीं बेलै (अराम करने आस्तै) अपने कपड़े उतारी दिंदे ओ ते इशा (राती) दी नमाज दे बा'द। एह त्रै बेलै थुआड़े परदा करने दे न। इनें त्र'ऊं बेलें दे बा'द (घरै दे अंदर औने च) नां तुंदे पर कोई

اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَ لِمَكَّنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَى لَهُمْ وَ لِيَبْدِئَهُمْ مِنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۗ وَ يَعْبُدُونَنِي ۚ لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا ۗ وَ مَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٥٦﴾

وَ أَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَ آتُوا الزَّكَاةَ وَ اطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٥٧﴾

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۗ وَ مَا لَهُمُ النَّارُ ۗ وَ لَيْسَ الْمَصِيرُ ﴿٥٨﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا الْيَسْتَأْذِنُكُمُ الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۗ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ۗ مِنْ قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَصْعُونَ شِيبَاكُمْ ۗ مِنْ الظُّهَيْرَةِ وَ مِنْ بَعْدِ صَلَاةِ الْحِشَاءِ ۗ ثَلَاثَ عَوْرَاتٍ لَكُمْ ۗ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا

1. पैहले लोकें च इक व्यक्ति कनै सरबंध रक्खने आहली खिलाफत ही जियां हजरत मसीह ते हजरत मूसा दे बा'द। इस आस्तै इस उदाहरण कनै इस आयत दा बिशे स्पष्ट होई जंदा ऐ जे एह खिलाफत चुनाएं राहें होग ना के जन्म-जन्मांतर। ईसाइयें च ते खिलाफत जन्म-जन्मांतर होई गै नेई सकदी, की जे उंदे बड्डे पादरियें आस्तै ते ब्याह करना रूहाम ऐ ते यहूदियें च खिलाफत ज्यादातर ईशवाणी दे अधार पर कायम होई जियां यूशा, हजरत इब्राहीम दे खलीफा होए। इस्सै चाल्ली दाऊद बी हजरत मूसा दे खलीफा होए ते उनेंगी ईशवाणी होंदी ही।

पाप ऐ ते नां उंदे उप्पर कोई पाप ऐ, की जे तुंदे बिच्चा किश लोक अपनी जरूरता मताबक कदें-कदें दूरं कश औंदे-जंदे न। इसै चाल्ली अल्लाह अपने हुकम खोहली-खोहली बर्णन करदा ऐ ते अल्लाह बौहत जानने आहला ते बौहत हिक्मत आहला ऐ ॥ 59 ॥

ते जिसलै थुआड़े बच्चे जुआन होई जान तां ओह उसै चाल्ली आज्ञा लेई लै करन जिस चाल्ली उंदे शा पैहलें (बड्डे) लोक आज्ञा लेंदे होंदे हे। इसै चाल्ली अल्लाह थुआड़े आसतै अपने हुकम ब्यान करदा ऐ ते अल्लाह बौहत जानने आहला ते हिक्मत आहला ऐ ॥ 60 ॥

ते ओह जनानियां¹ जेहिकयां बुड्डियां होई गेदियां न ते ब्याह दे काबल नेई, उंदे पर कोई पाप नेई जे ओह अपने कपड्डे उतारियै रक्खी देन, इस चाल्ली जे अपनी खूबसूरती गी प्रकट नेई करा करन ते उंदा बचेआ रौहना उंदे आसतै चंगा ऐ ते अल्लाह बौहत सुनने आहला ते बौहत जानने आहला ऐ ॥ 61 ॥

अ^न-नें,² लंगडें, रोगियें ते तुंदे उप्पर कोई रोक नेई जे अपने घरें थमां, जां अपने बब्ब-दादें दे घरें थमां जां अपनी मौरीं दे घरें (ननेहाल) थमां जां अपने ध्राएं दे घरें थमां जां अपनी भैनें दे घरें थमां जां अपने चाचें दे घरें थमां, जां अपनी बूरें दे घरें थमां जां अपने मामें दे घरें थमां जां अपनी मासियें दे घरें थमां जां

عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَهُنَّ طُطُوفُونَ عَلَيْكُمْ
بَعْضُكُمْ عَلَى بَعْضٍ ط كَذَلِكَ يبينُ اللهُ
لَكُمْ الْآيَاتِ ط وَاللهُ عَلَيْهِمْ حَكِيمٌ ﴿٥٩﴾

وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ
فَأَيْسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِهِمْ ط كَذَلِكَ يُبينُ اللهُ لَكُمْ آيَاتِهِ
ط وَاللهُ عَلَيْهِمْ حَكِيمٌ ﴿٦٠﴾

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ الَّتِي لَا يَرِجُونَ
نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَنْ يَضَعْنَ
شِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ ط وَأَنْ
يَسْتَغْفِنَ حَيْرَ لَهُنَّ ط وَاللهُ سَمِيعٌ
عَلِيمٌ ﴿٦١﴾

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرَجٌ وَلَا عَلَى
الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ
حَرَجٌ وَلَا عَلَى أَنْفُسِكُمْ أَنْ تَأْكُلُوا مِنْ
بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ
أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوتِ

1. बुड्डी जनानियें आसतै पड्डा करना जरूरी नेई, पर जेकर उनेंगी बाहर जाने दी कोई मजबूरी नेई होऐ ते ओह अपनी मरजी कनै घर गै बैठी दियां र'वा करन तां एह गल्ल उंदे आसतै अल्लाह दे लागै चंगी ऐ।
2. यहूदियें दी धार्मिक शिक्षा मताबक अ^न-नें, लंगडे ते दूर शरीरक रोगी पलीत (ना-पाक) समझे जंदे हे। कुरआन नै उसदी गलती गी जाहर कोते दा ऐ।

जिंदे समान दा प्रबंध तुस करदे ओ जां अपने मितरें दे घरें थमां कोई चीज लेइयै खाई लैओ। (इस्सै चाल्ली) तुंदे उप्पर कोई पाप नेई जे तुस सारे मिलियै खाओ जां बक्ख-बक्ख खाओ। इस लेई जिसलै घरें च प्रवेश करन लगो तां अपने सरबबंधियें ते मितरें गी सलाम करी लै करो। एह अल्लाह पासेआ बड़ा बरकत आहला ते पवित्तर अशीरबाद ऐ। इस्सै चाल्ली अल्लाह अपने हुकम खोहली-खोहली सुनांदा ऐ तां जे तुस समझदारी थमां कम्म लैओ ॥ 62 ॥ (रुकू 8/14)

सिर्फ ऊ'ऐ लोक मोमिन खुआने दे हकदार न जो अल्लाह ते उसदे रसूल उप्पर ईमान आहनदे न ते जिसलै कुसै कौमी कम्मै आस्तै उस (रसूल) कश बैठे दे होन तां उट्टियै नेई जंदे जिना चिर जे उस (रसूल) थमां आज्ञा नेई लेई लैन। ओह लोक जेहके आज्ञा लेइयै जंदे न ऊऐ अल्लाह ते उसदे रसूल उप्पर (सच्चा) ईमान (शरधा) रखदे न। इस आस्तै जिसलै ओह अपने कुसै खास कम्मै आस्तै तेरे थमां अजाजत लैन तां उंदे बिच्चा जिंदे बारै तू चाहें उनेंगी अजाजत देई दे। ते अल्लाह थमां उंदे आस्तै माफी मंग। ते अल्लाह यकीनन बड़ा बख्शने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 63 ॥

(हे मोमिनो!) एह नेई समझो जे रसूल दा तुंदे बिच्चा कुसै गी बुलाना इयां गै ऐ जियां के तुंदे बिच्चा कुसै इक दा कुसै दूए गी बुलाना। अल्लाह उनें लोके गी जानदा ऐ जेहके तुंदे बिच्चा (सभा बिच्चा) बल्लें जनेही नस्सी जंदे न। इस आस्तै चाही दा ऐ जे जेहके लोक इस रसूल दी आज्ञा दा बरोध

أَحْوَيْتُمْ أَوْ يَبُوتِ أَعْمَالِكُمْ أَوْ يَبُوتِ
عَمَلِكُمْ أَوْ يَبُوتِ أَوْ يَبُوتِ أَوْ يَبُوتِ
خَلْقِكُمْ أَوْ مَا مَلَكَتُمْ مَفَاتِحَهُ أَوْ
صَدِّيقِكُمْ ۗ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ
تَأْكُلُوا جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا ۚ فَإِذَا دَخَلْتُمْ
بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ ۗ تَحِيَّةٌ مِّنْ
عِنْدِ اللَّهِ مُبْرَكَةٌ طَيِّبَةٌ ۚ كَذَلِكَ يَبَيِّنُ
اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٦٢﴾

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ
وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَى أَمْرٍ
جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا حَتَّى يَسْتَأْذِنُوهُ ۗ
إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ
الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۗ
فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأَذَنْ
لِمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهُ ۗ
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٣﴾

لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ
كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ۗ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ
الَّذِينَ يَسْتَلْلُونَ مِنْكُمْ لِيُؤَاذِنَهُ
فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ

करदे न इस गल्ला थमां डरन जे उंदे पर अल्लाह पासेआ कोई बिपता नेई आई जा जां उनेंगी दर्दनाक अजाब नेई पुज्जै ॥ 64 ॥

सुनो! जो कुछ गासैं जां धरती च ऐ, सब अल्लाह दा गै ऐ। तुस जिस (थाहरा) पर (खड़ोते दे) ओ उस गी बी अल्लाह गै जानदा ऐ ते जिस दिन ओह लोक अल्लाह पासै परताए जाडन तां ओह उनेंगी उंदे कर्मै दा हाल दस्सग ते अल्लाह हर इक चीजै गी भलेआं जानदा ऐ ॥ 65 ॥ (रुकू 9/15)

أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٥﴾

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ وَيَوْمَ
يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيَنْبِئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا
وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٥﴾

०००

سُورَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ ثَمَانٍ وَسَبْعُونَ آيَةً وَسِتَّةٌ رُكُوعَاتٌ

सूर: अल्-फ़ुक्रान

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां दहत्तर आयतां ते छे रुकू न।

में अल्लाह दा नांs लेइयै (पढ़ना) जो बे-
हद कर्म करने आह्ला ते बार-बार रैहम करने
आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

ओह सत्ता बड़ी बरकत आहली ऐ जिसनै
अपने भगतै उप्पर फ़ुक्रान¹ उतारेआ ऐ तां जे
ओह सारे ज्हाँनै आसतै सचेत करने आह्ला
बनै ॥ 2 ॥

ऊऐ (सत्ता) ऐ जिसदे अधिकार च गासैं ते
धरती दी बादशाही ऐ ते जिसनै कोई पुत्र नेई
बनाया ते उसदी बादशाही च कोई शरीक नेई
ते जिसनै हर इक चीज पैदा कीती दी ऐ, फी
ओहदे आसतै इक अंदाजा निश्चत कीते दा ऐ
॥ 3 ॥

ते इनें लोकें उस (अल्लाह) दे सिवा होर
उपास्य बी बनाई रखे दे न, जेहके किश बी
पैदा नेई करी सकदे हालांके ओह आपू पैदा
कीते गेदे न ते ओह नां अपने आसतै कुसैगी
हानी ते नां लाभ पुजाने दी समर्थ रखे दे न, नां
मौत दे मालक न, नां जीवन दे ते नां मुड़ियै
जी उट्टने दे ॥ 4 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَى عَبْدِهِ
لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا ①

الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَمْ
يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي
الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَرَهُ
تَقْدِيرًا ①

وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ إِلَهًا لَّا يَخْلُقُونَ
شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ وَلَا يَمْلِكُونَ
لَّا تَنْفُسُهُمْ صَرًّا وَلَا تَفْعًا وَلَا يَمْلِكُونَ
مَوْتًا وَلَا حَيَاةً وَلَا نُشُورًا ①

1. ऐसी शिक्षा जो सच्च ते झूठ च फर्क साफ करी दिंदी ऐ।

ते काफ़र लोक आखदे न जे एह ते नि'रा इक झूठ ऐ जो उसनै घड़ी लेदा ऐ ते उसी घड़ने च इक होर कौम¹ नै उसदी मदाद कीती दी ऐ। इस लेई इनें लोकें (एह गल्ल आखियै) बौहत बड़डा जुलम कीता ऐ ते बौहत बड़डा झूठ बोल्लेआ ऐ ॥ 5 ॥

ते ओह आखदे न जे एह (कुर'आन) ते पैहले लोकें दियां क्हानियां न, जो इसनै लखाई लेदियां न ते हून ओह संजां-भ्यागा ओहदे सामनै पढ़ियै सुनाइयां जंदिंयां न (तां जे ओह कुर'आन चंगी चाल्ली लिखी लै) ॥ 6 ॥

तूं आखी दे इस कुर'आन गी ते उस (अल्लाह) नै उतारे दा ऐ जो गासैं ते धरती दे भेतें गी जानदा ऐ। ओह बौहत माफ करने आह्ला ते बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 7 ॥

ते ओह आखदे न जे इस रसूल गी केह होई गोदा ऐ जे ओह खाना बी खंदा ऐ ते बजारें च बी घूमदा-फिरदा ऐ। एहदे पर फ़रिश्ता की नेई उतारेआ गोआ जो एहदे कनै खड़ोइयै लोकें गी सचेत करदा? ॥ 8 ॥

जां उस पर कोई खजान्ना उतारेआ जंदा जां ओहदे कश कोई बाग होंदा जेहदा फल ओह खंदा ते जालम आखदे न जे तुस ते सिर्फ इक ऐसे आदमी दे पिच्छें चला करदे ओ जिसी खाना² खलाया जंदा ऐ ॥ 9 ॥

दिक्ख! एह तेरे बरै कनेहियां-कनेहियां गल्लां बनांदे न ते ओह गुमराह होई चुके दे न। इस

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ هَذَا إِلَّا إِفْكٌ
أَفْتَرْتَهُ وَآعَانَهُ عَلَيْهِ قَوْمٌ آخَرُونَ
فَقَدْ جَاءُوا ظُلْمًا وَزُورًا ۝

وَقَالُوا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ اكْتَتَبَهَا
فَهِيَ تَمْلَىٰ عَلَيْهِ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝

قُلْ أَنْزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

وَقَالُوا مَالِ هَذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ
وَيَمْشِي فِي الْأَسْوَاقِ ۚ لَوْلَا أَنْزَلَ إِلَيْهِ
مَلَكٌ فَيَكُونُ مَعَهُ نَذِيرًا ۝

أَوْ يُلْقَىٰ إِلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ
يَأْكُلُ مِنْهَا ۚ وَقَالَ الظَّالِمُونَ إِنْ تَتَّبِعُونَ
إِلَّا رَجُلًا مَسْحُورًا ۝

أَنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ

1. इस इलजाम दा जवाब कुर'आन मजीद च दूई ज'गा आई चुके दा ऐ जे कुर'आन जां इसदी सूर: जां इक आयत दे बराबर कोई होर शिक्षा लेई आओ ते सारे जिन्नें ते मनुक्खें गी मददी आस्तै सद्दी लैओ, तुस फी बी नकाम रौहगे ओ।
2. मूल शब्द 'मसहूरा' दा अर्थ ऐ ऐसा आदमी जिसी भोजन दिता जा यानी लोक उसी अपने फायदे आस्तै मदाद देन।

आस्तै उनेंगी (सच्ची गल्ल आखने दा) कोई रस्ता नेई सुझदा ॥ 10 ॥ (रुकू 1/16)

बौहत बरकत आहला ऐ ओह अल्लाह जो चाह तां तेरे आस्तै (उंदे आंके गेदे) उस बागै थमां बी उत्तम बाग¹ पैदा करी देऐ, जेहदे च नैहरां बगदियां होन ते तेरे आस्तै बड्डे-बड्डे भवन त्यार करी देऐ ॥ 11 ॥

सच्च एह ऐ जे एह लोक क्यामत दा इन्कार करा करदे न ते असें उस शख्स आस्तै भटकने आहले अजाब दा बंदोबस्त करी रखे दा ऐ जेहका क्यामत दा इन्कार करने आहला होऐ ॥ 12 ॥

जिसलै ओह (यानी जहन्नम) उनेंगी दूरा दिक्खग तां ओह उसदे जोश पासै (औने आहली) मसीबत दी अवाज सुनडन ॥ 13 ॥

ते जिसलै ओह उस (नरकै) दे इक तंग हिस्से च मुश्कां बनिन्यै सुट्टे जाडन तां ओह उस बेलै मौती दी कामना करडन ॥ 14 ॥

(उसलै अल्लाह दे फरिश्ते उनेंगी आखडन) अज्ज सिर्फ इक मौती दी कामना नेई बल्के बार-बार मरने दी खुआहश करो की जे तुंदे उप्पर बार-बार अजाब औने आहला ऐ ॥ 15 ॥

तूं उनेंगी आखी दे जे एह (भ्यानक अंत) अच्छा ऐ जां सदा-सदा कायम रौहने आहली जन्नत, जेहदा बा'यदा संयमिये कनै कीता गेदा ऐ। ओह उंदा (ठीक-ठीक) सिला ते आखरी ठकाना होग। ॥ 16 ॥

उनेंगी उस सुगै च जे किश ओह चाहडन मिलग। ओह ओहदे च सदा-सदा आस्तै

ع
۳

فَصَلُّوا فَلَا يَسْتَبِيحُونَ سَبِيلًا ۝

تَبَرَّكَ الَّذِي إِِنْ شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذَلِكَ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَيَجْعَلُ لَكَ فُضُورًا ۝

بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ ۖ وَأَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ۝

إِذَا رَأَوْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَرَفِيرًا ۝

وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِينَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا ۝

لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا ثُبُورًا كَثِيرًا ۝

قُلْ أَذَلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۖ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَوَصِيرًا ۝

لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ ۖ كَانَ عَلَىٰ

1. इतिहास थमां ऐसा होना सच्च सिद्ध होई चुके दा ऐ। कैसर ते किस्सा दे बाग ते उंदे राज-भवन मुसलमानों गी मिले, जेहके हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दे सधारण सेवक हे।

बास करदे रौहडन। एह इक ऐसा बा'यदा
ऐे जिसी पूरा करना तेरे रब्ब आस्तै जरूरी
ऐे ॥ 17 ॥

ते जिसलै ओह (अल्लाह) उनेंगी ते उंदे झूठे
उपास्यें गी अपने सामनै खडेरग ते फी उनेंगी
आखग जे क्या तुसैं मेरे बंदें गी गुमराह कीता
हा जां ओह आपूं गै सिद्धे रस्ते थमां भटकी
गे हे? ॥ 18 ॥

उसलै ओह परते च आखडन जे तूं पवित्रर
ऐैं। असेंगी कोई हक्क नेई हा जे अस तुगी
छोडियै कुसै दूए गी अपना कार-साज (कार्य
साधक) बनांदे, पर तोह उनें लोकें गी ते उंदे
पुरखें गी संसारक फायदे (धन-दौलत बगैरा)
बखो इत्थें तक जे उनें तेरा चेता भुलाई दिता
ते तबाह होने आहली कौम बनी गे ॥ 19 ॥

इस आस्तै (काफरें गी गलाया जाग जे दिक्खी
लैओ) इनें झूठे उपास्यें थुआड़ी गल्लें गी
झूठा सिद्ध करी दिता ऐे। इस लेई तुस अज्ज
नां ते अजाब गी हटाई सकदे ओ ते नां कोई
मदद हासल करी सकदे ओ ते तुंदे बिच्चा
जेहका कोई जालम ऐे अस उसी सख्त अजाब
देगे आं ॥ 20 ॥

ते तेरे शा पैहलें असें जिन्ने बी रसूल भजे हे,
ओह सारे दे सारे खाना खंदे होंदे हे ते बजारें
च चलदे हे। ते असें थुआड़े बिच्चा केइयें गी
केइयें आस्तै अजमैश दा साधन बनाया ऐे
(एह दिक्खने आस्तै) जे क्या तुस (मुसलमान)
सबर करदे ओ (जां नेई) ते (हे मुसलमान!)
तेरा रब्ब (हालात गी) बौहत दिक्खने आहला
ऐे ॥ 21 ॥ (रुकू 2/17)

رَبِّكَ وَعَدًّا مَّسْئُولًا ۝

وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ
اللَّهِ يَقُولُ ءَأَنْتُمْ أَصْلَلْتُمْ عِبَادِي
هَؤُلَاءِ أَمْ هُمْ صَلُّوا السَّبِيلَ ۝

قَالُوا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يُنْبِغِي لَنَا أَنْ
تَتَّخِذَ مِنْ دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِنْ
مَتَّعْتَهُمْ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا الذِّكْرَ
وَكَانُوا قَوْمًا بُورًا ۝

فَقَدْ كَذَّبْتُمْ بِمَا تَقُولُونَ فَمَا
تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا وَلَا نَصْرًا وَمَنْ
يُظْلِمُ مِنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيرًا ۝

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا
إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي
الْأَسْوَاقِ ۖ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ
فِتْنَةً ۖ أَتَصْبِرُونَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ
بَصِيرًا ۝

ते उनें लोकें आखी दित्ता जे जेहके साढ़ी मलाटी दी मेद नेई रखदे जे साढ़े पर फरिश्ते की नेई उतारे गे जां अस अपने रब्ब गी अपनी अक्खी की नेई दिखदे? उनें अपने दिलें च अपने-आपै गी बौहत बड़डा समझे दा ऐ ते शरारत च बड़े अगमें बधी गेदे न ॥ 22 ॥

(क्या एह लोक नेई जानदे जे) जिस दिन ओह फरिश्तें गी दिखडन, उस दिन मुलजमें गी कोई शुभ-समाचार नेई मिलग ते (ओह घबराइयै) आखडन जे (साढ़े थमां) परें गै रौह ॥ 23 ॥

ते असें उंदे हर चाल्ली दे कर्म पासै ध्यान दित्ता जो उनें कौते दा हा ते उसी हवा च खलारियै (धूड़े च) डुआरे गेदे कर्णे आंगर करी दित्ता ॥ 24 ॥

उस दिन सुर्गे च रौहने आहले लोक ठकाने दे लिहाजें बी अच्छे होडन ते खाबगाहें दे लिहाजें बी सर्वोच्च थाहें पर होडन ॥ 25 ॥

ते उस दिन (गी याद करो) जदूं गास फटी जाग ते बदल सिरै पर मंडला (घनोऐ) करदे होडन ते फरिश्ते बार-बार उतारे जाडन ॥ 26 ॥

उस दिन बादशाही सच्चें-मुच्चें रहमान (खुदा) दे कब्जे च होग। ते (एह) दिन काफरें आसै बड़ा सख्त होग ॥ 27 ॥

ते उस दिन काफर अपने हथें गी कट्टग (ते) आखग, जे काश! अऊं रसूल कनै चली पौंदा ॥ 28 ॥

बाह बदकिसमती! काश! अऊं फलाने बंदे गी दोस्त नेई बनांदा ॥ 29 ॥

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا
لَوْلَا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْمَلَائِكَةَ
وَآتَوْنَاهَا وَتَرَىٰ رَبَّنَا
لَقَدْ اسْتَكْبَرُوا فِي أَنفُسِهِمْ
وَوَعَتُوا عَذَابًا كَبِيرًا ۝۲۲

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلَائِكَةَ
لَا بُشْرَىٰ
يَوْمَئِذٍ لِلْمُجْرِمِينَ
وَ يَقُولُونَ
حِجْرًا مَّحْجُورًا ۝۲۳

وَقَدِمْنَا إِلَىٰ مَا عَمِلُوا
مِّنْ عَمَلٍ
فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً
مَّنثُورًا ۝۲۴

أَصْحَابُ الْجَنَّةِ
يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا
وَ أَحْسَنُ مَقِيلًا ۝۲۵

وَيَوْمَ تَشْقَىٰ
السَّمَاءُ بِالْغَمَامِ
وَنزَّلَ
الْمَلَائِكَةُ تَنْزِيلًا ۝۲۶

أَلْمَلِكُ
يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ
لِلرَّحْمَنِ
وَ كَانَ
يَوْمًا عَلَى الْكُفْرَيْنَ
عَسِيرًا ۝۲۷

وَيَوْمَ يَعْصُ
الظَّالِمُ عَلَى يَدَيْهِ
يَقُولُ
يَلَيْتَنِي
أَتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ
سَبِيلًا ۝۲۸

يُؤَلِّمُنِي
لَيْتَنِي لِمَ
أَتَّخَذْتُ
فُلَانًا حَلِيلًا ۝۲۹

1. मूल शब्द 'हबाउन' दा अर्थ हल्का ते सूखम कण ऐ जो कदें-कदें हवा च उड्डरदा सेही होंदा ऐ। अर्थ एह ऐ जे अस उनेंगी इना पीहगे जे ओह घट्टे आंगर बनी जाडन ते हवा च उड्डरन लागन ते उंदे दोस्त बी उनेंगी किट्टा नेई करी सकडन।

उसने मिगी अल्लाह दे जिकर (कुरआन) थमां गाफल करी दित्ता, जिसलै जे ओह (रसूल राहें) मेरे कश आया हा, ते शतान आखर इन्सान गी इक्कला छोड़ियै उठी जंदा ऐ ॥ 30 ॥

ते रसूल नै गलाया, हे मेरे रब्ब! मेरी कौम नै ते इस कुरआन गी पिट्टी पिच्छें सुट्टी दित्ता ऐ ॥ 31 ॥

ते असें इसै चाल्ली मुलजमें बिच्चा सारे नबियें दे दुश्मन बनाए दे न, ते तेरा रब्ब हदायत देने ते मदद करने दे लिहाजें (बिल्कुल) समर्थ ऐ ॥ 32 ॥

ते काफरें गलाया, की नेई एह कुरआन उस (नबी) पर इक्के बार नाजल करी दित्ता गोआ? इक चाल्ली इंदा आखना बी ठीक ऐ, पर असें (इसी बक्ख-बक्ख सूरतें ते मौकें पर) इस लेई उतारेआ जे अस कुरआन राहें तेरे दिलै गी मजबूत¹ बनांदे रोहचे ते असें इसी बौहत अच्छा बनाया ऐ ॥ 33 ॥

ते (तेरी गल्लें दे खंडन आस्तै) ओह कोई गल्ल नेई आखदे जे अस उसदे जवाब च इक्क पक्की गल्ल ब्यान नेई करी दिंदे। ते उसदी अच्छी थमां अच्छी व्याख्या नेई करी दिंदे ॥ 34 ॥

जेहके लोक अपने सरदारों समेत ज्हन्म पासै लेते जाडन उंदा ठकाना बौहत बुरा होग ते उंदा रस्ता बी गुमराही दा होग ॥ 35 ॥ (रुकू 3/1)

لَقَدْ أَصَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي
وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِلْإِنْسَانِ خَدُوْلًا ۝

وَقَالَ الرَّسُوْلُ يَرْبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوْا
هَذَا الْقُرْآنَ مَهْجُوْرًا ۝

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِّنَ
الْمُجْرِمِيْنَ ۗ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هٰدِيًا وَنَصِيْرًا ۝

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نَزَّلَ عَلَيْهِ
الْقُرْآنَ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۗ كَذٰلِكَ ۙ لِنُثَبِّتَ
بِهٖ قُوٰدَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ۝

وَلَا يَأْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنَاكَ بِالْحَقِّ
وَاحْسَنٍ تَفْسِيْرًا ۝

الَّذِيْنَ يُحَسِّرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى
جَهَنَّمَ ۗ اُولٰٓئِكَ سَرْمٰمًا وَّاَصَلُّ
سَيِّلًا ۝

1. कुरआन गी थोड़ा-थोड़ा करियै उतारने दा कारण एह ऐ जे इस चाल्ली सारे मुसलमान असानी कनै कुरआन गी कंठस्थ करी सकदे हे। दूआ एह जे इक सूर: च बर्णत भविक्खवाणी जिसलै पूरी होई जंदा ऐ तां दूई सूर: च उंदे पासै संकेत कीता जाई सकदा हा जेहदे कनै हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. ते उंदे सहाबा यानी साथियें दे दिल मजबूत होई जंदे। कुरआन गी इक्के बारी उतारने कनै एह दमै मकसद पूरे नेई होई सकदे हे।

ते असें मूसा गी इक कताब प्रदान कीती ही ते असें उसदे कनै उसदे भ्राऽ हारून गी बी नायब बनाइयै भेजी दिता हा ॥ 36 ॥

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَا مَعَهُ
آخَاهُ هَارُونَ وَزِيرًا ۝

ते असें (उनेंगी) आखेआ हा तुस दमें उस कौम पासै जाओ जिनें साद्दी आयतें दा इन्कार कीता ऐ। फी (जिसलै ओह प्रचार करी बैठे) असें उंदा (झुटेरेने आहलें दा) सर्वनाश करी दिता ॥ 37 ॥

فَقُلْنَا أَذْهَبَ إِلَى الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
فَدَمَّرْنَاهُمْ تَدْمِيرًا ۝

ते असें नूह दी कौम गी बी गरक करी दिता जिसलै जे उनें रसूलें दा इन्कार कीता ते असें उनेंगी लोकें आस्तै इक नशान बनाई दिता ते असें जालमें आस्तै दर्दनाक अजाब त्यार करियै रक्खी दिते दा ऐ ॥ 38 ॥

وَقَوْمٌ نُّوحٌ لَّمَّا كَذَّبُوا الرَّسْلَ أَعْرَفْنَاهُمْ
وَجَعَلْنَاهُمْ لِلثَّاسِ آيَةً ۝ وَأَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ
عَذَابًا أَلِيمًا ۝

ते असें आद गी बी ते समूद गी बी ते खूहै आहले लोकें¹ गी बी ते उंदे बश्कर होर मती-हारी कौमें गी बी (असें तबाह करी दिता) ॥ 39 ॥

وَعَادًا وَثَمُودًا وَأَصْحَابَ الرَّسِّ
وَقُرُونًا بَيْنَ ذَلِكَ كَثِيرًا ۝

ते असें उंदे बिच्चा हर इक कौम दे लोकें आस्तै सचाई खोहलियै दस्सी दिती ते (जिसलै ओह नेई समझे तां) सारें दा बिनाश करी दिता ॥ 40 ॥

وَكُلًّا صَرَ بِنَا لَه الْأَمْثَالَ ۝ وَكُلًّا
تَبَرْنَا تَنْبِيرًا ۝

ते एह (मक्का दे इन्कार करने आहले) उस बस्ती दे लागेआ गुजरी (लंघी) चुके दे न जेहदे² पर असें इक कश्ट देने आहली बरखा बरहाई ही। क्या एह लोक उस (बस्ती दे नशानें) गी नेई दिखदे ? असल गल्ल एह ऐ जे एह लोक दबारा दुआले जाने दी मेद गै नथे रखदे ॥ 41 ॥

وَلَقَدْ آتَوْنَا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِي أَمْطَرْنَا
مَطَرًا سَوِيًّا ۝ أَفَلَمْ يَكُونُوا يَرُونَهَا
بَلْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ نُشُورًا ۝

ते जिसलै ओह तुगी दिखदे न तां तुगी सिर्फ हासे-मखौल दी इक चीज समझदे न (ते

وَإِذَا رَأَوْكَ إِذْ يَخِذُونَكَ إِلَّا هَرُونَ ۝

1. खूहै आहले लोकें बारै टीकाकारें दी बक्ख-बक्ख राऽ लभदी ऐ पर इस आयत थमां ए पता लगदा ऐ जे ए कौम समूद दे बाद होदी ऐ ते "बहरि मुहीत" च बी इस दी पुरटी कीती गेदी ऐ की जे ओहदे च हज्जरत इब्ने अब्बास दा इक कथन दर्ज ऐ जे ए कौम "समूद" दा गै इक हिस्सा ही की जे "समूद" "आद" दा आखरी हिस्सा हे इस लेई ए पता लगदा ऐ जे ए लोक इस्माईल दे बंशजें दे अरब च फैलने थमां पैहलें होए हे। जिसलै इस्माईल दे बंशज अरब च फैलीं गे हे तां फी ए लोक उत्तर पासै "फलसतीन" पासै उठी गे हे। जियां जे पराने नशानें थमां पता लगदा ऐ (दिकखो अलअरब क्रब्तुल इस्लाम रचनाकार जुरजी जैदान)
2. अर्थात् लूत दी जाति।

आखदे न) क्या अल्लाह नै इस आदमी गी रसूल बनाइयै भेजेआ ऐ ? ॥ 42 ॥

जेकर अस अपने उपास्यें पर मजबूती कनै जम्मे दे नेई रौहदे तां एह (आदमी) ते असें गी इंदे थमां गुमराह गै करन लगा हा। ते जिसलै एह अजाब गी दिखडन तां इनेंगी जरूर हकीकत दा पता लगगी जाग जे कु'न अपने आचरण च ज्यादा गुमराह हा ॥ 43 ॥

(हे रसूल!) क्या तुगी उस आदमी दी हालत दा पता लगगी चुके दा ऐ जिसनै अपनी मनोकामनाएं गी अपना उपास्य बनाई लेदा हा? क्या तूं उस आदमी दा नगरान ऐं (जे तूं उसगी जबरदस्ती गुमराही थमां रोके) ॥ 44 ॥

क्या तूं समझना ऐं जे उंदे बिच्चा मते-हारे सुनदे जां समझदे न? ओह ते सिर्फ पशुएं आंगर न, बल्के ब्यहार दे स्थाबें उंदे थमां बी बदतर न ॥ 45 ॥ (रकू 4/2)

(हे कु'रआन दे संबोधत!) क्या तूं नेई जानदा जे तेरे रब्ब नै छाया गी किस चाल्ली लम्मा कीता ऐ? ते जेकर ओह चांहदा तां उसी इक्के थाहरै पर रुके दा बनाई दिंदा, फी असें सूरज¹ गी ओहदे पर इक गुआह बनाई दिता ॥ 46 ॥

फी अस उसी बल्लें-बल्लें अपने पासै खिच्चना शुरू करी दिन्ने आं ॥ 47 ॥

ते ऊऐ (अल्लाह) ऐ जिसनै राती गी थुआड़े आस्तै लबास बनाया ऐ ते नींदरै गी अराम दा मूजब, ते दिनें गी फैलने ते तरक्की करने दा जरीया ॥ 48 ॥

أَهَذَا الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ۝

إِنْ كَادَ لَيُضِلَّنَا عَنْ الْهَتَاةِ وَلَا أَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۖ وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ أَصْلُ سَبِيلًا ۝

أَرَأَيْتَ مَنْ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ ۖ أَفَأَنْتَ تَكُونُ عَلَيْهِ وَكِيلًا ۝

أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ ۖ إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَصْلُ سَبِيلًا ۝

أَلَمْ تَرَ إِلَى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسُ عَلَيْهِ دَلِيلًا ۝

ثُمَّ قَبْضْنَاهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيرًا ۝

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الَّيْلَ لِيَأْسَوا وَ النَّوْمَ سُبَاتًا وَ جَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا ۝

1. इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. अल्लाह पासेआ भेजे गेदे सच्चे रसूल न, की जे थुआड़ी छाया हर घड़ी बधा करदी ऐ। जेकर ओह अल्लाह पासेआ नेई होंदे तां उंदी तरक्की नेई होंदी। उंदी तरक्की इस गल्ला दा सबूत ऐ जे उनेंगी अल्लाह दी मदद हासल ऐ।

ते ओह (अल्लाह) गै ऐ जिसनै हवाएं गी अपनी रैहमत कनै पैहलें शुभ समाचार देने आस्तै भेजेआ ते असें बद्दलें थमां पवित्तर (ते साफ) पानी उतारेआ ऐ ॥ 49 ॥

तां जे अस ओहदे राहें मुरदा देश (अर्थात् धरती) गी जींदा करचै ते इसै चाल्ली उस पानी कनै अपने पैदा कीते गेदे चौखरें ते मते सारे इन्सानें गी तृप्त (सराब) करचै ॥ 50 ॥

ते असें उस पानी गी उनें इन्सानें च खूब फलाई दिता तां जे ओह नसीहत हासल करन पर लोकें बिच्चा अक्सर लोक कुफर दे सिवा कुसै गल्लै पर खुश नेई होंदे ॥ 51 ॥

ते जेकर अस चांहदे तां हर बस्ती च इक सचेत करने आहला (नबी जां सुधारक) भेजी दिंदे ॥ 52 ॥

इस आस्तै तू काफरें दी गल्ल नेई मन्न ते इस (कुरआन) राहें उंदे कनै बड्डा जिहाद¹ कर ॥ 53 ॥

ते ऊऐ ऐ जिसनै द'ऊं समुंदर² गी चलाया ऐ, जिंदे बिच्चा इक ते अत्त मिट्टा ऐ ते दूआ नमकीन ते कौड़ा ऐ ते उस (अल्लाह) नै उनें दौनें दे बिच्च इक पड्डा बनाई दिता ऐ ते ऐसा प्रबंध करी दिता ऐ जे ओह इक-दूए गी दूर³ रखदे न ते आपस च मिलन नेई दिंदे ॥ 54 ॥

وَهُوَ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا ﴿٥١﴾

لِنُحْيِيَ بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا وَنُسْقِيَهُ مِمَّا خَلَقْنَا أَنْعَامًا وَأَنَا سَيِّ كَثِيرًا ﴿٥٢﴾

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيهِمْ لِيَذَكَّرُوا فَأَبَى أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ﴿٥٣﴾

وَأَوْسَنَّا لُبَعْنًا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ تَذِيرًا ﴿٥٤﴾

فَلَا تَطِيعُ الْكُفْرِينَ وَجَاهِدْهُمْ بِهِ جِهَادًا كَبِيرًا ﴿٥٥﴾

وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هَذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَهَذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْحًا وَحِجْرًا مَّحْجُورًا ﴿٥٦﴾

1. जिहाद दा मतलब कुरआन राहें सचाई दा प्रचार करना ऐ।
2. मूल शब्द 'बहर' समुंदर ते नदी दौनें आस्तै बरतेआ जंदा ऐ। असल च इस थाहर धर्म दा मुकाबला ऐ। कुसै धर्म दी शिक्षा सर्वश्रेष्ठ होंदी ऐ ते कुसै दी निकुश्ट। इत्थें उपमां द्वारा दस्सेआ गेदा ऐ जे समुंदरे दा पानी किन्ना कौड़ा ते खारा होंदा ऐ ते जो नदियां उस च आइयै पौंदियां न उंदा पानी मिट्टा होंदा ऐ। ठीक इसै चाल्ली जो शिक्षां अल्लाह आहले पासेआ औंदियां न ओह मिट्टियां ते सर्वश्रेष्ठ होंदियां न, पर जो शिक्षां चिंरै थमां संसार च बराजमान न ते प्रतक्ख रूपै च इल्हाम जां ईशवाणी थमां बंचत न ओह कौड़ियां ते खारियां होंदियां न जियां समुंदरै दा पानी।
3. यानी नदिदें ते समुंदरें गी सधारण रूपै च मलाई दिता ऐ, पर कनै गै ऐसा प्रबंध करी दिता गेदा ऐ जे नां ते नदियां खारियां जां कौड़ियां होई सकदियां न ते नां गै समुंदर मिट्टा होई सकदा ऐ।

ते ओह (अल्लाह) गै ऐ जिसनै पानी¹ कन्नै इन्सान बनाया, इस लेई उसी कदें नसब बनाया ऐ, (यानी शाजरा आबा=चैत्रक बंशावली) ते कदें सिहर (यानी शजरा सुसराल) बनाया ऐ ते तेरा रब्ब हर गल्ल करने च पूरी-पूरी समर्थ रखदा ऐ ॥ 55 ॥

ते ओह (काफर) अल्लाह दे सिवा उंदी अबादत करदे न जेहके नां उनेंगी फायदा पजाई सकदे न ते नां तकलीफ देई सकदे न ते काफर म्हेशां अपने रब्ब दे (जारी कीते दे) असूलें (सिलसलें) दे खलाफ होंदा ऐ ॥ 56 ॥

ते असें ते तुगी सिर्फ शुभ-समाचार देने आह्ला ते सचेत करने आह्ला बनाया ऐ ॥ 57 ॥

तूं उनेंगी आखी दे जे अ'ऊं तुंदे थमां उस (यानी खुदा दा संदेश पजाने) दा कोई सिला² नेई मंगदा हा! जेकर कोई शख्स अपनी मरजी कन्नै चाह तां अपने रब्ब आहले पासै जाने आह्ला रस्ता अखत्यार करी लै (ऊऐ मेरा सिला होग) ॥ 58 ॥

ते तूं ओहदे पर भरोसा रख जेहका जींदा ऐ (ते सारें गी जींदा रखदा ऐ) ओह सदा आस्तै अमर ऐ ते उसदी तरीफ दे कन्नै-कन्नै उसदी स्तुति बी कर ते ओह अपने बंदे दे गुनाहें थमां भलेआं बाकफ ऐ ॥ 59 ॥

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا وَصِهْرًا ۗ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ۝

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِ ظَهِيرًا ۝

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِن أَجْرٍ إِلَّا مَن شَاءَ أَن يَتَّخِذْ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝

وَتَوَكَّلْ عَلَىٰ الْعَلِيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِ ۗ وَكَفَىٰ بِهِ بَدُنُوبٍ عِبَادِهِ خَيْرًا ۝

1. इसदा मतलब बीरज ऐ।

2. इस आयत थमां भलेआं स्पष्ट ऐ जे इस्लाम धर्म दा प्रचार जबरदस्ती करना मनासब नेई ते इस आयत च एह खोहलियै दस्सेआ गेदा ऐ जे अ'ऊं इस्लाम दे प्रचार दे बदले च कोई सिला नेई चाहदा। मेरा सिला इयै ऐ जे जेकर कुसै दा दिल इस्लाम दी सचाई मन्नी लै तां ओह अपनी इच्छा कन्नै इस्लाम दे हुकमें दा पालन करने आह्ला बनी जा। इस बारे अ'ऊं कुसै पर जबर नेई करी सकदा ते नां गै करडा। इस तलीम दे होंदे होई एह अलजाम लाना ते इस्लाम धर्म दा प्रचार ते प्रसार तलवार राहें जबरन कीता गेआ ऐ, इस्लाम पर किन्ना अत्याचार ऐ। क्या संसार च कोई दूआ धर्म बी ऐसा ऐ जिसनै अपने प्रचार दे बारे इस चाल्ली खुल्ले तौरें पर सुवतंतरता दा समर्थन कीता होऐ?

ओह (खुदा) जिसनै गासैं ते धरती ते जो किश इंदै दौंनैं बशकार ऐ (उंनैं सारैं) दी छें दौंरैं बिच्च रचना कीती ऐ। फी ओह अर्श पर मजबूती कनै कायम होई गेआ। ओह रहमान ऐ। इस लेई (हे मानव) जिसलै बी तू उसदे बाँर कदैं कोई सुआल पुच्छें तां कुसै ज्ञानी¹ (इन्सान) गी सुआल पुच्छ जो बौहत जानने आह्ला ऐ (ते ठीक-ठीक जवाब देई सकदा ऐ) ॥ 60 ॥

ते जिसलै इनेंगी आखेआ जंदा ऐ जे रहमान दे सामने सजदे च डिग्गी जाओ, तां आखदे न रहमान केह चीज ऐ? क्या अस उसदे अगंगें सजदा करचै जिसदे (अगंगें सजदा करने) दा हुकम तू दिन्ना ऐं ते एह गल्ल उनेंगी नफरत च होर बी बधाई दिंदी ऐ ॥ 61 ॥ (रुकू 5/3)

ओह सत्ता बड़ी बरकत आहली ऐ जिसनै गासैं च नखत्तरें दे ठैहरने दे थाहर बनाए दे न ते उस च चमकदा दीया² ते रोशनी देने आह्ला चंदरमां बनाए दे न ॥ 62 ॥

ऊऐ ऐ जिसनै राती ते दिनै गी इक-दूए दे पिच्छें औने आह्ला बनाए दा ऐ, उस शख्स दे फायदे आसतै जेहका नसीहत हासल करना चाह जां शुकर- गजार बंदा बनना चाह ॥ 63 ॥

ते रहमान दे (सच्चे) बंदे ओह होंदे न जेहके धरती पर रमान कनै चलदे³ न ते जिसलै मूर्ख लोक उंदे कनै गल्ला⁴ करदे न तां ओह (लड़दे नेई बल्के) आखदे न जे अस ते थुआड़े आसतै सलामती दी दुआऽ करने आं ॥ 64 ॥

الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۗ الرَّحْمَنُ فَسَلِّ بِهِ خَبِيرًا ۝

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَنِ قَالُوا وَمَا الرَّحْمَنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ۝

تَبَارَكَ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرْجًا وَقَمَرًا مُنِيرًا ۝

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ أَرَادَ أَنْ يَذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ۝

وَعِبَادَ الرَّحْمَنِ الَّذِينَ يَمْشُونَ عَلَى الْأَرْضِ هَوْنًا وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا ۝

1. अर्थात् हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. थमां पुच्छो।

2. अर्थात् निजी प्रकाश आह्ला सूरज।

3. अर्थात् घमंड दा प्रदर्शन नेई करदे।

4. अर्थात् जिसलै मूर्ख लोक उंदे कनै मूर्खता दियां गल्लां करदे न।

ते ओह लोक बी जेहके अपने रब्ब आस्तै रातीं सजदें च ते खड़ोते दे गजारी दिंदे न ॥ 65 ॥

ते ओह (रहमान दे बंदे) आखदे न, हे साढ़े रब्ब! साढ़े परा ज्हन्नम दा अजाब टाली दे। उसदा अजाब इक बौहत बड्डी तबाही ऐ ॥ 66 ॥

ओह (दोजख) आरजी ठकाने दे तौरा पर बी बुरा ऐ ते मुस्तकल ठकाने दे तौरा पर बी (बुरा ऐ) ॥ 67 ॥

ते ओह (अल्लाह दे बंदे) ऐसे होंदे न जे जिसलै खर्च करदे न तां फजूल खर्ची थमां कम्म नेई लैंदे ते नां गै कंजूसी करदे न ते उंदा खर्च इनें दौनें हालतें दे दरम्यान-दरम्यान होंदा ऐ ॥ 68 ॥

ते ओह लोक ऐसे होंदे न जे अल्लाह दे सिवा कुसै होर उपास्य गी नेई पुकारदे ते नां कुसै जान दी हत्या करदे न, जिसी अल्लाह नै पहाजत बख्शी दी होऐ, सिवाए (शरीअत दे) हक दे। ते नां व्यभिचार करदे न ते जेहका कोई ऐसा कम्म करग ओह अपने गुनाह दा सिला दिक्खी लैग ॥ 69 ॥

क्यामत आहलै रोज ओहदे तै अजाब बधाई दिता जाग ते ओह ओहदे च (पतित होइयै) रौहदा रौहग ॥ 70 ॥

सवाए उसदे, जिसनै तोबा करी लैती ते ईमान आंहदा, ते ईमान दे मताबक कर्म कीते। इस आस्तै एह लोक ऐसे होडन जे अल्लाह उंदी बदिथैं गी नेकियें च बदली देग ते अल्लाह बड़ा बख्शने आहला मेहरबान ऐ ॥ 71 ॥

وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا ﴿٦٥﴾

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٦٦﴾

إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ﴿٦٧﴾

وَالَّذِينَ إِذَا أَنْفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَلِكَ قَوَامًا ﴿٦٨﴾

وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ ۗ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ﴿٦٩﴾

يُضْعَفُ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدُ فِيهِ مُهَانًا ﴿٧٠﴾

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٧١﴾

ते जेहका तोबा करै ते ओहदे मताबक कर्म करै, तां ओह शख्स स्टेई मैहनें च अल्लाह आहले पासै झुकदा ऐ ॥ 72 ॥

ते ओह लोक बी (अल्लाह दे बंदे न) जेहके झुठियां गुआहियां नेई दिंदे ते जिसलै फजूल गल्लें दे लागेआ लंघदे न तां मान-मर्यादा कनै (बगैर उंदे च शामिल होने दे) लंघी जंदे न ॥ 73 ॥

ते ओह लोक बी जे उंदे रब्ब दियें आयतें दा उनेंगी जिसलै चेता नुआया जा तां ओह उंदे कनै अ'नें ते बैह्रें (बोलें) आह्ला ब्यहार नेई करदे ॥ 74 ॥

ते ओह लोक बी (रहमान दे बंदे न) जेहके एह आखदे रौहदे न जे हे साढ़े रब्ब! असेंगी साढ़ी लाडियें पासेआ ते उलाद पासेआ साढ़ी अक्खीं गी ठंढ पजाऽ। ते असें गी संयमी लोकें दा मुखिया/इमाम¹ बनाऽ ॥ 75 ॥

एह ओह लोक न जिनें गी उंदी नेकी पर कायम रौहने दी ब'जा करी (सुगें च) चबारे दित्ते जाडन ते उनेंगी उंदे च अशीबाद दित्ते जाडन ते सलामती दे संदेश पजाए जाडन ॥ 76 ॥

ओह उंदे च रौहदे रौहडन। ओह (जन्नत) आरजी नबास दे तौरा पर बी बड़ी उत्तम ऐ ते मुस्तकिल नबास दे तौरा पर बी (बड़ी उत्तम ऐ) ॥ 77 ॥

وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ
إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ﴿٧٢﴾

وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا مَرُّوا
بِاللَّعُومِ مَرُّوا كِرَامًا ﴿٧٣﴾

وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوا
عَلَيْهَا صَمًّا وَعُمَمَانًا ﴿٧٤﴾

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَرْوَاجِنَا
وَدَّرِيئَتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ
إِمَامًا ﴿٧٥﴾

أُولَئِكَ يُجْرُونَ الْعُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا
وَيَلْقَوْنَ فِيهَا قَحِيَّةً وَسَلَامًا ﴿٧٦﴾

خَالِدِينَ فِيهَا حَسَنَتْ مُسْتَقَرًّا
وَمُقَامًا ﴿٧٧﴾

1. अर्थात् साढ़ा परिवार ते कटुंब साढ़ा अनुसरण करै ते ओह संयमी होऐ। सिर्फ रिस्तेदारी करिये साढ़ा साथ नेई देऐ।

(हे रसूल!) तू उनेगी आखी दे जे मेरे रब्व गी
थुआड़ी केह परबाह ऐ, जेकर थुआड़े पासेआ
प्रार्थना (ते माफी दी याचना) नेई होऐ? इस
लेई जिसलै जे तुसें (अल्लाह दे संदेश गी)
झुठेरी दिता तां हून उसदा अजाब तुंदे कनै
चमके दा गै रौहम ॥ 78 ॥ (रुकू 6/4)

قُلْ مَا يَعْجُبُكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ ۗ
فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ۗ

ooo



सूर: अल्-शुअरा

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत

इस दियां दो सौ ठाई आयतां ते जारां रुकू न।

मैं अल्लाह दा नांस लेइयै (पढ़ना) जो बे-
हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

ताहिर, समीअ (ते) मजीद¹ (अल्लाह इस
सूर: गी उतारने आहला ऐ ॥ 2 ॥

طسّم ①

एह आयतां उस कताबै दियां न जेहकी (अपनी
गल्लें गी) खोहलियै ब्यान करदी ऐ ॥ 3 ॥

تِلْكَ آيَاتِ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ①

क्या तू अपनी जान गै खोही देगा की जे ओह
लोक मोमिन² की नेई बनी जंदे? ॥ 4 ॥

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوا
مُؤْمِنِينَ ①

जेकर अस चाहचै तां गसै थमां उंदे आसै
इक ऐसा नशान उतारी देचै जेहदे सामनै उंदी
गरदनां झुकी दी झुकी रेही जान ॥ 5 ॥

إِنْ نَشَأْ نُزِّلْ عَلَيْهِمْ مِنَ السَّمَاءِ آيَةٌ
فَقُلْتَ أَغْنَاقَهُمْ لَهَا خُضَعِينَ ①

ते रहमान पासेआ कदें कोई नमां जिकर नेई
आँदा जे जेहदे थमां लोक विमुख नेई होंदे
होन³ ॥ 6 ॥

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرِ مِنَ الرَّحْمَنِ مُحَدَّثٍ
إِلَّا كَانُوا عَنْهُ مُعْرِضِينَ ①

1. मूल शब्द 'ता' 'सीन' (ते) 'मीम' दा मतलब ताहिर, समीअ ते मजीद ऐ। एह अल्लाह दे गुणवाचक नांस न। जिस दा अर्थ ऐ दिलें गी पवित्र करने आहला, सुनने आहला ते महिमाशाली।
2. अर्थात् तेरा पवित्र दिल काफरें दी सचाई दे इन्कार गी बरदाशत नेई करी सकदा ते चांहदा ऐ जे ओह बी हदायत पाई लैन।
3. परंपरा थमां एह गल्ल चलदी आई ऐ जे हर नबी दा इन्कार कीता जंदा ऐ इस लेई अल्लाह ऐसे चमत्कार नेई दसदा जेहदे कनै बे-बस होइयै लोक ईमान ल्यौन, की जे जेकर ओह ऐसा करै तां ओह किश नबियें दा पक्खपाती ठरहाय जाग, पर ओह ऐसा नेई करदा।

इस आस्तै उनें अल्लाह दी आयतें गी झुठेरे दा ऐ एहदे फलसरूप उंदे हासे दी सचाई उंदे पर जरूर खुल्ली जाग ॥ 7 ॥

क्या ओह धरती गी नेई दिखदे जे असें उस च भांत-सभांते बधिया जोड़े बनाए दे न ॥ 8 ॥

एहदे च इक बौहत बड़डा नशान¹ ऐ, मगर उंदे बिच्चा मते-सारे लोक ईमान नेई आहनदे ॥ 9 ॥

ते तेरा रब्ब गै यकीनन गालिब (ते) बार-बार रेहम करने आहला ऐ ॥ 10 ॥ (रुकू 1/5)

ते (याद कर) जिसलै तेरे रब्ब नै मूसा गी पुकारेआ हा (ते आखेआ हा) जे जालम कौम कश जा ॥ 11 ॥

यानी फ़िरऔन दी कौम कश जा (ते उनेंगी आख जे) क्या ओह संयम धारण नेई करदे? ॥ 12 ॥

उसने गलाया जे हे मेरे रब्ब! अऊं डरना जे ओह मिगी झुठेरी नेई देन ॥ 13 ॥

ते मेरे सीन्ने च घुटन जनेही ऐ ते मेरी जबान चंगी चाल्ली नेई चलदी। इस आस्तै (मेरे कनै) हारून गी बी भेज ॥ 14 ॥

ते (एह गल्ल बी ऐ जे) इंदा (लोकें दा) मेरे खलाफ² इक अलजाम बी ऐ ते मिगी डर³ ऐ जे ओह मेरी हत्या नेई करी देन ॥ 15 ॥

فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَيَأْتِيهِمْ أَنْبَاءُ مَا كَانُوا بِهٖ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٧﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمَا أُبْتِنَّا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ﴿٨﴾

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّوَمَا كَانُوا أَكْثَرَهُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٩﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٠﴾

وَإِذْ نَادَى رَبُّكَ مُوسَىٰ إِنَّ اثْنِ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿١١﴾

قَوْمِ فِرْعَوْنَ ۖ أَلَا يَتَّقُونَ ﴿١٢﴾

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ﴿١٣﴾

وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَطْلُقُ لِسَانِي قَارِئِلَ إِلَىٰ هُرُونَ ﴿١٤﴾

وَلَهُمْ عَلَىٰ ذُنُوبٍ فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ﴿١٥﴾

1. संसार च हर चीजै दा जोड़ा ऐ। नेक दा जोड़ा नेक ते बुरे दा जोड़ा बुरा। हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दे जोड़े ते साथी बी सदाचारी ते पवित्र हे जियां सहाबा। जेकर इन्कार करने आहले (काफ़र) अपनी दुष्ट आत्मा दी मलीनता दे होंदे होई मुसलमान होई जंदे तां इसदा एह अर्थ होंदा जे इक सदाचारी ते पवित्र सत्ता गी गंदे जोड़े मिली गे।
2. इस आयत च उस अलजाम बक्खी संकेत ऐ जो हजरत मूसा दे हलथें धुल्ल-धलेखें इक बंदे दी हत्या होई गेई ही।
3. इस दा एह मतलब ऐ जे ममकन ऐ ओह गुस्से कारण तेरा संदेश सुनने शा पैहलें गै मेरी हत्या करी देन ते तेरा संदेश सुनने थमां रेही जान। उनेंगी अपने मरने दा डर नेई हा बल्के कौम दे लोकें दा सचाई थमां मरहूम (बंचत) रेही जाने दा डर हा।

फरमाया, कर्दे बी नेई। इस आस्तै (साढ़ा हुकम सुनियै) तुस दमै साढ़ी आयतां लेइयै (चली) जाओ अस थुआड़े (ते थुआड़े साथियें दे) कन्नै होगे। ते(थुआड़ी दुआएं गी) सुनदे रौहगे ॥ 16 ॥

इस आस्तै फिरऔन कश जाओ ते उसी आखो जे अस सारे ज्हान्नें दे रब्ब दे भेजे दे आं ॥ 17 ॥

(इस हुकमै कन्नै) जे साढ़े कन्नै बनी इस्वाईल गी भेजी दे ॥ 18 ॥

एहदे पर (फिरऔन नै) गलाया जे (हे मूसा!) क्या असें तुगी उस बेलै नेई पालेआ जिसलै जे तू अजें बच्चा गै हा ते तोह साढ़े च अपनी उमरी दे बड़े-सारे साल गुजारे दे न ॥ 19 ॥

ते तोह कर्म बी कीता ऐ जेहका तू करी चुके दा ऐं ते तू (साढ़े स्थान्नें दा) ना-शुकरगजार ऐं ॥ 20 ॥

(मूसा नै) आखेआ ओह कर्म (जिसदा तोह इशारा कीता ऐ) मैं उस बेलै कीता हा जिसलै जे (सचाई दा) मिगी इलम नेई हा ॥ 21 ॥

इस आस्तै उसदे नतीजे च जिसलै मिगी तेरे थमां डर लगन लगा तां अंऊं तेरे थमां नस्सियै उठी गोआ। उस पर मेरे रब्ब नै मिगी अपना हुकम¹ (नुबुव्वत) प्रदान कीता ते मिगी रसूलें बिच्चा (इक रसूल) बनाई दिता ॥ 22 ॥

ते एह (बचपन च मेरा पालन-पोशन करने दी) किरपा जिसदा तुस स्थान जतलाऽ करदे ओ क्या एह इस गल्ला दे मकाबले च ऐ जे

قَالَ كَلَّا فَاذْهَبَا بِآيَاتِنَا إِنَّا مَعَكُمْ مُسْتَمِعُونَ ﴿١٦﴾

فَأْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٧﴾

أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٨﴾

قَالَ أَلَمْ تُرْيِكْ فِينَا وَلِيدًا وَلِيَشْتَفِيَنا مِنْ عَمْرِكَ سِينِينَ ﴿١٩﴾

وَفَعَلْتَ فَعَلْتَكَ الَّتِي فَعَلْتَ وَأَنْتَ مِنَ الْكُفْرِينَ ﴿٢٠﴾

قَالَ فَعَلْتَهَا إِذَا وَأَنَا مِنَ الصَّالِينَ ﴿٢١﴾

فَقَرَّرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُمْ فَوَهَبَ لِي رَبِّي حُكْمًا وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢٢﴾

وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُّهَا عَلَى أَنْ عَبَّدتَّ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٣﴾

1. नुबुव्वत दी पदवी दा प्राप्त होना, इस गल्ला दा प्रमाण ऐ जे मैं जानी-बुझियै कोई उत्पात नेई हा कीता बरना अल्लाह मिगी इस चाल्ली दा सम्मान नेई दिता।

तुसें बनी इस्राईल दी सारी कौम गी गुलाम बनाइयै रक्खी दित्ते दा ऐ ॥ 23 ॥

उस पर फ़िरऔन नै (शरमिंदा होइयै ते गल्ल फेरने आस्तै) गलाया, एह सारे ज्हाँनें दा रब्ब कु'न ऐ? (जेहदे पासेआ तू अपना औना दस्सा करना ऐं) ॥ 24 ॥

(मूसा नै) गलाया, गासैं ते धरती ते जो किश इनं दौनैं दे मझाटे ऐ, उंदा रब्ब! जेकर तेरे च यकीन करने दी इच्छा ऐ ॥ 25 ॥

(ओहदे पर) फ़िरऔन नै अपने आसै-पासै दे लोकें गी गलाया-क्या तुस सुनदे नेई (जे मूसा के आखा करदा ऐ)? ॥ 26 ॥

(मूसा नै अपने पैहले ब्यान दी ब्याख्या करदे होई) जवाब दित्ता। ऊऐ जो थुआड़ा बी रब्ब ऐ ते थुआड़े बब्ब-दादें दा बी रब्ब हा ॥ 27 ॥

(एहदे पर फ़िरऔन) बोल्लेआ (हे लोको!) थुआड़ा ओह रसूल जिसी थुआड़ी बक्खी भेजेआ गेआ ऐ। जरूर पागल¹ ऐ ॥ 28 ॥

(मूसा नै समझी लैता जे ओह गल्ल टालना चांहदा ऐ ते) गलाया (सारे ज्हाँनें दा रब्ब) ऊऐ ऐ जेहका मशरक दा बी रब्ब ऐ ते मगरब दा बी (रब्ब ऐ) ते जो कुछ इंदे मझाटे ऐ (उंदा बी रब्ब ऐ) शर्त एह ऐ जे तुस अकली थमां कम्म लैओ ॥ 29 ॥

(इस पर) फ़िरऔन नै (गुस्से² च आइयै) गलाया जे जेकर तोह मेरे सिवा कोई दूआ

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝

قَالَ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنَّ كُنْتُمْ مُوقِنِينَ ۝

قَالَ لِمَنْ حَوْلَهُ آلَا تَسْمَعُونَ ۝

قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأُولِينَ ۝

قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمْ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمَجْنُونٌ ۝

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنَّ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ۝

قَالَ لَبِنِ اتَّخَذَتِ الْهَاعِيرِي لَأَجْعَلَنَّكَ

1. एह भाव नेई ऐ जे अ'ऊं सुआल किश करना ते ओह जवाब किश होर दिंदा ऐ बल्के भाव एह ऐ जे मूसा ओह गल्ल आखने थमां नेई डरदा जेहदे खलाफ अ'ऊं अपना बचार प्रकट करी चुके दा आं। इयै पागल होने दी नशानी ऐ।
2. जेकर फ़िरऔन इस मौके एह आखदा जे अ'ऊं बी बैसा गै रब्ब आं तां आपूं उसदी कौम जो नखतर-पूजक ही उसदे खलाफ होई जंदा।

उपास्य बनाया तां अ'ऊं तुगी कैद करी देख
॥ 30 ॥

उस (मूसा) नै गलाया, क्या इस सूरत च बी
अ'ऊं (कोई मजूदा सचाई) खोहली देने
आहली कोई चीज (अर्थात् चमत्कार) तैरे
कश लेई आमां? ॥ 31 ॥

(इस पर) फिरऔन नै गलाया जे जेकर तूं
सच्चा ऐं तां उसी लेई आ ॥ 32 ॥

इस आस्तै उस (मूसा) नै अपनी लाठी (सोटा)
धरती पर रक्खी दिती ते अचानक (फिरऔन
ते ओहदे साथियें दिक्खेआ जे) ओह साफ-
साफ लब्भने आहला इक अजगर ऐ ॥ 33 ॥

ते उसनै अपना हत्थ (अपनी कच्छी हेठा)
कड्डेआ तां दिक्खने आहलें सैहबन दिक्खेआ
जे ओह भलेआं सफेद ऐ ॥ 34 ॥
(रुकू 2/6)

इस पर फिरऔन नै अपने आलै-दुआलै दे
सरदारें गी गलाया जे एह ते कोई बड़ा पुज्जे
दा जादूगर ऐ ॥ 35 ॥

एह चांहदा ऐ जे तुसेंगी थुआड़े देशै थमां
अपने जादू दे जौरें कड्डी देऐ। इस लेई हून
थुआड़ी केह सलाह ऐ? ॥ 36 ॥

ओह बोल्ले जे इसी ते इसदे भ्राऽ गी (किश
दिनें दी) ढिल्ल दे ते बक्ख-बक्ख शैहरें पासै
अपने लोक भेज जेहके (काबल आदमियें
गी) किट्ठा करी सकन ॥ 37 ॥

ते ओह हर बड्डे जादूगर ते बड्डे ज्ञानी गी
तेरे कश लेई औन ॥ 38 ॥

इस पर सारे जादूगर इक निश्चत ध्याडै किट्ठे
कीते गे ॥ 39 ॥

مِنَ الْمَسْجُونِينَ ﴿٣٠﴾

قَالَ أَوْلَوْجِئْتِك بَيْئِي مُمِينٍ ﴿٣١﴾

قَالَ قَاتِبَةٌ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٣٢﴾

فَأَلْفَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ نُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿٣٣﴾

وَوَرَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنُّظُرِينَ ﴿٣٤﴾

قَالَ لِمَ لِحَوْلَةٍ إِنْ هَذَا السَّحَرِ عَلَيْهِ ﴿٣٥﴾

يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ
بِسِحْرِهِ ۖ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿٣٦﴾

قَالُوا أَرْجَاهُ وَأَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَائِنِ
حَشِيرِينَ ﴿٣٧﴾

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سِحْرٍ عَلَيْهِ ﴿٣٨﴾

فَجَمَعَ السَّحَرَةَ لِمِيقَاتِ يَوْمٍ
مَّعْلُومٍ ﴿٣٩﴾

ते लोकें गी गलाया गेआ जे क्या तुस सारे
(इक मकसद पर) किट्टे होने आसतै त्यार
ओ? ॥ 40 ॥

तां जे जेकर जादूगर जिती जान तां अस उंदे
आखने पर चलचै ॥ 41 ॥

इस आसतै जिसलै जादूगर आई गे तां उनें
फिरऔन गी गलाया जे जेकर अस जिती जागे
तां केह असेंगी कोई नाम बी ध्होग ? ॥ 42 ॥

(फिरऔन नै) आखेआ जे हां! बल्के इस
सूरत च तुस राज सभा च खास लोकें दा
सम्मान पागे ओ ॥ 43 ॥

इस पर मूसा नै उनेंगी गलाया जे जो उपास¹
तुसें करना ऐ करी लैओ ॥ 44 ॥

इस पर उनें अपनी रसियां ते अपने सोटे
(दब्बडै च) सुट्टी दित्ते ते आखन लगे जे
फिरऔन दे प्रताप दी सघंद! अस जरूर जिती
जागे ॥ 45 ॥

उसलै मूसा नै बी अपना सोटा देई मारेआ तां
अचानक ओह सोटा उंदे झूठें गी मलियामेट
करन लगा ॥ 46 ॥

उसलै जादूगर (अल्लाह दे सामनै) सजदे च
गराई दित्ते गे ॥ 47 ॥

ते उनें गलाया जे अस सारे ज्हांनें दे रब्ब पर
ईमान आहनने आं ॥ 48 ॥

जेहका मूसा ते हारून दा रब्ब ऐ ॥ 49 ॥

وَقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنْتُمْ مُجْتَمِعُونَ ۝

لَعَلَّنَا نَتَّبِعَ السَّحَرَةَ إِنْ كَانُوا هُمْ
الْغَالِبِينَ ۝

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ أَإِنَّا
لِنَأْتِيكَ بِآيَاتٍ لِّئَا نَجْعَبَنَّكَ مِنَ الْمَقْتُولِينَ ۝

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذَا لَمِنَ الْمَقْتَرِينَ ۝

قَالَ لَهُمُ مُوسَى الْقَوْمَا أَنْتُمْ مُتَّقُونَ ۝

فَأَقْوَاجِلَهُمْ وَعِصِيَهُمْ وَقَالُوا بَعْزَةٌ
فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ ۝

فَألقى مُوسَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ
مَا يَأْفِكُونَ ۝

فَألقى السَّحَرَةُ سُجُودِينَ ۝

قَالُوا أَمْ تَأْتِي رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

رَبِّ مُوسَى وَهَارُونَ ۝

1. मूल शब्द 'इल्का' दा अर्थ ऐ-कुसै चीजै गी इस चाल्ली सुट्टना जे दूप लोक उसी दिक्खन लगी पौन।
(मुफ्रदात) आयत दा भाव एह ऐ जे जो किश धुआड़े दिलें च ऐ उसी जाहर करी देओ तां जे सारे लोक
उसी दिक्खी सकन।

इस पर फिरऔन (खिंझियै) बोल्लेआ जे क्या तुस मेरी आज्ञा देने थमां पैहलें गै ईमान लेई आए ओ? एह (आदमी) यकीनन थुआड़ा कोई सरदार ऐ जिसनै तुसेंगी इस जादू दी शिक्षा दिती दी ऐ। इस आस्तै तौले गै तुसेंगी (अपने परिणाम दा) पता लगगी जाग। अ'ऊं थुआड़े हत्थें ते पैरें गी (अपनी) खलाफबरजी दी ब'जा करी कट्टी देड ते तुसें सारें गी सलीब उप्पर टंगी देड ॥ 50 ॥

उनें गलाया (इस च) कोई हरज नेई आखरकार अस अपने रब्ब आहले पासै गै परतोइयै जाने आहले आं ॥ 51 ॥

अस मेद करने आं जे साढ़ा रब्ब साढ़े गुनाह इस ब'जा करी माफ करी देग जे अस सारें शा पैहलें ईमान आहनने आहलें बिच्चा बनी गेदे आं ॥ 52 ॥ (सुकू 3/7)

ते असें मूसा आहले पासै वह्यी कीती जे मेरे बंदें गी रातो-रात कन्ने लेइयै निकली जा। थुआड़ा पीछा कीता जाग ॥ 53 ॥

इस पर फिरऔन नै शैहुरै आहले पासै किट्टे करने आहले आदमी भेजे ॥ 54 ॥

(एह आखदे होई) जे एह लोक (यानी बनी इस्राईल) ते इक निक्की हारी जमात न ॥ 55 ॥

ते एहदे पर बी एह लोक असेंगी रोह चढ़ाऽ करदे न ॥ 56 ॥

ते अस इक बड़ी (बड़्डी) जमात आं ते अत्त गै सचेत आं (इस लेई असें उंदा मकाबला करना चाही दा) ॥ 57 ॥

उसलै असें उनेंगी (यानी फिरऔन ते उसदे साथियें गी) बागें ते झरनें बिच्चा कड़्डी लाया ॥ 58 ॥

قَالَ امْتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ أَدْنَى لَكُمْ إِنَّهُ
لَكَبِيرٌ كُمْ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السَّحْرَ
فَأَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۗ لَا قَطْعَنَ أَيْدِيكُمْ
وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ وَلَا وَصَلَتْنَاكُمْ
أَجْمَعِينَ ۝

قَالُوا لَا صَبِيرٌ إِنَّا إِلَى رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ۝

إِنَّا نَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لَنَا رَبَّنَا خَطِيئَاتِنَا ۗ
كُنَّا أَوَّلَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي
إِنَّكُمْ مُتَّبِعُونَ ۝

فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ۝

إِنَّ هَؤُلَاءِ لَشُرُومَةٌ قَلِيلُونَ ۝

وَأَنَّهُمْ لَنَا غَائِبُونَ ۝

وَإِنَّا لَجَمِيعٌ حَذِرُونَ ۝

فَأَخْرَجْنَاهُمْ مِنْ جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۗ

ते (इस्सै चाल्ली) खजानें ते आदर जोग देशै
बिच्चा बी (कट्टी दित्ता) ॥ 59 ॥

وَكُنُوزٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٥٩﴾

ऐसा गै होआ। ते असें उंदा (चीजें दा)
बारस¹ बनी इस्साईल गी बनाई दित्ता ॥ 60 ॥

كَذَلِكَ وَأَوْرَثَهَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٦٠﴾

फी बडलै ओह (यानी फ़िरऔन ते उसदी
कौम दे लोक बनी इस्साईल गी रोकने आस्तै)
उंदे पिच्छें चली पे ॥ 61 ॥

فَاتَّبَعُوهُمْ مُشْرِقِينَ ﴿٦١﴾

फी जिसलै दमें गरोह (टोल्लियां) आमनै-
सामनै होए तां मूसा दे साथियें गलाया, अस
ते पकड़ोई गे ॥ 62 ॥

فَلَمَّا تَرَاءَ الْجَمْعُ عَلَى الْأَصْحَابِ مُوسَى
إِنَّا لَمَذْرُكُونَ ﴿٦٢﴾

(मूसा नै) जवाब दित्ता, ऐसा कदें बी नेई
होग मेरा रब्ब मेरे कनै ऐ ते ओह मिगी
कामयाबी दा रस्ता दस्सग ॥ 63 ॥

قَالَ كَلَّا ۚ إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٦٣﴾

उसलै असें मूसा आहले पासै वह्मी कीती जे
अपने सोटे गी समुंदरे पर मार, जेहदे करी
(समुंदर) फटी गेआ ते उसदा हर टुकड़ा
इक बड़डे टीले (टिब्बे) आंगर लब्भन लगा
॥ 64 ॥

فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَضْرِبْ بِعَصَاكَ
الْبَحْرَ ۚ فَانفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ
الْعَظِيمِ ﴿٦٤﴾

ते उस बेलै अस दूए गरोह (यानी फ़िरऔन
दे गरोह) गी लागै लेई आए ॥ 65 ॥

وَأَرْزَلْنَا مَاءَ الْآخَرِينَ ﴿٦٥﴾

ते मूसा ते उसदे साथियें गी मुक्ति दित्ती
॥ 66 ॥

وَأَنْجَيْنَا مُوسَىٰ وَمَنْ مَعَهُ أَجْمَعِينَ ﴿٦٦﴾

ते असें दूए गरोह गी गरक करी दित्ता ॥ 67 ॥

ثُمَّ أَعْرَفْنَا الْآخَرِينَ ﴿٦٧﴾

इस (घटना) च इक बड़डा नशान ऐ पर इंदे
(इन्कार करने आहलें) बिच्चा मते-सारे लोक
मनदे गै नेई न ॥ 68 ॥

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۚ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُؤْمِنِينَ ﴿٦٨﴾

1. मतलब एह जे बनी इस्साईल गी उस जगह लेई गे, जित्थें एह सब चीजां उपलब्ध हियां। बाग, चरमैं, खजाने ते बधिया देश (यानी फ़लास्तीन) बनी इस्साईल फ़िरऔन दी घटना दे बा'द मिस्र देश दे हाकम नेई बने।

ते यकीनन तेरा रब्ब गालिब (यानी प्रभुत्वशाली) ते बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 69 ॥ (रुकू 4/8)

ع
٨

وَأَنَّ رَبَّكَ لَهْوَالْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ٥٤

ते उनें गी इब्राहीम दी घटना पढ़ियै सुनाऽ ॥ 70 ॥

ع
٩

وَأَتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ إِبْرَاهِيمَ ٥٥

जिसलै जे उसनै अपने पिता ते अपनी जाति दे लोकें गी गलाया जे तुस किस चीजै दी अबादत करदे ओ? ॥ 71 ॥

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ٥٦

उनें गलाया अस बुतें दी पूजा करने आं ते उंदे अगें बैठे दे रौहन्ने आं ॥ 72 ॥

قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظَّلُهَا عَنَّا ٥٧

इस पर इब्राहीम नै गलाया। जे क्या जिसलै तुस उनेंगी बुलांदे ओ ओह् थुआड़ी (उस) पुकार गी सुनदे न? ॥ 73 ॥

قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ ٥٨

जां तुसेंगी कोई फायदा पुजांदे जां नुक्सान दिंदे न ॥ 74 ॥

أَوْ يَنفَعُونَكُمْ أَوْ يُضُرُّونَ ٥٩

उनें गलाया, ऐसा ते नेई, पर अस अपने बड़कें गी इयां गै करदे दिखदे आए आं ॥ 75 ॥

قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذَلِكَ يَفْعَلُونَ ٦٠

उसनै गलाया जे क्या तुसेंगी सेही ऐ जे जिंदी अबादत तुस करदे आए ओ ॥ 76 ॥

قَالَ أَفَرَأَيْتُمْ مَا كَانْتُمْ تَعْبُدُونَ ٦١

तुस बी ते थुआड़े पूबज बी ॥ 77 ॥

أَنْتُمْ وَأَبَاؤُكُمْ الْأَقْدَمُونَ ٦٢

ओह् सारे दे सारे, सारे ज्हाँनें दे रब्ब दे सिवा मेरी तबाही चांहदे न ॥ 78 ॥

فَأِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيَ إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ٦٣

जिस (रब्ब) नै मिगी पैदा कीते दा ऐ ते (उसदे नतीजे च) ओह् मिगी हदायत बी देग ॥ 79 ॥

الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ٦٤

ते जिसदी सिफत एह् ऐ जे ऊऐ मिगी खाना खलांदा ते ऊऐ मिगी पानी पलैंदा ऐ ॥ 80 ॥

وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ ٦٥

ते जिसलै अ'ऊं बमार पौन्ना तां ओह मिगी
नरोआ करता ऐ ॥ 81 ॥

وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ﴿۸۱﴾

ते जेहका मिगी मारग ते फी जौंदा करी देग
॥ 82 ॥

وَالَّذِي يُمَيِّتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِ ﴿۸۲﴾

ते मिगी ओहदे थमां मेद ऐ जे ओह स'जा ते
सिला दिंदे मौकै मेरे पाप बख्शी देग ॥ 83 ॥

وَالَّذِي أَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي
يَوْمَ الدِّينِ ﴿۸۳﴾

हे मेरे रब्ब! मिगी स्हेई तलीम दे ते नेक लोकें
च शामिल कर ॥ 84 ॥

رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَالْحَقْنَ
بِالصَّالِحِينَ ﴿۸۴﴾

ते बा'द च औने आहले लोकें च मेरी सच्ची
ते अमर रौहने आहली तरीफ मिगी प्रदान कर
॥ 85 ॥

وَاجْعَلْ لِي لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْآخِرِينَ ﴿۸۵﴾

ते मिगी नैमतें आहले सुर्ग दे बारसैं बिच्चा
बनाऽ ॥ 86 ॥

وَاجْعَلْنِي مِنْ وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ ﴿۸۶﴾

ते मेरे पिता गी माफ करी दे, ओह भटकी
जाने आहलें बिच्चा हा ॥ 87 ॥

وَاعْفِرْ لِي إِنِّي كَانُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿۸۷﴾

ते जिस दिन लोक जींदे करियै तुआले जान,
उस दिन मिगी शर्मसार नेई करेओ ॥ 88 ॥

وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ ﴿۸۸﴾

जिस दिन नां ते धन कोई फायदा देग ते नां
पुत्तर गै (फायदा देडन) ॥ 89 ॥

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ ﴿۸۹﴾

हां! (ऊऐ फायदा लैग) जेहका अल्लाह कश
पवित्र दिल लेइयै औग ॥ 90 ॥

إِلَّا مَنْ آتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿۹۰﴾

ते जिस दिन सुर्ग संयमियें दे लागै करी दिता
जाग ॥ 91 ॥

وَأَزَلَّتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿۹۱﴾

ते गुमराह लोकें आसतै नरकै परा परदे चुक्की
दिता जाडन ॥ 92 ॥

وَبَرَزَتْ الْجَحِيمُ لِلْغَاوِينَ ﴿۹۲﴾

ते गलाया जाग जे कुत्थें न ओह जिंदी तुस
अल्लाह दे सिवा अबादत करदे होंदे हे ॥ 93 ॥

وَقِيلَ لَهُمْ أَيُّكُمْ تَعْبُدُونَ ﴿۹۳﴾

क्या ओह थुआड़ी मदाद करी सकदे न? जां थुआड़ा बदला लेई सकदे न ? ॥ 94 ॥

इस लेई उस बेलै ओह (काफर ते झूठे उपास्य) ते गुमराह लोक (नरकै च) उंघै-मूंह सुट्टी दिते जाडन ॥ 95 ॥

ते इब्लीस दे लशकर सारे दे सारे (बी उस नरकै च उंघै-मूंह सुट्टी दिते जाडन) ॥ 96 ॥

ओह जिसलै आपस च इक-दूए कन्नै उस (नरकै) च झगड़ा करा करदे होंगन ते आखडन ॥ 97 ॥

अल्लाह दी कसम! अस खु'ल्लम-खु'ल्ली गुमराही च पेदे हे ॥ 98 ॥

जिसलै जे अस तुसंगी सारे ज्हाँनें दे रब्ब आंगर सम्मान दिंदे हे ॥ 99 ॥

ते असंगी ते मुजरमें गै रस्ते थमां भटकाया हा ॥ 100 ॥

इस आस्तै (अज्ज) सफारश करने आहलें बिच्चा कोई साढ़ी सफारश नेई करदा ॥ 101 ॥

ते नां कोई साढ़ा हमदर्द दोस्त ऐ ॥ 102 ॥

इस लेई जेकर साढ़े च बापस परतोने दी ताकत होंदी तां अस (परतोइयै) जरूर मोमिनें च (शामल) होई जंदे ॥ 103 ॥

इस (घटना) च इक बौहत बड़डा नशान ऐ ते उंदे (काफरें) बिच्चा मते-हारे ईमान नेई आहनदे ॥ 104 ॥

ते तेरा रब्ब यकीनन गालिब (ते) बार-बार कर्म करने आहला ऐ ॥ 105 ॥ (रुकू 5/9)

नूह दी कौम नै (अपने) रसूलें दा इन्कार कीता ॥ 106 ॥

مِنْ دُونِ اللَّهِ هَلْ يَنْصُرُونَكُمْ
أَوْ يَنْتَصِرُونَ ﴿٩٤﴾

فَكَبِجُوا فِيهَا هُمْ وَالْعَاوُنُ ﴿٩٥﴾

وَجُودُ إِلَيْسَ أَجْمَعُونَ ﴿٩٦﴾

قَالُوا أَوْ هُمْ فِيهَا يَخْتَصِمُونَ ﴿٩٧﴾

تَاللَّهِ إِنْ كُنَّا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٩٨﴾

إِذْ نَسَوَيْكُمْ يَرْبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٩٩﴾

وَمَا أَصْلَنَا إِلَّا الْمَجْرُمُونَ ﴿١٠٠﴾

فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِينَ ﴿١٠١﴾

وَلَا صَدِيقٍ حَمِيمٍ ﴿١٠٢﴾

فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّمَنْ كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُؤْمِنِينَ ﴿١٠٤﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٥﴾

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٠٦﴾

जिसलै जे उंदे कनै उंदे भ्राऽ नूह¹ नै गलाया
जे क्या तुस संयम धारण नेई करदे? ॥ 107 ॥

إذ قال لهم أخوهم نوح ألا تتقون ﴿١٠٧﴾

अ'ऊं शुआड़े पासै इक अमानतदार पगंबर
बनियै आया आं ॥ 108 ॥

إني لكم رسول أمين ﴿١٠٨﴾

इस लेई अल्लाह आस्तै संयम धारण करो ते
मेरी आज्ञा दा पालन करो ॥ 109 ॥

فاتقوا الله وأطيعون ﴿١٠٩﴾

ते अ'ऊं तुंदे कशा इस (सेवा) दा कोई बदला
नेई मंगदा। मेरा बदला ते सारे ज्हाँन दे रब्ब
(खुदा) दे जिम्मै ऐ ॥ 110 ॥

وما أسألكم عليه من أجرٍ إن أجرى

إلا على رب العالمين ﴿١١٠﴾

इस आस्तै अल्लाह आस्तै संयम धारण करो।
ते मेरी आज्ञा दा पालन करो ॥ 111 ॥

فاتقوا الله وأطيعون ﴿١١١﴾

(उनें काफरें) गलाया जे क्या अस तेरे पर
ईमान लेई औचै जिसलै जे (सचाई एह ऐ
जे) नीच लोक गै तेरे अनुयायी होए न
॥ 112 ॥

قالوا أئؤمن لك واتبعك الأردذون ﴿١١٢﴾

उसनै गलाया जे मिगी केह पता जे उंदे अंदरूनी
कर्म कनेह न ? ॥ 113 ॥

قال وما على بما كانوا يعملون ﴿١١٣﴾

उंदा स्हाब करना ते मेरे रब्ब दे जिम्मै ऐ।
काश, तुस समझो ॥ 114 ॥

إن حسابهم إلا على ربّي لو تشعرونا ﴿١١٤﴾

ते जो आदमी मोमिन होइथै मेरे लागै औंदा
ऐ तां मेरा कम्म एह नेई जे अ'ऊं उसी
दुतकारी देआं ॥ 115 ॥

وما أنا بطارد المؤمنین ﴿١١٥﴾

अ'ऊं ते सिर्फ खु'ल्ले-खु'ल्ले रूपै च सचेत
करने आह्ला (इक शख्स) आं ॥ 116 ॥

إن أنا إلا نذير مبين ﴿١١٦﴾

1. पवित्र कुरआन च बार-बार इक रसूल दे इन्कार गी सारे रसूलें दा इन्कार गलाया गेआ ऐ। एहदे राहें एह संकेत कीता गेदा ऐ जे सारे रसूल नुबुव्वत दे इक्कै रस्तै औंदे रेह न। फी जिसलै जे नुबुव्वत दे रस्ते दे होंदे होई इक रसूल दा इन्कार कीता जा तां इस दा एह नतीजा निकलदा ऐ जे जेकर कोई इन्कार करने आह्ला कुसै पैहले रसूल दे मौके होंदा तां ओह उस रसूल दा बी इन्कार करी दिंदा, की जे जो युक्तियां ते सबूत उस रसूल दी सचाई आस्तै हे ऊरे युक्तियां ते सबूत इस आधुनिक रसूल दी सचाई आस्तै बी न। इस आयत दा एह अर्थ बी होई सकदा ऐ जे हजरत नूह दे अनुयायियें बिच्चा मते-सारे रसूल उस दी अधीनता च आए जिस दा इन्कार उसदी कौम दे लोकें कीता।

(उनें काफरें) गलाया, हे नूह! जेकर तू बाज नेई आया तां तू संगसार (पथरैद) कीते जाने आहलें बिच्च शामिल होई जागा (यानी अस तुगी संगसार करी देगे) ॥ 117 ॥

इस पर (नूह नै) गलाया, हे मेरे रब्ब! मेरी कौम दे लोकें मिगी झुठेरी दिता ऐ ॥ 118 ॥

इस लेई तू मेरे ते उंदै बिच्च इक अटल फैसला कर ते मिगी ते मेरे साथी मोमिनें गी (बैरी दी बुराई थमां) बचाई लै ॥ 119 ॥

इस लेई असें उसी ते जेहके लोक ओहदे कनै ईमान ल्याई चुके दे हे, इक भरी दी किरती राहें (बुराई थमां) बचाई लैता ॥ 120 ॥

उसदे बा'द जेहके लोक बची गे उनेंगी तबाह करी दिता ॥ 121 ॥

एहदे च इक बौहत बड़डा नशान हा, पर काफरें बिच्चा मते-सारे ईमान आहनने आसतै त्यार नेई हे ॥ 122 ॥

ते तेरा रब्ब गै गालिब (यानी प्रभुत्वशाली) ते बार-बार रहम करने आहला ऐ ॥ 123 ॥ (रुकू 6/10)

(इससै चाल्ली) आद नै बी रसूलें दा इन्कार कीता हा ॥ 124 ॥

जिसलै जे उंदे कनै उंदे भ्राऽ हूद नै गलाया जे क्या तुस संयम धारण नेई करदे? ॥ 125 ॥

अ'ऊं थुआड़े पासै इक अमानतदार रसूल बनियै आया आं ॥ 126 ॥

इस आसतै अल्लाह आसतै संयम धारण करो ते मेरी आज्ञा दा पालन करो ॥ 127 ॥

قَالُوا لَئِن لَّمْ تَنْتَه يُّوْح لَتَكُونَنَّ
مِنَ الْمَرْجُومِينَ ۝۱۱۷

قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّبُونِ ۝۱۱۸

فَأَفْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتَحًا وَنَجِّنِي
وَمَنْ مَعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝۱۱۹

فَأَنْجِبْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ
الْمُسْحُونِ ۝۱۲۰

ثُمَّ أَعْرَفْنَا بَعْدَ الْبُقَيْنِ ۝۱۲۱

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُؤْمِنِينَ ۝۱۲۲

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝۱۲۳

كَذَّبَتْ عَادٌ الْمُرْسَلِينَ ۝۱۲۴

إِذْ قَالُوا هُمْ أَهْوَدُ مِنْهُمْ وَهُمْ لَآتَتَّقُونَ ۝۱۲۵

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝۱۲۶

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۝۱۲۷

ते अ'ऊं तुंदे थमां इस (सेवा) दा कोई बदला
नेई मंगदा। मेरा बदला सारे लोकें दे रब्ब दे
हल्थ ऐ (जिसनै मिगी भेजे दा ऐ) ॥ 128 ॥

क्या तुस हर टिब्बे उप्पर फजूल कम्म करदे
होई (यादगार) अमारत बनांदे ओ ? ॥ 129 ॥

ते तुस बड़डे-बड़डे भवन बनांदे ओ, तां जे
तुस म्हेशां कायम र'वो ॥ 130 ॥

ते जिसलै तुस (कुसै गी) पकड़दे ओ तां तुस
जालमें आंगर पकड़दे ओ ॥ 131 ॥

इस लेई अल्लाह आसतै संयम धारण करो। ते मेरी
आज्ञा दा पालन करो ॥ 132 ॥

फी अ'ऊं आखना जे उस (जात) दा संयम
अखत्यार करो जिसनै थुआड़ी इनें चीजें कनै
मदद कीती ऐ जिनेंगी तुस जानदे ओ ॥ 133 ॥

उसनै थुआड़ी मदद, चपाएं ते पुत्तरे ॥ 134 ॥

ते बागैं ते चशमें राहें कीती ऐ ॥ 135 ॥

अ'ऊं थुआड़े पर इक बड़डे दिन दा अजाब
नाजल होने थमां डरना ॥ 136 ॥

उनें गलाया जे तेरा उपदेश देना जां उपदेश नेई
देना साढ़े आसतै बराबर ऐ ॥ 137 ॥

(की जे जेहिकयां गल्लां अस करने आं)
ओह ते पैहले¹ जमाने दे लोकें दे बेलै थमां
होंदियां आवा करदियां न ॥ 138 ॥

ते साढ़े उप्पर कदें बी अजाब नेई आँग ॥ 139 ॥

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ
إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٢٨﴾

أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ آيَةً تَعْبَثُونَ ﴿١٢٩﴾

وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ
تُخَلَّدُونَ ﴿١٣٠﴾

وَإِذَا بَطِشْتُمْ بَطِشْتُمْ جَبَّارِينَ ﴿١٣١﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ﴿١٣٢﴾

وَاتَّقُوا الَّذِي أَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُونَ ﴿١٣٣﴾

أَمَدَّكُمْ بِأَنْعَامٍ وَبَيْنَيْنَ ﴿١٣٤﴾

وَجَنَّتِ وَعُيُونٍ ﴿١٣٥﴾

إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ
عَظِيمٍ ﴿١٣٦﴾

قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعَضْتَ أَمْ لَمْ تَكُنْ
مِنَ الْوَاعِظِينَ ﴿١٣٧﴾

إِنَّ هَذَا إِلَّا خَلْقُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣٨﴾

وَمَا نَحْنُ بِمُعَذِّبِينَ ﴿١٣٩﴾

1. 'बहरे मुहीत' नै बी इस दा इयै अर्थ लेदा ऐ जे इस दा एह मतलब नेई जे तेरे जगेह उपदेश पैहले लोक
बी दिंदे होंदे हे, बल्के इसदा एह मतलब ऐ जे जिनें गल्लें थमां तूं असंगी रोकना ऐ ऊरे गल्लां पैहले समे
दे लोक बी करदे होंदे हे। (बहरे मुहीत, लेखक अल्लामा अबू हय्यान जिल्द 7 सफा 34) इस लेई जेकर
ओह सुरक्षत रेह हे तां अस की नेई सुरक्षत रौहगे।

इस लेई उनें (काफरें) उसी झुठेरी दिता ते असें उंदी तबाही करी दिती। इस घटना च इक बौहत बड्डा नशान ऐ, पर उंदे बिच्चा मते-सारे मोमिन नेई बने ॥ 140 ॥

ते तेरा रब्ब यकीनन गालिब (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 141 ॥ (रुकू 7/11)

समूद (कौम) नै बी रसूलें गी झुठेरेआ हा ॥ 142 ॥

जिसलै जे उनेंगी उंदे भ्राऽ सालेह नै आखेआ हा जे क्या तुस संयम धारण नेई करदे ? ॥ 143 ॥

अ'ऊं थुआड़े पासै इक अमानतदार रसूल बनाइयै भेजेआ गेदा आं ॥ 144 ॥

इस लेई अल्लाह आस्तै संयम धारण करो ते मेरी आज्ञा दा पालन करो ॥ 145 ॥

ते अ'ऊं इस (कम्मै) आस्तै तुंदे थमां कोई बदला नेई मंगदा। मेरा बदला ते सारे ज्हांनें दे रब्ब दे हतथै च ऐ ॥ 146 ॥

क्या (तुस समझदे ओ जे) जो कुछ इस संसार च ऐ तुसेंगी उससै च शांति कनै जीवन बतीत करदे छोड़ी दिता जाग? ॥ 147 ॥

अर्थात् बागें ते चशमें च ? ॥ 148 ॥

ते झुलदे खेतरें ते खजूरें च, जिंदे फल बोझ दी ब'जा करी टुटदे जा करदे होन? ॥ 149 ॥

ते तुस लोक फ्हाड़ खोतरी-खोतरी (अपनी बड़ाई पर) इतरांदे होई घर बनांदे ओ ॥ 150 ॥

इस लेई अल्लाह आस्तै संयम धारण करो ते मेरी आज्ञा दा पालन करो ॥ 151 ॥

فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً
وَمَا كَانَ أَكْثَرَهُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٤٠﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٤١﴾

كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٤٢﴾

إِذْ قَالَ لَهُمُ أَخُوهُمْ صَالِحٌ أَلا تَتَّقُونَ ﴿١٤٣﴾

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٤٤﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنْ أَجْرِيَ
إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٤٦﴾

أَتُتْرَكُونَ فِي مَا هُمْ بِأَمِينِينَ ﴿١٤٧﴾

فِي جَنَّتٍ وَعَمِيُونَ ﴿١٤٨﴾

وَرُزُوقٍ وَنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيمٌ ﴿١٤٩﴾

وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ مِيُونًَا فَرِهِينَ ﴿١٥٠﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا

ते हृदय थमां बधी जाने आहले लोकें दी गल्लें गी नेई मनो ॥ 152 ॥

ओह लोक जो देश च फसाद फलांदे न ते सुधार नेई करदे ॥ 153 ॥

इस पर ओह (काफर) बोल्ले जे तुगी सिर्फ भोजन¹ दिता जंदा ऐ ॥ 154 ॥

तूं साढे आंगर गै इक मनुक्ख ऐं। इस लेई जेकर तूं सच्चा ऐं तां कोई चमत्कार जाहर कर ॥ 155 ॥

उसनै गलाया जे एह इक ऊंटनी ऐ। घाट (यानी पनेआसै) पर पानी पीने लेई एहदे आस्तै इक दिन निश्चत ऐ ते इक दिन थुआड़े लेई पनेआसै परा पानी लैने आस्तै निश्चत ऐ ॥ 156 ॥

ते तुस इस ऊंटनी गी कोई नुकसान नेई पजायो, नेई ते तुसं गी इक बड्डे दिनें दा अजाब आई पकड़ग ॥ 157 ॥

(एह सुनियै बी) उनें उस ऊंटनी दियां कूचां (यानी सदां) कप्पी सुट्टियां ते फी शरमिंदा होई गे ॥ 158 ॥

उसलै उनेंगी (निश्चत) अजाब नै आई पकड़ेआ। यकीनन इस घटना च इक बौहत बड्डा नशान/चमत्कार हा, पर उंदे बिच्चा मते-हारे मोमिनें बिच्च शामिल नेई होए ॥ 159 ॥

ते तेरा रब्ब यकीनन गालिब (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 160 ॥ (रुकू 8/12)

लूत दी कौम दे लोकें बी रसूलें दा इन्कार कीता ॥ 161 ॥

وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ ﴿١٥٢﴾

الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ
وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿١٥٣﴾

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ﴿١٥٤﴾

مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا فَأْتِ بآيَاتٍ إِنْ
كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٥٥﴾

قَالَ هَذِهِ نَاقَةٌ لَهَا شِرْبٌ وَلَكُمْ شِرْبُ
يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿١٥٦﴾

وَلَا تَسْهَوْهَا سِوَاهُ فَيَأْخُذْكُمْ عَذَابٌ
يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥٧﴾

فَعَقَرُوهَا فَاصْبَحُوا نَدِيمِينَ ﴿١٥٨﴾

فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لآيَةً
وَمَا كَانَ أَكْثَرَهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٥٩﴾

﴿١٦٠﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٦١﴾

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٦٢﴾

1. दिक्खो सूर: अल्-फुर्कान टिप्पणी आयत 9

जिसलै जे उंदे भ्राऽ लूत नै गलाया जे क्या तुस संयम धारण नेई करदे? ॥ 162 ॥

अ'ऊं थुआड़ी बक्खी इक अमानतदार रसूल बनाइयै भेजेआ गोदा आं ॥ 163 ॥

इस लेई अल्लाह आस्तै संयम धारण करो ते मेरी आज्ञा दा पालन करो ॥ 164 ॥

ते अ'ऊं इस (कम्मै) आस्तै तुंदे शा कोई बदला नेई मंगदा, मेरा बदला ते सिर्फ लोकें दे रब्ब दे हत्थै च ऐ ॥ 165 ॥

क्या तुसैं संसार दी सारी चीजें बिच्चा नरें गी अपने आस्तै चुनी लैता ऐ? ॥ 166 ॥

ते तुस उनेंगी छोड़दे ओ जिनैंगी थुआड़े रब्ब नै थुआड़ी पत्तियें (लाड़ियें) दे रूपे च पैदा कीते दा ऐ? (सिर्फ तुस नेहा कम्म गै नेई करदे) बल्के (सचाई एह ऐ जे) तुस (मनुक्खी सभाऽ दी) जरूरतें गी हर चाल्ली नै भंग करने आहली कौम ओ ॥ 167 ॥

उनें गलाया जे हे लूत। जेकर तूं एह गल्ल करने थमां बाज नेई आया तां तूं देशै थमां कड़ढे जाने आहले लोकें च शामिल होई जागा ॥ 168 ॥

उस (लूत) नै गलाया जे अ'ऊं थुआड़े कम्मै गी भ्रिणा दी द्रिस्टी कनै दिक्खना ॥ 169 ॥

हे मेरे रब्ब! मिगी ते मेरे परिवार गी इंदे बुरे कम्मैं थमां मुक्ति दुआऽ ॥ 170 ॥

इस लेई असें उसी ते उसदे परिवार गी बचाई लैता ॥ 171 ॥

सिवाए इक बुड़ढी दे जेहकी पिच्छें रौहने आहलें बिच्च शामिल होई गई ॥ 172 ॥

إِذْ قَالَ لَهُمُ أَحُوهُمْ لَوْطًا أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٦٢﴾

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٦٣﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاطِيعُونَ ﴿١٦٤﴾

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٥﴾

أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٦﴾

وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَرْوَاحِكُمْ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ﴿١٦٧﴾

قَالُوا لَنْ لَمْ تَنْتَه يَلُوطُ لَتَكُونَ مِنَ الْمُخْرَجِينَ ﴿١٦٨﴾

قَالَ إِنِّي لِعَمَلِكُمْ مِنَ الْقَالِينَ ﴿١٦٩﴾

رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٧٠﴾

فَجَئِنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٧١﴾

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ﴿١٧٢﴾

ते असें (लूत गी बचाई लैने दे बा'द) दूए
सारे पिच्छें रोहने आहलें गी तबाह करी दिता
॥ 173 ॥

ते असें उंदे पर (पत्थरें दी) बरखा कीती ते
जिनंगी (अल्लाह पासेआ) सचेत करी दिता
जंदा ऐ (पर जिसलै ओह् नेई रुकदे) तां उंदे
पर बर्हाई जाने आहली बरखा अत्त बुरी होंदी
ऐ ॥ 174 ॥

यकीनन इस घटना च इक बड्डा नशान हा,
पर इंदे बिच्चा फी बी मते-सारे लोक मोमिन
नेई बने ॥ 175 ॥

यकीनन तेरा रब्ब ओह् ऐ जो गालिब (ते)
बार-बार कर्म करने आहला ऐ ॥ 176 ॥ (रुकू
9/13)

जंगल¹ दे बासियें बी रसूलें दा इन्कार कीता
हा ॥ 177 ॥

जिसलै जे उंदे कनै शुऐब नै गलाया जे क्या
तुस संयम धारण नेई करदे ॥ 178 ॥

अऊं शुआडे पासै इक अमानतदार रसूल बनियै
आया आं ॥ 179 ॥

इस लेई अल्लाह आस्तै संयम धारण करो ते
मेरी आज्ञा² दा पालन करो ॥ 180 ॥

ते अ'ऊं इस (कम्मै) दी तुंदे थमां कोई
मजदूरी नेई मंगदा, मेरी मजदूरी ते सिर्फ सारे
ज्हांनें दे रब्ब दे हत्थें च ऐ ॥ 181 ॥

كُذِّبَتْ لَنَا الْأَخْرِيْنَ ﴿٦٧﴾

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ
الْمُنْذِرِينَ ﴿٦٨﴾

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُؤْمِنِينَ ﴿٦٩﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٧٠﴾

كَذَّبَ أَصْحَابُ الْمِرْثَلِيِّنَ ﴿٧١﴾

إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿٧٢﴾

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿٧٣﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا ﴿٧٤﴾

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِي
إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٧٥﴾

1. दिक्खो सूर: 'हिज्र' टिप्पणी आयत 79।

2. इस थमां पैहली केई आयतें च अल्लाह आस्तै संयम धारण करने दा जिकर होई चुके दा ऐ। हून इस आयत च दस्सेआ गोआ ऐ जे अल्लाह आस्तै संयम धारण करने दा मकसद तां गै पूरा होई सकदा ऐ जिसलै जे समे दे रसूल दी आज्ञा दा पालन कीता जा, की जे उसै राहें अल्लाह दी इच्छा दा पता लागी सकदा ऐ।

(हे लोको!) पूरा-पूरा नाप करी लै करा करो
ते (दूएँ गी) नुकसान पजाने आहले नेई बनो
॥ 182 ॥

ते सिद्धी डंडी कनै तोल्ला करो ॥ 183 ॥

ते लोकेँ गी उंदी चीजां (उंदे हक्क थमां) घट्ट
नेई देआ करो ते देश च कदें बी उपद्रब नेई
फलाऽ करा करो ॥ 184 ॥

ते जिसनै तुसेंगी ते तुंदे थमां पैहली मख्लूक
गी पैदा कीते दा ऐ ओहदे आसतै संयम धारण
करो ॥ 185 ॥

(इस पर उसदी कौम दे लोकेँ) गलाया जे तूं
ते ऐसा शख्स ऐं जिसी भोजन दिता जंदा ऐ
॥ 186 ॥

ते तूं सिर्फ साढ़े जनेहा इक मनुक्ख ऐं ते
यकीनन अस तुगी झूठा समझने आं ॥ 187 ॥

इस लेई जेकर तूं सच्चा ऐं तां साढ़ै उप्पर कोई
बदलै दा टुकड़ा (खंधोला) सुट्ट ॥ 188 ॥

(एहदे पर शुऐब नै) गलाया जे मेरा रब्ब
थुआड़े कर्मै गी चंगी चाल्ली जानदा ऐ
॥ 189 ॥

पर (उस दे समझानै पर बी) उनें उसी झूठेआ।
इस लेई उनेंगी छाया आहले दिन दे अजाब
नै आई पकड़ेआ (यानी घने ते चिरे तक
रौहने आहले बदलै दे अजाब नै)। यकीनन
ओह इक बड़डे दिनै दा भ्यंकर अजाब हा
॥ 190 ॥

इस घटना च इक बौहत बड़डा नशान हा ते
(उसी दिक्खियै बी) उंदे (काफरें) बिच्चा
मते-सारे लोक मोमिन नेई बने ॥ 191 ॥

أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ
الْمُخْسِرِينَ ﴿١٨٢﴾

وَرِنُوا بِالْقِسْطِ الْمُسْتَقِيمِ ﴿١٨٣﴾

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْنُوا
فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿١٨٤﴾

وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِلَّةَ الْأُولَىٰ ﴿١٨٥﴾

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمَسْحَرِينَ ﴿١٨٦﴾

وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَإِنْ نَطَّئُكَ
لَمِنَ الْكَذِبِينَ ﴿١٨٧﴾

فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ إِنْ كُنْتَ
مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٨٨﴾

قَالَ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨٩﴾

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابٌ يَوْمَ
الظُّلَّةِ ۗ إِنَّهُ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٩٠﴾

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۗ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُؤْمِنِينَ ﴿١٩١﴾

ते यकीनन तेरा रब्ब गालिब (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 192 ॥ (रुकू 10/
14)

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٩٢﴾

ते यकीनन एह (कुरआन) सारे ज्हांनें दे रब्ब
पासेआ उतारेआ गेदा ऐ ॥ 193 ॥

وَإِنَّهُ لَتَنْزِيلُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٩٣﴾

इसी लेइयै इक अमानतदार कलाम आहनने
आह्ला फ़रिश्ता (जिब्रील) तेरे दिलै च उतारेआ
ऐ ॥ 194 ॥

نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ ﴿١٩٤﴾

तां जे तू सचेत करने आहले गरोह च शामिल
होई जाएं ॥ 195 ॥

عَلَى قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنذِرِينَ ﴿١٩٥﴾

(इसी जिब्रील नै अल्लाह दे आदेश कनै)
खोहली-खोहिलयै दस्सने आहली अरबी भाशा
च उतारेआ ऐ ॥ 196 ॥

بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِينٍ ﴿١٩٦﴾

ते यकीनन इस दा ब्यौरा पैहली कताबें च बी
मजूद हा ॥ 197 ॥

وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٩٧﴾

क्या उंदे आस्तै एह नशान किश घट्ट ऐ जे
इस (कुरआन) गी बनी इस्राईल दे विद्वान बी
पछानदे¹ न ॥ 198 ॥

أَوَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ آيَةٌ أَنْ يَعْلَمَهُ عُلَمَاءُ
بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٩٨﴾

ते जेकर अस इसी (अरबें गी छोड़ियै) कुसै
होरस पर उतारदे ॥ 199 ॥

وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَى بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ﴿١٩٩﴾

ते ओह इसी इंदे (काफरें दे) सामनै पढ़ियै
सनांदा तां ओह कदें बी इस पर ईमान² नेई
आहनदे ॥ 200 ॥

فَقَرَأَهُ عَلَيْهِمْ مَا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿٢٠٠﴾

इससै चाल्ली असें अपराधियें दे दिलें च एह
गल्ल पाई दिती ऐ ॥ 201 ॥

كَذَلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٠١﴾

1. यानी ओह समझदे न जे एह कुरआन बनी इस्राईल दे नबियें दी भविक्खवाणी दे मताबक ऐ।
2. अर्थात् ओह आखदे न जे अस अरबी लोक साहित्यक, सुबोध ते सुस्पष्ट भाशा बोलने आहले आं ते एह रसूल दूई भाशा बोलने आहला ऐ।

(इस लेई) ओह इस पर ईमान नेई ल्यौडन, इत्थं तक जे दर्दनाक अजाब दिक्खी लैन ॥ 202 ॥

इस आस्तै ओह अजाब उंदे पर अचानक गै उंदी बे-ध्यानी च आई जाग ॥ 203 ॥

उसलै ओह आखडन जे क्या असेंगी मोहलत मिली सकग? ॥ 204 ॥

इस लेई (दससो जे) क्या इयै लोक साढ़े अजाब गी तौले मंगा करदे हे? ॥ 205 ॥

इस लेई क्या तुगी यकीन नेई ऐ जे जेकर अस उनेंगी साल्लें तक फायदा पजांदे जंदे ॥ 206 ॥

फी उंदै कश ओह (अजाब) आई जंदा जिसदा उंदे कनै बा'यदा कीता जंदा ऐ ॥ 207 ॥

तां, जे कश बी इनेंगी दिता गेदा ऐ ओह इस कनै उस (अजाब) गी टाली नेई सकदा हा ॥ 208 ॥

ते असें कुसे बस्ती गी, बिना उस पासै नबी भेजे, कदें बी तबाह नेई कीता ॥ 209 ॥

एह इस आस्तै कीता गेआ तां जे उनेंगी नसीहत होई जा ते अस जालम नेई ॥ 210 ॥

ते शतान इस (कुर'आन) गी लेइयै नेई उतरै ॥ 211 ॥

ते नां गै एह कम्म उंदी परिस्थिति मताबक हा ते नां ओह ओहदी समर्थ रखदे हे ॥ 212 ॥

ओह यकीनन (अल्लाह दा कलाम) सुनने थर्मां दूर रखवे गेदे न ॥ 213 ॥

इस लेई तू अल्लाह दे कनै कुसै होर उपास्य गी नेई पुकार, नेई तां तू अजाब ग्रसत लोकें बिच्चा होई जाग्गा ॥ 214 ॥

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝١

فَيَأْتِيهِمْ بَعْتَةٌ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝٢

فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُونَ ۝٣

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ۝٤

أَفَرَأَيْتَ إِنْ مَتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ۝٥

ثُمَّ جَاءَهُمْ مَا كَانُوا يُوعَدُونَ ۝٦

مَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَمْتَنِعُونَ ۝٧

وَمَا أَمْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنْذِرُونَ ۝٨

ذِكْرَىٰ فَتَنَّا وَمَا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝٩

وَمَا تَنْزَلَتْ بِهِ الشَّيْطَانُ ۝١٠

وَمَا يَنْبَغِي لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ۝١١

إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْرُؤُونَ ۝١٢

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتُكُونَ

مِنَ الْمَعْدِيَةِ ۝١٣

ते तू सारें शा पैहलें अपने सारें थमां नजदीकी सरबधियें गी डराऽ ॥ 215 ॥

وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ۝

ते जेहके लोक तेरे कश मोमिन बनियै औन उंदे आस्तै प्यार दियां बाहमां झुकाई दे ॥ 216 ॥

وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

फी जेकर कुसै बेलै ओह तेरी ना-फरमानी करी बौहन तां आखी दे जे अ'ऊं थुआड़े कर्मै थमां बरी (मुक्त) आं ॥ 217 ॥

فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنَّي بِرَبِّيَ مِمَّا
تَعْمَلُونَ ۝

ते गालिब (ते) बार-बार रैहम करने आहली सत्ता पर भरोसा रक्ख ॥ 218 ॥

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝

जेहका (अल्लाह) तुगी उस बेलै बी दिखदा ऐ जिसलै तू (नमाज आस्तै इक्कला) खड़ोते दा होन्ना ऐं ॥ 219 ॥

الَّذِي يَرِيكَ حِينَ تَقُومُ ۝

ते उस बेलै बी जिसलै तू (जमात कन्नै नमाज पढ़ने आस्तै) सजदा करने आहले लोकें च इद्धर-उद्धर फिरा करना होन्ना ऐं ॥ 220 ॥

وَتَقَلَّبَكَ فِي السُّجُودِ ۝

यकीनन ओह (अल्लाह गै) बौहत सुनने आहला ते बौहत जानने आहला ऐ ॥ 221 ॥

إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

क्या अ'ऊं तुगी दस्सां जे शतान किस पर उतरदे न ॥ 222 ॥

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ۝

(शतान) हर इक झूठे पापी पर उतरदे न ॥ 223 ॥

تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ۝

ओह अपने कन्न (गासै आहली बक्खी) लांदे न ते उंदे बिच्चा मते-हारे झूठे होंदे न ॥ 224 ॥

يُذِيقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثُرُهُمْ كَذِبُونَ ۝

ते कवियें दा गरोह नेहा होंदा ऐ जे उंदे पिच्छें चलने आहले लोक गुमराह¹ होंदे न ॥ 225 ॥

وَالشُّعْرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ۝

1. यानी हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दे अनुयायी नेक ते संयमी न। इस लेई सेही होआ जे एह कवि नेई न।

(हे श्रोता!) क्या तेरी समझ च (अजें तक) नेई आया जे ओह (कवि- गण) हर इक वादी (बस्ती) च बे-मतलब¹ घुमदे-फिरदे न ॥ 226 ॥

ओह ऐसियां गल्लां आखदे न जो आपूं नेई करदे ॥ 227 ॥

(कवियें बिच्चा) सिवाए मोमिनें ते नेक कर्म करने आहलें दे ते ऐसे लोकें दे जो (अपनी कविता च) अल्लाह दा बर्णन ज्यादा शा ज्यादा करदे न ते (निंदा करे च पैहल नेई करदे बल्के) मजलूम होने दे बा'द (जायज़)बदला लेंदे न ते ओह लोक जो जालम न जरूर जानी जाडन जे कुस थाहरै बक्खी उनें परतोइयै जाना होग ॥ 228 ॥ (रुकू 11/15)

الْمَرْتَرِ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَّهيمُونَ ﴿٢٦﴾

وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ﴿٢٧﴾

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانْتَصَرُوا مِنْ بَعْدِ
مَا ظَلَمُوا ۗ وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا
أَيَّ مَثَلٍ يَّتَقَلَّبُونَ ﴿٢٨﴾

ooo

1. यानी कवि लोक जीवन धमां परें कल्पना दी दुनियां च डुआरी भरदे रौहदे न।

سُورَةُ النَّمْلِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ السَّمَلَةِ أَرْبَعٌ وَتَسْعُونَ آيَةً وَسَبْعَةٌ رُكُوعَاتٌ

सूर: अल्-नम्ल

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां चरानमें आयतां ते सत्त रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला ते बार-बार रैहम
करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

ताहिर, समीअ! (पवित्र ते प्रार्थना सुनने
आह्ला अल्लाह इस सूरा दा उतारने आह्ला
ऐ) इस दियां आयतां कुर'आन ते प्रमाण युक्त
कताब दा हिस्सा न ॥ 2 ॥

طَسَّ ۖ تِلْكَ آيَاتُ الْقُرْآنِ وَكِتَابٍ
مُّبِينٍ ①

(जो) मोमिमें आस्तै हदायत ते शुभ-समाचार
(दा मूजब) न ॥ 3 ॥

هُدًى وَبُشْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ ①

(ऐसे मोमिन) जो विधिवत नमाज पढ़दे न
ते ज़कात दिंदे रौहदे न ते परलोक दे जीवन
पर (ते बा'द च औने आह्ला उनें गल्लें पर
जिंदा बा'यदा कीता गेआ हा) यकीन रखदे
न ॥ 4 ॥

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ
وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ①

ओह लोक जो परलोक दे जीवन पर ईमान नेई
आहनदे, असें उंदे कर्म गी उंदे आस्तै खूबसूरत¹
करियै दस्से दा ऐ। इस आस्तै ओह भतोए-
भतोए (बैहके-बैहके) दे फिरदे न ॥ 5 ॥

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ زَيَّاتُهُمْ
أَعْمَاهُمْ فَهُمْ يَصَمُّونَ ①

1. इस दा एह मतलब नेई जे अल्लाह उंदे बुरे कर्म उनें गी खूबसूरत करियै दसदा ऐ, बल्के मतलब एह ऐ जे कुदरती निजम गै ऐसा ऐ जे जिसलै कोई आदमी सच्चा रस्ता छोड़ियै करस्ते पर चली पौंदा ऐ तां ओह अपने मनै गी एह झूठ बोल्लियै संतुष्ट करी लैदा ऐ जे इयै रस्ता अच्छा ऐ। असल च एह मनुक्खे दे कर्म दा कुदरती नतीजा हौंदा ऐ। कुर'आनी परिभाषा च इसी अल्लाह कर्नै संबंधत कीता गेदा ऐ, की जे कर्म दा फल अल्लाह दिंदा ऐ। कुदरती सभाऽ अल्लाह नै गै पैदा कीते दा ऐ ते कर्म करने च मनुक्ख अजाद ऐ। जिसलै जे कुकर्म करदे-करदे मनुक्खै गी बुरे कर्म अच्छे लगदे न, फी बी मानवता ते अंतरात्मा उस मनुक्खै गी चतावनी दिंदे रौहदे न जे असल च ओह करसै जा करदा ऐ।

उंदे आस्तै दर्दनाक अजाब होग ते ओह आखरत दे जीवन च सारें थमां बद्ध घाटा खाने आह्ले होडन ॥ 6 ॥

أُولَئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمْ الْآخَسَرُونَ ﴿٦﴾

ते तुगी यकीनन कुरआन उस (हस्ती) दी तरफ मिला करदा ऐ जो बौहत हिक्मत आहली (सूखम दर्शी) ते बौहत जानने आहली (महाज्ञानी) ऐ ॥ 7 ॥

وَإِنَّكَ تَتْلَى الْقُرْآنَ مِنْ لَدُنِّ حَكِيمٍ عَلِيمٍ ﴿٧﴾

(याद करो) जिसलै मूसा ने अपने परिवार गी गलाया हा जे मैं इक अग्नि दिक्खी! ऐ। यकीनन अ'ऊं थुआड़े कश उस (अग्नि) थमां कोई (म्हत्त्वपूर्ण) समाचार ल्यौंग जां थुआड़े कश इक चमकदा अंगारा ल्यौंग तां जे तुस अग्य सेकी सको ॥ 8 ॥

إِذْقَالَ مُوسَى لِأَهْلِهِ إِنِّي آنَسْتُ نَارًا ۚ سَأَيْتُكُمْ مِنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ بَشِيرٍ ۖ قَبْسٍ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ﴿٨﴾

फी जिसलै ओह उस (अग्नि) कश आए तां उनेंगी अवाज² दिती गेई जे जो कोई अग्नि च ऐ ते जो इसदे आसै-पासै ऐ, उसी बरकत दिती गेई ऐ ते पवित्तर अल्लाह सारे ज्हांनें दा रब्ब (पालनहार) ऐ ॥ 9 ॥

فَلَمَّا جَاءَهَا نُودِيَ أَنَّ بُورِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ۗ وَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٩﴾

1. इस आयत दा भाव एह ऐ जे हजरत मूसा नै नबुक्वत पाने दे बा'द पैहलो-पैहल इक ज्योति दे दर्शन कीते हे। इस थमां उनें एह समझेआ हा जे हून मेरे पर वह्नी उतरने आहली ऐ। ओह संसारक ज्योति नेई ही नेई ते ओहदे आस्तै 'इक आग' शब्द इस्तेमाल नेई कीता जंदा, सिर्फ 'आग' आखेआ जंदा। असल च ओह समझदे हे जे एह इक कश्फ ऐ तां गै उनें अपने परिवार गी आखेआ जे इयां सेही होंदा ऐ जे अल्लाह दी कोई ज्योति प्रकट होने आहली ऐ। इस लेई अ'ऊं उर्थे जन्ना। जेकर एह ज्योति सिर्फ मेरे आस्तै होई तां अ'ऊं एह म्हत्त्वपूर्ण समाचार तुसेंगी यानी अपनी बीबी ते दूए रिश्तेदारें गी आइयै सनाड ते जेकर ओह मेरी कौम, देश ते जनता आस्तै आम होई तां फी कोई चमकदा अंगारा यानी कोई ऐसी शिक्षा ल्यौंग जो दिलें च अल्लाह दा प्रेम पैदा करै तां जे तुस ते जनता ओहदे थमां फायदा लेई सको। हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. ने जेहका नजारा 'हिरा' नांउ दी गुफा च दिक्खेआ हा उसदी खबर सारें शा पैहलें अपने परिवार हजरत खदीजा ते दूए नजदीकी सरबोधियें गी सुनाई ही। इस चाल्ली थुआड़ा सादृश्य हजरत मूसा कन्ने साबत होई जंदा ऐ।
2. इस आयत थमां सिद्ध होंदा ऐ जे एह गल्ल सच्च नेई जे उस अग्नि च अल्लाह हा, की जे अल्लाह आपूं बरकत प्रदान करदा ऐ उसी कोई बी बरकत नेई दिंदा।

उस नजारे कन्ने एह दस्सेआ गेदा ऐ जे हजरत मूसा ते अग्नि दे चमत्कार राहें ईश-सत्ता दा प्रदर्शन होआ करदा ऐ। 'अल्लाह पाक ऐ' इस वाक्य च बी इस गल्ला दा खंडन कीता गेदा ऐ जे अल्लाह अग्नि च हा, की जे 'सारे लोकें (ज्हांनें) दा रब्ब' आखियै उसगी स्थानें दे बंधन थमां मुक्त करी दिता गेदा ऐ। फी उसी 'पाक' आखियै कोई बी शरीर धारण करने दी त्रुटि थमां पवित्तर सिद्ध कीता गेदा ऐ।

हे मूसा! गल्ल एह ऐ जे अ'ऊं अल्लाह¹ आं जो ग़ालिब ते हिक्मत आहला (यानी प्रभुत्वशाली ते तत्त्वदर्शी) आं ॥ 10 ॥

يُومَىٰ إِنَّهُ أَنَا اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

तू अपना सोटा सुट्ट ते जिसलै उसनै (सोटे गी) दिक्खेआ जे ओह हल्ला करदा ऐ, आखो ओह इक निक्का² सप्प ऐ तां ओह पिट्ट फेरियै नस्सेआ ते पिच्छें मुडियै नेई दिक्खेआ (उसलै असें गलाया) हे मूसा! डर नेई, अ'ऊं ओह आं जे रसूल मेरे हज़ूर च डरा नेई करदे ॥ 11 ॥

وَأَنقِ عَصَاكَ ۖ فَلَمَّا رَاَهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ وَلِي مُدَبِّرًا ۚ وَلَمْ يَعْقِبْ يُمُوسَىٰ لَا تَخَفْ ۗ إِنِّي لَا يَخَافُ لَدَىٰ الْمُرْسَلُونَ ۝

पर जिसनै अत्याचार कीता फही उस अत्याचार गी छोड़ियै नेकी गी अपनाई लैता, अ'ऊं उस आस्तै बौहत माफ करने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला आं ॥ 12 ॥

إِلَّا مَن ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حَسَبًا بَعْدَ سَوْءٍ فَأَنَّىٰ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

ते तू अपना हत्य अपने गेरेबान च पा ओह नरोग/उजला निकलग। एह उनें न'मै नशानें³

وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ

1. इसदा एह अर्थ नेई जे अग्नि च अल्लाह हा बल्के हज़रत मूसा गी वही रहें एह आखेआ गेआ हा जे दिक्ख! मेरी छवि हर-इक चीजें थमां व्यक्त होंदी ऐ। अग्नि थमां बी ते उसदे लागे आहली चीजें थमां बी ते इस सोटी आहले कशफ़ी नजारे थमां बी जो सप्प हा। इस आस्तै एह गलाना कुरआन ते बुद्धि दे खलाफ ऐ जे उस अग्नि च अल्लाह हा बल्के जो नजारे उस अग्नि जां सोटे ते सप्पै रहें दस्से गे हे, ओह सब नजारे मनुक्खें गी अल्लाह दी नजदीकी प्रदान करदे हे नां के ओह असलीयत च आपू अल्लाह हे!
2. मूल शब्द 'जान्' दा अर्थ इस थाहर निक्का सप्प ऐ। पवित्र कुरआन च दूए थाहरे पर शब्द 'सुबान' यानी अजगर ते त्रीये थाहर पर 'हय्यातुन' यानी सधारण सप्प बरतोए दा ऐ। एह विभिन्नता नेई, बल्के इसदा अर्थ एह ऐ जे निक्का सप्प आखियै दस्सेआ गेदा ऐ जे उसदी गतिविधि निक्के सप्पै आंगर तेज ही ते अजगर शब्द उसदे शरीर दे बड्डे होने दी ब'जा करी ते सधारण सप्प उसदी कौम दी ड्रिस्टी कनै बोल्लेआ गेदा ऐ। आखो मौके दे मताबक हर इक शब्द दा प्रयोग कीता गेदा ऐ।
3. फिरऑन ते उसदी कौम आस्तै अल्लाह नै हज़रत मूसा रहें नौ नशान दस्से हे। उंदे बिच्चा इक अपने हत्ये गी अपने गेरेबान च पाइये कड्डने दा हा जे कड्डने पर ओह नरोग, उजला निकलदा हा। अरबी भाशा दे मुहावरे च 'हत्थ' भाई-भाउ ते कौम गी बी आखदे न। इस लेई इसदा एह मकसद हा जे हे मूसा! अपनी कौम गी अपने कनै ते अपने संपर्क च रक्ख। इसदा नतीजा एह होग जे ओह तेरे संपर्क ते तेरी शिक्षा-दीक्षा कनै सुधरिये सदाचारी ते नरदोश बनी जाग ते उस च कोई कमी ते बुराई नेई रौहंग। इतिहास थमां पता लागदा ऐ जे हज़रत मूसा दी कौम च थुआड़ी आमद (यानी प्रादुर्भाव) थमां पहलें नेकां कमियां हियां। उसने हज़रत इब्राहीम दी शिक्षा-दीक्षा गी थुलाई दिता दा हा, पर हज़रत मूसा दे संपर्क च आइये उस कौम च महायोगी ते अल्लाह दे परम भत पैदा होन लगे, पर जिसलै बी ओह कौम हज़रत मूसा थमां दूर होंदी ही तां ओहदे च दोश ते बगाड़ पैदा होन लगी पौंदा हा, जियां जे हज़रत मूसा दे फ़ाड़ै पर जाने दे थोड़े दिनें बा'द उनें बच्चे गी उपास्य बनाई लैता ते उसदी पूजा करन लगे। ओह नौ नशान जिंदे पासै इशारा कीता गेदा ऐ इस दा जिकर कुरआन च बक्ख-बक्ख थाहरे पर आँदा ऐ। दो नशान यानी 'हत्ये दा गेरेबान थमां निकलने पर उजला (सफेद) होने' ते 'सोटे दा सप्प बनने' सरबंभी जिकर इत्ये गै कीता गेआ ऐ। त्रीया नशान 'काल पौना' ऐ। चौथा नशान 'संतान दा परना' ऐ। पंजमां नशान 'तुफान' (समुंदरे दा परें हटने) दा हा। छेमां नशान 'त्रिड्डये' (यानी सुलैआ) दे डारे दा हा। सवमां नशान 'जुरै' दा हा। अठमां नशान 'मीनके' (यानी बरखा होने) दा हा ते नीमां नशान 'रक्त' (यानी नसीर फुट्टने) दा हा।

बिच्चा ऐ जो फिराँन ते उस दी कौम पासै भेजे जाने आहले न ओह आज़ा भंग करने आहली कौम ऐ ॥ 13 ॥

इस लेई जिसलै साढ़े पासेआ अकखीं खोहली देने आहले चमत्कार आए तां उनें गलाया जे एह ते खु 'ल्लम-खु'ल्ला जादू ऐ ॥ 14 ॥

ते उनें हठ करदे होई अत्याचार ते अहंकार कनै (उनें चमत्कारें दा) इन्कार करी दिता। हालांके उंदे दिल उंदे पर भरोसा करी चुकेदे हे। इस आसतै दिक्ख! फ़साद करने आहलें दा हशर कनेहा होंदा आया ऐ ॥ 15 ॥
(रुकू 1/16)

ते असें दाऊद ते सुलेमान गी ज्ञान प्रदान कीता ते उनें दौनें गलाया जे सारी स्तुतियें दा अधिकारी अल्लाह गै ऐ, जिसनै असेंगी अपने नेकां मोमिन बंदें च प्रधानता दिती दी ऐ ॥ 16 ॥

ते सुलेमान दाऊद दा बारस होआ ते उसनै गलाया जे हे लोको! असेंगी पैँछियें' दी भाशा सखाईं गेई ऐ ते हर जरूरी चीज (यानी शिक्षा) असेंगी दिती गेई ऐ। एह खु 'ल्लम-खु'ल्ली मेहर ऐ ॥ 17 ॥

ते (इक बार) सुलेमान दे सामनै जिनें ते इन्सानें ते परिदेँ बिच्चा उसदे लश्कर तरतीबवार किट्टे कीते गे (फ़ी उनेंगी कूच करने दा हुकम मिलेआ) ॥ 18 ॥

بَيِّضَاءَ مِنْ غَيْرِ سَوْءٍ ۖ فِي تَسْعِ آيَاتٍ
إِلَى فِرْعَوْنَ وَ قَوْمِهِ ۗ إِنَّهُمْ كَانُوا
قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿١٣﴾

فَلَمَّا جَاءَ تَهُمُ الْيَتْنَا مُبْصِرَةً قَائُوا
هَذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿١٤﴾

وَجَحَدُوا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا أَنفُسُهُمْ
ظُلْمًا وَعُلُوًّا ۗ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٥﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ عِلْمًا
وَقَالَ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي فَضَّلْنَا عَلَى
كَثِيرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٦﴾

وَوَرِثَ سُلَيْمَانُ دَاوُدَ وَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ
عُلِّمْنَا مَنَاطِقَ الطَّيْرِ وَأُوتِينَا مِنْ كُلِّ
شَيْءٍ ۗ إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِينُ ﴿١٧﴾

وَخَيْرَ لِّسُلَيْمَانَ جُودُهُ مِنَ الْجِبِّ
وَالْإِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿١٨﴾

1. इत्थें पैँछियें दा मतलब गासै च उड्डने (भ्रमन करने) आहले आध्यात्मक लोक ऐ।

इत्थें तक जे जिसलै ओह वादी नम्ला च पुज्जे तां नम्ल¹ कौम दे इक शख्स नै गलाया, हे नम्ला कौम दे लोको! अपने-अपने घँेँ गी उठी जाओ। ऐसा निं होऐ जे सुलेमान ते उसदे लश्कर (थुआड़े हालातें गी) नेई जानदे होई तुसेंगी पैँ हेट मसली² देन ॥ 19 ॥

इस आसतै सुलेमान ओहिदयां गल्लां सुनियै हस्सी पेआ ते आखेआ जे हे मेरे रब्ब! मिगी समर्थ प्रदान कर जे अ'ऊं तेरें उनें उपकारें दा धन्नवाद³ करी सकां जेहके तोह मेरे पर ते मेरे पिता पर कीते न ते ऐसा मनासब कर्म करां जेहका तुगी पसंद होऐ ते (हे अल्लाह!) अपनी किरपा कनै मिगी बी अपने सदाचारी भगतें च शामिल कर ॥ 20 ॥

ते उसनै सारे पैँछियें दी हाजरी लैती, फी गलाया जे मिगी केह होऐ दा ऐ जे अ'ऊं हुद्हुद्⁴ गी नेई दिखदा जां ओह जानी-बुज्जी गैर-हाजर ऐ ॥ 21 ॥

यकीनन अ'ऊं उसी सख्त स'जा देह जां उसदा कतल करी देह जां ओह मेरै सामनै

حَتَّىٰ إِذَا تَوَّأَعْلَىٰ وَإِذَا التَّمْلِلُ ۙ قَالَتْ
تَمَلَّةٌ يَا أَيُّهَا التَّمْلُ ادْخُلُوا مَسْكِنَكُمْ ۚ
لَا يَحْطُمَنَّكُمْ سُلَيْمَنُ وَمَجُودُهُ وَهُمْ
لَا يَشْعُرُونَ ۝

فَبَسَمَ صَاحِبًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ
أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي
أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ
صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ
فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ۝

وَتَقَفَّ الطَّيْرُ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى
الْهُدْمَ ۗ أَمْ كَانَ مِنَ الْغَائِبِينَ ۝

لَأَعَذِّبَنَّكَ عَذَابًا شَدِيدًا أَوْ لَا أَدْبَحْتَهُ

1. नम्ल नांस दी वादी समुंदरै दे कंठै युरोशलम दे सामनै जां उसदे लागै दमिशक थमां हिजाज आहली बक्खी ओंदे होई इक सौ मील दी दूरी पर इक मदान ऐ जिसी द्रिस्टांत दे रूपै च नम्ल वादी आखदे न। इस खेतर च हजरत सुलेमान दे समे तक अरब ते मद्यन दे मते-हारे परिवार नवास करदे हे। (दिकखो प्राचीन ते अर्वाचीन (आधुनिक) चित्र लेखा (नक्शा) फ़लस्तीन ते शाम ते नैल्सन्ज इन्साइक्लोपीडिया) नम्ल इक कौम ही जो उत्थें बास करदी ही।
 2. इसे आयत थमां एह बी स्पष्ट होंदा ऐ जे हजरत सुलेमान दी कौम जानी-बुज्जी कुसै गी नुकसान नेई पुजांदी ही, बल्के जेकर उसी पता लागी जंदा जे कोई कौम निर्बल (कमजोर) ऐ तां ओह उसदी रक्षा दी कोशश करदी ही।
 3. यानी जंगली ते असभ्य लोक बी एह जानदे न जे अ'ऊं उनेंगी जानी-बुज्जी नुकसान नेई पजाड (दिकखो सूर: नम्ल आयत 19)
 4. बड़े सारे अदूमी सम्राटें दा नांस हुदद हा जिसी अरब लोक उच्चारण करदे मौकै हुद्हुद् आखदे हे। एह नांस इस्माईली बंश च सधारण रूपै च प्रचलत हा। हजरत सुलेमान दी राज-सभा दे इक सरदार दा नांस बी हुद्हुद् हा। जिसलै हजरत सुलेमान नै 'मुआब' नांस दे इक बड़े इन्जीनियर दी उसदे खडजैतर कारण हत्या कराई दिती तां एह हुद्हुद् नांस दा सरदार नरिसयै मिसर देश उठी गेआ। ओहदे बा'द माफी मांगियै ते सफाशां सदाइयै बापस परतोई आया। (दिकखो ज्यूश इन्साइक्लोपीडिया)
- असल च एह नांस सधारण रूपै च प्रचलत हा। इस लेई ममकन ऐ जे किश दूप सरदारें दा बी एह नांस होऐ। अरबी भाशा च हुद्हुद् इक पैँछी दा नांस ऐ। इस लेई किश विद्वानें भलेखे च एह समझी लैता जे एह उससै पैँछी दा जिकर ऐ।

(अपनी गैर-हाजरी दी) कोई खुल्ली दलील
(यानी कोई कारण) पेश करग ॥ 22 ॥

इस आसतै किश खिन रुकेआ (इन्ने च हुदहुद्
हाजर होआ) ते उसनै गलाया जे में उस चीजै
दी जानकारी हासल कीती ऐ जो तुगी हासल
नेई ते अ'ऊं सबा (जाति ते देश) थमां तेरे
कश (आया आं ते) इक यकीनी खबर लेई
आए दा आं ॥ 23 ॥

(जेहकी एह ऐ जे) में (उत्थें) इक जनानी
गी दिक्खेआ ऐ, जेहकी उंदे (उंदी सारी जाति)
पर राज करा करदी ऐ ते हर-इक नैमत उसी
हासल ऐ ते ओहदा इक बिशाल सिंहासन ऐ
॥ 24 ॥

ते में उसी ते उसदी कौम गी अल्लाह गी
छोड़ियै सूरज गी सजदा करदे दिक्खेआ ऐ ते
शतान नै उनेंगी उंदे कर्म खूबसूरत करियै
दस्से न ते उनेंगी सच्चे रस्तै थमां रोकी दिता
ऐ जेहदे कारण ओह हदायत! नेई पांदे ॥ 25 ॥

ते ओह एह हठ करदे न जे अल्लाह गी
सजदा नेई करन जेहका गासैं ते धरती दी हर
इक छप्पी दी तक्रदीर (गल्लै) गी जाहर
करदा ऐ ते जे किश तुस छपैलदे जां जाहर
करदे ओ उनें उपायें गी बी जानदा ऐ ॥ 26 ॥

अल्लाह ओह ऐ जिसदे अलावा कोई उपास्य
नेई। ओह इक बिशाल सिंहासन दा रबब ऐ
॥ 27 ॥

(इस पर सुलेमान नै) गलाया जे अस दिखगे
जे तोह सच्च गलाया ऐ जां तू झूठें बिच्चा
ऐं ॥ 28 ॥

أَوْ لِيَأْتِيَنَّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ۝۲۲

فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطَّتْ
بِمَالِكُمْ تَحْظُ بِهِ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَإٍ
بِنَبَأٍ يَقِينٍ ۝۲۳

إِنِّي وَجَدْتُ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ
مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ۝۲۴

وَجَدْتُهُنَّ وَقَوْمَهُنَّ يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِنْ
دُونِ اللَّهِ وَزَيْنُ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمٰهُمُ
فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ۝۲۵

اَلَا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ
وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۝۲۶

اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ
الْعَظِيْمِ ۝۲۷

قَالَ سَتَدَّبَّرْتُمْ اَصْدَقْتُمْ اَمْ كُنْتُمْ
مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝۲۸

1. इसदा एह मतलब नेई जे शतान लोकें गी सच्चे रस्ते थमां जबरदस्ती रोकदा ऐ, बल्के अरबी भाशा च शतान दा अर्थ सचाई थमां दूर रोहने आहला ते दूर करने आहला ऐ। इस थाहरा पर इयै अर्थ ऐ जे सचाई थमां दूर करने आहलें ते दूर रोहने आहले लोकें दी नजरें च शरीअत ते बुदिध दे उल्ट ऐसी गल्लां जिदे कन्ने मानव-प्रकृति प्रिणा करदी ऐ, बड़ियां खूबसूरत करियै दस्सी दियां न।

तू मेरी एह चिट्ठी लेई जा ते उनें (यानी सबा दी कौम दे) लोकें सामनै सुट्टी दे ओहदे बा'द (अदब कनै) पिच्छें हटियै खड़ोई जा ते दिक्ख जे ओह के जवाब दिंदे न? ॥ 29 ॥

(जिसलै उसनै ऐसा कीता) तां ओह (रानी) बोल्ली जे हे मेरे दरबारियो! मेरे सामनै इक मानवीय खत्त रक्खेआ गेआ ऐ ॥ 30 ॥

(जिसदा बिशे एह ऐ जे) एह खत्त सुलेमान दी तरफा ऐ ते इस च दस्से दा ऐ जे अस अल्लाह दे नांउ कनै शुरू करने आं जो बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार रैह्म करने आह्ला ऐ ॥ 31 ॥

(ते आखदे न जे) साढ़े पर ज्यादती नेई करो ते साढ़े हज़ूर च फरमां-बरदार बनियै हाजर होई जाओ ॥ 32 ॥ (रुकू 2/17)

फी उस (रानी) नै गलाया जे हे दरबारियो! मेरे मामले च अपनी पुख्ता सलाह देओ, की जे अ'ऊं कदें कोई फैसला नेई करदी जिन्ना चिर जे तुस मेरे कश हाजर होओ (ते सलाह नेई देई लैओ) ॥ 33 ॥

(सारे दरबारियें) गलाया जे अस बड़े शक्तिशाली ते रण बांके आं ते (आखरी) फैसला तुंदे हत्थ ऐ। इस आरतै सोची लैओ जे तुस केह हुकम देना चांहिदयां ओ। (अस उसदा पालन करगे) ॥ 34 ॥

उस (रानी) नै गलाया जे जिसलै सम्राट कुसै देश च दाखल होंदे न तां उसदा बिनाश करी दिंदे न ते ओहदी जनता बिच्चा सभ्य लोकें गी अपमानत करी दिंदे न ते ओह ऐसा गै करदे आए न ॥ 35 ॥

إِذْ هَبْ بِكِثْبِي هَذَا فَاَلْفَيْهِ إِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانظُرْ مَاذَا يَرْجِعُونَ ﴿٣١﴾

قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُو الْإِنِّي أُلْقِيَ إِلَيَّ كِتَابٌ كَرِيمٌ ﴿٣٠﴾

إِنَّهُ مِنْ سُلَيْمَانَ وَإِنَّهُ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿٣١﴾

أَلَا تَعْلَمُونَ عَلَىٰ وَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ﴿٣٢﴾

قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُو أَفْتُونِي فِي أَمْرِي ۗ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً أَمْرًا حَتَّىٰ تَشْهَدُونِ ﴿٣٣﴾

قَالُوا نَحْنُ أَوْلَا قُوَّةً وَأُولُوا بَأْسٍ شَدِيدٍ ۗ وَالْأَمْرُ إِلَيْكِ فَانظُرِي مَاذَا تَأْمُرِينَ ﴿٣٤﴾

قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا أَعْرَآةَ أَهْلِهَا آذِلَّةً ۗ وَكَذَلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿٣٥﴾

ते (मैं फैसला लैता ऐ जे) अ'ऊं उनेंगी इक (तोहफा)¹ उपहार भेजड, फी दिक्खड जे मेरे दूत केह जवाब लेइयै बापस आँदे न ॥ 36 ॥

फी जिसलै ओह तोहफा सुलेमान दे सामनै आनिये रक्खेआ गेआ तां उसनै गलाया जे क्या तुस धन-दौलत राहें मेरी मदद करना चांहदे ओ? (जे एह गल्ल ऐ तां याद रक्खो) अल्लाह नै जो कुछ मिगी प्रदान कीते दा ऐ ओह ओहदे थमां उत्तम ऐ जेहका तुसेंगी दित्ते दा ऐ ते (सेही होंदा ऐ जे) तुस अपने तोहफे पर बड़ा गरूर करा करदे ओ ॥ 37 ॥

(हे हुदहुद) तू उंदै पासै परतोई जा ते (उनेंगी आखी दे जे) अ'ऊं इक बड़्हा लश्कर लेइयै उंदे कश औड-ऐसा लश्कर जे ओहदे मकाबले च उंदी ताकत नेई होग ते अ'ऊं उनेंगी उस देशै थमां (हराने दे बा'द) ऐसी हालत च कड्ढी लाड जे (ओह बादशाहत दी) इज्जत खोही चुके दे होडन ॥ 38 ॥

(उसदे बा'द) उसनै (अपने राज-दरबारियें गी संबोधत होइयै) गलाया जे हे दरबारियो! तुंदे बिच्चा केहड़ा उसदे सिंहासन गी मेरे कश लेई आँग, इस शा पैहलें जे ओह लोक आज्ञाकारी बनियै मेरे सामनै औन? ॥ 39 ॥

(पहाड़ी कौमें बिच्चा) इक सिरफिरे सरदार नै गलाया जे थुआड़े इस थाहरा थमां जाने शा पुज्ज अ'ऊं ओह (सिंहासन) लेई आँग ते अ'ऊं इस गल्ला पर पूरी-पूरी समर्थ रक्खने आह्ला इक अमानतदार आं ॥ 40 ॥

وَأَنَّ مُرْسَلَةٌ إِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنظَرُوهُ
بِمَرِّرِجْعِ الْمُرْسَلُونَ ①

فَلَمَّا جَاءَ سَلِيمُنْ قَالَ أَتُمَدُّونَ بِمَالٍ
فَمَا أَتَى اللَّهَ خَبْرٌ مِّمَّا أَتَاكُمْ بَلْ أَنْتُمْ
بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُونَ ②

رُجِعَ إِلَيْهِمْ فَلَمَّا آتَيْتَهُمْ بِجُنُودٍ لَا قِبَلَ
لَهُمْ بِهَا وَلِتُخْرِجَهُمْ مِنْهَا أَذِلَّةً وَهُمْ
صُغْرُونَ ③

قَالَ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُو الْأَيْمِيْنَ يَا بَعْشَها
قَبَلْ أَنْ يَأْتُوْنِي مُسْلِمِيْنَ ④

قَالَ عَفْرِيْتُ مِّنَ الْجِنِّ أَنَا آتِيْتُكَ بِهِ قَبَلْ
أَنْ تَقُومَ مِنْ مَّقَامِكَ وَإِنِّي عَلَيْهِ
لَقَوِيٌّ أَمِيْنٌ ⑤

1. पुराने जमाने च राजें दी एह नीति ही जे ओह अपने थमां शक्तिशाली सम्राट गी रिश्त देइयै ओहदा मूंह बंद करी दिंदे होंदे हे। जिसलै रानी बिल्क्रीस दे तोहफे हजरत सुलेमान कश पुज्जे तां उनें समझेआ जे रानी ने मिगी ऐसा गै बंद-इखलाक करार दिता ऐ ते उसदे उस कम्मै पर नराजगी जाहर कीती।

(इस पर) उस शख्स नै जिसी (इलाही) कताब दा इलम¹ हासल हा गलाया जे तेरे कश उस (तख्त) गी तेरे अक्ख झमकने शा पैहलें लेई औड। इस लेई जिसलै (सुलेमान नै) उसगी लागै रक्खे दा दिक्खेआ तां उसनै गलाया-एह मेरे रब्ब दी मेहर कनै होआ ऐ तां जे ओह मेरी परीक्षा लै जे अ'ऊं शुकर करना जां ना-शुकरी करना ते जेहका आदमी शुकर करै ओह अपनी जान दे फायदे आस्तै ऐसा करदा ऐ ते जेहका ना-शुकरी करै तां यकीनन मेरा रब्ब बे-न्याज ते महादानी ऐ ॥ 41 ॥

(फी) उसनै गलाया उस (रानी) आस्तै उसदा सिंहासन तुच्छ² करियै दस्मो (अस दिखगे जे) क्या ओह हदायत पांदी ऐ जां उंनं लोकें बिच्चा बनदी ऐ जो हदायत नेई पांदे ॥ 42 ॥

ते जिसलै ओह आई पुज्जी तां आखेआ गेआ, क्या तेरा तख्त इयै नेहा ऐ? इस पर उसनै गलाया, जे इयां सेही होंदा ऐ एह ऊऐ ऐ ते असेंगी इस शा पैहलें गे इलम होई चुके दा हा ते अस (तेरे) फरमांवरदार बनी चुके दे हे ॥ 43 ॥

ते सुलेमान नै रानी गी अल्लाह दे सिवा उपासना करने थमां रोकेआ। ओह यकीनन काफर कौम बिच्चा ही ॥ 44 ॥

ते उसी गलाया गेआ जे मैहल च दाखल होई जाओ। ते जिसलै उसनै उस (मैहल) गी

قَالَ الَّذِي عِنْدَهُ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ ۗ^١
فَلَمَّا رَأَاهُ مُسْتَقَرًّا عِنْدَهُ قَالَ هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي لِيَبْلُوَنِي ءَأَشْكُرُ أَمْ أَكْفُرُ ۗ^٢
وَمَنْ شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ۗ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّيَ غَنِيٌّ كَرِيمٌ ۝^٣

قَالَ نَكِّرُوا لَهَا عَرْشَهَا نَنظُرْ أَ تَهْتَدِي ۗ
أَمْ تَكُونُ مِنَ الَّذِينَ لَا يَهْتَدُونَ ۝^٤

فَلَمَّا جَاءَتْ قِيلَ أَهَكَذَا عَرْشُكَ ۗ
قَالَتْ كَأَنَّهُ هُوَ ۗ وَأُوتِينَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِينَ ۝^٥

وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَعْبُدُ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۗ
إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كَافِرِينَ ۝^٦

قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۗ فَلَمَّا رَأَتْهُ

1. असल च ओह देश यहदियें दा हा इस लेई उस इब्रानी विद्वान गी यकीन हा जे यहूदी मेरे आस्तै बौहत जल्दी कम्म करडन। इस आस्तै उसनै इफरीत नांउ दे दरबारी गी पैहलें उस रानी दा सिंहासन आहनने दा बा'यदा कीता ते गलाया जे अ'ऊं फौरन तख्त हाजर करड। बक्ख-बक्ख जबानें च अक्ख झमकने दा मुहावरा जल्दी आस्तै बरतेआ जंदा ऐ। इस आस्तै इसी इत्थें शाब्दिक अर्थें च नेई लैता जाई सकदा।
2. यानी इक दूआ ऐसा बंधिया सिंहासन बनाओ जे उसी दिक्खियै रानी गी अपना सिंहासन तुच्छ लागै।

दिकखेआ तां उसी गैहरा पानी समझेआ ते घबराई गई। उसलै सुलेमान नै गलाया एह ते मैहल ऐ जेहदे च शीशे दे टुकड़े लाए गेदे न। उसलै ओह (रानी) बोल्ली-हे मेरे रब्ब! मैं अपने आपै पर जुलम कीता ते अ'ऊं, सुलेमान कन्नै सारे लोकें दे रब्ब पर ईमान ल्यौनी आं¹ ॥ 45 ॥ (रुकू 3/18)

ते असें समूद (जाति) पासै उंदे भ्राऽ सालेह गी रसूल बनाइयै भेजे दा हा, (एह आखदे होई) जे अल्लाह दी अबादत करो। ते ओह (सुनदे गै) दौं दलें च बंडोई गे जो आपस च लड़ाई करन लगे ॥ 46 ॥

उस (सालेह) नै गलाया, हे मेरी कौम! तुस खुशहाली दे औने शा पैहलें बद-हाली आस्तै की काहल करा करदे ओ क्या तुस अल्लाह थमां अपने पापें दी माफी नेई मंगदे तां जे तुंदे पर रैहम कीता जा? ॥ 47 ॥

उनें गलाया (हे सालेह) असें (जिन्ना सोचेआ ऐ) तुगी ते तेरे साथियें गी मन्हूस गै पाया² ऐ। सालेह नै गलाया-थुआड़ी न्हूसत दा कारण ते अल्लाह कश ऐ, बल्के सचाई एह ऐ जे तुस इक ऐसी कौम ओ जिसगी अजमैश च सुट्टेआ गेदा ऐ ॥ 48 ॥

ते शैहरै च नौ आदमी हे जेहके देशे च फसाद पांदे हे ते सुधार नेई हे करदे ॥ 49 ॥

उनें गलाया जे तुस सारे इस गल्ला पर अल्लाह दी कसम खाओ जे अस इस पर ते इसदे

حَسْبَتْهُ لُجَّةٌ وَكَشَفَتْ عَنْ سَاقِهَا قَالَتْ إِنَّهُ صَرَخٌ مَّمْرَدٌ مِنْ قَوَارِيرٍ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٥﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَى ثَمُودَ آخَاهُمْ صَالِحًا أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيقَيْنِ يَخْتَصِمُونَ ﴿٤٦﴾

قَالَ يَقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٤٧﴾

قَالُوا الظِّمِيرُ نَابِكُ وَمِمَّنْ مَعَكَ قَالَتْ ظَمِيرُكُمْ عِنْدَ اللَّهِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ ﴿٤٨﴾

وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةٌ رَهْطٌ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿٤٩﴾

قَالُوا تَقَاسَمُوا بِاللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهُ وَأَهْلَهُ ثُمَّ

- हजरत सुलेमान दे इस उपाऽ कन्नै जे पानी पर शीशा लाई दिता गेदा हा, ओह रानी अपनी भुल्ल समझे गई जे जिस चाल्ली शीशे दे ख'ल्ल पानी लभदा ऐ उससै चाल्ली सूरज दी रोशनी अल्लाह दी देन ऐ। इस लेई सूरज दी पूजा करना भुल्ल ऐ ते अल्लाह इक गै ऐ।
- यानी तुस लोक अपनी कौम आस्तै कुसे तरक्की दा नेई बल्के तबाही दा मूजब हगे।

परिवार पर रातीं बेलै हमला करगे, फी जो शख्स उसदी हत्या दा बदला¹ लैने दी मांग करन औंग तां अस उसी आखगे जे असें उसदे परिवार दे बिनाश दी घटना नेई दिक्खी ते अस सच्चे आं ॥ 50 ॥

ते उनें इक उपाऽ कीता ते असें बी इक उपाऽ कीता ते उनेंगी (साढ़े उपाऽ दी) जानकारी नेई ही ॥ 51 ॥

फी दिक्ख! जे उंदे उस उपाऽ दा नतीजा केह निकलेआ। असें उनेंगी ते उंदी सारी कौम गी तबाह करी दिता ॥ 52 ॥

इस लेई दिक्ख! एह उंदे घर न जेहके उंदे जुलमें कारण डिगगे दे न। इस च सूझ-बूझ रक्खने आहली कौम आस्तै इक बौहत्त बड्डा नशान ऐ ॥ 53 ॥

ते असें उनें लोकें गी जेहके ईमान ल्याए दे हे ते जिनें संयम थमां कम्म लैते दा हा, बचाई लैता ॥ 54 ॥

ते (असें) लूत गी (बी रसूल बनाइयै भेजेआ हा) जिसलै जे उसने अपनी कौम गी गलाया जे क्या तुस बुरे कर्म करदे ओ ते तुस दिक्खा करदे होंदे ओ? ॥ 55 ॥

क्या तुस जनानियें गी छोड़ियै मड़दें कश काम-वासना दे इरादे कनै जंदे ओ? सचाई एह ऐ जे तुस इक मूर्ख कौम ओ ॥ 56 ॥

इस लेई उसदी कौम दा सिर्फ एह जवाब हा जे (हे लोको!) लूत दे परिवार गी अपने

نَقُولُ لَوْ لِيهِ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ أَهْلِهِ
وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٥٠﴾

وَمَكْرُؤٌ وَّمَكْرَأٌ وَّمَكْرُنًا مَكْرًا وَهُمْ
لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥١﴾

فَأَنْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ أَأَنْتَ
دَمْرُهُمْ وَقَوْمُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٢﴾

فَتِلْكَ بَيُوتُهُمْ خَاوِيَةٌ بِمَا ظَلَمُوا ۗ إِنَّ
فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٥٣﴾

وَإِنجِبْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٤﴾

وَلَوْ طَآءَ إِذْ قَالُوا لَقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ
وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿٥٥﴾

أَبَيْكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُونِ
النِّسَاءِ ۗ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿٥٦﴾

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا

1. मूल शब्द 'वलिय्युन' नेह शख्स गी आखदे न जेहका कुसै दे कर्में दा जवाबदेह ते उसदा मदादी होंदा ऐ। इससे चाल्ली जो शख्स कुसै दी हत्या दे बा'द उसदी हत्या दा बदला मांगे उसी बी अरबी भाशा च वलिय्युन आखदे न, की जे नेहा शख्स उसदा मदादी होंदा ऐ।

शैरै थमां बाहर कड्डी लाओ। ओह ऐसे लोक न जेहके बड्डे सदाचारी (नेक) बनना चांहदे न ॥ 57 ॥

أَخْرَجُوا آلَ لُوطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ إِنَّهُمْ
أَنَاسٌ يَّتَطَهَّرُونَ ﴿٥٧﴾

नतीजा एह होआ जे असें उस (लूत) गी ते उसदे खानदान दे लोकें गी सिवाए उस दी बीवी दे नजात दिती (बचाई लैता) असें उस (बीवी) गी पिच्छें¹ रौहने आहलें च गिनी रक्खे दा हा ॥ 58 ॥

فَأَنجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَاهَا
مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٥٨﴾

ते असें उंदे पर इक बरखा बरहाई ते जिनेंगी अजाब दी चतावनी पुज्जी चुकी दी होऐ, उंदे पर बरने आहली बरखा बौहत बुरी होंदी ऐ ॥ 59 ॥ (रुकू 4/19)

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ
الْمُنذِرِينَ ﴿٥٩﴾

तूं आखी दे जे हर इक तरीफ दा हक्कदार अल्लाह गै ऐ ते उसदे ओह बंदे जिनेंगी उसनै चुनी लैते दा होऐ उंदे पर म्हेशां सलामती नाजल होंदी ऐ। क्या अल्लाह बेहतर ऐ जां ओह चीजां जिनेंगी ओह (उसदा) शरीक करार दिंदे (मनदे) न? ॥ 60 ॥

قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِينَ
أَصْطَفَى ۗ اللَّهُ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٠﴾

1. यानी लगदा हा जे ओह अपने कुकर्म दी ब'जा करी पिच्छें रेही जाग।

(दस्सो ते सेही) गासैं ते धरती गी कुस नै पैदा कीते दा ऐ ? ते (कुस नै) थुआड़े आसतै बदलैं चा पानी उतारे दा ऐ फी ओहदे (पानी) राहें असें खूबसूरत बाग उगाए दे न। तुस उनें बागें दे बूहटे नेई उगाई सकदे हे। क्या अल्लाह दे कनै कोई होर बी उपास्य ऐ? (जेहका सारी ख्रिस्टी दा प्रबंध करा करदा ऐ) पर एह (काफर) ऐसी कौम दे लोक न जो उसदे शरीक बनाऽ करदे न ॥ 61 ॥

(दस्सो हां) कुस नै धरती गी ठैहने दी ज'गा बनाए दा ऐ? ते एहदे च देरेआ बगाए न ते उसदे (फायदे) आसतै ष्हाड़ बनाए दे न ते दौं समुंदरें मझाटै (जिंदे च इक मिट्टा ते इक खारा होंदा ऐ) इक रोक बनाई दी ऐ। क्या अल्लाह दे सिवा होर कोई उपास्य है? पर सचाई एह ऐ जे उंदे चा मते-सारे लोक नेई जानदे ॥ 62 ॥

(एहदे इलावा दस्सो जे) कु'न कुसै बे-स्थारे दी दुआऽ सुनदा ऐ, जिसलै ओह उस (अल्लाह) अगमें प्रार्थना करदा ऐ ते ओहदे दुख दूर करी दिंदा ऐ ते ओह तुसें (दुआऽ करने आहले इन्सानें) गी (इक रोज) सारी धरती दा बारस बनाई देग। क्या इस (सर्वशक्तिमान) अल्लाह दे सिवा कोई होर उपास्य है? तुस किश बी नसीहत ग्रैहन नेई करदे ॥ 63 ॥

(दस्सो हां) थल ते जल (खुशकी ते समुंदरें) दी मसीबतें च कु'न तुसेंगी मुक्ति दा रस्ता दसदा ऐ ते कु'न अपनी रैहमत (यानी बरखा) थमां पैहलें खुशखबरी दे तौरा पर ब्हाएं गी भेजदा ऐ। क्या अल्लाह दे सिवा कोई होर उपास्य है? अल्लाह थुआड़ी शिकं दी गल्लें थमां बौहत उप्पर ऐ ॥ 64 ॥

أَمَّنْ خَلَقْنَا لَسَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَتْنَا بِهِ حَدَائِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنبِتُوا شَجَرَهَا ؕ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَئَاتِ فَهُمْ هُمُ الْمُتَّبَعُونَ ﴿٦١﴾

أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَافَهَا أَنْهَارًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ؕ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَئَاتِ فَهُمْ لَا يَظْلَمُونَ ﴿٦٢﴾

أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُ لَكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ ؕ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَئَاتِ فَهُمْ لَا يَظْلَمُونَ ﴿٦٣﴾

أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُرْسِلِ الرِّيْحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ؕ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَئَاتِ فَهُمْ لَا يَظْلَمُونَ ﴿٦٤﴾

(दस्सो हां जे) ओह जेहका पैहली बार पैदा करदा ऐ ते फी (पैदाइश दे) सिलसले गी जारी रखदा ऐ ते जो बदलें ते धरती थमां तुसेंगी रिशक प्रदान करदा ऐ। क्या (उस सर्वशक्तिमान) अल्लाह दे सिवा कोई होर बी उपास्य है ? तूं आखी दे जे जेकर तुस सच्चे ओ तां अपनी दलील पेश करो (जे उसदे नेह दूए उपास्य बी हैन) ॥ 65 ॥

(फी तूं) आखी दे जे गासैं ते धरती च जो बी मख्लूक है खुदा दे सिवा (उंदे बिच्चा कोई) गैब गी नेई जानदी ते उंदे बिच्चा कोई एह बी नेई समझदा जे उनेंगी कदूं जींदा करियै दुआलेआ जाग ॥ 66 ॥

बल्के सचाई एह ऐ जे आखरत दे जीवन बारै उंदा इलम बिल्कुल खतम होई गेदा ऐ बल्के ओह ओहदैं बारै शक्क च पेदे न। बल्के उसदे बारै भलेआं अन्ने न ॥ 67 ॥ (रुकू 5/1)

ते काफर आखदे न जे क्या जिसलै अस ते साढ़े बब्ब-दादा (यानी पुरखे) मिट्टी होई जागे तां क्या अस फी (धरती बिच्चा) जींदा करियै कड्ढी दिते जागे ॥ 68 ॥

साढ़े ते साढ़े पुरखें कन्ने इस थमां पैहलें बी इयै नेहा बा'यदा कीता गेआ हा। पर एह सिर्फ पैहले लोकें दियां गल्लां न (जेहकियां कदें पुरियां नेई होंदियां) ॥ 69 ॥

तूं आखी दे जे धरती पर फिरो ते दिक्खो जे मुलजमें दा अन्जाम कनेहा होए दा ऐ ॥ 70 ॥

ते तूं उंदे पर दुखी नेई हो ते उंदी योजनाएं दी ब'जा कन्ने औख मसूस नेई कर ॥ 71 ॥

أَمَّنْ يَبْدُوَ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ
وَمَنْ يَرِزُقْكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
إِنَّ إِلَهَ مَعَ اللَّهِ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ
يُبْعَثُونَ ۝

بَلِ ادْرِكْ عِلْمَهُمْ فِي الْآخِرَةِ قَدْ بَلَّ هُمْ
فِي شَكِّ مِّنْهَا بَلَّ هُمْ مِّنْهَا عَمُونَ ۝

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِذَا كُنَّا تُرَابًا
وَأَبَاؤُنَا إِنَّا لَمُخْرَجُونَ ۝

لَقَدْ وَعَدْنَا هَذَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ
إِنَّ هَذَا إِلَّا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۝

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِي ضَيْقٍ
مِّمَّا يَمْكُرُونَ ۝

ते ओह आखदे न जेकर तुस सच्चे ओ तां
एह (अजाब दा) बा'यदा कदू पूरा होग?
॥ 72 ॥

तू आखी दे जे ममकन ऐ जे ओह (अजाब
जेहदे आसतै तुस काहले पेदे ओ ओहदा किश
हिस्सा थुआड़े पिच्छे-पिच्छे आवा करदा होऐ
॥ 73 ॥

ते तेरा रब्ब लोके पर मेहर करने आहला ऐ।
पर उंदे चा मते-सारे लोक शुकर (धन्नवाद)
नेई करदे ॥ 74 ॥

ते तेरा रब्ब उने चीजे गी बी जानदा ऐ जिनेगी
उंदे सीने छपाऽ करदे न ते जिनेगी ओह
जाहर करा करदे न ॥ 75 ॥

ते गासै ते धरती च जो बी कोई छप्पी दी
चीज ऐ इक स्पष्ट करी देने आहली कताबा
च (सुरक्षत) ऐ ॥ 76 ॥

एह कुरआन बनी इस्राईल दे सामनै मती-सारी
ओह गल्लां सुनांदा ऐ जिंदे बारे ओह मत-
भेद (इखल्लाफ) जतलाऽ करदे न ॥ 77 ॥

ते ओह जरूर मोमिने आसतै हदायत ते रैहमत
ऐ ॥ 78 ॥

तेरा रब्ब इंदे (बनी इस्राईल दे) बशकार अपने
हुकम (यानी कुरआन दे) कनै (सच्चा)
फैसला करदा ऐ। ते ओह गालिब (ते) बौहत
बड्डे इलम दा मालक ऐ ॥ 79 ॥

इस आसतै तू अल्लाह पर भरोसा रक्ख।
यकीनन तू इक ठोस तत्थ पर कायम ऐं
॥ 80 ॥

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٧٢﴾

قُلْ عَسَى أَنْ يَكُونَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ
الَّذِي تُسْتَعْجِلُونَ ﴿٧٣﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ
أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٤﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تَكِنُّ صُدُورُهُمْ
وَمَا يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾

وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا
فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٧٦﴾

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَفُصِّلُ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ
أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٧٧﴾

وَأَنَّهُ لَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٨﴾

إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهِ وَهُوَ
الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿٧٩﴾

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۗ إِنَّكَ عَلَىٰ الْحَقِّ
الْمُبِينِ ﴿٨٠﴾

तू कदें बी मुड़दें गो नेई सुनाई सकदा ते नां गै बोलें गी (अपनी) अवाज सुनाई सकना एं (खास तौरा पर) जिसलै ओह पिट्ट मोड़िये उठी जंदे न ॥ 81 ॥

ते तू अ'नें गी बी उंदी गुमराही थमां बचाइयै हदायत नेई देई सकदा। तू ते सिर्फ उनेंगी गै सुनाना एं जो साही आयतें पर ईमान आहनदे न ते ओह (कर्में थमां बी) फरमांबरदार होंदे न ॥ 82 ॥

ते जिसलै उंदी तबाही दी भविक्खवाणी पूरी होई जाग तां अस उंदे आस्तै धरती बिच्चा इक कीड़ा¹ कढगे जेहका उनेंगी कट्टग। एहदी ब'जा एह् ऐ जे लोक साढ़े नशानें पर यकीन नथे रखदे ॥ 83 ॥ (रुकू 6/2)

ते उस दिन (गी याद करो) जिसलै हर (उस) कौम बिच्चा जो साढ़े नशानें दा इन्कार करदी रेही होग अस इक बड्डा गरोह खडेरगे। फी उस (गरोह) गी (जवाबदेही आस्तै) बक्ख-बक्ख गरोहें च तकसीम करी दिता जाग ॥ 84 ॥

ते जिसलै ओह ओहदुँ लागै पुजडन। ओह उनेंगी आखग। क्या तुसें मेरे नशानें दा इस दे बावजूद इन्कार कीता हा जे तुसें इलम दे राहें उंदी पूरी जानकारी हासल नेई ही कीती²? जां

إِنَّكَ لَا تَسْمَعُ الْمَوْتَى وَلَا تَسْمَعُ الصَّمَّةَ
الدُّعَاءَ إِذَا وَتَوْا مُدْبِرِينَ ۝

وَمَا أَنْتَ بِهَادِي الْعَمَىٰ عَنْ صَلَاتِهِمْ
إِنَّ تَسْمَعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا
فَهُمْ مُّسْمِعُونَ ۝

وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ
دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ
كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ۝

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ
يُكَذِّبُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ۝

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُمْ وَقَالَ كَدَّبْتُمْ بِاللَّيْلِ وَلَمْ
تُحِطُوا بِهَا عِلْمًا أَمَا إِذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

1. मूल शब्द 'दाब्बा' दा अर्थ प्लेग दे कटाणू ऐ, जिंदे प्रकट होने दा समां कलयुग दस्सेआ गेदा ऐ। एह कटाणू जिसलै कुसै दे शरीरि च दाखल होई जंदे न तां ओह हलाक होई जंदा ऐ। हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. नै आखेआ हा जे आखरी युग च अल्लाह धरती थमां इक कटाणू कड्डग (दिक्खो 'इब्ने कसौर' टिप्पणी सूर: नम्ल, कताब फ़तहुल्बयान सफा 231) । इसै चाल्ली दुई हदीस च फरमाए दा ऐ जे कलयुग च 'नागफ' रोग पैदा होग (मुस्लिम शरीफ)। इनें दौनीं हदीसें गी मलाने पर एह नतीजा निकलदा ऐ जे हदीसें च ओह समाचार दिता गेआ हा जे आखरी युग च प्लेग दा रोग संक्रांत रूपै च फैलग जेहका जे इक कटाणू ते फोड़े कनै सरबंध रखदा ऐ।
2. यानी पूरी चाल्ली पड़ताल नथी कीती दी। सिर्फ अपनी जाति दे सरदारों दे भड्काने कनै गै भड्की उट्टे दे है।

एह दस्सो जे तुस (इस्लाम दे खलाफ केह) केह साजशां करदे होंदे हे ॥ 85 ॥

ते उंदे जुलमें दी ब'जा कनै उंदे खलाफ कीती गेदी भविक्खवाणी पूरी होई जाग। ते ओह कोई गल्ल नेई करी सकडन¹ ॥ 86 ॥

क्या उनेंगी पता नेई जे असें राती गी इस आस्तै बनाए दा ऐ जे ओह ओहदे च अराम हासल करन ते दिनै गी दिक्खने दी ताकत देने आहला बनाया। एहदे च यकीनन मोमिन कौम आस्तै बड़े नशान न ॥ 87 ॥

ते (उस ध्याइँ गी बी याद करो) जिस दिन बिगल बजाया जाग। जेहदे नतीजे च गासैं ते धरती च जो कोई बी है घबराई उठ्ठग। सिवाए उसदे जिसदे बाँरे अल्लाह चाहग (जे ओह घबराट थमां बचेआ र'वै) ते सारे दे सारे उस (अल्लाह) दे सामनै फरमांबरदार होइयै औडन ॥ 88 ॥

ते तू फ्हाइँ गी इस हालत च दिक्खना ऐं जे ओह अपनी ज'गा ठैहरे दे (यानी खडुत्त) न हालांके ओह बदलें² आंगर चला करदे न। एह अल्लाह दी कारागिरी ऐ जिसनै हर चीजै

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوا فَهُمْ لَا يَنْظُرُونَ ﴿٨٥﴾

الْمَ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لَيْسَكُنُوفِيهِ
وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ
يُؤْمِنُونَ ﴿٨٦﴾

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَفَزِعَ مَنْ
فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ
شَاءَ اللَّهُ ۗ وَكُلُّ أَتَوَةٍ دُخْرِينَ ﴿٨٧﴾

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَهِيَ
تَمْرٌ مَرَّ السَّحَابِ ۗ صُنِعَ اللَّهُ الَّذِي اتَّقَنَ
كُلَّ شَيْءٍ ۗ إِنَّهُ حَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ ﴿٨٨﴾

1. यानी कोई उपाऽ पेश नेई करी सकगे।

2. इस आयत च धरती दे चलने दा जिकर ऐ, पर पुराने समे दा जुगराफिया लिखने आहले लेखकें सूरज गी चलने आहला ते धरती गी खडुत्त रौहने आहली आखे दा ऐ।

फ्हाइँ दे चलने दा एह मंतलब ऐ जे ओह बी धरती दे कनै गै गतिमान न, धरती दी गति दे बगैर उंदी कोई गति नेई ते ओह परिपुष्ट ते स्थिर ते गतिहीन लब्बने पर बी ऐसे गै गतिशील न जिस चाल्ली काले बदल गासै पर खडुत्त लभदे न, पर असल च ओह हर-पल चलदे-फिरदे रौहदे न। बदलें दी उपमां सिर्फ गतिशीलता दे उपलक्ष च दिँती गेदी। उंदी गति बिधी जां वेग बगैर दे सरबंथे च नेई दिँती गेदी।

इस आयत पर किश्रा लोकें एह इतराज कीते दा ऐ जे फ्हाइँ दा चलना कुर'आन दे लेखक दे देशें च होंदा होग। असल च उनें फ्हाइँ शब्द दे अर्थे ते कुर'आन दी प्रयोगात्मक शैलीं पर बिचार नेई कीता। पर्वत (यानी फ्हाइँ) शब्द दे अर्थ न : (1) फ्हाइँ (2) सरदार (3) महान आदमी (4) पर्वत बासी (5) सुदृढ़ चीज (6) गन्ध-अनुशासन। (अकरब) पवित्र कुर'आन नै इस शब्द दा प्रयोग कुदै सधारण अर्थे च कीते दा ऐ। कुदै सरदार ते महान आदमी कीते दा ऐ। मूल शब्द 'जिबाल' दे सधारण अर्थे गी सामनै रक्खने कनै इस शब्द दा प्रयोग करने च मती-सारी भविक्खवाणियां हियां जेहकियां अपने-अपने समे पर पूरियां होई गेइयां ते भविक्ख च बी होडन।

गी मजबूत बनाए दा ऐ ओह् थुआड़े कर्में थमां भलेआं बाकफ ऐ ॥ 89 ॥

जेहका कोई नेकी करग उसगी ओहदे थमां बेहतर सिला मिलग ते ऐसे लोक उस दिन खौफ थमां (जेहदा जिकर उप्पर होई चुके दा ऐ) बचे दे रौहडन ॥ 90 ॥

ते जेहके लोक बुरे कर्म लेइयै खुदा दी खिदमत (सेवा) च हाजर होडन उंदे सरदारें गी पुट्टा करियै नरक च सुट्टी दिता जाग ते गलाया जाग जे क्या थुआड़ा एह सिला थुआड़े कर्में दे मताबक नेई? ॥ 91 ॥

मिगी ते सिर्फ एह हुकम दिता गेदा ऐ जे अ'ऊं इस शौहर (मक्का) दे रब्ब दी उपासना करां जिसी अल्लाह नै सम्मानत कीते दा ऐ ते हर चीज उससै दे अधिकार च ऐ ते मिगी हुकम दिता गेदा ऐ जे अ'ऊं फरमांबरदारें बिच्चा होई जां ॥ 92 ॥

ते एह बी जे अ'ऊं कुरआन पढ़ियै सुनांऽ। इस आस्तै जेहका आदमी इसी सुनियै हदायत पाई जाग तां उस दा हदायत पाना सिर्फ उससै दी जान्ना दे कम्म आँग ते जेहका इसी सुनियै गुमराह होई जाग तां तूं उसी आखी दे जे अ'ऊं सिर्फ इक सचेत करने आहला (वजूद) आं ॥ 93 ॥

ते एह बी आखी दे जे अल्लाह गै सारी तरीफें दा हक्कदार ऐ ओह तुसेंगी अपने नशान दस्सग इर्थें तक जे तुस उनेंगी पछानी जागे ओ ते थुआड़ा रब्ब तुंदे कर्में थमां गाफल (अनजान) नेई ऐ ॥ 94 ॥ (रुकू 7/3)

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِّمَّهَا وَهُمْ
مِّنْ فَزَعٍ يَوْمِذِ آمُونَ ﴿٩٠﴾

وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وَجُوهُهُمْ
فِي النَّارِ هَلْ تُجْرُونَ. إِلَّا مَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ﴿٩١﴾

إِنَّمَا أَمْرٌ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هَذِهِ الْبَلَدِ
الَّذِي حَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ وَأَمْرٌ أَنْ
أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٩٢﴾

وَأَنْ أَتْلُوا الْقُرْآنَ فَمَنْ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا
يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ إِنَّمَا
أَنَا مِنَ الْمُنذِرِينَ ﴿٩٣﴾

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ سَيَرِّيَكُمُ إِلَيْهِ
فَقَعَرُوا نَفْسَهُمْ وَمَا رَبُّكَ بِعَافٍ عَمَّا
تَعْمَلُونَ ﴿٩٤﴾

سُورَةُ الْقَصَصِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ تِسْعٌ وَثَمَانُونَ آيَةً وَتِسْعَةٌ رُكُوعَاتٍ

सूर: अल्-क्रसस

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां उनानुएँ आयतां ते नौ रुकू न।

मैं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो बे-
हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार रैहम
करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

ताहिर (पाक), समीअ (प्रार्थना सुनने आह्ला)
मजीद (महान गौरव आह्ला) अल्लाह इस
सूर: दा उतारने आह्ला ऐ ॥ 2 ॥

طَسْمًا ①

एह (इस सूर: दियां आयतां) इक प्रमाण युक्त
कताबै दियां आयतां न ॥ 3 ॥

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ①

मोमिन जाति दे हित आस्तै अस मूसा ते
फिरऔन दी ठीक-ठीक परिस्थितियां तेरे सामनै
पढ़ने आं ॥ 4 ॥

تَتْلُو عَلَيْكَ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ
وَقَدْ يَكُونُ بَيْنَهُمْ حُجُورٌ مَبْنُوعَةٌ ①

फिरऔन ने अपने देश च बड़े अभिमान कनै
कम्म लैता हा ते ओहदे च रौहने आहलें गी
केई टुकड़ें च बंडी दिते दा हा। ओह उंदे
बिच्चा इक गरोह गी कमजोर करना चांहदा
हा, (इस चाल्ली जे) उंदे पुत्तरे दी हत्या
करदा हा ते उंदी धीयें गी जीदा रखदा हा ते
यकीनन ओह फसादियें बिच्चा हा ॥ 5 ॥

إِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْأَرْضِ وَجَعَلَ أَهْلَهَا
شِيْعًا يَسْتَضَعِفُ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ
يُدْبِحُ أَنْبَاءَهُمْ وَيَسْتَخْفِي نِسَاءَهُمْ
إِنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ①

ते असें ध्याए दा हा जे जिनें लोकें गी उसनै
देश च कमजोर समझे दा हा उंदे पर स्थान
करचै ते उनें गी सरदार बनाई देचै ते उनें गी
(सारी नैमतें दा) बारस बनाई देचै ॥ 6 ॥

وَتَرِيدَ أَنْ تُنْمَنَ عَلَى الَّذِينَ اسْتَضَعَفُوا فِي
الْأَرْضِ وَنَجَعَلَهُمْ آيَةً وَنَجَعَلَهُمُ
الْوَارِثِينَ ①

ते उनेंगी देश च मजबूती प्रदान करचै ते फ़िरऔन ते हामान ते उंदी फौजें गी ओह किश दसचै जिसदा उनेंगी भै सतांदा रौहदा हा ॥ 7 ॥

ते असें मूसा दी माता पासै वह्नी कीती ही जे उसगी (मूसा गी) दुदुध पलैऽ। इस आस्तै जिसलै तू उस (दी जान) बारै फ़िकरमंद होई जाएं तां तू उसी दरेआ च रोढ़ी देआं ते डर नेई ते नां कुसै पिछली घटना कारण भै खा। अस उसी तेरे पासै परताई आहनगे ते उसी रसूलें बिच्चा इक रसूल बनागे। (इस लेई मूसा दी माता नै इस वह्नी मताबक कम्म करदे होई मूसा गी दरेआ च रुढ़ाई दिता) ॥ 8 ॥

इस लेई इसदे बा'द उस (मूसा) गी फ़िरऔन दे बंश बिच्चा इक नै चुक्की लैता। जिसदा नतीजा एह होआ (जे भविक्ख च) इक दिन ओह उंदे आस्तै दुश्मन साबत होआ ते कलेश दा कारण बनेआ। फ़िरऔन ते हामान¹ ते उंदी दौनें दी फौजां भलेखे च गलतान हियां ॥ 9 ॥

ते फ़िरऔन (दे कटुंब) दी (इक) जनानी² नै गलाया, एह तेरे आस्तै ते मेरे आस्तै अकखीं दी ठंडक दा मूजब होग। उसगी कत्ल नेई करो ममकन ऐ जे इक दिन ओह असेंगी फायदा पुजाऽ जां अस उसी पुत्र बनाई लैचै ते उनेंगी असलीयत³ दा पता नेई हा ॥ 10 ॥

ते मूसा दी माता दा दिल (चिंता थमां) मुक्त होई गेआ। ममकन हा जे जेकर अस उसदे

وَأَمْسَكَ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَرَأَىٰ فِرْعَوْنُ
وَهَامَانَ وَجُوذَهُمَا مِنْهُمَا مَكَانُوا
يَحْذَرُونَ ۝

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّ مُوسَىٰ أَنْ أَرْضِعِيهِ
فَإِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَأَلْقِيهِ فِي الْيَمِّ وَلَا
تَخَافِي وَلَا تَحْزَنِي ۚ إِنَّا رَأَيْنَاهُ إِلَيْكَ
وَجَاعِلُوهُ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

فَالْتَقَطَهُ آلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا
وَحَرْنًا ۗ إِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُوذَهُمَا
كَانُوا خَطِيئِينَ ۝

وَقَالَتِ امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قُرْتُ عَيْنِي ۖ
وَلَكَ ۗ لَا تَقْتُلُوهُ عَسَىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ
نَتَّخِذَهُ وَلَدًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ فِرْعَا ۗ إِنَّ

1. आखेआ जंदा ऐ जे हामान फ़िरऔन दे राज-दरबारियें बिच्चा हा। इस आस्तै सेना गी उसदी पदवी कन्ने सरबन्धत दस्सेआ गेदा ऐ जां ममकन ऐ जे ओह सेनापति (जरनैल) होऐ।
2. इक जनानी दा मतलब फ़िरऔन दी धीऽ ऐ। उसदी मन्शा ही जे ओह इक सोहने जागतें दा पालन-पोशन करै। (निर्गमन 2: 5)
3. यानी अल्लाह नै उस बच्चे (जागतें) गी फ़िरऔन ते उसदी कौम दे सर्वनाश आस्तै उंदै गै घर रखाया हा।

दिलै गी मोमिन बनाने आसतै मजबूत नेई करदे तां ओह उस घटना दी सारी सचाई जाहर करी दिंदी ॥ 11 ॥

ते उस (यानी मूसा दी माता) नै उस (मूसा) दी भैनु गी गलाया जे ओहदे पिच्छें-पिच्छें जा। इस आसतै ओह उसी दूरा दा दिखदी रेही ते ओह (यानी फ़िरऔन दे लोक) बे-खबर हे ॥ 12 ॥

ते असें उस (मूसा) पर उस थमां पैहलें दुदध पलैने आहलियं गी रूहाम¹ करी दिता। इस पर उस (यानी मूसा दी भैनु) नै गलाया जे क्या अ'ऊं तुगी इक ऐसे घरै दी खबर (पता) देआं जेहके तेरे आसतै इस बच्चे दा पालन-पोशन करन ते ओह इस दे खैर-खाह (हतेशी) साबत होंडन ॥ 13 ॥

इस चाली असें उस (मूसा) गी उस दी मारु पासै परताई दिता तां जे उसदी अक्खीं गी ठंड पुज्जै ते ओह चिंता नेई करै ते समझी लै जे अल्लाह दा बा'यदा पूरा होइयै रौहदा ऐ, मगर (इन्कार करने आहलें बिच्चा) मते-सारे लोक नेई जानदे ॥ 14 ॥ (रुकू 1/4)

ते जिस बेले ओह जुआन गभरू² होआ ते (अपने उच्च आचरण पर) मजबूती कनै कायम होई गेआ तां असें उसी हुकम ते इलम प्रदान कीता ते अस उपकार करने आहलें गी इयै नेहा गै सिला दिन्ने होन्ने आं ॥ 15 ॥

كَادَتْ لِتُبَدِّي بِهِ لَوْلَا أَنْ رَّبُّنَا
عَلَىٰ قَلْبِهَا لِتَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ①

وَقَالَتْ لِأُخْتِهِ قُصِّيهِ ۖ فَبَصَّرَتْ بِهِ عَنِ
جُنُبٍ ۖ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ②

وَحَرَّمَ نَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ
هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتٍ يَكْفُلُونَهُ
لَكُمْ وَهُمْ لَهُ نَاصِحُونَ ③

فَرَدَدْنَاهُ إِلَىٰ أُمِّهِ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا
تَحْزَنَ ۚ وَلِتَعْلَمَ أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ
أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ④

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَاسْتَوَىٰ آتَيْنَاهُ حُكْمًا
وَعِلْمًا ۖ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ⑤

1. इस थमां सेही होंदा ऐ जे मूसा जिस टोकरे च हे ओह रुहदा-रुहदा देआ दे कंढे जाई लगगेआ हा ते मूसा दी भैनु बड़ी हुशयारी कनै बल्लें-बल्लें उसदे पिच्छें जा करदी ही। इस अरसे च फ़िरऔन दी धीऊ नै केई दुदध पलैने आहिलियं गी बुलाया ते उनेंगी गलाया जे ओह मूसा गी दुदध पलैने, पर मूसा नै कुसै दा बी दुदध नेई पीता, इयें तक जे अल्लाह दे उपाउ दे मताबक ओह अपनी मारु कश बापस परताई दिते गे।
2. इस दा मतलब एह ऐ जे ओह ऐसी अवस्था गी पुज्जी गेआ जेहदे च वह्मी उतरन लागदी ऐ यानी त्रीहें साल्लें थमां चाली साल्लें तक जां उस थमां किश बद्ध।

ते (इक दिन) उसनै शैहरै च ऐसे मौकै प्रवेश कीता जिसलै जे लोक बे-खबर¹ हे। उसनै उस शैहरै च दौं आदमियें गी दिक्खेआ जेहके आपस च लड़ा करदे हे। उंदे च इक उसदे मित्तरे दे गरोह बिच्चा हा ते दूआ उसदे बैरियें बिच्चा हा। इस लेई उस आदमी ने जेहका उसदे गरोह बिच्चा हा, दूए आदमी दे बरुद्ध, जेहका उसदे बैरियें बिच्चा हा, उसदी मदद मंगी, तां मूसा नै उस (बैरी) गी इक घसमुन्न मारेआ ते उस (घसमुन्ने) कनै उसदा कम्म तमाग करी दिता, फी मूसा नै गलाया जे एह सब घटना शतान दी करतूत² कनै होई ऐ। ओह (शतान मोमिन दा) बैरी ते उसी अम्म दे रस्ते थमां खु'ल्लम-खु'ल्ला (जाहरा तौर) भटकाने आहला हा ॥ 16 ॥

फी मूसा नै प्रार्थना कीती जे हे मेरे रब्ब! मैं अपनी जिंदू गी कश्त च पाई दिता ऐ। इस लेई तूं मेरे इस कर्म पर परदा पाई दे। ते उसनै उस कर्म पर परदा पाई दिता ओह बौहत बख्खानहार ते बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 17 ॥

उस बेलै मूसा नै नवेदन कीता जे हे मेरे रब्ब ! की जे तोह मेरे पर उपकार (इनाम)³ कीता ऐ। इस लेई अऊं अगगड़ताई कदें बी कुसे मुजरम दा मददगार नेई बनगा ॥ 18 ॥

उसदे बा'द ओह सवैरै बैरियें शा डरदा (हुशियारी कनै) तांह-तुआंह दिखदा शैहरै

وَدَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَىٰ حِينٍ غَفْلَةٍ مِّنْ أَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلَانِ هَذَا مِنْ شَيْعَتِهِ وَهَذَا مِنْ عَدُوِّهِ فَاسْتَعَاثَ الْذِي مِنْ شَيْعَتِهِ عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ ۗ فَوَكَرَهُ مُوسَىٰ فَقَضَىٰ عَلَيْهِ ۖ قَالَ هَذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ ۗ إِنَّهُ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِينٌ ﴿١٦﴾

قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي ۖ فَغَفَرَ لَهُ ۗ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١٧﴾

قَالَ رَبِّ بِمَا أَنعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ أَكُونَ ظَهِيرًا لِلْمَجْرُمِينَ ﴿١٨﴾

فَأَصْبَحَ فِي الْمَدِينَةِ خَائِبًا يَتَرَ قَبْ فَاذًا

1. अर्थात् जिसलै जे ओह लोक दपैहरौं जां अदधी रातीं बेलै अपने-अपने घरे सुख-चैन कनै सुत्ते दे हे।
2. अर्थात् शतान नै मेरी ते फिरऔन दी जाति दे लोकें गी रोह चढ़ाइयै आपस-च लड़ाई दिता ते मैं अपनी जाति दे आदमी दी मदद करनी पेई जो मजलूम (उत्पीड़ित) हा ते फिरऔन दी जाति दा आदमी मरी गेआ।
3. अर्थात् मिंगी इक मजलूम दी मदद दा मौका प्रदान कीता ऐ। इस लेई अऊं धनवाद दे रूपै च सदा मजलूमें दी मदद करदा रोहड़ ते जालम आदमियें दी कदें मदद नेई करडा।

च गोआ तां केह् दिखदा ऐ जे जिस आदमी नै उस थमां पिछलै कल्ल मदद मंगी ही, ऊऐ उसी फी मदादू आस्तै सददा करदा ऐ। इस पर मूसा नै उसी गलाया जे तू यकीनन इक खु 'ल्लम-खु 'ल्ला गुमराह् होए दा आदमी ऐं ॥ 19 ॥

ते जिसलै उसनै मन बनाया जे उस आदमी गी पकड़ी लै जेहका इनें दौनें दा बैरी हा तां उस आदमी¹ नै गलाया जे हे मूसा! क्या तू चाहन्ना ऐं जे मेरा खून बी उससे चाल्ली करी देऐं जिस चाल्ली तोह कल्ल इक होर आदमी दा खून कीता हा? तू सिर्फ एह चाहन्ना ऐं जे कमजोर लोकें गी देशै च दबाई देऐं ते सुधार करने आहलें च शामिल होना तेरा कोई बासता नैई ॥ 20 ॥

ते उस बेलै इक आदमी शैहरे दे दूर सिरे थमां दौड़दा आया ते गलान लगा हे मूसा! (देशै दे) सरदार लोक सलाह् करा करदे न जे तेरा खून² करी देन। इस आस्तै तू इस शैहरे चा निकली जा, अ'ऊं तेरे हतेशियें बिच्चा आं ॥ 21 ॥

उस बेलै ओह डरदा उस शैहरे थमां उठी गोआ ते ओह हुशयारी कन्नै तांह-तुआंह दिखदा जंदा हा। उस बेलै उसनै प्रार्थना कीती जे हे मेरे रब्ब! मिगी अत्याचार करने आहली (जालम) जाति थमां छुटकारा दुआऽ ॥ 22 ॥ (रुकू 2/5)

हून जिसलै ओह मद्यन³ शैहरे बकखी चलेआ तां उसनै गलाया जे मिगी मेद ऐ जे मेरा रब्ब मिगी सिद्धा रस्ता दस्सी देग ॥ 23 ॥

الَّذِي اسْتَنْصَرَهُ بِالْأَمْسِ يَنْتَصِرُهُ
قَالَ لَهُ مُوسَى إِنَّكَ لَعَوِيٌّ مُّبِينٌ ①

فَلَمَّا أَنْ أَرَادَ أَنْ يَنْطِشَ بِالَّذِي هُوَ عَدُوٌّ
لَهُمَا قَالَ يَمْوَسَىٰ أَرِيدُ أَنْ مُّكْتَلِبِي كَمَا
قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْأَمْسِ ۗ إِنَّ تَرِيدُ إِلَّا أَنْ
تَكُونَ جَبَّارًا فِي الْأَرْضِ وَمَا تَرِيدُ أَنْ
تَكُونَ مِنَ الْمُصْلِحِينَ ①

وَجَاءَ رَجُلٌ مِّنْ أَقْصَا الْمَدْيَنَةِ يُسْعَىٰ
قَالَ يَمْوَسَىٰ إِنَّ الْمَلَائِيَةَ أَمْرُونَ بِكَ
يَقْتُلُونَكَ فَاخْرُجْ إِلَىٰ لَكَ مِنَ
النَّصِيبِينَ ①

فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ ۗ قَالَ رَبِّ
نَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ①

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَاءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسَىٰ
رَبِّيَ أَنْ يَهْدِيَنِي سَوَاءَ السَّبِيلِ ①

1. जेहका आदमी इस्राइलियें बिच्चा हा, उसनै भलेखे च समझेआ जे मूसा मिगी मारन लगा ऐ ते ओह करलाया जे कल्लै आहला लेखा अज्ज बी तू खून करना चाहन्ना ऐं।
2. अर्थात् कल्लै आहली घटना दी भिनक उंदे कन्नै च पेई गेदी ऐ। सेही होंदा ऐ जे ओह शख्स हजरत मूसा दा हम ख्याल ते दोस्तै बिच्चा हा।
3. भिस् थमां इब्रानी लोक पासै जंदे होई रस्ते च मद्यन नाऽ दा शैहर आँदा ऐ। उस बेलै मद्यन च आद जाति दे अरब लोक रौहदे हे।

ते जिस बेलै मद्यन शौहरै दे पन्यासै (अर्थात् चश्मे दे) लागै आया तां उस नै उथ्यें लोकें दा इक गरोह खड़ोते दा दिक्खेआ जेहके (अपने-अपने चौखरें गी) पानी पलैऽ करदे हे ते उंदे थमां पिच्छें हटियै खड़ोती दी द'ऊं कुड़ियें गी बी दिक्खेआ जेहकियां अपने चौखरें गी (उस चौने थमां परैं) हटाऽ करदियां हियां। मूसा नै उनेंगी गलाया जे थुआड़ै दौनीं दे सामनै कोहका बड़्हा कम्म ऐ? इस पर दौनीं जनानियें गलाया जे अस (उन्ना चिर) पानी नेई पलैई सकदियां जिन्ना चिर जे दूए गुआल उठी नेई जान ते साढ़ा पिता बड़ा बुड़्हा ऐ। (इस आस्तै ओह साढ़ै कनै नेई आई सकेआ) ॥ 24 ॥

ते उसनै उनें दौनीं दी खातर (चौखरें गी) पानी पलैई दिता, फी इक पासै छामां उठी गोआ, फी गलाया जे हे मेरे रब्ब! अपनी भलाई बिच्चा जो कुछ तूं मेरे पर नाज़ल करैं (उतारैं) अ'ऊं उस दा मुत्ताज आं ॥ 25 ॥

इसदे बा'द उनें दौनीं (कुड़ियें) बिच्चा इक चलियै आई ते ओह शरमाऽ करदी ही ते उसनै गलाया मेरा पिता तुगी बुलाऽ करदा ऐ तां जे तुगी साढ़ी ज'गा (चौखरें गी) पानी पलैने दा बदला प्रदान करै। ते जिसलै ओह उस (यानी कुड़ियें दे पिता) कश पुज्जा ते उसी अपनी सारी कहानी सुनाई तां उसनै गलाया जे डर नेई, हून तूं जालम कौम थमां छुटकारा पाई चुके दा ऐं ॥ 26 ॥

इस पर उंदे (दौनीं कुड़ियें) बिच्चा इक नै गलाया जे हे मेरे पिता ! इसी तूं नौकर रक्खी

وَلَمَّا وَرَدَ مَاءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْتُمُونَ ۖ وَوَجَدَ مِنْ دُونِهِمْ امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ ۖ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۗ قَالَتَا لَا نَسْتَعِي حَتَّىٰ يُصْدِرَ الرَّعَاءُ ۗ وَأَبُونَا شَيْخٌ كَبِيرٌ ۝۱۱

فَسْتَعِي لَهُمَا ثُمَّ تَوَلَّىٰ إِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ إِنِّي لِمَا أَنْزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ۝۱۲

فَجَاءَتْهُ إِحْدَاهُمَا تَمْشِي عَلَى اسْتِحْيَاءٍ ۗ قَالَتْ إِنَّ أَبِي يَدْعُوكَ لِيَجْزِيَكَ أَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ۖ فَلَمَّا جَاءَهُ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقِصَصَ ۗ قَالَ لَا تَخَفْ ۗ نَجَّوْتُمِنَ النَّوْمِ الظَّالِمِينَ ۝۱۳

قَالَتْ إِحْدَاهُمَا يَا أَبَتِ اسْتَأْجِرْهُ ۗ إِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَأْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْأَمِينُ ۝۱۴

लै, की जे जिनेंगी तू नौकर रक्खें उंदे बिच्चा बेहतर शख्स ऊएे होंग जो शक्तिशाली¹ बी होएे ते अमानतदार बी ॥ 27 ॥

उसलै ओह आदमी बोल्लेआ जे (हे मूसा!) मेरी इच्छा ऐ जे अ'ऊं इस शरता पर अपनी इन्नै दौनीं कुड़ियै बिच्चा इक दा नकाह तेरे कन्नै करी देआं जे तू अट्ठें साल्लें तक मेरी सेवा करै। ते जेकर तू (अट्ठ दी संख्या दे थाहर) दस दी संख्या कन्नै अपने बा'यदे गी पूरा करी देएँ तां एह तेरा स्थान होंग ते अ'ऊं तेरे पर कोई बोझ नई पाना चांहदा। जेकर अल्लाह नै चाहया तां तू मिगी नेक ब्यहार करने आहलें बिच्चा पागा ॥ 28 ॥

(इस पर मूसा नै) गलाया जे एह गल्ल मेरे ते तेरे बशकार पक्की होई गेई। इन्नै दौनीं अबधियै बिच्चा अ'ऊं जेहकी बी अबधी पूरी करां मेरे पर कोई अलजाम नई होंग। ते जो कुश अस आखने आं, अल्लाह उस दा गुआह ऐ ॥ 29 ॥ (रुकू 3/6)

जिसलै मूसा नै निश्चत अबधी पूरी करी लैती ते अपने परिवार गी लेइयै चलेआ तां उसनै तूर पर्वत पासै इक अगिन² दिक्खी ते अपने परिवार गी गलाया जे तुस इत्थें रुको, मै इक अगिन दिक्खी ऐ। ममकन ऐ अ'ऊं उल्थुआं थुआड़े आस्तै कोई (जरूरी) समाचार ल्यामां जां अगिन दा कोई अंगारा ल्यामां तां जे तुस सेको ॥ 30 ॥

قَالَ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ نَبْحَثَكَ إِحْدَى
ابْنَتَيْ هُتَيْنِ عَلَى أَنْ تَأْجُرَنِي ثَمَنِي حَبِيبٌ
فَإِنْ أَتَمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ وَمَا
أُرِيدُ أَنْ أَسْأَلُكَ عَلَيْكَ تُسَجِّدُنِي إِنْ شَاءَ
اللَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝

قَالَ ذَلِكَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ أَيَّمَا الْأَجْلَيْنِ
فَقَضَيْتَ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ وَاللَّهُ عَلَيَّ مَا
تَقُولُ وَكَيْلٌ ۝

فَلَمَّا قَضَى مُوسَى الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِ
آنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ نَارًا قَالَ
لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّي
آتِيكُمْ مِنْهَا خَبْرٌ أَوْ جَذْوَةٌ مِنَ النَّارِ
لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ۝

1. हज़रत मूसा नै मते-हारे गुआलें गी हटाइयै चौखरें गी पानी पलैई दिता जो शक्तिशाली आदमियें दा कम्म ऐ। पानी पलैनें परेंत छामां जाइयै इक पासै बेही जाना ते कुड़ियै थमां कुसै बदले जां धनवाद दी मेद नई रक्खना इक अमानतदार सदाचारी आदमी दा कम्म ऐ। इन्नै दौनीं गल्लें गी सामने रक्खियै उस लड़की नै ठीक-ठीक नतीजा कइडेआ हा जे एह आदमी शक्तिशाली ते अमानतदार ऐ।

2. विवरण आस्तै दिक्खो सूर: नम्ल टिप्पणी आयत 81.

फी जिसलै ओह उस अगिन दे लागै पुज्जेआ तां बरकत आहले थाहैरे दे इक मुबारक¹ हिस्से आहली बकखी दे इक बूहटे कशा उसी पुकारेआ गेआ जे हे मूसा! अ'ऊं अल्लाह आं, सारे लोकें (ज्हाँनैँ) दा रब्ब ॥ 31 ॥

ते एह जे तूं सोटा छंडी दे। ते जिसलै उसनै उस (सोटे) गी हलदे-झुलदे दिक्खेआ, आखो ओह इक निक्का सप्प ऐ, तां ओह पिट्ठ फेरियै नस्सा ते पिच्छे मुडियै नेई दिक्खेआ। (उस बेलै उसी आक्खेआ गेआ) हे मूसा! अगें बध ते डरेआं नेई। तूं सलामती पाने आहले लोकें बिच्चा ऐं ॥ 32 ॥

ते अपना हत्थ अपने गिरेबान च पा। ओह बिना कुसै रोगे दे लिशकां मारदा बाहर औग ते अपनी बांह गी डरे कारण (जोरें) खिच्चियै (अपने शरीरे कनैँ) मलाई लै। एह दौँ प्रमाण (दूए प्रमाणें दे अलावा) न जेहके फ़िरऔन ते उसदे दरबारियै आस्तै तेरे रब्ब पासेआ भेजे गेदे न, की जे ओह आज्ञा भंग करने आहले लोक न ॥ 33 ॥

(मूसा नैँ) गलाया जे हे मेरे रब्ब! मैं फ़िरऔन दी जाति दे इक आदमी दा खून कीता हा। इस आस्तै मिगी डर लगदा ऐ जे ओह मेरा खून नेई करी देन (ते तेरा संदेश² नेई पुज्जी सकेँ) ॥ 34 ॥

ते मेरा भ्राऽ हारून गल्ल-बात करने च मेरी निसबत ज़्यादा कुशल ऐ। इस आस्तै उसी मेरे

فَلَمَّا آتَاهَا نُودَىٰ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْأَيْمَنِ
فِي الْبُقْعَةِ الْمُبْرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ أَنْ
يُؤْمِسْ إِلَىٰ إِيَّيْنَا اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝

وَأَنْ أَلْقَ عَصَاكَ فَلَمَّا رَأَاهَا تَهْتَزُّ
كَأَنَّهُ جِبَالٌ وَلَّىٰ مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ
يُؤْمِسْ أَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ إِنَّكَ مِنَ
الْآمِنِينَ ۝

أَسَلْتُكَ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجُ
بَيضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ وَأَضْمَمُ إِلَيْكَ
جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذُنُوبُكَ بَرَّهَانُنْ مِنْ
رَبِّكَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا
قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝

قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا
فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ۝

وَإِخِي هَارُونَ هُوَ أَفْصَحُ مِنِّي لِسَانًا

1. मतलब एह ऐ जे ओह मदान बी मुबारक ते कल्याणकारी हा ते बूहटे दे लागै दी धरती बी, जिल्युआं अवाज आई ही, की जे उत्थें हज़रत मूसा नैँ अल्लाह पासेआ पैदा कीती गेदी छवि दे दर्शन कीते हे।
2. हज़रत मूसा गी अपने प्रणें दा डर नेई हा बल्के अल्लाह दे संदेश गी लोकें तक पुजाई नेई सकने दा डर हा।

कन्नै मदादी दे तौरा पर भेजी दे तां जे ओह मेरा समर्थन करै। मिगी डर ऐ जे ओह मिगी झुठलाई नई देन ॥ 35 ॥

गलाया जे अस तेरे भ्राऽ राहें तेरी बांह गी मजबूत करी देगे ते थुआड़े दौनें आस्तै बिजय दा समान बी पैदा करगे। ते ओह थुआड़े तगर नई पुज्जी सकडन। तुस दमै ते जेहके थुआड़े अनुयायी होडन साढ़ी आयतें राहें विजयी होडन ॥ 36 ॥

इस लेई जिसलै मूसा साढ़ी खु 'ल्लम-खु 'ल्ली आयतां लेइयै आया तां फिरऔन दे लोकें गलाया जे एह तां इक फरेब ऐ जेहका बनाई लैता गोदा ऐ। असें ते अपने पुरखें थमां ऐसी गल्ल कदें बी नई सुनी ॥ 37 ॥

ते मूसा नै गलाया जे मेरा रब्ब उसी चंगी-चाल्ली जानदा ऐ जेहका उसदी तरफा हदायत लेइयै आए दा होऐ ते उसी बी जिसदा नतीजा चंगा होऐ। सच्च ते एह ऐ जे जालम कदें बी कामयाब नई होंदा ॥ 38 ॥

ते फिरऔन नै गलाया जे हे दरबारियो! मिगी अपने सिवा थुआड़ा कोई होर उपास्य नई सेही! इस लेई हे हामान! तूं मेरे आस्तै गिल्ली मिट्टी पर अगग बाल (यानी इट्टां बनाऽ) फी मेरे आस्तै इक किला त्यार¹ कर। ममकन ऐ अ'ऊं ओहदे पर चढ़ियै मूसा दे अल्लाह दा पता लेई लैं ते अ'ऊं ते उसी झूठें बिच्चा समझनां ॥ 39 ॥

ते उसनै बी ते उसदी फौजें बी बगैर कुसै हक़ दे गरूर थमां कम्म लैता ते समझी लैता जे ओह साढ़े पासै परताइयै नई आंहदे जाडन ॥ 40 ॥

فَأَرْسَلَهُ مَعِيَ رِدْءًا يُصَدِّقُنِي ۗ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ۝۳۵

قَالَ سَنَنْدُ عَضْدَكَ بِأَخِيكَ وَنَجْعَلُ لَكُمْ سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُونَ إِلَيْكُمْ ۗ بِآيَاتِنَا ۗ أَنْتُمْ وَمَنِ اتَّبَعَكُمْ الْعٰلِيُونَ ۝۳۶

मिगी

فَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرَىٰ وَمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ۝۳۷

وَقَالَ مُوسَىٰ رَبِّيٰ أَعْلَمُ بِمَنْ جَاءَهُ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهِ وَمَنْ تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۗ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُونَ ۝۳۸

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِنْ إِلٰهِ غَيْرِيٰ ۗ فَأَوْقِدْ لِي يَا مَلِيْكُ عَلَى الطَّيْنِ فَاجْعَلْ لِي صَرْحًا لَّعَلِّي أَطَّلِعُ إِلَىٰ إِلٰهِ مُوسَىٰ وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ مِنَ الْكٰذِبِينَ ۝۳۹

وَاسْتَكَبَرَ هُوَ وَجُودُهُ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوا أَنَّهُم إِلٰهِنَا لَا يُرْجَعُونَ ۝۴۰

1. मिस्र आहलें दा एह मनना हा जे गासी रूहां उच्चे थाहरें पर उतरदियां न। इस लेई ओह आध्यात्मक कला-कौशल दी प्राप्ति आस्तै अंबर झूहदे मैहलें दा नर्माण करदे हे। मिस्र देश दे स्तूप इससे सोच दे स्मारक न।

ते असें उसी बी ते ओहदी फौजें गी बी पकड़ी लैता ते उनेंगी समुंदरै¹ च सुट्टी दिता। इस आस्तै दिक्ख! जालमें दा नतीजा कनेहा होआ ॥ 41 ॥

فَأَحْذَنُوهُ وَجُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ
فَأَنْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ①

ते असें उनें (फ़िरऔनियें) गी सरदार बनाया हा जो (अपनी सरदारी दे घमंड च) लोकें गी नरक आहली बक्खी सददे हे ते क्यामत आहलै रोज उंदी कोई मदद नेई कीती जाग ॥ 42 ॥

وَجَعَلْنَاهُمْ آيَةً يُدْعَوْنَ إِلَى النَّارِ وَيَوْمَ
الْقِيَامَةِ لَا يُنصَرُونَ ②

ते इस संसार च बी असें उंदे पर फटकार बर्हाई ते क्यामत आहलै रोज बी ओह बुरे हाल आहले लोकें बिच्चा होडन ॥ 43 ॥ (रुकू 4/7)

وَأَتَّبَعْنَاهُمْ فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ
الْقِيَامَةِ هُمْ مِنَ الْمَقْبُوحِينَ ③

ते असें पैहलकी कौमें गी हलाक करने दे बा'द मूसा गी कताब दिती ही, जेहदी शिक्षा लोकें गी आध्यात्मक ज्योति प्रदान करदी ही, ते ओह हदायत ते रैहमत दा मूजब ही ते इस मकसद कनै (दिती गई ही) जे ओह शिक्षा ग्रैहन करन ॥ 44 ॥

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِمَا
أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ الْأُولَىٰ بَصَائِرَ لِلنَّاسِ
وَهُدًى وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ④

ते तू (तूर पर्वत दे) पच्छम च नेई हा जिसलै जे असें मूसा गी रिसालत² (यानी पैगंबरी) दा कम्म सौंपेआ हा ते नां तू (उस बेलै) गुआहें बिच्चा इक गुआह गै हा ॥ 45 ॥

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْعَرَبِ ۚ إِذْ قَضَيْنَا إِلَىٰ
مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشَّاهِدِينَ ⑤

पर असें नेकां जातियें गी पैदा कीता, ते उंदे पर आयु लम्मी³ होई गई (ते ओह अपनी

وَلَكِنَّا أَنشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ

1. मूल शब्द 'यम' दा अर्थ नदी ते समुंदर दमें न। (अकरब) इतिहास थमां पता लगदा ऐ जे हजरत मूसा ते फ़िरऔन उस थाहरा लंधे हे जित्थुआं लाल सागर सीना नांउ दे मदान कनै मिलदा ऐ।
2. इस मौके पर ओह मशहूर भविक्खवाणी हजरत मूसा गी दस्सी गई ही जेहदे च हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दा जिकर ऐ। इस आयत च उस्सरे पासै संकेत न जे तू उस बेलै ते था नेई, फी तोह मूसा थमां अपने आस्तै भविक्खवाणी कियां करोआई लैती।
3. हजरत मूसा दी भविक्खवाणियें दे होंदे होई यहदियें दा इन्कार करना इस करी ऐ जे उंदी आयु लम्मी होई गई यानी हजरत मूसा दे बा'द इक लम्मा अरसा बोती चुके दा ऐ जेहदे करी यहदी लोक उनें भविक्खवाणियें गी धुल्ली चुके दे हे।

भविष्यवाणियों गी भुल्ली गे) ते तू मद्यन¹ आहलें कनै बी नेई हा रौहदा जे उंदे सामनै साढ़ी आयतां पढ़ियै सुनांदा, पर अस गै रसूलें² गी भेजने आहले आं ॥ 46 ॥

ते तू तूर पर्वत दे कंठै नेई हा जिसलै जे असें (मूसा गी) पुकारेआ, पर एह सब किश तेरे रब्ब आहले पासेआ रैहमत ऐ तां जे तू उस कौम गी सचेत करै जिंदे कश तेरे थमां पैहलें कोई सचेत करने आहला नेई हा आया तां जे ओह नसीहत हासल³ करी सकन ॥ 47 ॥

ते जेकर एह ख्याल नेई होंदा जे ओह अपने कर्म दी ब'जा करी कुसै मसीबत दे आई जाने पर आखडन जे हे साढ़े रब्ब! तोह साढ़ी बक्खी कुसै रसूल गी की नेई भेजेआ तां जे अस तेरी आयतें दे पिच्छें चलदे ते मोमिनें बिच्चा बनी जंदे (तां होई सकदा हा जे अस तुगी रसूल बनाइयै नेई भेजदे पर इन्कार करने आहलें पर हुज्जत कायम करना जरूरी हा) ॥ 48 ॥

इस लेई जिसलै उंदे कश साढ़े पासेआ सच्च आई गेआ तां ओह आखन लगे जे इस (हज्जरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व.) गी की ऊपे नेही शिक्षा नेई मिली जनेही जे मूसा गी मिली ही।

الْحَمْرُ وَمَا كُنْتَ تَأْوِي فِي أَهْلِ مَدْيَنَ
تَتَلَوُا عَلَيْهِمُ آيَاتِنَا وَلَكِنَّا كُنَّا
مُرْسِلِينَ ﴿٤٦﴾

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَكِنْ
رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَأْتَهُمْ مِنْ
تَّيْدِيرٍ مِنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٧﴾

وَلَوْلَا أَنْ تُصِيبَهُمْ مُصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ
أَيْدِيَهُمْ فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا
رَسُولًا فَتَتَّبِعَ آيَاتِكَ وَتَكُونَ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٨﴾

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا
لَوْلَا أَوْتِيَتْهُمُ آيَاتُ مُوسَىٰ أَوْ لَمَّا

1. हज्जरत मूसा नै मद्यन पासै दूई बारों जंदे बेलै हज्जरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दे बारै भविष्यवाणी कीती ही। इसै करी दूई बारों फी मद्यन दा जिकर बी कीता गेआ ऐ।
2. हज्जरत मूसा दी कताब च तेरे (हज्जरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दे) बारै भविष्यवाणियां न। तेरे प्रादुर्भाव/प्रगट होने थमां मती पैहलें हज्जरत मूसा होई चुके दे हे। इस लेई एह इस गल्ला दा सबूत ऐ जे ओह भविष्यवाणियां अल्लाह आहले पासेआ न, की जे तेरे आखने पर हज्जरत मूसा नै तेरे बारै ऐसी भविष्यवाणियां नेई कीतियां, फी जिसलै मूसा मद्यन पासै गे हे तां तू उस बेलै बी उंदै कश नेई हा की जे उस बेलै ते तेरा प्रादुर्भाव बी नेई होए दा हा। इस लेई हुन जेहकी तुगी नुबुव्वत मिली ऐ एह कुसै समझोते कारण नेई, बल्के एह अल्लाह आहले पासेआ मिली ऐ ते अल्लाह गै अपने रसूलें गी भेजदा ऐ।
3. जद के मक्का दे नवासी हज्जरत इब्राहीम दे बंशज हे, पर हज्जरत इब्राहीम उंदे थमां सदियां पैहलें होई चुके दे हे। इस लेई जरूरी हा जे कोई नमां नबी आइयै अल्लाह बक्खी उंदा ध्यान दुआंदा।

क्या उन्हें इस थमां पैहलें मूसा दी शिक्षा दा इन्कार नेई कीता हा ? उनें ते आखी दिता हा जे एह दो बड्डे जादूगर न, जेहके इक-दूए दी मदद करदे न ते आखी दिता हा जे अस इंदे बिच्चा हर-इक दे दा'बे दा इन्कार करने आं ॥ 49 ॥

तूं आखी दे जे (जेकर मूसा, हारून ते मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व., सारें दियां गल्लां झूठियां न तां) जेकर तुस सच्चे ओ तां अल्लाह थमां इक इयै नेही कताब आह्नो जेहकी इनें दौनीं कताबें थमां बधिया हदायत दिंदी होऐ तां जे अरुं उस दा अनुसरण करां ॥ 50 ॥

फी जेकर ओह कोई जवाब नेई देन तां समझी लै जे ओह सिर्फ अपनी खुआहिशें दे पिच्छें चला करदे न ते उस शख्स थमां बदध होर कु'न गुमराह ऐ जेहका अल्लाह दी हदायत गी नजर अंदाज करियै अपनी खुआहिश दे पिच्छें चलदा ऐ अल्लाह यकीनन जालम कौम गी कामयाबी दा रस्ता नेई दसदा ॥ 51 ॥ (रुकू 5/8)

ते अस लगातार बह्नी उतारदे रेह तां जे ओह नसीहत हासल करन ॥ 52 ॥

ओह लोक जिनेंगी असें इस कुरआन थमां पैहलें कताब दिती ही ओह इस कुरआन पर (दिलै च) ईमान रखदे¹ न ॥ 53 ॥

ते जिसलै ओह (कुरआन) उंदे सामनै पढ़ेआ जंदा ऐ तां ओह आखदे न जे अस एहदे पर ईमान ल्यौने आं। एह साढ़े रब्ब पासेआ सच्चा कलाम ऐ। अस ते इस दिनै थमां पैहलें गै मुसलमान हे ॥ 54 ॥

يَكْفُرُوا بِمَا آوَتْهُمُ مَوْسَىٰ مِنْ قَبْلُ ۗ قَالُوا
سِحْرَانِ تَظْهَرَانِ ۗ وَقَالُوا إِنَّا بِكُمْ
كَافِرُونَ ﴿٤٩﴾

قُلْ فَأْتُوا بِكِتَابٍ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ هُوَ أَهْدَىٰ
مِنْهُمَا ۖ أَتَّبِعُهُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٥٠﴾

فَإِن لَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكَ فَاعْلَمْ أَنَّمَا
يَتَّبِعُونَ أَهْوَاءَهُمْ ۗ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن
اتَّبَعَ هَوَاهُ يَبْعَثْهُ بِعَيْرِ هُدًى مِّنَ اللَّهِ
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٥١﴾

وَلَقَدْ وَصَّيْنَا لَهُمْ أَنْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٢﴾

الَّذِينَ آمَنُوا مِن قَبْلِهِ هُمْ
بِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٣﴾

وَإِذْ أَيْتَلَىٰ عَلَيْهِمْ قَالُوا آمَنَّا بِهِ إِنَّهُ الْحَقُّ
مِن رَّبِّنَا إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ﴿٥٤﴾

1. अर्थात् ओह लोक जेहके अपनी कताब दी भविष्यवाणियें दा ज्ञान रखदे न ते उनेंगी सच्चा समझदे न।

इन्हें लोकेँ गी इंदे धीरज¹ कारण दो बार बदला² मिलग ते ओह नेकी राहें बुराई गी दूर करदे न ते जो कुछ असें उनेंगी प्रदान कीते दा ऐ ओहदे बिच्चा खर्च करदे न ॥ 55 ॥

ते (यहूदियेँ बिच्चा मुसलमान होने आहले लोक जिसलै) कोई निरर्थक गल्ल सुनदे न तां उस थमां मूह फेरी लैंदे न ते आखदे न जे हे काफरो! साढ़े कर्म साढ़े आस्तै न ते थुआड़े कर्म थुआड़े आस्तै न। थुआड़े पर सलामती होऐ (यानी अल्लाह तुसें गी ईमान प्रदान करै) अस मूरखें कनै सरबंथ रक्खना पसंद नेई करदे ॥ 56 ॥

तूं जिसगी पसंद करै हदायत³ नेई देई सकदा पर अल्लाह जिसी चाह हदायत दिंदा ऐ ते ओह हदायत पाने आहलें गी चंगी-चाल्ली जानदा ऐ ॥ 57 ॥

ते ओह आखदे न जे जेकर अस उस हदायत दा अनुसरण करचै जो तेरे पर उतरदी ऐ तां अपने देशे थमां उचकी⁴ (चुक्की) लैते जागे। (तूं आखी दे) क्या असें उनेंगी सुरक्षत ते अमन आहली ज'गा नेई रक्खेआ। जेहदे पासै हर चाल्ली दे फल आहने जंदे न? एह साढ़ी देन ऐ, पर उंदे बिच्चा मते-सारे लोक नेई जानदे ॥ 58 ॥

ते मती-सारी बस्तियां नेहियां न जिनेंगी असें तबाह करी दिता, जेहकियेँ अपनी चीजें-बस्तेँ

أُولَئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُمْ مَرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا وَإِذْ رَأَوْنَا بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٥٥﴾

وَإِذْ اسْمِعُوا اللَّغْوَ أَعْرَضُوا عَنْهُ وَقَالُوا لَنَا أَعْمَالُنَا وَأَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ سَلِّمْ عَلَيْكُمْ لَا تَبْتَغِي الْجَاهِلِينَ ﴿٥٦﴾

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿٥٧﴾

وَقَالُوا إِنْ نَتَّبِعِ الْهَلْهَىٰ مَعَكَ نَتَّخِظُ مِنْ أَرْضِنَا ۗ أَوْلَمْ نُمَكِّنْ لَهُمْ حَرَمًا آمِنًا يُجْبَىٰ إِلَيْهِ تُمَرَّتْ كُلُّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٨﴾

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ بَطَرَتْ

1. अर्थात् ओह पैहली धार्मक-शिक्षा (तौरात) पर बी कायम रेह ते पवित्र कुरआन पर बी ईमान लेई आए।
2. अर्थात् इस लोक च बी ते परलोक च बी।
3. हदायत कुसै पर जबरदस्ती थोपी नेई जाई सकदी। जेहका आदमी उसी पाने दी चाह रखदा होऐ, उसी गै हदायत मिलदी ऐ। इस आस्तै अल्लाह जो दिलें दियेँ गल्लें गी जानदा ऐ, हदायत देना अपनै हत्थ रखदा ऐ।
4. अर्थात् लोक साढ़ा नाश करी देखन।

दी भरमाली कारण घमंडी होई गेदियां हियां।
इस लेई (दिक्ख) एह उंदियां बस्तियां न,
जिंदे च उंदे बा'द कोई बी नेई बस्सेआ ते
अस गै उंदे बारस बने ॥ 59 ॥

ते तेरा रब्ब जिच्चर कुसै केंदरी बस्ती च ऐसा
रसूल नेई भेजी लै, जेहका उंदे सामने साढ़ी
आयतां पढ़ियै सुनाऽ उच्चर उनें बस्तियें दे
समूह¹ (देश) दा नाश नेई करी सकदा, (की
जे एह न्यांऽ दे खलाफ ऐ) ते अस बस्तियें
दा कदें नाश नेई करदे सिवाए इसदे जे उंदे
च बास करने आहले जालम होई जान ॥ 60 ॥

ते जे किश तुमें गी दिता जंदा ऐ ओह ते सिर्फ
संसारक जीवन (दे सुखै) दा समान ऐ ते इस
दी शोभा ऐ ते जे किश अल्लाह दे कश ऐ
ओह सर्वोत्तम ते बाकी रौहने आहला ऐ। क्या
तुस सूझ-बूझ थमां कम्म नेई लेंदे? ॥ 61 ॥
(रुकू 6/9)

क्या ओह आदमी जेहदे कनै असें अच्छा
(यानी आखरत दे जीवन दी सफलता दा)
बा'यदा कीते दा होऐ ते ओह (यकीनन)
उसी हासल करी लैने आहला होऐ उस शख्स
आंगर होई सकदा ऐ जिसी असें सिर्फ संसारक
जीवन दा किश समान दिते दा होऐ ते फी
ओह क्यामत आहलै ध्याडै अल्लाह दे सामने
(जवाब देने आस्तै) पेश कीता जाने आहला
होऐ? ॥ 62 ॥

ते (याद करो) जिस दिन ओह (अल्लाह)
उनेंगी बुलाग ते पुच्छग जे मेरे ओह झूठे
शरीक कुल्थें न जिनेंगी तुस मेरे मकाबले च
उपास्य मनदे होंदे हे ॥ 63 ॥

مَعِيشتَهَا قَتَلَتْكَ مَسِكُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ
مِنْ بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا وَكُنَّا نَحْنُ
الْوَارِثِينَ ۝

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ
يَبْعَثَ فِي أُمَّهَاتِ رُسُلًا يَلْتَمُوا عَلَيْهِمُ
الْيَتَامَىٰ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا
وَأَهْلَهَا ظَالِمُونَ ۝

وَمَا أَوْتَيْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَزَيَّنَّبَهَا ۗ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ
وَأَبْقَىٰ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

أَفَمَنْ وَعَدْنَاهُ وَعَدًا حَسَنًا فَهُوَ لَا فِيهِ
كَمَنْ مَتَّعْنَاهُ مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ۝

وَيَوْمَ يناديهم فيقول أَيْنَ شركاءى
الذين كنتم ترعمون ۝

1. अरबी भाशा च ग्राएं दे समूह दा मतलब देश होंदा ऐ।

उसलै ओह लोक जिंदे आस्तै साढ़े अजाब दी गल्ल पूरी होई चुकी दी होग¹ आखडन जे हे साढ़े रब्ब! एह ओह लोक न जिनेंगी असें भटकाया हा। असें इनेंगी उसै चाल्ली भटकाया हा जिस चाल्ली अस आपू भटकी गेदे हे। अज्ज अस तेरे सामने अपनी गुमराही थमां बरी होने दी घोशना करने आं। ओह लोक साढ़ी उपासना नथे करदे होंदे (बल्के अपनी इच्छाएं दा अनुसरण करदे होंदे हे) ॥ 64 ॥

ते आखेआ जाग जे तुस अपने शरीकें गी बुलाओ। ते ओह उनेंगी बुलाडन, पर ओह उनेंगी कोई जवाब नेई देडन ते (अनेकेश्वरवादी) निश्चत अजाब दिक्खी लैडन। काश! ओह हदायत पाई जंदे ॥ 65 ॥

ते उस ध्याडे गी बी याद करो। जिसलै अल्लाह उनेंगी सदद्ग ते आखग जे तुसें रसूलें दी गल्लें दा केह जवाब दिता हा? ॥ 66 ॥

इस आस्तै उस रोज उनेंगी सारियां दलीलां भुल्ली जाडन ते ओह इक-दूप थमां किश बी पुच्छी नेई सकडन ॥ 67 ॥

इस आस्तै जो कोई तोबा करग ते ईमान ल्यौंग ते परिस्थिति दे मताबक कर्म करग, ममकन ऐ जे ओह कामयाबी पाने आहले लोकें च शामिल होई जा ॥ 68 ॥

ते तेरा रब्ब जो चांहदा ऐ पैदा करदा ऐ ते जिसी चांहदा ऐ चुनी लैदा ऐ। उनेंगी इस बारे कोई हक्क हासल नेई। अल्लाह पवित्र ऐ ते उंदी शिर्क आहली गल्लें थमां बौहत उपपर ऐ ॥ 69 ॥

قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَغْوَيْنَا أَغْوَيْنَاهُمْ كَمَا غَوَيْنَا تَبَرَّأْنَا إِلَيْكَ مَا كَانُوا إِيَّانَا يَعْبُدُونَ ﴿٦٤﴾

وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَهْتَدُونَ ﴿٦٥﴾

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ﴿٦٦﴾

فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ ﴿٦٧﴾

فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسَىٰ أَنْ يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ﴿٦٨﴾

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۗ سُبْحَانَ اللَّهِ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٩﴾

1. अर्थात ओह जां ते मरने परेंत नरकें च जाई चुके दे होडन जां इसै संसार दे जीवन च उनेंगी अजाब मिली चुके दा होग।

ते तैरे रब्ब गी इसदा बी इलम ऐ जिसी ओह अपने सीनै च छपालदे न ते उसदा बी जिसी ओह जाहर करदे न ॥ 70 ॥

ते असल च अल्लाह गै ऐसी सत्ता ऐ जे उसदे सिवा होर कोई उपास्य नैई खिश्टी दे शुरू च बी ऊऐ स्तुति दे काबल हा ते अंत च बी ऊऐ स्तुति दा हक्कदार होग। सारी बादशाहत उससै दे अधिकार च ऐ, ते तुसैं सारैं गै उससै पासै परतोइयै जाना होग ॥ 71 ॥

तूं उनेंगी आखी दे जे मिगी दस्सो ते सेही, जेकर अल्लाह थुआड़े आस्तै रातीं गी क्यामत दे दिनै तगर लम्मा करी देऐ तां अल्लाह दे सिवा होर केहड़ा उपास्य ऐ, जेहका थुआड़े कश रोशनी आह्नग? क्या तुस सुनदे नैई? ॥ 72 ॥

तूं आखी दे जे मिगी दस्सो ते सेही जे जेकर अल्लाह दिनै गी क्यामत दे दिनै तगर थुआड़े आस्तै लम्मा करी देऐ तां अल्लाह दे सिवा केहड़ा उपास्य ऐ जेहका थुआड़े कश रातीं गी लेई आवै जेहदे च तुस सुख-चैन पाई सको? क्या तुस दिखदे नैई? ॥ 73 ॥

ते एह उसदी रैहमत ऐ जे उसनै थुआड़े आस्तै रात ते दिन बनाए दे न जे उस (रातीं) च तुस सुख-चैन पाओ ते उस (दिनै) च तुस उसदी किरपा गी ढूंडो तां जे तुस शुकरगज़ार बनो ॥ 74 ॥

ते जिस दिन ओह उनेंगी बुलाग ते आखग जे कुत्थें न थुआड़े ओह शरीक जिनेंगी तुस उपास्य समझदे होंदे हे? ॥ 75 ॥

ते अस हर इक वर्ग (सम्प्रदाय) बिच्चा इक-इक गुआह कडिहयै खडेरी देगे, फी आखगे

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تَكْبُرُونَ صَدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿۷۰﴾

وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُولَى وَالْآخِرَةِ وَوَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿۷۱﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ الْيَتِيمَ سَرْمَدًا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مِنْ إِلَهٍ غَيْرِ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِضِيَآءٍ أَفَلَا تَسْمَعُونَ ﴿۷۲﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مِنْ إِلَهٍ غَيْرِ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِاللَّيْلِ تَسْكُونُونَ فِيهِ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿۷۳﴾

وَمِنْ رَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿۷۴﴾

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَآئِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تُرْعَمُونَ ﴿۷۵﴾

وَتَرَعْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا

जे अपने-अपने सबूत पेश करो। उसलै ओह समझी जाडन जे पूरा हक्क अल्लाह कश गै ऐ ते उंदा षड़े दा सारा झूठ उंदे थमां खूसी लैता जाग ॥ 76 ॥ (रुकू 7/10)

بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَصَلَّ
عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٧٦﴾

क्रारून (असल च) मूसा दी कौम बिच्चा हा, पर ओह उंदे खलाफ गै जुलम¹ करन लगी पेआ ते असैं उसी इन्ने खजाने² दिते दे हे जे उस दियां चाबियां³ इक शक्तिशाली समूह आस्तै चुककना बी कठन हा। (याद कर) जिसलै उसदी कौम नै आखेआ जे इन्ना घमंड नेई कर, यकीनन अल्लाह घमंड करने आहलें गी पसंद नेई करदा ॥ 77 ॥

إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوسَى فَبَغَى
عَلَيْهِمْ وَأَتَيْنَهُ مِنَ الْكَوْزِمَاتِ
مَفَاتِحَ الْغَوِيَّةِ أُولَى الْقُوَّةِ
إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللَّهَ
لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ﴿٧٧﴾

1. जालम राजें दा एह निजम होंदा ऐ जे ओह निक्के औहदें पर अपनी प्रजा बिच्चा किश लोकेँ गी नैनात करी दिंदे न ते एह लोक अपनी कौम दे लोकेँ पर जुलम करने च उनेँ राजें थमां बी अगें बधे दे होंदे न। फिरऔन नै बी इस सिद्धांत गी अपनाई रखे दा हा। इस नै मैहकमा माल च किश कर्मचारी बनी-इसाइलियें बिच्चा नयुक्त कीते दे हे। एह लोक अपनी कौम पर किब्तियें थमां बी बद्ध जुलम करदे होंदे हे, की जे उंदा बिचार हा जे राजा दूरै जाति दा ऐ। साडे नेह कम्में पर खुश होइयें उच्चे औहदे प्रधान करग।
2. ओह खजाने उसदे निजी नेई हे, पर ओह फिरऔन दे मैहकमा माल जां राज कोश दा खजाना मैतरी हा। मैहकमा माल च बनी-इसाइल बड़े निपुन्न सिद्ध होई चुके दे हे। हजरत यूसुफ दे बेले बी इसाईलियें गी आर्थक समस्यां सुलझाने दा बड़ा अनुभव हा ते ओह दूरै जातियें थमां अपने आप गी ज्यादा कुशल समझदे हे ते राज-कोश ते मैहकमा माल दे नगरन इंदे बिच्चा नयुक्त कीते जंदे हे।
3. एह राज-कोश हा जिस दा प्रधान क्रारून हा। उस बेले जदू राजा देशेँ दा दौरा करदे हे तां सैकडे-ज्हारें ऊटें पर खजाने दे दोहरे संदूख रक्खियें अपने कनै लेई जंदे हे, की जे उस बेले मोटरां-गड्डियां बगैरा नथियां होंदियां ते नां गै थां-थां पर राज-कोश बने दे होंदे हे। राजा दे कन्नो-कन्नी सरकारी खजाना बी जंदा हा। सफर च गै मलाजमैँ गी नखाह दिती जंदी ही ते उंदे खाने-पीने दा समान बी खरीदेआ जंदा हा, मन्नी लैओ जे राजा दे कर्मचारियें च दस-ज्हार आदमी हौन ते राजा छें-म्हीनेँ दे दौरै पर जा करदा होऐ तां त्रै-चार ज्हार ऊंट उंदे कनै जरूर होंदे होडन। जेकर इक ऊंट पर दो-दो संदूख हौन तां अट्ट ज्हार संदूख होग। उस बेले लक्कड़ी दियां चाबियां होंदियां हियां। जेकर सुरक्षा दी द्रिष्टी कनै हर संदूखेँ गी दो-दो जंदरे समझे जान तां सोलां ज्हार कुंजियां बनदियां न। जेकर इक कुंजी अद्धा किल्लो समझी जा तां अट्ट ज्हार किल्लो जां दो सौ मन जां अस्सी क्विन्टल बनदे न ते इन्ना भार बीह-पंजी मनुख बी बड़ी मुश्कलें बी नेई चुक्की सकदे न ते जिसलै ओह लगातार जातरा च गै रौहदे हौन। इत्थें सिर्फ एह दस्सेआ गोदा ऐ जे कुंजियां जेकर मनुख चुकदे तां ओह इक समूह आस्तै बी भारियां होंदियां यानी दस-बारां मनुख बी उनें गी बड़ी मुश्कलें चुक्की सकदे। जेकर उंदे च लोहे दे जंदरें दी रीत प्रचलत ही तां बी उस बेले लोहे दे जंदरे बी बड़े बड़डे वजनी बनाए जंदे हे। सोलां ज्हार लोहे दियें कुंजियें दा भार बी इन्ना मता होंदा जे दस-बारां आदमियें आस्तै उसी चुक्की सकना मुश्कल होंदा हा।
एह जो लिखेआ गोदा ऐ जे क्रारून फिरऔन दे राज-कोश दा प्रधान हा तां इसदा प्रमाण एह ऐ जे आयत च लिखे दा ऐ जे ओह अपनी गै कौम पर जुलम करन लगी पेदा हा। धनवान होने दे नाते कोई आदमी कुसै पर जुलम नेई करदा, बल्के औहदेदार होने दे नाते गै जुलम करी सकदा ऐ। इस आस्तै इत्थें औहदेदार क्रारून दा जिकर ऐ नां के सिर्फ धनवान क्रारून दा, जेहका औहदेदार होने दी बजा करी अपनी गै कौम पर अत्याचार करदा होंदा हा।

ते जो कुछ तुगी अल्लाह नै प्रदान कीते दा ऐ उससै कनै आखरत दे जीवन दे घरै दी तलाश कर ते जेहका हिस्सा तुगी संसारक जीवन थमां मिले दा ऐ उससी बी नेईं भुल्ल। (अस तुगी इक हदद तगर संसारक सुबधें दे प्रयोग थमां नेईं रोकदे) ते जिस चाल्ली अल्लाह नै तेरे पर उपकार कीता ऐ तूं बी लोकें पर उपकार कर ते देश च उपद्रव फलाने दी कोशश नेईं कर। अल्लाह यकीनन उपद्रव फलाने आहलें गी पसंद नेईं करदा ॥ 78 ॥

(क्रारून नै) आखेआ जे एह सारा सम्मान मिगी इक ऐसी विद्या कारण मिले दा ऐ जेहका सिर्फ मिगी गै हासल ऐ। केह उसी पता नेईं हा जे उस थमां पैहलें अल्लाह नै नेकां नस्लें गी हलाक करी दिता हा जो ओहदे थमां ज्यादा ताकतवर ते ओहदे थमां ज्यादा धनवान हियां ते मुलजमै थमां (जिसलै अजाब दिता जंदा ऐ) उंदे गुनाहें¹ बाँरे कोई पुच्छ-गिच्छ नेईं कीती जंदी ॥ 79 ॥

(इक दिन ऐसा होआ जे) ओह अपनी कौम दे सामनै ठाठ-बाठ कनै निकलेआ, इस पर ओह लोक बोल्ली पे, जेहके संसारक जीवन दे साधन चांहदे हे, काश! असंगी बी ऊपे मिलदा जो क्रारून गी दिता गेदा ऐ। उसी ते (संसारक धन दा इक) बड़डा हिस्सा थोए दा ऐ ॥ 80 ॥

ते जिनें लोकें गी ज्ञान दिता गेदा हा ओह बोल्ले जे तेरा सत्यानास होऐ! अल्लाह पासेआ मिलने आहला सिला मोमिनें ते ईमान दे

وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنْ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٧٨﴾

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِنْدِي ۗ أَوَلَمْ يَعْلَم أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ مِن قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَن هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَأَكْثَرُ جَمْعًا ۗ وَلَا يُسْئَلُ عَنْ ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٧٩﴾

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ ۗ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا لِيَلْبِثُنَا مِثْلَ مَا أُوْتِيَ قَارُونَ ۗ إِنَّهُ لَذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿٨٠﴾

وَقَالَ الَّذِينَ آتَوْا الْحِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِّمَن آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا

1. अल्लाह द्वारा जेहकी स'जा दिती जंदी ऐ ओह कुदरती होंदी ऐ। ओह स'जा आपूँ दस्सी दिंदी ऐ जे मुलजम इसी दे काबल हा।

मताबक कर्म करने आहलें आस्तै अति उत्तम होंदा ऐ ते एह फल सिर्फ धीरजवानें गी गै हासल होंदा ऐ ॥ 81 ॥

फ़ी असं उसी ते ओहदे बंश गी बुरी गल्लें च फसाई दिता ते कोई गरोह बी नेहा नेई निकलेआ जेहका अल्लाह दे सिवा उसदी मदद करदा ते कुसै उपाड कनै बी ओह (अपने बैरी थमां) बची नेई सकेआ ॥ 82 ॥

ते ओह लोक जेहके कल्ला तगर उसै नेहा थाहर हासल करने दी कामना करदे हे आखन लगी पे जे तेरा सर्वनाश होऐ! यकीनन अल्लाह गै अपने प्यारे भगतें बिच्चा जेहदे आस्तै चांहदा ऐ रोजी च बाधा करदा ऐ ते जेहदे आस्तै चांहदा ऐ तंगी पैदा करी दिंदा ऐ। जेकर अल्लाह नै साढे पर उपकार नेई कीते दा होंदा तां असेंगी बी मसीबतें दा शकार बनाई दिंदा। तेरा सर्वनाश होऐ! (सच्च ते इय्यै ऐ जे) काफ़र लोक कदें बी कामयाब नेई होंदे ॥ 83 ॥ (रुकू 8/11)

एह जेहका आखरत दा जीवन ऐ अस इसी उनें लोकें आस्तै गै मखसूस करी दिन्ने आं जेहके देश च नजायज़ प्रभुत्व हासल करने जां उपद्रव फलाने दे चाहवाने नेई होंदे ते नतीजा ते मुतक्कियें (संयमियें) दा गै चंगा होंदा ऐ ॥ 84 ॥

जेहका आदमी नेक कर्म करै उसी ओहदे थमां चंगा सिला मिलग ते जेहका आदमी बुरे कर्म करग जां बुरे कर्म करने आहलें गी उंदे अपने कर्म बराबर सिला दिता जाग ॥ 85 ॥

ओह अल्लाह जिसनै तेरे पर एह क़ुरआन फ़र्ज़ कीते दा ऐ (यानी तुगी इसदा जवाबदेह

وَلَا يُلْقِيهَا إِلَّا الصَّابِرُونَ ﴿٨١﴾

فَخَسَفْنَا بِهِ وَبِدَارِهِ الْأَرْضَ ۗ فَمَا كَانَ لَهُ مِنْ فِئَةٍ يَنْصُرُونَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۗ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنتَصِرِينَ ﴿٨٢﴾

وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَنَّوْا مَكَانَهُ بِالْأَمْسِ يَقُولُونَ وَيَكَانَ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ ۗ لَوْلَا أَنْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ۗ وَيَكَانَ ۗ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿٨٣﴾

تِلْكَ الدَّارُ الْأُخْرَىٰ ۗ جَعَلْنَا لِلَّذِينَ لَا يَرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فِسَادًا ۗ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٨٤﴾

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا ۗ وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٨٥﴾

إِنَّ الدِّينَ فَرْضٌ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَأَيْتَ لَكَ

बनाए दा ऐ) अपनी सत्ता दी सघंद खाइयै आखदा ऐ जे ओह तुगी उस थाहर¹ पासै परताइयै आहनग² जेहदे पासै लोक बार-बार परतोई औंदै न। तू आखी दे जे मेरे रब्ब गी उसदा बी पूरा ज्ञान ऐ जेहका हदायत पर कायम होंदा ऐ ते उसदा बी जेहका खु'ल्लम-खु'ल्ली गुमराही च पेदा ऐ ॥ 86 ॥

ते तुगी कोई मेद नेई ही जे तेरे पर एह कामिल कताब उतारी जाग, पर तेरे रब्ब पासेआ रेहमत दे तौरा पर ऐसा होआ। ते तू काफरें दा मदादी कदें बी नेई बनेआं ॥ 87 ॥

ते तुगी कोई आदमी, इस दे बा'द जे अल्लाह दियां आयतां तेरे पर उतारियां गेइयां, उंदे थमां रोकने आह्ला नेई बनै ते तू अपने रब्ब पासै लोकें गी बुलाऽ ते मुश्रिकें (अनेकेश्वरवादियें) बिचच शामिल नेई हो ॥ 88 ॥

ते (हे श्रोता!) अल्लाह दे सिवा होर कुसै उपास्य गी नेई पुकार। उसदे सिवा कोई उपास्य नेई ऐ। हर चीज नशट³ होने आहली ऐ सिवाए उसदे जेहदे पासै उस (अल्लाह) दा ध्यान होऐ। हुकम उससै दे अधिकार च ऐ ते तुस सारे उससै दी बक्खी परताइयै लेते जागे ओ ॥ 89 ॥ (रुकू 9/12)

إِلَىٰ مَعَادٍ قُلْ رَبِّيَ أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ
بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٥١﴾

وَمَا كُنْتَ تَرْجُو أَن يُلْقَىٰ إِلَيْكَ الْكِتَابُ
إِلَّا رَحْمَةً مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا
لِّلْكَافِرِينَ ﴿٥٢﴾

وَلَا يَصُدُّكَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ أُنزِلَتْ
إِلَيْكَ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ
مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٥٣﴾

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ
هُوَ كُفَىٰ ۚ هُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ ۗ
لِلَّهِ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٥٤﴾

०००

1. मूल शब्द 'अल-मआद' दा अर्थ ऐ ओह थाहर जिस पासै लोक बार-बार परतोइयै औंदै न। इत्थें एहदा सरबंध मक्का शहर कनै ऐ, जित्थें लोक हज्ज ते उमरा बगैरा आसतै बार-बार औंदै न।
2. एहदे च मक्का दी बिजे पासै संकेत ऐ जेहदे पासै हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. गी बापस आहनेने दी भविक्खवाणी कीती गेदी ऐ ते कुर'आन दे फ़र्ज करने कनै एह दस्सेआ गेदा ऐ जे जेकर हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. मक्का पासै परतोइयै नेई आए तां एह पवित्र कुर'आन दी सचाई पर इक कलैकक होग, की जे अल्लाह नै एह बा'थदा कुर'आनी शरीअत दी सघंद खाइयै कीते दा ऐ जेहका ओहदी अपार किरपा कनै पूरा होइयै रैहग।
3. इस दा मतलब सारे भौतक पदार्थ न, सुरां दे पदार्थ जां आध्यात्मक ज्ञान अभीष्ट नेई, की जे ओह नशट होने आहले नेई न।



सूर: अल्-अन्कबूत

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां सहत्तर आयतां ते सत्त रुकू न।

मैं अल्लाह दा नांस लेइयै (पढ़ना) जो बे-
हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार रैहम
करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अ'ऊं (अल्लाह) सारें थमां बद्ध जानने
आह्ला आं ॥ 2 ॥

الْعَمَّ

क्या (इस जमाने दे) लोकें एह समझी
लेदा ऐ जे उंदा एह आखी देना जे अस
ईमान लेई आए आं (काफी होग) ते उनेंगी
छोड़ी दिता जाग ते उंदा अजमायश नेई
कीती जाग? ॥ 3 ॥

أَحْسَبَ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا
وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ ②

हालांके जेहके लोक इंदे थमां पैहलें होई चुके
दे न असें उनेंगी अजमाया हा (ते हून बी
ओह इयां गै करग) ते अल्लाह उनेंगी बी
जाहर करी देग जिनें सच्च गलाया ते उनेंगी
बी जिनें झूठ गलाया ॥ 4 ॥

وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ
اللَّهُ الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِينَ ③

क्या जेहके लोक बुराइयां करदे न ओह समझदे
न जे ओह साढ़ी स'जा थमां बची जाडन ?
उंदा फैसला बौहत बुरा ऐ ॥ 5 ॥

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ أَنْ
يُسْقُونَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ④

जेहका कोई अल्लाह कन्नै मिलने दी मेद
रखदा ऐ (उसी याद रखना लोड़चदा ऐ जे)

مَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ اللَّهِ فَإِنَّ أَجَلَ اللَّهِ

अल्लाह दा निश्चत कीते दा वक्त जरूर औने आह्ला ऐ ते ओह् बौहत सुनने आह्ला (ते) बौहत जानने आह्ला ऐ ॥ 6 ॥

ते जेहका शख्स खुदा आस्तै कोशश करदा ऐ असल च ओह् अपनी गै जान आस्तै करदा ऐ। अल्लाह सारे लोकें (जहानें) थमां बे-न्याज़ ऐ (ते उंदी अबादत दा मुल्हाज नेई) ॥ 7 ॥

ते जेहके लोक ईमान ल्याए ते उनें ईमान दे मताबक कर्म बी कीते, अस उंदे थमां उंदी बुराइयें गी दूर करी देगे ते जेहके कम्म ओह् करदे हे ते उंदे मताबक उनेंगी जेहका उत्तम सिला थोई सकदा होग, ओह् उनेंगी प्रदान करगे ॥ 8 ॥

ते असें इन्सान गी अपने मापें कनै अच्छा सलूक करने दा हुकम दिते दा ऐ ते (आखे दा ऐ जे) जेकर ओह् दमें तेरे कनै इस गल्ला बैहस करन जे तूं कुसे गी मेरा शरीक बनाऽ हालांके तुगी इस दा कोई इलम नेई, तूं उंदी दौनीं दी फरमांबरदारी¹ नेई कर की जे तुसें सारें मेरे कश गै परतोइयै औना ऐ ते अ'ऊं थुआड़े कर्म (दी नेकी-बदी) थमां तुसेंगी वाकफ करांग (सोहगा करड) ॥ 9 ॥

ते जेहके लोक ईमान ल्याए दे न ते उ'दे मताबक उनें कर्म बी कीते दे न, अस उनेंगी नेक लोकें च शामिल करी देगे ॥ 10 ॥

ते लोकें बिच्चा (किश ऐसे बी होंदे न) जेहके आखदे न जे अल्लाह पर ईमान लेई आए आं फी जिसलै अल्लाह दी ब'जा कनै

لَا تِطُ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ①

وَمَنْ جَاهَدَ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ ①
إِنَّ اللَّهَ لَعَنَىٰ عَنِ الْعَالَمِينَ ①

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ
أَحْسَنَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ①

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا وَإِن
جَاهَدَكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ
عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ۗ إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ
فَأُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ①

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ①

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا
أُودِيَ فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةً لِلنَّاسِ كَعَدَابِ

1. माता-पिता दी आज्ञा दा पालन करना जरूरी ऐ, पर इत्थें दस्से दा ऐ जे इस बिशेश आदेश यानी शिकं अपनाणे च उंदा आखा नेई मनो।

उनेंगी तकलीफ़ दित्ती जंदी ऐ ओह लोकेँ दे अज़ाब गी अल्लाह दे अज़ाब आंगर समझी लैंदे न ते जेकर तेरे रब्ब पासेआ मदद मिलदी ऐ तां ओह आखदे न (असल च) अस बी थुआड़े कनै हे क्या दुनियां ज्हां दे लोकेँ दे दिलें च जो कुछ है उसगी अल्लाह चंगी-चाल्ली नेई जानदा? ॥ 11 ॥

ते अल्लाह जरूर जाहर करी देग उनेंगी बी जेहके ईमान ल्याए ते उनेंगी बी जेहके मुनाफ़िक़ (दोगले लोक) न ॥ 12 ॥

ते काफ़र मोमिनें गी आखदे न, तुस साढ़े पिच्छें चलो! अस थुआड़े गुनाह चुक्की लैगे। हालांके ओह उंदे गुनाह (बिल्कुल) नेई चुक्की सकदे। ओह यकीनन झूठे न ॥ 13 ॥

सचाई एह ऐ जे ओह अपने पापें दे बोझ बी चुकडन ते अपने पापें दे बोझें दे अलावा दूए लोकेँ दे बोझ बी चुकडन (जिनेंगी ओह धोखा दिंदे न) ते क्यामत आहलै रोज उंदे जानी-बुज्जी झूठ घडने बारे उंदे थमां पुच्छेआ जाग ॥ 14 ॥ (रुकू 1/13)

ते असें नूह गी उसदी कौम पासै भेजेआ हा ते ओह उंदे च नौ सौ¹ पंजाह साल्लें तक रेहा, ते उसदी कौम गी तूफ़ान ने आई दबाया ते ओह जालम हे ॥ 15 ॥

ते असें उस गी ते उसदी किरती च बौहने आहले साथियें गी बचाई लैता ते असें उस घटना गी तमाम दुनियां दे लोकेँ आसतै इक नशान बनाई दित्ता ॥ 16 ॥

اللَّهُ ۙ وَلَئِن جَاءَ نَصْرٌ مِّن رَّبِّكَ لَيَقُولُنَّ إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ۗ أَوَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ الْعَالَمِينَ ﴿١١﴾

وَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَعْلَمَنَّ الْمُنَافِقِينَ ﴿١٢﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا اتَّبِعُوا سَبِيلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطِيئَتَكُمْ وَمَاهُمْ بِحَمِيلِينَ مِنْ خَطِيئَتِهِمْ مِنْ شَيْءٍ ۗ إِنَّهُمْ لَكَذِبُونَ ﴿١٣﴾

وَلَيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَّعَ أَثْقَالِهِمْ ۗ وَلَيَسْئَلَنَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٤﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا حَسِينًا ۗ عَامًا ۗ فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١٥﴾

فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ ۗ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾

1. इस कनै हज़रत नूह दी अपनी आयु अभीरठ नेई, बल्के उंदी नबुव्वत दा जमाना अभीरठ ऐ जां उंदी जाति दा ओह समां अभीरठ ऐ जेहदे च ओह सदाचारी रेही। हज़रत इब्राहीम बी हज़रत नूह दे अनुयाथियें बिच्चा हे। (सूर: साफ़फ़ात रुकू 3) इस लेई हज़रत नूह दी आयु पैहलें हज़रत इब्राहीम तक बधी, फी हज़रत यूसुफ़ तक बल्के हज़रत मूसा तक लम्मी होई।

ते (असैं) इब्राहीम गी (बी रसूल बनाइयै भेजेआ हा) जिसलै उसनै अपनी कौम गी आखेआ हा जे अल्लाह दी अबादत करो ते उसदा संयम धारन करो। जेकर तुस जानदे ओ तां एह थुआड़े आसतै बड़ा बेहतर ऐ ॥ 17 ॥

तुस अल्लाह दे सिवा दूई हस्तियें दी अबादत करदे ओ ते (म'जब दे बाँरे) झूठियां गल्लां बनांदे ओ। ओह (हस्तियां) जिंदा तुस अल्लाह दे सिवा उपासना करदे ओ तुसेंगी रिशक नेई देई सकदियां। ते अल्लाह थमां अपना रिशक मंगो ते उसदी अबादत करो ते उसदा शुकर अदा करो। तुसें गी उससै कश परताइयै लेता जाग ॥ 18 ॥

ते जेकर तुस मेरी गल्ला दा झूठ मनो तां (एह कोई नमी गल्ल नेई) तुंदे थमां पैहली कौमें बी (अपने रसूलें गी) झुठेरेआ हा ते रसूल दा कम्म ते सिर्फ खोहली-खोहिलयै पुजाई देना होंदा ऐ (जबरदस्ती मनोआना नेई होंदा) ॥ 19 ॥

क्या उनेंगी पता नेई जे अल्लाह स्त्रिष्टी गी किस चाल्ली पैहली बार पैदा करदा ऐ, फी उसी बार-बार परताया जंदा ऐ। एह कम्म अल्लाह आसतै बौहत असान ऐ ॥ 20 ॥

तूं आख जे देश च चपासै घूमि-फिरी दिक्खो जे अल्लाह नै मख्लूक गी किस चाल्ली पैदा करना शुरू कीता हा, फी मरने दे बा'द' उनेंगी दबारा जींदा करदा गेआ। अल्लाह हर गल्ल करने दी समर्थ रखदा ऐ ॥ 21 ॥

وَإِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ ذُرِّيَّتُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿۱۷﴾

إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ أَفْكَاطٍ إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا عِنْدَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ ۗ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿۱۸﴾

وَإِنْ تَكْذِبُوا فَمَا كَذَّبَ أُمَمٌ مِّن قَبْلِكُمْ ۗ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿۱۹﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ بَيَّدِ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿۲۰﴾

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿۲۱﴾

1. इस आयत च पारलौकिक जीवन दा बर्णन नेई, बल्के इससै संसार दी जातियें दी तरक्की ते त्रट्टी दा बर्णन ऐ।

ओह जिसी चांहदा¹ ऐ अजाब दिंदा ऐ ते जेहदे पर चांहदा ऐ रैहम करदा ऐ ते तुसें सांरें गी परताइयै उससै कश लेता जाग ॥ 22 ॥

ते तुस अल्लाह गी उसदी मरजी दे खलाफ धरती च जां गासै च मजबूर नेई करी सकगे ओ ते खुदा दे अलावा नां ते थुआड़ा कोई दोस्त ऐ ते नां गै मददगार ॥ 23 ॥ (रुकू 2/14)

ते ओह लोक जेहके अल्लाह दे नशानें दा ते उस कनै मलाटी² होने दा इन्कार करदे न, ओह लोक नेह न जेहके मेरी रैहमत थमां नराश होई गेदे न ते ऊऐ लोक न जिनेंगी दर्दनाक अजाब मिलग ॥ 24 ॥

इस आस्तै उसदी (यानी इब्राहीम दी) कौम दा जवाब इसदे सिवा कोई नेई हा जे इसदा खून करी देओ जां इसी जाली देओ। (इस आस्तै उनें उसी अग्गी च सुट्टी दिता) पर अल्लाह ने उसी अग्गी बिच्चा बचाई लैता। यकीनन एहदे च मोमिनें आस्तै बड़े नशान न ॥ 25 ॥

(इब्राहीम नै) गलाया जे तुसें अल्लाह गी छोड़ियै मूरतियें कनै सरबंघ जोड़ी रक्खे दा ऐ (ते थुआड़ा एह कर्म) सिर्फ संसारक

يَعْدِبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَشَاءُ
وَالِيهِ تَقْلُوبُونَ ﴿٢٢﴾

وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ
وَلَا فِي السَّمَاءِ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ
مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٢٣﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَلِقَائِهِ
أُولَئِكَ يَسْأَوْنَ مِنْ رَحْمَتِي وَأُولَئِكَ لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٤﴾

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ
قَالُوا اقْتُلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنْجَاهُ اللَّهُ
مِنَ النَّارِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ
لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٢٥﴾

وَقَالَ إِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا
مُؤَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ يَوْمَ

1. पवित्र कुरआन दी आयतें दे अधार पर पैहलें आखेआ जाई चुके दा ऐ जे अल्लाह उससै शख्स गी अजाब दिंदा ऐ जेहका उस अजाब दा हक्कदार ऐ।
2. असल च अल्लाह दी मलाटी मोमिनें कनै होंदी ऐ, पर काफरें आस्तै ओह अजाब दे रूप च प्रकट होंदा ऐ ते जिसलें कदें उंदे दिलें च नदामत (लज्जा) पैदा होंदी ऐ तां फी रैहम ते माफी दे रूप च जाहर होंदा ऐ। इस आस्तै इस आयत दा एह अर्थ ऐ जे जेहके लोक अल्लाह दी मुलाकात थमां इन्कारी होंदे न, असल च ओह नराशावश एह समझदे न जे अल्लाह उनेंगी कदें बी माफ नेई करग ते अपनी रैहमत राहें अपना कोई चमत्कार नेई दस्सग। इस आस्तै अल्लाह बी उंदे विश्वास दे मताबक सलूक करदा ऐ ते दर्दनाक अजाब दिंदा ऐ।

जीवन च दूए मुश्रिकें (अनेकेश्वरवादियें) कन्नै प्रेम भाव¹ बधाने आस्तै ऐ। फी क्यामत आहलै रोज तुंदे बिच्चा किश लोक दूए किश लोकें दा इन्कार करडन ते तुंदे चा किश लोक दूए किश लोकें पर लानतां ब्रहाडन ते थुआड़ा ठकाना नरक होग ते जिनेंगी तुस मदादी समझदे ओ उंदे बिच्चा कोई बी थुआड़ी मदद आस्तै नेई औग ॥ 26 ॥

इस उपदेश दे बा'द लूत ओहदे पर ईमान लेई आया ते (इब्राहीम नै) गलाया जे अ'ऊं ते अपने रब्ब पासै हिज्रत करियै जाने आहला आं। यकीनन ओह गालिब ते बड़ी हिक्मत आहला ऐ ॥ 27 ॥

ते असें उसी इस्हाक़ ते याक़ूब प्रदान कीते ते उसदी संतान दे कन्नै नबुव्वत ते किताब दा बशेश सरबंध जोड़ी दिता ते असें उसी इस लोक च बी ओहदा सिला प्रदान कीता ते ओह परलोक² च बी सदाचारी लोकें च शामिल कीता जाग ॥ 28 ॥

ते लूत गी बी (असें रसूल बनाइयै भेजेआ) जिसलै जे उसनै अपनी कौम दे लोकें गी

الْقِيَمَةَ يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَيَلْعَنُ
بَعْضُكُمْ بَعْضًا وَمَأْوِكُمُ النَّارُ وَمَا
لَكُمْ مِّنْ نُّصْرَيْنِ ۝

قَامَن لَه لُوْطٌ وَقَالَ اِنِّي مَهْجِرٌ
اِلَى رَبِّي ۝ اِنَّهُ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

وَوَهَبْنَا لَه اِسْحَاقَ وَيَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِي
ذُرِّيَّتِهَ التُّبُوْعَةَ وَالْكِتٰبَ وَاتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ فِي
الدُّنْيَا ۝ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ

1. अर्थात् तुंदे धर्म दा आधार युक्ति पर नेई ऐ, बल्के उसदा मकसद लोकें गी खुश करियै अपने पासै प्रवृत्त करना ऐ, चाहे अल्लाह नराज गै की नेई होई जा, पर इस संसार च इक समां ऐसा बी औंदा ऐ जे लोकें गी खुश करने आस्तै काफ़र लोक सचाई गी नकारी दिंदे न ते ऊऐ लोक उंदे बरोधी बनी जंदे न। परलोक च बी ऐसा गै समां औग ते एह संसारक दोस्त उस बेलै किश कम्म नेई देडन।
2. इस आयत दा एह अर्थ ऐ जे आखरी बेलै बी लोक हज्रत इब्राहीम गी सदाचारी ते नेक शख्स समझडन। इस आस्तै अज्जै दे दौर च जेहके-जेहके संप्रदाय न ओह हज्रत इब्राहीम दा सत्कार ते आदर करदे न जियां मुसलमान, यहूदी ते ईसाई बगेरा।

इस दा इक अर्थ एह बी होई सकदा ऐ जे आखरी बेलै (कलयुग च) जिसलै इब्राहीम दा सरूप प्रकट होग, ओह बी अपने कम्म च अल्लाह दी नजरी च सुयोग्य होग ते ओहदे पर इतराज करने आहले गलती करडन।

गलाया जे तुस इक ऐसा बुरा कम्म करदे ओ जे संसार च थुआड़े थमां पुज्ज कुसै बी ऐसा बुरा कम्म नेई कीता ॥ 29 ॥

क्या तुस (जनानियें गी छोड़ियें) मड़दें कश औंदे ओ ते डाके मारदे ओ। ते अपनी सभा च ना-पसंदीदा¹ (घनौनियां) हरकतां करदे ओ एहदे पर उस दी कौम दे लोकें दा जवाब एहदे सिवा किश नेई हा जे उनें आखी दिता जे जेकर तूं सच्चे लोकें बिच्चा ऐं तां अल्लाह दा अजाब सारें पर उतारी दे ॥ 30 ॥

इस पर लूत नै गलाया जे हे मेरे रब्ब! उपद्रव फलाने आहली कौम दे मकाबले च मेरी मदाद कर ॥ 31 ॥ (रुकू 3/15)

ते जिसलै साढ़े रसूल इब्राहीम कश समाचार² लेइयै आए तां उनें गलाया जे अस इस बस्ती दा सर्वनाश करने आहले आं, की जे इसदे बसनीक अत्याचारी न ॥ 32 ॥

(इब्राहीम नै परते च) गलाया जे इस च ते लूत बी रौह्दा ऐ उनें गलाया अस उस (बस्ती) दे बासियें गी खूब जानने आं अस उस (लूत) गी ते उस दे परिवार गी सिवाए उसदी घरे-आहली दे जेहकी पिच्छें रौहने आहलें च शामिल होई जाग, बचाई लैगे ॥ 33 ॥

فَأَجِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿٢٩﴾

أَيُّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ السَّبِيلَ ۗ وَتَأْتُونَ فِي نَادِيَكُمُ الْمُنْكَرَ ۗ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللَّهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٣٠﴾

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِينَ ﴿٣١﴾

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَىٰ ۖ قَالُوا إِنَّا مُهْلِكُوا أَهْلَ هَذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ إِنَّ أَهْلَهَا كَانُوا ظَالِمِينَ ﴿٣٢﴾

قَالَ إِنَّ فِيهَا لُوطًا ۖ قَالُوا نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَنْ فِيهَا ۗ لَنُنَجِّيَنَّهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ ۗ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٣٣﴾

1. अर्थात यात्रियें कनै हासा-मखौल करदे ओ ते उंदे पर अत्याचार करदे ओ।

2. मूल शब्द 'बुशरा' दा अर्थ गंभीर ते म्हत्त्वपूर्ण समाचार होंदा ऐ चाहे ओह समाचार दुखदाई ऐ जां सुखदाई जिसदा प्रभाव चेहरे पर जाहर होई जा।

रसूल ते बड़ा नर्म दिल होंदा ऐ। हजरत इब्राहीम ते कुरआन दे मताबक बे-हद नर्म दिल हे। जिसलै उनें एह सुनेआ जे लूत दी बस्ती दे बसनीकें दा सर्वनाश होई जाग तां चिंता कनै उंदे चेहरे दा रंग उड्डी गेआ। इस आयत च रसूलें दा सरबंध उनें सदाचारी लोकें कनै ऐ जेहके ईशवाणी दे मताबक पैहलें हजरत इब्राहीम कश आए फी हजरत लूत कश गे। ओह फरिश्ते नेई हे। हजरत लूत दे अपना देश त्यागनै बेलें उंदे मददगार ते संरक्षक हे।

ते जिसलै साढ़े रसूल लूत कश आए तां उंदे करियै उसी दुख होआ ते उसदा दिल तंग¹ होई गेआ ते (उसदी एह हालत दिक्खियै सनेहा लेइयै औने आहलें) गलाया जे कुसै (होने आहली) गल्लै दी चिंता नेई कर ते नां कुसै बीती दी घटना पर बसोस कर। अस तुगी ते तेरे परिवार गी बचाई लैने आहले आं सिवाए तेरी घरै-आहली दे जेहकी पिच्छें रौहने आहलें च शामल होई जाग ॥ 34 ॥

अस इस बस्ती आहलें पर उंदी ना-फरमानी दी ब'जा करी अजाब उतारने आहले आं ॥ 35 ॥

ते असें समझदारें आस्तै इस बस्ती (दी घटना) राहें इक खु'ल्ली इबरत (शिक्षा) दा समान पिच्छें छोड़ेआ ऐ ॥ 36 ॥

ते असें मद्यन (कौम) पासै उंदे भ्राऽ शुऐब गी रसूल बनाइयै भजेआ हा। उसनै आइयै गलाया जे हे मेरी कौम दे लोको! अल्लाह दी अबादत करो ते आखरत दे जीवन गी ध्यानै च रक्खो ते नेह फसादी कम्म नेई करो जे थुआड़े कम्मै दी ब'जा करी देसै च फसाद फैली जा ॥ 37 ॥

इस पर उनें उसी झुटेरी दिता ते उनेंगी इक ल्हाई देने आहले अजाब नै पकड़ी लैता। जिस दे नतीजे च ओह अपने घरें च (धरती कन्नै) चमकियै रेही गे ॥ 38 ॥

وَلَمَّا أَنْ جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِوَىٰ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالُوا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ إِنَّا مُنْجُونَ ۝ إِنَّا مُنْجُونَ ۝ وَأَهْلِكَ إِلَّا أَمْرًا تَكُ كَانَتْ مِنَ الْعٰبِرِينَ ۝

إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلَىٰ أَهْلِ هَذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝

وَلَقَدْ تَرَكْنَا مِثْلَهَا آيَةً لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ لِيَتَّقُوا ۝

وَالِى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ يَوْمَ اعْبُدُوا اللَّهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْآخِرَ وَلَا تَعْبُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جِثِيمِينَ ۝

1. इस दा अर्थ एह नेई जे हजरत लूत गी अतिथि धर्म दा पालन करने दा बचर बुरा लग्गा, बल्के मतलब एह ऐ जे लूत दी कौम नै उनेंगी इस गल्ला थमां रोकेआ हा जे ओह न-बाकफ लोकें गी घर नेई आहना करन। (सूर: हिब्र आयत 70) इस आस्तै हजरत लूत इनें रसूलें गी दिक्खियै दुखी होए ते उंदा दिल तंग होआ जे ऐसा नेई होऐ, मेरी कौम मिंगी इंदी परौहनचारी थमां रोके ते परौहनें गी दुख देऐ। उस बेलै नग्गर निक्के-निक्के ते दूर-दूर होंदे हे। लोक डाके पौने दे डरें ओपरे-अनजान लोकें गी अपनै घर आहने थमां डरदे हे। लूत दे शैहरें दे लोक बी डाकू हे ते दूएँ गी बी अपने आंगर समझदे हे।

ते आद ते समूद जातियें गी बी (साढ़े पासेआ इक ल्हाई देने आहले अजाब नै पकड़ी लैता) ते (हे मक्का बासियो!) तुंदे पर उंदी बस्तियें दी हालत जाहर ऐ ते शतान नै उनेंगी उंदे कर्म अच्छे (शोभाएमान) करियै दस्से! ते उस (शतान) नै उनेंगी (अल्लाह दे) रस्ते थमां रोकेआ। हालांके ओह चंगी-चाल्ली समझदे हे ॥ 39 ॥

ते क्लारून ते फिरऔन ते हामान गी बी असें सख्त अजाब दिता हा ते मूसा उंदे कश खु'ल्ले-खु'ल्ले नशान लेइयै आए हे। फी बी (ओह नथे मन्ने बल्के) उनें घमंड थमां कम्म लैता ते (साढ़े अजाब थमां) नस्सियै बची नेई सके ॥ 40 ॥

इस आस्तै असें उंदे बिच्चा हर इक गी ओहदे पापें दी ब'जा करी पकड़ी लैता। ते उंदे बिच्चा कोई ते ऐसा हा जे असें ओहदे पर पत्थरें दा मीह (बदल) बरहाया ते कोई नेहा हा जे उसी कुसै होर सख्त अजाब नै पकड़ी लैता। ते कोई नेहा हा जे असें उसी देसै च अपमानत कीता। ते कोई नेहा हा जे असें उसी गरक करी दिता। ते अल्लाह उंदे पर जुलम करने आहला नेई हा, बल्के ओह आपू गै अपनी जानै पर जुलम करदे हे ॥ 41 ॥

उनें लोकें दी हालत जिनें अल्लाह गी छोड़िये दूएँ कनै दोस्ती गंठी लैती, मक्कड़ी आहला लेखा ऐ, जिसनै (अपने आस्तै) इक घर ते बनाया, पर घरेँ च सारेँ थमां कमजोर घर मक्कड़ी दा गै होंदा ऐ। काश! एह लोक जानदे ॥ 42 ॥

وَعَادًا وَثَمُودًا وَقَدْ تَبَّيَّنَ لَكُمْ مَن مَّسْكَنِهِمْ وَرَزَقْنَاهُمْ الشَّيْطَانَ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ﴿٣٩﴾

وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَدْ جَاءَهُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا سَابِقِينَ ﴿٤٠﴾

فَكَلَّا أَخَذْنَا بِذُنُوبِهِ فَمِنْهُمْ مَن أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا وَمِنْهُمْ مَن أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ وَمِنْهُمْ مَن خَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ وَمِنْهُمْ مَن أَغْرَقْنَا وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُظْلِمَهُمْ وَلَكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٤١﴾

مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعُنكَبُوتِ الَّتِي اتَّخَذَتْ يَبْتًا وَإِنَّ أَوْهَنَ الْبُيُوتِ لَبَيْتُ الْعُنكَبُوتِ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤٢﴾

1. ओह लोक क्या चिर बुरे कम्म करदे रेह इत्थें तक जे उनेंगी आदत पेई गई ते आखरकार बुरे कम्म गै उनेंगी चंगे ते शैल बझोन लागी पे।

अल्लाह ऐसी हर चीजै गी जानदा ऐ जिसी एह् लोक उसदे सिवा पुकारदे न ते ओह् गालिब ते हिक्मत आह्ला ऐ ॥ 43 ॥

ते एह् मसालां न जेह्कियां अस लोकें गी समझाने आस्तै ब्यान करने आं। पर आलमें (समझदारें) दे सिवा कोई बी उनेंगी अपनी गंढी नेई ब'नदा ॥ 44 ॥

अल्लाह नै गासै ते धरती गी खास मकसद आस्तै पैदा कीते दा ऐ। एह्दे च मोमिनें आस्तै इक बड़ा बड़्हा नशान ऐ ॥ 45 ॥
(रुकू 4/16)

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ
مِنْ شَيْءٍ ۗ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٤٣﴾

وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا
يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعُلَمَاءُ ﴿٤٤﴾

خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٥﴾

इस कताब (यानी क़ुरआन) बिच्चा जो किश तेरे पासै वही कीता जंदा ऐ उसी पढ़ (ते लोकें गी पढ़ियै सुनाऽ) ते (उस दी सारी शरतें मताबक) नमाज़ पढ़। यकीनन, नमाज़ सारी बुरी ते अश्लील गल्लें थमां रोकदी ऐ ते अल्लाह दी याद यकीनन (दूए सारे कर्मैं थमां) बड़्डी ऐ ते अल्लाह थुआड़े कर्मैं गी जानदा ऐ ॥ 46 ॥

ते कताब आहलें कनै कदें बी बैहस नेई करो, पर उत्तम ते ठोस दलीलें कनै, सिवाए उनें लोकें दे जेहके उंदे बिच्चा जालम होन (उनेंगी इलजामी जवाब देई सकदे ओ) ते उनेंगी आखी जे जेहका साढ़े पर नाज़ल होए दा ऐ अस ओहदे पर बी ईमान आहनने आं ते जेहका तेरे पर नाज़ल होए दा ऐ ओहदे पर बी ते साढ़ा खुदा ते तेरा खुदा इक ऐ ते अस ओहदे फरमांबरदार आं ॥ 47 ॥

ते इसै चाल्ली असें तेरे पर एह कामल कताब उतारी ऐ। इस आस्तै ओह लोक जिनेंगी असें एह कताब दिती दी ऐ ओह एहदे पर ईमान ल्यौंदे न ते उनें लोकें बिच्चा (यानी कताब आहलें बिच्चा बी) किश लोक एहदे पर ईमान आहनदे न ते साढ़ी आयतें दा हठ पूर्वक इन्कार सिर्फ काफर लोक गै करदे न ॥ 48 ॥

ते इस (क़ुरआन) दे उतरने शा पैहलें तू कोई कताब नथा पढ़दा होंदा, नां लोकें गी सुनांदा हा ते नां उसी अपने सज्जे हथै कनै लिखदा होंदा हा। जेकर ऐसा होंदा तां झुठेरने आहले दुबधा च पेई जंदे ॥ 49 ॥

पर एह (क़ुरआन) ते खु'ल्ले-खु'ल्ले नशान न, उनें लोकें दे दिलें¹ च जिनें गी इलम दिता

أَتْلُ مَا أُوْحِيَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقْرَأُ
الصَّلَاةَ ۚ إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ
وَالْمُنْكَرِ ۗ وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ ۗ وَاللَّهُ
يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُونَ ﴿٤٦﴾

وَلَا تُجَادِلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ
أَحْسَنُ ۗ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ وَقَوْلُوا
أَمَّا بِالَّذِي أُنزِلَ إِلَيْنَا وَأُنزِلَ إِلَيْكُمْ
وَإِلَهُنَا وَاللَّهُكُمْ وَاحِدٌ وَنَحْنُ لَهُ
مُسْلِمُونَ ﴿٤٧﴾

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ ۗ فَالَّذِينَ
أَتَيْنَهُمُ الْكِتَابَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمِنْ هَؤُلَاءِ
مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ ۗ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا
إِلَّا الْكٰفِرُونَ ﴿٤٨﴾

وَمَا كُنْتَ تَتْلُو مِنْ قَبْلِهِ مِنْ كِتَابٍ وَلَا
تَخْطُلُ بِبَيْمِينِكَ إِذًا لِآرْتَابِ الْمُبِطِلُونَ ﴿٤٩﴾

بَلْ هُوَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ فِي صُدُورِ الَّذِينَ
أُوتُوا الْعِلْمَ ۗ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا

1. यानी यहदियें बिच्चा मुसलमान लोकें दे दिलें च।

गेदा ऐ ते साढ़े नशानें दा इन्कार अत्याचारी लोकेँ दे सिवा कोई नेई करदा ॥ 50 ॥

ते ओह आखदे न जे इस दे रब्ब पासेआ एहदे पर नशान की नेई उतरे ? आखो जे नशान ते अल्लाह कश न (ओह जिसलै उंदी जरूरत समझदा ऐ तां उतारदा ऐ) ते अ'ऊं ते इक खु'ल्ला-खु'ल्ला सचेत करने आह्ला आं ॥ 51 ॥

क्या उंदे आस्तै (एह नशान) काफी नेई हा जे असें तेरे पर इक कामल कताब (कुरआन) उतारी ऐ जेहकी उनेगी पढ़ियै सुनाई जंदी ऐ। इस गल्ला च मोमिनं आस्तै ते बड़ी रैहमत ते नसीहत दे समान न ॥ 52 ॥ (रुकू 5/1)

तू आखी दे जे मेरे ते थुआड़े बिच्च गुआही दे रूपै च फैसला करने आह्ला अल्लाह गै काफी ऐ ते जो कुछ गासैं ते धरती च ऐ ओह उसी जानदा ऐ जो लोक झूठै गी अपनादे न ओह अल्लाह दे हुकमें दा इन्कार करदे न ओह गै घाटे च रौहने आहले न ॥ 53 ॥

ते ओह तेरे थमां अज़ाब गी तौले आहने दे मांग करदे न ते जेकर ओहदा समां निश्चत नेई होए दा होंदा तां अज़ाब उंदे कश आई जंदा ते हून बी ओह उंदे कश जरूर (औग ते अचानक) औग, ऐसी दशा च जे ओह जानदे बी नेई होडन ॥ 54 ॥

ते ओह तेरे थमां अज़ाब दे तौले आहने दे मांग¹ करदे न ते यकीन नरक इन्कार करने

الظَّالِمُونَ ﴿٥٠﴾

وَقَالُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَاتٌ مِنْ رَبِّهِ
قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ
مُّبِينٌ ﴿٥١﴾

أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ
يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ إِنَّا فِي ذَلِكَ لَرَحْمَةٌ وَذِكْرَىٰ
لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾

قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ شَهِيدًا
يَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَالَّذِينَ
آمَنُوا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوا بِاللَّهِ ۗ أُولَٰئِكَ
هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٥٣﴾

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۗ وَلَوْلَا أَجَلٌ
مُّسَيَّءٌ لَجَاءَ هُمُ الْعَذَابُ ۗ وَلِيَأْتِيَنَّهُمْ
بَعَثَةٌ ۗ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٤﴾

يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۗ وَإِنَّ جَهَنَّمَ

1. इक मांग दा लगातार अगं-पिच्छें बर्णन करने कनै एह स्पष्ट ऐ जे इक मांग संसारक अज़ाब कनै सरबंधत ऐ ते दूई मांग आखरत दे अज़ाब कनै सरबंध रखदी ऐ। इक मांग दा एह मतलब ऐ जे तेरी भविक्खवाणियें मताबक संसार च की अज़ाब नेई आई जंदा ते दूई मांग दा एह मतलब ऐ जे तेरा बरोध करने करी अस की नेई मरी जंदे ते ज्हन्म च की नेई उठी जंदे। इत्थें दूई मांग दे बा'द ज्हन्म दा बी बर्णन ऐ जेहका पैहली मांग च नेई।

आहलें दा सर्वनाश करने आहला ऐ ॥ 55 ॥

जिस दिन (इन्कार करने आहलें गी जहन्नम दा अजाब घेरियै तबाह करी देग) (एह ओह दिन होग जे खुदाई) अजाब उनेंगी उप्परा दा बी खट्टी लैग ते उंदे पैरें हेठा निकलियै बी उनेंगी घेरी लैग ते (खुदा) आखग जे अपने कर्म दा फल चक्खो ॥ 56 ॥

हे मेरे मोमिन बंदो! मेरी धरती बड़ी बसीह ऐ। इस आस्तै तुस मेरी गै अबादत करो ॥ 57 ॥

हर प्राणी मौत दा मजा चक्खने आहला ऐ फी तुसें सारें गी साढ़े पासै गै परताया जाग ॥ 58 ॥

ते ओह लोक जेहके ईमान आहनदे न ते ओहदे मताबक कर्म बी करदे न अस उनेंगी सुगै दे चबारें च थाहर देगे (ऐसे सुगै च) जिसदे (साए) च नैहरां बगदियां होडन। ओह (मोमिन) उनें सुगै च म्हेशां आस्तै रौहडन ते अच्छे कर्म करने आहलें दा सिला बड़ा चंगा हौंदा ऐ ॥ 59 ॥

उंदा (उनें मोमिनें दा) जो (अपने अक्रीदे ते कर्म पर) डटे दे रौहदे न ते अपने रब्ब उप्पर भरोसा करदे न ॥ 60 ॥

इस संसार च मते-सारे जीव-जैतू (जानवर) नेह बी हैन जो अपने कनै (मनुक्खें आहला लेखा) अपना रिशक चुक्कियै नेई फिरदे। अल्लाह गै उनेंगी रोजी प्रदान करदा ऐ ते तुसें¹ गी बी ते ओह दुआएं गी बड़ा सुनने आहला ऐ ते हालात दा चंगी चाल्ली पन्छानू ऐ ॥ 61 ॥

1. यानी सधारण तौर पर हर आदमी कमाई करियै रिशक हासल करदा ऐ, पर जानवर ते कीड़े-मकोड़े घास-पत्तर जां अपने थमां हौले-फौले कीड़े खाइयै गजारा करदे न। ते जानवरें आस्तै रिशक उपलब्ध करना दसदा ऐ जे मनुक्खें आस्तै रोजी दा प्रबंध अल्लाह गै करा करदा ऐ ते उस (मनुक्खे) दी कमाई इक परदा ऐ।

لَمَحِيْطَةٌۗ بِالْكَافِرِيْنَ ۝
 يَوْمَ يَعْلَمُهُمُ الْعَذَابُۗ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ
 تَحْتِۦ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ دُوْقُوا۟ مَا كُنْتُمْ
 تَعْمَلُوْنَ ۝

لِعِبَادِی الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِنَّ اَرْضِیْ وَاَسْعٰۗةُ
 قٰدِیّٰیۙ فَاَعْبُدُوْنَ ۝

كُلُّ نَفْسٍۭ ذٰۤاِیْقَةُ الْمَوْتِ ۗ ثُمَّ اٰتٰنَا
 تُرْجُوْنَ ۝

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
 لِنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيۡ
 مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا
 نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝

الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰی رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝

وَكَآئِن مِّنْ دَآبَّةٍۭ لَّا تَحْمِلُ رَزْقَهَا
 اَللّٰهُ يَرِزُّهَا وَاِيَّاكُمْ ۗ وَهُوَ السَّمِیْعُ
 الْعَلِيْمُ ۝

ते जेकर तू उनें लोकें गी पुच्छें जे गासैं ते धरती दी रचना कुसनै कीती दी ऐ ते सूरजै ते चनै गी (बिना कुसै तनखाही जां मजदूरी दे) कुसनै मानव-समाज दी सेवा च लाई रख्खे दा ऐ? तां ओह आखडन अल्लाह नै। (फी जिसलै जे ओह एह गल्ल जानदे न) तां ओह केहड़े पासै बहके दे जा करदे न ॥ 62 ॥

अल्लाह गै अपने बंदें बिच्चा जेहदे आस्तै चांहदा ऐ रोजी बधाई दिंदा ऐ ते जेहदे आस्तै चांहदा ऐ तंगी करी दिंदा ऐ। अल्लाह यकीनन हर चीजै गी चंगी चाल्ली जानदा ऐ ॥ 63 ॥

ते जेकर तू उंदे थमां पुच्छें जे बदलें थमां पानी कुस नै तुआरे दा ऐ? ते फी उस दे राहें धरती गी उसदे मरने पँत कुस नै जींदा कीता ऐ? तां ओह आखडन-यकीनन अल्लाह नै। तू आखी दे सारी तरीफ अल्लाह आसतै गै ऐ पर इंदे (मानव-समाज) बिच्चा मते-सारे नेई समझदे ॥ 64 ॥ (रुकू 6/2)

ते एह संसारक जीवन सिर्फ इक भ्रम ते खेहै दा समान ऐ ते परलोक दे जीवन दा घर गै स्हेई मैहनें च असली जीवन दा घर आखेआ जाई सकदा ऐ। काश! ओह लोक समझदे ॥ 65 ॥

ते जिसलै ओह लोक किशती च सुआर होंदे न तां अपनी शरधा गी सिर्फ अल्लाह आस्तै करियै उस थमां दुआड मंगदे न, पर जिसलै ओह उनेंगी बचाइयै धरती पर पुजाई दिंदा, तां ओह अचानक फी शिकं करन लगी पौंदे न ॥ 66 ॥

तां जे असें जे किश उनें गी दिते दा ऐ उसदा इन्कार करी देन (ते इस तोहफे गी अल्लाह दे सिवा दूए शरीकें दे नांउ लाई देन) तां इस

وَلَيْسَ سَأَلْتَهُم مِّنْ خَلْقِ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
لِيَقُولَنَّ اللَّهُ فَاَلَيْ يُؤْفَكُونَ ﴿٦٢﴾

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ
وَيُقْدِرُ لَهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٣﴾

وَلَيْسَ سَأَلْتَهُم مِّنْ تَرَلٍّ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
فَأَحْيَاهِ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا لِيَقُولَنَّ
اللَّهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۗ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا
يَعْقِلُونَ ﴿٦٤﴾

وَمَا هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهُمْ وَلِئِبَّ
وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۗ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٦٥﴾

فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْأُفُقِ دَعَا اللَّهُ مُخْلِصِينَ
لَهُ الدِّينَ ۗ فَلَمَّا نَجَّوهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ
يَسُرُّوْنَ ﴿٦٦﴾

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَهُمْ ۗ وَلِيَسْتَمْتَعُوا
سَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٦٧﴾

(आरजी तोबा) दा नतीजा एह होंदा ऐ जे (अल्लाह उनेंगी छोड़ी दिंदा ऐ ते) ओह इक समे तक संसारक समानें दा फायदा लेंदे रौंहदे न। ते (इक रोज एह तोहफा खतम करी दिता जाग ते) ओह (अपने असली सिले गी) दिक्खी लैडन ॥ 67 ॥

क्या उनेंगी पता नेई जे असें हरम (यानी मक्का) गी शांति दा स्थान बनाई दिते दा ऐ ते इनें लोकें दे आसै-पासै (यानी मक्का दे बाहर) थमां लोक चुक्की लैते जंदे न। तां केह ओह झूठै पर ते ईमान आहनदे न ते अल्लाह दी नैमत दा इन्कार करदे न ॥ 68 ॥

ते जेहका शख्स अल्लाह पर झूठ¹ घड़े ओहदे शा बद्ध दूआ केहड़ा अत्याचारी होई सकदा ऐ जां (उस बंदे थमां बद्ध) जेहका सच्ची गल्लै गी ऐसै मौकै झुटेरदा ऐ जिसलै जे ओह ओहदे कश आई जंदी ऐ? क्या ऐसे काफरें दा स्थान जहन्नम च नेई होना लोड़चदा ? ॥ 69 ॥

ते ओह लोक जेहके साढ़े कनै मिलने दी कोशश करदे न। अस जरूर उनेंगी अपने रस्तें पासै औने दी तफीक बख्शागे ते अल्लाह यकीनन उपकार करने आहलें दे कनै ऐ ॥ 70 ॥ (रुकू 7/3)

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا مِّمَّا
وَيَتَحَفَّظُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ^ط
أَقْبَالَ بَاطِلٍ يَوْمُنُونُ وَبِنِعْمَةِ اللَّهِ
يَكْفُرُونَ ۝

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ
كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ^ط أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ
مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ۝

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا^ط
وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ ۝

०००

1. मूल शब्द 'इफतरा' दा अर्थ ऐ--(क) जानी-बुझियै झूठ बोलना, भाएं गल्ल ते सच्ची होऐ पर उसी जेहदे कनै जोड़ेआ जा उसनै ओह गल्ल आखी दी नेई होऐ। (ख) गल्ल बी झूठी होऐ ते आखने आहले नै बी नेई आखी दी होऐ।



सूर: अल्-रूम

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां काहट आयतां ते छे रूकू न।

(मैं) अल्लाह दा नांस लेइयै (पढ़ना) जो बे-
हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

अ'ऊं अल्लाह सारें थमां बद्ध जानने आहला
आं ॥ 2 ॥

الْمَرَّةِ

रूमी लोक (अर्थात क्रैसर दे साथी) कन्ने
लगदे खेतर च परास्त होई (यानी हारी) गे
॥ 3 ॥

عَلِبَتِ الرُّومُ ۝

ते ओह हारने दे बा'द फी किश गै साल्लें च दबाव
विजय होई जाडन ॥ 4 ॥

فِي آدْنَى الْأَرْضِ وَهُمْ مِّنْ بَعْدِ عَلَيْهِمْ

इस घटना थमां पैहलें बी अल्लाह दी क्हुमत
होग ते बा'द च बी (उसै दी क्हुमत होग)

سَيَعْلَبُونَ ۝

فِي بَيْضِ سِنِينَ ۝ لِلَّهِ الْأَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ

1. इस आयत दा उच्चारण द'ऊं चाल्लीं दा ऐ। इस आसतै उच्चारण दे मताबक इसदे दो अर्थ न-
(क) जे रूमी लोक हिजाज दे लागै आहली धरती पर किस्सा (ईरान) थमां हारी गे न, पर हारने दे बा'द ओह तौले गै दबाव शक्ति हासल करी लैडन ते किस्सा गी हराई देडन। इस आसतै ऐसा होआ जे एह भविक्खवाणी पूरी होई गेई ते पैहलें ते रूमियें दी हार होई पर फी रूमियें ईरानियें गी हराई दिता ते एह सूचना बद्र नांस दे युद्ध मौकै मुसलमानें गी थ्दोई ते इस चाल्ली एह शब्द पूरे होए जे उस दिन मुसलमान अल्लाह दी मदाद करियै खुश होआ करदे होडन।
(ख) आयत दे दूए उच्चारण मताबक इस दा एह अर्थ होग जे रूमी ईरानियें थमां कन्ने लगदे थाहरै च हारी गे, पर इस हार दे बा'द ओह इक बारों फी जित हासल करडन ते इस जित दे बा'द ओह इक होर कौम (मुसलमानें) थमां बुरी चाल्ली हारडन जियां जे हजरत उमर दे मौकै होआ हा। पंजमीं बार एह भविक्खवाणी मशहूर विजेता सुल्तान मुहम्मद दे समे च पूरी होई यानी पैहलें ते जिन्ना चिर मुसलमान धरती परा हमला करदे रेह, कुस्तुनुनिया दा राजा जित हासल करदा रेहा पर जिसलै सुल्तान मुहम्मद नै समुंदरी बेड़े कन्ने कुस्तुनुनिया पर हमला कीता तां उस बेलै अल्लाह नै मुसलमानें गी विजय प्रदान कीती ते उनें कुस्तुनुनिया च प्रवेश कीता ते ओह उस पर तकरीबन इक ज्हार ब'रें थमां काब्ज न।

ते उस दिन मोमिन लोक अल्लाह दी मदद कन्नै बड़े खुश होडन ॥ 5 ॥

अल्लाह जिसी पसंद करता ऐ उसदी मदद करता ऐ ते ओह प्रभुत्वशाली ते बार-बार कर्म करने आहला ऐ ॥ 6 ॥

अल्लाह दे बा'यदे गी (चंगी-चाल्ली) याद रक्खो ते अल्लाह अपने बा'यदें गी कदें झूठा नेई करदा, पर मते-सारे लोक इस गल्ला गी नेई समझदे ॥ 7 ॥

ओह लोक संसारक जीवन दे जाहर (यानी उस दी शान-शौकत) गी ते भलेआं समझदे न, मगर आखरत दे जीवन थमां भलेआं अनजान न ॥ 8 ॥

क्या उनें कदें अपने दिलें च बिचार नेई कीता जे गासैं ते धरती ते जो कुछ उंदे बिच्च ऐ, अल्लाह नै उसी कुसै हिक्मत दे मताबक ते इक निश्चत समे आसै पैदा कीता ऐ, पर मते-सारे लोक अपने रब्ब कन्नै मिलने थमां इन्कारी न ॥ 9 ॥

क्या ओह धरती पर नेई फिरे ते उनें एह नेई दिक्खेआ जे जेहके लोक उंदे थमां पैहलें हे, उंदा केह अन्जाम होआ? ओह ते उंदे थमां ज्यादा ताकतवर हे ते उनें धरती गी खूब पुट्टेआ हा (यानी हल्ल बाही) ते उसी इस शा ज्यादा अबाद कीता हा जो इनें कीते दा ऐ उंदे रसूल उंदे कश खु'ल्ले सबूत लेइयै आप हे, की जे एह अल्लाह दी शान दे खलाफ नेई हा जे ओह उंदे पर जुलम करदा, बल्के ओह लोक आपूं गै अपने-आपै पर जुलम करा करदे हे ॥ 10 ॥

بَعْدُ وَيَوْمَئِذٍ يَقْرَأُ الْمُؤْمِنُونَ ﴿٥﴾

يَبْصُرِ اللَّهُ ۖ يَبْصُرُ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٦﴾

وَعَدَ اللَّهُ ۖ لَا يَخْلِفُ اللَّهُ وَعْدَهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٧﴾

يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ عَنِ الْآخِرَةِ هُمْ غَفْلُونَ ﴿٨﴾

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي أَنفُسِهِمْ مَّا خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَائِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُونَ ﴿٩﴾

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۗ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ ۗ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١٠﴾

फी उनें लोकेँ दा, जिनें बुरे कर्म कीते दे हे, अल्लाह दी आयतें दा इन्कार करने दी ब'जा करी, अन्जाम बी बुरा होआ, ते ओह् अल्लाह दी आयतें दा मजाक डुआंदे होंदे हे ॥ 11 ॥
(रुकू 1/4)

अल्लाह संसार दी पैदायश गी शुरू बी करदा ऐ ते फी इस क्रम गी दुर्हांदा बी जंदा ऐ। फी तुस सारे उस्सै कश बापस परताइयै लेते जागे ओ ॥ 12 ॥

ते जिस रोज क्यामत औग तां अपराधी लोक नराश होई जाडन ॥ 13 ॥

ते जिनेंगी ओह् अल्लाह दा शरीक बनादे हे उंदे बिच्चा कोई बी उंदा सफारशी नेई बनग ते ओह् अपने (बनाए दे) शरीकेँ दा इन्कार करी देडन ॥ 14 ॥

ते जिस दिन क्यामत आई जाग उस दिन सारे (मुश्रिक) बकख-बकख होई जाडन ॥ 15 ॥

फी ओह् लोक जेहके ईमान ल्याए ते जिनें अपने ईमान दे मताबक कर्म बी कीते उनेंगी आहलीशान बागें च खुशी पुजाई जाग ॥ 16 ॥

ते ओह् (लोक) जिनें कुफर कीता ते साढ़ी आयतें दा ते आखरत दी जिंदगी दे मलाप दा इन्कार कीता, ओह् अजाब दे सामनै हाजर कीते जाडन ॥ 17 ॥

ते तुस संजां-सवरे अल्लाह दी स्तुति करा करो ॥ 18 ॥

ते गासैं ते धरती च उस्सै दी स्तुति कीती जंदी ऐ ते दपैहरीं बा'द (त्रीयै पैहर) बी उसदी स्तुति करो ते इस्सै चाल्ली (ठीक) दपैहरीं बेलै बी ॥ 19 ॥

كَمْ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ آسَأُوا السُّؤَالَ إِن كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِئُونَ ﴿١١﴾

اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١٢﴾

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُونَ ﴿١٣﴾

وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مِّنْ شُرَكَائِهِمْ شُفَعَاءُ وَكَانُوا بِشُرَكَائِهِمْ كُفْرِينَ ﴿١٤﴾

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُومِضُ الَّذِينَ يَتَّقُونَ ﴿١٥﴾

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَهُمْ فِي رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ ﴿١٦﴾

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَإِقْرَآءِ الْآحِرَةِ فَأُولَئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ﴿١٧﴾

فَسَبِّحْ لِلَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ ﴿١٨﴾

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ ﴿١٩﴾

उतारदा ऐ, फी उस पानी राहें धरती गी उसदे मरने परैंत जीदा करदा ऐ। एहदे च समझदारें आस्तै बड़े नशान न ॥ 25 ॥

ते उसदे नशानें बिच्चा गासैं ते धरती दा उसदे हुकम कनै खड़ोते रौहना बी ऐ। (फी उसदा एह नशान बी जाहर होग जे) जिसलै ओह तुसैं गी धरती बिच्चा निकलने आस्तै अवाज देग तां तुस अचानक धरती बिच्चा निकलन लगगे ओ ॥ 26 ॥

ते गासैं ते धरती च बास करने आहले सारे उसदे फरमांबरदार न ॥ 27 ॥

ते ओह संसार दी पैदायश गी शुरू बी करदा ऐ ते फी उसी बार-बार दुरहांदा रौहदा ऐ ते एह गल्ल उसदे आस्तै बड़ी असान ऐ ते गासैं ते धरती च उससै दी शान सारें थमां बड़्डी ऐ ते ओह गालिब ते हिक्मत आहला ऐ ॥ 28 ॥
(रुकू 3/6)

उसने थुआड़े समझाने आस्तै थुआड़ी गै कौम दी इक हालत ब्यान कीती दी ऐ (जेहकी एह ऐ जे) जिनें लोके दे थुआड़े सज्जे हत्थ मालक होंदे न, क्या उंदे बिच्चा कोई उस (माल) च जेहका असें तुसैं गी दिते दा ऐ, थुआड़ा बराबर दा हिस्सेदार बी होंदा ऐ? इस चाल्ली जे तुस सारे (सुआमी ते दास) उस (धन- सम्पत्ति) च इक्कै नेह बराबर दे हिस्सेदार होई जंदे ओ ते उनें दासैं थमां इस चाल्ली डरदे ओ जिस चाल्ली तुस अपने! आपै थमां डरदे ओ। इस

بَعْدَ مَوْتِهَا ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٢٥﴾

وَمِن آيَاتِهِ أَنْ تَقُومَ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ بِأَمْرِهِ ثُمَّ إِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ ۗ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ﴿٢٦﴾

وَلَهُ مَن فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ كُلٌّ لَّهُ قُدْرَةٌ ﴿٢٧﴾

وَهُوَ الَّذِي بِيَدِهِ الْخَلْقُ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ ۗ وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٨﴾

صَرَبَ لَكُمْ مَثَلًا مِّنْ أَنْفُسِكُمْ ۗ هَلْ لَكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَاءَ فِي مَا رَزَقْتُمْ فَأَنْتُمْ فِيهِ سَوَاءٌ تَخَافُونَهُمْ كَخِيفَتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ ۗ كَذَلِكَ نَفِّصُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٢٩﴾

1. अर्थात् जिस चाल्ली तुस उनें गी धन सौंपने थमां पैहलें अपने धन दे सुआमी हे ते जिन्ना चाहदे हे अपने आस्तै खर्ची सकदे हे, क्या तुस अपने दासैं गी बी इन्ना हक्क दिंदे होंदे ओ जे जेहदे फलसरूप तुस उंदे थमां डरन लागे जे केह पता एह असें गी खाने तै बी किश देडन जां नेई ते धन-सम्पत्ति पर थुआड़े अधिकार दी कोई नशानी बाकी नेई रौहदी होऐ।

चाल्ली अस समझदार कौम आस्तै नशान खोहली-खोहली ब्यान करने आं ॥ 29 ॥

बल्के (सचाई एह ऐ जे) जालम लोक बिना इलम दे अपनी खुआहशें दे पिच्छें चली पाँदे न ते जिसगी अल्लाह गुमराह करै उसी कु'न हदायत देई सकदा ऐ (ते) उंदा (उनें लोकेँ दा) कोई मददगार नेई होग ॥ 30 ॥

इस आस्तै तू अपना सारा ध्यान धर्म च लाई दे इस चाल्ली जे तेरे च कोई कमी (टेढ़ापन) नेई होऐ। तू अल्लाह दी पैदा कीती दी फितरत' गी अपनाऽ (ओह फितरत) जेहदे पर अल्लाह नै लोकेँ गी पैदा कीते दा ऐ। अल्लाह दी पैदायश च कोई तबदीली नेई होई सकदी। इयै कायम रौहने आहला धर्म ऐ पर मते-हारे लोक नेई जानदे ॥ 31 ॥

(ते) तुस सारे उस (खुदा) पासै झुकदे होई सभावक ते कुदरती धर्म गी ग़ैहन करो ते उसदा संयम अखत्यार करो ते नमाज़ गी इस दी शरतें मताबक अदा करो ते मुश्रिकें बिच्चा नेई बनो ॥ 32 ॥

यानी उंदे (मुश्रिकें) बिच्चा (नेई बनो) जिनें अपने धर्म गी तित्तर-बित्तर करी दिता ते (धर्म गी टुकड़े-टुकड़े करियै) बक्ख-बक्ख गरोहें च बंडोई गे ते हर गरोह एह सोचियै खुश ऐ जे जेहका टुकड़ा उसनै सांभेआ ऐ ऊरे सारें थमां श्रेष्ठ ऐ ॥ 33 ॥

ते जिसलै मनुक्खें गी कोई तकलीफ पुज्जै तां ओह अपने रब्ब पासै झुकदे होई उसी पुकारदे

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا اَهْوَاءَهُمْ
بِغَيْرِ عِلْمٍ فَمَنْ يَهْدِي مَنْ اَصَلَّ اللهُ
وَمَا لَهُمْ مِنْ مُّصْرِينَ ۝

فَاَقْرَبْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا فِطْرَتِ
اللّٰهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيلَ
لِخَلْقِ اللّٰهِ ذٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

مُنِيْنِيْنَ اِلَيْهِ وَاَتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝

مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيْعًا
كُلَّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ۝

وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ

1. जेहका सैहज सभाऽ (फितरत) अल्लाह नै मनुक्खें च पैदा कीते दा ऐ ओह सदा कायम रौहग, उसी कोई बी बदली नेई सकदा।
2. मुश्रिक लोक की जे मूरतियें, फरिशतें, आतमें ते मनुक्खें चा केई चाल्ली दे उपास्य बनादे न, इस आस्तै ओ इक जगह (गल्ला) पर किट्टे नेई होई सकदे। हां। इक अल्लाह गी मनने आहले इक जगह (गल्ला) पर किट्टे होई सकदे न, जिस चाल्ली ओ लोक जो अपने आपै गी बक्ख-बक्ख देशें दे नागरक समझदे न, ओ किट्टे नेई होई सकदे। किट्टे होने आस्तै जरूरी ऐ जे ओ अपने आपै गी इक्केँ देशें दे बसनीक उरहान।

न, फी जिसलै उनेंगी ओहदे पासेआ कोई रैहमत पुजदी ऐ तां उंदे बिच्चा इक गरोह् अपने रब्ब दे मकाबले च शरीक बनान लगी पौंदा ऐ ॥ 34 ॥

जिसदा नतीजा एह होंदा ऐ जे जो कुछ असें उनेंगी दिता ऐ ओह् अमली तौरा पर उसदा इन्कार करन लगी पौंदा न (उसलै उनेंगी आखेआ जंदा ऐ जे) तुस जेहका फायदा दुनियां थमां लैना चांहदे ओ, लेई लैओ, की जे तुस तौले गै अपना अन्जाम दिक्खी लैगे ओ ॥ 35 ॥

क्या असें उंदे आस्तै (शिक दे) कोई दलील तुआरी दी ऐ जेहकी उनेंगी एह गल्लां दसदी ऐ जो शिक दे बारै ओह् ब्यान करदे न ॥ 36 ॥

जिसलै अस लोकें कनै रैहम दा सलूक करने आं तां ओह् ओहदे कनै खुश होई जंदे न ते जेकर उनेंगी अपने पिछलें कर्म कारण कोई तकलीफ पुज्जै तां ओह् चान-चक्क मयूस (दुखी) होई जंदे न ॥ 37 ॥

क्या उनें नेई दिक्खेआ जे अल्लाह जेहदे आस्तै पसंद करदा ऐ, रिशक बधाई दिंदा ऐ ते जेहदे आस्तै पसंद करदा ऐ रिशक तंग करी (घटाई) दिंदा ऐ एहदे च ईमान आहनेने आहले लोकें आस्तै मते-सारे नशान मजूद न ॥ 38 ॥

इस लेई तुसेंगी चाही दा ऐ (जे जिसलै खुदा रोजी बधाई देऐ तां हे कुरआन पढ़ने आहलेओ!) रिश्तेदारें, गरीब-मस्कीनें ते मसाफरें गी उंदा हक्क देआ करो। एह गल्ल उनें लोकें आस्तै किन्नी (मती ज्यादा) बेहतर ऐ जेहके

مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهٖ ثُمَّ اِذَا اَذَقْتَهُمْ مِنْهٗ رَحْمَةًۭۙ
اِذَا فَرِحَ مِنْهُمْ بِرَبِّهٖمْ يُشْرِكُوْنَ ۙ ﴿٣٤﴾

لِيَكْفُرُوْا بِمَا اٰتَيْنَهُمْ ۗ فَتَمْتَعُوْا ۗ
فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ ﴿٣٥﴾

اَمْ اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهٗوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا
كٰنُوْا بِهٖ يُشْرِكُوْنَ ۙ ﴿٣٦﴾

وَ اِذَا اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةًۭ فَرِحُوْا بِهَا ۗ وَاِنْ
تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۭۙ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ
اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ۙ ﴿٣٧﴾

اَوْ لَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ
يَّشَاءُ وَيَقْدِرُ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ
يُّؤْمِنُوْنَ ۙ ﴿٣٨﴾

قَالَتْ ذٰلِكَ الَّذِيْ حَقَّقَهُ وَالْمُسْكِيْنَ وَاِبْنَ
السَّبِيْلِ ۗ ذٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَّرِيْدُوْنَ
وَجْهَ اللّٰهِ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۙ ﴿٣٩﴾

खुदा दी रजा (खुशी) हासल करना चांहेदे न ते ऊए लोक कामयाबी हासल करने आहले न ॥ 39 ॥

ते जेहका रपेआ तुस सूद' हासल करने आस्तै (सूदै पर) दिंदे ओ तां जे ओह लोकें दे धन-दौलत च बधे तां ओह रपेआ अल्लाह दे हजूर च नेई बधदा ते जेहका तुस अल्लाह दी रजा हासल करने आस्तै जकात ते रूपै च दिंदे ओ तां याद रक्खो जे नेह लोक गै खुदा कश (रपेआ) बधाऽ करदे न ॥ 40 ॥

अल्लाह ओह ऐ जिसनै तुसें गी पैदा कीते दा ऐ फी उसनै तुसेंगी रिशक दिता ऐ। फी ओह तुसेंगी मारग, फी ओह तुसेंगी जींदा करग। क्या थुआड़े (अपने बनाए दे) शरीकें बिच्चा कोई ऐसा है जेहका इस कम्मै दा कोई हिस्सा बी करदा होऐ? ओह इंदे शिकं थमां पवित्तर ते उच्ची शान आहला ऐ ॥ 41 ॥ (रुकू 4/7)

(इस युग च) थल ते जल च लोकें दे कर्मै दी ब'जा करी फसाद फैली गेआ ऐ जिसदा नतीजा एह होग जे खुदा लोकें गी उंदे कर्मै दे किश हिस्से दी स'जा (इस दुनिया च) देग। तां जे ओह (अपनी ना-फरमानी थमां) रुकी जान ॥ 42 ॥

तूं आखी दे, देसै च फिरो, ते दिक्खो जे जेहके लोक तुंदे थमां पैहलें हे उंदा केह

وَمَا آتَيْتُم مِّن رَّبِّاَيْرُبُوا فِي فِ اَمْوَالِ
النَّاسِ فَلَا يَزْبُو اَعِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَمَا آتَيْتُم
مِّن زَكَوٰةٍ تَرِيْدُوْنَ وَجَهَ اللّٰهُ فَاَوْلِيْكَ
هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿٤٠﴾

اللّٰهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ
يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ؕ هَلْ مِنْ
شَرِكٍ اِيْكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ
شَيْءٍ سُبْحٰنَهُ وَتَعَالٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤١﴾

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ
اَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي
عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤٢﴾

قُلْ سِيرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانظُرُوْا كَيْفَ

1. पवित्तर कुरआन दे मतावक ब्याज द'ऊं किसमें दा ऐ-

- (क) ओह ब्याजी कारोबार जेहका गरीबें कन्नै मिलियै कीता जंदा ऐ। एहदे कन्नै बी रोकेआ गेआ ऐ।
(ख) इस आयत च उस ब्याजी-कारोबार दा जिकर ऐ जेहका अमीर लोकें कन्नै कीता जंदा ऐ तां जे ओह अमीर उसी बपार बगैरा च लान तां जे इस चाल्ली धन देने आहले दा धन ब्याज कन्नै बधदा र'वै। किश मुसलमानें दा एह बिचार ऐ जे अमीरें जां कंपनी आहलें गी रपेआ ब्याज देना ते बैक्क च ब्याज आस्तै ज'मा कराना इस्लाम च बरजत नेई ऐ, पर एह आयत भलेआं स्पष्ट करदी ऐ जे इस चाल्ली दा ब्याजी कारोबार करना बी बरजत ऐ। पवित्तर कुरआन उतारने आहला खुदा अंतर्यामी परमब्रह्म ऐ। एह पैहलें थमां गै जानदा हा जे इक समां ओग जे मुसलमान ब्याज गी जायज करार देहन। इस आस्तै उसनै भविक्ख च पैदा होने आहले शक्क-शुबहें दा हल्ल बी इस्सै आयत च करी दिता।

हशर होआ हा। उंदे बिच्चा मते-हारे मुश्रिक हे ॥ 43 ॥

इस आसतै तूं अपना ध्यान कायम रौहने आहले धर्म पासै फेरी दे, उस दिनै दे औने थमां पैहलें जे जिसी टलाने आसतै खुदा पासेआ कोई उपाऽ नेई उतरेआ। जिस दिन ओह (मोमिन ते काफर) इक-दूए थमां बक्ख-बक्ख होई जाडन' ॥ 44 ॥

जिसनै कुफर कीता उसदे कुफर करने दी गाज उससै पर पौग ते जिसनै अपने ईमान दे मताबक कर्म कीता ओह अपने भले आसतै गै त्त्यारी करा करता ऐ ॥ 45 ॥

तां जे अल्लाह मोमिनें ते अपने ईमान दे मताबक कर्म करने आहलें गी अपनी किरपा कन्नै सिला प्रदान करै ओह यकीनन इन्कार करने आहलें गी प्रेम नेई करता ॥ 46 ॥

ते उसदे नशानें बिच्चा इक नशान ब्हाएं गी शुभ-समाचार दिंदे होई भेजना बी ऐ ओह ऐसा इस आसतै करता ऐ तां जे ओह तुसैं गी अपनी रैहमत (दा फल) चखाऽ। ते किसितयां उसदे हुकम कन्नै चलन ते तुस उसदी किरपा गी हासल करी सको ते तुस शुकरगज्जार बनो ॥ 47 ॥

ते असैं तेरे शा पैहलें केई रसूल उंदी कौमें पासै भेजे हे ते ओह उंदे कश खु'ल्ले-खु'ल्ले नशान लेइयै आए ते असैं मुलजमें कन्नै मनासब बदला लैता, ते मोमिनें दी मदद करना साढ़ा फर्ज ऐ ॥ 48 ॥

अल्लाह ओह ऐ जेहका ब्हाएं गी भेजदा ऐ, फी ओह ब्हामां बदलें दे रूपै च भाप डुआंदियां

كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلُ ۖ
كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُشْرِكِينَ ۝

فَاقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَدِيمِ مِنْ قَبْلِ أَنْ
يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ يَوْمَئِذٍ
يُضْذَعُونَ ۝

مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا
فَلَا نَفْسَهُمْ يَمْهَدُونَ ۝

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
مِنْ فَضْلِهِ ۖ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِينَ ۝

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ يُرْسِلَ الرِّيحَ مُبَشِّرَاتٍ
وَلِيُذِيقَكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَلِيُنَجِّرِيَ
الْفُلْكَ بِأَمْرِهِ ۖ لِتَتَّبِعُوا مِنْ فَضْلِهِ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَى
قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ وَهُمْ يَابِسِينَ فَأَتَتْكُمْ
مِنَ الَّذِينَ أَجْرَمُوا ۖ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا
نَضْرُ الْمُؤْمِنِينَ ۝

اللَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ فَتُحْمِئِرُ سَحَابًا

1. यानी मुसलमान विजयी होडन ते अपने सहाबें हकूमत चलाडन जिसदा जिकर सूर: तौब: च कीता वेदा ऐ।

न। फी ओह उसी जिस चाल्ली चांहदा ऐ
गासै च फलाई दिंदा ऐ ते ओह उसी टुकड़ें।
(खंधोलें) च बंडी दिंदा ऐ ते तू बरखा गी
दिक्खना ऐं जे ओह ओहदे (बदलें) बिच्चा
ब'रदी ऐ फी जिसलै खुदा उस बदलै गी
अपने बंदें बिच्चा जेहदे तक पसंद करै पजाई
दिंदा ऐ ते अचानक ओह खुश होई जंदे न
॥ 49 ॥

जिसलै जे ओह इस (बरखा) दे उतरने थमां
पैहलें भलेआं नराश होई गेदे हे ॥ 50 ॥

इस आस्तै (हे श्रोता) अल्लाह दी रैहमत दे
नशानें गी दिक्ख जे ओह किस चाल्ली धरती
दे मरी जाने दे बा'द उसी जींदा करता ऐ। इयै
खुदा ऐ जो (क्यामत आहलै ध्याडै) मुड़दें गी
जींदा करग ते ओह हर गल्ल करने दी पूरी-
पूरी समर्थ रखदा ऐ ॥ 51 ॥

ते जेकर अस हवा चलाचे ते एह लोक उस
(खेती) गी पीला-पीला दिक्खन, तां उस
नजारे दे बा'द (बजाए नसीहत हासल करने
दे) ना-शुकर-गजार (किरतघन) बनी जाडन
॥ 52 ॥

(इस लेई तू उनेंगी ऐसा करन दे) की जे नां
तू मुड़दें गी सुनाई सकना ऐं ते नां बैहरें
(बोलें) गी उस बेलै अपनी अवाज सुनाई
सकना ऐं जिसलै ओह पिट्ठ फेरियै परतोई
जान ॥ 53 ॥

ते नां तू अ'नें गी उंदी गुमराही थमां हटाइयै
सिद्धे रस्तै पर आहनी सकना ऐं तू सिर्फ
उनेंगी गै सुनाई सकना ऐं जेहके साढ़ी आयतें
पर ईमान आहनदे न ते ओह फरमांबरदार
बनी जंदे न ॥ 54 ॥ (रुकू 5/8)

فَيَسْطُطُ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ
كَسْفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ ۗ
فَإِذَا أَصَابَ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ
إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٥٠﴾

وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ يُنْزَلَ عَلَيْهِمْ مِنَ
قِبَلِهِ لَمُبْلِسِينَ ﴿٥١﴾

فَاتَّظُرُوا إِلَىٰ آسْرِ رَحْمَتِ اللَّهِ كَيْفَ يُغِي
الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۗ إِنَّ ذَٰلِكَ لَمُعْجِ
الْمُؤْتَىٰ ۗ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٥٢﴾

وَلَيِّنَ أَرْسِلْنَا رِيحًا قَرْأَوْهُ مُضْفَرًا
لَّنظَلُّوا مِنْ بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ﴿٥٣﴾

فَإِنَّكَ لَا تَسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تَسْمِعُ
الضَّمَّةَ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٥٤﴾

وَمَا أَنْتَ بِهَادِ الْعُصْبِ عَنْ صَلَاتِهِمْ ۗ إِنَّ
تَسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ
مُسْلِمُونَ ﴿٥٥﴾

1. बदलै गी नेकां टुकड़ियें च बंडी दिंदा ऐ तां जे लम्मे चँडे खेतरे दी संचाई होई सकै।

अल्लाह ऊरे ऐ जिस नै तुसेंगी इस हालत च पैदा कीता जे थुआड़े अंदर कमजोरी पाई जंदी ही। फी कमजोरी दे बा'द तुसेंगी ताकत बखशी। फी ताकत दे बा'द कमजोरी ते बढापा दिता। ओह जिस चीजै गी चांहदा ऐ पैदा करदा ऐ ते ओह बड़े इलम आहला (ते) समर्थ आहला ऐ ॥ 55 ॥

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ مَا نَبُؤُواغَيْرَ سَاعَةٍ كَذَلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ ﴿٥٥﴾

ते जिस दिन निश्चत समां आई जाग तां मुलजम लोक सघंदां खाडन जे ओह किश खिनं दे सिवा' (संसार च) नेई रेह। ओह इस्सै चाल्ली बैहकी-बैहकी दियां गल्लां बनांदे न ॥ 56 ॥

وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْبَعْثِ فَهَذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلَكِنَّكُمْ كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٥٦﴾

ते ओह लोक जिनेंगी इलम ते ईमान दिता गोदा ऐ, आखडन, तुस अल्लाह दे स्हाबैं (लेखै मताबक) उस दिनै तक ठैहरे दे ओ जेहका थुआड़े परतियै उब्भरने^१ आस्तै निश्चत हा ते (याद रक्खो जे) इयै फी उब्भरने^२ दा दिन ऐ। पर तुस नेई जानदे ॥ 57 ॥

فَيَوْمَئِذٍ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَعذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْعَتُونَ ﴿٥٧﴾

ते अज्ज जालमें दा बहाना उंदै किसै कम्म नेई औग (यानी कोई फायदा नेई पजाग) ते नां गै उनेंगी माफ करियै इयौंठी तक औने दा मौका दिता जाग ॥ 58 ॥

وَلَقَدْ صَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ

ते असें इस कुरआन च लोकें खातर सारी सचाइयां खोहली-खोहली ब्यान करी दिती

1. इत्थें ईसाइयें दी उस हालत आहल्लें पासैं शारा कीता गोदा ऐ जेहकी इटली च उंदे फैली जाने दे बा'द होई ही। उस बेलें ओह उस कश्टकारी दौर बिच्चा लंघी चुके दे हे जो कहफ नांउ दे साथियें मौके उंदे पर बीतेआ हा जेहदे बा'द किश चियै तक उनें तरक्की कीती ही, पर इस्लाम धर्म दी तरक्की बेलें उंदा परतियै ह्वास होआ ते फी इस्लाम दी तरक्की दुरान उंदे पर गरावट दा जेहका दौर आया तां उसी चेता करियै ओह पच्छोताउ प्रकट करन लगे जे असें गी भोग-बलास आस्तै बड़ा गै घट्ट समां मिलेआ, ज्यादा समां कश्टें च गैं बीतेआ।
2. इस आयत दे शब्द दसदे न जे एह संसार च कौमी उत्थान दा बर्णन ऐ नां के परलोक च पुनर्जीवन दा।
3. इस आयत च दस्सेआ गोदा ऐ जे तुस भलेखे च ओ। इस्लाम दी तरक्की दे दौर च थुआड़ा अंतम बिनाश नेई होग, बल्के थुआड़ा अंतम बिनाश इस्लाम दे पुनरुत्थान दे समे च होग, जिसलै थुआड़ा ओह सर्वनाश होग तां फी तुस ठाहरमीं जां उ'न्ममीं सदी आंगर शान कर्नें नेई उट्टी सकगे।

दियां न ते जेकर तू उंदे कश कोई नशान
आहूँ तां काफर जरूर आखडन जे तुस लोक
सिर्फ झूठियां गल्लां पेश करने आहले ओ
॥ 59 ॥

इस्सै चाल्ली अल्लाह बे-इलम (अज्ञानी) लोकें
दे दिलें पर मोहर' लाई दिंदा ऐ ॥ 60 ॥

ते (हे कुरआन दे श्रोता) धीरज कन्नै (अपने
ईमान पर) कायम रौह। अल्लाह दा बा'यदा
जरूर पूरा होइयै रौहग ते चाही दा ऐ जे
जेहके लोक भरोसा नेई करदे ओह तुगी धोखे
कन्नै (अपनी ज'गा थमां) हटाई निं देन
॥ 61 ॥ (रुकू 6/9)

كُلِّ مَثَلٍ ۖ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِآيَةٍ يَتَّبِعُونَ
الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُبْطَلُونَ ﴿٥٩﴾

كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الَّذِينَ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦٠﴾

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَا يَسْتَخِفُّكَ
الَّذِينَ لَا يُوقِنُونَ ﴿٦١﴾

०००

1. इस आयत थमां पता लगदा ऐ जे अल्लाह कुसै दे दिलें पर बिला ब'जा (अकारन) मोहर नेई लांदा। पैहलें ते मनुख झूठें पिच्छें चलना शुरू करदा ऐ, फी इक अरसा बीतने परेंत जिसलै जे ओह बुरे कर्म गी चंगी चाल्ली समझन लगदा ऐ तां ओहदे दिलें पर मोहर लगगी जंदा ऐ।



सूर: लुक़्मान

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां पैँत्ती आयतां ते चार रुकू न।

मैं अल्लाह दा नांस लेइयै (पढ़ना) जो बे-
हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝۱

अ'ऊं अल्लाह' सारें थमां बद्ध जानने आहला
आं ॥ 2 ॥

الْعَمَّ ۝۲

एह (यानी इस सूर: दियां आयतां) उस कामिल
कताबै दियां आयतां न जेहकी बड़ी हिकमतें
आहली ऐ ॥ 3 ॥

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ۝۳

(ते) अपने फर्जे गी चंगी चाल्ली अदा करने
आहलें आस्तै हदायत ते रैहमत दा मूजब ऐ ॥ 4 ॥

هُدًى وَرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِينَ ۝۴

ओह लोक जेहके नमाज (इस दियें शर्तें
मताबक) अदा करदे न ते (गरीबें मस्कीनें
गी) जकात दिंदे रौहदे न ते आखरत दे जीवन
पर भरोसा करदे न ॥ 5 ॥

الَّذِينَ يَقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ

وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ۝۵

एह लोक अपने रब्ब पासेआ औने आहली
हदायत पर बी द्रिढ़ता कनै कायम न ते ऐसे
लोक गै (हर मदान च) कामयाब होउन ॥ 6 ॥

أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ

هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝۶

ते लोकें बिच्चा किश नेह न जेहके (अपना
रपेआ बरबाद करियै) खेढ-तमाशे (दियां

وَمِن النَّاسِ مَن يُشْتَرَىٰ لَهْوَ الْحَدِيثِ

1. ब्यारें आस्तै दिक्खो सूर: बकरा आयत: 2

गल्लां) लैंदे रौहदे न तां जे अज्ञानी लोकें गी अल्लाह दे रस्ते थमां रोकन ते उसी (अल्लाह दे रस्ते गी) हासे दे काबल चीज बनाई लैंदे न उनें लोकें आस्तै अपमान जनक अजाब होग ॥ 7 ॥

ते जिसलै ऐसे शख्स सामनै साहियां आयतां पढ़ियां जंदियां न तां ओह घमंड करदे होई पिट्ठ फेरी लैंदा ऐ आखो जे उसनै उनेंगी सुनेआ गै नेई (ओह इस हद तक बे-परवाही करदा ऐ) आखो जे उसदे कन बोले न। इस आस्तै तू उसी इक दर्दनाक अजाब दी ऐहम (चेची) खबर सुनाई दे ॥ 8 ॥

यकीनन ओह लोक जेहके ईमान ल्याए ते जिनें उसदे मताबक कर्म कीते उनेंगी नैमतें आहले बाग मिलडन ॥ 9 ॥

जिंदे च ओह बास करदे रौहडन। एह अल्लाह दा कीता गेदा पक्का बा'यदा ऐ ते ओह गालिब ते बड़ी हिक्मत आहला ऐ ॥ 10 ॥

उसनै गासैं गी बगैर खभें (स्हारें) दे पैदा कीते दा ऐ। जियां जे तुस दिखदे ओ। ते धरती च प्हाड़ इस आस्तै सुट्टे दे न जे ओह थुआड़े समेत भ्यंकर भुंचाल दी लपेट च नेई फसी जा ते ओहदे च हर चाल्ली दे जानवर फलाए ते बदलें थमां पानी तुआरेआ। फी ओहदे च हर चाल्ली दे उत्तम जोड़े पैदा कीते दे न ॥ 11 ॥

एह अल्लाह दी मख्लूक ऐ। ते तुस मिगी दस्सो जे उसदे सिवा जिनेंगी तुस शरीक बनांदे ओ, उनें केह पैदा कीता ऐ? (किश बी नेई) बल्के सच्च एह ऐ जे जालम लोक खु'ल्ली-खु'ल्ली गुमराही च न ॥ 12 ॥ (रुकू 1/10)

يُضِلُّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ
وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۗ أُولَٰئِكَ لَهُمْ
عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝

وَإِذْ أَتَىٰ عَلَىٰ آيَاتِنَا وَلَّىٰ مُسْتَكْبِرًا
كَانَ لَمْ يَسْمَعْهَا كَأَنَّ فِي أُذُنَيْهِ وَقْرًا ۖ
فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ
جَنَّاتُ النَّعِيمِ ۝

خَالِدِينَ فِيهَا ۗ وَعَدَّ اللَّهُ حَقًّا ۗ وَهُوَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

خَلَقَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ۖ وَأَلْقَىٰ
فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَبَثَّ
فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ ۗ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
فَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ۝

هَذَا خَلْقُ اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ
الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۗ بَلِ الظَّالِمُونَ
فِي صَلَاتٍ مُّبِينٍ ۝

ते असें लुक्मान गी हिकमत दिती ही ते गलाया हा जे अल्लाह दा शुकर अदा कर। ते जेहका शख्स बी शुकर करदा ऐ उसदे शुकर करने दा फायदा उससै दी जिंदू गी मिलदा ऐ ते जेहका ना-शुकरी करदा ऐ (उसी याद रक्खना लोडदा जे) अल्लाह सारी चाल्ली दे शुकरें थमां-बे-न्याज ऐ (ते) बड़ी स्तुति आह्ला ऐ ॥ 13 ॥

ते (याद करो) जिस बेलै लुक्मान नै अपने पुत्रै गी नसीहत करदे होई गलाया हे मेरे पुत्र! अल्लाह दा शरीक मत कुसै गी बनांदा होऐं, शिकं यकीनन बौहत बड्डा जुलम ऐ ॥ 14 ॥

ते असें एह आखदे होई जे मेरा ते अपने मापें दा धनवाद कर, इन्सान गी अपने मापें बाँरे (उपकार करने दा) तकदी हुकम दिता हा ते उसदी माता नै उसी कमजोरी दे (इक दौर दे) बा'द कमजोरी (दे दूए दौर) च चुक्केआ हा ते उसदा दुद्ध छुड़ाना द'ऊं साल्लें दे अरसे च हा (याद रक्ख जे तोह) मेरे कश गै परतोइयै औना होग ॥ 15 ॥

ते जेकर ओह दमैं तेरे कनै बैहस करन जे तू कुसैगी मेरा शरीक बनाई लै जिसदा तुगी कोई इलम नेई, तू उंदी दौनैं दी गल्ल नेई मनेआं। हां! संसार सरबंधी गल्लें च उंदे कनै नेक सरबंध बनाई रक्ख ते उस शख्स दे पिच्छें चलेआं जेहका मेरे पासै झुकदा ऐ ते तुसें सारें गी मेरे कश गै औना होग। उस

وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنْ اَشْكُرَ لِلّٰهِ ۗ
وَمَنْ يَشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۗ
وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَنِّي حَمِيْدٌ ۝٣١

وَإِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يُعِظُهٗ
يَبْنٰى لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ۗ إِنَّ الشِّرْكَ
نَظْمٌ عَظِيْمٌ ۝٣١

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ
وَهَنَّا عَلٰى وَهْنٍ وَفِصْلَةٌ فِىْ عَامِيْنِ
اَنْ اَشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ۗ اِلَى الْمَصِيْرِ ۝٣١

وَإِنْ جَاهَدَكَ عَلَىٰ أَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ
لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبُهُمَا
فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا ۗ وَاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ
أَنَابَ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ

1. सूर: अहक्राफ आयत 16 च आखेआ गेदा ऐ जे बच्चे दा गर्भाशय च रौहना ते दुद्ध छुड़ाना त्रीहयें म्हीनैं च पूरा होंदा ऐ, पर इत्थें दो साल आखेआ गेदा ऐ। इसदी ब'जा एह ऐ जे केई बच्चे तौले पैदा होई जंदे न ते कमजोर होंदे न ते किश ज्यादा दिनें च जनम लैंदे न ते तगड़े होंदे न। दूर्ई आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे जिसलै बच्चा कमजोर होऐ ते तौला जनम लेई लै तां उसी दुद्ध पलैने दा समां बधाई दिता जा तां जे ओ तगड़ा होई जा।

बैलै अ'ऊँ तुसेंगी थुआड़े ओह कर्म दस्सी देग्गा जेहके तुस करदे रेह ओ ॥ 16 ॥

(लुक्मान नै गलाया जे) हे मेरे पुत्तर! गल्ल एह ऐ जे जेकर कोई कर्म राई दे इक दाने दे बराबर बी होऐ ते ओह (कर्म कुसै) पत्थरै च जां गासै च जां धरती च छप्पे दा होऐ तां बी अल्लाह उसी जाहरा करी देग। अल्लाह अति सूखम ते छप्पे दे भेदें गी पाई लैने आहला ते बौहत खबर रक्खने आहला ऐ ॥ 17 ॥

हे मेरे पुत्तर! नमाज़ गी (विधिवत) कायम रक्ख ते चंगियां गल्लां करने दी आज्ञा दिंदा रौह ते भेड़ियें/बुरियें गल्लें थमां रोकदा रौह ते जेहके कश्ट तुगी पुज्जे उंदे पर धीरज धारण कर। यकीनन एह गल्ल बड़ी गै हिम्मत आहले कर्मैं बिच्चा ऐ ॥ 18 ॥

ते अपनियां ग'ल्लां लोकें दे सामनै (गुस्से च) नेई फुलाऽ ते धरती पर घमंड कनै नेई चल। यकीनन अल्लाह कुसै बी अहंकारी जां शेखी मारने आहले कनै प्रेम नेई करदा ॥ 19 ॥

ते दरम्यानी चाल चल ते अपनी अवाज बी हौली रक्ख, की जे अवाजें बिच्चा सारें शा भेड़ी अवाज गधे दी अवाज ऐ (जेहकी बड़ी उच्ची होंदी ऐ) ॥ 20 ॥ (रकू 2/11)

क्या तुसैं लोकें नेई दिक्खेआ जे जो किश गासैं ते धरती च ऐ उसी अल्लाह नै थुआड़ी सेवा च लाई रक्खे दा ऐ ते थुआड़े पर अपनी नैमतां चाहे ओह जाहरा होन ते चाहे छप्पी दियां, पानी आंगर बगाई दितियां न ते लोकें

فَأَنبِئِكُمْ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿۱۶﴾

يُئِيَّ إِنَّهَا إِن تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ
مِّنْ حَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِي صَخْرَةٍ أَوْ فِي
السَّمَوَاتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا اللَّهُ
إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ﴿۱۷﴾

يُئِيَّ أَقِمِ الصَّلَاةَ وَأْمُرْ بِالْمَعْرُوفِ
وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَأَصْبِرْ عَلَىٰ مَا
أَصَابَكَ ۗ إِنَّ ذَٰلِكَ مِنَ الْعَزْمِ الْأَمُورِ ﴿۱۸﴾

وَلَا تَصْعَرَ حَذَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ
فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ
كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿۱۹﴾

وَاقْصِدْ فِي مَشْيِكَ وَاعْظُضْ
مِنَ صَوْتِكَ ۗ إِنَّ أَنْكَرَ الْأَصْوَاتِ
أَصْوَتُ الْحَمِيرِ ﴿۲۰﴾

أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي
السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ
نِعْمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً ۗ وَمِنَ النَّاسِ

बिच्चा किश ऐसे बी हैंन जेहके बिना इलम, बिना हदायत ते बिना कुसै रोशन कताबा दे सबूतै दे अल्लाह बारै बैहस करदे न ॥ 21 ॥

ते जिसलै उनेंगी गलाया जंदा ऐ जे जो कुछ अल्लाह नै उतारेआ ऐ ओहदा अनुसरण करो तां ओह आखदे न जे नेई, अस ते ओहदा गै अनुसरण करगे जेहदे पर असें अपने पुरखें गी दिक्खे दा ऐ। क्या जेकर शतान (उंदे पुरखें राहें) उनेंगी नरक दे अजाब पासै सद्दा करदा होऐ? (तां बी ओह ऐसा गै करडन) ॥ 22 ॥

ते जेहका आदमी अपना ध्यान अल्लाह पासै फेरी दिंदा ऐ ते ओह अपने कर्म करने च बी पूरा-पूरा सचेत-सोहगा राँहदा ऐ, तां ओह नेहा ऐ जे आखो उसने इक ठोस कड़े गी पकड़ी लैता ऐ ते सारे कर्मों दा परिणाम अल्लाह दे हल्लें च ऐ ॥ 23 ॥

ते जेहके लोक इन्कार करन उंदा इन्कार तुगी दुखी नेई करै। उनेंगी आखर साढ़े कश गै परतोइयै औना पौग, फी अस उनेंगी उंदे कर्मों दी असलीयत थमां खबरदार करगे। यकीनन अल्लाह सीन्ने दे अंदरै दियां सारियां गल्लां जानदा ऐ ॥ 24 ॥

अस उनेंगी किश चिरे तक संसारक लाभ पुजागे, फी अस उनेंगी मजबूर करियै अति कठोर अजाब आहली बक्खी लेई जागे ॥ 25 ॥

जेकर तू उंदे थमां पुच्छें जे गासैं दे धरती गी कुसनै पैदा कीता ऐ? तां ओह यकीनन इयै आखडन जे अल्लाह नै। तू उनेंगी आख, (ठीक ऐ) हर इक स्तुति दे काबल अल्लाह

مَنْ يَّجَادِلْ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى
وَلَا كِتَابٍ مُّينٍ ۝ ٢١

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أُولَٰئِكَ
الشَّيْطٰنُ يَدْعُوهُمْ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ۝ ٢٢

وَمَنْ يُسَلِّمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ
فَقَدْ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ وَإِلَى اللَّهِ
عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ۝ ٢٣

وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنكَ كُفْرُهُ ۚ إِنَّنَا
مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ ٢٤

نُمَتِّعُهُمْ قَلِيلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلَىٰ
عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝ ٢٥

وَلَيْسَ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضَ لِيَقُولَنَّ اللَّهُ ۚ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ

गै ऐ, पर उंदे (इन्कार करने आहलें) बिच्चा मते-सारें गी इस गल्ला दा इलम नेई ॥ 26 ॥

गासैं ते धरती च जो कुछ बी ऐ अल्लाह दा गै ऐ। यकीनन अल्लाह गै ओह सत्ता ऐ जो (हर चाल्ली दी उपासना ते तरीफ आस्तै) कुसै दा मुल्हाज नेई ऐ (पर कनै गै) ओह सारी स्तुतियें दा अधिकारी बी ऐ ॥ 27 ॥

ते धरती पर जिन्ने बूटे न जेकर उंदियां कलमां बनी जान ते समुंदर स्याही कनै भरोची जान इससै चाल्ली उंदे च स्याही दे सत्त समुंदर होर मलाई दिते जान, तां बी अल्लाह दे नशान खतम नेई होडन। अल्लाह सच्चें गै गा़लिब ते हिकमत आहला ऐ ॥ 28 ॥

तुसैं सारें गी पैदा करना ते तुसैंगी जींदा करियै दुआलेआ जाना सिर्फ इक आदमी दे पैदा करने आंहगर ऐ। यकीनन अल्लाह बौहत सुनने आहला ते बौहत दिक्खने आहला ऐ ॥ 29 ॥

क्या तोह नेई दिक्खेआ जे अल्लाह रातीं गी दिनै च समाई दिंदा ऐ ते दिनै गी रातीं च ते उसनै सूरजै ते चनै गी सेवा च लाई रक्खे दा ऐ। इंदे बिच्चा हर इक निश्चत समे तगर/ आस्तै चलदा रौंहदा ऐ ते अल्लाह थुआड़े कर्मै गी चंगी चाल्ली जानदा ऐ ॥ 30 ॥

एह सब किश इस आस्तै होआ करदा ऐ जे अल्लाह सच्च ऐ ते कायम रौहने आहला ऐ ते इस आस्तै जे जिनैगी ओह लोक उस (अल्लाह) दे सिवा पुकारदे न ओह झूठे ते नश्ट होने आहले न ते अल्लाह सच्चें गै बौहत उच्चा ते बड़ी शान आहला ऐ ॥ 31 ॥
(रुकू 3/12)

بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣١﴾

لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٣٢﴾

وَلَوْ أَنَّ مَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِنْ بَعْدِهِ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَا نَفِدَتْ كَلِمَاتُ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٣٣﴾

مَا خَلَقَكُمْ وَلَا بَعَثَكُمْ إِلَّا كَفْيسٍ وَوَاحِدَةً ۗ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٣٤﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُوَلِّجُ الْاَيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوَلِّجُ النَّهَارَ فِي الْاَيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۗ كُلٌّ يَجْرِي إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ وَأَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٣٥﴾

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ الْبَاطِلُ ۗ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٣٦﴾

क्या तोह दिक्खेआ नेई जे किशितयां अल्लाह दी नैमते' दे कनै समुदरै च चलदियां न तां जे ओह तुसेंगी अपने नशान दस्सन। एहदे च बौहत बड्डे धीरजवान ते बौहत बड्डे किरतघन आदमी आस्तै बड़े सारे नशान न ॥ 32 ॥

ते जिसलै पानी दी कोई लैहर उनेंगी साये आंगर खट्टी लैंदी ऐ तां ओह अपनी उपासना गी सिर्फ अल्लाह आस्तै गै खास मन्थियै उसी पुकारदे न, फी जिसलै ओह उनेंगी धरती (खुशकी) पासै बचाइयै लेई औंदा ऐ तां उंदे बिच्चा किश लोक दरम्यानी चाल चलदे रौहदे न (ते किश लोक दबारा ऊऐ अत्याचार ते शिर्क करन लगी पौंदे न) ते साढ़ी आयतें दा इन्कार सिर्फ प्रतिज्ञा भंग करने आहले ते किरतघन लोक गै करदे न ॥ 33 ॥

हे लोको! अपने रब्ब आस्तै संयम धारण करो ते उस दिनै थमां डरो जिस दिन कोई प्यो बी अपने पुत्रै दे कम्म नेई आई सकोग ते नां कोई पुत्र गै अपने प्यो दे कम्म आई सकग। अल्लाह दा बा'यदा जरूर पूरा होइयै रौहदा ऐ। तुसेंगी संसारक जीवन धोखे च नेई रक्खी देऐ ते नां गै धोखा देने आह्ला शतान तुसेंगी अल्लाह दे बारे च धोखे च रक्खै ॥ 34 ॥

क्यामत (जां कुसै कौम दे आखरी फैसले आहले दिनै) दा ज्ञान अल्लाह गी गै ऐ ते ऊऐ बरखा बरहांदा ऐ ते जो कुछ गभै च ऐ उसी जानदा ऐ। कोई नेई जानदा जे ओह कल्ल केह कम्म करग, ते नां कोई एह जानदा ऐ जे ओह कोहकी ज'गा प्राण त्यागग। यकीनन अल्लाह गै जानने आह्ला ते खबर रक्खने आह्ला ऐ ॥ 35 ॥ (रुकू 4/13)

أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ
بِنِعْمَتِ اللَّهِ لِيُرِيَكُمْ مِنْ آيَاتِهِ إِنَّ
فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝

وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَوْجٌ كَالظَّلِيلِ دَعَا اللَّهَ
مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى
الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا
إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ۝

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ وَاحْشُوا يَوْمًا
لَّا يَجْزِي وَالِدٌ عَنْ وَلَدِهِ وَلَا مَوْلُودٌ
هُوَ جَارِعٌ عَنْ وَالِدِهِ شَيْئًا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ
فَلَا تَعْرَبُوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَلَا يُعْرَبَكُمْ
بِاللَّهِ الْعَرُورُ ۝

إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ
الْغَيْثَ ۖ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ ۗ
وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا
وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ ۗ
إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۝

1. नैमत जां पुरस्कार दा मतलब ओह समगरी ऐ जो मानव जाति दे कम्म औंदी ऐ ते जिसी लेइयै ह्याज बगैरा बक्ख-बक्ख देसैं पासै जंदे रौहदे न।

سُورَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ أَحَدَى وَثَلَاثُونَ آيَةً وَثَلَاثَةٌ وَرُكُوعَاتٍ

सूर: अल्-सजदा

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां कत्तरी आयतां ते त्रै रुकू न।

मैं अल्लाह दा नांस लेइयै (पढ़ना) जो बे-
हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अ'ऊं अल्लाह आं ते सारें शा बद्ध जानने
आहला आं ॥ 2 ॥

الْعَمَّ

इस कताबा दा (जिसदी एह इक सूर: ऐ)
सारे ज्हांनें (लोकें) दे रब्ब पासेआ तुआरेआ
जाना इक जकीनी गल्ल ऐ, जेहदे च कोई
शक्क नेई ॥ 3 ॥

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ لَرَيْبٍ فِيهِ مِنْ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ①

क्या ओह लोक आखदे न जे इस शख्स
(यानी हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व.) ने
इस (कुरआन) गी अपने पासेआ बनाई लैता
ऐ। ऐसा नेई बल्के एह कताब तेरे रब्ब पासेआ
नाजल होने आहली (ते कायम रौहने आहली)
कताब ऐ तां जे तू उस कौम गी सोहगा करै
जेहदे कश तेरे थमां पैहलें कोई रसूल नेई
आया, तां जे ओह हदायत पांदे ॥ 4 ॥

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ
لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أُنْذِرُهُمْ مِنْ تَذِيرٍ مِّنْ قَبْلِكَ
لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ①

अल्लाह ओह ऐ जिसनै गासैं ते धरती गी ते
जो कुछ इनें दौनैं दे बश्कार ऐ उस सारै गी

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا

छें' दौरें च पैदा कीता, इसदे बा'द ओह मजबूती कन्नै अर्श (यानी अनुशासन दे संघासनै) पर बराजमान होई गेआ थुआड़ा उस (खुदा) दे सिवा नां कोई सच्चा दोस्त ऐ ते नां सफारशी (सफारश करने आहला) क्या तुस नसीहत हासल नेई करदे ॥ 5 ॥

ओह (अल्लाह) गासै थमां धरती तक अपने हुकम गी अपनी योजना मताबक लागू करग, फी ओह ओहदे पासै इक ऐसे समे च चढ़ना शुरू करग जिसदा अंदाजा ऐसे ज्हारें^१ बरें^२ दा ऐ जेहदे मताबक तुस संसार च गिनती करदे ओ ॥ 6 ॥

एह गैब ते हाजर (जाहर) गल्लें दा जानने आहला (खुदा) ऐ जो गालिब ते बार-बार रेहम करने आहला^३ ऐ ॥ 7 ॥

जिसनै जो कुछ बी पैदा कीता ऐ सर्वोत्तम शक्तियें कन्नै पैदा कीता ऐ ते इन्सान गी गिल्ली मिट्टी थमां पैदा कीता ऐ ॥ 8 ॥

फी उसदी नस्ल गी सधारण जनेही बगने आहली चीजै दे तत्व (बीरज) थमां पैदा कीता ऐ ॥ 9 ॥

بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى
الْعَرْشِ ۗ مَا لَكُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ
وَلَا شَفِيعٍ ۗ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٥﴾

يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ
ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ
أَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ﴿٦﴾

ذَٰلِكَ عِلْمُ الْعَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزِ
الرَّحِيمِ ﴿٧﴾

الَّذِي أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ
الْإِنْسَانِ مِنْ طِينٍ ﴿٨﴾

ثُمَّ جَعَلَ لِنَفْسِهِ مِنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ ﴿٩﴾

1. छें दौरें च जां छें महान परिवर्तनं च इस संसार दी उत्पत्ति होई। मूल शब्द 'यौम' (दिन) दा अर्थ अरबी भाषा च समां ते युग होंदा ऐ चाहे ओह करोड़ें बरें दा जां उंदे थमां बी ज्यादा लम्मा होऐ। लोकें धुल्ल-भलेखे नै दिनें दा अर्थ सूरज चढ़ने थमां लेइयै सूरज घराने तगरै दा समझी लैते दा ऐ। आयत दा मतलब एह ऐ जे छें दौरें च, थामें हर दौर किन्ना गै लम्मा होऐ, धरती ते गासै दी रचना कीती गेदी ऐ ते सभमां दौर शिष्टी गी पूरा करी देने दा आया। जिसलै अल्लाह नै अर्श थमां अपने विधान गी उतारना शुरू कीता, आखो उसदे साम्राज्य नै पूरी चाल्ली साकार रूप धारण करी लैता। इस चाल्ली शिष्टी दा मकसद पूरा होई गेआ।
2. बहाई लोक इस आयत दा गलत अर्थ करिये मुसलमानें गी धोखा दिंदे न जे इस्लाम दा जीवन सिर्फ इक जहार साल ऐ, फी ओह मन्सूख होई जाग ते बहाई धर्म उसदी थाहरा पर और। हालांके आयत दा अर्थ स्पष्ट ऐ जे इस्लाम जहार बरें च गासै पर चढ़ग। इस दा अर्थ मन्सूख होना कदें बी नेई होई सकदा, बल्के इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे इक जहार बरें तक मुसलमान लोक इस संसार च कमजोर होंदे जाउन, उसदे बा'द हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दी भविष्यवाणियें मताबक इस्लाम गी मजबूत बनाने आहला सुधारक आई जाग। असल स्थिति एह ऐ जे इससे सूर: दी आयत दस्स च लिखे दा ऐ जे अल्लाह किश महान शख्सीयतें गी चुनी लैदा ऐ ते उंदे पर ईशवाणी उतारदा ऐ।
3. अर्थात् ओह इस्लाम धर्म दा पुनरुत्थान करग।

फी उसी पूरी शक्तियां प्रदान कीतियां ते ओहदे च अपने पासेआ रूह' पाई ते थुआड़े आस्तै कन्न, अक्खीं ते दिल बनाए। पर तुस लेश मातर बी शुकर नेई करदे ॥ 10 ॥

ते ओह आखदे न जे क्या जिसलै अस धरती (मिट्टी) च मिली जागे तां असेंगी नमां जीवन देइयै नमें रूपै च खडेरी दिता जाग? (एह लोक इस नमें जीवन दे इन्कारी नेई) बल्के अपने रब्ब कनै मिलने दे इन्कारी? न ॥ 11 ॥

तूं आख जे ओह मौती दा फ़रिश्ता जो थुआड़े आस्तै नयुक्त कीता गोआ ऐ, जरूर थुआड़ी रूह अपने कब्जे च करग (कडढग)। फी तुसें गी अपने रब्ब कश भेजेआ जाग ॥ 12 ॥ (रुकू 1/14)

ते जेकर तुगी उस दशा दा ज्ञान होई जा जिसलै जे पापी (मुलजम) लोक अपने रब्ब सामनै अपना नींदा सिर सुट्टियै खडोते दे होडन ते आखा दे होडन जे हे साढ़े रब्ब ! असें (जो कुछ तोह गलाया हा) उसी दिक्खी लैता ते सुनी लैता। इस आस्तै हून तूं असेंगी बापस भेजी दे तां जे अस तेरे हुकमै मताबक कर्म करचै, हून असें तेरी गल्ला दा पूरा-पूरा जकीन करी लैता ऐ ॥ 13 ॥

ते जेकर अस चांहदे तां हर आदमी गी उसदी परिस्थितियें मताबक हदायत देई दिंदे, पर

ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِنْ رُوْحِهِ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ⑩

وَقَالُوا ءِذَا ضَلَلْنَا فِي الْأَرْضِ أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ بَلْ هُمْ بِلِقَائِ رَبِّهِمْ كَفِرُونَ ⑪

قُلْ يَتَوَفَّكُم مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِي وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ⑫

وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا رُءُوسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ رَبَّنَا أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ ⑬

وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدًىٰ وَلَكِن

1. अर्थात् शरीर पूरा बनी जाने दे बा'द शरीर सरबंधो आत्मा पाई ते आध्यात्मिकता दी पूर्ती दे बा'द ओहदे पर इलाही कलाम उतारदा ऐ।
2. यानी जेकर मरने दे बा'द दबारा जी उटठने दी शिक्षा होंदी ते कर्म दा लेखा लैने दी गल्ल नेई होंदी तां खुशी-खुशी मन्नी जंदे, पर अल्लाह दे सामनै पेश होने ते कर्म दा फल पाने दा बर्णन ऐ इस आस्तै इन्कार करदे न।
3. इस आयत च दस्सेआ गोदा ऐ जे जेकर तूं उस बेले दा नजारा दिक्खी सकें तां तुगी पता लगगी जाग जे ओह बे-हद लज्जा (शर्मिंदगी) मसूस करा करदे होडन।

मेरी गल्ल पूरी होई गई जे अऊं नरकै गी जरूर जिनें ते मनुक्खें कनै भरगा ॥ 14 ॥

इस आसतै अज्जै दे दिनै दी मलाटी गी भुल्ली जाने दी ब'जा करी ते अपने कर्मै करी चिरे तगर रौहने आहले अजाब दा मजा चक्खो ते (याद रक्खो जे) असें बी (अज्ज) तुसेंगी भुलाई दिता ऐ (यानी असें थुआड़ी परबाह करनी छोड़ी दिती ऐ) ॥ 15 ॥

साढ़ी आयतें पर ते ऊऐ लोक ईमान आहनदे न जे जिसलै उनेंगी उंदे बाँरे चेता कराया जंदा ऐ तां ओह सजदा करदे होई धरती पर डिग्गी पाँदे न ते अपने रब्ब दी स्तुति ते मैहमा गांदे न ते घमंड नेई करदे ॥ 16 ॥

ते उनें मोमिनें दे पैहलू उंदे बिस्तरें थमां बक्ख होई जंदे न (यानी तहज्जुद दी नमाज पढ़ने आसतै) ते ओह अपने रब्ब गी, ओहदे पासेआ औने आहले अज़ाबें थमां बचने आसतै ते उसदी रैहमत हासल करने आसतै पुकारदे न ते जे किश असें उनेंगी दिते दा ऐ ओहदे बिच्चा अल्लाह दे रस्ते पर खर्च करदे न ॥ 17 ॥

ते (सच्ची गल्ल एह ऐ जे) कुसै शख्स गी पता नेई जे इनें मोमिनें आसतै उंदे कर्मै दे सिले च अक्खीं गी ठंड पाने आहली केहड़ी-केहड़ी चीजां छपालियै रक्खियां गेदियां न ॥ 18 ॥

क्या, जेहका शख्स मोमिन होऐ ओह ओहदे नेहा होई सकदा ऐ जेहका आज्ञाकारी नेई होऐ? ऐसे लोक कदें बी इक बरोबर नेई होई सकदे ॥ 19 ॥

حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ
وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ①

فَذُوقُوا بِمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَذَا
إِنَّا نَسِينَكُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا
كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ②

إِنَّمَا يَوْمٌ مِّنْ بَيْنِ يَدَيْنِ إِذَا ذُكِّرُوا بِهَا
خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ
لَا يَسْتَكْبِرُونَ ③

تَتَجَافَى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ
رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ
يُنْفِقُونَ ④

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّنْ
قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً لِّمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑤

أَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا
لَّا يَسْتَوُونَ ⑥

ओह लोक जेहके ईमान ल्याए दे न ते उनें ओहदे मताबक कर्म कीते न उंदे रौहने आस्तै उत्तम सुर्ग होडन। एह उदे कर्म मताबक अतिथि-सत्कार होग ॥ 20 ॥

ते जेहके लोक आज्ञा थमां बाहर निकली गेदे न उनेंगी रौहने आस्तै नरक मिलग। ओह जिसलै कदें ओहदे बिच्चा निकलने बारै इरादा करडन तां उससै च बापस भेजी दित्ते जाडन ते उनेंगी आखेआ जाग जे हून नरक दे उस अज्ञाब गी चक्खो जिसी तुस झूठ आखदे होंदे हे ॥ 21 ॥

ते उस औने आहले बड़डे अज्ञाब थमां पुज्ज अस (इस संसार दा) निक्का अज्ञाब बी उनेंगी चखागे तां जे ओह (खुदा पासै) परतोन (ते तोबा करन) ते आखरत दे अज्ञाब थमां बची जान ॥ 22 ॥

ते जिस शख्स गी उसदे रब्ब दियां आयतां चेता कराइयां जान, पर ओह फी बी उंदे थमां मूंह फेरै तां उस शा बदध दूआ कु'न जालम होई सकदा ऐ? यकीनन अस मुजरमें कनै बदला लैगे ॥ 23 ॥ (रुकू 2/15)

ते असें मूसा गी कताब दित्ती ही। इस लेई तूं बी इक कामिल कताब दे मिलने बारै शक्क नेई कर (दुबधा च नेई पौ) ते असें उस (कताबा) गी बनी इस्म्राईल आस्तै हदायत बनाया हा ॥ 24 ॥

ते असें उंदे बिच्चा मुखिया/इमाम¹ बनाए हे जेहके साढ़े हुकमै मताबक लोके गी हदायतां

أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ جَنَّاتُ الْمَأْوَىٰ نُزُلًا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٠﴾

وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿٢١﴾

وَلَنذِيقَنَّهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْأَذَىٰ الَّذِي دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢٢﴾

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِالْآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ ﴿٢٣﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَاتُكُنْ فِي مَرْيَةٍ مِّنْ لِّقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٤﴾

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ إِمَّةً يَهْتَدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا

1. यानी उनेंगी सुधारक बनाया ते उंदे पर वहाँ नाजल कीती ही जे लोके दा सुधार करो।

दिंदे हे, इस ब'जा कन्नै जे उनें धीरज' थमां कम्म लैता ते ओह साढ़ी आयतें पर पूरा भरोसा रखदे हे ॥ 25 ॥

तेरा रब्ब ते ओह ऐ जो उंदे (कलामे इलाही पुजाने आहलें ते उंदे बरोधियें) बशकार क्यामत आहलै दिन ऐसी गल्लें बारै फैसला करग जिंदे बारै ओह मतभेद रखदे होंदे हे ॥ 26 ॥

क्या उनेंगी इस गल्ला थमां हदायत हासल नेई होई जे असें उंदे थमां पैहलें मते-हारे युगें दे लोकें दा सर्वनाश करी दिता हा ते हून एह लोक उंदे गै घरें चलदे-फिरदे न। यकीनन एहदे च बड़े-सारे नशान न, पर केह ओह सुनदे नेई? ॥ 27 ॥

क्या उनें दिक्खेआ नेई जे अस इक बंजर धरती पासै पानी कडिढ्यै लेई जन्ने आं, फी ओहदे (पानी) राहें खेती उगाने आं जेहदे चा उंदे चौखर बी खंदे न ते ओह आपू बी खंदे न। क्या ओह दिखदे नेई ॥ 28 ॥

ते ओह आखदे न जे जेकर तुस सच्चे ओ तां दस्सो जे एह विजय? जेहदा तुस बर्णन करदे ओ, कदू होग? ॥ 29 ॥

صَبْرُوا ۞ وَكَانُوا بِالْبَيِّنَاتِ يُوقِنُونَ ۞

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۞

أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسْجِدِهِمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ ۞ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ۞

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنَخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ ۞ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ۞

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْفَتْحُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۞

1. यानी जदू कदें संसार च खराबी पैदा होई तां किश भले लोकें धर्म दी रक्खेआ ते अल्लाह दे सच्चे ग्रंथें दा प्रचार शुरू कीता, पर जेहके लोक बुरी दशा च पुज्जी चुके दे हे उनें, उनें भले लोकें पर अत्याचार करना शुरू करी दिने, पर ओह अपनी शिक्षा दीक्षा ते प्रचार बगैरा दे नेक कम्म च धीरज कन्नै डटे दे रेह ते उनें उंदे अत्याचार बरदाश्त कीते। आखरकार अल्लाह नै उंदे अस बलिदान गी दिक्खियै उंदे पर वह्नी नाजल कीती ते उनेंगी उस युगें दा सुधारक नयुक्त करी दिता तां जे जेहका कम्म ओह पैहलें अपनी मरजी कन्नै करदे होंदे हे हून खुदा दी वह्नी मताबक करन।
2. इथें विजय दा मतलब इन्कार करने आहलें दे विनाश दी ओह सूचना ऐ जिस दी चर्चा पैहलें होई चुकी ऐ जे क्यामत दे अजाब थमां पैहलें इस संसार च बी उनेंगी अजाब मिलग तां जे ओह नसीहत हासल करन। आयत 27 च आखेआ गोदा ऐ जे उंदे थमां पैहले लोकें दा बी सर्वनाश कीता गोआ हा। क्या एह उंदे थमां बी नसीहत हासल नेई करदे जे उंदी बारी बी औने आहली ऐ। उनें लोकें दा देश इनेंगी मिले दा ऐ तां उनें लोकें जनेह बुरे कर्म करने पर इनेंगी स'जा बी ते भोगनी पौग।

तू आखी दे जे उस विजय¹ आहलै रोज
इन्कार करने आहलें गी उंदा ईमान फायदा नेई
देग ते नां गै उनेंगी दिल्ली दिती जाग ॥ 30 ॥

قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوا
إِيمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْتَظَرُونَ ﴿٣٠﴾

इस आस्तै तू उनेंगी छोड़ी दे ते (उंदे परिणाम
दा) इंतजार कर। ओह बी किश चिरै तक
अजै होर इंतजार करडन ॥ 31 ॥ (रुकू 3/
16)

فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ إِنَّهُمْ
مُتَنَبِّطُونَ ﴿٣١﴾

ooo

-
1. विजय दे मौकै ईमान आहने आहले लोक किश संसारक लाभ ते लेई लैंदे न मगर आखरत दे इनाम उनेंगी
घट्ट गै मिलदे न, सवाए इस दे जे जेकर ओह नेक कर्म च बड़े ज्यादा अगें बधी जान ते ईमान आहने
च चिर लाने दा कफ़ारा (प्राह्वित) करी देन।
-



सूर: अल्-अहज़ाब

एह सूर: मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां चरहत्तर आयतां ते नौ रुकू न।

मैं अल्लाह दा नांs लेइयै (पढ़ना) जो बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

हे नबी! अल्लाह आस्तै संयम धारण कर ते इन्कार करने आहलें ते मुनाफिकें दी गल्ल नेई मन्न। यकीनन अल्लाह बौहत जानने आहला ते बड़ी हिक्मत आहला ऐ ॥ 2 ॥

ते सिर्फ उस वह्दी उप्पर चलो जो तेरे रब्ब पासेआ तेरे पर तुआरी जंदी ऐ। अल्लाह थुआड़े कमें गी चंगी-चाल्ली जानदा ऐ ॥ 3 ॥

ते अल्लाह पर भरोसा रक्ख ते अल्लाह कारसाज होने दे नातै काफी ऐ ॥ 4 ॥

अल्लाह नै कुसै मनुक्खै दे सीने च दो दिल नेई बनाए ते नां गै थुआड़ी जनानियें दे जिनेंगी तुस कदें माता आखी दिंदे ओ, थुआड़ी माता बनाया ऐ ते नां थुआड़े ले-पालकें/मतबनें गी थुआड़ा पुत्तर बनाया ऐ। एह सब थुआड़े मूहें दियां गल्लां न ते अल्लाह गै सच्ची गल्ल आखदा ऐ ते ऊऐ सिद्धा रस्ता दसदा ऐ ॥ 5 ॥

उनें ले-पालकें/मतबनें गी उंदे बब्बैं दा पुत्तर आखियै बुलाओ। एह अल्लाह दे लागै ज्यादा

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ
وَالْمُنَافِقِينَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ②

وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ ۗ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ③

وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ④

مَا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ مِنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهِ ۗ
وَمَا جَعَلَ أَرْوَاجَكُمْ إِلَى النَّاسِ تَطْهَرُونَ
مِنْهُمْ ۗ أَمْ هُمْ كُمْ ۗ وَمَا جَعَلَ أَدْعِيَاءَكُمْ
أَبْنَاءَكُمْ ۗ ذَلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِأَفْوَاهِكُمْ ۗ
وَاللَّهُ يَقُولُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيلَ ⑤

أَدْعُوهُمْ لِأَبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ ۗ

न्यांs संगत गल्ल ऐ ते जेकर तुसै गी एह पता नेई जे उंदे बब्ब कु'न न, तां फी बी ओह थुआड़े धर्म भ्राऽ न ते धर्म मित्तर न ते जो तुस भुल्ल-भलैखै पैहलें करी चुके दे ओ ओहदे बारै तुंदे पर कोई पाप नेई, पर जिस गल्लै बारै थुआड़े दिल फैसला करी चुके दे होन (ओह स'जा दे काबल ऐ) ते अल्लाह (हर तोबा करने आहले आस्तै) बौहत बख़शने आहला (ते) बार-बार कर्म करने आहला ऐ ॥ 6 ॥

नबी मोमिनें थमां उंदी अपनी जानै दी निसबत बी ज्यादा नेडै। ऐ ते उस दियां घरै-आहलियां (लाडियां) उंदियां मामां न। (नाता नेई रख्खने आहले) मोमिनें ते मुहाजिरें दी निसबत खूनी रिशता नाता रख्खने आहले सरबंधी अल्लाह दी कताबा मताबक इक-दूए दे ज्यादा नेडै न। हां! अपने मित्तरें कनै थुआड़ा चंगा ब्यहार करना (चंगी गल्ल ऐ)। एह गल्ल कुरआन च लिखी जाई चुकी दी ऐ ॥ 7 ॥

ते (याद करो) जिसलै असें नबियै बिच्चा उंदे जिम्मै लाई दी इक खास गल्लै दा बा'यदा लैता हा ते तेरे थमां बी (बा'यदा लैता हा) ते नूह ते इब्राहीम ते मूसा ते मर्यम दे पुत्तर ईसा थमां बी ते असें उंदे सारें थमां इक

فَإِنْ لَّمْ تَعْلَمُوا آبَاءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِي
الدِّينِ وَمَوَالِيكُمْ ۗ وَكَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ
فِيْمَا اَخْطَاْتُمْ بِهِ ۗ وَلٰكِنْ مَا تَعَدَّتْ
قُلُوْبُكُمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

التَّحِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ
وَازْوَاجَهُ اُمَّهَاتِهِمْ ۗ وَاَوْلُوْا الْاَرْحَامِ
بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِى كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ اِلَّا اَنْ تَفْعَلُوْا
اِلٰى اَوْلِيَّيْكُمْ مَّعْرُوْفًا ۗ كَانَ ذٰلِكَ
فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ۝

وَ اِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّنَ مِيثَاقَهُمْ مِنْكَ
وَمِنْ نُوْحٍ وَّ اِبْرٰهِيْمَ وَاٰمُوْسٰى وَعِيسٰى
ابْنِ مَرْيَمَ ۗ وَاَخَذْنَا مِنْهُم مِّيثَاقًا عَلِيْظًا ۝

1. इस दा एह मतलब ऐ जे अपने सरबंधियें दियां जेहकियां गल्लां दस्सना मनासब नेई ते जेहकियां गल्लां छपैली रख्खना मनुक्खै आस्तै मनासब ऐ ओहदे थमां बी बद्ध नबी दे बारे च सोहरो रौहने दी जरूरत होंदी ऐ। इसै आस्तै अल्लाह नै नबी गी मोमिनें दा पिता ते उसदी धर्म-पलियें गी मामां करार दिते दा ऐ, की जे जेकर इस चाल्ली नबी ते उस दी धर्म-पलियें गी दूए मोमिनें थमां मता सम्मान नेई दिता जंदा तां जिनें गल्लें गी छपालना जरूरी हा ओह छपालियां नेई जंदियां ते जिनें गल्लें गी जाहर करना जरूरी हा ओह जाहर नेई होंदियां। इतिहास थमां सिद्ध होंदा ऐ जे हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दी धर्म-पलियें थुआड़ी कुसै गल्लै गी नेई छपालेआ। इस आस्तै एहदा एह मतलब नेई जे नबी कोई पाप करदा हा जिसी छपालेआ जाना लोड़दा हा, बल्के असल मकसद एह होंदा ऐ जे जेकर नबी दे सारे कम्मं दा पता उंदे अनुयायियें गी लाग्गी जा जेहके ओह अपने घरै च करदा हा जिनेंगी ओहदी धर्म-पलियें दे सिवा दूआ कोई नेई जानदा हा, तां अनुयायी उनें कम्मं दा अनुसरण करने दी कोशश करियै कश्टें च पेई जंदे।

पक्का' बा'यदा लैता हा। ॥ 8 ॥

तां जे अल्लाह सच्चे लोकें गी उंदी सचाई दे बारे च सुआल करै ते उसनै इन्कार करने आहलें आस्तै इक दर्दनाक अज़ाब त्यार करियै रक्खे दा ऐ ॥ 9 ॥ (रुकू 1/17)

हे मोमिनो! अल्लाह दी उस नैमत गी याद करो जो उसनै तुसंगी उसलै प्रदान कीती जिसलै थुआड़े पर किश लश्कर चढ़ाई करी बैठे हे ते असें उंदे पासै इक हवा² भेजी ही ते नेहियां फौजां भेजियां हियां जेहकियां तुसें गी लभदियां नथियां ते अल्लाह थुआड़े कर्मे गी चंगी-चाल्ली दिखदा ऐ ॥ 10 ॥

(हां! उस बेले गी याद करो) जिसलै जे थुआड़े दुश्मन थुआड़े पर उप्परा दा बी हल्ला बोल्ली बैठे हे ते ख'ल्ला दा बी आई गे हे ते जिसलै जे अक्खीं घबराट कनै फिरकी गेइयां हियां ते कलेजे मूहें च आई गे हे ते तुस अल्लाह दे बारे च केई चाल्ली दे शकूकें च पेई गेदे हे ॥ 11 ॥

उस बेले मोमिन लोक इक बड़डे इम्तिहानै च पाई दिते गे हे ते ओह बुरी चाल्ली ल्हाई दिते गे हे ॥ 12 ॥

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै जे मुनाफ़िक़ लोक ते जिंदे दिलें च रोग हा,

يَسْئَلُ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صٰدِقِهِمْ ۗ وَاعَدَّ
لِلْكَافِرِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝۸

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ اِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ فَاَرْسَلْنَا
عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَجُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا ۗ وَكَانَ
اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ۝۱۰

اِذْ جَاءَتْكُمْ مِنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ
مِنْكُمْ ۗ وَاِذْ رَاَعَتْ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتْ
الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ ۗ وَتَنظَّرُوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَ ۝۱۱

هٰذَا لِكِ اِبْتِلٰى الْمُؤْمِنُوْنَ وَرَلُّوْا زِلْزَالَآ
شَدِيْدًا ۝۱۲

وَ اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ

1. इस वचन च सूर: 'आले इमान' दी आयत 82 आहलें पासै संकेत ऐ जे हर नबी गी उसदे बा'द च औने आहले नबी दा शुभ समाचार दिता गेआ हा। उसदी कौम आस्तै उस नबी पर ईमान आहना जरूरी करार दिता गेआ हा।
2. एहदे च अहज़ाब नांउ दे युद्धै दा बर्णन ऐ, जिस दिन बैरी गी विजय हासल करने दा पूरा-पूरा भरोसा हा। ठीक उससै दिन तेज हवा चली ते रातीं बेलें बैरी दे कैंपें च अगग बुझी गई, जिसी अरब नवासी अशुभ मनदे हे। ऐसा दिक्खियै सारे सैना पति अपने साथियें गी लेइयै नस्सी गे ते मुसलमान उंदे हमले थमां बची गे।

आखन लगी पे हे जे अल्लाह ते उसदे रसूल नै साढ़े कनै सिर्फ इक झूठा बा 'यदा कीता हा ॥ 13 ॥

ते जिसलै जे उंदे बिच्चा इक गरोह एह बी गलान लगी पेआ हा जे हे मदीना आहलेओ! हून थुआड़े आसतै कोई ठकाना नेई ऐ। इस आसतै (इस्लाम धर्म दा) इन्कार करी देओ ते उंदे बिच्चा इक गरोह नबी थमां अजाजत मंगन लगी पेआ हा ते गलान लगी पेआ हा जे साढ़े घर बैरी दी मारा हेठ न, हालांके ओह घर बी मारा हेठ नेई हे। ओह लोक सिर्फ नस्सी जाने दा मन बनाऽ करदे हे ॥ 14 ॥

ते जेकर मदीना दी बक्ख-बक्ख दिशाएं थमां उंदे पर फौजां चढ़ाई करी देन ते फौ उंदे (इन्कार करने आहलें) पासेआ इस्लाम धर्म गी त्यागने दी मांग कीती जा तां एह जरूर उंदी इस मांग गी मन्नी लैडन, पर ओह एहदे बा 'द ओहदे (मदीने) च थोड़ा चिर गै रेही सकडन' ॥ 15 ॥

ते (सच्च एह ऐ जे) इस शा पैहलें उनें (मुनाफिकें) अल्लाह कनै बचन (ऐहद) कीता हा जे ओह कदें बी पिट्ट नेई फेरडन (ते अटल रौहडन) ते अल्लाह कनै कीते गेदे बचन बाँरे जरूर सुआल कीता जाग ॥ 16 ॥

तू उनेंगी आखी दे जे जेकर तुस मौती शा जां खून-खराबे शा नसगे ओ तां थुआड़ा नस्सना तुसेंगी कदें बी फायदे नेई देग ते इस सूरत च तुस कोई बी फायदा नेई लेई सकगे ओ? ॥ 17 ॥

قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ ۖ مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ
إِلَّا غُرُورًا ۝

وَإِذْ قَالَتْ طَّائِفَةٌ مِّنْهُمْ يَا أَهْلَ يَثْرِبَ لَا
مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا ۖ وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ
مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ ۚ
وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۖ إِنَّ يُرِيدُونَ الْإِفْرَارَ ۝

وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ
سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَأْتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوا بِهَا
إِلَّا يَسِيرًا ۝

وَلَقَدْ كَانُوا عَاهَدُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ
لَا يُوَلُّونَ الْأَدْبَارَ ۖ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ
مَسْئُولًا ۝

قُلْ لَنْ يَنْفَعَكُمْ الْفِرَارُ إِنِ فَرَرْتُمْ
مِّنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذًا لَا تَمْتَحُونَ
إِلَّا قَلِيلًا ۝

1. इस्लाम धर्म छोड़ी देने पर बी इन्कार करने आहले लोक उंदा पिंड नेई छोड़डन उंदी (खलासी नेई करडन), की जे उंदे दिलें च मुसलमान खुआने आहले हर शख्स दे बारे च बैर ते जैहर भरे दा ऐ, भामें ओह मुसलमान सिर्फ नाँऽ दा गै होऐ।
2. यानी जेकर तुस नसगे ओ तां इन्कार करने आहले लोक थुआड़ा खून करी देडन जां अल्लाह तौले गै इस्लाम गी बिजयी बनाई देग ते मुसलमान तुसें गी स'जा देडन जियां के अगली आयत थमां साफ पता लगदा ऐ।

तू आखी दे जे जेकर ओह तुसेंगी स'जा देना चाह तां कु'न ऐ जेहका तुसेंगी अल्लाह दी पकड़ थमां बचाग? जां जेकर ओह थुआड़े पर रहैम करना चाह (तां कु'न तुसेंगी उस थमां बंचत करी सकदा ऐ?) ओह अल्लाह दे सिवा अपने आस्तै नां कोई सच्चा दोस्त पाडन ते नां कोई मददगार (यानी जिसलै बी कम्म और, खुदा गै और) ॥ 18 ॥

अल्लाह उनें लोकें गी चंगी-चाल्ली जानदा ऐ जेहके तुंदे बिच्चा दूरें गी (जिहाद राहें) पिच्छें हटांदे हे। ते अपने भ्राएं कनै आखदे हे जे साढ़े पासै आओ (ते जिहाद च शामिल नेई होओ) ते ओह आपू बी बैरी कनै बिल्कुल जंग नथे करदे ॥ 19 ॥

ओह थुआड़े बारे च बौहत कंजूसी करने आहले न (यानी ओह कदें बी नेई चाहदे जे तुसें गी कोई चंगा सिला थ्होऐ) ते जिसलै उंदे पर कोई भैऽ दा समां आवै (साया मंडरा) तां तू उनेंगी दिखगा जे ओह तेरे पासै इस चाल्ली दिखदे न जे उंदी अक्खीं दे डेहले भलेआं उस मनुक्खै दी अक्खीं आंगर फिरा करदे होंदे न जेहका मंडली पर टकाए दा होऐ, फी जिसलै खौफ दा समां बीती जंदा ऐ तां तेरे पर (तलोआरी आंगर कट्टी देने आहली) जबान चलांदे न। ओह हर भलाई दे बारे च कन्जूसी थमां कम्म लेंदे न। (जे ओह तुसें गी नेई थ्होऐ)। एह लोक असल च ईमान ल्याए दे गै नेई हे। इस आस्तै अल्लाह नै उंदी (इस्लाम दे बरुद्ध) सारी कोशशां नकाम करी दित्तियां ते अल्लाह आस्तै एह गल्ल असान ही ॥ 20 ॥

قُلْ مَنْ ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُمْ مِنَ اللَّهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۗ وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝

قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمَعْوِفِينَ مِنْكُمْ وَالْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا ۚ وَلَا يَأْتُونَ الْبَاسَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

أَشْحَةً عَلَيْكُمْ ۗ فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ تَدْوُرًا أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَإِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوكُمْ بِالسِّنَةِ حِدَادٍ أَشْحَةً عَلَى الْخَيْرِ ۗ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَطَ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ ۗ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝

ते एह लोक ते हून बी इयै आस लाई बैठे दे न जे काश अजें बैरी दियां फौजां उठी नेई गेदियां होन, हालांके (इन्कार करने आहलें दी) फौज बापस परतोई आवै तां (उंदे परती औने पर खुशी दी बजाए) एह लोक चाहडन जे काश! ओह जंगली लोकें च बास करा करदे होंदे (ते हे मोमिनो!) थुआड़े बारे च (लोकें थमां) पुच्छ-गिच्छ करा करदे होंदे' ते जेकर एह (जरूरतै मौकै) थुआड़ै कनै रौहदे तां बी थुआड़े हक्क च कदें बी नेई लड़दे ॥ 21 ॥ (रुकू 2/18)

थुआड़े आस्तै (यानी ऐसे लोकें आस्तै) जेहके अल्लाह ते आखरत आहले ध्याड़े कनै मिलने दी मेद रखदे न ते अल्लाह दा बड़ा जिकर करदे न। अल्लाह दे रसूल च इक बौहत अच्छा नमूना (आदर्श) ऐ (जिसदा उनें अनुसरण करना लोड़दा) ॥ 22 ॥

इस आस्तै (दिक्खो) जिसलै सच्चे मोमिनें हमलाआवर लश्करें गी दिक्खेआ तां गलाया जे एह ते ऊऐ (लश्कर)² न जिंदा अल्लाह ते उसदे रसूल नै साढ़े कनै बा'यदा कीता हा ते अल्लाह ते उसदे रसूल नै बिल्कुल सच्च गलाया हा ते इस घटना नै उनेंगी ईमान ते आज्ञा पालन करने च होर बी बधाया (कमजोर नेई कीता) ॥ 23 ॥

इनें मोमिनें बिच्च किश लोक नेह न जिनें उस बा'यदे गी जेहका उनें अल्लाह कनै कीता हा, सच्चा करी दिता। ते किश ते ऐसे न जिनें अपने इरादे गी पूरा करी दिता (यानी लड़दे-

يَخْسَبُونَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا^٥ وَإِنْ
يَأْتِ الْأَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ أَنَّهُمْ بَادُونَ
فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ أَنْبَاءِكُمْ^٦
وَلَوْ كَانُوا فِيكُمْ مَا قَاتَلُوا إِلَّا قَلِيلًا^٧ ﴿٣٣﴾

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ
حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ
وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا^٨ ﴿٣٤﴾

وَلَمَّا رَأَى الْمُؤْمِنُونَ الْأَحْزَابَ لُقَاتُوا
هَذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَصَدَقَ
اللَّهُ وَرَسُولُهُ^٩ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا
وَتَسْلِيمًا^{١٠} ﴿٣٥﴾

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا
اللَّهِ عَلَيْهِ^{١١} فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضَى نَحْبَهُ

1. यानी ओह लोकें थमां पुच्छा करदे होंदे जे मुसलमान अजें जींदे न जां उंदा सर्वनाश होई चुके दा ऐ।
2. कुरआन करीम च अहज़ाब (संयुक्त दलें) दे हमला करने दी सूचना पहेलें थमां गै दिती जाई चुकी दी ही।
दिक्खो सूर: क्रमर आयत 46 ते सूर: साद आयत 12, इत्थें उसै हमले बारे संकेत दिता गेदा ऐ।

लड़दे मरोईं गे) ते उंदे बिच्चा किश ऐसे बी हैंन जेहके अजें बलगा करदे न ते अपने इरादे च कोई कमजोरी जां तबदीली नेईं औन दित्ती ॥ 24 ॥

इस दा परिणाम एह होग जे अल्लाह ऐसे सच्चे लोकें गी उंदी सचाई दा बदला देग ते जेकर चाहग तां मुनाफिक्रें गी अजाब देग। जां उंदे पर रैहम करग ते अल्लाह यकीनन बौहत बख्शाने आह्ला (ते) बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 25 ॥

ते (सचाई एह ऐ जे) अल्लाह नै इन्कार करने आहलें गी उंदे गुस्से समेत (मदीना थमां) बापस परताईं दित्ता ते कुसै चाल्ती दा फायदा उनेंगी नेईं पुज्जा, ते अल्लाह नै मोमिनें पासेआ आपूं लड़ाईं कीती ते अल्लाह बौहत ताकतवर (ते) गालिब ऐ ॥ 26 ॥

ते उस (अल्लाह) नै उनें (कताब आहलें) गी जिनें उंदी (हमलाआवर मुश्रिकें दी) मदद कीती ही, अपने किलें थमां उतारी (कड्ढी) दित्ता ते उंदे दिलें च थुआड़ी धाक बठाईं दित्ती। इत्थें तक जे तुस उंदे बिच्चा इक हिस्से दा खून करने ते इक हिस्से गी बंदी बनाने च सफल होईं गे ॥ 27 ॥

ते उंदी जमीनें, उंदे घरें ते उंदे माल-सबाब दा तुसें गी बारस बनाईं दित्ता ते उस धरती दा बी, जेहदे पर अजें थुआड़े पैर! नेईं पे, ते अल्लाह हर गल्ल करने च पूरी-पूरी समर्थ रखदा ऐ ॥ 28 ॥ (रुकू 3/19)

وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ ۗ وَمَا بَدَّلُوا
تَبَدُّلًا ۝

يَجْرِي اللَّهُ الصَّادِقِينَ بِصَدَقِهِمْ وَيُعَذِّبُ
الْمُنْفِقِينَ إِنْ شَاءَ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۗ إِنَّ
اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعِظِهِمْ لَمْ يَأْتُوا
حَيًّا ۗ وَكَفَى اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ الْقِتَالَ ۗ
وَكَانَ اللَّهُ قَوِيًّا عَزِيمًا ۝

وَأَنْزَلَ الَّذِينَ ظَاهَرُوا مِنْهُمْ مِنْ
أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ صَيَاصِيهِمْ وَقَذَفَ
فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ ۚ فَرِيقًا تَقْتُلُونَ
وَتَأْسِرُونَ فَرِيقًا ۝

وَأَوْرَثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ
وَأَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَمْ تَطَّوُّهَا ۗ
وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۝

1. यानी खैबर दा खेतर। इत्थें एह भविष्यवाणी कीती गेदी ऐ जे खैबर गी मुसलमान जीती लैडन, फी इयां गे होआ।

हे नबी! अपनी धर्म-पत्नियों गी आख जे जेकर तुस दुनियां ते उसदी शोभा चांहदियां ओ तां आओ अ'ऊं तुसें गी किश संसारक समान देई दिन्ना ते तुसेंगी चंगी नेक नीती कनै बिदा करना (बरधान्ना) ॥ 29 ॥

ते जेकर तुस अल्लाह, उस दे रसूल ते आखरत दी जिंदगी दा घर चांहदियां ओ तां अल्लाह नै तुंदे बिच्चा पूरी चाल्ली इस्लाम पर कायम रौहने आहलिये आसतै बौहत बड्डा इनाम सोची रक्खे दा ऐ ॥ 30 ॥

हे नबी दी धर्म-पत्नियो! जेकर तुंदे बिच्चा कोई उत्तम ईमान दे खलाफ गल्ल' करै, तां उसदी स'जा दूनी करी दित्ती जाग। ते एह गल्ल अल्लाह आसतै बड़ी सखल्ली ऐ ॥ 31 ॥

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لَأَزُوجِكُمْ إِن كُنْتُمْ تُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزَيَّنْتَهَا فَيَتَعَالَيْنَ أَمْثَعُنَّ وَأَسْرَحُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ۝

وَإِنْ كُنْتُمْ تُرِيدُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالذَّارِ
الْآخِرَةَ فَإِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْمُحْسِنَاتِ مِنْكُمْ
أَجْرًا عَظِيمًا ۝

يُنِسَاءَ النَّبِيِّ مَن يَأْتِ مِنْكُم بِفَاحِشَةٍ
مُّبِينَةٍ يُضَعَّفُ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ
وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝

1. मूल शब्द 'फ़ाहिशा:' उस बुरे कर्म गी आखदे न जेहदी बुराई लब्धै। की जे नबी दी धर्म-पत्निये गी उत्तम थमां उत्तम कर्म करने दी शिक्षा दित्ती गेदी ऐ इस आसतै जेकर उंदे कशा कोई नेहा कम्म होई जा जेहका उत्तम दर्जे दी नेकी ते नेई, पर इक सधारण जनेही नेकी ऐ तां बी अरबी भाशा दे मुहावरे च उसी 'फ़ाहिशा:' आखेआ जाग।

के तुंदे बिच्चा जेहकी कोई अल्लाह दी ते उसदे रसूल दी फरमांबरदारी करग ते उस (फरमांबरदारी दी शान) दे मताबक कर्म बी करग तां अस उसी इनाम बी दुगना देगे ते असें हर ऐसी (धर्म-पत्नी) आस्तै इफ़्तत दी रोजी त्यार कीती दी ऐ ॥ 32 ॥

हे नबी दी धर्म पत्नियो! जेकर तुस अपने मकाम समझो तां तुस आम जनानियें आंगर नेई ओ! इस आस्तै चापी-चापी (नाज-नखरें कन्नै) गल्ल नेई करा करो। ऐसा नेई होऐ जे जिसदे दिलै च रोग (विकार) होऐ ओह् थुआड़े बारै कोई बुरा बिचार करी लै ते म्हेशां लोकें गी नेक गल्लां आखा (सलाह देआ) करो ॥ 33 ॥

ते अपने-घरें बेही र'वा करो ते पुराने समें दी अज्ञानता (दे रीति-रिवाजें) मताबक अपनी सुंदरता (पराए लोकें सामनै) जाहर नेई करा करो ते नमाज़ गी (शरतें मताबक) पढ़ा करो। ते ज़कात देआ करो। ते अल्लाह ते उसदे रसूल दी आज्ञा दा पालन करग करो। हे नबी दे कटुंबी जनो! अल्लाह तुंदे बिच्चा हर चाल्ली दी गंदगी गी दूर करना चांहदा ऐ ते तुसेंगी पूरी चाल्ली पवित्तर करना चांहदा ऐ ॥ 34 ॥

ते थुआड़े घरै च अल्लाह दी जो आयतां ते हिक्मत दियां गल्लां पढ़ियां सुनाइयां जंदियां न उनेंगी चेता रक्खो। अल्लाह बौहत मेहर करने आह्ला (ते) खबर रक्खने आह्ला ऐ ॥ 35 ॥
(रुकू 4/1)

وَمَنْ يَقْنُتْ مِنْكُمْ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ
وَتَعْمَلْ صَالِحًا تَوْتَّهَا أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ
وَأَعَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيمًا ۝

يُنْسَاءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَأَحَدٍ مِنَ النِّسَاءِ إِنَّ
التَّقِيَّتْ بَلَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ
الَّذِي فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۝

وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ
الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَى وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ وَآتِينَ
الزَّكَاةَ وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِنَّمَا يُرِيدُ
اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ
وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا ۝

وَأذْكُرْنَ مَا يُثَلَّى فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ
وَالْحِكْمَةِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا ۝

यकीनन कामिल मुसलमान मर्द ते कामिल मुसलमान जनानियां ते कामिल मोमिन मर्द ते कामिल मोमिन जनानियां ते कामिल फरमांबरदार मर्द ते कामिल फरमांबरदार जनानियां ते कामिल सच्च बोलने आहले मर्द ते कामिल सच्च बोलने आहलियां जनानियां ते कामिल सबर करने आहले मर्द ते कामिल सबर करने आहलियां जनानियां ते कामिल लहीमगी दस्सने आहले मर्द ते कामिल लहीमगी दस्सने आहलियां जनानियां ते कामिल दान करने आहले मर्द ते कामिल दान करने आहलियां जनानियां ते कामिल रोज़ा रक्खने आहले मर्द ते कामिल रोज़ा रक्खने आहलियां जनानियां ते अपने गुप्त अंगें दी पूरी चाल्ली फहाजत करने आहले मर्द ते अपने गुप्त अंगें दी पूरी चाल्ली फहाजत करने आहलियां जनानियां ते अल्लाह दा ज्यादा जिकर करने आहले मर्द ते अल्लाह दा ज्यादा जिकर करने आहलियां जनानियां इंदे सारें आस्तै अल्लाह नै बख़शिश दा समान ते बौहत बड़ा इनाम त्यार करियै रक्खे दा ऐ ॥ 36 ॥

ते कुसै मोमिन मर्द जां मोमिन औरत आस्तै जायज़ नेई जे जिसलै अल्लाह ते उस दा रसूल कुसै गल्लै बारै फैसला करी देन तां ओह (फी बी) अपने मामले दा अपनी मरजी कनै फैसला करन ते जो कोई अल्लाह ते उसदे रसूल दी ना-फरमानी करदा ऐ, ओह खु'ल्ली-खु'ल्ली गुमराही च पेई जंदा ऐ ॥ 37 ॥

ते (हे नबी! याद कर) जिसलै तू उस शख्स गी जिस पर अल्लाह नै ते तोह उपकार कीता हा, आखदा हा जे अपनी जनानी गी रोकी रक्ख (ते तलाक नेई दे)

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَنَاتِينَ وَالْقَنَاتِ
وَالصّٰدِقِينَ وَالصّٰدِقَاتِ وَالصّٰبِرِينَ
وَالصّٰبِرَاتِ وَالْخٰشِعِينَ وَالْخٰشِعَاتِ
وَالْمُتَّصِدِّقِينَ وَالْمُتَّصِدِّقَاتِ وَالصّٰبِئِينَ
وَالصّٰبِئَاتِ وَالْحٰفِظِينَ وَالْحٰفِظَاتِ فَرُوجَهُمْ
وَالْحٰفِظَاتِ وَالذّٰكِرِينَ اللّٰهُ كَثِيْرًا
وَالذّٰكِرَاتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً
وَاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۳۶﴾

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى
اللّٰهُ وَرَسُوْلُهُ أَمْرًا أَنْ يَكُوْنَوْا لَهُمْ
الْخِيْرَةَ مِنْ أَمْرِهُمْ وَمَنْ يَعْصِ اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُّبِيْنًا ﴿۳۷﴾

وَإِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْۤ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ
وَاطَّقِ اللّٰهَ وَتَخَفِ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ

ते अल्लाह दा तक्रवा (संयम) अखत्यार कर ते तू अपने दिलै च ओह गल्ल छपाला दा हा जिसगी अल्लाह जाहर करने आहला हा। ते तू लोकें शा डरदा हा, हालांके अल्लाह ज्यादा हक्कदार ऐ जे तू उस थमां डरै। ते जिसलै ज़ैद नै उस(जनानी) दे बारै अपनी खुआहश पूरी करी लैती (यानी तलाक देई दिता) असें उस(जनानी) दा तेरे कनै ब्याह करी दिता तां जे मोमिनें दे दिलें च अपने ले-पालकें (मतबन्नै) दी जनानियें कनै नकाह करने दै बारै उनेंगी तलाक श्होई जाने दी सूरत च कोई मलाल नेई र'वै ते खुदा दा फ़ैसला जरूर पूरा होइयै रौहना हा ॥ 38 ॥

अल्लाह नै जेहका कम्म पूरा करना नबी दे जिम्मै लाए दा ऐ, उसदे बारै च ओहदा कोई दोश नेई। इयै रीति अल्लाह नै पैहले लोकें च प्रचलत करी रक्खी दी ही ते अल्लाह दा हुकम ते पूरा होइयै गै रौहने आहला ऐ (उसी कोई टलाई नेई सकदा) ॥ 39 ॥

(इयै रीति पैहले नबियें च प्रचलत ही) जो अल्लाह दा संदेश लोकें तक पजांदे हे ते उससै थमां डरदे हे ते अल्लाह दे सिवा कुसै दूए थमां नेई डरदे हे ते (कर्म दा) लेखा लैने आस्तै अल्लाह काफ़ी ऐ ॥ 40 ॥

नां मुहम्मद तुंदे बिचा कुसै मर्द दे प्यो हे नां हैन (नां होडन)पर अल्लाह दे रसूल न, बल्के

مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَاهُ فَلَمَّا قَضَى زَيْدٌ مِنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَاكَ بِهَا لِيَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِي أَنْزَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ۗ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ﴿۳۸﴾

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ ۗ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۗ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا مَقْدُورًا ﴿۳۹﴾

الَّذِينَ يَبْلِغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَهُ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ ۗ وَكَفَى بِاللَّهِ حَسِيبًا ﴿۴۰﴾

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ

1. हज़रत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. गी पता लगगी गेआ हा जे हज़रत ज़ैद अपनी पत्नी ज़ैनाब गी तलाक देना चांहेदे न। तुस इस गल्ला गी गुप्त रक्खियै हज़रत ज़ैद गी समझांदे हे तां जे लोकें गी ठोकर नेई लगगै जे इक अच्छे खानदान दी कुड़ी दा ब्याह अजाद कीते गेदे इक दास कनै करियै हज़रत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. नै कोई चंगा कम्म नेई कीता, बल्के फ़साद ते दंगे दा रस्ता खोहली दिता ऐ ।

(एहदे शा बी बद्ध) नबियें दी मोहर न ते अल्लाह हर इक गल्लै गी भलेआं जानदा ऐ ॥ 41 ॥ (रुकू 5/2)

हे मोमिनो! अल्लाह गी बौहत (हर बेलै) चेता करा करो ॥ 42 ॥

ते बडलै ते संजा उसदी स्तुति करा करो ॥ 43 ॥

ऊऐ ऐ जेहका तुंदे पर अपने पासेआ मेहर करदा ऐ ते उसदे फ़रिशते बी तुसेंगी अशीर्वाद दिंदे न तां जे ओह तुसेंगी न्हरे थमां कडिहयै लोई आह्ले पासै लेई जा ते ओह मोमिनं पर बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 44 ॥

وَلَكِنْ رَسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۗ

وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا

كَثِيرًا ۝

وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝

هُوَ الَّذِي يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ

يُخْرِجُكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۗ وَكَانَ

بِأُمُومِنِينَ رَحِيمًا ۝

1. अर्थात् थुआड़े प्रमाणित करने ते थुआड़ी शिक्षा दी गुआही दे बिना नुबुव्वत जां विलायत यानी भक्ति पद ते ईश मैत्री दे गौरवपूर्ण थाहरे तक कोई आदमी नेई पुज्जी सकदा। किश विद्वानें नबियें दी मोहर दे थाहरे पर इस दा अर्थ आखरी नबी कीते दा ऐ, पर एहदे कन्नै बी साढ़े अर्थ पर कोई फर्क नेई पौदा। थुहाड़े मेराज (सीढ़ी यानी क्रम) गी सामनै रक्खेआ जा तां नबियें दा स्थान मुस्नद अहमद बिन हम्बल दे मताबक इयां ऐ -

| | |
|------------------|------------------------------|
| सिद्रतुल मुन्तहा | हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. |
| सतमां अकाश | हजरत इब्राहीम |
| छेमां अकाश | हजरत मूसा |
| पंजमां अकाश | हजरत हारून |
| चौथा अकाश | हजरत इद्रीस |
| त्रीया अकाश | हजरत यूसुफ |
| दूआ अकाश | हजरत ईसा ते हजरत यहया |
| पैहला अकाश | हजरत आदम |

प्रिथ्वी बासी

इस क्रम गी दिखचै तां जेहका प्रिथ्वी बासियें दे थाहरे पर खडोग ओहदी नजर सारें थमां पैहलें हजरत आदम पर पौग ते सारें थमां अखीर च हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. पर। आखो जे सारे नबियें थमां खीरले नबी ओह हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. गी मनग।

इसदे अलावा जेकर उस हदीस पर बिचार करचै जे हजरत आदम अजें पैदा बी नेई होए दे हे तां बी अ'ऊं "खातमुनबीय्यीन" हा तां बी नबियें दी बंशावली च हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. गी पदवी दी दिश्टी कन्नै सर्वोचम स्थान प्राप्त हा। इस आसतै जिसलै हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. मेराज (क्रम) च सारें थमां उप्पर गे तां मुहम्मदी पद दा गै नबुव्वत दा आखरी चरण बनेआ। इस चाल्ती बी ऊऐ अर्थ ठीक रेहा जेहका असें कीते दा ऐ। यानी खत्मे नबुव्वत (आखरी नबी) दा एह अर्थ ऐ जे हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दा पद सारे नबियें थमां सर्वश्रेष्ठ ऐ।

जिसलै ओह ओहदे कनै मिलडन तां उनेंगी
दुआऽ/अशीर्वाद दा तोहफा सलामती' दी शकली
च मिलग ते ओह उंदे आस्तै इक इज्जत आहला
सिला त्यार करग ॥ 45 ॥

हे नबी ! असें तुगी इस हालत च भेजेआ ऐ
जे तू (दुनियां दा) नगरान? बी ऐं (मोमिनें
गी) खुशखबरी देने आहला बी ऐं ते (काफरे
गी) डराने आहला बी ऐं ॥ 46 ॥

ते अल्लाह दे हुकम कनै ओहदी बकखी
बुलाने आहला ते इक चमकै करदा सूरज³
बनाइयै भेजेआ ऐ ॥ 47 ॥

ते मोमिनें गी शुभ-समाचार देई दे जे उनेंगी
अल्लाह पासेआ इक बौहत बड्डा इनाम
(तोहफा) मिलग ॥ 48 ॥

ते इन्कार करने आहलें ते मुनाफिकेँ दी गल्ल
कदें नेई मन्न ते उंदे दुख देने पासै ध्यान नेई
दे ते अल्लाह पर भरोसा रक्ख ते अल्लाह
कम्म बनाने आस्तै काफ़ी ऐ ॥ 49 ॥

हे ईमान ल्यौने (अपनाने) आहलेओ ! जिसलै
तुस मोमिन जनानियें कनै ब्याह करो, फी
जेकर उनेंगी छूहने थमां पैहलें गै तलाक देई
देओ तां तुसेंगी एह हक्क नेई जे उंदे थमां
इददत दी मंग करो। इस आस्तै चाही दा ऐ

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ ۗ وَآعَدَّ
لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ﴿٤٥﴾

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا
وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٤٦﴾

وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِآذَنِهِ وَسِرَاجًا مُنِيرًا ﴿٤٧﴾

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ يَا أَيُّهَا اللَّهُ
فَضْلًا كَبِيرًا ﴿٤٨﴾

وَلَا تَطْعَمِ الْكُفْرَيْنِ وَالْمُنْفِقِينَ وَدَعِ
أَذْهَبَهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۗ وَكَفَى بِاللَّهِ
وَكَيْلًا ﴿٤٩﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ
تَمَّ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ فَمَا
لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُونَهَا ۚ

1. इसदा अर्थ एह ऐ जे जिसलै मोमिन लोक मरने दे बा'द उठडन तां उंदी तसल्ली आस्तै खुदा पासेआ उनेंगी सलाम भेजेआ जाग(यानी सलामती दा संदेश) ते उस लफ्जी सलाम गी साकार रूप देने आरतै उंदे(मोमिनें) आस्तै आदर-सत्कार आहले समान त्यार कीते जाडन।
2. नगरान दा एह अर्थ नेई जे हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. अपने समे दे लोकेँ पर दरोगा दे रूपै च नयुक्त कीते गेदे न। पवित्र कुर'आन च लिखे दा ऐ जे तुगी कुसै पर दरोगा नयुक्त नेई कीता गेआ। इत्थें सिर्फ एह अर्थ ऐ जे तू आदर्श रूप च उदा नगरान होगगा, जबरन नेई।
3. इस थाहर पर हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दा नांऽ रोशनी करने आहला दीव्या जां सूरज रक्खेआ गेआ ऐ अर्थात थुआड़े प्रकाश कनै प्रकाशत होइयै केई लोक त्यार होंदे रौहडन जेहके दुनियां गी प्रकाशत करदे रौहडन जियां चन्न सूरजे थमां प्रकाश लेइयै न्हरे गी दूर करी दिंदा ऐ।

जे उनेंगी दुनियाबी फायदा पुजाओ ते अच्छा ब्यहार करदे होई उनेंगी बिदा करो ॥ 50 ॥

हे नबी! तेरी मजूदा पलियें बिच्चा ओह जिनेंगी तूं उंदा हक्क महर' देई दिते दा ऐ, असें तेरे आस्तै जायज करी दितियां न। इसै चाल्ली आईदा² आस्तै ओह जनानियां जिंदे मालक तेरे सज्जे हत्थ होए दे न जिनेंगी अल्लाह युदधै परैत तेरे अधिकार च (अधीन) ल्याया ऐ ते इसै चाल्ली तेरे चाचे दियां धीयां, ते तेरी बूआ दियां धीयां ते तेरे मामें दियां धीयां ते तेरी मासियें दियां धीयां, जिंजें तेरे कनै हिज्रत कीती ऐ ते ऐसी मोमिन जनानी बी जिसनै अपने आपे गी नबी आस्तै समर्पत करी दिता, पर शर्त एह ऐ जे नबी पर उस कनै ब्याह करने दा इरादा करै³ एह हुकम⁴ खास तौरा पर तेरे गै आस्तै ऐ, दूए मोमिनें आस्तै नेई। असें उंदे पर(मुसलमानें पर) उंदी पलियें

فَمِعْوُهُنَّ وَسَرَحُوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ﴿٥٠﴾
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ
الَّتِي آتَيْتَ أَجُورَهُنَّ وَ مَا مَلَكَتْ
يَمِينُكَ مِمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ
عَمِّكَ وَبَنَاتِ عَمَّتِكَ وَبَنَاتِ خَالِكَ
وَ بَنَاتِ خَلَّتِكَ الَّتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ
وَ امْرَأَةً مُؤْمِنَةً إِن وَهَبْتَ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ
إِن أَرَادَ النَّبِيُّ أَنْ يَسْتَنْكِحَهَا خَالِصَةً لَّكَ
مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا
عَلَيْهِمْ فِي أَزْوَاجِهِمْ وَ مَا مَلَكَتْ

1. पलियां ते सारें आस्तै जायज गै होंदियां न, पर हज्रत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दी पलियें दा उल्लेख इस आस्तै कीता ऐ जे इसै सूर: दी आयत 29 च आखेआ गेदा ऐ जे हे धर्म-पलियो! जेकर धुआड़े दिलें च संसारक लाह(फायदे) लैने दी इच्छा होऐ तां अऊं तुसेंगी माया देइयै बिदा करी दिनां। इस लेई इस गल्ला दा फैसला होना हा। इसदे बा'द कुसै बी पत्नी नै नेई गलाया जे मिगी माया देइयै छोड़ी दिता जा। जिस थमां पता लगदा ऐ जे उंदे सारियें दे दिलें च धर्म कनै प्रेम हा ते दुनियाबी माया दी इच्छा नेई ही। इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे उनें अपने दिलें च माया छोड़ी देने ते हज्रत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. कनै रोहने दा फैसला करी लैता हा। इस आस्तै ओह हर चाल्ली जायज हियां।
2. एह सिर्फ इक आज्ञा ऐ आदेश नेई। फी हज्रत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. नै इस आज्ञा थमां कदें लाह नेई लैता। इस आयत च सिर्फ उनें जनानियें दा जिकर ऐ जेहकियां युदधै मौकें लड़ाई दे मदान च पकड़ियां जान। सधारण जनानियें पर एह आदेश लागू नेई होंदा।
3. पवित्र कुर'आन दी इस आयत थमां स्पष्ट होंदा ऐ जे एह आदेश सिर्फ हज्रत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. आस्तै नेई बल्के सारे नबियें आस्तै ऐ चाहे एह पैहलके समे दे होन जां भविक्ख च होने आहले होन। सधारण मुसलमानें आस्तै एह आदेश नेई।
4. हज्रत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. नै नेही कुसै जनानी कनै ब्याह नेई कीता। एह सारियां गल्लां आदेश दे रूपे च नेई न। इस आस्तै बरोधियें दा एह आरोप ठीक नेई जे तुसें एह आदेश अपने आस्तै उतारी लैता ऐ। असल च तुसें इनें हुकमें गी कदें नेई अपनाया। इसदे अलावा आयत 3 थमां स्पष्ट होंदा ऐ जे एह आदेश सिर्फ किस पलियें दे बारे च हज्रत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दे पवित्र बिचार गी ब्यक्त करने आस्तै न नां के थुहाड़े आस्तै कोई चेची राह खोहलने आस्तै।

ते उन्दी दासियें दे बारे च जेहकी गल्ल जरूरी ठरहाई दी ऐ उसी चंगी चाल्ली जानने आं। तां जे तेरे पर कोई नजायज प्रतिबंध नैई र'वै। ते अल्लाह बौहत बख्शाने आह्ला(ते) बार-बार कर्म करने आह्ला ऐ ॥ 51 ॥

तू उनें पलियें बिच्चा जिसी चाहें बक्ख' रक्ख ते जिसी चाहें अपने कश रक्ख ते उनें पलियें बिच्चा जिनेंगी तोह (कुसै थाहर) अलग्ग करी दित्ते दा ऐ कुसै गी अपने कश लेई आमें तां तेरे पर कोई दोश नैई। एह ब्यहार इस गल्ला दे लागै ऐ जे उंदियां अक्खां ठंढियां होन ते ओह चैता नैई करन ते जे किश तोह उनेंगी दिता' ऐ ओहदे पर सारियें दियां सारियां खुश होई जान ते अल्लाह थुहाड़े दिलैं दियां गल्लां जानदा ऐ ते ओह बौहत जानने आह्ला ते बड़ी सूझ-बूझ थमां कम्म लैने आह्ला ऐ। ॥ 52 ॥

एहदे बा 'द तेरे' आस्तै इंदे सिवा दूइयां जनानियां जायज नैई ते नां एह जायज ऐ जे तू इनें पलियें गी बदलियै दूई पलियें कन्ने ब्याह

أَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۗ
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

تُرْجَى مَنْ تَشَاءُ مِنْهُمْ وَتَوَى إِلَيْكَ
مَنْ تَشَاءُ ۗ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ وَمَنْ عَزَلْتَ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ۗ ذَلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ تَقَرَّ
أَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَنَّ وَيَرْضَيْنَ
بِمَا أُتِيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا
فِي قُلُوبِكُمْ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ۝

لَا يَحِلُّ لَكَ الْإِنْسَاءُ مِنْ بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ
بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ

1. इससँ सूर: दी आयत 29 च आखेआ गेदा ऐ जे पलियो! जेकर तुसेंगी इस्लाम दी निसबत संसारक माया हासल करने दा बचार चंगा लागदा होऐ तां अ'ऊं तुसेंगी संसारक धन देइयै बिदा करी दिना पर इस आयत च दरसेआ गेदा ऐ जे पलियें मौन रहेयै एह निरना लैता जे ओह संसारक माया दी निसबत धर्म गी प्रधानता दिंदियां न, पर पति गी बी ते एह हक्क होना लोइदा जे जेकर ओह कुसै पत्नी गी माया-मोह आहली समझै तां उसी तलाक देई देऐ। इस आस्तै इनें दौनें आयतें दा बिशे इक गै ऐ। इस आयत दे बा'द कुसै जनानी दा तलाक नैई होआ। सूर: अहजाब दी आयत 51 थमां सिद्ध होदा ऐ जे थुहाड़ी कुसै पत्नी नै माया गी धर्म पर प्रधानता नैई दिती, ते तुसें बी इस आयत दे बा'द कुसै पत्नी गी तलाक नैई दिता। थुहाड़ा बी इयै फँसला हा जे जेकर अल्लाह नै मिगी तलाक देने दा अधिकार देई दिता ऐ, फी बी इनें पलियें इक उच्च आदर्श दस्सेआ ऐ। इस आस्तै मै इनें पलियें बारे तलाक दा अधिकार नैई बरतना चाही दा।
2. हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दियां पलियां थुआड़े ब्यहार थमां बाकफ हियां। जिसलै अल्लाह नै थुहाड़े पर एह गल्ल छोड़ी दिती तां ओह खुश होई गेइयां जे हून जे किश होग ठीक गै होग।
3. इसदा अर्थ एह ऐ जे उप्पर दस्सी गेदी जनानियें गी छोड़ियै कोई दूई जनानी तेरे आस्तै जायज नैई। यानी हिजरत करने आह्ला रिश्तेदार जायज जनानियें बिच्चा बी कुसै कन्ने ब्याह करी सकदा ऐ, पर इंदे सिवा होर कुसै कन्ने नैई। इस चाल्ली आदेश दा खेतर सीमत करी दिता गेदा ऐ। एह सिर्फ इक इजाजत ही। एहदे थमां हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. नै कदं लाह नैई लैता।

करैं, भामें तुगी उंदी खूबसूरती किन्नी गै शैल लग्गै, सिवाए उणें जनानियें दे जिंदे मालक तेरे सज्जे हल्य होई चुके दे न ते अल्लाह हर इक गल्लै दा नरीक्षक ऐ ॥ 53 ॥ (रूकू 6/3)

हे मोमिनो ! तुस नबी दे घर खाने पर सद्दे जाने दे सिवा कदें बी प्रवेश नेई करा करो ते तां गै रसोऽ त्यार होने दी बलगाई च बेही र'वा करो ते नां गै गल्लां करने दे सोरकै च बेही' र'वा करो। हां जिसलै तुसैं गी सद्देआ जा तां जरूर उठी जा करो। फी जिसलै खाना खाई लै करो तां अपने घरें गी उठी' जा करो। एह गल्ल (फजूल बेही रैहना जां समे थमां पैहलें पुज्जी जाना) रसूल गी तकलीफ पज्जांदी ऐ, पर ओह थुहाड़ी भावनें गी ध्याना च रखदे होई तुसैं गी रोकने च संकोच करता हा, पर अल्लाह सच्ची गल्ल आखने थमां नेई झकदा ते जिसलै तुस उंदे (रसूल दियें पलियें) थमां कोई घरेलू चीज मंगो तां पड़दे दे पिच्छुआं मंगा करो। एह गल्ल थुआड़े दिलें ते उंदे दिलें आसतै बेहतर ऐ ते अल्लाह दे रसूल गी तकलीफ देना थुआड़े आसतै ठीक नेई ते नां गै एह ठीक ऐ जे तुस इसदे बा'द कदें उसदी धर्म-पलियें कनै ब्याह करो, की जे अल्लाह दे फैसले मताबक एह गल्ल बौहत बुरी ऐ ॥ 54 ॥

إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ رَّقِيبًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ طَعَامٍ غَيْرَ نَظْرَيْنِ ۖ إِنَّهُ ۖ وَلَكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِنَّا طَعَمْتُمْ فَأَنْتَشِرُوا وَلَا مُسْتَأْنِسِينَ ۖ لِحَدِيثٍ ۖ إِنَّ ذُكِّرَكُمْ كَانَ يُؤْذَى النَّبِيُّ فَيَسْتَجِ بِكُمْ ۖ وَاللَّهُ لَا يَسْتَجِبُ مِنَ الْحَقِّ ۖ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ ۖ ذُكِّرَكُمْ أَظْهَرَ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ ۖ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ تُنْكِحُوا زَوَاجَهُ مِنْ بَعْدِهِ أَبَدًا ۖ إِنَّ ذُكِّرَكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا ۝

1. यानी टैमै सिर रसूल दे घर औना -जाना चाही दा तां जे उंदा समां बरबाद नेई होऐ।
2. इसदा एह मतलब नेई जे सिर्फ रसूल दे घर बिना आज्ञा भोजन आसतै नेई जा करो, की जे दूए थाहरें पर बर्णत ऐ जे हर मुसलमान दे घर बिना आज्ञा प्रवेश करना बरजत ऐ। इस आसतै इत्थें एह संकेत कीता गोदा ऐ जे चूँके कुर'आन मजीद दे मताबक हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. मुसलमानें दे आध्यात्मक पिता न ते थुआड़ी पलियां उंदी मामां न। इस आसतै इस थमां एह गल्ल निकलदी ही जे रसूल दे घर बिना अजाजत दे प्रवेश करना जायज ऐ। इस आसतै इस आयत रहें उसदा नशेध कीता गोदा ऐ। दूई गल्ल एह ऐ जे बच्चे अपने माता-पिता दे घर चिरे तक बेही रँहदे न पर रसूल ते अध्यात्मक पिता होंदा ऐ। उसदी संतान ते ज्हारें च होंदी ऐ। जेकर उसदे घर उसदी सारी संतान (मुसलमान) बारी -बारी औन लगें तां इक दिन छोड़ी दूआ दिन ते दूआ महीना बी लंघी जाग ते इस चाल्ती नबी गी तकलीफ पुज्जाग। इस आसतै इस आयत च उनें सारी गल्लें पर रोक लाई गेदी ऐ जिंदे रहें रसूल गी कलेश पुज्जी सकदा हा।

जेकर तुस कोई गल्ल जाहर करो जां छपालो तां बी अल्लाह हर इक गल्लै गी चंगी-चाल्ली जानदा ऐ ॥ 55 ॥

इंदे (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. दियें धर्म-पत्नियें) पर अपने बब्बें जां अपने पुत्तरें ते अपने भ्राएं जां अपने भतरीयें जां अपने भनेंऽ जां अपने जनेही दूई जनानियें ते अपने अधीन दासियें दे सामनै होने पर कोई रोक नेई ते अल्लाह आस्तै संयम धारण करो। अल्लाह हर चीजै गी दिक्खा करदा ऐ ॥ 56 ॥

यकीनन अल्लाह इस नबी पर अपनी किरपा करा करदा ऐ ते उसदे फरिश्ते बी (उसी दुआऽ/अशीर्बाद देआ करदे न इस आस्तै) हे मोमिनो! तुस बी इस रसूल पर दरूद (सलामती दी दुआऽ) भेजदे र'वो ते उंदे आस्तै प्रार्थना करदे र'वा करो ते (पूरे जोश कनै) उंदे आस्तै सलामती मंगदे र'वा करो ॥ 57 ॥

ओह लोक जेहके अल्लाह ते उसदे रसूल गी कलेश पुजांदे न अल्लाह उनेगी इस संसार च बी ते आखरत च बी अपने कुर्ब (नेडमेपन) थमां बंचत करी दिंदा ऐ ते उसनै उंदे आस्तै अपमान जनक अज़ाब त्यार करी रक्खे दा ऐ ॥ 58 ॥

ओह लोक जेहके मोमिन पुरशें ते मोमिन औरतें गी बिना इसदे जे उनें कोई अपराध कीते दा होऐ, दुख दिंदे न, मन्नी लैओ उनें लोकें अपने उप्पर खतरनाक झूठ ते खुल्'ले-खु'ल्ले गुनाह दा बोझ चुक्की लैता ऐ ॥ 59 ॥ (रकू 7/4)

إِنْ تُبَدُّوا شَيْئًا أَوْ تُخْفَوْهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٥٥﴾

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِمْ فِي آبَائِهِمْ وَلَا أَبْنَائِهِمْ
وَلَا إِخْوَانِهِمْ وَلَا أَسْبَاءَ إِخْوَانِهِمْ وَلَا
أَبْنَاءَ أَخَوَاتِهِمْ وَلَا نِسَاءَهُمْ وَلَا مَا
مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ ۗ وَالَّذِينَ فِي اللَّهِ
كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ﴿٥٦﴾

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا
تَسْلِيمًا ﴿٥٧﴾

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ
اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا
مُّهِينًا ﴿٥٨﴾

وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
بِغَيْرِ مَا كَتَبْنَا فَتَدْحَمُوا بِهِنَّ أَوْلِيَاءَ
مُّبِينًا ﴿٥٩﴾

हे नबी! अपनी पत्नियों, अपनी धीयें ते मोमिनें दियें पत्नियों गी आखी दे जे ओह (जिसलै बाहर निकलन तां) अपनी बड़्डी^१ चादरें गी अपने सिरें उप्परा अगें खिचियै अपने सीनें तक लेई आवा करन। ऐसा करना इस गल्ला गी ममकन बनाई दिंदा ऐ जे पनछोई जान ते उनेंगी कोई कश्ट नेई देई सकै ते अल्लाह बड़ा बख़ाने आह्ला ते बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 60 ॥

मुनाफ़िक़ ते ओह लोक जिंदे दिलैं च रोग ऐ ते ओह लोक जेहके मदीने च झूठे बाके डुआंदे फिरदे न। जेकर इनें गल्लें थमां बाज नेई औडन तां अस तुगी इनें लोकें खलाफ (इक दिन) खड़ा करी देगे, फी ओह तैरे कनै इस नग़रै च बड़े गै थोड़े चिरै तक गुआंढियें आंगर रेही सकडन ॥ 61 ॥

ओह जित्थें कुतै बी थुआड़े काबू औन, चाही दा ऐ जे पकड़े जान ते कत्ल करी दित्ते जान (की जे ओह अल्लाह दे रैहम थमां बंचत करी दित्ते गे न) ॥ 62 ॥

अल्लाह दी उस रीति गी (अपनाओ) जो उनें लोकें च प्रचलत ही, जेहके तुंदे थमां पैहलें होई चुके दे न ते तूं कदें बी अल्लाह दी रीति च कोई तबदीली नेई दिखगा ॥ 63 ॥

लोक तेरे थमां अंत करी देने आहली घड़ी बारै पुछदे न। तूं आखी दे जे उसदा पता ते सिर्फ अल्लाह गी ऐ ते तुसेंगी केह पता जे शायद ओह घड़ी लागै गै होऐ ॥ 64 ॥

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لَأَزُوجِكُمْ وَبَنَاتِكُمْ
وَنِسَاءَ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِنْ
جَلَابِيبِهِنَّ ۚ ذَلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ يُعْرَفْنَ فَلَا
يُؤْذِنَنَّ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَظِيمًا ۝

لَيْسَ لَمُيْتَتِهِ الْمُنْفِقُونَ وَالَّذِينَ فِي
قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ وَالْمُرْجِفُونَ فِي الْمَدِينَةِ
لَنُعْرِبَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُونَكَ فِيهَا
إِلَّا قَلِيلًا ۝

۝۳۳

مَلْعُونِينَ ۙ أَيَّمَا تَقْفُوا أَخَذُوا وَقَتِلُوا
تَقْتِيلًا ۝

سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ
وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۝

يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۗ قُلْ إِنَّمَا
عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ ۗ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ
السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ۝

1. इस आयत च पढ़दा दा ब्यौरा ऐ। अरब देशें दियां जनानियां बाहर निकलने मौकें पंजाबी जनानियें आंगर निककी चादरें कनै सीने खटदियां हियां ते बड़्डी चादरें कनै झुंड कढदियां हियां। एहदे कनै मिलदा-जुलदा रवाज पंजाब च प्रचलत ऐ। अल्लाह आपछदा ऐ जे जनानियां जिसलै बी घर बाहर निकलन तां सिरें पर लैती दी बड़्डी चादरें गी सिरें परा खिचियै सीनें तक आहनिये झुंड कडहन जे मूह नंगा नेई होऐ।

यकीनन अल्लाह नै इन्कार करने आहलें गी अपने कुर्ब (नेड़मेपन) थमां बंचत करी दिते दा ऐ ते उंदे आस्तै भड़कने आह्ला इक अज़ाब त्यार कीते दा ऐ ॥ 65 ॥

जेहदे च ओह सदा आस्तै बास करडन ते उर्थें नां कोई दोस्त ते नां गै मददगार ॥ 66 ॥

जिस दिन उंदे बड़डे-बड़डे (प्रमुख) लोकें गी अगगी पर उलटाया-पलटाया जाग, तां ओह आखडन काश! अस अल्लाह ते उसदे रसूल दी आज्ञा दा पालन करदे ॥ 67 ॥

ते (सधारण लोक) आखडन जे हे साढ़े रब्ब! असें अपने सरदारें ते बड़डे (प्रमुख) लोकें दी आज्ञा दा पालन कीता। ते उनें असें गी सच्चे रस्ते थमां भटकाई दिता ॥ 68 ॥

हे साढ़े रब्ब! तूं उनेंगी दूना अज़ाब दे ते उनेंगी अपनी रैहमत थमां भलेआं दूर करी दे ॥ 69 ॥ (रुकू 8/5)

हे मोमिनो! तुस उनें लोकें आंगर नेई बने जिनें मूसा गी दुख दिता हा, जेहदे पर अल्लाह नै उसी उंदी गल्लें थमां नदोश करार दिता हा ते ओह अल्लाह दे हज़ूर च बड़ी शान रखदा ऐ ॥ 70 ॥

हे मोमिनो! अल्लाह आस्तै संयम धारण करो ते सिद्धी-सिद्धी (अर्थात् सच्ची) गल्ल आखा करो ॥ 71 ॥

(जेकर तुस ऐसा करगे ओ) तां अल्लाह थुआड़े कमें गी ठीक करी देग ते थुआड़े गुनाहें गी माफ करी देग ते जेहका शख्स अल्लाह ते उसदे रसूल दी आज्ञा दा पालन करै ओह बौहत बड़डी कामयाबी हासल करदा ऐ ॥ 72 ॥

إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكُفْرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ۝

خُلْدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝

يَوْمَ تَقْلُبُ وُجُوهَهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَا لَيْتَنَا أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَ ۝

وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلًا ۝

رَبَّنَا آتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنَهُمْ لَعْنًا كَبِيرًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ أَذَوْا مُوسَى فَبَرَّاهُ اللَّهُ مِمَّا قَالُوا وَكَانَ عِنْدَ اللَّهِ وَجِيهًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۝

يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ۝

असैं कामिल अमानत (शरीअत) गी गासैं, ते धरती ते फ़ाड़ैं दे सामनै पेश कीता हा। पर उसी चुक्कने थमां उनें नांह करी दित्ती ते ओहदे थमां डरी गे पर इन्सान नै उसी चुक्की लैता। ओह यकीनन बौहत जुलम¹ करने आह्ला ते ओहदे नतीजे थमां बे-परबाह हा ॥ 73 ॥

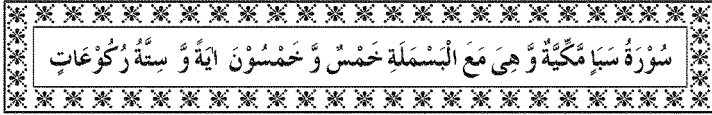
(साढ़े उस शरीअत दा बोझ लददने दा) नतीजा एह होआ जे मुनाफ़िक़ मरदें ते मुनाफ़िक़ औरतें ते मुश्रिक मरदें ते मुश्रिक औरतें गी अल्लाह नै अज़ाब दित्ता। ते मोमिन मरदें ते मोमिन औरतें पर किरपा कीती ते अल्लाह है गै बड़ा बख़्शने आह्ला (ते) बार-बार कर्म करने आह्ला ॥ 74 ॥ (रुकू 9/6)

إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا
وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ إِنَّهُ
كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ﴿٧٣﴾

لِيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ
وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ
عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَكَانَ اللَّهُ
عَفُورًا رَحِيمًا ﴿٧٤﴾

०००

1. विद्वानें लिखे दा ऐ ते इयैं स्हेई ऐ जे जुलम करने आह्ले दा मतलब अपने आपे पर जुलम करने आह्ला ऐ अर्थात अपने मन ते इंद्रियं गी हराम चीजें दा प्रयोग करने थमां जबरन रोकी सकदा ऐ।



सूर: सबा

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां पचुजा आयतां ते छे रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नां5 लेइयै (पढ़ना) जेहका बे-हद कर्म करने आह्ला ते बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

सब तारीफ अल्लाह दी गै ऐ ते जेहका गासैं ते धरती च ऐ, सब उससै दा ऐ ते (जिस चाल्ली ओह शुरु' थमां गै स्तुति दा हक्कदार ऐ), अंत तक बी ऊऐ स्तुति दा हक्कदार होंदा ऐ ते ओह बड़ी हिक्मतें' दा मालक ऐ ते हर चीजै दी जानकारी रखदा ऐ ॥ 2 ॥

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ
وَمَا فِي الْأَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْأَخِرَةِ ①
وَهُوَ الْحَكِيمُ الْحَبِيرُ ②

जो कुछ धरती च दाखल' होंदा ऐ, उसी बी ओह जानदा ऐ ते जो कुछ ओहदे बिच्चा निकलदा ऐ, उसी बी जानदा ऐ एहदे अलावा उसी बी जो गासैं थमां उतरदा ऐ ते उसी बी जो गासैं बक्खी चढ़दा ऐ ते ओह बार-बार

يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا
وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ①
وَهُوَ الرَّحِيمُ الْعَفُورُ ②

1. कुर'आन करीम च 'आदि' (इब्तादा) शब्द नेई ऐ सिर्फ 'अंत' (आखरत) शब्द ऐ, पर अरबी भाशा दा एह निजम ऐ जे जेहके विलोम शब्द होन उंदे बिच्चा इक गी कइढी दिंदे न ते फी वाक्य बिच्चा उस दा अर्थ कइढी लैंदे न। इस आसतै इत्थें अंत (आखरत) शब्द मजूद हा ते असैं शुरु (इब्तादा) अर्थ आह्ला शब्द कइढी लैता।
2. अर्थात अल्लाह नै कलाम नाज़ल करने च बड़ी हिक्मत रखी दी ऐ की जे एहदे राहें आदमी हदायत पांदा ऐ ते अल्लाह तक पुजदा ऐ ते ओह हर चीजै दा जानकार ऐ यानी उसी पता हा जे आदमी उस दी हदायत दे बगैर कमाल तक नेई पुज्जी सकदा।
3. धरती दे अंदर ते पताल च रोहने आहले जीव-जैतुएं ते ओहदे बिच्चा निकलने आहले जीव-जैतुएं सारें गी जानदा ऐ। इससै चाल्ली खल्ल डिग्ने आहली जातियें गी बी जानदा ऐ जेहकियां उप्परा खल्ल डिग्गा करदियां होंदियां न ते तरक्की करने आहली जातियें गी बी जानदा ऐ जेहकियां आखो जे धरती थमां गासैं आहली बक्खी चढ़ा करदियां होंदियां न।

रैहम करने आह्ला ते बौहत बख्शने आह्ला
ऐ ॥ ३ ॥

ते काफरें गलाया जे साढ़ी कौम दी तबाही दी
आखरी घड़ी अस नेई दिखगे। तू आखी दे
ऐसा नेई, मिगी अपने (उस) रब्ब दी कसम
जेहका गैब बारै जानने आह्ला ऐ ते गासैं ते
धरती बिच्चा कोई चीज भामें ओह लाल कीड़ी
दे बराबर होऐ जां उस थमां बी निक्की जां
उस शा बड्डी होऐ, ओहदी नजरें थमां छप्पियै
नेई रेही सकदी। एह घड़ी तुस जरूर दिखगे
ओ, की जे ओह इक जाहर करी देने आहली
लिखत च सुरक्षत ऐ ॥ ४ ॥

(उस घड़ी दा औना इस आस्तै जरूरी ऐ) तां
जे अल्लाह मोमिनें ते ईमान दे मताबक कर्म
करने आहलें गी उंदे ईमान ते कर्म मताबक
सिला देऐ। ओह यकीनन ऐसे न जे उनेंगी
खुदा पासेआ माफी ते इज्जत आह्ला रिशक
म्हेशां थ्हांदा रौहग ॥ ५ ॥

ते ओह लोक जेहके साढ़े नशानें बारे
(असेंगी) असमर्थ बनाने दी कोशश करदे
न उनें गी उंदे गुनाहें करियै दर्दनाक अजाब
पुज्जग ॥ ६ ॥

ते ओह लोक जिनेंगी ज्ञान दिता गेदा ऐ, उस
चीजे गी, जो तेरे पासै तेरे रब्ब पासेआ नाजल
होई दी ऐ, सच्ची समझदे न ते एह (बी जानदे
न) जे (ओह तलीम) गालिब ते समर्थ रक्खने
आहले खुदा पासै लेई जंदी ऐ ॥ ७ ॥

ते ओह (लोक) जिनें कुफर कीते दा ऐ,
आखदे न जे (हे लोको!) क्या अस तुसेंगी
इक ऐसे शख्स दा पता देचै जेहका तुसेंगी एह
दसदा ऐ जे जिसलै तुस (मरने दे बा'द)

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ
قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ ۗ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ
لَا يَعْرُزُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمَوَاتِ
وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَلِكَ
وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۖ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝

وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ
لَهُمْ عَذَابٌ مِنْ رَجْزِ آيَاتِنَا ۝

وَيَرَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنزِلَ
إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ هُوَ الْحَقُّ ۖ وَيَهْدِي
إِلَى صِرَاطٍ مُعْزِزٍ الْحَمِيدِ ۝

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَى
رَجُلٍ يُنَبِّئُكُمْ إِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمْرَقٍ ۗ

कण-कण करी दिते जागे ओ तां फी जुड़ियै
तुस इक नर्मी मख्खूक दी शक्ली च बदली
दिते जागे ओ ॥ 8 ॥

क्या ओह शख्स अल्लाह पर झूठ गंढा करदा
ऐ जां उसगी जनून ऐ? ऐसा नेई, बल्के जेहके
लोक आखरत पर ईमान नेई आहनदे ओह
(इयै नेह बुरे ख्यालें दी ब'जा करी अजें बी)
अजाब ते खतरनाक गुमराही च पेई चुके दे
न ॥ 9 ॥

क्या उनें उस चीजै पासै नेई दिक्खेआ जिसनै
गासैं ते धरती पासेआ उनेंगी अगुआं ते पिच्छुआं
घेरी रक्खे दा ऐ जेकर अस चाहचै तां उनेंगी
उंदे गै मुलखै च मसीबतें च फसाई देचै जां
उंदे पर बदलै दे किश खंधोले! सुट्टी देचै।
एहदे च खुदा पासै झुकने आहले हर बंदे
आस्तै इक नशान ऐ ॥ 10 ॥ (रकू 1/7)

ते असें दाऊद पर अपने पासेआ किरपा कीती
ही (ते गलाया हा जे) हे फ्हाड़ें दे रौहने
आहलेओ! तुस बी ते हे परिदो! तुस बी
ओहदे कन्नै खुदा दी स्तुति करो ते असें
ओहदे आस्तै लोहे गी नर्म करी दिता हा
॥ 11 ॥

(ते आखेआ हा जे) पूरे-पूरे अकार दे कवच
बनाओ ते उंदे कुंडल निक्के बनायो ते (हे
दाऊद दे साथियो!) अपने ईमान दे मताबक
कर्म करो, अऊं थुआड़े कर्म दिक्खा करना
॥ 12 ॥

إِنَّكُمْ لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝

أَفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ جِنَّةٌ بَلِ
الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ
وَالصَّلٰىلِ الْبَعِيْدِ ۝

أَفَكُمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ
وَمَا خَلْفَهُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
إِن نَّشَاءُ نَحْسِبُ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ نَسْقِطُ
عَلَيْهِمْ كِسْفًا مِنَ السَّمَاءِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ مِمَّا فَلَاحًا ۙ يُجِبَالٍ أَوْ يٰ
مَعَهُ وَالطَّيْرِ ۗ وَآلثَّالَةَ الْحَدِيْدِ ۝

أَبِ اعْمَلْ سُبُعِيَّتٍ وَفَقِيْرٍ فِي السَّرْدِ
وَاعْمَلُوا صَالِحًا ۗ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ
بَصِيْرٌ ۝

1. यानी उंदे देशै पर लगातार बरखा होंदी रवै ते उनेंगी तबाह करी देरे।
2. यानी हे फ्हाड़ें दे बासियो! तुस बी हजरत दाऊद पर ईमान ल्याओ ते अल्लाह दी स्तुति करने च उंदे कन्नै शामिल होई जाओ।
3. यानी सदाचारी लोक! ब्यौरै आस्तै दिक्खो सूर: मायद: दिप्पनी आयत 111

ते असें सुलेमान आस्तै ऐसी हवा¹ चलाई ही जिसदा सवेरे दा चलना इक म्हीने दे बराबर² होंदा हा ते संजा दा चलना बी इक म्हीने दे बराबर होंदा हा ते असें ओहदे आस्तै त्रामे³ दा स्रोत परधाली दिता हा ते असें उसी जिन्ने⁴ दा इक दल बी दिता हा जेहका ओहदे रब्ब दी आज्ञा कनै ओहदे मतैहत उसदे हुकमें मताबक कम्म करदा हा ते (एह बी आखी दिता हा जे) उंदे बिच्चा जेहका कोई साढ़े हुकमें थमां फिरग अस उसी भड़कै करदा अजाब देगे ॥ 13 ॥

ओह जे किश चांहदा हा जिन्न (यानी सिरफिरी कौमें दे सरदार) ओहदे आस्तै बनांदे हे यानी मस्जिदां, ढालमां मूरतियां ते बड्डे-बड्डे लगन (परातां) जेहके हौंदे दे समान/बराबर होंदे हे ते भारियां-भारियां देगां जेहकियां हर बेलै चु'ल्लें पर चढ़ी दियां रौंहदियां हियां (ते असें गलाया) हे दाऊद दे परिवार दे लोको! शुकर करदे होई कर्म करो ते मेरे बंदें बिच्चा बड़े घट्ट शुकरगजार होंदे न ॥ 14 ॥

फनी जिसलै असें ओहदे आस्तै मौती दा फैसला करी दिता तां उनेगी (यानी सिरफिरी कौमें गी) उसदी मौती दी खबर सिर्फ इक धरती दे कीड़े⁵ नै दिती जेहका उसदी लाठी

وَلِسَلِيمْنَ الرِّيحِ عُدُّوَهَا شَهْرٌ
وَرَوَّاحَهَا شَهْرٌ ۚ وَاسْأَلْنَا لَهُ عَيْنَ
الْقِطْرِ ۗ وَمِنَ الْجِنِّ مَن يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ
يَأْذِنُ رَبِّهِ ۗ وَمَن يَزِغْ مِنْهُمْ عَنَّ آمِرِنَا
نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ۝

يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُ مِنْ مَّحَارِبٍ
وَتَمَّائِيلٍ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُورٍ
رُّسَيْلٍ ۗ اِعْمَلُوا آلَ دَاوُدَ شُكْرًا ۗ
وَقَلِيلٍ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُورِ ۝

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَى
مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنسَأَتَهُ ۚ

1. यानी फारस दी खाड़ी थमां अन्ताकिया तक हवा उत्तम गति कनै चलदी रौंहदी ही जेहदे कनै हजरत सुलेमान दे समै समुंदरी बपार गैहमा-गैहमी कनै होंदा हा।
2. हवा दा सवेरे जां संजा इक म्हीने दे बराबर चलने दा मतलब एह ऐ जे मनासब हवा बपारी ज्हाज गी इन्ने दूर पुजाई दिंदी ही जे जिन्ना सफर इक म्हीने च जातरी करी सकदा हा ते संजा तक उन्ना गै लम्मा सफर करियै बापस आई जंदा हा। आखो थुआड़े शासन काल च हवा थमां कम्म लैता जंदा हा ते बपार खूब फलै-फुल्लै करदा हा।
3. यानी तांबा परधालने आहले कारखाने बनाने दी तफीक उसी प्रदान कीती ही।
4. ब्यौरै आस्तै दिक्खो सूर: नम्ल टिप्पनी आयत 40.
5. यानी सुलेमान दा बारस माया दा लोभी हा। ओ कोई अच्छा इन्सान नेई हा। हजरत सुलेमान दे बा'द लोक उसदे ब्यहार कारण बिढ़की पे ते बिद्रीह शुरु होई गेआ (दिक्खो बाइबिल सलातीन भाग-12)।

(साम्राज्य) गी खा करता हा। फी जिसलै ओह डिग्गी पेआ, तां जिन्नं पर जाहर होई गेआ (यानी जिन्नं गी पता लग्गी गेआ) जे जेकर उनेंगी गैब दी जानकारी¹ होंदी तां ओह जिल्लत आहले (अपमान जनक) अजाब च पेदे नेई रोहदे ॥ 15 ॥

सबा आस्तै उंदे अपने देशै च इक बड्डी नशानी मजूद ही (ते ओह) द'ऊं बागें दे रूषै च (ही) जिंदे बिच्चा इक सज्जी बक्खी हा ते इक खब्बी बक्खी (हा, ते असें उनेंगी आखी रख्खे दा हा जे) अपने रब्ब दा दित्ते दा रिशक खाओ ते उस दा शुकर अदा करो (शुआड़ा) शैहर इक खूबसूरत शैहर ऐ ते (शुआड़ा) रब्ब बौहत बख्खाने आहला ऐ ॥ 16 ॥

फी बी उनें (सचाई थमां) मूंह फेरी लैता उसलै असें (उंदे सचाई थमां मूंह फेरने पर मयूस होइयै) उंदी बक्खी ऐसा सैलाब (हाड़) भेजी दिता जेहका हर चीजै गी तबाह करदा जंदा हा ते असें उंदे द'ऊं उत्तम बागें दी ज'गा उनें गी दऊं ऐसे बाग दित्ते जिंदे फल कौड़े-कसैले हे, ते जिंदे च झाऊ होंदा हा जां किश बैरिं दे बूहटे हे ॥ 17 ॥

एह स'जा असें उनेंगी उंदी ना-शुकरी दी ब'जा करी दित्ती ही ते ना-शुकरें गी गै अस ऐसा सिला दिन्ने होन्ने आं ॥ 18 ॥

ते असें उंदे बश्कार ते उनें बस्तियें दे बश्कार, जिनें गी असें बरकत दित्ती दी ही, (यानी

فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِئُ أَنْ تُوَكَّلُوا
يَعْلَمُونَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ
الْمُهَيْنِ ۝١٥

لَقَدْ كَانَ لِسَيِّفٍ فِي مَسْكَنِهِمْ آيَةٌ ۚ جِئْتَن
عَنْ يَمِينٍ وَشِمَالٍ ۚ كُلُّوا مِنْ
رِزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ ۚ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ
وَرَبٌّ غَفُورٌ ۝١٦

فَاعْرَضُوا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرْمِ
وَبَدَّلْنَاهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتِ اُكْلٍ
حَمَاطٍ وَاَثَلٍ ۚ وَشِئْ مِنْ سِدْرٍ قَلِيلٍ ۝١٧

ذٰلِكَ جَزٰٓئُهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ۗ وَهَلْ نُّجْرِيْ
اِلَّا الْكٰفِرُوْا ۝١٨

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِي بَرَكْنَا

1. यानी जेकर उनेंगी इस गल्ला दा पैहलें पता होंदा जे हज़रत सुलेमान जैसे शक्तिशाली सम्राट दे साम्राज्य दा इक दिन सर्वनाश होई जाग तां ओह औने आहले अजादी दे जश्न दी भिट्ठी याद च उंदी आज्ञा दा पालन गै नेई करदे।

फ़लस्तीन ते सुलेमान दा देश हा) बड़ियां बस्तियां बसाई दितियां हियां जेहकियां इक-दूई दे सामनै ते लागै-लागै हियां ते असें इक बस्ती थमां दूई बस्ती तगर जाने दा सफर घटाई दिता हा ते गलाया हा जे रातीं मौकै बी ते दिनै मौकै बी उंदे च नचैत्त होइयै सफर करो ॥ 19 ॥

(मगर शुकरिया अदा करने दे बजाऽ) उनें (एह) गलाया जे हे साढ़े रब्ब! साढ़े सफरें गी लम्मा' करी दे (तां जे सैर ते सफर दा मजा आवै) ते उनें अपने-आपै पर जुलम कीता ते असें उंदा नांऽ मटाई दिता ते उनेंगी बीते वक्त दी कहानियां बनाई दिता^२, ते तबाह् करियै फितां-फितां करी दिता। एहदे च हर सबर करने आहले ते बड़ा शुकर करने आहले बंदे आस्तै बड़े नशान न ॥ 20 ॥

ते इब्नीस नै उंदे बारे च अपना खयाल सच्चा साबत करी दिता ते मोमिनं दे इक गरोह् गी छोड़ियै बाकी लोकें (यानी काफरें) ओहदा अनुसरण कीता ॥ 21 ॥

हालांके उस (यानी शतान) गी उंदे पर कोई अधिकार नेई हा। एह सिर्फ इस लेई होआ तां जे अस उनें गी जेहके आखरत पर ईमान आहानने आहले न उंदे मकाबले च जेहके आखरत पर शक्क करदे न श्रेष्ठता प्रदान करियै उंदे अंदै दी सचाई जाहर करी देचै। ते तेरा रब्ब हर चीजै दा नगरान ऐ ॥ 22 ॥
(रुकू 2/8)

فِيهَا قَرَى ظَاهِرَةً وَقَدَّرْنَا فِيهَا السَّيْرَ
سَيْرًا وَفِيهَا يَالِيًا وَإِيَّامًا آمِنِينَ ۝

فَقَالُوا رَبَّنَا بَعْدَ بَيْنِنَا أَسْفَارِنَا وَظَلَمُوا
أَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ وَمَرَّقَمُهُمْ
كُلَّ مُمَرِّقٍ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ
شَكُورٍ ۝

وَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ
فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِمْ مِنْ سُلْطَانٍ إِلَّا لِنَعْلَمَ
مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِي
شَكٍّ ۝ وَرَبُّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيفٌ ۝

- हजरत सुलेमान दा शासन फ़लस्तीन ते उसदे परें इक होर देशें थमां लेइयै यमन देशें समेत अरब सागर दे कंठे तक फैले दा हा, ते अदन थमां लेइयै फ़ारस दी खाड़ी तगर सारा अरब देश उंदै अधीन हा, पर उंदे बा'द उसदा पतन होआ ते अरब देश अजाद होई गेआ ते देशें च आप-राजी फैलने करी शैहर उज्जड़ी गे ते सफर लम्मा ते मुश्कल होई गेआ।
- यानी उंदा इतिहास नेहा मिटेआ जे उंदी घटनां लोकें गी कहानियें आंगर लगन लगियां।

तू आखी दे जे जिनें लोकें गी तुस अपनी सोच मताबक अल्लाह दे सिवा बुलांदे ओ उनेंगी (अपनी मदद आस्तै) बुलाई लैओ, ओह गासैं ते धरती च इक निक्की कीड़ी दे बराबर बी कुसै चीजै दे मालक नेई ते उनें दौनीं (दी मलकीयत) च उनेंगी (कोई) हिस्सेदारी हासल नेई ते नां उसदा उंदे चा कोई मददगार ऐ ॥ 23 ॥

ते उस (अल्लाह) दे हजूर च उस शख्स दी सफारश दे सिवा जिसगी अल्लाह ने अजाजत दिती दी होऐ (जां जिस शख्स दे हक्क च अल्लाह ने सफारश करने दी अजाजत दिती दी होऐ) कुसै शख्स दी सफारश कम्म नेई दिंदी। इत्थें तक जे जिसलै उंदे (सफारश दी अजाजत हासल करने आहले गरोह दे) दिलें च खौफ नेई रौहदा ते दूए लोक उनेंगी आखदे न जे हूनै-हूनै थुआड़े रब्ब नै तुसेंगी केह गलाया हा। एहदे पर ओह जवाब दिंदे न जे जे किश गलाया हा, सच्च गै गलाया हा ते ओह उच्ची शान ते बड़े अखत्यारें आहला ऐ ॥ 24 ॥

(ते) तू आखी दे (जे हे लोको!) गासैं ते धरती च तुसेंगी रिशक कु'न दिंदा ऐ (ते फी आपू गै उस सुआल्लै दे परते च) आख अल्लाह (होर कु'न) ते अ'कं ते तुस' जां ते हदायत पर कायम आं जां खु'ल्ली-खु'ल्ली गुमराही च पेदे आं ॥ 25 ॥

तू आखी दे (जेकर अस थुआड़े बिचार मूजब मुलजम आं तां) साढ़े जुलमैं बाँरे तुसैं गी नेई

قَالَ ادْعُوا الَّذِينَ رَعِمْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۗ
لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا
فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهَا مِنْ شِرْكٍ
وَمَا لَهُ مِنْهُمْ مِنْ ظَهِيرٍ ﴿۲۳﴾

وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ
حَتَّىٰ إِذَا فُزِعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ فَاثُوَامَاذًا
قَالَ رَبُّكُمْ ۗ قَالُوا الْحَقُّ ۗ وَهُوَ الْعَلِيُّ
الْكَبِيرُ ﴿۲۴﴾

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۗ قُلِ اللَّهُ ۗ وَإِنَّا أَوْ إِيَّاكُمْ
لَعَلَىٰ هُدًىٰ أَوْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿۲۵﴾

قُلْ لَا تَسْأَلُونَنَا عَمَّا آجْرَمْنَا وَلَا نَسْأَلُ عَمَّا

1. इस आयत च द'कं गरोहें दा बर्णन ऐ ते उंदे दौनें दे फलादेशें दा बी कनै गै बर्णन कीता गेदा ऐ हून अर्थ करदे मौकें पैहले फलादेश गी पैहले गरोह पासैं ते दूए फलादेश गी दूए गरोह पासैं परताया जाग ते अर्थ इस चाल्ली होई जाग जे अ'कं ते हदायत पर आं पर थुआड़े भागें च गुमराही गै आँग।

पुच्छेआ जाग ते नां साढे थमां थुआडे कर्म
बाँरे पुच्छेआ जाग ॥ 26 ॥

ते एह बी आखी दे जे साढा रब्ब (इक दिन)
तुसेंगी ते असेंगी (इक लड़ाई दे मदान च)
कठेरग फी हक्क ते इंसाफ कनै असें दौनें
बशकार फैसला करी देग ते ओह सारें थमां
बड्डा (ते) श्रेष्ठ फैसला करने आहला ऐ ते
हर गल्लै गी चंगी-चाल्ली जानदा ऐ ॥ 27 ॥

आख उनेंगी जे मिगी दस्सो ते सेही जिनें गी
तुस शरीक बनाइयै ओहदे कनै मलांदे ओ
(उसदा कोई शरीक बनाना) हरगज ठीक नेई
बल्के सचाई ते एह ऐ जे अल्लाह गालिब
(ते) बड़ी हिक्मतें आहला ऐ ॥ 28 ॥

ते असें तुगी सारे इन्साने¹ पासै (जिंदे बिच्चा
इक बी तेरी रसालत/पैगंबरी) (दी हद्द
थमां बाहर नेई रेहा, ऐसा) रसूल बनाइयै
भेजेआ ऐ जेहका (मोमिनें गी) खुशखबरी
दिंदा ते (काफरें गी) सोहगा करदा ऐ पर
इंसानें बिच्चा मते-हारे इस सचाई थमां
बाकफ नेई ॥ 29 ॥

ते ओह (गुस्से च आइयै) आखी दिंदे न जे
एह (सारी दुनियां तक रसालत/पैगंबरी दा
सनेहा देने दा) बा'यदा जेकर तुस सच्चे ओ
तां कदूं तक पूरा होग? ॥ 30 ॥

تَعْمَلُونَ ①

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا
بِالْحَقِّ ۗ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ ②

قُلْ أَرَأَوَيْ الَّذِينَ آلْحَقَّتْهُمُ بِهِ شُرَكَاءُ
كَلَّا بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ③

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا
وَنَذِيرًا ۗ وَآلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ④

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ⑤

1. अरबी दे मूल शब्द दा एह अर्थ ऐ जे कुसै चीजें गी इस चाल्ली किट्टा कीता जा जे उसदा कोई हिस्सा बाहर नेई रथै। एह आयत इस गल्ला दा प्रतक्ख प्रमाण ऐ जे भामें कोई आदमी यहूदी होऐ जां ईसाई जां कुसै दूए धर्म दा अनुयायी। चाहे ओह क्यामत तक कुसै बी सदी च पैदा होऐ ओह हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दी जुबुव्वत दे अधीन ऐ। एह दा 'वा बाइबिल, इञ्जील ते वेद आदि कुसै धर्म ग्रंथ नै नेई कीता। सब धर्म, सब युगें ते सब जातियें पासै होने दा दा 'वा सिर्फ हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दा गै ऐ जेहका इस आयत च सिद्ध ऐ।

तू आखी दे जे थुआड़े आसतै इक ध्याड़ी' दी मनेआद निश्चत ऐ नां ते तुस ओहदे थमां इक घड़ी पिच्छें रेही सकगे ओ ते नां इक घड़ी अगें बधी सकगे ओ ॥ 31 ॥ (रुकू 3/9)

ते काफर आखदे न जे अस नां ते उस कुरआन गी मन्ने आं ते नां ओहदी भविक्खवाणियें गी जेहकियां ओहदे बारै कीतियां गेदियां न ते जेकर तू जालमें गी उस बेलै दिक्खें जिसलै जे ओह अपने रब्ब सामनै खडरे जाडन। तां उंदे बिच्चा किश लोक दूए लोकें कन्नै बैहस करा करदे होडन ते कमजोर तबका घमंडी तबके गी आखा करदा होग जे जेकर तुस नेई होंदे तां अस जरूर ईमान लेई औंदे ॥ 32 ॥

(उसलै) घमंडी तबका कमजोर तबके गी आखग, जे जिसलै हदायत थुआड़े कश आई गेदी ही तां केह असें तुसें गी उस थमां रोकेआ नथा? (हरगज नेई) बल्के तुस आपू गै मुलजम हे ॥ 33 ॥

ते ओह लोक जिनें गी कमजोर समझेआ गेआ हा, उनें लोकें गी जेहके घमंडी हे आखडन (अस ऐहमें गै मुलजम नथे बनी गे बल्के) थुआड़े दिनें-रातीं दै उपायें असें गी ऐसा बनाई दिता हा जिसलै जे तुस असें गी अल्लाह दे हुकमें दा इन्कार करने ते उसदा शरीक बनाने दी तलीम दिंदे होंदे हे ते जिसलै (उनें नदानियें ते सरकशियें/बे-परबाहियें दे नतीजे च) उनें इक खतरनाक अज्ञाब दिक्खेआ। तां (जेहके लोक अपने आपू गी बड्डा/ख'नै खां समझदे हे) उनें (अपने दिलें दी) शर्मिंदगी गी छपालना

قُلْ لَكُمْ مِيعَادُ يَوْمٍ لَا تَسْتَخِرُونَ عَنْهُ
سَاعَةً وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ ﴿٣١﴾

﴿٣١﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ نُؤْمِنَ بِهَذَا
الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلَوْ تَرَى
إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ
يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ الْقَوْلَ يَقُولُ
الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا
لَوْلَا أَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ﴿٣٢﴾

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا
أَنَحْنُ صَدَدُكُمْ عَنِ الْهُدَى بَعْدَ إِذْ
جَاءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُجْرِمِينَ ﴿٣٣﴾

وَقَالَ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ
اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكْرُؤٌ بَالٍ وَالتَّهَارِ إِذْ
تَأْمُرُونََنَا أَنْ نَكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ
أَنْدَادًا وَأَسْرُوا التَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا
الْعَذَابَ وَجَعَلْنَا الْأَعْغَلَ فِيْ أَعْنَاقِ الَّذِينَ
كَفَرُوا هَلْ يُجْرُونَ إِلَّا مَا كَانُوا

1. इक ध्याड़ी दा मतलब इक ज्हार साल ऐ। हदीस शरीफ दे मताबक इस्लाम दी त्रक्की दे पैहले त्रै सौ साल इस इक ज्हार ब'र च जोड़ने कन्नै एह बा'थदा तेहरमीं सदी हिजरी तगर चलग ते चौहदमीं सदी थमां इस्लाम दी त्रक्की दा समां परतियें शुरू होई जाग।

शुरू कीता¹, तां अस उंदै बिच्चा जेहके पक्के काफर होडन उंदे गलैं च तौक/लड्डन पागे (ते एह स'जा उंदे बुरे कर्मैं दी निसबत ज्यादा नेई होग, क्या ओह समझी नेई सकदे जे) उनेंगी जेहकी स'जा दिती जाग ओह उंदे कर्मैं मताबक होग ॥ 34 ॥

ते असें कुसै बस्ती च सोहगा करने आहला (नबी) नेई भेजेआ जे उसदे मीर लोकें एह नेई आखेआ होऐ जे (हे रसूलो!) अस थुआड़ी रसालत/पैगंबरी थमां इन्कारी आं ॥ 35 ॥

एहदे अलावा ओह एह बी आखदे रेह न जे अस थुआड़े थमां धन-दौलत ते उलाद दे स्हाबें चढ़दे आं ते साढ़े पर अजाब कर्दे बी नेई औग ॥ 36 ॥

तू आखी दे, मेरा रब्ब जेहदे आस्तै चांहदा ऐ रोजी (दे दरबाजे) खोहली दिंदा ऐ ते जेहदे आस्तै चांहदा ऐ बंद करी दिंदा ऐ पर मते-सारे लोक इस बारै नेई जानदे ॥ 37 ॥ (रुकू 4/10)

ते थुआड़ी धन-दौलत ते थुआड़ी उलाद ऐसी चीज नेई जेहकी तुसें गी साढ़ा करीबी बनाई देऐ, हां जेहका ईमान आहनदा/अपनांदा ऐ ते उसदे मताबक सुच्चे कर्म करदा ऐ (ऊऐ साढ़ा करीबी होंदा ऐ) ते इयै नेह लोकें गी उंदे नेक कर्मैं दी ब'जा करी उत्तम थमां उत्तम फलादेश मिलडन ते ओह बाला खानैं/चबारैं च सुख-चैन दी जिंदगी बतीत करडन ॥ 38 ॥

ते ओह लोक जेहके साढ़े नशानें दे बारै असें गी नकाम करने दियां कोशशां करदे न, ओह

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ﴿٣٥﴾

وَقَالُوا نَحْنُ بِمَعَادٍ إِنِ الْأَمْوَالُ وَالْأَوْلَادُ وَالْمَا
نَحْنُ بِمَعَدِّينَ ﴿٣٦﴾

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ
وَيَقْدِرُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٧﴾

وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِآتِي
تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفَىٰ إِلَّا مَن آمَنَ وَعَمِلَ
صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الْوَصْفِ
بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي الْغُرُفَاتِ آمِنُونَ ﴿٣٨﴾

وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ

1. जे अस ते इस गल्ला पर खुश हे जे असेंगी अल्लाह दा शरीक समझेआ जंदा ऐ, पर अज्ज असें गी इक बौहत बड्डा अजाब मिला करदा ऐ।

लोक सख्त अजाब दे सामनै पेश कीते जाडन
॥ 39 ॥

(ते) तू आखी दे जे मेरा रब्ब अपने बंदें
बिच्चा जेहकी रोजी गी चांहदा ऐ, बधाई
दिंदा ऐ ते जेहकी रोजी गी चांहदा ऐ तंग
करी/घटाई दिंदा ऐ ते जे किश बी तुस खर्च
करो, ओह उसदा नतीजा जरूर कइढग।
ओह सारे रिशक देने आहलें थमां चंगा (ते
कामिल) ऐ ॥ 40 ॥

ते जिस दिन ओह (अल्लाह) उनें सारें गी
किट्टा करग फी ओह फरिशतें गी आखग,
क्या एह लोक थुआड़ी अबादत करदे हे?
॥ 41 ॥

ओह आखडन जे तू पाक/पवित्रर ऐं। इनेंगी
छोड़ियै सिर्फ तू गै साद्दा दोस्त ऐं (ते इयां नेई
जिस चाल्ली काफर आखडन) बल्के सचाई
एह ऐ जे ओह ख्याली/मनघड़त ते छप्पी दी
रौहने आहली हस्तियें दी अबादत करदे हे ते
उंदे बिच्चा मते-हारे उनें हस्तियें पर ईमान
आहनदे हे ॥ 42 ॥

ते उनेंगी गलाया जाग, अज्ज तुंदे बिच्चा कोई
कुसै गी नां फायदा पजाई सकग ते नां गै
नुकसान, ते अस जालमें गी आखगे जे उस
दोजख/नरक दा मजा चक्खो, जिसी तुस
झुठलांदे/नकारदे होंदे हे ॥ 43 ॥

ते जिसलै उंदै सामनै साड़े खुल्ले-डुल्ले
नशान पढ़िये सनाए जंदे न तां ओह आखदे
न जे एह शख्स सिर्फ ऐसा आदमी ऐ जेहका
तुसें गी उंदी (उनें हस्तियें दी) अबादत करने
थमां रोकना चांहदा ऐ जिंदी अबादत थुआड़े
पुरखे करदे होंदे हे ते आखदे न जे एह

فِي الْعَذَابِ مُحَضَّرُونَ ﴿٣٩﴾

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ
عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ
فَهُوَ يَخْلِفُهُ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٤٠﴾

وَيَوْمَ يُخْشَرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ
لِلْمَلَائِكَةِ أَهَؤُلَاءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا
يَعْبُدُونَ ﴿٤١﴾

قَالُوا سُبْحٰنَكَ أَنْتَ وَلِيِّنَا مِنْ دُونِهِمْ
بَلْ كَانُوا يَعْبُدُونَ الْجِنَّ أَكْثَرَهُمْ
بِهِمْ مُّؤْمِنُونَ ﴿٤٢﴾

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَفْعًا
وَلَا ضَرًّا ۗ وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا
عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿٤٣﴾

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هٰذَا
إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَنْ يَصُدَّكُمْ عَمَّا كَانُوا
يَعْبُدُونَ ۖ وَإِنَّا لَكٰذِبُونَ ﴿٤٤﴾

(कुरआन सिर्फ) मन घड़त/झूठ ऐ, जेहका अपने पासेआ बनाई लैता गोदा ऐ ते जिसलै कामिल सचाई उंदे सामनै आई जंदी ऐ तां ओह (काफर) मजबूर होइयै एह आखदे न जे एह ते इक खु 'ल्ला-डु 'ल्ला/ जाहरा-बाहरा फरेब' ऐ ॥ 44 ॥

ते असें उनेंगी कोई (शमानी) कताबां नेई दितियां जिनेंगी ओह पढ़दे होन (ते उंदे च नेहियां फजूल गल्लां लिखी दियां होन) ते नां असें उंदे पासै तेरे शा पैहलें कोई (ऐसा) डराने आह्ला भेजेआ हा (जिसनै उनेंगी नेहियां फजूल गल्लां सखाइयां होन) ॥ 45 ॥

ते जेहके लोक उंदे थमां पैहलें हे उनें बी (अपने रसूलें गी) झूठेरेआ गै हा ते उस समे दे लोकें गी उस ताकत दा दसमां हिस्सा बी नेई मिलेआ जेहकी असें उंदे थमां पैहले लोकें गी दित्ती ही पर उनें लोकें (पैहले लोकें दे जललील होने दे ते उंदी स'जा गी दिक्खी लैन दे बावजूद बी) साढ़े रसूलें दा इन्कार गै कौता हा। इस लेई (हून दिक्खी लैन जे इनें परिस्थितियें च) मेरे इन्कार दा नतीजा (यानी अजाब) कनेहा होंदा ऐ ॥ 46 ॥ (रुकू 5/ 11)

तूं आखी दे, अ'ऊं तुसेंगी इक गल्ला दी नसीहत करना (कम स कम ओह ते मनो) ओह एह ऐ जे अल्लाह दे सामनै दो-दो होइयै जां कल्ले-कल्ले खड़ोई जाओ। फी गौर करो (तां यकीनन इयै नतीजा निकलग) जे थुआड़ा एह रसूल मजनु/पागल नेई ओह

إفك مُمْتَرَىٰ ۖ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا
لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ ۗ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ
مُّبِينٌ ﴿٤٤﴾

وَمَا آتَيْنَهُمْ مِنْ كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا وَمَا
أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَذِيرٍ ﴿٤٥﴾

وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا بَلَّغُوا
مِعْشَارَ مَا آتَيْنَهُمْ فَكَذَّبُوا رُسُلِي ۗ
فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٦﴾

قُلْ إِنَّمَا أَعْطُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ أَنْ تَقُومُوا
لِلَّهِ مَثَلِي ۖ وَفَرَادَىٰ تُنْمَتَتَّقَرُوا ۗ وَمَا
بِصَاحِبِكُمْ مِنْ جِنَّةٍ ۗ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ

1. मूल शब्द 'सिह' दा अर्थ जादू बी ऐ ते मनोहर/मन-मोहनी गल्ल बी। इस आस्तै काफर लोक जिसलै एह दिखदे न जे पवित्र कुरआन दी सचाई लोकें दा मन मोहा करदी ऐ तां ओह अपने साथियें गी थोखा देने आस्तै एह आखदे हे जे मुहम्मद साहब किश मन-मोहनियां गल्लां आखी दिंदे न बरना हैन ओह झूठे।

सिर्फ तुसैं गी आगें औने आहले सख्त अजाब थमां सोहगा करने आहला (शख्स) ऐ ॥ 47 ॥

لَكُمْ بَيْنَ يَدَيَّ عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿٤٧﴾

तूं आखी दे जे मैं थुआड़े थमां(रसालत/पैगंबरी दे प्रचार आसतै) जेहकी बी उजरत/ मजदूरी मंगी होऐ, ओह तुस गैं लेई लैओ। मेरा हक्क सिर्फ अल्लाह पर ऐ ते ओह हर चीजै गी दिक्खा करदा ऐ ॥ 48 ॥

قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ۗ إِنِ أَجْرِي إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۗ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٤٨﴾

(फी उनेंगी) आखी दे जे मेरा रब्ब यकीनन झूठ गैं सच्च राहें टुकड़े-टुकड़े करा करदा ऐ ते ओहे हर गुप्त गल्लै गी चंगी-चाल्ली जानदा ऐ ॥ 49 ॥

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَفْضِلُ بِالْحَقِّ ۖ عَلَٰمُ الْغُيُوبِ ﴿٤٩﴾

(ते) आखी दे जे कामिल हक्क आई गेआ ऐ ते झूठ कोई चीज पैदा नेई करदा ते नां कुसै तबाह-बरबाद चीजै गी बापस आहनी/पैहलें आंगर करी सकदा ऐ ॥ 50 ॥

قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبَدِّلُ الْبَاطِلَ وَمَا يُعِيدُ ﴿٥٠﴾

तूं आखी दे जेकर अ'ऊं गुमराह आं तां मेरी गुमराही दा वबाल/गाज सिर्फ मेरे अपने उप्पर गैं पौग ते जेकर अ'ऊं हदायत पर आं तां सिर्फ उस वह्नी दी ब'जा करी आं जेहकी मेरे रब्ब नै मेरे पर नाजल कीती/उतारी दी ऐ। ओह यकीनन केई दुआई/ प्राथनां सुनने आहला(ते) बंदें दे लागै गैं मजूद रौहने आहला ऐ ॥ 51 ॥

قُلْ إِن صَلَّيْتُ فَإِنَّمَا أَضِلُّ عَلَىٰ نَفْسِي ۗ وَإِنِ اهْتَدَيْتُ فِيمَا يُوحَىٰ إِلَيَّ رَبِّي ۗ إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ﴿٥١﴾

ते जेकर तूं उस हालत गी दिक्खें जिसलै जे एह (खुदा दे अजाबें कारण) घबराई जाडन ते उनेंगी नस्सने तै कोई रस्ता नेई मिलग ते

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فَرَغُوا فَلَا قُوَّةَ وَاتَّخَذُوا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٥٢﴾

1. अर्थात् सच्चे ते सफल अंदोलन सचाई कन्नै पैदा होदे न। झूठ कोई बी सफल अंदोलन नेई चलाई सकदा जो सच्च दे मकाबले च ठैहरी सकें ते जिसलै सच्च आई जा ते झूठ मिटी जा तां झूठे च एह ताकत नेई होदी जे ओह अपने मुडदा अंदोलन गी जींदा करी सकै। (दिक्खो सूर: बनी इम्राईल आयत: 82) हां! एह ताकत सिर्फ सच्च गी गैं हासल ऐ जे ओह मरी-मरी बी जींदा होंदा रौहदा ऐ ते अपने बैरियें गी नकाम बनांदा रौहदा ऐ जियां के इस्लाम दा पुनरुत्थान इस गल्ला दा जींदा जागदा सबूत ऐ।

ओह् लागे दे इक मकानै थमां पकड़ी लैते जाडन (तां तुगी पता लगगी जाग जे एह लोक किन्ने थोढ़ पिते न) ॥ 52 ॥

ते आखडन जे अस उस (कलाम) पर ईमान लेई आए पर उनेंगी उस (यानी ईमान) दा हासल करना उन्नी दूर जाइयै किस चाल्ली नसीब होई सकदा ऐ ॥ 53 ॥

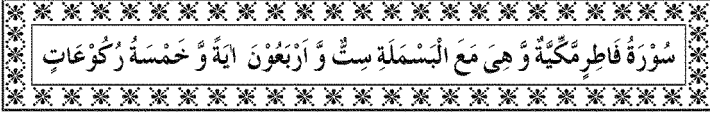
ते ओह् इस थमां पैहलें इसदा इन्कार करी चुके दे न ते दूर बेहियै बिना सोच-बचार कीते फजूल इतराज करदे रेह न ॥ 54 ॥

ते उंदे मझाटै ते उंदी खुआहशें दे मझाटै रकावटां खडेरी दित्तियां गेइयां उस्सै चाल्ली जिस चाल्ली उंदै जनेह लोके कन्ने उंदे शा पैहलें कीता गेआ हा। ओह् बी इक इयै जनेह शक्क च पेदे हे जेहका बेचैनी पैदा करी देने आह्ला हा (ते एह बी) ॥ 55 ॥
(रुकू 6/12)

وَقَالُوا آمَنَّا بِهِ ۚ وَأَنَّى لَهُمُ التَّنَاقُشُ
مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۝٥٣

وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ ۚ وَيَقْدِفُونَ
بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۝٥٤

وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا
فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِمْ مِّن قَبْلُ ۗ إِنَّهُمْ كَانُوا
فِي شَكٍّ مَّرِيبٍ ۝٥٥



सूर: फ़ातिर

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां छतालीं आयतां ते पंज रूकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांउ लेइयै (पढ़ना) जो बे-
हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

अल्लाह दी गै सब तरीफ ऐ जेहका गासैं ते
धरती गी (इक नमें नजाम दे मताबक) पैदा
करने आहला ऐ(ते) फरिशतें गी ऐसी हालत
च रसूल बनाइयै भेजने आहला ऐ जिसलै जे
कदें ते उंदे दो-दो फंघ होंदे न, कदें त्रै-त्रै ते
कदें चार-चार। (ते उनें फरिशतें दे फंघें गी)
पैदा करने च ओह (अल्लाह) जिन्नी चांहदा
ऐ बढोतरी^२ करी दिंदा ऐ अल्लाह हर गल्ल
करने च पूरी-पूरी समर्थ रखदा ऐ ॥ 2 ॥

जेहका रैहमत दा समान अल्लाह लोकें आस्तै
खोहलै उसी कोई बंद करने आहला नेई, ते
जिस रैहमत दे समान गी ओह बंद करै उसी
खुदा दे अलावा कोई खोहली सकने आहला

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
جَاعِلِ الْمَلِكَةِ رُسُلًا أُولِي أَجْنِحَةٍ
مَّثْنَى وَثُلُثٍ وَرُبْعٍ يُزِيدُ فِي الْخَلْقِ مَا
يَشَاءُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ①

مَا يَفْتَحِ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَحْمَةٍ فَلَا
مُمْسِكَ لَهَا ۗ وَمَا يُمْسِكُ ۗ فَلَا يُرْسِلُ لَهُ

1. मूल शब्द फ़ातिर दा अर्थ ऐ भलेआं नमें सिरेआ पैदा करना । गासैं ते धरती दी सिरजना पैहलें होई चुकी दी ही। इस आस्तै द'ऊं पैदाइशें/सिरजनें ते फ़ातिर शब्द गी ध्यान च रखदे होई अनुवाद च नमें नजाम दे मताबक शब्द बधाई दिते गे न।
2. इस ज'गा हज़रत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. दी वहबी दी उच्ची शान दस्सी गोदी ऐ जे इस रसूल पर ऐसे फरिशते उतरडन जेहके अल्लाह दे केई-केई गुणें गी स्पष्ट करने आहले होडन द'ऊं-द'ऊं गुणें दे, त्रैह-त्रैह दे ते च'ऊं-च'ऊं दे, पर इंदे पर गै गल्ल नेई मुक्की जंदी, अल्लाह चाहग तां पवित्तर कुरआन दी वहबी आहने आहले फरिशतें दे फंघें दी गिनती यानी अल्लाह दे उनें गुणें गी जेहके जाहर करने आहले होडन ओह बधाई देग।

नेई। ते ओह बड़ा ग़ालिब (ते) बड़ी हिक्मत आहला ऐ ॥ 3 ॥

हे लोको! अल्लाह दी जेहकी नैमत तुंदे पर नाज़ल होई दी ऐ, उसी याद करो। क्या अल्लाह दे सिवा कोई दूआ खालक/पैदा करने आहला है जेहका गासँ ते धरती थमां तुसंगी रिशक दिंदा होऐ? उसदे अलावा कोई उपास्य नेई, फी तुस कुत्थें भटकाइयै लेते जा करदे ओ ॥ 4 ॥

जेकर एह लोक तुगी झुटेरदे न तां (केह हरज ऐ) तेरे शा पैहलें जिन्ने रसूल होई चुके दे न उनेंगी बी झुटेरेआ गेआ हा ते सारे मसले(फैसले आसतै) अल्लाह दे हज़ूर च गै पेश कीते जाडन ॥ 5 ॥

हे लोको! अल्लाह दा बा 'यदा यकीनन सच्चा ऐ। इस लेई तुसं गी संसारक जीवन धोखे च नेई पाई देऐ ते कोई धोखा देने आहला तुसं गी अल्लाह दे बारै धोखा नेई देऐ ॥ 6 ॥

शतान थुआड़ा सच्वें गै दुश्मन ऐ। इस आसतै उसगी दुश्मन गै समझो। ओह अपने साथियें गी सिर्फ़ इस आसतै बुलांदा ऐ जे ओह दोज़खी/नरक बासी बनी जान ॥ 7 ॥

ओह लोक जिनें कुफर कीते दा ऐ, उंदे आसतै सख़्त अज़ाब निश्चत ऐ ते ओह लोक जेहके ईमान ल्याए ते ईमान दे मताबक उनें कर्म बी कीते, उंदे हिस्से च बख़्शीश ते बौहत बड्डा इनाम ऐ ॥ 8 ॥ (रुकू 1/13)

क्या जिस शख्स आसतै उस दे बुरे कर्म खूबसूरत बनाइयै दस्से गे होन ते ओह उनेंगी चंगा समझदा होऐ (ओह हदायत पाई सकदा ऐ?) फी याद रक्खो जे अल्लाह जिसगी चांहदा ऐ

مِنْ بَعْدِهِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۖ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرِ اللَّهِ يَرْزُقُكُمْ مِمَّنْ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۗ فَاقْبَلُوا تَوْفِيقًا ۝

وَأَنْ يُّكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ رَسُولٌ مِّنْ قَبْلِكَ ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۖ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللَّهِ الْغُرُورُ ۝

إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ۗ إِنَّمَا يَدْعُوا حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝

الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۗ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝

أَفَمَنْ زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ فَرَاهُ حَسَنًا ۗ فَإِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَّشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ

(यानी उसदे लायक समझदा ऐ) उसी तबाह/हलाक करी दिंदा ऐ ते जिसगी चांहदा ऐ (यानी काबल समझदा ऐ) उसगी कामयाबी दा रस्ता दस्सी दिंदा ऐ। ते तेरी जान उंदी ब'जा करी कश्ट-कलेश कन्ने हलाक नेई होई जा/निकली नेई जा। अल्लाह उंदे कर्म गी भलेआं जानदा ऐ (इस लेई अल्लाह दी स'जा कर्म दे ऐन मताबक होंदी ऐ, बिला ब'जा नेई होंदी) ॥ 9 ॥

ते अल्लाह ओह ऐ जो हवामां भेजदा ऐ जेहकियां बदलें गी डुआई लेई जंदिंयां न। फी अस उसी इक मुरदा/खुशक देशे पासै हिविकयै लेई जन्ने आं ते ओहदे राहें धरती गी उस दी बरान्नी दे बा'द अबाद/सर-सब्ज करी दिन्ने आं इस्सै चाल्ली मौती दे बा'द जोंदे होने/जी उटठने दा कनून निश्चत ऐ ॥ 10 ॥

जेहका कोई इज्जत चांहदा ऐ उसी चेता र'वै जे इज्जत सब अल्लाह दे हत्थ ऐ। सच्चियां/पवित्र गल्लां उससै आहली बक्खी चढ़ियै/उडदियां जंदिंयां न ते ईमान दे मताबक कीता गेदा कर्म उनेंगी चुकदा ऐ ते जेहके लोक (थुआड़ै खलाफ) बुरियां तदबीरां/योजनां बनांदे न उंदे आसतै कठोर अजाब (निश्चत) ऐ ते उनें लोकें दियां योजनां तबाह होने आहली शै ऐ (नां के तुस) ॥ 11 ॥

ते अल्लाह नै तुसें गी मिट्टी थमां पैदा कीता ऐ, उस दे बा'द बीरज थमां, फी जोड़ें दे रूपै च बनाया ऐ। ते कोई औरत गर्भवती/पटाली नेई होंदी ते नां ओह बच्चा जमदी ऐ पर ओह सब खुदा दे इलम दे मताबक होंदा ऐ ते नां

يٰۤاَيُّهَا ۞ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ
حَسْرَتٍ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْعُقُوْنَ ۝

وَاللّٰهُ الَّذِيۡ اَرْسَلَ الرِّيۡحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا
فَسُقْنٰهُ اِلَىۡ بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَاۤ اِلَيْهِ
الْاَرْضَۙ بَعْدَ مَوْتِهَا ۗ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ۝

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْغَزَّةَ فَلِلّٰهِ الْغَزَّةُ جَمِيْعًا ۗ
اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ
الصّٰلِحُ يَرْفَعُهُ ۗ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ
السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۗ وَمَكْرُ
اُوْلٰئِكَ هُوَ يُبُوْرُ ۝

وَاللّٰهُ خَافِكُمْ مِّنۡ تُّرَابٍ تُمُّنۡمِنۡ تُظْفِقُوْنَهُ
جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ۗ وَمَا تَحْمِلُ مِنْۢ اُنْثٰى
وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ۗ وَمَا يَعْمَرُ مِنْ

1. अर्थात् पवित्र गल्लें गी अल्लाह स्वीकार करदा ऐ।

कोई लम्मी आयु आहला लम्मी आयु भोगी सकदा ऐ ते नां कुसै दी आयु च कोई कमी कीती जंदी ऐ/घटाई जंदी ऐ, पर ओह इक निजम दे मताबक होंदा ऐ। एह गल्ल अल्लाह आस्तै बड़ी असान ऐ ॥ 12 ॥

ते ऐसे दौं समुंदर (जां दरेआ) कदें बी बराबर नेई होई सकदे उंदे बिच्चा इक मिट्ठा ते मन-भाना होऐ ते उसदा पानी पीने पर असान्नी कनै गले थमां थल्लै ढली जंदा होऐ ते दूआ अत्त खारा, गला फूकी देने आहला होऐ, फी बी तुस उनें दौनीं समुंदरें (जां दरेआएं) थमां ताजा मास खंदे होओ ते उंदे बिच्चा गैहनं दे रूपै च इस्तेमाल होने आहले पदार्थ कढदे होओ (यानी मोती बगैरा) जिनेंगी तुस पांदे ओ ते तुस कश्तियें गी दिखदे ओ जे ओह उंदे (समुंदरें) च लैहरें गी चीरदी अमगें बधी जंदियां न तां जे तुस उस (अल्लाह) दी किरपा गी तलाश करो/ढूंडो ते तां जे तुस स्हानमंद बनी जाओ ॥ 13 ॥

ओह राती गी दिनै च ते दिनै गी राती च बदली दिंदा ऐ ते उसनै सूरज ते चंदरमा गी सारें दी सेवा च लाई रक्खे दा ऐ। इंदे बिच्चा हर इक निश्चत समे आस्तै चली जा करदा ऐ। एह ऐ थुआड़ा रब्ब! बादशाहत उसै दी ऐ ते जिनेंगी तुस उसदे सिवा पुकारदे/पूजदे ओ ओह (खजूरी दे) खजूरें दी गुली ते छिलकें' बश्कार आली झिल्ली दे बराबर बी कुसै चीजै दे मालक नेई न ॥ 14 ॥

जेकर तुस उनेंगी बुलाओ/पूजो तां ओह थुआड़ी प्रार्थना कदें बी नेई सुनडन ते जेकर

مُعَمَّرٍ وَلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمْرِهِ إِلَّا فِي كِتَابٍ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١٥﴾

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرَانِ هَذَا عَذَابٌ فُرَاتٍ
سَائِغٌ شَرَابُهُ وَهَذَا مِلْحٌ أجاجٌ وَ مِنْ
كُلِّ تَأْكُلُونَ لِحْمَاطِرِيًّا وَ سَتَخْرِجُونَ
حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا وَ تَرَى الْفُلْكَ فِيهِ
مَوَازِرَ لَتَبْتَغُوا مِنْ فُضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ﴿١٥﴾

يُؤَلِّجُ آئِيلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي آئِيلِ
وَ سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي
لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ذَلِكَ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ
الْمُلْكُ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ
مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطْمِيرٍ ﴿١٥﴾

إِنْ تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ وَلَوْ

1. एह अरबी भाशा दा मुहावरा ऐ ते एहदा अर्थ एह ऐ जे नकली उपास्य ईश्वरीय सत्ता च कुसै पदार्थ दे नां-मात्तर बी सुआमी नेई न।

सुनी बी लैडन तां थुआड़े फायदे आस्तै उसी स्वीकार नेई करी सकडन ते फी क्यामत आहलै दिन थुआड़े शिर्क दा इन्कार करी देडन ते तुसेंगी सिर्फ बाकफकार' होने थमां बद्ध कोई बी चंगी खबर नेई देई सकदा ॥ 15 ॥ (रुकू 2/14)

हे लोको ! तुस अल्लाह दे मुल्हाज ओ, पर अल्लाह कुसै दा बी मुल्हाज नेई बल्के ओह हर चाल्ली दी स्तुतिये दा मालक ऐ (अर्थात् दूएं दियां जरूरतां पूरियां करदा ऐ) ॥ 16 ॥

जेकर ओह चाह तां तुसें सारे गी तबाह करी देऐ ते इक नर्मी मख्लूक पैदा करी देऐ ॥ 17 ॥

ते ऐसा करी देना अल्लाह आस्तै कोई मुश्कल गल्ल नेई ऐ ॥ 18 ॥

ते कोई बोझ चुक्कने आहली जान कुसै दूए दा बोझ नेई चुक्की सकदी ते जेकर कोई भारे हेठ दबोए दा आदमी अपना बोझ/भार चुक्कने आस्तै कुसै गी (मदद आस्तै) आखै तां उसदा लेश मातर/तिल परमान बी भार नेई चुक्केआ जाग। भारें ओह किन्ना गै करीबी की नेई होऐ। तू ते सिर्फ उनें लोके गी सोहगा करी सकना ऐं जेहके एकांत च बी अपने रब्ब थमां डरदे न ते नमाजां (शर्ते मताबक) पढ़दे न ते जेहका आदमी पवित्तर होंदा ऐ ओह सिर्फ अपनी जान्ना दे भले आस्तै पवित्तर होंदा ऐ ते आखरकार सारे गै अल्लाह कश परतोइयै जाना ऐ ॥ 19 ॥

ते अ'न्ना ते अक्खीं आहला/सजाखा बराबर नेई होई सकदे ॥ 20 ॥

سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ
يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ ۗ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ
خَبِيرٍ ۝

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ
هُوَ الْعَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝

إِنْ يَشَاءُ يُدْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۝
وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۝

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۗ وَإِنْ تَدْعُ
مُثْقَلَةٌ إِلَىٰ حِمْلِهَآ لَا يَحْمِلُ مِنْهُ شَيْءٌ
وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۗ إِنَّمَا تُنذِرُ الَّذِينَ
يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ
وَمَنْ تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ ۗ
وَالَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۝

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۗ

ते नां गै न्हरे ते लो (बराबर होई सकदे न)
॥ 21 ॥

وَلَا الظُّلُمْتُ وَلَا التُّورُ ۝

ते नां धुप्प ते छां/छौं (बराबर होई सकदे न)
॥ 22 ॥

وَلَا الظُّلُّ وَلَا الحَرُورُ ۝

ते नां सजीव ते निरजीव (बराबर होई सकदे न)। सच्चें गै अल्लाह जिसी चांहदा ऐ सुनाई सकदा ऐ, पर जेहके कबरें च दब्बे दे न तूं उनें गी नेई सुनाई सकदा ॥ 23 ॥

وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَالْأَمْوَاتُ ۗ إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَمَا أَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَنْ فِي الْقُبُورِ ۝

तूं ते सिर्फ़ इक सोहगा करने आहला ऐं
॥ 24 ॥

إِنْ أَنْتَ إِلَّا نَذِيرٌ ۝

असें तुगी इक कायम रौहने आहली सदाकत/सचाई कनै इक खुशखबरी देने आहला ते चकन्ना करने आहला बनाइयै भजेआ ऐ ते कोई कौम ऐसी नेई जेहदे कश (खुदा पासेआ) कोई चकन्ना करने आहला नेई आया होऐ
॥ 25 ॥

إِنَّا أَرْسَلْنَا بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۗ وَإِنْ مِنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ۝

ते जेकर एह लोक तुगी झुठरेदे/झुठा साबत करदे न तां उनें लोकें बी जेहके उंदे शा पैहलें होई चुके दे न (अपने समे दे रसूलें गी) झुठरेआ/झुठा साबत कीता हा। उंदै कश बी उंदे समे दे रसूल दलीलां ते किश खास शिशां/नसीहतां कनै लेइयै आए हे ते (उंदे बिच्चा किश) रोशन करने आहली कताब कनै (बी लेइयै आए हे) ॥ 26 ॥

وَإِنْ يَكْذِبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالزُّبُرِ ۗ وَبِالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ۝

फी मैं काफरें गी उंदे झुठलाने दी ब'जा करी (अजाब कनै) पकड़ी लैता। इस लेई (हून दिक्खी लैन जे उनें स्थितियें च) मेरे इन्कार दा नतीजा (यानी अजाब) कनेहा होंदा ऐ
॥ 27 ॥ (रुकू 3/15)

ثُمَّ آخَذْتَ الَّذِينَ كَفَرُوا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ۝

क्या तोह दिक्खेआ नेई जे अल्लाह नै बदलें थमां पानी तुआरेआ/ब्रहाया ऐ? फी असें

الْمُتَرَاتِنَ ۗ إِنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ

ओहदे कन्नै भांत-सभांते रंगें दे फल पैदा कीते न ते भांत-सभांते रंगें दे फ़ाड़ बी (जेहके इक-दूए थमां उत्तम/श्रेष्ठ होंदे न) किश सफेद, किश लाल बक्ख-बक्ख रंगें दे ते स्याह काले बी ॥ 28 ॥

ते लोकें, चौखरें ते जानवरें बिच्चा बी किश नेह होंदे न जे उंदे बिच्चा बी हर इक दा रंग इक-दूए थमां बक्खरा होंदा ऐ। सचाई इससै चाल्ली ऐ ते अल्लाह दे बंदें बिच्चा सिर्फ़ ज्ञानी लोक गै ओहदे शा डरदे न। अल्लाह सच्चें गै बड़ा गालिब (ते) बौहत बख़ाने आह्ला ऐ ॥ 29 ॥

ओह लोक जेहके अल्लाह दी कताब पढ़दे न ते शतें मताबक नमाज अदा करदे न ते जे किश असैं उनेंगी दिते दा ऐ ओहदे बिच्चा अल्लाह दे रस्तै पर छपे-गुच्छे जां जाहरा तौर खर्च करदे न, एह लोक गै असल च ऐसे बपार' दी खोज च न जेहका कदें बी बरबाद नेई होग ॥ 30 ॥

की जे इस दा नतीजा एह होग जे अल्लाह उंदे कर्म दा पूरा-पूरा सिला प्रदान करग ते उसदे सिवा अपनी किरपा कन्नै बधीक बी देग (जेहदे कारण उंदी दशा इस संसारक जीवन च ज़हारां गुणां बेहतर होग)। सच्चें गै ओह (खुदा) बौहत बख़ाने आह्ला (ते) बौहत कदर करने आह्ला ऐ ॥ 31 ॥

ते असैं ओह गल्ल जो इस कुरआन बिच्चा तेरे पर वह्नी राहें तुआरी ऐ, भलेआं सच्ची ऐ ते पूरी होइयै रोहने आहली ऐ ते इस शा पैहलें जेहकी वह्नी आई चुकी दी ऐ उसी पूरा करने आहली बी ऐ। सच्चें गै अल्लाह अपने बंदें

فَأَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمْرَاتٍ مُّخْتَلِفًا أَلْوَانَهَا
وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بَيَضٌ وَحُمْرٌ
مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهَا وَعَرَايِبٌ سُوْدٌ ۝

وَمِنَ النَّاسِ وَالذَّوَابِّ وَالْأَنْعَامِ
مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ كَذٰلِكَ ۗ إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ
مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ
غَفُوْرٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ يَشْتُلُونَ كِتَابَ اللَّهِ
وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ
وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا
وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ۝

لِيُوَفِّيَهُمْ أُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ
مِّنْ فَضْلِهِ ۗ إِنَّهُ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝

وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ هُوَ
الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ
بِعِبَادِهِ لَخَبِيْرٌ بَصِيْرٌ ۝

गी जानदा ऐ (ते) उंदी परिस्थितियें गी दिखदा ऐ ॥ 32 ॥

फ़ी (सचाई एह ऐ जे असें वढ़ी उतारने दे बा'द) अपनी कताब दा बारस सदा उनें लोके गी बनाया ऐ जिनेंगी असें अपने बंदें बिच्चा चुनी लैता। इस आस्तै उंदे बिच्चा किश ते अपनी जान्ना पर अत्याचार करने आहले सिद्ध होए ते किश ऐसे निकले जेहके गभली चाल चलने आहले हे ते किश ऐसे निकले जेहके अल्लाह दी आज्ञा मताबक पुन कम्म करने च दूए थमां अगें बधी जाने आहले हे। एह (अल्लाह दी) अपार किरपा ऐ ॥ 33 ॥

इस दा सिला सदा रौहने आहले ऐसे सुर्ग होडन जिंदे च ओह सदाचारी लोक दाखल होडन ते उनेंगी सुने दे कंगन पुआए जांगन ते मोती (दे गैहनें)¹ बी ते उंदा लबास एहदे च रेशम (दा बने दा) होग ॥ 34 ॥

ते ओह आखडन जे हर चाल्ली दी स्तुति अल्लाह आस्तै गै ऐ जिसनै साढ़ी चैत्ता गी दूर करी दिता। सच्चे गै साढ़ा रब्ब बौहत बख़शने आहला (ते) बौहत कदरदान ऐ ॥ 35 ॥

ओह (अल्लाह) जिसनै अपनी किरपा कनै असेंगी रौहने आस्तै नेही जगह दिती ऐ जित्थें नां गै असेंगी कोई तकलीफ होंदी ऐ ते नां गै थक्कन-हुट्टन ॥ 36 ॥

ते ओह लोक जिनें इन्कार कीता उनेंगी नरकै दी अगग जालग। नां ते उंदे पर मौती दा फैसला लागू होग जे ओह मरी जान ते नां गै नरकै दे अज़ाब च उंदे आस्तै कोई कमी

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ إِذْنِ اللَّهِ ۗ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝

جَبَلْتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُحَلَوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرٍ مِنْ ذَهَبٍ وَ لُؤْلُؤًا ۗ وَ لِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ۝

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزْنَ ۗ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ۝

الَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهِ ۗ لَا يَمَسُّنَا فِيهَا نَصَبٌ وَلَا يَمَسُّنَا فِيهَا لُغُوبٌ ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۗ لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فِيمَوْتُوهُمْ وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِنْ

1. यानी ए इक रूपक ऐ। पराने समे च राजा जिनें लोकें गी सम्मान दिंदे हे, उनेंगी जड़ाक जोड़े (लबास), मोतियें दे हार ते जड़ाक कंगन दिंदे हे।

कीती जाग। अस हर इक ना-शुकरी करने आहले/किरतघन कनै इयै नेहा ब्यहार करने होने आं ॥ 37 ॥

ते ओह उस नरकै च करलाइन (ते आखडन) जे हे साढ़े रब्ब! असें गी इस नरकै चा कइही दे ते अस शुभ कम्म करगे, उनें कम्मं दे उलट जेहके अस इस थमां पैहलें अपने जीवन च करदे होंदे हे। (अस उनेंगी आखगे) क्या असें तुसेंगी इनी आयु नथी दित्ती दी जे जेहदे च नसीहत हासल करने दी चाह रखवने आहला नसीहत हासल करी लैदा ते फी तुंदे कश तुसेंगी सोहगा करने आहले बी ते आए हे? (फी तुसें उंदी गल्ल की नेई सुनी-मनी?) इस आसतै हून एह अजाब भुगतो, की जे अत्याचारियें दा कोई मदादी नेई होंदा ॥ 38 ॥ (स्कू 4/16)

अल्लाह गासैं ते धरती च छप्पी दियें गल्लें दा जानकार ऐ। ओह सीने दियें गल्लें गी बी चंगी-चाल्ली जानदा ऐ ॥ 39 ॥

ऊऐ ऐ जिसनै तुसेंगी संसार च (पैहले लोकें दा) कायमकाम/स्थान लैने आहला बनाया ऐ। इस आसतै जेहका शख्स इन्कार करग उसदे इन्कार दी स'जा उसी गै थोग ते इन्कार करने आहलें दा इन्कार करना उनेंगी उंदे रब्ब दी नजरें च सिर्फ नाराजगी च गै बधांदा ऐ ते इन्कार करने आहलें दा इन्कार उनेंगी सिर्फ घाटे च गै बधांदा ऐ ॥ 40 ॥

तू आखी दे जे मिगी दस्सो ते सेही अपने (मनघड़त) शरीक जिनेंगी तुस अल्लाह दे सिवा पुकारदे/मनदे ओ (ते जेकर ओह नजर नेई औंदे तां) मिगी उंदी ओह मख्बूक दस्सो जेहकी उनें धरती च पैदा कीती दी ऐ, जां केह

عَدَابِهَا ۖ كَذَلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَافِرٍ ۝

وَهُمْ يَصْطَرِحُونَ فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۖ
أَوَلَمْ نَعْمَرْكُمْ مِمَّا بَيْنَ يَدَيْكُمْ فِيمَنْ نَمُنْذِرُكُمْ
وَجَاءَكُمْ التَّذْوِيرُ ۖ فَذُوقُوا فَمَا لِلظَّالِمِينَ
مِنْ نَصِيرٍ ۝

إِنَّ اللَّهَ عَلِيمُ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ
إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلْقًا فِي الْأَرْضِ
فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَلَا يَزِيدُ
الْكُفْرِينَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا ۖ
وَلَا يَزِيدُ الْكُفْرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا
خَسَارًا ۝

قُلْ أَرَأَيْتُمْ شُرَكَاءَ كُمُ الَّذِينَ تَدْعُونَ
مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ
الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَوَاتِ ۚ أَمْ

उंदा गार्सें गी बनाने च कोई योगदान है? क्या असें उनेंगी कोई कताब दिती दी ऐ? केह ओह उस च दस्सी गेदी कोई दलील अपने कनै रखदे न? (आखो ऐसा हरगज नेई) बल्के जालम आपस च इक-दूए कनै सिर्फ धोखा देने आहला बा'यदा करदे न ॥ 41 ॥

अल्लाह नै गै गार्सें ते धरती गी इस गल्ला थमां रोकी रखे दा ऐ जे ओह अपनी ज'गा थमां टली जान ते जेकर ओह टली जान तां उसदे बा'द कोई उनेंगी (तबाह होने शा) रोकी नेई सकग। सच्चें गै ओह बड़ी सूझ-बूझ आहला (ते) बौहत माफ करने आहला ऐ ॥ 42 ॥

ते ओह अल्लाह दियां पक्कियां कसमां खंदे न जे जेकर उंदे कश कोई नबी आई जा तां ओह सारे फिरके/वर्गे बिच्चा हर इक थमां ज्यादा हदायत पाने आहले बनी जाडन पर जिसलै उंदे कश नबी आया तां उसदा औना उनेंगी सिर्फ नफरत च बधाने दा कारण बनेआ ॥ 43 ॥

की जे ओह धरती च बड्डा बनना चांहदे हे ते बुरे उपाऽ करना चांहदे हे ते बुरे उपाऽ उंदे करने आहलें गी गै तबाह करदे होंदे न। तां केह ओह सिर्फ पैहले लोकें दी रीति (यानी अजाब) गी गै बलगा ते नेई करदे? (ते जेकर तूं गौर करें) तां अल्लाह दे सिद्धांत च कदें बी कोई तबदीली नेई पागा/दिखगा ते नां तूं कदें अल्लाह दे सिद्धांत गी टलदे दिखगा ॥ 44 ॥

क्या ओह धरती च नेई फिरे (जेकर ऐसा करदे) तां दिखदे जे उंदे थमां पैहले लोकें दा

أَتَيْنَهُمْ كِتَابًا فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنَاتٍ مِّنْهُ ۚ بَلِ إِنَّ
يَعِدُ الظَّالِمُونَ بَعْضُهُم بَعْضًا إِلَّا غُرُورًا ۝

إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ أَنْ
تَرْتَوْا وَلَٰ وَ لَٰئِن زَالَتَا إِن أَمْسَكَهُمَا مِنْ
أَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهِ ۗ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۝

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِن
جَاءَهُمْ نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْلَىٰ مِنْ
أَحَدَى الْأُمَمِ ۗ فَلَمَّا جَاءَهُمْ نَذِيرٌ
مَا رَأَوْهُ إِلَّا نُفُورًا ۝

اسْتَكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرُ السَّيِّئِ ۗ
وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئِ إِلَّا بِأَهْلِهِ ۗ
فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا سُنَّتِ الْأَوَّلِينَ ۗ
فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۗ
وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَحْوِيلًا ۝

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا

केह अन्जाम होआ? हालांके ओह उंदे शा
ज्यादा ताकतवर/तगड़े हे ते कोई चीज अल्लाह
गी गासैं च ते धरती च अपने इरादे थमां
नकाम नेई करी सकदी। ओह सच्चें गै बौहत
जानने आहला (ते) बड़ी कुदरत/समर्थ आहला
ऐ ॥ 45 ॥

ते जेकर अल्लाह लोकें गी उंदे कम्में दी
ब'जा करी पकड़ना शुरू करी दिंदा तां धरती
पर प्राणी गी बाकी नेई रौहन दिंदा, पर ओह
उनेंगी इक अरसे तक ढिल्ल दिंदा ऐ, फी
जिसलै उंदा तै-शुदा (निश्चत) समां आई
जंदा ऐ तां सिद्ध (साबत) होई जंदा ऐ जे
अल्लाह अपने बंदें गी चंगी चाल्ली दिक्खा
करदा हा ॥ 46 ॥ (रुकू 5/17)

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَمَا كَانَ اللَّهُ
لِيُعْجِزَهُ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا
فِي الْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ۝

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا مَا
تَرَكَ عَلَى ظَهْرِهَا مِنْ دَابَّةٍ وَلَكِنْ
يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ فَإِذَا جَاءَ
أَجَلُهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ بَصِيرًا ۝



सूर: यासीन

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां चरासी आयतां ते पंज रूकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नां५ लेइयै (पढ़ना) जेहका
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

हे सय्यद! ॥ 2 ॥

يَسٍ ②

अस हिक्मत आहले कुरआन गी (तेरे सय्यद
होने दी) गुआही दे रूपै च पेश करने आं
॥ 3 ॥

وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ ③

सच्चें गै तूं रसूलें बिच्चा इक ऐं ॥ 4 ॥

إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ④

(ते) सिद्धे रस्ते पर (ऐं) ॥ 5 ॥

عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ⑤

(ते कुरआन) गालिब (ते) बे-इंतहा/बेहद
रैहम करने आहले (खुदा) पासेआ नाजल
कीता गोआ ऐ ॥ 6 ॥

تَنْزِيلِ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ⑥

इस मकसद कन्नै जे तूं उस कौम गी सचेत
करैं जिंदे पुरखें गी सचेत तथा कीता गोआ ते
ओह गाफिल (बे-खबर) पेदे रेह ॥ 7 ॥

لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أُنذِرَ آبَاؤُهُمْ فَهُمْ
غٰفِلُونَ ⑦

साढ़ा दा'वा² उंदे बिच्चा मते-सारें बारै पूरा
होई गोआ, तां बी ओह ईमान नेई आहनदे
॥ 8 ॥

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَىٰ أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ
لَا يُؤْمِنُونَ ⑧

1. मूल शब्द 'स' खंडाक्षर ऐ जेहका सय्यद दे थाहरें पर बरतोए दा ऐ।
2. इस दा'वे कन्नै सरबंधत इससै सूर: दी आयत 31 ऐ। अफसोस ऐ लोकें पर जे उंदे कश कर्दे कोई रसूल नेई आया जिसदा उनें इन्कार नेई कीता होऐ ते जिस दा मौजू नेई डुआया होऐ।

असैं उंदी गरदनैं/मुंडियें च तौक़/लड्डन पाई रक्खे दे न जेहके उंदी टुड्डियें तक पुज्जी गेदे न ते ओह (कलेश थमां बचने आस्तै अपनी) मुंडियां उच्चियां करा करदे न ॥ 9 ॥

ते असैं उंदे अगें बी इक रोक² लाई दित्ती दी ऐ ते उंदे पिच्छें बी इक रोक लाई दित्ती दी ऐ ते उनेंगी खट्टी दित्ते दा ऐ, इस लेई ओह दिक्खी नेई सकदे ॥ 10 ॥

ते तेरा डराना जां नेई डराना उंदे आस्तै बराबर ऐ ओह (जिन्ना चिर अपने दिलें च तबदीली पैदा नेई करडन) ईमान नेई आहनडन ॥ 11 ॥

तू ते सिर्फ उस शख्स गी सोहगा करी सकना ऐं जेहका याद दिहानी/उपदेश गी मन्नी लैदा ऐ ते रहमान (खुदा) थमां एकांत च बी डरदा ऐ। ते ऐसे शख्स गी तू इक अपार माफी ते इक इज्जत आहले सिले दी खबर सुनाई दे ॥ 12 ॥

अस गै मुडदें गी जीदा करने आं ते जे किश बी अगली जिंदगी आस्तै अगें भेजने आं उसी बी सुरक्षत रक्खने आं ते जेहके कर्म उनें दुनियां च कीते दे हे उंदे जो नतीजे निकलडन उनेंगी बी अस सुरक्षत रक्खने आं ते हर चीजै गी असैं इक खुल्ली कताबा च गिनी रक्खे दा ऐ ॥ 13 ॥ (रकू 1/18)

إِنَّا جَعَلْنَا فِيّ أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُونَ ①

وَجَعَلْنَا مِنْ أَبْئِينِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ②

وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنْذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ③

إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَنَ بِالْغَيْبِ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ④

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَرَهُمْ ۚ وَكُلُّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُّبِينٍ ⑤

1. तौक़ दा सरबंध मनघडत रीत-रवाजें दे बंधन कनै ऐ। धार्मक विधान दे औने थमां पैहलें आदमी उनें रीतें च जकड़ोए दा होंदा ऐ जे ओह उनें रूढ़ियें पर चंगी चाल्ली बचार बी नेई करदा, पर ओह अपनी कौम थमां छप्पे-गुच्छे उनें रूढ़ियें दे दर्दनाक प्रभाव थमां बचना बी चांहदा ऐ जो मनुक्खे गी आपत्ति दा अनुभव होने पर बी सूझ-बूझ थमां कम्म नेई लैन दिंदियां।
2. अगें-पिच्छें रोक बनाने दा एह मतलब ऐ जे इक पासै ते मनुक्ख-जनानी, बच्ची जां नर्मी पीढ़ी गी प्रचलत रीत-रवाजें गी अपनाने आस्तै मजबूर कीता जंदा ऐ तां दूरे पासै ओहदे पर जाति दे बड्डे लोक रूढ़ियें गी पूरा करने आस्तै दबाउ पांदे न। इस चाल्ली मनुक्ख आपत्ति दा आभास होने पर बी सोची-बचारी नेई सकदा।

ते तू उंदे सामने इक ग्रां आहलें दी हालत ब्यान कर जिसलै जे उंदे कश उंदे रसूल आए ॥ 14 ॥

यानी जिसलै जे असें पैहलें ते उंदे कश दऊं रसूल भेजे, पर उनें, उनें दौनीं दा इन्कार करी दिता, इस पर असें पैहले द'ऊं रसूलें जिन्नी ताकत¹ बख्शायै इक त्रीया रसूल भेजेआ फी उनें सारें मिलियै अपनी कौम गी गलाया जे अस थुआड़े कश थुआड़े रब्ब पासेआ इक सनेहा लेइयै भेजे गेदे आं ॥ 15 ॥

उनें (परते च) गलाया जे तुस ते साढ़े आंगर आदमी ओ ते रहमान (खुदा) नै कोई चीज (इल्हाम दे तौरै पर) नेई उतारी, तुस नि'रा-लंब झूठ बोल्ला करदे ओ ॥ 16 ॥

उनें गलाया जे साढ़ा रब्ब इस गल्ला गी जानदा ऐ जे अस थुआड़े कश रसूल बनाइयै भेजे गेदे आं ॥ 17 ॥

ते साढ़ा कम्म सिर्फ एह ऐ जे अस खु'ल्ला-डु'ल्ला प्रचार करचै ॥ 18 ॥

इस पर इन्कार करने आहलें गलाया जे अस ते थुआड़ा अपनै कश औना मन्हूस समझने आं। जेकर तुस अपनी गल्लें थमां नेई रुके/बाज नेई आए तां अस तुंदे पर पथरैढ करी देगे ते तुसेंगी साढ़े पासेआ दर्दनाक अजाब पुज्जग ॥ 19 ॥

उनें गलाया जे थुआड़ा कर्म ते थुआड़े कर्ने ऐ (तुस जित्थें बी हगे ओ थुआड़े कर्म दा

وَأَضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ ۖ
إِذْ جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿١٤﴾

إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا
فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَيْكُمُ
مُّرْسَلُونَ ﴿١٥﴾

قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ
الرَّحْمَنُ مِنْ شَيْءٍ إِن أَنْتُمْ إِلَّا
تَكْذِبُونَ ﴿١٦﴾

قَالُوا رَبَّنَا يُبَدِّلُ مَا كَفَرْنَا بِكَ إِنَّا إِلَيْكُمُ
لَمُرْسَلُونَ ﴿١٧﴾

وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿١٨﴾

قَالُوا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ لَئِن لَّمْ تَنْتَهُوا
لَنَرْجِمَنَّكُمْ وَنُلَاقِيَنَّكُمْ فَاتَّقُوا
الْيَوْمَ ﴿١٩﴾

قَالُوا طَائِرُكُم مَّعَكُمْ ۗ أَلَيْسَ

1. इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे असें पैहलें दो रसूल भेजे, फी उंदा समर्थन करने आस्तै इक त्रीया रसूल भेजेआ ऐ। इस थमां साफ ऐ जे एह त्रीया रसूल बी ऊऐ गल्लां करदा हा जेहकियां गल्लां पैहले दऊं रसूल करदे हे बल्के जेकर ओह् कोई नमीं गल्लां करदा तां उंदा समर्थन कियां करी सकदा हा। इस आयत थमां साफ ऐ जे शरीअत दे बिना बी नबीं औंदे रौंहदे न।

बुरा नतीजा निकलदा रौहग) क्या तुस एह गल्ल इस आस्तै आखदे ओ जे अस तुसेंगी नेक कम्म करने दा चेता करान्ने आं, बल्के सच्च एह ऐ जे तुस सीमा दा उलंघन करने आहली कौम दे लोक ओ (इस आस्तै तुस जरूर स'जा पागे ओ) ॥ 20 ॥

ते शैहरा दे दूए सिरे थमां इक शख्स दौड़दे होई आया, ते उसनै गलाया जे हे मेरी कौम! रसूलें दा अनुसरण करो ॥ 21 ॥

उंदा अनुसरण करो, जेहके तुंदे थमां कोई सिला नेई मंगदे, ते ओह हदायत यापता न ॥ 22 ॥

ذُكِرْتُمْ بِأَنَّكُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ﴿۲۰﴾

وَجَاءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَى قَالَ

يُقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ﴿۲۱﴾

اتَّبِعُوا مَنْ لَا يَسْئَلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ

مُهْتَدُونَ ﴿۲۲﴾

ते मिगी केहू होए दा ऐ जे अऊं उस (रब्ब) दी अबादत नेई करां जिसनै मिगी पैदा कीते दा ऐ ते तुस सारे उससै कश परताइयै लेते जागे ओ ॥ 23 ॥

क्या अऊं उसदे सिवा होर उपास्य अपनाई सकना जेकर रहमान (खुदा) मिगी कोई नुक्सान पुजाना चाह तां उंदी (उनें उपास्यें दी) सफारश मिगी कोई फायदा नेई पुजाई सकदी ते नां ओहू मिगी (उसदे नुक्सान थमां) बचाई सकदे न ॥ 24 ॥

(अगर अऊं ऐसा करां) तां अऊं सच्चें गै गुमराही च फसे दा आं ॥ 25 ॥

अऊं थुआड़े रब्ब पर ईमान ल्याया आं। इस आस्तै मेरी गल्ल सुनो ॥ 26 ॥

(उसलै उसी खुदा पासेआ) आखेआ गेआ, जन्मत/सुर्ग च दाखल होई जा (इस पर) उसनै गलाया, काश! मेरी कौम गी (मेरे अन्जाम/परिणाम दा) पता लगगी जंदा ॥ 27 ॥

जे किस चाल्ली मेरे रब्ब नै मिगी बख्शी दिता ऐ ते मिगी मोज्जज गरोह/सम्मान आहले लोकें च शामिल करी दिता ऐ ॥ 28 ॥

ते असें उसदे बा'द उसदी कौम पर गासै थमां (उनेंगी तबाह करने आस्तै) कोई लश्कर (फौजी दल) नेई उतारेआ, ते नां अस ऐसा लश्कर गै तुआरने होन्ने आं ॥ 29 ॥

सिर्फ इक खतरनाक अजाब उंदे पर आया ते ओहू अपनी सब मान-मर्यादा (शान-शौकत) खोही बैटे ॥ 30 ॥

وَمَا لِيَ لَا أَعْبُدَ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٣﴾

ءَأَتَّخِذُ مِنْ دُونِ الْهَةِ إِن يُرِدِنِ الرَّحْمَنُ بَصْرًا لَا تُعِنِّي شَفَاعَتُهُمْ سَيِّئًا وَلَا يُنْقِدُونِ ﴿٢٤﴾

إِنِّي إِذَا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٥﴾

إِنِّي آمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُونِ ﴿٢٦﴾

قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۗ قَالَ يَا لَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾

بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ ﴿٢٨﴾

وَمَا أَنْزَلْنَا عَلَى قَوْمِهِ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِينَ ﴿٢٩﴾

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خُمُودُونَ ﴿٣٠﴾

हाए अफसोस! (इन्कार करने आहले) बंदें पर जे जिसलै कदें बी उंदै कश कोई रसूल औंदा ऐ तां ओह उसगी हकारत (नफरत) दी नजर कन्नै दिक्खन लगी पौंदे न (ते ओहदा मजाक लैन लगी पौंदे न) ॥ 31 ॥

क्या उनें नेई दिक्खेआ जे उंदे थमां पैहलें किन्नी गै बस्तियें गी अस तबाह करी चुके दे आं (ते एह बी जे जिनेंगी हलाक/तबाह कीता गेआ हा) ओ बापस नेई परतोंदे ॥ 32 ॥

ते सारे लोक पक्क साढ़े हजूर च हाजर कीते जाडन ॥ 33 ॥ (रुकू 2/1)

ते उनें इन्कार करने आहलें आस्तै मुड़दा/खुशक धरती च बी इक नशान ऐ असें उसी जौंदा (हरा-भरा) कीते दा ऐ ते ओहदे च अनाज पैदा कीते दा ऐ। इस आस्तै एह ओहदे बिच्चा खंदे न ॥ 34 ॥

ते असें धरती च खजूरें ते अंगूरें दे बाग बी उगाए दे न। ते ओहदे च चश्मे बी बगाए दे न ॥ 35 ॥

तां जे ओह उस (यानी बागै) दे फल (जरूरता मताबक) खान ते (बागै गी) उंदे हत्थें नेई उगाया (बल्के असें उगाए दा ऐ)। क्या ओह शुकर नेई करदे ? ॥ 36 ॥

पवित्तर ऐ ओह सत्ता जिसनै हर किसमै दे जोड़े पैदा कीते दे न। ओहदे बिच्चा बी जिसी धरती उगांदी (पैदा करदी) ऐ ते उसदी अपनी जानें बिच्चा बी ते उनें पदार्थ बिच्चा बी जिनेंगी ओह नेई जानदे ॥ 37 ॥

ते उंदे आस्तै रात बी इक बड़्हा नशान ऐ जेहदे बिच्चा अस दिनें गी खिचिचियै कड़्ही

يُحْسِرَةٌ عَلَى الْعِبَادِ مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَبِّهِمْ ۚ
رَسُولٍ إِلَّا لَأُتَوَّابَهُ يُسْتَهِزُّوْنَ ۝

أَلَمْ يَرَوْا كُمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ
الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ۝

وَإِنْ كُلُّ لَمَنَّا جَمِيعٌ لَدَيْنَا مُحْضَرُونَ ۝

وَآيَةٌ لَهُمُ الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ ۚ أَحْيَيْنَاهَا
وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا قَمِيْنَةً يَأْكُلُونَ ۝

وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِنْ نَجِيلٍ وَأَعْنَابٍ
وَفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ۝

لِيَأْكُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ ۚ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ
أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۝

سُبْحٰنَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا
مِمَّا تَنْبَغِي الْأَرْضِ وَمِنْ أَنْفُسِهِمْ
وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ۝

وَآيَةٌ لَهُمُ الْبَلُّ ۚ نَسَلُحُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا

लैने आं, जेहदे बा'द ओह अचानक न्हरे च रेही जंदे न ॥ 38 ॥

هُمْ مُّظْلِمُونَ ﴿٣٨﴾

ते सूरज इक निश्चत ज'गा पासै बधी जा करता ऐ। एह गालिब (ते) इलम आहले (खुदा) दा निश्चत नियम ऐ ॥ 39 ॥

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿٣٩﴾

ते चनै गी (दिक्खो जे) असें ओहदे आस्तै बी मंजलां निरधारत करी दिती दियां न इत्थें तक जे ओह (अपनी मंजलें पर चलदे-चलदे) इक पुरानी शाखा¹ आंगर बनिवै दबारा परतोई औंदा ऐ ॥ 40 ॥

وَالْقَمَرَ قَدَرْنَاهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ﴿٤٠﴾

नां ते सूरजै च ताकत ऐ जे ओह अपने सलान्ना दौरै दरान कुसै बेल्लै चनै कश जाई पुज्जै (की जे जेकर ऐसा होऐ तां सारा नजाम तबाह होई जा) ते नां राती च (यानी चनै च) ताकत ऐ जे ओह अगं बंधियै दिनै गी (यानी सूरजै गी) पकड़ी² लै बल्के एह सारे दे सारे इक निश्चत रस्ते पर बड़ी अरामदारी कनै चली जा करदे न ॥ 41 ॥

لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الْيَلُّ سَابِقَ النَّهَارِ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٤١﴾

ते उंदे आस्तै एह बी नशानी ऐ जे अस उंदी संतान गी भरोची दी किशितयें च चुक्की फिरा करने आं ॥ 42 ॥

وَأَيُّهَا لَهُمْ إِنَّا هَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلِكِ الْمَسْحُونِ ﴿٤٢﴾

ते अस उंदे आस्तै इससै किसमै दियां होर (चीजां) बी पैदा करगे जिनेंगी ओह सुआरी दे कम्म लाडन³ ॥ 43 ॥

وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِن مِّثْلِهِ مَا يَرْكَبُونَ ﴿٤٣﴾

1. मतलब एह ऐ जे चन जिसलै दबारा निकलदा ऐ तां ओह इयां लभदा ऐ जियां इक बूटे दी बटोई/मुड़ी की पुरानी शाख होदी ऐ।
2. इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे सूरज, चन ते नखतर कुदरती निजम मताबक सूरज-मंडल च अपने-अपने निश्चत रस्ते पर बिना कुसै रोक-टोक दे बड़ी असान्नी कनै घूमा करदे न। इंदे बिच्चा कुसै च बी एह शाक्ति नेई ऐ जे ओह अपना निश्चत रस्ता छोड़ियै दूए कनै जाई टकरास, की जे जेकर ऐसा होऐ तां सारा सूरज-मंडल बरबाद होई जा।
3. एहदा मतलब भविष्य च जाहूर होने आहलियां सुआरियां न जियां रेल, मोटर, जहाज बगैरा। (ब्यौरे आस्तै दिक्खो सूर: नहल टिप्पणी आयत 9)।

ते जेकर अस चाहचै तां उनेंगी तबाह करी देचै फी कोई उंदी फरेआद सुनने आहला नेई होग ते नां साढ़ी रैहमत दे सिवा कुसै होर उपाऽ राहें बचाए जाडन ॥ 44 ॥

ते ओह सिर्फ इक (निश्चत) अरसे तक संसारक फायदा लेई सकडन ॥ 45 ॥

ते जिसलै उनेंगी गलाया जा जे जो किश थुआड़े अगें औने आहला ऐ (ओहदे शा बचो) ते जेहके कर्म तुस पिच्छें छोड़ी आए दे ओ उंदे नतीजे थमां बी बचने दी कोशश¹ करो तां जे तुंदे पर रैहम कीता जा (तां ओह नसीहत हासल करने दी बजाऽ ओहदा मौजू डुआंदे न ते कोई लाह नेई लैदे) ॥ 46 ॥

ते उंदे रबब दे नशानें बिच्चा जेहका कोई म्हत्तवपूर्ण नशान जाहर होंदा ऐ, ओह ओहदे थमां बी मूंह फेरी लैदे न ॥ 47 ॥

ते जिसलै उनेंगी आखेआ जंदा ऐ जे जे किश तुसें गी खुदा नै दिते दा ऐ ओहदे बिच्चा खर्च करो, ते इन्कारी लोक मोमिनें गी आखदे न जे क्या अस उनेंगी खलाचै जिनेंगी जेकर अल्लाह चांहदा तां आपू बी खलाई सकदा हा तुस (ते खुदा दी मरजी दे खलाफ तलीम देइयै) खु'ल्ली-डु'ल्ली गुमराही च पेई गेदे ओ ॥ 48 ॥

ते ओह आखदे न जे जेकर तुस सच्चे ओ तां असेंगी दस्सो जे ओह (अजाब दा) बा'यदा कदूं पूरा होग ? ॥ 49 ॥

ओह सिर्फ इक अचानक अजाब गी बलगा करदे न जेहका उनेंगी आई पकड़ग ते ओह बैहसैं च गै लागे दे होडन ॥ 50 ॥

وَأَنْ تَشَاءُ نَعْرِقَهُمْ فَلَا صِرَیْحَ لَهُمْ
وَلَا هُمْ يُنْقَدُونَ ﴿٤٤﴾

إِلَّا رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ﴿٤٥﴾

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا
خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٤٦﴾

وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا
كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٤٧﴾

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا رَزَقَكُمْ اللَّهُ
قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا الَّذِينَ آمَنُوا أَتَطْعَمُونَ
مَنْ لَوْ يَسَاءُ اللَّهُ أَطْعَمَهُ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا
فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٤٨﴾

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٤٩﴾

مَا يَنْظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً
تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ﴿٥٠﴾

1. अर्थात् अगें आसै दुआऽ करियै ते होई बीती दी गल्लें बारे तोबा करियै देआ दे पात्र बनो।

उस बेलै नां ते ओह इक-दूए गी कोई नसीहत देई सकडन ते नां अपने टब्बर-टोर कश बापस जाई (उनेंगी समझाई) सकडन ॥ 51 ॥ (रुकू 3/2)

ते बिगल बजाई दिता जाग, ते ओह अचानक कबरें बिच्चा निकलियै अपने रब्व आहले पासै खिट्टें पेई जाडन ॥ 52 ॥

(ते इक दूए गी) आखडन, हाए हलाकत/तबाही! असंगी कुस नै कबरें बिच्चा कडिठयै खडेरी दिता ऐ एह ते ऊरे गल्ल ऐ जिस दा रहमान (खुदा) नै साढ़े कनै बा'यदा कीता हा ते रसूलें जे किश आखेआ हा, सच्च गै आखेआ हा ॥ 53 ॥

एह (सिर्फ) इक अचानक औने आहला अजाब होग जेहदे नतीजे च ओह सारे दे सारे किट्टे करियै साढ़े हजूर च पेश कीते जाडन ॥ 54 ॥

ते उस दिन कुसै जान पर तिल-परमान बी जुलम नेई कीता जाग, ते तुसंगी थुआड़े कर्म मताबक सिला दिता जाग ॥ 55 ॥

जन्तनी/सुर्गबासी लोक उस दिन इक म्हत्तबपूर्ण कम्म (ईश्वर भगती) करने च रुञ्जे दे होडन ते (अपनी हालत दिक्खियै) खुशी-खुशी हस्सा करदे होडन ॥ 56 ॥

ओह बी ते उंदे साथी बी सज्जे-सजाए दे संघासनें पर तकिये रक्खियै बैठे दे होडन (ते खुदा दी रैहमत दी) छतर छाया थल्लै (होडन) ॥ 57 ॥

उंदे आस्तै उनें जन्तों / सुर्गे च मेवे पेश कीते जाडन ते जे किश ओह मंगडन उनेंगी दिता जाग ॥ 58 ॥

فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ
أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥١﴾

﴿٥١﴾

وَتُفْعَخُ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُم مِّنَ
الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنْسَلُونَ ﴿٥٢﴾

﴿٥٢﴾

قَالُوا يَا وَيْلَنَا مَن بَعَثَنَا مِن مَّرْقَدِنَا ۚ هَذَا
مَا وَعَدَ الرَّحْمَنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٣﴾

إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ
جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٥٤﴾

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تَجْرُونَ
إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٥﴾

إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغْلٍ
فُكْهُونَ ﴿٥٦﴾

هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلِّ عَلَىٰ
الْأَرْبَابِ مُتَكَبِّرُونَ ﴿٥٧﴾

لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَالَهُمْ مَا يَدْعُونَ ﴿٥٨﴾

(ते) उनेंगी सलाम आखेआ जाग, जो बार-बार कर्म करने आहले रब्ब पासेआ उंदे आस्तै सनेहा होग ॥ 59 ॥

سَلَّمَ قَوْلًا مِّن رَّبِّ رَحِيمٍ ﴿٥٩﴾

ते (अस एह बी आखगे जे) हे मुलजमो! अज्ज तुस (मोमिनें शा) बक्ख होई जाओ ॥ 60 ॥

وَأَمَّا زُوا النُّيُومِ أَيُّهَا المَجْرِمُونَ ﴿٦٠﴾

हे आदम दी संतान! क्या मैं थुआड़ी एह जिम्मेदारी नथी लाई दी जे शतान दी अबादत नेई करा करो, ओह थुआड़ा जाहरा-बाहरा दुश्मन ऐ ॥ 61 ॥

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ بَيْنِي أَدَمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٦١﴾

ते सिर्फ मेरी अबादत करो जे इयै सिद्धा रस्ता ऐ ॥ 62 ॥

وَإِنِ اعْبُدُونِي هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦٢﴾

ते शतान ते मते-हारे लोकें गी बरबाद करी चुके दा ऐ, क्या थुआड़ी समझा च एह नेई औंदा ? ॥ 63 ॥

وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ﴿٦٣﴾

(दिकखो) एह ज्हेनम/नरक ऐ जेहदा तुंदे कनै बा'यदा कीता जंदा हा ॥ 64 ॥

هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٦٤﴾

अपने कुफर दी ब'जा करी अज्ज एहदे च दाखल होई जाओ ॥ 65 ॥

إِصْلَوْهَا النُّيُومِ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٦٥﴾

उस दिन अस (उंदे कुफर दी ब'जा करी) उंदे मूँहें पर मोहर लाई देगे (यानी बोलने दी लोड़ नेई होग) ते उंदे हत्य साढ़े कनै गल्लां करडन ते उंदे पैर उंदी करतूतें / कारस्तानियें दी गुआही¹ देडन ॥ 66 ॥

النُّيُومِ نَخَبْتُمْ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٦٦﴾

ते जेकर अस चाहचै तां उंदियां अक्खीं अ'नियां करी देचै, फी ओह बिना दिकखे इक रस्ते दी तलाश च चली पौन, पर उस हालती च ओह (सच्चे रस्ते गी) दिकखी कियां सकदे न ?

وَلَوْ نَشَاءُ لَطَمَسْنَا عَلَىٰ أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَأَنَّى يُبْصِرُونَ ﴿٦٧﴾

॥ 67 ॥

1. इस बारे मुट्टी मसाल एह ऐ जे आत्शक दे रोगियें दे नक्के ते गल्लें पर उस दा असर जाहर होंदा ऐ इस आस्तै शरीर बोल्लियै आखीं दिंदा ऐ जे उस शख्स नै जनाह कीते दा ऐ।

ते जेकर अस चाहचै तां जित्थें ओह हैन उत्थें
गै उंदी शान गी नश्ट करी देचै, फी ओह नां
ते कुतै अगें जाई सकन ते नां गै बापस औने
दा रस्ता दिक्खी सकन ॥ 68 ॥ (रुकू 4/3)

ते अस जिस आदमी गी लम्मी उमर प्रदान
करने आं उसी शरीरक ताकतें च कमजोर
करदे जन्ने आं, क्या ओह फी बी नेई
समझदे¹ ? ॥ 69 ॥

ते असें उसी (यानी हजरत मुहम्मद मुस्तफा
स.अ.व. गी) कविता करना नेई सखाया, ते
नां एह कम्म उसदी शान दे मताबक हा। एह
कुरआन ते सिर्फ इक नसीहत ऐ ते बार-बार
पढ़ने आहली कताब ऐ जेहकी (दलीलां बी
कनै-कनै) ब्यान करदी / दिंदी ऐ ॥ 70 ॥

तां जे जेहका जिंदा दिल / सजीव ऐ उसी
सोहगा करी देऐ ते इन्कारियें बाँरे खुदा दा
फैसला पूरा होई जा ॥ 71 ॥

क्या ओह नेई दिखदे जे असें उंदे आस्तै
अपनी खास शक्ति राहें चौखर बनाए दे न ते
ओह उंदे मालक न ॥ 72 ॥

ते असें उनें चौखरें गी उंदे अधीन करी दिते
दा ऐ। इस आस्तै उंदे बिच्चा केइयें पर ओह
सुआरी करदे न ते केइयें गी ओह खंदे न
॥ 73 ॥

ते उंदे शा केई किसमें दे फायदे लैंदे न ते पीने
दा समान बी हासल करदे न क्या ओह शुकर
नेई करदे ? ॥ 74 ॥

وَلَوْ شَاءَ لَسَخْنُهمْ عَلَى مَكَاتِبِهِمْ فَمَا
اسْتَعَاوَا مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ﴿٦٨﴾

وَمَنْ نُعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ ۗ أَفَلَا
يَعْقِلُونَ ﴿٦٩﴾

وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ ۗ
إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُّبِينٌ ﴿٧٠﴾

يُنذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَيَحِقُّ الْقَوْلُ عَلَى
الْكَافِرِينَ ﴿٧١﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِمَّا عَمِلَتْ
أَيْدِيئِنَا أَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مَلَكَوْنَ ﴿٧٢﴾

وَذَلَّلْنَا لَهُم مِّنْهَا رَكُوبَهُمْ وَ مِنْهَا
يَأْكُلُونَ ﴿٧٣﴾

وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ۗ أَفَلَا
يَشْكُرُونَ ﴿٧٤﴾

1. यानी इस्त्राईलियें लम्मी उमर भोगी ऐ ते हून उंदे पतन दा समां आई चुके दा ऐ। को जे कोमें दी मसाल बी
बंदें आंगर होदी ऐ।

ते उनें लोकेँ अल्लाह दे सिवा किश होर
उपास्य बनाई लैते दे न जे शायद कुसै बेलै
उंदी मदाद कीती जा ॥ 75 ॥

ओह् (उपास्य) उंदी कोई मदाद नेई करी
सकदे ते ओह् (उपास्य उंदी मदद केह् करडन)
उल्टा उंदे खलाफ सारे इक लश्कर / फौज दी
शक्ती च किट्ठे होइयै गुआही देडन ॥ 76 ॥

इस आसतै तुगी उंदियां गल्लां / हरकतां दुखी
नेई करन अस उसी बी जानने आं जो ओह्
छपालदे न ते उसी बी जो ओह् जाहर करदे
न ॥ 77 ॥

क्या इन्सान गी पता नेई जे असें उसी (बीरज
दे) इक कतरे / तोपे थमां पैदा कीते दा ऐ फी
(जिसलै) ओह् (पैदा होंदा ऐ तां) अचानक
सख्त / कट्टर झगड़ालू बनी जंदा ऐ ॥ 78 ॥

ते साढ़ी हस्ती दे बाँरे गल्लां बनान लगी
पौंदा ऐ ते अपनी पदायश गी भुल्ली जंदा ऐ
ते आखन लगदा ऐ जे जिसलै हड्डियां
सड़ी-गली जाडन तां उनेंगी भला कु 'न जौंदा
करग ? ॥ 79 ॥

तू आखी दे जे ऐसी हड्डियें गी ऊऐ जौंदा
करग जिसनै उनेंगी पैहली बार पैदा कीता हा
ते ओह् हर मख्लूक दी हालत थमां भलेआं
बाकफ ऐ ॥ 80 ॥

ओह् (खुदा) जिसनै थुआड़े आसतै सैल्ले
बूहटें बिच्चा अगग पैदा कीती दी ऐ। ते तुस
उस अधार पर अगग बालदे ओ ॥ 81 ॥

क्या ओह् जिसनै गासें ते धरती गी पैदा कीते
दा ऐ इस गल्ला दी समर्थ नेई रखदा जे उंदे
आंगर होर मख्लूक पैदा करी देऐ। ऐसी सोच

وَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَّعَلَّهُمْ
يَبْصُرُونَ ﴿٧٥﴾

لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ
جُنْدٌ مُّحْضَرُونَ ﴿٧٦﴾

فَلَا يَحْزُنُّكَ قَوْلُهُمْ إِنَّا نَعْلَمُ مَا
يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٧﴾

أَوَلَمْ يَرَ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ
فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ﴿٧٨﴾

وَصَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَوَسَّى خَلْقَهُ ۖ قَالَ
مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ﴿٧٩﴾

قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنْشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ
وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ﴿٨٠﴾

الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ مِنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ
نَارًا إِذَا أَنْتُمْ مِنْهُ تُوقِدُونَ ﴿٨١﴾

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۚ بَلَىٰ ۚ

(जे ओह पैदा नेई करी सकदा) ठीक नेई,
बल्के ओह बौहत पैदा करने आह्ला (ते)
बौहत जानने आह्ला ऐ ॥ 82 ॥

उस दा मसला ते इयां ऐ जे जिसलै कदें ओह
एह ध्याई लेंदा ऐ जे फलानी चीज होई जा,
ओह ओहदे बारै आखी दिंदा ऐ जे इस चाल्ली
होई जा ते ओह उसै चाल्ली होई जंदी ऐ
॥ 83 ॥

इस आस्तै पबित्तर ऐ ओह सत्ता जिसदे कब्जे
च सारे पदार्थ/सारियें चीजें दा शासन ऐ ते
जेहदे कश तुसैं सारें गी बापस परताइयै लेता
जाग ॥ 84 ॥ (रुकू 5/4)

وَهُوَ الْخَلْقُ الْعَلِيمُ ﴿٣٦﴾

إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ
كُنْ فَيَكُونُ ﴿٣٧﴾

فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ
وَأِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٣٨﴾

ooo

سُورَةُ الصَّفَاتِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ مِائَةٌ وَثَلَاثٌ وَتَمَانُونَ آيَةٌ وَخَمْسَةٌ زُكُوعَاتٍ

सूर: अल्-साफ़ात

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां इक सौ तेरेआसी आयतां ते पंज रुकू न।

अऊं अल्लाह दा नांउ लेइयै (पढ़ना) जो बे-
हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार रैहम
करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

(अऊं) गुआही दे तौरा पर पेश करना उनें
सत्ताएं गी जो (सचाई दे दुश्मनें सामनें) रीहगां।
ब'न्नियै खड़ोते दे न ॥ 2 ॥

وَالصَّفَاتِ صَفًّا ۝

ते जेहके बुरे कम्म करने आहलें गी डांटदे न
॥ 3 ॥

فَالزُّجُرَاتِ زَجْرًا ۝

ते अल्लाह दी वाणी (यानी कुरआन) पढ़ी-
पढ़ियै सुनांदे न ॥ 4 ॥

فَالثَّلِيثِ ذِكْرًا ۝

सच्चें गै थुआड़ा उपास्य इक्कला उपास्य ऐ
॥ 5 ॥

إِنَّ إِلَهُكُمْ لَوَاحِدٌ ۝

गासें दा बी रब्ब ऐ ते धरती दा बी ते जो
किश इनें दौनें दे मझाटै ऐ उस दा बी ते
रोशनी प्रकट करने आहली सारी ज'में दा
बी ॥ 6 ॥

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝

असें लागे दे गासै गी नखतरें कनै सजाए दा
ऐ ॥ 7 ॥

إِنَّا زَيْنًا أَلْمَسَاءِ الدُّنْيَا بَزِينَةٍ
الْكَوَاكِبِ ۝

ते असें उसगी हर सिरफिरे शतान थमां सुरक्षत
कीते दा ऐ ॥ 8 ॥

وَحِفْظًا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَارِدٍ ۝

1. यानी हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दे साथी।

ओह (सिरफिरे शतान) उप्परे दी शक्तिशाली¹
हस्तियें दी गल्ल नेई सुनदे² ते हर पासेआ
उनेंगी (कोड़े³ मारी-मारी) दूर कीता जंदा ऐ
॥ 9 ॥

لَا يَسْمَعُونَ إِلَى الْمَلَأِ الْأَعْلَى
وَيَقْدِفُونَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ①

ते उंदे आस्तै इक स्थायै अजाब ऐ ॥ 10 ॥

دُحُورًا وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ②

मगर उंदे बिच्चा जेहका आदमी कोई गल्ल
शरारत कनै डुआई⁴ लेई जा तां ओहदे पिच्छें
इक शिहाबे साक्रिब (चमकदा तारा) लगगी
जंदी ऐ ॥ 11 ॥

إِلَّا مَنْ خَطَفَ الْحَظْفَةَ فَاتَّبَعَهُ
شِهَابٌ ثَاقِبٌ ③

इस आस्तै तूं उंदे शा पुच्छ जे क्या पदायश
दे लिहाज कनै उनेंगी पैदा करना ज्यादा मुश्कल
ऐ जां (उंदे सिवा विश्व दी बवस्था) जो असें
बनाया ऐ ? असें उनेंगी इक चिपकने आहली
मिट्टी कनै बनाए दा ऐ ॥ 12 ॥

فَاسْتَفْتِهِمْ أَهْمُ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ مَنْ خَلَقْنَا
إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِنْ طِينٍ لَازِبٍ ④

बल्के सचाई एह ऐ जे तूं (उंदी गल्लें पर)
रूहान होना ऐं ते ओह (तेरी गल्लें गी) तुच्छ
समझदे न ॥ 13 ॥

بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ⑤

ते जिसलै उनेंगी नसीहत दिती जंदी ऐ तां
ओह नसीहत हासल नेई करदे ॥ 14 ॥

وَإِذَا دُكِّرُوا لَا يَذْكُرُونَ ⑥

ते जिसलै कोई नशान दिखदे न तां ओहदा
मौजू डुआंदे न ॥ 15 ॥

وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخَرُونَ ⑦

ते आखदे न जे एह ते इक जाहरा-बाहरा
मकर ऐ ॥ 16 ॥

وَقَالُوا إِن هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ⑧

1. यानी फ़रिश्तें गी
2. मतलब एह ऐ जे सचाई गी प्राप्त नेई करी सकदे ते सिर्फ जाहरी रूपै च सुनदे न।
3. यानी जिसलै शतानें दे सरूप संसार च नबियें दे इल्हाम गी लेइयें ते उसी बगाड़ियें लोकें दे सामनै पेश करना चांहेदे न तां अल्लाह दा अजाब फटक्क उतरदा ऐ ते उनेंगी कोड़े मारी-मारियें नसाई दिता जंदा ऐ।
4. यानी बरोधी होने दी ब'जा कनै जेकर कुर'आन दा कोई टुकड़ा बरोधी डुआई लेई जा तां जे लोकें गी धोखा देई सकै तां अल्लाह नै ओहदे आस्तै अपने ऐसे बंदे जो शतानें गी मारने दी ताकत रखदे होंन खड़े कीते दे न जेहके अल्लाह दे कलाम गी बगाड़ियें पेश करने आहल्लें गी स'जा दिंदे न।

क्या जिसलै अस मरी जागे ते मिट्टी होई जागे ते हड्डियां होई जागे असेंगी परतियै दुआलियै खडेरी दिता जाग ? ॥ 17 ॥

ते (इस्सै चाल्ली) साढ़े पुरखें गी बी ॥ 18 ॥

तूं आखी दे, हां! (हां!) बल्के तुस ज़लील/अपमानत होई जागे ॥ 19 ॥

ओह घड़ी ते सिर्फ़ इक डांट/द्रंड (आंगर) ऐ ते जियां गै ओह डांट/द्रंड पौग ओह (जींदे होइयै) दिक्खन लगी पौडन ॥ 20 ॥

ते आखडन जे अफसोस! साढ़े पर! इयै ते फल प्राप्ति दा दिन ऐ ॥ 21 ॥

(ते खुदा पासेआ अवाज औग) एह ओहका फ़ैसले दा ध्याड़ा ऐ जिसदा तुस इन्कार करदे होंदे हे ॥ 22 ॥ (रुकू 1/5)

(अस फरिश्तें गी आखगे जे) जिनें जुलम कीता हा उनेंगी बी ते उंदे साथियें गी बी ते खुदा दे सिवा जिंदी ओह अबादत करदे होंदे हे उनें गी बी जींदा करियै खडेरी देओ ॥ 23 ॥

(ते) अल्लाह दे सिवा (जिंदी ओह अबादत करदे होंदे हे) उनें सारें गी ज़हन्नम आहले रस्ते पासै लेई जाओ ॥ 24 ॥

फ़ी (उत्थें तक लेई जाइयै) उनेंगी खडेरी देओ। की जे उत्थें उंदे कन्नै किश सुआल कीते जाडन ॥ 25 ॥

(ते उंदे थमां पुच्छेआ जाग) तुसेंगी केह होई गोदा ऐ जे तुस इक-दूए दी मदद नेई करदे ? ॥ 26 ॥

सच्च एह ऐ जे (मदद करना दूर रेहा) ओह उस दिन हथ्यार भलेआं गै सुट्टी देडन ॥ 27 ॥

إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا
إِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿١٧﴾

أَوَابًا وَنَا الْأَوْلُونَ ﴿١٨﴾

قُلْ نَعْمُ وَأَنْتُمْ دَاخِرُونَ ﴿١٩﴾

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا
هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٢٠﴾

وَقَالُوا يَا وَيْلَنَا هَذَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿٢١﴾

هَذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ
تُكَذِّبُونَ ﴿٢٢﴾

أَحْسَرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ
وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿٢٣﴾

مِنْ دُونِ اللَّهِ فَاهْدُوهُمْ إِلَى صِرَاطِ
الْجَحِيمِ ﴿٢٤﴾

وَقِفُّهُمْ إِنَّهُمْ مَسْئُوتُونَ ﴿٢٥﴾

مَا لَكُمْ لَا تَنْصَرُونَ ﴿٢٦﴾

بَلْ هُمْ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ﴿٢٧﴾

ते उंदे बिच्चा इक फिरका/गरोह दूए कनै बैहस करग ॥ 28 ॥

وَاقْبَلْ بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٨﴾

ते उसी मखातब होइयै आखग जे तुस म्हेशां साढ़े सज्जे पासेआ¹ आँदे हे ॥ 29 ॥

قَالُوا إِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ﴿٢٩﴾

(उंदे काल्पनिक उपास्य परते च) आखडन जे इयां नेई, सच्च एह ऐ जे तुंदे अपनै अंदर ईमान (दा मादा) नेई हा ॥ 30 ॥

قَالُوا بَلْ لَمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٣٠﴾

ते असेंगी तुंदे पर कोई गलबा (आधिपत्य) नेई हा, बल्के तुस इक सिरफिरी कौम हे ॥ 31 ॥

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطٰنٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ﴿٣١﴾

ते अज्ज साढ़े सारें दे बारै साढ़े रब्ब दी गल्ल पूरी होई गई जे अस (अज़ाब) चक्खने आहले आं ॥ 32 ॥

فَحَقِّقْنَا قَوْلَ رَبِّنَا ۗ إِنَّكَ لَدَائِقُونَ ﴿٣٢﴾

ते (एह स्हेई ऐ जे) असें तुसेंगी गुमराह कीता हा की जे अस आपूं बी गुमराह हे ॥ 33 ॥

فَأَعْوَبْنٰكُمْ ۖ إِنَّا كُنَّا غٰوِبِينَ ﴿٣٣﴾

इस लेई (उसदा नतीजा एह होग जे) उस दिन ओह सारे अज़ाब च शरीक होडन ॥ 34 ॥

فَأَنهٖم يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٤﴾

अस मुलजमें कनै इयां गै करने होने आं ॥ 35 ॥

إِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ﴿٣٥﴾

जदू कदें उनेंगी एह आखेआ जंदा हा जे अल्लाह दे सिवा कोई उपास्य नेई तां ओह घमंड करदे होंदे हे ॥ 36 ॥

إِنَّهٗم كَانُوا إِذْ أُقِيلَ لَهُم لَآ إِلَهَ إِلَّا اللهُ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٣٦﴾

ते आखदे होंदे हे जे क्या अस अपने उपास्यें गी इक कवि ते मजनु दे आखने पर छोड़ी देचै ॥ 37 ॥

وَيَقُولُونَ إِنَّا لَنَأْرِكُوا إِلَهَتَنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُونٍ ﴿٣٧﴾

सचाई एह ऐ जे ओह (यानी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व.) कामिल सचाई लेइयै आया ऐ ते पैहले सारे रसूलें गी सच्चा आखदा/ उरहांदा ऐ ॥ 38 ॥

بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَقَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٨﴾

1. "सज्जा पासा" धर्म आस्तै बरतेआ जंदा ऐ ते भाव एह ऐ जे धर्म दा सहारा लेइयै ओह असेंगी थोखा दिंदे हे।

(हे मुन्करो यानी इन्कार करने आहलेओ!)
तुस सच्चें गै दर्दनाक अज़ाब चक्खने आहले
ओ ॥ 39 ॥

ते जे किश तुस करदे होंदे हे उसै मताबक
स'जा पागे ओ ॥ 40 ॥

मगर जो अल्लाह दे चुने दे बंदे न (उनेंगी
दर्दनाक अज़ाब नेई मिलग) ॥ 41 ॥

(बल्के) उनेंगी मालूम¹/टकोधा रिशक थ्होग
॥ 42 ॥

(यानी) फलें ते मेवें दी किसमें कनै, ते
उंदी नैमत आहले बागें च इज्जत कीती
जाग ॥ 43- 44 ॥

ओह सिंहासनें पर आमनै-सामनै बौहडन
॥ 45 ॥

(चश्में दे) पानियें कनै भरे दे गलास उंदे
कश ल्यांहदे जांगन ॥ 46 ॥

जेहके सफेद होंगन ते पीने आहलें आसै
सुआदले होंगन ॥ 47 ॥

नां ते उंदे कनै सिर पीड़ होग ते नां ओह
लोक (डरै कारण) अकल गुआई बाँहगन
॥ 48 ॥

ते उंदे कश मुट्टी-मुट्टी अक्खीं आहलियां ते
नीमियां नजरां रक्खने आहलियां जनानियां
होंगन ॥ 49 ॥

आखो जे ओह खट्टे दे अंडे² होन ॥ 50 ॥

फनी ओह उंदे बिच्चा कुसै-कुसै पासै सुआल
पुच्छने आसै ध्यान देंग ॥ 51 ॥

إِنَّكُمْ لَذَائِقُوا الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ۝

وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلِصِينَ ۝

أُولَئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ۝

فَوَاكِهَ ۖ وَهُمْ مُكْرَمُونَ ۝
فِي جَنَّاتِ التَّعِيمِ ۝

عَلَى سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ۝

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِّنْ مَّعِينٍ ۝

بِيَصَاءٍ لَّدَةِ اللَّسْرِ ۝

لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنرَفُونَ ۝

وَعِنْدَهُمْ قُصِرَاتُ الطَّرْفِ عِينٌ ۝

كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُودٌ ۝

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝

1. ओह रोजी जेहदा जिकर कुरआन मजीद च कीता गेदा ऐ।

2. यानी बे-हद सुंदर, पवित्र ते साफ।

ते कोई शख्स उंदे बिच्चा एह आखग जे मेरा इक साथी होंदा हा ॥ 52 ॥

قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ۝٥٢

ओह आखदा होंदा हा जे क्या तू बी (क्यामत पर) जकनीन करने आहलें बिच्चा ऐ ? ॥ 53 ॥

يَقُولُ أَبَيْتَكَ لِمَنِ الْمُصَدِّقِينَ ۝٥٣

(ते जेकर एह गल्ल ऐ तां दस्स जे) क्या जिसलै अस मरी जागे ते मिट्टी ते हड्डियां होई जागे तां क्या असेंगी साढ़े कर्म दी स'जा दिती जाग ? ॥ 54 ॥

إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا
إِنَّا لَمَدِينُونَ ۝٥٤

इस पर ओह (मोमिन शख्स) आखग, क्या तुंदे बिच्चा कोई ऐसा है जेहका झांकियै दिक्खै जे उस (शख्स) दा केह हाल ऐ ॥ 55 ॥

قَالَ هَلْ أُنْتُمْ مُّظِلُّونَ ۝٥٥

फी ओह आपू गे हाल जानने दी कोशश करग ते अपने संसारक साथी गी जहनम च पेदा दिक्खग ॥ 56 ॥

فَاطْلَعْ فِرَاهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝٥٦

फी उसगी आखग, खुदा दी कसम! तू ते मिगी बी बरबाद करन लगा हा ॥ 57 ॥

قَالَ تَاللَّهِ إِنْ كِدْتَ لَتُرْدِينِ ۝٥٧

ते जेकर मेरे रब्ब दी किरपा नेई होंदी तां अ'ऊं बी अज्ज नरकै दे सामनै हाजर कीते जाने आहलें बिच्चा होंदा ॥ 58 ॥

وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنْتُ
مِنَ الْمُحْضَرِينَ ۝٥٨

(हे नरक वासी!) हून ते दस्स-क्या सिवाए पैहली मौती दे साढ़े आस्तै होर कोई ॥ 59 ॥

أَفَمَا نَحْنُ بِمَسِيئِينَ ۝٥٩

मौत नेई ? ते असेंगी कोई अजाब नेई दिता जाग ? ॥ 60 ॥

إِلَّا مَوْتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ
بِمُعَذَّبِينَ ۝٦٠

एह (मोमिन दी हालत) बे-शक्क बड्डी कामयाबी ऐ ॥ 61 ॥

إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْقَوْمُ الْعَظِيمُ ۝٦١

ते कर्म करने आहलें गी इयै पद/मकाम हासल करने आस्तै कोशश करनी चाही दी ॥ 62 ॥

لِمِثْلِ هَذَا فَلْيَحْمِلِ الْعِمْلُونَ ۝٦٢

क्या एह परौहनचारी बेहतर ऐ जां थोहरी दा बूहटा ? ॥ 63 ॥

أَذَلِكَ خَيْرٌ تُزَلُّ أَمْ شَجَرَةُ الرَّقُومِ ۝٦٣

असें उसी जालमें आस्तै इक अजमैश दा जरीया/साधन बनाए दा ऐ ॥ 64 ॥

إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً لِلظَّالِمِينَ ۝٦٤

ओह इक ऐसा बूहटा ऐ जेहका दोजख दे थल्लै उगदा ऐ ॥ 65 ॥

إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ ۝٦٥

उस दा फल नेहा होंदा ऐ जियां सपें दे सिर ॥ 66 ॥

طَلْعَهَا كَأَنَّه رُءُوسُ الشَّيْطَانِ ۝٦٦

इस लेई ओह उस बूहटे थमां खांगन ते ओहदे कनै अपने ढिड्ड भरडन ॥ 67 ॥

فَأَنَّهُمْ لَأَكَلُونَ مِنْهَا فَمَا كُتِبَ لَهُمْ أَن يَتُوبُوا ۝٦٧

ते इस दे इलावा उंदे (पीने आहले) पानी च चंगा खौलदा/खरपदा पानी पाया जाग। ॥ 68 ॥

ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيمٍ ۝٦٨

फी उनें सारें गी परताइयै ज्हनम आहलै पासै लेता जाग ॥ 69 ॥

ثُمَّ إِنَّ مَرَجَهُمْ لِأَلَى الْجَحِيمِ ۝٦٩

उनें अपने पुरखें गी गुमराह होए दे दिक्खेआ ॥ 70 ॥

إِنَّهُمْ أَقْبَوُا أَبَاءَهُمْ صَالِينَ ۝٧٠

ते ओह बी उंदी घासी पर दौड़ी पे ॥ 71 ॥

فَهُمْ عَلَىٰ أَثَرِهِمْ يُهْرَعُونَ ۝٧١

ते उंदे थमां पैहलें मतियां सारियां पैहलियां कौमां बी गुमराह होई चुकी दियां न ॥ 72 ॥

وَلَقَدْ صَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ ۝٧٢

ते अस उंदे च रसूल भेजी चुके दे आं ॥ 73 ॥

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِمْ مُّنْذِرِينَ ۝٧٣

पही दिक्खो जिनैगी डराया गोआ हा, उंदा अन्जाम केह होआ? ॥ 74 ॥

فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذِرِينَ ۝٧٤

सिवाए अल्लाह दे शरधाळू भर्तें दे ॥ 75 ॥ (रुकू 2/6)

عَفَىٰ

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلِصِينَ ۝٧٥

ते असेंगी (रसूलें बिच्चा) नूह नै बी बुलाया हा ते अस बड़ अच्छा जवाब देने आहले आं ॥ 76 ॥

وَلَقَدْ نَادَيْنَا نوحًا فَلَنِعْمَ الْمُجِيبُونَ ۝٧٦

ते असें उसी बी ते ओहदे कटुबियें गी बी बड़ी घबराट थमां मुक्ति दित्ती ही ॥ 77 ॥

ते सिर्फ ओहदी उलाद गी गै दुनियां च बाकी रक्खेआ हा ॥ 78 ॥

ते उसदे बा'द च औने आहली कौमें च उस दा जिकर चंगी चाल्ली कायम रक्खेआ हा ॥ 79 ॥

सारी कौमें पासेआ नूह पर सलामती दी दुआऽ/ प्रार्थना होआ करदी ऐ ॥ 80 ॥

अस परोपकार करने आहलें गी इससै चाल्ली सिला दिन्ने आं ॥ 81 ॥

ओह साढ़े मोमिन बंदें बिच्चा हा ॥ 82 ॥

ते दूए लोकें गी असें तबाह करी दिता हा ॥ 83 ॥

ते उससै दे गरोह बिच्चा इब्राहीम बी हा ॥ 84 ॥

जिसलै ओह अपने रब्ब सामनै इक ऐसा दिल लेइयै आया हा जेहका (हर चाल्ली दे कुफर ते शिर्क थमां पवित्तर हा) ॥ 85 ॥

ते उस बेलै उसनै अपने पिता थमां बी ते अपनी कौम थमां बी पुच्छेआ हा के तुस कुस दी अबादत करदे ओ? ॥ 86 ॥

क्या झूठै दी? यानी अल्लाह दे सिवा होर उपास्यें गी चांहदे ओ? ॥ 87 ॥

तां दससो, थुआड़ा सारे लोकें/ज्हांनें दे रब्ब बाँरे केह् ख्याल ऐ? ॥ 88 ॥

फी उसनै नखत्तरें पासै दिक्खेआ ॥ 89 ॥

وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۞

وَجَعَلْنَا دُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِينَ ۞

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۞

سَلَّمَ عَلَى نُوحٍ فِي الْعُلَمِينَ ۞

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۞

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۞

ثُمَّ أَعْرَفْنَا الْآخِرِينَ ۞

وَأَنَّ مِنْ شَيْعَتِهِ لِإِبْرَاهِيمَ ۞

إِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ۞

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا عَبَدُونَ ۞

أَفِيكَا إِلَهَةٌ دُونَ اللَّهِ تَرِيدُونَ ۞

فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۞

فَقَطَّرَ نَظْرَةً فِي النَّجُومِ ۞

ते गलाया जे अ'ऊं बमार' होने आह्ला आं
॥ 90 ॥

فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ﴿٩٠﴾

ते ओह लोक? उसी छोड़ियै उठी गे ॥ 91 ॥

فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ﴿٩١﴾

ते ओह बी उंदे उपास्यें पासै बल्लें नेही उठी
गेआ ते उनेंगी दिक्खियै गलाया जे क्या तुस
किश खंदे नेई? ॥ 92 ॥

فَرَاغَ إِلَىٰ آلِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٩٢﴾

तुसेंगी केह होआ जे तुस बोलदे बी नेई?
॥ 93 ॥

مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُونَ ﴿٩٣﴾

पही बल्लें नेही अपने सज्जे हत्थै कनै उंदे पर
इक जोरदार प्रहार कीता ॥ 94 ॥

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ﴿٩٤﴾

जिसलै लोके गी पता लग्गा तां ओह उस पासै
दौड़दे आए ॥ 95 ॥

فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَرِيْفُونَ ﴿٩٥﴾

(इब्राहीम नै उनेंगी) गलाया, क्या तुस अपने
हत्थें आपू तराशे/घड़े दे बुत्तें दी पूजा करदे
ओ? ॥ 96 ॥

قَالَ أَتَعْبُدُونَ مَا تَنْحِتُونَ ﴿٩٦﴾

हालांके अल्लाह नै गै तुसेंगी बी पैदा कीते दा
ऐ ते थुआड़े कर्मै गी बी ॥ 97 ॥

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٧﴾

उनें सारें (लोके) गलाया जे इसदे आलै-
दुआलै इक कंध चिनो (ते ओहदे च अग्ग
बालो) फी उस प्रचुल्ल अग्गी च इसी बी
सुट्टी देओ ॥ 98 ॥

قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُيُوتًا فَأَنْتَوُہ فِی
الْجَنِّمِ ﴿٩٨﴾

1. यानी अपनी कौम दे दस्तूर मताबक ग्रैहें दी चाल थमां अंदाजा लाया। हालांके जियां कुर'आन करीम दस्सी चुके दा ऐ। हजरत इब्राहीम इनें गल्लें पर ईमान नथे रखदे मगर अपनी कौम गी शर्मसार करने आस्तै उनें गलाया जे थुआड़े जोतश दे असूलें मताबक ते बमार होने आह्ला आं। मगर दिक्खेओ जे खुदा मिगी कैसी शक्ति दिंदा ऐ ते तुसेंगी झूठा साबत करदा ऐ।
2. की जे ओह नखत्तरें दे प्रभाव पर जकीन करदे हे।
3. इसदा एह अर्थ नेई जे मनुक्खें दे सारे कर्म जबरन होंदे न बल्के अर्थ एह ऐ जे हत्थ ते पैर जिंदे कनै मनुक्ख कर्म करदा ऐ ओह अल्लाह दी गै रचना न जेकर अल्लाह जबरदस्ती करदा तां सारे संसार गी हदायत दिंदा। ओह दुराचार आस्तै कदें जोर नेई दिंदा ते उपकार ते भलाई दा कम्म जबरदस्ती कराने शा बी कोई लाह नेई। इस लेई ओह भलाई दे कम्म आस्तै बी कुसै गी मजबूर नेई करदा।

ते उनें ओहदे कनै इक चलाकी करनी चाही, पर असें उनेंगी बुरी चाल्ली बेजत करी दिता ॥ 99 ॥

ते इब्राहीम नै गलाया, अ'ऊं अपने रब्ब कश जांग, ओह जरूर मिगी कामयाबी दा रस्ता दस्सग। ॥ 100 ॥

(ते गलाया) हे मेरे रब्ब! मिगी सदाचारी संतान प्रदान कर ॥ 101 ॥

उसलै असें उसी इक ल्हीम/धीरजवान जागतै दा शुभ समाचार दिता/सुनाया ॥ 102 ॥

फी जिसलै ओह जागत ओहदे कनै तेज चलने दे काबल होई गोआ तां उसनै गलाया हे मेरे बेटे! मैं तुगी सुखने च दिक्खेआ ऐ जे (आखो) अ'ऊं तुगी जबह² करा करना। इस आसतै तूं फैसला कर जे इस बारै तेरा के बिचार ऐ। (उसलै पुतरै) गलाया-हे मेरे पिता जो कुछ तुगी खुदा आखदा ऐ ऊऐ कर ते जेकर अल्लाह नै चाहया तां तूं मिगी अपने ईमान पर कायम रौहने आहला दिखगा ॥ 103 ॥

फी जिसलै ओह दमै फरमांबरदारी आसतै राजी होई गे तां उस (यानी पिता) नै उस (यानी रजामंदी जाहर करने आहले पुतरै) गी मत्थे दे भार सुट्टी³ दिता ॥ 104 ॥

فَارَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ﴿٩٩﴾

وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿١٠٠﴾

رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١٠١﴾

فَبَشَّرْنَاهُ بِعَلْمٍ حَلِيمٍ ﴿١٠٢﴾

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَبْنَؤُا رَأْيِي أَنِّي أُبْطِئُ فِي الْوَحْشِ وَالْحَرْبُ قَاتِلٌ أَعْتَزُّ بِهِ وَإِلَىٰ رَبِّي الْأَمَانُ ﴿١٠٣﴾
مَاذَا تَرَىٰ ۖ قَالَ يَأْتِي بِفَعْلٍ مَا تَأْمُرُ ﴿١٠٤﴾
سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّابِرِينَ ﴿١٠٥﴾

فَلَمَّا أَسْلَمَا وَتَلَّىٰ لِلْجَبِينِ ﴿١٠٦﴾

- 1 मूल शब्द 'कैद' जिसलै अल्लाह आसतै बरतेआ जा तां अर्थ उपाऽ आदि होंदा ऐ, पर जिसलै एह शब्द मनुकहै आसतै बरतोदा ऐ तां इस दा अर्थ छल, कपट, धूर्तता बगैरा होंदा ऐ।
- 2 इस सुखने दा स्टेई अर्थ एह हा जे तुगी मक्का दी खूंखार धरती च छोड़ी औने आहला आं जेहकी इक स्हाबे मौत गै ऐ। एह सुपन फल शाब्दक रूपे च पूरा होआ, जद के छुरी कनै जबह करना पूरा नैई होआ।
- 3 हजरत इस्माईल गी मक्का च छोड़ियै औना मौती दे बराबर हा, पर हजरत इस्माईल दा जबह कीता जाना कुरआन ते बाईबिल दौनें च सिद्ध नैई होंदा। बाईबिल च लिखे दा ऐ जे जिसलै हजरत इब्राहीम हजरत इस्माईल दी बलि देन लगे तां उनेंगी इक अलौकिक/गैबी अबाज सुनची जे हे इब्राहीम! तूं अपना हत्थ जागतै पर नैई चलाऽ ते नां उस थमां पुच्छियै, की जे हन अ'ऊं सेहो करी गोआं जे तूं अल्लाह शा डरना ऐ। फी उनें पिच्छे दिक्खेआ तां इक भिड्डु दिक्खेआ जिसी उनें हजरत इस्माईल दे बदलै जबह करी दिता। (पैदायश 22.11.14) हदीसें च कुदे बी हजरत इस्माईल गी छुरी कनै जबह करने दा प्रमाण नैई मिलदा, बल्के इयां ऐ जे हजरत इब्राहीम उनेंगी ते उंदी माता गी मक्का च छोड़ी आए हे ते फी जिसलै हजरत इस्माईल जुआन होए तां उस बेले हजरत इब्राहीम फलस्तीन थमां उनेंगी मिलन आए हे।

ते असें उसी (यानी इब्राहीम गी) पुकारियै/
अवाज देइयै गलाया-हे इब्राहीम! ॥ 105 ॥

وَنَادَيْتُهَا أَنْ يَا إِبْرَاهِيمُ ۝

तोह अपना सुखना पूरा करी लैता। अस उपकार
करने आहल्लें गी इयै नेहा सिला' दिन्ने होन्ने
आं ॥ 106 ॥

قَدْ صَدَّقْتَ الرَّءِیَا ۚ إِنَّكَ كَذَلِكِ نَجْرِي
الْمُحْسِنِينَ ۝

सच्चें गै एह इक जाहरी-बाहरी अजमैश ही
॥ 107 ॥

إِنَّ هَذَا هُوَ الْبَلَاءُ الْمُمِیْنُ ۝

ते असें उसदा (इस्माईल दा) फ़िदयः² इक
बड्डी कुरबानी राहें देई दिता ॥ 108 ॥

وَقَدْ يٰنُهُ بِذَبْحٍ عَظِیْمٍ ۝

ते बा'द च औने आहली कौमें च उसदा नेक
जिकर बाकी रक्खेआ ॥ 109 ॥

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝

इब्राहीम पर सलामती नाज़ल होंदी र'वै
॥ 110 ॥

سَلَّمَ عَلٰی اِبْرٰهِيْمَ ۝

अस परोपकार करने आहल्लें गी इससै चाल्ली
दा सिला दिन्ने होन्ने आं ॥ 111 ॥

كَذٰلِكَ نَجْرِي الْمُحْسِنِينَ ۝

ओह सच्चें गै साढ़े मोमिन बंदें बिच्चा हा
॥ 112 ॥

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝

1. यानी तू ते तेरा पुत्र कुरबानी आस्तै त्यार होई गे ते इस चाल्ली अल्लाह नै तुसेंगी अपना सामीप्य बरदान दे रूपै च प्रदान कीता जो परोपकार करने आहल्लें दा सिला ऐ।
2. याद रक्खना चाही दा जे इस्माईली लोक आखदे न जे कुरबानी आस्तै इस्हाक गी चुनेआ गेआ हा ते ऊऐ पल्होटा हा। मगर कुरआन करीम इसदे उल्ट इस्माईल दा नांउ लैदा ऐ ते ऊऐ सच्च ऐ। की जे बाईबिल दा जेकर गौर कनै अध्ययन कीता जा तां पता लगदा ऐ जे पल्होटा यानी सारें शा बड्डा पुत्र कुरबान होग ते सारें शा बड्डा पुत्र ओहदे मताबक इस्माईल गै हा नां के इस्हाक (पैदायश बाब 16 आयत 15) इस आस्तै जित्थें-जित्थें बी कुरबानी दे जिकर च कुसै पुतरे दा जिकर ऐ उल्लें मतलब इस्माईल ऐ नां के कोई होर। जिसलै हजरत इस्माईल नै कुरबान होने बारै रजामंदी दस्सी तां चूके सुखने दा असल अर्थ ए हा जे इस्माईल गी इक रेगिस्तान च छोड़ी आओ खुदा नै इल्हाम कीता जे जाहरी कतल दे मकाबले च जंगल च रहियै पैरा-पैरा पर मौत कबूल करना बेहतर प्राहचित/फ़िदयः ऐ। तू ते तेरा पुत्र इस प्राहचित गी कबूल करो तां खुदा दे मुकर्रिब/प्यारे होई जागे ओ। ते समझी लैता जाग जे तोह अपने पुतरे गी जबह करी दिता ऐ ते तेरे पुतरे खुशी-खुशी जबह होना मन्नी लैता ऐ। इसदे अलावा भिड्डू दी, फ़िदयः (प्राहचित) दे रूपै च बली देना, बाइबिल च लिखे दा ऐ। (पैदायश 22.14) पर इस बलिदान दी रीत हजरत इस्माईल दी संतान च अरब देश च प्रचलत ऐ ते अज्ज बी सारे मुसलमानें च ओह रीत कायम ऐ, पर उस बली दी कोई रीत हजरत इस्हाक दे नांउ कनै नां ते यहूदियें च ऐ ते नां गै इसाियें च कायम ऐ।

ते असें उसगी इस्हाक़ दी खबर बी दिती ही जो नबी हा ते सदाचारी लोकेँ बिच्चा हा ॥ 113 ॥

ते असें ओहदे (यानी इब्राहीम) पर ते इस्हाक़ पर बरकतां नाज़ल कीतियां ते उंदी उलाद बिच्चा बी किश लोक पूरे फरमांबरदार हे ते किश अपने आपै पर जाहरा-बाहरा जुलम करने आहले हे ॥ 114 ॥ (रुकू 3/7)

ते असें मूसा ते हारून पर बी स्थान कीता हा ॥ 115 ॥

ते असें उनें दौनें गी ते उंदी कौम गी इक बड्डे सदमे ते बोझ थमां मुक्ति दिती ही ॥ 116 ॥

ते असें उंदी सारेँ दी मदद कीती जिस दा नतीजा एह होआ जे ओह विजयी होए ॥ 117 ॥

ते असें उनेंगी इक कामिल कताब दिती जेहकी सारे हुकमें गी खोहली-खोहिलयै ब्यान करदी ही ॥ 118 ॥

ते असें उनें दौनें गी सिद्धा रस्ता दस्सेआ हा ॥ 119 ॥

ते औने आहली कौमें च उंदे आस्तै अच्छी याद बाकी रक्खी ॥ 120 ॥

मूसा ते हारून पर म्हेशां सलामती होंदी र'वै ॥ 121 ॥

अस इस्सै चाल्ली परोपकार करने आहलें गी सिला दिन्ने होन्ने आं ॥ 122 ॥

ओह् दमैँ साढ़े मोमिन बंदे हे ॥ 123 ॥

ते इल्यास सच्चेँ गै रसूलेँ बिच्चा हा ॥ 124 ॥

وَبَشِّرْهُ بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٣٧﴾

وَبَرَكَاتًا وَعَلَىٰ إِسْحَاقَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ﴿٣٨﴾

وَلَقَدْ مَنَّا عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿٣٩﴾

وَنَجَّيْنَاهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكُرْبِ الْعَظِيمِ ﴿٤٠﴾

وَنَصَّرْنَاهُمْ فَاكْتَوَاهُمْ الْعَلِيلِينَ ﴿٤١﴾

وَآتَيْنَاهُمَا الْكِتَابَ الْمُسْتَبِينَ ﴿٤٢﴾

وَهَدَيْنَاهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿٤٣﴾

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْآخِرِينَ ﴿٤٤﴾

سَلَّمَ عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿٤٥﴾

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٤٦﴾

إِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾

وَإِنَّ إِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٤٨﴾

(याद करो) जिसलै उसनै अपनी कौम गी गलाया जे क्या तुस तक्रवा/संयम धारण नेई करदे? ॥ 125 ॥

क्या तुस बअल (नामक) बुत्त गी पुकारदे ओ? ते जो बेहतरी (सर्वश्रेष्ठता) पैदा करने आह्ला ऐ (यानी अल्लाह) उसी छोड़दे ओ? ॥ 126 ॥

जेहका थुआड़ा बी रब्ब ऐ ते थुआड़े पुरखें दा बी रब्ब ऐ ॥ 127 ॥

(एह सुनियै) उसदी कौम नै उसी झूठा गलाया। इस आस्तै ओह् सच्चें गै अज़ाब आस्तै पेश कीते जांगन ॥ 128 ॥

सिवाए अल्लाह दे खास भक्तें दे (जे उंदे कन्नै ऐसा बरताऽ नेई होग) ॥ 129 ॥

ते असें ओहदे (यानी इल्यास) आस्तै आखरी कौमें च अच्छी याद बाकी रक्खी ॥ 130 ॥

इल्यासीन' पर म्हेशां-म्हेशां आस्तै सलामती होंदी र'वै ॥ 131 ॥

अस इससै चाल्ली परोपकारियें गी सिला दिन्ने होन्ने आं ॥ 132 ॥

ओह् (यानी पैह्ला इल्यास) साढ़े मोमिन बंदें बिच्चा हा ॥ 133 ॥

ते लूत बी सच्चें गै रसूलें बिच्चा हा ॥ 134 ॥

إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿٢٥﴾

أَتَدْعُونَ بَعْلًا وَتَذَرُونَ
أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ ﴿٢٦﴾

اللَّهُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأُولِينَ ﴿٢٧﴾

فَكَذَّبُوهُ فَإِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿٢٨﴾

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلِصِينَ ﴿٢٩﴾

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿٣٠﴾

سَلَّمَ عَلَى آلِ يَأْسِينَ ﴿٣١﴾

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٢﴾

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٣﴾

وَإِنَّ لُوطًا لِّمَنِ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٤﴾

1. इल्यास दा बहुवचन इल्यासीन ऐ। यहूदी ते इस्लामी साहित्य थमां पता लगदा ऐ जे इल्यास त्रै न। इक इल्यास जो हज़रत मूसा शा पैहलें होए हे। ते इक हज़रत याह्या जिंदा नांऽ भविकखवाणी च इल्यास आया हा। ते हज़रत मसीह नै बी उनेंगी इल्यास गै करार दिता हा ते इक आखरी जमाने च औने आह्ला इल्यास जो मसीह मौऊद थमां पैहलें उससै चाल्ली प्रकट होना हा। जिस चाल्ली हज़रत मसीह नासरी आस्तै याह्या हे। एह इल्यास हज़रत सैय्यद अहमद बरेलवी हे जिंदा मजार इस बेलैं बालाकोट जि'ला हज़ारा च ऐ।

(इस आसतै चेता करो उस बेले गी) जिसलै जे असें उसी ते ओहदे परिवार गी बचाया हा ॥ 135 ॥

सिवाए इक बुड्ही दे जो पिच्छें रेही जाने आहलें बिच्चा ही ॥ 136 ॥

पही असें सारें गी तबाह करी दिता ॥ 137 ॥

ते तुस उंदे (अलाके) परा कदें ते बडलै लंघदे ओ ते कदें संजां बेलै गुजरदे¹ ओ ॥ 138 ॥

क्या तुस फी बी सूझ-बूझ थमां कम्म नेई लैंदे? ॥ 139 ॥ (रुकू 4/8)

ते सच्चें गै यूनुस बी रसूलें बिच्चा हा ॥ 140 ॥

(चेता करो) जिसलै ओह नरिसयै इक ऐसी किरती पासै गे जेहकी पुर होने (भरोने) आहली ही ॥ 141 ॥

(ते तुफान नै उनेंगी घेरी लैता ते डुब्बने दा खतरा पैदा होई गेआ) उसलै उनें (बाकी सारे सुआरें कनै मिलियै) शकुन बचार कीता ते (चूँ के शकुन च उंदा नांउ निकलेआ) ओह (ओहदे मताबक) दरेआ बुर्द² कीते जाने जोग होई गे ॥ 142 ॥

إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿٣٥﴾

الْأَعْجُوزَ فِي الْغَيْرِينَ ﴿٣٦﴾

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ﴿٣٧﴾

وَأَنَّا كُمُتَّمَرُونَ عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِينَ ﴿٣٨﴾

عَلَّمَ

وَبِأَيْلٍ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٣٩﴾

وَأَنَّ يُؤْتَسَّرَ لِمَنْ الْمُرْسَلِينَ ﴿٤٠﴾

إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿٤١﴾

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ﴿٤٢﴾

1. ब्यारै आसतै दिक्खो सूर : हिज्र टिप्पणी आयत 77

2. हजरत यूनुस दा प्रादुर्भाव नैनवा आहलें पासै होआ हा। नैनवा आहलें तुसेंगी नेई मन्नेआ। तुसें अल्लाह दे संकेत मूजब उंदो तबाहो दो भविक्खवाणी कीती ते आपूँ उल्थुआं उठो गे। इसदे बा'द तबाहो दे किश नशान दिक्खियै सारी कौम घबराई गई ते ओह ईमान लेई आई। कौम च दिली तब्दीली आई जाने करी अल्लाह नै औने आहला अजाब टाली दिता।

याद रक्खेआ लोड्दा ऐ जे डराने आहली भविक्खवाणियें चा भामें ओह सधारण रूपे च बिना शर्त दे गै होन तां बी उंदे च कोई नां कोई शर्त छप्पी दी होंदी ऐ तां जे भे दा प्रभाव ज्यादा होई जा ते मनुक्ख अल्लाह दे सामनै झुकी जा (रूहल मआनी प्रति 4 सफा 190 मुद्रित मिस)।

हजरत यूनुस जिस किरती राहें दरेआ पार करदे हे उस दरेआ च हाड़ आई गेआ ते डुब्बी जाने दा खतरा बनी गेआ। उसलै किरती आहले सारे सुआरें दा फलादेश कइडेआ जेहका हजरत यूनुस दे नांउ दा निकलेआ। इसदे अधार पर रीति मताबक तुसेंगी दरेआ बिच्च सुट्टी दिता गेआ। फी तुसेंगी इक मच्छी नै नींगली लैता। त्र'क दिनें बा'द उसनै तुसेंगी दरेआ दे कंठे इक खुल्ले लम्मे-चैडे दब्बडै च उगली दिता ते तुस जिंदा हे। किश दिनें परैंत तुस अपनी कौम कश परतोई आए। ओह लोक थुआड़े पर ईमान आहनी चुके दे हे। ते तुस उनेंगी तलीम देन लगी पे (ब्यारै आसतै दिक्खो बाइबिल पुस्तक युहन्ना तथा इस्तामी भाष्य एवं इतिहास)

जिस पर उसी इक बड़्डी मच्छी नै नींगली
लैता जिसलै जे ओह अपने आप गी मलामत
करा करदा हा ॥ 143 ॥

ते जेकर ओह स्तुति करने आहलें बिच्चा नेई
होंदा ॥ 144 ॥

तां उस मच्छी दे ढिड्डै च क्यामत आहले
ध्याडै तक पेदा रौहदा (यानी मरी जंदा)
॥ 145 ॥

फी असें उसी इक खुल्ले मदान च सुट्टी'
दिता, जिसलै जे ओह बमार हा ॥ 146 ॥

ते असें उसदे लागै कदरूँ दा बूहटा उगाई
दिता ॥ 147 ॥

ते असें उसी इक लक्ख थमां किश बधीक
लोकें कश रसूल बनाइयै भेजेआ। ॥ 148 ॥

इस आस्तै ओह सारे ईमान ल्याए ते असें इक
लम्मे अरसे तगर उनेंगी संसारक फायदे पजाए
॥ 149 ॥

इस आस्तै तूं इनेंगी पुच्छ जे क्या तेरे रब्ब
दियां ते धीयां न ते इंदे पुत्तर न? ॥ 150 ॥

क्या असें फरिश्तें गी मादा/जनानियें दे रूपै च
पैदा कीता ते ओह उंदी पदायश दे गुआह न?
॥ 151 ॥

कन्न खोहलियै सुनो, ओह अपने मनघड़त
झूठ मताबक एह गल्लां करदे न ॥ 152 ॥

जे अल्लाह दी बी उलाद ऐ, पर ओह भलेआं
झूठे न ॥ 153 ॥

فَالْتَقَمَهُ الْحَوْتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿١٤٣﴾

فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ﴿١٤٤﴾

لَلَبِثَ فِي بَطْنِهَا إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٤٥﴾

فَبَدَّنْهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ ﴿١٤٦﴾

وَأَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَقْطِينٍ ﴿١٤٧﴾

وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَى مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ ﴿١٤٨﴾

فَأَمُّوا فَاغْتَمَعْتَهُمُ إِلَىٰ جِنِّينَ ﴿١٤٩﴾

فَأَسْتَفْتِهِمُ الرِّبَاكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ
الْبَنُونَ ﴿١٥٠﴾

أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنَاثًا وَهُمْ شَاهِدُونَ ﴿١٥١﴾

أَلَا اللَّهُمَّ مِّنْ أَفْكَهْمُ يَقُولُونَ ﴿١٥٢﴾

وَلَدَ اللَّهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٥٣﴾

1. यानी मच्छी दे दिलें च एह गल्ल पार्ई दिती जे ओह हजरत यूनुस गी दब्बड़ें च उगली देऐ।

क्या उसनै पुत्र छोड़ियै, धीयां चुनी लैतियां न? ॥ 154 ॥

أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ ﴿٣٧﴾

तुसेंगी केह हुआ जे तुस ऐसे मूरखें आहले फ़ैसले करदे ओ ॥ 155 ॥

مَا لَكُمْ مَعَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿٣٨﴾

क्या तुस समझदे नेई ॥ 156 ॥

أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٣٩﴾

क्या थुआड़े कश कोई खु'ल्ली-डु'ल्ली दलील ऐ? ॥ 157 ॥

أَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِينٌ ﴿٤٠﴾

इस आस्तै अपनी उस कताबा गी लेई आओ जेहदे च एह लिखे दा ऐ जेकर तुस सच्चे ओ ॥ 158 ॥

فَأَنذِرْ بٰكِبٰتِكُمْ إِن كُنتُمْ صٰدِقِينَ ﴿٤١﴾

ते एह लोक उसदे (यानी खुदा दे) ते जिन्नैं बशकार रिश्ता जोड़दे न, हालांके जिन्न खुआने लायक कौम (बड़डे लोक ते फ़ाड़ें पर रौहने आहले) भलेआं जानदी ऐ जे ओह बी सचाई दे रस्ते पर जेकर कायम नेई होग तां उसी बी अज़ाब दस्सेआ जाग ॥ 159 ॥

وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجَنَّةِ نَسَبًا وَلَقَدْ عَلِمْتِ الْجِنَّةَ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿٤٢﴾

अल्लाह उंदी आखी दी गल्लें थमां पाक-पवित्र ऐ (यानी फरिश्ते धीयां नेई बल्के अबादत करने आहले बंदे न) ॥ 160 ॥

سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُصِفُونَ ﴿٤٣﴾

सिवाए अल्लाह दे भगें दे (ओह नेहियां गल्लां नेई करदे) ॥ 161 ॥

إِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُحْصِينَ ﴿٤٤﴾

इस आस्तै (सुनी लैओ जे) तुस ते जिंदी तुस अबादत करदे ओ ॥ 162 ॥

فَأَنذِرْكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ ﴿٤٥﴾

ओह अल्लाह दे खलाफ कुसै गी बक्हाई नेई सकदे ॥ 163 ॥

مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفِتْنِينَ ﴿٤٦﴾

1. इन्कार करने आहले लोक केई किसमें दे न :- किश अल्लाह आस्तै पुत्र ते किश धीयां निरधारत करदे न जियां ईसाई हज़रत मसीह गी ते यहूदी हज़रत उज़ैर गी अल्लाह दा पुत्र मनदे न, पर मक्का ते भारत दे मूरती पूजक अल्लाह दियां धीयां मनदे न। पवित्र कुरआन नै दौनीं चाल्लीं दे बिचारें दा खंडन कीता ऐ ते केई थारें पर दस्सेआ ऐ जे अल्लाह पुत्रें ते धीयें दौनें शा पवित्र ऐ।

सिवाए उस बद-किसमत दे जेहका ज्हन्म च दाखल होने आहला ऐ ॥ 164 ॥

إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِي الْجَعِيمِ ﴿۱۶۴﴾

ते साढ़े सारें आस्तै इक निश्चत थाहर ऐ ॥ 165 ॥

وَمَا مِتًّا إِلَّا لَهُ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ ﴿۱۶۵﴾

ते अस सारे' अल्लाह दे सामनै रीघां लाइयै खड़ोते दे आं ॥ 166 ॥

وَأِنَّا لَنَحْنُ الصَّافُونَ ﴿۱۶۶﴾

ते अस सारे स्तुति करने आहले आं ॥ 167 ॥

وَأِنَّا لَنَحْنُ الْمَسْبُحُونَ ﴿۱۶۷﴾

ते कर्दे एह लोक (यानी मक्का बासी) आखदे होंदे हे ॥ 168 ॥

وَإِنْ كَانُوا لَيَقُولُونَ ﴿۱۶۸﴾

(जे) जेकर पैहली कौमें आंगर साढ़े कश बी रसूल² औंदा ॥ 169 ॥

لَوْ أَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِنَ الْأَوَّلِينَ ﴿۱۶۹﴾

तां अस बी अल्लाह दे महान भगत बनी जंदे ॥ 170 ॥

لَكِنَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلِصِينَ ﴿۱۷۰﴾

इस आस्तै उनें उस (अल्लाह) दा इन्कार करी दिता ते ओह तौले गै अपना अन्जाम समझी जांगन ॥ 171 ॥

فَكَفَرُوا بِهِ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿۱۷۱﴾

पर साढ़ा फैसला साढ़े बंदें यानी रसूलें आस्तै पैहलें होई चुके दा ऐ ॥ 172 ॥

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا

الرُّسُلِينَ ﴿۱۷۲﴾

(जेहका एह ऐ) जे उंदी मदद कीती जाग ॥ 173 ॥

إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُورُونَ ﴿۱۷۳﴾

ते साढ़ा लश्कर (यानी मोमिनें दा गरोह) गै विजयी रौहग ॥ 174 ॥

وَإِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿۱۷۴﴾

इस आस्तै तूं उंदे शा इक मुद्दत आस्तै मूह फेरी लै ॥ 175 ॥

فَقَوْلَ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿۱۷۵﴾

ते उनेंगी चंगी चाल्ली दिखदा रौह। ओह बी तौले गै (अपना अन्जाम) दिखी लैंगन ॥ 176 ॥

وَأَبْصَرَهُمْ فَسَوْفَ يُبْصَرُونَ ﴿۱۷۶﴾

1. यानी हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ स.अ.व. ते उंदे साथी जो जमात कनै नमाज पढ़े होदे हे।

2. मूल शब्द 'जिक्र' ऐ जिसदा अर्थ पवित्र कुर'आन च रसूल बी आए दा ऐ (सूर: तलाक आयत: 11)

क्या एह लोक साढ़ा अज़ाब तौले मंगा/चाह करदे न? ॥ 177 ॥

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿٧٧﴾

इस आस्तै जिसलै ओह (अज़ाब) उंदे बेहड़ें नाज़ल होग तां ओह कौम जिसे डराया गेदा ऐ ओहदी सवेर अत्त बुरी होग ॥ 178 ॥

فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ ﴿٧٨﴾

ते (अस फी आखने आं जे) उंदे शा किश अरसे आस्तै मूंह फेरी लै ॥ 179 ॥

وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حَبْنٍ ﴿٧٩﴾

ते उंदा हाल दिखदा रोह ते ओह बी सच्चें गै (अपना अन्जाम) दिक्खी लैंगन ॥ 180 ॥

وَأَبْصَرَ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿٨٠﴾

तेरा रब्ब जेहका सारी बड़ेआइयें दा मालक ऐ, उंदी आखी दी गल्लें शा पाक ऐ ॥ 181 ॥

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٨١﴾

ते रसूलें पर म्हेशां सलामती नाज़ल होंदी रौहग ॥ 182 ॥

وَسَلَّمَ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ﴿٨٢﴾

ते सब तरीफ अल्लाह दी ऐ जेहका सारे ज्हांनें दा रब्ब ऐ ॥ 183 ॥ (स्कू 5/9)

وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨٣﴾

ooo

سُورَةُ صَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ تِسْعٌ وَثَمَانُونَ آيَةً وَخَمْسَةٌ رُكُوعَاتٍ

सूर: साद

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां उनानमें आयतां ते पंज रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांS लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

इस कुर'आन गी सच्चे खुदा नै उतारे दा ऐ।
अस इस दा'बे दे प्रमाण च कुर'आन गी गुआही
दे रूपै च पेश करने आं जो हर चाल्ली दे
उपदेशें कनै भरे दा ऐ ॥ 2 ॥

ص وَالْقُرْآنِ ذِي الذِّكْرِ ①

पर जिनें कुफर कीते दा ऐ ओह घमंड च
जकड़ोए दे न ते (अपनी झूठी गल्लै गी सच्चा
साबत करने आस्तै) बरोध करना उनें अपनी
शैली बनाई लेदी ऐ ॥ 3 ॥

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي عِزَّةٍ وَشِقَاقٍ ①

असें किन्नियां गै कौमां उंदे थमां पैहलें तबाह
कीती दियां न। जिस पर उनें फरेआद कीती,
पर एह समां मुक्ति हासल करने दा नेई होंदा।
॥ 4 ॥

كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ فَنَادَوا
وَوَلَاتَ حِينَ مَنَاصٍ ①

ते ओह र्हाणगी बुझदे न जे उंदे कश उंदी गै
कौम बिच्चा सचेत/हुशयार करने आहला आई
गेआ। ते इन्कार करने आहले आखदे न जे
एह ते इक फरेबी (ते) झूठा ऐ ॥ 5 ॥

وَعَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ
وَقَالَ الْكُفْرُونَ هَذَا سِحْرٌ كَذَّابٌ ①

क्या इसनै मते-हारे उपास्यें गी इक' उपास्य बनाई लैता ऐ? एह बड़ी अजीब गल्ल ऐ ॥ 6 ॥

ते उंदे बिच्चा बड्डे लोकें गलाया जे इल्थुआं चलो। ते अपने उपास्यें पर द्विदता कनै कायम र'वो एह (गल्ल यानी कुर'आन दा दा'बा) सच्चें गै ऐसी गल्ल ऐ जे एहदे च किश खड्डुजैत्तर ऐ (यानी कुसै खास मकसद गी सामनै रक्खियै आखी गेदी ऐ) ॥ 7 ॥

असें इस (चाल्ली दी गल्लै) दा जिकर अपने थमां पैहली कौम च कदें नेई सुनेआ, एह मैहज/नि'रा लंब झूठ ऐ ॥ 8 ॥

क्या साढ़ी सारी कौम बिच्चा इससे पर जिकर नाजल होए दा ऐ? सचाई एह ऐ जे उनेंगी मेरे पासेआ उपदेश नाजल होने च गै शकक ऐ। (असल च एह शकक नेई जे इस शखस पर उपदेश उतरेआ/नाजल होआ ऐ जां नेई) बल्के (असल गल्ल एह ऐ जे) उनें अजे तक मेग अजाब नेई भोगेआ। (इस आसतै दलेर होई गेदे न) ॥ 9 ॥

तेरा रब्ब जो ग़ालिब (ते) बख़्शानहार ऐ, क्या उसदी रैहमत दे खजाने उंदे गै कश न (जे भामें देन ते भामें नेई देन?) ॥ 10 ॥

क्या गासैं ते धरती च ते जो कुछ बी उंदे मझाटै ऐ उनें सांरें दी बादशाहत उंदे गै हलथै/कब्जे च ऐ? जेकर ऐसा ऐ तां चाही दा ऐ जे रस्सें राहें उप्पर? चढ़ी जान (ते कोई खुदाई

أَجْعَلِ الْاِلَهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عَجَابٌ ۝۱

وَانْطَلَقَ الْمَلَا مِنْهُمْ اَنْ اَمْسُوا وَاَصْبِرُوا عَلٰى اِلٰهَتِكُمْ ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ يَّرَادُ ۝۱

مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ؕ اِنَّ هٰذَا اِلَّا اَخْتِلَاقٌ ۝۱

ءَا نُنزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُمْ فِي سَلْبٍ مِّنْ ذِكْرِي ؕ بَلْ لَمَّا يَدُوْفُوْا عَدَابٌ ۝۱

اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَايِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَرِيْزِ الْوَهَّابِ ۝۱

اَمْ لَهُمْ مُّلكُ السَّمٰوٰتِ وَاَلْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ فَلْيَبْرُتُوْا فِي الْاَسْبَابِ ۝۱

1. उनें लोकें गी एह रूहानगी ऐ जे उपास्य ते असल च केई न। एह शखस जेहका इक खुदा आखदा ऐ, शायद इस नै सारे उपास्यें गी (मूर्तियें गी) कुट्टी-कटिटयें इक उपास्य बनाई लैता ऐ। इस चाल्ली ओह अपनी जमात गी हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. कनै मन्सूब करदे/ जोड़दे न।
2. सूर : बनी इस्राईल च काफरें दे इयें नेह मतलब दा जिकर हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. कनै कीता गेदा ऐ (दिकखो बनी इस्राईल आयत: 91-94)

शहादत यानी लिखी दी कताब लयौन जिसगी काफ़र पढ़ी सकन जियां के ओह मुहम्मद रसूल अल्लाह थमां मंगदे हे) ॥ 11 ॥

अस इक सुसंगठत' (संयम रहैत मनघड़त) लशकर (दी खबर दिन्ने आं जो मुहम्मद रसूल अल्लाह यानी हज़रत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. दी ज'गा पर हमला करग पर) आखरकार उत्थुआं नस्सी जाग ॥ 12 ॥

इंदे थमां पैहलें नूह दी कौम ते आद ते फ़िरऔन नै (बी) जो बड़ी ताकत आह्ला हा, झुठलाया हा ॥ 13 ॥

इस्सै चाल्ली समूद नै ते लूत दी कौम नै ते ऐका² आहले लोकें बी झुठलाया हा एह सारे इक (संयम रहैत मनघड़त) संगठत दल हे ॥ 14 ॥

उंदे बिच्चा हर इक नै रसूलें गी झुठलाया हा। इस आस्तै आखर च मेरा अज़ाब नाज़ल होइयै रेहा ॥ 15 ॥ (रुकू 1/10)

ते एह लोक सिर्फ़ इक अचानक औने आहले अज़ाब दा इंतजार करा करदे न जेहदे च कोई वक्फा नैई होग ॥ 16 ॥

ते आखदे न हे साढ़े रब्ब! साढ़ा हिस्सा जे किश बी है असेंगी तौले गै स्हाब लैने दे समे थमां पैहलें गै देई दे ॥ 17 ॥

जो कुछ ओह आखदे न, ओहदे पर तूं सबरे थमां कम्म लै ते साढ़े बंदे दाऊद गी याद कर जेहका बड़ी बड्डी ताकत दा मालक हा

جُئِدْ مَا هُنَالِكَ مَهْرُومٌ مِّنَ
الْأَحْزَابِ ①

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَ عَادٌ
وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ①

وَتَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَ أَصْحَابُ لَيْكَةِ
أُولَئِكَ الْأَحْزَابُ ①

إِنْ كُلٌّ إِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ
عِقَابُ ①

وَمَا يَنْظُرُ هُوَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً
مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ①

وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّلْ لَنَا قِطْنَآ قَبْلَ يَوْمِ
الْحِسَابِ ③

إِصْبِرْ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَ اذْكُرْ عَبْدَنَا
دَاوُدَ ذَا الْأَيْدِ إِنَّهُ أَوَّابٌ ①

1. इस आयत च "अहज़ाब" नां दे युद्ध दे प्रति पेशगोई ऐ। एह आयत अहज़ाब दे युद्ध थमां पैहलें नाज़ल होई ही ते उस च अहज़ाब दे हमला-आवर काफ़रें दे हारी जाने दी खबर दिती गोई ही! सुब्हान अल्लाह!
2. ऐका आस्तै दिक्खो सूर: हिज़्र टिप्पणी आयत 79

सच्चें गै ओह बार-बार खुदा आहले पासै झुकदा हा ॥ 18 ॥

असें फ्हाड़-बासियें गी उसदे अधीन करी दिते दा हा ते ओह शामीं ते सवैरें स्तुति करने च रुझे दे रौहदे हे ॥ 19 ॥

ते उच्ची डुआर' भरने आहले लोकें गी किट्टे करियै ओहदे कनै लाई दिता हा ओह सारे दे सारे खुदा आहले पासै झुकने आहले हे ॥ 20 ॥

ते असें उसदी व्हूमत गी मजबूत कीता हा ते उसगी हिक्मत ते ठोस प्रमान दिते हे ॥ 21 ॥

ते केह तुगी उनें बैरियें दा पता ऐ जिसलै जे ओह कंध टपियै अंदर आई गे हे ॥ 22 ॥

जिसलै ओह दाऊद कश आप तां ओह घबराई गेआ। उनें गलाया डर नेई। (अस दमै) दो झगड़ने आहले फिरके आं साढ़े बिच्चा इक, दूए पर ज्यादाती करा करदा ऐ इस आस्तै तूं साढ़े बशकार इन्साफ कनै फैसला करी दे ते बे-न्याई नेई करेआं ते साढ़ी सिद्धे रस्तै पासै रैहनमाई कर ॥ 23 ॥

एह मेरा भ्राऽ ऐ इस दियां नड़िनुए² दुंबियां न ते मेरी सिर्फ इक गै दुंबी ऐ फी बी ओह

إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ
وَالْإِشْرَاقِ ۝

وَالظُّلُمِ مَمْحُورَةً ۝ كُلٌّ لَّهُ آوَابٌ ۝

وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ وَأَتَيْنَهُ الْحِكْمَةَ
وَفَضَّلْنَا الْخِطَابَ ۝
وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا
الْمِحْرَابَ ۝

إِذْ دَخَلُوا عَلَى دَاوُدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوا
لَا تَخَفْ ۚ خَصْمِ بَعْضٌ بَعْضًا عَلَى
بَعْضٍ فَاحْكُم بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ
وَاهْدِنَا إِلَى سَوَاءِ الصِّرَاطِ ۝

إِنَّ هَذَا آخِي ۚ لَهُ تَسَعٌ وَتَسْعُونَ نَعْمَةً

1. तैर ते जिबाल दे अर्थ आस्तै दिक्खो सूर : सबा आयत 11.

2. विद्वान आखदे न जे हजरत दाऊद दियां नड़िनुए लाडियां हियां, पर इक जरनैल दी लाड़ी उनेंगी पसंद आई गई, उनें जरनैल गी इक खतरनाक ज'गा भेजी दिता तां जे ओह मरोई जा, फी उसदी लाड़ी पर कब्जा करी लैता। अल्लाह नै सब्क देने आस्तै फरिशतें गी भेजेआ जिनें (अल्लाह बचाऽ) एह दुबियें आहला झूट बनाई लैता। पर सचाई एह ऐ जे हजरत दाऊद दी बादशाहत जिसलै बधी गई तां उंदे दुश्मन सिर चुक्कना शुरू कीता। ते उंदे दुश्मन घरे च कुदिदयें आई गे। जिसलै हजरत दाऊद गी चकन्ने दिक्खेआ तां डरी गे जे इक आला देने पर बाडों गाई किट्टे होई जांगन ते घबराट च एह किस्सा घड़ियै सुनाया जिसदी ताबीर असल च एह ही जे उनें हजरत दाऊद पर अल्जाम लाया जे तुस ताकतवर होइयें आसे-पासे दे गरीब कबोलें गी खदे जा करदे ओ हालांके ओह तदाद च थोड़े न ते तुस ज्यादा ओ। पर एह गल्ल गल्ल ही। हजरत दाऊद दा देश बड़ा निक्का हा ते उंदे आसे-पासे दे कबोले इराक तगर फेले दे हे जिंदि तदाद हजरत दाऊद दे कबोलें दी तदाद थमां सैकड़े गुनां ज्यादा ही।

आखदा ऐ जे अपनी दुंबी मिंगी देई दे। ते बैहसा च मिंगी दबांदा जंदा ऐ ॥ 24 ॥

उस पर (दारुद नै) गलाया, तेरी दुंबी मिंगियै उसनै बौहत बड्डा जुलम^१ कीता ऐ ते मते सारे शरीक नेह होंदे न जो इक-दूए पर जुलम करदे न सवाए मोमिनं दे ते उदै जो ईमान दे मताबक कर्म करदे न ते ओह लोक थोढ़े न। ते दारुद गी यकीन^२ होई गेआ जे असें उसी अजमैश^३ च पाया ऐ (यानी दुश्मनं दे सिर चुक्कने दी ब'जा करी) इस आस्तै उसनै अपने रब्ब थमां माफी मंगी ते आज्ञा पालन करदे होई धरती पर डिगगी पेआ ते (अल्लाह ^{عَلَيْهِ} पासै) ध्यान दिता ॥ 25 ॥

उसलै असें उसदी सारियें कमजोरियें^४ पर परदा सुट्टी दिता। की जे सच्चें गै दारुद साद्दा परम भगत हा ते उसी साढ़े कश बेहतर ठकाना^५ मिलग ॥ 26 ॥

(फी असें उसी गलाया) हे दारुद! असें तुगी धरती च खलीफा बनाया ऐ। इस आस्तै तूं लोकें च इन्साफ कनै हुकम दे ते अपनी इच्छा दी पैरवी नेई कर। ओह तुगी अल्लाह दे रस्तै थमां भटकाई देग। ओह लोक जेहके अल्लाह दे रस्ते थमां भटकी जंदे न उनेंगी सख्त अजाब मिलदा ऐ की जे ओह स्हाब होने आहले ध्याड़े गी भुल्ली बैठे दे न ॥ 27 ॥ (रुकू 2/11)

وَأَلِمَ نَجْعَةً وَاحِدَةً فَقَالَ أَكْفَلْنِيهَا وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ ۝

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْبَتِكَ إِلَىٰ نِعَاجِهِ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْخَطَاءِ لَيَبْغِي بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَقَلِيلٌ مَّا هُمْ ۗ وَظَنَّ دَاوُدُ أَنَّمَا فَتَنَّاهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ وَخَرَّ رَاكِعًا وَأَنَابَ ۝

فَخَرَرْنَا لَهُ ذَلِكَ ۗ وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَّآبٍ ۝

يَدَاؤِدَانَا جَعَلْنَاكَ حَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُم بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۗ إِنَّ الَّذِينَ يَضِلُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ يَوْمَ الْحِسَابِ ۝

1. यानी जेकर एह रूपक सच्च ऐ। बरना ओह जानदे हे जे ओह झूट आखा करदे न।
2. यानी दुश्मनं च ऐसी हिम्मत दा पैदा होना दसदा ऐ जे देश च उपद्रव सिर चुक्का करदा ऐ।
3. यानी इस चाल्ली दी घटना कदें बी बादशाह कनै नेई घटी सकदी जिना चिर जे अल्लाह दी मरजी बी बैसी गै नेई होऐ। तां गै "असें उसी अजमैश च पाई दिता ऐ" शब्द बरते न। ते मतलब एह ऐ जे उस फैसले च खुदाई नजाम शामिल ऐ।
4. एह कमजोरियां जस्मानी हियां, रुहानी नेई हियां।
5. जेकर ओह कुसै दी लाड़ी खूसदा जां कमजोर कबीलें पर जुलम करियै उनेंगी अपने अधीन करदा तां साद्दा प्यारा कियां होई सकदा हा।

ते असें गासैं ते धरती च ते जो किश इनें दौनें दे मझाटे है उसी इयां गै जाया होने आहला नेई बनाया, एह बिचार उनें लोकें दा ऐ जो काफर न। इस आस्तै काफरें दी बरबादी अग्गी दे अजाब कनै होने आहली ऐ ॥ 28 ॥

क्या अस मोमिनें ते ईमान दे मताबक कर्म करने आहलें गी धरती पर फसाद पैदा करने आहलें बराबर समझी लैचै। जां अस संयमियें गी दुराचारियें दे बराबर समझी लैचै? ॥ 29 ॥

ए (कुरआन) इक कताब ऐ, जिसी असें तेरे पर नाजल कीते दा ऐ, सारी खूबियें दा भंडार ऐ तां जे ओह उस (अल्लाह) दियें गल्लें पर गौर करन ते तां जे समझदार लोक नसीहत हासल करन ॥ 30 ॥

ते असें दाऊद गी सुलेमान प्रदान कीता ते ओह बड़ा गै अच्छा बंदा हा। ओह खुदा पासै बड़ा गै झुकने आहला हा ॥ 31 ॥

(ते याद कर) जिसलै ओहदे सामनै संजा बेलै बधिया किसमै दे घोड़े पेश कीते गे ॥ 32 ॥

तां उसनै गलाया, अ'ऊं दुनियां दी चंगी चीजें कनै इस आस्तै प्यार करना जे ओह मिगी मेरे रब्ब दा चेता करांदियां' न। इत्यें तक जे जिसलै ओह घोड़े ओट/पड़दे च आई गे ॥ 33 ॥

(उसनै गलाया) उनेंगी मेरे कश बापस लेई आ (जिसलै ओह आए) तां ओह उंदी

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
بِاطِلًا ۚ ذَٰلِكَ ظَنُّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ فَوَيْلٌ
لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِنَ النَّارِ ﴿٢٨﴾

أَمْ نَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ ۗ أَمْ نَجْعَلُ
الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ ﴿٢٩﴾

كُتِبَٰنُزَّلْنَا إِلَيْكَ مُبْرَكًا لِّيَذَّبَ رُؤَا
يَاتِهِ وَيَتَذَكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٣٠﴾

وَوَهَبْنَا لِذَاوُدَ سُلَيْمَانَ ۗ نِعْمَ الْعَبْدُ
إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿٣١﴾

إِذْ عَرَضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصُّفُفُ
الْحِيَادِ ﴿٣٢﴾

فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ
ذِكْرِ رَبِّي ۖ حَتَّى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿٣٣﴾

رُدُّوهَا عَلَيَّ ۖ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوقِ

1. किश विद्वानें आखे दा ऐ जे घोड़े दिखदे-दिखदे नमाज दा समा लंघी गेआ, पर एह गल्ल नेई, बल्के अर्थ एह ऐ जे में घोड़े अल्लाह दे प्रेम करियें खरीदे न अर्थात जिहाद आस्तै। इय्ये गल्ल नबी दी शान दे मताबक ऐ।

पिंडलियां (पुट्टे) ते गरदनां थपकन' लगेआ
॥ 34 ॥

ते असें सुलेमान दी अजमैश लैती ते ओहदे
सिंहासन पर इक बे-जान^२ शरीर बद्हाने दा
फैसला करी लैता (फी जिसलै एह नजारा
उसने अध्यात्मक नजरें कन्नै दिक्खी लैता) तां
ओह अपने रब्ब पासै झुकी गोआ ॥ 35 ॥

ते उस (सुलेमान नै अपने पुत्रै दी सचाई
खुदा थमां हासल करियै) गलाया जे हे मेरे
रब्ब! मेरे ऐबें पर पड़दा पाई दे ते मिगी ऐसी
बादशाहत प्रदान कर जो मेरे बा'द औने आहली
उलाद गी बिरसे^३ च नेई थ्दोए तूं सच्चें गै बड़ा
बख्शनहार ऐं ॥ 36 ॥

ते असें ओहदे आस्तै हवा गी सेवा च लाई
दिता जेहकी उंदे हुकमै मताबक जित्थें ओह
जाना चांहदे हे नरमी कन्नै/मट्ठी-मट्ठी उसै
पासै चलन लगदी ॥ 37 ॥

इस्सै चाल्ली असें सिरफिरे शतानें गी यानी
उंदे बिच्चा सारे इंजीनियरें, ते वास्तु-कलाकारें
(तरखानें-बटैहडें) गी इस्सै चाल्ली गोताखोरें
गी उसदी सेवा पर लाई दिता हा ॥ 38 ॥

وَالْأَعْنَاقِ ۝

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ وَأَلْقَيْنَا عَلَى كُرْسِيِّهِ
جَسَدًا مِّمَّا أَنْابَ ۝

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَّا
يَبْغِي لِأَحَدٍ مِّنْ بَعْدِي ۚ إِنَّكَ أَنْتَ
الْوَهَّابُ ۝

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ رُحَاءً
حَيْثُ أَصَابَ ۝

وَالشَّيْطِينَ كُلَّ بَنَّاءٍ وَعَوَّاصٍ ۝

1. पवित्र कुरआन च मूल शब्द मसह दा अर्थ थपकना ते कट्टी देना, दमै होंदे न। किश विद्वानें गल्ली कन्नै एह अर्थ करी दिता जे घोड़ें गी बापस नुआइयै, इस गल्ला जे उनें गी दिखदे-दिखदे नमाज दा समां लंघी गोआ, ते क्रोध च आइयै कट्टी दिता, पर ऐसा कम्म कोई पागल आदमी ते करी सकदा ऐ, पर अल्लाह दा कोई रसूल नेई करी सकदा। असल च इत्थें एह दस्सेआ गोदा ऐ जे हजरत सुलेमान नै घोड़े बापस मंगाए ते उंदी पिट्टी बगैरा पर हत्थ फेरी-फेरी थुपकन ते प्यार करन लगे जे में ऐसे उत्तम घोड़े जिहाद आस्तै त्यार कीते न।
2. बे-जान शरीर दा मतलब एह ऐ जे उंदा बारस इक ऐसा पुत्र होग जेहदे अंदर अध्यात्मकता नेई होग बल्के सिर्फ मादी शरीर होग।
3. इत्थें मुल्क दा मतलब नबुव्वत यानी रुहानी बादशाहत ऐ जेहकी बा'द च औने आहलें गी (अगली पीढ़ी गी) खुदा पासैआ गै प्रदान कीती जंदी ऐ, पिता थमां बिरसे दे तौर नेई। इस आस्तै हजरत सुलेमान नै दुआS कीती जे हे अल्लाह! रुहानी ताकत बधाS। संसारक त्रक्की जो उलाद दे हत्थें जाया/बरबाद होई सकदी ऐ, मिगी ओहदी चाह नेई ऐ।

ते किश होर लोकें गी बी जो जंजीरें^१ च जकड़ोए दे रौहदे हे ॥ 39 ॥

وَأَخْرَيْنَ مُقَرَّبَيْنِ فِي الْأَصْفَادِ ①

एह साढ़ी बे-स्थाबी देन^२ ऐ। इस आसतै तूं भामें उनें कौमें पर स्हान कर, भामें जिन्नी सख्ती^३ मनासब होए, उंदे पर कर ॥ 40 ॥

هَذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ①

ते उस (यानी सुलेमान) गी साढ़ा कुर्ब (सामीप्य/नेड़मापन) हासल ऐ। ते साढ़ै कश उसदा बौहत् अच्छा ठकाना ऐ ॥ 41 ॥ (रुकू 3/12)

وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحَسْنَ مَأَبٍ ① ②

ते साढ़े बंदे अय्यूब गी याद कर जिसलै उसनै अपने रब्ब गी एह आखदे होई पुकारेआ हा जे मिगी इक काफर दुश्मन नै बड़ी सख्त तकलीफ ते अजाब दिता ऐ ॥ 42 ॥

وَأذْكَرْ عَبْدَنَا أَيُّوبَ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الشَّيْطَانُ بِنُصْبٍ وَعَذَابٍ ①

(असें उसी गलाया जे) अपनी सुआरी गी अड्डी ला। एह (सामनै) इक न्हौने आह्ला पानी ऐ जेहका ठंडा बी ऐ ते पीने दे काबल बी (यानी साफ ऐ) ॥ 43 ॥

أَرْكُضْ بِرِجْلِكَ هَذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ ①

ते असें उसगी उसदा परिवार बी प्रदान कीता ते उंदे आंगर होर बी अपने रैहम कनै प्रदान कीते ते अकली आहलें आसतै इक नसीहत दा समान बी बख्शेआ ॥ 44 ॥

وَوَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُم مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِنَّا وَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ①

ते (अय्यूब गी गलाया जे) अपने हत्थै च खजूरी दी इक गुप्फेदार टाहली^४ पकड़ी लै

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْتًا فَاصْرِبْ بِهِ وَلَا

- पुराने जमाने च गुलामें गी खास करियै जेहके समुंदरें च कम्म करदे हे, जंजीरें कनै बन्नियै रखदे हे, तां जे ओह किशती बिच्चा छाल मारियै कुदै नस्सी नई जान। रूम दा इतिहास इस दा गुआह ऐ। इस थाहरें पर समुंदरें च कम्म करने आहले मलाहें बगैरा दा गै बर्णन ऐ, की जे पैहलें किशियें बगैरा दा जिकर होए दा ऐ, जो दूर-दूर जदियां हियां।
- यानी एह कामयाब बेड़े तुगी साढ़ी किरपा कनै गै मिले दे न ते तुगी सिर-फिरी कौमें पर कब्जा मिले दा ऐ।
- इस थमां पता लगदा ऐ जे जंगी कैदियें पर उस हद तक सख्ती कीती जाई सकदी ऐ जेहदे कनै ओह नस्सने थमां रोके जाई सकन ओहदे थमां ज्यादा सख्ती करनी जायज नई।
- फ्हाड़ी लोक पतरें आहली लम्मी सोटी/वांभड़ी कनै मारिये घोड़े गी दुड़ां दे न। उससै हालत दा इत्थें जिकर ऐ जेहदे थमां पता लगदा ऐ जे हजरत अय्यूब फ्हाड़ै दे रौहने आहले हे। 'फ्रतहुल्बयान' च इक ज'गा लिखे दा ऐ जे 'जिगस' खजूरी दी गुप्फेदार टाहली गी आखदे न (भाग 8 सफा 117)

ते ओहदी मददी कनै तेजी कनै सफर^१ कर (यानी ओहदे कनै मारी-मारियै सुआरी दे जानवर गी दुड़ाऽ) ते सच्च थमां (हटियै) झूठ पासै नेई झुक^२। असें उसी (यानी अय्यूब गी) धीरजवान पाया हा ओह बौहत अच्छा बंदा/श्रेष्ठ भगत हा। ओह सच्चें गै खुदा पासै बौहत झुकने आहला हा ॥ 45 ॥

ते याद कर साढ़े भगतें इब्राहीम ते इस्हाक़ ते याक़ूब गी जेहके बड़े पुरशार्थी ते दूरदर्शी हे ॥ 46 ॥

असें उनेंगी इक खास गल्ला आस्तै चुनी लैते दा हा, ते ओह असल घर (यानी आखरत) दी याद ही ॥ 47 ॥

ते ओह सारे साढ़ै लागै बड़ी शान आहले ते बड़े नेक लोक हे ॥ 48 ॥

ते इस्माईल ते यरअ (यसायह) गी याद करो ते जुल्किप्रल (यानी हिज्ज़लील) गी (याद करो) ते एह सारे दे सारे निहायत नेक बंदें बिच्चा हे ॥ 49 ॥

एह (तज़करा/शिक्षा) उनें लोकें दे पद चि'नें पर चलने आस्तै इक याद दिहानी (अनुस्मारक) ऐ ते संयमियें आस्तै सच्चें गै अति उत्तम ठकाना निश्चत ऐ ॥ 50 ॥

(यानी) म्हेशां रौहने आहले बाग जिंदे दरोआजे म्हेशां उंदे आस्तै खुल्ले दे रौहगन ॥ 51 ॥

تَحَثُّ إِنَّا وَجَدْنَاهُ صَابِرًا نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿۴۵﴾

وَأَذْكُرْ عَبْدَنَا إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ أُولِي الْأَيْدِي وَالْأَبْصَارِ ﴿۴۶﴾

إِنَّا أَخْلَصْنَاهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ﴿۴۷﴾

وَاللَّهُمَّ عِنْدَنَا لَيْسَ الْمُصْطَفَيْنِ الْأَخْيَارِ ﴿۴۸﴾

وَأَذْكُرْ إسماعِيلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ وَكُلَّ مَنْ الْأَخْيَارِ ﴿۴۹﴾

هَذَا ذِكْرٌ وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لِحُسْنَ مَآبٍ ﴿۵۰﴾

جَنَّتْ عَدْنٌ مَّفْتَحَةٌ لَهُمُ الْأَبْوَابُ ﴿۵۱﴾

1. ज़रब दा अर्थ सफर करना बी होंदा ऐ। (अकरबुल्मवारिद)
2. मूल शब्द 'हिन्स' दा अर्थ ऐ सच्च थमां झूठ पासै प्रवृत्त होना। एहदे च एह संकेत दिता गेदा ऐ जे दुश्मन तुगी हदायत थमां फेरियें अपने पासै आहना चाहदे न पर सभावक तौरा पर तू ऐसा नेई करी सकदा फी बी दुश्मनें दे बरोध कारण तुगी तकलीफां पुजगन। इस आस्तै अस तुगी हुकम दिने आं जे इक सुआरी/घोड़े पर बेही जा ते अडिडियां ते त्रांभडियां मारी-मारी उसी दुड़ाऽ यानी तेजी कनै दुश्मन दे मुलखे थमां बाहर निकली जा तां जे दुश्मन दा तेरे पर कब्जा नेई र'थे ते तू उदी नास्तिकता थमां जिस चाल्ली रुहानी तौरा पर सुरक्षत ऐं जस्मानी तौरा पर सुरक्षत होई जाए।

ओह उंदे च तकिये लाइयै बैठे दे होंगन, ओह उंदे च हर भांति दा मेवा, जेहका बड़ी मातरा च होग, मंगांगन ते उसै चाल्ली पीने सरबंधी चीजां बी ॥ 52 ॥

ते उंदै कश नीमियां नजरां रक्खने आहलियां हानी-त्रानी जनानियां होंगन ॥ 53 ॥

एह ओह गल्लां न जिंदा तेरे कनै क्यामत आहलै ध्याइँ मिलने दा बा'यदा कीता जंदा ऐ ॥ 54 ॥

एह सादा रिशक ऐ जो कदें बी खतम नेई होई सकदा ॥ 55 ॥

एह (मोमिनं आस्तै ऐ) पर सिरफिरें आस्तै बौहत बुरा ठकाना (निश्चत) ऐ ॥ 56 ॥

यानी ज्हनम, जेहदे अंदर ओह दाखल होंगन ते ओह बुरी रौहने दी ज'गा ऐ ॥ 57 ॥

एह (मुक्करें/काफरें आस्तै) ऐ। इस आस्तै चाही दा ऐ जे ओह उसी चक्खन यानी गर्म पानी ते जखमें दा धोन ॥ 58 ॥

ते उसै (गरोह) आंगर किश होर गरोह बी होंगन (जिंदे कर्म आपस च मिलदे-जुलदे होंगन) ॥ 59 ॥

(उंदे बिच्चा इक गरोह पैहलें आहले गरोह पासै शारा करियै आखग जे) एह बी इक गरोह ऐ जेहका थुआड़े कनै नरक च दाखल होग ते उनेंगी कोई बी 'आओ जी' आखने आहला नेई होग। ओह सच्चें गै नरक च दाखल होंगन ॥ 60 ॥

(इस पर) ओह गरोह (जिसी एह गल्ल आखी जाग) आखग जे साद्दी गल्ल छोड़ो, तुस बी ते इयै नेह लोक ओ जे जिनेंगी 'आओ जी' आखने आहला कोई नेई। तुसैं

مُكْرِبِينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِقَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ ۝

وَعِندَهُمْ قِصْرَتُ الظَّرْفِ أَثْرَابٍ ۝

هَذَا مَا تُوْعَدُونَ لِيَوْمِ الحِسَابِ ۝

إِنَّ هَذَا لَرِزْقًا مَّا لَهُ مِنْ نَفَادٍ ۝

هَذَا وَإِنَّ لِلظَّالِمِينَ لَشَرَّ مَا بَلَ

جَهَنَّمَ ۚ يَصَلُّونَهَا ۚ فَيَنْسِفُهَا إِلَى

هَذَا فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ۝

وَآخِرُ مِنْ سُكَّةِ أَزْوَاجٍ ۝

هَذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ ۚ إِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ۝

قَالُوا بَلْ أَنْتُمْ لَأَمْرَجِبًا بِكُمْ ۚ أَنْتُمْ

قَدْ مُمِئْتُمْ لَنَا ۚ فَيَنْسِفُ الْقَرَارَ ۝

(असेंगी बक्हाई-बक्हाइयै) इस नरक गी साढ़े आस्तै अगमें भेजेआ हा ते ओह अत्त गै बुरा ठकाना ऐ ॥ 61 ॥

इस पर ओह (गरोह जिस गी ओह एह गल्ल आखगन) आखग जे हे साढ़े रब्ब! जिस कुसै नै (बी तेरी नजरें च) साढ़े आस्तै इस नरक गी अगमें भेजे दा ऐ तूं उसी ज्यादा शा ज्यादा अगगी दा अजाब दे ॥ 62 ॥

ते (उस बेलै नरक आहले लोक) आखगन जे असेंगी केह होआ जे अस अज्ज उनें लोकें गी नेई दिखदे जिनेंगी अस बुरा आखदे होंदे हे ॥ 63 ॥

क्या अस उनेंगी (इयै नेह मनघड़त बिचारें करी) तुच्छ समझदे हे जां उस बेलै सादियां अक्खीं मटोई गेदियां हियां (ते ओह असेंगी नजरी नेई आँदे)? ॥ 64 ॥

नरकै आहलें दा एह झगड़ा इक सच्ची गल्ल ऐ ते इयां गै होइयै रौहग ॥ 65 ॥ (रुकू 4/13)

तूं उनेंगी आखी दे जे अ'ऊं ते सिर्फ सचेत करने आहला आं। अल्लाह दे बगैर कोई उपास्य नेई। ओह इक्कला ते प्रभुत्वशाली ऐ ॥ 66 ॥

ओह गासैं ते धरती दा रब्ब ऐ ते जो किश उनें दौनें बरकार ऐ उस दा बी। ओह प्रभुत्वशाली ऐ (ते) बखानहार' बी ॥ 67 ॥

قَالُوا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هَذَا فَرِدْهُ عَذَابًا
صِغْعًا فِي النَّارِ ۝۲۱

وَقَالُوا مَا نَتْلُو إِلَّا نَزْرٌ رَجَاءُ لَكُنَّا
نَعُدُّهُمْ مِنَ الْأَشْرَارِ ۝۲۲

أَتَّخَذْتُهُمْ سَمْعِيًّا أَمْ رَاغَتْ عَنْهُمْ
الْأَبْصَارُ ۝۲۳

إِنَّ ذَلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ ۝۲۴

قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ وَمَنْ إِلَهٌ إِلَّا اللَّهُ
الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝۲۵

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
الْعَزِيزُ الْعَقَّارُ ۝۲۶

1. संसार च मनुक्ख ऐसा करदे न जे जिसलै ओह कुसै पर अधिकार करी लैंदे न तां अपने बैरियें गी मलियामेट करी दिंदे न, पर अल्लाह ऐसा ऐ जे ओह शक्तिशाली बी ऐ ते महान बखानहार बी यानी सारे मुन्कार उसदे कब्जे च न फी बी ओह स'जा देने च बिल्ल बरतदा ऐ। इस आयत च हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. दे आचरण दा बर्गन ऐ। हजरत आइशा दे कथन मूजब अल्लाह दे सारे गुण थुआड़े च मजूद न। (बुखारी) की जे एह शब्द अल्लाह दे बारे च आखे गेदे न, पर इस शा अभीस्ट (इंदे कनै सरबधत) हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. बी न। उनें मक्का विजय पर इयै उच्च आदर्श दस्सेआ जिसलै जे थुआड़े सारे बैरी जेहके दिन-रात तुसेंगी ते तुंदे साथियें गी अति ऐत दुख दिंदे होंदे हे, ओह थुआड़े सामने आंहदे गे तां तुसें गलाया जे जाओ। अज्ज थुआड़े बिच्चा कुसै गी नेई पकड़ेआ जाग (सीरत हलिब्या ते जुकर्ना भाग 2 सफा 302-3; छापखाना अजहरिया मिस्र)।

तू आखी दे जे एह इक बौहत बड्डा समाचार
ऐ ॥ 68 ॥

قُلْ هُوَ نَبَأٌ عَظِيمٌ ۝۱

मगर तुस एहदे थमां मूंह फेरा करदे ओ
॥ 69 ॥

أَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ۝

मिगी गौरवशाली फरिशें दा कोई इलम नेई हा
जिसलै जे ओह (एह) बैहस करा करदे हे (जे
इस युग च सुधार करने आस्तै केहड़ा शब्स
मनासब ऐ) ॥ 70 ॥

مَا كَانَ لِي مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَائِكَةِ الْأَعْلَى
إِذْ يَخْتَصِمُونَ ۝

मिगी ते सिर्फ एह वह्नी कीती जंदी ऐ जे
अ'ऊं खोहली-खोहली ब्यान करने आहला
नजीर (यानी नबी) आं ॥ 71 ॥

إِنْ يُوحَىٰ إِلَىٰ إِلَّا أَنْتَا أَنْتَ ذِيرٌ مُّبِينٌ ۝

(याद कर) जिसलै जे तेरे रब्ब नै फरिशें गी
गलाया जे अ'ऊं गिल्ली मिट्टी शा इक मनुक्ख
पैदा करने आहला आं ॥ 72 ॥

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا
مِّنْ طِينٍ ۝

इस आस्तै जिसलै अ'ऊं उसी पूरा करी लैं ते
ओहदे च अपना कलाम (अपनी वाणी) पाई
देआं, तां तुस लोक फरमांबरदारी कन्नै ओहदे
अगें झुकी जाओ ॥ 73 ॥

فَإِذَا سَوَّيْتَهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُّوحِي
فَقَعُوا لَهُ سَجْدِينَ ۝

इस आस्तै सारे दे सारे फरिशें उसदी
फरमांबरदारी अखत्यार करी लैती ॥ 74 ॥

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ۝

सवाए इब्लीस दे, जिसनै घमंड कीता ते ओह पैहलें
थमां गै मुक्कर हा ॥ 75 ॥

إِلَّا إِبْلِيسَ ۝ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ
الْكٰفِرِينَ ۝

(अल्लाह नै) गलाया जे हे इब्लीस! तुगी
कुसनै इस गल्ला थमां रोकेआ जे जिसगी में
अपने दौनें हथें कन्नै बनाया हा उसदी
फरमांबरदारी करदा। क्या तोह अपने आपै गी
बड्डा समझेआ जां तू सच्चें गै मेरी आज्ञा
मन्ने शा उप्पर ऐं? ॥ 76 ॥

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسْجُدَ لِمَا
خَلَقْتُ يَدَيَّ ۝ اسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ
الْعٰلِينَ ۝

(शतान नै) गलाया जे अ'ऊं कम-स-कम उस शख्स (यानी आदम) शा चंगा आं। तोह मिगी अग्गी थमां पैदा कीते दा ऐ ते उसगी गिल्ली^१ मिट्टी थमां पैदा कीते दा ऐ ॥ 77 ॥

इस पर (अल्लाह नै) गलाया, इत्थुआं चली जा। की जे तू सादी दरगाह थमां दुतकारेआ गेदा ऐं ॥ 78 ॥

ते जज्जा-स'जा (यानी कर्मै दा फल पाने) मौकै तगर तेरे पर सादी फटकार पौंदी रौहग ॥ 79 ॥

इस पर उसनै गलाया जे हे मेरे रब्ब! (जेकर इयै किश करना ऐ) तां मिगी उस बेलै तगर मोहलत दे जिसलै जे इनेंगी जींदा करियै दबारा खडेरी दिता जा ॥ 80 ॥

इस पर (अल्लाह नै) फरमाया, (इयै मन्शा ऐ) तां अपने आपै गी ढिल्ल दित्ते जाने आहलें च समझी लै ॥ 81 ॥

एह (ढेल) इक निश्चत समे तगर होग ॥ 82 ॥

उसलै उसनै गलाया जे मिगी तेरे आदर दी सघंद! अ'ऊं इंदे बिच्चा सारें दे सारें गी ॥ 83 ॥

सिवाए चोनमां बंदें दे गुमराह करंग ॥ 84 ॥

उसलै (अल्लाह नै) फरमाया। जे सच्च एह ऐ। ते अ'ऊं सच्च गै ब्यान करना होन्ना ॥ 85 ॥

जे अ'ऊं ज्हन्नम गी तेरे कनै ते उंदे बिच्चा जो तेरा अनुसरण करंगन, सारें कनै भरी देगा ॥ 86 ॥

قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِنْهُ طُ خَلَقْتَنِي مِنْ نَّارٍ
وَخَلَقْتَهُ مِنْ طِينٍ ﴿۷۷﴾

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿۷۸﴾

وَأَنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ﴿۷۹﴾

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرُنِي إِلَى يَوْمِ
يُبْعَثُونَ ﴿۸۰﴾

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿۸۱﴾

إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿۸۲﴾

قَالَ فِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿۸۳﴾

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمْ الْمُخْلِصِينَ ﴿۸۴﴾

قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقُّ أَقْوَلُ ﴿۸۵﴾

لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَتَّبَعُ
مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿۸۶﴾

1. अग्गी थमां पैदा करने दे अर्थे आसलै दिक्खो सूर: आराफ़ टिप्पणी आयत 13. नोट 3

तू आखी दे जे अ'ऊं इस (प्रचार) आसतै तेरे
थमां कोई उजरत नेई मंगदा ते नां गै अ'ऊं
बनावटी गल्ल करने दा आदी आं ॥ 87 ॥

एह (कुर'आन) ते सारे ज्हांनें/लोकें आसतै
इक नसीहत देने आहली कताब ऐ ॥ 88 ॥

ते तुस किश चिरै बा'द इस दी खबर' सुनी लैगे
ओ ॥ 89 ॥ (रुकू 5/14)

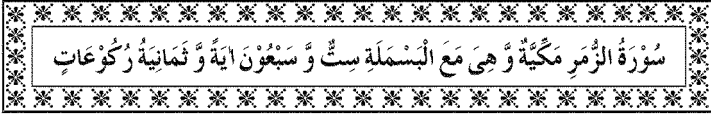
قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا
مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ ﴿٨٧﴾

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٨٨﴾

ع
١٤

وَلِتَعْلَمَنَّ بِآءِ بَعْدَ حِينٍ ﴿٨٩﴾

०००



सूर: अल्-जुमर

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां छिहत्तर आयतां ते अट्ठ रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नां५ लेइयै (पढ़ना) जेहका
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

इस कताब दा उतरना अल्लाह पासेआ ऐ, जो
गालिब (ते) सारे कम्म हिकमतें दे अधीन
करने आहला ऐ ॥ 2 ॥

असैं तेरे पासै एह कताब (यानी कुरआन)
कामल सचाइयें पर अधारत उतारी ऐ, इस लेई
तूं अल्लाह आस्तै आज्ञापालन गी खालस करदे
होई उस दी अबादत कर ॥ 3 ॥

सुनो! शुद्ध आज्ञाकारिता अल्लाह दा गै हक़
ऐ ते जेहके लोक उसी छोड़ियै दूई हस्तियें गी
दोस्त बनांदे न (एह आखदे होई) जे अस
उंदी अबादत सिर्फ इस आस्तै करने आं जे
ओह असैं गी अल्लाह दा सामीप्य/नेड़मापन'
प्रदान करी देन। अल्लाह उंदे बशकार उनें
गल्लें बारै, जिंदे च ओह मतभेद रखदे न,
फैसला करग। अल्लाह सचचें गै झूठे ते ना-
शुकरे गी कामयाबी दा रस्ता कदें बी नेई
दसदा ॥ 4 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ
الْحَكِيمِ ①

إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ
اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ①

أَلَا لِلَّهِ الدِّينُ الْخَالِصُ ۗ وَاللَّذِينَ
اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ
إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ ۗ إِنَّ اللَّهَ
يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۗ
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَذِبٌ كَفَّارٌ ①

1. अजकल्ल पापी इस ब्हान्ने कनै शिर्क दे चिक्कड़ै च फसे दे न, पर पुराने समे च बी मुश्रिकें बिच्चा किश
लोक शिर्क दी इयै दार्शनिकता दसदे होंदे हे।

जेकर अल्लाह पुत्र बनाने दा इरादा रखदा तां अपनी मख्लूक बिच्चा जिसी चांहदा चुनी लैंदा ओह (सच्चें-मुच्चें दे पुत्रै दे कलैंकक थमां) पवित्र ऐ। गल्ल एह ऐ जे अल्लाह इक ऐ (ते) गालिब ऐ ॥ 5 ॥

उसनै गासैं ते धरती गी पूरी सूखम दार्शनिकता कन्नै पैदा कीते दा ऐ। ओह रातीं गी दिनै पर ते दिनै गी रातीं पर सुट्टी दिंदा ऐ ते सूरजै ते चन्ने गी उसनै इक (कनून दा पाबंद बनाइयै) कम्मै पर लाई रखे दा ऐ, दौनों बिच्चा हर इक; इक निश्चत अबधी आसतै निश्चत रस्ते पर चला करदा ऐ। सुनो ओह बड़ा गालिब। सर्वशक्तिमान (ते) बड़ा बख्शाने आहला ऐ ॥ 6 ॥

उसनै तुसैंगी इक जान थमां पैदा कीते दा ऐ, फी उसनै उससै जिस्स बिच्चा इक जोड़ा बनाया ते उसनै थुआड़े आसतै चौखरें बिच्च अट्ट जोड़े बनाए दे न। ओह तुसैंगी थुआड़ी मामें दे गर्भाशैं/कुखें च पैदा करदा ऐ (यानी) इक पदायश दे बा'द दूई पदायश च बदलदे होई त्र'ऊं न्हेंरें बिच्चा गुजारियै। एह अल्लाह थुआड़ा रब्ब ऐ। बादशाहत उससे दे अधीन ऐ। सिर्फ ऊऐ इक उपास्य ऐ। इस लेई तुस कुत्थें (भुल्ले दे) फिरा करदे ओ ॥ 7 ॥

जेकर तुस कुफर करो तां अल्लाह थुआड़ा मुल्हाज नैई, ओह अपने बंदें आसतै कुफर गी कदें बी पसंद नैई करदा, ते जेकर शुकर करो तां ओह उसगी थुआड़े आसतै पसंद करदा ऐ ते कोई बोझ चुकने आहली हस्ती दूए दा बोझ नैई चुककी सकदी ते तुसैं सारें गै परतोइयै अपने रब्ब कश जाना होग। उसलै ओह तुसैंगी थुआड़े कर्में थमां खबरदार करग ओह सीनैं दे अंदर छप्पी दी गल्लें गी जानने आहला ऐ ॥ 8 ॥

لَوْ أَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا لَأَصْطَفَىٰ
مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ لَسُبْحَهُ ۗ هُوَ اللَّهُ
الْوَّاحِدُ الْقَهَّارُ ۝

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ يَكُونُ
الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيَكُونُ النَّهَارَ عَلَى الْيَلِ
وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۗ كُلٌّ يَجْرِي
لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ أَلَا هُوَ الْعَزِيزُ
الْعَفَّارُ ۝

خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا
رُؤُوسًا وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِنَ الْأَنْعَامِ ثَمِينَةً
أَزْوَاجًا ۗ يَخْلُقُكُمْ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ
خَلْقًا مِّنْ بَعْدِ خَلْقٍ فِي ظُلُمَاتٍ ثَلَاثٍ ۗ
ذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۗ لَا إِلَهَ إِلَّا
هُوَ ۗ فَآلَىٰ تَصْرُفُونَ ۝

إِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ عَنَىٰ عَنْكُمْ ۗ وَلَا
يَرْضَىٰ لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۗ وَإِنْ تَشْكُرُوا
يَرْضَهُ لَكُمْ ۗ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ
أُخْرَىٰ ۗ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ مَرْجِعُكُمْ
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ
بِدَاتِ الصُّدُورِ ۝

ते जिसलै कदें मनुक्खै गी कोई तकलीफ पुजदी ऐ, ओह अपने रब्ब पासै ध्यान दिंदे होई उसी पुकारदा ऐ, फी जिसलै ओह मनुक्खै गी अपने पासेआ नैमत प्रदान करी दिंदा ऐ तां मनुक्ख उस मकसद गी भुल्ली जंदा ऐ जेहदे आस्तै ओह खुदा गी पुकारदा हा ते खुदा दे शरीक बनाई लैंदा ऐ तां जे उसदे रस्ते थमां (लोकें गी) गुमराह करी देरे। तूं आखी दे जे (हे इन्सान!) किश चिरे आस्तै अपने कुफर कारण फायदा लेई लै। आखर तूं नरकै च पौने आहला ऐं ॥ 9 ॥

क्या जेहका शख्स राती दी घड़ियें मौकै सजदा ते क्याम' दी सूत च फरमांबरदारी दा आदर्श दसदा ऐ ते आखरत थमां डरदा ऐ ओह अपने रब्ब दी रहमत दी मेद रखदा ऐ (ओह ना-फरमान आंगर होई सकदा ऐ) तूं आखी दे, क्या ज्ञानी ते मूरख बराबर होई सकदे न? नसीहत ते सिर्फ ज्ञानी लोक गै हासल करदे न ॥ 10 ॥ (सूकू 1/15)

(इस्सै चाल्ली) आखी दे जे हे मेरे मोमिन बंदो! अपने रब्ब दा संयम अखत्यार करो। ओह लोक जेहके इस दुनियां च (अल्लाह दे) आदेशें दा पूरी चाल्ली पालन करदे न उंदे आस्तै (अगलै ज्हां) उत्तम सिला निश्चत ऐ ते अल्लाह दी धरती बड़ी बिशाल/बसीह^२ ऐ। धीरजवानें गी उंदा अजर बिना सहाब कीते पूरा-पूरा^३ दिता जाग ॥ 11 ॥

وَإِذْ آمَسَّ الْإِنْسَانَ ضُمُّرٌ دَعَارِيَهُ مُبِينًا
إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا حَوَّلَهُ نِعْمَةً مِنْهُ نَبَىٰ مَا كَانَ
يَدْعُوهُ إِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ اللَّهُ آتِدَادًا
لِّبُضْلٍ عَنْ سَبِيلِهِ ۗ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ
قَلِيلًا ۗ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ۝

أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ آنَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَقَائِمًا
يَحْذَرُ الْآخِرَةَ ۖ وَيَرْجُو رَحْمَةَ رَبِّهِ ۗ
قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ
لَا يَعْلَمُونَ ۗ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو
الْأَلْبَابِ ۝

قُلْ يُعْبَادِ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا رَبَّكُمْ
لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ
وَأَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةٌ ۗ إِنَّمَا يُوَفَّى
الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

1. नमाज पढ़दे मौकै उपासक दी ओह दशा जेहदे च ओह सिद्धा खडोंदा ऐ।
2. यानी जेकर मोमिन बंदें गी कुसै ज'गा तकलीफ पुज्जें तां उनें हिजरत करियै अर्थात् ओह ज'गा त्यागियै दूई ज'गा उठी जाना चाही दा।
3. यानी उंदा उजर होग बी बे-सहाब, ते बे-सहाबा होदे होई बी बधदा गै जाग।

तू आखी दे जे मिगी हुकम दिता गोदा ऐ जे अ'ऊं अल्लाह दी उस चाल्ली अबादत करां जे आज्ञाकारिता गी सिर्फ उससै आस्तै मखसूस करी देआं ॥ 12 ॥

ते मिगी एह हुकम दिता गोदा ऐ जे अ'ऊं सारें शा बड्डा फरमांबरदार बनां ॥ 13 ॥

आख, जेकर अ'ऊं अपने रब्ब दी ना-फरमानी करां, तां अ'ऊं इक बड्डे दिन दे अजाब थमां डरनां ॥ 14 ॥

(ते फी) आखी दे जे अ'ऊं अल्लाह दी अबादत अपनी आज्ञाकारिता गी सिर्फ ओहदे आस्तै बाबस्ता करदे होई करना ॥ 15 ॥

(बाकी रेह तुस) तां तुस अल्लाह दे सिवा जिसदी चाहो अबादत करो (ते एह बी) आखी दे जे पूरी चाल्ली घाटे च रौहने आहले लोक ऊरे न जिनें अपने आपै गी बी ते अपने रिश्तेदारें गी बी क्यामत आहले दिन घाटे च पाई दिता। सुनो इयै खु'ल्लम-खु'ल्ला घाटा ऐ ॥ 16 ॥

उंदै उप्पर बी अग्गी दे साए होंगन ते थल्लै बी अग्गी दे साए' होंगन। एह ओह चीज ऐ जिस कनै अल्लाह अपने बंदें गी डरांदा ऐ। हे मेरे बंदो! मेरा संयम अखत्यार करो ॥ 17 ॥

ते जेहके लोक सिरफिरे लोकें दी आज्ञा दा पालन करने थमां बचदे न ते अल्लाह आहले पासै झुकदे न उंदे आस्तै बड्डी खुशखबरी ऐ। इस आस्तै तूं मेरे उनें बंदें गी खुशखबरी दे ॥ 18 ॥

जेहके साढ़ी गल्ल सुनदे न ते फी ओहदे बिचा सर्वोत्तम आदेश दा अनुसरण करदे न,

قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ۗ

وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ ۗ

قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۗ

قُلِ اللَّهُ أَعْبَدُ مُخْلِصًا لَهُ دِينِي ۗ

فَاعْبُدُوا مَا شِئْتُمْ مِنْ دُونِهِ ۗ قُلْ إِنَّ الْخَاسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَلَا ذَلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ۗ

لَهُمْ مَنْ فَوْقَهُمْ ظُلَّلٌ مِنَ النَّارِ وَمَنْ تَحْتِهِمْ ظُلَّلٌ ۗ ذَلِكَ يُخَوِّفُ اللَّهَ بِهِ عِبَادَهُ ۗ لِيُعْبَدَ فَأَتَّقُونَ ۗ

وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ أَنْ يَعْبُدُوهَا وَأَنَابُوا إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ ۗ فَبَشِّرْ عِبَادِ ۗ

الَّذِينَ يَسْمَعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ

1. यानी उंदा ओढ़ना-बछौना अर्थात् बिस्तारा ते उप्पर अग्गी दा गै होग।

ऊरे लोक न जिनेंगी अल्लाह नै हदायत दित्ती
ते ऊरे लोक अकलमंद न ॥ 19 ॥

क्या ओह शख्स जेहदे पर अजाब दी
भविकखवाणी पूरी होई चुकी दी होए (उसी
कोई बचाई सकदा ऐ? ते) क्या तूं अग्गी च
पौने आहलें गी बचाई सकना ऐं? ॥ 20 ॥

पर ओह लोक जेहके अपने रब्ब आस्तै संयम
अखत्यार करदे न उनेंगी केई मंजलें आहले
मकान दिते जांगन जिंदै उप्पर होर मंजलां
(मजबूती कनै) बनी दियां होंगन। उंदे खल्ल
नैहरां बगदियां होंगन। एह अल्लाह दा पक्का
बा'यदा ऐ ते अल्लाह अपने बा'यदे गी त्रोड़दा
नेई ऐ ॥ 21 ॥

क्या तुसें नेई दिक्खेआ जे अल्लाह नै गासै
थमां पानी उतारेआ,फी उसी धरती बिच्चा सृहटें
दे रूपै च चलाया ऐ। फी ओह उस पानी राहें
केई किसमें दियां फसलां उगांदा ऐ। फी ओह
पक्कने पर आई जंदियां न तां तूं उनेंगी पीला
होए दा दिक्खना ऐं। फी अल्लाह उनेंगी घास-
बूट आंगर सृहन बनाई दिंदा ऐ। एहदे च
समझदारें आस्तै बौहत बड्डी नसीहत ऐ
॥ 22 ॥ (रुकू 2/16)

क्या, जिसदा सीना अल्लाह आज्ञा पालन
आस्तै खोहली देऐ ते उसी अपने रब्ब पासेआ
नूर बी मिले दा होऐ (ओह उस शख्स आंगर
होई सकदा ऐ जेहका ऐसा नेई)। इस लेई उंदे
पर अफसोस! जिंदे दिल अल्लाह दी याद
बारै कठोर न। ओह खुल्ली-डुल्ली गुमराही
च न ॥ 23 ॥

अल्लाह ओह ऐ जिसनै बेहतर थमां बेहतर
गल्ल यानी ओह कताब उतारी ऐ जेहकी

أَحْسَنَهُ ۗ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ
وَ أُولَٰئِكَ هُمُ الْوَالُونَ الْأَبَابِ ۝
أَقْمَنُ حَقًّا عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ۗ أَفَأَنْتَ
تُنْقِذُ مَنْ فِي النَّارِ ۝

لَكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ عُرفٌ مِّنْ
فَوْقَهَا عُرفٌ مَّبِينَةٌ لَّتَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ ۗ وَعَدَّ اللَّهُ ۗ لَا يَخْلِفُ اللَّهُ
الْعِيعَادَ ۝

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
فَسَلَكَهُ يَتَابِعُ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ
زَرْعًا مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيَجُ فَتَرَاهُ
مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا ۗ إِنَّ فِي
ذَٰلِكَ لَذِكْرٍ لِأُولِي الْأَبَابِ ۝

أَقْمَنُ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ
عَلَى نُورٍ مِّنْ رَبِّهِ ۗ قَوْلٌ لِّلْقَسِيَةِ
قُلُوبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۗ أُولَٰئِكَ فِي
صَلِّ مَبِينٍ ۝

اللَّهُ نَزَلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَسَابِهًا

मिलदी-जुलदी^१ बी ऐ ते उसदे बिशे बी अति उत्तम^२ न। जेहके लोक अपने रब्ब थमां डरदे न उंदे जिसमें दे रोएं/रोम उसी पढ़ने कनै खड़ोई जंदे न। फी उंदी चमड़ी/कजड़ी ते दिल नर्म होइयै अल्लाह दी याद च झुकी जंदे न। एह (कुरआन) अल्लाह दी हदायत ऐ (यानी कुरआन जिस हदायत दा मालक ऐ ओह अल्लाह दी हदायत ऐ) जेहदे राहें ओह जिसी चांहदा ऐ हदायत दिंदा ऐ ते जिसगी अल्लाह गुमराह करार देई देऐ उसगी कोई हदायत नेई देई सकदा ॥ 24 ॥

क्या ओह शख्स जो अपने मुहँ गी^३ क्यामत आहलै रोज कठोर अज़ाब थमां बचने आस्तै ढाल बनांदा ऐ (ओह जनत च जाने आहलें दे बरोबर होई सकदा ऐ?) ते जालम लोकें गी गलाया जाग जे अपने कर्में दा फल भोगो ॥ 25 ॥

उंदे शा पैहलें आहले लोक बी झुठलाई चुके दे न (फी उसदे नतीजे च) उंदे उप्पर अज़ाब ऐसे-ऐसे पासेआं आया जिनें गी ओह जानदे गै नथे ॥ 26 ॥

ते अल्लाह नै उनेंगी संसारक जिंदगी दी जिल्लत बी दिती ते आखरत च जो अज़ाब औग

مَمَّانِي ۙ تَقْسُرُّ مِنْهُ جُلُودَ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلْبِيزٌ جُلُودَهُمْ وَقُلُوبُهُمْ إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ ۗ ذَٰلِكَ هُدَىٰ اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝۲۴

أَفَمَنْ يَتَّبِعُنِي يَوجِبْهُ سُوءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ وَقِيلَ لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ۝۲۵

كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاتَّهُمْ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ۝۲۶

فَأَذَاقَهُمُ اللَّهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

१. पवित्र कुरआन दियां किश आयतां ऐसियां न जिंदा बिशे बाइबिल ते पिछली कताबें कनै मिलदा-जुलदा ऐ ते किश आयतां ऐसियां न जो नर्म-नर्म बिशे ब्यान करदियां न ते बड़ी शान आहलियां न ते उंदे म्हतब गी कोई बी पैहली कताब नेई पुजदी/ब्यान नेई करदी।
२. मूल शब्द 'मसानी' दा अर्थ मोड़ ते दुतारा दियां तारां बी ऐ जिनेंगी आमतौर पर नैह कनै बजाया जंदा ऐ। नैह गी अरबी भाशा च जुफर आखदे न। इस्से गी बगाड़िये अंग्रेजी च उस बाजे दा नाँस ज़फर (Zafar) रखेआ गेदा ऐ, जेहदे चा सुर उच्चा ते सुरीला निकलदा ऐ। इस आस्तै इस आयत च पवित्र कुरआन दी एह तरीफ कीती गेदी ऐ जे पैहली कताबें दे मकाबले च इसदी तलीम अति-ऐत सुरीली ते उच्ची शान आहली ऐ।
३. यानी क्यामत आहलै ध्याडै काफर लोक अज़ाब दी सख्ती दी ब'जा करी ऐसे व्याकुल ते पागल होई जांगन जे बजाए इसदे जे ओह अपने मुंह बचान, जेहके असल च बचाने दी चीज ऐ। ओह बाकी शरीर पिच्छें करी देंगन ते मुंह अगगें करी देंगन। इस आस्तै खुदा उंदे दिलें च ऐसी खाहश पैदा करी देग जे ओह अ'नै-बाह डिड्डें दे भार घसटोदें होई नरकें बक्खी जांगन।

जेकर ओह समझन तां ओह एहदे शा बी
बड्डा होग ॥ 27 ॥

ते असें इस कुरआन च हर किसमै दियां
गल्लां ब्यान कीती दियां न, तां जे ओह (यानी
मुन्कर) नसीहत हासल करन ॥ 28 ॥

असें इसी कुरआन बनाया ऐ जो अपना मतलब
खोहलियै ब्यान करने आहला ऐ। इस च कोई
टेढ़ापन नेई। (एह इस आस्तै उतरे दा ऐ) तां
जे लोक तक्रवा/संयम अखत्यार करन ॥ 29 ॥

अल्लाह उस शख्स दी हालत गी (इबरत
आस्तै) ब्यान करदा ऐ जिसदे केई मालक
न जो आपस च मतभेद रखदे न ते इक
शख्स ऐ जो पूरे दा पूरा इक आदमी दी
मल्कीयत ऐ। क्या एह दमै शख्स अपनी
परिस्थिति च बराबर होई सकदे न? सारी
तरीफ अल्लाह दी ऐ पर उंदे चा मते-सारे
लोक नेई जानदे ॥ 30 ॥

तूं बी इक दिन मरने आहला ऐं ते ओह बी
मरने आहले न ॥ 31 ॥

पही तुस सारे दे सारे क्यामत आहलै ध्याड़े
अपने रब्ब दे सामनै अपने-अपने मकसद ते
कर्म पेश करगे ओ ॥ 32 ॥ (रुकू 3/17)

وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾

وَلَقَدْ صَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ
كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٨﴾

قُرْآنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ
يَتَّقُونَ ﴿٢٩﴾

صَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَجُلًا فِيهِ شُرَكَاءُ
مُتَشَكِّسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ هَلْ
يَسْتَوِينَ مَثَلًا الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ
أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾

إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ ﴿٣١﴾

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ
تَخْتَصِمُونَ ﴿٣٢﴾

ते उस शा बड्ड़ा जालम कु'न होई सकदा ऐ जेहका अल्लाह गी झूठ आखै ते (खुदा पासेआ औने आहले) सच गी जिसलै ओह ओहदे कशा सामनै आवै तां झूठलाई देऐ। क्या मुन्करें दा ठकाना जहनम नेई ऐ? ॥ 33 ॥

ते (हर) ओह शखस जेहका खुदा पासेआ सच्ची तलीम ल्यावै ते (हर) ओह शखस जो ऐसी तलीम दी तसदीक करै ऐसे लोक गै संयमी होंदे न ॥ 34 ॥

ओह जे किश चांहगन उनें गी अपने रब्ब कशा थहोई जाग। परोपकारियें दा बदला ऐसा गै होंदा ऐ ॥ 35 ॥

तां जे अल्लाह उंदे कर्म दे बुरे हिस्सैं गी खट्टी देऐ ते उंदा बदला उंदे कर्म बिच्चा जेहके सारें शा चंगे कर्म होन उंदे मताबक देई देऐ ॥ 36 ॥

क्या अल्लाह अपने बंदें आस्तै काफी नेई? ते ओह लोक तुगी उंदे शा डरांदे न जो उस (खुदा) दे अलावा न ते जिस गी अल्लाह गुमराह समझै उसी हदायत देने आह्ला कोई नेई ॥ 37 ॥

ते जिस गी अल्लाह हदायत देऐ उसगी कोई गुमराह नेई करी सकदा। क्या अल्लाह गालिब (ते) बदला' लैने दा अधिकार नेई रखदा? ॥ 38 ॥

ते जेकर तू उंदे शा पुच्छें ते गासैं ते धरती गी कुसने पैदा कीते दा ऐ। तां ओह जरूर आखडन

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ
وَكَذَبَ بِالْصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ ۗ أَلَيْسَ
فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ۝

وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ
أُولَئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۝

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِندَ رَبِّهِمْ ۗ ذَٰلِكَ
جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۝

لِيُكَفِّرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا
وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ الَّذِي
كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ۗ وَيُخَوِّفُونَكَ
بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۗ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ
فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُضِلٍّ ۗ أَلَيْسَ
اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انْتِقَامٍ ۝

وَلَيْبَسَ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ

1. इन्कार करने आहले ते एह कोशश करदे हे जे कुसे चाल्ली मोमिन लोक गुमराह होई जान पर मोमिनें दी कुरबानी दी ब'जा करी खुदा चांहदा हा जे मोमिन बधन-फलन। इस आस्तै इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे क्या अल्लाह गालिब नेई जे जेहकी उसदी मन्शा ऐ उसी पूरा करै ते जेहकी दुश्मनं दी मन्शा ऐ उसी नकाम करै।

जे अल्लाह नै। तूं आखी दे जे क्या तुस जानदे ओ जे तुस अल्लाह दे सिवा कुसी पुकारदे ओ? जेकर अल्लाह मिगी नुकसान पुजाना चाह तां क्या ओह (निक्के उपास्य) उसदे नुकसान गी दूर करी सकदे न? जां जेकर अल्लाह मिगी रैहमत बख़ाना चाह तां क्या ओह (उपास्य) उसदी रैहमत गी रोकी सकदे न? तूं आखी दे मेरे आस्तै अल्लाह काफी ऐ। सब (सच्चे) भरोसा करने आहले उससै पर भरोसा करदे न ॥ 39 ॥

तूं आखी दे, हे मेरी कौम! तुस अपनी-अपनी ज'गा पर कर्म करो। अ'ऊं बी (अपनी ज'गा पर) कर्म करंग। इस आस्तै तुस जरूर समझी जागे ॥ 40 ॥

(जे) कोहदे पर ऐसा अज़ाब औंदा ऐ जो उसी ज़लील करी दिंदा ऐ ते कोहदे पर ओह अज़ाब औंदा ऐ जो स्थाई होंदा ऐ ॥ 41 ॥

असें तेरे पर (एह) कताब सच्चें गै लोकें दे फायदे आस्तै हक़ ते हिक्मत कनै उतारी ऐ इस आस्तै जिसनै हदायत पाई लैती उसदा फायदा उसदी जानना गी/उसी गै होग ते जेहका गुमराह होई गेआ उसदी गुमराही (दंड) उससै पर पौग ते तूं उंदे पर कारसाज दे तौरा पर नयुक्त नेई कीता गेदा ॥ 42 ॥ (रुकू 4/1)

अल्लाह हर शख़्स दी रूह उसदी मौती दे बेलै गै कब्जे च करदा ऐ ते जिसदी मौत नेई होई दी होऐ (उसदी रूह) नींदर पेदे मौकै (कब्जे च करदा ऐ) फी ओह जिसदी मौती दा फरमान जारी करी चुके दा होंदा ऐ उसदी रूह गी रोकी रखदा ऐ ते दूई गी इक निश्चत समे आस्तै बापस करी दिंदा ऐ। एहदे च

وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۗ قُلْ أَفَرَأَيْتُمْ مَا
تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ
بُصْرًا هَلْ هُنَّ كُشِفَتْ ضَرِيحًا أَوْ أَرَادَنِي
بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَتْ رَحْمَتَهُ ۗ قُلْ
حَسْبِيَ اللَّهُ ۗ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿39﴾

قُلْ يَوْمَ اَعْمَلُوا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّى
عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿40﴾

مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ
عَذَابٌ مُّقْتَرٍ ﴿41﴾

إِنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۗ
فَمَنْ اهْتَدَىٰ فَلِنَفْسِهِ ۗ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا
يَضِلُّ عَلَيْهَا ۗ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ﴿42﴾

اللَّهُ يَتَوَفَّى الْأَنْفُسَ حِينَ مَوْتِهَا وَالَّتِي
لَمْ تَمُتْ فِي مَنَامِهَا ۖ فَيُمْسِكُ الَّتِي
قَضَىٰ عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْأُخْرَىٰ
إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ

फिकर करने/सोचने-समझने आहली कौम आस्तै केई नशान मजूद न ॥ 43 ॥

تَقْوَمِ يَتَفَكَّرُونَ ①

क्या उनें अल्लाह दे सिवा किश सफारशी बनाई रक्खे दे न? आखी दे भामें उंदे च कोई ताकत नेई होऐ ते नां उनेंगी (किसै किसम दी) सूझ-बूझ होऐ (फी बी तुस उनेंगी सफारशी बनागे ओ)? ॥ 44 ॥

أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ شُفَعَاءَ ۗ قُلْ أَوْ
لَوْ كَانُوا لَا يَمْلِكُونَ سَيِّئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ①

तूं आखी दे जे सफारश दा हक सारे दा सारा अल्लाह दे हत्थ ऐ (जिस गी चांहदा ऐ एहका अधिकार दिंदा ऐ) गासैं ते धरती दी बादशाहत उससै दी ऐ ते तुस उससै कश परताइयै भेजे जागे ओ ॥ 45 ॥

قُلْ لِلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا ۗ لَهُ مُلْكُ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ ثُمَّ إِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ ①

ते जिसलै सिर्फ खुदा दा जिकर कीता जंदा ऐ तां ओह लोक जो आखरत पर ईमान नेई आहनदे उंदे दिल (ऐसे उपदेश कनै) नफरत' करन लगी पाँदे न ते जिसलै उंदा (बुतैं दा) जो खुदा दे मकाबले च बिल्कुल तुच्छ न, जिकर कीता जंदा ऐ तां ओह यकदम खुश होन लगी पाँदे न ॥ 46 ॥

وَإِذَا دُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ
الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۗ وَإِذَا دُكِرَ
الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ①

तूं आखी दे हे अल्लाह! हे गासैं ते धरती गी पैदा करने आहले! ग़ैब ते जाहर दा इलम रक्खने आहले! तूं गै अपने बंदें बशकार इनें सारी चीजें दा फैसला करने आहला ऐं जिंदे बाँरे ओह मतभेद करदे न ॥ 47 ॥

قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
عِلْمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ
عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ①

ते जेकर जालम लोक धरती च जो किश ऐ, उसदे मालक होंदे बल्के इन्ना गै होर बी उंदे कश होंदा तां ओह क्यामत आहले ध्याड़ै अजाब थमां बचने आस्तै उसी फिद्दय: दे रूपै च देई दिंदे तां अल्लाह पासेआ उंदे पर ओह किश जाहर होई जाग। जिसदा उनेंगी अंदाजा बी नेई हा ॥ 48 ॥

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ
جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَا فِتْنَةً لَهُمْ مِنْ سُوءِ
الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ وَبَدَأَ اللَّهُ مِنَ اللَّهِ
مَا لَهُمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ①

1. अर्थात् अनेकेश्वरवादी लोक एकेश्वरवाद दे बर्णन पर बड़े चिड़दे न।

ते उंदे पर उंदे कर्म दियां बुराइयां जाहर होई जांगन ते जिस अजाब दा ओह मौजू कसदे होंदे हे (ओह बी) उनेंगी हर पासेआ घेरी लैग ॥ 49 ॥

ते जिसलै इन्सान गी कोई नुकसान पुजदा ऐ तां ओह् असेंगी पुकारन लगदा ऐ। फी जिसलै अस उसी अपने कशा किश नैहमत दिन्ने आं तां ओह् आखदा ऐ मिगी एह नैमत अपने इलम दी ब'जा करी मिली दी ऐ (एह स्हेई नेई) बल्के उसदा मिलना इक अजमैश ऐ पर उंदे बिच्चा मते-सारे लोक नेई जानदे ॥ 50 ॥

इयै (गल्ल) उंदे शा पैहले लोक बी आखी चुके दे न। फी बी उंदे कर्म उंदे कम्म नेई आए ॥ 51 ॥

बल्के उंदे कर्म दी बदिद्ये उनेंगी आई पकड़ेआ ते उस युग दे लोकें बिच्चा जो जालम न उनेंगी बी उंदे कर्म दियां बदिद्यां पकड़ी लैंगन ते ओह् खुदा गी उसदे इरादे थमां रोकी नेई सकगन ॥ 52 ॥

क्या उनेंगी पता नेई जे अल्लाह जेहदे आस्तै चांहदा ऐ रोजी च बढौतर करी दिंदा ऐ ते (जेहदे आस्तै चांहदा ऐ रोजी च) तंगी करी दिंदा ऐ। ते ओहदे च मोमिन कौम आस्तै बडे नशान न ॥ 53 ॥ (रुकू 5/2)

तू (उनेंगी साहे पासेआ) आखी दे, हे मेरे बंदे! जिनें अपनी जान्नें पर (गुनाह करियै) जुलम कीते दा ऐ अल्लाह दी रैहमत शा नराश नेई होन। अल्लाह सारे गुनाह बख्शी दिंदा ऐ। ओह् बख्शाने आह्ला (ते) बार-बार रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 54 ॥

وَبَدَّالَهُمْ سَيِّئَاتٍ مَا كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ
مَا كَانُوا بِئْسَتْ هُمْ يَسْتَهْرِءُونَ ﴿٥٠﴾

فَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ إِذَا
خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّثْلًا قَالِ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ
عَلَىٰ عِلْمٍ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَلَكِنَّ
أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥١﴾

قَدْ قَالُوا يَا لَيْتَ نَحْنُ كَالَّذِينَ
عَمِلُوا مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٥٢﴾

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتٍ مَا كَسَبُوا وَالَّذِينَ
ظَلَمُوا مِنْ هَؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتٍ
مَا كَسَبُوا وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٥٣﴾

أَوَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ
لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ
لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٤﴾

قُلْ لِيُعَذِّبِ الَّذِينَ آسَرُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ
لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ
يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا ۗ إِنَّهُ هُوَ الْعَفُورُ
الرَّحِيمُ ﴿٥٥﴾

ते तुस सारे अपने रब्ब पासै झुको ते उस शा पैहलें जे तुंदे पर ऐसा अजाब नाजल होऐ जिसदे उतरने दे बा'द थुआड़ी मदद आसतै कोई नेई पुज्जी सकै, उसदे पूरे फरमांबरदार बनी जाओ ॥ 55 ॥

ते जे किश थुआड़े पासै उतरेआ ऐ ओहदे बिच्चा (अपनी परिस्थितियें मताबक) सारें शा बेहतर हुकम' दा अनुसरण करो। उस शा पैहलें जे तुंदे पर अचानक अजाब आई जा ते तुसैं गी पता बी नेई होऐ ॥ 56 ॥

तां जे ऐसा नीं होऐ जे तुंदे बिच्चा कोई शख्स एह आखन लगै जे जो किश अल्लाह दे बारैं में कमी कीती दी ऐ उसदी बिना पर मेरे पर अपसोस! ते अ'ऊं ते (अल्लाह दी वह्दी गी) तुच्छ समझदा रेहा हा ॥ 57 ॥

जां (कोई) एह गलान लगै जे जेकर अल्लाह मिगी (जबरदस्ती) हदायत देई दिंदा तां अ'ऊं बी संयमियें बिच्चा होई जंदा ॥ 58 ॥

जां जिसलै अजाब गी दिक्खै तां आखन लगै जे जेकर मिगी बापस जाने दा मौका थ्हांदा, तां अ'ऊं परोपकारियें बिच्च शामिल होई जंदा ॥ 59 ॥

(ऐसा) कदें बी नेई (होई सकदा) बल्के तेरे कश साढ़े नशान आई चुके दे हे फी बी तोह उंदा इन्कार कीता ते घमंड शा कम्म लैता ते मुन्करें च शामिल होई गेआ ॥ 60 ॥

ते क्यामत आहलै ध्याड़ै तूं उनें लोकें गी दिखगा जिनें अल्लाह पर झूठ घड़ेआ हा। उंदे

وَأَنبِئُوا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا لَهُ مِنْ قَبْلِ أَن يُأتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ﴿٥٥﴾

وَأَتَّبِعُوا أَحْسَنَ مَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ مِنْ قَبْلِ أَن يُاتِيَكُمُ الْعَذَابُ بِعَظَّةٍ وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ﴿٥٦﴾

أَنْ تَقُولَ نَفْسٌ يُحْضِرُكُم عَلٰى مَا فَرَّطْتُمْ فِي جَنْبِ اللَّهِ وَإِنْ كُنْتُمْ لَمِنَ السَّخِرِينَ ﴿٥٧﴾

أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿٥٨﴾

أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي كَرَّةً فَأَكُونَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٩﴾

بَلَىٰ قَدْ جَاءَ ثَلَاثُ الْبَنِي فَكَذَّبَتْ بِهَا وَاسْتَكْبَرَتْ وَكُنْتُمْ مِنَ الْكٰفِرِينَ ﴿٦٠﴾

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ اللَّهِ وُجُوهُهُم مُّسْوَدَّةٌ ۗ أَلَيْسَ

1. यानी ज्यादा शा ज्यादा जिनीं तफीक होऐ ओहदे मताबक कर्म करने दी कोशश करो।

मूंह काले होंगन, क्या घमंडियें दी ज'गा नरक
नेई ऐ? ॥ 61 ॥

ते (अल्लाह) संयमियें गी उंदी शान दे मताबक
कामयाबी प्रदान करियें हर किसम दे कश्ट-
कलेश थमां मुक्ति देग नां ते उनेंगी तकलीफ
पुज्जग ते नां ओह (कुसै पिछली कुताही पर)
अफसोस बुझडन ॥ 62 ॥

अल्लाह हर चीज पैदा करने आहला ऐ
ते ओह हर इक कम्मै आस्तै काफी ऐ
॥ 63 ॥

गासैं ते धरती दियां कुंजियां उसै दे हत्थै च
न ते जेहके लोक अल्लाह दियें आयतें दा
इन्कार करदे न, ऊऐ घाटे च रौंहदे न ॥ 64 ॥
(रुकू 6/3)

तूं आखी दे, हे मूरखो! क्या तुस मिगी हुकम
दिंदे ओ जे अल्लाह दे सिवा अ'ऊं कुसै होर
(हस्ती) दी अबादत करां? ॥ 65 ॥

हालांके आपूं खुदा पासेआ तेरे पासै ते तेरे शा
पैहले नबियें पासै वह्नी कीती गेदी ऐ (ते हर
इक नबी गी आखेआ गेआ हा जे) जेकर तूं
शिक करगा तां तेरे सारे कर्म नश्ट होई जांगन
ते तूं उनें लोकें बिच्चा होई जागा जेहके घाटे
च रौंहदे न ॥ 66 ॥

(इस आस्तै ऐसा नेई कर) बल्के अल्लाह दी
अबादत कर ते शुकरगजार बंदे च शामिल होई
जा ॥ 67 ॥

ते उनें लोकें अल्लाह दी सिफतें दा स्हेई
अंदाजा नेई लाया, हालांके धरती सारी दी
सारी उसदी मलकीयत ऐ ते गास (ते धरती
दमें) क्यामत आहलै ध्याडै उसदे सज्जे हत्थै

فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٦١﴾

وَيَجْعَلِ اللَّهُ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا بِمَقَارَتِهِمْ
لَا يَمَسُّهُمُ السُّوءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾

اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
وَكَوْنٍ ﴿٦٣﴾

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُونَ ﴿٦٤﴾

قُلْ أَفَعَبَّرَ اللَّهُ تَأْمُرُونَ بِأَعْبَادِهَا
الْجَاهِلُونَ ﴿٦٥﴾

وَلَقَدْ أَوْحَىٰ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ
وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخٰسِرِينَ ﴿٦٦﴾

بَلِ اللَّهِ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٦٧﴾

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۗ وَالْأَرْضُ
جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ

च लपटोए' दे होंगन। ओह पवित्तर ऐ ते उंदे शिर्क दे पुख्ता इरादें थमां बौहत्त उप्पर ऐ ॥ 68 ॥

ते बिगल बजाया जाग तां गासैं ते धरती च जो कोई बी है ओहदे पर इक चाल्ली दी बे-होशी छाई जाग सवाए उस (शख्स) दे जिस गी अल्लाह चाह्ग (जे बचाई लै), फी दूई बारी बिगल बजाया जाग ते चान-चक्क ओह सारे (अपने बाँरे फैसले दा) इंतजार करदे होई खड़ोई जांगन ॥ 69 ॥

ते धरती अपने रब्ब दे नूर कनै रोशन होई जाग/जगमगाई उटठग। ते कताब सामनै रक्खी दिस्ती जाग ते नबियें ते दूए गुआहें गी हाजर कीता जाग। फी उनें सारे इन्सानें बशकार पूरा-पूरा सचाई दे मताबक फैसला करी दिता जाग। ते उंदे पर जुलम नेई कीता जाग ॥ 70 ॥

ते हर इक जान/आतमा नै जे किश कीते दा होग उसदे मताबक उसी पूरा-पूरा सिला देई दिता जाग ते ओह (अल्लाह) उंदे कर्मै शा भलेआं पूरी चाल्ली बाकफ ऐ ॥ 71 ॥ (रुकू 7/4)

ते मुन्करें गी नरकै पासै गरोहें दे गरोह बनाइयै खिददेआ जाग इत्थें तक जे जिसलै ओह ओहदे कश पुज्जी जांगन तां ओहदे दरोआजे खोहली दित्ते जांगन ते उनें (मुन्करें) गी उस (नरकै) दे दरोगे आखगन, क्या थुआड़े पासै थुआड़ी गै कौम बिच्चा रसूल

مَطْوِيَّتٍ بِمِصْنِهِ سُبْحَانَهُ وَلَعَلِّي عَمَّا

يُشْرِكُونَ ﴿٦٨﴾

وَتُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَصَقِّ مَنْ فِي
السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ
اللَّهُ ثُمَّ نُنْفَخُ فِيهِ أُخْرَىٰ فَإِذَا هُمْ
قِيَامٌ يَنْظُرُونَ ﴿٦٩﴾

وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ
الْكِتَابُ وَجَاءَتْ سَاجِدًا لِلَّهِ وَالشُّهَدَاءُ
وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا
يُظْلَمُونَ ﴿٧٠﴾

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ
بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٧١﴾

وَسَيُنْفِخُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ رُمْحًا
حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ وَهَا فُتِحَتْ أَبْوَابُهَا
وَقَالَ لَهُمْ خَرَائِمُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ

1. लपेटे दे होने दा मतलब ऐ जे जिसलै मुन्कख कुसै चीजै गी अपने हत्थें च लपेटे लैंदा ऐ तां ओहदे हत्थें चा निकली नेई सकदी जियां जे कोई आदमी रेतु गी हत्थें च पकड़ी लै तां दबाने कनै ओह ओहदी मुट्टी चा बाहर निकली जाग, पर जेकर रुट्टी गी लपेटे लै तां ओह दबाने कनै होर बी ओहदी मुट्टी दी पकड़ च कसोई जंदी ऐ, बाहर नेई निकली सकदी। इस आसतै सज्जे हत्थें च लपेटने दा अर्थ ऐ जे सज्जा हत्थ शक्ति दा प्रतीक ऐ ओहदे च धरती ते गास लपटोए दे होंगन यानी अल्लाह दे पूरे अधिकार ते कब्जे च होंगन।

नथे आए, जेहके थुआड़े सामनै थुआड़े रब्ब दियां आयतां पढ़ियै सुनांदे हे ते अजै आहले ध्याड़े दी मलाटी शा तुसंगी सोहगे करदे हे। ओह आखगन, हां! ऐसा गै होआ हा। पर मुन्करें पर अजाब दी भविकखवाणी पूरी होनी गै ही (यानी अस मुन्कर हे, अस रसूलें गी कियां मन्नी सकदे हे) ॥ 72 ॥

उनेंगी आखेआ जाग जे नरकै दे दरोआजें च दाखल होई जाओ, इस सूतर च जे इक लम्मे अरसे तक तुसें ओहदे च रौहना पौग। इस आस्तै घमंडियें दा ठकाना बौहत बुरा ऐ ॥ 73 ॥

ते जेहके लोक संयम धारण करदे हे उनेंगी सुगें पासै गरोहें दे गरोहें दे रूपै च धक्कियै लेता जाग। इत्थें तक जे जिसलै ओह सुगें तक पुज्जी जांगन तां उसदे दरोआजे खोहली दिते जांगन ते उसदे दरोगे/कर्मचारी उनेंगी आखडन, थुआड़े पर म्हेशां सलामती होऐ तुसें बौहत अच्छी हालत हासल कीती ऐ। इस लेई इस (सुगें) च दाखल होई जाओ इस फैसले कन्ने जे तुस म्हेशां एहदे च रौहगे ओ ॥ 74 ॥

ते ओह आखडन, अल्लाह दी गै सारी तरीफ ऐ जिसनै साढ़े कनै अपना बा'यदा पूरा करी दित्ता ते इस ज'गा दा असेंगी बारस बनाई दित्ता। अस जन्मत च जित्थें चाहगे, रौहगे इस आस्तै (साबत होआ जे) पूरी चाल्ली कर्म करने आहले दा इनाम/सिला बौहत गै चंगा होंदा ऐ ॥ 75 ॥

ते तू उस रोज फरिशतें गी दिखगा जे ओह अर्श दे आसै-पासै घेरा बनाइयै अपने रब्ब दी स्तुति दे कनै-कनै उसदी उपासना बी करा करदे न ते उंदे (लोकें दे) बशकार पूरे-पूरे इन्साफ कनै फैसला करी दित्ता जाग ते गलाया जाग जे सब तरीफ अल्लाह गी गै हासल ऐ जेहका सारे ज्हान्नें/लोकें दा रब्ब ऐ ॥ 76 ॥ (रुकू 8/5)

مُّكُمْ يَتَلُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَذَا قَالُوا بَلَىٰ وَلَٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٧٢﴾

قِيلَ اذْخُلُوا الْاَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا قَبَسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٣﴾

وَسَيَقُ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا حَتَّىٰ اِذَا جَاءُوهَا وَهِيَ مَكْنُوزَةٌ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ ﴿٧٤﴾

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ فَنِعْمَ اَجْرَ الْعٰمِلِينَ ﴿٧٥﴾

وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَاقِّقِينَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِينَ ﴿٧٦﴾



सूर: अल्-मोमिन

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां छियासी आयतां ते नौ रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नाऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

एह सूर: खुदा दी तरीफ¹ ते उसदी बजुरगी/
बड़ेआई गी साबत करदी ऐ ॥ 2 ॥

حَمْدٌ ①

एह कताब गालिब (ते) जानी-जान अल्लाह
पासेआ नाजल होई दी ऐ ॥ 3 ॥

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ①

जेहका गुनाहें गी बख्शाने आहला ते तोबा
कबूल करने आहला ऐ (ते उससै कारण पूजने
जोग ऐ) स'जा देने च बड़ा कठोर² ऐ। बड़ा
स्हान करने आहला ऐ। उसदे सिवा कोई
उपास्य नेई, उससे कश परतोइयै जाना ऐ ॥ 4 ॥

خَافِرِ الدُّنْيِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيدِ
الْعِقَابِ ذِي الطُّوْلِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
إِلَيْهِ الْمَصِيرُ ①

मुन्करें दे सिवा अल्लाह दी आयतें बारै कोई
शख्स दलीलां देइयै बैहस नेई करदा। इस
आस्तै उंदा बक्ख-बक्ख देशें च (बपार बगैरा
आस्तै अजादी कनै) घुमना-फिरना तुगी धोखे
च नेई पाई देऐ (की जे उंदे कर्म गै उंदी
तबाही दा मूजब न) ॥ 5 ॥

مَا يَجَادِلُ فِي آيَاتِ اللَّهِ إِلَّا الَّذِينَ كَفَرُوا
فَلَا يَعْرِزُكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ①

1. मूल अक्खर 'हा' 'मीम' खंडाक्षर न। हा-हमीद आस्तै प्रयुक्त होंदा ऐ यानी स्तुति दे काबल। 'मीम'-मजीद यानी महिमाशाली आस्तै बरतोंदा ऐ।
2. अल्लाह बौहत माफ करने आहला ऐ, पर उसदी स'जा बी बड़ी कठोर होदी ऐ, ओह मनुक्खे दी स'जा आंगर नेई होदी।

इंदे शा पैहली कौमें बी (अपने रसूलें दा) इन्कार कीता हा। नूह दी कौम नै बी ते उंदे बा'द होर दूई बक्ख-बक्ख कौमें बी (जिनें अपने नबियें दे खलाफ जत्थे बनाई लैते) ते हर कौम नै अपने रसूल बाँरे ध्याई लैता जे उसी कैद करी लैन ते झूठी दलीलें दे स्हारै बैहस शुरू करी दिती तां जे अपनी बे-सिर-पैरी बैहसू कनै सच्च गी उसदे थाहरै थमां हटाई देन। इस आस्तै मैं उनेंगी पकड़ी लैता। हून दस्सो, मेरी स'जा कैसी होई? ॥ 6 ॥

ते इस चाल्ली तेरे रब्ब दा फैसला मुन्करें बाँरे पूरा होई गेआ (यानी एह) जे ओह नरक बासी न ॥ 7 ॥

ओह फ़रिश्ते जिनें अर्श गी चुक्की रक्खे दा ऐ ते जेहके उसदे आसै-पासै न, ओह अपने रब्ब दी तरीफ दे कनै-कनै उसदी पवित्तरता दा बखान बी करदे न ते उस स्तुति पर पूरा ईमान रक्खे न ते मोमिनें आस्तै दुआऽ करदे न (ते आखदे न) हे साढ़े रब्ब! हर इक चीजै गी तोह अपनी रैहमत ते इलम कनै घेरी रक्खे दा ऐ इस आस्तै तोबा करने आहलें गी ते अपने रस्तै चलने आहलें गी माफ कर ते उनेंगी नरकै दे अजाब थमां बचाई लै ॥ 8 ॥

हे साढ़े रब्ब! उनेंगी ते उंदे बड़कें गी ते उंदी लाडियें ते उंदी उलाद बिच्चा जेहके नेक होन उनेंगी बी स्थाई सुरगें च दाखल कर, जिंदा तोह उंदे कनै बा'यदा कीते दा ऐ तूं बड़ा गालिब ते हिक्मत आहला ऐ? ॥ 9 ॥

ते तूं उनेंगी सारे कश्टें थमां बचाऽ। ते जिसगी तूं उस दिन तकलीफें शा सुरक्षत रक्खें तां तोह सच्चें गै ओहदे पर रैहम कीता। ते एह बौहत बड्डी कामयाबी ऐ ॥ 10 ॥ (रुकू 1/6)

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَالْأَحْزَابُ
مِنْ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ
بِرَسُولِهِمْ لِيَأْخُذُوهُ وَجَدُوا أَبَاطِلَ
لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ فَأَخَذْتَهُمْ
فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝

وَكَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ
كَفَرُوا أَنَّهُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ۝

الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ
يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَوْمُئِذٍ بِهِ
وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا
وَسِعَتْ كُلُّ شَيْءٍ رَحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ
لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ
عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝

رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتِ عَدْنٍ الَّتِي
وَعَدْتَهُمْ وَمِنْ صَلَاحٍ مِنْ أَبَائِهِمْ
وَارْوَاجِحُهُمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝
وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ
يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ۝

ते मुन्करें गी यकीनन (मौती दे बा'द) गलाया जाग जे अज्ज तुस जिन्ना अपनी जानें गी नफरत दी नगाह कनै दिखदे ओ अल्लाह दी नफरत (जो ओह् थुआड़े कनै करदा ऐ) ओहदे शा ज्यादा ऐ (याद करो) जिसलै तुसेंगी ईमान पासै पुकारेआ जंदा हा तां तुस कुफर करदे होंदे हे ॥ 11 ॥

ओह गलांगन जे हे साढ़े रब्ब! तोह् असेंगी दो बार मारेआ' ते दो बार जीदा' कीता। इस आस्तै अस अपने कसूर मन्नेन आं। ते (तूं दस्स जे) हून (इस पकड़ थमां) बचने दी कोई सूरत^३ बी है? ॥ 12 ॥

थुआड़ा एह हाल इस गल्ला ऐ जे जिसलै सिर्फ अल्लाह गी गै पुकारेआ जंदा हा तां तुस इन्कार करी दिंदे होंदे हे ते जिसलै उसदा कोई शरीक बनाया जंदा हा तां तुस ईमान लेई औंदे हे। इस आस्तै (अज्ज साबत होई गेआ ऐ जे) बड़ी शान आहले ते बसीह् साम्राज आहले अल्लाह दी गै क्हमत ऐ ॥ 13 ॥

ऊऐ तुसें गी अपने नशान दसदा ऐ ते गासें चा थुआड़े आस्तै रिशक उतारदा ऐ ते नसीहत सिर्फ ऊऐ हासल करदा ऐ जेहका खुदा दे अगमें झुकदा ऐ ॥ 14 ॥

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنَادُونَ كَمَا ضَلَّتْ اللَّهُ
أَكْبَرُ مِنْ مَّقْتَتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ
إِلَى الْإِيمَانِ فَتُكْفَرُونَ ۝

قَالُوا رَبَّنَا آمَنَّا اِشْتَيْنِ وَأَحْيَيْنَا
اِشْتَيْنِ فَأَعْتِرِفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَى
خُرُوجٍ مِنْ سَبِيلٍ ۝

ذُكُومًا بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ
كَفَرْتُمْ ۖ وَإِنْ يُشْرَكَ بِهِ تُؤْمِنُوا ۗ
فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ۝

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ
مِنَ السَّمَاءِ رِزْقًا وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا
مَنْ يُنذِبُ ۝

1. इक मौत जनम शा पैहलें ते दूर्इ जीवन दे बा'द।
2. इक जीवन ओह ऐ जिस च शिशु माता दे गर्भ चा निकलेआ ते उसनै साह लैता ते दूर्इ बार जिसलै ओह संसार च जीवन बतीत करिये मरग ते क्यामत आहलै ध्याड़ें परतिये जीदा कीता जाग।
3. ओह आखडन जे मरने दे बा'द दो बार असेंगी जीवन मिलेआ, पर फी बी असें नसीहत हासल नेई कीती तां क्या साढ़ा एह पाप माफ कीता जाग जां कोई ऐसा उपाऽ बी है जेहदे राहें माफी मिली सके? पवित्र कुरआन थमां पता लगदा ऐ जे इस लोक च ते ऐसा मौका है जे लोक समें दे नबी गी मन्तिये अपने पापें शा तोबा करन तां उंदे सारे पिछले पाप धनोई जंदे न ते दूआ मौका मरने दे बा'द सफारश दा ऐ जेहदे बारे पवित्र कुरआन च प्रमाण आई चुके दा ऐ जे नबियें ते फरिश्तें द्वारा जिनेंगी अल्लाह सफारश दी आज्ञा देग, किश लोक मुक्ति हासल करी सकडन (तिरमिजी जिल्द 2 सफा 66 मुद्रत मुज्तबाई दिल्ली ते बुखारी भाग 4 किताबुर्रिकाक)

इस लेई अपनी आज्ञाकारिता गी सिर्फ अल्लाह आस्तै खालस करदे होई उसी गै पुकारो, भामें मुन्कर उसी पसंद नेई करन ॥ 15 ॥

(ओह) उच्चे दरजें आहला (ऐ) अर्श दा मालक ऐ अपने हुकम कनै अपने बंदें बिच्चा जिस पर चांहदा ऐ अपना कलाम नाजल करदा ऐ तां जे ओह (बंदा खुदा दी) मलाटी आहले ध्याड़े थमां लोकें गी डराऽ ॥ 16 ॥

जिस दिन ओह सारे दे सारे लोक खुदा दे सामनै आई हाजर होंगन, उंदी कोई चीज बी अल्लाह शा छप्पी-गुज्जी नेई रौहग, उस दिन बादशाहत कुस गी हासल होग? (सिर्फ) अल्लाह गी जो इक्क ऐ (ते) सारें पर गालिब ऐ ॥ 17 ॥

उस दिन हर इक जान गी उसदे कर्म दा बदला दिता जाग ते उस रोज किसै बी किसमै दा जुलम नेई होग। अल्लाह बड़ा तौले' स्हाब लेई लैदा ऐ ॥ 18 ॥

ते तूं उनेंगी उस ध्याड़े थमां डराऽ जेहका नेड़े शा नेड़े होंदा जंदा ऐ। जिसलै जे दिल चिंता कनै भरे दे (होंगन ते) मूहें तगर आई जांगन। जालमें दा उस रोज नां कोई दोस्त होग ते नां कोई सफारश करने आहला (होग) जिसदी गल्ल मन्नी जा ॥ 19 ॥

अल्लाह अक्खीं² दी खयानत तक गी जानदा ऐ ते उसी बी जिसी सीनें जां दिलें छपाले दा ऐ ॥ 20 ॥

فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكُفْرُونَ ﴿١٥﴾

رَفِيعُ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ لِيُنذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ﴿١٦﴾

يَوْمَ هُمْ بَارِزُونَ ۚ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ۗ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۗ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿١٧﴾

الْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۗ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۗ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٨﴾

وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْأَرْزَاقِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَىٰ الْحِمَاجِرِ كُظْمِينَ ۗ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ﴿١٩﴾

يَعْلَمُ خَائِبَتَهُ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ﴿٢٠﴾

1. एह अर्थ नेई जे बुरे कर्म दा फल झट्ट थहोई जंदा ऐ, बल्के अर्थ एह ऐ जे लेखा लैने च उसी थोहड़ा समां लगदा ऐ ते इनाम देने दी नीह झट्ट पेई जंदा ऐ।
2. बुरी नगाह जां क्रोध जां त्रिणा कनै कुसै गी दिक्खना जिसी मनुक्ख डरै जां शर्म करी शब्दें च जाहर नेई करी सकदा।

ते अल्लाह म्हेशां इन्साफ दे मताबक फैसला करता ऐ ते जिनेंगी एह लोक खुदा दे इलावा पुकारदे न, ओह कोई बी फैसला नेई करदे। अल्लाह सच्चें गै बौहत सुनने आहला (ते) बौहत दिक्खने आहला ऐ ॥ 21 ॥ (रुकू 2/7)

क्या एह लोक धरती पर नेई फिरदे जां दिखदे जे इंदे शा पैहले लोकें दा अन्जाम केह हुआ हा? ओह लोक इंदे शा ताकत ते पिच्छें छोड़े दे नशानें दे स्हाबें बड्डे हे। ते अल्लाह नै उनेंगी उंदे गुनाहें दी ब'जा कनै तबाह करी दिता ते कोई बी अल्लाह दी पकड़ शा उनेंगी बचाने आहला पैदा नेई होआ ॥ 22 ॥

एह (बे-कसी/विवशता) इस करी ही जे उंदे कश उंदे रसूल नशान लेइयै औंदे रेह ते उनें (म्हेशां) इन्कार गै कीता इस आस्तै अल्लाह नै बी उनेंगी तबाह करी दिता ओह बड़ा शक्तिशाली ऐ ते उसदा अजाब बी बड़ा सख्त होंदा ऐ ॥ 23 ॥

ते असें मूसा गी बी अपने नशानें कनै ते खु 'ल्ले-डु'ल्ले प्रमाण देइयै ॥ 24 ॥

फिरऔन, हामान ते क्रारुन कश भेजेआ हा, पर उनें गलाया जे एह शख्स धोखा देने आहला ते झूटा ऐ ॥ 25 ॥

इस आस्तै जिसलै ओह (मूसा) साढ़े पासेआ सच्च लेइयै उंदे कश आया तां उनें गलाया जे

وَاللّٰهُ يَقْضِيْ بِالْحَقِّ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَقْضُوْنَ بِشَيْءٍ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ
السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿٢١﴾

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ كَانُوْا مِنْ
قَبْلِهِمْ كَانُوْا هُمْ اَسَدًا مِنْهُمْ قُوَّةً
وَاَنْرًا فِي الْاَرْضِ فَاحْذَرُوْهُمُ اللّٰهُ
يَذُوْبُهُمْ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنَ اللّٰهِ
مِنْ وَّاقٍ ﴿٢٢﴾

ذٰلِكَ بِاللّٰهِمْ كَانَتْ تَاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ فَكَفَرُوْا فَاَحْذَرُوْهُمُ اللّٰهُ اِنَّهٗ
قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٣﴾

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِآيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ
مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَقَارُوْنَ فَفَقَاوْا
سِحْرَ كَذٰبٍ ﴿٢٥﴾

فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا

1. उंदे किलें जां मैहलें दे खंडर सिद्ध करदे न जे इनें लोकें गी ओह कला-कौशल प्राप्त नेई होई सकेआ जेहका इंदे शा पैहले लोकें गी प्राप्त हा।
2. फिरऔन सम्राट हा। हामान बी उसदा इक उच्च कोटी दा इंजीनियर हा ते ममकन ऐ देश च बड़ा शक्तिशाली शख्स समझेआ जंदा हा। क्रारुन आपूं ते बनी इम्राईल बिच्चा हा, पर फिरऔन नै उसी खजाने पर न्युक्त करी रक्खे दा हा। ओह मैहकमा माल (Revenue) दा औहदेदार हा। इस आस्तै कौम पर बी ओहदा प्रभाव मता हा। इसै आस्तै त्रवे नांस किट्टे लैते गेदे न।

जेहके लोक ईमान आहनिथै ओहदे कनै शामिल होई गेदे न। उंदे पुतरें गी हलाक करी देओ ते उंदी जनानियें गी जींदा रक्खो ते मुन्करें दे उपाऽ म्हेशां पुट्ठे गै पौंदे' न ॥ 26 ॥

ते फिरऔन नै गलाया जे मिगी छोड़ो तां जे अ'ऊं मूसा दी हत्या करां ते चाही दा ऐ जे ओह अपने रब्ब गी पुकारे अ'ऊं इस गल्ला शा डरना जे ओह थुआड़े धर्म गी बदली नेई देऐ जां देशै च कोई फसाद नेई पैदा करी देऐ ॥ 27 ॥

(इस पर) मूसा नै गलाया, अ'ऊं अपने रब्ब थमां ते थुआड़े रब्ब थमां हर इक घमंडी दी शरारत शा शरण मंगना जो लेखा लैनै आहले ध्याड़ै पर ईमान नेई आहनदा ॥ 28 ॥ (रुकू 3/8)

ते फिरऔन दे लोकें बिच्चा इक शख्स जेहका ईमानदार हा, पर अपना ईमान छपालदा हा, उसनै गलाया हे लोको! क्या तुस इक आदमी गी सिर्फ इस आस्तै मारदे ओ जे ओह आखदा ऐ जे अल्लाह मेरा रब्ब ऐ ते ओह थुआड़े रब्ब पासेआ नशान बी ल्याए दा ऐ ते जेकर ओह झूठा ऐ तां उसदे झूठै दा बबाल (गाज) उस्से पर पौना ऐ ते जेकर ओह सच्चा ऐ तां उस दी दस्सी गेदी (किश डराने आहली) भविकखवाणियां थुआड़े बाँरे पुरियां होई जांगन। अल्लाह हद शा बधने आहले ते झूठ आखने आहले गी कदें बी कामयाब नेई करदा ॥ 29 ॥

أَقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ
وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ وَمَا كَيْدُ
الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَى
وَلْيَدْعُ رَبَّهُ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُبَدِّلَ
دِينَكُمْ أَوْ أَنْ يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ
الْفِسَادَ ۝

وَقَالَ مُوسَى إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ
مِنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝

وَقَالَ رَجُلٌ مُؤْمِنٌ مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ
يَكْتُمُ إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَنْ
يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ
مِنْ رَبِّكُمْ ۖ وَإِنَّكَ كَازِبٌ فَعَلَيْهِ
كَيْدُهُ ۖ وَإِنَّ يَكُ صَادِقًا يُصِيبْكُمْ
بِعَظْمِ الَّذِي يَعِدُكُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي
مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ۝

1. सधारण तौर पर दिक्खने नै केई बार इयां सेही होंदा ऐ जे नबी दे मकाबले च मुन्करें दे उपाऽ सफल रेह, पर ऐसा बड़े घट्ट समे आस्तै होंदा ऐ। असल च कामयाबी ऊरे होंदी ऐ जेहकों स्थाई होऐ, पर मुन्करें गी स्थाई कामयाबी कदें बी नेई मिलदी बल्के स्थाई कामयाबी नबियें ते उंदे अनुयायियें गी गै मिलदी ऐ।
2. यानी जिसलै अ'ऊं मूसा दी हत्या करने आस्तै त्यार होई चुके दा आं तां ओहदे खलाफ मिगी कोई सलाह नेई देओ।
3. इस दा एह अर्थ नेई जे जेहका हद्द शा बद्ध झूठ बोल्लै उसी सफल नेई करदा बल्के मतलब एह ऐ जे लेश मात्र चीज बी बरदाशत नेई कीती जाग।

हे मेरी कौम दे लोको! अज्ज थुआड़ी ऐसी कहुमत ऐ ते तुस देशै पर गालिब ओ, इस आस्तै दस्सो जे अल्लाह दे अजाब दे मकाबले च जेकर ओह साढ़े पर नाजल होई गेआ तां साढ़ी मदद कु'न करग? फ़िरऔन नै गलाया, अ'ऊं तुसैंगी ऊरे दस्सना जो आपू मिगी ठीक सेही होंदा ऐ ते अ'ऊं तुसैंगी सिर्फ हदायत दा रस्ता दस्सनां ॥ 30 ॥

ते ओह शख्स जो (दरअसल) ईमान आहनी चुके दा हा उसनै गलाया जे हे मेरी कौम! होई बीती दी बड्डी-बड्डी कौमें दे सर्वनाश आहले ध्याड़े आंगर अ'ऊं थुआड़ी तबाही दे ध्याड़े शा बी डरना ॥ 31 ॥

जियां जे नूह दी कौम ते आद ते समूद पर बीती, ते जेहके लोक उंदे बा'द होए ते अल्लाह अपने बंदें पर जुलम नेई करना चांहदा ॥ 32 ॥

ते हे मेरी कौम! अ'ऊं थुआड़े बाँरे उस ध्याड़े शा डरना जिस रोज लोक इक-दूए गी मदद आस्तै पुकारडन ॥ 33 ॥

जिस दिन तुस पिट्ट फेरियै (खुदाई लश्करें दे सामनेआ) नस्सी जागे ओ, ते अल्लाह दे मकाबले च कोई तुसैंगी बचाने आहला नेई होग ते जिसगी अल्लाह गुमराह करार/साबत करै उसी कोई हदायत नेई देई सकदा ॥ 34 ॥

ते यूसुफ इस शा पैहलें दलीलें कनै थुआड़ै कश आई चुके दा ऐ पर तुस जो किश ओह थुआड़ै कश ल्याया हा, ओहदे बाँरे शक्क (दुबधा) च गै रेह। इत्थें तक जे जिसलै ओह फौत होई गेआ तां तुसैं (मयूसी कनै)

يَقُومُ لَكُمْ الْمَلَكُ الْيَوْمَ ظَهْرَيْنِ فِي الْأَرْضِ فَمَنْ يَنْصُرْنَا مِنْ بَأْسِ اللَّهِ إِنْ جَاءَنَا قَالِ فِرْعَوْنُ مَا أَرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَى وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ الرَّشَادِ ۝

وَقَالَ الَّذِينَ آمَنَ يَقُومُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ مِثْلَ يَوْمِ الْأَحْزَابِ ۝

مِثْلَ دَابِ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَ ثَمُودَ وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِلْعِبَادِ ۝

وَيَقُومُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ۝

يَوْمَ تَوَلَّوْنَ مُدْبِرِينَ مَالَكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ يُوسُفُ مِنْ قَبْلِ بَابِلَئِيتِ فَمَا زِلْتُمْ فِي شَكٍّ مِمَّا جَاءَكُمْ بِهِ حَتَّى إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ نَبْعَثَ اللَّهَ مِنْ بَعْدِهِ

गलाना शुरू' कीता जे अल्लाह उस दे बा'द कोई रसूल कर्दे नई भेजग इससै चाल्ली अल्लाह हर हदद टप्पने आहले ते शक्क करने आहले गी गुमराह करार दिंदा ऐ ॥ 35 ॥

जेहके लोक अल्लाह दिये आयतें बारै, बगैर कुसै दलील दे, जेहकियां उंदे कश (अल्लाह पासेआ) आई दियां होन, बैहसां करदे न (उनेंगी पता होना लोड़दा जे) एह अल्लाह कश ते मोमिनें कश बौहत बुरा ऐ इससै चाल्ली अल्लाह घमंडी लोकें दे पूरे दे पूरे दिलें पर मोहर लाई दिंदा ऐ ॥ 36 ॥

फी फिरऔन नै गलाया जे हे हामान! मेरे आसतै इक मैहल बनोआ5 तां जे अ'ऊं उनें रस्ते पर जाई पुज्जां ॥ 37 ॥

जेहके गासें दे रस्ते न ते इस चाल्ली मूसा दे अल्लाह शा जानकारी हासल करी सकां। की जे अऊं उसी झूठा समझना। ते इस चाल्ली फिरऔन दी नजर च उसदे कर्म दियां बदिंयां खूबसूरत करियै दस्सियां जंदिंयां हियां ते ओह सचाई दे रस्ते थमां (अपनी ना-फरमानियें दी ब'जा करी) रोकेआ गेआ हा ते फिरऔन दी योजना नकामी दी सूरत च गै जाहर होने आहली ही ॥ 38 ॥ (रुकू 4/9)

رَسُولًا كَذَلِكَ يَفْضِلُ اللَّهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابٌ ۝

الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ كَبْرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ الَّذِينَ آمَنُوا كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى كُلِّ قَلْبٍ مُّتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۝

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا هَامَانَ ابْنِ لِي صَرْحًا لَّعَلِّي أَبْلُغُ الْأَسْبَابَ ۝

أَسْبَابَ السَّمَوَاتِ فَأَطَّلِعَ إِلَى إِلَهِ مُوسَى وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ كَاذِبًا ۖ وَكَذَلِكَ زَيْنٌ لِّفِرْعَوْنَ سَوْءٌ عَمَلِهِ وَصَدَّعِنِ السَّبِيلَ ۖ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِي تَبَابٍ ۝

1. जियां जे सधारण मुसलमान आखदे न जे हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दे बा'द अल्लाह दा कोई नबी नई होग।
2. सधारण रूपै च एह शब्द होने चाही दे हे जे अल्लाह हर इक अभिमानी दे दिलें पर मोहर लाई दिंदा ऐ पर पवित्र कुर'आन आखदा ऐ जे अभिमानी दे पूरे दिलें पर मोहर लाई दिंदा ऐ। पवित्र कुर'आन दा एह प्रयोग बे-मसाल ऐ, की जे हर इक अभिमानी दे दिलें पर मोहर लाने कनै ओह गल्ल नई निकलदी जेहकी पूरे अहंकारी दे पूरे दे पूरे दिलें पर मोहर लाने कनै निकलदी ऐ। इस दूई गल्ला कनै एह नतीजा निकलदा ऐ जे हदायत दे बक्ख-बक्ख रस्ते होंदे न। इक गुमराह आदमी बी हदायत दा कोई रस्ता हासल करी सकदा ऐ, पर जेहका पूरा अहंकारी होऐ उसदे हदायत पाने दे सारे रस्ते बंद होई जंदे न ते दिलें दे हर इक हिस्से पर मोहर लग्गी जंदी ऐ। ओहदे आसतै हदायत पाने दा कोई बी रस्ता खु'ल्ला नई रौहदा।

ते ओह शख्स जो ईमान ल्याए दा हा, उसनै गलाया, हे मेरी कौम! मेरा अनुसरण करो, अ'ऊं तुसैंगी हदायत दा रस्ता दस्संग ॥ 39 ॥

हे मेरी कौम! एह संसारक जीवन सिर्फ थोड़े दिनें दा फायदा ऐ, ते आखरत दी जिंदगी गै सच्ची ते टकारू/स्थाई ठकाना ऐ ॥ 40 ॥

जेहका बुरे कर्म करग। उसगी ओहदे मताबक गै सिला मिलग ते जेहका कोई ईमान दे मताबक कर्म करग, भामें ओह मदद ऐ जां जनानी, पर शर्त एह ऐ जे ओह ईमान च सच्चा होऐ, ओह ते ओहदे स-धर्मा सुर्ग च जांगन ते उनेंगी ओहदे च बिना स्हाब कीते इनाम दिते जांगन ॥ 41 ॥

ते हे मेरी कौम! मेरा बी कैसा अजीब हाल ऐ जे अ'ऊं ते तुसैंगी मुक्ति पासै बुलान्ना, ते तुस मिगी नरकै पासै बुलांदे ओ ॥ 42 ॥

तुस मिगी इस मकसद कनै बुलांदे ओ जे अ'ऊं अल्लाह दा इन्कार करां ते उसदे शरीक उनेंगी करार देआं/बनांs जिंदे शरीक होने बारै मिगी कोई इलम/जानकारी नेई ते अ'ऊं तुसैंगी इक गालिब (ते) बख्शाने आहली हस्ती पासै बुलान्ना ॥ 43 ॥

एहदे च कोई शक्क नेई जे तुस मिगी उस हस्ती पासै बुलांदे ओ जिसदी कोई (प्रभावशाली) अवाज नां इस दुनियां च ऐ नां अगले ज्हांन च। ते (असलीयत एह ऐ जे) असें सारें गै परतियै अल्लाह कश गै जाना ऐ ते एह जे हद्द टप्पने आहले लोक नरक बासी न ॥ 44 ॥

इस आस्ते अ'ऊं जे किश तुसैंगी नसीहत दिन्ना उसगी तुस तौले गै याद करगे ते (अ'ऊं

وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَوْمَ اتَّبَعُونَ أَهْدِكُمْ سَبِيلَ الرَّشَادِ ۝

يَوْمَ إِنَّمَا هذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ وَإِنَّ الْأٰخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ۝

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثِيَ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

وَيَقَوْمَ مَا لِي ادْعُوكُمْ إِلَى التَّجْوَةِ وَتَدْعُونَنِي إِلَى التَّارِ ۝

تَدْعُونَنِي لِأَكْفُرَ بِاللَّهِ وَأَشْرِكَ بِهِ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ وَأَنَا ادْعُوكُمْ إِلَى الْعَزِيزِ الْعَقَّارِ ۝

لَا جَرَمَ لَكُمْ أَنَّمَا تَدْعُونَنِي إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْآخِرَةِ وَأَنَّ مَرَدَّنَا إِلَى اللَّهِ وَأَنَّ الْمُسْرِفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ۝

فَسَتَذْكُرُونَ مَا أَقُولُ لَكُمْ ۗ وَأَفْوَصُّ

थुआड़ी धमकियें शा नेई डरदा) अऊँ अपना मामला अल्लाह दे सपुर्द करना। अल्लाह सच्चें गै (अपने) बंदें दा नगरान ऐ ॥ 45 ॥

इस पर अल्लाह नै उस (मोमिन शख्स) गी उंदे (मुन्करें दे) उपाएँ दी बुराइयें शा बचाई लैता ते फ़िरऔन दे लोकें गी दर्दनाक अज़ाब नै चपासेआ घेरी लैता ॥ 46 ॥

यानी अग्गी नै जिसदे सामनै ओह सवरे-शाम पेश कीते जंदे न ते जिसलै निश्चत घड़ी औग (फ़िरश्तें गी गलाया जाग जे) फ़िरऔन दे साथियें गी सख्त अज़ाब च दाखल करो ॥ 47 ॥

ते (उस बेले गी बी याद करो) जिसलै जे (फ़िरऔन दे साथी) अग्गी च बैहस करा करदे होंगन ते उंदे बिच्चा कमजोर लोक बड्डे लोकें गी आखा करदे होंगन जे अस थुआड़े अधीन हे इस आस्तै क्या अज्ज तुस असेंगी अग्गी दे अज़ाब दे कुसै हिस्से शा बचाई सकदे ओ ? ॥ 48 ॥

बड्डे लोक आखडन, अस सारे उस अज़ाब च घिरे दे आं। अल्लाह नै अपने बंदें बश्कार जेहका फैसला करना हा करी दिता ॥ 49 ॥

ते नरक बासी लोक नरकै दे दरोगें गी आखडन, तुस अपने रब्ब गी पुकारो जे अज़ाब दा किश समां ते साढ़े आस्तै घट्ट करै ॥ 50 ॥

ओह आखगन जे क्या थुआड़े कश थुआड़े रसूल दलीलां लेइयै नथे आए ओह आखगन हां! की नेई! इस पर ओह (नरकै दे दरोगे) आखगन, हून तुस (जिन्ना चाहो) पुकारदे जाओ। ते मुन्करें दी दुआस ब्यर्थ गै जंदी ऐ ॥ 51 ॥ (रकू 5/10)

أَمْرِي إِلَى اللَّهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۝

فَوَقَّهَ اللَّهُ سَيِّئَاتِ مَا مَكَرُوا وَحَاقَ بِآلِ فِرْعَوْنَ سُوءُ الْعَذَابِ ۝

النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا ۖ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ ۝

وَإِذْ يَتَجَافَوْنَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضُّعْفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا ۖ قَهْلَ أَنْتُمْ مَخُونٌ عَنَّا نَصِيبًا مِّنَ النَّارِ ۝

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُلٌّ فِيهَا ۖ إِنَّ اللَّهَ قَدْحَكَم بَيْنَ الْعِبَادِ ۝

وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ۝

قَالُوا أَوْلَمْ تَأْتِكُمْ رُسُلُكُم بِالْبَيِّنَاتِ ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۖ قَالُوا فادْعُوا ۖ وَمَا دَعُوا الْكٰفِرِينَ إِلَّا فِي ضَلٰلٍ ۝

अस अपने रसूलें दी ते उंदे पर ईमान आहने आहलें दी इस दुनियां च बी जरूर मदद करगे ते उस दिन बी जिसलै जे गुआह खड़े होंग ॥ 52 ॥

जिस दिन जालमें गी उंदा ब्हान्ना कोई फायदा नेई देग ते उंदे पर (अल्लाह दी) लानत नाजल होग। ते उनेंगी बुरा घर (रौहेन आस्तै) मिलग ॥ 53 ॥

ते असें सच्चें गै मूसा गी हदायत दित्ती ही ते बनी इस्राईल गी (उस) कताब (यानी तौरात) दा बारस बनाई दिता हा ॥ 54 ॥

जेहकी अकलमंदें आस्तै हदायत ते नसीहत दा मूजब/साधन ही ॥ 55 ॥

इस आस्तै तूं सबर कर। अल्लाह दा बा'यदा जरूर पूरा होइयै रौहग ते जो तेरे गुनाह लोके कीते दे न उंदी बी उंदे आस्तै माफी मंगदा रौह ते अपने रब्ब दी संजा-सवैरे स्तुति दे कनै-कनै उपासना बी करदा र'वा कर ॥ 56 ॥

ओह लोक, जेहके अल्लाह दी आयतें दे बारै, बगैर कुसै दलील दे, जेहकी उंदे कश (खुदा पासेआ) आई होऐ, बैहस करने च लगगे दे रौहदे न, उंदे दिलें च बड़ियां-बड़ियां खुआहशां न जिनेंगी ओह कदें बी हासल नेई करी सकडन। इस आस्तै अल्लाह दी शरण मंगदा रौह। यकीनन ओह बौहत सुनने आहला (ते) बौहत दिक्खने आहला ऐ ॥ 57 ॥

गासें ते धरती दी पदायश इन्सानें दी पदायश थमां बड्डा कम्म ऐ। मगर मते-सारे लोक नेई जानदे ॥ 58 ॥

ते अ'ने ते सजाखे बराबर नेई होई सकदे ते जेहके लोक ईमान लेई आए ते ईमान दे

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ ۝

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظَّالِمِينَ مَعَذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَى وَأَوْرَثْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ ۝

هُدًى وَذِكْرَى لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۝

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ۝

إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَنٍ أَتَاهُمْ إِنْ فِي صُدُورِهِمْ إِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ بِبَالِغِيهِ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝

لَخَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرَ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَى وَالْبَصِيرُ ۝

मताबक उनें कम्म कीते। ओह बदकार लोकें दे (बराबर नेईं होईं सकदे) तुस लोक बिल्कुल नसीहत हासल नेईं करदे ॥ 59 ॥

ते एहदे च कोई शकक नेईं जे तबाही दी' घड़ी जरूर औने आहली ऐ, पर मते-सारे लोक ईमान नेईं आहनदे ॥ 60 ॥

ते थुआड़ा रब्ब आखदा ऐ मिंगी पुकारो, अ'ऊं थुआड़ी दुआऽ सुनगा। जेहके लोक साढ़ी अबादत दे मामले च घमंड शा कम्म लेंदे न ओह जरूर नरकें च जलील होइयै दाखल होंगन ॥ 61 ॥ (रुकू 6/11)

अल्लाह ओह ऐ जिसनै थुआड़े आस्तै रात बनाई तां जे तुस ओहदे च अराम हासल करो, ते दिनै गी दस्सने आहला बनाया ऐ। अल्लाह लोकें पर बड़ी किरपा करने आहला ऐ, पर लोकें बिच्चा मते-हारे शुकर नेईं करदे ॥ 62 ॥

एह अल्लाह थुआड़ा ओह रब्ब ऐ जो हर चीज पैदा करने आहला ऐ उसदे सिवा कोई उपास्य नेईं। इस आस्तै दस्सो ते सेही तुसें गी कुस पासै फेरियै लेता जा करदा ऐ ॥ 63 ॥

इस्सै चाल्ली उनें लोकें गी मूर्खतापूर्ण गल्लें पासै फेरियै लेता जंदा ऐ जो अल्लाह दी आयतें दा बजिद्द होइयै इन्कार करदे न ॥ 64 ॥

(हालांके) अल्लाह ओह ऐ जिसनै धरती गी थुआड़े आस्तै सुख-चैन दा थाहर बनाए दा ऐ ते गासें गी इक मकान दी सूरत च (पहाजत आस्तै बनाया ऐ) ते उसनै तुसें गी बक्ख-

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَلَا
الْمَسِيءَ ۗ قَلِيلًا مَّا تَتَذَكَّرُونَ ﴿۵۹﴾

إِنَّ السَّاعَةَ لَأْتِيَةٌ لَا رَيْبَ فِيهَا وَلَكِنَّ
أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿۶۰﴾

وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۗ
إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي
سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دُخْرِينَ ﴿۶۱﴾

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ اللَّيْلَ تَسْكُنُوا فِيهِ
وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى
النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَشْكُرُونَ ﴿۶۲﴾

ذُلكم الله ربكم خالق كل شيء ۗ
لأإله إلا هو ۗ فآلئى توفكون ﴿۶۳﴾

كذلك يوفك الذين كانوا ياتون الله
يجحدون ﴿۶۴﴾

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ قَرَارًا
وَالسَّمَاءَ بِنَاءً ۗ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ

1. मूल शब्द 'अस्साअत'-घड़ी दा मतलब संसार च तबाही दी घड़ी बी होईं सकदा ऐ ते क्यामत दी घड़ी बी। संसार च ते बिनाश-काल गी मुन्कर लोक दिक्खी सकदे न। इस आस्तै इस अर्थ गी प्रधान समझना चाही दा ते क्यामत दा बिनाशकारी समां नेईं लभदा। इस आस्तै इस अर्थ गी गौण यानी दूप दरजे दा समझना चाही दा।

बक्ख ताकतां बख्शी दियां न ते फी उनें ताकतें
गी अति उत्तम दरजे दा ते मजबूत बनाया ऐ
ते तुसेंगी पवित्र रोजी प्रदान कीती दी ऐ। एह
अल्लाह ऐ जो थुआड़ा रब्ब बी ऐ। इस आसतै
बौहत बरकत आहला ऐ अल्लाह जो सारे
लोकें दा रब्ब ऐ ॥ 65 ॥

ओह जींदा (ते दूएँ गी जिंदगी देने आहला)
ऐ। उसदे सिवा कोई उपास्य नेई, ते अल्लाह
आसतै अबादत गी खालस करदे होई सच्चे
दिलें उस गी पुकारो, सब तरीफ अल्लाह दी
गै ऐ जो सारे ज्हांनें/लोकें दा रब्ब ऐ ॥ 66 ॥

तूं आखी दे जे मिगी उस थमां रोकेआ गेदा ऐ
जे अ'ऊं उंदी अबादत करां जिनेंगी तुस अल्लाह
दे सिवा पुकारदे ओ। खास तौर पर जिसलै जे
मेरे कश मेरे रब्ब पासेआ खुल्लियां नशानियां
बी आई चुकी दियां न ते मिगी आदेश दिता
गेदा ऐ जे अ'ऊं सिर्फ सारे ज्हांनें/लोकें दे रब्ब
दी आज्ञा दा पालन करां ॥ 67 ॥

ऊऐ ऐ जिसनै तुसेंगी (पैहले दौर च) मिट्टी
चा पैदा कीता फी (दूएँ दौर च) बीरज थमां,
फी (तीये दौर च) इक खून दे लोथड़े थमां
फी (ओहदे चा) तुसेंगी इक बच्चा बनाइयै
कहदा ऐ/फी उसदा नतीजा एह होंदा ऐ जे
तुस अपनी जुआनी गी पुज्जी जंदे ओ/जुआन
होई जंदे ओ फी उसदा नतीजा एह होंदा ऐ
जे तुस अपने बड़ापे गी पुज्जी जंदे/बुड्ढे होई
जंदे ओ ते तुंदे बिच्चा कुसै दी रूह उस
(उमर तक पुज्जने) शा पैहलें (यानी बुद्दापे
दी उमरी शा पैहलें) कब्जे च करी लैती जंदी
ऐ ते ओह् ऐसा इस आसतै करदा जंदा ऐ जे
तुस उस अरसे तगर पुज्जी जाओ जो थुआड़े
आसतै निश्चत कीता गेदा ऐ ते तां जे तुस

صَوْرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ
ذِكْرُ اللَّهِ رَبِّكُمْ فَتَبَرَّكَ اللَّهُ رَبَّ
الْعَالَمِينَ ﴿٦٥﴾

هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ
مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ الْحَمْدُ لِلَّهِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٦﴾

قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ
مِنْ دُونِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِي الْبَيِّنَاتُ
مِنْ رَبِّي ۗ وَأَمَرْتُ أَنْ أُسَلِّمَ
لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٧﴾

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ تَرَابٍ ثُمَّ مِنْ
نُطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا
ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشْدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوا
شُيُوخًا ۗ وَمِنْكُمْ مَنْ يُتَوَفَّى مِنْ قَبْلِ
وَلِتَبْلُغُوا أَجَلًا مُّسَمًّى ۖ وَلَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُونَ ﴿٦٨﴾

(उस ढिल्ल दे अरसे दा फायदा लेइयै) अकली
शा कम्म लेई लैओ ॥ 68 ॥

ओह खुदा गै ऐ जो जींदा करदा ऐ ते मारदा
ऐ इस आस्तै जिसलै ओह कुसै गल्लै दा
फैसला करी दिंदा ऐ तां उसदे बारै आखदा ऐ
होई जा, ते ओह होई जंदा ऐ ॥ 69 ॥ (रुकू
7/12)

क्या तोह उनें लोकें गी नेई दिक्खेआ जो
अल्लाह दी आयतें दे बारै झगड़दे रौंहदे न
ओह कतांह फेरियै लेते जंदे न ॥ 70 ॥

एह (इस्सै चाल्ली दे) लोक न जिनें साढ़ी
कताबा दा बी ते साढ़े रसूल जो संदेश ल्याए
न उंदा बी इन्कार करी दिता ऐ इस आस्तै हून
एह तौले गै अपने अन्जाम गी दिक्खी लैंगन
॥ 71 ॥

जिसलै जे तौक्र/लड्डन ते जंजीरां/सौंगल उंदा
गरदनें च होंगन ॥ 72 ॥

ते ओह (उनें जंजीरें राहें जलाने आहले) गर्म
पानी च घसीटे जांगन, फी नरकै च सुट्टी
दिते जांगन ॥ 73 ॥

फी उनेंगी गलाया जाग, ओह (उपास्य) कुत्थें
न जिनेंगी तुस अल्लाह दे सिवा (खुदाई दा)
शरीक बनांदे हे ॥ 74 ॥

उसलै ओह आखडन जे ओह साढ़े शा खूसी
लैते गे न (फी आखडन) इयां नेई असलीयत
एह ऐ जे अस इस शा पैहलें कुसै चीजै गी
खुदा दा शरीक बनांदे गै नथे, इस्सै चाल्ली
अल्लाह मुन्करें गी गुमराह करदा ऐ ॥ 75 ॥

इयै (सचाई) ऐ, जेहदी ब'जा करी तुस बगैर
कुसै दलील दे खुशियां मनांदे होंदे हे ते जिस

هُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ فَإِذَا قُضِيَ أَمْرًا
فَأِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٦٨﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ
أَتَى يَصْرِفُونَ ﴿٦٩﴾

الَّذِينَ كَذَّبُوا بِالْكِتَابِ وَبِمَا أَرْسَلْنَا بِهِ
رُسُلَنَا ثُمَّ سَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٧٠﴾

إِذَا الْأَعْلَىٰ فِئَ آعَنَاقِهِمُ وَالسَّلْسِلُ
يُدْحَبُونَ ﴿٧١﴾

فِي الْحَمِيمِ ۖ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ﴿٧٢﴾

ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُونَ ﴿٧٣﴾

مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَلْ لَمْ
نَكُنْ نَدْعُوا مِنْ قَبْلُ سَيِّئًا ۚ كَذَلِكَ يَضِلُّ
اللَّهُ الْكٰفِرِينَ ﴿٧٤﴾

ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُونَ فِي الْاَرْضِ

दी ब'जा कनै तुस बिला ब'जा इतरादे/आकड़दे होंदे हे ॥ 76 ॥

(हून जाइयै) जहन्नम दे दरोआजें च दाखल होई जाओ (की जे थुआड़े आसतै फैसला होई चुके दा ऐ जे) तुस एहदे च गै पेदे रौहगे ओ ते घर्मडियें दा ठकाना बौहत् बुरा ऐ ॥ 77 ॥

इस आसतै सबर कर अल्लाह दा बा'यदा जरूर पूरा होइयै रौहग ते जेकर अस तुगी उजें गल्लें बिच्चा जिंदा उंदे कनै बा'यदा कीता जंदा ऐ, किश (तेरे मरने तगर) दस्सी देचै (तां किश भविक्खवाणियां तेरी मौती दे बा'द पूरियां होंगन ते ओहदे च कोई हरज नेई) की जे ओह परतियै साढ़े कश आंहदे जांगन (ते उर्थें उंदा अन्जाम उंदे पर खु'ल्ली जाग/उजेंगी लब्भी जाग) ॥ 78 ॥

ते असें तेरे शा पैहलें केई रसूल भजे हे केइयें दा जिकर असें तेरे सामनै करी दिता ऐ ते केइयें दा जिकर असें तेरे सामनै नेई कीता ते कुसै बी रसूल दी एह ताकत नेई जे खुदा दे हुकम दे बगैर कोई कलाम लेई आवै ते जिसलै अल्लाह दा हुकम होई जंदा ऐ तां न्यांऽ दे मताबक फैसला करी दिता जंदा ऐ ते झूठ बोलने आहले लोक घाटे च/खसारे च रेही जंदे न ॥ 79 ॥ (रुकू 8/13)

अल्लाह ऊऐ ऐ जिसनै चौखर थुआड़े आसतै पैदा कीते दे न तां जे उंदे बिच्चा केइयें पर तुस सुआरी करो ते उंदे बिच्चा (केइयें दा गोशत) खाओ ॥ 80 ॥

ते उजें चौखरें दे थुआड़े आसतै होर बी केई फायदे न ते एह (फायदा बी ऐ) जे तुस उंदे पर भार-बरदारी (भार लद्दने) बगैरा दा

بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُونَ ﴿٧٦﴾

أَدْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا
فَقِسْ مُثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٧﴾

فَأَصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَامَّا نُرِيكَ
بَعْضَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيْكَ فَأَيْنَا
يُرْجَعُونَ ﴿٧٨﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ
مَنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَنْ لَمْ
نَقْضُصْ عَلَيْكَ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ
يَأْتِيَ بآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ
اللَّهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ
الْمُبْطِلُونَ ﴿٧٩﴾

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الْأَنْعَامَ لِتَرْكَبُوا
مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٨٠﴾

وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً
فِي صُدُورِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ

कम्म करियै अपनी दिली जरूरतां पूरियां करी लै करो। ते इंदे (चौखरें) पर ते किशितयें पर तुसेंगी सुआर कीता जंदा ऐ ॥ 81 ॥

ते ओह (यानी खुदा) तुसेंगी अपने नशान दसदा ऐ। इस आस्तै तुस अल्लाह दे नशानें बिच्चा कुस नशान दा इन्कार करी सकदे ओ ॥ 82 ॥

क्या एह धरती पर नेई फिरे ते दिखदे जे इंदे शा पैहलें दा अनजाम कनेहा होआ? ओह देशें च इंदे शा तदाद ते ताकत च बी ज्यादा हे ते अमारतां बनाने दे हुनर च बी ज्यादा (माहर) हे। पर उंदे कर्म उनेंगी कोई फायदा नेई दित्ता ॥ 83 ॥

ते जिसलै उंदे कश उंदे रसूल नशान लेइयै आए, तां उंदे कश जेहका थोड़ा-बौहत इलम हा, ओहदे पर फखर करन/पसोन लगे ते जिस (अजाब) दा ओह मौजू दुआंदे हे उसनै उनेंगी घेरी लैता ॥ 84 ॥

फी जिसलै उनें सादा अजाब दिक्खेआ ते आखी उट्टे अस ते अल्लाह गी इक्क करार दिंदे/मनदे होई उस पर ईमान आहने आं ते उसदे कनै जिनें चीजें गी अस शरीक करार दिंदे/मनदे होंदे हे उंदा अस इन्कार करने आं ॥ 85 ॥

इस आस्तै जिसलै उनें सादा अजाब दिक्खी लैता तां उंदे ईमान नै उनेंगी कोई फायदा नेई पुजाया। इयै अल्लाह दी निश्चत रीति ऐ जेहकी उसदे बंदें च प्रचलत ऐ ते उस बेलै मुन्कर घाटे च रेही जांगन ॥ 86 ॥ (रुकू 9/14)

تَحْمَلُونَ ﴿٨١﴾

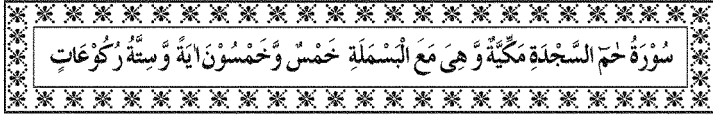
وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ ۚ فَآيَاتِ آيَاتِ اللَّهِ
تُكْرُونَ ﴿٨٢﴾

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
كَانُوا أَكْثَرُ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَأَثَارًا
فِي الْأَرْضِ فَمَا أَعْنَى عَنْهُمْ مَا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٣﴾

فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَرِحُوا
بِمَاعْنَدِهِمْ مِنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَا
كَانُوا بِهِ يَسْتَهْرِءُونَ ﴿٨٤﴾

فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا قَالُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَحَدَّهُ
وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِينَ ﴿٨٥﴾

فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا
بَأْسًا سَأَلُوا اللَّهَ الَّذِي قَدْ خَلَتْ فِي
عِبَادِهِ ۖ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُونَ ﴿٨٦﴾



सूर: हा-मीमअल्-सजद:

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां पचुंजा आयतां ते छे रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

हमीद' ते मजीद (स्तुति दे काबल ते गौरवशाली
अल्लाह दे गुण इस सूर: च ब्यान कीते गेदे
न) ॥ 2 ॥

حَمَّ ①

एह कु'रआन अनंत रैहम करने आहले ते बार-
बार कर्म करने आहले (खुदा) पासेआ नाजल
होए दा ऐ ॥ 3 ॥

تَنْزِيلٌ مِّنَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

(ते) ऐसी कताब ऐ जेहदियां आयतां खूब
तफसील कनै ब्यान कीतियां गेदियां न ते
जो (कताब) खूब पढ़ी जाग ते (ओह ऐसी
जुबान च ऐ जो) अपना मतलब आपूं
खोह्लियै ब्यान करदी ऐ पर (एह कताब)
उनेंगी गै फायदा दिंदी ऐ जो (रुहानी) इलम
जानदे न ॥ 4 ॥

كِتَابٌ فَصَّلْتَ آيَتَهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ
يَعْلَمُونَ ①

(सदाचारियें गी) खुशखबरी देने आहली ते
(कुकर्मियें गी) सोहगा करने आहली ऐ। फी
(बी) उंदे चा केइयें इतराज कीता ते ओह
इसी सुनने आस्तै त्यार नेई ॥ 5 ॥

بَشِيرًا وَنَذِيرًا ① فَأَعْرَضَ أَكْثَرُهُمْ
فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ①

1. ब्यारे आस्तै दिक्खो सूर: बकर: टिप्पणी आयत 2

ते आखदे न जिस चीजै पासै तुस असेंगी सददे ओ उसी मन्ने शा साढ़े दिल पड़दें च न (यानी ओह साढ़े दिलें पर असर नेई करी सकदी) ते साढ़े कन्न बैहरे न (जेहदी ब'जा करी अस थुआड़ी गल्ल सुनी गै नेई सकदे) ते साढ़े ते थुआड़े मझाटै इक पड़दा' ऐ। इस आस्तै तूं (अपने अकीदे मताबक) कम्म कर, अस (अपने अकीदे मताबक) कम्म करगे ॥ 6 ॥

तूं आखी दे, अ'ऊं बी थुआड़े आंगर गै इक आदमी आं, मेरे पासै वह्नी कीती जंदी ऐ जे थुआड़ा सिर्फ इक खुदा ऐ। इस आस्तै उसी याद करिये मजबूती दस्सो ते ओहदे शा माफी मंगदे र'वो (जे पैर निं फिसली जा/इरादा डगमगाई नेई जा) ते (याद रक्खो जे) मुश्रिकें आस्तै अज्जाब (निश्चत) ऐ ॥ 7 ॥

ओह मुश्रिक जेहके नां जकात दिंदे न ते नां आखरत पर ईमान आहन्दे न ॥ 8 ॥

सचें ओह (लोक) जेहके ईमान बी ल्याए ते ओहदे मताबक उनें कर्म बी कीते, उंदे आस्तै इक नेई मुक्कने आहला सिला (निश्चत) ऐ ॥ 9 ॥ (रुकू 1/15)

तूं आखी दे, क्या तुस उस खुदा दा इन्कार करदे ओ, जिसनै धरती गी द'ऊं दौरे च पैदा कीता ऐ, ते उसदे शरीक न्युक्त करदे ओ। एह (खुदा ते) सारे ज्हाँनें दा रब्ब ऐ ॥ 10 ॥

ते उसनै धरती च, उसदे उप्पर पहाड़ बनाए दे न ते एहदे च बड़ी बरकत रक्खी दी ऐ ते

وَقَالُوا أَفَلَوْا قُلُوبُنَا فِي آيَاتِنَا وَمَا نَدْعُونَآ إِلَيْهِ وَفِي آذَانِنَا وَقُرْآنٍ مِن بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَأَعْمَلْنَا لَهُمْ جُحُومًا ۝٦

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ إِنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ وَاحِدًا فَاسْتَقِيمُوا إِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوا ۗ وَوَيْلٌ لِلْمُشْرِكِينَ ۝٧

الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَفَرُونَ ۝٨

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝٩

قُلْ إِنِّي كُنتُ مِنَ الْكَافِرِينَ خَلَقَ الْأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ إِندَادًا ۗ ذَٰلِكُمْ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝١٠

وَجَعَلْ فِيهَا رَوَاسِيَٰ مِّنْ قَوْعِهَا وَبَرَكَ

1. पड़दे दा मतलब सभाएं दा बक्ख-बक्ख होना ऐ।

एहदे च रौहने आहलें दे खाने-पीने आस्तै हर चीजै गी अंदाजे दे मताबक बनाई दित्ते दा ऐ एह सब किश च 'ऊं दौरें च कीता ऐ। एह गल्ल सारे^१ पुच्छने आहलें आस्तै बराबर ऐ।

॥ 11 ॥

पही गासै आहले पासै ध्यान दित्ता। ते ओह सिर्फ इक धुंद आंगर हा। ते उसनै उसी ते धरती गी गलाया-दमें अपनी मरजी कनै जां मजबूर होइयै मेरी फरमांबरदारी आस्तै आई जाओ। उनें दौनीं गलाया, अस फरमांबरदार होइयै आई गे आं ॥ 12 ॥

फो उनेंगी सतें गासैं दी सूत च दौं दौरें च बनाया ते हर गासै च जो किश होना हा उसदी ताकत ओहदे च रक्खी दित्ती ते असें ख 'लके गासै गी रोशनियें कनै खूबसूरत बनाया ते (खूबसूरत बनाने दे अलावा) पहाजत आस्तै बी (ओहदे च समान पैदा कीता) (ते) एह गालिब (ते) जानने आहले खुदा दा निश्चत कीते दा अंदाजा ऐ ॥ 13 ॥

फो जेकर ओह मूह फेरी लैन तां तू उनेंगी आखी दे जे मैं तुसें गी, उस अजाब थमां जेहका आद ते समूद दे अजाब आंगर ऐ, सोहगा करी दित्ता ऐ ॥ 14 ॥

यानी जिसलै उंदे कश अगूं दा बी ते उंदे पिच्छूं दा बी रसूल आए (यानी कौमी जिंदगी

فِيهَا وَقَدَّرَ فِيهَا أَقْوَاتَهَا فِي أَرْبَعَةِ
آيَاتٍ ۚ سَوَاءٌ لِّلسَّالِطِينَ ۝

ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ
فَقَالَ لَهَا وَاللَّأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا
أَوْ كَرْهًا قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ ۝

فَقَضَسُنَّ فِي سَمَوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ
وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا ۚ وَرَبَّيْنَا
السَّمَاءَ الذُّنُوبِيْمَصَابِيحٌ ۚ وَحِفْظًا ۚ ذَٰلِكَ
تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنْذَرْتُكُمْ صُحُفَةً
مِّثْلَ صُحُفَةِ عَادٍ وَثَمُودَ ۝

إذْجَاءَهُمُ الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ

1. इस आयत च एह संकेत कीता गेदा ऐ जे कुसै बेलै धरती गी गल्ला/अनाज पैदा करने दे काबल नेई समझेआ जाग, पर अल्लाह एहदा खंडन करदा ऐ जे असें धरती च ऐसी सकत पैदा कीती दी ऐ जे ओह जरूरता मताबक खाद्य-पदार्थ त्पार करग भामें धरती चा पैदा करियै भामें नमें खाद्य-पदार्थ दी खोज थमां जां सूरजै दी किरणें दी मददी कनै।
2. यानी सारे लोकें दे पुच्छने पर साढ़ा इयै जवाब होग। इयै ब'जा ऐ जे संसार च दो-सौ साल्लें थमां बक्ख-बक्ख देशें च खाद्य समस्सेआ बिचारें दे घरे च रौहदी रेही ऐ। सारे लोकें उपर लिखे दे उत्तर दा अध्ययन करना चाही दा जे इयै साढ़े रब्ब दा फैसला ऐ।

दे दुरान लगातार रसूल आए) एह आखदे होई जे अल्लाह दे सिवा कुसै दी उपासना नेई करो, तां उनें उनेंगी जवाब दिता जे जेकर साढ़ा रब्ब चांहदा तां साढ़े पर आपूं फरिश्ते नाजल करी दिंदा। इस लेई अस उस तलीम दा जेहदे कनै तुगी भेजेआ गेदा ऐ, इन्कार करने आं ॥ 15 ॥

ते आद दी कौम नै धरती च बगैर कुसै अधिकार दे घमंड शा कम्म लैता ते गलाया, साढ़े शा ज्यादा ताकत कोहदे च ऐ क्या उनें दिक्खेआ नेई जे जिस खुदा नै उनेंगी पैदा कीते दा ऐ ओह उंदे शा ज्यादा ताकतवर ऐ ते ओह साढ़ी आयतें दा हठपूर्ण इन्कार करदे न ॥ 16 ॥

इस आस्तै असें उंदे पर इक ऐसी हवा भेजी जेहकी बड़ी तेज (आंधी) ही ते मन्हूस दिनें च आई ही तां जे अस उनेंगी इस दुनियां च अपमान जनक अज्ञाब दा मजा चखाचै ते आखरत दी जिंदगी दा अज्ञाब एहदे शा बी सक्खर अपमान-जनक ऐ ते (उत्थें) उंदी कुसै बी रूपै च मदद नेई कीती जाग ॥ 17 ॥

ते समूद (दा एह हाल हा जे) असें उनेंगी हदायत दा रस्ता दस्सेआ हा। पर उनें गुमराही गी हदायत पर पैहल दित्ती। इस आस्तै उनेंगी इक अपमान जनक अज्ञाब नै उंदे कमें दी ब'जा करी आई घेरेआ ॥ 18 ॥

ते जेहके लोक संयमी हे ओह मोमिन हे उनेंगी असें मुक्ति देई दित्ती ॥ 19 ॥ (रुकू 2/16)

ते जिस दिन अल्लाह दे दुश्मन (यानी मुन्कर) जींदे करियै अग्गी पासै लेते जांगन फी उनेंगी

وَمِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۗ
قَالُوا لَوْ شَاءَ رَبُّنَا لَأَنْزَلْنَا مَلَكًا فَفَاتِنًا
بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كُفْرًا ۖ ۝

فَأَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ
الْحَقِّ وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۗ أُولَئِكَ
يَرَوْنَا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ
مِنْهُمْ قُوَّةً ۗ وَكَانُوا بِالْبَيِّنَاتِ يُجْحَدُونَ ۝

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي
آيَاتِهِ لِنَجَسَاتٍ لِنُذِيقَهُمْ عَذَابَ
الْخُرْزِيِّ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۗ وَلِعَذَابِ
الْآخِرَةِ أَكْزَىٰ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ۝

وَأَمَّا ثَمُودُ فَهَدَيْنَاهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَاقِبَةَ
عَلَى الْإِثْمِ فَآخَذْنَاهُمْ صِخْرَةً الْعَذَابِ
الَّذِينَ كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝

وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ

बक्ख-बक्ख दरजें च तकसीम करी दिता जाग ॥ 20 ॥

इत्थें तक जे जिसलै ओह दोजख/तरकै कश पुज्जी जांगन उंदे कन्न ते उंदियां अक्खीं ते उंदियां कंजड़ियां उंदे कर्मै दी ब'जा करी उंदे खलाफ गुआही देंगन ॥ 21 ॥

ते ओह अपनी कंजड़ियें गी आखडन तुसैं साढ़े खलाफ गुआही की दिती? ते उंदियां कंजड़ियां परते च आखडन, साढ़े शा इससै खुदा नै गल्ल करोआई ऐ जिसनै हर चीजै शा गल्ल करोआई ऐ। ते उसनै तुसैंगी पैहली बार बी पैदा कीता हा ते फी बी तुस ओहदे कश परताए जागे ओ ॥ 22 ॥

ते तुस अपने ऐब इस डरें नथे छपालदे होंदे जे कुदै थुआड़े कन्न ते थुआड़ियां अक्खीं ते थुआड़ियां कंजड़ियां थुआड़ै खलाफ गुआही नेई देई देन (बल्के दूए लोकें दी हासो हानी दे डरें ऐसा करदे होंदे हे) बल्के तुसैंगी भरोसा हा, जे अल्लाह गी ते थुआड़ी मती सारी गल्लें दा पता गै नेई! ऐ ॥ 23 ॥

ते इयै ओह बुरा बिचार हा जेहका तुसैं अपने रब्ब बाँरे बनाई लैता जिसनै तुसैंगी बरबाद करी दिता ते तुस हर चाल्ली खसारा खाने आहलें बिच्चा होई गे ॥ 24 ॥

इस आस्तै जेकर एह लोक सबर शा कम्म लैन तां अग उंदा ठकाना ऐ ते जेकर एह खुदा ऐ हजूर च हाजर होना चाहन तां उंनेंगी खुदा दे हजूर च हाजर होने दी अजाजत नेई दिती जाग ॥ 25 ॥

يُوزَعُونَ ①

حَتَّىٰ إِذَا مَا جَاءُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ①

وَقَالُوا الْجُلُودُ دِهْمٌ لَمْ شَهِدْتُمْ عَلَيْنَا قَالُوا أَنْطَقَنَا اللَّهُ الَّذِي أَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ خَاقِكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَ إِلَيْهِ تَرْجَعُونَ ①

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَا أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلَكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِمَّا تَعْمَلُونَ ①

وَذِكْرُكُمْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِمَّا تَعْمَلُونَ ①

فَإِنْ يَصْبِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ وَإِنْ يَسْتَعِيبُوا فَمَا هُمْ مِنَ الْمُعْتَبِينَ ①

1. तुस निडर होइयै इस आस्तै पाप करदे हे जे थुआड़ै खलाफ कोई गुआही देने आहला नेई ऐ।

ते असें उंदे कन्नै किश ऐसे साथी लाई दिते जिनें उंदे कर्मै गी खूबसूरत करियै दस्सेआ। ते उंदे उप्पर बी ऊऐ हुकम जारी होई गेआ जेहका जिनें ते इन्सानें बिच्चा उंदे शा पैहलें होई बीती दी कोमें पर जारी होआ हा (यानी एह) जे ओह घाटे च रौहने आहलें बिच्चा होई जांगन ॥ 26 ॥ (रुकू 3/17)

ते मुन्करें गलाया, इस कुरआन दी तलीम/वाणी नेई सुनो ते एह सुनाने बेलै रौला पाई देओ। तां जे तुस (ऐह्दे उप्पर) विजयी होई जाओ ॥ 27 ॥

इस आस्तै इस दे नतीजे च अस मुन्करें गी जरूर सख्त अजाब दा मजा चखागे ते उंदे अत्त गै बुरे कर्मै दा फल उनेंगी देगे ॥ 28 ॥

(ते) अल्लाह दे दुश्मनें दा बदला इयै ऐ यानी अग्ग, एह्दे च इक लम्मे अरसे तगर रौहने आस्तै घर उनें गी मिलग उनेंगी एह बदला इस आस्तै मिलग जे ओह साढ़ी आयतें दा हठपूर्वक इन्कार करदे हे ॥ 29 ॥

ते मुन्कर आखडन जे हे साढ़े रब्ब! तू असेंगी जिनें ते मनुक्खें बिच्चा ओह लोक दस्स जेहके असेंगी गुमराह करदे होंदे हे। तां जे अस उनेंगी अपने पैरें हेठ मसली देचे ते ओह इसदे नतीजे च अत्त गै अपमानत¹ होई जान ॥ 30 ॥

ओह लोक जिनें गलाया जे अल्लाह साढ़ा रब्ब ऐ, फी अपने अकीदे पर द्रिढ़ता कन्नै डटी गे, उंदे पर फरिश्ते उतरडन, एह आखदे

وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا لَهُمْ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنَّهُمْ كَانُوا خَسِرِينَ ﴿٢٦﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا لِهَذَا الْقُرْآنِ وَالْغَوَايِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْلَبُونَ ﴿٢٧﴾

فَلَنَذِقَنَ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾

ذَلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ الثَّارِ لَهُمْ فِيهَا دَارُ الْخُلْدِ جَزَاءٌ بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿٢٩﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا الَّذِينَ اصْلَلْنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ نَجْعَلُهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا لِيَكُونُوا مِنَ الْأَسْفَلِينَ ﴿٣٠﴾

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبَّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَفْهَمُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا

1. की जे दुनियां च गुमराह करने आहले लोक आदरजोग समझे जंदे न। क्यामत आहले ध्याइँ ओह निक्के लोक जेहके उनें बड्डे लोके दी आज्ञा दा पालन करदे होंदे हे, अल्लाह अग्गें प्रार्थना करडन जे जेकर तू उनेंगी साढ़े हवालै करी देरें तां अस उनेंगी अपने पैरें कन्नै छड़चै तां जे उंदा सारा आदर-मान मलिया-मेट होई जा ते ओह तुच्छ आदमी बनियै रेही जान।

होई जे डरो नेई ते कुसै पिछली भुल्लै दा बसोस नेई करो ते एह जन्नत' मिलने पर खुश होई जाओ, जेहदा तुंदे कनै बा 'यदा कीता गेआ हा ॥ 31 ॥

अस दुनियां च बी थुआड़े दोस्त आं ते आखरत बेलै बी थुआड़े दोस्त रौहगे ते इस (जन्नत) च जे किश थुआड़े दिल चांहगन तुसैं गी मिलग ते जे किश तुस मंगगे ओ ओह बी तुसैंगी एहदे च मिलग ॥ 32 ॥

एह बख्शाने आहले (ते) बे-हद कर्म करने आहले खुदा पासेआ अतिथि सत्कार दे तौंरे पर होग ॥ 33 ॥ (रुकू 4/18)

ते उस शा ज्यादा चंगी गल्ल कुस दी होग जेहका जे अल्लाह पासै लोकें गी सददा/ मोड़दा ऐ ते अपने ईमान दे मताबक कर्म करदा ऐ ते आखदा ऐ जे अ'ऊं ते फरमांबरदारें बिच्चा आं ॥ 34 ॥

ते नेकी ते बदी बराबर नेई होई सकदी। ते तूं बुराई दा जवाब अत्त गै नेक ब्यहार राहें दे उस दा नतीजा एह होग जे ओह शख्स जे उसदे ते तेरे बशकार दुश्मनी मज्द होंदी ऐ, तेरे अच्छे ब्यहार गी दिक्खियै इक दिली दोस्त बनी जाग ॥ 35 ॥

ते (बावजूद जुलम बरदाशत करने दे) उस (किसमै दे सलूक) दी तफीक सिर्फ उनेंगी गै मिलदी ऐ जेहके बड़ा सबर करने आहले न ते जां फी उनेंगी मिलदी ऐ जिनेंगी (खुदा पासेआ नेकी दा) इक बौहत बड्डा हिस्सा थ्होए दा होऐ ॥ 36 ॥

تَحَزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٣١﴾

نَحْنُ أَوْلَىٰ بِكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۗ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهَىٰ أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدْعُونَ ﴿٣٢﴾

تُرَىٰ لَمَنْ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٣﴾

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٤﴾

وَلَا تَسْتَوِ الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۗ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَفِيٍّ حَمِيمٌ ﴿٣٥﴾

وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا ۗ وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا دُوحًا عَظِيمٌ ﴿٣٦﴾

1. कुरआन मजीद च लोक ते परलोक दौंनै किसमें दे सुरगें दा बर्षन ऐ ते इस ज'गा दमें समझे जाई सकदे न।

जे जेकर शतान (यानी सचाई शा दूर हस्ती) तुगी तकलीफ पुजाऽ तां (झटपट उसदा बदला लैने आस्तै त्यार नेई होई जा करा कर बल्के) अल्लाह शा पनाह मंगा कर (जे ओह तुगी उस नीच कर्म कशा बचाऽ) अल्लाह सच्चें गै बौहत सुनने आहला (ते) बौहत जानने आहला ऐ ॥ 37 ॥

ते ओहदे नशानें बिच्चा रात बी ऐ ते दिन बी ते सूरज बी ऐ ते चन्न बी। नां सूरज गी सजदा करो नां चन्नै गी। बल्के सिर्फ अल्लाह गी जिसनै इन्हें दौनें गी पैदा कीते दा ऐ, सजदा करो जेकर तुस पक्के एकेश्वरवादी ओ ॥ 38 ॥

फी जेकर एह लोक घमंड करन, तां याद रख्ख जे ओह लोक जो तेरे रख्ख दे प्यारे न ओह दिन-रात उससै दी स्तुति करदे न, ते ओह कदें बी नेई थकदे ॥ 39 ॥

ते ओहदे नशानें बिच्चा (इक नशान) एह बी ऐ जे तू धरती गी (किश मौकें पर) बरान दिक्खना ऐं फी जिसलै अस ओहदे पर पानी उतारने आं तां ओह इक नमां जीवन हासल करी लैंदी ऐ ते (हरेआली गी) खूब बधांदी ऐ। ओह (खुदा) जिसनै इस (धरती) गी जीदा/हरा-भरा कीता ऐ ओह सच्चें गै मुड़दें गी बी जीदा करग। ओह हर गल्ल करने च समर्थ ऐ ॥ 40 ॥

ओह लोक जेहके साढ़ी आयतें बिच्चा फेर-बदल करिये गल्ल अर्थ कढदे रौहदे न ओह साढ़े शा छप्पे-गुञ्जे नेई न। क्या ओह शख्स जेहका नरकें च सुट्टेआ जा, ज्यादा चंगा ऐ जां ओह जेहका क्यामत आहलै ध्याड़ै अमन

وَأَمَّا يُزَعَّرُكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْعٌ
فَأَسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ
الْعَلِيمُ ﴿٣٧﴾

وَمِنْ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ
وَالْقَمَرُ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا
لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ
إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿٣٨﴾

فَإِنْ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ
يُسَبِّحُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا
يَسْأَمُونَ ﴿٣٩﴾

وَمِنْ آيَاتِهِ الَّتِي تَرَى الْأَرْضَ خَاشِعَةً
فَإِذَا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ
وَرَبَّتْ إِنَّ اللَّهَ الَّذِي آخَاها لَمُحِي
الْمَوْتِ إِنَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤٠﴾

إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي آيَاتِنَا لَا يَحْفَظُونَ
عَلَيْنَا أَفَمَنْ يُلْقَى فِي النَّارِ خَيْرٌ أَمْ مَنْ
يَأْتِي آمِنًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ

कनै (साढ़ै कश) आवै। (हे लोको!) जे किश चांहदे' ओ, करो! अल्लाह थुआड़े कर्मै गी चंगी-चाल्ली दिक्खा करदा ऐ ॥ 41 ॥

ओह लोक जेहके उस कुरआन (यानी शिक्षा) दा जिसलै ओह उंदे कश आया, इन्कार करदे न हालांके ओह इक बड़ी आदर आहली कताब ऐ (ओह अपनी तबाही दा समान अपने हत्थें त्यार करा करदे न) ॥ 42 ॥

झूठ नां ते उसदे अगुआं? आई सकदा ऐ ते नां उसदे पिच्छुआं, बड़ी हिक्मततें आहले ते बड़ी तरीफें आहले खुदा पासेआ ओह उतरे दा ऐ ॥ 43 ॥

तेरे कनै सिर्फ ऊरे गल्लां कीतियां जंदियां न, जेहकियां तेरे शा पैहले रसूलें कनै कीतियां गेइयां हियां। तेरा रब्ब बड़ी बख्शाश आहला ऐ ते उसदा अजाब बी दर्दनाक होंदा ऐ ॥ 44 ॥

जेकर अस इस कुरआन गी अजमी^३ बनांदे (यानी अरबी जबान दे सिवा कुसै दूई जबान च उतारदे) तां ओह (मक्का बासी) आखी सकदे हे जे उस दियां आयतां खोहलियै ब्यान की नेई कीतियां गेइयां। क्या अजमी जबान ते अरबी नबी कोई बराबरी रखदे न?

إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٤١﴾

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ وَإِنَّهُ لَكِتَابٌ عَزِيزٌ ﴿٤٢﴾

لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ ۖ تَنْزِيلٌ مِّنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ﴿٤٣﴾

مَا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَد قِيلَ لِلرَّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ۖ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ﴿٤٤﴾

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا عَجْمِيًّا لَّقَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ آيَاتُهُ ۖ أَءَعْجَبِيَّ وَعَعْرَبِيَّ ۖ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشَفَاءٌ ۖ وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِيْ أَذَانِهِمْ وَقْرٌ وَهُوَ

1. इसदा एह अर्थ नेई जे मनुक्ख जो चाह करै ओहदी कोई पकड़ नेई होग। अल्लाह नै अछाई ते बुराई दमैं स्पष्ट करी दित्ती दियां न। हून बी जेकर कोई मनुक्ख अछाई दा पता होंदे होई बी बुराई करै तां ओह आपूं जवाब देह ऐ। इस बारे इयै आखेआ जाग जे ओह अपनी मरजी कनै बुराई करा करदा ऐ ते एह नेई गलाया जाग जे उसी एह कर्म करनै आस्तैं मजबूर कीता जा करदा ऐ।
2. पवित्र कुरआन इक ऐसी कताब ऐ जेहेद सामनै झूठ नेई खड़ोई सकदा। उसदी तालीम गी लागू करने दे फल-सरूप झूठ गी कोई मदद नेई मिली सकदी। ऐसा इस आस्तैं ऐ जे कुरआन गी बड़ी हिक्मत आहले ते गुणें दे भंडार, अल्लाह नै उतारे दा ऐ।
3. 'अजमी' दा अर्थ ऐ गूंगा। एह शब्द अरब दे अलावा दूएँ आस्तैं बोल्लेआ जंदा ऐ। मन्नी लैओ जे अजमी ओह ऐ जो अरबी नेई होऐ ते उसदी जबान साफ नेई होऐ। इसैं चाल्ली जेहकी जबान साहित्यक गुणें गी पूरी चाल्ली ब्यान नेई करी सके, उसी अजमी आखेआ जाग।

तू आखी दे ओह मोमिनें आस्तै हदायत ते शफा¹ रखदा ऐ (यानी अरबी च उतारेआ गोआ ऐ ते मक्का दे लोक इसी समझी सकदे न) ते जेहके ईमान गै नेई आहनदे उंदे कन्न ते बोले न ते ओह (यानी उस दी सचाई) उंदे आस्तै छप्पी दी ऐ ओह लोक इयै नेह न जियां कुसै गी दूर-दूरेडे² थाहरा थमां बुलाया जा ॥ 45 ॥ (रुकू 5/19)

ते असें मूसा गी बी इक बधिया कताब दिती ही ते ओहदे बारै बी मत-भेद कीता गोआ हा ते जेकर इक गल्ल तेरे रब्ब पासेआ पैहलें नेई होई चुकी दी होंदी तां उनें लोकें दा फैसला कदू दा होई चुके दा होंदा। ओह इस (कुरआन) बारै इक ऐसे शक्क च पेदे/उलझे दे न जेहका उंदा सुख-चैन खत्म करी दिंदा ऐ (यानी बे-हद शक्कें च पेदे/फसे दे रौहदे न ते ओहदे पर गौर नेई करदे) ॥ 46 ॥

जेहका शख्स ईमान दे मताबक कर्म करै तां उस दा फायदा उस दी अपनी जान (ओहदे अपने आपै) गी गै पुजदा ऐ ते जेहका शख्स बुरे कर्म करै उस दा अजाब बी ओहदे पर गै नाजल होंदा ऐ ते तेरा रब्ब अपने बंदें पर कोई जुलम नेई करदा ॥ 47 ॥

عَلَيْهِمْ عَمَى ٤١
أُولَئِكَ يَتَدَوَّنُ مِنْ
مَكَانٍ بَعِيدٍ ٤١

وَلَقَدْ أَنبَأْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ ٤١
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقَضَى
بَيْنَهُمْ ٤١ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مَرِيِبٍ ٤١

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ أَسَاءَ
فَعَلَيْهَا ٤٧ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَالَمِينَ ٤٧

1. मतलब एह ऐ जे जो रसूल मनुक्ख-मातर आस्तै प्रकट होना हा ओहदा प्रादुर्भाव (अवतार) ते इक गै देशें च होना हा ते शुरू च इक गै जाति उसदी संबोधत होई सकदी ही। दूई कौमें गी उस कोम दे लोकें शा तलीम लेइयै संसार च फलाना हा। इस आस्तै दस्सेआ गोदा ऐ जे पवित्र कुरआन गी असें अरबी जबाब च उतारेआ ऐ। इस लेई मक्का आहलें बिच्चा जेहके लोक ईमान आहनान उनेंगी इस कुरआन थमां हदायत ते शफा च बादधा मिलग। दूप लोक उंदे शा इनें गल्लें गी सिक्खी लैगन।
2. जिसलें कोई शख्स दूर होऐ ते ओह अ'न्ना बी होऐ तां उसी हदायत देना मुश्कल होंदा ऐ। दूर होने दी ब'जा करी ओह अवाज सुनी नेई सकदा ते अ'न्ना होने दी ब'जा करी ओह शरें गी बी नेई समझी सकदा।

क्यामत दा ज्ञान उससै आहले पासै परताया जंदा ऐ (यानी क्यामत दा पूरा इलम उससी गै हासल ऐ) ते गब्बें बिच्चा कोई फल नेई निकलदा ते जनानियां बी अपने डिड्डें च किश नेई चुकदियां ते नां जमदियां न पर ओह अल्लाह गी सेही/पता होंदा ऐ जिस रोज ओह उनें लोकें गी पुकारग ते आखग कुत्थें न मेरे शरीक? ओह आखगन असें तुगी खोहलियै आखी दिते दा ऐ जे साढ़े बिच्चा कोई इस गल्ला दा गुआह् नेई ॥ 48 ॥

ते जिनें (उपास्यें) गी ओह एहदे शा पैहलें पुकारदे हे ओह उंदे शा खूसी लैते जांगन ते उनेंगी यकीन होई जाग जे हून उंदे आस्तै कुतै नस्सियै जाने लेई थाहर नेई ॥ 49 ॥

इन्सान चंगी चीजां मंगे शा कदें नेई थकदा । पर जेकर उसी कदें कोई तकलीफ पुज्जी जा तां (पैहली हालत गी भुल्लियै) मयूस/नराश होई जंदा ऐ ॥ 50 ॥

ते जेकर अस उसी दुख पुज्जने परेंत रैहमत दा मजा चखाचै तां ओह आखदा ऐ, एह ते मेरा हक्क गै ऐ ते मिगी यकीन ऐ जे क्यामत नेई औग ते जेकर मिगी मेरे रब्ब कश परताया बी गेआ तां ओहदे कश मेरे आस्तै (इस दुनियां शा) उत्तम इनाम/सिले मजूद होंगन ते अस मुन्करें गी जरूर उंदे कर्मे बारै खबर देगे ते उनेंगी इक सख्त अजाब बी चखागै ॥ 51 ॥

ते जिसलै अस मनुक्खै पर किरपा करने आं ओह मूह फेरी लैदा ऐ ते साढ़े शा इक पासै होई जंदा/कनी करताई लैदा ऐ ते जिसलै उसी कोई तकलीफ पुज्जदी ऐ तां बड़ियां लम्मियां-लम्मियां प्रार्थनां करदा ऐ ॥ 52 ॥

إِلَيْهِ يَرُدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۖ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرَاتٍ مِنْ أَكْمَامِهِمَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۗ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَاءِئِي ۗ قَالُوا ااذْنِكُ ۗ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيدٍ ﴿٤٨﴾

وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَدْعُونَ مِنْ قَبْلُ وَظَنُوا مَا لَهُمْ مِنْ مَّجِيصٍ ﴿٤٩﴾

لَا يَسْأَلُ الْإِنْسَانُ مِنْ دُعَاءِ الْخَيْرِ ۗ وَإِنَّ مَسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوسٌ قَوُوطٌ ﴿٥٠﴾

وَلَيْنَ آدِقُهُ رَحْمَةٌ مِّنَّا مِنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ مَسَّتْهُ لِيَقُولَنَّ هَذَا لِي ۗ وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً ۗ وَلَيْنَ رُجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي ۗ إِنَّ لِي عِنْدَهُ لَلْحُسْبَىٰ ۗ فَلَنَذِيبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا ۗ وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥١﴾

وَإِذَا أُنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَأْبَانِيهِ ۗ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَدُو ۗ دُعَاءٍ عَرِيضٍ ﴿٥٢﴾

तू उन्हेगी आखी दे, मिगी दसो ते सेही जेकर एह (कुरआन) अल्लाह आहले पासेआ होऐ ते तुस उसदा इन्कार करी देओ तां उस शख्स शा बद्ध होर कु'न गुमराह् होग जेहका हक़ शा काफी दूर नस्सी जा? ॥ 53 ॥

अस इनें लोकें गी अपने नशान बर-जरूर गै सारे संसार दे बित्थे-बेचलें तक दसगे ते उंदी अपनी जानें (ते खानदानें) च बी इत्थें तक जे एह (गल्ल) उंदे आस्तै बिल्कुल जाहर होई जाग जे एह (कुरआन) सच्च ते तत्थ ऐ क्या तेरे रब्ब दा हर चीजै पर नगरान होना उंदे आस्तै काफी नेई ? ॥ 54 ॥

खबरदार! एह लोक अपने रब्ब दी मलाटी बारै शक्क च पेदे न। कन्न खोहिलयै सुनो! अल्लाह हर चीजै पर हावी (ते उसी तबाह् करने च समर्थ) ऐ ॥ 55 ॥ (रुकू 6/1)

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهِ مَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ﴿٥٣﴾

سَأَرِيهِمْ آيَاتِي فِي الْأَفَاقِ وَفِي أَنْفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَسْتَبِينَ لَهُمُ اللَّهُ الْحَقُّ ۗ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٥٤﴾

أَلَا إِنَّهُمْ فِي مَرِيضَةٍ مِّنْ لِّقَاءِ رَبِّهِمْ ۗ أَلَا إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطٌ ﴿٥٥﴾

سُورَةُ الشُّورَى مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ أَرْبَعٌ وَخَمْسُونَ آيَةً وَخَمْسَةٌ رُكُوعَاتٌ

सूर: अल्-शूरा

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां चरंजा आयतां ते पंज रुकू न।

अ'कं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

हमीद¹, मजीद! एह सूर: स्तुति आहले
गौरवशाली ॥ 2 ॥

حَمْدٌ ①

अलीम, समीअ, क्रादिर। (ज्ञानवान, बौहत
सुनने आहले ते सर्वशक्तिमान अल्लाह नै उतारी
ऐ) ॥ 3 ॥

عَسَقٌ ①

इस्सै चाल्ली अल्लाह तेरे पर बी वह्नी करदा
ऐ ते उंदे पर बी (वह्नी करी चुके दा ऐ)
जेहके (लोक) तेरे शा पैहलें होई चुके दे न
ओह गालिब बी ऐ (ते) हिक्मत आहला बी
ऐ ॥ 4 ॥

كَذَلِكَ يُوحِي إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِكَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ①

गासैं ते धरती च जे किश ऐ, सब उससै दा
ऐ। ते ओह उच्चि शान आहला ऐ। ते उस दी
क्हूमत हर तबके दी मख्जूक पर फैली दी ऐ
॥ 5 ॥

لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ
الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ①

लागै ऐ, जे गास अपने उप्परा (शक्तिशाली
सत्ता दे हुकम दी ब'जा करी) फट्टियै डिग्गी
जान, हालांके फरिश्ते अपने रब्ब दी पवित्रता

تَكَادُ السَّمَوَاتُ يَتَّقَطْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ
وَالْمَلَائِكَةُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ

1. ब्यौरे आसतै दिक्खो सूर: बकर: टिप्पणी आयत-2

दी स्तुति' भी करा करदे न ते जेहके लोक धरती च न उंदे आस्तै माफी भी मंगा करदे न (फी बी खुदा अपने अजाब गी रोकग नेई तां जे उसदी क्षमाशीलता ते रैहमत जाहर होऐ) सुनो! अल्लाह बौहत बखाने? आहला (ते) बे-इंतहा रैहम करने आहला ऐ ॥ 6 ॥

ओह लोक जेहके अल्लाह दे सिवा कुसै होरस गी अपनी पनाह/ शरण देने आहला बानांदे न अल्लाह नै उंदे खलाफ पौने/गिने जाने आहले सारे कर्म गी सम्हालियै रक्खी लेदा ऐ ते तू उंदे पर नगरान नेई (खुदा गै नगरान ऐ) ॥ 7 ॥

ते इससै चाल्ली (यानी अपने नगरान होने दे सबूत च) असें कुरआन गी अरबी ज़बान च तेरे पासै उतारेआ ऐ तां जे तू देशै दे केंदर दे लोकें गी ते उसदे आसै-पासै रौहने आहले लोकें गी सोहगा करै ते तां जे तू उस बेले शा सोहगा करै जिस बेले सारे किट्टे कीते जांगन जिसदे औने बाँरे कोई शक नई उस दिन इक गरोह ते सुर्ग च जाग ते इक गरोह नरकै च जाग ॥ 8 ॥

وَيَسْتَعْفِرُونَ لِمَنْ فِي الْأَرْضِ ۗ أَلَا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَفْوُورُ الرَّحِيمُ ۝

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ اللَّهُ حَفِيظٌ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ۝

وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِنُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا وَنُنذِرَ يَوْمَ الْجُمُعِ لِأَرْبَابٍ فِيهِ ۗ فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ۝

1. एहदे च दस्सेआ गोदा ऐ जे चाहे फरिश्ते मानव-मातर दी मुक्ति आस्तै प्रार्थनां करा करदे न ते अल्लाह दी स्तुति ते उसदी पवित्रता दा गुण-गान बी करा करदे न तां बी मनुक्ख इना मलीन होई चुके दा ऐ जे गार्सें दा रब्ब उसगी तबाह करना चोहदा ऐ। उसदे बिनाशकारी हुकम दे सामनें फरिश्तें दा प्रार्थनां करना कोई मैहना नेई रखदा।
2. इत्थें इस पासै संकेत कीता गोदा ऐ ते फरिश्तें दे माफी मंगने पर बी अल्लाह दा संसारक व्यवस्था भंग करी देना ते मनुक्खे दा सर्वनाश करना उसदी क्षमाशीलता ते दयालुता ते बरूद्ध नेई, की जे संसार च जिनें-जिनें लोकें दा सर्वनाश होग उंदे पापे कारण गै होना ऐ। इस आस्तै सुनो! आखियै दस्सेआ जे अल्लाह दे गुण, क्षमाशीलता, दयालुता बाँगा पूरी चाल्ली ते आखरत बेले गै जाहर होंगन, की जे जेकर इस संसार दे लोकें पर अजाब नेई आवै ते मौत अच्छे रूपे च मोमिनें दा सुआगत नेई करै तां अल्लाह दी क्षमाशीलता ते रैहमत किय्यां जाहर होऐ? इस आस्तै इनें गुणों दी अभिव्यक्ति आस्तै जरूरी ऐ जे मुन्कर लोक अजाब कर्ने मरिये नरकै च स'जा भोगन ते मोमिन शुभ कर्म करदे होई मरने दे बा'द सुर्ग च जाइयै इनाम हासल करन।

ते जेकर अल्लाह अपनी मरजी शा कम्म लैंदा (यानी जबरदस्ती करदा) तां इनें सारें गी इक संप्रदाय बनाई दिंदा पर ओह जिसगी चांहदा ऐ अपनी रहमत च दाखल करदा ऐ ते जालमें गी नां ते कोई शरण देने आह्ला ऐ ते नां गै उंदा कोई मदादी ऐ ॥ 9 ॥

क्या उनें अल्लाह दे सिवा कुसै दूए गी शरणदाता बनाई लेदा ऐ? (इस आस्तै याद र'वै जे) अल्लाह गै शरणदाता ऐ ते ऊरे मुड़दें गी जाँदा करदा ऐ ते ओह अपने हर इरादे गी पूरा करने च समर्थ ऐ ॥ 10 ॥ (रुकू 1/2)

ते जिस कुसै गल्लै च थुआड़ा मत-भेद होई जा तां उसदा आखरी फैसला अल्लाह दे गै हथै च ऐ। एह ऐ थुआड़ा अल्लाह जेहका मेरा बी रब्ब ऐ। मैं उससै पर भरोसा कीता ऐ ते उससै दे अगें अ'ऊं झुकना ॥ 11 ॥

ओह गासैं ते धरती दा सिरजनहारा ऐ उसनै थुआड़ी गै जिनसै बिच्चा थुआड़े साथी बनाए दे न ते चौखरें दे बी जोड़े बनाए दे न ते इससै चाल्ली ओह तुसंगी धरती च बधांदा' ऐ उस जैसा कोई नेई ते ओह बौहत सुनने आह्ला (ते) दिक्खने आह्ला ऐ ॥ 12 ॥

गासैं दियां कुंजियां बी उससै दे हथै च न ते धरती दियां बी, ओह जेहदे आस्तै चांहदा ऐ रिशकै च बढ़ोतरी करी दिंदा ऐ ते (जेहदे आस्तै चांहदा ऐ रिशकै च) तंगी करी दिंदा ऐ ओ हर इक गल्लै गी भलेआं करियै/चंगी चाल्ली जानदा ऐ ॥ 13 ॥

उस (अल्लाह) नै तुगी (असूली तौर पर) ऊरे धर्म दिन्ते दा ऐ जिसदी तकीद उसनै नूह

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً
وَلَكِنْ يَدْخُلُ مِنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ
وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُمْ مِنْ وَدِيِّ وَلَا نَصِيرٍ ①

أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۗ قَالَ اللَّهُ
هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ②

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهُ
إِلَى اللَّهِ ۗ ذَلِكُمْ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ
وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ③

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ جَعَلَ لَكُمْ
مِنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَمِنَ الْاَنْعَامِ
اَزْوَاجًا ۗ يَذُرُّكُمْ فِيهِ ۗ لَيْسَ كَمِثْلِهِ
شَيْءٌ ۗ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ④

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ يَبْسُطُ
الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۗ اِنَّهُ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيمٌ ⑤

شَرَعَ لَكُمْ مِنَ الدِّينِ مَا وَصَّىٰ بِهِ نُوحًا

1. यानी नसलें गी बधाई-बधाइयें धरती गी अबाद करदा जंदा ऐ।

गी कीती ही ते जो असें हून तेरे पर (कुरआन राहें) उतारेआ ऐ ते जिस दी तकीद असें इब्राहीम ते मूसा ते ईसा गी कीती ही ते एह ओह हा जे (अल्लाह दी) कबूलियत गी दुनियां च कायम/स्थापत करो, ते ओहदे (धर्म दे) बारे च मत-भेद कर्दे बी नेई करा करो। मुश्रिकें पर ओह (तलीम बड़ी) बोझल ऐ जेहेदे पासै तूं उनेंगी बुलाना ऐं हालांके अल्लाह दी नजरें च जेहका स्हेई ऐ। जिसी अल्लाह चांहदा ऐ ओह उसी उस (धर्म) आस्तै चुनी लैंदा ऐ ते एह तलीम उसी गै मिलदी ऐ जो खुदा दे अगमें म्हेशां झुके दा रौंहदा ऐ ॥ 14 ॥

ते मुन्करें धर्म दे बारे च मत-भेद नेई कीता पर इसदे बा'द जे उंदे कश इक कामल इलम (यानी कुरआन) आई गोआ ते एह मत-भेद उनें (कुसै तर्क संगत दलील दी ब'जा कनै नेई कीता बल्के) आपसी ईरशा-द्वेषा दी ब'जा करी कीते दा ऐ ते जेकर तेरे रब्ब पासैआ इक निश्चत समे तगर/आस्तै इक गल्ल दा फैसला' नेई होई चुके दा होंदा तां इनें मुन्करें दी बरबादी कदू दी होई चुकी दी होंदी ते ओह लोक जिनेंगी उंदे (पेहले लोकें दे) बा'द कताब दा बारस बनाया गोआ ऐ ओह इस कताबा दी ब'जा करी इक ऐसे शक्क च उलझे दे न जेहका उंदे दिलें च कलेश पैदा करा करदा ऐ ॥ 15 ॥

इस आस्तै तूं (इस्सै धर्म पासै) लोकें गी बुलाऽ। ते तूं (इस्सै चाल्ली धर्म पर) द्रिढ़ता कनै कायम/डटे दा रौह जिस चाल्ली तुगी

وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهِ
إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى وَعِيسَى أَنْ أَقِيمُوا
الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ ۗ كَبُرَ عَلَى
المُشْرِكِينَ مَا تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ ۗ اللَّهُ
يَجْتَبِي إِلَيْهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ
مَنْ يُنِيبُ ۝

وَمَا تَفَرَّقُوا ۗ الْأَمْرُ ۗ بَعْدَ مَا جَاءَهُمْ
الْعِلْمُ بَعِيًّا بَيْنَهُمْ ۗ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ
مِن رَّبِّكَ إِلَىٰ أَجْلِ مَسْئِي لَفُضِّ
بَيْنَهُمْ ۗ وَإِنَّ الَّذِينَ أُورِثُوا الْكِتَابَ مِنْ
بَعْدِهِمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ۝

فَلِذَلِكَ فَادُعُ ۗ وَاسْتَقِمُّ كَمَا أَمَرْتُ ۗ
وَلَا تَتَّبِعِ أَهْوَاءَهُمْ ۗ وَقُلْ أَمُنْتُ بِمَا

1. मतलब एह ऐ जे बक्ख-बक्ख मुन्करें बारे केई भविष्यवाणियां कुरआन मजीद ते हदीसें च मजूद न। जेकर इनेंगी हूनें तबाह करी दिता जा तां अपने-अपने समे पर इनें भविष्यवाणियों दे पूरा होने दी कोई संभावना बाकी नेई रौंहदी। इस आस्तै एह देरी कुरआन ते हदीस गी सच्चा करने आस्तै ऐ नां के उनें लोकें दे कुसै हक्क दी ब'जा करी।

आखेआ गेदा ऐ ते उंदिंयें खाहशें दा अन्सरण नेई कर ते गलाई दे जे अल्लाह नै अपनी कताबा बिच्चा जे किश उतारे दा ऐ अ'ऊं उस पर ईमान आहनना ते मिगी हुकम दिता गेदा ऐ जे अ'ऊं थुआड़े बश्कार न्यांऽ-संगत फैसला करां। अल्लाह साढ़ा बी रब्ब ऐ ते थुआड़ा बी रब्ब (ऐ) साढ़े कर्म साढ़े कन्नै न ते थुआड़े कर्म थुआड़े कन्नै (न) थुआड़े ते साढ़े बश्कार कोई झगड़ा नेई। अल्लाह असेंगी (इक रोज) किट्ठा करी देग ते उसै कश असें सारें परतोइयै जाना ऐ ॥ 16 ॥

ते ओह लोक जेहके अल्लाह दे बारे च बैहसां करदे न जिसलै जे (लोकें दा इक बड़्हा समूह) उसदी अवाज (गल्ल) कबूल करी चुके दा ऐ, उंदी दलील उंदे रब्ब दे हजूर च/ सामनै त्रौडी जाने आहली ऐ। उंदे पर गज्जब/ करोप नाजल होग ते उंदे आस्तै सख्त अजाब (निश्चत) ऐ ॥ 17 ॥

अल्लाह ऊऐ ऐ जिसनै सचाई कन्नै इस कामल कताब (कुर'आन) ते मीजान¹ (माप-दंड) गी उतारे दा ऐ ते तुसेंगी कुस (गल्ला) नै दस्सेआ ऐ जे निश्चत समां लागै आई गेदा ऐ ॥ 18 ॥

जेहके लोक एहदे पर ईमान नेई आहनदे ओह उसी तौले आहनने दे चाहवान² न ते

أَنْزَلَ اللَّهُ مِنْ كِتَابٍ ۖ وَأَمَرْتُ لِأَعْدِلَ
بَيْنَكُمْ ۗ اللَّهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۗ لَنَا أَعْمَالُنَا
وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۗ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا
وَبَيْنَكُمْ ۗ اللَّهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۖ وَاللَّهُ
الْمُصِيرُ ۙ

وَالَّذِينَ يَحَابُونَ فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ
مَا اسْتُجِيبَ لَهُ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةً عِنْدَ
رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ
شَدِيدٌ ۙ

اللَّهُ الَّذِي أَنْزَلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ
وَالْمِيزَانَ ۗ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ
قَرِيبٌ ۙ

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا ۖ

1. कुर'आन मजीद दा इक नांऽ 'मीजान' त्रक्कड़ी रक्खेआ गेदा ऐ की जे एहदे च जो गल्ल आखी जंदी ऐ ओह दलील कन्नै आखी जंदी ऐ ते दलील सारे इन्सानें बश्कार सांझी ऐ। ते जिच्चर कोई इसी झूठ साबत नेई करी देऐ उसी रद्द नेई करी सकदा। इस आस्तै कुर'आन मजीद चूं के हर गल्ल बा-दलील आखदा ऐ इस आस्तै ओह मीजान ऐ यानी जेहकी गल्ल इसदे तराजू च पूरी उतरै ऊऐ सच्ची ऐ बाकी सब गल्लां गलत न की जे ओह अकली दे तराजू च पूरियां नेई उतरदियां।
2. यानी मुक्कर लोक मनदे गै नेई जे साढ़े पर अजाब औना ऐ इस आस्तै ओह गलांदे फिरदे न जे तौले अजाब ल्याओ की जे जिसलै उंदे कश अजाब औना गै नेई ऐ तां ओह तौला आवैं जां चिरें आवैं उंदी नजरें च इक्के गल्ल ऐ।

मोमिन ते ओहदे शा डरदे रौहदे न। उनेंगी पूरा भरोसा ऐ जे ओह घटना होइयै रौहने आहली ऐ। सुनो! जेहके लोक क्यामत दे बाँरे शक्क करदे न ओह ला-इलाज गुमराही च पेदे न ॥ 19 ॥

وَالَّذِينَ آمَنُوا مَشْفُوقُونَ مِنْهَا ۗ وَيَعْلَمُونَ أَنَّهَا الْحَقُّ ۗ أَلَا إِنَّ الَّذِينَ يِمَارُونَ فِي السَّاعَةِ لَفِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝

अल्लाह अपने बंदे दे गुप्त भेद जानदा ऐ जिसगी चांहदा ऐ रोजी बधीक दिंदा ऐ ते जेहदे बाँरे चांहदा ऐ रोजी च कमी करी दिंदा ऐ। ओह बड़ी ताकत आहला (ते) समर्थ ऐ ॥ 20 ॥ (रुकू 2/3)

اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۝

जेहका कोई आखरत दी खेती चांहदा ऐ अस ओहदी (आखरत दी) खेती गी ओहदे आस्तै बधांदे जन्ने आं ते जेहका कोई इस दुनियां दी खेती चांहदा ऐ अस उसी (इससै दुनियां दी खेती बिच्चा) उस दा हिस्सा देई दिन्ने आं (यानी उसी दुनियाबी फायदा थहोई जंदा ऐ) पर आखरत च उसदा कोई हिस्सा नेई होंदा ॥ 21 ॥

مَنْ كَانَ يَرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ ۗ وَمَنْ كَانَ يَرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ نَصِيبٍ ۝

क्या उंदे आस्तै कोई ऐसे शरीक हैन जिनें उंदे आस्तै ऐसी धार्मिक शिक्षा आयोजत कीती दी ऐ जिसदा अल्लाह नै हुकम नेई दिता ते जेकर (खुदा पासेआ) आखरी फैसला नेई होई चुके दा होंदा तां उंदे बश्कार फैसला' करी दिता जंदा ते जालमें गी सच्चें गै दर्दनाक अजाब पुज्जग ॥ 22 ॥

أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ شَرَعُوا لَهُمْ مِنَ الدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَنْ بِهِ اللَّهُ ۗ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَفُضِيَ بَيْنَهُمْ ۗ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

तूं जालमें गी दिक्खना ऐं जे ओह अपने कर्में दी ब'जा करी डरदे न हालांके ओह (अजाब जिसदा बा'यदा ऐ) उंदे पर जरूर नाजल होने

تَرَى الظَّالِمِينَ مَشْفُوقِينَ ۖ وَمَا كَسَبُوا وَهُوَ وَاقَعٌ بِهِمْ ۗ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا

1. यानी उंदा सर्वनाश होई जंदा, पर अल्लाह दा अटल फैसला पवित्र कुरआन च मजूद ऐ जे जिसलै तोड़ी पूरी चाल्ली तर्क-वितर्क नेई होई जा कुसै जाति दा विनाश नेई कीता जंदा। इस आस्तै उनेंगी ढेल मिला करदी ऐ।

आहला ऐ ते ओह लोक जेहके ईमान ल्याए ते ईमान दे मताबक कर्म कीता, ओह घने बागों च होंगन (ते) उंदे रब्ब कश उंदे आस्तै ओह सब किश मजूद होग (जेहदे पर उंदी मरजी होग) इयै बड़्डी किरपा ऐ ॥ 23 ॥

इयै ओह चीज ऐ जिसदा, अल्लाह अपने मोमिन बंदें गी शुभ-समाचार दिंदा ऐ, ऐसे मोमिन बंदें गी जेहके ईमान दे मताबक कर्म बी करदे न। तू आखी दे, अऊं अपनी सेवा दे बदले च तुंदे शा किश अजर/सिला नेई मंगदा, सिवाए उस म्हब्वत दे जेहकी अपने नजदीकी रिश्तेदारें¹ कनै कीती जंदी ऐ ते जेहका शख्स कोई नेकी दा कम्म करदा ऐ अस उसदी नेकी गी ओहदे आस्तै होर ज्यादा सुंदर² बनाई दिन्ने आं अल्लाह बौहत बख्शाने आह्ला (ते) कदरदान ऐ ॥ 24 ॥

क्या ओह आखदे न जे इस शख्स (हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व.) ने खुदा पर झूठ घड़ी लैता ऐ? इस आस्तै जेकर अल्लाह चाह तां तेरे दिलै पर मोहर³ लाई देऐ। ते अल्लाह म्हेशां झूठ दा सत्यानास करदा ऐ ते सचाई गी अपने नशानें राहें स्थापत करी दिंदा ऐ। ओह दिलै दियें गल्लें गी जानदा ऐ ॥ 25 ॥

الصَّلِحَاتِ فِي رَوْحَتِ الْحَبَّتِ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝

ذَلِكَ الَّذِي يُبَيِّرُ اللَّهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۗ قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَىٰ ۗ وَمَنْ يَقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهُ فِيهَا حَسَنًا ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ شَكُورٌ ۝

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۗ فَإِنْ يَشَأِ اللَّهُ يَخْتِمْ عَلَىٰ قَلْبِكَ ۗ وَيَمَحُ اللَّهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

1. रसूल होने दे नातै एह मांग करना जे जैसा प्रेम रिश्तेदारें कनै कीता जंदा ऐ ऊऐ नेहा प्रेम मेरे कनै बी करो। आखों हर इक मोमिन गी अपने कबीलदारें शा ज्यादा अल्लाह ते ओहदे रसूल कनै प्रेम करना चाही दा, यानी ओहदी गल्ला दे मकाबले च कुसै रिश्तेदार दी गल्लै गी प्रधानता नेई देनी चाही दी। (ब्बोर आस्तै दिक्खो सूर: तौब: आयत 24)
2. यानी ओह नेकियें पर इस चाल्ली टुट्टियै पेई जंदे न जियां प्रेमी कुसै शैल चीजें पर पाँदा ऐ।
3. यानी जेकर झूठ बोलदा तां ओहदा संयम नश्ट होई जंदा ते दिलै पर मोहर लगगी जंदी पर एह ते कुरआन उतरने दे बा'द संयम च होर बी बधी गेआ। इस आस्तै बैरी दा इलजाम झूठा ऐ। मुन्करें आस्तै बी मोहर शब्द बरतोए दा ऐ, पर उल्लेख इसदा एह अर्थ ऐ जे दिलें च तकवा जां संयम दाखल नेई होई सकदा, की जे ओह सीमा शा अगें लंघी चुके दे न, पर हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. समे दे ऐसे थाहरा पर पुज्जी चुके दे न जे उंदे दिलै च किसै चाल्ली दे बुरे बिचार दाखल नेई होई सकदे। तुसै गलाए दा ऐ जे मेरा शतान बी मुसलमान बनी चुके दा ऐ। (मुस्लिम शरीफ भाग 2 सफा 474, प्रकाशित मिस्र ते मुस्नद अहमद भाग 6 सफा 115 प्रकाशित मुद्रणालय (छापाखाना) अजहर, मिस्र)।

ते ऊरे ऐ जेहका अपने बंदें दी तोबा कबूल करदा ऐ ते उंदियां गल्लियां माफ करदा ऐ ते जे किश तुस करदे ओ उसी जानदा ऐ ॥ 26 ॥

ते मोमिनें ते ईमान दे मताबक कर्म करने आहलें दियां प्रार्थनां कबूल करदा ऐ ते अपनी किरपा कनै (जिन्ने बदले दे ओह हकदार होंदे न ओहदे शा बी) बधीक उनेंगी प्रदान करदा ऐ ते मुन्करें आस्तै सख्त अजाब निश्चत ऐ ॥ 27 ॥

ते जेकर अल्लाह अपने बंदें दी रोजी च मता-ज्यादा बाधा करी दिंदा तां ओह देश च बड़ी उदंडता फलाई दिंदे, पर ओह जे किश चांहदा ऐ इक अंदाजे दे मताबक उतारदा ऐ। ओह अपने बंदें दियें परिस्थितियें गी जानने आहला ते उंदी हालत दिक्खने आहला ऐ ॥ 28 ॥

ते ऊरे ऐ जो नराशा/सोके दे बा'द बदल उतारदा/बर्हांदा ऐ ते अपनी रैहमत गी फलाई दिंदा ऐ, ते ऊरे (सच्चा) पनाह देने आहला (ते) सब तरीफे दा मालक ऐ ॥ 29 ॥

ते गासैं ते धरती दी पदायश ते जे किश इनें दौनीं दे बश्कार उसने जीवधारियें दे रूपै च फलाए दा ऐ सब ओहदे नशानें बिच्चा ऐ ते जिसलै ओह चाहग उनें सारें गी किट्ठा करने च समर्थ होग ॥ 30 ॥ (रुकू 3/4)

ते हर मसीबत जेहकी तुंदे पर औंदी ऐ ओह थुआड़े कर्म कारण औंदी ऐ ते अल्लाह थुआड़े मते-हारे कसूरें गी माफ करदा ऐ ॥ 31 ॥

وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُوا عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٢٦﴾

وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ﴿٢٧﴾ وَالْكَافِرُونَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿٢٨﴾

وَلَوْ سَـَّطَ اللَّهُ الرَّزْقَ لِعِبَادِهِ لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ وَلَكِنْ يُنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَاءُ ﴿٢٩﴾ إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿٣٠﴾

وَهُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْ سَمَاءٍ لِيُحْيِيَ الْمَيِّتَ وَمَا يَخْرُجُ مِنَ الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنَ الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنَ الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنَ الْأَرْضِ ﴿٣١﴾

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا مِنْ دَابَّةٍ ۗ وَهُوَ عَلَىٰ جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَاءُ قَدِيرٌ ﴿٣٢﴾

وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ ﴿٣٣﴾

ते तुस (अल्लाह गी) उसदे इरादे च कर्दे बी धरती पर नकाम नेई करी सकदे ते अल्लाह दे सिवा तुसेंगी कोई पनाह देने आह्ला नेई, नां कोई थुआड़ा मददगार ऐ ॥ 32 ॥

ते उसदे नशानें बिच्चा प्हाड़ें आंगर समुंदरै च चलने आहिलयां किशतियां न यानी जेहकियां बड़ियां उच्चियां-उच्चियां होंदियां न ॥ 33 ॥

जेकर ओह चाह तां हवा गी रोकी देऐ ते ओह समुंदरै दी सतह पर खड़ोती दियां रेही जान। इस च हर सबर करने आहले कदरदान आस्तै नशान न ॥ 34 ॥

जां जेकर ओह चाह तां किशती आहलें गी उंदे कर्म दी ब'जा करी तबाह करी देऐ ते ओह मते-सारे गुनाहें गी माफ करी दिंदा ऐ ॥ 35 ॥

ते ओह उनें लोकें गी जानदा ऐ जेहके सादे नशानें बारै बैहस करदे न उंदे लेई नस्सने आस्तै कोई थाहर नेई ॥ 36 ॥

ते जे किश बी तुसेंगी दिता गेदा ऐ ओह संसारक जीवन दा समान ऐ ते जे किश अल्लाह दे कश ऐ, ओह मोमिनें ते अपने रब्ब उप्पर भरोसा करने आहलें आस्तै बौहत अच्छा ते सदा आस्तै बाकी रौहने आह्ला ऐ ॥ 37 ॥

ते (उंदे आस्तै) जेहके बड्डे पापें ते बदकारी कशा बचदे न ते जिसलै उनेंगी गुस्सा औंदा ऐ तां माफ करी दिंदे न ॥ 38 ॥

ते जेहके अपने रब्ब दी अवाज कबूल करी लैंदे न ते जमात कन्ना नमाजां पढ़दे न ते उंदा

وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝

وَمِنْ آيَاتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۝

إِنْ يَشَاءُ يُسَكِّنِ الرَّيْحَ فَيُظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلَى ظَهْرِهِ ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝

أَوْ يُوبِقَهُنَّ بِمَا كَسَبُوا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيرٍ ۝

وَيَعْلَمُ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا مَا لَهُمْ مِنْ مَّحِيصٍ ۝

فَمَا أَوْتَيْنَهُمْ مِنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَى لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝

وَالَّذِينَ يَجْتَبِئُونَ كِبِيرَ الْأَثَمِ وَالْفَوَاحِشِ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ ۝

وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا

ढंग एह ऐ जे अपने सारे मसलें गी आपसी सलाह-सूतर करियै नपटाई लैंदे न ते जे किश असें उनेगी दिते दा ऐ ओहदे बिच्चा खर्च करदे न ॥ 39 ॥

ते जिसलै उंदे पर कोई जुलम होंदा ऐ तां ओह बदला ते लैंदे न (पर एह याद रखदे न) ॥ 40 ॥

जे बदी दा बदला उनी गै बदी होंदी ऐ ते जेहका माफ करी देऐ ते सुधार करना अपने सामनै रखै तां उसी सिला देना अल्लाह दा जिम्मा ऐ। ओह (खुदा) जालमें गी पसंद नेई करदा ॥ 41 ॥

ते जेहके लोक अपने उप्पर जुलम कीते जाने दे बा'द मनासब बदला लैंदे न। उंदे पर किसै किसमै दा आरोप नेई ॥ 42 ॥

अतराज सिर्फ उनें लोकें पर होंदा ऐ जेहके लोकें पर जुलम (ते हमला) करने च पैहल करदे न ते धरती पर बिना कुसै हक्र दे ज्यादती करन लगी पाँदे न। ऐसे लोकें गी दुखदाई अजाब मिलग ॥ 43 ॥

ते जिसनै सबर कीता ते माफ करी दित्ता तां (उसदा) एह (कम्म) बड़ी हिम्मत आहले कम्में बिच्चा ऐ ॥ 44 ॥ (रकू 4/5)

ते जिसगी अल्लाह गुमराह करार देऐ तां उस (अल्लाह) गी छोड़ियै उसदा कोई मददगार नेई होई सकदा ते तूं जालमें गी दिखगा जिसलै जे ओह अजाब गी औंदा दिखडन तां आखडन जे क्या इस अजाब गी परताने दा बी कोई उपाऽ है? ॥ 45 ॥

الضَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ شُورَى بَيْنَهُمْ
وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٣٩﴾

وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُونَ ﴿٤٠﴾

وَجَزَاءُ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا
وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ ۗ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ
الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾

وَلَمَنْ اتَّصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهِ فَأُولَٰئِكَ
مَاعَلَيْهِمْ مِنْ سَبِيلٍ ﴿٤٢﴾

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ
وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ
أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٣﴾

وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ إِنَّ ذَٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ
الْأُمُورِ ﴿٤٤﴾

وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَسَالَهُ مِنْهُ وَلِيٌّ مِّنْ
بَعْدِهِ ۗ وَتَرَى الظَّالِمِينَ لَمَّا رَأَوْا الْعَذَابَ
يَقُولُونَ هَلْ إِلَىٰ مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيلٍ ﴿٤٥﴾

ते तू उनेंगी दिखगा जे ओह उस अजाब दे सामने पेश कीते जांगन ते अपमान दे कारण सिर झुकाए दे नीमी नजरे दिक्खा करदे होंगन ते मोमिन आखगन जे असल घाय पाने आहले ऊपे न जिनें अपनी जानें ते अपने परिवार गी क्यामत दे दिन घाटे च पाया। कन्न खोहलिये सुनी लैओ। जालम लोक इक स्थाई अजाब च होंगन ॥ 46 ॥

ते उनेंगी पनाह देने आहला कोई नेई होग जो अल्लाह दे मकाबले च उंदी मदद करी सकै ते जिसगी अल्लाह गुमराह समझदा ऐ उसगी रस्ते पर आहने दा कोई उपाऽ नेई ॥ 47 ॥

तुस अपने रब्ब दी अवाज दा (उसी स्वीकार करदे होई) हां च जवाब देओ, इस शा पैहले जे ओह समां आई जा जिसी अल्लाह दे मकाबले च परताने आहला कोई नेई। उस दिन थुआड़े आस्तै कोई पनाह दी ज'गा नेई होग ते थुआड़े आस्तै इन्कार दी कोई गुंजैश नेई होग ॥ 48 ॥

फी बी जेकर ओह मूह मोड़ी लैन तां (मोड़दे रौहन) असें तुगी उंदे पर नगरान बनाइयै नेई भेजेआ। तैरै जिम्मै सिर्फ गल्लै गी पुजाई देना जरूरी ऐ ते जिसलै अस मनुक्खै गी अपने पासेआ कदें अपनी रैहमत पुजाने आं तां ओह ओहदे पर खुश होई जंदा ऐ ते जेकर उसदे कुसै कर्म दी ब'जा करी (साढ़े पासेआ) उसगी कोई तकलीफ पुजै तां इन्सान किरतघन बनी जंदा ऐ (ते साढ़े पैहले सारे बरदानें दा इन्कार करी दिंदा ऐ) ॥ 49 ॥

अल्लाह आस्तै गै धरती ते गासें दी बादशाहत ऐ जे किश चांहदा ऐ पैदा करदा ऐ, जिसगी चांहदा ऐ कुडियां दिंदा ऐ, जिसगी चांहदा ऐ, जागत दिंदा ऐ ॥ 50 ॥

وَتَرَاهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا خَشِيعِينَ مِنَ
الدَّلِّ يَنْظُرُونَ مِنْ طَرْفٍ حَفِيٍّ ۗ
وَقَالَ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ الْخُسْرَيْنِ الَّذِينَ
خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَأَهْلِيَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
أَلَا إِنَّ الظَّالِمِينَ فِي عَذَابٍ مُّقِيمٍ ۝

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ أَوْلِيَاءَ يَنْصُرُونَهُمْ
مِنْ دُونِ اللَّهِ ۗ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ
مِنْ سَبِيلٍ ۝

اسْتَجِيبُوا لِلرَّبِّ كَمَا مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمَ
لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ ۗ مَا لَكُمْ مِنْ مَلْجَأٍ
يَوْمَئِذٍ وَمَا لَكُمْ مِنْ نَكِيرٍ ۝

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ
حَفِظًا ۗ إِنَّ عَلَيْكَ إِلَّا الْبَلْغُ ۗ وَإِنَّا إِذَا
أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۗ وَإِنْ
نُصِبْهُمْ سَيْئَةً بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَإِنَّ
الْإِنْسَانَ كَفُورٌ ۝

لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُخَلِّقُ
مَا يَشَاءُ ۗ يُهَبُّ لِمَنْ يَشَاءُ إِنَّا ثَوَابِعُهَا
لِمَنْ يَشَاءُ اللَّهُ كُفُورٌ ۝

जां धीयां ते पुत्र दमै मिले-जुले दिंदा ऐ (यानी कुड़ियां बी पैदा होंदियां न ते जागत बी) ते जिसगी चांहदा ऐ बांझ/संढ बनाई दिंदा ऐ ओह बड़े इलम आह्ला (ते) कुदरत आह्ला ऐ ॥ 51 ॥

ते कुसै आदमी दी एह हैसियत नेई जे अल्लाह ओहदे कनै वह्नी' दे सिवा जां पड़दे दे पिच्छुआं बोलने दे सिवा कुसै होर रूपै च गल्लां करै जां (ओहदे पासे फरिशतें बिच्चा) रसूल बनाइयै भेजै जेहके उसदे हुकम कनै जो गल्ल ओह आखै ओह उसी पुजाई देऐ। ओह बड़्डी शान आह्ला (ते) हिक्रमतें दा वाकफ ऐ ॥ 52 ॥

ते इसै चाल्ली असें तेरे पासै अपने हुकम कनै कलाम नाजल कीते दा ऐ तूं नथा जानदा जे कताब केह चीज ऐ ते नां गै एह जानदा हा जे ईमान केह चीज ऐ पर असें उसी (तेरी वह्नी गी) नूर बनाई दिता ऐ ओहदे राहें अपने बंदें बिच्चा जिसी चाहने आं अस हदायत देई दिने आं ते तूं सव्वे गै लोकें गी सिद्धै रस्तै पा करना ऐ ॥ 53 ॥

अल्लाह दे रस्ते पासै जो उसदा बी मालक ऐ जो गासें च ऐ ते उसदा बी जो धरती च ऐ। सुनो! सब गल्लां खुदा कश गै जंदिंयां न (यानी सारी गल्लें दी शुरुआत ते अन्जाम खुदा दे गै हल्यै च ऐ) ॥ 54 ॥ (रुकू 5/6)

أَوَيَّرْوَجْهَهُمْ ذُكْرًا أَوْ إِنَاثًا ۖ وَيَجْعَلُ
مَنْ يَشَاءُ عَاقِبَتَهُمَا ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿٥١﴾

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحِيًّا
أَوْ مِنْ وَرَائِ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا
فَيُوحِي بِإِذْنِهِ مَا يَشَاءُ ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ
حَكِيمٌ ﴿٥٢﴾

وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحًا مِمَّنْ
أَمْرِنَا ۗ مَا كُنْتَ تَدْرِي مَا الْكِتَابُ وَلَا
الْإِيمَانُ وَلَكِنْ جَعَلْنَاهُ نُورًا نَهْدِي بِهِ
مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِنَا ۗ وَإِنَّكَ لَتَهْدِي
إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٣﴾

صِرَاطِ اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ
وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ أَلَا إِلَى اللَّهِ تَصِيرُ
الْأُمُورُ ﴿٥٤﴾

०००

1. 'वह्नी' दा स्हेई अर्थ ऐ-ऐसा संकेत जो तौले कीता जा ते उसदा ज्ञान दूरै गी नेई होई सकै। अल्लाह दी वाणी गी इस आसतै वह्नी आखदे न जे एह तौले उतरदी ऐ उसदे सिवा कुसै गी ओहदा ज्ञान नेई होई सकदा ऐ हां! उस शख्स गी होई सकदा ऐ जिसी अल्लाह आपूं उस कनै शामल करी लै। इस आयत च अल्लाह नै अपने भगत कनै गल्ल करने दे त्रै ढंग दस्से दे न-(क) अल्लाह दा कलाम सिद्धा बंदे पर उतरै। (ख) अल्लाह पासेआ शब्दें दे रूपै च नेई उतरै बल्के बिसे गी विवरणात्मक दिशतें दे रूपै च जां सधारण दिशतें च दस्सेआ जा। इसै गी इस आयत च 'पड़दे दे पिच्छुआं' शब्दें च बर्णत कीता गेदा ऐ यानी असल मकसद पड़दे दे पिच्छे रौहदा ऐ। (ग) अल्लाह अपनी वाणी फरिशतें पर उतरै ते फरिस्ता उसी भगतें तक पुजाऽ।

سُورَةُ الرَّخْرِفِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ تَسْعُونَ آيَةً وَ سَبْعَةٌ رُّكُوعَاتٍ

सूर: अल्-जुःफ़

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां नब्बै आयतां ते सत्त रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

हमीद ते मजीद (खुदा पासेआ एह सूर: नाज़ल
होई दी ऐ) ॥ 2 ॥

حَمْدٌ ①

अस इस कताब दी कसम खन्ने आं (यानी
इसी बतौर शहादत दे पेश करने आं) जेहकी
अपने बिशें गी खोहलियै ब्यान करने आहली
ऐ ॥ 3 ॥

وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ①

وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ①

असैं इस कताब गी कुर'आन बनाया ऐ (ते
कुर'आन बी) ऐसा, जेहका अरबी' च ऐ तां
जे तुस समझो ॥ 4 ॥

إِنَّا جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُونَ ①

ते एह (यानी कुर'आन) उम्मुल्किताब' च ऐ
ते साढ़े लागै बड़्डी शान आहला (ते) बड़ी
हिक्मतें आहला ऐ ॥ 5 ॥

وَإِنَّهُ فِي قَدَرٍ أَمْرِ الْكِتَابِ لَدَيْنَا لَعَلَّ
حَكِيمٌ ①

1. 'कुर'आन' शब्द इस आस्तै बरतेआ गेदा ऐ जे इस च एह संकेत ऐ जे एह कताब बार-बार पढ़ी जाग ते 'अरबिय्यन' शब्द दा इस पासैं संकेत कीता गेदा ऐ जे इसी पढ़ना बड़ा सीखा होग ते इसदा भाव समझना बी सखल्ला होग, की जे एहदी हर गल्ल तर्क संगत ऐ।
2. मूल शब्द 'उम्मुल्किताब' दा अर्थ ऐ कताब दी मां। इस थाहरा पर इक रूपक दा प्रयोग कीता गेआ ऐ जे सारे धर्म शास्तर कुसै नां कुसै सिद्धांत दे अधीन होंदे न ते ओह सिद्धांत धर्म-ग्रंथ आस्तै माता दे रूपै च होंदा ऐ। जिस चाल्ली इक जनानी मानव जाति आस्तै मां होंदी ऐ तां इससै चाल्ली एह कुर'आन इनें अर्थ च 'उम्मुल्किताब च ऐ' जे अल्लाह नै सिद्धांतक रूपै च जो कताबां संसार च उतारनियां हियां उंदे च एह कुर'आन शामिल हा। आखो जे अनादि काल धमां एह गल्ल अल्लाह दे सामनै ही जे ओह संसार गी हदायत दा रस्ता दस्सने आस्तै कुर'आन गी उतारग।

क्या अस थुआड़े सामने जिकर (यानी कताब) दा प्रचार करना सिर्फ़ इस आसतै छोड़ी देचै जे तुस हद्द शा बधी दी कौम ओ ॥ 6 ॥

ते असें पैहली कौमें च बड़े हारे नबी भेजे हे ॥ 7 ॥

ते उंदे कश कोई नबी नथा औँदा जिसदा ओह मौजू नथे दुआंदे (फी बी असें उंदे पासै वह्नी नाज़ल कीती) ॥ 8 ॥

ते असें उंदे शा ज्यादा ताकतवर लोकें गी (इन्कार दी ब'जा करी) तबाह करी दिता हा (फी उनें गी तबाह करने च केह दिक्कत ऐ?) ते इनें लोकें दे सामने पैहले लोकें दे हालात बीती गै चुके दे न ॥ 9 ॥

ते जेकर तू उंदे शा पुच्छें जे गासें ते धरती गी कुस नै पैदा कीता ऐ तां ओह आखगन गालिब (ते) बौहत इलम रक्खने आहली हस्ती नै उनें गी पैदा कीते दा ऐ ॥ 10 ॥

उस (हस्ती) नै जिसनै धरती गी थुआड़े आसतै बिस्तरा बनाया ते उस च थुआड़े आसतै रस्ते बनाए तां जे तुस हदायत हासल करी सको ॥ 11 ॥

ते उससें नै बदलें चा इक अंदाजे मताबक पानी उतारेआ ऐ फी ओहदे राहें इक मुरदा/खुशक धरती गी जीँदा/हरा-भरा करी दिता ऐ इससें चाल्ली तुस बी (जीँदे करियै) कड्डे जागे ओ ॥ 12 ॥

ते उससें नै थुआड़े आसतै हर किसमे दे जोड़े पैदा कीते दे न ते उससें चाल्ली चौखर पैदा कीते दे न ते किशितयां बनाई दियां न जिंदे पर तुस सुआर होंदे ओ ॥ 13 ॥

أَفَضْرِبُ عَنْكُمْ الذِّكْرَ صَفْحًا أَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِينَ ①

وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِنْ نَبِيِّ فِي الْأَوَّلِينَ ②

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ③

فَأَهْلَكْنَا أَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَمَضَىٰ مَثَلُ الْأَوَّلِينَ ④

وَالَّذِينَ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ⑤

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ⑥

وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً يُقَدِّرُ فَأَنْشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَيْتًا ⑦ كَذَلِكَ تُخْرَجُونَ ⑧

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَرْوَاحَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرَكِبُونَ ⑨

जिसलै तुस चंगी चाल्ली उंदे च बेही जाओ, तां फी अपने रब्ब दी नैमत गी याद करो ते एह आखो जे पवित्र ऐ ओह खुदा जिसनै असेंगी उंदे पर काब्ज बनाया ऐ हालांके अस अपनी ताकत कनै उनेंगी अपने अधीन नथे करी सकदे ॥ 14 ॥

ते अस सच्चें गै इक दिन अपने रब्ब कश परतियै जाने आहले आं ॥ 15 ॥

(पर हाल एह ऐ जे) उनें उस (खुदा) आस्तै उसदे बंदें बिच्चा इक हिस्सा (यानी धीयां) तजबीज/निश्चत करी रखवे दा ऐ। इन्सान सच्चें गै जाह्रा-बाह्रा किरतघन ऐ ॥ 16 ॥ (रुकू 1/7)

(उंदे शा पुच्छो ते सेही जे) क्या उसनै अपनी मख्लूक बिच्चा अपने आस्तै धीयां ते बनाई लैतियां ते तुसेंगी पुत्रें दा बरदान दिता? ॥ 17 ॥

ते जिसलै उंदे बिच्चा कुसै गी उस चीजै दी खबर दिती जंदी ऐ जिस गी ओह रहमान (खुदा) कनै सरबंधत करदा ऐ तां उसदा मूह काला होई जंदा ऐ ते ओह गुस्से कनै तमशी पौदा ऐ ॥ 18 ॥

क्या ओह जो गैहनें-बंधें च पलदी ऐ ते झगड़े च अपने दिलै दी गल्ल खुल्लियै नेई आखी सकदी (ओह अल्लाह दे हिस्से च औंदी ऐ ते गालिब रौहने आह्ला मर्द इन्सान दे हिस्से च) ॥ 19 ॥

ते उनें फरिश्तें गी जो रहमान (खुदा) दे बंदे न जनानियां करार देई दिते/बनाए दा ऐ क्या ओह उंदी पदायश मौकै मजूद हे? जेकर एह

لَسْتَوْا عَلَى ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذَكَّرُوا نِعْمَةً رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ﴿١٤﴾

وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ﴿١٥﴾

وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا ۗ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ﴿١٦﴾

أَمْ اتَّخَذَ مَا يَخْلُقُ بِنْتٍ وَأَصْفُكُمْ بِالْبَنِينَ ﴿١٧﴾

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِمَا صَرَبَ لِلرَّحْمَنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿١٨﴾

أَوْ مَنْ يُنشِئُوا فِي الْجَلِيلِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرِ مُبِينٍ ﴿١٩﴾

وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبُدُ الرَّحْمَنِ إِنَاثًا ۗ أَشْهَدُوا خَلْقَهُمْ

गल्ल ऐ तां जरूर उंदी शहादत लिखी जाग ते उंदे शा (क्यामत आहलै रोज) इस बारे सुआल कीता जाग ॥ 20 ॥

ते ओह गलांदे न जेकर रहमान (खुदा) चांहदा तां अस उस दे सिवा दूए उपास्यं दी उपासना नेई करदे। एह गल्ल ओह सिर्फ ढकौसले कन्नै आखदे न। इस दा उनेंगी स्हेई इलम हरगज हासल नेई ॥ 21 ॥

क्या असें उनेंगी इस (कुरआन) शा पैहलें कोई ऐसी कताब दिती दी ऐ (जेहदे च एह गल्ल लिखी दी ऐ) जे ओह ओहदे राहें दलील पकड़ा करदे न? ॥ 22 ॥

ऐसा नेई, बल्के सचाई एह ऐ जे ओह लोक इस गल्ला पर हठ करदे न जे असें अपने पुरखें गी इक पंथ पर चलदे दिक्खेआ ते अस उंदे गै पद्-चि'नें पर चलदे जागे ॥ 23 ॥

ते (हे रसूल!) तेरे शा पैहलें असें कुसै बस्ती च रसूल नेई भेजेआ ते इंदे आंगर गै उसदे मीर लोकें एह नेई आखी दिता होऐ जे असें अपने पुरखें गी इक मत पर चलदे दिक्खेआ ते अस उंदे गै पद्-चि'नें पर चलगे ॥ 24 ॥

(इस पर हर रसूल नै) जवाब दिता जे क्या/जेकर अ'ऊं थुआड़े कश एहदे शा बेहतर तलीम लेई आमां जेहदे पर तुसें अपने पुरखें गी दिक्खेआ हा (तां बी तुस उससें पर हठ करदे रौहगे ओ?) तां उनें जवाब दिता जे जिस तलीम कन्नै तुगी भेजेआ गेदा ऐ, अस ओहदे इन्कारी आं! ॥ 25 ॥

ते असें उंदे कन्नै बदला लैता। इस आसतै दिक्खी लैओ जे झुठलाने आहलें दा केह अन्जाम होआ? ॥ 26 ॥ (रकू 2/8)

سَكَّتَبْ شَهَادَتَهُمْ وَيَسْأَلُونَ ①

وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمَنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ ۗ
مَا لَهُمْ بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ
إِلَّا يَخْرُصُونَ ①

أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا مِنْ قَبْلِهِ فَهُمْ بِهِ
مُتَسَمِّكُونَ ①

بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا
عَلَىٰ الْآثَرِهِمْ مُهْتَدُونَ ①

وَكَذَلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ
مِنْ نَذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا وَجَدْنَا
آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ الْآثَرِهِمْ
مُقْتَدُونَ ①

قُلْ أَلَوْ جِئْتُمْ بِأَهْدَىٰ وَمَا وَجَدْتُمْ
عَلَيْهِ آبَاءَكُمْ ۖ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ
بِهِ كَافِرُونَ ①

فَأَنْتُمْ مِمَّنْهُمْ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُكَذِبِينَ ①

ते (याद करो) जिसलै इब्राहीम नै अपने पिता
गी ते अपनी कौम गी गलाया हा जे जिंदी
(हस्तियें दी) तुस अबादत करदे ओ, अ'ऊं
उंदे शा विरक्त आं ॥ 27 ॥

सिवाए उस (अल्लाह) दे जिसनै मिगी पैदा
कीते दा ऐ, ते ओह मिगी सच्चें गै हदायत देग
॥ 28 ॥

ते इब्राहीम नै उस तलीम गी अपनी संतान
च इक मुस्तकिल/पक्की यादगार दे रूपै च
छोड़ेआ तां जे ओह (शिकं थमां) बाज आई
जान ॥ 29 ॥

सचाई एह ऐ जे में उनें लोके गी ते उंदे
पुरखें गी दुन्याबी फायदा पुजाया इत्थें तक
जे उंदे कश हक़ बी आई गेआ ते खोहलियै/
तफसील कनै ब्यान करने आहला रसूल बी
आई गेआ ॥ 30 ॥

ते जिसलै उंदे कश हक़ आई गेआ तां उनें
गलाया जे एह ते सिर्फ़ मन-मोह्नियां गल्लां
न ते अस इनेंगी मन्नने शा इन्कार करने आं
॥ 31 ॥

ते एह बी इतराज कीता जे एह कुरआन दौनीं
बड्डे-बड्डे शैहरें बिचा कुसै बड्डे आदमी'
पर की नाज़ल नेई होआ ॥ 32 ॥

क्या ओह तेरे रब्ब दी रैहमत गी तकसीम
करदे न? (एह कियां होई सकदा ऐ?) असें
उंदे बशकार दुनियाबी जिंदगी कनै तल्लक
रक्खने आहले रोजी दे समान बंडे न ते उंदे

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ إِنَّنِي
بِرَاءٌ وَإِنَّمَا تَعْبُدُونَ ۝

إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ۝

وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقْبِهِمْ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ۝

بَلْ مَتَّعْتُ هَؤُلَاءِ وَأَبَاءَهُمْ حَتَّى
جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُولٌ مُّبِينٌ ۝

وَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ
وَإِنَّا بِهِ كَافِرُونَ ۝

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ هَذَا الْقُرْآنُ عَلَى رَجُلٍ
مِّنَ الْقُرَيْشِيِّينَ عَظِيمٍ ۝

أَهُمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ نَحْنُ
قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ

1. यानी हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व.। इक अनाथ पर की उतरेआ? जेकर असें (कौम दे सरदारें) गी मनोआना हा तां तायफ़ ते मक्का दे कुसै बड्डे रेइस पर एह कलाम नाज़ल होंदा। एह पुराना इतराज ऐ ते अजतक्क लाया जा करदा ऐ। इस युग दे लोक बी इयै इतराज सुधारके पर लादे न।

बिच्चा केइयें गी दूए लोकेँ पर प्रधानता दित्ती ऐ जेहदे नतीजे च उंदे बिच्चा (किश बड्डे) लोक दूए किश (निक्के लोकेँ गी) नीच समझन लागदे न ते तेरे रब्ब दी रैहमत उस सारी धन-दौलत शा अच्छी ऐ जेहकी ओह किट्ठी करदे न ॥ 33 ॥

ते जेकर एह खौफ नेई होंदा जे सारे दे सारे लोक इक्क गै चाल्ली दे होई जांगन, तां अस रहमान (खुदा) दा इन्कार करने आहले लोकेँ दी छत्तेँ ते सीदियें गी चांदी दा बनाई दिंदे जिंदे पर ओह चढ़दे न ॥ 34 ॥

ते उंदे घरेँ दे दरोआजेँ गी बी (चांदी दा बनाई दिंदे) ते (उस्सेँ चाल्ली) ओह सिंहासन जिंदे पर ओह तकिये लांदे न (उनेँगी बी चांदी दा बनाई दिंदे) ॥ 35 ॥

बल्के सुन्ने दा बनाई दिंदे, पर एह सब किश संसारक जिंदगी दा समान ऐ ते आखरत (दा अराम) तेरे रब्ब दे फेसले दे मताबक संयमियें आसै गै मखसूस ऐ ॥ 36 ॥ (रकू 3/9)

ते जो कोई रहमान (खुदा) दे जिकर शा मूंह फेरी लेंदा ऐ अस ओहदे पर शतानी खसलत/गुणेँ आहले गी नियुक्त करी दिन्ने आं ते ओह ओहदा हर बेले दा साथी होई जंदा ऐ ॥ 37 ॥

ते ओह (शतान) उनेँगी साफ (ते सच्चे) रस्ते थमां रोकदे रौंहदे न। पर इसदे बावजूद बी ओह समझा करदे न जे ओह सच्चे रस्ते पर चला करदे न ॥ 38 ॥

पर (एह उस्सेँ बेले तक होंदा ऐ जिन्ने चिरेँ तगर ऐसा इन्सान जींदा रौंहदा ऐ) जिसलै ओह साढ़ै कश आई जंदा ऐ तां (सारी गलत

دَرَجَاتٍ يَتَّخِذُ بَعْضُهُم بَعْضًا سُجْرِيًّا ۗ
وَرَحْمَتِ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٣٦﴾

وَلَوْلَا أَنْ يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً
لَجَعَلْنَا لِمَنْ يَكْفُرُ بِالرَّحْمَنِ لِيُؤْتِيَهُمْ
سُقْمًا مِّنْ فَصَّةٍ وَ مَعَارِجَ عَلَيْهَا
يُظْهَرُونَ ﴿٣٤﴾
وَلِيُؤْتِيَهُمْ آبَآبًا وَ سُرْرًا عَلَيْهَا
يَتَّكِفُونَ ﴿٣٥﴾

وَرُحْرُقًا ۗ وَإِنْ كُلُّ ذَلِكَ لَمَّا مَتَاعُ
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۗ وَالْآخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ
لِلْمُتَّقِينَ ﴿٣٦﴾
وَمَنْ يَعْتَسِ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمَنِ نُقِصَّ لَهُ
سَيْطَانًا فَهُوَ لَهُ قَرِينٌ ﴿٣٧﴾

وَأَنَّهُمْ لِيَصُدُّوهُمْ عَنِ السَّبِيلِ
وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ مُّهْتَدُونَ ﴿٣٨﴾

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ نَاقَالَ يَلَيْتُ بَيْنِي وَبَيْنَكَ
بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِينُ ﴿٣٩﴾

फैहमियां दूर होई जंदियां न ते ओह) आखन लगदा ऐ काश! मेरे च ते (हे शतान) तेरे च मशरक ते मगरब दा फासला होंदा। इस आस्तै (मनुक्खै दी शहादत थमां साबत होई गेआ ऐ जे) ओह (यानी शतान) बौहत बुरा साथी ऐ ॥ 39 ॥

ते (अस उस दिन इन्सानें गी आखगे जे) जिसलै तुस जुलम करी चुके दे ओ तां तुसंगी एह गल्ल किश फायदा नेई देई सकदी, जे तुस ते तुसंगी बकहाने आहले अजाब च शरीक होऐ ॥ 40 ॥

क्या तू बोले गी सुनाई सकना ऐं ते अ'ने गी रस्ता दस्सी सकना ऐं ते इसै चाल्ली जो जाहरी-बाहरी गुमराही च पेदा ऐ (उसी रस्ता दस्सी सकना ऐं?) ॥ 41 ॥

इस आस्तै जेकर अस तुगी इस संसार थमां लेई बी जाचै (यानी मौत देई देचै) तां बी अस उंदे कनै बदला जरूर लैगे ॥ 42 ॥

जां अस तुगी ओह चीज दस्सी देगे जेहदा असें उंदे कनै बा'यदा' कीते दा ऐ। (याद रक्खो) अस उंदे पर पूरा-पूरा अधिकार रक्खने आं ॥ 43 ॥

ते तू उस कलाम गी जो तेरे पासै वह्वी/नाजल कीता गेदा ऐ मजबूती कनै पकड़ी लै की जे तू सिद्धे रस्ते पर ऐं ॥ 44 ॥

ते एह (कलाम) तेरे आस्तै बी शरफ/सम्मान ते इज्जत दा मूजब ऐ ते तेरी कौम आस्तै बी, ते तुंदे शा जरूर थुआड़े कर्म बाँरे सुआल कीता जाग ॥ 45 ॥

وَلَنْ يَنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ إِذْ ظَلَمْتُمْ أَنْكُمُ فِي
الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ①

أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ أَوْ تَهْدِي الْعُمْىَ
وَمَنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ①

فَأَمَّا نَذَبْنَا بِكَ فَأَنَا مِنْهُمْ
مُتَقِيمُونَ ①

أَوْ تُرِيْنَاكَ الْبَدِي وَعَدْنَهُمْ فَأَنَا عَلَيْهِمْ
مُقْتَدِرُونَ ①

فَأَسْمَسِكَ بِالْبَدِي أَوْ حَىٰ إِلَيْكَ ① إِنَّكَ
عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ①

وَإِنَّهُ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ① وَسَوْفَ
تَسْأَلُونَ ①

1. मुन्करें पर तेरे जीवन च ओह अजाब आई जांगन जिंदा बा'यदा कीता गेदा ऐ ते तेरे मरने परेंत बी। दीनीं गल्लें पर अल्लाह अधिकार रक्खदा ऐ।

ते जिन्हें रसूलें गी असें तेरे शा पैहलें भेजेआ, उंदे शा पुच्छा क्या असें रहमान (खुदा) दे सिवा दूए उपास्यें दा बी (अपनी कताबें च) जिकर कीते दा हा? जिंदी अबादत कीती जंदी ही? ॥ 46 ॥ (रुकू 4/10)

ते असें मूसा गी अपने नशान देइयै फिरऔन ते उसदे दरबारियें कश भेजेआ हा ते उसनै (उंदे कश जाइयै) गलाया हा जे अऊं सारे ज्हांनें दे रब्ब पासेआ रसूल बनियै आया आं ॥ 47 ॥

फी जिसलै ओह उंदे कश साढे नशान लेइयै आया तां ओह सुनदे गै ओहदा मौजू लैन लगी पे ॥ 48 ॥

ते अस उनेंगी जो नशान बी दसदे हे ओह अपने शा पैहले नशान थमां बड़डा होंदा हा ते असें उनेंगी अज़ाब च ग्रसी लैते दा हा तां जे ओह (अपने बुरे कर्मै शा) परतोई जान ॥ 49 ॥

बावजूद इसदे ओह इयै आखदे जंदे हे जे जे जादूगिर! अपने रब्ब दे सामनै साढे आस्तै उनें सारे बा'यदें दा बास्ता देइयै दुआऽ कर जो (बा'यदे) उसनै तेरे कनै कीते दे न (जेकर अज़ाब टली गोआ) तां अस जरूर हदायत पाई लैगे ॥ 50 ॥

फी जिसलै असें उंदे शा अज़ाब टलाई दिता तां ओ झट्ट गै प्रतिज्ञा भंग करना लगी पे ॥ 51 ॥

وَسَأَلَ مَنْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مَنْ رُسُلَنَا
أَجَعَلْنَا مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ آلِهَةً
يُعْبَدُونَ ﴿٤٦﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ
فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾

فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِآيَاتِنَا إِذَا هُمْ مِنْهَا
يَضْحَكُونَ ﴿٤٨﴾

وَمَا تَرِيَهُمْ مِنْ آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ
أُخْرَاهَا وَأَحْذَرُهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ﴿٤٩﴾

وَقَالُوا يَا أَيُّهُ الشُّحْرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا
عَهَدْتَ عِنْدَكَ إِنَّا لَمُهْتَدُونَ ﴿٥٠﴾

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ
يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٥١﴾

1. इस दा मतलब एह ऐ जे जेहकी तलीम पैहले रसूलें गी दिती गोदी ही ओहदे बारै मुन्करें गी सुआल करो जे थुआड़े कश ओह तलीमां मजूद न? क्या उंदे च इक शा ज्यादा खुदाएं दा जिकर हैं? जेकर नईं तां तुस अपने रसूलें खलाफ तलीम की फलाऽ करदे ओ?

ते फिरऔन नै अपनी कौम च एह अलान कीता-जे हे मेरी कौम! क्या मिस्र दी व्हूमत मेरे कब्जे च नेई? ते एह दरेआ (दिक्खो) मेरे-अधीन बगा करदे न, क्या तुस दिखदे नेई? ॥ 52 ॥

क्या अ'ऊं उस शख्स कनै, जो तुच्छ ऐ तफसील कनै गल्ल बी नेई करी सकदा, अच्छा आं (जां ओह अच्छा ऐ?) ॥ 53 ॥

(ते जेकर ओह अच्छा ऐ) तां उस पर सुनै दे कंगन की नेई उतरे, जां ओहदे कनै फरिश्ते की नेई आए जेहके ओहदे आसै-पासै (ओहदी प्रहाजत आसै) ज'मा होन? ॥ 54 ॥

ते इस चाल्ली उसनै अपनी कौम गी बक्हाई दिता ते उंन ओहदी गल्ल मन्नी लैती, ओह लोक अल्लाह दी प्रतिज्ञा गी भंग करने आहले हे ॥ 55 ॥

फी जिसलै उंन असेंगी गुस्सा चढ़ाया तां असें उंदे कनै बदला लैता ते उंन सारे गी गरक करी दिता ॥ 56 ॥

ते असें उंन गी (इक होई-बीती दी) कहानी बनाई दिता। एहदे अलावा बा'द च औने आहलें आसै इक इबरत/सबक दा जरीया (बी) बनाई दिता ॥ 57 ॥ (रुकू 5/11)

ते जिसलै बी मर्यम दे पुत्तरे गी मसाल दे तौरै पर पेश कीता जंदा ऐ तां तेरी कौम उस (गल्ला) पर शोर' पान लगी पाँदी ऐ ॥ 58 ॥

وَنَادَى فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَهَذِهِ الْأَنْهَارُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِي ۚ أَفَلَا تبصرون ﴿٥٢﴾

أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِّنْ هَذَا الَّذِي هُوَ مِثْلِي وَلَا يُكَادُ يَبِينُ ﴿٥٣﴾

فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسُورَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلَايِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ﴿٥٤﴾

فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ فَاطَاعُوهُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَسِيقِينَ ﴿٥٥﴾

فَلَمَّا أَسَفُونَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٦﴾

فَجَعَلْنَاهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا لِلْآخِرِينَ ﴿٥٧﴾

وَلَمَّا ضَرَبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذْ أَقَامَكَ مِنْهُ يَصِدُونُ ﴿٥٨﴾

1. जिसलै ओह मर्यम दे पुत्तर दे दबारा औने बारै कुर'आन च पढ़े न तां भी शोर पाई दिंदे न जे क्या ओह साहे उपास्यें शा अच्छा ऐ जे साहे उपास्यें गी ते ज्हनम च सुट्टेआ जंदा ऐ ते उसी संसार आसै बापस आहनेआ जंदा ऐ? हालांके दौनीं घटनें च जमीन-असमान दा फर्क ऐ। मसीह आपूं अपने आपै गी मनुख मनदा ऐ ते ओह इक सदाचारी व्यक्ति हा उसदा मकाबला मुश्किं जां उंदे सरदारें कनै नेई होई सकदा।

ते एह बी गलान लगी पौंदी ऐ जे क्या साढ़े उपास्य' चंगे न जां ओह (यानी ईसा) चंगा ऐ? ओह तेरे सामनै एह गल्ल सिर्फ झगड़ा करने दे मकसद कनै करदे न, असल गल्ल एह ऐ जे इस कौम च सचाई दे खलाफ बैहसां करने दी आदत ऐ ॥ 59 ॥

ओह (यानी ईसा) ते सिर्फ इक बंदा हा जेहदे पर असें ईनाम कीता हा ते उसी बनी इस्राईल आस्तै बतौर इबरत बनाया हा ॥ 60 ॥

ते जेकर अस चांहदे² तां तुंदे बिच्चा बी किश लोकें गी फरिश्ते बनाई दिंदे जो धरती च थुआड़ी ज'गा अबाद होंदे ॥ 61 ॥

ते ओह (यानी कुरआन) आखरी घड़ी दा इलम³ बख्खादा ऐ इस आस्तै तुस उस घड़ी दे बाँरे शक नई करो ते (हे लोको!) तुस मेरा अनुसरण करो, इयै सिद्धा रस्ता ऐ ॥ 62 ॥

सचाई शा दूर होई जाने आहला शख्स तुसें गी सिद्धे रस्ते थमां नई रोकै, ओह थुआड़ा जाहय-बाहरा दुश्मन ऐ ॥ 63 ॥

ते जिसलै ईसा⁴ (अपने दूए प्रादुर्भाव/अवतार मौकै) नशान कनै लेइयै औग, तां ओह

وَقَالُوا إِنَّا هَتَأْتِ أَحْيَاءَ مَمَاتٍ وَمَا صَرَبُوا
لَكَ إِلَّا جَدَلًا بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُونَ ﴿٥٩﴾

إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ
مَثَلًا لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٦٠﴾

وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَلَائِكَةً فِي
الْأَرْضِ يَخْلُقُونَ ﴿٦١﴾

وَإِنَّهُ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرْنَ بِهَا
وَاتَّبِعُونِ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦٢﴾

وَلَا يَصُدُّكُمْ الشَّيْطَانُ إِنَّهُ لَكُمْ
عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٦٣﴾

وَلَمَّا جَاءَ عِيسَى بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ

- 1 'साढ़े उपास्य' दा मतलब ओह महान विभूतियां न जिनेंगी ओह अल्लाह थमां बद्ध महानता दिंदे न, भागें ओह उंदे सामनै नतमस्तक नई होंदे होन।
- 2 हजरत मसीह पर फ़रिश्ते उतरे की जे ओह अध्यात्मक रूपै च फ़रिश्ता बनी गोआ हा। जेकर हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. दे जां थुआड़े बा'द आहले लोक बी मसीह दा सरूप बनी जंदे तां उंदे पर बी फ़रिश्ते उतरन लगी पौंदे। एहदे च र्हानगी आहली कोई गल्ल नई। मजूदा युग च मुसलमान सिर्फ हठ कनै ऐसा होई सकने दा इन्कार करा करदे न।
- 3 अंतम घड़ी यानी क्यामत दा ज्ञान प्रदान करने दा एह अर्थ ऐ जे संसार च जेहकियां बडिडयां तबाहियां होने आहलियां न उंदा जिकर पवित्र कुरआन च है। मुसलमानें दे शुरुआती ते अंतम पतन दा बी ते ईसाइयें दे शुरुआती ते अंतम सर्वनाश दा बी। इसै चाल्ली दूई महान जातियें दी तबाही दा बी जिकर ऐ।
- 4 इस ज'गा पर हजरत ईसा दे दूई बार औने दा बर्णन ऐ, की जे इस आयत शा पैहलें आहली आयत च बी इसै दा ब्यौरा ऐ।

आखग जे अ'ऊं थुआड़ै कश हिक्मत सरबंधी गल्लां लेइयै आया आं ते इस आस्तै आए दा आं जे तुसंगी ओह गल्लां समझाई देआं जिंदे बाँरे तुस मत-भेद रखदे हे। इस आस्तै अल्लाह दा संयम अखत्यार करो ते मेरी अधीनता कबूल करो ॥ 64 ॥

अल्लाह गै मेरा बी ते थुआड़ा बी रब्ब ऐ। इस आस्तै उस दी अबादत करो। इयै सिद्धा रस्ता ऐ ॥ 65 ॥

इस आस्तै एह सुनियै उसदे मखालफ गरोह आपस च केई चाल्ली दियां गल्लां करन लगी पे इस आस्तै जिनें लोकें जुलम कीता उंदे आस्तै दुखदाई समे दे अज़ाब राहें उंदी तबाही निश्चत ऐ ॥ 66 ॥

ओह सिर्फ क्यामत दा इंतजार करा करदे न जेहदे आस्तै अचानक औना निश्चत ऐ, पर ओह इसी समझदे नेई ॥ 67 ॥

मते-सारे दोस्त उस ध्याड़ै आपस च इक-दूए दे दुश्मन होंगन सिवाए संयमियें दे ॥ 68 ॥
(रुकू 6/12)

(जे उनेंगी खुदा आखग) हे मेरे बंदो! अज्ज तुसें गी कुसै किसमे दा खौफ नेई ते नां गै कुसै पिछली गलती दे शोक च तुस ग्रसे जाई सकदे ओ ॥ 69 ॥

(एह इनाम पाने आहले ओह लोक होंगन) जेहके साढ़ी आयतें पर ईमान ल्याए हे ते जिनें फरमांबरदारें आहली जिंदगी बसर कीती ही ॥ 70 ॥

(अल्लाह उनेंगी आखग) तुस बी ते थुआड़े साथी बी खुशियां मनांदे होई जन्नत च दाखल होई जाओ ॥ 71 ॥

جُنُكُم بِالْحِكْمَةِ وَلَا بَيْنَ لَكُمْ بَعْضٌ
الَّذِي تَحْتَفُونَ فِيهِ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ①

إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ هَذَا
صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ②

فَاخْتَلَفَ الْأَحْرَابُ مِنْ بَيْنَهُمْ ③ فَوَيْلٌ
لِّلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابِ يَوْمِ إِلِيمٍ ④

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ
بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ⑤

الْأَخِلَاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ
إِلَّا الْمُتَّقِينَ ⑥

يُعَادِلُوا خَوْفَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنْتُمْ
تَحْزَنُونَ ⑦

الَّذِينَ آمَنُوا بِالْبَيِّنَاتِ وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ⑧

أَدْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ
تَحْبَرُونَ ⑨

उंदे कश सुन्ने दे थाल ते कटोरे बार-बार ल्यांदे जांगन ते उस (जन्मत) च जे किश दिल चाहग ते अक्खीं पसंद करंगन, मजूद होग ते (गलाया जाग जे) तुस एहदे च म्हेशां बास करगे ओ ॥ 72 ॥

ते एह ओह जन्मत होग जिसदा बारस तुसैं गी थुआड़े कर्मैं दे कारण बनाया जाग ॥ 73 ॥

थुआड़े आस्तै ओहदे च मते-हारे फल मजूद होंगन जिंदे बिच्चा तुस जरूरत मताबक खागे ओ ॥ 74 ॥

मुलजम सच्चैं गै नरकै दे अजाब च मुदतैं तगर पेदे रौहगन ॥ 75 ॥

उंदे अजाब च वकफ़ा नेई पाया जाग ते ओह इस च नराश/मयूस होई जांगन ॥ 76 ॥

ते असें उंदे पर जुलम नेई कीता पर ओह आपूं अपने आपैं पर जुलम करा करदे हे ॥ 77 ॥

ते ओह पुकारगन जे हे मालक (यानी दोजख दे अधिकारी) तेरे रब्ब गी चाही दा ऐ जे असेंगी मौत देई देऐ। ओह आखग-तुस चिरे तगर इत्थें रौहगे ओ ॥ 78 ॥

(अल्लाह आखदा ऐ जे) अस थुआड़े कश सच्च लेइयै आए हे, पर तुंदे बिच्चा मते-हारे सचाई कनै नफरत करदे हे ॥ 79 ॥

क्या उनें लोकें¹ (हजरत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. पर) हमला करने दा कोई फैसला

يَطَّافُ عَلَيْهِمْ بِصَفَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ
وَآكُوبٍ وَقِيَّهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنفُسُ
وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ وَأَنتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِنْهَا
تَأْكُلُونَ ۝

إِنَّ الْمَجْرِمِينَ فِي عَذَابٍ جَهَنَّمَ
خَالِدُونَ ۝

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْسُونَ ۝

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا هُمُ
الظَّالِمِينَ ۝

وَنَادُوا لِمَالِكٍ لِّيَقْضِ عَيْنَا رَبُّكَ ۚ قَالَ
إِنَّكُمْ مُّكْرِمُونَ ۝

لَقَدْ جِئْتُمْ بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَكُمْ
لِلْحَقِّ كَرِهُونَ ۝

أَمْ أَبْرَمُوا أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ ۝

1. एह किन्ना बड्डा नशान ऐ जे एह सूर: मक्की ऐ। एहदे च इक ते एह दस्सेआ गेदा ऐ जे मक्का दे मुक्कर लोक हजरत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. दे खलाफ़ इक बडा बड्डा खड़जैतर रचगन ते दूआ एह जे ओह ओहदे च नकाम रौहगन ते अस उंदा सर्वनाश करी देगे। एह दमैं भविक्खवाणियां पुरियां होई गेइयां। कुरआन दे बरोधियें गी एहदे च इन्कार करने दा हून कोई स्थान नेई।

करी लैता ऐ (जेकर ऐसा है) तां असें बी उंदी तबाही दा फैसला करी लैता ऐ ॥ 80 ॥

क्या ओह इस भलेखे च न जे अस उंदी गुप्त गल्लां ते गुप्त मशवरे नेई सुनदे। एह गल्ल नेई बल्के साढ़े रसूल¹ उंदे कनै बेहिये लिखा करदे न ॥ 81 ॥

तू आखी दे जेकर रहमान (खुदा) दा कोई पुत्तर² होंदा तां सारें शा पैहलें अ'ऊं ओहदी अबादत करदा ॥ 82 ॥

गासैं ते धरती दा रब्ब ते अर्श दा रब्ब (शिकं दे सारे अवगुणें शा) पाक ऐ जो मुश्रिक ब्यान करदे न ॥ 83 ॥

इस आस्तै (हे पैगंबर!) तू उनेंगी छोड़ी दे जे ओह चिक्कड उछालदे रौहन ते उस बेलै तगर खेढदे रौहन जे ओह अपने उस अजाब दे बले गी आई लैन देन जिसदा उंदे कनै बा'यदा कीता गोदा हा ॥ 84 ॥

ते ओह (खुदा) गै गासैं ते धरती दा इक मात्तर उपास्य ऐ ते ओह बड़ी हिक्मतें आहला (ते) बौहत जानने आहला ऐ ॥ 85 ॥

ते बड़ियां बरकतां बख्शने आहली ओह हस्ती ऐ जो गासैं ते धरती ते जे किश इंदे मज़ाटे ऐ, उनें सारें दी बादशाहत दी मालक ऐ ते

أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ
وَنَجْوَاهُمْ^١ بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ
يَكْتُبُونَ^{٨١}

قُلْ إِنْ كَانَ لِلرَّحْمَنِ وَكَدَّ^٢ فَآنَا أَوَّلُ
العَبِيدِينَ^{٨٢}

سُبْحَانَ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ^{٨٣}

فَذَرَّهُمْ يُخَوِّضُوا وَيُعْبُوا حَتَّىٰ يُلْقُوا
يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوْعَدُونَ^{٨٤}

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَهٌ وَفِي الْأَرْضِ
إِلَهٌ^{٨٥} وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ

وَتَبَارَكَ الَّذِي لَهُ مَلِكُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَعِنْدَهُ عِلْمُ

1. किश विद्वानें एहदा मतलब फरिशते समझेआ ऐ, पर सूर: नूर रूकू 3 आयत 25 थमां पता लगदा ऐ जे सिर्फ फरिशते गै नेई, मनुक्खैं दा अपना शरीर बी हर इक कर्म आस्तै इक नशान रखदा ऐ ते ओह नशान क्यामत आहलै ध्याड़ै उंदे पापें गी जाहर करी देग। इस आस्तै इत्थें रसूल दा मतलब मनुक्खैं दे अपने अंग बी होई सकदे न। वर्तमान युग च डाक्टरें दी खोज शा बी पता लगदा ऐ जे मनुक्खैं दे बीरज दा हर इक कटाणु अपने पुरखें दे किश आचरण चि'न्न अपने अंदर रखदा ऐ। जिसलै कदें ओह चि'न्न अपनी सत्ता बनाई लैदा ऐ तां फी ओहदे शा पैदा होने आहली संतान उससे आचरण गी प्रकट करदी ऐ। आखो जे इक आदमी दे नां5 सिर्फ कर्म गै सुरक्षत रौहदे न बल्के केई पीढ़ियें तगर दे संस्कार सुरक्षत रौहदे न ते बीरज राहें ओह चि'न्न संतान च अगें-अगें चलदे रौहदे न।
2. अ'ऊं अल्लाह कनै प्यार करने आहला आं ते उसदा आज्ञाकारी आं, पर पुत्तर होने बारे नां ते कोई युक्ति उसदी समर्थक ऐ ते नां कोई गासी प्रमाण गै। इस आस्तै अ'ऊं पुत्तर दे बिचार दा हर चाल्ली खंडन करना।

क्यामत दा पता सिर्फ़ उससी गै ऐ ते उससै कश तुसैंगी परताया जाग ॥ 86 ॥

ते जिनैंगी एह लोक खुदा दे सिवा पुकारदे न ओह सफ़ारश करने दे अधिकारी नेई, पर सफ़ारश दा हक्क सिर्फ़ ऊऐ रखदा ऐ जेहका सच्च दी गुआही' देऐ ते ओह (मुन्कर उस सचाई गी) भलेआं समझी सकदे न ॥ 87 ॥

ते जेकर तूं उंदे शा पुच्छें जे उनैंगी कुस नै पैदा कीते दा ऐ? तां ओह जरूर आखगन, अल्लाह नै-फी ओह कुस पासै भलकेरियै लेते जा करदे न ॥ 88 ॥

ते असेंगी इस (रसूल) दे इस कौल दी सघंद। जिसलै उसने गलाया हा जे हे मेरे रब्ब! एह कौम तां नेही ऐ जे कुसै सचाई पर ईमान नेई आहन्दी ॥ 89 ॥

इस आस्तै (असें उसी जवाब दिता हा जे) उनैंगी दरगुजर कर ते सिर्फ़ इन्नी दुआऽ करी देआ कर जे तुंदे पर खुदा दी सलामती नाज़ल होऐ, ते उसदा एह नतीजा निकलग जे ओह (सचाई गी) जानन लगी पौंगन ॥ 90 ॥ (रुकू 7/13)

السَّاعَةِ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٦﴾

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ
الشفاعة إلا من شهد بالحق وهم
يعلمون ﴿٨٧﴾

وَلَمَنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ
فَأَلَى يَوْمَئِذٍ كُونٌ ﴿٨٨﴾

وَقِيلَ لَهُ يَرْبِّ إِنَّ هَؤُلَاءِ قَوْمٌ لَا
يُؤْمِنُونَ ﴿٨٩﴾

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلِّمْ ۖ فَسَوْفَ
يَعْلَمُونَ ﴿٩٠﴾

०००

1. यानी हज़रत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व.। इस आयत ने दस्सी दिता ऐ जे सफ़ारश सिर्फ़ हज़रत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. दी सुनी जाग, की जे थुआड़े बैरियें बी थुआड़ा नाऽ सच्चा ते अमीन रखेआ हा ते बनी इस्राईल दे किश नबियें बी तुसैंगी सच्चा आखियै बुलाए दा ऐ। (दिक्खो यसायह 9:6)

سُورَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ سِتُّونَ آيَةً وَثَلَاثَةٌ رُكُوعَاتٌ

सूर: अल्-दुखान

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां सट्ठ आयतां ते त्रै रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ①

(एह) हमीद ते मजीद (खुदा) पासेआ उतारी
गेदी सूर: ऐ) ॥ 2 ॥

حَمْدٌ ①

अस (इस सचाई दे सबूत आस्तै इसी
खोहलियै) ब्यान करने आहली कताब दी
कसम खन्ने आं (यानी इसगी शहादत दे तौरै
पर पेश करने आं) ॥ 3 ॥

وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ①

وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ①

असें इस (कताब) गी इक बरकत आहली
रातीं नाज़ल कीते दा ऐ की जे अस गुमराह
लोकें गी सदा थमां सोहगे करदे आए आं
॥ 4 ॥

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُّبَارَكَةٍ إِنَّا كُنَّا مُنذِرِينَ ①

उस रातीं हर हिक्मत आहली गल्ल ब्यान
कीती जंदी ऐ ॥ 5 ॥

فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ ①

1. ओह रात जेहदे च नबी दा प्रादुर्भाव/अवतार होंदा ऐ ते ओह नबी अपनी शिक्षा संसार आहलें गी सुनांदा ऐ। ओह रात बड़ी पवित्रर ते बरकत आहली होंदी ऐ। उस बेलें सारे संसार च बड़ा गंद नजरी आँदा ऐ की जे असल च उस बेलें खुदा दी मन्शा सच्चा ज्ञान भेजने दी होंदी ऐ ते इस करी ओह सधारण जनेही लब्धने आहली रात सारें शा चंगी रात होंदी ऐ ते एह कोई नमीं गल्ल नेई बल्के हजरत आदम दे समे शा एह परंपरा चलदी आवा करदी ऐ ते कुरआन मजीद दी एह आयत सिद्ध करदी ऐ जे क्यामत तक चलदी रौहग।
2. आयत दे इस भाग च स्पष्ट करी दिता गेआ ऐ जे एह रात ऐसी ऐ जिस च नबी संसार गी ईश्वरीय ज्ञान प्रदान करदे न ते ओह ज्ञान तत्पूर्ण होंदा ऐ।

ओह हर इक गल्लल¹ जिस दा असें अपने कशा हुकम दिते दा ऐ अस ऐसे मौकें पर सदा गै रसूल भेजदे होन्ने आं ॥ 6 ॥

أَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا إِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ①

एह तेरे रब्ब पासेआ रहमत² दे तौरा पर होंदा ऐ। ओह बौहत प्रार्थना सुनने आहला (ते) दिलें दे हालात जानने आहला ऐ ॥ 7 ॥

رَحْمَةً مِّنْ رَبِّكَ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ①

(यानी) उस रब्ब पासेआ जो गासैं ते धरती ते जे किश उंदे बश्कार ऐ उंदा रब्ब ऐ बा शर्त एह ऐ जे थुआड़ी नीत यकीन करने दी होऐ ॥ 8 ॥

رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ①
إِن كُنْتُمْ مُّوقِنِينَ ①

उसदे सिवा कोई उपास्य नेई, ओह जींदा बी करदा ऐ ते मारदा बी ऐ ओह थुआड़ा बी रब्ब ऐ ते थुआड़े पिछले बब्ब-दादें (पुरखें) दा बी रब्ब हा ॥ 9 ॥

لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأُولِينَ ①

पर ओह भरमै च पेदे न (ते) खेढा करदे न ॥ 10 ॥

بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ يَلْعَبُونَ ①

इस आस्तै तूं उस दिनै दा इंतजार कर जिस दिन गासै पर धूं गै धूं प्रकट होग ॥ 11 ॥

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُحَانٍ مُّمِينٍ ①

जेहका सारे लोकें पर छाई जाग, एह दर्दनाक अजाब होग ॥ 12 ॥

يَغْشَى النَّاسَ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ①

(लोक उसी दिक्खियै गलान लगी पौंगन) हे साढ़े रब्ब! साढ़े शा एह अजाब टलाई दे, अस ईमान लेई औन्ने आं ॥ 13 ॥

رَبِّا كَشَفْنَا عَنْكَ الْعِذَابَ إِنَّا مُؤْتُونَ ①

1. इस च एह दस्सेआ गोदा ऐ जे एह शिक्षा असल च साढ़ी गै तरफा होंदी ऐ ते अस गै उसी उतारने आहले होन्ने आं भामें लोक एहदा किन्ना गै इन्कार करन।
2. इस शिक्षा दा उतारना मानव समाज दे कुसै हक्क दे कारण नेई होंदा बल्के सिर्फ अल्लाह दी किरपा कन्नै गै होंदा ऐ। ओह अपने भगतें दियें प्रार्थनाएं गी सुनदा ऐ जो समे दी बगाड़ें करी कीतियां जंदिंयां न ते ओह उस तबाही दी नीह दिखदा ऐ जेहकी लोक अपने बुरे कर्म कन्नै रक्खा करदे होंदे न।
3. आयत दे शब्द दसदे न जे इत्थें परमाणु बंब ते हाइड्रोजन बंबें दा बर्णन ऐ जिंदे प्रयोग कन्नै सारे वायु मंडल च धूं गै धूं होई जंदा ऐ। इस बेलें वैज्ञानक इनें बंबें गी क्यामत दा लक्खन बी दस्सा करदे न।

उस रोज ईमान आहानने दी तफीक उनेंगी कुत्थूं मिलग हालांके उंदे कश सचाई गी तफसीलन ब्यान करने आह्ला इक रसूल आई चुके दा ऐ (जिसी उनें नेई मन्नेआ) ॥ 14 ॥

أَلَيْسَ لَهُمُ الذِّكْرَى وَقَدْ جَاءَهُمْ
رَسُولٌ مُّبِينٌ ﴿١٤﴾

ते ओहदे शा पिट्ठ फेरियै उठी गे ते गलान लगे, एह कुसै दा सखाए-पढ़ाए दा पागल ऐ ॥ 15 ॥

ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنَّهُ وَقَالُوا مَعَهُمْ مَجْذُونٌ ﴿١٥﴾

अस अज़ाब गी थोड़े चिरै आस्तै हटाई देगे पर तुस फी ऊऐ (करतूतां) करन लगी पौगे ओ ॥ 16 ॥

إِنَّا كَاشِفُو الْعَذَابِ قَلِيلًا إِنَّكُمْ
عَائِدُونَ ﴿١٦﴾

जिस दिन अस पूरी चाल्ली निगगर पकड़ च तुसें गी लेई औगे (तुसेंगी पता लग्गी जाग जे) अस बदला लैने दी समर्थ रक्खने आं ॥ 17 ॥

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَى ؕ
إِنَّا مُنْتَقِمُونَ ﴿١٧﴾

ते असें उंदे शा पैहलें फिरऔन दी कौम दी अजमैश बी कीती ही ते उंदे कश इक आदरजोग रसूल आया हा ॥ 18 ॥

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ
وَجَاءَهُمْ رَسُولٌ كَرِيمٌ ﴿١٨﴾

(ते उस रसूल नै उनेंगी गलाया हा जे) खुदा दे बंदें गी मेरै हवालै करी देओ, अ'ऊं थुआड़े कश इक मानदार रसूल बनाइयै भेजेआ गेआ आं ॥ 19 ॥

أَنْ أَدُّوا إِلَيَّ عِبَادَ اللَّهِ ؕ إِنِّي لَكُمْ
رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٩﴾

ते इस हुकम कनै भेजेआ गेदा आं जे खुदा दे मामले च ज्यादाती शा कम्म नेई लैओ (ते मेरी आंहदी दी दलीलें पर गौर करो) अ'ऊं थुआड़े कश सच्चें गै इक सच्ची-सुच्ची दलील आहानने आह्ला आं ॥ 20 ॥

وَأَنْ لَا تَعْلُوا عَلَيَّ اللَّهُ ؕ إِنِّي أَمِينٌ
﴿٢٠﴾

ते अ'ऊं अपने रब्ब ते थुआड़े रब्ब शा पनाह मंगना जे तुस कुदै जल्दबाजी/काहली च मेरे पर पथरैढ़ नेई करी देओ ॥ 21 ॥

وَإِنِّي عَذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ أَنْ
تَرْجُمُونِ ﴿٢١﴾

ते जेकर तुस मेरे पर ईमान नेई आहनदे, तां
(कम-स-कम एह त करो जे) मिगी भलेआं
इक्कला छोड़ी देओ ॥ 22 ॥

इस पर मूसा नै अपने रब्व गी पुकारेआ ते
गलाया जे एह कौम ते मुलजम ऐ (मेरे पर
ईमान आहनने आहली नेई लगदी) ॥ 23 ॥

उसलै (खुदा नै) गलाया, तूं मेरे बंदें गी
रातो-रात (इस मुलखै चा) कडिढवै लेई जा
ते एह ख्याल रक्ख जे फ़िरऔन दी कौम
थुआड़ा पीछा करग ॥ 24 ॥

ते समुंदरै गी टिब्बें परा लंघदे होई पिच्छें
छोड़ी जा (यानी टिब्बें परा चलदे-चलदे
समुंदरै चा लंघी जा) ओह (यानी फ़िरऔन
दा) लशकर ते गरक होइयै गै रौहग ॥ 25 ॥

उनें (यानी फ़िरऔन दी कौम नै) अपने पिच्छें
बड़े-सारे बाग ॥ 26 ॥

ते चश्मे ते खेतियां ते बड़े सुखदेऊ थाहर
॥ 27 ॥

ते ऐसी रौहने आहलियां ज'गां (नबास स्थान)
छोड़ियां जिंदे च ओह बड़े खुशी-खुशी रौहदे
होदें हे ॥ 28 ॥

इस्सै चाल्ली होआ, ते असें उनें सारी चीजें
दा बास इक दूई कौम गी बनाई दिता ॥ 29 ॥

وَإِنْ لَّمْ تُوْمِنُوا لِي فَاَعْتَرِ لُونِ ۝۲۲

فَدَعَا رَبَّكَ اَنْ هُوَ لَاءِ قَوْمِ
مُجْرِمُونَ ۝۲۳

فَاَسْرِ بِعَبَادِي لَيْلًا اِنَّكُمْ مَتَّبِعُونَ ۝۲۴

وَاطْرَلِكِ الْبَحْرَ رَهْوًا اِنَّهُمْ جُنْدٌ
مُّغْرَقُونَ ۝۲۵

كَمْ تَرَكُوا مِنْ جَبَلٍ وَعُيُونٍ ۝۲۶

وَزُرُوعٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ۝۲۷

وَوَعْمَةٍ كَانُوا فِيهَا فَاكِهِينَ ۝۲۸

كَذٰلِكَ نَعِدُّ وَاوْرَثُهَا قَوْمًا اٰخِرِيْنَ ۝۲۹

1. यानी टिब्बें परा चलदे-चलदे जित्थुआं जे पानी पिच्छें हटी चुके दा होऐ, समुंदर पार करी जाओ।
2. एहदे कन्ने सरबंधत बनी इस्त्राईल न, जिनेंगी किश समे परैत बड़ा सत्कार ते गौरव मिलेआ ते उनें मिस्र गी इक बार फैं थल्लै रौदी दिता हा।
फ़िरऔन ते उसदी कौम दी सतान बी एहदे कन्ने सरबंधत ऐ। हालांकि उनें फ़िरऔन आंगर गौरव ते नेई हासल कौता, पर ओह फौ बी इक हद तगर मिस्र पर क्यूमत करदे रेह।

इस आस्तै गास ते धरत उंदे पर नेई रोए'
(पछताए) ते उनेंगी ढिल्ल नेई दित्ती गेई
॥ 30 ॥ (रुकू 1/14)

ते असें बनी इस्त्राईल गी फ़िरऔन पासेआ
मिलने आहले अपमानजनक अजाब शा मुक्ति
दित्ती ही ॥ 31 ॥

ते ओह (यानी फ़िरऔन) बड़ा घमंडी हा ते
हद शा बधी चुके दा हा ॥ 32 ॥

ते असें बनी इस्त्राईल गी अपने समे दी सारी
कौम पर उंदे हालात दी ब'जा करी प्रधानता
दित्ती ही ॥ 33 ॥

ते असें उंदे कश ऐसे नशाने चा इक नशान भेजेआ
हा जेहदे च उंदी बड़ी अजमैश ही ॥ 34 ॥

एह लोक (यानी मक्का बासी) आखदे न
॥ 35 ॥

असेंगी सिर्फ पैहली मौत कनै बास्ता पोग ते
असेंगी फी जीदा करियै नेई खडेरेआ जाग
॥ 36 ॥

इस आस्तै जेकर तुस सच्चे ओ तां साढ़े बब्ब-
दादें गी दबारा इस दुनियां च आहनिचै दस्सी
देओ ॥ 37 ॥

क्या ओह अच्छे न जां तुब्बा दी जाति दे
लोक, ते ओह लोक जेहके तुब्बा शा पैहलें
हे (दुनियाबी ताकत च उंदे शा सक्खर/चढ़दे
हे) असें उनें सारें गी हलाक करी दित्ता, ओह
लोक सच्चें गै मुजरम हे ॥ 38 ॥

ते गासें ते धरती गी ते जे किश उंदे बश्कार
ऐ असें खेहदे होई पैदा नेई कीता ॥ 39 ॥

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ
وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ۝

وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنَ
الْعَذَابِ الْمُهِينِ ۝

مَنْ فِرْعَوْنَ ۗ إِنَّهُ كَانَ
عَالِيًا ۝

وَلَقَدْ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ
عَلَىٰ الْعَالَمِينَ ۝

وَأَتَيْنَهُمُ مِنَ الْآيَاتِ مَا فِيهِ
بَلَاؤٌ مُّبِينٌ ۝

إِنَّ هَؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ۙ

إِنْ هِيَ إِلَّا أَمْوَاتُنَا
الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ
بِمُنشَرِينَ ۝

فَأْتُوا بِآبَاتِنَا إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ۝

أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تَبَعٍ ۗ
وَالَّذِينَ
مَنْ قَبْلَهُمْ ۗ أَهْلَكْنَاهُمْ
لِأَنَّهُمْ كَانُوا
مُجْرِمِينَ ۝

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا الْعِبَادِينَ ۝

1. यानी नां ते गासी लोकें गी अफसोस होआ ते नां धरत बासियें गी।

असें उनेंगी सदा-सदा लेई कायम रौहने आहले मकसद कनै पैदा कीता हा पर उंदे चा मते-हारे नेई जानदे ॥ 40 ॥

फैसले दा दिन उंदा सारें दा निश्चत समां ऐ ॥ 41 ॥

जिस दिन कोई दोस्त कुसै दूए दोस्त दी जरूरत पूरी नेई करी सकग ते नां उंदे चा कुसै दी मदद कीती जाग ॥ 42 ॥

सिर्फ (उस्सै दी मदद कीती जाग) जेहदे पर अल्लाह रैहम करग। ओह गालिब (ते) बे-हद कर्म करने आहला ऐ ॥ 43 ॥ (रुकू 2/15)

यकीनन थोहरी' दा बूहटा ॥ 44 ॥

गुनाहगार दा खाना ऐ ॥ 45 ॥

पाकू आंगर बदमजा जेहका घाले दे/पिरघाले दे त्रामे आंगर ढिड्डें च उब्बलगा ॥ 46 ॥

जिस चाल्ली गर्म पानी उब्बलदा ऐ ॥ 47 ॥

ते अस फरिश्तें गी गलागे इस गुनाहगार गी पकड़ी लैओ। ते जहन्नम दे बशकार तगर इसी घसीटदे-घसीटदे लेई जाओ ॥ 48 ॥

फी एहदे सिरै पर मता-हारा गर्म पानी सुट्टी देओ जेहदे नै इसी सख्त गर्मी दा अजाब पुज्जग ॥ 49 ॥

(ते अस उस शख्स गी आखगे) तूं एह अजाब चक्ख तूं (अपने ख्याल च) गालिब² (ते) इज्जत आहला हा ॥ 50 ॥

مَا خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٠﴾

إِنَّ يَوْمَ الْقَضَلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤١﴾

يَوْمٌ لَا يَنْفَعُ مَوْلَى عَنْ مَوْلَى شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٢﴾

إِلَّا مَنْ رَحِمَ اللَّهُ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٤٣﴾

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقْوَمِ ﴿٤٤﴾

طَعَامُ الْأَثِيمِ ﴿٤٥﴾

كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ﴿٤٦﴾

كَغَلِي الْحَمِيمِ ﴿٤٧﴾

خُدُوءَهُ فَاغْتَلَوهُ إِلَى سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿٤٨﴾

ثُمَّ صَبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ﴿٤٩﴾

ذُوقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ﴿٥٠﴾

1. 'थोहर' शब्द कुरआन च भिन्नत चीजें आस्तै बरतोदा ऐ। (दिकखो मुफरदात सफा 212)

2. एह व्यंगत्मक कथन ऐ ते मतलब एह ऐ जे तूं अपने आपे गी ऐसा गै समझदा हा।

(फी आखगे) इयै ते है, जेहदे बारे च तुस शक्क करदे होंदे हे ॥ 51 ॥

संयमी सच्चें गै इक अमन आहली ज'गा रौहगन ॥ 52 ॥

यानी जन्नतें ते चश्में च ॥ 53 ॥

ओह् मुट्टे ते बरीक रेशमी कप्पड़े लाडन। ते इक-दूए दे सामनै बैठे दे होंगन ॥ 54 ॥

(ऐसा गै होग) ते अस उनेंगी साथी दे रूपै च बड्डियें बड्डियें स्याह् अक्खीं आहलियां जनानियां देगे ॥ 55 ॥

ओह् उनें जन्नतें च हर चाल्ली दे मेवे मंगोआंगन ते अमन कनै (जिंदगी) बसर करडन ॥ 56 ॥

उनेंगी उंदे (जन्नतें) च कोई मौत नेई औग, सिवाए पैहली मौती दे (जेहकी आखरत दी जिंदगी शा पैहलें आई चुकी दी ऐ) ते अल्लाह उनेंगी दोज्जख/नरकै दे अज्जाब शा बचाग ॥ 57 ॥

एह् बी तेरे रब्ब पासेआ किरपा दे रूपै च होग (नां के हक्क दे तौरे पर) ते एह् इक बौहत् बड्डी कामयाबी ऐ ॥ 58 ॥

इस आस्तै सुनी लै जे असें इस कुरआन गी तेरी जबान च असान करियै उतारेआ ऐ तां जे एह् लोक (अरब आहले) एह्दे शा नसीहत हासल करी सकन ॥ 59 ॥

इस आस्तै तू बी अन्जाम दा इंतजार कर, ओह् बी इंतजार करडन ॥ 60 ॥ (रुकू 3/16)

إِنَّ هَذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ﴿٥١﴾

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ﴿٥٢﴾

فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٣﴾

يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَقِيلِينَ ﴿٥٤﴾

كَذَلِكَ وَرَوَّجْتُهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ﴿٥٥﴾

يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ﴿٥٦﴾

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ ۗ وَوَقَّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿٥٧﴾

فَضَلَّامِن رَّبِّكَ ۗ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٥٨﴾

فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٩﴾

فَارْتَقِبْ إِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُونَ ﴿٦٠﴾



सूर: अल्-जासिय:

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां ठत्ती आयतां ते चार रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

हमीद (ते) मजीद (खुदा इस सूर: गी उतारने
आहला ऐ) ॥ 2 ॥

حَمْدٌ ①

गालिब ते हिक्मत आहले अल्लाह पासेआ
इस कताब गी उतारेआ गेदा ऐ ॥ 3 ॥

تَنْزِيلِ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ
الْحَكِيمِ ①

गासैं ते धरती च मोमिनैं आसतै बड़े नशान न
॥ 4 ॥

إِنَّا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَأَيُّ
لِلْمُؤْمِنِينَ ①

ते इस्सै चाल्ली थुआड़े पैदा करने च ते उस
च जे जो ओह (अल्लाह) जीवधारियैं बिच्चा
(धरती पर) फलांदा ऐ, यकीन करने आहली
कौम आसतै नशान न ॥ 5 ॥

وَفِي حُلُقُومٍ وَمَا يَكْتُمُونَ مِنْ دَابَّةٍ أَيْتٌ
لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ①

ते रातों ते दिने दे अगें-पिच्छें औने-जाने च
बी ते जो अल्लाह नै रिशक दा अधार (यानी
पानी) बदलै चा उतारे दा ऐ, फी ओहदे नै
धरती गी ओहदी मौती/सुकने बा'द जीदा/
हरा-भरा कीते दा ऐ (ओहदे च बी) ते हवाएं
गी इद्धर-उद्धर चलाने च बी समझदार कौम
आसतै बड़े नशान न ॥ 6 ॥

وَإِخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ
مِنَ السَّمَاءِ مِنْ رِزْقٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ
بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيفِ الرِّيْحِ أَيْتٌ لِّقَوْمٍ
يَتَّقُونَ ①

एह सब अल्लाह दे नशान न जिनेंगी अस तेरे सामनै पूरी सचाई कनै ब्यान करने आं। फी (दस्सो हां) अल्लाह ते उसदे नशानें दे बा'द कुस चीजा पर ईमान ल्यौगे? ॥ 7 ॥

हर झूठे ते गुनाहगार आस्तै अजाब निश्चत ऐ ॥ 8 ॥

जेहका उनें आयतें गी, जेहकियां ओहदे सामनै पढ़ियां जंदियां न, सुनदा ऐ, पर फी घमंड कनै अपनी हर गल्ला पर जिद्द करदा/अड़े दा रौहदा ऐ आखो जे उसनै खुदा दियां आयतां सुनियां गे नेई, इस आस्तै ऐसे लोकें गी दर्दनाक अजाब दी खबर दे ॥ 9 ॥

ते जिसलै ओह शख्स सादी आयतें बिच्चा कुसै दी खबर सुनदा ऐ तां ओहदा मजाक डुआन लगी पौंदा ऐ। ऐसे लोकें गी अपमानजनक अजाब मिलग ॥ 10 ॥

उंदे अगें नरक ऐ, ते उंदे कर्म उनेंगी किश बी फायदा नेई पुजाडन ते नां गै ओह उपास्य (फायदा पुजाई सकडन) जिनेंगी उनें अल्लाह दे सिवा अपनाई रक्खे दा ऐ, ते उनेंगी बौहत् बड्डा अजाब पुज्जग ॥ 11 ॥

एह (सच्ची) हदायत ऐ ते जिनें अपने रब्ब दियें आयतें दा इन्कार कीते दा ऐ उनेंगी बुतें दी पूजा कारण दर्दनाक अजाब पुज्जग ॥ 12 ॥ (रुकू 1/17)

अल्लाह ऊरे ऐ जिसनै समुंदर गी थुआड़ी खिदमत च लाए दा ऐ तां जे ओहदे हुकम कनै ओहदे च किश्तियां चलन ते तां जे तुस (उंदे राहें) उसदी किरपा गी ढूंडो ते तां जे तुस शुकर करो ॥ 13 ॥

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَ اللَّهِ وَآيَاتِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٧﴾

وَيَلِّ لِكُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٨﴾

يَسْمَعُ آيَاتِ اللَّهِ تُتْلَى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا فَبَشْرُهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٩﴾

وَإِذْ أَعْلَمَ مِنَ الْبَيْتِ أَشْيَاءَ أَخَذَهَا هَمْرًا وَأُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿١٠﴾

مِنْ وَّرَائِهِمْ جَهَنَّمَ وَلَا يُعْنِي عَنْهُمْ مَا كَسَبُوا شَيْئًا وَلَا مَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١١﴾

هَذَا هُدًى وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَعَنَّا لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رَّجْزٍ أَلِيمٍ ﴿١٢﴾

اللَّهُ الَّذِي سَخَّرَ لَكُمْ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلُكُ فِيهِ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٣﴾

ते जे किश गासं च ऐ, ते धरती च ऐ, सारे दा सारा उसनै थुआड़ी सेवा च लाए दा ऐ एह्दे च सूझ-बूझ रखने आहली कौम आस्तै बड़े नशान न ॥ 14 ॥

तूं मोमिनं गी आखी दे जे जेहके लोक अल्लाह दी स'जा थमां नेई डरदे, उनेंगी माफ करी देन, उसदा नतीजा एह् होग जे खुदा (आपूं) ऐसी कौम गी उंदे कर्म दा फल देग ॥ 15 ॥

जेहका कोई ईमान दे मताबक कर्म करदा ऐ उसदा फायदा उसदे अपने-आपै गी गै पुजदा ऐ ते जेहका कोई भैड़े कर्म करदा ऐ उंदा नुकसान (बी) उस दी जानू गी गै पुजदा ऐ फी तुस अपने रब्ब कश परताइयै लेते जागे ओ ॥ 16 ॥

ते असं बनी इस्माईल गी कताब, कहुमत ते नुबुव्वत बखशी ही ते पाक पदार्थे बिच्चा रिशक प्रदान कीता हा ते अपने समे दे लोके पर उनेंगी प्रधानता बखशी ही ॥ 17 ॥

ते असं उनेंगी खु'ल्ली-डु'ल्ली शरीअत बखशी ही, ते बनी इस्माईल नै उससै बेलै ओहदे बारे इखलाफ कीता जिसलै जे उंदे कश कामल इलम (कुर्आन) आई गेआ (एह इखलाफ) उंदी आपसी सरकशी (ना-समझी) दी ब'जा करी हा; तेरा रब्ब उंदे बश्कार क्यामत आहले ध्याड़े उंदी इखलाफ आहली गल्लें बारे फैसला करग ॥ 18 ॥

ते असं तुगी शरीअत दे इक रस्ते' पर नियुक्त कीते दा ऐ इस आस्तै तूं उसदे पिच्छें चल ते

وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مِمَّا ۗ إِنَّا فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُونَ ﴿١٤﴾

قُلْ لِلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا لِلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ أَيَّامَ اللَّهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٥﴾

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ﴿١٦﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالتُّبُوَّةَ وَرَزَقْنَاهُمْ مِّنَ الظَّيْبِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٧﴾

وَآتَيْنَاهُمْ بَيِّنَاتٍ مِّنَ الْأَمْرِ ۖ فَمَا اخْتَلَفُوا إِلَّا مِمَّنْ بَعْدَ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ ۚ بَعْثًا أَنَّهُمْ ۗ إِنَّا رَبُّكَ يَفْقَهُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ فَمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٨﴾

ثُمَّ جَعَلْنَاكَ عَلَىٰ شَرِيعَةٍ مِّنَ الْأَمْرِ

1. शरीअत दी बक्ख-बक्ख विधियां न जियां तौरत बदला लैने पर जोर दिंदी ऐ ते इंजील माफ करने ते नरमी बरतने पर जोर दिंदी ऐ। पर इस्लाम इनं दौनीं दे बिच्च-बिच्च सुधार दा रस्ता अपनांदा ऐ ते सखी बेलै सखी ते नरमी बेलै नरमी दी तलीम दिंदा ऐ इस आस्तै इसदी तलीम हजरत मसीह ते हजरत मूसा दी तलीम शा बक्ख ऐ।

उनें लोकें दी खाहशें दा अनुसरण नेई कर जेहके इलम नेई रखदे ॥ 19 ॥

ओह अल्लाह दे मकाबले च तुगी फायदा नेई पुजाई सकदे। ते जालम आपस च इक-दूए गी पनाह देने आहले न ते अल्लाह संयमियें गी शरण देने आहला ऐ ॥ 20 ॥

एह (शिक्षां) लोकें आस्तै बुद्धिसंगत प्रमाण न ते यकीन¹ करने आहली कौम आस्तै हदायत ते रैहमत दा मूजब न ॥ 21 ॥

क्या जिनें लोकें बुरे कर्म कीते दे न उंदा एह बिचार जे अस उनेंगी मोमिनें ते ईमान दे मताबक कर्म करने आहलें जैसा आदर देगे इत्थें तक जे उनें दौनें दा जीन-मरन इक-बरोबर² होई जाग? ओह बौहत बुरा फैसला करदे न ॥ 22 ॥ (रुकू 2/18)

ते अल्लाह नै गासें ते धरती गी इक अटल कनून दे मताबक पैदा कीते दा ऐ ते उसदा नतीजा एह निकलज जे हर शख्स गी उसदे कर्म मताबक फल मिलज ते उंदे बिच्चा कुसै पर बी जुलम नेई कीता जाग ॥ 23 ॥

क्या तोह उस शख्स दी हालत पर बी गौर कीता ऐ जिसनै अपनी खाहश गी गै अपना उपास्य बनाई लैते दा ऐ ते अल्लाह नै अपने पूर्ण ज्ञान दे अधार पर उसी गुमराह करार दित्ते दा ऐ, ते ओहदे कन्नें ते ओहदे दिलै पर मोहर लाई दिती दी ऐ ते ओहदी अकखीं पर पड़दा सुट्टी दित्ते दा ऐ। इस लेई अल्लाह दे (इस कर्म दे) बा'द उसी कु'न हदायत

فَاتَّبَعَهَا وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٩﴾

إِنَّهُمْ لَنْ يُغْنُوا عَنْكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَإِنَّ الظَّالِمِينَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٢٠﴾

هَذَا بَصَائِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿٢١﴾

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ نَجْعَلَهُمْ كَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَوَاءً مِّمَّا هُمْ وَمِمَّا تَهُمُّ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٢٢﴾

وَخَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَانْتَجَزَى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٣﴾

أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ وَأَصْلَهُ اللَّهُ عَلَى عِلْمٍ وَوَحَّمَهُ عَلَى سَمْعِهِ وَقَلْبِهِ وَجَعَلَ عَلَى بَصَرِهِ عَشُورَةً فَمَنْ يَهْدِيهِ مِنْ بَدِّ اللَّهِ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾

- जेकर मनुखी इतिहास पर गौर करचै तां पता लगदा ऐ जे जालम म्हेशां जालमें दी मदद करदे आए न ते अल्लाह सदा गै संयमियें दी मदद करदा आया ऐ ते उनेंगी पनाह दिंदा आया ऐ।
- यानी जीदे जी बी ते मौती पर बी उंदे कन्नें इक्के नेहा ब्यहार कीता जाग।

देई सकग? क्या तुस नसीहत हासल नेई करदे ? ॥ 24 ॥

ते ओह आखदे न जे साढ़े आस्तै सिर्फ इयै संसारक जीवन निश्चत ऐ। इयै जीवन बतीत करदे होई अस मरगे ते इसै दा नंद लेंदे होई जीदे रौहगे ते जमाना गै असंगी (अपने असर कनै) तबाह करदा ऐ पर उनेंगी इस गल्ला दा कोई असली इलम नेई ओह सिर्फ ढकोंसले करा करदे न ॥ 25 ॥

ते जिसलै उनेंगी साढ़ी जाहरा-बाहरा आयतां सुनाइयां जंदियां न ते उंदा इसदे सिवा कोई जवाब नेई होंदा जे ओह आखी दिंदे न जे जेकर तुस सच्चे ओ तां साढ़े बब्ब-दादें गी बी (जींदा करियै) लेई आओ ॥ 26 ॥

तूं आखी दे जे अल्लाह गै तुसेंगी जींदा करदा ऐ। फी ऊऐ तुसेंगी मारग। फी ऊऐ तुसेंगी क्यामत आहलै ध्याडै तगर किट्ठा' करदा जाग ते एहदे च कोई शक्क नेई, पर मते-हारे लोक इसदा ज्ञान नेई रखदे ॥ 27 ॥ (रुकू 3/19)

ते गासैं ते धरती दी बादशाहत खुदा दी गै ऐ ते जिसलै निश्चत घड़ी आई जाग उस बेलै झूठ बोलने आहले बड़े खसारे च होंगन ॥ 28 ॥

ते तूं हर इक संप्रदाय गी दिखगा जे ओह धरती पर गोडें दे भार डिग्गे दा होग। हर इक संप्रदाय गी अपनी शरीअत' पासै बुलाया जाग।

وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا إِلَّا الدَّهْرُ وَمَا لَهُم بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ۝

وَإِذْ اتَّكَلْنَا عَلَيْهِمُ الَّتِي بَيَّنَّتِ مَا كَانَتْ حُجَّتَهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا اتُّتُوا بِآيَاتِنَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

قُلِ اللَّهُ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُومِضُ يَحْسَرُ الْمُبْطِلُونَ ۝

وَتَرَى كُلَّ أُمَّةٍ جَائِيَةً كُلُّ أُمَّةٍ تُدْعَى إِلَى كِتَابِهَا الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ

1. इसदा अर्थ एह ऐ जे मौती तगर जीवन खुदा दे गै हलथै च ऐ ते ऊऐ मरने दे बाद आत्मैं गी क्यामत तक जींदा रखदा रौहग, पर की जे एह गल्लां अक्खीं शा ओझल होंदियां न इस आस्तै मते-हारे लोक इस बारे नेई जानदे।
2. हर इक कौम दा फैसला सारें शा पैहलें उसदी शरीअत दे मताबक होग। की जे ओह दूई शरीअत गी झूठ समझदी ही मगर क्या अपनी शरीअत पर अमल करदी ही? मजूदा समे पर जेकर नजर पाई जा तां इस सिद्धांत मूजब नां ते मुसलमान मुक्ति हासल करी सकदे न, नां ईसाई ते नां गै कोई होर कौम। की जे दूई शरीअतें गी छोड़ियै ओह अपनी शरीअत पर बी अमल नेई करदे।

उस दिन तुसेंगी थुआड़े कर्म दे मताबक फल
दिता जाग ॥ 29 ॥

(ते अस आखगे दिक्खो) एह थुआड़ी कताब'
ऐ जेहकी थुआड़े खलाफ सच्चो-सच्च गुआही
देआ करदी ऐ। तुस जेहके बी कर्म करदे होंदे
हे अस उनेंगी लिखदे जंदे हे ॥ 30 ॥

इस आसतै जेहके लोक मोमिन हे ते जिनें शुभ
कर्म कीते दे हे उनेंगी उंदा रब्ब अपनी
रैहमत (दे साए) हेठ रक्खग ते इयै सच्ची-
सुच्ची कामयाबी ऐ ॥ 31 ॥

ते ओह लोक जेहके मुन्कर होई गेदे हे (उनेंगी
गलाया जाग जे) क्या तुसेंगी मेरियां आयतां
पढ़ियै नथियां सुनाइयां जंदियां, मगर (उसदे
बावजूद) तुस घमंड करदे हे। ते तुस अपराधी
कौम च शामिल होई गे हे ॥ 32 ॥

ते जिसलै उंदे कनै एह गलाया जंदा ऐ जे
अल्लाह दा बा'यदा ते सच्चा ऐ ते (दुनियां
दी) आखरी तबाही जरूर औने आहली ऐ,
इस च कोई शक्क नेई तां इस पर ओह आखी
दिंदे न जे अस नेई जानदे-क्यामत केह चीज
ऐ? असेंगी ते ओहदे बारै सिर्फ भरम मात्तर
ऐ ते असेंगी ओहदे पर कोई यकीन नेई
॥ 33 ॥

ते उस बेलै उंदे पर/सामनै उंदे बुरे कर्म जाहर
होई जाडन ते जिनें गल्लें पर ओह हसदे होंदे
हे (यानी उंदा इन्कार करदे होंदे हे) ओह
उनेंगी घेरी लैगन (ते सच्चें-मुच्चें उंदी अक्खीं
सामनै आई जांगन) ॥ 34 ॥

ते उनेंगी गलाया जाग जे अज्ज असें तुसेंगी
उरसै चाल्ली छोड़ी दिता ऐ जिस चाल्ली जे

تَعْمَلُونَ ﴿٣٠﴾

هَذَا كِتَابُنَا يُنطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ۗ
إِنَّا كُنَّا نَسْتَنسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٠﴾

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِي رَحْمَتِهِ ۗ ذَلِكَ
هُوَ الْقَوْمُ الْمُؤْمِنُونَ ﴿٣١﴾

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ أَفَلَمْ تَكُنْ لِلْبَيْتِ
تُنَالٍ عَلَيْكُمْ ۖ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ
قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾

وَإِذْ قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ لَا
رَيْبَ فِيهَا قُلْتُمْ مَا نَدْرِي مَا السَّاعَةُ ۗ
إِن نَّظُنُّ إِلَّا ظَنًّا وَمَا نَحْنُ
بِمُسْتَقِينِينَ ﴿٣٣﴾

وَبَدَّالَهُمْ سَيِّئَاتٍ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ
مَا كَانُوا يَسْتَهْرِءُونَ ﴿٣٤﴾

وَقِيلَ الْيَوْمَ نَسُكُّكُمْ كَمَا نَسَيْتُمْ لِقَاءَ

तुसें इस दिनै दी मलाटी दा ख्याल भलाई
दिता हा ते थुआड़ा ठकाना अगग होग ते कोई
थुआड़ी मदद करने आह्ला नेई होग ॥ 35 ॥

एह् इस आस्तै होग जे तुसें अल्लाह दे नशां
गी हासे-मजाक दा मूजब बनाई लैते दा हा
ते संसारक जीवन नै तुसेंगी धोखा देई दिता
हा। इस आस्तै अज्ज नां ते ओह् इस अजाब
चा कड्ढे/बचाए जांगन ते नां उंदे पासेआ
खुदा गी राजी करने/मनाने दी कोशश कबूल
कीती जाग ॥ 36 ॥

इस आस्तै अल्लाह जो गासें ते धरती दा रब्ब
ऐ ते सारे ज्हांनें दा रब्ब ऐ, सब तरीफ उस्सै
दी ऐ ॥ 37 ॥

ते गासें ते धरती च सारी बड़ेआई बी उस्सै
दी ऐ ते ओह् गालिब (ते) हिक्मत आह्ला
ऐ ॥ 38 ॥ (रुकू 4/20)

يَوْمَكُمْ هَذَا وَمَا لَكُمْ الثَّارُ وَمَا
لَكُمْ مَنِ تَصِيرِينَ ⑤

ذَلِكَ بِأَنَّكُمْ أَنْتَضْتُمْ آيَاتِ اللَّهِ هُزُؤًا
وَوَعَرْتُمْ كُمُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا قَالِيَوْمَ لَا
يُخْرَجُونَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْعَتُونَ ⑥

فَلِلَّهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَرَبِّ
الْأَرْضِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ⑦

وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑧



सूर: अल्-अहक्राफ़

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां छित्तरी आयतां ते चार रुकू न।

अ'कं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

हमीद ते मजीद (खुदा इस सूर: गी नाजल
करने आहला ऐ) ॥ 2 ॥

بِسْمِ اللَّهِ

حَمْدٌ ②

अल्लाह (यानी) ग़ालिब ते हिक्मत आहली
हस्ती पासेआ इस कताब (मजीद) गी उतारेआ
गेआ ऐ ॥ 3 ॥

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ
الْحَكِيمِ ③

(ते ओह आखदा ऐ जे) असें गासैं ते धरती
गी ते जे किश इंदे मज़ाटै ऐ बिला ब'जा पैदा
नेई कीता ते नां गै कोई समां निश्चत करने
बगैर उसी पैदा कीता ऐ ते ओह लोक जिमें
इन्कार कीता ऐ ओह इस गल्ला शा मूह फेरा
करदे न जे उनेंगी डराया गेदा ऐ ॥ 4 ॥

مَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَدَّدٍ ④
كَفَرُوا عَمَّا أَنْذَرُوا مُعْرِضُونَ ⑤

तू (उनेंगी) आखी दे जे मिगी दस्सो ते सेही
जे जिनेंगी तुस खुदा दे सिवा पुकारदे ओ, उनें
धरती दी कोहकी-कोहकी चीज पैदा कीती
दी ऐ? जां उंदा गासैं गी पैदा करने च कोई
दखल है? जेकर तुस इस गल्ला च सच्चे ओ,
तां इस शा पैहलें जे कुसै कताबै दी दलील
पेश करो, जां (जेकर कोई कताब नेई ते)

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ
شِرْكٌ فِي السَّمَوَاتِ ⑥
إِيتُونِي بِكِتَابٍ
مِّنْ قَبْلِ هَذَا أَوْ أَثَرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ

तुस सच्चे ओ, तां कोई इलम सरबंधी दलील
गै पेश करो ॥ 5 ॥

ते उस शा बड्डा गुमराह कु 'न होई सकदा
ऐ जेहका खुदा दे सिवा उनें (हस्तियें) गी
पुकारदा ऐ जो क्यामत तक उसदी कोई
दुआऽ कबूल नेई करी सकदियां, बल्के ओह
(हस्तियां) उंदी प्रार्थनें शा बिल्कुल अनजान
न ॥ 6 ॥

ते जिसलै लोकें गी दबारा जींदा करियै
दुआलेआ जाग (ओह झूठे बनाए गेदे उपास्य)
उंदे दुश्मन होंगन ते उंदी अबादत दा इन्कार
करडन ॥ 7 ॥

ते जिसलै उनेंगी साद्वियां जाहरा-बाहरा आयतां
सुनाइयां जंदियां न तां मुन्कर सच्ची गल्ल
सुनियै आखदे न जे एह ते इक जाहरा-बाहरा
जादू ऐ (फी अस इसी कियां मनी लैचै)
॥ 8 ॥

क्या ओह एह गलांदे न जे एह (कुरआन)
उसनै आपू गै बनाई लैते दा ऐ? तू उनेंगी
आखी दे जे जेकर मैं एह आपू गै बनाई लेदा
ऐ तां (अ'ऊं खुदा दी स'जा दा हक्कदार आं
ते) तुस मिगी खुदा दे अजाब दे कुसै बी
हिस्से शा बचाई नेई सकदे। ओह उनें सारी
गल्लें गी भलेआं जानदा ऐ जेहकियां तुस बे-
मतलब करदे रौहदे ओ, ओह थुआड़े ते मेरे
बशकार गुआह दे तौरै पर काफी ऐ ते ओह
बौहत बख्शने आहला (ते) बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 9 ॥

तू उनेंगी आखी दे जे अ'ऊं दुनियां च पैहला
रसूल ते नेई आए दा आं (मेरे शा पैहलें केई
रसूल आई चुके दे न) ते अ'ऊं नेई जानदा
जे मेरे कनै खुदा केह सलूक करग ते नां गै

إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ يَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ
مَنْ لَا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ
وَهُمْ عَنْ دَعْوَاهُمْ غَفْلُونَ ۝

وَإِذْ أَحْسَرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً
وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كُفْرِينَ ۝

وَإِذْ تَتْلَى عَلَيْهِمُ آيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ
كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ هَذَا سِحْرٌ
مُبِينٌ ۝

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۗ قُلْ إِنْ افْتَرَيْتُهُ
فَلَاتَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئاً ۗ هُوَ أَعْلَمُ
بِمَاتِئْتُمْ فِيهِ ۗ كَفَىٰ بِهِ شَهِيدًا بَيْنِي
وَبَيْنَكُمْ ۗ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝

قُلْ مَا كُنْتُ بِدَعْمًا مِنَ الرُّسُلِ
وَمَا أَدْرِىٰ مَا يُفْعَلُ بِكُمْ وَلَا بِكُمْ ۗ

एह जाननां जे थुआड़े कन्नी केह सलूक करग अ'ऊं ते सिर्फ उस वह्नी दा अनुसरण करना जो मेरे पर नाजल होई दी ऐ ते अ'ऊं ते सिर्फ जाहरा-बाहरा सचेत करने आहला आं ॥ 10 ॥

तू आखी दे जे मिगी दस्सो ते सेही जे जेकर मेरी वह्नी खुदा पासेआ होई ते तुसैं ओहदा इन्कार करी दिता, बावजूद इसदे जे बनी इस्राईल बिच्चा इक गुआह (यानी मूसा) गुआही देई चुके दा ऐ जे ओहदे आंगर इक शख्स' जाहर होग (तां केह एह गल्ल अजीब नेई होग जे ओह जेहका पैहलें होई चुके दा हा) ओह ते ईमान लेई आया ते तुस (जिंदे समै ओह आया ऐ) घमंड शा कम्म लै करदे ओ? अल्लाह जुलम करने आहलें गी कदें बी हदायत दा रस्ता नेई दसदा ॥ 11 ॥ (रूकू 1/1)

ते मुन्कर मोमिनें गी आखदे न जे जेकर कुर'आन च कोई अच्छी तलीम होंदी तां एह (मोमिन) साढ़े शा पैहलें एहदे पर ईमान नेई आहनदे, की जे इंदे पर (मुन्करें पर) उसदी असलीयत जाहर नेई होई ओह (असफलता करी गुम्से च इयै गल्ल) गलांगन जे एह ते इक पुराना झूठ ऐ, (जो पैहले लोक बी खुदा दे बाँरे बोलदे आए न) ॥ 12 ॥

हालांके इस शा पैहलें मूसा दी कताब आई चुकी दी ऐ जेहकी रैहनमाई करने आहली बी ही ते रैहमत बी ही, ते एह (कुर'आन) इक ऐसी कताब ऐ जो अपने शा पैहली कताबें दी तसदीक² करदी ऐ ते अरबी जबान च ऐ तां

إِن تَتَّبِعِ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿١٠﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَكَفَرْتُمْ بِهِ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ فَأَمَنْ وَاسْتَكْبَرْتُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١١﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُونَا إِلَيْهِ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ فَسَيَقُولُونَ هَذَا إِفْكٌ قَدِيمٌ ﴿١٢﴾

وَمِنْ قَبْلِهِ كَتَبَ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۗ وَهَذَا كِتَابٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانِ عَرَبِيٍّ لِّيُنذِرَ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۗ وَبُشْرَىٰ لِلْمُحْسِنِينَ ﴿١٣﴾

1. एहदे च 'तौरात की व्यवस्था' नांइ दी कताब 18.18 आहली उस भविक्खवाणी पासै संकेत कीता गेदा ऐ जे "अ'ऊं उंदे आसतै उंदे भ्राएं बिच्चा तेरे जनेहा इक नबी भेजगा"।
2. यसायह भाग 21 आयत 13-17 च अरब देश च इक नबी दा प्रादुर्भाव/अवतार होने बाँरे भविक्खवाणी कीती गेदी ऐ। उस च दस्सेआ गेदा ऐ जे उस नबी गी अपने देसैं चा हिज्रत करनी पौग ते अपने बरोधियें कन्ने युद्ध बी करना पौग जेहदे च ओह विजयी होग ते ओहदे बाँरे अपमानत होंगन।

जे जिनें जुलम कीते दा ऐ उनेंगी डराऽ ते जेहके लोक खुदा दे हुकम मताबक कम्म करदे न उनेंगी शुभ-समाचार देऐ ॥ 13 ॥

(यानी) ओह लोक जो एह आखदे न जे अल्लाह गै साढ़ा रब्ब ऐ फी ओह उस दा'वे पर द्रिढ़ता कनै डटी जंदे न इस आस्तै ऐसे लोकें गी नां ते भविक्ख च कुसै गल्लै दा कोई भै होग ते नां गै पिछले समे दी कुसै कुताही दी चिंता होग ॥ 14 ॥

एह लोक जन्त च जाने आहले न। ओह अपने पिछलें कर्म दे बदले दे तौरै पर सदा आस्तै बास करडन ॥ 15 ॥

ते असें मनुक्खै गी अपने माता-पिता कनै उपकार करने दी शिक्षा दिती ही, की जे उसदी माता नै कश्ट बरदाशत करियै उसी अपने गर्भ च चुक्की रक्खेआ हा ते उससै कश्ट कनै उसी जनम दिता हा ते उसी गर्भ च चुक्की रक्खने ते ओहदा दुदध छुड़ाने तक त्रीह¹ म्हीने लगे हे, फी जिसलै मनुक्ख अपनी पूरी जुआनी च आया यानी चाली बर्रें दा होई गेआ तां उसनै गलाया जे हे मेरे रब्ब! मिगी इस गल्लै दी तफीक दे जे अ'ऊं तेरी उस नैमत दा शुक्रिया अदा करां जेहकी तोह मिगी ते मेरे माऊ-बब्बै गी दिती दी ऐ ते (इस गल्लै दी बी तफीक दे) जे अ'ऊं ऐसे चंगे कर्म करां जिनेंगी तूं पसंद करे ते मेरी उलाद च बी भलाई दी बुन्याद कायम कर। अ'ऊं तेरे अगमें झुकना ते अ'ऊं तेरे फरमांबरदार बंदें बिच्चा आं ॥ 16 ॥

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا
فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٣﴾

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا
جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا
حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا
وَحَمَلُهُ وَفِصْلُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا حَتَّىٰ إِذَا
بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً قَالَ
رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي
أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ
صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۗ
إِنِّي تَبَتُّ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٥﴾

1. दिक्खो सूर: लुक्रमान आयत 15

(जेहके लोक ऐसा करडन) ऊऐ लोक ऐसे होंगन जिंदे चंगे कर्म अस कबूल करगे ते उंदे कुकमें गी अस दरगुजर करगे! एह लोक जन्नत च जांगन! एह इक सच्चा बा'यदा ऐ। जेहका शुरू (आदम दी पैदायश) थमां मोमिमें कनै कीता जा करदा ऐ ॥ 17 ॥

ते (इक) शख्स ऐसा (बी होंदा ऐ) जेहका अपने मापें गी आखदा ऐ, थुआडै पर अफसोस! क्या तुस मिगी एह खबर पक्के तौर पर दिंदे ओ जे मिगी जींदा करियै धरती चा कडूहेआ जाग ? ते सदी पर सदी बीती चुकी दी ऐ (पर उंदे बिच्चा कोई शख्स जींदा होइयै नेई आया) ते (उसदे) दमें (मा-बब्ब) अल्लाह अगमें फरेआद करदे होई आखदे न, हे बच्चे! तेरे पर अफसोस! खुदा पर ईमान आहन, अल्लाह दा बा'यदा जरूर पूरा होइयै रौहग। इस पर ओह् उनेंगी जवाब दिंदा ऐ, एह ते सिर्फ पैहले लोकें दियां कहानियां न ॥ 18 ॥

ऐसे गै लोक न जिंदे पर उनें सम्प्रदायें बिच्चा जेहके उंदे शा पैहलें होई चुके दे न, चाहे ओह् जिनें बिच्चा हे जां इन्सानें बिच्चा, अज़ाब दी भविक्खवाणी पूरी होई गई! ओह् लोक घाटा खाने आहले हे ॥ 19 ॥

ते उनें सारें गी उंदे कर्म मताबक दरजे मिलगन ते एह इस आस्तै होग जे अल्लाह उनेंगी उंदे कर्म दा पूरा बदला देऐ ते उंदे पर जुलम नेई कीता जा ॥ 20 ॥

ते जिस दिन मुक्करें गी दोज़ख दे सामनै पेश कीता जाग (ते गलाया जाग) तुस दुनियां दी जिंदगी च अपने सब इनाम खतम करी चुके

أُولَئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَتَتَجَاوَرُ عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ وَعَدَّ الصَّدَقِ الَّذِينَ كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿١٧﴾

وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَّكُمَا أَتَعِدُنِيَّ أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِي ۗ وَهُمَا يَسْتَعْجِلَانِ اللَّهَ وَيَلُكُ امْنٌ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ فَيَقُولُ مَا هَذَا إِلَّا آسَاطِيرُ الْأُولِينَ ﴿١٨﴾

أُولَئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أَمْرٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ﴿١٩﴾

وَلِكُلِّ دَرَجَةٍ مِمَّا عَمِلُوا ۖ وَيُؤْفِقُهُمْ أَعْمَالُهُمْ وَهُمْ لَّا يُظْلَمُونَ ﴿٢٠﴾

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَلَّذِينَ ظَلَمُوا فِي حَيَاتِهِمْ فِي الدُّنْيَا

दे ओ ते दुनियां दी जिंदगी दा जिन्ना लाह लैना हा लेई चुके ओ। इस आस्तै अज्ज तुसैं गी धरती च बगैर हक्क दे घमंड करने ते ना-फरमानी करने दी ब'जा कनै अपमान दा अजाब दिता जाग ॥ 21 ॥ (स्कू 2/2)

ते (हे नबी!) आद दे भ्राऽ (हूद) गी बी याद कर, जिसलै उसनै अपनी कौम गी अहक्राफ' च डराया हा, ते उस (हूद) शा पैहलें बी केई नबी होई चुके दे हे ते उसदे बा'द बी प्रकट होए ते उंदे बिच्चा हर इक एह शिक्षा दिंदा हा जे अल्लाह दे सिवा कुसै दी उपासना नेई करो। अ'ऊं तुंदे पर इक बड्डे दिनै' दे अजाब दे औने शा डरना ॥ 22 ॥

उनैं लोकें गलाया, क्या तू साढ़े कश इस आस्तै आया ऐं जे असेंगी अपने उपास्यें थमां हटाई देऐं जेकर इससै चाल्ली ऐ ते तूं अपने सच्चा होने दी सूरत च जिस चीजै दा साढ़े कनै बा'यदा करना ऐं, उसी साढ़े कश लेई आ ॥ 23 ॥

(हूद नै) गलाया, सच्चा ज्ञान ते अल्लाह कश ऐ ते अ'ऊं ते सिर्फ ओह ज्ञान तुंदे तगर पजान्ना होना जिसे पुजाने दी जिम्मेदारी खुदा नै मिगी सौंपी दी ऐ पर अ'ऊं दिक्खना जे तुस इक मूर्ख कौम ओ ॥ 24 ॥

इस आस्तै जिसलै उसदी कौम नै उस अजाब गी इक बदलै दे रूपे च अपनी बस्तियें पासै/

وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا فَالْيَوْمَ تُجْرُونَ عَذَابَ
الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي
الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ
تَفْسُقُونَ ۝

وَأذْكَرَ آخَا عَادٍ إِذْ أُنذِرَ قَوْمَهُ
بِالْحَقِّفِ وَقَدْ خَلَّتِ النَّذْرُ مِنْ بَيْنِ
يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ
إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ
عَظِيمٍ ۝

قَالُوا أَجِئْتَنَا بِتَافِكِنَا عَنِ الْهَيْتَةِ فَأْتِنَا
بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝

قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَأُبَلِّغُكُمْ مَا
أُرْسِلْتُ بِهِ وَلَكِنِّي أَرِكُمْ قَوْمًا
تَجْهَلُونَ ۝

فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُسْتَقْبِلَ أَوْدِيَّتِهِمْ

1. मूल शब्द अहक्राफ दा अर्थ ऐ-रेतू दे उच्चे-उच्चे टिल्ल जां ढेर/टीले एह नांऽ उस जाति दे अन्जाम दी ब'जा कनै रक्खेआ गेदा ऐ। बरना पैहलें ते ओह सर-सब्ज धरती पर रौंहेदे हे। पर जियां के कुर'आन करीम च ब्यान कौता गेदा ऐ, उंदे पर इक सख्त आंधी आई जेहकी सत्त रोज दिन-रात चलदी रहेी ते ओह तबाह होई गे। (सूर: अल्हाक्रा आयत: 7-8) ते उस आंधी दी ब'जा करी उंदे देशें च रेतू दे नेकां टिल्ल बनी गे जिंदे थल्लैं ओह कौम दबोई गेई।
2. अजाब दा थोढ़ा समां बी लम्पा सेही होंदा ऐ। इस आस्तै कुर'आन करीम च अजाब आहले ध्याड़े गी अक्सर बड्डा दिन गलाया गेदा ऐ, की जे अजाब दा दिन खत्त होंदा नजरी नेई औंदा।

बादियें पासै बधदे दिक्खेआ तां उनें गलाया-
एह इक बदल ऐ जेहका साढ़ै पर बरखा
बहाग (असें गलाया) नेई, एह ओह (अज़ाब)
ऐ जिस दे तौले औने दी तुस मांग करदे होंदे
हे (एह) इक हवा ऐ, जेहदे च दर्दनाक
अज़ाब छप्पे दा ऐ ॥ 25 ॥

एह हवा अपने रब्ब दे हुकम कनै हर चीजै
गी तबाह करदी जाग। इस आस्तै नतीजा एह
होआ जे उंदे पर सवेर ऐसे समै आई जे सिर्फ
उंदे घर गै नजरी औंदे हे (सारी कौम रेतू च
दबोई गेई) इससे चाल्ली अस पापी कौम गी
बदला दिन्ने होन्ने आं ॥ 26 ॥

ते असें उनेंगी ओह ताकत बख्शी ही ! जेहकी
ताकत तुसेंगी नेई बख्शी ते असें उनेंगी थुआड़े
आंगर कन्न, अकखीं ते दिल बी दित्ते दे हे
(मगर उनें बी थुआड़े आंगर इनें चीजें शा
कम्म नेई लैता) इस आस्तै उंदे कन्नें, अकखीं
ते दिल्लें उनेंगी कोई फायदा नेई दित्ता की जे
ओह खुदा दियें आयतें दा इन्कार करने पर हठ
करदे हे ते जिस अज़ाब दा ओह मजाक
डुआंदे होंदे हे, उससै नै उनेंगी चपासेआ घेरी
लैता ॥ 27 ॥ (रुकू 3/3)

ते अस उनें बस्तियें गी बी तबाह करी चुके
दे आं जेहकियां थुआड़े आसै-पासै न। ते असें
नशानें गी तफसील कनै ब्यान करी दित्ते दा
ऐ तां जे (इनें आयतें दे सुनने आहले) अपने
हठ थमां बाज औन ॥ 28 ॥

फी की नेई उनें लोकें जिनें गी उनें खुदा दे
सिवा इस आस्तै उपास्य बनाई रक्खे दा हा
जे ओह उनेंगी खुदा दे लागै लेई औन (प्यारे
बनाई देन) उंदी मदद कीती, बल्के ओह

قَالُوا هَذَا عَارِضٌ مِّمְطَرُنَا ۖ بَلْ هُوَ مَا
اسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ ۖ رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

تَدْمِرُ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا
لَا يُرَى إِلَّا مَسَكِنُهُمْ ۚ كَذَلِكَ
نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ۝

وَلَقَدْ مَكَّنَّهُمْ فِيمَا إِن مَكَّنَّكُمْ فِيهِ
وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَآبْصَارًا وَأَفْئِدَةً ۗ
فَمَا أَغْنَى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَا
أَبْصَارُهُمْ وَلَا أَفْئِدَتُهُمْ مِنْ شَيْءٍ
إِذْ كَانُوا يَجْحَدُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَحَاقَ
بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

وَلَقَدْ أَهَلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِنَ الْقُرَى
وَصَرَفْنَا الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝

فَلَوْلَا نَصْرُهُمُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ
اللَّهِ قُرْبَانًا إِلَىٰ إِلَهِةٍ ۖ بَلْ صَلَّوْا عَنْهُمْ
وَذَلِكَ أَفْئِدَتُهُمْ وَمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝

मौके पर (उंदी अक्खीं शा) गायब होई गे ते एह उंदे झूठ ते झूठ बोलने दा नतीजा ऐ ॥ 29 ॥

ते जिसलै अस जिन्नें बिच्चा किश लोकें गी परताइयै तेरे पासै लेई आए जो कुरआन सुनने दी इच्छा रखदे हे। इस आस्तै जिसलै ओह (कुरआन पढ़ने दी सभा च) हाजर होए, तां उनें इक-दूए गी गलाया-चुप होई जाओ। फी जिसलै कुरआन पढ़ोना बंद होई गेआ तां ओह अपनी कौम कश बापस परतोई गे ते उंदे च जाइयै इस्लाम दा प्रचार शुरू करी दिता ॥ 30 ॥

(ते) अपनी कौम गी गलाया, हे साढ़ी कौम ! असें इक ऐसी कताबा गी सुनेआ ऐ जेहकी मूसा दे बा 'द उतारी गई ऐ ते जेहकियां कताबां उस शा पैहलें उतरी दियां न उंदी तसदीक करदी ऐ ते सच्च पासै ते सिद्धे रस्ते पासै अगुआई करदी ऐ ॥ 31 ॥

हे साढ़ी कौम दे लोको! अल्लाह पासेआ नमीं कताब आहने आहले शख्स दी पुकार गी कबूल करो ते ओहदे पर ईमान लेई आओ, नतीजा एह होग जे अल्लाह थुआड़े गुनाहें गी माफ करी देग ते तुसेंगी औने आहले इक दर्दनाक अजाब थमां पनाह देग ॥ 32 ॥

ते जेहका अल्लाह पासै बुलाने आहले दी गल्ल कबूल नेई करदा ओह उसी दुनियां च हराई नेई सकदा ते खुदा दे सिवा उसगी पनाह देने आहले बजूद कुतै बी नेई, ऐसे लोक जाहरी-बाहरी गुमराही च फसे दे न ॥ 33 ॥

وَإِذْ صَرَفْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِبْرِ
يَسْمَعُونَ الْقُرْآنَ فَلَمَّا حَضَرُوهُ
قَالُوا أَنصَبُوا لَنَا مِمَّا قُضِيَ وَلَوَّا لِي
قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِينَ ۝

قَالُوا لَاقِومًا إِنَّا سَمِعْنَا كِتَابًا أُنزِلَ مِنْ
بَعْدِ مَوْسَىٰ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِي
إِلَى الْحَقِّ وَالْإِلَىٰ طَرِيقٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝

لَاقِومًا أَجِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَأُمّوَابِهِ
يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُجِزْكُمْ مِّنْ
عَذَابِ أَلِيمٍ ۝

وَمَنْ لَا يُجِبْ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ
فِي الْأَرْضِ وَلَيْسَ لَهُ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءُ ۝
أُولَٰئِكَ فِي صَلَاتٍ مُّبِينٍ ۝

1. इस आयत च 'जिन्' शब्द दा प्रयोग इक यहूदी प्रतिनिधि मंडल आस्तै कौता गेदा ऐ जेहका हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दी खबर सुनियै चोरी उनेंगी मिलन आया हा, ओह नसीबैन इराक दे रोहने आहले हे। ओह लोक चूके दूर दा आए हे ते चोरी-चोरी हजरत रसूल अल्लाह गी मिले तां जे उंदी कौम ते अरब दे लोक उंदे दुश्मन नेई बनीं जान। (फ़तहुल्बयान भाग 8 सफा 355)

क्या ओह नेई दिखदे जे ओह खुदा जिसनै गासै ते धरती गी पैदा कीता ऐ ते ओह उनेंगी पैदा करदा नेई थक्केआ, ओह इस गल्ला दी बी समर्थ रखदा ऐ जे ओह मुड़दें गी जींदा करै ओह अपने हर इरादे गी पूरा करने च समर्थ ऐ ॥ 34 ॥

ते जिस दिन मुन्करें गी अग्गी दे सामनै पेश कीता जाग ते गलाया जाग जे क्या एह सच्च नेई ? ओह आखडन हां हां! असेंगी अपने रब्ब दी सघंद! (एह बिल्कुल सच्च ऐ) उसलै (खुदा) गलाग, अच्छा तुस अपने कुफर दी ब'जा करी अजाब (गी) चक्खो ॥ 35 ॥

इस आस्तै (हे नबी!) तूं बी (इस्सै चाल्ली) सबर कर जिस चाल्ली पुरखा इरादे आहले रसूल (तेरे शा पैहलें) सबर करी चुके दे न ते उंदे आस्तै एह दुआऽ नेई कर जे उंदे पर तौले अजाब आई जा। जिस दिन ओह अपने निश्चत अजाब गी दिखडन उंदी हालत ऐसी होग जे आखो ओह इस दुनियां च बड़ा थोड़ा चिर रेह न एह गल्ल (उनें मुन्करें आस्तै) सिर्फ इक नसीहत दे तौरा पर आखी गई ऐ। ते इन्कारी कौम दे सिवा कुसै गी तबाह नेई कीता जाई सकदा ॥ 36 ॥ (रुकू 4/4)

أَوْلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَعْزِبْ بِخَلْقِهِنَّ بِقَدْرِ
عَلَىٰ أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ۗ بَلَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿34﴾

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ
أَلَيْسَ هَذَا بِالْحَقِّ ۗ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا
قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ
تَكْفُرُونَ ﴿35﴾

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُو الْعُرْمِ مِنَ
الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَهُمْ ۗ كَانَتْهُمْ
يَوْمَ يَرُونَ مَا يُوْعَدُونَ ۗ لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا
سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ۗ بَلِغْ ۗ فَهَلْ يَهْتَكُمُ
إِلَّا الْقَوْمُ الْفَاسِقُونَ ﴿36﴾

سُورَةُ مُحَمَّدٍ مَدِينَةٍ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ تِسْعٌ وَثَلَاثُونَ آيَةً وَأَرْبَعَةٌ رُكُوعَاتٍ

सूर: मुहम्मद

एह सूर: मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां उनताली आयतां ते चार रूकू न।

(अ'क) अल्लाह दा नांस लेइयै (पढ़ना) जो बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

ओह लोक जिनें कुफर कीता ते खुदा दे रस्ते शा रोकेआ, खुदा नै उंदे कर्मै गी तबाह करी दिता ॥ 2 ॥

ते जो ईमान लेई आए ते उनें ईमान दे मताबक कर्म कीते ते जो मुहम्मद (हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व.) पर नाजल होआ, उस पर ईमान ल्याए, ते ऊऐ उंदे रब्ब पासेआ सच्च ऐ। अल्लाह उंदे कुकर्मै गी खट्टी देग ते उंदे हालातें गी दुरुस्त करी देग ॥ 3 ॥

एह इस आस्तै कीता गेआ जे जिनें कुफर कीता हा उनें झूठ दा अनुसरण कीता हा। ते जो ईमान ल्याए हे ओह अपने रब्ब पासेआ औने आहले सच्च पिच्छें चले हे अल्लाह इससै चाल्ली लोकें दे सामनै उंदा (असल) हाल ब्यान करदा ऐ ॥ 4 ॥

इस आस्तै (चाही दा ऐ जे) जिसलै तुस मुकुरें कनै लड़ाई दे मदान च मिलो, तां

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
أَصَلَّ أَعْمَالَهُمْ ①

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآمَنُوا
بِمَا نَزَّلَ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَهُوَ الْحَقُّ مِنْ
رَبِّهِمْ ① كَفَرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَأَصْلَحَ
بِأَلْفِهِمْ ①

ذَلِكَ بِأَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ
وَأَنَّ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَبِّهِمْ ①
كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ لِلنَّاسِ أَمْثَالَهُمْ ①

فَإِذَا لَقِيتُمْ الَّذِينَ كَفَرُوا فَضَرْبِ

मुंडियां बड़ो! इत्थें तक जे जिसलै तुस उंदा खून बगाई लैओ, तां चंगी चाल्ली जौरे कनै मुशकां कस्सो। फी उसदे बा'द जां ते स्हान करियै (उनेंगी छोड़ी देओ) जां युद्धै दा हरजाना लेइयै (छोड़ी देओ) इत्थें तक जे लड़ाई अपने हथ्यार रक्खी देऐ (यानी खतम होई जा) एह सब किश हालात दे तैहत होआ ऐ। ते जेकर अल्लाह चांहदा तां आपूं गै उंदे कनै बदला लेई लैंदा। पर उसनै चाह्या जे तुंदे बिच्चा केइयें गी केइयें (दूऐं) राहें अजमाऽ जेहके लोक अल्लाह दे रस्ते च मरोई गे। अल्लाह उंदे कर्म गी कदें बी जाया नेई जान देग ॥ 5 ॥

ओह उनेंगी जरूर कामयाबी पासै लेई जाग ते उंदा हालत गी दरुस्त करग ॥ 6 ॥

ते उनेंगी उनें जन्तें च दाखल करग जिंदे बाँरे उसनै उनेंगी पैहलें गै दस्सी दिते दा ऐ ॥ 7 ॥

हे मोमिनो! जेकर तुस अल्लाह दी मदद करगेओ तां ओह थुआड़ी मदद करग ते थुआड़े पैरे मजबूत करग ॥ 8 ॥

ते जिनें कुफर कीता ऐ उंदे पर अफसोस ऐ ते खुदा उंदे कर्म गी नश्ट करी देग ॥ 9 ॥

की जे उनें अल्लाह दे उतारे दे (कलाम) गी ना-पसंद कीता ऐ इस आस्तै खुदा नै बी उंदे कर्म गी नश्ट करी दिता ॥ 10 ॥

الرِّقَابِ ط حَتَّىٰ إِذَا أَنْخَسْتُمُوهُمْ
فَشُدُّوا الوثَاقَ ق فَاِمًا مَّا بَعْدُ وَاِمَا
فِدَاءً حَتَّىٰ تَصْعَ الحَرَبِ اُوزَارَهَا
ذَلِكَ لَوْ يَشَاءُ اللهُ لَا تَنْصَرِمُنْهُمْ
وَلَكِنْ لِّيَبْلُوْا بَعْضَكُمْ بَعْضًا وَالَّذِينَ
قَاتَلُوا فِي سَبِيلِ اللهِ فَلَنْ يُصَلَّ
اَعْمَالُهُمْ ٥

سَيَهْدِيَهُمْ وَيُصَلِّحْ بِاللَّهُمْ ٦

وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ٧

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَنْصُرُوا اللهَ
يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ٨

وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعْسًا لَهُمْ وَأَضَلَّ
اَعْمَالُهُمْ ٩

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أَنْزَلَ اللهُ فَاحْطَبْ
اَعْمَالُهُمْ ١٠

1. किश लोक इनें आयतें पर इतराज करदे न, हालांके अज्ज बी दुनियां च जंगां होआ करदियां न ते हर जंग च बरोधी सपाही दुश्मन दी मुंडी गै बढदा ऐ। जेकर आखो जे फी जिकर की कीता-तां इसदा जवाब एह ऐ जे इस्लाम नै नरमी दी तलीम इस चाल्ली दिती दी ऐ जे डर हा जे जेकर एह आयत नाजल नेई होदी, तां मुसलमान जंग च दुश्मन गी कल्ल करना न-जायज समझदे।

2. यानी अल्लाह दे धर्म दी। की जे अल्लाह आपूं कुसै दी मदद दा मुत्हाज नेई।

क्या उन्हें धरती पर चली-फिरिये नेई दिक्खेआ जे उंदे शा पैह्लें जेहके होई चुके दे न उंदा अन्जाम केह होआ। अल्लाह नै उंदे पर अजाब नाज़ल कीता हा ते (अज्जे-कल्लै दे) मुन्करें दा बी उंदे नेहा गै हाल होग ॥ 11 ॥

एह (इस आस्तै होग) जे अल्लाह मोमिनें दा मददगार ऐ। ते मुन्करें दा कोई मददगार नेई ॥ 12 ॥ (रुकू 1/5)

अल्लाह मोमिनें ते ईमान मताबक कर्म करने आहलें गी ऐसे बागें च दाखल करग जिंदे ख'ल्ल नैहरां बगा दियां होंगन ते जिनें कुफर कीते दा ऐ ओह किश दुन्याबी फायदा लेई लैंगन ते इस चाल्ली खांगन-पींगन जिस चाल्ली चौखर खंदे-पींदे न, ते दोजख उंदा ठकाना होग ॥ 13 ॥

ते मती-सारी बस्तियां नेहियां हियां जो तेरी इस बस्ती शा जिसनै तुगी कड्डी लाया, ज्यादा ताकतवर हियां (फी बी) असें (उंदी ताकत दे बावजूद) उनेंगी तबाह करी दिता ते कोई उंदा मददगार नेई बनी सकेआ ॥ 14 ॥

क्या ओह जो अपने रब्ब पासेआ इक (मजबूत) दलील पर कायम रौहदा ऐ, उंदे आंगर होई सकदा ऐ जिंदे बुरे कर्म उनेंगी खूबसूरत बनाइयै दस्से गेदे होन ते जेहके अपनी खाहशें दे पिच्छें चलदे/पिट्टू होन ? ॥ 15 ॥

संयमियें कनै जिनें सुर्गे दा बा'यदा कीता गेदा ऐ उंदे च ऐसे पानी दियां नैहरां होंगन जिंदे च सडैहन नेई होग ते ऐसियां नैहरां होंगन जिंदे च नेहा दुद्ध चलदा होग जेहदा सुआद कर्दे नेई बदलग (यानी ओहदे च बी सड़ांध नेई होग) ते ऐसी शराबै दियां नैहरां होंगन

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
دَمَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلِلْكَافِرِينَ أَمْثَالُهَا ①

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَأَنَّ
الْكَافِرِينَ لَا مَوْلَى لَهُمْ ②

إِنَّ اللَّهَ يَدْخُلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ جَنَّتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَتَمَتَّعُونَ
وَيَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ
مَوْى لَهُمْ ③

وَكَانَ مِنْ قَرِيْبِهِ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً
مِّنْ قَرِيْبِكَ الَّتِي أَخْرَجْتَ أَهْلَكْنَهُمْ
فَلَا نَأْصِرْ لَهُمْ ④

أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّنْ رَبِّهِ كَمَنْ زُرِّيْنَا
لَهُ سُوءَ عَمَلِهِمِ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ⑤

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا
الْأَنْهَارُ مِنْ مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِنْ
لَبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِنْ حَمْرٍ

जेहकियां पीने आहलें गी मजेदार लगडन ते पाक ते साफ-शफाफ मखीरे दियां नैहरां बी होंगन ते उनेंगी उनें सुर्गे च हर किसमें दे फल बी मिलडन ते अपने रब्ब पासेआ माफी बी मिलग (क्या एह् जन्ती / सुर्ग बासी) उनें लोकें आंगर होई सकदे न जेहके जे चिरे तगर अग्गी च रौहने दे हक्कदार करार दित्ते गेदे न ते जिनेंगी ऐसा गर्म पानी पलैया जाग जेहका उंदी आंदरें गी कट्टी/साड़ी देग ? ॥ 16 ॥

ते उंदे बिच्चा किश ऐसे बी हैन जेहके जाहरा तौर तेरे पास कन्न लाई रखदे न पर जिसलै ओह तेरे कशा उट्टियै चली जंदे न ते उनें लोकें गी आखदे न जिनेंगी इलम दिता गेदा ऐ जे इस (रसूल) नै हूनै-हूनै केह गलाया हा। ओह लोक ऐसे न जिंदे दिलें पर अल्लाह नै मोहर करी दित्ती/लाई दित्ती ते अपनी खाहशें दे पिच्छें चली पौंदे न ॥ 17 ॥

ते ओह लोक जेहके हदायत पांदे न, अल्लाह उनेंगी हदायत च होर बी बधांदा जंदा ऐ ते उनेंगी उंदी परिस्थिति मताबक संयम बख्शादा ऐ ॥ 18 ॥

इस आस्तै ओह सिर्फ आखरी फैसले दी घड़ी दा इंतजार करा करदे न जे ओह अचानक उंदे कश आई जा। इस आस्तै उसदे लच्छन ते जाहर होई चुके दे न ते जिसलै उसदी असल सचाई उंदे कश आई पुज्जग तां (दस्सो जे) उस बेलै उनेंगी केहड़ी चीज फायदा देग ? ॥ 19 ॥

ते समझी लै जे अल्लाह दे सिवा कोई उपास्य नैई ते तेरे हक्क च जेहके (तेरी मुन्कर कौम नै) गुनाह कीते दे न उंदे आस्तै खुदा शा

لُدَّةٌ لِلشَّرِيبِينَ وَأَنْهَرُمْ مِنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۖ وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ ۗ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ۝

وَمِنْهُمْ مَّن يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۗ حَتَّىٰ إِذَا خَرَجُوا مِن عُنْدِكَ قَالُوا لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ أَنفَا ۗ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ۝

وَالَّذِينَ هَتَدُوا وَارَادَهُمْ هُدًى وَاتَّبَعُوا تَقْوَاهُمْ ۝

فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۖ فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا ۚ فَأَنَّىٰ لَهُمْ إِذَا جَاءَهُمْ ذِكْرُهُمْ ۝

فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۗ

माफी मंगदा रौह ते मोमिन मइदें ते मोमिन जनानियें बाँरे बी माफी मंगदा रौह जे अल्लाह उंदी कुताहियें गी माफ करी देऐ ते अल्लाह थुआड़े तांह-तुआंह फिरने ते कुसै ज'गा ठैहरने गी चंगी-चाल्ली जानदा ऐ ॥ 20 ॥ (रुकू 2/6)

ते मोमिन आखदे न जे की (इस पर) कोई सूरः¹ नाजल नेई होंदी (जेहदे च युद्ध दा हुकम होऐ) इस आस्तै जिसलै ऐसी पुख्या (हुकमें आहली) सूरः नाजल होंदी ऐ ते ओहदे च लड़ाई दा जिकर होंदा ऐ, तां तूं उनें लोकें गी, जिंदे दिलें च बमारी ऐ, दिक्खना ऐं जे ओह तेरे पासै ऐसे आदमी आंगर दिखदे न जेहदे पर मौती दी गश² छाई दी होऐ इस लेई उंदे आस्तै (खुदा पासेआ) हलाकत निश्चत ऐ ॥ 21 ॥

(उंदा असल तरीका एह होना लोड़दा हा जे ओह आखदे जे असेंगी कुसै जल्दबाजी दी जरूरत नेई) सादा कम्म ते आज्ञा-पालन करना ते (लोकें गी) नेक गल्लां सुनाना ऐ फी जिसलै गल्ल पक्की होई जंदी (यानी लड़ाई छिड़ी पौंदी) ते जेकर ओह अल्लाह दे हजूर च सच्चे बनदे (यानी जो आज्ञा-पालन दा बा'यदा कीता हा उसी पूरा करी दिंदे) तां एह उंदे आस्तै बेहतर होंदा ॥ 22 ॥

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَقَالِكُمْ وَمُؤْمِنِكُمْ ۝

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا لَوْلَا نَزَّلَتْ سُورَةٌ ۚ
فَإِذَا أَنْزَلَتْ سُورَةٌ مُحْكَمَةٌ وَذُكِرَ فِيهَا
الْقِتَالُ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ
مَرَصٌ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشَى
عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۗ فَأَوَّلِي لَهُمْ ۝

طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَّعْرُوفٌ ۚ فَإِذَا عَزَمَ
الْأَمْرُ ۖ فَلَوْ صَدَقُوا اللَّهَ لَكَانَ حَيْرًا
لَّهُمْ ۝

1. यानी मोमिनें गी शरीअत दे अनुदेश अपनाने दा इस चाल्ली चाऽ होंदा ऐ जे ओह ते इंतजार करदे रौहदे न जे खुदा दा कोई हुकम नाजल होऐ ते अस ओहदे पर अमल करचें / उसी अपनाचें। पर मुनाफिकें दी हालत एह होंदी ऐ जे जिसलै कोई कुरबानी आहला हुकम नाजल होऐ तां उंदे पर मौत औने शा पेहलें गै आई जंदी ऐ।
2. यानी ऐसी गश जो मौती मौके पौंदी ऐ जिस च अक्खीं खु'ल्ली दियां रेही जंदिंयां न ते नजर फटीं जंदी ऐ अर्थात अक्खीं अगमें तिरमिरे उड्डन लगी पौंदे न।

इस आस्तै क्या एह गल्ल करीब' (ममकन) नेई जे जेकर तू पिट्ठ फेरी लैं तां (फी बी) धरती च फसाद करने दा मूजब होई जाओ ते रिश्ते-नातें गी तोड़ी देओ ॥ 23 ॥

इयै ओह लोक न जिंदे पर अल्लाह नै लानत कीती ऐ ते उनेंगी बोला बनाई दिता ऐ, ते उंदी अक्खीं दी सोझ खतम करी दिती ऐ ॥ 24 ॥

क्या ओह कुर'आन पर गौर नेई करदे, क्या उंदे दिलें पर ऐसे ऐसे जंदरे न जेहके उंदे गै दिलें दी पैदावार न ॥ 25 ॥

ओह लोक जेहके हदायत जाहर होने पर फिरी गे। शतान नै उनें गी उंदे कर्म खूबसूरत बनाइयै दस्से न। ते उनेंगी (झूतियां) मेदां बन्हाइयां / तसल्लियां दुआइयां न ॥ 26 ॥

एह इस आस्तै (होआ) ऐ जे ओह उनें लोकें गी, जेहके खुदाई तलीम गी ना-पसंदगी दी नजरें कनै दिक्खा करदे न, गलाऽ करदे न जे अस थुआड़ी किश गल्ले^१ दा आज्ञा-पालन करगे/किश गल्लें गी मनगे, अल्लाह उंदी राजदारी गी जानदा ऐ ॥ 27 ॥

इस आस्तै उस बेले केह हाल होग-जिसलै जे फरिश्ते उंदियां रूहां कब्जे च करा करदे होंगन/ कड्हा करदे होंगन ते उंदे मूहें पर ते उंदी पिट्ठी पर कोड़े ला करदे होंगन ॥ 28 ॥

قَهْلَ عَيْبَتِكُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَتَقَطَّعُوا أَرْحَامَكُمْ ﴿٢٣﴾

أُولَئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعَمَّى أَبْصَارَهُمْ ﴿٢٤﴾

أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَى قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ﴿٢٥﴾

إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَى أَدْبَارِهِمْ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ ۗ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ﴿٢٦﴾

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَطِطُنَا ۖ فِي بَعْضِ الْأُمْرِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَسْرَارَهُمْ ﴿٢٧﴾

فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّيْتُمُ الْمَلَائِكَةَ يُصْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ﴿٢٨﴾

1. यानी क्या तुस लोक दिखदे नेई जे इस्लामी जंगं फसाद पैदा नेई करदियां, बल्के जेकर एह जंगं नेई कीतियां जान, ते बे-स्हारे दी पहाजत नेई कीती जा तां फसाद पैदा होंदा ऐ। इस आस्तै मोमिन ऐसी उत्तम हिक्मत आहली जंगें शा घबराई गै नेई सकदा।
2. यानी ओह ताले खुदा नै नेई लाए बल्के उंदे कुकर्में दी ब'जा करी उंदे दिलें पर लगगे न।
3. मतलब एह जे इस्लाम दे मकाबले च अस इक हद तगर थुआड़ा साथ देगे। हां, फसी गै गे तां मजबूरी ऐ।

एह उस आस्तै होग जे जिस गल्लै गी अल्लाह नै ना-पसंद कीता ओह उसदे पिच्छें चली पे ते खुदा दी रजा/मरजी (दी तलाश/खोज) गी ना-पसंद कीता इस आस्तै खुदा नै बी उंदे कर्म नश्ट करी दित्ते ॥ 29 ॥ (रकू 3/7)

क्या ओह लोक जिंदे दिलें च बमारी ऐ समझदे न जे अल्लाह उंदे दिलें च छपे दे कीनें गी कदें जाहर नेई करग ॥ 30 ॥

ते जेकर अस चाहचै तां उंदी असलीयत तेरे सामनै जाहर करी देचै, ते तू उनेंगी उंदे चेहरें थमां पन्धानी लैं ते (हून बी) तू उनेंगी उंदी गल्ल-बात दे लैहजे शा पन्धानी लैना ऐं, ते अल्लाह थुआड़े कर्मै गी जानदा ऐ ॥ 31 ॥

ते अस थुआड़ी अजमैश जरूर करगे, उस बेलै तगर जे अस तुंदे बिच्चा खुदा दे रस्ते च जिहाद करने आहलें ते सबर करने आहलें गी जानी लैचै, ते अस थुआड़े अंदरूनी हालातें दी जरूर अजमैश करगे ॥ 32 ॥

जिनें लोकें कुफर कीते दा ऐ ओह अल्लाह दे रस्ते शा (लोकें गी) रोकदे न ते हदायत दे खुल्ली जाने दे बा'द रसूल कनै इखत्लाफ करदे न। एह लोक अल्लाह गी किश बी नुकसान नेई पुजांगन, बल्के ओह (खुदा) उंदे कर्मै गी नश्ट करी देग ॥ 33 ॥

हे ईमान आहलेओ! अल्लाह ते उसदे रसूल दा आज्ञा-पालन करो, ते अपने कर्मै गी जाया/नश्ट नेई करो ॥ 34 ॥

सच्चें गै जिनें कुफर कीता ऐ ते अल्लाह दे रस्ते थमां लोकें गी रोकेआ ऐ, फी ओह उससै

ذَلِكَ بِأَنَّهُم اتَّبَعُوا مَا آسَخَطَ اللَّهُ
وَكِرَهُوا رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ۝

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ أَنْ
لَنْ يُخْرِجَ اللَّهُ أَصْعَانَهُمْ ۝

وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ
بِسِيمَتِهِمْ ۖ وَتَعْرِفْتَهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ
وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ۝

وَتَبَلَّوْا نَفْسَكُمْ حَتَّىٰ نَعْلَمَ الْمُجْهِدِينَ
مِنْكُمْ وَالصَّابِرِينَ وَتَبَلَّوْا أَخْبَارَكُمْ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ
وَشَاقُّوا الرَّسُولَ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ
الهُدَىٰ لَنْ يَصُرُوا لِلَّهِ شَيْئًا ۖ وَسَيُحِطُّ
أَعْمَالَهُمْ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اطِّعُوا اللَّهَ وَاطِّعُوا
الرَّسُولَ وَلَا تَبْطُلُوا أَعْمَالَكُمْ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ

हालती च मरी बी गे जे ओह मुन्करें बिच्चा हे,
तां अल्लाह उनेगी कदें माफ नेई करग ॥ 35 ॥

इस आस्तै हे मोमिनो! सुस्त मत होंदे होओ
जेहदे नतीजे च सु'ला आहली बक्खी बुलाना'
शुरू करी देओ। आखर तुस गै गालिब रौहगे
ओ ते अल्लाह थुआड़े कनै ऐ ते कदें थुआड़े
कर्में च कमी नेई औन देग ॥ 36 ॥

एह संसारक जीवन सिर्फ इक खेढ ते गफलत/
बे-परवाही दा समान ऐ ते जेकर तुस ईमान
आहनो ते तक्रवा/संयम अखत्यार करो, तां
अल्लाह थुआड़े अजर तुसेंगी देग, ते ओह
थुआड़े माल (धन-दौलत) थुआड़े शा नेई
मंगदा ॥ 37 ॥

जेकर ओह थुआड़े माल (धन-दौलत) तुंदे
शा मंगै ते (इस पर) थुआड़े कनै हठ करै,
तां तुस कंजूसी शा कम्म लेई सकदे ओ, ते
ओह जरूर थुआड़े कान्ने थुआड़े दिलें चा
कड्ढी देग ॥ 38 ॥

सुनो! तुस ओह लोक ओ जिनेंगी इस आस्तै
बुलाया जंदा ऐ जे तुस अल्लाह दे रस्ते च
खर्च करो, ते तुंदे बिच्चा किश ऐसे होंदे न
जेहके कंजूसपुने शा कम्म लेंदे न, ते जेहका
बी कंजूसी/सरफे शा कम्म लै ओह अपनी
जान्ना बाँरे गै कंजूसी शा कम्म लेंदा ऐ बरना
अल्लाह बे-न्याज ऐ ते तुस गै मुत्हाज ओ, ते
जेकर तुस फिरी / बदली जाओ, तां ओह
थुआड़ी ज'गा इक होर कौम गी बदलियै लेई
औग ते ओह थुआड़े आंगर (सुस्ती करने
आहले) नेई होंगन ॥ 39 ॥ (रुकू 4/8)

ثُمَّ مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارًا فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ
لَهُمْ ۝

فَلَا تَهِنُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلْمِ ۗ وَأَنْتُمْ
الْأَعْلَوْنَ ۗ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَكُنْ يَتَرَكُمُ
أَعْمَالِكُمْ ۝

إِنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهُوَ ۖ وَإِنْ
تَوَمَّنُوا وَاتَّبَعُوا آيُوتَكُمْ أَجُورَكُمْ
وَلَا يَسْأَلُكُمْ أَمْوَالِكُمْ ۝

إِنْ يَسْأَلُكُمْوهَا فَيُحْفِكُمْ تَبَخَّلُوا
وَيُخْرِجَ أَضْعَانَكُمْ ۝

هَآأَنْتُمْ هُوَآءِ تَدْعُونَ لِتُنْفِقُوا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ ۖ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَبْخُلُ ۗ وَمَنْ
يَبْخُلْ فَإِنَّمَا يَبْخُلُ عَن نَّفْسِهِ ۗ وَاللَّهُ
الْعَنِي ۗ وَأَنْتُمْ الْفُقَرَاءُ ۗ وَإِنْ تَتَوَلَّوْا
يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۗ ثُمَّ لَا يَكُونُوا
أَمْثَالَكُمْ ۝

سُورَةُ الْفَتْحِ مَدْيَنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ ثَلَاثُونَ آيَةً وَأَرْبَعَةٌ رُكُوعَاتٌ

सूर: अल्-फ़तह

एह सूर: मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां त्रीह आयतां ते चार रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांउ लेइयै (पढ़ना) जो बे-
हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

असें तुगी इक खु'ल्ली-डु'ल्ली फतह बख्शी
ऐ ॥ 2 ॥

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا ①

जिसदा नतीजा' एह होगे जे अल्लाह तेरे बारे
कीते गेदे ओह गुनाह बी जो पैहलें होई चुके
दे न, खट्टी देग ते जेहेक हूँ तगर नेई होए
(पर अगमें होने दी संभावना ऐ) उनें गी बी
खट्टी देग ते तेरे पर अपनी नैमत पूरी करग
ते तुगी सिद्धा रस्ता दस्सग ॥ 3 ॥

لِيُغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا
تَأَخَّرَ وَيَسِّرَ لَكَ يَسْرَهُ عَلَيْهِ وَيُهَيْدِكَ
صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ①

ते अल्लाह तेरी शानदार मदद करग ॥ 4 ॥

وَيُضْرِكَ اللَّهُ نَصْرًا عَازِيزًا ①

ओह (खुदा) गै ऐ जिसनै मोमिनें दे दिलें पर
संतुश्टी उतारी तां जे जेहका ईमान उनेंगी पैहलें

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَةَ فِي

1. एह सूर: सुलह हुदैबिया दे बारे ऐ ते इस च गलाया गेदा ऐ जे मक्का दी विजय शा पैहलें इक विजय होर
ओने आहली ऐ यानी हुदैबिया दी सुलह। जेहदे च अरब दे मते-हारे कबीले हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व.
कन्नें समझोता करडन। हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. गी चाही दा ऐ जे उसलें सैहनशीलता शा कम्म लैन
ते जो पाप अरब लोक पैहलें करी चुके दे न उंदे आस्तें बी अल्लाह शा माफी मंगे ते उनें पापें आस्तें बी
जो हुदैबिया दी सुलह ते मक्का विजय दे बिचले समे च होने आहले न। नेई ते एह मतलब नेई जे हजरत
मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. नै कोई पाप कीता हा। जिल्थें-जिल्थें बी 'जाम्ब' शब्द बरतोए दा ऐ, विजय दे
मौके पर बरतोए दा ऐ। इस लेई हर कोई समझी सकदा ऐ जे जाम्ब दा अर्थ थुआड़े द्वारा कीते दा कोई पाप
नेई बल्के थुआड़े बारे कीता गेदा अरब कबीलें ते मुक्करें दा पाप ऐ।

नसीब हा ओहदे कनै होर ईमान बी उनैगी हासल होई जा, ते अल्लाह दे गासैं च बी लश्कर न ते धरती च बी ते अल्लाह बड़े इलम आहला ते बड़ी हिक्मत आहला ऐ ॥ 5 ॥

(मोमिनैं दा ईमान बधाना) इस आस्तै होग तां जे ओह (अल्लाह) मोमिन मड़दें ते मोमिन जनानियें गी ऐसी जन्तें च दाखल करै जिंदे हेठ नैहरां बगा करदियां होंगन, ओह उंदे च सदा आस्तै बास करडन ते तां जे ओह (अल्लाह उंदे गुनाह' मटाई देऐ ते अल्लाह दे लागे इयै बड़्डी कामयाबी ऐ ॥ 6 ॥

ते तां जे मुनाफ़िक मड़दें ते मुनाफ़िक जनानियें ते मुश्रिक मड़दें ते मुश्रिक जनानियें गी, जो अल्लाह बारे बुरे विचार रक्खने आहले न, अज़ाब' देऐ। मसीबती दा चक्कर/समां उंदे पर गै और ते अल्लाह नै उंदे पर गज़ब/दैवी प्रकोप नाज़ल कीता ते अपने लागेआ उनैगी दूर करी दिता ते उंदे आस्तै उसनै नरक त्पार करी रक्खे दा ऐ, जो बौहत बुरा ठकाना ऐ ॥ 7 ॥

ते गासैं ते धरती दे लश्कर बी अल्लाह दे गै न। ते अल्लाह बड़ा ग़ालिब ते हिक्मत आहला ऐ ॥ 8 ॥

असैं तुगी (अपने गुणें आस्तै) गुआह ते (मोमिनैं आस्तै) शुभ समाचार देने आहला ते

قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِيَرُدَّادُوا إِيْمَانًا
مَعَ إِيْمَانِهِمْ ۗ وَ لِلّٰهِ جُودُ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ ۗ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝

لِيَدْخُلِ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
وَيُكْفَرُ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ ۗ وَ كَانَ ذَٰلِكَ
عِنْدَ اللّٰهِ فَوْرًا عَظِيْمًا ۝

وَ يُعَذِّبُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ
وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّالِمِيْنَ
بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءَ ۗ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۗ
وَ غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَ لَعَنَهُمْ وَ آَعَدَ
لَهُمْ جَهَنَّمَ ۗ وَ سَاءَتْ مَصِيْرًا ۝

وَ لِلّٰهِ جُودُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَ كَانَ
اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَٰهِدًا وَ مَبَشِّرًا

1. यानी ईमान दी बढ़ोतरी दे नतीजे च इक ते आखरत दा इनाम बधी जाग। ते दूआ ओह पापें शा मुक्त होई जांगन।
2. यानी मोमिनैं दे ईमान दी बढ़ोतरी मुनाफ़िक मड़दें ते मुनाफ़िक जनानियें दे अज़ाब दा मूजब होई जाग। यानी ओह ते एह मेद रखदे हे जे इनैं हालातें च मोमिन भटकी जांगन, पर नतीजा उल्ट निकलेआ जे ओह ईमान च होर बी बधी गे। इस आस्तै मुनाफ़िकें ते मुश्रिकें दे हत्थ सिवाए कुढ़ने ते जलने दे अज़ाब दे किश बी नैई आया। इसैं चाल्ली उनैं लोकें दे हत्थ बी किश नैई आया। जो अल्लाह बारे बुरे विचार रखदे हे ते समझदे हे जे उंदे उपाऽ इस्लाम गी नुकसान पुजांगन।

(मुन्करें आस्तै) सोहगा करने आहला बनाइयै भेजेआ ऐ ॥ 9 ॥

وَتَذِيرًا ۝

तां जे तुस ओहदे राहें अल्लाह ते उसदे रसूल पर ईमान आहनो ते ओहदी मदद करो ते उसदी इज्जत करो, ते सवेरे-शाम उसदी स्तुति करो ॥ 10 ॥

لَتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُعَزِّرُوهُ
وَتُوَفِّرُوهُ ۖ وَتُسِيحُوهُ بُكْرَةً
وَأَصِيلًا ۝

ओह लोक जो तेरी बैअत (दीक्षा) करदे न ओह सिर्फ अल्लाह दी बैअत (दीक्षा) करदे न। अल्लाह दा हत्थ उंदे हत्था पर ऐ, इस आस्तै जो कोई उस ऐहद गी तोड़ग तां उसदे तोड़ने दा वबाल/गाज उसदे अपने उप्पर पौग, ते जो कोई उस ऐहद गी/प्रण गी जेहका उसनै खुदा कन्नै कीता हा, पूरा करग, अल्लाह उसगी उसदा बौहत बड़ा अजर देग ॥ 11 ॥
(रुकू 1/9)

إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ
يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ ۖ فَمَنْ نَكَثَ فَاِنَّمَا
يُكْثِرُ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِمَا عَاهَدَ
عَلَيْهِ اللَّهُ فَسَيُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

आराब' चा जो पिच्छें छोड़ी दिते गे हे जरूर आखडन जे साढ़े धन ते जन (परिवार) नै असें गी फसाई रक्खेआ (इस आस्तै अस इस जातरा पर नेई गे) इस आस्तै तूं साढ़े लेई माफी मंग ओह अपनी जबानी ओह गल्ल आखदे न जेहकी उंदे दिलें च नेई। तूं आखी दे जेकर अल्लाह तुसेंगी कोई नुक्सान पुजाना चाह जां तुसें गी कोई फायदा देना चाह तां केहड़ा वजूद ऐ जो उसदे खलाफ थुआड़े आस्तै किश बी करी सकदा ऐ ? ऐसा कदें बी नेई बल्के अल्लाह थुआड़े कर्म शा खबरदार (कर्म गी जानदा) ऐ ॥ 12 ॥

سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ
شَعَلْتَنَا أَموَانَا وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْنَا ۖ
يَقُولُونَ بِالسَّيْتِهِمْ مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۖ
قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ لَكُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا
إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ۖ
بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝

असलीयत एह ऐ जे तुसें सोची लैता हा जे रसूल ते मोमिन कदें बी अपने परिवार कश

بَلْ ظَنَنْتُمْ أَنْ لَنْ يَنْقَلِبَ الرَّسُولُ

1. आराब दा मतलब ओह अरब न जेहके जंगलें च रँहदे हे। इनें आयतें च उनें लोकें बिच्चा जो मुनाफिक हे, यानी आमिर, असद ते ग़तफान दे कबीलें बिच्चा हे, उंदा जिकर ऐ।

बचियै नेई औंगन ते एह गल्ल थुआड़ी नजरेँ च खूबसूरत करियै दस्सी गई ही (ते तुस बिच्चो-बिच्च बड़े खुश हे) ते तुस (मोमिनेँ दे बारै ते खुदा दे बारै) बुरे बिचार रखदे हे (हालांके मोमिन नेई) बल्के आपूँ तुस तबाह होने आहले लोकेँ च शामिल होई गे हे ॥ 13 ॥

ते जो शख्स अल्लाह ते उसदे रसूल पर ईमान नेई ल्यौंदा (ओह याद रखवै जे) असेँ मुक्केँ आस्तै भटकने आहला अजाब निश्चत करी रखवे दा ऐ ॥ 14 ॥

ते गासेँ ते धरती दी बादशाहत अल्लाह दे गै कब्जे च ऐ जिसी चांहदा ऐ माफ करी दिंदा ऐ ते जिसगी चांहदा ऐ अजाब दिंदा ऐ ते अल्लाह बौहत माफ करने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 15 ॥

जिसलै तुस 'ग़नीमत' दे माल कठेरने आस्तै चलगे तां पिच्छेँ छोड़े दे लोक गलांगन जे असेँगी बी अजाजत देओ जे अस बी थुआड़े पिच्छेँ चलचै, ओह चांहगन जे अल्लाह दे फैसले गी बदली देन। तू आखी दे जे तुस कदेँ बी साढ़े पिच्छेँ नेई आई सकदे, इयै थुआड़े बारै फैसला ऐ जो अल्लाह इस शा पैहलेँ देई चुके दा ऐ, इस पर ओह आखडन, असल च तुस साढ़े पर सड़दे ओ, पर सचाई एह ऐ जे ओह सूझ-बूझ शा भलेआं कोरे न ॥ 16 ॥

आराब च जेहके लोक पिच्छेँ छोड़े गेदे न तू उनैगी आखी दे जे जरूर तुस इक ऐसी कौम

وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا ۖ وَرُزِقُوا ذٰلِكَ
فِي قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَ السَّوْءِ
وَكَنتُمْ قَوْمًا بُورًا ﴿١٦﴾

وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّا
أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ﴿١٧﴾

وَاللّٰهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ يُعْغِرُ
لِمَنْ يَّشَاءُ وَيَعْزِبُ مَنْ يَّشَاءُ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ
غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٨﴾

سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انطَلَقْتُمْ إِلَىٰ
مَعَانِمَ لِتَأْخُذُوْهَا ذُرُوْبًا نَّتَّبِعْكُمْ
يُرِيْدُونَ اَنْ يُبَدِّلُوْا كَلِمَ اللّٰهِ ۗ قُلْ لَنْ
نَّتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكَ ۗ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ
فَسَيَقُولُوْنَ بَلْ نَحْسَدُوْنَا ۗ بَلْ كَاْنُوْا
لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٩﴾

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتَدْعُوْنَ

1. युद्ध च विजय दे बाद मिले दे माल-मत्ते गी ग़नीमत दा माल आखदे न। इत्थेँ तबूक थमां आंदे गेदे ते खेबर दे युद्ध च मिले दे माल-सबाब दा जिकर ऐ।

कन्नै जंग' करने आस्तै सद्दे जागेओ जो जंग दे हुनर चंगी चाल्ली जानदी' ऐ तुस उंदे कन्नै उस बेले तगर जंग करगे ओ जे ओह मुसलमान' होई जान। इस आस्तै जेकर तुस (उस बेले खुदा दी अवाज) मन्नी जागे तां अल्लाह तुसेंगी बौहत अच्छा अजर देग ते जेकर तुस (हुकम शा) मूंह फेरी लैगे ओ जिस चाल्ली पैहले लोके (मूंह) फेरी लैता हा, तां अल्लाह तुसेंगी दर्दनाक अज़ाब देग ॥ 17 ॥

नां ते कुसै अ'ने पर सख्ती' ऐ ते नां लंगड़े पर सख्ती ऐ ते नां रोगी पर सख्ती ऐ (जे ओह बावजूद असमर्थ होने दे बी लड़ाई च शामिल होन) ते जो अल्लाह ते उसदे रसूल दा आज्ञा-पालन करै ओह उसी ऐसी जन्तें च दाखल करग जेहदे हेत नैहरां बगदियां न ते (जो कोई हुकम शा) मूंह फेरग अल्लाह उसी दर्दनाक अज़ाब देग ॥ 18 ॥ (रुकू 2/10)

अल्लाह मोमिनें पर उस बेले भलेआं खुश होई गेआ जिसलै जे ओह बूहेत हेत तेरी बैअत (दीक्षा) करा करदे हे ते उसनै इस (ईमान) गी जो उंदे दिलें च हा खूब जानी लैता इस आस्तै उसदे नतीजे च उसनै उंदे दिलें पर शांति उतारी ते उनेंगी करीब (तौले) गै औने (थहोने) आहली फतह^ह बख्शी ॥ 19 ॥

إِلَى قَوْمٍ أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ تَقَاتُلُوهُمْ
أَوْ يَسْلُمُونَ^{٢٦} فَإِنْ تَطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللَّهُ
أَجْرًا حَسَنًا^{٢٧} وَإِنْ تَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ
مِنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا^{٢٨}

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرَجٌ وَلَا عَلَى
الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ
حَرَجٌ^{٢٩} وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يَدْخُلْهُ
جَنَّتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ^{٣٠} وَمَنْ
يَتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيمًا^{٣١}

لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ
يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي
قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ
وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا^{٣٢}

1. इस आयत च किस्सा (ईरान) ते क़ैसर (रूम) दी जंगें दा जिकर ऐ। इस आयत च मुनाफिकें गी आवेआ गेदा ऐ जे जेकर उंदे कन्नै जंग च ब्हादरी दसगे ओ तां थुआड़े दोश माफ होई जांगन, बरना खुदा दा अज़ाब तुसेंगी मिलग।
2. इस च एह इशारा ऐ जे ओह जंगों बड़े लम्मे अरसे तगर चलदियां रौंहगन।
3. एह हुकम नैई जे मुसलमान बनने तक उंदे कन्नै लड़ो बल्के असल गल्ल एह ऐ जे ओह बैरी जिच्चर मुसलमान (आज्ञाकारी) नैई बनी जांगन तां तक ओह तुंदे कन्नै जंग करदे जांगन जियां जे रूम ते फ़ारस आहलें कीता हा।
4. इत्थें हुदैबिया दी बैअत दा वृत्तंत ऐ जिसलै जे सहाबा मरने दी कसम खाइयै हज़रत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. दे हत्थें च हत्थ देइयै बैअत करा करदे हे।
5. अर्थात खैबर दी विजय।

ते बड़े-हारे गनीमत दे माल बी बख्खो जिनें गी ओह कब्जे च करा करदे हे ते अल्लाह गालिब (समर्थ) ते हिक्मत आह्ला ऐ ॥ 20 ॥

अल्लाह नै थुआड़े कनै मती-हारी गनीमतें दा बा 'यदा कीते दा ऐ जिनें गी तुस अपने कब्जे च आहन्गे ओ ते एह मजूदा' गनीमत दा माल तुसेंगी उनें बा 'यदें बिच्चा तौले गै प्रदान करी दिता ऐ ते लोकें दे हत्थें गी थुआड़े शा रोकी² दिते दा ऐ तां जे एह (घटनां) मोमिनें आस्तै इक नशान बनी जान ते ओह (अल्लाह) तुसेंगी ओहदे राहें सिद्धा रस्ता दस्से ॥ 21 ॥

ते (इसदे अलावा) इक होर बी (फ़तह)³ ऐ जो तुसेंगी हनै तक हासल नेई होई। अल्लाह नै उसदा फ़ैसला करी रखे दा ऐ ते अल्लाह अपने इरादे गी पूरा करने च पूरी चाल्ली समर्थ ऐ ॥ 22 ॥

ते जेकर मुन्कर (हुदैबिया दी सुलह मौके) तुंदे कनै लड़दे, तां ओह उससै बेलै पिट्ट फेरियै नस्सी जंदे, ते कोई पनाह देने आह्ला नेई लभदा, नां मददगार (लभदा) ॥ 23 ॥

अल्लाह दी उस रीति गी याद रखो, जो सदा थमां चलदी आई ऐ ते तूं कदें बी अल्लाह दे निश्चत तरीके च कोई तब्दीली नेई दिखगा ॥ 24 ॥

ते ओह खुदा गै ऐ जिसने उंदे हत्थें गी तुंदे शा ते थुआड़े हत्थें गी उंदे शा मक्का दी वादी च रोकी दिता, उसदे बा 'द तुस (हालात दे

وَمَعَانِمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا¹ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝

وَعَدَّكُمْ اللَّهُ مَعَانِمَ كَثِيرَةً تَأْخُذُونَهَا فَجَعَلَ لَكُمْ هُدًى وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ² وَلِتَكُونَ آيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۝

وَأُحْرَى لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا¹ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۝

وَلَوْ قَاتَلَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوْا الْأَذْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝

سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ² وَكَانَ تَجْدِيدُ سُنَّةِ اللَّهِ لِلَّهِ تَبْدِيلًا ۝

وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ

1. ख़ैबर दे माल-सबाब

2. हुदैबिया दे मौके पर

3. इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे ख़ैबर दी जीत दे बा 'द होर बी मतियां हारियां जितां हासल होंग।

मताबक) उंदे पर जीत हासल करी चुके दे हे ते अल्लाह थुआड़े कर्मै गी दिक्खा करदा हा (ते जानदा हा जे तुस लड़ने शा नेई डरदे)

॥ 25 ॥

ओह (थुआड़े दुश्मन) गै हे जिनें कुफर कीता ते तुसैंगी मस्जिदे-हराम (दी ज्यारत) शा रोकेआ, ते इससै चाल्ली कुरबानियें गी जो (मक्का आस्तै) अर्पत होई चुकी दियां हियां (इस गल्ला शा रोकी दिता जे) ओह अपनी निश्चत मंजल तगर पुज्जी सकन, ते जेकर (मक्का च) किश मोमिन मडुद ऐसे नेई होंदे ते किश मोमिन जनानियां ऐसियां नेई होंदियां जिनेंगी तुस नथे जानदे ते एह खतरा नेई होंदा जे तुस उनेंगी अनजाने च पैरें थल्लै कुचली जागे ओ ते उसदे नतीजे च तुंदे पर कलंक लाया जाग (तां अस तुसै गी लड़न दिंदे पर खुदा नै रोकी रक्खेआ) तां जे अल्लाह जिसगी पसंद करदा ऐ उसगी अपनी रैहमत च दाखल करै जेकर (गुप्त मोमिन) कुदै इद्धर-उद्धर होई गेदे होंदे तां उंदे (मक्का दे रौहने आहलें) बिच्चा जेहके काफर हे, अस उनेंगी दर्दनाक अजाब पुजाई दिंदे ॥ 26 ॥

उस वक्त गी याद करो जिसलै जे मुन्करें अपने दिलें च ऐसे पक्खपात गी प्रेरणा दिती जो अज्ञानता दे युग दे पक्खपात आहली प्रेरणा ही, इस पर अल्लाह नै अपने पासेआ नाज़ल होने आहली संतुश्टी अपने रसूल दे दिलै पर ते मोमिनें दे दिलें पर उतारी दिती ते संयम दे तरीके पर उंदे पैरे जमाई दित्ते, की जे ऊऐ इस दे ज्यादा हक्कदार हे ते इसदे

أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۖ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ﴿٢٦﴾

هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَاصَدُّوكُمْ عَنِ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيِ مَعْكُوفًا أَنْ يَبْلُغَ
مَجَلَّهُ ۖ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ
مُّؤْمِنَاتٌ لَّمْ تَعْلَمُوهُمْ أَنْ تَطَّؤُوهُمْ
فَتُصِيبَكُمْ مِنْهُمْ مَعْرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ
لِيَدْخُلَ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۗ
لَوْ تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٢٦﴾

إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ
الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنْزَلَ اللَّهُ
سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ
وَلَزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَى وَكَانُوا أَحَقَّ
بِهَا وَأَهْلَهَا ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ

लायक हे ते अल्लाह हर इक चीज गी जानदा ऐ ॥ 27 ॥ (रुकू 3/11)

ع

عَلِيمًا ٥٧

अल्लाह नै अपने रसूल गी उस सुखने¹ दा बिशे पूरी चाल्ली सच्चा करिये दस्सेआ (जेहदे च एह ब्यान हा) जे तुस मस्जिदे-हराम च, जेकर अल्लाह नै चाहया तां, सुख-सभाएं जरूर दाखल होगे ओ (ते) तुसें अपने सिर भलेआं मनाए दे होंगन जां निक्के बाल कराए दे होंगन, कुसै शा नेई डरगे ओ, इस आसतै अल्लाह नै ओ सब बुज्जी लैता जो तुस नथे जानदे ते उसने इस शा पैहलें गै इक होर फतह² रक्खी दिती ॥ 28 ॥

ओह खुदा गै ऐ जिसनै अपने रसूल गी हदायत ते सच्चे दीन कनै भेजेआ ऐ तां जे सारे धर्में पर उसी गालिब/विजयी बनाई देते अल्लाह गै काफी गुआह ऐ ॥ 29 ॥

मुहम्मद अल्लाह दे रसूल न ते जेहके लोक उंदे कनै न ओह मुन्करें दे खलाफ बड़ा जोश/उत्साह रखदे न, पर आपस च इक-दूए कनै बे-हद नरमाई कनै पेश औने आहले न, जिसलै तू उनेंगी दिखगा उनेंगी शिर्क थमां पाक ते अल्लाह दा आज्ञाकारी दिखगा। ओह अल्लाह दी किरपा ते उस दी खुशी हासल करने दी तलाश च रौहदे न, उंदी शनाख्त/पन्छान, उंदे चेहरें पर सजदें दे नशानें दे रूपै च ऐ। उंदी एह हालत तौरात च ब्यान होई

لَقَدْ صَدَقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الرُّسُولَ بِالْحَقِّ ٥٨
لَتَدْخُلَنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ
أَمِينِينَ ٥٩ مُحَلِّقِينَ رُءُوسَكُمْ
وَمُقَصِّرِينَ ٦٠ لَا تَخَافُونَ ٦١ فَعَلِمَ مَا
لَمْ تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ دُونِ ذَلِكَ
فَتْحًا قَرِيبًا ٦٢

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى
وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ ٦٣
وَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا ٦٤

مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ ٦٥ وَالَّذِينَ مَعَهُ
أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ
تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ
اللَّهِ وَرِضْوَانًا سِيمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِمْ
مِنْ أَثَرِ السُّجُودِ ٦٦ ذَلِكَ مَثَلُهُمْ فِي

- हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. नै सुखने च दिक्खेआ हा जे अस 'काबा' दा तवाफ़ (दी परदक्खन) लै करने आं। इस सुखने गी पूरा करने आसतै तुस मक्का जाने आसतै चली पे, पर हुदैबिया नांउ दे थाहरें पर रोकी दिने गे। आखर मुन्करें प्रार्थना कीती जे इस साल तवाफ़ नेई करो। अस अगलै साल थुआड़ा रस्ता खुल्ला छोड़ी देगे, उस बेलै तवाफ़ करी लैयो। उस प्रार्थना गी तुसें मन्जूर करी लैता ते समझोते च इस गल्ला गी शामिल करी लैता, इस बा'यदे पासै इस आयत च संकेत ऐ।
- इत्थें परतिये खेबर दी जित् दा जिकर ऐ।

दी ऐ ते इज्जील च उंदी हालत इस चाल्ली ब्यान ऐ जे ओह इक खेती! आंगर (होंगन) जिसनै जे पैहलें ते अपने डूर कइठे, फी उसी (शामानी ते धरती दी खुराका राहें) मजबूत बनाया ते ओह डूर/खूद होर बी मजबूत होई गेई, फी अपनी जइँ पर मजबूती कन्नै कायम होई गेई इत्थें तक जे जिमीदारै गी पसंद औन लगी पेई। इस दा नतीजा एह निकलग जे मुन्कर उनें गी दिक्खी-दिक्खी जलडन। अल्लाह नै मोमिनें ते ईमान दे मताबक अमल करने आहलें कन्नै एह बा'यदा कीते दा ऐ जे उनेंगी माफी ते बौहत बड्डा अजर/सिला मिलग ॥ 30 ॥ (रुकू 4/12)

مِنْهَا
مِنْهَا

الثَّوْرَةَ ۖ وَمَثَلَهُمْ فِي الْإِنجِيلِ ۖ كَزَرْعٍ أَخْرَجَ شَطْئَهُ فَآزَرَهُ

فَأَسْتَغْلَظَ فَاسْتَوَىٰ عَلَىٰ سَوْقِهِ يَعْجِبُ

الرُّعَاةَ لِيُعْظِ بِهْمُ الْكُفَّارَ ۗ وَعَدَّ اللَّهُ

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُمْ

مَغْفِرَةً ۗ وَأَجْرًا عَظِيمًا ۝

ع
١٢

ooo

1. इस आयत च उस भविष्यवाणी पासै इशारा कीता गेदा ऐ जेहदा जिकर मती भाग 13 आयत 3-9 च ऐ जे इक करसान बीऽ राहन निकलेआ ते रांहदे मौकै किश दाने रस्ते दे कंठै डिग्गे ते पैँछियें आइयें उनेंगी चुगगी लैता ते किश जनखैरी जमीनै च डिग्गे, इत्थें उनेंगी ज्यादा मिट्टी नेई मिली ते गैहरी मिट्टी नेई मिलने कारण तौले उगगी आए ते जिसलै सूरज निकलेआ तां जली-भरडोई गे ते जब नेई होने कारण सुक्की गे ते किश झाड़ियें च डिग्गे ते झाड़ियें मठोइयें उनेंगी दबाई लैता, ते किश अच्छी जमीनै च डिग्गे ते फली आए, किश सौ गुणा, किश सट्ट गुणा, किश त्रीह गुणा। कुरआन मजीद दी इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ ऐ जे हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दी उम्मत च औने आहले मसीह दी कौम बी ऐसी गै होग, जियां अच्छी जमीनै च रहया गेदा दाना, ते अल्लाह उस च ऐसी बरकत पैदा करग जे इक-इक दाने शा सट्ट-सट्ट, स्हतर-स्हतर बल्के सौ-सौ गुणा पैदा होग, पर एह तौले नेई होग, बल्लें-बल्लें होग।



सूर: अल् हुजुरात

एह सूर: मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां उन्नी आयतां ते दो रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइये (पढ़ना) जो बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

हे मोमिनो! अल्लाह ते उसदे रसूल दे सामनै बधी-चढ़ियै गल्लां नेई करा करो, ते अल्लाह दा तक्रवा/संयम अखत्यार करो, अल्लाह बौहत सुनने आहला (ते) जानने आहला ऐ ॥ 2 ॥

हे मोमिनो! नबी दी अवाज शा अपनी अवाज उच्ची नेई करा करो, ते नां उच्ची अवाज च उसदे सामनै इस चाल्ली बोल्ला करो जिस चाल्ली तुस आपस च इक-दूए दे सामनै उच्चा बोलदे ओ। ऐसा निं होऐ जे थुआड़े कर्म नश्ट होई जान, ते तुसंगी पता बी नेई लगै ॥ 3 ॥

ओह लोक जेहके अपनी अवाजें गी रसूल दे सामनै दबाई रखदे न, ऊऐ न जिंदे दिलें दा अल्लाह नै तक्रवा/संयम आस्तै पूरा जायजा लेई लैता ऐ, ते उंदे आस्तै बखशिश ते बड़डा अजर/सिला निश्चत ऐ ॥ 4 ॥

ओह लोक जेहके कमरें दी कंधें पिच्छुआं तुगी अवाजां दिंदे न, उंदे बिच्चा मते-हारे मूर्ख न ॥ 5 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْدُمُوا بَيْنَ يَدَيْ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَاتَّقُوا اللَّهَ ① إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ②

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ يَأْتِقُولُ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ أَنْ تَحْبَطَ أَعْمَالُكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ③

إِنَّ الَّذِينَ يُعْضُونَ أَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ أُولَئِكَ الَّذِينَ امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ لِلتَّقْوَى لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ④

إِنَّ الَّذِينَ ينادُونَكَ مِنْ وَرَاءِ الْحُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ⑤

जेकर ओह उस बेले तोड़ी बलगदे जे तू बाहर निकलिये उंदै पासै आई जंदा तां एह उंदे आस्तै अच्छा होंदा, ते अल्लाह बौहत बखशाने आह्ला (ते) बार-बार रहैम करने आह्ला ऐ ॥ 6 ॥

हे मोमिनो! जेकर थुआड़े कश कोई अवज्ञाकारी कोई म्हत्तवपूर्ण खबर लेई आवै, तां उसदी छान-बीन करी लै करा करो, ऐसा निं होऐ जे तुस अनजाने च कुसै कौम पर हमला करी देओ, ते फी अपनी करनी/अपने कीते पर शरमिंदा होई जाओ ॥ 7 ॥

ते समझी लैओ जे उस बेले अल्लाह दा रसूल तुंदे च मजूद ऐ, जेकर मते-हारे कम्मं च ओह थुआड़ी गै गल्ल मन्नी लै करै तां तुस कश्ट च फसी जाओ, पर अल्लाह नै थुआड़ी नजर च ईमान गी बड़ा प्यारा बनाया ऐ ते थुआड़े दिलें च उसगी खूबसूरत करियै दस्सेआ ऐ ते थुआड़ी नजर च कुफर, पाप ते अवज्ञा ते ना-फरमानी गी अप्रिय करियै दस्सेआ ऐ (जेहके लोक इस आयत पर अमल करदे न) ऊऐ लोक सिद्धे रस्ते पर न ॥ 8 ॥

(एह सिर्फ) अल्लाह दी किरपा ते नैमत करी ऐ ते अल्लाह खूब जानने आह्ला (ते) हिकमत आह्ला ऐ ॥ 9 ॥

ते जेकर मोमिमें दे दौं गरोह! आपस च लड़ी पौन तां उनें दौं च सुलह² कराई देओ, फी

وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّى تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ
لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ
بِنَبَأٍ فَتَبَيَّنُوا أَن تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ
فَتُصِيبُوا عَلَى مَا فَعَلْتُمْ نَادِمِينَ ①

وَاعْلَمُوا أَن فِيكُمْ رَسُولَ اللَّهِ ط لَوْ
يُطِيعُكُمْ فِي كَثِيرٍ مِنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ
وَلَكِنَّ اللَّهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ
وَزَيَّنَّ فِي قُلُوبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ
الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ ط أُولَئِكَ
هُمُ الرُّشْدُونَ ①

فَصَلِّا مِنْ اللَّهِ وَنِعْمَةً ط وَاللَّهُ عَلِيمٌ
حَكِيمٌ ①

وَإِنْ طَائِفَتَيْنِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا

1. इस आयत च यू. एन. ओ. दा नक्शा खिच्चेआ गेदा ऐ, अफसोस ऐ जे लीग ऑफ नेशन्स नै इस पर पूरा अमल नेई कीता ते न-काम रेही। यू.एन. ओ. बी बुजदिली दस्सा करदी ऐ इस्सै करी नकामी दे आसार सामनै आवा करदे न। जिच्चर इस आयत च दस्सी गेदी शरतें दा पूरी चाल्ली यू. एन. ओ. पालन नेई करग, कामयाब नेई होग।
2. शब्द मोमिन शा धोखा नेई खाना चाही दा! मोमिन शब्द सिर्फ इस आस्तै रक्खेआ गेदा ऐ जे मुसलमान कौमां गै मुसलमानें बशकार फैसला कराई सकदियां न बरना असूली तौरा पर एह आयत सारी कौमं आस्तै अपने अंदर रहनमाई दी सलाहियत रखदी ऐ।

जेकर सुलह होने दे बा'द उंदे बिच्चा कोई इक, दूए पर चढ़ाई/हमला करै, तां सारे मिलियै उस चढ़ाई/हमला करने आहले दे खलाफ जंग करो इत्थें तक जे ओह अल्लाह दे हुकम पासै परतोई आवै, फी जेकर ओह अल्लाह दे हुकम पासै परतोई आवै तां उनें दौनें (लड़ने आहलें) च न्यांऽ संगत सुलह' कराई देओ, ते इन्साफ गी नजर च रक्खो, अल्लाह इन्साफ करने आहलें गी पसंद करदा ऐ ॥ 10 ॥

मोमिनै² दा रिश्ता आपस च सिर्फ भ्राऽ-भ्राऽ दा ऐ इस आसतै तुस अपने द'ऊं भ्राए बश्कार, जेहके आपस च लड़दे होन, सुलह कराई देआ करो ते अल्लाह दा तक्रवा/संयम अखत्यार करो तां जे तुंदे पर रैहम कीता जा ॥ 11 ॥ (रुकू 1/13)

हे मोमिनो! कोई कौम कुसै दूई कौम गी तुच्छ समझियै हासा-मजाक नेई करा करै, ममकन ऐ जे ओह कौम ओहदे शा अच्छी होऐ ते नां (कुसै कौम दियां) जनानियां दूई (कौम दियें) जनानियें गी तुच्छ समझियै उंदा मजाक दुआऽ करन, ममकन ऐ जे ओह (दूई कौम जां हालात आहली) जनानियां उंदे शा बेहतर होन ते नां तुस इक-दूए गी ताहना मारा करो ते नां इक-दूए गी कनाएं बलाऽ करा करो, की जे ईमान दे बा'द आज्ञा-पालन दा उलंघन इक बौहत बड़डे भ्रिणत नांऽ दा हक्कदार बनाई दिंदा ऐ (यानी फ्रासिक दा) ते जेहका बी तोबा नेई करै, ओह जालम होग

॥ 12 ॥

فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا^٢ فَإِن بَغْتِ إِحْدَهُمَا عَلَى الْأُخْرَى فَقَاتِلُوا الَّتِي تَبْغِي حَتَّى تَفِيءَ إِلَى أَمْرِ اللَّهِ^٣ فَإِن فَأَتْت فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوا^٤ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ^٥

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ^٦

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَخْرَ قَوْمٌ مِّن قَوْمٍ عَلَىٰ أَنْ يَكُونُوا خَيْرًا مِّمَّهُمْ وَلَا نِسَاءً مِّن نِّسَاءٍ عَلَىٰ أَنْ يَكُنَّ خَيْرًا مِّنَّهُنَّ^٧ وَلَا تَلْمِزُوا أَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَرُوا بِالْألقَابِ^٨ بِئْسَ الإِسْمُ الْقِسُوفُ بَعْدَ الإِيمَانِ^٩ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ^{١٠}

1. यानी सुलह करांदे मौकै अपना लाह सामनै नेई रक्खा करो। असल मकसद दा फैसला करवा करो। इस बारे सिर्फ इक्के मसाल मिलदी ऐ ते ओह ऐ अमरीका दी जिसनै कोरिया ते स्वीज दे झगडें च एह नेक नमूना दस्सेआ ऐ।
2. यानी जेकर कदें मत-भेद होई बी जा, तां उनें चेता रक्खना लोड़दा जे उंदा आपस च बड़डा सरबंध भाईचारे दा ऐ। होले-फौले झगडे इस्लामी भाईचारे गी तोड़ने दा मूजब नेई बनने चाही दे।

हे ईमान आहलेओ! मते-हारे गुमानें/बुरी धारणें शा बचदे र'वा करो, की जे किश बुरी धारणां गुनाह बनी जंदियां न ते सूह नेई लै करा करो, ते तुंदे चा कोई कुसै दी चुगली नेई करा करै। क्या तुंदे चा कोई अपने मृत भ्राऽ दा मास खाना पसंद करग? (जेकर थुआड़े कन्नै एह गल्ल जोड़ी दिती जा तां) तुस इसी पसंद' नेई करगे ते अल्लाह दा तक्रवा/संयम अखत्यार करो, अल्लाह बौहत गै तोबा कबूल करने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 13 ॥

हे लोको! असें तुसेंगी मडद ते जनानी थमां पैदा कीते दा ऐ ते तुसें गी केई गरोंहें ते कबीलें' च बंडी दिते दा ऐ तां जे तुस इक-दूए गी पनछानो! अल्लाह कश तुंदे बिच्चा ज्यादा सत्कार जोग ऊऐ ऐ जो सारे शा ज्यादा संयमी ऐ। अल्लाह सच्चें गै बौहत सूझ-बूझ रक्खने आहला (ते) बौहत खबर रक्खने आहला ऐ ॥ 14 ॥

आराब³ आखदे न जे अस ईमान लेई आए तूं उनेंगी आखी दे जे तुस असल च ईमान नेई ल्याए दे ओ, पर तुस एह आखा करो जे असें जाहरी तौरा पर फरमांबरदारी कबूल करी लैती ऐ, की जे (हे आराब!) अजे ईमान थुआड़े दिलें च स्हेई मैहनें च दाखल नेई होआ, ते हे मोमिनो! जेकर तुस अल्लाह ते उसदे रसूल दा सच्चा आज्ञा-पालन करगे ओ, तां ओह थुआड़े कर्म चा कोई बी कर्म जाया नेई होन देग, अल्लाह बौहत बख्शने

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَبَ بَعْضُكُم بَعْضًا ۚ أَيَجِبُ أَحَدُكُمْ أَن يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ﴿١٣﴾

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِّن ذَكَرٍ وَأُنثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا ۗ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَىٰكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿١٤﴾

قَالَتِ الْأَعْرَابُ آمَنَّا قُل لَّمْ تُؤْمِنُوا وَلَكِن قُولُوا أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ ۗ وَإِن تُطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ أَعْمَالِكُمْ شَيْئًا ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٥﴾

1. फी चुगली की करदे ओ जो बौहत बुरी शैऽ ऐ।
2. यानी कौमां ते नसलां सिर्फ पन्छान आस्तै न, जो उंदे पर गर्व ते घमंड दा साधन बनांदा ऐ, ओह इस्लाम दे बरुद्ध आचरण करदा ऐ।
3. आराब दा मतलब जंगलें च रौहने आहले ओह अरब बासी लोक न जो शिक्षा ते दीक्षा थमां कोरे हे।

आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला
ऐ ॥ 15 ॥

मोमिन ऊए होंदे न जो अल्लाह ते उसदे
रसूल पर ईमान ल्यौंदे न। फी कुसै शक्क च
नेई पौंदे ते अपनी धन-दौलत ते जानें राहें
अल्लाह दे रस्ते च जिहाद करदे न, इयै लोक
सच्चे न ॥ 16 ॥

तू आखी दे, क्या तुस अल्लाह गी अपने कनै
बाकफ करांदे ओ ते अल्लाह ते उसगी बी
जानदा ऐ जो गासैं च ऐ ते जो धरती च ऐ
ते अल्लाह (उस दे सिवा बी) हर इक चीज
जानदा ऐ ॥ 17 ॥

एह (आराब) अपने इस्लाम आहन्ने दा तेरे
पर स्हान जतांदे न तू आख अपने इस्लाम
आहन्ने दा स्हान मेरे पर नेई रक्खो/चाढ़ो।
असलीयत एह ऐ जे अल्लाह गै तुसेंगी ईमान
पासै हदायत देने दा तुंदे पर स्हान रखदा ऐ।
जेकर तुस (अपने इस दा'बे च) सच्चे ओ
(जे ईमान ल्याए ओ, तां इस सचाई गी कबूल
करो) ॥ 18 ॥

अल्लाह गासैं दा गुप्त भेद बी जानदा ऐ ते
धरती दा बी। ते अल्लाह थुआड़े कर्म गी छैल
करियै/चंगी चाल्ली जानदा ऐ ॥ 19 ॥ (रुकू
2/14)

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ
وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجَاهَدُوا
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ﴿١٥﴾

قُلْ أَتَعْلَمُونَ اللَّهَ بِدِينِكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَاللَّهُ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٦﴾

يَمُنُّونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا قُلْ لَا تَمُنُّوا
عَلَىٰ إِسْلَامِكُمْ ۚ بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ
أَنْ هَدَيْتُمْ لِلْإِيمَانِ أَنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ﴿١٧﴾

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

سُورَةُ ق مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمِلَةِ سِتُّ وَأَرْبَعُونَ آيَةً وَثَلَاثَةٌ رُكُوعَاتٍ

सूर: क्राफ़

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां छताली आयतां ते त्रै रुकू न।

अ'कं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

क्राफ़/सर्वशक्तिमान खुदा इस सूर: गी उतारने
आहला ऐ। अस इस गौरवशाली कुरआन
गी (इस सूर: दी सचाई गी) शहादत दे
तौरा पर पेश करने आं ॥ 2 ॥

ق وَالْقُرْآنِ الْمَجِيدِ ۝

मगर एह लोक र्हान होंदे न जे इंदे कश इंदे
बिच्चा गै डराने (ते सोहगा करने) आहला
इक शख्स आया ऐ ते मुन्कर आखदे न जे एह
अजीब नेही चीज लगदी ऐ ॥ 3 ॥

بَلْ عَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ
فَقَالَ الْكٰفِرُونَ هٰذَا شِیْءٌ عَجِیْبٌ ۝

क्या जिसलै अस मरी जागे ते मिट्टी होई
जागे (तां फी दबारा जींदे होई जागे?) एह
बापस औना ते (समझै शा) दूर ऐ ॥ 4 ॥

ءِ اِذْ اٰمَنَّا وَكُنَّا ثَرٰبًا ۚ ذٰلِكَ رَجَعُ
بَعِیْدٌ ۝

असेंगी चंगी चाल्ली सेही ऐ ओह बी जो
धरती इंदे बिच्चा घट्ट करदी ऐ (ते ओह बी
जो ज्यादा' करदी/बधांदी ऐ) ते साढ़े कश
ऐसी कताब ऐ जो हर चीजा गी सुरक्षत रखदी
ऐ ॥ 5 ॥

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ
وَءِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِیْظٌ ۝

1. इस आयत च घट्ट करने दा अर्थ एह ऐ जे मरने दे बा'द मिट्टी उनेंगी खाई जंदी ऐ ते ज्यादा करने दा अर्थ एह ऐ जे मिट्टी जो खाने जोग चीजां (गजाऽ) दिंदी ऐ उनेंगी खाने-पीने कनै इन्सानो जिसम बधदा ऐ।

गल्ल एह ऐ जे इनें लोकें सच्च दा इन्कार करी दिता जिसलै ओह इंदे कश आया। इस आस्तै ओह इक ऐसे बिचार च उलझे दे न जो मिला-जुला ऐ (यानी सच्च ते झूठ उंदे ख्यालें च मिली गेदे न) ॥ 6 ॥

क्या उनें अपने उपपर गासें गी नेई दिक्खेआ जे असें उसी कनेहा बनाए दा ऐ ते उसी सुंदरता प्रदान कीती दी ऐ ते ओहदे च कोई मघोर/बुटी नेई ऐ ॥ 7 ॥

ते धरती गी असें बछाया ऐ ते ओहदे च प्हाड़ बनाए न। इस दे अलावा असें ओहदे च हर भांति दे खूबसूरत जोड़े बनाए न ॥ 8 ॥

साढ़े सामनै झुकने आहले हर शख्स आस्तै इस गल्ला च शिक्षा ते नसीहत ऐ ॥ 9 ॥

ते असें बदलें चा बरकत आहला पानी उतारे दा ऐ, फी उसदे राहें अस बाग उगाने आं ते कट्टी जाने आहली फसलै दे दाने बी ॥ 10 ॥

ते लम्मी-लम्मी खजूरें दे बूहटे बी (उगाने आं) जिंदे पर फलें दे घुगे लगदे न जेहके चंगी-चाल्ली इक दूए पर चढ़े दे (यानी इक-दूए कनै मिले दे ते घने) होंदे न ॥ 11 ॥

(असें) बंदें गी रिशक देने आस्तै (ऐसा कीता ऐ) ते अस उस (पानी) राहें मुडुदा देश/खुरक धरती गी जींदा/हरा-भरा करने आं। इस्तै चाल्ली मरने दे बा'द निकलना/जींदा होना बी होग ॥ 12 ॥

इस शा पैहलें नूह दी कौम नै खूहै आहलें ते समूद नै ॥ 13 ॥

ते आद नै ते फ़िरऔन नै ते लूत दे भ्राएं ॥ 14 ॥

بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ فِي أَمْرٍ مَّرِيجٍ ①

أَفَلَمْ يَنْظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَيْنَهُمَا وَرَبُّنَاهَا وَمَا لَهَا مِنْ قُرُوجٍ ①

وَالْأَرْضِ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ①

تَبَصَّرَةٌ وَذِكْرَىٰ لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ①

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُّبْرَكًا فَأَنْبَتْنَا بِهِ جَنَّاتٍ وَحَبَّ الْحَصِيدِ ①

وَالنَّخْلَ بَسَقَتِ لَهَا طَعْعٌ نَضِيدٌ ①

رِزْقًا لِلْعِبَادِ ۗ وَأَحْيَيْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا ۗ كَذَلِكَ الْخُرُوجُ ①

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَأَصْحَابُ الرَّسِّ وَثَمُودُ ①

وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطٍ ①

ते जंगल¹ च रौहने आहलें ते तुब्बा दी कौम (यानी यमन दे लोकें) नै साढ़े रसूलें गी झुठलाया हा। आखर मेरे अजाब दा बा'यदा पूरा होइयै रेहा ॥ 15 ॥

क्या अस पैहली पदायश कन्नै थक्की गे आं? (नेई!) पर सचाई एह ऐ जे ओह् दूई पदायश (पैदा होने) बारै भलेखे च पेदे न ॥ 16 ॥ (रुकू 1/15)

ते असें इन्सान गी पैदा कीता ऐ ते जो उस दे मनै च भरम पैदा होंदे न, अस उनेंगी चंगी चाल्ली जानने आं ते अस उस (शख्त) थमां उस दी शाह् रग शा बी ज्यादा लागै आं ॥ 17 ॥

जिसलै जे सज्जै² ते खब्बै बैठे दे दो गुआह् उसदी सारी हरकतें गी सुरक्षत करदे जंदे न ॥ 18 ॥

ते (इन्सान) कोई गल्ल नेई करग जे उसदे लागै उसदा कोई नगरन जां संरक्षक नेई होऐ ॥ 19 ॥

ते मौत दी बे-होशी पक्की औग/घुरडू फिरग ते उस बेलै अस उस (यानी बे-परवाह् इन्सान) गी आखगे जे एह ओह् हालत ऐ जेहदे शा तू बचना चांहदा हा ॥ 20 ॥

ते बिगल बजाया जाग, एह अजाब दे बा'यदे दा दिन ऐ ॥ 21 ॥

ते हर जान (इस हालत च) औग जे ओहदे कन्नै इक खिद्दने आह्ला बी लगगे दा होग ते इक गुआह् बी होग ॥ 22 ॥

وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمٌ تُبِيعَ كُلِّ
كَذَّبَ الرَّسُولَ فَحَقُّ وَعِيدِ ①

أَفَعَيْنَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ
مِّنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ②

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعَلَهُمَّ مَا تَوْسُوْسُ
بِهِ نَفْسَهُ ۗ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ
حَبْلِ الْوَرِيدِ ③

إِذْ يَتَلَفَّى الْمُتَلَقِّينَ عَنِ الْيَمِينِ
وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٍ ④

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ
عَتِيدٌ ⑤

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۗ
ذَلِكَ مَا كُنْتُمْ مِنْهُ تَحِيدُ ⑥

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۗ ذَلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ ⑦

وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَائِقٌ وَشَهِيدٌ ⑧

1. लफ्जी मैहने ते 'जंगल आहले' न पर अर्थ यमन थमां फ़लस्तीन जंदे मौके ओह् जंगल ऐ जो मद्यन दे लागै ऐ।
2. इन्सान दे कन्नै ऐसे फ़रिश्ते जां इन्सानी जिसम दे हिस्से निश्चत न जो उसदे कमें गी सुरक्षत रखदे जंदे न। इत्थें उंदा गै जिकर ऐ।

(ते अस आखगे) तू इस (ध्याड़े) शा बे-
खबरी च पेदा हा, इस आसतै आखर असैं
तेरा पड़दा पुट्टी दित्ता, ते अज्ज दे दिन
तेरी नजर बड़ी तेज! ऐ (ते तू सब किश
दिक्खा करना ऐं) ॥ 23 ॥

ते उसदा साथी गलाग जे जरा इसी बी दिक्खो
जो मेरे कश त्यार? ऐ (यानी उसदा कर्म
नामा) ॥ 24 ॥

फी अस उनें दौनीं (यानी खिददने आहले ते
गुआह) गी आखगे, जे हर इन्कार करने आहले,
सचाई दे दुश्मन ॥ 25 ॥

नेकी शा रोकने आहले, हदद शा बधने आहले
ते शक्क करने आहले गी तुस दौनें नरकें च
सुट्टी देओ ॥ 26 ॥

जो अल्लाह दे सिवा दूए उपास्य बनांदा हा।
इस आसतै तुस अज्ज उसी सख्त अजाब च
सुट्टी देओ ॥ 27 ॥

ते उस दा साथी³ आखग, हे साढ़े रब्ब! मैं
ओहदे शा कोई सरकशी/उदंडता नेई कराई
बल्के ओह आपू गै परले दरजे दी गुमराही
च पेदा हा ॥ 28 ॥

(इस पर खुदा) आखग, मेरे कश झगड़ा नेई करो,
ते याद रक्खो जे अ'ऊं थुआड़े कश पैहलें गै
अजाब दी खबर भेजी चुके दा आं ॥ 29 ॥

لَقَدْ كُنْتُمْ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَذَا
فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ
الْيَوْمَ حَدِيدٌ ﴿٢٣﴾

وَقَالَ قَرِينُهُ هَذَا مَا لَدَىٰ عَيْنَيْكَ ﴿٢٤﴾

الْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٢٥﴾

مَتَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مَّزِيدٍ ﴿٢٦﴾

الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَأَلْقِيهِ
فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ﴿٢٧﴾

قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْعَمْتَهُ وَلَكِن كَانِ
فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ﴿٢٨﴾

قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدَيْهِ وَقَدْ قَدَّمْتُمْ
إِلَيْكُمْ بِالْوَعِيدِ ﴿٢٩﴾

1. यानी अज्ज तू अपने सारे चंगे-साड़े कर्मों गी चंगी चाल्ली समझा करना ऐं ते ओह संसारक दशा भुल्ली गेआ ऐं जिसलें जे तू अपने हर कथन ते कर्म दे अच्छा होने दा हट करदा होंदा हा।
2. यानी इन्सानो शरीरे दे अंग जां फरिशते आखडन जे इसदे कथनें ते कर्म दा सारा रिकार्ड साढ़े कश मजूद ऐ। इस आसतै एह कुसै रंग दा इन्कार नेई करी सकदा। साढ़ा रिकार्ड दिक्खी लैओ। सारी गल्ल थुआड़े सामनें साफ होई जाग।
3. यानी इन्सान हून ते एह आखदा ऐ जे खुदा नै मिगी गुमराह कीता। पर क्यामत आहलें रोज उसदे नगरान फरिशते जां उसदे जिसमें दे नगरान हिस्से आखडन जे अस एहदी गुमराही दे मूजब नेई। एह आपू गुमराह होआ हा ते अपनी गुमराही दा आपू जिम्मेवार ऐ।

ते मेरे हज़ूर च/सामनै कोई गल्ल बदलियै पेश
नेई कीती जाई सकदी' ते नां अ'ऊं अपने बंदें
पर कुसै किसमै दा जुलम करने आहला' आं
॥ 30 ॥ (रुकू 2/16)

مَا يَبْدُلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَا أَنَا بِظَالِمٍ
لِّلْعَبِيدِ ۝

उस दिन अस जहन्नम गी आखगे, क्या तूं
भरोई गोआ? ते ओहू गलाग, जे क्या किश
होर बी ऐ? ॥ 31 ॥

يَوْمَ نَقُولُ لِحَبَّئِهِمْ هَلْ أَمْتَلَأْتِ وَتَقُولُ
هَلْ مِنْ مَّزِيدٍ ۝

ते उस रोज सुर्ग संयमियें दे इन्ना लागै^३ करी
दिता जाग जे ओहू उसी मसूस करन लगन
॥ 32 ॥

وَأَرْزَقْتِ الْجَنَّةَ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ۝

ते गलाया जाग जे तुंदे बिच्चा हर झुकने आहले
ते शरीअत दे रक्षक कनै इससै इनाम दा
बा'यदा कीता गोआ हा ॥ 33 ॥

هَذَا مَا تُوْعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ۝

(यानी उस कनै) जो रहमान (खुदा) शा
पड़दे च बी डरदा हा ते झुकने आहले/विनम्र
दिलै कनै ओहदे कश आया हा ॥ 34 ॥

مَنْ حَشِيَ الرَّحْمَنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ
بِقَلْبٍ قَنِينٍ ۝

(अस गलागे जे) तुस सारे सलामती/सुख-
सभाएं सुर्ग च दाखल होई जाओ, एह ओहू
बरकत आहला दिन ऐ जो कदें खतम नेई
होग ॥ 35 ॥

ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ۗ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ۝

ओहू जो किश एहदे च चांहगन ओहू,
सब उनेंगी मिलग, ते साढ़े कश ओहूदे
शा बी ज्यादा उनेंगी देने आस्तै मजूद,
ऐ ॥ 36 ॥

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْمَرٍ يَدِّ ۝

1. यानी जो गुआह में इन्सानें पर फरिश्तें बिच्चा जां उसदे अंगें बिच्चा नयुक्त कीते दे न ओहू मेरे सामनै गल्लें गी बदलियै पेश करने दी जु'रत गै नेई करी सकदे की जे ओहू सिर्फ गुआह नेई बल्के उंदे कश रिकार्ड बी होग ते रिकार्ड गी कोई गलत सिद्ध नेई करी सकदा।
2. यानी में गुआही दा ऐसा इत्तजाम करी दिते दा ऐ जेहदा इन्कार नेई कीता जाई सकदा ते मेरी स'जा गी जालमाना स'जा नेई गलाया जाई सकदा।
3. यानी मोमिन उस दिन जन्नत गी भलेआं दिक्खी सकगन तां जे दिल संतुष्ट होन जां इसदा एह अर्थ ऐ जे आखरी युग च दीन दी इन्नी व्याख्या होग जे हर मोमिन अपने दिलें च जन्नत गी लागै पाग।

ते अस उंदे शा पैहलें मती-सारी कौमां हलाक करी चुके दे आं ओह इंदे शा ज्यादा पकड़ दा मादा/ताकत रखदियां हियां पर (जिसलै अजाब आया तां) उनें देखै दे हर थाहर अपने बचाऽ आसतै सुरंगां! बछाई दितियां पर (स्पष्ट ऐ जे) खुदा दे अजाब शा बचने दी गुंजाइश कुत्थें होई सकदी ऐ? ॥ 37 ॥

ओहदे च हर शख्स आसतै, जिस च सोचने-समझने आहला दिल मजूद ऐ जां जेहका सुनने आसतै कन्न खु'ल्ले रखदा ते गौर बी करदा ऐ, नसीहत ऐ ॥ 38 ॥

ते असैं गासैं ते धरती गी ते जे किश इंदे मझाटै ऐ, उस सारे गी छें दौरें च पैदा कीता ते अस बिल्कुल नेई थक्के? ॥ 39 ॥

इस आसतै जे किश ओह आखदे न, ओहदे पर सबर कर ते सूरज चढ़ने शा पैहलें ते घरने शा पैहलें अपने रब्ब दी उपासना करा कर ॥ 40 ॥

ते रातीं मौकै बी उस दी पवित्तरता दा गुण-गाण करा कर ते हर अबादत दे आखर च बी (ऐसा गै करा कर) ॥ 41 ॥

ते (हे नबी!) याद रक्ख जे इक दिन पुकारने आहला लागे दी ज'गा³ थमां पुकारग ॥ 42 ॥

ق

حُ ٢٦

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّن قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ
مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِنْ
مَّحِيصٍ ۝

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِكْرَى لِمَنْ كَانَ لَهُ قَلْبٌ
أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ۝

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا
بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ۚ وَمَا مَسَّنَا
مِنْ غُرُوبٍ ۝

فَأَصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ
قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ۝

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ۝

وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ
قَرِيبٍ ۝

1. यानी देखै च ऐसे समान पैदा करने शुरू कीते जे ओह उस अजाब शा बची जान पर खुदा दी स'जा शा बचने आसतै इन्साना उपाऽ कुत्थें कम्म देई सकदे न।
2. बाइबिल च ऐ जे खुदा नै दुनियां पैदा कीती ते थक्की गोआ ते सत्तमें दिन उसनै अराम कीता। कुरआनी शिक्षा किन्नी गौरवशाली ते खुदा दी शान दे मताबक ऐ जिसलै जे बाइबिल दी शिक्षा खुदा दी शान गी सामनै रखदे होई घनीनी ते त्यागने जोग लभदी ऐ।
3. मतलब एह ऐ जे मक्का बासियें गी सोहगा करने आसतै हजरत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. दे अनुयायियें बिच्चा बी ऐसे लोकें गी अल्लाह खडेरदा रोहग। फी ऐसा गै होआ जे हजरत अबूबकर, हजरत उमर, हजरत उसमान, हजरत अली ते हजरत जुबैर दे पुतर हजरत अब्दुल्लाह मक्का आहलें बिच्चा खड़े होंदे रेह ते उनेंगी सोहगा करदे रेह।

जिस दिन जे सारे लोक इक पूरा होइयै रौहने आहले अज़ाब दी अवाज सुनगन, एह दिन जींदा होइयै निकलने दा दिन होग' ॥ 43 ॥

अस गै जींदा बी करने आं ते मारने बी आं ते साढ़े कश गै परतोइयै औना ऐ ॥ 44 ॥

ओह दिन जदू धरती उंदी शगरतें कारण फटी जाग (उसी याद कर, ते) ओह ओहदे चा तौले गै? निकली आँगन। एह मुड़दें गी जींदा करी देना साढ़े आस्तै असान ऐ ॥ 45 ॥

अस उंदी गल्लें शा भलेआं वाकफ आं, ते तूं उंदे पर इक जाबर (बादशाह) दे तौरा पर नियुक्त नेई कीता गेदा। इस आस्तै तूं कुरआन राहें सिर्फ उसगी नसीहत कर जो मेरे अज़ाब दी भविक्खवाणियें शा डरदा ऐ ॥ 46 ॥ (रुकू 3/17)

ق ٥٠

ح ٢٦

يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۗ ذَٰلِكَ
يَوْمَ الْخُرُوجِ ۝٣٧

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِنَّا
الْمُصِيرُ ۝٣٨

يَوْمَ تَشْقَى الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ۗ ذَٰلِكَ
حَسْرَةً عَلَيْنَا يَسِيرٌ ۝٣٩

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ وَمَا أَنْتَ
عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۖ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَنْ
يَخَافُ وَعَيْدٌ ۝٤٠

०००

1. इस आस्तै हज़रत अबूबकर दे बेलें बी मदीना दे आसै-पासै दियां कौमां इस्लाम बरोधी होई गेइयां हियां पर हज़रत अबूबकर उनेगी परतियै इस्लाम पासै लेई आए इससे चाल्ली हज़रत उमर दे बेलें बी कैसर ते किस्रा दे आतंक करी मुसलमान कबीले कंबी उट्टे हे मगर हज़रत उमर नै उपदेशें ते प्रवचनें राहें उंदे च नमें सिरेआ जोश पैदा कीता ते उनेगी कन्ने लेइयै कैसर ते किस्रा गी शकस्त दिती।
2. यानी अज़ाब औने पर अपना अलाका छोड़ियै ताह-तुआंह नसगन, पर बचने दा कोई रस्ता नेई लम्बग।

سُورَةُ الذّٰرِيّٰتِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ اِحْدَى وَ سِتُّونَ آيَةً وَ ثَلَاثَةٌ رُكُوْعَاتٍ

सूर: अल्-ज़ारियात

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां काहट आयतां ते त्रै रूकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांs लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

अस उनें (हवाएं) गी शहादत दे तौरा पर पेश
करने आं जो (बदलें गी) डुआंदियां फिरदियां
न ॥ 2 ॥

وَ الذّٰرِیّٰتِ ذُرُوْا ۝

फी (बारश दा) बोझ चुक्की लैंदियां न ॥ 3 ॥

فَالْحُمْلِتْ وَ قُرَا ۝

फी मट्ठी चाल चलदियां न ॥ 4 ॥

فَالْجُرِیّتِ یُسْرًا ۝

ते आखर च साढ़े हुकम (यानी बारश) गी
(धरती च) बंडी दिंदियां न ॥ 5 ॥

فَالْمَقْسَمِتِ اَمْرًا ۝

शुआड़े कन्नै जो बा'यदा कीता जंदा ऐ ओह
जरूर पूरा होइयै रौहग' ॥ 6 ॥

اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقًا ۝

ते कर्म दा फल जरूर थहोइयै रौहग ॥ 7 ॥

وَ اِنَّ الدّٰیْنَ لَوَاقِعٌ ۝

इसदे सबूत च अस उस गासै गी पेश करने
आं जेहदे च नखत्तरें/सतारें दे रस्ते² न ॥ 8 ॥

وَ السَّمَا ءِ ذَاتِ الْجُبْحٰتِ ۝

1. इनें आयतें च सहाबा गी ते उंदे प्रचार सरबंधी प्रयत्नै गी हवाएं आंगर गलाया गेदा ऐ ते दस्सेआ गेदा ऐ जे सहाबा जां उंदे प्रचार सरबंधी प्रयत्न पवितर कुरआन दे पानी गी चपासै डुआइयै लैई जांगन ते उंदी प्रचार सरबंधी इच्छां दिन-ब-दिन बधदियां जांगन इत्थें तक जे उंदे प्रचार सरबंधी चुक्के दे बदल पानी कन्नै भरोई जांगन ते फी ओह लोकें दे दिलें पर इस्लाम धर्म दा इस चाल्ली प्रभाव जमाई देंगन जे उंदे प्रचार सरबंधी प्रयत्न असान्नी कन्नै फैलदे जांगन ते नास्तिकता उंदे सामनै फिक्की पेई जाग। इसदा नतीजा एह होग जे ओह इस्लाम गी संसार दे बक्ख-बक्ख देसैं च फलाई देंगन ते आखरकार इस्लाम विजयी होई जाग। इस चाल्ली जिस सफलता दा समाचार दिता जा करदा ऐ ओह पूरा होई जाग।
2. इस दा मतलब सूर्य मंडल च बिचरने आहले नखत्तरें दे रस्ते न।

तुस सब इक इखत्लाफी/विभेदपूर्ण गल्ला च पेदे ओ ॥ 9 ॥

إِنكُمْ لَفِي قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۝٩

जेहदे करी सिर्फ ऊरे शख्स सचाई थमां फेरेआ जंदा ऐ जेहदे हक्क च फराए जाने दा हुकम होई चुके दा ऐ ॥ 10 ॥

يُؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ أُفِكَ ۝١٠

अटकलपच्चू गल्लां करने आहले हलाक होई गे ॥ 11 ॥

قَبِيلَ الْحَرْصُونَ ۝١١

जेहके गुमराही दी डुगहाइयें च पेदे सचाई गी भुल्ला करदे न ॥ 12 ॥

الَّذِينَ هُمْ فِي عَمْرٍةٍ سَاهُونَ ۝١٢

ओह पुछदे न जे कर्म दी स'जा दा समां कुसलै औग? ॥ 13 ॥

يَسْأَلُونَ أَيَّانَ يَوْمِ الدِّينِ ۝١٣

(तू आखी दे) उस बेलै (औग) जिसलै उनें गी अग्गी दे अज़ाब च गलतान कीता जाग ॥ 14 ॥

يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُونَ ۝١٤

(ते आखेआ जाग जे) अपना अज़ाब चक्खो, एह ऊरे (अज़ाब ऐ) जिसदे तौले औने दी तुस मांग करदे हे ॥ 15 ॥

ذُوقُوا فِتْنَتَكُمْ ۗ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ۝١٥

संयमी लोक बागें ते चश्में च रौहगन ॥ 16 ॥

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝١٦

(ते) उंदा रब्ब उनेंगी जे किश देग ओह लैंदे जांगन। ओह उस बेलै शा पैहलें पूरी चाल्ली आज्ञाकारी हे ॥ 17 ॥

أَخْذِينَ مَا أَنَّهُمْ رَبُّهُمْ ۗ أُنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ مُّحْسِنِينَ ۝١٧

रातीं गी घट्ट गै सौंदे हे ॥ 18 ॥

كَانُوا أَقْبِلًا مِّنْ أَيْلٍ مَا يَهْجَعُونَ ۝١٨

ते बडलै बी ओह इस्तफ़ार/खिमा जाचना करदे होंदे हे ॥ 19 ॥

وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ۝١٩

ते उंदा धन-दौलत च मंगने आहलें दा बी हक्क हा ते जेहके मंगी' नथे सकदे उंदा बी (हक्क हा) ॥ 20 ॥

وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ۝٢٠

1. यानी जानवर बगैरा जो बोल्ली नई सकदे जां ऐसे शरीफ लोक जो मंगने च अपमान समझदे न।

ते धरती च जकीन करने आहलें आस्तै मते-
हारे नशान न ॥ 21 ॥

وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝

ते थुआड़ी अपनी जानें च बी, क्या तुस
दिखदे नेई? ॥ 22 ॥

وَفِي أَنفُسِكُمْ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ۝

ते गासैं च थुआड़ा रिशक बी ऐ ते जे किश
(इसदे अलावा) बा'यदा कीता जंदा ऐ, ओह
बी (है) ॥ 23 ॥

وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ ۝

इस आस्तै गासैं ते धरती दे रब्ब दी कसम (जे
जिसलै एह गल्लां पूरियां होंगन तां पता लग्गी
जाग जे) एह (कुर'आन) उससै चाल्ली इक
सचाई ऐ जिस चाल्ली थुआड़ा गल्लां करना
॥ 24 ॥ (रुकू 1/18)

فَوَرَبِّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِّثْلَ
مَا أَنَّكُمْ تَنطِقُونَ ۝

क्या तेरे कश इब्राहीम दे सत्कार जोग प्रौहें
दी खबर पुज्जी ऐ? ॥ 25 ॥

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ صَيْفِ بْنِ
الْمُكْرَمِينَ ۝

जिसलै ओह उंदै कश आए तां उनें गलाया
(अस तुगी) सलाम (आखने आं) उसनै
गलाया (अ'ऊं बी आखना जे) थुआड़े आस्तै
(खुदा पासेआ) सदा आस्तै सलामती निश्चत'
ऐ (ते मनै च गलाया जे) एह लोक ओपरे
सेही होंदे न ॥ 26 ॥

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا ۝ قَالَ
سَلَامٌ عَلَيْنَا مُمَكَّرُونَ ۝

फी ओह बल्लें नेही अपने घरै-आहले पासै
उठी गेआ ते इक भुने दा बच्चा लेई आया
॥ 27 ॥

فَرَاغَ إِلَىٰ آلِهِمْ فَجَاءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ ۝

ते उसी उंदे सामनै रक्खी दिता (फी) गलाया,
क्या तुस किश नेई लैगे ओ? ॥ 28 ॥

فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ۝

ते (दिल) उंदे शा किश डरेआ ओह (इस
हालत गी समझी गे ते) गलान लगे, डर नेई,

فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۝ قَالُوا لَا تَخَفْ ۝

1. एह ओह गल्ल ऐ जो सिर्फ अल्लाह गै आखी सकदा ऐ। इसदा एह अर्थ ऐ जे हजरत इब्राहीम गी एह पता लग्गी चुके दा हा जे ओह लोक अध्यात्मकता च किन्ना उच्चा स्थान रखदे न ते ओह अल्लाह दी किरपा दी छाया च आई गेदे न। इस आस्तै भरोसे कनै आखी दिता जे अऊं बी आखना जे थुआड़े आस्तै अल्लाह पासेआ सदा आस्तै सलामती ते शांति निश्चत ऐ।

ते उसी इक ज्ञानवान पुत्रे दा शुभ-समाचार सुनाया ॥ 29 ॥

इन्ने च उसदी लाड़ी अगमें आई जेहदे चेहरे पर शर्मसारी' ही इस आस्तै जोरें अपने हत्थ मूँहै पर मारे ते बोल्ली, अ'ऊ ते इक बांझ/संड बुद्धी आं ॥ 30 ॥

उनें गलाया (एह सच्च ऐ जे) तू ऐसी गै ऐं पर तेरे रब्ब नै (ऊऐ) गलाया ऐ (जो असें गलाया ऐ) ओह सच्चें गै बड़ी हिक्मत आह्ला (ते) बड़े इलम आह्ला ऐ ॥ 31 ॥

وَبَشَّرُوهُ بِخُلْمٍ عَلَيْهِ ۝

فَأَقْبَلَتْ امْرَأَتُهُ فِي صَرَّةٍ فَصَكَّتْ
وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ ۝

قَالُوا كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ إِنَّهُ هُوَ
الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ۝

1. मूल शब्द 'सरतिन्' दा अर्थ चेहरे दी कालिमा बी होंदा ऐ। इस आस्तै अर्थ एह ऐ जे शर्म करिये उसदे चेहरे दा रंग बदली गेदा हा।

(इस पर इब्राहीम नै) गलाया, हे रसूलो! तुसेंगी केहड़ा म्हत्तवपूर्ण कम्म सोंपेआ गेदा ऐ ॥ 32 ॥

उनें गलाया, अस इक मुजरम कौम कश भेजे गेदे आं ॥ 33 ॥

तां जे उंदे पर गिल्ली मिट्टी कनै बने दे केंकर/गोलियां बर्हाचै ॥ 34 ॥

जिंदे पर तेरे रब्ब पासेआ हद शा बधने आहलें गी स'जा देने आस्तै नशान लाया गेदा ऐ ॥ 35 ॥

ते असें उस बस्ती च जिन्ने मोमिन हे उनें गी कड्ढी लैता ॥ 36 ॥

ते असें उस बस्ती च अपने फरमांबरदारों दा सिर्फ इक घर पाया/दिक्खेआ ॥ 37 ॥

ते असें उस (बस्ती) च इक ऐसा नशान छोड़ेआ जेहका म्हेशां उनें लोकें दे कम्म औग जेहके जे दर्दनाक अजाब शा डरने आहले होंगन ॥ 38 ॥

ते मूसा दी घटना च बी (मती-हारी नशानियां हियां) जिसलै असें उसी फिरऔन पासै/कश इक खु 'ल्ली-डु 'ल्ली दलील देइयै भेजेआ ॥ 39 ॥

ते ओह (फिरऔन) अपने बुत्तखाने' पासै पिट्ट फेरिये उठी गेआ ते गलान लगा जे (मूसा) बड़ी चिकनी-चुप्पड़ी गल्लां करने आहला ते मजनू/पागल ऐ ॥ 40 ॥

इस पर असें उसगी ते उसदे लश्करें गी (अपने कैहर कनै पकड़ी लैता ते उनें सारें गी समुंदरै च सुट्टी दिता ते (अज-तक्क) उस पर

٢٧

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٣٢﴾

قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَى قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٣٣﴾

لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّن طِينٍ ﴿٣٤﴾

مُسَوَّمَةً عِندَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ﴿٣٥﴾

فَأَخْرَجْنَا مَن كَانَ فِيهَا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٦﴾

فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٧﴾

وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً لِلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٣٨﴾

وَفِي مُوسَى إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَى فِرْعَوْنَ بِسُلْطَنٍ مُّبِينٍ ﴿٣٩﴾

فَتَوَلَّى بِرُكْنِهِ وَقَالَ سِحْرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٤٠﴾

فَأَحْذَرْتَهُ وَجُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُمْ مُّؤْمِلُونَ ﴿٤١﴾

1. मूल शब्द 'रुकन' दा अर्थ ऐ शक्ति प्राप्त करने दा स्थान। आयत दा भाव ए ऐ जे फिरऔन अपने शक्ति भंडार पासै उठी गेआ। फिरऔन गी उस दे अकीदे मताबक सारी शक्तियां बैल दे मंदरे चा मिलदियां हियां। इस आस्तै असें अनुवाद च बुत्तखाना इस्सै अर्थ गी ध्यान च रक्खिये लिखेआ ऐ।

फटकार पवा करदी ऐ ॥ 41 ॥

ते आद दी घटना च बी (असें मते-हारे नशान छोड़े दे न, उस बेलै) जिसलै जे असें उंदे पर इक सख्त आंधी चलाई ही ॥ 42 ॥

ओह जिस चीजै कनै बी छहोंदी ही उसी (तबाह करी दिंदी ही ते उसी) गली चुकी दी हड्डियें आंगर बनाई दिंदी ही ॥ 43 ॥

ते समूद च बी (असें नशान छोड़ेआ) जिसलै उनेंगी गलाया गेआ ते इक अरसे तक लाह लेई लैओ' ॥ 44 ॥

ते उनें अपने रब्ब दे हुकम दी ना-फरमानी कीती ते उनेंगी इक अजाब नै आई पकड़ेआ ते ओह दिखदे गै रेही गे ॥ 45 ॥

ते नां ते बचने आस्तै खड़ोई^३ सके ते नां ओह कुसै दी मदद हासल करी सके ॥ 46 ॥

ते उंदे शा पैहलें नूह दी कौम गी बी (अस हलाक करी चुके दे हे) ओह आज्ञा-पालन शा निकलने आहली/इन्कारी कौम ही ॥ 47 ॥ (रुकू 2/1)

ते गासैं गी बी असें केई गुणों^३ कनै बनाया ऐ ते अस बौहत ज़्यादा ताकत रक्खने (दे मालक) आं ॥ 48 ॥

وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ العَقِيمَةَ ٤١

مَا تَذُرُّ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرِّيمِ ٤٢

وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا حَتَّىٰ حِينٍ ٤٣

فَتَوَّأ عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ٤٤

فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُتَّصِرِينَ ٤٥

وَقَوْمِ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَسِيقِينَ ٤٦

وَالسَّمَاءَ بَيْنَهُمَا يَأْتِيهِوْنَا الْمُوسِعُونَ ٤٧

1. इस दा एह मतलब ऐ जे थोड़े अरसे बा'द तुंदे पर अजाब आई जाग जेहदे बा'द तुस संसारक साधनें शा लाह लैने दे काबल नैई रह्ये।
2. यानी इन्नी तफीक बी नैई मिली जे खड़ोइयै बचने दा कोई सरिस्ता करदे।
3. मूल शब्द 'बिऐदिन' दा अर्थ ऐ केई हत्यें कनै बनाया। शब्द कोश च हत्य दा अर्थ ऐ-शक्ति, समर्थ, अधिकार, बल। अल्लाह दी शक्ति आस्तै धार्मिक परिभाशा च 'गुण' शब्द प्रयुक्त होंदा ऐ। इस आस्तै असें अनुवाद कीते दा ऐ जे 'असें गासैं गी बी नेकां गुणों कनै बनाया ऐ' यानी गासै दी रचना च अल्लाह दी शक्ति दा हत्य बी हा ते पवितरता दा बी ते स्तुति दा बी हत्य हा। इस आस्तै नेकां गुण गासै थमां जाहर होंदे न।

ते धरती गी असें इक बिस्तरे आंगर बनाया ऐ
ते अस बौहत अच्छा बिस्तरा बनाने आहले
आं ॥ 49 ॥

ते हर इक चीजै दे असें नर-मादा बनाए न
तां जे तुस नसीहत हासल करी सको ॥ 50 ॥

इस आस्तै (चाही दा ऐ जे) तुस अल्लाह
पासै दौड़ो। अ'ऊं ओहदे पासेआ थुआड़ी
बक्खी थुआड़े आस्तै जाहरा तौर पर सोहगा
करने आहला बनियै आए दा आं ॥ 51 ॥

ते तुस अल्लाह कनै कुसै होरस गी उपास्य
नेई बनाओ। अ'ऊं ओहदे पासेआ तुसेंगी
जाहरा-बाहरा सोहगा करने आहला आं
॥ 52 ॥

इस्सै चाल्ली' उंदे शा पैहलें जेहके रसूल औंदे
रेह, उनेंगी लोकें इयै गलाया जे ओह मन-
मोहनियां गल्लां करने आहले जां मजनू/पागल
न ॥ 53 ॥

क्या ओह एह (गल्ल आखने दी) इक-दूए
गी बसीयत' करी गेदे हे (हरगज़ नेई) बल्के
ओह सारे दे सारे सरकश/सिरफिरे लोक न
(इस्सै आस्तै इक गै किसमै दे गंदे ख्याल उंदे
दिलें च पैदा होंदे न) ॥ 54 ॥

इस आस्तै (हे नबी!) तू उंदे शा मूह फेरी लै
ते तुगी (उंदे कर्मै दी ब'जा कनै) कोई
लाहमा नेई दिता जाग ॥ 55 ॥

ते चेता करांदा रौह, की जे चेता कराना मोमिनें
गी लाह पंजादा ऐ ॥ 56 ॥

وَالْأَرْضَ فَرَشْنَاهَا فَرِحِمَ الْمُهْدُونَ ﴿٥١﴾

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُونَ ﴿٥٠﴾
فَقَرُّوا إِلَى اللَّهِ ۗ إِنَّ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيرٌ
مُّبِينٌ ﴿٥١﴾

وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ ۗ إِنَّ لَكُمْ
مِّنْهُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥٢﴾

كَذَلِكَ مَا آتَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
مِنْ رَسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مُجْنُونٌ ﴿٥٣﴾

أَنَوَاصِيَابِهِ ۗ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوتٌ ﴿٥٤﴾

فَتَوَلَّوْا عَنْهُمْ ۗ فَمَا أَنْتَ بِمَلُومٍ ﴿٥٥﴾

وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٦﴾

1. जिस चाल्ली हजरत मूसा ते हजरत मसीह दी गल्लें गी लोकें नेई मन्नेआ ते उंदे शा पैहलें आहले रसूलें गी बी सच्चा नेई समझेआ, ते उनेंगी झूठा करार दिंदे/समझदे रेह।
2. यानी सारे बरोधी इन्कार करने बारे इक गै किसमै दियां दलीलां दिंदे हे। आखो जे ओह इक-दूए गी सखाई गेदे हे जे इस चाल्ली नबियें दा इन्कार करी देओ।

ते में जिन्हें ते इन्सानें गी सिर्फ अपनी अबादत आस्तै पैदा कीते दा ऐ ॥ 57 ॥

नां अ'ऊं उंदे शा कोई रिशक/रोजी मंगना ते नां अ'ऊं उंदे शा एह चाहन्ना जे ओह मिगी खाना खलान ॥ 58 ॥

अल्लाह गै सारें गी खाना खलाने आह्ला (ऐ ते) बड़ी (जबरदस्त) ताकत आह्ला ऐ ॥ 59 ॥

इस आस्तै जिनें जुलम कीता ऐ उंदे आस्तै बी ऊऐ नेह डोल/बदले न जनेह उंदे साथियें आस्तै हे। इस आस्तै चाही दा ऐ जे ओह अज़ाब मंगने दी मेरे अगें काह्ल/तौल नेई करन ॥ 60 ॥

ते जिनें कुफर कीता ऐ उंदे आस्तै उस रोज, जेहदा उंदे कन्नै बा'यदा कीता जंदा ऐ, हलाकत/तबाही नाज़ल होने आह्ली ऐ ॥ 61 ॥
(रुकू 3/2)

قال فما خطبكم ٢٧ الدُّرَيْتِ ٥١

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ٥٧

مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ يُطِيعُونِ ٥٨

إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ٥٩

فَأَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُنُوبًا مِثْلَ ذُنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونَ ٦٠

فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ٦١

ooo

سُورَةُ الظُّورِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ خَمْسُونَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

सूर: अल्-तूर

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां पंजाह आयतां ते दो रुकू न

अ'ऊं अल्लाह दा नांस लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अ'ऊं तूर' गी गुआही दे रूपै च पेश करना
॥ 2 ॥

وَالظُّورِ ①

ते (इस) लिखी² दी कताबा गी बी
॥ 3 ॥

وَكُتِبَ مُسْطُورًا ①

(जो) खु'ल्ले³ कागजें पर (लिखी गेदी ऐ)
॥ 4 ॥

فِي رَقٍ مَّنْشُورٍ ①

ते खान्ना काबा' गी जो म्हेशां अबाद रौहग
॥ 5 ॥

وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ①

ते उस छत गी जो म्हेशां उच्चि^६ रौहग ॥ 6 ॥

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوعِ ①

1. तूर पर हजरत मूसा पर कताब नाजल होई ही, जो हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दी सचाई दी गुआह ऐ।
2. इस लिखी दी कताब दा अर्थ कुर'आन-करीम ऐ जिस थमां हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दी सचाई सूरज आंगर सिद्ध होंदी ऐ।
3. खु'ल्ले कागजें दा अर्थ ऐ जे ओह कताब मुसलमानें दे कर्म दे मताबक बंद बस्तें च रक्खने आस्तै नेई बल्के सच्चा मुसलमान इसी इस आस्तै घर रखदा ऐ जे हर बेलै पढ़दा र'वै ते ओह हर बेलै खु'ल्ली दी र'वै।
4. यानी हजरत इब्राहीम दे बा'द हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. नै हज्ज करना जरूर करार दिते दा ऐ ते हून मुसलमान म्हेशां हज्ज करदे रौहगन ते हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दी सदाकत/सचाई साबत होंदी रौहग।
5. सदा उच्चि रौहने आहली छत दा अर्थ बी काबा ऐ ते मतलब एह ऐ जे उस दी इज्जत (सम्मान) अल्लाह म्हेशां कायम रक्खग।

ते जोश मारदे/उप्पर उठदे समुंदर¹
गी ॥ 7 ॥

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ۝

तेरे रब्ब पासेआ अजाब जरूर नाजल होइयै रौहग
॥ 8 ॥

إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۝

उसी कोई दूर करने आहला नेई ॥ 9 ॥

مَالَهُ مِنْ دَافِعٍ ۝

जिस रोज बदल² लैहरां मारन लगग ॥ 10 ॥

يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَورًا ۝

ते प्हाड़³ अपनी पूरी रफतार/गति कनै चलडन
॥ 11 ॥

وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ۝

इस आस्तै उस दिन झुठलाने आहलें पर अजाब
नाजल होग ॥ 12 ॥

فَوَيْلٌ لِلْيَوْمِيذِ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝

(यानी उनें लोकें पर) जेहके गंद उछाली-
उछाली खेढा करदे हे ॥ 13 ॥

الَّذِينَ هُمْ فِي حَوْضٍ يَلْعَبُونَ ۝

जिस दिन उनें सारें गी ज्हनम दी अग्गी पासै
धक्के देइयै लैता जाग ॥ 14 ॥

يَوْمَ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ نَارِ جَهَنَّمَ دَعَاً ۝

(ते गलाया जाग) इयै ओह अगग ऐ जिसदा तुस
इन्कार करदे होंदे हे ॥ 15 ॥

هَذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تَكْذِبُونَ ۝

क्या एह सिर्फ मलम्मासाजी/बनावटी गल्ल ही
जां असल च तुस हून बी नेई दिक्खा करदे
॥ 16 ॥

أَفَسِحْرٌ هَذَا أَمْ أَنْتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ۝

(जेकर एह नि'रा इक ख्याल ऐ तां बे-
धड़क) उस च दाखल होई जाओ ते (भाएं)
सबर करो जां (सबर) नेई करो, थुआड़े
आस्तै बराबर ऐ (जो होना ऐ ओह होइयै
रौहग) तुसें गी सिर्फ थुआड़े कमें दा गै फल
दिता जा करदा ऐ ॥ 17 ॥

إِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا
سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ ۝ إِنَّمَا تُجْرُونَ مَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ۝

1. पवित्र कुर'आन समुंदर गी अध्यात्मक ज्ञान दा नशान करार दिंदा ऐ। इस आस्तै जोश मारने आहले समुंदर दा अर्थ कुर'आनी ज्ञान दा भंजार ऐ जेहदे चा ज्ञान बक्ख-बक्ख रूपे च जाहर होँदा रौहग ते इस्लाम दी सचाई सिद्ध करदा रौहग।
2. मूल शब्द 'समा' दा अर्थ बदल ते गास होँदा ऐ। इत्थे इसदा अर्थ बदल ऐ। मतलब एह ऐ जे कुर'आन मजौद राहें अल्लाह दी रैहमत दे बदल दुनियां पर छाई जांगन।
3. प्हाड़ दा अर्थ बड़डे लोक जां बड़डे संगठत राज/कहूमतां होँदा ऐ। मतलब एह ऐ जे जिसलै कुर'आन दियां तलीमां बिस्तार करडन/फैलडन तां अरब दा प्राचीन शासन, कैसर ते किस्सा दियां कहूमतां तितर-बितर होई जाडन ते दुनियां दे नक्शे पर गायब होई जांगन।

संयमी लोक सुगें च ते नैमते च होंगन ॥ 18 ॥

(ते) जे किश उंदा रब्ब उनेंगी देग ओह ओहदे पर खुश होंगन ते उंदा रब्ब उनेंगी दोजख दे अजाब शा बचाई लैग ॥ 19 ॥

(ते गलाग जे) खाओ ते पिय्यो (जो तुसेंगी दिता जंदा ऐ) ओह थुआड़े कर्मे दी ब'जा करी थुआड़े आस्तै बरकत आहला होग ॥ 20 ॥

ओह उस रोज रीहगें च बिछे/लगदे दे सिंहासनें पर तकिये लाइयै बैठे दे होंगन ते अस उनेंगी बड्डी-बड्डी स्याह अक्खीं आहलियां जनानियां जोड़े दे रूपै च प्रदान करगे ॥ 21 ॥

ते जो लोक ईमान लेई आए न ते उंदी उलाद बी ईमान दे मामले च उंदे पिच्छें चली ऐ अस उंदे कनै उत्तम सुगें च उंदी उलाद गी बी ज'मा करी देगे ते उंदे (बब्ब-दादें दे) कर्मे च बी कोई कमी नेई करगे। हर इक शख्त अपने कर्मे दे फल दा बंधक ऐ ॥ 22 ॥

ते अस उनेंगी उंदी मरजी मताबक भांत-सभांते फल ते भांत-सभांते गोशत पेश करगे ॥ 23 ॥

ओह उस च ऐसे प्याले बरै झगड़े करडन जिंदा नतीजा नां ते बकवास करना होग, ते नां गुनाह (करना होग) ॥ 24 ॥

ते जुआन सेवक हर बेलै उंदी खिदमत च हाजर रौहडन। आखो जे ओह परदे च लपटोए दे मोती न ॥ 25 ॥

ते ओह इक दूए कनै ध्यान कनै आपसी सुआल-जवाब करडन ॥ 26 ॥

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَعِيمٍ ۝

فِكِهِمْ بِمَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ ۖ وَوَقَّاهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

مُتَّكِنِينَ عَلَى سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ ۖ وَرَوَّجْتُهُمْ بِخُورٍ عَيْنٍ ۝

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُمْ مِنْ عَمَلِهِمْ مِنْ شَيْءٍ ۗ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ۝

وَأَمَدَدْنَاهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ۝

يَتَنَزَّعُونَ فِيهَا كَأَسَا لَا لَعْوَ فِيهَا وَلَا تَأْتِيهِمْ ۝

وَيُطَوَّفُ عَلَيْهِمْ غُلَمَانٌ لَهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤُ مَكْنُونٌ ۝

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝

1. कोई बी अपने कर्मे दा फल भोगने शा इद्धर-उद्धर नेई होई सकदा।
2. यानी मरने दे बा'द जिस चीजा दा नाँ शराब रक्खेआ गेदा ऐ, ओह शराब अल्लाह दे प्रेम दी शराब ऐ। ओहदे कनै दमाग खराब नेई होंदा ते नां गै इस्नान बे-मतलब बकवास करदा ऐ ते नां गाल-मुआल दिंदा ऐ।
3. यानी पवित्तर ते शुद्ध आचरण करने आहले।

ते गलाडन जे अस लोक पैहलें अपने रिशतेदारें च अपने अन्जाम शा डरदे होंदे हे ॥ 27 ॥

मगर अल्लाह नै सहाडे पर स्थान कीता। ते असें गी गर्म लूह दे अज्जाब शा बचाई लैता ॥ 28 ॥

अस पैहलें गै उस (अल्लाह) गी पुकारदे होंदे हे ओह बड़ा नेक सलूक करने आहला (ते) बे-इन्तहा कर्म करने आहला ऐ ॥ 29 ॥
(रुकू 1/3)

इस आस्तै (हे रसूल!) तू (लोकें गी) नसीहत करदा जा, की जे तू अपने रब्ब दे स्थानें करी नां ते जोतशी (ग़ैब दियां गल्लां दस्सने आहला) ऐं ते नां मजनू/पागल ॥ 30 ॥

क्या ओह एह आखदे न जे एह शख्स शायर ऐ (ते) अस जमाने दी तबाही दा ओहदे आस्तै इंतजार करा करने आं ॥ 31 ॥

तूं गलाई दे इंतजार करदे जाओ, की जे अ'ऊं बी थुआड़े आस्तै इंतजार करा करना ॥ 32 ॥

क्या उनेंगी उंदी बुद्ध इयै गल्ल सखांदी ऐ, जां ओह सरकश/सिरफिरी कौम न? ॥ 33 ॥

जां ओह एह आखदे न जे उसनै अपने पासेआ गल्ल बनाई लेदी ऐ, असलीयत एह ऐ जे ओह (वह्नी दे नाज़ल होने पर) ईमान गै नई आहनदे ॥ 34 ॥

जेकर ओह सच्चे न तां इसै चाल्ली दा कोई होर कलाम लेई औन (तां जे दुनियां फैसला करी सके जे दमैं कलाम बराबर न) ॥ 35 ॥

क्या उनेंगी बगैर कुसै गरज़/मकसद दे पैदा कीता गेदा ऐ जां ओह आपूं गै अपने खालक/सिरजनहार न? ॥ 36 ॥

قال فما خطبكم ٢٧ الظور ٥٢

قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلَ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ٣٠

فَمَنْ اللَّهُ عَيْنَاوَوْ قُنَا عَذَابَ السَّمُومِ ٣١

إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلَ نَدْعُوهُ إِنَّهُ هُوَ
الْبَرُّ الرَّحِيمُ ٣٢

فَذَكِّرْ فَمَا أَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ
وَلَا مَجْنُونٍ ٣٠

أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهِ رَيْبَ
الْمُنُونِ ٣١

قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي مَعَكُمْ مِنَ
الْمُتَرَبِّصِينَ ٣٢

أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَامُهُمْ بِهَذَا أَمْ هُمْ
قَوْمٌ طَاعُونَ ٣٣

أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُ بَلْ لَا يُؤْمِنُونَ ٣٤

فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِثْلِهِ إِن كَانُوا
صَادِقِينَ ٣٥

أَمْ خَلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمْ
الْخَالِقُونَ ٣٦

1. यानी दुनियां च मुन्करें दी धमकियें शा अस केई बार बबराई जंदे हे मगर अज्ज हर चाल्ली दी फतह ते अमन असेंगी हासल ऐ।

क्या उन्हें गासैं ते धरती गी पैदा कीता ऐ? (नेई!) बल्के सचाई एह ऐ जे एह (गास ते धरती पैदा करने आहले पर) जकीन गै नेई करदे ॥ 37 ॥

क्या उंदे कश तेरे रब्ब दे खजाने हैन? जां ओह दरोगे न? ॥ 38 ॥

क्या उंदे कश कोई पौड़ी/सिद्ध है जिस पर चढ़ियै ओह (खुदा दियां गल्लां) सुनदे न? इस आस्तै चाही दा ऐ जे उंदा सुनने आहला (हज्रत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. आंगर) कोई खु'ल्ली दलील पेश करै ॥ 39 ॥

क्या खुदा आस्तै ते धीयां न ते थुआड़े आस्तै पुत्तर। ॥ 40 ॥

क्या तूं उंदे शा कोई अजर मंगना ऐं? इस आस्तै ओह उस चट्टी कारण दबांदे जा करदे न ॥ 41 ॥

क्या उनेंगी गैब दी जानकारी है जिसगी ओह लिखी लेंदे न? ॥ 42 ॥

क्या ओह तेरे खलाफ कोई उपाऽ करना चाहदे न? इस आस्तै याद रक्खो जे उनें मुन्करें दे खलाफ गै (खुदाई) उपाऽ कीते जांगन ॥ 43 ॥

क्या अल्लाह दे सिवा उंदा कोई होर उपास्य है? (याद रक्खो) उंदे शिर्क शा अल्लाह पाक ऐ ॥ 44 ॥

ते जेकर ओह गासै च बदलै दा कोई खंधोला ब'रदा दिक्खन तां गलांदे न जे एह ते (सिर्फ) इक घना बदल ऐ ॥ 45 ॥

इस आस्तै तूं उनें गी (उंदी बे-वकूफी च) छोड़ी दे, इत्थें तक जे ओह अपने उस निश्चत

أَمْ خَلَقُوا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ ۗ بَلْ لَا يُوقِنُونَ ﴿٣٧﴾

أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنٌ رَّبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُضَيِّطُونَ ﴿٣٨﴾

أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ ۗ فَلْيَأْتِ مُسْتَمِعِيهِمْ بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٣٩﴾

أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ ﴿٤٠﴾

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَغْرَمٍ مُثْقَلُونَ ﴿٤١﴾

أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُمُونَ ﴿٤٢﴾

أَمْ يَرِيدُونَ كَيْدًا ۗ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ ﴿٤٣﴾

أَمْ لَهُمْ آلَةٌ غَيْرُ اللَّهِ ۗ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤٤﴾

وَإِنْ يَرَوْا كِسْفًا مِنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَّرْكُومٌ ﴿٤٥﴾

فَذَرَهُمْ حَتَّى يَلْتَمِتُوا بِمَوَاقِدِ النَّارِ ۗ فِيهِ

ध्याड़े गी दिक्खी लैन, जिस च (उंदे पर अजाब नाज़ल कीता जाग ते) ओह डरें मारे बे-होश करी दिते जांगन ॥ 46 ॥

يُصَعِّقُونَ ۝

जिस दिन उंदा उपाऽ उनेंगी कोई लाह नेई पुजाग ते नां उंदी मदाद कीती जाग ॥ 47 ॥

يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۝

ते जालम लोकें गी उसदे अलावा होर बी अजाब पुजडन, पर उंदे चा मते-हारे लोक नेई जानदे ॥ 48 ॥

وَأَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَلِكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

ते तू अपने रब्ब दे हुकमै पर डटे दा रौह, की जे तू साढ़ी अक्खीं दे सामनै (साढ़ी पहाजत च) ऐं ते चाही दा ऐ जे जिसलै तू (अबादत आस्तै) खड़ोऐं, तां साढ़ी स्तुति दे कनै-कनै साढ़ी पवित्तरता दा गुणगान बी करदा र'वा कर ॥ 49 ॥

وَأَصِيرُ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ۝

ते इससै चाल्ली (जिसलै तू) रातीं बेलै (खड़ोऐं तां) उस (खुदा) दी पवित्तरता दा गुणगान करदा र'वा कर ते जिसलै सतारे/नखत्तर पिट्ठ फेरी लैन (यानी रात मुक्कने आहली होऐ) उसलै बी ॥ 50 ॥ (रुकू 2/4)

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ۝

ooo

سُورَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ ثَلَاثٌ وَاسْتُونَ آيَةٌ وَثَلَاثَةٌ رُكُوعَاتٌ

सूर: अल्-नज्म

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां त्रेहट आयतां ते त्रै रुकु न।

अ'ऊं अल्लाह दा नां दे लेइयै (पढ़ना) जो बे-
हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अ'ऊं सुरय्या' नां दे नखत्तर/तारे गी इस
गल्ला दी गुआही आस्तै पेश करना जिसलै
ओह (आध्यात्मक द्रिस्टी कन्नै) ख'ल्ल आई
जाग ॥ 2 ॥

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ ①

जे शुआड़ा साथी नां ते रस्ता भुल्ले दा ऐ, नां
गुमराह² होए दा ऐ ॥ 3 ॥

مَا صَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ ①

ते ओह अपनी मन चाही/पसंद गल्लां नेई
करदा ॥ 4 ॥

وَمَا يَنطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ ①

बल्के ओह (उसदा पेश कीते दा कलाम
कुर'आन मजीद) सिर्फ खुदा आहले पासेआ
नाजल होने आहली वही ऐ ॥ 5 ॥

إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ①

इस गी (यानी एह कलाम) बड़ी शक्तियें
आहले (खुदा) नै सखाया ऐ ॥ 6 ॥

عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ①

1. एह उस भक्विकखाणी पासै संकेत ऐ जो हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. नै कीती दी ऐ जे जेकर ईमान सुरय्या नां दे नखत्तर पर उठी जाग तां पारसी कौम दा इक आदमी उसी उत्थुआं बापस लेई आँग।
2. जिसलै उस महान पुरश दा अवतार होग तां हर इक शख्स गी पता लगगी जाग जे हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दी शिक्षा कामल ही। ओह नां ते रस्ता भुल्ले दे हे ते नां गुमराह हे ते नां गै मानसक बिशे बासनें दे अधीन हे।

जिस दियां शक्तियां बार-बार जाहर होने आहलियां न ते जो इस बेलै अपनी शक्तियें गी प्रकट करने आस्तै अर्श पर द्विदता कन्नै कायम होई गेदा ऐ ॥ 7 ॥

ذُومِرَّةٌ فَاسْتَوَى ۝

हर बालग नजरी आहले/सुखम दर्शी शख्स गी गासै दे कंठें पर उसदे प्रकट होने दे लच्छन/आसार नजरी आवा करदे न ॥ 8 ॥

وَمَوْبِأَلْفُقِ الْأَعْلَى ۝

ते ओह¹ (यानी हज्रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. बंदें दी उस बे-चैनी गी दिक्खियै ते उंदे पर रैहम करियै खुदा कन्नै मिलने आस्तै) उस दे लागै होए ते ओह (खुदा) बी (हज्रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. गी मिलने दी चाह कन्नै) उप्परा खल्ल आई गेआ² ॥ 9 ॥

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّى ۝

ते ओह दमैं द'ऊं धनशें दे मिलदे वितर (यानी चिल्ला चाढ़ने पर बनने आहले अर्धगोलकार) दे रूपै च बदली गे ते होंदे-होंदे ओहदे शा बी ज्यादै लागै होई गे ॥ 10 ॥

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى ۝

इस आस्तै उसने अपने बंदे पर वह्नी नाजल कीती जिसदा ओह फैसला करी चुके दा हा ॥ 11 ॥

فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ ۝

1. यानी उस हालत गी दिक्खियै ते दुनियां पर रैहम खाइयै हज्रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. नै उस कन्नै मिलने आस्तै रहानी तौरा पर उप्परा चढ़ना शुरू कीता जिस पर खुदा दे प्रेम नै छुआली लैती ते खुदा बी खल्ल उतरन लगा तां जे मुहम्मदियत दे प्रेम बिंदू कन्नै मिली जा ते दमैं आपस च इस चाल्ली मिली गे जिस चाल्ली द'ऊं धनखें गी जोड़ियै तीर चलाया जा यानी इस चाल्ली जे जित्थें इक कमान/धनखै दा तीर पवै, उर्थें गै दूई दा बी पवै। द'ऊं कमानां/धनख इस आस्तै गलाया जे द'ऊं कमानें दा चिल्ला सख्त होंदा ऐ ते तीर जोरें पौंदा ऐ।

इस आयत थमां एह बी साबत होंदा ऐ जे मेराज रहानी दो बार होआ हा नां के इक बार। जियां जे मुसलमानें दा ख्याल ऐ। इस आयत शा थोखा खाइयै किश विद्वानें 'इम्ना' दी आयतें गी मेराज दियां आयतां गलाए दा ऐ। हालांके 'इम्ना' बिल्कुल होर शै/चीज ऐ ते सिर्फ दुनियां पर ही ते मेराज च हज्रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. दी रूह गासै पर गई ही ते उससै बारै गलाए दा जे एह दो बार होआ हा। इक बार 'दना' दे रूपै च यानी जिसलै हज्रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. अल्लाह गी मिलने आस्तै गे हे ते दूई बार 'तदल्ला' दे रूपै च यानी जिसलै अल्लाह हज्रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. गी मिलने आस्तै उप्परा खल्ल आया हा।

2. मूल शब्द 'दना' दा अर्थ ऐ अर्श दे लागै होना ते तदल्ला दा अर्थ ऐ इक शख्स दूप दे लागै जाने दी इच्छा कन्नै ओहदे पासै बंधै ते दूआ शख्स बी अपने पासैआ ओहदे करीब/लागै होने दी कोशश करै।

(हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. दे) दिल नै जो कुछ दिक्खेआ ऊए ब्यान कीता ॥ 12 ॥

مَا كَذَّبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَى ①

क्या तुस उस कन्नै उस (नजारे) दे बारै झगड़दे ओ जो उस (यानी मुहम्मद रसूल अल्लाह) नै (गासै पर) दिक्खेआ हा? ॥ 13 ॥

أَقْتَمَرُؤْنَهُ عَلَى مَا يَرَى ②

हालांके उसनै एह (नजारा) इक बार नेई दिक्खेआ बल्के दो बार दिक्खे दा ऐ (यानी इक उस बेलै जिसलै तुस खुदा दे लागै होने दी कोशश करा करदे हे ते दूआ उस बेलै जिसलै खुदा थुआड़ी बक्खी आया हा) ॥ 14 ॥

وَلَقَدْ رَأَاهُ نَزْلَةً أُخْرَى ③

यानी इक ऐसी बैरी' कश जेहकी आखरी सीमा पर ही ॥ 15 ॥

عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَى ④

उससै कश ओह सुर्ग ऐ जो म्हेशां लेई दा ठकाना ऐ ॥ 16 ॥

عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَأْوَى ⑤

ते एह नजारा दिक्खेआ बी उसलै हा, जिसलै बैरी गी उस चीजा नै खट्टी लेदा हा जो ऐसे समै खट्टी लै करदी ऐ (यानी अल्लाह दा चमत्कार) ॥ 17 ॥

إِذِ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَى ⑥

नां ते उसदी अक्ख उस बेलै त्रेढी' होई, नां गै अगमें गी निकली गेई ॥ 18 ॥

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَى ⑦

उस बेलै उसनै अपने रब्ब दी बड्डी नशानियें बिच्चा इक बड्डी नशानी दिक्खी ॥ 19 ॥

لَقَدْ رَأَى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَى ⑧

1. बैरी दे बूहटे दे बारै एह समझेआ जंदा ऐ जे ओहदे च अमरत दा गुण मजूद होंदा ऐ। इस आस्तै मुइदें दे शरीरै गी बैरी दे पत्तर पाइयें बुआले गेदे पानी कन्नै नल्हांदे न तां जे ओह सडै नेई। इस ज 'गा 'सिद्रा' (बैरी) शब्द दा इससै पासै संकेत ऐ ते दस्सेआ गेदा ऐ जे हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. पर अल्लाह 'सिद्रा' (बैरी) राहें उतरेआ यानी तुसंगी ऐसी तलीम दित्ती दी ऐ जेहकी सड़ने आहली नेई ही। बल्के दूएंग गी सड़ने शा बचाने आहली ऐ। जियां दस्सेआ गेदा ऐ जे पैहले समे दियां सारियां कताबां पवितर कुरआन राहें सुरक्षत करी दितियां गेदियां न, की जे उंदा खुलासा कुरआन मजीद च आई गेदा ऐ ते कुरआन मजीद कदें नश्ट नेई होग। इस आस्तै एहदे कन्नै ते एहदे राहें ओह (शिक्षा) बी जीदियां रौहगन।
2. यानी 'मेराज' दिक्खने च गलती दी कोई संभावना नथी। ओह इक बड्डी शान आहला करफ हा। सिर्फ इक सधारण सुखना जां इक सधारण जनेहा करफ नेई हा।

तुस बी बिंद 'लात' ते 'उज्जा' दा हाल सुनाओ (क्या उंदी बी इयै शान ऐ?) ॥ 20 ॥

ते त्रीये 'मनात' दा बी, जो उंदे अलावा ऐ ॥ 21 ॥

क्या थुआड़े आस्तै ते पुत्तर न ते खुदा आस्तै धीयां? ॥ 22 ॥

एह ते बड़ा गै नाकस बटबारा ऐ ॥ 23 ॥

एह ते सिर्फ किश नांs न जो तुसैं ते थुआड़े बब्ब-दादैं रक्खी लैते दे न (बरना इंदे च सचाई किश बी नेई) अल्लाह नै इंदे (बुत्तैं) आस्तै कोई दलील नेई उतारी ओह सिर्फ इक भरम ते किश दिली खाहशैं दा अनुसरण करा करदे न, ते उंदे कश उंदे रब्ब पासेआ हदायत आई चुकी दी ऐ (मगर ओह फी बी नेई समझदे) ॥ 24 ॥

क्या इन्सान जो चाह उसी मिली जंदा ऐ ॥ 25 ॥

इस आस्तै याद र'वै जे आखरत ते दुनियां दियां सब नैमतां अल्लाह दे गै हत्थे च न ॥ 26 ॥ (रुकू 1/5)

ते गासे च मते-हारे फरिश्ते न जे उंदी सफारश (कुसै गी) कोई लाह नेई पुजांदी। सवाए उस शख्स दे जिसे अल्लाह ऐसा करने दी अजाजत देऐ, जिसे ओह अपनी मरजी मताबक समझदा होऐ ते पसंद करदा होऐ ॥ 27 ॥

जेहके लोक आखरत पर ईमान नेई आहनदे, ओह फरिश्तें दे जनानियें आहले नांs रखदे/पांदे न ॥ 28 ॥

ते उनें गी इस बाँरे कोई बी इलम नेई, ओह सिर्फ इक बैहमै च फसे दे न ते बैहम सचाई दे मकाबले च किश बी फायदा नेई दिंदा ॥ 29 ॥

أَفَرَأَيْتُمُ اللَّاتَ وَالْعُزَّىٰ ۝

وَمَنوَةَ الثَّالِثَةِ الْآخَرَىٰ ۝

أَلَكُمُ الذَّكْرُ وَلَهُ الْأُنثَىٰ ۝

تِلْكَ إِذًا قِسْمَةٌ ضِيزَىٰ ۝

إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءٌ سَمِيَّتُوهَا أَنْتُمْ
وَأَبَاؤُكُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ
سُلْطٰنٍ ۚ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَمَا
تَهْوَى الْأَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنْ
رَبِّهِمُ الْهُدَىٰ ۝

أَمْ لِلْإِنسَانِ مَا تَمَنَّىٰ ۝

ع

فَلِلَّهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولَىٰ ۝

وَكَمْ مِنْ مَمْلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُعْنَىٰ
شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مِنْ بَعْدِ أَنْ يَأْذَنَ اللَّهُ
لِمَنْ يَشَاءُ وَيُرِضَىٰ ۝

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ
لَيَسْمَوْنَ الْمَلَائِكَةَ تَسْمِيَةَ الْأُنثَىٰ ۝

وَمَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ ۚ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا
الظَّنَّ ۚ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ
شَيْئًا ۝

ते जेहका शख्स साढ़े जिकर' शा मूंह फेरी लैंदा ऐ ते सवाए दुनियां दी जिंदगी दे होर किश नेई जानदा तूं बी ओहदे पासेआ मूंह फेरी लैं ते उसदी पैरवी नेई कर ॥ 30 ॥

एह उनें लोकें दे इलम दी चरमसीमा ऐ। तेरा रब्ब सच्चे गै उस शख्स गी खूब जानदा ऐ जेहका उसदे रस्ते शा भटकी जंदा ऐ ते उसी बी खूब जानदा ऐ जेहका सिद्धे रस्ते गी अखत्यार करी लैंदा ऐ ॥ 31 ॥

ते गासें ते धरती च जे किश है सब अल्लाह दे कब्जे च ऐ। उसदा एह नतीजा होंदा ऐ जे जिनें पाप कीता, ओह उंदे कर्म मताबक उनेंगी फल दिंदा ऐ ते जिनें नेकी कीती उनेंगी नेक फल दिंदा ऐ ॥ 32 ॥

(यानी) ऐसे लोक जेहके बड्डे गुनाहें ते जाहरा-बाहरा बदकारियें/अश्लील हरकतें शा बचदे रौंहदे न पर एह जे जरा हारे (गुनाह) गी छूही जान (फी पशतावा करन लगी पौन) तेरा रब्ब बडे बसीह रूपै च माफ करने आहला ऐ। ओह उस बेले शा तुसेंगी भलेआं जानदा ऐ जिसलै उसनै तुसें गी धरती चा पैदा कीता ते जिसलै जे तुस अपनी मामें दे डिड्डें च छपे दे हे। इस आस्तै अपनी जानें (अपने आपै गी) पवित्तर मत समझो। संयमियें गी अल्लाह गै चंगी-चाल्ली जानदा ऐ ॥ 33 ॥ (रुकू 2/6)

क्या तूं उस शख्स गी जानना ऐं जिसनै (तेरी वही शा) मूंह फेरी लैता? ॥ 34 ॥

فَاعْرُضْ عَنْ مَنْ تَوَلَّىٰ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۗ

ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ ۗ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۗ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ اهْتَدٰى ۗ

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَسَاءَ وَاِيْمًا عَمِلُوْا وَيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ۗ

الَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبِيْرَ الْاِثْمِ وَالْفَوٰحِشِ اِلَّا اللَّمَمَ ۗ اِنَّ رَبَّكَ وَاَسِعَ الْمَغْفِرَةَ ۗ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ مِنَ الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجْنَّةٌ فِيْ بُطُوْنٍ اُمَّهَاتِكُمْ ۗ فَلَا تُزَكُّوْا اَنْفُسَكُمْ ۗ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ اَتَقٰى ۗ

اَفَرَأَيْتَ الَّذِي تَتَوَلَّىٰ

1. पवित्तर कुरआन च 'जिकर' शब्द रसूल आस्तै बी इस्तेमाल होए दा ऐ ते कुरआन मजीद दे अर्थे च बी बरतोए दा ऐ। इस आस्तै इस ज'गा 'जिकर' दा अर्थे हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. बी होई सकदा ऐ ते कुरआन करीम बी।

ते (खुदा दे रस्ते पर) थोड़ा-हारा (दान) दिता ते फी कंजूसी शा कम्म लैन लगी पेआ ॥ 35 ॥

وَأَعْطَى قَلِيلًا وَأَكْدَى ⑤

क्या ओहदे कश गैब/परोक्ष दा इलम है? ते ओह अपना अन्जाम दिक्खा करदा ऐ? ॥ 36 ॥

أَعِنْدَهُ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهَوَ يَرَى ⑥

क्या उसी मूसा दी कताबै च जे किश है, उसदा इलम नेई दिता गोआ? ॥ 37 ॥

أَمْ لَمْ يُنَبِّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَى ⑦

ते विश्वास पातर इब्राहीम दी कताबें दा बी (ज्ञान नेई दिता गोआ)? ॥ 38 ॥

وَأَبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّى ⑧

(जो एह ऐ जे) कोई बोझ चुक्कने आहली जान दूए दा बोझ नेई चुक्की सकदी? ॥ 39 ॥

أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَى ⑨

ते मनुक्खै गी ऊऐ मिलदा ऐ जिसदी ओह कोशश करदा ऐ ॥ 40 ॥

وَأَنْ لَيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَى ⑩

(ते उनें कताबें च लिखे दा ऐ जे) ओह (इन्सान) अपनी कोशश दा नतीजा जरूर दिक्खी लैग ॥ 41 ॥

وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرَى ⑪

ते उसी पूरा-पूरा फल मिलग ॥ 42 ॥

تُعْجِزُهُ الْجَزَاءُ الْأَوْفَى ⑫

ते एह बी जे (बीती दी ते मजूदा सारी कौमें दा) आखरी फैसला तेरे रब्ब दे गै हत्थै च ऐ ॥ 43 ॥

وَأَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُتَمَتِّهِ ⑬

ते एह जे ऊऐ सहांदा ऐ ते ऊऐ रूआंदा ऐ ॥ 44 ॥

وَأَنَّ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَى ⑭

ते ऊऐ मारदा ऐ ते ऊऐ जींदा करदा ऐ ॥ 45 ॥

وَأَنَّ هُوَ أَمَاتَ وَآحْيَا ⑮

ते उससै नै सारें (जीवधारियें) गी नर ते मादा दे रूपै च पैदा कीता ऐ ॥ 46 ॥

وَأَنَّ هَلْكَ خَلْقَ الرَّجْمَيْنِ الذَّكْرَ وَالْأُنثَى ⑯

1. ईसाई लोक आखदे न जे इस दा अर्थ एह ऐ जे कफ़ारा सिर्फ बे-गुनाह आदमी गै देई सकदा ऐ ते ओह हजरत मसीह हा। हालांके कुरआन मजीद ते बाइबिल दे मताबक बे-गुनाह सिर्फ हजरत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. गै हे। इस आयत दा ते सिर्फ एह अर्थ ऐ जे जेहका शख्स बोझ चुक्कने दी हालत च पैदा कीता गोआ होऐ ओह कुसै दा बोझ नेई चुक्की सकदा। की जे ओह ते अल्लाह दे आदेशें दे अधीन ऐ। इस आस्तै बोझ ते सिर्फ अल्लाह गै चुक्की सकदा ऐ जिसी कोई आदेश देने आहला नेई।

(यानी सारें गी) बीरज शा (पैदा कीता ऐ)
जिसलै ओह् (मां दे ढिड्डै च) पाया जंदा ऐ
॥ 47 ॥

ते एह् जे दबारा पैदा करना बी उससै दे जिम्मै
ऐ ॥ 48 ॥

ते एह् जे ऊऐ धनवान बनांदा ऐ ते ऊऐ गरीब
बनांदा ऐ ॥ 49 ॥

ते ऊऐ 'शिपरा' (नां5 दे नखत्तरै) दा मालक
ऐ ॥ 50 ॥

ते उससै नै सारें शा पैहली आद कौम गी
हलाक कीता हा ॥ 51 ॥

ते उंदे बा 'द समूद दा बी (जो आद दी कौम
दा गै इक हिस्सा हे), (अजाब नै उंदा) किश
नथा छोड़ेआ ॥ 52 ॥

ते उंदे शा पैहलें नूह दी कौम गी बी। ओह्
बड़ा जुलम करदे हे ते बड़े सिरफिरे हे
॥ 53 ॥

ते उल्ट-पल्ट कीती गेदी बस्तियें गी बी उसनै
गै उप्परा दा खल्ल गराया/सुट्टेआ हा ॥ 54 ॥

फी उनेंगी उस चीजें नै (दैवी प्रकोप नै)
खट्टी लैता हा जो ऐसे मौकें पर खट्टी लै
करदी होंदी ऐ ॥ 55 ॥

इस आस्तै तू अपने रब्ब दी नैमतें बिच्चा
केहड़ी-केहड़ी नैमत पर शक्क करगा ॥ 56 ॥

एह् साढ़ा रसूल बी पैहले रसूलें आंगर गै इक
रसूल ऐ ॥ 57 ॥

(उस कौम दे फैसले दी) घड़ी लागै आई
गेदी ऐ ॥ 58 ॥

مِنْ نُظْفَةٍ إِذَا تُمِّي ۝

وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشَاءَ الْأُخْرَى ۝

وَأَنَّهُ هُوَ أَعْنَى وَأَقْنَى ۝

وَأَنَّهُ هُوَ رَبُّ الشَّعْرَى ۝

وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَى ۝

وَتَمُودًا فَمَا أَبْقَى ۝

وَقَوْمٌ تَوْجٍ مِنْ قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا
هُمَّ أَظْلَمَ وَأَطْغَى ۝

وَالْمُوتِفِكَةَ أَهْوَى ۝

فَعَشَّهَا مَا عَشَّى ۝

فِي آيِ الْأَعْرَابِ رَبِّكَ تَتَمَارَى ۝

هَذَا نَذِيرٌ مِنَ النَّذِيرِ الْأُولَى ۝

أَرِزْتَ الْأَرِزَةَ ۝

अल्लाह दे सिवा कोई (हस्ती बी) उस गी
टलाई नेई सकदी ॥ 59 ॥

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ۝٥٩

क्या तुस इस गल्ला पर तज्जब/रहानगी बुझदे
ओ? ॥ 60 ॥

أَفَمِنْ هَذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ۝٦٠

ते हसदे ओ ते रोंदे नेई? ॥ 61 ॥

وَتَضْحَكُونَ وَلَا تَتَّبِعُونَ ۝٦١

ते तुस रहान खड़ोते दे ओ (कोई स्हेई फैसला
करने च समर्थ नेई) ॥ 62 ॥

وَأَنْتُمْ سِمْدُونَ ۝٦٢

(इस आस्तै उट्टो) ते अल्लाह अगों
सजदा करो ते उस दी अबादत करो ॥ 63 ॥

تَجْمُ ٥٣

فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَعِبَدُوا ۝٦٣

(रुकू 3/7)

०००

سُورَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ سِتُّ وَخَمْسُونَ آيَةً وَثَلَاثَةٌ وَرُكُوعَاتٍ

सूर: अल-क्रमर

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां छपुंजा आयतां ते त्रै रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांS लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

(अरब दी) तबाही दी घड़ी आई गेदी ऐ ते
चन्ना' फटी गेआ ऐ ॥ 2 ॥

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَالنَّشْقُ الْقَمَرُ ①

ते जेकर ओह कोई नशान दिखडन तां जरूर
मूंह फेरी जांगन ते गलाई देंगन जे एह सिर्फ
इक धोखा ऐ जो म्हेशां थमां चलदा आवा'
करदा ऐ ॥ 3 ॥

وَإِنْ يَرَوْا آيَةً يُعَرِّضُوا وَيَقُولُوا سِحْرٌ
مُّسْتَمَرٌّ ①

ते उनें झुठलाई दिता ते अपनी खाहशें दे
पिच्छें चली पे ते हर कम्म आसतै इक निश्चत
समां ऐ ॥ 4 ॥

وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَ هُمْ وَكُلٌّ أُمَمٌ
مُّسْتَقَرٌّ ①

ते उंदे कश ऐसे हालात पुज्जी चुके दे न जिंदे
च चतावनी दा समान/साधन मजूद हा ॥ 5 ॥

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ الْأَنْبَاءِ مَا فِيهِ
مُزْدَجَرٌ ①

ते ऐसियां हिक्मत दियां गल्लां हियां जेहकियां
असरदार हियां। पर (अफसोस जे) डराने
आहले (रसूल) नै उनेंगी कोई फायदा नेई
दिता ॥ 6 ॥

حِكْمَةٌ بِالْعَمَىٰ فَمَا تُعْنِ النَّذْرُ ①

1. अरब देश दे लोक चन्नें गी अरब दे शासन दा चि'न्न मनदे हे ते यहूदी बी इयै विश्वास करदे हे इस आस्तै चंदरमा दे फटी जाने ते अरब दे शासन दे सर्वनाश दा इक अर्थ एह ऐ जे 'साअत' (घड़ी) यानी अरब दे सर्वनाश दी घड़ी आई गेदी ऐ ते चंदरमा यानी अरब दे पुराने शासन दा विकास चूर-चूर होई गेआ ऐ।
2. इस दा एह मतलब ऐ जे ऐसी फरेब/छल-कपट भरोची गल्लां सदा शा नबी करदे आए न।

इस आस्तै तू उंदे शा मुंह फेरी लै उस बेले दा इंतजार कर जे इक पुकारने आहला ना पसंद चीज (यानी अजाब) पासै उनेंगी पुकारग ॥ 7 ॥

उंदियां अक्खीं/नजरां झुकी दियां होंगन। ओह कबरें चा इस चाल्ली निकलज्ज आखो जे ओह खिल्लरी दियां त्रिडिडयां न ॥ 8 ॥

पुकारने आहले पासै नसदे जारदे होंगन ते मुन्कर एह बी आखदे जांगन जे एह ते बड़ा तकलीफदेह ध्याड़ा ऐ ॥ 9 ॥

उंदे शा पैहलें नूह दी कौम नै झुठलाया, ते साढ़े बंदे दी गल्लें गी झुठलाया ते गलाया जे एह मजनू ऐ ते (साढ़े बुतें पासेआ) इस पर फटकार दिती गेदी ऐ ॥ 10 ॥

आखर च उसने अपने रब्ब अगें दुआऽ कीती ते गलाया, बैरी नै मिगी दबाई लैता ऐ, इस आस्तै तू मेरा बदला लै ॥ 11 ॥

जेहदे पर असें गासै दे दरोआजे इक जोश कनै बगने आहले पानी राहें खोहली दिते ॥ 12 ॥

ते धरती च बी असें चश्में/सूहटे फुटाई दिते। इस आस्तै (गासै दा) पानी (धरती दे पानी कनै) इक ऐसी गल्ला आस्तै किट्ठा होई गेआ, जिसदा फैसला होई चुके दा हा ॥ 13 ॥

ते असें उस (नूह) गी तख्खें/फ'ट्टें ते किल्लें कनै बनी दी इक चीज (किश्ती) पर चुक्की/चाढ़ी लैता ॥ 14 ॥

ओह साढ़ी अक्खीं सामनै (साढ़ी नगरानी च) चलदी ही। एह उस शख्स दा सिला हा जिस दा इन्कार कीता गेदा हा ॥ 15 ॥

فَقَوْلٌ عَلَيْهِمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَىٰ شَيْءٍ تُكْرَهُ ۝

حُشْعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنتَشِرٌ ۝

مُهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ ۚ يَقُولُ الْكٰفِرُونَ هَذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۝

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَازْدُجِرَ ۝

فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرَ ۝

فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُّنْهَجٍ ۝

وَوَجَرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا فَاتْتَقَى الْمَاءُ عَلَىٰ أَمْرٍ قَدِيرٍ ۝

وَحَمَلْنَاهُ عَلَىٰ ذَاتِ الْأَوَّاحِ وَوَدُسْرِ ۝

تَجْرِي بِأَعْيُنِنَا جَزَاءً لِّمَن كَانَ كُفِرَ ۝

ते असें उस घटना गी इक नशान ते तौर पर (औने आहली कौमें आस्तै) छोड़ेआ¹, इस आस्तै क्या कोई नसीहत हासल करने आहला है? ॥ 16 ॥

ते दिक्खो! मेरा अजाब ते मेरा डराना कैसा (सख्त ते दरुस्त) हा ॥ 17 ॥

असें कुरआन गी अमली/कार्य रूप च अपनाने आस्तै असान बनाया ऐ। इस आस्तै क्या कोई नसीहत हासल करने आहला है ॥ 18 ॥

आद नै बी (अपने रसूल दा) इन्कार कीता हा, फी दिक्खो मेरा अजाब ते मेरा डराना कैसा हा? (यानी अजाब कैसा सख्त हा ते डराना कैसा सच्चा हा) ॥ 19 ॥

असें उंदे पर इक ऐसी हवा भेजी, जो तेज चलने आहली ही ते इक देर तक रौहने आहले मन्हूस² मौकै चलाई गई ही ॥ 20 ॥

ओह लोकें गी इयां चुकियै सुटदी ही, आखो ओह खजूरें दे ऐसे मुंड न जिंदे अंदरे दा गुदा खाई लैता गेदा हा ॥ 21 ॥

इस आस्तै दिक्खो! जे मेरा अजाब (कैसा सख्त) ते मेरा डराना किन्ना (सच्चा) हा ॥ 22 ॥

ते असें कुरआन गी अमल/कार्य रूप च अपनाने आस्तै असान बनाया ऐ, इस आस्तै क्या कोई नसीहत हासल करने आहला है? ॥ 23 ॥ (रुकू 1/8)

समूद नै बी नबियें दा इन्कार कीता हा ॥ 24 ॥

وَلَقَدْ تَرَكْنَهَا آيَةً فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ ۝١٦

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرِي ۝١٧

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ ۝١٨

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرِي ۝١٩

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي يَوْمٍ نَحْسٍ مُسْتَمِرٍّ ۝٢٠

تَنْزِعُ النَّاسَ لَأَنَّهُمْ أُعْجِبُوا خَلْقًا مُّقْبِعٍ ۝٢١

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرِي ۝٢٢

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ ۝٢٣

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ۝٢٤

1. तकरीबन संसार भरे दी सारी कौमें दी तारीख च इक ऐसे सलाब दा जिकर आँदा ऐ जेहका दुनियां दे बड्डे हिस्से पर आया जेहका नूह दे समे दे सलाब आंगर हा।
2. मन्हूस दा एह मतलब नैई जे कोई समां मन्हूस/अशुभ होंदा ऐ ते कोई शुभ। बल्के मतलब एह ऐ जे ओह समां उस कौम आस्तै मन्हूस होई गेआ हा।
3. इस जगह सिर्फ सालेह दा जिकर ऐ मगर उंदे इन्कार गी सारे नबियें दा इन्कार गलाया गेदा ऐ। इसदा एह कारण ऐ जे सारे नबियें दी सचाई दे प्रमाण इक जैसे होंदे न। इस आस्तै इक नबी दा इन्कार करना सारे नबियें दा इन्कार समझेआ जंदा ऐ।

ते गलाया हा जे क्या अस अपने बिच्चा गै इक आदमी दा (जो साढ़े कश भेजेआ गेदा ऐ) अनुसरण करचै? जेकर अस ऐसा करगे तां बड़ी गुमराही ते जलने आहले अजाब च पेई जागे ॥ 25 ॥

क्या खुदा दी वही साढ़े बिच्चा (सिर्फ) उस पर नाज़ल कीती गेदी ऐ? सचाई एह ऐ जे ओह बड़ा झूठा ते घमंडी ऐ ॥ 26 ॥

(असैं गलाया) एह कल्ल (यानी औने आहले समे च) जान्नी/समझी जांगन जे कु'न झूठा ते घमंडी ऐ? ॥ 27 ॥

(असैं उनेंगी गलाया जे) अस इक ऊंटनी उंदी अजमैश आसतै भेजने आहले आं (इस आसतै हे सालेह!) इंदे अन्जाम दा इंतजार कर ते सबर शा कम्म लै ॥ 28 ॥

ते उनेंगी गलाई दे जे पानी उंदे ते तेरे बश्कार तकसीम करी दिता गेदा ऐ। पर गरोह अपने पीने बेलै गै आवा करा करै ॥ 29 ॥

इस पर उनें अपने सरदार गी बुलाया, जेहदे पर ओह आया ते ऊंटनी दियां सदां! कप्पी दितियां ॥ 30 ॥

फी दिक्खो मेरा अजाब ते मेरा डराना कैसा हा? (यानी मेरा अजाब किन्ना सख्त हा ते मेरा डराना किन्ना सच्चा हा) ॥ 31 ॥

असैं उंदे पर इक गै अजाब नाज़ल कीता। ते ओह इक बाड़/झल्ल देने आहले (बूहटे परा) डगाए दे चूरे आंगर होई गे ॥ 32 ॥

ते असैं कुर'आन गी अमली/कार्य रूप च अपनाने आसतै असान बनाए दा ऐ। फी क्या कोई नसीहत हासल करने आहला है? ॥ 33 ॥

فَقَالُوا أَبَشْرًا مِّمَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهُ أَلَا إِنَّا لَادِّعَا
لُنْفِيِّ ضَلَالٍ وَسُعْرِ ۝

ءَ الْفَيْءِ الذِّكْرَ عَلَيْهِ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ
كَذَابٌ آشِرٌ ۝

سَيَعْلَمُونَ عَدًّا مَنِ الْكَذَّابِ الْأَشْرُ ۝

إِنَّا مَرْسَلُوا التَّاقَةَ فِتْنَةً لَهُمْ
فَارْتَبَهُمْ وَاصْطَبِرْ ۝

وَبَيَّنَّهُم أَنَّ الْمَاءَ قَسَمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلُّ
شَرِبٍ مُّحْتَصِرٌ ۝

فَنَادُوا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَى فَعَقَرَ ۝

فَكَيْفَ كَانَ عَدَابِي وَنُذِرٌ ۝

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً
فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ۝

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ
مُّدْكِرٍ ۝

लूत दी कौम नै बी नबियें गी झुठलाई दिता हा ॥ 34 ॥

असें उनेंगी तबाह करने आस्तै बी कैकरें/ बड़गाटी कनै भरोची दी हवा चलाई (जिसनै लूत दे परिवार दे अलावा सारें गी तबाह करी दिता) हां बडलै (जिसलै ओह अजाब आया तां) असें लूत दे खानदान गी बचाई लैता ॥ 35 ॥

एह साढ़े पासेआ इक नैमत ही, जो शुकर करदा ऐ अस उसी इसै चाल्ली दा सिला दिन्ने होन्ने आं ॥ 36 ॥

ते उस (लूत) नै उनेंगी साढ़े अजाब दी पैहलें गै खबर देई दिती दी ही। पर ओह नबियें कनै बैहसना लगी पे ॥ 37 ॥

ते उनें उसी अपने मम्हानें खलाफ बकहाना' चाहया ते असें उंदी अक्खीं पर पड़दा सुट्टी दिता ते गलाया, मेरे अजाब ते मेरे डराने दा मजा चक्खो ॥ 38 ॥

ते बडलै-बडलै गै उंदे पर इक ऐसा अजाब आई गेआ जेहका आइयै गै रौहने आह्ला हा ॥ 39 ॥

(ते असें उनेंगी गलाया जे) मेरे अजाब ते मेरे डराने दा मजा चक्खो ॥ 40 ॥

असें कुरआन गी अमल करने/कार्य रूप च अपनाने आस्तै असान बनाई दिते दा ऐ। इस आस्तै क्या कोई नसीहत हासल करने आह्ला है? ॥ 41 ॥ (रुकू 2/9)

ते फिरऔन दे परिवार कश बी नबी आए हे ॥ 42 ॥

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالَّذِي ۝٣٤

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ نَّجَّيْنَاهُمْ بِسَحَرٍ ۝٣٥

نُعْمَةٌ مِّنْ عِنْدِنَا ۝ كَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ شَكَرَ ۝٣٦

وَلَقَدْ أَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالَّذِي ۝٣٧

وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَنْ صَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذِرِ ۝٣٨

وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقَرٌّ ۝٣٩

فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذِرِ ۝٤٠

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ ۝٤١

وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ النَّذِيرُ ۝٤٢

1. यानी उसी गलाया जे उनेंगी शैहें थमां कड्डी लै।

पर फिराँन दे परिवार नै साढ़ी सारी आयतेँ गी झुठलाया, जेहदी ब'जा करी असेँ उनेँगी इक समर्थवान ते शक्तिशाली आंगर अज़ाब कनै जकड़ी लैता ॥ 43 ॥

हे मक्का बासियो! क्या तुंदे बिच्चा कुफर करने आहले उंदे शा पैहले लोकें शा अच्छे न जां पैहली कताबें च थुआड़े आस्तै अज़ाब शा सुरक्षत रौहना लिखे दा ऐ? ॥ 44 ॥

क्या ओह आखदे न जे अस इक जमात आं ते अस गालिब आइयै/होइयै रौहगे? ॥ 45 ॥

उंदी जमात (जल्थे) गी तौले' गै हराई दिता जाग ते ओह पिट्ट फेरियै नस्सी जांगन ॥ 46 ॥

बल्के उंदी तबाही दी घड़ी दा बा'यदा कीता गेदा ऐ ते ओह बा'यदे आहली घड़ी बौहत ज्यादा हलाक/तबाही करने आहली ते सख्त होग ॥ 47 ॥

मुलजम लोक गुमराही ते जलाने आहले अज़ाब च फसे दे होंगन ॥ 48 ॥

जिस दिन जे ओह अपने सरदारें समेत अग्गी च घसीटे जांगन (ते उनेँगी गलाया जाग) जे दोज़ख दा अज़ाब चक्खो ॥ 49 ॥

असेँ हर चीजै गी अंदाजे दे मताबक पैदा कीते दा ऐ ॥ 50 ॥

ते साढ़ा हुकम अक्ख झपकने आंगर इक दम पूरा होई जंदा ऐ ॥ 51 ॥

ते अस थुआड़े नेह लोकें गी पैहलें बी हलाक करी चुके दे आं ते क्या (इस गल्ला गी जानदे होई बी) कोई नसीहत हासल करने आहला है? ॥ 52 ॥

كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كَلِمًا فَاخَذْنَاهُمْ أَخَذَ عَزِيزٌ مُّقْتَدِرٌ ①

أَكْفَارُكُمْ خَيْرٌ مِنْ أَوْلِيِّكُمْ أَمْ لَكُمْ بَرَاءَةٌ فِي الزُّبُرِ ②

أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعٌ مُنْتَصِرٌ ③

سَيَهْرَمُ الْجَمْعُ وَيَوْتُونَ الذُّبُرُ ④

بَلِ السَّاعَةِ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةِ أَذْهَى وَأَمْرٌ ⑤

إِنَّ الْمَجْرِمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ⑥

يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَى وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ ⑦

إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ⑧

وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلِمَةٍ بِالْبَصَرِ ⑨

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاءَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُدْكِرٍ ⑩

1. इस आयत च अहज़ाब नां दे युद्ध दी भविष्यवाणी ऐ ते एह इस्लाम धर्म दी सचाई दा नशान ऐ।

ते हर कम्म जो उनें कीते दा ऐ, ओह कताबें
च मजूद ऐ ॥ 53 ॥

وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ٥٣

ते हर निक्की ते बड्डी गल्ल लिखी¹ जाई
चुकी दी ऐ ॥ 54 ॥

وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُسْتَظَرٌّ ٥٤

ते मोमिन जन्नतें च केई किसमें दी समृद्धियें
च होंगन ॥ 55 ॥

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ٥٥

इक ऐसे थाहरै च जो सदा रौहने आहला
होग (ते ओह) सर्वशक्तिमान बादशाह
कश (होंगन) (यानी ओह कदें बी
जिल्लत ते पतन दा मूंह नेई दिखडन)
॥ 56 ॥ (रुकू 3/10)

فِي مَقْعَدِ صَدَقٍ عِنْدَ مَلِيكٍ
مُقْتَدِرٍ ٥٦

०००

1. एह अर्थ नेई जे कलम कनै लिखी गेदी ऐ बल्के अर्थ एह ऐ जे सुरक्षत ऐ। जियां जे दूई ज'भें जिकर आँदा ऐ जे क्यामत आहलै दिन गुनाहगारें दे खलाफ उंदी कजड़ी, जबान ते हल्य-पैर गुआही देंग।



सूर: अल्-रहमान

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां उनासी आयतां ते त्रै रूकु न।

अ'ऊं अल्लाह दा नां५ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार रैहम
करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

(ओह) रहमान (खुदा) गै ऐ ॥ 2 ॥

الرَّحْمَنِ ①

जिसनै कुर'आन सखाया ऐ ॥ 3 ॥

عَلَّمَ الْقُرْآنَ ①

उसनै इन्सान गी पैदा कीता ॥ 4 ॥

خَلَقَ الْإِنْسَانَ ①

ते उसी ठीक चाल्ली गल्ल करना सखाया ॥ 5 ॥

عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ①

सूरज ते चन्न इक निश्चत कायदे दे मताबक
चला करदे न ॥ 6 ॥

الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ①

ते जड़ी-बूटियां ते रुक्ख-बूहटे बी खुदा दे
अगें झुके दे न ॥ 7 ॥

وَالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدْنَ ①

ते गासै गी उसनै उच्चा कीते दा ऐ ते (मनुक्ख
जाति आस्तै) बराबरी दा नियम लागू करी
दिते दा ऐ ॥ 8 ॥

وَالسَّمَاءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ ①

(एह आखदे होई) जे न्यां५ (इन्साफ) दे तराजू
(त्रकड़ी) गी कदें बी नेई झुकाओ ॥ 9 ॥

أَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ ①

ते वजन गी इन्साफ कनै कायम करो, ते तोल
गी कस्सा नेई करो ॥ 10 ॥

وَأَقِيمُوا الزُّرْنَ بِالْقَيْسِ وَلَا تَخْسِرُوا ①

الْمِيزَانَ ①

ते उस (खुदा) नै धरती गी तमाम मख्लूक दे
फायदे आस्तै बनाए दा ऐ ॥ 11 ॥

وَالْأَرْضَ وَصَّعَهَا لِلْأَنَامِ ①

इस च फल बी हैंन ते गुच्छेदार फलें आहली खजूरें दे बूहटे बी (हैन) ॥ 12 ॥

ते इस (धरती) च दाने बी हैंन जिंदे पर खोल बी होंदा ऐ ते खुशबूदार फुल्ल बी (हैन) ॥ 13 ॥

इस आस्तै दस्सो ते सेही जे तुस दमें (यानी जिन्न ते इन्सान) अपने रब्ब दी नैमतेँ बिच्चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ? ॥ 14 ॥

इन्सान गी उसनै बजदी खुशक मिट्टी कनै पैदा कीते दा ऐ ॥ 15 ॥

ते जिन्नें गी अग्गी दे लोरे चा पैदा कीते दा ऐ ॥ 16 ॥

इस आस्तै बोल्लो, जे तुस दमें अपने रब्ब दी नैमतेँ चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ? ॥ 17 ॥

ओह दौर्नी चढ़दे पासें दा बी रब्ब ऐ ते दौर्नी घरोंदे पासें' दा बी रब्ब ऐ ॥ 18 ॥

हून दस्सो जे तुस दमें अपने रब्ब दी नैमतेँ चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ? ॥ 19 ॥

उसनै द'ऊं समुंदरें गी इस चाल्ली चलाया ऐ जे ओह इक समै मिली² जाडन ॥ 20 ॥

(इस बेलै) उंदे बशकार इक पड़दा ऐ जेहदी ब'जा करी ओह इक-दूए च दाखल नेई होई सकदे ॥ 21 ॥

فِيهَا فَاكِهَةٌ وَالنَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ ۝

وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۝

فِي آيِ الْآءِ رَبِّكُمْ تَكْذِبِينَ ۝

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۝

وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَّارِجٍ مِنْ نَّارٍ ۝

فِي آيِ الْآءِ رَبِّكُمْ تَكْذِبِينَ ۝

رَبُّ الْمُسْرِقِينَ وَرَبُّ الْمَعْرِبِينَ ۝

فِي آيِ الْآءِ رَبِّكُمْ تَكْذِبِينَ ۝

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيَانِ ۝

بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَا يَبْغِيَانِ ۝

1. एह धरती दे गोल होने पासै इशारा ऐ, जेहदी ब'जा करी दो मशरक ते दो मगरब (दो चढ़दे ते दो घरोंदे पासै) बनी जंदे न।
2. इस च नैहर स्वेज ते नैहर पनामा दी भविकखवाणी ऐ। गलाए दा ऐ जे जे दो समुंदर लागै-लागै न पर उंदै बशकार खुशकी ऐ। इक रोज ओह मिली जाडन। उंदी पन्थान एह ऐ जे उंदे चा मोती ते मुंगे निकलदे न। एह दमें चीजां स्वेज ते पनामा चा मती मातरा च निकलदियां न। इनें नैहरें राहें लाल सागर ते भू-मध्य सागर गी स्वेज राहें मलाई दिता वेदा ऐ ते फी प्रशांत महासागर गी अंध महासागर कनै पनामा राहें मलाई दिता वेदा ऐ।

हून दस्सो जे तुस दमें अपने रब्ब दी नैमतें चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ ? ॥ 22 ॥

فِي أَيِّ آيَةٍ رَبِّكُمْ تُكذِّبِينَ ﴿٢٢﴾

इनें दौनीं समुंदरें चा मोती ते मुंगे निकलदे न ॥ 23 ॥

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٣﴾

फी बोल्लो जे तुस दमें अपने रब्ब दी नैमतें चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ? ॥ 24 ॥

فِي أَيِّ آيَةٍ رَبِّكُمْ تُكذِّبِينَ ﴿٢٤﴾

ते उस दियां बनाई दियां किशियां (बी हैन) ते (उसदे बनाए दे) ज्हाज बी हैन जो समुंदरें च फ्हाड़ें' आंगर लभदे न ॥ 25 ॥

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنشَآتُ فِي الْبَحْرِ
كَالْأَعْلَامِ ﴿٢٥﴾

इस आस्तै दस्सो जे तुस दमें अपने रब्ब दी नैमतें चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ? ॥ 26 ॥ (रुकू 1/11)

فِي أَيِّ آيَةٍ رَبِّكُمْ تُكذِّبِينَ ﴿٢٦﴾

इस (यानी धरती) पर जो बी है आखर हलाक होने आह्ला ऐ ॥ 27 ॥

كُلٌّ مِنْ عَلَيْهَا قَانٍ ﴿٢٧﴾

ते सिर्फ ऊऐ बची सकदा ऐ जेहदे पासै तेरे प्रताप आहले ते सम्मान आहले खुदा दा ध्यान होऐ ॥ 28 ॥

وَيَبْقَى وَجْهَ رَبِّكَ ذُو الْجَلِيلِ
وَالْإِكْرَامِ ﴿٢٨﴾

हून दस्सो जे तुस दमें अपने रब्ब दी नैमतें चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ? ॥ 29 ॥

فِي أَيِّ آيَةٍ رَبِّكُمْ تُكذِّبِينَ ﴿٢٩﴾

गासैं ते धरती च जे किश बी ऐ, ओह उस्सै शा अपनी जरूरतें दी मांग करदा ऐ। ओह हर बेलै इक नर्मी हालती² च होंदा ऐ। ॥ 30 ॥

يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
كُلُّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ﴿٣٠﴾

इस आस्तै दस्सो जे तुस दमें अपने रब्ब दियां नैमतें चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ? ॥ 31 ॥

فِي أَيِّ آيَةٍ رَبِّكُمْ تُكذِّبِينَ ﴿٣١﴾

1. इनें उच्चे फ्हाड़ें आंगर ज्हाजें दा अर्थ ओह ज्हाज न जेहके साढ़े युग च बनाए गे न। एह इक भविक्खवाणी ही जेहकी पूरी होई गई। अजकल्ल समुंदरी सफर करने आहले उस भविक्खवाणी दी सचाई दे गुआह न।
2. मतलब एह ऐ जे उस दियां सिफतां इन्नियां असीम न जे ओह पल-प्रतिपल अपने नमें-नमें गुण प्रकट करदा रौहदा ऐ ते इन्सान दियां सिफतें आंगर उस दियां सिफतां सीमत नई न।

हे दोरे जबरदस्त' शक्तियो! अस थुआड़े दौनें आस्तै फ़ारग² होआ करने आं ॥ 32 ॥

سَفَرُعُ لَكُمْ آيَةٌ التَّقْلِينِ ۞

फी बोलो³ जे तुस दमें अपने रब्ब दी नैमतें बिच्चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ ॥ 33 ॥

فِي آيِ الْآءِ رَبِّكُمْ تَكْذِبِينَ ۞

हे जिन्न ते मानव दे गरोह⁴! जेकर तुस ताकत/हिम्मत रखदे ओ तां गासें⁵ ते धरती दे कंढें-कंढें नस्सो ते नस्सियै दस्सो! तुस दलील/प्रमाण दे बगैर कदें बी नेई नस्सी सकदे⁶ ॥ 34 ॥

يَمْعَشَرَ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ
أَنْ تَتَّقُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ فَاتَّقُوا ۗ لَا تَتَّقُوا
إِلَّا بَسْطِينَ ۞

इस आस्तै दस्सो! जे तुस दमें अपने रब्ब दी नैमतें चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ ॥ 35 ॥

فِي آيِ الْآءِ رَبِّكُمْ تَكْذِبِينَ ۞

थुआड़े पर अग्गी⁷ दा इक शोला गराया जाग, ते तांबा⁸ बी (गराया जाग) इस आस्तै तुस दमें कदें बी ग़ालिब नेई आई सकदे (विजयी नेई होई सकदे) ॥ 36 ॥

يُرْسَلُ عَلَيْكُمْ شَوَاطِئُ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَنُحَاسٌ
فَلَا تَنْتَصِرْنَ ۞

हून दस्सो जे तुस दमें अपने रब्ब दी नैमतें बिच्चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ? ॥ 37 ॥

فِي آيِ الْآءِ رَبِّكُمْ تَكْذِبِينَ ۞

जिसलै गास फटी जाग ते लाल चमड़े आंगर होई जाग (ओह फैंसले दी आखरी घड़ी होग) ॥ 38 ॥

فَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً
كَالِدِهَانِ ۞

1. यानी रूस ते अमरीका दी ताकतें दा संगठन।
2. किश दिन हिल्ल देइयै दौनें गी तबाह करी देगे।
3. यानी तवाही मौकै पुछगे जे क्या बे-इन्तहा नैमतां थुआड़े पर नाजल नथियां होइयां ते तुस धर्म दा मजाक नथे डुआंदे होंदे।
4. जिन्न अर्थात् धनवान लोक ते मानव समूह अर्थात् सधारण लोक। इस आस्तै अजकल्ल इक पासै धनवान यानी अमरीका दा गरोह ऐ ते दूए पासै जन सधारण यानी रूस दा गरोह।
5. दमें पाटियां ऐसे राकट त्यार करा करदियां न जिंदी मददी कनै उच्चे गासी सतारें तक पुज्जी सकन, मगर अल्लाह दा गलाना ऐ जे ओह इस च कामयाब नेई होंगन। ओह ज्यादा शा ज्यादा इनें सतारें तक पुज्जी सकडन जो इस धरती थमां शैल चाल्ती दिक्खे जाई सकदे न।
6. यानी गासी तालीम दा मकाबला तुस बल प्रयोग कनै नेई करी सकदे ते अपनी ताकत दे जोरें ओहदे शा अजाद नेई होई सकदे। सिर्फ इक गै रस्ता ऐ जे तुस प्रमाणे कनै गासी तलीम दा खंडन करी देओ।
7. एहदे च कास्मिक रेज़ (Cosmic rays) पासै इशारा ऐ।
8. इस च बबें पासै इशारा ऐ।

हून तुस दस्सो जे तुस दमें अपने रब्ब दी नैमतेँ बिच्चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ? ॥ 39 ॥

उस फैसले आहले ध्याइँ नां इन्सान कशा उसदे गुनाहें' बारै पुच्छेआ जाग ते नां जिन्न थमां ॥ 40 ॥

हून तुस दमें दस्सो ते सेही जे तुस दमें अपने रब्ब दी नैमतेँ बिच्चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ? ॥ 41 ॥

मुलजम अपने चेहरें दी अलामतेँ (नशानियें) थमां पन्छानी लैते जांगन। ते अपने मत्थे दे बालें ते पैरें थमां पकड़ी लैते जांगन ॥ 42 ॥

हून तुस दस्सो जे तुस दमें अपने रब्ब दी नैमतेँ बिच्चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ ॥ 43 ॥

एह् ओह् ज्हनम ऐ जिसदा मुलजम इन्कार करदे न ॥ 44 ॥

(जिसलै ओहदे च दाखल होने दा दिन औग^१) ओह् उस (नरक) दे मझाटे ते उब्ललदे पानी च फिरा करदे होंगन ॥ 45 ॥

हून बोलो ते सेही जे तुस दमें अपने रब्ब दी नैमतेँ बिच्चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ? ॥ 46 ॥ (रुकू 2/12)

ते जो शख्स अपने रब्ब दी शान शा डरदा ऐ ओहदे आस्तै दो जन्तां निश्चत न (दुनियाबी बी ते आखरत दी बी) ॥ 47 ॥

फ़ी दस्सो ते सेही जे तुस दमें अपने रब्ब दी नैमतेँ बिच्चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ? ॥ 48 ॥

فَيَايَ الْاٰءِ رَبِّكُمْ اَتُكٰذِبُنِ ۝۳۹

فَيَوْمَئِذٍ لَا يَسْئَلُ عَنْ ذَنْبِهِ اِنْسٌ وَّلَا جَانٌّ ۝

فَيَايَ الْاٰءِ رَبِّكُمْ اَتُكٰذِبُنِ ۝۴۱

يَعْرِفُ الْمَجْرِمُونَ بِسِيْمَتِهِمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي وَالْاَقْدَامِ ۝

فَيَايَ الْاٰءِ رَبِّكُمْ اَتُكٰذِبُنِ ۝۴۳

هٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمَجْرِمُونَ ۝

يَطُوفُونَ فِيْهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ اِنَّ ۝

فَيَايَ الْاٰءِ رَبِّكُمْ اَتُكٰذِبُنِ ۝

وَلَمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جِئْتِنِ ۝

فَيَايَ الْاٰءِ رَبِّكُمْ اَتُكٰذِبُنِ ۝

1. एह् नेई जे अजाद होंगन, बल्के अर्थ एह् ऐ जे उंदे गुनाहें दी स'जा अपने-आप उनेंगी घेरी लैग, पुच्छने दी लोड़ गै नेई होग।
2. यानी उनेंगी चपासै मसीबत गै मसीबत लब्धग। यानी जेकर युद्ध दी पूरी तयारी करडन तां अर्थक तंगी च फसी जांगन ते जेकर तयारी नेई करडन तां युद्ध च दुश्मनै दा शकार बनी जांगन।

दमैं जन्मतां नेकां टैहिनियें/शाखें आहिलयां होंगन
(यानी उंदे बूहटे बड़े घने होंगन) ॥ 49 ॥

ذَوَاتَا أَفْئَانٍ ۞

फी दस्सो ते सेही जे तुस दमैं अपने रब्ब
दी नैमतें बिच्चा कुस-कुस दा इन्कार करगे
ओ ॥ 50 ॥

فِي أَيِّ آيَةِ الرَّبِّ كَمَا تُكْذِبِينَ ۞

इनें दौनीं च दो चशमें (खु'ल्ले पानी आहले)
बगा करदे होंगन ॥ 51 ॥

فِيهِمَا عَيْنَانِ تَجْرِيانِ ۞

फी दस्सो ते सेही जे तुस दमैं अपने रब्ब
दी नैमतें बिच्चा कुस-कुस दा इन्कार करगे
ओ? ॥ 52 ॥

فِي أَيِّ آيَةِ الرَّبِّ كَمَا تُكْذِبِينَ ۞

इनें दौनीं च हर भांति दे मेवे द'ऊं-द'ऊं
किसमें दे होंगन ॥ 53 ॥

فِيهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجَانِ ۞

फी दस्सो ते सेही जे तुस दमैं अपने रब्ब
दी नैमतें बिच्चा कुस-कुस दा इन्कार करगे
ओ? ॥ 54 ॥

فِي أَيِّ آيَةِ الرَّبِّ كَمَا تُكْذِبِينَ ۞

(जन्मती लोकें) फशीं पर (ऐसे) तकिये
रक्खे दे होंगन जिंदे अस्तर मुट्टे रेशम दे
होंगन ते दौनें बागें दे फल (भारे करी) झुके
दे होंगन ॥ 55 ॥

مُتَّكِينَ عَلَى فُرْشٍ بَطَّانِيهَا مِنْ
إِسْتَبْرَقٍ وَجَبَّ الْجَّتَيْنِ دَانٍ ۞

इस आस्तै दस्सो ते सेही जे तुस दमैं अपने
रब्ब दी नैमतें बिच्चा कुस-कुस दा इन्कार
करगे ओ? ॥ 56 ॥

فِي أَيِّ آيَةِ الرَّبِّ كَمَا تُكْذِبِينَ ۞

इनें जन्मतें च नीमी नजरें आहली जनानियां'
होंगन जिंदे कन्ने इंदे (इनें सुर्ग बासियें) शा
पैहलें नां ते इन्सानें सरबंध' रक्खे दा होग ते
नां गै जिन्नें रक्खे दा होग ॥ 57 ॥

فِيهِنَّ قَصْرَاتُ الظَّرْفِ لَمْ يَطْمِئُنَّ
إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ۞

1. पैहला ते रुहानी इनाम अर्थ ऐ, फी एह गल्ल बी सामनें रक्खी लोड़दी जे इत्थें सिर्फ जनानी गलाए दा ऐ ते उस दा अर्थ इन्सान दी दुनियाबी लाड़ी बी होई सकदा ऐ जिसी अगलै ज्हाँ च खूबसूरती प्रदान कीती जाग।
2. कुसै कन्ने तल्लक नेई रक्खे दा होग यानी कुसै गैर मर्द कन्ने तल्लक नेई रक्खे दा होग ते ओह नेक ते पवित्र होगन।

इस आस्तै दस्सो ते सेही जे तुस दमें अपने रब्ब दी नैमतें बिच्चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ? ॥ 58 ॥

فِيَايِ الْاٰءِ رَبِّكُمْ اَتُكٰذِبُنِ ۝٥٨

आखो जे ओह् जनानियां याकूत' ते मरजान होंगन ॥ 59 ॥

كَأَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ۝٥٩

इस आस्तै तुस दस्सो ते सेही जे तुस दमें अपने रब्ब दी नैमतें बिच्चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ? ॥ 60 ॥

فِيَايِ الْاٰءِ رَبِّكُمْ اَتُكٰذِبُنِ ۝٦٠

क्या स्हान दा फल स्हान दे सिवा किश होर बी होई सकदा ऐ? ॥ 61 ॥

هَلْ جَرَاءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ۝٦١

इस आस्तै दस्सो ते सेही जे तुस दमें अपने रब्ब दी नैमतें बिच्चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ? ॥ 62 ॥

فِيَايِ الْاٰءِ رَبِّكُمْ اَتُكٰذِبُنِ ۝٦٢

ते इनें द'ऊं जन्तें दे अलावा द'ऊं होर जन्तां बी होंगन ॥ 63 ॥

وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّتُنِ ۝٦٣

इस आस्तै दस्सो ते सेही जे तुस दमें अपने रब्ब दी नैमतें बिच्चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ? ॥ 64 ॥

فِيَايِ الْاٰءِ رَبِّكُمْ اَتُكٰذِبُنِ ۝٦٤

(एह् दमें जन्तां) हरियां-भरियां होंगन ॥ 65 ॥

مُدَّهَا مَثْنِ ۝٦٥

इस आस्तै दस्सो ते सेही जे तुस दमें अपने रब्ब दियें नैमतें चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ? ॥ 66 ॥

فِيَايِ الْاٰءِ رَبِّكُمْ اَتُكٰذِبُنِ ۝٦٦

इनें दौनें (सुर्ग) च द'ऊं चश्मे बड़े जोश कनै फुट्टा करदे (बगा करदे) होंगन ॥ 67 ॥

فِيْهِمَا عَيْنُنِ نَّصَاحَتُنِ ۝٦٧

इस आस्तै दस्सो ते सेही जे तुस दमें अपने रब्ब दियें नैमतें चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ? ॥ 68 ॥

فِيَايِ الْاٰءِ رَبِّكُمْ اَتُكٰذِبُنِ ۝٦٨

1. यानी उंदे रंग च सफेदी ते लालगी मिली दी होग ते बे-हद नाजक होंगन। याकूत यानी लालमणि अपने लाल रंग करियें मशहूर ऐ ते मरजान यानी मूंगा अपनी बे-हद कोमलता ते सफेदी ते लालगी दी मलावट करी मशहूर ऐ। इस आस्तै इनें दौनीं शब्दें दा प्रयोग करियें उनें जनानियें दियां सारियां सिफतां दस्सी दियां न।

उंदे च मेवे बी होंगन ते खजूरां ते अनार बी ॥ 69 ॥

फी दस्सो ते सेही जे तुस दमैं अपने रब्ब दी नैमतें चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ? ॥ 70 ॥

इनें बागें च नेक ते खूबसूरत जनानियां बी होंगन ॥ 71 ॥

इस आस्तै दस्सो ते सेही जे तुस दमैं अपने रब्ब दी नैमतें चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ? ॥ 72 ॥

ओह जनानियां काली अक्खीं आहलियां होंगन (ते) खेमें दे अंदर रक्खियां गेदियां होंगन ॥ 73 ॥

इस आस्तै दस्सो ते सेही जे तुस दमैं अपने रब्ब दी नैमतें चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ ॥ 74 ॥

नां ते (उनें गी सुगैं च दाखल होने आहले इन्सान जां जिन्न नै) पैहलें कुसै इन्सान नै छूहते' दा होग ते नां गै जिन्न नै ॥ 75 ॥

इस आस्तै फी दस्सो ते सेही जे तुस दमैं अपने रब्ब दी नैमतें चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ? ॥ 76 ॥

ओ (जन्नती) खेमें दे खुल्ले ते हरे-भरे फशैं पर जो अति उत्तम ते शैल बी होंगन, तकिये लाइयै/रक्खियै बैटे दे होंगन ॥ 77 ॥

इस आस्तै दस्सो ते सेही जे तुस दमैं अपने रब्ब दी नैमतें चा कुस-कुस दा इन्कार करगे ओ? ॥ 78 ॥

प्रताप ते सम्मान आहले तेरे रब्ब दा नांs बड़ी बरकत आहला ऐ ॥ 79 ॥ (रुकू 3/13)

فِيهِمَا فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمَّانٌ ﴿٦٩﴾

فِإِيَّ الْآءِ رَبِّكَمَا تُكْذِبِينَ ﴿٧٠﴾

فِيهِنَّ حَيْرَاتٌ حِسَانٌ ﴿٧١﴾

فِإِيَّ الْآءِ رَبِّكَمَا تُكْذِبِينَ ﴿٧٢﴾

حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِي الْبِحَامِ ﴿٧٣﴾

فِإِيَّ الْآءِ رَبِّكَمَا تُكْذِبِينَ ﴿٧٤﴾

لَمْ يَطْمِئِنَّ النَّاسُ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ﴿٧٥﴾

فِإِيَّ الْآءِ رَبِّكَمَا تُكْذِبِينَ ﴿٧٦﴾

مُتَّكِنِينَ عَلَى رُفْرَفٍ خُضْرٍ وَعَبْقَرِيٍّ

حِسَانٍ ﴿٧٧﴾

فِإِيَّ الْآءِ رَبِّكَمَا تُكْذِبِينَ ﴿٧٨﴾

تَبَارَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ

وَإِلْكَرَامِ ﴿٧٩﴾



सूर: अल् - वाक़िअ:

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां सतानमें आयतां ते त्रै रुकू न।

अऊं अल्लाह दा नांउ लेइयै (पढ़ना) जो
बेहद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार रैहम
करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

जिसलै ओह (गल्ल) जेहदे अटल होने दा
फैसला ऐ अमली तौरा पर (कार्य रूपै च)
होई जाग! ॥ 2 ॥

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ①

उसदे घटत होने गी अपने वक्त शा टलाने आहली
कोई (चीज) नेई ॥ 3 ॥

عَلَيْهَا

لَيْسَ لَوْقَعَتِهَا كَاذِبَةٌ ①

ओह केइयें गी नीमा करने आहली ते केइयें
गी उच्चा करने आहली ऐ ॥ 4 ॥

خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ①

जिस दिन धरती गी हलाई दिता जाग ॥ 5 ॥

إِذَا رَجَّتِ الْأَرْضُ رَجًّا ①

ते फ्हाड़ें गी चूरो-चूर करी दिता जाग ॥ 6 ॥

وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ①

इस आस्तै ओह इयां होई जांगन जियां हवा
च उड़डने आहले बरीक कण ॥ 7 ॥

فَكَانَتْ هَبَاءً مُّنبَثًّا ①

ते तुस त्र'ऊं गरोहें च बंडोई जागे ओ ॥ 8 ॥

وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلَاثَةً ①

1. यानी क्यामत आई जाग।

2. यानी मुसलमानें ते मुन्करें बश्कार फैसला करने आहली घड़ी जरूर औंग। मुन्कर भामें किने गै उपास करन। उस गी अपने समे शा टलाई नेई सकदे ते जिसलै ओह औंग तां केइयें गी नीमा करी देग ते केइयें गी उच्चा करी देग। यानी मुन्कर अज्ज विजयी न उस दिन पराजत होई (हारी) जाडन ते मुसलमान जो अज्ज पराजत न उस दिन विजयी होई जाडन।

इक ते सज्जे हत्थै आहले होंगन ते तुगी केह पता
जे सज्जे हत्थै आहले कनेह होंगन ? ॥ 9 ॥

فَأَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۚ مَا أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۚ

ते इक खब्बे हत्थै आहले, ते तुगी केह पता
जे खब्बे हत्थै आहले कनेह होंगन ? ॥ 10 ॥

وَأَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ۚ مَا أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ۚ

ते इक गरोह् (ईमान ते कर्म च) अगमें लंघी
जाने आहलें दा होग, इस आस्ते ओह ते हर
हाल च दूप लोके शा अगमें गै रौंहगन ॥ 11 ॥

وَالسَّقِطُونَ ۚ السَّقِطُونَ ۚ

ते ओह लोक (खुदा दे) लागै रौहने आहले
(यानी अत्त प्यारे) होंगन ॥ 12 ॥

أُولَئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ۚ

नैमत आहली जन्नतें च (रौंहगन) ॥ 13 ॥

فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۚ

पैहले ईमान आहने' आहलें च उंदी तदाद
ज्यादा होग ॥ 14 ॥

ثُلَّةٌ مِّنَ الْأُولَئِينَ ۚ

ते बा'द च ईमान आहने आहलें च उंदी
तदाद घट्ट होग ॥ 15 ॥

وَقَلِيلٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ۚ

ओह जड़ाऊ सिंहासनें पर ॥ 16 ॥

عَلَىٰ سُرُرٍ مَّوْضُونَةٍ ۚ

तकिये लाइयै आमनै-सामनै बैठे दे होंगन ॥ 17 ॥

مَتَّكِينَ عَلَيْهَا مُتَّقِلِينَ ۚ

उंदे कश सेवा आस्ते मते-हारे नौजुआन सेवक
ऑँगन जेहके जे सदा अपनी नेकी पर कायम
रक्खे जांगन ॥ 18 ॥

يَطُوفُونَ عَلَيْهِمْ لَوْلَدَانٌ مُّحَلَّدُونَ ۚ

ओह गलास, लोटे ते चश्में (दे पानी) कनै
भरे दे प्याले लेइयै (ऑँगन) ॥ 19 ॥

بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقٍ ۚ وَكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ۚ

(उनें प्यालें बगैरा गी पीयै) नां ते जन्नतबासियें
गी खमार होग ते नां गै ओह फजूल गल्लां
करडन ॥ 20 ॥

لَا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنزِفُونَ ۚ

1. केइयें लोके एह अर्थ लेदा ऐ जे हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व पर जेहके लोक शुरू च ईमान ल्याए हे उंदे चा पैहले ईमान आहने आहले लोक मते होंगन पर थुआड़े बा'द जो मुसलमान होंगन उंदे चा ऐसे लोक थोड़े होंगन। मगर एहमदिया सिलसले दे बानी नै दस्से दा ऐ जे हर जमाने च जिसलै कोई सचाई दा पैगाम ऑँदा ऐ तां जेहके शुरू च मनदे न उंदे चा मते हारे बड़्हा दरजा पाने आहले होंदे न ते जेहके त्रक्की पाई लैने दे बेलै मनदे न उंदे चा उच्चा दरजा पाने आहले थोड़े होंदे न ते इयै अर्थ सचाई पर टिके दा ऐ।

(ते इससे चाल्ली नौजुआन सेवक) उंदे (जन्त बासियें) कश ऐसे फलें दे थाल लेइयै आँगन, जिनेंगी ओह पसंद करडन ॥ 21 ॥

وَقَاكِهَاتِمَّآيَتَخَيَّرُونَ ﴿١١﴾

ते परिदें बिच्चा उनें परिदें दा मास जिनेंगी ओह (जन्त बासी) पसंद करडन ॥ 22 ॥

وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿١٢﴾

ते काली पुतलियें आहली ते मुट्टी-मुट्टी अक्खीं आहलियां जनानियां होंगन ॥ 23 ॥

وَحُورٍ عِينٍ ﴿١٣﴾

जो सुरक्षत मोतियें¹ आंगर होंगन (जो अपने कीमती होने दी ब'जा करी छपालियै रक्खे जंदे न) ॥ 24 ॥

كَأَمْثَالِ الْأُنثَى الْمَكْنُونِ ﴿١٤﴾

एह सारा किश मोमिनें दे कर्म कारण सिले दे तौरा पर मिलग ॥ 25 ॥

جَزَاءِ إِبْرَاهِيمَ إِذْ كَانَ يَتْلُو الْعِلْمُونَ ﴿١٥﴾

ओह (मोमिन) जन्तें च नां ते कोई फजूल गल्ल सुनडन ते नां गुनाह सरबंधी कोई गल्ल ॥ 26 ॥

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لُعْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ﴿١٦﴾

हां! मगर ऐसी गल्ल सुनडन जो सलाम (यानी सलामती) दी दुआऽ पर अधारत होग (यानी जेहदे च शांति गै शांति होग) ॥ 27 ॥

إِلَّا قِيلًا سَلَامًا ﴿١٧﴾

ते (तू) सज्जे पासे आहले आदमियें दा बी हाल सुन ते तुगी केह पता ऐ जे सज्जे पासे दे आदमी केह न ? ॥ 28 ॥

وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ ﴿١٨﴾ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ﴿١٨﴾

ओह बगैर कंडें आहली बैरें दे बागें च रौहगन ॥ 29 ॥

فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ﴿١٩﴾

ते केलें (दे बागें) च जिंदे फल इक-दूए पर चढ़े दे होंगन ॥ 30 ॥

وَوَطْحٍ مَّنْضُودٍ ﴿٢٠﴾

ते ऐसी छौं जो बौहत लम्मी होग ॥ 31 ॥

وَوَظِلٍّ مَّمْدُودٍ ﴿٢١﴾

ते ऐसे पानियें च जो गराए² जा करदे होंगन ॥ 32 ॥

وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ ﴿٢٢﴾

1. यानी ओह नेक ते पवित्र होंगन।

2. यानी झरने कश।

ते मते-हारे फले च ॥ 33 ॥

नां ते ओह् कट्टे¹ जांगन ते नां उंदे शा उनें
(जन्नत बसियें) गी रोकेआ² जाग (यानी
ओह् उंदी गै मालकी करार दित्ते जांगन)
॥ 34 ॥

ते शानदार/रूपवती लाडियें/जनानियें कनै
रौंहगन ॥ 35 ॥

असें गै उनेंगी बनाए दा ऐ ॥ 36 ॥

ते कुआरियां पैदा कीते दा ऐ ॥ 37 ॥

बे-हद खूबसूरत ते जन्नत बासियें दी हम-उमर
(हानी-त्रानी) होंगन ॥ 38 ॥

(जिनेंगी) सज्जे पासे आहले गरोह् आस्तै
(पैदा कीता गोदा ऐ) ॥ 39 ॥ (रुकू 1/14)

एह् गरोह् शुरु च ईमान आह्नुने आहले लोकें
बिच्चा बी मती गिनतरी च होग ॥ 40 ॥

ते आखर च ईमान आह्नुने आहले लोकें चा बी
मती गिनतरी च होग ॥ 41 ॥

ते खब्बे पासे आहले (लोकें दा बी हाल
सुन) ते तुगी केह् पता ऐ जे खब्बे पासे
आहले लोक कैसे होंगन ? ॥ 42 ॥

ओह् गर्म हवाएँ ते गर्म पानियै च रौंहगन
॥ 43 ॥

ते ऐसी छौं च रौंहगन जेहकी काले धुएँ
आंगर होग ॥ 44 ॥

नां ओह् ठंढी होग ते नां उसदे हेठ रौहना
सम्मान प्रदान करग ॥ 45 ॥

وَفَاكِهِتْ كَثِيرَةً ۝

لَا مَقْطُوعَةَ وَلَا مَمْنُوعَةَ ۝

وَقُرُوشِ مَرْفُوعَةَ ۝

إِنَّا أَنْشَأْنَهُنَّ إِنْسَاءً ۝

فَجَعَلْنَهُنَّ أَبْكَارًا ۝

عُرُبًا أَثْرَابًا ۝

لِلْأَصْحَابِ الْيَمِينِ ۝

ثُلَّةٌ مِّنَ الْأُولَىٰ ۝

وَتِلَّةٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ۝

وَأَصْحَابُ الشَّمَالِ ۝

فِي سَمُومٍ وَحَمِيمٍ ۝

وَضَلَّ مِنْ يَحْمُومٍ ۝

لَا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ۝

1. नेई कट्टे जाने दा अर्थ ऐ जे ओह् खतम नेई होंगन।

2. नां उंदे शा रोकेआ जाग दा अर्थ ऐ जे मोमिनें आस्तै उंदा प्रयोग करना पूरी चाल्ली जायज होग।

ओह इस शा पैहलें संसार च बड़े अराम/मजे कनै रौहदे हे ॥ 46 ॥

ते महापाप (यानी शिक) पर हठ करदे हे ॥ 47 ॥

ओह गलांदे होंदे हे जे क्या जिसलै अस मरी जागे ते मिट्टी ते हड्डियां बनी जागे क्या असेंगी फी जींदा करियै खडेरी दिता जाग ? ॥ 48 ॥

जां साढ़े बब्ब-दादें कनै बी इयै बरताऽ कीता जाग ? ॥ 49 ॥

तूं आखी दे जे पैहले बी ते पिछले बी ॥ 50 ॥

सारे दे सारे इक निश्चत ध्याड़े दे बा'यदे पासै किट्ठे करियै लेते जांगन ॥ 51 ॥

फी तुस हे झुठलाने आहले गुमराहो! ॥ 52 ॥

थोहरी' दे बूहटे बिच्चा खागे ओ ॥ 53 ॥

ते ओहदे कनै ढिड्ड भरगे ओ ॥ 54 ॥

ते फी ओहदे पर गर्म पानी पीगे ओ ॥ 55 ॥

ते तरेहाए दे ऊंटे आंगर पींदे गै जागे ओ ॥ 56 ॥

एह उंदे कर्मै दा फल पाने आहले ध्याड़ै उंदी प्रौहनचारी दी खातर होग ॥ 57 ॥

असें तुसेंगी पैदा कीते दा ऐ, फी की तुस साढ़ी गल्ला गी सच्च नेई मनदे? ॥ 58 ॥

ते उस चीजै दी हालत ते दस्सो, जो तुस जनानी दे ढिड्डै च डगांदे/पांदे ओ ॥ 59 ॥

क्या तुस उसी पैदा करदे ओ जां अस उसी पैदा करने आं ? ॥ 60 ॥

إِنَّهُمْ كَانُوا أَقْبَلَٰ ذَٰلِكَ مُتْرَفِينَ ﴿٤٦﴾

وَكَانُوا يُصِرُّونَ عَلَىٰ الْحِنثِ الْعَظِيمِ ﴿٤٧﴾

وَكَانُوا يَقُولُونَ ۚ أَيَّدَامَنَا وَمَكَاتِرَابًا وَعِظَامَاءَ إِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿٤٨﴾

أَوْ أَبَاؤُنَا الْأَوْلُونَ ﴿٤٩﴾

قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ ﴿٥٠﴾
لَمَجْمُوعُونَ إِلَىٰ مِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿٥١﴾

تَمَّٰرَاتِكُمْ أَيُّهَا النَّسَاتُونَ الْمَكْذِبُونَ ﴿٥٢﴾
لَا كَلِمَٰةٌ مِنْ شَجَرَٰةٍ مِنْ رَقُومٍ ﴿٥٣﴾

فَمَا لِقَوْمٍ مِّنْهَا الْبَاطُونَ ﴿٥٤﴾

فَشْرَبُوا عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيمِ ﴿٥٥﴾

فَشْرَبُوا شَرْبَ الْهَيْمِ ﴿٥٦﴾

هَٰذَا نُرَلَّهُمْ يَوْمَ الدِّينِ ﴿٥٧﴾

نَحْنُ خَلَقْنَاكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُونَ ﴿٥٨﴾

أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَمْنُونَ ﴿٥٩﴾

ءَأَنْتُمْ تَخْلُقُونَهَا أَمْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ ﴿٦٠﴾

असैं थुआड़े बश्कार मौती दा सिलसला जारी कीते दा ऐ ते साढ़े शा कोई बी अगैं नेई निकली सकदा¹ ॥ 61 ॥

ते कोई शख्स इस बारै च, जे अस तुसेंगी बदलियै थुआड़े जैसी कौमां ल्यौचै, असेंगी असमर्थ नेई बनाई सकदा ते (नां इस गल्लै शा असमर्थ बनाई सकदा ऐ जे) अस तुसेंगी कुसै ऐसी सूरत/हालत च पैदा करी देचै जे जिसी तुस नेई जानदे ॥ 62 ॥

ते तुस पैहली पैदायश (जनम) गी ते जानदे गै ओ। फी तुसेंगी केहू होए दा ऐ जे तुस नसीहत हासल नेई करदे ? ॥ 63 ॥

क्या तुसेंगी पता ऐ जो तुस रांहदे ओ ? ॥ 64 ॥

क्या तुस उसगी उगांदे ओ जां अस उसी उगाने आं ? ॥ 65 ॥

जेकर अस चांहदे तां उसगी भलेआं जले दा चूरा बनाई दिंदे फी तुस गल्लां गै बनांदे/करदे रेही जंदे ॥ 66 ॥

ते आखदे जे साढ़े पर (असैं गी) चट्टी पेई गेई ऐ ॥ 67 ॥

बल्के सचाई एहू ऐ जे अस अपनी मैहनत दे फल शा महरूम/बंचत होई गे आं ॥ 68 ॥

जरा उस पानी गी ते दिक्खो जिसी तुस पींदे ओ ॥ 69 ॥

क्या तुसें उस बदल गी उतारे दा ऐ जां अस उसी उतारने आं ? ॥ 70 ॥

نَحْنُ قَدَرْنَا بَيْنَكُمْ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿٦١﴾

عَلَىٰ أَنْ تُبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٢﴾

وَلَقَدْ عَلَّمْتُمُ النَّشَاءَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٦٣﴾

أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَحْرُمُونَ ﴿٦٤﴾
ءَأَنْتُمْ تَزْرَعُونَهُ أَمْ نَحْنُ الزَّارِعُونَ ﴿٦٥﴾

لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا فَظَلَّمْتُمْ نَفْسَكُمْ ﴿٦٦﴾

إِنَّا لَمَعْرُومُونَ ﴿٦٧﴾

بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٦٨﴾

أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ﴿٦٩﴾

ءَأَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنزِلُونَ ﴿٧٠﴾

1. साढ़े उस नियम गी कोई तोड़ी नेई सकदा।

2. आर्य आखदे न जे एह पुनर्जन्म (आवागमन) दी शिक्षा ऐ हालांके इस जगह ते मरने दे बा'द दी जिंदगी दा जिकर ऐ ते पुनर्जन्म च इससे दुनियां दी दूई पैदाइश (जनम) दा जिकर होंदा ऐ। इत्थें दस्सेआ गेदा ऐ जे हून ते तुस मौजज/प्रतिश्रुत ओ मगर हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दा बरोध करने करी तुसेंगी इक होर हालत मिलग ते ओह अपमानजनक (जिल्लत आहली) होग।

जेकर अस चाहंदे तां उसी कौड़ा बनाई दिंदे।
फी तुस शुकर की नेई करदे? ॥ 71 ॥

لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا
تَشْكُرُونَ ﴿٧١﴾

जरा उस अग्गी दा हाल ते दस्सो जिसी तुस
बालदे ओ ॥ 72 ॥

أَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ﴿٧٢﴾

क्या तुसें उस (अग्गी) दे बूहटे गी पैदा कीते
दा ऐ जां अस उसी पैदा करने आं ? ॥ 73 ॥

أَأَنْتُمْ أَنْشَأْتُمْ شَجَرَتَهَا أَمْ نَحْنُ
الْمُنشِئُونَ ﴿٧٣﴾

ते असें उस गी नसीहत¹ ते मसाफरें दे फायदे
आस्ते बनाए दा ऐ ॥ 74 ॥

نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذَكُّرَةً وَوَمَنَّا
لِلْمُقْوِينَ ﴿٧٤﴾

इस आस्ते तू अपने मैहमाशाली रब्ब दे नांउ
दी स्तुति कर ॥ 75 ॥ (रकू 2/15)

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٧٥﴾

इस आस्ते अ'ऊं नखत्तरें दे टुट्टने गी शहादत दे
तौरै पर पेश करना आं ॥ 76 ॥

فَلَا أَقْسِمُ بِمَوْقِعِ النَّجْمِ ﴿٧٦﴾

जेकर तुस जानदे ओ तां एह शहादत बौहत्
बड्डी (शहादत) ऐ ॥ 77 ॥

وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لِّتُوعَلِّمُونَ عَظِيمٌ ﴿٧٧﴾

सच्चें गै एह कुरआन बड़ी मैहमा आह्ला ऐ ॥ 78 ॥

إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ﴿٧٨﴾

ते इक छप्पी² दी कताबा च मजूद ऐ ॥ 79 ॥

فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ﴿٧٩﴾

इस (कुरआन) दी सचाई गी ऊऐ लोक पांदे/
समझदे न जेहके पवित्तर³ होंदे न ॥ 80 ॥

لَا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ ﴿٨٠﴾

1. यानी गिल्ली लक्कड़ी अमान्नी कर्ने नेई बली सकदी। खुदा उस गिल्ली लक्कड़ी गी सकाई दिंदा ऐ ते फी ओह चंगी चाल्ली बलन लगी पौंदी ऐ। इससे चाल्ली इक समे च कौमां जीदी होंदियां न ते उंदे पर तबाही नेई आई सकदी, मगर दूप मौके पर ओह अपनी ताकत खोही दिंदियां न ते सुककी लक्कड़ी आंगर भल-भल करदी बली पौंदियां न।
2. 'छप्पी दी कताब' दा मतलब मनुक्खी प्रकृति ऐ, की जे पवित्तर कुरआन दी शिक्षा मानव-प्रकृति दे मताबक ऐ। इससे करी हर मनुक्ख जो हट नीं करे, इसी मन्ने आस्ते मजबूर ऐ। पवित्तर कुरआन आखदा ऐ जे तुस प्राकृतक सभाऽ गी अपनाओ जेहदे मताबक इन्सान गी पैदा कीते दा ऐ (सूर: रूम आयत: 31) यानी खुदा नै मानव प्रकृति ह्यच किश सचाइयां रक्खी दियां न ते उसी निरना करने आहली शक्ति बी दित्ती दी ऐ। जिसलै इन्सान ओहदा प्रयोग करदा ऐ तां ओहदे पर पवित्तर कुरआन दी सचाई जाहर होई जंदी ऐ, की जे ओह इक छप्पी दी कताब यानी मानव प्रकृति च मजूद ऐ।
3. मूल शब्द 'मस्स' दा अर्थ बूहना ऐ, पर मुहावरे च इसदा अर्थ ऐ जे कुसै बिशे पासै मनुक्खे दी इन्नी रुचि होई जा जे उसदे सूखम तत बी ओहदे पर जाहर होन लगी पीन।

इस आयत दा भावार्थ ऐ जे कुरआन मजीद दा ज्ञान ऐसे लोकें पर गै प्रकट होंदा ऐ जो अल्लाह कश पवित्तर करार दिते जंदे न नां के मनुक्खे कश। नेई ते खुदा जिनेंओ महापुरुश बनाइयै भेजदा ऐ इन्सान उंदे पर इतयज करदे गै रोंहदे न जिचां हजरत मुहम्मद मुस्ताफ़ स.अ.व. पर ईसाई लोक अजतक इतयज कय करदे न। इससे चाल्ली हजरत मुहम्मद मुस्ताफ़ स.अ.व. दे बा द जेहकी-जेहकी महान विभूतियां प्रकट होई दियां न उंदे पर बी किश लोक अजतक इतयज करदे आवा करदे न।

इसदा उतरना सारे ज्हांनें दे रब्ब पासेआ ऐ
॥ 81 ॥

क्या इस कलाम दे बारे च तुस मुदाहिनत/
चापलूसी शा कम्म लै करदे ओ ? ॥ 82 ॥

ते अपना हिस्सा/करतब्ब तुसें सिर्फ एह बनाई
रक्खे दा ऐ जे तुस झुठलांदे ओ ॥ 83 ॥

इस आस्तै की नेई होआ जे जिसलै जान गलै
तगर आई पुज्जी ॥ 84 ॥

ते तुस उस बेलै (मयूस होइयै चबकखै)
दिकखन लगे (जे तुस अपने बचने दा कोई
समान/सरिस्ता करी सकदे) ॥ 85 ॥

ते (उस बेलै तुंदे पर ते तुंदे रिश्तेदारों पर जाहर
होई गेआ जे) अस आपूं थुआड़ी निसबत इस
मरने आहले दी जान दे ज्यादा लागै आं पर तुंदे
पर एह सचाई पैहलें जाहर नेई ही ॥ 86 ॥

इस आस्तै तुसेंगी कोई सिला नथा मिलना ते
तुस इस दा'बे च सच्चे ओ तां एह की नेई
होआ ? ॥ 87 ॥

जे तुस उस हालत गी (जो मौती दे मौके
ओँदी ऐ) बापस लौटाई सके ॥ 88 ॥

इस आस्तै जो कोई खुदा दा नजदीकी ऐ ॥ 89 ॥

ओहदे आस्तै ते अराम ते सुख-संपदा (सुख-
शांति) निश्चत ऐ ते उसै-चाल्ली नैमतें आहला
सुर्ग बी ॥ 90 ॥

ते जेकर ओह शख्स सज्जे पासे आहले लोकें
बिच्चा ऐ ॥ 91 ॥

तां उसी गलाया जंदा ऐ जे हे सज्जे पासे दे
गरोह आहलेआ! तेरे पर म्हेशां सलामती
(शांती) होंदी र'वै ॥ 92 ॥

تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨١﴾

أَفِهَذَا الْحَدِيثِ أَنْتُمْ مُذْهَبُونَ ﴿٨٢﴾

وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنْكُمْ تَكْذِبُونَ ﴿٨٣﴾

فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلُقُومَ ﴿٨٤﴾

وَأَنْتُمْ حِينِيذٍ تَنْظُرُونَ ﴿٨٥﴾

وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلَكِنْ
لَّا تَبْصُرُونَ ﴿٨٦﴾

فَلَوْلَا إِنْ كُنْتُمْ عَيْرَ مَدْيَنِينَ ﴿٨٧﴾

تَرْجِعُونَهَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٨٨﴾

فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٨٩﴾

فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتْ نَعِيمٍ ﴿٩٠﴾

وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٩١﴾

فَسَلَّمَ لَكَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٩٢﴾

ते जेकर ओह मरने आह्ला सचाई दा इन्कार
करने आहलें ते गुमराह लोके चा होग ॥ 93 ॥

وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمَكْذِبِينَ الَّذِينَ
لَا

तां ऐसे शख्स दी मम्हानी गर्म पानी कनै
कीती जाग ॥ 94 ॥

فَنُزِّلُ مِنْ حَمِيمٍ ۝۱۱

ते ठकाने दे तौरै पर उसी नरक दिता
जाग ॥ 95 ॥

وَتَصْلِيَةٌ جَهِيمٍ ۝۱۲

एह (गल्ल) बिल्कुल सचाई दे मताबक ऐ
॥ 96 ॥

إِنَّ هَذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ۝۱۳

इस आस्तै तूं अपने मैहमाशाली रब्ब दी स्तुति कर
॥ 97 ॥ (रुकू 3/16)

۝۱۴

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝۱۷

०००

سُورَةُ الْحَدِيدِ مَدِينَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلَاثُونَ آيَةً وَأَرْبَعَةٌ رُكُوعَاتٍ

सूर: अल्-हदीद

एह सूर: मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां त्रीह आयतां ते चार रुकू न

अ'ऊं अल्लाह दा नांस लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

गासैं ते धरती च जे किश बी ऐ ओह खुदा
दी स्तुति करा करदा ऐ, ते ओह गालिब (ते)
हिक्मत आहला ऐ ॥ 2 ॥

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ①

गासैं ते धरती दी बादशाहत उससै दी ऐ, ओह
जीदा करदा ऐ ते मारदा बी ऐ ते ओह हर
चीजा पर काब्ज ऐ ॥ 3 ॥

لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ
يُعْجِبُ وَيُمِيتُ ۗ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ①

ओह अब्बल बी ऐ ते आखर बी, ते जाहर बी
ऐ ते वातन (अप्रतक्ख) बी, ते ओह हर चीजै
गी जानदा ऐ ॥ 4 ॥

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ
وَالْبَاطِنُ ۗ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ①

उससै नै गासैं ते धरती गी छैं दीरैं च पैदा कीते
दा ऐ, फी अर्श पर दिइता कनै कायम होई
गेआ। ओह उसी बी जानदा ऐ जो धरती च
दाखल' होंदा ऐ ते उसी बी जो ओहदे चा
निकलदा ऐ ते उसी बी जो गासै थमां उतरदा
ऐ ते उसी बी जो ओहदी बक्खी चढ़दा ऐ ते
तुस जित्थैं बी जाओ ओह थुआड़े कनै रौहदा
ऐ ते अल्लाह थुआड़े कर्म शा चंगी-चाल्ली
वाकफ ऐ ॥ 5 ॥

هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۗ
يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ
مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ
فِيهَا ۗ وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ①

1. दिक्खो सूर : सबा आयत 3 टिप्पणी 3.

ते गासैं दी बादशाहत बी उससै दी ऐ ते धरती दी बी (उससै दी) ते उससै आहली बक्खी सारियां गल्लां (फैसले आसतै) परताइयां जांगन ॥ 6 ॥

ओह रातीं गी दिनै च दाखल करदा ऐ ते दिनै गी रातीं च दाखल करदा ऐ ते ओह दिलै दियें गल्लें गी चंगी-चाल्ली जानदा ऐ ॥ 7 ॥

हे लोको! अल्लाह ते उसदे रसूल पर ईमान ल्याओ, ते जिंदा (जैदादें दा) तुसेंगी (पैहली कौमें दे बा 'द) मालक बनाया ऐ उंदे चा खर्च करो। ते तुंदे चा जेहके मोमिन न ते खुदा दे रस्ते च खर्च करदे रौहदे न उनेंगी बौहत बड़ा अजर (सिला) मिलग ॥ 8 ॥

ते तुसेंगी केह होई गोदा ऐ जे तुस अल्लाह दे रसूल पर ईमान नेई आहनदे ते (अल्लाह दा) रसूल तुसेंगी सिर्फ इस आसतै बुलांदा ऐ जे तुस अपने रब्ब पर ईमान लेई आओ ते जेकर तुस मोमिन ओ तां खुदा तुंदे शा इक बा 'यदा' लेई चुके दा ऐ ॥ 9 ॥

ओह (अल्लाह) गै ऐ जो अपने बंदें पर जाहरी-बाहरी नशान नाज़ल करदा ऐ जिस दा नतीजा एह होंदा ऐ जे ओह इनें नशानें राहें तुसें गी न्हेंरें चा कडिडयै लोई आहली भेठा लेई जंदा ऐ ते अल्लाह सच्चें गै बौहत देआ शा कम्म लैने आहला (ते) बार-बार कर्म करने आहला ऐ ॥ 10 ॥

ते तुसेंगी होई केह गोदा ऐ जे तुस अल्लाह दे रस्ते च खर्च नेई करदे हालांके गासै ते धरती दी मीरास² अल्लाह दी गै ऐ, हे मोमिनो! विजय शा पैहलें जिसनै खुदा दे रस्ते च खर्च कीता ते उसदे रस्ते च जंग कीती, ओह उसदे

لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَ اِلٰى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ①

يُوْبِحُ الْاَيْدِىَ فِي النَّهَارِ وَيُوْبِحُ النَّهَارَ فِي الْاَيْدِىَ ۗ وَهُوَ عَلِيْمٌ بِذٰتِ الصُّدُوْرِ ①

اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ ۗ وَانْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَحْلِفِيْنَ فِيْهِ ۗ فَاَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَانْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ①

وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۗ وَالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِنْكُمْ اٰمَانَكُمْ ۗ اِن كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ①

هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖ اٰیٰتٍ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ①

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرٰتُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ لَا يَسْـَٔوٰى مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ

1. मानव प्रकृति (फितरत) च अल्लाह पर ईमान आहनना ते ओहदी बक्खी खचोए दे जाना गुप्त रूपे च रक्खेआ गेदा ऐ।
2. यानी इस भौतिक दुनियां च जे किश इन्सान दे हलथें च ऐ, आखर इन्सान उसी छोड़ियें मरी जाग। ते ओह सारा किश खुदा दे कब्जे च आई जाग।

बराबर नेई होई सकदा जिसनै विजय दे बा'द खर्च कीता ते विजय दे बा'द जंग कीती। विजय शा पैहलें खर्च करने आहले ते जंग करने आहले उत्तम श्रेणी दे न ते अल्लाह नै दौनीं चाल्लीं दे लोके कनै नेकी दा बा'यदा कीते दा ऐ। ते अल्लाह थुआड़े कर्मै शा चंगी-चाल्ली वाकफ ऐ ॥ 11 ॥ (रुकू 1/17)

क्या कोई है जो अल्लाह गी (अपनै धन दा) खास हिस्सा कट्टियै देऐ तां जे ओह उसी उस आस्तै बधाऽ ते ओहदे आस्तै इक उत्तम सिला निश्चत ऐ ॥ 12 ॥

जिस दिन तूं मोमिन मड़दें ते मोमिन जनानियें गी दिखगा जे उंदा नूर उंदे सामनै बी ते उंदे सज्जे पासै बी नसदा जाग (ते खुदा ते ओहदे फरिश्ते गलांगन) अज्ज तुसेंगी भांत-सभांते, बागें दी खुशखबरी दित्ती जंदी ऐ (ऐसे बाग) जिंदे ख'ल्ल नैहरंग बगा करदियां होंग एह (शुभ समाचार पाने आहले) लोक उनें जन्तें च बसदे जांगन ते एह बौहत बड्डी कामयाबी ऐ ॥ 13 ॥

जिस दिन मुनाफिक्र मडुद ते मुनाफिक्र जनानियां मोमिनें गी आखडन जे जरा साढ़ा बी इंतजार करो अस थुहाड़े नूर शा रोशनी हासल करी लैचै, उस बेलै उनेंगी गलाया जाग जे अपने पिच्छें¹ आहली बकखी परती जाओ ते उलथें जाइयै नूर तलाश करो (तुप्पो)। फी (अल्लाह पासेआ) उंदे ते मोमिनें बशकार इक कंध खडेरी दित्ती जाग, जेहदे च इक दरोआजा होग, ओहदे अंदर रैहमत² दा नजारा होग ते ओहदे बाहरले पासै/सामनै अजाब लब्धा करदा होग ॥ 14 ॥

وَقُتِلَ ۙ أُولَٰئِكَ أَكْثَرُ دَرَجَةً ۗ مِّنَ الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِنْ بَعْدِ وَقْتِنَا ۗ وَكَلَّا وَعَدَّ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

ع
٣

مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضِعُّهُ لَهُ ۗ وَآلَةٌ أَجْرِكْرِيمٌ ۝

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَىٰ نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ بُشْرَانِكُمْ الْيَوْمَ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۗ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنْفِقُونَ وَالْمُنْفِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا انظُرُونَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُورِكُمْ ۗ قِيلَ ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُورًا ۗ فَضُرِبَ بَيْنَهُم بِسُورٍ لَهُ بَابٌ بَاطِنُهُ فِيهِ الرَّحْمَةُ ۗ وَظَاهِرُهُ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۝

1. यानी अगले ज्हाँन च नूर संसार दे कर्में दे मताबक मिलदा ऐ जेकर ताकत है तां दुनियां च बापस उठी जाओ।
2. यानी मोमिनें जित्थें जाना ऐ उलथें गै रैहमत होग ते मुन्करें दे पिच्छें अजाब होग जेहदे शा नसिये बी ओह अपना बचाऽ नेई करी सकडन।

ओह (मुनाफ़िक़) मोमिनें गी पुकारदे होई आखडन, क्या अस थुआड़े कनै नथे ? ओह (यानी मोमिन) जवाब देंग, हां-हां, पर तुसें अपनी जांनें गी आपूं अजाब च सुट्टेआ ते तुस (साही तबाही दा) इंतजार करदे रेह ते शक्क-शुबह शा कम्म लेंदे रेह ते थुआड़ियां इच्छां तुसेंगी उस बेलै तगर धोखा दिंदियां रेहियां जे अल्लाह दा फैसला आई गेआ ते अल्लाह (दे सारे कम्मं दे) बारै शतान तुसेंगी धोखा दिंदा रेहा ॥ 15 ॥

इस आस्तै अज्ज दे दिन (हे मुनाफ़िक़ो!) नां थुआड़े शा ते नां मुन्करें शा कोई फ़िदयः (अर्थात् प्रतिदान) कबूल कीता जाग, तुंदा सारें दा ठकाना नरक ऐ। ऊरे थुआड़े कनै सदा आस्तै संबंध रक्खने आहली चीज ऐ ते ओह बुरा ठकाना ऐ ॥ 16 ॥

हून अस मोमिनें गी आखने आं जे क्या अजे तक उंदे दिल अल्लाह दे जिकर आस्तै ते उस कलाम आस्तै जो सचाई (ते हिक्मत) कनै उतरे दा ऐ, झुकदे नेई ? ते (मोमिनें गी) चाही दा ऐ जे ओह उनें लोकें आंगर नेई बनन जिनें गी उंदे शा पैहलें कताब दिती गेई ही। पर (खुदा दी किरपा दे उतरने दा) समां लम्मा होई गेआ, जेहदे नतीजे च उंदे दिल सख्त होई गे ते उंदे चा मते-हारे प्रतिज्ञा भंग करने आहले होई गे हे ॥ 17 ॥

याद रक्खो जे अल्लाह धरती गी उसदी मौती दे बा'द जीदा (हरा-भरा) करदा ऐ। असें थुआड़े आस्तै अपने नशान तफ़सील कनै ब्यान करी दिते दे न तां जे तुस अकली (सुझ-बुझ) थमां कम्म लैओ ॥ 18 ॥

सच्चे गै सदका (दान) देने आहले मइद ते सदका देने आहली जनानियां ते ओह लोक

يُنَادُوهُمْ أَلَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ قَالُوا بَلَىٰ
وَلَكِن كُنتُمْ فَتَنًا أَنفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ
وَارْتَبْتُمْ وَعَرَّثْتُمْ الْأَمَانِي حَتَّىٰ جَاءَ
أَمْرُ اللَّهِ وَعَزَّكُمْ بِاللَّهِ الْعُرْوُورُ ⑤

قَالِيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَلَا
مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مَا أُولَئِكَ النَّارُ
هِيَ مَوْلَاكُمْ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ⑥

الْمَيَانِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ
قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ
وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ
قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ
قُلُوبُهُمْ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فُسِقُونَ ⑦

إِعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحِي الْأَرْضَ بَعْدَ
مَوْتِهَا قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُونَ ⑧

إِنَّ الْمُصَدِّقِينَ وَالْمُصَدِّقَاتِ وَأَقْرُسُوا

जिनें अल्लाह आस्तै अपनी धन-दौलत चा खास हिस्सा कटिटयै अलग करी दिते दा ऐ, उंदी धन-दौलत गी उंदी खातर बधायी जाग, ते उनेंगी उत्तम सिला दित्ता जाग ॥ 19 ॥

ते जेहके लोक अल्लाह पर ते ओहदे रसूल पर ईमान ल्याए ऊऐ अपने रब्ब कश सिद्दीकें (सच्चे-सुच्चे) ते शहीदें दा दर्जा' हासल करने आहले न। उनेंगी उंदा पूरा-पूरा अजर मिलग ते इसै चाल्ली उंदा नूर बी उनेंगी मिलग, ते ओह लोक जिनें कुफर कीता, ते साढ़ी आयतें गी झूठ समझेआ, ओह दोजखी (नरक बासी) होंग ॥ 20 ॥ (रुकू 2/18)

हे लोको! समझी लैओ जे दुनियां दी जिंदगी सिर्फ इक खेद ऐ ते मनोरंजन मातर ऐ ते शोभा हासल करने, ते आपस च फखर (घमंड) करने ते इक-दूए पर जन (उलाद) ते धन (दौलत) राहें बड़ाई जताने दा साधन ऐ। इस दी हालत बदलें कनै पैदा होने आहली खेती आंगर ऐ जिसदा उगना करसानै गी बड़ा पसंद औंदा ऐ ते ओह खूब झुलदी ऐ पर आखर च तू उसी पीले रंग च दिक्खना ऐं फी (उसदे बा'द) ओह सड़े-गले चूरे आंगर होई जंदी ऐ ते आखरत च (ऐसे माया

اللَّهُ قَرَضًا حَسَنًا يُضَعَّفُ لَهُمْ وَلَهُمْ
أَجْرٌ كَرِيمٌ ﴿١٩﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ
الصَّادِقُونَ وَالشَّهَادَةُ عِنْدَ رَبِّهِمْ
لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُورُهُمْ وَالَّذِينَ
كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿٢٠﴾

اعلموا إنما الحياة الدُّنيا لعبٌ ولهُوٌ
وَزِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي
الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ كَمَثَلِ غَيْثٍ
أَعْرَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهُ ثُمَّ يَهِيجُ
قَتْرُهُ فَضَفَّرًا ثُمَّ يَكُونُ حُطَامًا
وَفِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَمَغْفِرَةٌ

1. किश लोकें दा बिचार ऐ जे अल्लाह ते उसदे रसूलें पर ईमान आहनेने दे फलसरूप इक मनुक्ख सिद्दीक ते शहीद दे पद तक पुज्जी सकदा ऐ, मुबुव्वत दे पद तक नैई, पर सूर: निसा आयत : 70 च खुदा नै गलाए दा ऐ जे जेहके लोक अल्लाह ते इस रसूल दी आज्ञा दा पालन करडन ओह लोक उनें लोकें चा होंग जिनेंगी अल्लाह नै इनाम प्रदान कीते दा ऐ यानी नबियें, सिद्दीकें, शहीदें ते सालेह (सदाचारी) लोकें चा होंग ते एह लोक बौहट अच्छे मित्तर न। (सूर: निसा आयत 70) इनें दीनीं आयतें पर बिचार करने पर हर शख्स समझी सकदा ऐ जे सूर: हदीद च ते एह आखेआ गेदा ऐ जे जेहके लोक अल्लाह ते उसदे रसूलें पर ईमान ल्याए ओह गै सिद्दीकें ते शहीदें दा पद प्राप्त करने आहले न, पर सूर: निसा च 'अरसूल' शब्द बरते दा ऐ जेहदे कनै हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. गै सरबंधत न ते गलाया गेदा ऐ जे जेहके लोक अल्लाह ते इस रसूल (हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व.) दी आज्ञा दा पालन करडन ओह नबियें, सिद्दीकें, शहीदें ते सालेह शखसें दा पद प्राप्त करडन। इस आस्तै साफ ऐ जे हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. शा पैहले सारे रसूलें दी आज्ञा दा पालन करने दे नतीजे च इक शख्स सिर्फ सिद्दीक ते शहीद दा पद प्राप्त करी सकदा हा, पर हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दी आज्ञा दा पालन करने दे फलसरूप इक शख्स नबियें, सिद्दीकें, शहीदें ते सालेह दा पद प्राप्त करी सकदा ऐ।

दे लोभी लोकें आस्तै) सख्त अज़ाब निश्चत ऐ ते किश लोकें आस्तै अल्लाह पासेआ खिमा ते उसदी खुशी निश्चत ऐ ते संसारक जीवन सिर्फ़ इक धोखे दा फायदा (समान) ऐ ॥ 21 ॥

(हे लोको!) तुस अपने रब्ब पासेआ औने आहली माफी ते ऐसी जन्नत पासे तेजी कनै बधो जिसदी कीमत सारे गास ते धरती दी कीमत दे बराबर ऐ ते जो अल्लाह ते उसदे रसूल पर ईमान आहनने आहलें आस्तै तजबीज़ कीती (त्यार कीती) गेदी ऐ एह अल्लाह दी किरपा ऐ, ओह जिसगी पसंद करदा ऐ, दिंदा ऐ ते अल्लाह बड़ी किरपा करने आहला ऐ ॥ 22 ॥

धरती पर कोई मसीबत नेई औंदी ते नां थुआड़ी जानें पर कोई मसीबत औंदी ऐ। पर असें उसदे औने शा पैहलें गै उसी निश्चत' करी दिते दा होंदा ऐ, एह गल्ल अल्लाह आस्तै बिल्कुल असान ऐ ॥ 23 ॥

तां जे अपनी कुताही पर तुसंगी कोई बसोस नेई होऐ ते नां ओहदे पर तुस खुश होओ जो अल्लाह तुसं गी देऐ ते अल्लाह हर आकड़खां/शेखी मारने आहले गी पसंद नेई करदा ॥ 24 ॥

ऐसे लोक जो आपू बी कंजूसी शा कम्म लेंदे न ते दूए लोकें गी बी कंजूसी दी तलीम दिंदे न ते जेहका शख्स इस नसीहत शा मूंह फेरी लै ते याद रक्खे जे अल्लाह गै असली बे-न्याज ते असली तरीफ (स्तुति) दा हक्कदार ऐ ॥ 25 ॥

مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ۗ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا
اِلَّا مَتَاعُ الْعُرُوْرِ ۝۱

سٰۤیْقُوْا اِلٰی مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ
عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۗ
اَعَدْتُمْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ
ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَن يَّشَآءُ ۗ
وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝۲

مَا اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِى الْاَرْضِ
وَلَا فِىْ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ
اَنْ نَّبْرٰهَا ۗ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝۳

لِّكَيْلًا تَأْسُوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ
وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَا اٰتٰكُمْ ۗ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ
كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ۝۴

الَّذِيْنَ يَبْخُلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ
بِالبُخْلِ ۗ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ
الْعَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝۵

1. एह मतलब नेई जे हर चंगा-माड़ा सिला निश्चत ऐ ते भागें च लखोए दा ऐ बल्के अर्थ एह ऐ जे हर कम्म दा अन्जाम असें निश्चत करी दिते दा ऐ। इस आस्तै जनेहा कम्म कोई करदा ऐ, उसदा निश्चत सिला उसी ध्दोई जंदा ऐ। इस लेई सिला पैदा करने आहला इन्सान आपू ऐ, खुदा नेई। खुदा ते सिर्फ़ असूल बनाने आहला ऐ।

असैं अपने रसूलें गी खुल्ले नशानें कनै भेजेआ ऐ ते उंदे कन्नै कताब ते मेजान (न्यांस) बी उतारेआ ऐ तां जे लोक इन्साफ करा करन ते असैं लोहा बी उतारे दा ऐ जेहदे च घोर युद्ध दा समान ऐ ते लोकें आस्तै होर बी भांत- सभांते लाह न ते एह सब इस आस्तै पैदा कीते दा ऐ जे अल्लाह समझी लै जे उसदी ते उसदे रसूलें दी गैब दी हालत च कु'न मदद करदा ऐ ते अल्लाह बड़ी ताकत आह्ला (ते) गालिब ऐ ॥ 26 ॥ (सूकू 3/19)

ते असैं नूह ते इब्राहीम गी बी रसूल बनाइयै भेजेआ हा, ते उंदी संतान चा नुबुव्वत ते कताबा गी खास बनाई दिता हा। इस आस्तै उंदे बिच्चा किश लोक हदायत पाने आहले हे ते मते-हारे लोक उंदे बिच्चा आज्ञा भंग करने आहले हे ॥ 27 ॥

फी असैं उंदे (यानी नूह ते इब्राहीम दी संतान दे) बा'द अपने रसूल उंदे पद-चि'न'न पर चलाइयै भेजे ते मर्यम दे पुतर ईसा गी बी उंदे पद-चि'न'न पर चलाया ते उसी इज्जील दिती, ते जेहके उसदे अनुयायी बने, असैं उंदे दिलें च कोमलता ते रैहमत पैदा कीती ते उंन कुआरे/ब्रहमचारी रौहने दा तरीका अखत्यार कीता हा। जिसी उंन आपूं अखत्यार कीता हा। असैं उंदे पर एह हुकम आयद (लागू) नथा कीते दा (बल्के) उंन अल्लाह दी रजा (मरजी) हासल करने आस्तै एह तरीका अखत्यार कीता हा पर उस दा पूरा ध्यान नेई रक्खेआ। इस आस्तै उंदे बिच्चा जो मोमिन हे उंनंगी असैं मनासब अजर बख्शेआ ते उंदे बिच्चा मते-हारे प्रतिज्ञा भंग करने आहले हे ॥ 28 ॥

हे ईमान आहलेओ! अल्लाह दा संयम अखत्यार करो ते उसदे रसूल पर ईमान ल्याओ। उसलै

لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنْزَلْنَا
مَعَهُمُ الْكِتَابَ وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ
بِالْقِسْطِ ۗ وَأَنْزَلْنَا الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ
شَدِيدٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ
مَنْ يَنْصُرُهُ وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ ۗ إِنَّ اللَّهَ
قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢٦﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا
فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ فَمِمْهُمْ
مُهْتَدٍ ۖ وَكَثِيرٍ مِّنْهُمْ فَسِقُونَ ﴿٢٧﴾

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِرُسُلِنَا
وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَآتَيْنَاهُ
الْإِنْجِيلَ ۗ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ
اتَّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً ۗ وَرَهْبَانِيَّةً
ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا
ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ
رِعَايَتِهَا ۗ فَآتَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ
أَجْرَهُمْ ۗ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَسِقُونَ ﴿٢٨﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَآمِنُوا

अल्लाह तुसेंगी अपनी रैहमत चा दूना हिस्सा देग ते थुआड़े आस्तै नूर निश्चत करी देग जेहदी मददी कनै तुस चलगे ओ ते थुआड़े गुनाह माफ करी देग ते अल्लाह बौहत बखाने आह्ला (ते) बे-इंतहा कर्म करने आह्ला ऐ ॥ 29 ॥

ते एह अस इस आस्तै आखने आं तां जे कताब आह्ले एह नेई समझन जे मुसलमानें गी अल्लाह दी किरपा चा किश थ्होआ गै नेई, बल्के एह समझन जे किरपा अल्लाह दै हत्थै च ऐ। जिसगी चाहदा ऐ दिंदा ऐ ते अल्लाह बड़ी किरपें आह्ला ऐ ॥ 30 ॥
(रुकू 4/20)

بِرَسُولِهِ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَحْمَتِهِ
وَيَجْعَلْ لَكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

لَيْلًا يَعْلَمَ أَهْلُ الْكِتَابِ أَلَا يَقْدِرُونَ
عَلَى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللَّهِ وَأَنَّ الْفَضْلَ
بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ
ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝

ooo

سُورَةُ الْمَجَادِلَةِ مَدِينَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلَاثٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَثَلَاثَةٌ رُكُوعَاتٌ

सूर: अल्-मुजादल:

एह सूर: मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां त्रेई आयतां ते त्रै रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अल्लाह नै उस जनानी दी दुआऽ सुनी लैती,
जो अपने घरैआहले दे बाँरे तेरे कनै बैहस
करदी ही ते अल्लाह अगमें फरेआद करदी ही,
ते अल्लाह थुआड़ी दौनीं दी बैहस सुना करदा
हा। अल्लाह सच्चें गै बौहत सुनने आहला
(ते) दिक्खने आहला ऐ ॥ 2 ॥

قَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّتِي تُجَادِلُكَ فِي
زَوْجِهَا وَتَشْتَكِي إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ يَسْمَعُ
تَحَاوُرَكُمَا إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ①

(इस आस्तै याद रक्खो जे) तुंदे चा जेहके
लोक अपनी लाड़ियें गी मां आखी बौहन तां
उस आखने करी ओह उंदियां मांमां नेई होई
जंदियां, उंदियां मांमां ऊऐ न जिनें उनेंगी जनम
दिस्ते दा ऐ ते (जे किश ओह गलती कनै
आखी बाँहदे न उंदी निसबत/उंदे बाँरे इयै
गलाया जाई सकदा ऐ जे) ओह इक भैड़ी
ना-पसंद ते झूठी गल्ल आखदे न ते अल्लाह
यकीनन बौहत माफ करने आहला (ते) बौहत
बख्शने आहला ऐ ॥ 3 ॥

الَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنْكُمْ مِنْ نِسَائِهِمْ
مَا هُنَّ أُمَّهَاتِهِمْ إِنْ أُمَّهَاتُهُمْ إِلَّا اللَّائِي
وَلَدْنَهُمْ وَإِنَّهُمْ لَيَقُولُونَ مُنْكَرًا
مِنَ الْقَوْلِ وَزُورًا وَإِنَّ اللَّهَ
لَعَفُوفٌ غَفُورٌ ①

ते ओह लोक जेहके अपनी लाड़ियें गी मां

وَالَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنْ نِسَائِهِمْ ثُمَّ

गलाई दिंदे न फी उसदे बा'द (खुदा दे म'ना करने दे बावजूद) जे किश उनें गलाया हा, उस पासै परतोई' औंदे न उंदे आस्तै जरूरी ऐ जे इस शा पैहलें जे ओह दमें (यानी लाड़ी-मरहाज) इक-दूए गी छूहन, इक गुलाम अजाद करन, एह ओह (गल्ल) ऐ जेहदी तुसेंगी नसीहत कीती जंदी ऐ ते अल्लाह थुआड़े कमें शा भलेआं वाकफ ऐ ॥ 4 ॥

ते जेहका शख्स (गुलाम) नेई पाऽ (यानी जेहका शख्स कोई गुलाम हासल नेई करी सकै) ओह लगातार दो म्हीने रोजे रक्खै ते इस शा पैहलें जे ओह दमें इक-दूए गी छूहन (मलाप करन) ते जेहदे च एह ताकत बी नेई होऐ तां सदठें गरीबें गी खाना खलाऽ। एह (हुकम) इस आस्तै (दिता गोदा) ऐ तां जे तुस अल्लाह ते उसदे रसूल दी गल्ल मन्ना करो। ते एह अल्लाह दियां हद्दां न ते मुन्करें आस्तै दर्दनाक अजाब (निश्चत) ऐ ॥ 5 ॥

जो लोक अल्लाह ते इसदे रसूल दे हुकम दे खलाफ जंदे न ओह जलील (अपमानत) कीते जांगन जिस चाल्ली उंदे शा पैहले लोक अपमानत कीते गे हे ते अस अपने जाहरा-बाहरा हुकम उतारी चुके दे आं ते जेहके लोक (इनें स्पष्ट आदेशें दा) इन्कार करडन उनेंगी अपमान जनक अजाब पुज्जग ॥ 6 ॥

जिस दिन अल्लाह उनें सारें गी किट्ठा करियै दुआलग तां उनें गी उंदे कमें दी खबर देग जो अल्लाह नै ते गिनी रक्खे दे न पर ओह उनेंगी भुल्ली चुके दे न ते अल्लाह हर चीजै दा नगरान ऐ ॥ 7 ॥ (रकू: 1/1)

يَعُوذُونَ لِمَا قَالُوا فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسًا ذِيكُمْ تُوعِظُونَ بِهِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ①

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسًا ② فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّينَ مِسْكِينًا ذَلِكَ يُتَوَمَّؤُا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ③ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ④ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ⑤

إِنَّ الَّذِينَ يَحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ كُنُوا كَمَا كُفِتَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ⑥ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُّهِينٌ ⑦

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ⑧ أَحْصَاهُ اللَّهُ وَسُوهُ ⑨ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ⑩

क्या तुगी पता नेई जे गासैं ते धरती च जे किश बी ऐ अल्लाह उसगी जानदा ऐ? दुनियां च कोई त्रै आदमी बक्खरी सलाह करने आहले नेई होंदे जिसलै जे ओह उंदा-चौथा नेई होऐ, ते नां पंज सलाह करने आहले होंदे न जिसलै जे ओह उंदा छेमां नेई होऐ ते नां इस गिनती शा घट्ट होंदे न ते नां बद्ध जे ओह (हर सूरत/हालत च) उंदे कन्ने होंदा ऐ भाएं ओह कुते बी (सलाह करा करदे) होन। फी ओह उंदे कर्मै दी क्यामत आहलै रोज उंनेगी खबर देग, अल्लाह हर चीजै गी जानने आहला ऐ ॥ 8 ॥

क्या तोह उंनैं लोकें गी नेई दिक्खेआ जिनैं गी गुप्त खड़जैतरे शा रोकेआ गेआ ऐ, फी बी ओह इस मनाही आहली चीजै बक्खी परतोंदे रौहदे न ते गुनाह, ते ज्यादती ते रसूल दी ना-फरमानी दी गल्लें बारे मशबरा/सलाह करदे न ते जिसलै ओह तरे कश औंदि न तां तुगी ऐसे शब्दें च दुआऽ दिंदे न जिंदे (जिनैं शब्दें) च खुदा नै दुआऽ नेई दिती ते अपने मयें च आखदे न जे की अल्लाह साढ़े (दोगले) बोल्लें करी असंगी अजाब नेई दिंदा। जहन्म उंनैं लोकें आसतै काफी ऐ। ओह ओहदे च दाखल होंगन ते ओह बौहत बुरा ठकाना ऐ ॥ 9 ॥

हे मोमिनो! जिसलै कदें तुस गुप्त मशबरा करो तां गुनाह आहली गल्लें ते ज्यादती आहली गल्लें पर गुप्त मशबरा नेई करा करो ते नां रसूल दी नाफरमानी आहली गल्लें पर, बल्के नेकी दियें गल्लें पर ते संयम दियें गल्लें पर मशबरा करा करो, ते अल्लाह दा संयम अखतवार करा करो जेहदे पासै तुसैं सारें गी (जींदा करियै) लौटाया जाग (परताया जाग) ॥ 10 ॥

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَا يَكُونُ مِنْ نَجْوَى ثَلَاثَةٍ إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا آدْنَى مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ①

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نُهُوا عَنِ النَّجْوَى ثُمَّ يُعَادِدُونَ لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَيَتَنَجَّوْنَ بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَإِذَا جَاءَهُمْ وَكَيْفَ يَأْتِيكَ بِهِ اللَّهُ لَا يُفْقَهُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُهُ اللَّهُ بِمَا نَقُولُ حَسْبُ لَهُمْ جَهَنَّمُ يَصَلُّونَهَا فَيَسْأَلُونَ الْمَصِيرَ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَجَّيْتُمْ فَلَا تَتَنَجَّوْا بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَتَتَّجَّوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَى وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ①

1. यानी दुआऽ च अतिशयोक्ति शा कम्म लेंदे न तां जे उंदे बारे चंगी राऽ कायम होऐ। असल च ओह उस दुआऽ गी मन्ने आहले नेई होंदे। इस आसतै एह आखदे न जे साढ़े एड्डे बड्डे झूठ, पर जैकर एह शब्द सच्चा ऐ, तां असंगी सजा की नेई थ्हांदी।
2. इत्थें गुप्त मशबरा दा अर्थ ओह मशबरा ऐ जो नेकी दे बारे होऐ ते आयत 11 च जिस मशबरे शा म'ना कीता गेदा ऐ ओह ऐसा मशबरा ऐ जो बदी दे बारे होऐ ते ओह जायज नेई जियां जे इससै आयत च इसदा जिकर कीता गेदा ऐ। इस आसतै दौनी आयतें च कोई मत-भेद नेई।

गुप्त मशवरा करने दा ढंग¹ शतान पासेआ आया ऐ ते इसदा उद्देश एह ऐ जे मोमिनं गी फिकरें च पाई देऐ ते ओह उनेंगी अल्लाह दे हुकम दे बगैर किश बी नुकसान नेई पुजाई सकदा ते चाही दा ऐ जे मोमिन सिर्फ अल्लाह पर भरोसा करन ॥ 11 ॥

हे मोमिनो ! जिसलै तुसेंगी एह गलाया जा जे सभा च खुल्लियै बेही जाओ, तां खुल्लियै बेही जा करा करो। अल्लाह बी थुआड़े आस्तै कुशादगी (बिस्तार) दे समान पैदा करग। ते जिसलै तुसेंगी गलाया जा जे उट्टी जाओ तां उट्टी पवा करो। अल्लाह उनेंगी, जेहेक मोमिन न ते असली इलम रक्खने आहले न, दरजे/पदवियें च बधाई देग ते अल्लाह थुआड़े कर्मै शा भलेआं खबरदार (बाकफ) ऐ ॥ 12 ॥

हे ईमान आहलेओ ! जिसलै तुस रसूल कनै बक्खरा मशवरा करना चाहो तां अपने मशवरे शा पैहलें किश सदका (दान) देआ करो। एह थुआड़े आस्तै चंगा होग ते दिलै गी पवित्र करने दा मूजब होग (पर एह आदेश सिर्फ समर्थ रक्खने आहलें आस्तै गै ऐ) जेकर तुसेंगी (कोई चीज बी सदके आस्तै) नेई मिलै तां (डरो नेई) अल्लाह बौहत बक्खाने आहला (ते) बार-बार रैहम करने आहला ऐ ॥ 13 ॥

क्या तुस मशवरा करने शा पैहलें सदका देने शा डरी? गे? इस आस्तै की जे तुसें ऐसा नेई

إِنَّمَا النَّجْوَى مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزُنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيْسَ بِضَارِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا يَفْسَحِ اللَّهُ لَكُمْ ۗ وَإِذَا قِيلَ انشُرُوا فَانشُرُوا ۚ تَنشُرُوا ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكُمْ ۗ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَالْعِلْمَ دَرَجَاتٍ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١٢﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُولَ فَقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوَاكُمْ صَدَقَةٌ ۗ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَأَظْهَرٌ ۗ فَإِن لَّمْ تَجِدُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٣﴾

ءِ أَشْفَقْتُمْ أَن تَقْدِمُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوَاكُمْ صَدَقَةٌ ۗ فَإِذَا لَّمْ تَفْعَلُوا

1. यानी ऐसे मशवरें दा जो बुरे कर्मों बारे होन।

2. एह डर सदका देने करी नथा, बल्के सदका जो ब्यापक अर्थ रखदा हा इसदे बारे च मुसलमानों गी एह डर होई सकदा हा जे उन्ना दान दिते दा ऐ जां नेई, जिन्ना अल्लाह दे आदेश मूजब हा। इस लेई इस दा जवाब दिते दा ऐ जे जिसलै तुस सदका देने आस्तै त्यार होओ। तां फी थुआड़ा एह भरम ऐ जे उन्ना सदका दिता जां नेई जिसदा आदेश हा। तां इसदा अर्थ एह ऐ जे तुसें सिर्फ ओह सदका नेई दिता जो देने दी तुंदे च समर्थ नथी ते समर्थ शा बद्ध देना पैहलें गै माफ कीता गेदा ऐ, की जे पैहली आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे जेकर तुसेंगी किश नेई मिलै तां माफी दे काबल ऐ, ते नेई मिलने दा अर्थ ऐ जे अपनी इच्छा मताबक समर्थ नेई ओ।

कीता ते अल्लाह नै थुआड़े पर किरपा करी
दिती ऐ इस आस्तै तुस नमाजां कायम करो,
ते जकातां देओ ते अल्लाह ते उसदे रसूल
दा आज्ञापालन करो, ते जे किश तुस करदे
ओ अल्लाह उसी भलेआं जानदा ऐ ॥ 14 ॥
(रुकू 2/2)

क्या तोह उनें लोकें पासै बी दिक्खेआ जिनें
ऐसी कौम कनै दोस्ती गंडी जिंदे पर खुदा नै
अज्ञाब नाजल कीते दा हा? ऐसे लोक नां ते
तुंदे चा न ते नां गै उंदे चा ते ओह जानी-
बुझियै झूठी गल्ला पर कसमां खंदे न ॥15 ॥

अल्लाह उंदे आस्तै सख्त अज्ञाब त्यार करा
करदा ऐ। उंदे कर्म अत गै बुरे न ॥ 16 ॥

उनें अपनी कसमें गी ढाल' बनाई रक्खे दा ऐ
ते ओह (इनें कसमें रहें) लोकें गी अल्लाह
दे रस्ते थमां रोकदे न। इस आस्तै उनेंगी
अपमान जनक अज्ञाब मिलग ॥ 17 ॥

नां उंदी धन-दौलत ते नां उंदी उलाद अल्लाह
दे मकाबले च उनेंगी कोई फायदा देई सकडन।
एह लोक दोजखी (नरक बासी) न, ओह
उस च नवास करदे रौहगन ॥ 18 ॥

जिस रोज अल्लाह उनें सारें गी किट्ठे करियै
तुआलग तां उसदे सामनै बी उससै चाल्ली
कसमां खाडन जिस चाल्ली थुआड़े सामनै
कसमां खंदे न ते बिचार एह करडन जे ओह
बड़े पक्के (ते मनासब) असूलें पर कायम
न। सुनो! एह लोक (अपनी कसमें दे बावजूद)
झूठे न ॥ 19 ॥

وَتَابَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَاتُوا الزَّكَاةَ وَاطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۗ
وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ
اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۗ مَا هُمْ مِنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ ۗ
وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكُذِبِ وَهُمْ
يَعْلَمُونَ ﴿١٥﴾

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۗ إِنَّهُمْ سَاءَ
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾
اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً ۖ فَصَدُّوا عَنِ
سَبِيلِ اللَّهِ ۗ فَالَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿١٧﴾

لَنْ نَعْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا
أَوْلَادُهُمْ ۗ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۗ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ ۗ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٨﴾

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا ۖ فَيَحْلِفُونَ لَهُ
كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ
عَلَىٰ شَيْءٍ ۗ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٩﴾

1. यानी कसमां खंदे न ते समझदे न जे हून साढ़ी गल्ला पर ईमान लेई औना चाही दा हालांके अल्लाह नै कसम ते गुआही लाग-लाग गल्लें आस्तै निश्चत करी रक्खी दी ऐ।

शतान उंदे पर गालिब/सुआर होई चुके दा ऐ ते उसनै उनेंगी अल्लाह दा चेता भलाई दिता ऐ। एह लोक शतान दा गरोह न ते सुनी लैओ जे शतान दा गरोह आखर घाटा पाने आहला ऐ ॥ 20 ॥

सच्चें गै जेहके लोक अल्लाह ते उसदे रसूल दा बरोध करदे न ओह अत्त अपमानत लोकें च गिने जांगन ॥ 21 ॥

अल्लाह नै फैसला करी रखे दा ऐ जे अ'ऊं ते मेरे रसूल गालिब आंगे। अल्लाह सच्चें गै ताकतवर ते गालिब ऐ ॥ 22 ॥

तूं ऐसी कोई कौम नेई दिखगा, जो अल्लाह ते आखरी ध्याड़े पर बी ईमान आहनदी होऐ ते अल्लाह ते उसदे रसूल दा सख्त बरोध करने आहले कनै बी प्रेम रखदी होऐ भाएं ऐसे लोक उंदे बड्डे-बडेरे (बब्ब) होन जां (सक्के निक्के) पुत्तर होन, भ्राऽ होन, जां उंदे कटुबै चा होन। इयै (मोमिन) न जिंदे दिलें च अल्लाह नै ईमान अंकत करी दित्ते दा ऐ ते अपने पासेआ कलाम भेजियै उंदी मदद कीती ऐ ते ओह उनेंगी ऐसे सुर्गे च दाखल करग जिंदे हेठ नैहरां बगा दियां होंगन। ओह उंदे च रौहगन। अल्लाह उंदे पर खुश होई गेआ ते ओह अल्लाह पर खुश होई गे। ओह अल्लाह दा गरोह न (ते) सुनी लैओ जे अल्लाह दा गरोह गै कामयाब होंदा आया ऐ ॥ 23 ॥ (रुकू 3/3)

إِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنسَهُمْ ذِكْرَ اللَّهِ ۗ أُولَٰئِكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ ۗ أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٥٨﴾

إِنَّ الَّذِينَ يُكَذِّبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَٰئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ ﴿٥٩﴾

كَتَبَ اللَّهُ لَأَعْلَبَنَ آتَا وَرُسُلِي ۗ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٦٠﴾

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ
إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ ۗ أُولَٰئِكَ كَتَبَ
فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحٍ
مِّنْهُ ۗ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۗ رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۗ أُولَٰئِكَ حِزْبُ اللَّهِ ۗ
أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٦١﴾

سُورَةُ الْحَشْرِ مَدِينِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ خَمْسٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَثَلَاثَةٌ رُكُوعَاتٌ

सूर: अल्-हश्र

एह सूर: मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां पं'जी आयतां ते त्रै रुक्कू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांS लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने (ते) बार-बार रैहम करने
आहला ऐ ॥ 1 ॥

गासैं ते धरती च जे किश ऐ अल्लाह दी स्तुति
करा करदा ऐ ते ओह (अल्लाह) गालिब
(ते) हिक्मत आहला ऐ ॥ 2 ॥

ओह (खुदा) गै ऐ जिसनै कताब आहले
काफरें गी पैहले युद्ध' मौकै उंदे घरें चा
कइठेआ ते तुस ख्याल नेई करदे हे (सोचदे
नथे) जे ओह निकलडन ते ओह सोचदे हे जे
उंदे किले अल्लाह दे मकाबले च उनेंगी बचाई
लैंगन ते अल्लाह उंदे कश उस पासेआ^१ आया
जेहदा उनेंगी ख्याल तक नेई हा, ते उंदे दिलें
च उसनै त्राह पाई दिता। ओह अपने घरें गी
(किश ते) अपने हत्थें कनै ते (किश) मोमिनें
दे हत्थें कनै खराब करा करदे हे। इस आसतै
हे सूझ-बूझ आहले लोको! इबरात (नसीहत)
हासल करो ॥ 3 ॥

ते जेकर अल्लाह नै उंदे आसतै देश नकाला^२
निश्चत नेई करी रक्खे दा होंदा तां उनें गी इस
संसार च बी अजाब दिंदा ते आखरत च उंदे
आसतै दोजख दा अजाब निश्चत ऐ ॥ 4 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْاَرْضِ ۗ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ①

هُوَ الَّذِي اَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ اَهْلِ
الْكُتُبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ۗ

مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَخْرُجُوْا وَظَنُّوْا

اَنْتَهُمْ مَّا نَعْتَهُمْ حُصُوْنَهُمْ مِّنْ اللّٰهِ

فَاَتَتْهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا ۗ

وَقَذَفَ فِي قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ ۗ يُخْرِبُوْنَ

بِيُوْنَهُمْ بِاَيْدِيهِمْ وَاَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ

فَاعْتَبِرُوْا يَا اُولِي الْاَبْصَارِ ②

وَلَوْ لَا اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلٰءَ

لَعَذَّبْتَهُمْ فِي الدُّنْيَا ۗ وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ

عَذَابٌ النَّارِ ③

1. इस दा अर्थ ओह युद्ध ऐ जो यहूदी कबीला 'बनू नजीर' दा मुसलमानों कनै होआ हा (फ़तहुलबयान भाग 9 सफ़ा 263)
2. क़ुरआन करीम शा सिद्ध होंदा ऐ जे किश थाहें पर अल्लाह ते फरिश्तें दे ओने दा अर्थ बिपता ते अजाब होंदा ऐ। इत्थें बी इयै मुहावरा इस्तेमाल कीता गेदा ऐ।
3. बाईबिल च जिकर ऐ जे इक समां ऐसा बी औंग जिसलै यहूदियें गी जिला बतन कीता (देश नकाला दिता) जाग। (यशायाह बाब 23 आयत 17-18)

एह सब किश इस आसतै होआ जे उनें अल्लाह ते उसदे रसूल दा बरोध कीता ते जो अल्लाह दा बरोध करदा ऐ ओह चेता रक्खै जे अल्लाह दा अजाब सच्चें गै सख्त ऐ ॥ 5 ॥

तुसैं खजूरी दे बूहटे¹ दी कोई जढ़ नेई कट्टी जां उसी अपनी जढ़ें पर खड़ा नेई रौहन दिता। पर एह अल्लाह दे आदेश कनै हा ते इस आसतै हा जे ना-फरमानें गी अपमानत कीता जा ॥ 6 ॥

ते जे किश अल्लाह नै उंदा (मूंह फेरने² आहले लोकें दा) माल अपने रसूल गी दिता (तुसैंगी पता गै ऐ जे) तुसैं अपने घोड़े ते ऊंट इस धन दी प्राप्ति आसतै नेई दौड़ाए है, पर अल्लाह अपने रसूलें गी, जिसदा चांहदा ऐ मालक बनाई दिंदा ऐ ते अल्लाह हर चीजा पर कादर (समर्थवान) ऐ ॥ 7 ॥

बस्तिरें³ दे लोकें दा जो माल अल्लाह नै अपने रसूल गी प्रदान कीता ओह अल्लाह दा (ऐ) ते रसूल दा (ऐ) ते रिश्तेदारें दा (ऐ) ते जतीमें दा (ऐ) ते गरीबें दा (ऐ) ते मसाफरें दा ऐ। तां जे ओह माल तुंदे चा मालदारें (धनी लोकें⁴) च गै नेई फिरदा र⁵ तै ते रसूल जे किश तुसैंगी देऐ उसी लेई लैओ

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَاقَّوْا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ ۗ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمْوهَا قَائِمَةً عَلٰى اَصْوَابِهَا فَاِذْنِ اللّٰهِ وَيُخْزِي الْفٰسِقِيْنَ ۝

وَمَا اَفَاءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهِ مِنْهُمْ فَمَا اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ وَلَا كِنٍّ اللّٰهُ يَسْبِطُ رَسُوْلَهُ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

مَا اَفَاءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهِ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰى وَالْمَسْكِيْنَ وَاٰبِنِ السَّبِيْلِ ۚ كٰى لَا يَكُوْنَ دُوْلَةً بَيْنَ الْاَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ ۗ وَمَا اَسْكُمُ الرَّرَسُوْلُ فَعُدُوْهُ ۗ وَمَا نَهَكُمُ عَنْهُ

1. इस आयत च बी बन् नजीर दे बुद्ध दा जिकर ऐ जिंदे खजूरी दे बूहटे बद्धने दा हुकम हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. नै दिता हा। (बुखारी ते मुसलम शरीफ रेवायत हजरत अब्दुल्लाह पुत्र हजरत उमर)
2. एह घटना बी बन्-नजीर कनै सरंबधत ऐ, जिनें पैहलें ते हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. कनै गद्दारी कीती, पर जिसलै युद्ध होआ तां डरी गो ते इस शर्त पर सु¹ला कीती जे मदीना छोड़ियै उठी जांगन (फ़तहलुबयान भाग 9 सफा 264)
3. यानी खैबर दा धन जो छोटी-छोटी बस्तिरें च तकसीम हा।
4. यानी ओह माल रसूल गी इस आसतै दिता ऐ जे गरीबें च तकसीम होऐ। इस आसतै नेई जे अमीरें कश जा ते उंदे माल च बाद्दा करै। इस हुकम थमां साफ ऐ जे खैबर दी धरती ते बाग भामें हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. ते उंदे खानदान गी मिले पर असल मकसद एह हा जे लोडमंद मुसलमानें च बंडे जान। इथें शिष्ये दे बिचार दा खंडन कीता गेदा ऐ जो खैबर दे फ़िदक नांS दे बागै बारै अज तक इगड़ा करदे न। हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. कश खैबर दे बाग आरजी तीरा पर हे तां जे थुआड़ा टब्बर ओहदे नै गजारा करी सके, नां के स्थाई रूपे च बरासत दे तौरें पर। इस आसतै हजरत अबू-बकर दा फैसला दरुस्त हा ते शिष्ये दा इतराज गलत ऐ।

ते जेहदे शा म'ना करै ओहदे शा रुकी जाओ ते अल्लाह दा संयम अखत्यार करो। अल्लाह दा अजाब सच्चें गै बौहत् सख्त होंदा ऐ ॥ 8 ॥

एह (माल उप्पर दस्से दे लोकें दे अलावा) गरीब मुहाजर लोकें दा हक्क ऐ जिनें गी उंदे धरै-बाहरै दे धन-दौलत शा (बे-दखल करियै) कड्ढी दिता गेआ हा। ओह अल्लाह दी किरपा ते उसदी खुशी चांहदे न ते (म्हेशां) अल्लाह (दे दीन/धर्म) दी ते उसदे रसूल दी मदद करदे रौंहदे न। ऊऐ लोक (ईमान च) सच्चे न ॥ 9 ॥

ते (इस्से चाल्ली ओह माल उनें लोकें आस्ते बी ऐ) जेहके मदीना च पैहलें थमां रौंहदे हे ते (मुहाजरें/हिजरत करने आहलें दे औने शा पैहलें) ईमान कबूल करी चुके दे हे ते उंदे नै प्रेम करदे हे जेहके उंदे कश हिजरत करियै आए ते अपने दिलें च उस (माल) दी कोई खाहश नथे रखदे, जेहका उनेंगी दिता गेआ हा ते ओह बावजूद इसदे जे आपू गरीब हे, मुहाजरें गी अपने आपू शा तरजीह/प्रधानता दिंदे हे, ते जिनें लोकें गी अपनी जान दी कंजूसी शा सुरक्षत रखेआ जा, ऐसे सारे लोक सफल होने आहले न ॥ 10 ॥

ते जेहके लोक उंदे समे दे बा'द च आए ओह गलांदे न जे हे साढ़े रब्ब! असेंगी ते साढ़े उनें भ्राएं गी बखशी दे जेहके साढ़े शा पैहले ईमान ल्याई चुके दे न ते साढ़े दिलें च मोमिनें दे प्रति कीना पैदा नेई होन दे। हे साढ़े रब्ब! तू बौहत् मेहरवान (ते) बे-इन्ताहा कर्म करने आहला ऐ ॥ 11 ॥ (रुकू 1/4)

فَاتَّبِعُوا^٥ وَأَتَّقُوا اللَّهَ^٦ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ^٧

لِلْفُقَرَاءِ الْمُهْجَرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا وَيَنْصُرُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ^٨ أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ^٩

وَالَّذِينَ تَبَوَّؤُا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُجْزَوْنَ مِنْهَا جِزَاءً لِيَهُمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِمَّا أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ^{١٠} وَمَنْ يُوقِ شَخِ نَفْسِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ^{١١}

وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ^{١٢}

1. एह आयत उनें लोकें दे बिचारें दा खंडन करदी ऐ जो सहाबा गी बुरा आखदे न, की जे एह आयत दसदी ऐ जे मोमिनें दी एह पन्थान ऐ जे ओह अपने शा पैहले ईमान आहने आहलें दा नां आदर ते सत्कार कर्ने लै ते उंदे आस्ते प्रार्थना करै।

क्या तोह उनें मुनाफिकेँ गी नेई दिक्खेआ, जो कताब आहलें चा अपने मुन्कर भ्राएं गी आखदे न जे जेकर तुसेंगी (मदीने चा) कड्हेआ गेआ तां अस थुआड़े कनै गै निकली जागे। ते थुआड़े खलाफ कदें कुसै दी गल्ल नेई मनगे, ते जेकर थुआड़े कनै जंग कीती गेई तां अस थुआड़ी मदद करगे ते अल्लाह गुआही दिंदा ऐ जे ओह झूठे न ॥ 12 ॥

जेकर उनें (कताबा आहलें) गी कड्ही दिता गेआ तां एह (मुनाफिक) उंदे कनै कदें बी नेई निकलडन ते जेकर उंदे (कताब आहलें) कनै जंग कीती गेई तां एह (मुनाफिक) उंदी कदें मदद नेई करडन। ते जेकर मदद कीती बी तां (ऐसे झूठे दिलें करडन जे) जंग छिड़दे गै पिट्ट फेरिये नस्सी जाडन। ते (उनें उंदी मदद गै केह करनी ऐ, खतरे दे मौकै) उंदी अपनी मदद करने आह्ला कोई नेई होग ॥ 13 ॥

हे मोमिनो! थुआड़ा डर उंदे (मुनाफिकेँ दे) दिलें च अल्लाह शा बी ज्यादा ऐ। एह गल्ल इस आस्तै ऐ जे ओह इक ऐसा गरोह ऐ जिसी किश बी समझ नेई ऐ ॥ 14 ॥

ओह कदें बी थुआड़े कनै जंग नेई करडन सिवाए इस दे जे ओह मजबूत चारदवारी आहली बस्ती च दवारें/कंधें दे पिच्छें बैठे दे होन, उंदी लड़ाई आपस च बड़ी सख्त होंदी ऐ तू उनेंगी इक कौम समझना ऐं, पर उंदे दिल आपस च फट्टे दे होंदे न। एह इस आस्तै ऐ जे ओह इक ऐसी कौम (दे लोक) न जो सूझ-बूझ नेई रखदे ॥ 15 ॥

उंदी हालत उनें कौमें आंगर ऐ जो इंदे शा किश गै समां पैहलें होई चुकी दियां न। उनें अपने बुरे कर्म दा अन्जाम दिक्खी लैता ते उनेंगी दर्दनाक अजाब पुज्जेआ ॥ 16 ॥

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِأَخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نَطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِنْ قُوتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٢﴾

لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِنْ قُوتِلُوا لَا يَنْصُرُونَهُمْ وَلَئِنْ نَصَرُوهُمْ لَيُوَلِّنَنَّ الْأُذُنُ مَا يُنصُرُونَ ﴿١٣﴾

لَا تَنْتُمْ أَشَدَّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ﴿١٤﴾

لَا يِقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قَرْيٍ مَحْصَنَةٍ أَوْ مِنْ وَّرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّى ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٥﴾

كَمَثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاتُوا وِبَالٍ أَمْرِهِمْ ۗ وَهُمْ عَدَابُ اللَّهِ ﴿١٦﴾

(इस दे अलावा) उंदी (मुनाफिकें दी) हालत शतान कनै मिलदी ऐ जिसलै जे ओह इन्सान गी ते एह आखी दिंदा ऐ जे कुफर कर, पर जिसलै ओह कुफर करी बाँहदा ऐ तां (शतान) उसी आखदा ऐ अ'ऊं तेरे शा अलग आं, अ'ऊं अल्लाह शा डरना जो सारे ज्हांनें दा रब्ब ऐ ॥ 17 ॥

इस आस्तै उनें दौनों दा अन्जाम एह होंदा ऐ जे ओह दमै गै नरकै च जाई पौंदे न ते उसै च रौंहगन ते जालमै दा बदला ऐसा गै होंदा ऐ ॥ 18 ॥ (रुकू 2/5)

हे मोमिनो! अल्लाह दा संयम अखत्यार करो, ते चाही दा ऐ जे हर जान (बंदा) इस गल्ला पर नजर रक्खै जे उसनै कल्लै आस्तै अगमें केह भेजेआ ऐ? ते तुस सारे अल्लाह दा संयम अखत्यार करो। अल्लाह थुआड़े कर्मै गी चंगी-चाल्ली जानदा ऐ ॥ 19 ॥

ते उनें लोकें आंगर मत बनो जिनें अल्लाह गी भुलाई दिता, इस आस्तै अल्लाह नै बी ऐसा कीता जे उंदा अपना लाह बी उनेंगी भुलाई दिता। एह लोक आज्ञा-पालन शा बाहर निकलने आहले न ॥ 20 ॥

दोजखी ते जन्नती बराबर नेई होई सकदे, जन्नती लोक गै कामयाब न ॥ 21 ॥

जेकर एह कुर'आन अस कुसै फ्हाड़ै² पर नाजल करदे तां तू उसी दिखदा जे ओह

كَمَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اكْفُرْ ۗ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِّنكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ۝

فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا ۗ وَذَلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَتَنَزَّلُ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۗ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنسَهُمْ أَنفُسَهُمْ أُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝

لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۗ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝
لَوْ أَنزَلْنَا هَذَا الْقُرْآنَ عَلَى جَبَلٍ لَّرَأَيْنَاَهُ

1. खुदा गी भुल्लने दा नतीजा एह होंदा ऐ जे मनुक्ख ऐसे बुरे कर्म च फसी जंदा ऐ जो आपू ओहदी अपनी जान आस्तै बिपता दा कारण बनी जंदे न।
2. फ्हाड़ का अर्थ ऐसे लोक न जो अपनी कौम च फ्हाड़ आंगर स्वीयत रखदे न। इस आस्तै फ्हाड़ दा अर्थ पत्थरें दा फ्हाड़ नेई। इस आस्तै अल्लाह ने फरमाए दा ऐ जे पवित्र कुर'आन च अल्लाह शा डरने बारे जेहकी शिक्षा ऐ जेकर एह कुसै बड्डे शा बड्डे प्रतापी आदमी पर बी नाजल होंदी तां ओह शख्स बी खुदा दे सामनें टुकड़े-टुकड़े होइयै डिगगी पौंदा।

(अदब कन्नै) झुकी जंदा ते अल्लाह दे डरें टुकड़े-टुकड़े होई जंदा, ते एह गल्लां जो अस (तेरे कन्नै) आखने आं एह सब इन्सानें आस्तै न तां जे ओह सोचन ॥ 22 ॥

अल्लाह गै ऐ जिसदे सिवा कोई उपास्य नैई। ओह गायब (ओहलै) ते जाहर (सामनै) गी जानदा ऐ ऊऐ बे-हद कर्म करने आहला (खुदा) ऐ (ते ऊऐ) बार-बार रैहम करने आहला (खुदा) ऐ ॥ 23 ॥

(सचाई एह ऐ जे) अल्लाह ओह ऐ जिसदे सिवा कोई उपास्य नैई, ओह बादशाह ऐ, (आपू) पाक ऐ (ते दूएं गी पाक/पवित्र करदा ऐ, आपू) हर ऐब शा सलामत/बरी ऐ (ते दूएं गी सलामत रखदा ऐ) सारें गी अमन/शांति देने आहला ऐ, ते सारें दा नगरान ऐ, गालिब/समर्थ ऐ ते सारे टुट्टे दे दिलें गी जोड़दा ऐ। बड़ी शान आहला ऐ। जिनें चीजें गी एह लोक उसदा शरीक करार दिंदे न, उंदे शा अल्लाह पाक ऐ ॥ 24 ॥

(सच्च इयै ऐ जे) अल्लाह हर चीज पैदा करने आहला ते हर चीजै दा आविश्कारक बी ऐ, ते हर चीजै गी उसदी स्थिति मताबक उसी रूप-अकार देने आहला ऐ। उस दियां नेकां चंगियां सिफतां न। गासैं ते धरती च जे किश ऐ उसदी स्तुति करा करदा ऐ ते ओह गालिब ते हिक्मत आहला ऐ ॥ 25 ॥ (रुकू 3/6)

خَاشِعًا مُّصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۗ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ لَضَرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٢٢﴾

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ عَلِيمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۗ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ﴿٢٣﴾

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۗ الْمَلِكُ الْقَدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيَّمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۗ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٢٤﴾

هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۗ يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٥﴾

سُورَةُ الْمُتَحَنِّةِ مَدِينِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ أَرْبَعٌ عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

सूर: अल्-मुत्तहिन:

एह: सूर: मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां चौदां आयतां ते दो रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

हे मोमिनो ! मेरे ते अपने दुश्मनों गी जिगरी
दोस्त नेई बनाऽ करा करो। तुस ते उनेंगी
प्रेम-भरोचे संदेशे भेजदे ओ, हालांके ओह
उस सच्च दे इन्कारी न, जो थुआड़े कश आया
ऐ। ओह तुसेंगी बी ते रसूल गी बी (घरें'
थमां) सिर्फ इस आस्तै कढदे न जे तुस सारे
दे सारे अल्लाह पर, जो थुआड़ा रब्ब ऐ,
ईमान आहनी चुके दे ओ। जेकर तुस मेरे रस्ते
च कोशश करने, ते मेरी खुशी हासल करने
आस्तै निकलो तां थुआड़े चा किश चोरी-छप्पे
उंदे कश प्रेम^२ दा संदेश भेजदे न, पर मिगी
पूरा पता ऐ, ओहदा बी जो तुस छपालदे ओ
ते ओहदा बी जो तुस जाहर करदे ओ ते तुंदे
चा जो कोई ऐसा कम्म करै, ओह समझी लै
जे ओह सिद्धे रस्ते थमां भटकी गेआ ॥ 2 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي
وَعَدُوَكُمْ أَوْلِيَاءَ تَلْقَوْنَ إِلَيْهِمْ
بِالْمُؤَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا جَاءَكُمْ مِنْ
الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ أَنْ
تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ رَبِّكُمْ ۗ إِنَّ كُفْرَكُمْ حَرَجْتُمْ
جِهَادًا فِي سَبِيلِ وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِي ۗ
تَسْرُونَ ۗ إِلَيْهِمُ بِالْمُؤَدَّةِ ۗ وَأَنَا أَعْلَمُ
بِمَا أَحْفَيْتُمْ وَمَا أَعْلَنْتُمْ ۗ وَمَنْ
يَفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ①

1. यानी दुश्मन हमला करने च पैहल करदे न, जिस करी हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. ते सहाबा (यानी उंदे साथियें) गी बी घरें थमां बाहर निकलना पौंदा ऐ।
2. किश मुसलमानें पासै संकेत ऐ जिनें इस बिचार कनै जे मुसलमानें दी विजय ते पक्की होग, उस आस्तै उनें मक्का च अपने रिश्तेदारें गी बचाने आस्तै शैहरे पर चढ़ाई करने आहली मुसलमान सेना दी सूचना पैहलें गै मक्का दे इन्कारी लोकें गी भेजी दिती ही, पर अल्लाह नै वह्मी राहें इस गल्ला दी सूचना हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. गी देई दिती ते सूचना देने आह्ला मुखबर पकड़ी लैता गेआ। (बुखारी शरीफ किताबुल मुग़ाज़ी)।

जेकर ओह तुंदे पर काबू पाई लैन तां तुस समझी जागे ओ जे ओह थुआड़े दुश्मन न ते थुआड़ी तबाही आस्तै अपने हत्थ ते जबानां चलाई-चलाई कोशश करा करदे न ते उंदी कोशश इयै रौंहदी ऐ जे तुस मुन्कर होई जाओ ॥ 3 ॥

तुसेंगी नां ते थुआड़े नजदीकी रिश्ते ते नां थुआड़ी संतानां क्यामत आहलै थ्याड़े फायदा पजाई सकदियां न। उस रोज खुदा गै फ़ैसला करग ते अल्लाह थुआड़े कर्मै गी चंगी-चाल्ली दिक्खा करदा ऐ ॥ 4 ॥

इब्राहीम ते उसदे साथियें च थुआड़े आस्तै इक उत्तम आदर्श मजूद ऐ। जिसलै जे उनें अपनी कौम गी गलाया जे अस तुंदे शा ते अल्लाह दे सिवा थुआड़े उपास्यें शा पूरी चाल्ली अक्की गेदे आं। अस थुआड़ी गल्लें दा इन्कार करने आं। ते साढ़े ते थुआड़े बश्कार बैर ते द्वेष उस बेलै तगर जाहर होई गेआ ऐ जे तुस अल्लाह पर ईमान लेई आओ, हां अस इब्राहीम दे बा'यदे गी जो उसनै अपने प्यो कनै कीता हा, अलग्ग करने आं, ओह एह हा जे अ'ऊं तेरे आस्तै क्षमा' दी प्रार्थना करगा, पर अल्लाह दे मकाबले च अ'ऊं तेरी किसै बी किसम दी मदद करने दे काबल नेई (ते इब्राहीम नै एह बी गलाया हा जे) हे साढ़े रब्ब! अस तेरे पर भरोसा करने आं ते तेरे अगें झुकने आं ते तेरे कश गै असें परतोइयै जाना ऐ ॥ 5 ॥

إِنْ يَشْفُوكُمْ يَكُونُوا كُمْ أَعْدَاءَ
وَيَسْطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَسْتِهِمْ
بِالسُّوءِ وَوَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ ٥

لَنْ تَنْفَعَكُمْ أَرْحَامُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ ۗ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ يَفْصَلُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ
بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ٥

قَد كَانَتْ لَكُمْ أَسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ
وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا
بُرَاءٌ وَأَمْنُكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ
اللَّهِ كُفْرًا بِنَاكُمْ وَبَدَائِنَا وَإِيبَتِكُمْ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ أَبَدًا حَتَّى تُؤْمِنُوا
بِاللَّهِ وَحْدَهُ ۗ أَلَا قَوْلُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ
لَا اسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَا أَمْلِكُ لَكَ
مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۗ رَبَّنَا عَلِّمْنَا
وَالْيَاكُ أَنْبَاءَ وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ٥

1. कुर'आन मजीद च दूई ज'गा औंदा ऐ जे मुनाफिकें आस्तै बी क्षमा प्रार्थना नेई करो। एह इस दे उलट नेई, की जे इस आयत शा सिर्फ इना गै साबत होंदा ऐ जे इब्राहीम दे चाचा जिंदा इत्थें जिकर ऐ, मुनाफिक नेई हे, बल्के धर्म दे बारे च आत्म-भ्रॉति च पेदे हे। इस आस्तै की जे नेक-नीति कनै शिक करदे हे, उंदे आस्तै क्षमा प्रार्थना जायज हा। पर सूर: तौबा आयत 114 शा पता लगदा ऐ जे इक समां ऐसा आया जे हजरत इब्राहीम गी पता लगगी गेआ जे उंदा चाचा दुबधा च नेई, बल्के सच्चे धर्म दा सच्चे गै दुश्मन ऐ उसलै उनें उंदे कनै असंबंधता जाहर करी दिती (रिस्ता तोड़ी दिता)।

हे साढ़े रब्ब! असेंगी काफरे आसतै ठोकर दा कारण नेई बनाऽ, ते साढ़ा कसूर माफ कर! हे साढ़े रब्ब! तू बौहत गालिब (ते) हिकमत आहला ऐं ॥ 6 ॥

उनें लोके च थुआड़े आसतै इक उत्तम आदर्श ऐ यानी हर उस शख्स आसतै जो अल्लाह ते क्यामत आहले ध्याड़े गी दिक्खने दी मेद रखदा ऐ ते जो कोई पिट्ट फेरी लै, ओह याद रक्खै जे अल्लाह बिल्कुल बे न्याज ऐ (ते) बड़ी तरीफे दा हक्कदार ऐ ॥ 7 ॥
(रुकू 1/7)

करीब/ममकन ऐ जे अल्लाह थुआड़े ते उनें लोके दे बशकार जो मुन्करे चा थुआड़े बैरी न, प्रेम पैदा करी देऐ ते अल्लाह उस पर समर्थवान ऐ ते अल्लाह बड़ा बख्शने आहला (ते) बे-ब्याऽ रैहम करने आहला ऐ ॥ 8 ॥

अल्लाह तुसेंगी उनें लोके कनै भलाई ते न्याऽ करने शा नेई रोकदा, जिनें धार्मक मत-भेद कारण थुआड़े कनै लड़ाई नेई कीती ते जिनें तुसेंगी थुआड़े घरें दा नेई कड्डेआ। अल्लाह इन्साफ करने आहले गी पसंद करदा ऐ ॥ 9 ॥

अल्लाह तुसेंगी सिर्फ उनें लोके कनै (दोस्ती करने शा) रोकदा ऐ जिनें थुआड़े कनै धार्मक मत-भेद दी ब'जा करी लड़ाई कीती ते जिनें तुसेंगी घरें दा कड्डेआ जां थुआड़े निकली औने पर थुआड़े दूए बैरिये दी मदद कीती ते जेहके लोक बी ऐसे लोके कनै दोस्ती करन, ओह जालम न ॥ 10 ॥

हे मोमिनो ! जिसलै थुआड़े कश मोमिन औरतां हिजरत करियै औन, तां उनेंगी चंगी-चाल्ती अजमाई लै करा करो। अल्लाह उंदे ईमान गी

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا
وَاعْزِرْنَا رَبَّنَا ۗ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ۝

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن
كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ ۗ وَمَن
يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝

عَسَى اللَّهُ أَن يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ
عَادَيْتُمْ مِنْهُمْ مَوَدَّةً ۗ وَاللَّهُ قَدِيرٌ
وَاللَّهُ عَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

لَا يَهْتِكُمْ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ
يَقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُمْ
مِّن دِيَارِكُمْ أَن تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا
إِلَيْهِمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝

إِنَّمَا يَهْتِكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ
فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُم مِّن دِيَارِكُمْ
وَوَضَعُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَن
تَوَلَّوهُمْ ۗ وَمَن يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ
هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ
مُهَاجِرَاتٍ فَأَمِّجُوهُنَّ ۗ اللَّهُ أَعْلَمُ

भलेआं जानदा ऐ पर जेकर तुस बी जानी जाओ (सेही करी लैओ) जे ओह मोमिन जनानियां न तां उनें गी काफरें कश नेई भेजो। नां ओह उनें (काफरें) आसतै जायज न ते नां ओह (काफर) उंदे (जनानियें) आसतै जायज न ते चाही दा ऐ जे काफरें जो उंदे (जनानियें दे नकाह) पर खर्च कीते दा होऐ ओह उनें गी बापस करी देओ। ते (जिसलै तुस उनें औरतें गी काफरें शा फारग/ मुक्त कराई लैओ तां) उंदे मुआवजे (यानी मैहर/महर) अदा करने दी सूत च जेकर तुस उंदे कनै ब्याह करी लैओ तां तुंदे पर कोई इतराज नेई ते काफर औरतें दे सतीत्व गी कब्जे च नेई रक्खो ते जे किश तुसें उंदे पर खर्च कीते दा ऐ(जेकर ओह नस्सियै काफरें कश उठी जान तां) काफरें शा मंगो। ते (जेकर काफरें दियां जनानियां मुसलमान बनिनियै मुसलमानें कनै आई मिलन तां) जे किश उनें (अपने नकाहें पर) खर्च कीते दा ऐ मुसलमानें शा मंगन^२। एह तुसें गी अल्लाह दा आदेश ऐ। ओह थुआड़े बशकार फैसला करदा ऐ ते अल्लाह जानने आह्ला (ते) हिक्मत आह्ला ऐ ॥ 11 ॥

ते जेकर थुहाड़ी जनानियें चा कोई नस्सियै काफरें कश उठी जा ते उसदे बा'द थुआड़े हत्थ बी कोई काफर जनानी (जंगी कैदी दे तौरें पर) आई जा तां तुस उनें लोकें गी जिंदी जनानियां नस्सियै काफरें कनै जाई मिलियां न उंदे स्हेई खर्च बराबर जो उनें अपने नकाहें पर कीता हा, अदा करी देओ^३

بِأَيْمَانِهِنَّ ۖ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ
فَلَا تَزِرُ جَوْرَهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ ۚ لَأَهْنٌ حَلٌّ
لَهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ ۖ وَأَتَوْهُمُ
مَا أَنْفَقُوا ۖ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ
تَكَفُوهُنَّ إِذَا أْتَيْتُمُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ ۖ
وَلَا تُمْسِكُوا بِعِصَمِ الْكُوفَرِ ۖ وَسَأَلُوا
مَا أَنْفَقْتُمْ وَلَيْسَ لَكُمْ أَنْفَقُوا ۖ ذَلِكُمْ
حُكْمُ اللَّهِ ۖ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۖ وَاللَّهُ
عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

وَإِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ أَرْوَاجِكُمْ إِلَى
الْكُفَّارِ فَعَاقِبْتُمْ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ ذَهَبَتْ
أَرْوَاجُهُمْ ۖ مَثَلُ مَا أَنْفَقُوا ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ
الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝

1. यानी बहूमती सतह पर काफरें शा उस खर्चें दी मांग करो।
2. यानी काफर बी ऐसी औरतें दा खर्च बहूमती सतह पर मुसलमानें शा तलब करन। आखो जे दौनें आयतें च इस चाल्ती दे हक्कें गी सरकार द्वारा मन्नी लैता गेदा ऐ।
3. यानी जो मुसलमान अपनी जनानियें दे नस्सी जाने जां जंग च बंदी बनी जाने कारण नुकसान उठान, सरकार उसदा बदला, जंग च बंदी दे रूपै च पकड़ी गेदी जनानी शा पूरा नेई करै, बल्के अपने पासैआ माली नुकसान दा बदला देऐ तां जे नारी जाति दा जो सम्मान इस्लाम धर्म कायम करना चाहदा ऐ, उसी ठेस नेई लागै।

ते अल्लाह दा संयम अखत्यार करो, जिस पर तुस ईमान ल्यौंदे ओ ॥ 12 ॥

हे नबी! जिसलै तेरे कश जनानियां मुसलमान बनियै औन ते बैअत करने दी इच्छा करन, इस शर्त पर जे ओह अल्लाह दा शरीक कुसैगी नैई बनांगन ते नां गै चोरी करडन ते नां गै जनाह्/व्यभिचार करडन ते नां गै अपनी उलाद दा कत्ल करडन ते नां गै कुसे पर झूठा दोश/तोहमत लाडन ते नेक गल्लै च तेरी ना-फरमानी नैई करडन, तां उंदी बैअत लेई लै कर, ते उंदे आस्तै माफी मंगा कर। अल्लाह बौहत बख्शने आहला (ते) बे-हद रैहम करने आहला ऐ ॥ 13 ॥

हे मोमिनो! कुसै ऐसी कौम कनै दोस्ती नैई करो, जेहदे पर खुदा नराज' ऐ। ओह लोक आखरत दी जिंदगी शा ऐसे मयूस/नराश होई गेदे न जिस चाल्ली काफर लोक कबरें च पेदे लोकें शा मयूस होई चुके दे न ॥ 14 ॥
(रुकू 2/8)

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ
يُبَايِعَنَّكَ عَلَىٰ أَنْ لَا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا
وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ
أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِيَهُ
بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيَنَّكَ
فِي مَعْرُوفٍ فَلْيَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ
اللَّهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا
غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَسُؤُوا مِنَ
الْآخِرَةِ كَمَا يَبِيسُ الْكُفَّارُ مِنَ
أَصْحَابِ الْقُبُورِ ①

ف. ٦
ع. ٢
خ.

1. अर्थ एह ऐ जे जिनें लोकें पर खुदा नराज नैई होंदा ओह अपनी दुश्मनी च हद्द शा नैई बधदे। पर जिंदे पर खुदा नराज होंदा ऐ ओह अपनी दुश्मनी च हद्द शा बधी जंदे न ते इस करी उंदे कनै तल्लक/मेल-जोल रक्खना नजायज होई जंदा ऐ।

سُورَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ خَمْسَ عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

सूर: अल्-सफ़

एह सूर: मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां पंदरां आयतां ते दो रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो बे-
हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

गासैं ते धरती च जे किश बी ऐ, अल्लाह दी
स्तुति करा करदा ऐ ते ओह गालिब (ते)
हिक्मत आहला ऐ ॥ 2 ॥

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ ۗ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ②

हे मोमिनो! तुस ओह गल्लां की आखदे ओ जो
करदे नेई ? ॥ 3 ॥

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا
تَفْعَلُونَ ③

अल्लाह कश ओह गल्ल बौहत बुरी ऐ
जिसी तुस आखो, पर आपूं उसी करो नेई
॥ 4 ॥

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا
تَفْعَلُونَ ④

अल्लाह ते उनें लोकें गी पसंद करदा ऐ जेहके
उस दे रस्ते च रीहगां ब'नी लड़दे न, आखो
जे ओह इक ऐसी कंध न जिसदी मजबूती
आस्तै सिक्का घालियै पाए दा होऐ ॥ 5 ॥

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ
صَفًّا كَأَنَّهُمْ بُيُوتٌ مَّرْصُوعَةٌ ⑤

ते (याद करो) जिसलै मूसा नै अपनी कौम दे
लोकें गी गलाया हा जे हे मेरी कौम दे लोको !
तुस मिंगी की दुख दिंदे ओ? हालांके तुस
जानदे ओ जे अ'ऊं अल्लाह पासेआ थुआड़े
कश रसूल बनियै आए दा आं, पर जिसलै
इसदे होंदे होई बी ओह लोक सिद्धे रस्ते थमां
भटकी गे तां अल्लाह नै उंदे दिलें गी टेढ़ा करी

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يُقَوْمِ لِمَ
تُؤَدُّونَنِي وَقَدْ تَعْلَمُونَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ
إِلَيْكُمْ ۗ فَلَمَّا زَاغُوا أَزَاغَ اللَّهُ
قُلُوبَهُمْ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ

दिता ते अल्लाह आज्ञा-पालन शा तलैहटी/
फिरकी जाने आह्लें गी कामयाबी दा रस्ता नेई
दसदा ॥ 6 ॥

ते (याद करो) जिसलै मर्यम दे पुत्र ईसा नै
अपनी कौम गी गलाया जे हे इझ्राईल दी संतान
! अ'ऊं अल्लाह पासेआ थुआइँ कश रसूल
बनियै आए दा आं। जो (कलाम) मेरे औने
शा पैहलें उतरी चुके दा ऐ अर्थात् तौरात,
अ'ऊं उस दियें भविक्खवाणियें गी पूरा करना
ते इक ऐसे रसूल दी सूचना बी दिन्नां जो मेरे
बा'द औहग ते जिसदा नांऽ अहमद' होग। फी
जिसलै ओह रसूल प्रमाणें कनै आई गेआ तां
उनें गलाया जे एह ते जाहरा -बाहरा (सगर्मीं)
धोखा ऐ ॥ 7 ॥

ते इस शा बदध जालम होर कु'न होई सकदा
ऐ जो अल्लाह पर झूठ घडै? हालाकें ओह
इस्लाम' धर्म पासै बुलाया जंदा ऐ। इस आस्तै
अल्लाह जालमें गी कदें बी हदायत नेई दिंदा।
॥ 8 ॥

ओह चांहदे न जे अपने मूहें परा अल्लाह दे
नूर गी बुझाई देन ते अल्लाह अपने नूर गी पूरा
करियै छोडग, भामें मुन्कर लोक किन्ना गै ना-
पसंद करन ॥ 9 ॥

ओह अल्लाह गै ऐ जिसनै अपने रसूल गी
हदायत दे कनै सच्चा धर्म देख्यै भजे दा ऐ तां

الْفٰسِقِيْنَ ①

وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ بِنَتِيَ
إِسْرَائِيلَ إِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ إِلَيْكُمْ
مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ
وَمُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ يَّآتِي مِنْ بَعْدِي اِسْمُهُ
اَحْمَدُ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوْا
هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ①

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرٰى عَلٰى اللّٰهِ
الْكُذِبَ وَهُوَ يُدْعٰى اِلَى الْاِسْلَامِ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ①

يُرِيْدُوْنَ لِيُظْفَعُوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَقْوَاهِمُ
وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهِ وَلُوْكَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ①

هُوَ الَّذِيْ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهٰدٰى وَدِيْنِ
الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلٰى الدِّيْنِ كُلِّهِ وَلُوْكَرِهَ

1. इस आयत च हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दे बारे भविक्खवाणी ऐ जे बर्नबास दी इज्जील च लिखी गेदी ऐ। ईसाई इसी झूठी इज्जील करार दिंदे न, पर एह पोप दी लाईब्रेरी च मजूद ऐ। इसदे अलावा एह बी सबूत ऐ जे प्रचलत इज्जीलें च फ़ार्कलीत दा समाचार दिता गेदा ऐ ते उसदा अर्थ अहमद गै बनदा ऐ। इस आस्तै इस आयत च हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दा प्रतक्ख ते थुआड़े इक सरूप दा अप्रतक्ख रूप च समाचार दिता गेदा ऐ।
2. इस आयत च इस गल्ला गी स्पष्ट कीता गेदा ऐ जे हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दे सरूप दे बारे च खास ध्यान देना लोड्दा जेहका भामें भविक्खवाणी दा अप्रतक्ख रूपै च प्रतीक ऐ, पर इस्लाम च स्वीकार करने दा उसी न्यौता दिता जाग। हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. ते आपू संसारकें (दुनियां) गी इस्लाम धर्म कबूल करने दा न्यौता दिंदे हे।

जे सारे धर्मों पर उसगी प्रभुत्व प्रदान करे, भामों मुश्रिक किन्ना गै बुरा समझन ॥ 10 ॥ (रुकू 1/9)

हे मोमिनो! क्या अ'ऊं तुसें गी इक ऐसे बपार दी सूचना देआं जो तुसेंगी दर्दनाक अजाब शा बचाई लैग? ॥ 11 ॥

(ओह बपार एह ऐ जे) तुस अल्लाह ते उसदे रसूल पर ईमान ल्याओ ते अपने तन-मन-धन शा अल्लाह दे रस्ते च जिहाद करो। जेकर तुस समझो तां एह थुआड़े आस्ते बौहत बेहतर ऐ ॥ 12 ॥

(ऐसा करने पर) ओह थुआड़े गुनाह माफ करी देग ते तुसेंगी उनें जन्तें च दाखल करग जिंदे हेठ नैहरां बगा करदियां न ते ओह सदा कायम रौहने आहले सुर्ग दे पवित्तर भवनें च (तुसेंगी रक्खग) एह बौहत बड्डी कामयाबी ऐ (जो ओह तुसेंगी देग) ॥ 13 ॥

इसदे अलावा इक होर चीज बी ऐ जिसी तुस बौहत चांहेदे ओ, ओह अल्लाह दी मदद ऐ ते इक तौले मिलने आहली विजय ऐ ते मोमिनें गी शुभ-समाचार पुजाई दे (जे उनेंगी तौले गै मिलने आहली इक होर विजय ऐ) ॥ 14 ॥

हे मोमिनो! तुस अल्लाह दे धर्म दे स्हायक बनी जाओ जियां जे मर्यम दे पुत्र ईसा नै जिसलै अपने हवारियें (यानी साथियें) गी गलाया जे अल्लाह दे (लागै लेई जाने आहले) कर्में च कु'न मेरा स्हायक ऐ तां उनें गलाया जे अस अल्लाह दे (धर्म दे) स्हायक आं। इस आस्ते बनी इघ्राईल दा इक गरोह ते ईमान लेई आया ते दूए गरोह ने नांह करी दिती, जिस पर असें मोमिनें दी उंदे बैरियें दे खलाफ स्हायता (मदद) कीती ते मोमिन जिती गे ॥ 15 ॥ (रुकू 2/10)

ع

المُشْرِكُونَ ٥

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ تِجَارَةٍ تُشْجِيكُمْ مِنْ عَذَابِ أَلِيمٍ ٥

تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ۗ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ٥

يَعْرِفُ لَكُمْ دُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلُكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسْكِنٍ طَيِّبَةٍ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ ۗ ذَٰلِكَ الْقَوْلُ الْعَظِيمُ ٥

وَأُخْرَىٰ تَجُوبُهَا ۗ نَصَرَ مِنَ اللَّهِ وَفَتَحَ قَرِيبٌ ۗ وَبَشِيرٌ الْمُؤْمِنِينَ ٥

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنْصَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِحَوَارِيِّينَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ ۗ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ فَأَمَّا تَطَّيَّفَةٌ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَكَفَرَتْ طَّيْفَةٌ ۗ

فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَىٰ عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ٥

ع

سُورَةُ الْجُمُعَةِ مَدْيَنَةٌ وَهِيَ مَعَ السُّمَلَةِ اثْنَا عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

सूर: अल्-जुमः

एह सूर: मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां बारां आयतां ते दो रुकू न।

अरुं अल्लाह दा नां॑ लेइयै (पढ़ना) जो बे-
हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

गार्सें ते धरती च जे किश बी ऐ ओह अल्लाह
दी स्तुति करदा ऐ। उस (अल्लाह) दी जो
बादशाह बी ऐ ते पवित्र बी ऐ (ते सारे गुणों
दा भंडार ऐ) ते गालिब ते हिक्मत आहला ऐ
॥ 2 ॥

ऊऐ अल्लाह ऐ जिसनै इक अनपढ़ कौम च
उंदे बिच्चा इक शख्स गी रसूल बनाइयै भेजेआ
(जो अनपढ़ होंदे होई बी) उनेंगी अल्लाह दे
हुकम सुनांदा ऐ ते उनेंगी पवित्र करदा ऐ ते
उनेंगी कताब ते हिक्मत दी तलीम दिंदा ऐ,
हालांके ओह इस शा पैहलें बड्डे भारे भलेखे
च हे ॥ 3 ॥

ते इंदे सिवा दूर्ई कौम' दे लोकें च बी (ओह
इसगी भेजग) जो अजे तक इंदे कन्नै नेई

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَسْبِغُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ①

هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمَمِينَ رَسُولًا مِنْهُمْ
يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ
الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ
لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ①

وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ وَهُوَ

1. इस आयत च उस हदीस पारै इशारा ऐ जिस च ओंदा ऐ जे हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. शा सहाबा नै पुच्छेआ जे हे अल्लाह दे रसूल! एह दूर्ई कौम दे लोक कु न? तां तुसें हजरत सल्मान फारसी दे मूंडे पर हल्य रक्खियै गलाया जे जेकर इक समै ईमान सुरय्या नखतर तक बी उठी गेआ तां फारस आहलें दी संतान चा इक जां इक शा बद्ध लोक उसी बापस लेई आंगन। एहदे च इमाम मेहदी दी शुभ-सूचना दिती गेदी ऐ।

मिलीयां ते ओह् गालिब ते हिक्मत आह्ला ऐ
॥ 4 ॥

एह् अल्लाह दी किरपा ऐ, जिसी चांहदा ऐ
दिंदा ऐ। ते अल्लाह बड़ी किरपा आह्ला ऐ
॥ 5 ॥

जिनं लोकें आस्तै तौरत दी आज्ञा दा पालन
करना जरूरी दस्सेआ गेदा ऐ, पर इसदे होंदे
होई बी उनें एहदे पर अमल नेई कीता, उंदी
मसाल गधे आंगर ऐ, जिसने कताबें दा भार
चुक्के दा होंदा ऐ (पर जानदा किश बी नेई)
अल्लाह दे हुकमें शा नाबर कौम दी हालत
बौहत बुरी होंदी ऐ ते अल्लाह जालम कौम
गी कदें कामयाबी दा मूह् नेई दसदा ॥ 6 ॥

तूं गलाई दे हे यहूदियो! जेकर थुआड़ा एह
दा'बा ऐ जे संसार दे सारे लोकें गी छोड़ियै
सिर्फ तुस गै अल्लाह दे दोस्त (प्यारे) ओ ते
उसदी पनाह च ओ ते जेकर तुस (इस दा'बे
च) सच्चे ओ तां मौत दी इच्छा' करो ॥ 7 ॥

पर ओह् अपने पिछले कर्म कारण कदें बी
मुबाहिला (झूठे दी तबाही दी दुआऽ) आस्तै
त्यार नेई होंगन ते अल्लाह जालमें गी भलेआं
जानदा ऐ ॥ 8 ॥

तूं गलाई दे जे ओह् मौत जेहेदे शा तुस नसदे
ओ, सच्चें गै इक रोज तुसंगी आई पकड़ग, फी
तुस परोक्ष ते अपरोक्ष गी जानने आहले खुदा
कश परताए जागेओ ते ओह् तुसंगी थुआड़े कर्म
दी सूचना देग ॥ 9 ॥ (रुकू 1/11)

हे मोमिनो! जिसलै तुसंगी जुम्मे आहलै
रोज नमाज आस्तै बुलाया जा तां अल्लाह गी
चेता करने आस्तै तौले-तौले जा करा करो
ते (खरीद ते) फरोखत गी छोड़ी देआ करो,

العَزِيزُ الْحَكِيمُ ①

ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَّشَاءُ ۗ وَاللَّهُ
ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ②

مَثَلُ الَّذِينَ حُمِلُوا الثَّوْرَةَ ۗ ثُمَّ
لَمْ يُحْمَلُوا بِهَا لِيَزْهَقُوا بِهَا نَفْسًا
وَمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا لَشَاكِرِينَ ③
كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ④

قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا إِن زَعَمْتُمْ
أَنَّكُمْ أَوْلِيَاءُ لِلَّهِ مِن دُونِ النَّاسِ
فَتَمَنَّوْا الْمَوْتَ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ⑤
وَلَا يَتَمَنَّوْنَ أَبَدًا بِمَا قَدَّمْت أَيْدِيَهُمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ⑥

قُلْ إِن الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُ
مُلْقِيكُمْ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْعِيبِ
وَالشَّهَادَةِ فَيُنبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ⑦

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ
مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ

1. अर्थात् हजरत मुहम्मद कनै मुबाहिला (इक दूप गी शाप देना जे झूठे पर लानत पवै ते सच्चे दी कामयाबी होऐ) करो।

سُورَةُ الْمُنَافِقُونَ مَدْيَنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ اثْنَا عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

सूर: अल्-मुनाफ़िकून

एह सूर: मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां बारां आयतां ते दो रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांS लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

जिसलै तेरे कश मुनाफ़िक्र औँदे न ते आखदे
न जे अस कसम खाइयै गुआही दिन्ने आं जे
तू अल्लाह दा रसूल ऐं ते अल्लाह जानदा ऐ
जे तू उसदा रसूल ऐं, पर (कनै गै) अल्लाह
कसम खाइयै एह गुआही दिंदा ऐ जे मुनाफ़िक्र
बूटे न ॥ 2 ॥

उनें अपनी कसमें गी (तेरी पकड़ शा बचने
आस्तै) ढाल बनाई लेदा ऐ ते ओह अल्लाह
दे रस्ते थमां लोकें गी रोकदे न। जे किश
ओह करदे न बौहत बुरा ऐ ॥ 3 ॥

ओह लोक एह कम्म इस आस्तै करदे न जे
ओह पैहलें ईमान ल्याए, फी उनें इन्कार करी
दिता जेहदे नतीजे च उंदे दिलें पर मोहर' लाई
दिती गई ते हून ओह नेई समझदे ॥ 4 ॥

जिसलै तू उनेंगी दिक्खना ऐं तां उंदे मुट्टे-
ताजे शरीर तुगी बड़े चंगे लागदे न ते जेकर
ओह कोई गल्ल करदे न (तां ऐसी चलाकी

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ
إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ
لَرَسُولُهُ ۗ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ
لَكَاذِبُونَ ②

إِتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ ۗ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ③

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا فَطَغِيَ
عَلَى قُلُوبِهِمْ فَمَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ④

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۗ
وَإِنْ يَقُولُوا تَسْمَعُ لِقَوْلِهِمْ ۗ كَانَتْهُمْ

1. अल्लाह पासेआ मोहर अकारण नेई लग्गी बल्के ओहदा कारण उनें लोकें दे अपने गै बुरे कर्म हे जो गुप्त हे। ऊऐ गुप्त कर्म मोहर लाने दा कारण बने न।

कन्नै जे) तू उंदी गल्लै गी (उंदी परिस्थितियें गी जानने पर बी) सुनी लैना ऐं। (ओह सभा च इस चाल्ली बैठे दे होंदे न) आखो जे ओह बड़डे-बड़डे शतीर न जेहके (कंधा कन्नै) अटकाए गेदे न। जिसलै (कुरआन च) कुसै अजाब दा समाचार उतरै तां ओह समझदे न जे एह साढ़े गै बारे च ऐ। ओह पक्के बैरी न। इस आस्तै तू उंदे शा सोहगा रौह। अल्लाह उनें गी हलाक करै। ओह कुत्थू दा फेरियै (सचाई दे रस्ते शा दूर) लेते जंदे न? ॥ 5 ॥

ते जिसलै उनेंगी गलाया जंदा ऐ जे आओ अल्लाह दा रसूल थुआड़े आस्तै माफी दी दुआऽ करै तां ओह अपने सिर (घमंड ते इन्कार कन्नै) फेरी लेंदे न ते तू उनेंगी दिक्खना ऐं जे ओह लोकें गी सच्चे रस्ते थमां फेरा करदे न ते ओह घमंड दे रोगै च फसे दे न ॥ 6 ॥

तू उंदे आस्तै माफी दी दुआऽ करै जां नेई करै, उंदे आस्तै बराबर ऐ, की जे अल्लाह उनेंगी कदें बी माफ नेई करग (जिन्ना चिर जे ओह आपू तोबा नेई करी लैन।) अल्लाह आज्ञा-पालन नेई करने आहली कौम गी कामयाबी नेई दिंदा ॥ 7 ॥

इयै लोक न जो आखदे न जे अल्लाह दे रसूल कश जेहके लोक रौहदे न उंदे पर खर्च नेई करो, इत्थें तक जे ओह (फाके शा तंग आइयै) नस्सी जान, हालांके गासं ते धरती दे खजाने अल्लाह कश न, पर मुनाफिक्र नेई समझदे ॥ 8 ॥

ओह आखदे न जे जेकर अस परतोइयै मदीना पासै गे तां मदीना दा जेहका सर्वश्रेष्ठ आदमी

حُشِبَ مُسَدَّدَةً ۖ يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۖ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۗ قُلْ لَهُمُ اللَّهُ ۗ أَلِيٌّ يُوقِفُونَ ۝

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوَّارٌ وَهُمْ وَسْهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ۝

سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۗ لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝

هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا عَلَيَّ مِنْ عِنْدِ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنْفَضُوا ۗ وَاللَّهُ خَزَائِنُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ۝

يَقُولُونَ لَيْنَا رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ

ऐ ओह मदीना दे सारें शा अपमानत¹ आदमी गी उल्थूं दा कड़्ढी देग ते आदर ते अल्लाह ते उसदे रसूल ते मोमिनं गी गै हासल ऐ पर मुनाफिक नेई जानदे ॥ 9 ॥ (रुकू 1/13)

हे मोमिनो! तुसंगी थुआड़े धन ते थुआड़ी संतानां अल्लाह दे जिकर थमां गाफिल नेई करी देन ते जेहके लोक ऐसा करडन ओह गै घाटा खाने आहले होंग ॥ 10 ॥

ते (हे मोमिनो!) जे किश असें तुसंगी दिते दा ऐ ओहदे चा मौत औने शा पैहलें-पैहलें खर्च करी लैओ तां जे ऐसा नेई होऐ जे (मौत औने पर खर्च नेई करने आहले नै) आखना पवै जे हे साढ़े रबब! तोह की नेई मिगी थोढ़ी-हारी ढिल्ल दिती तां जे उस ढिल्ल दरान अ'ऊं किश दान देई लैंदा ते सदाचारी बनी जंदा ॥ 11 ॥

पर जिसलै कुसै दी मौत आई जंदी ऐ तां अल्लाह उसी ढिल्ल नेई दिंदा होंदा ते अल्लाह थुआड़े कर्म गी चंगी-चाल्ली जानदा ऐ ॥ 12 ॥ (रुकू 2/14)

يُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ ۗ وَلِلَّهِ
الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَكِنَّ
الْمُنْفِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ
وَأَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۗ وَمَنْ
يَفْعَلْ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ۝

وَأَنْفُسُكُمْ مِمَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ
أَحَدَكُمْ الْمَوْتُ فَيَقُولُ رَبِّ لَوْلَا
أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ آجَلٍ قَرِيبٍ ۗ فَأَصْدَقَ
وَأَكُنَّ مِنَ الصَّٰلِحِينَ ۝

وَلَنْ يُؤَخِّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا ۗ
وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

1. अब्दुल्लाह पुत्र उबय्य पुत्र सलूल नै जो मुनाफिकेँ दा सरदार हा, एह गल्ल 'बनी मुस्तलक' नाँऽ दे युद्ध मोकें हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. पासै संकेत दिदे होई मुसलमानें गी आपस च लड़ाने आस्तें आखी ही, पर इस गल्ला दी जानकारी उसदे अपने पुत्ररै गी होई गेई जेहका इक सच्चा शरधालू मोमिन हा। जिसलै फौज बापस मदीना पुज्जी तां ओह अगें होइयें मदीना दे प्रवेश द्वार पर खडोई गेआ ते अपनी तलोआर सूतरियें अपने पिता गी गलाया जे ऊँटें परा ख'ल्ल उतरी आ ते मदीना दे सारे लोकें दे सामनै उच्ची अवाज च एह आख जे मदीना दा सर्वश्रेष्ठ आदमी हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. ऐ ते सारें शा नीच-कमीनां अ'ऊं आं। जिन्ना चिर एह नेई आखगा, मदीना च दाखल नेई होई सकगे ते जेकर नस्सने जां किश होर करने दी कोशश कीती तां तेरा सिर कप्पी देंग। इस पर अब्दुल्लाह डरी गेआ ते उसनै सारे लोकें दे सामनै ओह गल्ल आखी उसलै ओहदे पुत्ररै उसी मदीना च दाखल होन दिता। (सीरत हलबियः)।

سُورَةُ التَّغَابُنِ مَدِينَةٌ وَهِيَ مَعَ السَّمَلَةِ تِسْعَ عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

सूर: अल्-तगाबुन

एह सूर: मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां उन्नी आयतां ते दो रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांउ लेइयै (पढ़ना) जे बे-
हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

गासैं ते धरती च जे किश ऐ अल्लाह दी स्तुति
करा करदा ऐ। बादशाहत बी उससै दी ऐ ते
तरीफ बी उससै दी ऐ ते ओह हर चीजै पर
समर्थ रखदा ऐ ॥ 2 ॥

ऊऐ ऐ जिसनै तुसेंगी पैदा कीता। इस आसतै
तुंदे चा कोई ते इन्कार करने आहला बनी जंदा
ऐ ते कोई ईमान आहनुने आहला बनी जंदा
ऐ ते अल्लाह थुआड़े कर्मै गी दिक्खा करदा
ऐ ॥ 3 ॥

गासैं ते धरती गी उसनै खास मकसद आसतै
पैदा कीते दा ऐ ते उससै नै थुआड़ियां सूरतां
बनाई दियां न ते थुआड़ी सूरतें गी बौहत
अच्छा बनाए दा ऐ ते उससै कश तुसैं परतोइयै
जाना ऐ ॥ 4 ॥

गासैं ते धरती च जे किश ऐ ओह उसी
जानदा ऐ, ते उस कर्म गी बी जानदा ऐ
जो तुस छपालदे ओ जां जाहर करदे ओ।
ते अल्लाह दिलै दियें गल्लें गी बी जानदा
ऐ ॥ 5 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَسْبِخُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحُدُودُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ①

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَمِنْكُمْ
مُؤْمِنٌ ① وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ①

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِالْحَقِّ
وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ① وَإِلَيْهِ
الْمَصِيرُ ①

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ
مَا تُسْرُونَ وَمَا تَعْلَمُونَ ① وَاللَّهُ عَلِيمٌ
بِدَاتِ الصُّدُورِ ①

क्या तुसेंगी अपने शा पैहले काफरे दिया खबरां नेई मिलियां। उनें अपने कर्मे दी स'जा भुगती ते उंदे आस्तै दर्दनाक अजाब (निश्चत) ऐ ॥ 6 ॥

एह इस आस्तै होआ जे उंदे रसूल उंदै कश दलीलां लेइयै औंदे रेह पर ओह इयै जवाब दिंदे रेह जे क्या इन्सान दे रूपे च औने आहले लोक गै असेंगी हदायत देंगन (जेकर हदायत देनी होंदी तां फरिश्ते गासै थमां उतरदे) इस आस्तै उनें कुफर कीता ते पिटठ फेरी लैती, ते अल्लाह नै बी उंदे ईमान शा बे-न्याजी जाहर कीती ते अल्लाह हर-इक शा बे-न्याज ऐ ते सारी स्तुतियें दा मालक ऐ ॥ 7 ॥

काफर लोक समझदे न जे ओह कर्दे बी (जींदे करियै) नेई दुआले जांगन। तूं आखी दे जे जिस चाल्ली तुस समझदे ओ, ऐसा नेई होग। बल्के मी अपने रब्ब दी कसम तुसेंगी जींदा करियै दुआलेआ जाग, फी तुसेंगी थुआड़े कर्मे शा बाकफ कराया जाग ते एह गल्ल अल्लाह आस्तै असान ऐ ॥ 8 ॥

इस आस्तै हे लोको! अल्लाह ते उसदे रसूल पर ईमान आहनो ते उस नूर (यानी कुर'आन) पर बी जो असें उतारे दा ऐ जे अल्लाह थुआड़े कर्मे गी जानदा ऐ ॥ 9 ॥

जिस रोज तुसें सारे गी किट्टे करने आहलै रोज (यानी क्यामत आहलै थ्याड़ै जींदे करियै) किट्टे करग, एह हार-जीत दे फेसले दा दिन होग ते जो कोई अल्लाह पर ईमान आहनदा ऐ ते ओहदे मताबक कर्म करदा ऐ, अल्लाह बी उस दियें बुराइयें गी खट्टी दिंदा ऐ ते उसी ऐसे सुगै च दाखल करदा ऐ जिंदे हेठ

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُؤُا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ فَدَاقُوا وِبَالَ أَمْرِهِمْ وَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ①

ذَلِكَ بِأَنَّهُ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَعَالَوْا أَبَشْرٌ يَّهْدُونَنَا فَكَفَرُوا وَتَوَلَّوْا وَاسْتَعَى اللَّهُ وَاللَّهُ عَنِّي حَمِيدٌ ①

رَعِمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ لَنْ يُبْعَثُوا قُلْ بَلَى وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ① وَذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ①

فَأْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي أَنْزَلْنَا ① وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ①

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذَلِكَ يَوْمُ الثَّغَابِنِ ① وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكْفِرْ عَنهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ① ذَلِكَ الْفَوْزُ

नेहरां बगदियां न। ओह उंदे च सदा आस्तै नवास करडन। एह बौहत बड्डी कामयाबी ऐ ॥ 10 ॥

ते जिनें इन्कार कीता ते साढ़ी आयतें गी झुटलाया, ओह नरक बासी न। ओह नरकै च बास करडन ते ओह अत्त गै बुरा ठकाना ऐ ॥ 11 ॥ (रुकू 1/15)

कोई बिपता नेई औंदी, पर अल्लाह दे हुकम कनै ! ते जो अल्लाह पर ईमान आहनदा ऐ, ओह उसदे दिलै गी कामयाबी दे रस्तें पासे फेरी दिंदा ऐ ते अल्लाह हर चीजै गी जानदा ऐ ॥ 12 ॥

ते अल्लाह ते रसूलें दा आज्ञा-पालन करो। पर जेकर तुस फेरी जाओ, तां साढ़े रसूल दे जिम्मे ते गल्लै गी खोहलियै पुजाई देना गै ऐ ॥ 13 ॥

अल्लाह दे सिवा कोई उपास्य नेई ते मोमिनें गी अल्लाह पर गै भरोसा करना चाही दा ॥ 14 ॥

हे मोमिनो! थुआड़ी जनानियें ते टब्बरै बिच्चा किश ऐसे न जो थुआड़े दुश्मन न। इस आस्तै उंदे शा सोहगे र'वो ते जेकर तुस माफ करी देओ ते दरगुजर करी देओ, तां अल्लाह बौहत माफ करने आहला (ते) बे-इन्तहा कर्म करने आहला ऐ ॥ 15 ॥

थुआड़े माल ते थुआड़े टब्बर-टोर सिर्फ इक अजमैश दा जरीया न, ते अल्लाह कश बौहत बड्डा अजर/सिला ऐ ॥ 16 ॥

इस आस्तै जिन्ना होई सकै अल्लाह दा संयम अखत्यार करो, ते उस दी गल्ल सुनो ते उसदा आज्ञा-पालन करो, ते अपने माल ओहदे रस्ते

الْعَظِيمِ ①

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا
وَبئسَ الْمَصِيرُ ①

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ
وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ يَهْدِ اللَّهُ قَلْبَهُ
وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ①

وَاطِيعُوا اللَّهَ وَاطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ
تَوَلَّيْتُمْ فَأِنَّمَا عَلَى رَسُولِنَا الْبَلْغُ
الْمُبِينُ ①

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُونَ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا أَرْوَأَجِبْكُمْ
وَأَوْلَادِكُمْ وَعَدْوَاكُمْ فَاخْذَرُوا هُمْ ۚ
وَإِنْ تَعَفَوْا وَتَصَفَحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ
اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ①

إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ
وَاللَّهُ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ①

فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوا
وَاطِيعُوا وَأَنْفِقُوا خَيْرًا لِأَنْفُسِكُمْ ①

च खर्च करदे रौह, थुआड़ी जानें (यानी थुआड़े अपने) आस्तै बेहतर होग ते जेहके लोक अपने दिलै दी कंजूसी शा बचाए जंदे न, ओह गै कामयाब होंदे न ॥ 17 ॥

जेकर तुस अल्लाह आस्तै अपने माल बिच्चा इक खासा हिस्सा कडिदियै बकख करी लैओ, तां ओह उस हिस्से गी थुआड़े आस्तै बधाग ते थुआड़े आस्तै क्षमा दे साधन पैदा करग ते अल्लाह बौहत कदरदान (ते) हर गल्लै गी समझने आहला ऐ ॥ 18 ॥

ओह परोक्ष (हाजर) ते अपरोक्ष (गायब) गी जानदा ऐ ते गालिब (ते) हिक्मत आहला ऐ ॥ 19 ॥ (रुकू 2/16)

وَمَنْ يُؤْكَلْ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ﴿٢٨﴾

إِنْ تُقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضْعِفْهُ
لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ شَكُورٌ
حَلِيمٌ ﴿١٨﴾

عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٩﴾

سُورَةُ الطَّلَاقِ مَدِينَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ ثَلَاثَ عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

सूर: अल्- तलाक़

एह सूर: मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां तेरां आयतां ते दो रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांS लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

हे नबी! (ते उसी मन्नने आहलेओ!) जिसलै
तुस जनानियें गी तलाक़ देओ तां उनेंगी
निश्चत' समे मताबक तलाक़ देओ ते (तलाक़
दे बा'द) समें दा अंदाजा रक्खो ते अल्लाह
दा जो थुआड़ा रब्ब ऐ संयम अखत्यार करो।
उनेंगी उंदे घरें दा नेई कइवो ते नां ओह
आपूं निकलन सिवाए इसदे जे ओह इक
खु'ल्ले पाप³ च ग्रसी दियां होन ते एह
अल्लाह दियां हद्दां न ते जेहका कोई अल्लाह
दियें हद्दें गी त्रोड़ी दिंदा ऐ ओह अपनी
जान (अपने आपै) पर जुलम करदा ऐ (हे
तलाक़ देने आहले!) तुगी पता नेई जे शायद

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ
فَطَلَّقُوهُنَّ أِحْصَاءَ الْعِدَّةِ ٢
وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ لَا تُخْرِجُوهُنَّ مِنْ
بُيُوتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ
بِفَاحِشَةٍ مُّبَيَّنَةٍ ٣ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ
وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ ظَلَمَ
نَفْسَهُ ٤ لَا تَدْرِي لَعَلَّ اللَّهَ يُحْدِثُ

1. खताब च शब्द नबी ऐ, पर मुराद उनेंगी मन्नने आहले न, की जे अनुसरण करने आहले नबी दे अधीन होंदे न।
2. यानी गुस्से दी हालत च तलाक़ नेई देओ बल्के ऐसी हालत च तलाक़ देओ जिसलै जे ओह फुल्लें नेई आई दियां होन (यानी मासक धर्म दी हालत च नेई होन) ते उस शा पैहलें संभोग बी नेई कीते दा होऐ। तां जे सारा गुस्सा ढली चुके दा होऐ ते काम बासना नै उतेजत होइयै प्रेम-भावना पैदा करी दिती दी होऐ ते तलाक़ देने दी नोबत गै नेई आवै।
3. मतलब एह जे जेकर ओह निकलउन तां ओह इक खु'ल्ले पाप च ग्रसत होंगन।

अल्लाह इस घटना दे बाद किश होर प्रकट करै ॥ 2 ॥

بَعْدَ ذَلِكَ أَمْرًا ①

फ्ती जिसलै जनानियां इद्दत दी आखरी हद्द तगर पुज्जी जान तां उनेंगी मनासब तरीके कनै रोकी लैओ जां उनेंगी मनासब तरीके कनै बक्ख (फ्नारग) करी देओ। ते अपने चा दऊं न्यांऽ करने आहले गुआह बनाई लैओ। ते खुदा आस्तै सच्ची गुआही देओ। तुंदे चा जो कोई अल्लाह ते क्यामत आहले ध्याड़े पर ईमान आहनदा ऐ उसगी एह नसीहत कीती जंदी ऐ ते जो शख्स अल्लाह दा संयम अखत्यार करग अल्लाह ओहदे आस्तै कोई नां कोई रस्ता कड्डी लैग ॥ 3 ॥

فَإِذَا بَلَغَ آجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ
بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ
وَاشْهَدُوا ذَوَى عَدْلٍ مِنْكُمْ وَأَقِيمُوا
الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ۗ ذَٰلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۗ وَمَنْ يَتَّقِ
اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ①

ते उसगी उत्थूं दा रोजी देग जित्थूं दा रिशक औने बारै उसी चित चेता नेई होग ते जो कोई अल्लाह पर भरोसा करदा ऐ ओह (अल्लाह) ओहदे आस्तै काफी ऐ अल्लाह सच्चें गै अपने मकसद गी पूरा करियै छोड़दा ऐ अल्लाह नै हर चीजै दा अंदाजा निश्चत करी रखे दा ऐ ॥ 4 ॥

وَيَرْزُقَهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۗ وَمَنْ
يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ
بَالِغُ أَمْرِهِ ۗ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ
قَدْرًا ①

ते (धुआड़ी जनानियें चा) ओह (जनानियां) जो मासक धर्म शा नाराश होई चुकी दियां होन जेकर (उंदी इद्दत दे बारै) तुसेंगी शक्क होऐ तां उंदी इद्दत त्रै म्हीने ऐ ते इस्से चाल्ली उंदी बी जिनें गी मासक धर्म' नेई आवा दा होऐ। ते जिनें जनानियें गी बच्चा रेही गेदा होऐ उंदी इद्दत बच्चा जम्मेने तक ऐ ते जो कोई अल्लाह दा संयम अखत्यार करै अल्लाह जरूर उसदे मामले/कम्मै च असान्नी पैदा करी दिंदा ऐ ॥ 5 ॥

وَالَّذِي يَسُنَّ مِنَ الْمَحْضِ مِنْ نِسَائِكُمْ
إِنْ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلَاثَةُ أَشْهُرٍ ۗ وَالَّذِي
لَمْ يَحْضَنْ ۗ وَأُولَاتِ الْأَحْمَالِ
آجَلُهُنَّ أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۗ وَمَنْ
يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا ①

1. यानी उस बेलै मासक धर्म रुकी चुके दा होऐ जां शुरू थमां औंदा गै नेई होऐ, जियां जे केई जनानियें गी एह बमारी होंदी ऐ।

एह अल्लाह दा हुकम ऐ जो उसनै थुआड़े पासै उतारे दा ऐ ते जो कोई अल्लाह दा संयम अखत्यार करै ओह (खुदा) उस दी बदियां (पाप) खतम करी दिंदा ऐ ते उसदा अजर (सिला) बधाई दिंदा ऐ ॥ 6 ॥

(हे मुसलमानो! तलाक़शुदा जनानियें दे हक्क देना नेई भुल्लो) उनेंगी उर्थें गै रक्खो जित्थें तुस अपनी समर्थ मताबक रौंहे ओ ते उनेंगी किसै चाल्ली दा दुख नेई देओ इस आस्तै जे उनेंगी तंग करियै (घरा) कड़्ही देओ ते जेकर ओह गर्भवती होन तां उसलै तगर उंदे पर खर्च करो जां तक ओह बच्चे गी जनम नेई देई लैन ते जेकर ओह थुआड़े बच्चे गी दुद्ध पलैन तां उनेंगी मनासब उजरत (यानी बदला) देओ ते रीति-रवाज मताबक आपसी सलाह-मशबरे राहें उसदा फैसला करो। ते जेकर आपस च कुसै फैसले पर नेई पुज्जी सको तां कोई दूई जनानी उस बच्चे गी दुद्ध पलैऽ ॥ 7 ॥

चाहीदा ऐ जे मालदार मनुक्ख (दुद्ध पलैने, आहली जनानी पर) अपनी समर्थ मताबक खर्च करे ते जो धनवान नेई ऐ ओह अल्लाह दे दिते मताबक खर्च करे। अल्लाह कुसै जीव गी ऐसे आदेश नेई दिंदा जो उस दी ताकत शा बाहर होन, बल्के ऐसे गै हुकम दिंदा ऐ जिनें गी पूरा करने दी तफोक बी बख्शी दी होऐ। इस आस्तै जेकर कोई शख्स खुदा दे हुकम पर अमल करदे होई दुद्ध पलैने आहली जनानी दी मजदूरी ठीक-ठीक देग तां जेकर ओह तंगदस्त बी ऐ तां अल्लाह इस दे बा'द ओहदे आस्तै फगखी/असान्नी दी हालत पैदा करी देग ॥ 8 ॥ (रुकू 1/17)

ذَلِكَ أَمْرُ اللَّهِ أَنْزَلَهُ إِلَيْكُمْ ۖ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُعْظِمْ لَهُ أَجْرًا ۝

أَسْكُنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِنْ وَجْدِكُمْ وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِضَيِّقُوا عَلَيْنَّ ۖ وَإِنْ كُنَّ أَوْلَاتٍ حَمَلٍ فَأَنْفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّىٰ بِيضْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۚ وَاتَّمِرُوا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوفٍ ۚ وَإِنْ تَعَاسَرْتُمْ فَسَرِّضْ لَهَا أُخْرَىٰ ۝

لِيُنْفِقَ ذُو سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهِ ۖ وَمَنْ قَدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنْفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ۝

ते मती-सारी बस्तियां न जिनें अपने रब्ब दे हुकम दा ते रसूलें दा इन्कार कीता। इस पर असें उंदे शा बड़ी सख्ती कन्ने स्हाब लैता ते उंदे पर सख्त अजाब नाज़ल कीता ॥ 9 ॥

ते उनें अपने कीते दी स'जा भुगती लैती, ते उंदा अन्जाम घाटा गै निकलेआ ॥ 10 ॥

ऐसे लोकें आस्तै अल्लाह नै सख्त अजाब निश्चत कीते दा ऐ। इस आस्तै मोमिनें चा हे अकलमंदो! अल्लाह दा संयम अख्त्यार करो। अल्लाह नै थुआड़े आस्तै शरफ/गौरव दा समान यानी रसूल उतारे दा ऐ ॥ 11 ॥

रसूल जो तुसेंगी अल्लाह दियां ऐसियां आयतां सुनांदा ऐ जो (हर नेकी ते बदी गी) खोहली दिंदियां न जिसदा नतीजा एह होंदा ऐ जे मोमिन लोक जो अपने ईमान दे मताबक कर्म करदे न, ओह न्हेरें चा निकलियै लोई च आई जंदे न ते जो बी अल्लाह पर ईमान ल्यावै, ते ओहदे मताबक कर्म करै ओह उसी ऐसी जन्तें च दाखल करग, जिंदे हेठ नैहरां बगा दियां होंगन। ओह उंदे च म्हेशां आस्तै बास करडन। अल्लाह नै ऐसे लोकें आस्तै बड़ी पसंदीदा (उत्तम) रोजी प्रदान कीती दी ऐ ॥ 12 ॥

अल्लाह ऊरे ऐ जिसनै सत्त गास पैदा कीते दे न ते धरतरीं बी गासें दी गिनती मताबक (पैदा कीती दियां न) इंदे (गासें ते इनें धरतरियें दे) बश्कार उसदा हुकम नाज़ल होंदा रौंहदा ऐ तां जे तुसेंगी पता लगगी सकै जे अल्लाह हर इक चीजै गी करने च समर्थ¹

وَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا
وَرُسُلِهِ فَحَاسَبْنَاهَا حِسَابًا شَدِيدًا
وَوَعَدْنَاهَا عَذَابًا نُكْرًا ①

فَدَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ
أَمْرِهَا خُسْرًا ②

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا فَاتَّقُوا اللَّهَ
يَا أُولِي الْأَلْبَابِ الَّذِينَ آمَنُوا ③
فَلَا تَنْزِلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ④

رَسُولًا يَتْلُوا عَلَيْكُمْ آيَاتِ اللَّهِ مَبِينَاتٍ
يُخْرِجَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ⑤ وَمَنْ يُؤْمِنْ
بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
أَبَدًا ⑥ فَدَأَّ أَحْسَنَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا ⑦

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَوَاتٍ وَمَنْ
الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ ⑧ يَنْزِلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ
يَتَعَلَّمُونَ أَنْ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑨
وَأَنَّ اللَّهَ قَدَّاحٌ بِكُلِّ شَيْءٍ عَالِمٌ ⑩

1. भामें तुस गुमराही च किन्ने गै बधी जाओ। फी बी ओह अपनी हदायत भेजियै तुसेंगी बापस आहनी सकदा ऐ।

ऐ ते इससै चाल्ली अल्लाह ने हर चीजै गी
 अपने इलम राहें घेरी रक्खे दा ऐ' ॥ 13 ॥
 (रुकू 2/18)

-
1. यानी जिसलै खुदा दी तलीम औंदी ऐ तां हर इन्सान दी अंदरूनी काबलीयत दे मताबक औंदी ऐ। जेह्दे शा एह् पता लगदा ऐ जे खुदा नै इन्सान दी सारी ताकतें गी अपने इलम राहें घेरी रक्खे दा ऐ।
-

سُورَةُ التَّحْرِيمِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ ثَلَاثُ عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

सूर: अल्-तहरीम

एह सूर: मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां तेरां आयतां ते दो रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांउ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला ते बार-बार रैहम
करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

हे नबी! तूं उस (चीजै) गी की रहाम करना
ऐं जिसगी अल्लाह नै तेरे आस्तै ल्हाल कीते
दा ऐ तूं अपनी जनानियें दी खुशी चाहन्ना ऐं
ते अल्लाह बौहत बख्खाने आह्ला (ते) बे-
इन्तहा कर्म करने आह्ला ऐ ॥ 2 ॥

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ
تَبَتَّغِي مَرْضَاتَ أَزْوَاجِكَ ۗ وَاللَّهُ
عَفُورٌ رَّحِيمٌ ②

अल्लाह नै ऐसी कसमें दा खोहलना (यानी
तोड़ना) थुआड़े आस्तै जरूरी गलाए दा ऐ
(जिंदे कन्नै फसाद पैदा होन) ते अल्लाह
थुआड़ा सुआमी ऐ ते ओह बौहत जानने आह्ला
(ते) हिक्मत आह्ला ऐ ॥ 3 ॥

قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ
وَاللَّهُ مَوْلَاكُمْ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ③

ते याद करो जिसलै नबी नै अपनी लाड़ियें चा
कुसै इक कन्नै इक अधूरी गल्ल आखी। फी
जिसलै उसने ओह गल्ल कुसै गी सुनाई दिती
तां अल्लाह नै उस (कमजोरी) दी खबर उस
(यानी नबी) गी देई दिती, तां उसनै (गल्लै
दा) किश हिस्सा लाड़ी गी सुनाई दिता ते
किश हिस्से गी छपाली लैता। फी जिसलै
उसनै इस अमर घटना दा जिकर उस (लाड़ी)
कन्नै कीता तां उसनै गलाया जे तुसेंगी एह

وَإِذْ أَسْرَ النَّبِيُّ إِلَىٰ بَعْضِ أَزْوَاجِهِ
حَدِيثًا ۗ فَلَمَّا نَبَّأَتْ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ
عَلَيْهِ عَرَفَ بَعْضُهُ وَأَعْرَضَ عَنْ
بَعْضٍ ۗ فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِ قَالَتْ مَنْ أَنْبَأَكَ

खबर कुस नै दिती ऐ इस पर उस (यानी नबी) नै गलाया जे मिगी बड़े इलम आहले महाज्ञानी (ते) जानी जान खुदा नै खबर दिती ऐ ॥ 4 ॥

फी उसने दौनीं लाड़ियें गी गलाया, हे लाड़ियो! जेकर तुस अपनी गलती (भुल्लै) पर अल्लाह अगमें तोबा करो ते थुआड़े दौनीं दे दिल ते पैहलें गै इस गल्ला पासै झुके दे न (ते तोबा करने आस्तै त्यार न) ते जेकर तुस दमैं इक-दूई दी मदद आस्तै त्यार होई जागियां तां याद रक्खो जे अल्लाह उस रसूल दा दोस्त ऐ। इसै चाल्ली जिब्रील ते सारे मोमिन बी ते इंदे अलावा फरिश्ते बी नबी दे पिच्छें (मददगार) न ॥ 5 ॥

उसदे रब्ब आस्तै बिल्कुल ममकन ऐ जे जेकर ओह तुसंगी तलाक देई देरे तां ओह थुआड़े शा चंगी जनानियां बदलियै उसी देई देरे जो मुसलमान बी होन, मोमिन बी होन फरमांबरदार बी होन, तोबा करने आहली, अबादत करने आहली, रोजा रक्खने आहली, बिधवा बी होन ते कुआरियां बी ॥ 6 ॥

हे मोमिनो! अपने टब्बै गी बी ते अपने आपै गी बी दोजख शा बचाओ जिसदा बालन खास लोक (यानी मुन्कर) होंगन ते इसै चाल्ली पत्थर (जिंदे बुत्त' बने) उस (नरक) पर ऐसे फरिश्ते नयुक्त न जो कुसै दी मिन्नत-समाजत सुनने आहले नेई बल्के अपने फर्ज अदा करने (नभाने) च बड़े सख्त न ते

هَذَا قَالَ نَبَايَ الْعَلِيمِ الْخَبِيرِ ۝

إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا
وَإِنْ تَظْهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ
وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمَلَائِكَةُ
بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرٌ ۝

عَلَى رَبِّهِ إِنْ طَلَّقَنَّ أَنْ يُبَدَّلَهُ
أَزْوَاجًا خَيْرًا مِنْكُنَّ مُسْلِمَاتٍ مُّؤْمِنَاتٍ
قَانِتَاتٍ تَيَبَّتْ عِبْدَتِ سَبَّحَتْ تَيَبَّتْ
وَأَبْكَرًا ۝

يَأْيُهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ
وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ
وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَائِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ
لَّا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ

1. सुआल होई सकदा ऐ जे पत्थरें दे बुत्तें गी अग्गी च सुट्टने दा केह मकसद ऐ? ओह ते बे-जान न। इसदा जवाब एह ऐ जे भामें ओह बे-जान न पर मुन्कर ते उनेंगी खुदाई सिफतें आहले दसदे हे। उनेंगी जहन्नम च सुट्टने करी मुन्करें गी अपने अकीदे दी गलती साबत होंदी सेही होंदी ऐ ते जड़ पदार्थ (बुत्त) होने करी बुत्तें पर कोई अत्याचार नथा कीता जे ओह बे-जान न।

अल्लाह नै उनेंगी जो हुकम दिता ऐ उसदी ओह ना-फरमानी नेई करदे ते जे किश गलाया जंदा ऐ ऊऐ करदे न ॥ 7 ॥

हे मुन्करो! अज्ज ब्हान्नं नेई बनाओ। तुसेंगी थुआड़े कर्में मताबक बदला मिलग ॥ 8 ॥ (रुकू 1/19)

हे मोमिनो! अल्लाह पासै चेचे तौरा पर ध्यान देओ (मुनाफिकत दी कोई मलावट नेई होऐ) कोई रहानगी नेई जे थुआड़ा रब्ब थुआड़ी बदिथें गी मटाई देऐ ते तुसेंगी ऐसी जन्नतें च दाखल करै जिंदे हेठ नैहरां बगदियां न उस दिन जिस दिन अल्लाह अपने नबी गी अपमानत नेई करग ते नां उनें लोकें गी जो ओहदे कनै ईमान ल्याए दे न उंदा नूर उंदे बी अगें-अगें नसदा जाग ते सज्जे पासै बी कनै-कनै, ओह गलाउन जे हे साढ़े रब्ब! साढ़ा नूर साढ़े फायदे आस्तै पूरा करी दे ते असेंगी माफ कर, तूं हर चीज करने दी समर्थ रक्खना ऐ ॥ 9 ॥

हे नबी! मुन्करें ते मुनाफिके दे खलाफ खूब प्रचार कर ते उंदा कोई असर कबूल नेई कर', ते (समझी लै जे) उंदा ठकाना ज्हन्नम ऐ ते ओह बौहत बुरा ठकाना ऐ ॥ 10 ॥

अल्लाह मुन्करें दी हालत नूह ते लूत दी लाडियें आंगर ब्यान करदा ऐ। ओह दमें साढ़े नेक बंदें कनै ब्होई दियां हियां, पर

مَائِيَوْمًا مَرُونًا ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْزِدُوا الْيَوْمَ
إِنَّمَا تُجْرُونَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً
نَّصُوحًا ① عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يَكْفِرَ عَنْكُمْ
سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ① يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ
وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ ① نُوْرُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ
أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا
آتِنْمِ لَنَا نُورًا وَاغْفِرْ لَنَا ① إِنَّكَ عَلَيَّ

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ①
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفْرَ وَالْمُنَافِقِينَ
وَاعْلِظْ عَلَيْهِمْ ① وَمَا لَهُمْ جَهَنَّمَ
وَبئس المصير ①
صَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَتٍ
نُّوحٍ وَاِمْرَأَتِ لُوطٍ ① كَانَتَا تَحْتَ

1. 'गिज़तुन' दा अर्थ कुसै चीजै दी ऐसी सख्ती होंदी ऐ जिस च कोई चीज घुसी नेई सकै। इस आयत दा अर्थ एह ऐ जे मुन्करें दा कुसै चाल्गी दा कोई असर कबूल नेई कर यानी जेकर कुसै बेलै ओह हमला करन तां दिले च एह बिचार नेई कर जे ममकन ऐ ओह इस्लामी साम्राज्य गी कोई नुकसान पुजान जां इस्लाम दी त्रक्की च कोई बिघन बनी जान, की जे उनेंगी असें अपने बस च कीते दा ऐ ते तेरे बस च बी करी दिते दा ऐ। उंदी तबाही निश्चत ऐ। इस आस्तै एह ममकन गै नेई जे जेकर आरजो तौरै पर उनेंगी कोई त्रक्की मिली बी जा ते उसदे नतीजे च एह मुसलमानें गी कोई नुकसान पुजाई सकन।

उत्तें दौनीं इनें दौनीं (बंदें) दी ख्यानत कीती ही (यानी उंदे कनै धोखा कीता हा) ते ओह दमें अल्लाह दे अजाब बेले उंदे (जनानियें दे) कुसै कम्म नेई आई सके। ते उत्तें दौनीं जनानियें गी गलाया गेआ हा जे ज्हन्नम च जाने आहलें कनै तुस बी ज्हन्नम च उठी जाओ ॥ 11 ॥

ते अल्लाह मोमिनें दी हालत फिरऔन दी लाड़ी आंगर ब्यान करदा ऐ जिसलै जे उसनै अपने रब्ब गी गलाया, जे हे खुदा! तू अपने कश जन्नत च इक घर मेरे आस्तै बी बनाई दे ते मिगी फिरऔन ते उसदे कुकर्म शा बचाऽ ते इससै चाल्ली (उसदी) जालाम कौम शा छुटकारा दे ॥ 12 ॥

ते फी अल्लाह मोमिनें दी हालत मर्यम आंगर ब्यान करदा ऐ जो इम्रान^३ दी थी ही। जिसनै अपने सतीत्व दी रक्षा कीती ते असें ओहदे च अपना कलाम^३ पाई दिते दा हा ते उसने उस कलाम दी जो उसदे रब्ब नै उस पर नाजल कीता हा, तसदीक^४ करी दिती ही, ते उस

عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحِينَ فَحَاثَهُمَا
فَلَمْ يُغَيِّبَا عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ سَيْئًا وَقِيلَ
ادْخُلَا الثَّارِ مَعَ الدَّٰخِلِينَ ۝

وَصَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ آمَنُوا امْرَأَتَ
فِرْعَوْنَ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِي عِنْدَكَ
بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِي مِنْ فِرْعَوْنَ
وَعَمَلِهِ وَنَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

وَمَرْيَمَ إِثْنَتَا عُمُرَانِ الَّتِي أَحْصَتَتْ
فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهِ مِنْ رُوحِنَا
وَصَدَقَتْ بِكَلِمَاتِ رَبِّهَا وَكُتِبَ عَلَيْهَا

1. यानी खुदा दा ब्यहार हर मनुक्खे कनै बक्ख-बक्ख होंदा ऐ। जेकर कोई नेक (सदाचारी) बंदा होऐ तां ओह अपना गै बोझ चुक्की सकदा ऐ, दूप दा नेई चुक्की सकदा। इस आस्तै कुसै सदाचारी मनुक्खे दी जनानी बनी जाने कनै कोई जनानी कोई रियायत हासल करने दी हक्कदार नेई बनी जंदी, बल्के उसदी जिम्मेदारी होर बी बधी जंदी ऐ।
2. किश इतयज करने आहले आखदे न जे इम्रान ते हजरत मूसा दे पिता हे ते हजरत मर्यम उंई शा डेड प्हार साल बा दे पैदा होइयां हियां। इस शा पता लागदा ऐ जे कुरआन उतारने आहले गी इतिहास दा बी पता नथा, पर एह इतयज ठीक नेई ऐ। हजरत मुहम्मद सुरतफा स.अ.व. दे सामनै बी इससै चाल्ली दा सुआल रखेआ गेआ हा तां उत्तें दस्सेआ हा जे एह कोई खानगी आहली गल्ल नेई। हर इक जाति च एह रीत प्रचलत ऐ जे ओह बड्डे लोकें दे नाऽ पर बरकत दे रूपे च अपने बच्चे दे नाऽ बी रखी लेंदे न। इस आस्तै हजरत मर्यम दे पिता दा नाऽ बी जेकर उस परंपरा मताबक उंदे पिता नै बरकत आस्तै इम्रान रखी लैता होऐ तां ओहदे च खानगी आहली कोई गल्ल नेई।
3. किश लोक आखदे न जे हजरत मसीह 'रूह' हे की जे ओह हजरत मर्यम दे डिड्डे च पाए गे हे, पर एह ना-समझी दी गल्ल ऐ। रूह यानी आतमा कलाम बी होंदा ऐ। इस आस्तै इसदा सिर्फ एह अर्थ ऐ जे असें मर्यम पर अपना कलाम उतारेआ हा ते उसी इल्हाम यानी अकाशवाणी राहें हजरत मसीह दे जनम दा समाचार देई दिता हा।
4. यानी हजरत मर्यम इस गल्ला पर ईमान आहनी चुकी दियां हियां जे स्हेई मैहनें च मिगी अल्लाह पासेआ इक पुत्र दिता जाने आह्ला ऐ।

(खुदा) दी कताबें पर बी ईमान ल्याई दी ही'
ते (होंदे होंदे ऐसी हालत अपनाई चुकी दी
ही जे) उसनै फरमांबरदारें दा दर्जा हासल
करी लैता हा? ॥ 13 ॥ (रुकू 2/20)

ع
٦٦

مِنَ الْقَتِيلِينَ ٢٨

1. यानी हजरत मसीह दे बारे च जो भविक्खवाणियां पुराने ग्रंथें च हियां हजरत मर्यम ने सिर्फ वही दे अधार पर गै ईमान नेई हा आंहदा बल्के उनें ग्रंथें दी भविक्खवाणियें राहें बी ईमान ल्याइयां हियां।
2. मूल शब्द 'मिनलक्रानितौन' पुलिंग बरतोए दा ऐ। इस चाल्ली अर्थ एह होंदा ऐ जे हजरत मर्यम जनानी जात फरमांबरदारें च शामिल होई गई। यानी उसी त्रक्की दिंदे-दिंदे अल्लाह नै ओह स्थान देई दिता, जो कामिल मड़दें गी हासल होंदा ऐ। एह इक भविक्खवाणी ही जे औने आहले समे च खुदा पासेआ इक ऐसा शख्स प्रकट होगे जिसगी पैहलें मर्यम दा नांS दिता जाग ते फी त्रक्की करदे-करदे उसी गै ईसा दा नांS दिता जाग, जो कामिल मड़द हा।



सूर: अल्-मुल्क

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां कत्तरी आयतां ते दो रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

बौहत बरकत आहला ऐ ओह (खुदा) जेहदे
कब्जे च बादशाहत ऐ ते ओह हर इक इरादे
गी पूरा करने च समर्थ ऐ ॥ 2 ॥

उसनै मौत ते जिंदगी गी इस आस्ते पैदा कीते
दा ऐ जे ओह तुसैंगी अजमाऽ जे थुआड़े चा
कु'न ज्यादा चंगे (नेक) कर्म करने आहला
ऐ। ते ओह समर्थवान (ते) बौहत बख्शाने
आहला ऐ ॥ 3 ॥

ऊऐ ऐ जिसनै सत्त गास दरजा-ब-दरजा (क्रम
दे सहाबें उप्पर ख'ल्ल) बनाए दे न ते तूं
रहमान (खुदा) दी पैदायश (रचना) च कोई
जुटी नेई दिखदा। ते तूं अपनी अक्खीं गी
(तांह-तुआंह) फेरियै चंगी-चाल्ली दिक्खी
लै! क्या तुगी (खुदा दी मख्लूक च कुतै बी)
कोई कमी नजरी औंदी ऐ? ॥ 4 ॥

फ़ी नजरी गी बार-बार घुमाऽ, ओह आखर तैरे पासै
नकाम होइयै परतोई औग, ते ओह हुट्टी-हारी दी
होग (ते कोई कमी नजरी नै औग) ॥ 5 ॥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

تَبْرَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ
اَيْكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۝ وَهُوَ الْعَزِيزُ
الْحَفُوْرُ ۝

الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوٰتٍ طَبَاقًا ۝ مَا تَرٰى
فِي خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوْتٍ ۝ فَاَرْجِعِ
الْبَصَرَ ۝ هَلْ تَرٰى مِنْ قُطُوْرٍ ۝

ثُمَّ اَرْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّرْتَيْنِ ۝ يَنْقَلِبُ اِلَيْكَ
الْبَصَرُ حَاسِنًا ۝ وَهُوَ حَسِيْرٌ ۝

ते असें ख'लके गासै गी दीपमाला कन्नै सजाए दा ऐ ते उनें (दिय्यें) गी शतानें आस्तै पथरैद दा साधन बनाया ऐ ते असें उंदे (शतानें) आस्तै इक भटकने आह्ला अजाब निश्चत कीते दा ऐ ॥ 6 ॥

ते जिनें अपने रब्ब दा इन्कार कीता उनेंगी ज्हन्म दा अजाब मिलग ते ओह् बौहत बुरा ठकाना ऐ ॥ 7 ॥

जिसलै ओह् उस (नरक) च सुट्टे जांगन तां ओह् उस च इक भ्यानक चीख सुनडन (जियां गधे दे हिनकने दी अवाज) ते ओह् ज्हन्म (नरक) बड़े जोशै च होग ॥ 8 ॥

करीब (ममकन) ऐ जे ओह् गुस्से करी फटी पवै। जिसलै बी ओहदे च कोई गरोह सुट्टेआ जाग, उस (नरक) दे दरबान उसी पुछडन जे क्या थुआड़े कश कोई नबी नथा आया? ॥ 9 ॥

ओह् आखडन, हां साढ़ै कश नबी जरूर आया हा पर असें उसी झुठलाई दिता हा ते उसी गलाया हा जे अल्लाह नै किश बी नेई उतारेआ (सब थुआड़ा झुठ ऐ) तुस इक खु'ल्ली गुमराही च फसे दे ओ (ते अपने ख्यालें गी इल्हाम समझदे ओ) ॥ 10 ॥

ते उनें लोकें एह् बी गलाया जे जेकर अस सुनने दी ताकत रखदे जां सूझ-बूझ रखदे तां कदें बी दोजखी नेई बनदे ॥ 11 ॥

इस आस्तै उनें अपने गुनाहें गी मन्नी लैता, इस लेई (हे फरिश्तो!) नरक बासियें आस्तै लानत निश्चत करी देओ ॥ 12 ॥

وَأَقْدَرِيْنَا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحٍ
وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّيْطَانِ وَأَعْتَدْنَا
لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيرِ ①

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ
وَإِنْسُ الْمَصِيرِ ②

إِذَا أَلْقَوْا فِيهَا سَمْعُوهَا شَهِيْقًا وَهِيَ
تَفُوْرٌ ③

تَكَادَتْ مَيِّرُ مِنَ الْعَيْظِ ④ كَلَّمَآ أَلْقَى فِيهَا
فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ
نَذِيْرٌ ⑤

قَالُوا بَلَى قَدْ جَاءَنَا نَذِيْرٌ فَكَذَّبْنَا
وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ سُوْرَةٍ إِنَّا نُنْتَمِ
إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيْرٍ ⑥

وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا
فِي أَصْحَابِ السَّعِيْرِ ⑦

فَاعْتَرَفُوا بِذَنبِهِمْ فَسُحْقًا لِأَصْحَابِ
السَّعِيْرِ ⑧

सच्चें गै ओह लोक जेहके अपने रब्ब शा
एकांत च डरदे न, उनेगी माफी ते बड्डा
अजर (बदला) मिलग ॥ 13 ॥

ते (हे लोको!) तुस अपनी गल्लै गी छपालो
जां जाहर करो, ओह (खुदा) दिलें दी गल्लें
गी बी भलेआं जानदा ऐ ॥ 14 ॥

क्या ऐसा होई सकदा ऐ जे जिसनै पैदा कीते
दा ऐ ऊरे अंदरूनी हालात नेई जानै, हालांके
ओह गुप्त शा गुप्त रहस्यें गी बी जानने आह्ला
ते बौहत खबरदार (सोहगा-स्याना) ऐ ॥ 15 ॥
(रुकू 1/1)

ऊरे ऐ जिसनै थुआड़े आस्तै धरती गी रौहने
(बस्सने) दे काबल बनाए दा ऐ इस लेई उस
दियें वादियें (बस्तियें) च जाओ ते उस (खुदा)
दे रिशक चा खाओ ते उसै कश बापस
परतोइयै जाना ऐ ॥ 16 ॥

क्या तुस गासैं च रौहने आहली हस्ती शा इस
गल्ला सुरक्षत होई चुके दे ओ जे ओह तुसैं गी
दुनियां च जलील (अपमानत) करी देऐ ते तुस
दिकखी लैओ जे ओह (जमीन) चक्कर खा
करदी ऐ (ते तुस तबाही दे करीब ओ) ॥ 17 ॥

क्या गासैं च रौहने आहली हस्ती शा तुस इस
गल्ला सुरक्षत होई चुके दे ओ, जे ओह तुंदे
पर पत्थरें दी बरखा बरहाई देऐ। इस आस्तै
(जिस बी शकली च मेरा अजाब/प्रकोप नाजल
होग) तुस समझी जागे ओ जे मेरा डराना
कैसा सख्त हा ॥ 18 ॥

ते उंदे शा पैहले लोकें बी रसूलें गी झुठलाया
हा। फी (उनें दिक्खेआ जां नेई दिक्खेआ जे)
मेरा अजाब कैसा सख्त हा ॥ 19 ॥

إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُمْ
مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ⑩

وَأَسْرُوا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِ إِنَّهُ
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ⑪

أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ
الْحَكِيمُ ⑫

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذُلُولًا
فَأَمْسُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِنْ رِزْقِهَا
وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ⑬

ءَأَمِنْتُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمْ
الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ ⑭

أَمْ أَمِنْتُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يُرْسِلَ
عَلَيْكُمْ حَاصِبًا فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ
نَذِيرِ ⑮

وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ
كَانَ نَكِيرِ ⑯

क्या उन्हें अपने उप्पर (वातावरण च पर फलाए दे) कतार दर कतार पैंछियें गी नेई दिक्खेआ जो कदें (ख'ल्ल उतरदे मौकै अपने पर) समेटी लैंदे न। रहमान (खुदा) गै उनेंगी रोकदा' ऐ। ओह हर चीजै शा भलेआं बाकफ ऐ ॥ 20 ॥

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَفَّتْ
وَيَقْبِضَنَّ مَا يَمْسِكُهُنَّ إِلَّا
الرَّحْمَنُ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ٢٠

क्या ओह लोक जो थुआड़ा लश्कर (सैना) खुआंदे न, रहमान (खुदा) दे मकाबले च थुआड़ा मदद करी सकडन ? मुन्कर ते सिर्फ धोखे च फसे दे न ॥ 21 ॥

أَمَّنْ هَذَا الَّذِي هُوَ جُنْدٌ لَكُمْ يَنْصُرُكُمْ
مِّنْ دُونِ الرَّحْمَنِ إِنِ الْكَافِرُونَ إِلَّا
فِي غُرُورٍ ٢١

क्या ओह हस्ती जो तुसेंगी रिशक दिंदी ऐ जेकर अपने रिशक गी रोकी लै (तां कोई है जो तुसेंगी रिशक देऐ?) सच्च एह ऐ जे ओह उददंडता ते सच्च शा दूर नस्सने (दी आदत) च अगें लंघी गेदे न ॥ 22 ॥

أَمَّنْ هَذَا الَّذِي يَرُزُّكُمْ إِنْ أَمْسَكَ
رِزْقَهُ بَلْ لَجَوَانِي عُنُوٌّ وَفُؤُورٍ ٢٢

क्या ओह जो अपने मूहै दे भार पुदटा चलदा ऐ हदायत च उस बंदे दे बराबर होई सकदा ऐ जो सिद्धा चलदा ऐ? ते है बी सिद्धे रस्ते पर? ॥ 23 ॥

أَمَّنْ يَمْشِي مَكْبَأً عَلَىٰ وَجْهِهِ أَهْدَىٰ
أَمَّنْ يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيمٍ ٢٣

तूं गलाई दे जे ओह खुदा गै ऐ जिसनै तुसेंगी पैदा कीते दा ऐ ते थुआड़े आसतै कन्न, अक्खीं ते दिल बनाए दे न पर तुस बिल्कुल शुकर नेई करदे ॥ 24 ॥

قُلْ هُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ
السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَّا
تَشْكُرُونَ ٢٤

तूं गलाई दे जे ऊऐ ऐ जिसनै तुसेंगी धरती च पैदा कीते दा ऐ ते उससै कश तुस जींदे करिये फी लेते जागे ओ ॥ 25 ॥

قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ
تُحْشَرُونَ ٢٥

क्या ओह आखदे न जे जेकर तुस सच्चे ओ तां एह बा'यदा कदूं पूरा होग ॥ 26 ॥

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ٢٦

1. यानी उसनै तुसेंगी भंचालें ते रोगें शा सुरक्षत रक्खेआ ऐ, नेई ते गासै पर उड्डरदे पैंछी बलगा करदे न जे तुंदे पर अज्ञाब आवै ते ओह झपटिये थुआड़ियां लाशां नोची खान।

तू गलाई दे जे इस दा पता सिर्फ अल्लाह गी
गै ऐ ते अ'ऊं ते सिर्फ इक तफसील कनै
खोहलियै सोहगा करने आहला (शख्स) आं
॥ 27 ॥

ते जिसलै ओह उस (बा'यदे आहले अजाब)
गी लागै औंदा दिखडन तां मुन्करें दे मूह
बिगड़ी जांगन ते उनेंगी गलाया जाग जे इयै
ऐ ओह चीज जिसगी बार-बार तुस बुलाऽ
करदे हे ॥ 28 ॥

तू गलाई दे, मिगी दस्सो ते सेही जे जेकर
अल्लाह मिगी ते मेरे साथियें गी हलाक करी
देऐ जां साढ़े पर रहम करी देऐ तां बी मुन्करें'
गी दर्दनाक अजाब शा कु'न पनाह देग?
॥ 29 ॥

तू गलाई दे ऊऐ रहमान ऐ। जेहदे पर अस
ईमान ल्याए दे आं ते असें उस्सै पर भरोसा
कीता ऐ इस आस्तै तुस तौले गै समझी जागे
ओ जे कु'न जाहरा-बाहरा गुमराही च फसे
दा ऐ ॥ 30 ॥

तू एह बी गलाई दे जे मी दस्सो ते सेही जे
जेकर थुआड़ा पानी धरती दी डुम्हाई च गायब
होई जा तां बगने आहला पानी थुआड़े आस्तै
(खुदा दे अलावा) कु'न लेई औग ॥ 31 ॥
(रुकू 2/2)

قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا
نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٧﴾

فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سَيِّئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ
كَفَرُوا وَقِيلَ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ
تَدْعُونَ ﴿٢٨﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكَنِی اللَّهُ وَمَنْ مَعِیَ
أَوْ رَحِمَنَا فَمَنْ یُجِیرُ الْکَافِرِینَ مِنْ
عَذَابِ الْیَوْمِ ﴿٢٩﴾

قُلْ هُوَ الرَّحْمَنُ أَمَّا بِهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا
فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِی ضَلَالٍ مُّبِینٍ ﴿٣٠﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا
فَمَنْ یَأْتِیْكُمْ بِمَاءٍ مَّعِینٍ ﴿٣١﴾

1. यानी जेकर साढ़े मरने दे बा'द मुन्करें गी अजाब नै पकड़ी लैता तां साढ़ी मौती दा उनेंगी केह लाह होग।

سُورَةُ الْقَلَمِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ ثَلَاثٌ وَخَمْسُونَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

सूर: अल् क़लम

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां त्रुंजा आयतां ते दो रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۞

(अस) कलम ते दुआत गी ते उसगी जो उंदे
(राहें) लिखेआ जंदा ऐ, शहादत दे तौरा पर
पेश करदे होई आखने आं' ॥ 2 ॥

ن وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ ۞

जे तू अपने रब्ब दी किरपा कनै मजनु(पागल)
नेई ॥ 3 ॥

مَا أَنْتَ بِعَمَلٍ رَبِّكَ بِمَجْنُونٍ ۞

ते तुगी खुदा पासेआ' इक ऐसा बदला मिलग
जो कदें खतम नेई होग। ॥ 4 ॥

وَإِنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مَمْنُونٍ ۞

(इस दे अलावा अस एह बी कसम खन्ने आं
जे) तू (अपनी शिक्षा ते कर्म च) बड़े उत्तम³
शिश्टाचार पर कायम ऐं ॥ 5 ॥

وَإِنَّكَ لَعَلَى خُلُقٍ عَظِيمٍ ۞

1. कुर'आन मजीद च जिनियो बी कसमां न असल च उनें चीजें गी गुआही दे रूपै च पेश करने आसै न। इत्थें एह बी अर्थ ऐ। अल्लाह आखदा ऐ जे कलम ते दुआत ते सारी विद्यां जो उंदे राहें लिखियां जदियां न इस गल्ला दी गुआह न जे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. पागल नेई न।
2. एह दूई गुआही ऐ जे पागल दे कम्म ते बिना बदले दे रौहदे न, पर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. गी ते ओह बदला मिलग जो क्यामत तक रौहग ते कदें बी घटग नेई, यानी जेकर कदें मुसलमानें दी कमजोरी करी उस च ह्रास पैदा होई बी गेआ तां अल्लाह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. दे ऐसे प्रतिनिधि खड़े करदा रौहग जो इस्लाम गी उसदे असल रूपै च संसार दे सामनै पेश करदे रौहगन।
3. एह त्री शहादत थुआड़े पागल नेई होने दी ब्यान कीती दी ऐ ते दस्सेआ गेदा ऐ जे मजनु ते फज़ूल कम्म करदा ऐ, पर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. ते बेहतर शिश्टाचार दसदे न, फी उनेंगी पागल कियां गलाया जाई सकदा ऐ।

इस आस्तै तौले गै तूं बी दिक्खी लैगा ते ओह बी दिक्खी लैगन (जे खुदाई मदाद' शा बंचत तूं रौहन्ना ऐं जां ओह) ॥ 6 ॥

فَسُبُّصِرٌ وَيُبَّصْرُونَ ﴿٦﴾

ते (उनेंगी पता लगगी जाग जे) तुंदे (दौनें) चा गुमराह कु'न ऐ? ॥ 7 ॥

بِأَيْبِكُمُ الْمُفْتُونُ ﴿٧﴾

तेरा रब्ब उस गी बी खूब जानदा ऐ, जो उसदे रस्ते शा भटकी गेदा ऐ ते उसगी बी खूब जानदा ऐ जो हदायत पाने आहले लोकें च शामिल ऐ ॥ 8 ॥

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ صَلَّى عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿٨﴾

(ते जिसलै तूं खुदा दी हदायत पर कायम ऐं ते तेरे मुन्कर तबाह होने आहले न तां) तूं उनें मुन्करें दी गल्ल नेई मन्न ॥ 9 ॥

فَلَا تَطْعِ الْمُكْذِبِينَ ﴿٩﴾

एह (मुन्कर) इच्छा रखदे न जे तूं अपने दीन (धर्म) च किश नरमी करें तां ओह बी (अपने तरीके /बरताऽ च किश) नरमी करन ॥ 10 ॥

وَدُّوا لَوْ كَانُوا فِي دَهْنُونَ ﴿١٠﴾

ते तूं उसदी गल्ल कदें नेई मन्न जो कसमां खंदा ऐ (पर खुदा पासेआ मदद नेई मिलने पर) ओह जलील' (दा जलील गै) रौहदा ऐ ॥ 11 ॥

وَلَا تَطْعِ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِينٍ ﴿١١﴾

जिसी (भले लोकें गी) ताहना मारने ते (उंदी) चुगलियां करने दी आदत ऐ ॥ 12 ॥

هَمَّازٍ مَّشَاءٍ بِنَمِيمٍ ﴿١٢﴾

जो लोकें गी नेकियें शा रोकने आहला, हद्द शा बधने आहला ते गुनाहगार ऐ ॥ 13 ॥

مِّنَّا عِ لِلْحَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ﴿١٣﴾

1. एह चौथी शहादत ऐ जे तुस पागल नेई ओ। ते दस्सेआ गेदा ऐ जे क्या पागल गी बी खुदा दी मदद मिलदी ऐ? इस लेई जेकर हज़रत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. दा अन्जाम ऐसा होआ जे अपने ते बखलें उसी असाधारण मन्नेआ तां उसी पागल गलाने आहला आपूं पागल होग जां ओह ?
2. यानी गुआही लैने दा ढंग अकल ते शरीअत नै नियुक्त करी दित्ते दा ऐ । जो शख्स बुद्धि दे उलट अपनी गै गल्लै गी सच्च साबत करने आस्तै कसमां खंदा ऐ, पर अल्लाह दा ब्यहार उसदा समर्थन नेई करियै उसी अपमानत गै करदा रौहदा ऐ, तां ओह धामें लक्ख कसमां खा ओहदी गल्ल कदें बी नेई मन्ननी चाही दी।

ओह मूंह फट्ट (बदमजाज) बी ऐ ते खुदा दा बंदा होइयै शतान कनै तल्लक रक्खने आहला बी ॥ 14 ॥

عُتِّلْ بَعْدَ ذَلِكَ زَنِيمٌ ۝

सिर्फ इस गल्ला करी जे ओह मालदार ऐ ते उसदी उलाद ते साथी मते न ॥ 15 ॥

أَنْ كَانَ دَامًا لِوَبَيْنَيْنِ ۝

जिसलै ओहदे सामनै साढ़ी आयतां पढ़ियै सुनाइयां जंदिंयां न तां गलांदा ऐ जे एह ते पैहले लोकें दियां व्हानियां न ॥ 16 ॥

إِذَا تَتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝

अस तौले गै ओहदे नक्कै पर दा 'ग' लागे (ते उसी अपनी मदद शा बंचत करी देगे) ॥ 17 ॥

سَنَسِيحُهُ عَلَى الْخُرطومِ ۝

असें इनें बैरियें गी ऐसी गै परीक्षा च पाए दा ऐ। जिस परीक्षा च उनें बागें आहले' लोकें गी पाया हा, जिनें आपस च इक-दूए गी कसमां खाइयै गलाया हा जे अस बडलै जाइयै अपनै बागै दे फल त्रोड़गे ॥ 18 ॥

إِنَّا بَلَوْنَهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ ۚ إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ۝

ते खुदा दा नांS नथा लैता ॥ 19 ॥

وَلَا يَسْتَشْنُونَ ۝

नतीजा एह होआ जे रातीं बेल्लै तेरे रब्ब पासेआ (उंदे) उस (बागै) पर इक अजाब आई गेआ जिसलै जे ओह सुत्ते दे हे। ॥ 20 ॥

فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ۝

ते बडलै तक ओह बाग इक कट्टी² गेदी (यानी सफा चट्ट) हालती च तबदील होई चुके दा हा ॥ 21 ॥

فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ۝

फी जिसलै सवैरै-सवैरै उनें आपस च इक-दूए गी बुलाया ते गलाया जे जेकर थुआड़ी

فَتَنَادُوا مُصْبِحِينَ ۝

1. इस थारै पर बागै आहले यानी हज़रत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. ते उंदे मक्का बासी रिश्तेदार न, जिंदे आस्तै खुदा नै पवित्र क़ुरआन दे रूपै च सुर्ग उतारेआ, पर उनें उस सुर्ग दा लाह लैने दे बदलै लोकें गी उस सुर्ग शा बंचत करने आस्तै कोशशां करनियां शुरू करी दितियां ते आपस च एह समझोता कीता जे ऐसे मौकें इस सुर्ग च चलो जिसलै कोई होर औने आहला नेई होऐ ते मक्का आहले इयै करदे हे जे जेहका शख्स थुआड़ियां गल्लां सुनने आस्तै औंदा उसी बक्हाई दिंदे हे जां जिसलै तुस गल्लां करदे तां उसलै रौला पाई दिंदे तां जे कोई थुआड़ियां गल्लां सुनी नेई सके ते नां उंदा कोई लाह लेई सके।
2. इनें मुक्करें दा अन्जाम उनें बागें आहलें आंगर होगे ते ओह एह ऐ जे एह लोक अपने कर्म दा फल पाने शा बंचत रौहगन।

नीत बागै चा फल त्रोड़ने दी ऐ तां इससै बेलै
बागै पासै चलो ॥ 22-23 ॥

फ़ी ओह उठी गे ते ओह बल्लें-बल्लें एह
आखदे जंदे हे ॥ 24 ॥

जे अजब थुहाड़ी मजूदगी च कोई गरीब बागै
च दाखल नेई होऐ ॥ 25 ॥

ते सवेर होने शा पैहलें ओह कंजूसी करने दा
फैसला करी चुके दे हे ॥ 26 ॥

फ़ी जिसलै उनें उस बागै गी दिक्खेआ ते
गलाया, अस ते रस्ता भुल्ली आए आं ॥ 27 ॥

बल्के सचाई एह ऐ जे अस (अपने फलें शा)
भलेआं बंचत होई गे आं ॥ 28 ॥

जो उंदे चा अच्छा आदमी हा, उसनै गलाया-
क्या मैं तुसेंगी नथा गलाया जे तुस खुदा दी
स्तुति की नेई करदे? ॥ 29 ॥

उनें गलाया, साढ़ा रब्व हर ऐब शा पवित्तर ऐ,
अस गै जुलम करने आहले हे ॥ 30 ॥

फ़ी ओह इक-दूए गी कोसदे होई बोल्ले ॥ 31 ॥

ते गलान लगे, साढ़े पर अफसोस! अस सिरफिरे
बनी गे ॥ 32 ॥

करीब' ऐ (यानी ममकन ऐ) जे (जेकर अस
तोबा करी लैचै तां) साढ़ा रब्व उस शा बेहतर
(बाग) असेंगी प्रदान करै। अस जरूर अपने
रब्व अगमें झुकी जागे ॥ 33 ॥

इससै चाल्ली अजाब उतरदा होंदा ऐ ते जेकर
ओह समझन तां क्यामत दा अजाब इस संसारक
अजाब शा बौहत बड़्हा ऐ ॥ 34 ॥ (स्कू 1/3)

أَبْ اَعْدُوْا عَلٰى حَرٰثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
صٰرِمِيْنَ ۝

فَاَنْطَلَقُوْا وَّهُمْ يَتَخَفَتُوْنَ ۝

اَنْ لَا يَدْخُلَهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مَسْكِيْنَ ۝

وَعَدُوْا عَلٰى حَرَدٍ قَدِيْرِيْنَ ۝

فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْا اِنَّا لَنٰصِتُوْنَ ۝

بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُوْنَ ۝

قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا
تَسْبِيْحُوْنَ ۝

قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَتَلَاوَمُوْنَ ۝

قَالُوْا يٰوَيْلَنَا اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ۝

عَسٰى رَبِّنَا اَنْ يُّبَدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَا اِنَّا اِلٰى
رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ۝

كَذٰلِكَ الْعَذٰبُ ۗ وَالْعَذٰبُ الْاٰخِرَةُ
اَكْبَرُ ۗ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝

1. यानी परिणाम दिक्खयै मक्का दे किश लोक प्राहचित करी लैगन। फ़ी सच्चें ऐसा गै होआ ते उनेंगी परिणाम बी थ्योए।

संयमियें आस्तै उंदे रब्ब कश नैमतेँ कन्नै भरे दे बाग होंगन ॥ 35 ॥

क्या अस मुसलमानें गी मुलजमें बराबर समझी लौगे ? ॥ 36 ॥

तुसेंगी होई केह गोदा ऐ, तुस कनेहा फैसला करदे ओ ? ॥ 37 ॥

क्या थुआड़े कश कोई (अल्लाह दी) कताब ऐ जेहदे च एह गल्ल पढ़दे ओ? ॥ 38 ॥

जे जे किश तुस पसंद करगे ओ ओह तुसेंगी मिलग ॥ 39 ॥

जां क्या तुसें साढ़े शा कुसै कसम कन्नै बा'यदे लौते दे न जो क्यामत तक चलदे रौहगन ते एह जे जे किश तुस आखी देगे, ऊरे तुसेंगी मिली जाग ॥ 40 ॥

इंदे शा बिंद पुच्छो हां जे इस गल्ला दा उंदे चा कु'न जिम्मेदार ऐ ? ॥ 41 ॥

क्या इनें लोकेँ दे हक्कै च इंदे अपने बनाए दे कोई खुदा दे शरीक हैन? इस आस्तै जेकर ओह सच्चे न तां उनें शरीकेँ गी पेश करन ॥ 42 ॥

जिस दिन मसीबत दा समां आई जाग ते उनेंगी सजदा करने आस्तै बुलाया जाग तां ओह सजदा करने दी ताकत नेई रखडन ॥ 43 ॥

उंदियां नजरां (शर्म कन्नै) झुकी दियां होंगन, जिल्लत उंदे पर छाई जाग। ते इक वक्त ओह हा जे उनेंगी सजदें आस्तै बुलाया जंदा हा ते उनें गी कोई बमारी नथी (पर उनें सजदा करने शा इन्कार कीता। फी हून जिसलै जे शिक्र दा रंग चिर्दै तगर उंदे दिलें पर चढ़े दा रेहा ऐ, एह सजदा कियां करी सकदे न)

॥ 44 ॥

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٍ
النَّعِيمِ ③

أَفَجَعَلَ الْمُسْلِمِينَ كَالْمَجْرُمِينَ ④

مَا لَكُمْ ۖ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ⑤

أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ⑥

إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَا تَخَيَّرُونَ ⑦

أَمْ لَكُمْ آيْمَانٌ عَلَيْنَا بِالْغَيْبِ إِلَى
يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۚ إِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُونَ ⑧

عَلَى الْمُسْلِمِينَ

سَأَلَهُمْ أَيُّهُمْ بِذَلِكَ زَعِيمٌ ⑨

أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ ۖ فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ
إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ ⑩

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى
السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ⑪

خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهُمَهُمْ ذِلَّةً ۖ
وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ

وَهُمْ سَلِيمُونَ ⑫

इस आस्तै तू मिंगी ते उनेंगी जो इस कताब गी झुठलांदे न, छोड़ी दे (आपू स'जा देने दा फिकर नेई कर) अस उनेंगी बारी-बारी (दरजा-ब-दरजा) तबाही पासै उनें दिशाएं चा खिच्यै लेई औगे, जिनेंगी ओह जानदे गै नेई ॥ 45 ॥

ते अ'ऊं उनेंगी ढिल्ल देगा (यानी तू उंदी तबाही दी दुआऽ नेई कर) मेरा उपाऽ बड़ा मजबूत ऐ (ओह आखर उनेंगी तबाह करियै रखी देग) ॥ 46 ॥

क्यां तू उंदे शा कोई अजर/बदला मंगना ऐं ते ओह उस चट्टी कारण बोझ थल्लै दबोए दे न? ॥ 47 ॥

क्या उंदे कश गैब (परोक्ष)दा इलम है ते ओह उसी लिखदे जंदे न ? ॥ 48 ॥

इस आस्तै तू अपने रब्ब दे हुकमै पर डटे दा रौह ते मच्छी आहले आंगर नेई बन। जिसलै उसने अपने रब्ब गी पुकारेआ ते ओह दुख कन्नै भरे दा हा ॥ 49 ॥

जेकर उसदे रब्ब दी नैमत उस दे दुख दा उपाऽ नेई करदी, तां उसी इक साफ-सपाट बियाबान जंगलै च सुट्टी दिता जंदा ते ओहदी संसार च निंदेआ कीती जंदी ॥ 50 ॥

पर उसदे रब्ब नै उनेंगी चुनी लैता ते उनें गी सदाचारी बंदें च शामिल करी लैता ॥ 51 ॥

मुन्कर लोक, करीब हा (ममकन हा) जे जिसलै उनें तेरे शा कुर'आन सुनेआ हा तां अपनी गुस्से कन्नै भरोची दी अक्खीं कन्नै

فَدَرْنِي وَمَنْ يُكَذِّبْ بِهَذَا الْحَدِيثِ ط
سَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ۞

وَأَمْلِي لَهُمْ ط إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ۞

أَمْ سَأَلْتَهُمُ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَغْرَمٍ
مُثْقَلُونَ ۞

أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ۞

فَأَصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ
الْحُوتِ إِذْ نَادَى وَهُوَ مَكْظُومٌ ۞

لَوْلَا أَنْ تَدْرَكَهُ نِعْمَةٌ مِنْ رَبِّهِ لَمَسِدًا
بِالْعُرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ۞

فَاجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ۞

وَإِنْ يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُرِي لِقَوَانِكَ
بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ

1. हजरत युनुस आंगर नेई बन यानी कौम दी तबाही दा फैसला तौले नेई मंग (चाह)। वक्त औने पर खुदा आपू फैसला करी देग।

दिक्खियै तुगी अपने थाहरै परा फिसलाई
(डगमगाई) दिंदे ते ओह आखदे जंदे न जे
एह शख्त ते मजनू ऐ ॥ 52 ॥

بِسْمِ
الرَّحْمٰنِ
الرَّحِیْمِ

إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ﴿٢٩﴾

हालांके एह (कुरआन) ते सारी दुनियां आस्तै
बरकत¹ लेइयै आया ऐ ॥ 53 ॥ (रुकू 2/4)

بِسْمِ
الرَّحْمٰنِ
الرَّحِیْمِ

وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٥٣﴾

1. फी ऐसी बरकत आहली कताब आहने आहला मजनू/पागल कियां होई सकदा ऐ।

سُورَةُ الْحَاقَّةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ ثَلَاثٌ وَخَمْسُونَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

सूर: अल्-हाक्का

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां त्रुंजा आयतां ते दो रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अलहाक्का (यानी ओह पूरा होइयै रौहने
आह्ला समाचार जो कुर'आन च दस्सेआ गेदा
ऐ) ॥ 2 ॥

الْحَاقَّةُ ①

क्या तुगी पता ऐ जे ओह केह ऐ ? ॥ 3 ॥

مَا الْحَاقَّةُ ①

ते तुगी कुस चीजा नै दस्सेआ ऐ जे ओह पूरी
होइयै रौहने आहली खबर केह ऐ ? ॥ 4 ॥

وَمَا أَذْرَبُكَ مَا الْحَاقَّةُ ①

समूद ते आद नै बी क़ारिअ: (अज़ाब) गी
झुठलाया हा (जो उस समे दे अज़ाब दी
खबर ही) ॥ 5 ॥

كَذَّبَتْ ثَمُودُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ①

जित्थें तक समूद (लोकें) दा सरबंध ऐ, ओह
इक ऐसे अज़ाब कन्नै हलाक (तबाह) कीते
गे हे जो अपनी सख्ती च चरम सीमा तक
पुज्जी गेदा हा ॥ 6 ॥

فَأَمَّا ثَمُودُ فَأَهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ①

ते आद इक ऐसे अज़ाब कन्नै हलाक (तबाह)
कीते गे जो हवा दी शकली च आया हा, जो
लगातार चलदी रेही ही ते अति-एँत तेज ही
॥ 7 ॥

وَأَمَّا عَادٌ فَأَهْلِكُوا بِرِيحِ صَرْصَرٍ
عَاتِيَةٍ ①

उस (अल्लाह) ने हवा गी लगातार सत्त रातीं ते अट्ट दिन उंदी तबाही आस्तै निश्चत करी रक्खे दा हा (एह् दिक्खने आहले) ते उस कौम गी इक कटोई दी, डिग्गी दी पेदी (चीजै) आंगर दिखडन आखो जे ओह् खजूरें दे खोखले (भुग्गे) बूहटें दियां जदां न जिनें गी तेज आंधी नै लमलेट करियै रक्खी दिता ॥ 8 ॥

(हे मुखातब!) हून दस्स जे क्या उंदा कोई नशान तुगी लभदा ऐ? ॥ 9 ॥

ते फिरऔन ते जेहके लोक उंदै शा पैहले हे (इस दुनियां च) अपराधी बनियै आए ते (लूत कौम दे लोके दियां) ओह् बस्तियां बी जेहकियां गुनाह दी ब'जा करी पुट्टियां कीतियां गेइयां हियां ॥ 10 ॥

(ते) उनें (बी कसूर कीते दे हे ते) अपने रब्ब दे रसूल दी ना-फरमानी कीती ही। इस आस्तै उनेंगी बी अल्लाह ने इक ऐसे अजाब कन्नै पकड़ेआ जो बधदा जंदा हा (ते बौहत सख्त हा) ॥ 11 ॥

असें (नूह दे बेलै) जिसलै पानी उप्पर बधना शुरू होआ तां तुसें लोके गी इक किरती च बद्हाई दिता हा ॥ 12 ॥

तां जे अस उस (घटना) गी थुआड़े आस्तै इक नशान' बनाई देचै ते सुनने आहले कन्न उसी सुनने (ते दिल उसी चेता रक्खन) ॥ 13 ॥

इस आस्तै जिसलै बिगल च इककै बारी जोरै दी हवा भरी (फूक मारी) जाग ॥ 14 ॥

تَبْرَكَ الَّذِي ٢٩ الحَاقَّة ٦٩

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَتَمَنِيَةً
أَيَّامِهِمْ لِحُسُومِهِمْ فَتَرَى الْتَوَمَ فِيهَا
صُرْعَى كَأَنَّهُمْ آمَجَّارٌ نَّخِلٍ خَاوِيَةً ٨

فَهَلْ تَرَى لَهُم مِّنْ بَاقِيَةٍ ٩

وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ وَالْمُؤْتَفِكَاتُ
بِالْخَاطِئَةِ ١٠

فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ آخِذَةً
رَّابِيَةً ١١

إِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَاءُ حَمَلْنَاكُمْ فِي
الْجَارِيَةِ ١٢

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكَرَةً وَتَعِيماً أَدُنُّ
وَأَعْيَةً ١٣

فَإِذَا نَفَخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةً وَاحِدَةً ١٤

1. यानी ऐसा गै हून हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दी कौम कन्नै होग ते ओह् बी बक्ख-बक्ख किसमें दे अजाबें कन्नै जकड़े जाडन।

ते धरती ते फ़ाड़ें गी उंदे थाहरें परा चुक्की
लैता जाग, ते ओह इक झटके च चूरा होई
जांगन ॥ 15 ॥

उस रोज निश्चत' घटना घटत होई जाग ॥ 16 ॥

ते ग़ास² फटी जाग ते ओह उस रोज भलेआं
कमजोर लब्भग ॥ 17 ॥

ते फरिश्ते उस दे कंठें पर होंगन, ते उस रोज
तेरे रब्ब दे अर्श गी अट्टें फरिश्तें¹ चुक्के दा
होग ॥ 18 ॥

उस रोज तुसेंगी खुदा दे सामनै पेश कीता
जाग ते कोई गल्ल थुआड़े शा छप्पी-गुञ्जी
नेई रौह्ग (यानी थुआड़ा सारा स्हाब थुआड़े
सामनै पेश करी दिता जाग) ॥ 19 ॥

इस आस्तै जिसदे सज्जे हथै च उस दी कर्म-
सूची दिती जाग ओह बाकी साथियें गी आखग-
आओ-आओ! मेरी कर्म-सूची दिक्खो⁶ ॥ 20 ॥

मिगी यकीन हा जे अ'ऊं इक रोज अपना
स्हाब जरूर दिक्खड⁶ ॥ 21 ॥

وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا
دَكَّةً وَاحِدَةً ۝

فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝

وَأَنشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ۝

وَأَمَلَكْتُ عَلَىٰ أَرْجَائِهَا وَيَحْمِلُ
عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمِيَّةٌ ۝

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنْكُمْ
خَافِيَةٌ ۝

فَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ۖ فَيَقُولُ
هَٰؤُلَاءِ أَقْرَأُ وَآيَاتِي ۝

إِنِّي ظَنَنْتُ أَنِّي مُلْقٍ حَسَابِيَةٍ ۝

1. यानी जिस रोज हाक्का अज्ञाब दी भविक्खवाणी पूरी होई जाग तां मक्का दे सरदार ते आम लोक तबाह होन लगउन ते उंदी हारै पर हार होग।
2. यानी मक्का आहलें दा ग़ास यानी उंदा धर्म भलेआं खोखला होई जाग ते लोकें दे दिलें चा ओहदी सचाई बारै विश्वास खतम होई जाग।
3. इस च दस्सेआ गेदा ऐ जे ऊऐ मुसलमान जिनेंगी मुन्कर लोक अपना बैरी समझदे होंदे हे, अज्ञाब दे मौकें उंदी सलामती आस्तै खुदा दे अगें दुआऽ करा करदे होंगन।
4. एह जो आखेआ गोआ ऐ जे 'उस रोज तेरे रब्ब दा अर्श अट्टें फरिश्तें चुक्के दा होग' इस शा पासै इशारा ऐ जे सूर: फ़ातिह: च ते अल्लाह दे च'ऊं गुणें दा जिकर ऐ यानी रब्ब, रहमान, रहीम ते मालिकेयौमिद्दीन, पर मक्का दी विजय दे मौकें अल्लाह दे गुण इस प्रबलता कनै प्रकट होंगन आखो जे ओह च'ऊं दी ज'गा अट्ट होई जांगन ते सारी धरती पर हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. दा तेज ते प्रताप चमका करदा होग।
5. सज्जा हथ बरकत पाने दा निर्देशक ऐ। इस आस्तै जिसदे सज्जे हथै च उसदी कर्म-सूची दिती जाग ओह समझी लैग जे मेरे आस्तै ठीक फैसला होआ ऐ ते मेरे कर्म गी नेक आखेआ गोआ ऐ। इस आस्तै ओह अपने साथियें गी सद्दग ते गलाग जे आओ ते मेरा नतीजा ते मेरी कर्म-सूची दिक्खो।
6. यानी क्यामत पर ईमान रक्खने करी अ'ऊं उस ध्याड़े आस्तै त्यारी करा करदा हा। इस लेई ओहदा लाह मिगी थ्दोई गेआ ते अल्लाह नै मेरे बारे फैसला करी दिता जे एह बंदा जीवन दे अच्छे दिन दिक्खग।

इस आस्तै ऐसा शख्स जीवन दे बौहत अच्छे
दिन दिक्खग ॥ 22 ॥

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ﴿٦٧﴾

ते उच्चे बागें च नवास करग ॥ 23 ॥

فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٦٧﴾

उस दे फल झुके दे होंगन (यानी-उंदे बूहटे
फलें कन्नै लदोए दे होंगन) ॥ 24 ॥

فَقُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٦٨﴾

(ते उनेंगी गलाया जाग जे) पैहले समे च तुसैं
जेहके कर्म कीते हे, उंदे नतीजे च खुल्ले
(फल) खाओ ते (चश्में दे) पानी पिच्यो, ते
इंदे चा हर इक चीज तुसेंगी शैल-चाल्ली
पची जाग ॥ 25 ॥

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَيْئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ
فِي الْأَيَّامِ الْحَالِيَةِ ﴿٦٩﴾

ते जिस शख्स दे खब्बे हत्थै च उसदी कर्म-
सूची दिती जाग, ओह आखग, काश! मिगी
मेरी कर्म-सूची नेई दिती जंदी ॥ 26 ॥

وَأَمَّا مَنْ أَوْتِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ ۖ
فَيَقُولُ يَلَيْتَنِي لِمَ أُوتِيَ كِتَابِيَةَ ﴿٧٠﴾

ते मिगी पता निं लगदा जे मेरा स्हाब केह ऐ?
॥ 27 ॥

وَلَمْ أَدْرِمَا حِسَابِيَةَ ﴿٧٠﴾

काश! मेरी मौत मिगी भलेआं खतम करी
दिंदी ॥ 28 ॥

يَلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاصِيَةَ ﴿٧١﴾

मेरी दौलत नै मिगी अज्ज कोई फायदा नेई
पजाया ॥ 29 ॥

مَا أَعْنَى عَنِّي مَالِيَةَ ﴿٧١﴾

ते मेरा प्रभुत्व जंदा रेहा ॥ 30 ॥

هَلَكَ عَنِّي سُلْطَانِيَةَ ﴿٧٢﴾

(उस बेलै खुदा फरिश्तें गी आखग) इसी
पकड़ी लैओ ते इसदे गले च तौक (लड्डन)
पाओ ॥ 31 ॥

حُدُودَهُ فَعَلَّوهُ ﴿٧٢﴾

ते ज्हन्म च इसी सुट्टी देओ ॥ 32 ॥

ثُمَّ الْجَحِيمِ صَلَّوهُ ﴿٧٣﴾

फी इक जंजीर कन्नै, जेहकी बड़ी लम्मी ऐ
इस गी जकड़ी देओ ॥ 33 ॥

ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَّرَعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا

فَأَسْلَكُوهُ ﴿٧٤﴾

एह बसीह हकूमत आहले अल्लाह पर ईमान
नथा आहनदा ॥ 34 ॥

إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾

ते गरीब-गुरबें गी खाना खलाने आस्तै (लोकें गी) प्रेरणा नथा दुआंदा ॥ 35 ॥

इस आस्तै उस रोज उसदा कोई दोस्त नेई होग (की जे अपने जुलमें दी ब'जा करी एह लोकें दी हमदर्दी खोही चुके दा ऐ) ॥ 36 ॥

ते उसगी कोई खाना नेई मिलग, जखमें दा धोन गै थ्होग (यानी जेहके जुलम एह लोकें पर करी चुके दा ऐ उसदी याद उसी सतांदी रौहग) ॥ 37 ॥

एह खाना सिर्फ पापी लोक खंदे न ॥ 38 ॥
(रुकू 1/5)

(इस आस्तै कुसै धोखे च निं पवो) अस शहादत ते तौरै पर उसी बी पेश करने आं जिसी तुस दिखदे ओ ॥ 39 ॥

ते जिसी तुस नेई दिखदे (यानी जाहरी हालात ते गुप्त जजबे इस गल्ला दे गुआह न) ॥ 40 ॥

एह (कुर'आन) इक आदरजोग रसूल दी वाणी ऐ ॥ 41 ॥

ते कुसै शायर दी वाणी नेई, पर तुस बिल्कुल ईमान नेई आहनदे ॥ 42 ॥

ते नां एह कुसै पादरी जां पंडत (काहिन) दियां गल्लां न, पर तुस बिल्कुल नसीहत हासल नेई करदे ॥ 43 ॥

एह सारे ज्हांनें दे रब्ब पासेआ नाजल कीता गेदा ऐ ॥ 44 ॥

ते जेकर एह शख्स साढ़े नां कनै झूठा इल्हाम' जोड़ी दिंदा, भामें ओह इक गै होंदा ॥ 45 ॥

وَلَا يَحْضُّ عَلَى طَعَامِ الْمَسْكِينِ ۝

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ لَهُمْ نَاحِيمٌ ۝

وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غَسْلِينٍ ۝

لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ ۝

فَلَا أَقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُونَ ۝

وَمَا لَا تُبْصِرُونَ ۝

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيلًا مَّا تُوْمِنُونَ ۝

وَلَا يَقُولُ كَآهِنٍ قَلِيلًا مَّا تَدَّكَّرُونَ ۝

تَنْزِيلٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضُ الْأَقَاوِيلِ ۝

1. बहाई संप्रदाय दे लोक आखदे न जे बहाउल्लाह इस आस्तै सच्चा ऐ जे उसी दा'बे दे बा'द इक अरसे तक जींदा रौहने दा मौका मिलेआ, पर एह गल्ल झूठ ऐ। बहाउल्लाह नै इल्हाम हासल करने दा दा'वा नेई कीता। ओह ते आपू अपने-आपू गै खुदा आखदा हा ते खुदाई दा दा'वा इना कमजोर ऐ जे उसदी सचाई हर इक आदमी समझी सकदा ऐ। सिर्फ इल्हाम दे दा'बे कनै धोखा लगदा ऐ। इस आस्तै अल्लाह नै झूठे इल्हाम दी स'जा ते दस्सी, पर खुदाई दा दा'वा करने आहले दी ओह स'जा नेई दस्सी, की जे हर समझदार इन्सान आपू इस दा खंडन करी सकदा ऐ।

तां अस सच्चें गै इसी सज्जे हलथै नै पकड़ी
लैंदे ॥ 46 ॥

لَا خَذَانًا وَمِنَهُ بِالْيَمِينِ ﴿٢٩﴾

ते उसदी शाह रग (साह आहली नाड़) कट्टी
दिंदे ॥ 47 ॥

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ﴿٣٠﴾

ते उस सूत च तुंदे चा कोई बी ऐसा नेई होंदा
जो अगगें आइयै उसगी (खुदा दी पकड़ थमां)
बचाई सकदा ॥ 48 ॥

فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِرِينَ ﴿٣١﴾

ते एह (कुरआन) ते खुदा शा डरने आहल्लें
आस्तै नसीहत (ते बड़ाई) दा मूजब (साधन)
ऐ ॥ 49 ॥

وَإِنَّهُ لَتَذَكَّرٌ لِلْمُذَّبِينَ ﴿٣٢﴾

ते अस भलेआं जानने आं जे तुंदे च इस
(कुरआन) गी झुठलाने आहले बी न ॥ 50 ॥

وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِينَ ﴿٣٣﴾

ते (एह बी जानने आं जे) मुन्करें दे दिलें च
एह कुरआन हसरत! (पच्छोताऽ) पैदा करदा
ऐ ॥ 51 ॥

وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٣٤﴾

ते इस दी सचाई यकीनी तौरा पर स्पष्ट ऐ
॥ 52 ॥

وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ﴿٣٥﴾

इस आस्तै तू अपने महिमाशाली रब्ब दे नांऽ
कनै उसदी पवित्तरता दा यशोगान कर ॥ 53 ॥
(रुकू 2/6)

﴿٣٥﴾

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٣٦﴾

1. यानी इस कुरआन दी तलीम गी दिक्खियै केई बार उंदे दिलें च एह इच्छा जागदी ऐ जे काश! ऐसी तलीम साढ़े कश बी होंदी, ते अस वाद-विवाद च इस चाल्ली जलील (अपमानत) नेई होंदे।



सूर: अल्-मआरिज

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां पंजताली आयतां ते दो रूकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

पुच्छने आहला पुछदा ऐ (मुन्करें पर) अटल
अजाब कदूं औग? ॥ 2 ॥

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ۝

(याद रक्खो जे) मुन्करें गी उस शा बचाने
आहला कोई नेई (इस आस्तै समे बारै सुआल
करना बे-मैहनी ते बे-फायदा ऐ) ॥ 3 ॥

لِّلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ ۝

एह (अजाब) क्रमशः त्रक्की देने आहले खुदा
पासेआ औग ॥ 4 ॥

مِّنَ اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ ۝

फरिश्ते ते जिब्राईल यानी सधारण फरिश्ते ते
ईशवाणी आहलने आहले फरिश्ते उस (खुदा)
पासै उन्ने समे च चढ़दे न जिस दा अंदाजा
पंजाह 'ज्हार' साल दे बराबर होंदा ऐ ॥ 5 ॥

تَعْرُجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ
كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ۝

इस आस्तै तूं चंगी चाल्ली सबर कर ॥ 6 ॥

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيلًا ۝

1. किश विद्वानें गणित विद्या दे अधार पर संसार दी आयु दा अंदाजा लाया ऐ। उनें लगभग पंजाह ज्हार साल गै संसार दी सारी आयु दस्सी ऐ। इस आस्तै जेकर उंदा अंदाजा ठीक ऐ तां इसदा एह अर्थ ऐ जे इस आयत च संसार दी सारी आयु पासै इशारा ऐ। ईश्वर भगतें हजरत आदम शा लेइयै हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दे युग तक संसार दी आयु पंज ज्हार साल दस्सी ऐ, पर अनुमान बक्ख-बक्ख तरीकें कनै लाए जंदे न। आदम दी संतान शा नबियें दे प्रादुर्भाव (अवतार) तक दी आयु ममकन ऐ सत ज्हार साल होऐ ते धरती खंडें दी उत्पत्ति दे सिलसले च संसार दी आयु पंजाह ज्हार साल होऐ। इस आस्तै एह कोई मतभेद नेई।

एह लोक उस (ध्याड़े) गी बौहत दूर समझदे
न ॥ 7 ॥

إِلَهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ۝

पर अस इसी बौहत नेड़ै दिक्खने आं ॥ 8 ॥

وَتَرَاهُ قَرِيبًا ۝

उस रोज (प्रचंड गर्मी कारण) गास परघाले गेदे
त्रामे आंगर होई जाग ॥ 9 ॥

يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْمُهْلِ ۝

ते प्हाड़ पिंजी' गेदी उनै आंगर होई जांगन
॥ 10 ॥

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۝

ते उस दिन कोई दोस्त कुसै दोस्त बारै कोई
सुआल नेई पुच्छग ॥ 11 ॥

وَلَا يَسْأَلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا ۝

की जे उस रोज हर शख्स दी हालत उसदे
दोस्त गी दस्सी दित्ती जाग। उस दिन मुजरम
इच्छा प्रकट करग जे काश! ओह अज्जै दे
दिन अपने पुत्तरे (गी कुरबान करियै अपने
आपै गी अजाब शा बचाई लै) ॥ 12 ॥

يُبْصِرُ وَهُمْ يُودُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَقْتَدِي

مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍ بَيْنِهِ ۝

ते अपनी लाड़ी ते भ्राऽ ॥ 13 ॥

وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ ۝

ते अपने रिश्तेदार सरबंधियें गी जिंदे कश ओह
शरण लैदा होंदा हा ॥ 14 ॥

وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤْوِيهِ ۝

ते संसार च जे किश बी ऐ (उसी कुरबान
करियै) ओह अपने-आपै गी अजाब शा बचाई
लै ॥ 15 ॥

وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا لَّمْ يَنْجِيهِ ۝

सुनो! एह अजाब जिसदी खबर दित्ती गेदी ऐ,
शोला (अग्गी दे लोरे) आह्ला अजाब ऐ
॥ 16 ॥

كَلَّا إِنَّهَا لَأُظْلَىٰ ۝

सिरै तक दी खल्लड़ी गी दरहोड़ी देने आह्ला
अजाब ऐ ॥ 17 ॥

نَزَاعَةً لِّلشَّوٰى ۝

1. यानी ऐसे-ऐसे आविष्कार होंगन जियां अणु बंब ते हाईड्रोजन बंब, जिंदे पीने करी प्हाड़ें जैसी मजबूत चीजों
बी रूपें दे गोहड़ें आंगर उड़डी जांगन।

जो शख्स उस शा नस्सना चाहग ते पिट्ट फेरी लैग, ओह उसी बी अपने कश बुलाई लैग ॥ 18 ॥

تَدْعُوا مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّى ۝

ते (उसी बी) जो सारी उमर संसार च धन किट्टा करदा रेहा ते धने दा जखीरा करने च कामयाब होई गेआ ॥ 19 ॥

وَجَمَعَ فَأَوْعَى ۝

इन्सान दी फितरत (दा सभाऽ) रंग बदलना ऐ ॥ 20 ॥

إِنَّ الْإِنْسَانَ خَلْقَ هَلُوعًا ۝

जिसलै उसी कोई तकलीफ पुज्जै तां ओह घबराई जंदा ऐ ॥ 21 ॥

إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ۝

ते जिसलै उसी कोई फायदा पुज्जै तां कंजूसी करन लगी पौंदा ऐ (ते एह नेई चांहदा जे ओहदा कोई शरीक होऐ) ॥ 22 ॥

وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَوْعًا ۝

सिवाए नमाज पढ़ने आहलें दे ॥ 23 ॥

إِلَّا الْمُصَلِّينَ ۝

जो अपनी नमाजें पर सदा कायम रौंहदे न ॥ 24 ॥

الَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ۝

ते जिंदी धन-दौलत च इक निश्चत हिस्सा गरीब मंगतें दा बी होंदा ऐ ॥ 25 ॥

وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَعْلُومٌ ۝

ते उंदा बी होंदा ऐ जो मंगी नेई सकदे (यानी पशु पैंछियें ते गूंगे-बोले लोकें दा बी) ॥ 26 ॥

لِلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ۝

ते जो लोक जज़ा-स'जा दे ध्याड़े गी सच्चा मनदे न ॥ 27 ॥

وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ۝

ते जो लोक अपने रब्ब दे अज़ाब शा डरदे न ॥ 28 ॥

وَالَّذِينَ هُمْ مِنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُشْفِقُونَ ۝

(ते सच्च इय्यै ऐ) जे उंदे रब्ब दे अज़ाब शा कोई अपनी शक्ति कनै नेई बची सकदा ॥ 29 ॥

إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَا مُؤِنُونَ ۝

ते ओह लोक बी जो अपनी गुप्त अंगें दी रक्षा करदे न ॥ 30 ॥

सिवाए अपनी लाड़ियें जां दासियें दे, उंदी कोई निंदेआ नेई कीती जाग ॥ 31 ॥

पर जो लोक इस शा अगमें बधने दी इच्छा करदे न, ओह हद्द शा बधने आहले न ॥ 32 ॥

(ते इससै चाल्ली ओह लोक बी अजाब शा सुरक्षत न) जो अपने कश रक्खी दी अमानतें ते अपनी प्रतिज्ञा दी पहाजत करदे न ॥ 33 ॥

ते जो अपनी गुआहियें पर कायम रँहदे न (यानी कुसै शा डरिये झूठियां गुआहियां नेई दिंदे) ॥ 34 ॥

ते ओह लोक बी जो अपनी नमाजें दी रक्षा करदे न ॥ 35 ॥

ओह सुगें च सम्मान कनै रक्खे जांगन ॥ 36 ॥
(रुकू 1/7)

इस आस्तै मुन्करें गी केह होई गेदा ऐ जे तेरे पासै गुस्से च सिर चुक्कियै दौड़दे आवा करदे न? ॥ 37 ॥

सज्जे पासेआ बी ते खबबे पासेआ बी, बक्ख-बक्ख टोल्लियें दे रूपै च ॥ 38 ॥

क्या उंदे चा हर शख्स जानदा ऐ जे उसी नैमतें आहले सुगें च दाखल करी दिता जाग (चाहे ओह संसारक ऐ ते चाहे आखरत दा) ॥ 39 ॥

ऐसा कदें बी नेई होग। असें उनेंगी ऐसी चीजै शा पैदा कीते दा ऐ जिसी ओह जानदे न ॥ 40 ॥

وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَفِظُونَ ﴿٣٠﴾

إِلَّا عَلَىٰ أَرْوَاحِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ
أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣١﴾
فَمَنْ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ
هُمُ الْعَادُونَ ﴿٣٢﴾

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ
رِعُونَ ﴿٣٣﴾

وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَتِهِمْ قَائِمُونَ ﴿٣٤﴾

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ
يَحَافِظُونَ ﴿٣٥﴾

أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُّكْرَمُونَ ﴿٣٦﴾

فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا قِبَلَكَ مَهْطِعِينَ ﴿٣٧﴾

عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ﴿٣٨﴾

أَيُضْمَعُ كُلُّ امْرَأٍ مِنْهُمْ أَنْ يَدْخَلَ
جَنَّةَ نَعِيمٍ ﴿٣٩﴾

كَلَّا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِمَّا يَعْلَمُونَ ﴿٤٠﴾

इस आस्तै अऊं (इक कुरआन गी नाजल करने आहले) पूरब ते पच्छम दे रब्ब गी गुआह दे रूपै च पेश करना, जे अस इस गल्ला च समर्थ आं ॥ 41 ॥

जे इस कौम गी तबाह करिये इक होर अच्छी कौम पैदा करी देखै ते कोई असेंगी इस इरादे शा रोकी नेई सकदा ॥ 42 ॥

इस आस्तै तू उनेंगी छोड़ी दे जे ओह सचाई गी गंदोलदे रौहन ते हस्सने-खेदने च पेदे (मस्त) रौहन, उस बेले तगर जे ओह उस ध्याड़े गी दिक्खी लैन जेहदा उंदे कनै बा'यदा कीता जंदा ऐ ॥ 43 ॥

जिस दिन ओह कबरें चा जींदे होइयै निकलडन ते तौले-तौले नस्सा करदे होंगन, आखो जे ओह खास खंभें आहले पासै दौड़दे जा करदे होन ॥ 44 ॥

उंदियां अक्खीं शर्म कनै झुकी दियां होंगन ते उंदे चेहरें पर जिल्लत छाई दी होग। एह ओह ध्याड़ा ऐ जेहदा उंदे कनै बा'यदा कीता जंदा ऐ ॥ 45 ॥ (रुकू 2/8)

فَلَا أَقْسَمُ بِرَبِّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ
إِنَّا لَقَدِرُونَ ﴿٤١﴾

عَلَىٰ أَنْ تُبَدِّلَ خَيْرًا مِنْهُمْ وَمَا نَحْنُ
بِمَسْبُوقِينَ ﴿٤٢﴾

فَدَرَهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا
يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوْعَدُونَ ﴿٤٣﴾

يَوْمَ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا
كَأَنَّهُمْ إِلَىٰ نُصَبٍ يُّوفُّصُونَ ﴿٤٤﴾

خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهُقُهُمْ ذِلَّةٌ
ذَٰلِكَ الْيَوْمِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٤٥﴾

1. इस थाहरा पर जेकर संसारक प्रलेआ लैती जा तां अर्थ एह होग जे जिसलै लौकिक (दुन्याबी) अजाब आई जाग ते मुक्करें च भै कारण इक नमीं जाग्रति पैदा होई जाग ते ओह अपनी कबरें चा तेज गति कनै बाहर आँगन यानी उंदे च जीवन दियां किरणां फुटी पाँगन जियां जे मक्का विजय दे बा'द मक्का आहलें च नमें जीवन दा संचार होआ। खास खंभें बक्खी दौड़दे जाने दा अर्थ एह ऐ जे उस रोज अजाब शा शरण पाने आस्तै ओह अपने सरदारें पासै नसदे आँगन जियां जे मक्का विजय बेले होआ। हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. नै जिसलै एह घोशना कीती जे जो शख्स अपने घरे दे भित बंद करियै अंदर बेही जाग ते जो शख्स अबू-सुफ्रियान दे घर जां बिलाल दे झंडे हेठ जां काबा च आई जाग उनें, सारें गी शरण दिती जाग। तां ओह पागलें आंगर, बचने आस्तै उनें खंभें पासै नस्से।



सूर: नूह

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां नत्तरी आयतां ते दो रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांS लेइयै (पढ़ना) जे बे-
हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

असें नूह गी उसदी कौम पासै एह आखियै
भेजेआ हा जे अपनी कौम दे लोकें गी उस
समे दे औने शा पैहलें सोहगा कर जिसलै जे
उंदे पर दर्दनाक अजाब नाजल होऐ ॥ 2 ॥

उसनै (अपनी कौम कनै मखातब होइयै)
गलाया हा, हे मेरी कौम दे लोको! अ'ऊं
थुआड़े कश इक जाहरी-बाहरी डराने आहला
(नबी) होइयै आया आं ॥ 3 ॥

(ते तुसेंगी आखना जे) सिर्फ अल्लाह दी
अबादत करो ते उसै दा संयम अखत्यार
करो, ते मेरी आज्ञा दा पालन करो ॥ 4 ॥

ओह थुआड़े गुनाहें गी माफ करग ते तुसेंगी
इक निश्चत समे तक ढिल्ल देग ते जेकर तुस
जानदे ओ, (तां समझी लैओ जे) सच्चें गै
(कुसै कौम दी तबाही आस्तै) खुदा द्वारा
निश्चत कीती गेदी घड़ी जिसलै आई जा तां
उसी टालेआ नेई जाई सकदा ॥ 5 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ
قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ①

قَالَ يَقَوْمِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ①

إِنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ وَأَطِيعُوا ①

يَعْفِرْ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰ
أَجَلٍ مُّسَمًّى ① إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ
لَا يُؤَخَّرُ ① لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ①

फी उसनै (खुदा गी) गलाया, हे मेरे रब्ब मैं अपनी कौम दे लोकें गी रातीं बेलै बी पुकारेआ हा ते दिनै मौकै बी पुकारेआ हा ॥ 6 ॥

पर मेरे प्रचार कारण ओ होर बी दूर नस्सन लगे ॥ 7 ॥

ते मैं जिसलै कदें उनेंगी उपदेश दिता तां जे ओह मन्नी लैन ते तू उनेंगी माफ करी दे, तां उनें अपनी आँगलीं अपने कनै च पाई दितियां ते अपने (सिरें पर) कपड़े पलेटी लैते ते इन्कार दा हठ कीता ते बड़े घमंड शा कम्म लैता ॥ 8 ॥

फी मैं उनेंगी उच्ची अवाजै च (भाशन राहें) उपदेश दिता ॥ 9 ॥

फी मैं उनेंगी जाहिर च (बांदै) समझाने दे बा'द एकांत च बी उपदेश दिता ॥ 10 ॥

ते मैं उनेंगी गलाया जे अपने रब्ब शा माफी मंगो। ओह बड़ा बख्शने आह्ला ऐ ॥ 11 ॥

जेकर तुस तोबा करगे ओ तां ओह बदल बरहाने आहले बदलें गी थुआड़े पासै भेजग ॥ 12 ॥

ते धन-दौलत ते संतान कनै थुआड़ी मदद करग ते थुआड़े आस्तै बाग उगाग ते थुआड़े आस्तै नदियां बगाग ॥ 13 ॥

तुसेंगी केह होई गेदा ऐ जे तुस अल्लाह शा हिक्मत दी मेद नेई रखदे? ॥ 14 ॥

हालांके उसनै तुसेंगी बड़ियां त्रक्कियां हासल करने दी ताकत देइयै भेजे दा ऐ ॥ 15 ॥

क्या तुसें दिक्खेआ नेई जे अल्लाह नै किस चाल्ली सत्त गास पैदा कीते न, जो (कनून दे लिहाज कनै) इक-दूए दे मताबक न ॥ 16 ॥

قَالَ رَبِّ اِنِّیۡ دَعَوْتُ قَوْمِیۡ لَیۡلًا
وَهَارًا ۙ

فَلَمۡ یَرِدْهُمۡ دُعَاۤیِیۡ الْاِفِرَارًا ۙ

وَ اِنِّیۡ کَلِمًا دَعَوْتُهُمۡ لِتَغْفِرَ لَهُمۡ جَعَلُوۡا
اَصَابِعَهُمۡ فِیۡۤ اِذَانِهِمۡ وَ اسْتَعۡشَوۡا
ثِیَۡابَهُمۡ وَ اَصۡرُوۡا وَ اسْتَكْبَرُوۡا وَ اسْتِکْبَارًا ۙ

ثُمَّ اِنِّیۡ دَعَوْتُهُمۡ جِهَارًا ۙ

ثُمَّ اِنِّیۡ اَعْلَنۡتُ لَهُمۡ وَ اَسۡرَرۡتُ لَهُمۡ
اِسۡرَارًا ۙ

فَقُلۡتُ اسْتَغْفِرُوۡا رَبَّکُمۡ ۙ اِنَّهٗ کَانَ
عَظِیۡمًا ۙ

یُرِیۡسِلِ السَّمَآءَ عَلَیۡکُمۡ مِّدۡرَارًا ۙ

وَ یُمِدِّدۡکُمۡ بِاَمْوَالٍ وَ بَنِیۡنٍ وَ یَجْعَلَ
لَکُمۡ جَنَّتٍ وَ یَجْعَلَ لَکُمۡ اَنْهٰرًا ۙ

مَا لَکُمۡ لَا تَرْجُوۡنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ۙ

وَ قَدۡ خَلَقۡتُمۡ اَطۡوَارًا ۙ

اَلَمْ تَرَوْا کَیۡفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبۡعَ سَمٰوٰتٍ
طَبَاقًا ۙ

ते उसनै चन्नै गी उंदे (गासैं) च नूर (रोशनी)
दा साधन बनाया ऐ ते सूरज गी गासैं च इक
दिय्ये आंगर बनाया ऐ ॥ 17 ॥

وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ
الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿٧١﴾

ते अल्लाह नै तुसेंगी धरती चा पैदा कीता ते
तुसेंगी विकास प्रदान कीता ॥ 18 ॥

وَاللّٰهُ اَنْبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ نَبَاتًا ﴿٧٢﴾

फी ओह् तुसेंगी परताइयै उससै च लेई जाग
ते उससै चा कड्डग ॥ 19 ॥

ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ
اِحْرَاجًا ﴿٧٣﴾

ते अल्लाह नै धरती गी पदधरा बनाया ऐ
॥ 20 ॥

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ الْاَرْضَ بِسَاطًا ﴿٧٤﴾

तां जे तुस ओहदे खु'ल्ले-डु'ल्ले रस्तें पर
चलो ॥ 21 ॥ (रकू 1/9)

تَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَا جَا ﴿٧٥﴾

फी नूह नै गलाया जे हे मेरे रब्ब! उनें मेरी
ना-फरमानी कीती ऐ ते (मी छोड़ियै) उसदे
पिच्छें चली पैदे न जिस दा धन ते उलाद उसी
रुहानी घाटे च बर्धादा ऐ ॥ 22 ॥

قَالَ نُوحٌ رَّبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاَتَّبَعُوا
مَنْ لَّمْ يَزِدْهُ مَالَهُ وَوَلَدَهُ اِلَّا خَسَارًا ﴿٧٦﴾

ते (मेरै खलाफ) उनें बड़े-बड़े खड़जैतर रचे
॥ 23 ॥

وَمَكْرُؤًا مَّكْرًا كَبِيرًا ﴿٧٧﴾

ते (अपनी कौम गी) गलांदे रेह न जे तुस
लोक अपने उपास्यें गी नेई छोड़ेओ, नां वदद
गी छोड़ेओ नां सुवा गी, नां यागूस गी, ते नां
याऊक गी ते नां नस्र' गी ॥ 24 ॥

وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ
وَدًّا وَلَا سُوَاعًا وَلَا يَٰعُوثَ وَيَعُوقَ
وَسُرًّا ﴿٧٨﴾

ते उनें मते-हारे लोकें गी गुमराह करी दिता
ते (हे खुदा!) जालमें गी सिर्फ नकामी च गै
बधायीं ॥ 25 ॥

وَقَدْ اَصْلَوْا كَثِيرًا وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِيْنَ
اِلَّا اَصْلًا ﴿٧٩﴾

1. एह नांS नखतरें ते उंदी राशियें दे अघार पर न। मक्का ते ताएफ़ आहलें अपनी मूर्तियें दे बी इय्यै नांS रक्खे दे हे। ईसाई आखदे न जे हज़रत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. ने मक्का दी मूर्तियें गी हज़रत नूह दी कौम पासै मन्सुब (संबद्ध) कीते दा ऐ, हालांके बैहमी गल्लां इक-दूए दी नकल होंदियां न। मूर्तियां बी बैहम न। मक्का आहलें अपने पूर्वजें शा सुनियै अपनी मूर्तियें दे एह नांS रक्खी लैते दे हे।

ओह अपने गुनाहें कारण गरक कीते गे, ते अग्गी च दाखल कीते (सुद्दे) गे, ते अल्लाह दे सिवा उनेंगी अपने आस्ते कोई मददगार नेई मिलेआ ॥ 26 ॥

ते नूह नै एह बी प्रार्थना कीती जे हे मेरे रब्ब! धरती पर मुन्करें दा कोई घर बाकी नेई बचै' ॥ 27 ॥

जेकर तू उनेंगी इससे चाल्ली छोड़ी देग्गा तां एह तेरे दूए बंदें गी बी गुमराह करडन ते ओह दुराचारी? ते इन्कार करने आहले दे सिवा कोई बी बच्चा पैदा नेई करडन ॥ 28 ॥

हे मेरे रब्ब! मिगी ते मेरे माता-पिता गी ते हर ऐसे शख्स गी जो मेरे घरे च मोमिन होइयै दाखल होंदा ऐ उसगी बखशी दे ते सारे मोमिन मडदें ते सारी मोमिन जनानियें गी बी! ते इयां होऐ जे जालम सिर्फ तबाही च गै त्रक्की करन (फलन-फुल्लन) (उनेंगी कामयाबी नसीब नेई होऐ) ॥ 29 ॥ (सूक् 2/10)

مِمَّا خَطِيئَتِهِمْ أُغْرِقُوا فَأَدْخَلُوا نَارًا ۗ
فَلَمْ يَجِدُوا لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْصَارًا ۝

وَقَالَ نُوحٌ رَبِّ لَا تَذَرْنِي عَلَى الْأَرْضِ
مِنَ الْكَافِرِينَ دِيَارًا ۝

إِنَّكَ إِن تَذَرَهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ
وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فِاجِرًا كَفَّارًا ۝

رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ
بَيْتِي مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۗ
وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ۝

1. एह बद-दुआS नेई जे सारे मुन्कर मारे जान, बल्के दुआS ऐ जे सारी कौम ईमान लेई आवै ते मुन्कर कोई नेई रवै।
2. यानी जेकर एह लोक कुफर दी हालती च रेह तां बाकी लोकें गी बी मुन्कर बनाई देंग ते जेहका उदै बच्चा पैदा होग ओहदे शा शिकं दा पालन कराडन। इसदा एह अर्थ नेई ऐ जे बच्चा अल्लाह थमां कुफर लेइयै ओग।

سُورَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ تِسْعٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

सूर: अल्-जिन्न

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां नत्तरी आयतां ते दो रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांs लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۞

तूं गलाई दे जे मिगी वह्नी कीती गेदी ऐ जे
जिन्नों चा किश लोकें तैरे शा (कुर'आन)
सुनेआ। इस आस्तै बापस जाइयै उनें अपनी
कौम दे लोकें गी गलाया जे असें इक अजीब
कुर'आन सुनेआ ऐ ॥ 2 ॥

قُلْ أَوْحَىٰ إِلَيَّ إِلَٰهُنَّ أَنَّهُ سَمِعَ نَفَرًا مِّنَ
الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا ۞

ओह हदायत आहली बक्खी लेई जंदा ऐ,
जिसदे नतीजे च अस ओहदे पर ईमान लेई
आए आं ते अस भविक्ख च कुसैगी अपने
रब्ब दा शरीक नेई बनागे ॥ 3 ॥

يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ وَلَنْ نُشْرِكَ
بِرَبِّنَا أَحَدًا ۞

ते सच्च एह ऐ जे सादा रब्ब अति-ऐत्त
महिमाशाली ऐ ते नां उसनै कोई जनानी
बनाई ऐ ते नां कोई पुत्तर बनाया ऐ ॥ 4 ॥

وَأَنَّهُ تَعَلَّىٰ جَدْرًا مِّمَّا اتَّخَذَ صَاحِبَةً
وَلَا وَلَدًا ۞

1. इस शा पैहलें बी जिन्नें दे औने दा जिकर होई चुके दा ऐ उलथें दस्सेआ गेदा ऐ जे हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. कश किश जिन्न आए हे। इत्थें अल्लाह नै वह्नी राहें तुसेंगी दस्से दा ऐ जे किश जिन्नें थुआड़ा कुर'आन सुने दा ऐ। इस आस्तै एह घटना होरे ऐ ते पैहली घटना होरे ही। इस घटना गी ते जिन्नें गी समझने आस्तै दिक्खो सूर: अहक्राफ आयत 30 ते सूर: सबा आयत 13 सूर: अहक्राफ च जिन्नें जिन्नें दा जिकर ऐ अस इतिहास ते हदीस राहें सिद्ध करी चुके दे आं जे ओह किश यहूदी लोक हे। इस आस्तै इत्थें बी जिन्नें दा अर्थ मक्का थमां बाहरें दे यहूदी न जिन्नें गी कुर'आन दा पता चलेआ ते ओह उसी सुनने आस्तै आए हे, पर अपनी कौम दे लोकें शा डरदे छप्पियै आए ते कुर'आन सुनियै बापस उठी गे।
2. इस शा सेहो होंदा ऐ जे ओह ईसाई प्रभाव शा प्रभावत हे, की जे उनें अपना जो मंतव्य (अकीदा) दस्से दा ऐ ओह ईसाइयें दा ऐ यहूदियें दा नेई। इतिहास शा बी सिद्ध ऐ जे ईसाइयें दी त्रक्की दे युग च किश यहूदी बी ईसाई प्रभाव दे अधीन आई गे हे।

एह बी सच्च ऐ जे साढ़े चा मूरख लोक अल्लाह दे बारे गैर-वाजब गल्लां करदे रौहदे हे ॥ 5 ॥

وَأَنَّهُ كَانَ يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ۝

ते साढ़ा एह बिचार हा जे मनुक्ख ते जिन अल्लाह दे बारे झूठ नेई बोल्ली सकदे ॥ 6 ॥

وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن نَقُولَ الْإِنسَ وَالْجِنُّ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝

ते फी एह बी सचाई ऐ जे मनुक्खें चा किश लोक ऐसे हे जो जिनें शा किश बंदें दी पनाह मंगदे होंदे हे। इस आस्तै इसदा नतीजा एह निकलेआ जे (इस गल्ला नै) जिनें गी घमंड च होर बी बधाई दिता ॥ 7 ॥

وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ۝

ते सच्चें गै ओह (यहूदी) बी यकीन करदे हे जियां जे तुस विश्वास करदे ओ जे अल्लाह अगमें आस्तै कदें कुसै गी नबी बनाइयै नेई भेजग' ॥ 8 ॥

وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنْتُمْ أَن لَّن نَّبِيعَ اللَّهَ أَحَدًا ۝

ते असें गासै गी छूहता (यानी गासी इलम हासल करने दी कोशश कीती) पर असें उसी ताकतवर पैहरेदारें ते शिहाबे-साकिब (उल्का) कन्नै भरे दे दिक्खेआ ॥ 9 ॥

وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَا فِيهَا رَبًّا لَطِيفًا بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ۝

ते अस (पैहलें) उस च (गासी गल्लां) सुनने आस्तै बौहदे होंदे हे पर हून जो कोई (गासी गल्लां) सुनने दी कोशश करदा ऐ तां ओह इक (बिनाश-कारी) लोरें आहले नखत्तर गी अपनी घात' च दिखदा ऐ (यानी लोरें आहले नखत्तर च अपने आपै गी घिरे दा मसूस करदा ऐ) ॥ 10 ॥

وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ فَمَنْ يَسْمَعِ الْآنَ بِيَدِ لُهُ شَهَابًا بِرِجَالٍ ۝

- उंदे यहूदी होने दा सबूत पवित्र कुर'आन च मिलदा ऐ। कुर'आन दसदा ऐ जे जिसलै यूसुफ़ दा काल होई गेआ तां उसी मनने आहलें गलाया जे हून अगड़ताई कोई रसूल नेई औग। इस थाहर बी जिनें दे मूहा उसै अकीदे गी दुरहाया गेदा ऐ जे तुस विश्वास करदे हे जे भविक्ख च अल्लाह कुसैगी रसूल नियुक्त नेई करग, की जे ख़ातमुन्नबिय्यीन दा अवतार होई चुके दा ऐ। मुसलमान इस आयत पर गौर करन ते अपने अजाम गी सोची लैन।
- यानी जो शख्स इस्लाम च झूठियां गल्लां मलाना चांहदा ऐ जियां जे पैहलें दस्सेआ गेदा ऐ तां अल्लाह हज़रत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. दी बरकत कन्नै उसदी तबाही दा समान जुटाई दिदा ऐ।

ते अस नेई जानदे जे इस औने आहले राहें धरती च बास करने आहले लोकें आस्तै कुसै अजाब दा फैसला कीता गेदा ऐ। जां उंदे आस्तै उंदे रब्ब नै हदायत देने दा फैसला कीते दा ऐ ॥ 11 ॥

ते साढ़े बिच्चा किश नेक लोक बी हैन ते किश इसदे खलाफ (उलट) बी हैन। अस बक्ख-बक्ख रस्तें पर जा करने आं ॥ 12 ॥

ते अस भरोसा करदे हे जे अस दुनियां च अल्लाह गी नकाम नेई बनाई सकदे ते नां अस उसी दौड़-भज्ज करियै नकाम बनाई सकने आं ॥ 13 ॥

ते असें ते जिसलै हदायत दी गल्ल सुनी, उस पर ईमान लेई आए ते जो शख्स अपने रब्ब पर ईमान आहनदा ऐ तां ओह नां कुसै नुकसान शा डरदा ऐ ते नां कुसै जुलम शा डरदा ऐ ॥ 14 ॥

ते साढ़े चा किश फरमांबरदार न ते किश जालम बी हैन ते जो कोई फरमांबरदार बनदा ऐ, ऊऐ हदायत दा चाहबान होंदा ऐ ॥ 15 ॥

ते जो जुलम करदे न, ऊऐ ज्हन्नम दा बालन बनदे न ॥ 16 ॥

ते (हे पैगंबर! मैं फैसला करी रक्खे दा ऐ जे) जेकर एह (मक्का बासी काफर) साढ़े दस्से दे रस्ते पर चली पाँदे तां अस उनेंगी मन-चाहया पानी पलेंदे ॥ 17 ॥

तां जे ओहदे राहें उंदी अजमैश करचै ते जो बी शख्स अपने रब्ब दे जिकर शा मूह फेरदा ऐ ओह (खुदा) उसी ऐसे अजाब दे रस्ते पर चलांदा ऐ जेहका बधदा गै जंदा ऐ (ते

وَأَنَا لَا نَدْرِي أَشَرٌّ أُرِيدَ بِمَنْ فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝

وَأَنَا مِمَّا الصَّالِحُونَ وَمِمَّا دُونَ ذَلِكَ كُنَّا طَرَائِقَ قَدَدًا ۝

وَأَنَا ظَنَنَّا أَنْ لَنْ نُعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ وَلَنْ نُعْجِزَهُ هَرَبًا ۝

وَأَنَا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدَىٰ أُمَّتًا بِهِ ۝ فَمَنْ يُؤْمِنُ بِرَبِّهِ فَلَا يَحْأَفُ بِخَسَا وَلَا لَارْهَقًا ۝

وَأَنَا مِمَّا الْمُسْلِمُونَ وَمِمَّا الْقَاسِطُونَ ۝ فَمَنْ أَسْلَمَ فَأُولَٰئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ۝

وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝

وَأَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوا عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَهُمْ مَاءً غَدَقًا ۝

لِنُقَبِّهِمْ فِيهِ ۝ وَمَنْ يُعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۝

उनें ऊरे रस्ता अखत्यार कीता/अपनाया ऐ)

॥ 18 ॥

ते असें एह बी फैसला कीता हा जे मसजदां म्हेशां अल्लाह दी गै मलकीत बनाई दितियां जान। इस आस्तै हे लोको! तुस उंदे च उसदे सिवा कुसैगी नेई पुकारो ॥ 19 ॥

ते असेंगी लब्धा करदा ऐ जे जिसलै अल्लाह दा बंदा (हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व.) उसी पुकारने आस्तै खड़ोंदा ऐ तां एह (मक्का बासी) ओहदे पर झपटा मारियै आई पोंदे न ॥ 20 ॥ (स्कू 1/11)

तूं गलाई दे जे अ'ऊं ते सिर्फ अपने रब्ब गी बुलाना आं ते कुसै गी उसदा शरीक नेई बनांदा ॥ 21 ॥

ते एह बी गलाई दे जे तुसेंगी किसै किसमै दा नुकसान पुजाने जां हदायत देने दी मेरे च ताकत नेई ॥ 22 ॥

(बल्के एह बी) आखी दे (जे जेकर अल्लाह मेरे पर अजाब नाजल करै तां) मिगी अल्लाह दे अजाब थमां बचाने आह्ला कोई नेई ते उसी छोड़ियै मेरे आस्तै कोई होर ठकाना नेई ऐ ॥ 23 ॥

मेरा कम्म ते सिर्फ एह ऐ जे अल्लाह दी गल्ल ते ओहदा सनेहा पुजाई देआं, ते जो लोक अल्लाह ते उसदे रसूल दी गल्ल नेई मनदे, उनेंगी दोजख/नरक मिलदा ऐ, ओह ओहदे च चिरे तगर बास करदे रौहगन ॥ 24 ॥

हां! जिसलै ओह बा'यदे आहले अजाब गी दिक्खी लैगन तां समझी जांगन (जे उंदा ते हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दा मुकाबला

وَأَنَّ الْمَسْجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ۝

وَأَنْتَ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۝

قُلْ إِنَّمَا أَدْعُوا رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ۝

قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ۝

قُلْ إِنِّي لَنْ يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ وَلَنْ أَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝

إِلَّا بِلَعْنَةِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ ۖ وَمَنْ يُعِصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا أَبَدًا ۝

حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَيَسْئَلُونَ

सामने रखदे होई) मददगार दे स्हाबें कु'न कमजोर ऐ, ते तैदाद दे स्हाबें कु'न घट्टा ऐ ॥ 25 ॥

तू आखी दे जे अ'ऊं नेई जानदा जे थुआड़ी बा 'यदे आहली घड़ी लागै ऐ, जां अल्लाह ओहदे आस्तै कोई लम्मी अबधी निश्चत करग ॥ 26 ॥

गैब दा जानने आहला ऊऐ ऐ, ओह अपने गैब पर कुसैगी समर्थवान नेई करदा/बनांदा ॥ 27 ॥

सिवाए ऐसे रसूल दे जिसगी ओह इस कम्मै आस्तै पसंद करी लैंदा ऐ ते इस रसूल दी एह शान ऐ जे इसदे अगों बी ते इसदे पिच्छें बी संरक्षक (पहाजती) फ़रिश्तें दा दल चलदा ऐ ॥ 28 ॥

तां जे अल्लाह समझी लै जे उनें रसूलें अपने रब्ब दे सनेह गी लोकें तक पुजाई दिता ऐ ते जे किश उंदे कश ऐ उसी घेरे च रखदा ऐ ते हर चीजै गी गिनियै रखदा ऐ ॥ 29 ॥ (स्कू 2/12)

مَنْ أَضْعَفُ نَاصِرًا وَأَوْقَلُّ عَدَدًا ۝

قُلْ إِنْ أَدْرِي أَقْرَبُ مَا تُوْعَدُونَ أَمْ
يَجْعَلُ لَهُ رَبِّي أَمَدًا ۝

عَلِمَ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِ
أَحَدًا ۝

إِلَّا مَنِ ارْتَضَىٰ مِنْ رَسُولٍ فَإِنَّهُ يَسْلُكُ
مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ رَصَدًا ۝

يَعْلَمُونَ قَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا
وَأَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَأَحْصَىٰ كُلَّ شَيْءٍ
عَدَدًا ۝

1. यानी फैसले दा समां औने पर हजरत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. दे अनुयायियें दी गिनतरी बधी जाग ते मुक्करें दी गिनतरी घटी जाग, जियां जे असल च होआ बी। एह इक बौहत बड़्डी भविक्खवाणी ही जो अपने समे पर पूरी होई। खास करियें जिसलें एह दिक्खेआ जा जे एह सूर: मक्की ऐ। जिसलें मुसलमान कमजोर ते थोड़े हे।
2. यानी ओह उसी मती मातरा च गैब दा इलम बख़शादा ऐ।



सूर: अल्-मुज़म्मिल

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां इक्की आयतां ते दो रकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांउ लेइयै पढ़ना जो बे-
हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रैहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

हे चादर च लपटोए दे! (अल्लाह दी रैहमत
दा इंतजार करने आहले!) ॥ 2 ॥

يَا أَيُّهَا الْمَرْمَلُ ①

रातीं गी उट्टी-उट्टियै अबादत कर, जेहदे नै
साढ़ा मकसद एह ऐ जे रातीं दा ज्यादा हिस्सा
अबादत च गजारा कर ॥ 3 ॥

قُمِ اللَّيْلَ إِلَّا قَلِيلًا ①

यानी उस दा अद्धा¹ हिस्सा जां अद्धे शा
किश घट्ट करी दे ॥ 4 ॥

نُصِفْهُ أَوْ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيلًا ①

जां उस पर किश होर बधाई दे ते कुरआन गी
मिट्टी अवाजै च पढ़ा कर ॥ 5 ॥

أَوْزِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا ①

अस तेरे पर इक ऐसा कलाम उतारने आहले
आं जो (जिम्मेदारी दे सहाबें) बड़ा बोझल/
भारा ऐ ॥ 6 ॥

إِنَّا سُنِقُوا عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا ①

रातीं बेलै उटटना मनें गी लताड़ने दा सारें शा
कामयाब नुसखा ऐ ते रातीं जागने आहलें गी
सच्च² दी बी आदत पेई जंदा ऐ ॥ 7 ॥

إِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْأًا
وَأَقْوَمُ قِيلًا ①

1. किश रातीं बड़ियां घट्ट होंदियां न। उंदे च सेहत गी नजर च रखदे होई सिर्फ थोड़े चिरै आसतै जागेआ जंदा ऐ, पर फरमांदा ऐ जे जिसलै दिन-रात बराबर होन तां रातीं दा अद्धा हिस्सा जागा करो ते अद्धा हिस्सा सौआ करो ते जिसलै रातीं लमियां होन तां ज्यादा चिर जागा करो ते थोड़ा चिर सौआ करो ते जिसलै जागो तां उसलै कुरआन पढ़ा करो।
2. यानी अबादत दी बजा करी उसदी स्थानियत कामिल होई जंदा ऐ ते ओह झूठ शा पढ़ेज करन लगी पौदा ऐ।

तुगी दिनें बेलै मते हारे कम्म' होंदे न ॥ 8 ॥

ते चाही दा ऐ जे तू अपने रब्ब दियें सिफतें
गी याद करा कर ते उससै कन्नै दिल ला करा
कर ॥ 9 ॥

ओह पूरब दा बी रब्ब ऐ ते पच्छम दा बी रब्ब
ऐ। उस दे सिवा कोई उपास्य नेई। इस आस्तै
उसी गै अपना कारसाज बनाऽ ॥ 10 ॥

ते जे किश ओह (तेरे बरोधी) आखदे न उस
पर सबर कर ते अच्छा ब्यहार करदे होई उंदे
शा अलग्ग होई जा ॥ 11 ॥

ते नैमत आहले (मालदार) मुन्करें गी ते मिगी
इक्कला छोड़ी दे ते तू उनेंगी किश ढिल्ल दे
(ते उंदी तौले तबाही आस्तै दुआऽ नेई करा
कर, अ'ऊं आपू गै उनेंगी तबाह करी देगा)
॥ 12 ॥

साढ़े कश बक्ख-बक्ख किसमें दियां बेड़ियां
ते नरक न ॥ 13 ॥

ते ऐसा भोजन बी ऐ जो गले च फसदा ऐ ते
दर्दनाक अजाब बी ऐ ॥ 14 ॥

जिस दिन धरती ते फ्हाड़ कंबगन ते फ्हाड़
ऐसे टिब्बें आंगर होई जांगन जो अपने-आप
फिस्सी जंदे न (उस रोज ओह अजाब आँग)
॥ 15 ॥

हे लोको! असें थुआड़े कश इक ऐसा
रसूल भेजे दा ऐ जो तुंदे पर नगरान ऐ, इयै
नेहा जनेहा फिरऔन कश रसूल भेजेआ हा
॥ 16 ॥

إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيلًا ۝
وَأَذْكُرَ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ
تَبَتُّيلًا ۝

رَبِّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ۝

وَأَصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ
هَجْرًا جَمِيلًا ۝

وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولِي النَّعْمَةِ
وَمَهْلُمُ قَلِيلًا ۝

إِنَّ لَدَيْنَا أَنكَالًا وَجَحِيمًا ۝

وَوَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ۝

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ
الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ۝

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا
عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ
رَسُولًا ۝

1. रातीं गी अबादत करने दा हुकम असें इस आस्तै दिता ऐ जे दिनें लोक मिलदे रँहेंदे न ते अपनी दुन्याबी जरूरतों पेश करदे रँहेंदे न जां धार्मिक सुआल पुछदे रँहेंदे न।

फी फिरऔन नै उस रसूल दी ना-फरमानी कीती ही, ते असें उसी इक बिपता आहले अज़ाब कनै पकड़ी लैता हा ॥ 17 ॥

ते दस्सो तां! जेकर तुसें उस ध्याड़े दा इन्कार कीता, जो जुआनें गी बुद्धा बनाई दिंदा ऐ तां तुस किस चाल्ली (अज़ाब शा) सुरक्षत रौहगे ॥ 18 ॥

गास आपूं गै उस अज़ाब कनै फटी जाने आहला ऐ। एह उस (खुदा) दा बा'यदा ऐ जो पूरा होइयै रौहग ॥ 19 ॥

एह (कुरआन) इक नसीहत ऐ। इस आस्तै जो चाह अपने रब्ब कश जाने दा स्ता अखत्यार करी लै ॥ 20 ॥ (रुकू 1/13)

तेरा रब्ब जानदा ऐ जे तू रातीं दे दो-तिहाई हिस्से शा किश घट्ट चिर नमाज आस्तै खडोते दा रौहना ऐं ते कदें-कदें अद्धे हिस्से बराबर ते कदें इक-तिहाई दे बराबर ते इसै चाल्ली तेरे किश साथी बी ते अल्लाह रातीं ते दिनें गी घटांदा-बधांदा रौहदा ऐ। अल्लाह जानदा ऐ जे तुस नमाज दे समे दा पूरी चाल्ली अंदाजा नेई लाई सकदे। इस आस्तै उसनै थुआड़े पर रैहम कीता ऐ। इस आस्तै चाही दा ऐ जे कुरआन चा जिन्ना होई सकै तुस रातीं बेलै पढ़ी लै करा करो। अल्लाह जानदा ऐ जे तुं दे चा किश रोगी बी होंगन ते किश बपार दे सिलसले च सफरै पर बी निकलडन ते किश लोक अल्लाह दे रस्ते पर जिहाद करन बी निकलडन। इस आस्तै (अस बगैरा हद्दबंदी दे गलाने आं जे) कुरआन चा जिन्ना होई सकै पढ़ी लै करा करो ते नमाजां शरतें दे मताबक अदा करा करो ते जकात देआ

فَقَضَىٰ فِرْعَوْنَ الرَّسُولَ فَأَحَدْنَاهُ أَحَدًا
وَوَيْلًا ۝

فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا
يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ۝

السَّمَاءِ مُنْفَطِرٍ بِهِ ۗ كَانَ وَعْدُهُ
مَعْمُولًا ۝

إِنَّ هَذِهِ تَذْكَرَةٌ ۖ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ
إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِنْ نُفْلَىٰ
الَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَافِقَةَ مِنَ الَّذِينَ
مَعَكَ ۗ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۗ عَلِمَ أَنْ
لَنْ تَحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوا مَا
تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۗ عَلِمَ أَنْ سَيَكُونُ مِنْكُمْ
مَرْضَىٰ ۙ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ
يَبْتَغُونَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ ۙ وَآخَرُونَ
يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۙ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ
مِنْهُ ۙ وَاقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ
وَاقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا ۗ وَمَا تُقَدِّمُوا

करो ते अल्लाह गी खुश करने आस्तै अपने धनै दा इक खास हिस्सा कडिढ्यै बक्ख करी देआ करो ते जो भलाई बी तुस अपने आस्तै अगें भेजगे ओ। तुस उसी अल्लाह कश पाई (हासल करी) लैगे ओ। ओह बेहतर नतीजा कडिढने आह्ला ते ज्यादा शा ज्यादा अजर (बदला) देने आह्ला ऐ ते अल्लाह शा माफी मंगा करो। अल्लाह बौहत् माफ करने आह्ला (ते) बे-हद रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 21 ॥
(रुकू 2/14)

لَا نَفْسُكُمْ مِنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ هُوَ
خَيْرٌ وَأَعْظَمَ أَجْرًا ۖ وَاسْتَغْفِرُ وَاللَّهُ
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢١﴾

سُورَةُ الْمَدَّثِرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ سَبْعٌ وَخَمْسُونَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

सूर: अल्-मुद्दस्सिर

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां सतुंजा आयतां ते दो रूकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांस लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

हे बरसाती कोट पाइयै खड़ोने आहले' ॥ 2 ॥
खड़ोई जा ते दूर-दूर जाइयै लोकें गी सोहगा
कर ॥ 3 ॥

يَا أَيُّهَا الْمَدَّثِرُ ①
قُمْ فَأَنْذِرْ ①

ते अपने रब्ब दी बड़ेआई ब्यान कर ॥ 4 ॥
ते अपने कश रौहने आहले (नेड़में) लोकें गी
पवित्तर कर ॥ 5 ॥

وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ①
وَشِيَابَكَ فَطَهِّرْ ①

ते शिर्क गी मटाई दे ॥ 6 ॥
ते इस नीत कन्नै परोपकार नेई कर जे इसदे
बदले च तुगी मुगता (मता) मिलग ॥ 7 ॥

وَالرَّجْزَ فَاهْجُرْ ①
وَلَا تَمَنَّئَنَّ تَسْتَكْبِرُ ①

ते (बुजदिली शा नेई बल्के) अपने रब्ब गी
खुश करने आस्तै सबर शा कम्म लै ॥ 8 ॥

وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ①

1. मूल शब्द 'मुद्दस्सिर' दा सधारण अर्थ कंबलै दी बुक्कल मारने आहला होदा ऐ। इस अर्थ दे अलावा शब्दकोश च (i) घोड़े कश खड़ोने आहला ते जो हुकम मिलदे गै टपाकी मारिये घोड़े पर सुआर होई जा ते (ii) कपड़े पाइयै त्यार होई जाने आहला बी न पर 'दिसार' उस कपड़े गी आखदे न जो कुर्ते बगैरा दे उप्पर पाया जा। (अक्रब) इस आस्तै अनुवाद च 'असें कोट पाइयै खड़ोने आहला' अर्थ लैते दा ऐ।

ते जिसलै बिगल' बजाया जाग ॥ 9 ॥

فَادَا تُقْرِ فِي التَّاقُورِ ۝

तां एह दिन इक सख्त दिन होग ॥ 10 ॥

فَذٰلِكَ يَوْمٌ مِّمَّ ذِي عَسِيرٍ ۝

(ओह दिन) काफरें आस्तै कदें बी असान नेई
होग ॥ 11 ॥

عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَيْرٍ سِيْرٍ ۝

(हे रसूल!) मिगी ते उसगी जिसी मैं असहाय
पैदा कीता हा, इक्कले छोड़ी दे ॥ 12 ॥

ذَرْنِيْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ۝

ते मैं ओहदे आस्तै बड़ा धन पैदा (किट्टा)
कीते दा ऐ ॥ 13 ॥

وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَّمْدُوْدًا ۝

ते ऐसी उलाद बी जो हर बेलै ओहदे अगें-
पिच्छें फिरदी ही ॥ 14 ॥

وَبَيِّنَ شُهُوْدًا ۝

ते मैं ओहदे आस्तै त्रक्की दे नेकां साधन
जुटाए हे ॥ 15 ॥

وَمَهَّدْتُ لَهُ تَمْهِيدًا ۝

फी बी ओह एह लालच करदा ऐ जे अ'ऊं उसी
एहदे शा ज्यादा देअं ॥ 16 ॥

ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَزِيْدَ ۝

सुनो! ओह मेरी आयतें दा दुश्मन हा ॥ 17 ॥

كَلَّا اِنَّهٗ كَانَ لِاِيْتَاْعِيْدًا ۝

इस आस्तै अ'ऊं बी उसी इक ऐसे अजाब च
पाई देंग जो हर बेलै बधदा गै जाग ॥ 18 ॥

سَاْرُهٗهُ صَعُوْدًا ۝

उसनै (मेरी आयतें गी सुनेआ ते उंदे पर)
बिचार कीता ते अंदाजा लाया ॥ 19 ॥

اِنَّهٗ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۝

ते ओह हलाक होई जा। उसनै कैसा गलत
अंदाजा लाया ॥ 20 ॥

فَقَتَلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝

अस फी गलान्ने आं ओह हलाक होई जा,
उसनै कैसा गलत अंदाजा लाया ॥ 21 ॥

ثُمَّ قَتَلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝

1. सेना गी किट्टा करने आस्तै बिगल बजाया जंदा ऐ। इस थाहरै पर उपमा दे रूपै च बिगल दा जिंकर कीता गेदा ऐ। जे इक दिन मुन्करें गी किट्टे करिये हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व दे सामनै पेश कीता जाग ते जेकर हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. उनेंगी माफ करी देंग। पर एह दिन मुन्करें लेई बड़ा सख्त होग, ह्वाकी जे ओह सारी उमर एह आखदे रेह हे जे अस जीती जागे ते ओह हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. गी इक अनुभवहीन बच्चा आखदे होंदे हे, पर जिसलै इस अनुभव हीन बच्चे नै मक्का जीती लैता ते मुन्कर इसदे सामनै पेश होए ते उस कशा माफी दी सूचना सुनने आस्तै मजबूर होए, तां हर शख्स समझी सकदा ऐ जे उंदे आस्तै ओह समां किना कठोर होग।

उसनै फी बिचार कीता ॥ 22 ॥

ثُمَّ نَظَرَ ۝

फी उसनै त्रिभङ्गी चाढ़ी ते मूंह बनाई लैता
॥ 23 ॥

ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۝

फी पिट्ट फेरी लैती ते घमंड शा कम्म लैता
॥ 24 ॥

ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ۝

ते गलाया जे एह ते इक झूठ ऐ जो पैहले
लोकें दी नकल कीती गेदी ऐ ॥ 25 ॥

فَقَالَ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ يُؤْتَرُ ۝

एह इक इन्सानी कलाम (मनुक्खी वाणी) ऐ
॥ 26 ॥

إِنَّ هَذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۝

अस उस (शख्स) गी नरकै च सुटगे ॥ 27 ॥

سَأَصْلِيهِ سَقَرٌ ۝

ते तुगी केह पता जे सक्कर (नरक) केह चीज
ऐ ॥ 28 ॥

وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرٌ ۝

ओह (नरक) किश बी बाकी नेई रौहन दिंदा ते
अजाब पुजाने दा कोई ढंग नेई छोड़दा ॥ 29 ॥

لَا تَبْقَىٰ وَلَا تَذَرُ ۝

ओह खल्लड़ी गी जाली दिंदा ऐ ॥ 30 ॥

لَوْ آحَاطَ لِلْبَشَرِ ۝

ओहदे पर उन्नी दरोगे नियुक्त न ॥ 31 ॥

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ۝

ते असें नरकै दे दरोगे सिर्फ फरिश्ते¹ चा
नियुक्त कीते दे न ते उंदी गिनती सिर्फ मुन्करें
दी अजमैश दे रूपै च दस्सी दी ऐ ते इसदा
नतीजा एह होग जे कताबा आहलें गी यकीन
होई जाग ते मोमिनें दे ईमान च बाधा होग ते
नां ते कताबा आहले शक्क करडन ते नां गै
मोमिन! नतीजा एह होग जे जिंदे दिलें च रोग
ऐ ओह ते दूए मुन्कर गलांगन जे एह गल्ल
आखने कनै अल्लाह दी केह मनशा ऐ?
अल्लाह ऐसे गै उस शख्स गी गुमराह करार
दिंदा ऐ जेहदे बारे च इरादा करी लैदा ऐ, ते
जिंदे बारे इरादा करी लैदा ऐ उसी हदायत देई

وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا
مَلَائِكَةً ۖ وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً
لِّلَّذِينَ كَفَرُوا ۗ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ وَيَرْدَادَ الَّذِينَ
أُوتُوا الْإِيمَانَ ۖ وَلَا يَرْتَابَ
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
وَالْمُؤْمِنُونَ ۗ وَلِيَقُولَ الَّذِينَ فِي
قُلُوبِهِم مَّرَصٌ وَالْكَفْرُونَ مَاذَا
أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا ۗ كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ
مَنْ يَشَاءُ ۗ

1. अर्थ एह ऐ जे नरक च रक्खने दा मूल कारण ते फरिश्ते गै होंगन, की जे इन्ने लोकें गी रोकने दी शक्ति
फरिश्ते च गै ऐ। हां! कदे-कदे फरिश्ते कनै अपनी समानता दस्सियै मनुक्ख बी उंदा कम्म करन लागी पौंगन।

दिंदा ऐ ते तेरे रब्ब दे लश्करें गी सिवाए
उसदे कोई नेई जानदा ते एह (कुरआन)
इन्सान आस्तै सिर्फ इक नसीहत ऐ ॥ 32 ॥
(रुकू 1/15)

सुनो! अस चन्नै गी गुआही दे रूपै च पेश
करने आं ॥ 33 ॥

ते न्हरे गी जिसलै ओह पिट्ट फेरी लैंदा ऐ
॥ 34 ॥

ते बडले गी जिसलै ओह रोशन होई जंदा ऐ
॥ 35 ॥

जे एह (सात जिसदा जिकर कीता गेदा ऐ)
बौहत बड्डी-बड्डी चीजें चा इक ऐ ॥ 36 ॥

इन्सान गी डराने आहली ऐ ॥ 37 ॥

उस (इन्सान) गी जो चांहदा ऐ जे कोई ऐसी
नेकी करै जो अगलै ज्हांन उसदे कम्म आवै
जां कुसै बुराई शा पिच्छें हटी जा जिसदी उसी
आदत पेई चुकी दी ऐ ॥ 38 ॥

हर जान (इन्सान) नै जे किश कीते दा ऐ
ओह उसदे बदले च रहन (यानी बंधक) ऐ
॥ 39 ॥

सिवाए सज्जे पासे आहले लोकें दे ॥ 40 ॥

जे ओह सुगैं च होंगन ॥ 41 ॥

ते मुलजमें गी सुआल करडन ॥ 42 ॥

जे तुसेंगी केहड़ी चीज नरकै पासै लेई गेई ऐ?
॥ 43 ॥

ओह जवाब देंगन, अस नमाजां नथे पढ़दे होंदे
॥ 44 ॥

يُنْفَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَمَا يَعْلَمُ جُودَ
رَبِّكَ إِلَّا هُوَ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرَى
لِلْبَشَرِ ۝

كَلَّا وَالْقَمَرِ ۝

وَاللَّيْلِ إِذَا أَدْبَرَ ۝

وَالصُّبْحِ إِذَا أَسْفَرَ ۝

إِنَّهَا لِأَحَدَى الْكُتُبِ ۝

ذَرِيرًا لِلْبَشَرِ ۝

لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ۝

كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ۝

إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ۝

فِي جَنَّاتٍ يَنْسَاءُ لُوْنٌ ۝

عَنِ الْمَجْرِمِينَ ۝

مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرٍ ۝

قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ ۝

ते अस बे-स्व्हारेँ गी खाना नथे खलादे होंदे
॥ 45 ॥

وَلَمْ تَكُ نَظْمًا مِّنَ الْمَسْكِينِ ۝٤٥

ते बकवासी लोकेँ कन्नै मिलियै बकवास
(फजूल गल्लां) करदे हाँदे हे ॥ 46 ॥

وَكُنَّا نَحْوَصُ مَعَ الْحَايِضِينَ ۝٤٦

ते अस बदला मिलने दे दिने दा इन्कार करदे
होंदे हे ॥ 47 ॥

وَكُنَّا نَكْذِبُ يَوْمَ الدِّينِ ۝٤٧

इत्थेँ तक जे असेँगी मौत आई गई ॥ 48 ॥

حَتَّىٰ آسَأَ الْيَقِينَ ۝٤٨

इस आस्तै ऐसे लोकेँ गी सफारश करने आहलें
दी सफारश फायदा नेई देग ॥ 49 ॥

فَمَا تَفْعَلُهُمْ شَفَاعَةُ الشُّفْعِينَ ۝٤٩

इनेँ लोकेँ गी केहू होई गेदा ऐ जे नसीहत शा
इस चाल्ली मूंह फेरदे न ॥ 50 ॥

فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكَرَةِ مُعْرِضِينَ ۝٥٠

आखो जे ओह डरे दे गधे होन ॥ 51 ॥

كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۝٥١

जो शेरै गी दिक्खियै नस्से होन ॥ 52 ॥

فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ۝٥٢

सच्च एह ऐ जे उंदे चा हर शख्स चांहदा ऐ
जे उसदे हत्थै च खु'ल्ली कताब दिती जा
॥ 53 ॥

بَلْ يَرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَنْ يُؤْتَىٰ
صُحُفًا مِّنْسُورَةٍ ۝٥٣

एह मेद पूरी होने आहली नेई बल्के सच्च एह
ऐ जे ओह आखरत शा नेई डरदे ॥ 54 ॥

كَلَّا ۚ بَلْ لَا يَخَافُونَ الْآخِرَةَ ۝٥٤

सुनो ! एह कलाम इक नसीहत ऐ ॥ 55 ॥

كَلَّا إِنَّهُ تَذَكُّرَةٌ ۝٥٥

इस आस्तै जो चाह ओह इस शा नसीहत
हासल करै ॥ 56 ॥

فَمَنْ شَاءَ ذَكَرْهُ ۝٥٦

ते मुन्कर लोक अल्लाह दे इरादे बगैर कदें बी
नसीहत हासल नेई करडन (ते एह कोई बधीक
गल्ल बी नेई की जे) ओह (अल्लाह) संयम
बी दिंदा ऐ ते माफी बी दिंदा ऐ ॥ 57 ॥ (रुकू
2/16)

وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ
هُوَ أَهْلُ التَّقْوَىٰ وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۝٥٧

سُورَةُ الْقِيَامَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ إِحْدَى وَارْبَعُونَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

सूर: अल्-क्रियामत

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां अगताली आयतां ते दो रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांS लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अ'ऊं क्यामत दे समे दी कसम खनां (यानी
उसी गुआही दे रूपै च पेश करना) ॥ 2 ॥

لَا أَقْسَمُ بِيَوْمِ الْقِيَامَةِ ①

ते अ'ऊं लानत-मलानत करने आहली जान
गी बी गुआही दे रूपै च पेश करना ॥ 3 ॥

وَلَا أَقْسَمُ بِالنَّفْسِ الْوَالِدَةِ ①

क्या मनुक्ख एह सोचदा ऐ जे अस उस दियां
हडिडयां किट्टियां नेई करगे? ॥ 4 ॥

أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ لَنْ نَجْمَعَ
عِظَامَهُ ①

नेई, नेई! अस ते एहदे पर समर्थ रक्खने आं
जे उसदे इक-इक जोड़ गी परतियै बनाई देगे
॥ 5 ॥

بَلَىٰ قَدِيرِينَ عَلَىٰ أَنْ نُسَوِّيَ بَنَانَهُ ①

असलीयत एह ऐ जे इन्सान चांहदा ऐ जे ओह
अगें आस्तै (भविक्ख च) बी दूशत ते बुरे
कर्म च पेदा र'वै ॥ 6 ॥

بَلْ يَرِيدُ الْإِنْسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ ①

ओह पुछदा रौंहदा ऐ जे क्यामत दा दिन कदूं
होग? ॥ 7 ॥

يَسْأَلُ أَيَّانَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ①

इस आस्तै जिसलै अक्खीं पथराई जांगन ॥ 8 ॥

فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ①

ते चनै गी ग्रैहन लग्गी जाग ॥ 9 ॥

وَخَسَفَ الْقَمَرُ ①

ते सूरजै ते चन्नै दौर्नी गी किट्ठे' करी दित्ता जाग ॥ 10 ॥

وَجَمَعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرَ ۝

उस बेलै इन्सान गलाग, हून अ'ऊं नस्सियै कुत्थें जाई सकना ॥ 11 ॥

يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ۝

सुनो! अज्ज अजाब शा बचने दी कोई ज'गा नेई ॥ 12 ॥

كَلَّا لَا وَزَرَ ۝

पर उस रोज तेरे रब्ब कश ठकाना होग ॥ 13 ॥

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ۝

उस रोज इन्सान गी आखरी खबर दित्ती जाग, उनें कम्मं दी जो उस नथे करने चाही दे, पर उसनै करी दित्ते ते उनें कम्मं दी बी जो उस करने चाही दे हे, पर उसनै नेई कीते ॥ 14 ॥

يَسْبُوُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ۝

असलीयत एह ऐ जे इन्सान अपने-आपै गी चंगी चाल्ली दिक्खा करदा ऐ ते जानदा ऐ जे ओह किन्ने पानी च ऐ ॥ 15 ॥

بَلِ الْإِنْسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ۝

भामें ओह मूंह जबानी किन्नी गै सफाई पेश करै ॥ 16 ॥

وَأَلْوَأَلْفَىٰ مَعَادِيرَهُ ۝

(हे नबी!) तू अपनी जबान नेई लहाऽ² (खोहल) तां जे एह कुर'आन तौले नाजल होई जा ॥ 17 ॥

لَا تَحْرِيكَ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ۝

इस गी किट्ठा करना बी साढ़े जिम्मै ऐ ते इसगी दुनियां दे सामनै सुनाना बी (साढ़े जिम्मै ऐ) ॥ 18 ॥

إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ۝

इस आस्तै जिसलै अस इसी पढ़ी लै करचै तां साढ़े पढ़ने दे बा'द तू बी पढ़ी लै कर ॥ 19 ॥

فَإِذَا قَرَأَهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ ۝

1. एह आखरी जमाने (कलयुग) च जाहर होने आहली इक महत्त्वपूर्ण भविष्यवाणी पासै संकेत ऐ जे रमजान दे महीनै सूरजै ते चन्नै गी ग्रैहन लगग।
2. मतलब एह ऐ जे कुर'आन दे तौले नाजल होने दी दुआऽ नेई कर, की जे एह अल्लाह दा इक अटल निजम ऐ ते एह होई गै नेई सकदा जे समां आई जा ते खुदा उसी नाजल नेई करे।

ते एह बी साढ़ा फर्ज ऐ जे अस इसी तेरी
जबान राहें लोकें गी खोहलियै सुनाचे ॥ 20 ॥

تُبَّرَّكَ إِنَّ عَلَيْنَا بَيِّنَاتَهُ ۝

सुनो! तुस तौली मिलने आहली नैमत गी
पसंद करदे ओ ॥ 21 ॥

كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ۝

ते बा'द च औने आहली नैमत पासै ध्यान नेई
दिंदे ॥ 22 ॥

وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ۝

उस रोज किश लोक खुश-खुश होंगन ॥ 23 ॥

وَجُودَهُ يَوْمَئِذٍ نَّاصِرَةٌ ۝

अपने रब्ब पासै ध्यान लाई बैठे दे होंगन
॥ 24 ॥

إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۝

ते किश लोक उस रोज मूह बनाई बैठे दे
होंगन ॥ 25 ॥

وَوُجُودَهُ يَوْمَئِذٍ بِآسِرَةٌ ۝

की जे ओह सोचा करदे होंगन जे उंदे कनै
ओह सलूक कीता जाग, जेहदे कनै लक्कै दे
मनके तगर वुट्टी जांगन ॥ 26 ॥

تَنْظُرُ أَنْ يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۝

सुनो ! जिसलै जान (प्राण) संघै तक पुज्जी
जा ॥ 27 ॥

كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ الشَّرَاقِيَ ۝

ते गलाया जा जे अज्ज कोई है जो दम-दुआऽ
(फांडा-फूकर) करियै उसी अच्छा (ठीक)
करी देऐ? ॥ 28 ॥

وَقِيلَ مَنْ رَاقٍ ۝

ते हर कोई यकीन करी लै जे हून जुदाई दी
घड़ी आई गई ऐ ॥ 29 ॥

وَوَظَنَّا أَنَّهُ الْفِرَاقِيُّ ۝

ते मौती दी घड़ी आई जा ॥ 30 ॥

وَالنَّفَقِ السَّاقِ بِالسَّاقِ ۝

उस रोज तेरे रब्ब कश गै जाना होग ॥ 31 ॥
(रुकू 1/17)

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقِيُّ ۝

इस आस्तै केह होआ जे ऐसे शख्स नै नां ते
सदका (दान) दिता ते नां नमाज पढ़ी ॥ 32 ॥

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلَّىٰ ۝

बल्के (सचाई गी) झुठलांदा रेहा ते (उस
शा) पिट्ट फेरी लैती ॥ 33 ॥

وَلَكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝

(ते उस दे बा'द शर्मिदा होने दे बजाऽ)
अपने घैर-आहलें कश फखर कनै आकड़े दा
उठी गेआ ॥ 34 ॥

(हे मनुक्ख!) तेरा सत्यानाश होऐ ॥ 35 ॥

फी (अस गलाने आं जे) तेरा सत्यानाश होऐ
॥ 36 ॥

क्या इन्सान एह समझदा ऐ जे उसी बे-लगाम
छोड़ी दिता जाग? ॥ 37 ॥

क्या ओह कुसै बेलै पानी दा इक तोपा नथा
जो अपनी स्हेई ज'गा सुट्टेआ गेआ? ॥ 38 ॥

फी ओह चिमटने आहला लोथड़ा बनी गेआ ।
फी उस (खुदा) नै उसी इक होर शकल च
ढालेआ ते खीर च उसी पूरा करी दिता ॥ 39 ॥

ते उसी जोड़ा-जोड़ा करियै बनाया यानी नर ते
मादा दी शकली च ॥ 40 ॥

क्या एह (खुदा) इस गल्ला च समर्थ नेई ऐ
जे मुड़दे गी फी जौंदा करी देऐ ॥ 41 ॥
(रुकू 2/18)

ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَتَمَطَّى ۝

أَوَّلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ۝

ثُمَّ أَوَّلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ۝

أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُتْرَكَ سُدًى ۝

أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّن مَّنِيٍّ يُمْنَىٰ ۝

ثُمَّ كَانَ عِلْقَةً مُّطَّوًّا فَسُوًى ۝

فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ۝

أَلَيْسَ ذَلِكَ بِقْدِيرٍ عَلَىٰ أَنْ يُخِىءَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

سُورَةُ الدَّهْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ اثْنَانِ وَثَلَاثُونَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

सूर: अल्-दहर

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां बत्तरी आयतां ते दो रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांS लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

क्या इन्सान पर ओह घड़ी नेई आई जिसलै
जे ओह किश बी नेई हा, ते उसदे कम्मं गी
कोई याद नथा करता? ॥ 2 ॥

هَلْ أَتَى عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ
لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّذْكُورًا ①

असें इन्सान गी इक ऐसे बीरज शा पैदा कीते
दा ऐ जेहदे च बक्ख-बक्ख ताकतां मिली
दियां हियां तां जे अस उसदी अजमैश करचै
फी असें उसी बौहत सुनने आह्ला (ते)
दिक्खने आह्ला बनाई दिता ॥ 3 ॥

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ
نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ①

असें उसी उसदी परिस्थिति दे मताबक रस्ता
दस्सी दिता यानी भाएं ओह शुकर करै ते भाएं
ना-फरमान होई जा ॥ 4 ॥

إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا
كَفُورًا ①

असें मुन्करें आस्तै जंजीरां (संगल) ते तौक
(लड्डन) ते ज्हनम त्यार करी रक्खे दे न
॥ 5 ॥

إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلسِلًا وَأَغْلَالًا
وَسَعِيرًا ①

खुदा दे नेक बंदे ऐसे प्याले पींगन, जिंदे च
कपूर दा गुण मलाया गेदा होग ॥ 6 ॥

إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ
مِرْجَاجًا كَافُورًا ①

एह (कपूर) 1 इक चश्मा होग जेहदे चा अल्लाह दे बंदे पींगन ओह् कोशश² करियै उस चश्मे गी धरती पाड़ियै कढदे न ॥ 7 ॥

ओह् अपनी मनौतां पूरियां करदे न ते उस दिनै शा डरदे न जिस दिनै दी बुराई सारे संसार च फैली दी होग ॥ 8 ॥

ते उस (खुदा) दे प्रेम कारण बे-स्हारा, गरीब, जतीम ते बंदी लोकें गी खाना खलाने न ॥ 9 ॥

ते गलांदे जंदे न जे हे लोको ! अस तुसंगी सिर्फ अल्लाह दी खुशी आस्तै खाना खलाने आं नां अस तुंदे शा कोई अजर मंगने आं ते नां थुआड़ा शुकर चाहने आं ॥ 10 ॥

ते अपने रब्ब शा उस ध्याड़ै दा भै खन्ने आं, जिस रोज लोकें दा डरै मारे मूंह बिगड़े दा होग ते त्रिउदियां चढ़ी दियां होंगन ॥ 11 ॥

इस आस्तै अल्लाह उनेंगी उस दिन दी हानी शा बचाग ते उनेंगी तरो-ताजगी ते खुशी प्रदान करग ॥ 12 ॥

ते उनें लोकें दे नेकियें पर कायम रौहने दी ब'जा करी उनेंगी (रौहने आस्तै) बाग ते (लाने आस्तै) रेशम प्रदान करग ॥ 13 ॥

ओह् उस बागै च सिंहासनें पर तकिये रक्खियै बैठे दे होंगन, नां ते उस बागै च चिलचलैदी गरमी दिखडन ते नां मारू ठंड ॥ 14 ॥

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادَ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ۝

يُوقُونَ بِالَّذِي نَسِئُوا يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ۝

وَيُطْعَمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حِمِّهِمْ مَسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ۝

إِنَّمَا نَطْعَمُهُمْ لُوجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنْكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكْرًا ۝

إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ۝

فَوَقَّهْمُ اللَّهُ شَرَّ ذَلِكَ الْيَوْمِ وَلَقَّهْمُ نَصْرَةً وَسُرُورًا ۝

وَجَزَاهُمْ بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَحَرِيرًا ۝

مُتَّكِنِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ ۚ لَا يَرُونَ فِيهَا شُمْسًا وَلَا زَمْهَرِيرًا ۝

1. ओह स्रोत (चश्मा) जेहदे च कपूर दा गुण होग ओहदा नांs बी कपूर होग यानी ओह बुरी भावनाएं गी ठंडा करी देग।
2. ओह चश्मा उंदे कर्मै दी ब'जा करी बगाया जाग।

ते उस बागै दी छाया उंदे पर झुकी दी होग
ते उसदे फल उंदे लागै करी दित्ते जांगन
॥ 15 ॥

ते चांदी दे भांडे ते लोटे ते ऐसी सराहियां
(लेइयै) जो शीशे दियां होंगन, उंदे कश
बार-बार आँगन ॥ 16 ॥

एह जाहरा तौर शीशे¹ दे लब्भने आहले भांडे
असल च चांदी दे होंगन, जिनें गी खुदा दे
फरिश्ते अपनी कामिल कला कनै बनांगन
(इत्थें तक जे ओह शीशे आंगर चमकन लगी
पौंगन) ॥ 17 ॥

ते मोमिनें गी उंदे (उनें सुर्गो) च ऐसे गलासैं
च पानी पलैया जाग जिंदे च सुंद मलाई दी
होग ॥ 18 ॥

(ते) उस (सुर्गो) च सल्सबील² नांs दा बी इक
चश्मा होग (जेहदे चा मोमिन पींगन) ॥ 19 ॥

ते उंदे कश म्हेशां सेवा करने आहले जुआन
गभरू बार-बार हाजर होंदे रौहंगन, जिसलै तू
उनें सेवकें गी दिखगा तां उंदे बारै च समझगा
जे ओह खिल्लरे दे मोती न ॥ 20 ॥

ते जिसलै तू उनेंगी दिखगा तां उंदी ज'गा पर
इक बौहत बड्डी नैमत ते बड्डी बादशाहत
नजरी आँग ॥ 21 ॥

उंदे (सुर्गबासियें) उप्पर बरीक सब्ज रेशम दे
कप्पड़े होंगन ते उससै चाल्ली मुट्टे रेशम दे
बी ते उनेंगी चांदी दे कंगन पुआए जांगन ते
उंदा रब्ब उनेंगी पवित्तर करने आहली शराब
पलैग ॥ 22 ॥

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلُّهَا وَذَلَّلَتْ فَطْوُفَهَا
تَذَلِيلًا ۝

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِانِيَّةٍ مِنْ فِصَّةٍ
وَآكُوبٍ كَانَتْ قَوَارِيرًا ۝

قَوَارِيرًا مِنْ فِصَّةٍ قَدَّرَ وَهَاتَقَدِيرًا ۝

وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا
رَاجِيًا ۝

عَيْنًا فِيهَا تُسْمَى سَلْسَبِيلًا ۝

وَيُطَوَّفُ عَلَيْهِمْ وَلَدَانٌ مُخَلَّدُونَ ۝
إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَنثورًا ۝

وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمْرًا رَأَيْتَ نَعِيمًا
وَمُلْكًا كَبِيرًا ۝

عَلَيْهِمْ شِيَابٌ سُنْدُسٍ خُضْرٌ
وَإِسْتَبْرَقٌ وَحُلُوعَا آسَورٍ مِنْ
فِصَّةٍ وَسَقَمُهُمْ رَبَّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ۝

1. ओह भांडे शीशे दे नेई होंगन बल्के ओह बड़े कोमल होंगन ते शीशे आंगर साफ होंगन, जिंदे च मूह लब्भग।
2. एह इक उपमा ऐ।

(ते गलाया जाग जे हे सुर्ग बासियो!) एह बदला थुआड़े आस्तै निश्चत ऐ ते थुआड़ी कोशश गी आदर दी नगाह कनै दिक्खेआ गेआ ऐ ॥ 23 ॥
(रुकू 1/19)

असें तेरे पर कुरआन थोढ़ा-थोढ़ा करियै नाजल कीता ऐ ॥ 24 ॥

इस आस्तै अपने रब्ब दे आदेश पर डटे दा रौह। ते लोकें चा गुनाहगारें ते ना-शुकरें दी आज्ञा दा पालन नेई कर ॥ 25 ॥

ते अपने रब्ब गी संजा-ध्यागा याद करा कर ॥ 26 ॥

ते रातीं बेलै बी उसदे अगमें सजदा करा कर ते रातीं चिरै तगर उसदी स्तुति करा कर ॥ 27 ॥

एह लोक संसारक इनाम पंसद करदे न ते अपने पिच्छें इक भयंकर ध्याड़े गी छोड़ी जंदे न ॥ 28 ॥

असें गै उनेंगी पैदा कीते दा ऐ ते उंदे जोड़ मजबूत बनाए दे न ते जिसलै अस चाहगे उंदे आंगर होर मख्लूक पैदा करियै उंदी ज'गा खडेरी देगे ॥ 29 ॥

एह इक नसीहत ऐ। इस आस्तै जो चाह ओह अपने रब्ब कश पुजाने आहला रस्ता अखत्यार करी लै ॥ 30 ॥

ते तुस अल्लाह दी मरजी दे बगैर ऐसा नेई करी सकदे की जे अल्लाह बौहत इलम आहला (ते) बड़ी हिकमत आहला ऐ ॥ 31 ॥

ओह जिसी पंसद करी लैंदा ऐ, अपनी रैहमत च दाखल करी लैंदा ऐ। ते जालमें आस्तै ते उसने दर्दनाक अजाब निश्चत करी गै रक्खे दा ऐ ॥ 32 ॥ (रुकू 2/20)

إِنَّ هَذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيَكُمْ مَشْكُورًا ﴿٢٩﴾

إِنَّا نَحْنُ مُرْتَضَوْنَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا ﴿٢٤﴾

فَأَصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَطِعْ مِنْهُمْ آثِمًا أَوْ كَفُورًا ﴿٢٥﴾

وَإِذْ كَرِهَ اللَّهُ لِبُنِي إِسْرَائِيلَ أَنْ يَدْرُسُوا كِتَابَ آلِ إِبْرَاهِيمَ إِذِ انبَغَضُوا عَنْهُ فَإِنَّهُمْ لَكَافِرُونَ ﴿٢٨﴾

وَرَأَوْهُمُ يُوقِنُونَ أَنَّ هَذَا لَكُمُ جَزَاءٌ وَأَنَّ هَذَا لَكُمْ جَزَاءٌ وَكَانَ سَعْيَكُمْ مَشْكُورًا ﴿٢٩﴾

وَأَشْرَبْنَا بِذُنُوبِكُمْ عَذَابَ آسِيفٍ وَأَشْرَبْنَا بِذُنُوبِكُمْ عَذَابَ آسِيفٍ وَإِذْ أَسْرَبْنَا بِذُنُوبِكُمْ عَذَابَ آسِيفٍ ﴿٣٠﴾

إِنَّ هَذِهِ تَذَكُّرَةٌ ۖ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿٣١﴾

وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٣٢﴾

يَدْخُلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۗ وَالظَّالِمِينَ أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٣٣﴾

1. ते एह ममकन नेई जे उसदा इलम कुसै शख्स गी सच्चे रस्तै पाने दे लायक समझै ते उसी गुमराह होन देऐ।



सूर: अल्-मुर्सलात

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां कुंजा आयतां ते दो रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांS लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अ'ऊं शहादत दे तौरा पर उनें हस्तिये' गी पेश
करना जो पैहलें आस्ता-आस्ता चलाइयां जंदियां
न ॥ 2 ॥

وَالْمُرْسَلَاتِ عُرْفًا ①

फी ओह तेजी² कनै चलन लगदियां न ॥ 3 ॥

فَالْعَصْفِ عَصْفًا ①

ते अ'ऊं दुनियां च फलाई³ देने आहली हस्तिये
गी बी शहादत दे तौरा पर पेश करना ॥ 4 ॥

وَالنَّشْرِ نَشْرًا ①

ते सच्च ते झूठ⁴ च फर्क करी देने आहली
हस्तिये गी ॥ 5 ॥

فَالنَّفْرِوتِ فَرْقًا ①

ते खुदा दा कलाम सुनने आहली हस्तिये गी
॥ 6 ॥

فَالْمَلَقِيتِ ذِكْرًا ①

1. इस आयत च उनें घोड़ें गी ते उनें सहाबा गी जो घोड़ें पर सुआर होंदे हे गुआही दे रूपै च पेश कीता ऐ जे अल्लाह उनेंगी सदाचार दे प्रचार आसतै बल्लें-बल्लें संसार च फलाग, की जे मूल शब्द 'मुर्सलात' दा इयै अर्थ ऐ।
2. यानी पैहलें सहाबा बल्लें-बल्लें संसार च फैलडन, पर फी ओह शक्तिशाली होंदे जांगन ते उंदी त्रक्की तेज गति कनै होंदी जाग।
3. इस आयत च बी सहाबा दा बर्णन ऐ जे ओह आखर च इस्लाम धर्म गी संसार च फलाई देंग।
4. इस आयत च बी सहाबा दा जिकर कीता गोदा ऐ ते ओह आखर सच्च ते झूठ च जाहय-बाहरा फर्क करियै दस्सी देंग।

इस मकसद कन्नै बी जे लोकें पर प्रमाण सिद्ध होई जा। ते इस मकसद कन्नै बी जे लोकें गी सोहगा करी दिता जा ॥ 7 ॥

عُدْرًا أَوْ نُذْرًا ۝

तुंदे कन्नै जिस गल्ला दा बा'यदा कीता जंदा ऐ, ओह पूरी होइयै रौहग ॥ 8 ॥

إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَوَاقِعٍ ۝

ते जिसलै नखत्तरा मंद (मद्धम) पेई जांगन ॥ 9 ॥

فَإِذَا التُّجُومُ طُمِسَتْ ۝

ते गसै च सुराख^२ होई जांगन ॥ 10 ॥

وَإِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ ۝

ते जिसलै फ्हाड़^३ डुआई दित्ते जांगन ॥ 11 ॥

وَإِذَا الْجِبَالُ سُفَّتْ ۝

ते जिसलै सारे रसूल^४ अपने निश्चत समे पर ल्यांहदे जांगन ॥ 12 ॥

وَإِذَا الرُّسُلُ أَقْتَتْ ۝

(ते लोकें गी गलाया जाग जे) एह गल्ल कुस दिनै आस्तै नियुक्त कीती गेदी ही? ॥ 13 ॥

لَا يَوْمٍ يُؤْمِرُ أَجَلَتْ ۝

(इक) फैसला करने आहले दिनै आस्तै ॥ 14 ॥

لِيَوْمِ الْقُضْلِ ۝

ते तुगी केह पता ऐ जे फैसला करने आहला दिन केह ऐ? ॥ 15 ॥

وَمَا أَدْرَبَكُمْ مَا يَوْمُ الْقُضْلِ ۝

उस रोज झुठलाने आहलें पर तबाही औग (इस च कोई बी शक्क नेई) ॥ 16 ॥

وَيَلَّ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝

क्या असें पैहली कौमें गी हलाक नेई कीता? ॥ 17 ॥

أَلَمْ تَهْلِكِ الْأُولَىٰ ۝

1. यानी पंडत ते ज्ञानी लोक बिगड़ी जांगन।
2. यानी इल्हाम दा सिलसला परतियै शुरु होई जाग।
3. यानी दुनियां दे बादशाह बी तबाह करी दित्ते जांगन।
4. यानी इक ऐसे सुधारक दा अवतार होग जिसी सारे नबियें दे नांऽ दित्ते जांगन। यानी उसदे बारे हजरत मूसा, ईसा, कृष्ण, रामचन्द्र ते बुद्ध बगैरा सब दियां भविक्खवाणियां होंगन। इसै चाल्ली बा'द दे बलियें (भगतें) दियां, जियां हजरत इमाम अहमद सरहिंदी शरीफ आहले ते निअमतुल्लाह बली बगैरा।

फी केह अस उंदे बा'द औने आहली कौमें
गी उंदे पिच्छें' नेई चलागे? (आखर एह बक्खरा
सलूक की होग) ॥ 18 ॥

تَمَّتْ لِيَهُمُ الْآخِرِينَ ۝

अस मुलजमें कन्नै ऐसा गै सलूक (बरताऽ)
करने होने आं? ॥ 19 ॥

كَذَلِكَ نَفَعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ۝

उस रोज झुठलाने आहलें पर तबाही औंग
(इस च कोई बी शक्क नेई) ॥ 20 ॥

وَيَلَّيَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝

ते अस उनेंगी आखगे जे क्या असें तुसेंगी इक
जलील (तुच्छ) पानी (यानी बीरज) कन्नै
पैदा नेई कीता? ॥ 21 ॥

أَلَمْ نَخْلُقْكُمْ مِنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ ۝

ते फी उसी इक ऐसी ज'गा (यानी मां दी
कुक्खै च) रक्खी दिता जो उसी स्हेई मैहनें
च सुरक्षत रक्खने दे काबल ही ॥ 22 ॥

فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ۝

ते जिन्ना चिर उस बीरज गी कुक्खै च रक्खना
मनासब हा, असें उन्ना चिर उसी कुक्खै च
रक्खेआ ॥ 23 ॥

إِلَى قَدَرٍ مَّعْلُومٍ ۝

ते असें इक अंदाजा निश्चत³ कीता, ते अस
कैसा अच्छा अंदाजा निश्चत करने आहले आं
॥ 24 ॥

فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ الْقَادِرُونَ ۝

उस रोज झुठलाने आहलें पर तबाही औंग (इस च
कोई बी शक्क नेई) ॥ 25 ॥

وَيَلَّيَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝

क्या असें धरती गी समेटने आहला नेई
बनाया⁴ ॥ 26 ॥

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ۝

1. यानी उंदी बी तबाही कीती जाग ते उंदे कन्नै अनोखा ब्यहार नेई होग।
2. यानि इतिहास दसदा ऐ जे पापियें कन्नै ऐसा गै ब्यहार होंदा आया ऐ। फी केह ब'जा ऐ जे हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दे समै पापियें कन्नै ऐसा सलूक नेई होग।
3. इस दा अर्थ एह ऐ जे हर बच्चे आस्तै कोई बक्खरा कनून नेई होंदा बल्के असें उस आस्तै कुदरती तौरा पर इक अंदाजा निश्चत करी दिता ऐ ते जदू दी दुनियां पैदा होई दी ऐ, उस्सें अंदाजे मताबक कम्म होंदा आवा करदा ऐ यानी बक्ख-बक्ख किसमै दे प्राणी पूरी उत्पत्ति आस्तै बक्ख-बक्ख समे (म्हीने) तगर अपनी-अपनी मामें दे डिड्डें च रोहदे न।
4. यानी जीदे प्राणी धरती पर बसदे न ते मरे दे ओहदे च दब्बी दित्ते जंदे न ते उंदी सुआह उसदे दरेआएं च प्रवाही दित्ती जंदी ऐ।

जींदे ते मोदे दौनें गी समेटने आहली? ॥ 27 ॥

ते असें इस च उच्चे फ्हाड़ बनाए न ते (इसदे नतीजे च) तुसंगी (मती मातरा च) मिट्ठा' पानी पलैया ऐ ॥ 28 ॥

उस दिन झुठलाने आहलें पर तबाही औग (इस च कोई शक्क नेई) ॥ 29 ॥

(अस उनेंगी आखगे जे) जिस चीजे गी तुस झुठलांदे हे, उससै कश जाओ ॥ 30 ॥

यानी उस छाया कश जाओ, जिसदे त्रै पैहलू' न ॥ 31 ॥

नां ते ओह छाया दिंदा ऐ ते नां गरमी शा बचांदा ऐ ॥ 32 ॥

बल्के ओह इन्ने उच्चे शोले (लोरे) सुटदा (भड़कांदा)ऐ जो किले दे बराबर होंदे न ॥ 33 ॥

इन्ने उच्चे जे आखो ओह बड्डे ज्हाजें गी ब'नने दे पीले रंगे दे रस्से सेही होंदे न ॥ 34 ॥

उस रोज झुठलाने आहलें दी तबाही होग (इस च कोई शक्क नेई) ॥ 35 ॥

एह् ऐसा दिन होग (जिस दिन पापी अपनी मरजी कन्ने) बोल्ली नेई सकडन ॥ 36 ॥

أَحْيَاءٌ وَأَمْوَاتًا ﴿٢٧﴾

وَجَعَلْنَا فِيهَا رِوَاسِيَ شِمَخَاتٍ
وَأَسْقَيْنُكُمْ مَاءً فُرَاتًا ﴿٢٨﴾

وَيَلَّ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٩﴾

إِنْطَلَقُوا إِلَى مَا كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٣٠﴾

إِنْطَلَقُوا إِلَى ظِلِّ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ﴿٣١﴾

لَا ظِلِّيلٌ وَلَا يُعْنَى مِنَ اللَّهِ ﴿٣٢﴾

إِنهَا تَرْمِي بِشَرِّرٍ كَالْقَصْرِ ﴿٣٣﴾

كَأَنَّهُ جِمَلَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٤﴾

وَيَلَّ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٥﴾

هَذَا يَوْمٌ لَا يَنْطِقُونَ ﴿٣٦﴾

1. असें संसार च आध्यात्मक ते संसारक हस्तियें दे आदमी पैदा कीते ते संसारक ते आध्यात्मक पानी जो अत्र मिट्ठा होंदा ऐ उनें रुहानी विभूतियें ते समाजक नेतें राहें लोकें गी पलैया यानी रुहानी लोक इल्हाम सुनाई-सुनाई उंदी रुहानी प्यास शांत करदे न ते संसारक लोक नैहरें ते ट्यूबबैलें राहें उंदे तक मिट्ठा पानी पुजांदे न।
2. यानी आखरी युग च इस्लाम धर्म गी नेई मनने आहलें दी पनाह ऐसी होग जो असल च पनाह नेई खुआग बल्के कश्ट भोगने दा मूजब बनग।

ते उनेंगी (खुदा पासेआ बी बोलने दी) अजाजत नेई दित्ती जाग जे ओह कोई शकायत/बहाना करी सकन' ॥ 37 ॥

उस दिन झुठलाने आहलें पर तबाही औग (इस च कोई बी शक्क नेई) ॥ 38 ॥

एह फैसले दा दिन होग जेहदे च असें-तुसेंगी ते पैहली कौमें गी बी किट्ठा करी देंगन ॥ 39 ॥

इस आस्तै जेकर थुआड़े कश उपाऽ है तां उस उपाऽ गी मेरे खलाफ बरतो ॥ 40 ॥

उस रोज झुठलाने आहलें पर तबाही औग (इस च कोई बी शक्क नेई) ॥ 41 ॥
(रुकू 1/21)

उस रोज संयमी सच्चें गै छामें ते चशमें आहले थाहें पर होंगन ॥ 42 ॥

ते अपने मन-पसंद फलें च (घिरे दे) होंगन (जो उंदी मरजी दे मताबक उनेंगी मिलडन) ॥ 43 ॥

ते उनेंगी गलाया जाग जे दिलै गी भाने आहले मेवे खाओ ते साफ पानी पिय्यो, एह थुआड़े कर्में दा फल ऐ ॥ 44 ॥

अस परोपकार करने आहलें गी इससे चाल्ली बदला दिने होने आं ॥ 45 ॥

उस दिन झुठलाने आहलें पर तबाही औग (इस च कोई बी शक्क नेई) ॥ 46 ॥

(अस उनेंगी गलाने आं जे) खाओ-पिय्यो ते इस दुनिया दा थोड़ा-हारा लाह लेई लैओ, तुस अपराधी ओ ॥ 47 ॥

وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَدِرُ ۗ ۞

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۞

هٰذَا يَوْمُ الْفُضْلِ ۚ جَمَعْنَاكُمْ
وَالْأُولَئِينَ ۞

فَإِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُوا ۞

ع
۞

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۞

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلِّ وَعُيُونٍ ۞

وَقَوَائِكُمْ مِمَّا يَشْتَهُونَ ۞

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۞

إِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۞

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۞

كُلُوا وَاتَّمَعُوا قَلِيلًا إِنَّكُمْ مُّجْرِمُونَ ۞

1. की जे उस दिन आपूं उंदे अपने अंग उंदै खलाफ गुआही देआ करदे होंगन ते कुसै दूई शहादत दी जरूरत नेई होग।

उस रोज झुठलाने आहलें पर तबाही और (इस च कोई बी शक्क नेई) ॥ 48 ॥

وَيَلِّ يَوْمِيذٍ لِّلْمَكِّدِّ بَيْنَ ۝۴۸

उनें लोकें पर जिनेंगी जदू कदे गलाया जंदा ऐ जे एकेश्वरवाद पर कायम होई जाओ, तां ओह एकेश्वरवाद पर कायम नेई होंदे (बल्के शिर्क/अनेकेश्वरवाद पासै परतोई जंदे न/उसगी अपनांदे न) ॥ 49 ॥

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ۝۴۹

उस रोज झुठलाने आहलें पर तबाही और (इस च कोई बी शक्क नेई) ॥ 50 ॥

وَيَلِّ يَوْمِيذٍ لِّلْمَكِّدِّ بَيْنَ ۝५०

इस आसतै ओह दस्सन ते सेही जे इस (कुरआन) दे बा'द ओह कुस कताबा पर ईमान ल्यौंगन ॥ 51 ॥ (रुकू 2/22)

۝

فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ۝۵۱

سُورَةُ النَّبَاِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ السَّمَلَةِ اِحْدَى وَارْبَعُونَ آيَةً وَرُكُوْعَانِ

सूर: अल्-नबा

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां कताली आयतां ते दो रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नां5 लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝۱

एह (लोक) किस (चीजै) बारै इक-दूए शा
(रहानगी नै) सुआल करा करदे न ॥ 2 ॥

۝۲

عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ ۝۲

क्या उस (फैसला करी देने आहले दिनै कनै
सरबंध रक्खने आहले) म्हत्तवपूर्ण समाचार
बारै? ॥ 3 ॥

عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ۝۳

जेहदे बारै च एह लोक (कुरआन च दस्सी
गेदी सचाई बारै) मतभेद रखदे न ॥ 4 ॥

الَّذِي هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُونَ ۝۴

चंगी चाल्ली याद रक्खो जे असल सचाई उंदे
अकीदें (आस्थैं) दे खलाफ ऐ ते इक रोज
ओह इसी जानी लैंगन ॥ 5 ॥

كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ۝۵

अस फी आखने आं जे गल्ल उंदे अकीदें
(आस्थैं) दे खलाफ ऐ ते एह लोक उस
भविक्खवाणी गी, जेहकी इस सूरत/आयत च
ब्यान कीती गेदी ऐ, जरूर जानी लैंगन ॥ 6 ॥

كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ۝۶

(ओह सोचन ते सेही जे) क्या असैं धरती गी
बछौना नेई बनाया? ॥ 7 ॥

اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مَهْدًا ۝۷

ते फ्हाड़ें गी मेखें आंगर नेई गड्डेआ? ॥ 8 ॥

وَالْجِبَالَ اَوْتَادًا ۝۸

ते (एह बी याद रक्खो जे) असें तुसें (सारे लोकें) गी जोड़ा (जोड़ा) बनाए दा ऐ ॥ 9 ॥

وَوَخَلَقْنَاكُمْ أَزْوَاجًا ۝

ते असें नींदै गी थुआड़े अराम आस्तै बनाए दा ऐ ॥ 10 ॥

وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۝

ते असें रातीं गी पड़दे दे रूपै च बनाए दा ऐ ॥ 11 ॥

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ لَيْسَاتًا ۝

ते असें दिनै गी जीवन प्रकट करने दा साधन बनाए दा ऐ ॥ 12 ॥

وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۝

ते असें थुआड़े उप्पर सत्त (उच्चे ते) मजबूत (गास) बनाए दे न ॥ 13 ॥

وَبَيَّنَّا فَوْقَكُمْ سَبْعَ سِدَادًا ۝

ते असें इक चमकदा सूरज (बी) बनाए दा ऐ ॥ 14 ॥

وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَاجًا ۝

ते असें घने बदलें चा मती मातरा च बगने आहला पानी (बी) उतारे दा ऐ ॥ 5 ॥

وَأَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرَاتِ مَاءً ثَجَّاجًا ۝

तां जे ओहदे राहें अस अनाज ते सब्जियां कढचै ॥ 16 ॥

لِنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا وَنَبَاتًا ۝

ते घने बाग (उगाचै) ॥ 17 ॥

وَجَبَّتْ أَنْفَاقًا ۝

यकीनन एह फैसले आहला ध्याड़ा इक निश्चत वक्त (पर औने आहला) ऐ ॥ 18 ॥

إِنَّ يَوْمَ الْفُضْلِ كَانَ مِيقَاتًا ۝

जिस रोज जे बिगल बजाया जाग। फी तुस टोले दे टोल बनियै (साढ़े सामनै) औगे ॥ 19 ॥

يَوْمَ يَفْعُ فِي الصُّورِ فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا ۝

ते गास खोहली दिता जाग, इत्थें तक जे ओह दरवाजे गै दरवाजे होई जांगन ॥ 20 ॥

وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ۝

1. यानी गासै च इन्ने नशान जाहर होंगन आखो गासै च दरोआजे बनी गेदे न। मोमिनें आस्तै बौहत रैहमत नाजल होग ते मुन्करें आस्तै बौहत बड़डा अजाब जाहर होग।

ते फ़ाड़ (अपनी ज'गा थमां) चलाए¹ जांगन,
इत्थें तक जे ओह सराब² (मृग तृष्णा आंगर)
होई जांगन ॥ 21 ॥

وَسَيَّرَتِ الْجِبَالَ فَكَأَنَّ سَرَابًا ۝

यकीनन जहन्नम (उनें लोकें दी) घात च
(लगे दा यानी घात लाइयै बलगा करदा) ऐ
॥ 22 ॥

إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۝

(ते) ओह सिरफिरें आस्तै ठैहरने दी ज'गा ऐ
॥ 23 ॥

لِلظَّالِمِينَ مَا بَأْسًا ۝

ओह उस च साल्लें तगर रौहगन ॥ 24 ॥

لُبِّشِينَ فِيهَا أَحْقَابًا ۝

(उत्थें उनें लोकें दी हालत एह होग जे) ओह
नां ते कुसै किसमै दी ठंडक (मसूस करडन)
नां कोई पीने दी चीज उनेंगी मिलग (जो उंदी
प्यास बुझाई सके) ॥ 25 ॥

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ۝

हां! पर अल्लाह उनेंगी खौलदा गर्म पानी ते
(यख) ठंडा पानी देग ॥ 26 ॥

إِلَّا حَمِيمًا وَعَسَاقًا ۝

(इस चाल्ली उनेंगी उंदे कर्मे) मताबक बदला³
(दिता जाग) ॥ 27 ॥

جَزَاءً وَفَاقًا ۝

ओह यकीनन (कुसै चाल्ली दा) स्हाब लैने
दा डर (अपने दिलें च) नथे रखदे ॥ 28 ॥

إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ۝

ते साढ़े नशानें गी सख्ती कन्ने झुठलादे हे ॥ 29 ॥

وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كَذِبًا ۝

1. पर्वत दा मतलब-फ़ाड़, राजा ते विद्वान लोक न। आयत दा भाव एह ऐ जे-(क) पर्वतें गी डाइनामाइट कन्ने डुआइयै सिङ्कां, सुरंगों, निक्के रस्ते ते मदान बनाई दिते जांगन। (ख) धर्म दे बरूद्ध होने आहले पर्वतें आंगर शासक ते उंदा शासन नष्ट करी दिता जाग।
2. मूल शब्द सराब दा अर्थ ऐ मृगतृष्णा यानी रेतू दा ओह मदान जिस पर सूरज दियां किरणां पौने पर पानी दा भलेखा लगदा ऐ। भाव एह ऐ जे आखरी युग च लोक राजें दे नांउ सुनडन, पर जिसलै लागेआ दिखडन तां ओह मृगतृष्णा आंगर लभडन की जे पूरी चाल्ली एह साफ होई जाग जे शासन जनता दा ऐ ते राजा सिर्फ नांउ-मातर दे गै न। जेकर इस आयत गी धार्मिक व्यवस्था संबंधी समझी लैता जा तां इस दा एह अर्थ होग जे अल्लाह अध्यात्मक ज्ञानियें ते पंडतें गी पर्वत बनाग, पर जिसलै कदें सधारण जनता धर्म दे विकास आस्तै कोशिश करग ते धर्मध्वजी ते नांउ-मातर दे विद्वान उंदे रस्ते च रोड़े अटकांगन, पर अल्लाह ऐसे धर्मध्वजी विद्वानें दे मनसूबे सफल नैई होन देग।
3. यानी धर्म संबंधी गल्लें पर चलने च ओह ठंडक यानी सुस्ती दसदे हे इसलै उनेंगी यख ठंडा पानी दिता जाग, पर धर्म दे खलाफ गर्मी यानी तेजी दसदे हे इस आस्तै उनेंगी खौलदा पानी दिता जाग।

ते असें (ते) हर इक चीजै गी पूरी चाल्ली गिनी रख्खे दा ऐ ॥ 30 ॥

وَكُلُّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ كِتَابًا ۝

इस आस्तै (अपने-अपने कर्म दे मताबक) अजाब चक्खो ते अस तुसेंगी (अजाब दे बा'द) अजाब गै दिंदे रौहगे ॥ 31 ॥
(रुकू 1/1)

فَذُوقُوا فَلَنْ نَزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ۝

यकीनन संयमियें आस्तै सफलता (निश्चत) ऐ ॥ 32 ॥

إِنَّ لِلْمُنْتَقِينَ مَفَازًا ۝

(यानी) बाग ते अंगूर ॥ 33 ॥

حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا ۝

ते हानी-त्रानी जुआन यक्कियां ॥ 34 ॥

وَكَوَاعِبَ أُنْرَابًا ۝

ते छलकदे प्याले ॥ 35 ॥

وَكَأْسًا دِهَاقًا ۝

नां ते ओह् उंदे (उनें सुर्गे) च फजूल गल्लां सुनडन ते नां (उंदी गल्लें गी) कदें कोई झुठलाग ॥ 36 ॥

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لُعَاوًا وَلَا جَدْبًا ۝

उनेंगी तेरे रब्ब पासेआ ऐसा बदला दिता जाग, जो उंदी हालत दे मताबक इनाम होग ॥ 37 ॥

جَزَاءً مِّن رَّبِّكَ عَطَاءً حِسَابًا ۝

(तेरे उस रब्ब पासेआ जो)गासें, धरती ते इनें दौनीं दे बश्कार जे किश ऐ उंदा सारें दा रब्ब ऐ (ते) बे-हद कर्म करने आहला ऐ। ओह् उस दे हजूर च (बिना अजाजत) गल्ल करने (कुसकने) दी ताकत नेई रखडन ॥ 38 ॥

رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
الرَّحْمَنِ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا ۝

(एह् उस रोज होग) जिस रोज कामिल रूह ते फरिश्ते रींघ ब'न्नियै खड्गोंग (ते) ओह् गल्ल नेई करी सकडन सिवाए उसदे जिसी रहमान (खुदा) नै अजाजत दिती दी होग (ते ऐसा शख्स सिर्फ मनासब ते) ठीक-ठीक गल्ल करग ॥ 39 ॥

يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلَائِكَةُ صَفًّا ۝
لَّا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ
وَقَالَ صَوَابًا ۝

एह् दिन आइयै रौहने आहला ऐ इस आस्तै
(तुंदे चा) जो (शख्त) चाह् अपने रब्ब कश
(अपना) ठकाना बनाई लै ॥ 40 ॥

असें तुमेंगी इक तौले गै (औने आहले समे
दे) अजाब शा चंगी चाल्ली सोहगा करी दिते
दा ऐ। जिस दिन इन्सान उस चीजै गी दिक्खी
लैग जो उसदे हत्थें अगें भेजी दी ऐ। ते
मुन्कर (उस दिन) गलाग जे काश! अ'ऊं
मिट्टी होंदा ॥ 41 ॥ (रुकू 2/2)

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ
اِلٰى رَبِّهِ مَا بَا ۝

اِذَا اَنْذَرْنَاكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا يَوْمَ يَنْظُرُ
الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدُهٗ وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ
يَلَيْتَنِى كُنْتُ تُرْبًا ۝

1. यानी जो कर्म ओह करी चुके दा ऐ उंदा बदला दिक्खी लैग।



सूर: अल्-नाज़िआत

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां संताली आयतां ते दो रुकू न।

अ'ऊं अल्लाह दा नांS लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अ'ऊं उनें हस्तियें गी गुआही दे तौरै पर पेश
करना जो पूरी रुची कन्नै धार्मक ज्ञान गी
खिचदियां न' ॥ 2 ॥

وَالتَّزَعَّتْ عَرْفًا ①

ते उनें (हस्तियें) गी जो शैल करियै चंगी चाल्ली
गिरह² ब'नदियां न ॥ 3 ॥

وَالشَّيْطَانُ نَسْطًا ①

ते उनें (हस्तियें) गी जो दूर-दूर निकली
जंदियां³ न ॥ 4 ॥

وَالشَّيْطَانُ سَبِيحًا ①

फनी (मकाबला करियै अपने प्रतिद्वंदियें शा)
खूब/खासियां अगें निकली जंदियां⁴ न
॥ 5 ॥

فَالسَّبِقَاتُ سَبَقًا ①

1. इत्थें सहाबा दे दलें दा बर्णन ऐ ते दरसेआ गोदा ऐ जे हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दे साथी उच्चे ते बधिया किसम दे सदाचार गी कायम करने आस्ते जोर लांदि हे। किश विद्वानें दा गलाना ऐ जे इत्थें फरिश्तें दा जिकर ऐ। गल्ल एह ऐ जे इत्थें इनें हस्तियें गी गुआही दे रूपै च पेश कीते दा ऐ ते फरिश्तें दी गुआही दा कोई अर्थ नेई निकलदा की जे फरिश्तें दी गुआही गी नां मुन्कर समझी सकदे न ते नां मोमिन। हां सहाबा दी गुआही गी सब समझी सकदे न। इसलेई इत्थें सहाबा दा गै बर्णन ऐ।
2. यानी अल्लाह कन्नै अपना लगाS मजबूत करदे न।
3. यानी सहाबा दे दल जो इस्लाम दे प्रचार आस्ते देश-बदेशें फिरदे हे।
4. सहाबा च नेकी च इक-दूए शा बधने दा उत्साह मजबूद होंदा ऐ, जिस करी ओह नेकी च इक-दूए शा बधने दी कोशिश च कोई ओख मसूस नथे करदे ते उंदी सारी कोशिश ऐसी गे ही जियां तरने आहले गी तरदे मौके पानी च असानी होंदी ऐ।

फी (दुनियां दा) कम्म (चलाने) दियां तदबीरों/उपाऽ करने च लग्गी पौंदियां न ॥ 6 ॥

قَالَمَدَبَّرَاتٍ أَمْرًا ①

(इसे गुणों आहली कौम दे प्रकट होने दा ओह दिन होग) जिस दिन जंग (दी त्यारी) करने आहली (कौम) जंग दी त्यारी करग ॥ 7 ॥

يَوْمَ تَرَجُفُ الرَّاجِفَةُ ②

उस (जंग दी त्यारी) दे बा'द (उस्सै किसम दी) पिच्छे औने आहली (इक होर) घड़ी औग ॥ 8 ॥

تَتَّبِعُهَا الرَّادِفَةُ ③

उस दिन किश लोकें दे दिल धड़का करदे होंगन ॥ 9 ॥

قُلُوبٌ يَوْمَئِذٍ وَاجِفَةٌ ④

ते उंदियां नजरं डरै कन्ने झुकी दियां होंगन ॥ 10 ॥

أَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ⑤

(ते) ओह आखडन जे क्या असेंगी उनें पैँ अपने रस्तै परताई दिता जाग? ॥ 11 ॥

يَقُولُونَ إِنَّا لَمَرْدُودُونَ فِي الْحَافِرَةِ ⑥

क्या (उस हालत च बी जे) जिसलै अस गली-सड़ी दियां हड्डियां होई जागे (ऐसा होग)? ॥ 12 ॥

إِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّجْرَةً ⑦

ओह आखदे न (जेकर ऐसा होआ) तां ते एह बड़ी घाटे आहली बापसी होग ॥ 13 ॥

قَالُوا تِلْكَ إِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ⑧

(ते एह बी याद रक्खो जे) एह जंग दी खबर ते सिर्फ इक द्रंढ ही ॥ 14 ॥

فَلِنَاهُمْ زَجْرَةً وَاحِدَةً ⑨

1. यानी मानव समाज दा सुधार ते उस दी त्रक्की उंदे जीवन दा मकसद होंदा ऐ।
2. यानी उप्परली आयतां ओह समां दसदियां न जिसलै मुसलमान मुन्करें दे हमलें शा बचने आस्तै ते अपनी रक्षा आस्तै लड़ाई करने पर मजबूर होई जांगन।
3. यानी जिसलै मुसलमान लड़ाई करने पर मजबूर होई जांगन तां फी अस्त्र-शस्त्र हथें चा नेई छोड़डन, बल्के हमलें पर हमले करदे रौंहगन इत्थें तक जे विजयी होई जांगन।
4. यानी उस रोज मुन्कर लोक कायरता दस्सन लागी पौंगन।
5. यानी इस्लाम दे प्रभुत्व (गलबा) पाई लैने दी गल्ल जिसलै पूरी होग तां मुन्कर लोक आखडन जे क्या मरने दे बा'द असेंगी जाँदा करियै तुआलेआ जाग, एह दूई गल्ल बी पूरी होग?
6. यानी मुन्करें दा दंड सिर्फ एह नेई हा जे ओह बद्र दे युद्ध च हारे बल्के इस चाल्ली दियां उंदियां केई हारा होंगन।

इस आस्तै (उस द्रंड दे बा'द) ओह यकदम फी (लड़ाई दे) मदान च आई जांगन' ॥ 15 ॥

فَإِذَا هُم بِالسَّاهِرَةِ ۝

क्या तुगी मूसा दी गल्ल (बी) पुज्जी दी (यानी पता) ऐ ॥ 16 ॥

عَلَيْهَا

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثٌ مُوسَى ۝

जिसलै जे उसी उसदे रब्ब नै पवित्र वादी यानी 'तुवा?' च पुकारेआ हा ॥ 17 ॥

إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝

(ते गलाया हा जे) फिरऔन कश जा की जे ओह बागी होआ करदा ऐ ॥ 18 ॥

إِذْ هَبَّ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۝

ते (उसी) आख जे क्या तुगी (इस गल्ला दी बी किश) चाह है जे तूं पवित्र होई जाए ॥ 19 ॥

فَقُلْ هَلْ لَّكَ إِلَىٰ أَنْ تَزُولَىٰ ۝

ते (उसदे नतीजे च) अ'ऊं तुगी तेरे रब्ब दा रस्ता दस्सां ते तूं (खुदा शा) डरन लागै ॥ 20 ॥

وَأَهْدِيكَ إِلَىٰ رَبِّكَ فَخُشِيَ ۝

इस आस्तै (मूसा गे, ते उंनै) उसी इक बड्डा नशान दस्सेआ ॥ 21 ॥

فَأَرَاهُ الْآيَةَ الْكُبْرَىٰ ۝

जिस पर उसनै (मूसा गी) झुठलाया ते ना-फरमानी कीती ॥ 22 ॥

فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ ۝

इस पर एह ज्यादाती कीती जे उसने फसाद करने दियां योजनां बनादे होई सचाई शा मूह फेरी लैता ॥ 23 ॥

ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَىٰ ۝

इस आस्तै (उसनै अपने दरबारियें गी) किट्ठा कीता ते (देशै च आम) मनादी (बी) कराई (यानी ढंडोरा फराया) ॥ 24 ॥

فَحَشَرَ فَنَادَىٰ ۝

1. यानी जिसलै लड़ाइयें दा ठीक वक्त आँग तां मुन्कर बी बार-बार हमले करने पासै ध्यान देंग, पर आख हारी जांगन।
2. मूल शब्द 'तुवा' दा अर्थ चक्कर खाना होंदा ऐ। इस आस्तै इसदा भाव एह ऐ जे ओह ऐसी वादी ही जित्थुआं मनुक्ख अल्लाह पासै फिरदा ऐ ते आध्यात्मिक रूपै च उसदे विकास दे साधन जुटाए जंदे न।
3. यानी हजरत मूसा नै पैहले होए दे ते बा'द च औने आहले सारे नबियें दी रीति मताबक इयै कीता जे फिरऔन गी गलाया जे बेहतर इयै ऐ जे मिगी मन्नी लै ते मेरी नसीहत हासल कर ते मेरी आमद गी अपने आस्तै अजाब दा कारण नैई बनाऽ।

ते (लोकें) गी ज'मा करियै) गलाया जे अ'ऊं
थुआड़ा सारें शा बड्डी रब्ब आं ॥ 25 ॥

فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَى ۝

इस पर अल्लाह नै उसी आखरत ते दुनियां दे
अज़ाब च ग्रस्त करने आस्तै पकड़ी लैता
॥ 26 ॥

فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْأَخْزَرَةِ وَالْأُولَى ۝

यकीनन इस (घटना) च उस शख्स आस्तै जो
खुदा शा डरदा ऐ इक बड्डी इबरत (दा
समान) ऐ ॥ 27 ॥ (रुकू 1/3)

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَن يَخْشَى ۝

(सोचो ते सेही) क्या तुसेंगी (दबारा) पैदा
करना ज्यादा मुश्कल ऐ जां गासै गी (पैदा
करना) जिसी उस (खुदा) नै बनाया ऐ ॥ 28 ॥

ءَأَنْتُمْ أَشَدُّ حَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ ۝

(ते) उस दी उचाई गी होर उच्चा कीता ऐ, फी
उसी बे-ऐब बनाया ऐ ॥ 29 ॥

رَفَعَ سَمَكَهَا فَسَوَّيَهَا ۝

ते उसदी रात गी (ते) न्हेरा बनाया ऐ पर
उसदी दपैहरी गी (रोशन बनाइयै) जाहर कीता
ऐ ॥ 30 ॥

وَأَعْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ صُحُفَهَا ۝

ते उसदे कन्नै (उससै समे च) धरती गी बी
बछाया ऐ ॥ 31 ॥

وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَلِكَ دَحَاهَا ۝

फी (उसदे चा) उसदा पानी ते उसदा चारा
कड्ढेआ ऐ ॥ 32 ॥

أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعُهَا ۝

ते फ्हाड़ें गी बी ओहदे च गड्डी दिता ऐ
॥ 33 ॥

وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا ۝

(एह सब किश) थुआड़े ते थुआड़े डंगरें दे
फायदे आस्तै (उसनै कीता ऐ) ॥ 34 ॥

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنعَامِكُمْ ۝

इस आस्तै जिसलै ओह बड्डी आफत औंग
॥ 35 ॥

فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَةُ الْكُبْرَى ۝

जिस रोज इन्सान अपने कीते दे गी याद करग
॥ 36 ॥

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ مَا سَعَى ۝

ते नरक ओहदे आस्तै जो उसी (अकल दी अक्खी कनै) दिक्खग जाहर करी दित्ती जाग ॥ 37 ॥

इस आस्तै जिसनै सरकशी (उद्दंडता) अखत्यार कीती ॥ 38 ॥

ते संसारक जीवन गी (आखरत दे जीवन पर) पैहल दित्ती ॥ 39 ॥

यकीनन ज्हन्नम (गै) उसदा ठकाना ऐ ॥ 40 ॥

ते जिसनै अपने रब्ब दी उच्ची शान शा खौफ खादा ते अपने मनै गी घटिया इच्छाएं थमां रोकेआ ॥ 41 ॥

यकीनन सुर्ग गै उसदा ठकाना ऐ ॥ 42 ॥

ओह तैरे शा उस घड़ी बाँरे पुछदे न (जे) ओहदा औना कुसलै होग? ॥ 43 ॥

तुगी उसदे (औने दे जिकर कनै) केह बास्ता? ॥ 44 ॥

उस (घड़ी दे समे दी) आखरी सीमा दा (निश्चत करना) ते तैरे रब्ब कनै सरबंध रखदा ऐ ॥ 45 ॥

तू ते सिर्फ उसगी जो इस (आफत) शा डरदा ऐ, सोहगा करने आहला ऐं ॥ 46 ॥

ओह जिस रोज उसी दिखडन (उंदी हालत ऐसी होग जे) आखो ओह सिर्फ इक शाम जां उसदी सवेर (इस दुनियां च) रेह न ॥ 47 ॥
(रुकू 2/4)

وَبَرَزَتِ الْجَحِيمِ لِمَنْ يَرَى ۝

فَأَمَّا مَنْ ظَغَى ۝

وَأَثَرَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۝

فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَى ۝
وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ
عَنِ الْهَوَىٰ ۝

فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَى ۝
يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ۝

فِيمَ أَنْتَ مِنْ ذِكْرِهَا ۝

إِلَىٰ رَبِّكَ مُنْتَهَاهَا ۝

إِنَّمَا أَنْتَ مُنذِرٌ مِّنْ بَٰخْشَاهَا ۝

كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يُبْشَئُوا
إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا ۝

ع ٣٠



सूर: अबस

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां तरताली आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۞

(क्या) त्रिउढ़ी चाढ़ी ते मूंह फेरी लैता ॥ 2 ॥

عَبَسَ وَتَوَلَّى ۞

(सिर्फ) इस गल्ला पर जे उसदे कश (इक)
अ'न्ना (जिसी बाकफ लोक जानदे न)
आया ? ॥ 3 ॥

أَنْ جَاءَهُ الْأَعْمَى ۞

ते (हे रसूल!) केहड़ी गल्ल तुगी (उसदी)
दस्सी सकदी ही जे ओह जरूर पवित्तर होई
जाग ॥ 4 ॥

وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّهُ يَزَّكَّى ۞

जां (इबरत कराने आहली गल्लें गी) याद
करग तां (एह) याद करना उसी फायदा
पजाग ॥ 5 ॥

أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرَى ۞

क्या एह होई सकदा ऐ जे जो शख्स (सचाई
शा) बे-परवाही करै ॥ 6 ॥

أَمَّا مَنْ اسْتَعْتَىٰ ۞

(उस दे पासै) ते तूं खूब ध्यान देऐं? (हालांके
एह (गल्ल) सारे कुरआन दे खलाफ ऐ) ॥ 7 ॥

فَأَنْتَ لَهُ تَصَدَّىٰ ۞

ते तूं ऐसा करी बी कियां सकना ऐं जिसलै
जे उसदे हदायत नेई पाने दी तेरे पर कोई
जिम्मेदारी नेई ॥ 8 ॥

وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزَّكَّىٰ ۞

ते जो कोई तेरे पासै दौड़ा आवै ॥ 9 ॥

وَأَمَّا مَنْ جَاءَكَ يَسْعَى ۝۹

ते ओह (कनै गै खुदा शा बी) डरदा होऐ
॥ 10 ॥

وَهُوَ يَخْشَى ۝۱०

तां (आपत्ति करने आहले दे कथनानुसार) तूं
ओहदे पासै कोई ध्यान नेई दिन्ना होन्ना ॥ 11 ॥

فَأَنْتَ عَنْهُ تَأَلَّى ۝۱१

ऐसा कदें बी नेई होई सकदा (एह सब
अलजाम गलत न) सच्चें गै एह (कुरआन)
ते इक नसीहत ऐ। (इसदे कनै तलोआर नेई
उतारी गेई जे तूं लोकें गी मुसलमान बनाने पर
मजबूर होऐं) ॥ 12 ॥

كَلَّا إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ۝۱२

इस आस्तै जो चाह उसी अपने जैहन च
बदहाई लै ॥ 13 ॥

﴿عَلَىٰ﴾

فَمَنْ شَاءَ ذَكَرَهُ ۝۱३

एह कुरआन ऐसे सहीफें (पवितर कताबें) च
ऐ (जो) इज्जत आहले ॥ 14 ॥

فِي صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۝۱४

बड़ी उच्ची शान आहले ते पवतिर न ॥ 15 ॥

مَرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۝۱५

ओह (सहीफे लिखने आहले ते दूर-दूर)
सफर^१ करने आहलें दे हत्थें च न ॥ 16 ॥

بِأَيْدِي سَفَرَةٍ ۝۱६

(ऐसे लोकें दे हत्थें च) जो मोजज (इज्जत आहले)
ते उच्चे दरजे दे नेकोकर/सदाचारी न ॥ 17 ॥

كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۝۱७

इन्सान दा सत्यानाश होऐ, ओह कैसा ना-
शुकरा ऐ? ॥ 18 ॥

قُلِّبَ الْإِنْسَانُ مَا أَكْفَرَهُ ۝۱८

(ओह गौर ते करै जे) खुदा नै उसी किस
चीजें थमां पैदा कीते दा ऐ? ॥ 19 ॥

مِنْ أَيْ شَيْءٍ خَلَقَهُ ۝۱९

(उसी पता होग जे सच्चें) इक कतरा बीरज
थमां (पैदा कीते दा ऐ। पैहलें ते) उसी पैदा
कीता, फी ओहदे आस्तै (त्रक्की दा इक)
अंदाजा निश्चत कीता ॥ 20 ॥

مِنْ نُطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَّرَهُ ۝२०

1. अर्थात् हज़रत मुहम्मद *ﷺ* दे सहाबा कुरआन मजीद गी लेइयै दूर-दूर फैली जांगन।

फी (उसदे) रस्ते गी असान बनाया (ते उसी)
चंगी चाल्ली असान बनाया ॥ 21 ॥

ثُمَّ السَّبِيلَ يَسَّرَهُ ۝١

फी (पूरी आयु दे बा'द) उसी मारी दिता।
फी उसी (बनाई दी निश्चत) कबर' च रक्खेआ
॥ 22 ॥

ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ۝٢

फी जिसलै चाह्ग उसी दबारा टुआलियै खडेरी²
देग ॥ 23 ॥

ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنشَرَهُ ۝٣

(ऐसा) कदें बी³ नेई (जो तुस समझदे ओ,
दिखदे नेई जे) उसी (यानी इन्सान गी) जो
हुकम मिले दा हा, अजें तक उसनै उसी पूरा⁴
नेई कीता ॥ 24 ॥

كَلَّا لَمَّا يُفِضُ مَا أَمَرَهُ ۝٤

इस आस्तै चाही दा ऐ जे इन्सान अपने खाने
पासै दिक्खै ॥ 25 ॥

فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ إِلَى طَعَامِهِ ۝٥

(ते दिक्खै जे) असें बदलें चा खूब पानी
बर्हाया ऐ ॥ 26 ॥

إِنَّا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّا ۝٦

फी धरती गी खूब फाड़ेआ ऐ ॥ 27 ॥

ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ۝٧

इस आस्तै उस फाड़ने दे नतीजे च असें ओहदे
च भांत-सभांते अनाज पैदा कीते न ॥ 28 ॥

فَأَنْبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ۝٨

इससै चाल्ली अंगूर ते सब्जियां ॥ 29 ॥

وَعِنَبًا وَقَضْبًا ۝٩

इंदे अलावा जैतून ते खजूरां ॥ 30 ॥

وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا ۝١٠

ते ओहदे कनै घने बाग बी ॥ 31 ॥

وَحَدَائِقَ غُلْبًا ۝١١

1. इस दा मतलब एह ऐ जे संसार च उसगी ओहदे रिश्तेदार उसी कबर च रखदे न, पर मनुक्खें दी असली कबर ओह ऐ जेदे च अल्लाह तआला ओहदी रूह गी रखदा ऐ।
2. इस आयत शा स्पष्ट ऐ जे इत्थें कबर अभीष्ट नेई, बल्के परलोक दी कबर ऐ ते अर्थ एह ऐ जे खुदा इन्सान गी अगलें ज्हांन इक होर (दूआ) जीवन प्रदान करग।
3. यानी तुस एह समझदे ओ जे मरने दे बा'द इन्सान गी कोई जीवन नेई मिलग।
4. अर्थ एह ऐ जे जिसलै इन्सान नै खुदा दी भेजी दी शरीअत (धार्मक विधान) दा पालन नेई कीता तां एह कियां होई सकदा ऐ जे उसदा लेखा नेई लैता जा, ते लेखा लैने दी सूरत च जरूरी ऐ जे उसगी मरने दे बा'द जींदा कीता जा।

ते मेवे बी ते सुक्का घाऽ (ते बूचड़ियां बी)

॥ 32 ॥

وَفَاكِهَةً وَأَبًّا ۝۳۲

(एह सब) थुआड़े ते थुआड़े जानवरों दे फायदे
आस्तै (पैदा कीता गोदा' ऐ) ॥ 33 ॥

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلَا نِعَامِكُمْ ۝۳۳

फी (एह बी ते सोचो जे) जिसलै कन्न
फाड़ने आहली (मसीबत) औग ॥ 34 ॥

فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاحَّةُ ۝۳۴

जिस रोज जे भ्राऽ अपने भ्राऽ शा (दूर)
नस्सग ॥ 35 ॥

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ۝۳۵

ते (इस्सै चाल्ली) अपनी माऊ ते अपने बब्बै
शा ॥ 36 ॥

وَأُمِّهِ وَأَيْبِهِ ۝۳۶

ते अपनी लाड़ी ते अपने बच्चें शा (बी)
॥ 37 ॥

وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ ۝۳۷

उस रोज हर इक आदमी दी हालत ऐसी होग
जे ओह उसी अपने (गै) पासै उलझाई रक्खग
॥ 38 ॥

لِكُلِّ امْرِيٍّ مِنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ۝۳۸

किश (लोकें दे) चेहरे उस रोज रोशन होंग
॥ 39 ॥

وَوَجْوهٌ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ۝۳۹

हस्सा करदे ते खुश-खुश ॥ 40 ॥

صَاحِكَةٌ مُّسْتَبْسِرَةٌ ۝۴۰

ते किश (लोकें दे) चेहरे उस रोज ऐसे होंग
ते इयां सेही होग जे उंदे पर धूड़ पेदी ऐ
॥ 41 ॥

وَوَجْوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۝۴۱

ते (अंदरूनी हालत दस्सने आस्तै) उंदे चेहरे
पर इक (ऐसी) कालख बी छाई दी होग
(जेहकी ऐसे मौकें पर छाई जंदी होंदी ऐ)
॥ 42 ॥

تَرَاهُمَا قَتَرَةٌ ۝۴۲

इयै लोक इन्कारी ते दुराचारी करार दित्ते जांगन
॥ 43 ॥ (रुकू 1/5)

أُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرَةُ الْفَجْرَةُ ۝۴۳

1. यानी मनुक्खै द्वारा लाए गेदे बूहटें दे फल जां आप-शंभू उगगे दे बूहटें दे फल जां उंदे पर लगने आहले फुल्लें गी इन्सान बरतदा ऐ पर उंदे पत्तर ते डिग्गे दे फल जानवर बी खंदे न। इस आस्तै एह सारा किश इन्सानें ते जानवरें दे फायदे आस्तै पैदा कीता गोदा ऐ।

سُورَةُ التَّكْوِيْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ ثَلَاثُونَ آيَةً وَرُكُوعٌ

सूर: अल्-तकवीर

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह
समेत इस दियां त्रीह आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांस लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

जिसलै सूरज (दे नूर) गी लपेटी दिता जाग'
॥ 2 ॥

اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝

ते जिसलै सतारे (नखत्तर) धुंदले होई जांगन
॥ 3 ॥

وَاِذَا النُّجُومُ اُنْكَدَرَتْ ۝

ते जिसलै फ़ाड़ चलाए जांगन ॥ 4 ॥

وَاِذَا الْجِبَالُ سُوِّرَتْ ۝

ते जिसलै दस्स म्हीने दियां गब्बन ऊंटनियां'
छोड़ी दितियां जांगन ॥ 5 ॥

وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝

ते जिसलै बैहशी (जंगली) किट्टे कीते^३ जांगन
॥ 6 ॥

وَاِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۝

1. एह उस अस्थाई कमजोरी पासै संकेत ऐ जो भविक्ख च मुसलमानें पर औने आहली हो। कुरआन मजोद च हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. गी सूरज गलाया गेदा ऐ (सूर: अहजाब आयत 47) ते इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे इक समां ऐसा आंग जे सूरज पर पड़दा पाई दिता जाग यानी हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दा सम्मान लोकें दे दिलें च उन्ना नेई रौहग जिसदे ओह अधिकारी न।
2. यानी रेलें-मोटरें दा अविश्कार होई जाग ते उसलै हिजाज़ देश च ऊटें पर सफर करना नां-मातर रेही जाग। दस्स म्हीने दी गब्बन ऊंटनी इस आस्तै गलाया गेदा ऐ जे जिसलै ऊंटनी गी गब्बन होए दे दस्स म्हीने होई जान ते उसदे बच्चे कारण ओहदा मुल्ल बधी जंदा ऐ ते उसलै गै उसी छोड़ेआ जाई सकदा ऐ जिसलै ऊंटें दी जरूरत नेई र'वै। रेल, मोटर, जहाज बगैए दे आविश्कार कन्ने एह भविक्खवाणी पूरी होई गई ऐ।
3. यानी चिड़िया-घर बनाए जांगन जां एह जे बैहशी (असभ्य) लोक सभ्य बनी जांगन जां एह जे बैहशी कौमें गी उंदे देशें चा कइही लाया जाग। जियां अमरीका ते अस्ट्रेलिया च होआ। मूल शब्द 'हुशिरत' दा इक अर्थ देश-नकाला देना बी होंदा ऐ। (अक्रब)

ते जिसलै दरेआएं (दे पानियें) गी (कडिहयै दूए दरेआएं जां नैहरें च) मलाई¹ दित्ता जाग² ॥ 7 ॥

وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝

ते जिसलै (बक्ख-बक्ख किसमें दे) लोक किट्ठे³ कीते जांगन ॥ 8 ॥

وَإِذَا الْتُفُوسُ زُوِّجَتْ ۝

ते जिसलै जींदे सुआसैं दब्बी जाने आहली (कुड़ी) दे बारै सुआल⁴ कित्ता जाग ॥ 9 ॥

وَإِذَا الْمَوْءِدَةُ سُئِلَتْ ۝

(जे आखर) किस गुनाह दे बदले च उसदा कतल कीता गोआ हा ॥ 10 ॥

بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ۝

ते जिसलै कताबां खलारी⁵ दित्तियां जांगन ॥ 11 ॥

وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝

ते जिसलै गासै दी खल्ल⁶ तुआरी जाग ॥ 12 ॥

وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ۝

ते जिसलै नरक गी भड़ काया⁷ जाग ॥ 13 ॥

وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ۝

ते जिसलै सुगैं गी नेडै⁸ करी दित्ता जाग ॥ 14 ॥

وَإِذَا الْجَنَّةُ أُرْلِفَتْ ۝

1. एह अज्जें दे युग बारै भक्खखाणी ऐ ते आखरी युग च इंजीनियरिंग दे विकास पासै संकेत करदी ऐ। इस आस्तै इसलै भारत, अमरीका ते रूस च केई दरेआ आपस च मलाए गेदे न ते जर्मनी च ते इस सदी दे पैहले चरण च गै मलाई दिते गे हे।
2. मूल शब्द 'सज्जर' दा अर्थ कुसै चीजें गी सुकाई देना बी होंदा ऐ ते इस आस्तै विद्वानें एह अर्थ लेदा ऐ जे दरेआ सुकाई दिते जांगन। पर इसदा अर्थ एह बी ऐ जे अपनी मरजी कनै योजना दे मताबक दरेआएं दा पानी कडिहयै दूए थाहरें पर लेई जान ते इयै नैहरें दा सिद्धांत ऐ। इस लेई दौनीं गल्लें गी सामनै रखदे होई एह अर्थ बनदा ऐ जे नैहरां कडिहयै दरेआएं गी सुकाई दित्ता जाग नां के उंदा पानी भाप बनाइयै डुआया जाग।
3. यानी सफर बड़ा असान होग। बक्ख-बक्ख देशें दे लोक रेलें ते ज्हाजें राहें आपस च मिलने दे काबल होई जांगन।
4. जींदी कुड़ियें गी दब्बना निजम मताबक पाप मन्नेआ जाग।
5. उस समे च छापेखाने बौहत होई जांगन।
6. यानी खगोल विद्या च बौहत त्रक्की होग।
7. यानी उस आखरी युगै च पाप बौहत बधी जांगन ते पापें दे बधने करी नरक मनुक्खें दे लागै आई जाग।
8. यानी धर्म दियां हिक्मतां ते उसदा तत्व ज्ञान इस चाल्ली खोहलियै दस्सेआ जाग जे लोकें आस्तै धर्म सरबन्धी गल्लां समझना, उनेंगी मन्ना ते उंदे पर चलना असान होई जाग।

(उस रोज) हर जान जे किश उसनै हाजर कीते दा ऐ जानी जाग ॥ 15 ॥

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ۝

इस आस्तै ऐसा नेई (जो तुस सोचदे ओ) अ'ऊं शहादत दे तौरा पर पेश करना, चलदे-चलदे पिच्छें हटी जाने आहलें गी ॥ 16 ॥

فَلَا أَقْسِمُ بِالْخُنُوسِ ۝

(जो कन्नै गै) नक्कै दी सेधा चलने आहले (बी न ते फी) घरें च बेही रौहने आहले' बी ॥ 17 ॥

الْجَوَارِ الْكُنُوسِ ۝

ते राती गी (शहादत दे तौरा पर पेश करना) जिसलै ओह् मुक्कने आहली होई जंदी ऐ ॥ 18 ॥

وَالْيَلِ إِذَا عَسَّسَ ۝

ते बडले गी जिसलै ओह् साह' लैन लगदा ऐ ॥ 19 ॥

وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ۝

यकीनन ओह् (कुरआन) इक बजुर्ग (सम्मानत) रसूल' दा कलाम ऐ ॥ 20 ॥

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝

(जो रसूल) ताकत आहला ते अर्श आहले रब्ब दे लागै बड्डा दरजा रक्खने आहला ऐ ॥ 21 ॥

ذِي قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ۝

1. इत्थें तबाह होने आहली कौमें दे लच्छन दस्से गेदे न। (मुसलमानें एहदे पर चेचे तौरा पर बिचार करना चाही दा) इक लच्छन ते एह दस्से दा ऐ जे खतरा होने पर पिच्छें हटी जाना, ते दूआ लच्छन एह ऐ जे अन्जाम सोचे बगैर कोई कम्म करने दी हिम्मत करना ते त्रीया लच्छन एह ऐ जे सारे कम्म छोड़िये घर बेही जाना।
2. यानी मुसलमानें आस्तै तबाही दा समां स्थाई नेई होग। रातीं दे बा'द सवेर औग।
3. इत्थें एह गल्ल नेई जे हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दा कलाम कुरआन मजीद ऐ, बल्के इस आयत दा भाव एह ऐ जे हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. अल्लाह कन्नै नेइमां सरबंध रखदे न ते फरिश्ते एह कलाम लेइयै औंदे न। इस आस्तै एह कलाम अल्लाह दा बी ऐ ते हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दा बी ऐ की जे संसारकें उंदे मूहा एह कलाम सुनेआ, पर कुरआन मजीद नै इस गल्ला पर ज्यादा जोर दिते दा ऐ जे एह अल्लाह दा कलाम ऐ जियां जे एहदे च बर्णत ऐ। सच्वें गै एह कुरआन संसार दे रब्ब पासेआ नाजल कीता गेदा ऐ। इसी लेइयै इक इमानदार फरिश्ता तरे दिलै पर उतारे दा ऐ तां जे तूं सोहगा करने आहले गरोह च शामिल होई जाएं (सूर: शोअरा आयत 192-195)

ते जो मुताअ बी ऐ (जो इस काबल ऐ जे ओहदा अनुसरण कीता जा) ते कन्नै गै अमीन' बी ऐ ॥ 22 ॥

مَطَاعٍ تَمَّ أَمِينٌ ﴿٦٧﴾

ते थुआड़ा साथी कदें बी मजनु (पागल) नेई ॥ 23 ॥

وَمَا صَاحِبِكُمْ بِمَجْنُونٍ ﴿٦٨﴾

ते उसनै उस गैब (यानी परोक्ष दियें गल्लें) गी खु'ल्ले खितिज' च दिक्खे दा ऐ ॥ 24 ॥

وَلَقَدْ رَأَاهُ بِالْأَفْقِ الْمُبِينِ ﴿٦٩﴾

ते ओह गैब (परोक्ष) दियां खबरां देने च कदें बी कंजूस नेई ऐ ॥ 25 ॥

وَمَا هُوَ عَلَى الْعَيْبِ بِضَنِينٍ ﴿٧٠﴾

ते नां ओह (यानी उस पर नाजल होने आहला कलाम) दुतकारे गेदे शतान दी (आखी दी) गल्ल ऐ ॥ 26 ॥

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ﴿٧١﴾

फी (इस गल्ला दे होंदे होई) तुस कुत्थें जंदे ओ ॥ 27 ॥

فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ ﴿٧٢﴾

एह ते सिर्फ सारे ज्हांनैं आस्तै इक नसीहत ऐ ॥ 28 ॥

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٧٣﴾

(खास तौरा पर) थुआड़े चा जो उसदे आस्तै सिद्धे रस्ते पर चलना चाह ॥ 29 ॥

لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْتَقِيمَ ﴿٧٤﴾

ते तुस एह इच्छा नेई करी सकदे पर ऊऐ (करी सकदे ओ) जो अल्लाह दी इच्छा' दे मताबक होऐ, जो सारे ज्हांनैं दा रब्ब ऐ ॥ 30 ॥ (रुकू 1/6)

وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٧٥﴾

1. की जे एह रसूल ऐ इस पर अल्लाह दा कलाम उतरना चाही दा हा ते फी उसदे गैर-ममूली दा'वे दे बा'द इक बड़्डी फरमांबरदार जमात उसी मिली दी ऐ इस आस्तै ओह सच्चा ऐ ते बरोधियें दे अपने आखे मजब एह अमीन यानी विश्वासपात्र बी ऐ। इस आस्तै जिसलै एह गलांदा ऐ जे एह अल्लाह दा कलाम ऐ तां उस दा एह दा'वा झुटा नेई होई सकदा।
2. मूल शब्द 'उफुक' यानी खितिज। नजरें दी पाँहच दी आखरी सीमा दा ओह थाहर ऐ जिल्थें धरती ते गस मिले दे सेही होंदे न।
3. इसदा एह अर्थ नेई जे अल्लाह नै कोई तकदीर निश्चत करी रक्खी दी ऐ जे फलाना आदमी नेक होग ते फलाना बुरा होगा। कुर'आन मजीद ऐसे कुसै मन्तव्य (अकीदे) गी गलत आखदा ऐ। इस आयत च कुर'आन मजीद दी इक होर आयत पासै इशारा कीता गेदा ऐ जिसदा अर्थ एह ऐ जे मैं जिन्नैं ते मनुक्खें गी सिर्फ इस आस्तै पैदा कीते दा ऐ जे ओह मेरी भगती करन। इससे चाल्ती इक होर आयत पासै बी शारा कीता गेदा ऐ जिसदा अर्थ ऐ जे मैं हर मनुक्खें गी सर्वश्रेष्ठ शक्तियां देइवै भजे दा ऐ। इस आस्तै आयत 30 च एह दुस्सेआ गेदा ऐ जे अल्लाह दी एह इच्छा जाहर होई चुकी दी ऐ जे थुआड़ा सुधार कीता जा ते तुसेंगी कामिल ते पूरे मोमिन बनाया जा। इस आस्तै तुस एहदे खलाफ नेई जाई सकदे।

سُورَةُ الْإِنْفِطَارِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ عَشْرُونَ آيَةً وَرُكُوعٌ

सूर: अल्-इन्फितार

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह
समेत इस दियां बीह आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

जिसलै गास फटी जाग¹ ॥ 2 ॥

إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ①

ते जिसलै नखत्तर झड़ी जांगन² ॥ 3 ॥

وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ①

ते जिसलै समुंदर फाड़ियै मलाई दित्ते जांगन³
॥ 4 ॥

وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ①

ते जिसलै कबरां पुट्टियै इद्धर-उद्धर खलारी
दितियां जांगन⁴ ॥ 5 ॥

وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ①

उसलै ओह बड़डी (गुनाह करने आहली)
जान⁵ (जिसदा इत्थें जिकर ऐ) जानी लैग जे
केह (किश) उसनै अगें भेजे दा ऐ ते केह
(किश) पिच्छें छोड़े⁶ दा ऐ ॥ 6 ॥

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَأَخَّرَتْ ①

1. यानी दुनियां च शिकं ते कुफर इन्ना फैली जाग जे खुदा धरती पर अजाब नाजल करने दा फैसला करी देग।
2. यानी ज्ञानी लोक दुनियां परा लोप होई जांगन जां हदायत देने आहले लोक घट्ट होई जांगन।
3. यानी बड़ियां-बड़ियां नैहरां बनाई दितियां जांगन जियां नैहर पानामा ते नैहर स्वेच।
4. यानी प्राचीन काल दे फिराउन राजें दियां कबरां पुट्टियै उंदे चा उनें राजें दे शव (लोथां) कडिबवै फ्रांस, रूस ते इंगलैंड बगैरा देशें च पुजाई दित्ते जांगन।
5. इस ज'गा जान दा अर्थ ईसाइत ऐ की जे शिकं ते नास्तिकता दा प्रसार इस्सै राहें दुनियां च फैला करदा ऐ।
6. यानी खुदा ऐसी नशानियां पैदा करी देग जिंदे च ईसाई धर्म दी तवाही दे लच्छन जाहर होई जांगन ते ईसाई कौम गी पता लग्गी जाग जे असें बौहत गंदे कर्म कीते दे न ते अपने पिच्छें ऐसे नशान छोड़ी जा करने आं, जो लोकें दे दिलें च साढ़े आसवै नफरत पैदा करदे रौहगन।

हे इन्सान! तुगी कुसनै तेरे रब्ब करीम दे बारै मगरूर/घमंडी (ते धोखा खादे दा) बनाई दिते' दा ऐ ॥ 7 ॥

يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا عَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ۝

(उस रब्ब दे बारे च) जिसनै तुगी पैदा कीता, फी तुगी (यानी तेरी अंदरूनी ताकतें गी) ठीक कीता, फी तुगी मनासब शक्तियां प्रदान कीतियां ॥ 8 ॥

الَّذِي خَلَقَكَ فَسُوِّبَكَ فَعَدَّكَ ۝

फी जो रूप उसनै पसंद कीता, उस च तुगी ढालेआ ॥ 9 ॥

فِي أَيِّ صُورَةٍ مَّا شَاءَ رَكَّبَكَ ۝

ऐसा हरगज नेई (जो तुस समझदे ओ) बल्के तुस ते जजा-स'जा यानी बदले गी झुठलांदे ओ ॥ 10 ॥

كَلَّا بَلْ تُكَدِّبُونَ بِالَّذِينَ ۝

ते यकीनन तुंदे पर (थुआड़े रब्ब पासेआ) नगरान नियुक्त न ॥ 11 ॥

وَأَنَّ عَلَيْكُمْ لِحِظِينَ ۝

(जो) शरीफ (ते) हर गल्लै गी लिखने आहले न ॥ 12 ॥

كِرَامًا كَاتِبِينَ ۝

तुस जे किश बी करदे ओ ओह उसी जानदे न ॥ 13 ॥

يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ۝

यकीनन नेकियें च बधी जाने आहले लोक (म्हेशां) नैमत च (रौहदे) न ॥ 14 ॥

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝

ते बदकार (दुराचारी) लोक यकीनन ज्हन्नम च (रौहदे) न ॥ 15 ॥

وَأِنَّ الْفَجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ۝

ओह (खास तौरै पर) उस च (ज्हन्नम च) जजा-स'जा (बदला दिते जाने) आहलै रोज दाखल होंगन ॥ 16 ॥

يَصَلُّونَهَا يَوْمَ الدِّينِ ۝

1. इस च बी यूरोप दे दर्शन शास्त्र पासै संकेत कीता गेदा ऐ जे इसदे जानने आहले लोक अपने आपे गी शरीअत (म'जबी कनून) ते खुदा शा उच्चा समझदे न ते एह नेई सोचदे जे उर्नेगी खुदा नै पैदा कीते दा ऐ बल्के अपनी गलत फ़लासफी दे अधार पर समझदे न जे अस अपनै-आप गै पैदा होए दे आं।

ते ओह कुसै चाल्ली बी उस शा बचियै गायब
नेई होई सकदे ॥ 17 ॥

وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ۝

ते (हे मखातब!) तुगी कुसनै इस गल्ला दा
पता दिता ऐ जे बदला दिते जाने दा समां केह
ऐ? ॥ 18 ॥

وَمَا آذْرُكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ۝

फी (अस तुगी आखने आं जे) तुगी कुस नै
दस्सेआ ऐ जे जजा-स'जा दा समां केह ऐ
॥ 19 ॥

ثُمَّ مَا آذْرُكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ۝

(एह वक्त) उस दिन (होग) जिस च कोई
जान कुसै जान गी फायदा पुजाने आस्तै! कोई
अखत्यार नेई रक्खग एह सब फैसला उस
दिन अल्लाह दे गै हत्थे च होग ॥ 20 ॥
(रुकू 1/7)

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ سَعًا ۝
وَالْأْمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ۝

1. यानी एह बदला अगलै ज्हान मिलग जिसलै कोई दोस्त कुसै दोस्त गी फायदा नेई पुजाई सकग।

سُورَةُ الْمُطَفِّفِينَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ سَبْعٌ وَثَلَاثُونَ آيَةً وَرُكُوعٌ

सूर: अल्-मुतफ़िफ़ीन

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां सतत्तरी आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۞

सौदा खरीददे बेचदे मौकै चीजें दा तोल घटइयै
देने आहलें आस्तै अजाब (गै अजाब) ऐ ॥ 2 ॥

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ ۞

(उं दे आस्तै) जो तोल्लियै लैं दे न
ते शौल-चाल्ली पूरा करियै लैं दे न
॥ 3 ॥

الَّذِينَ إِذَا كَانُوا عَلَى النَّاسِ
يَسْتَوْفُونَ ۞

ते जिसलै (कोई चीज) दूएँ गी तोल्लियै
दिंदे न ते फी वजन घट्ट करी दिंदे न ॥ 4 ॥

وَ إِذَا كَانُوا لَهُمْ أَوْ وَرَثَتُهُمْ
يُخْسِرُونَ ۞

क्या एह लोक यकीन नैई करदे जे ओह (जींदे
करिये) ठुआले जांगन ॥ 5 ॥

أَلَا يَظُنُّ أُولَئِكَ أَنَّهُمْ مَبْعُوثُونَ ۞

उस म्हत्तवपूर्ण समे (दा फैसला दिक्खने)
आस्तै ॥ 6 ॥

لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ۞

जिसलै (सारे) लोक सारे ज्हांनें दे रब्ब (दा
फैसला सुनने) आस्तै खड़ोते दे होंगन ॥ 7 ॥

يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۞

ऐसा नैई (जो एह समझदे न) दुराचारियें दे
कर्म (दा बदला देने) दा हुकम सच्चें गै इक
सदा रौहने' आहली कताब च ऐ ॥ 8 ॥

كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْفَجَارِ لَفِي سَعِيرٍ ۞

1. मूल शब्द 'सिज्जीन' दा अर्थ कठोर ते स्थाई ऐ ते भाव एह ऐ जे मुनकरें आस्तै अजाब कठोर ते स्थाई होग
(फ़तहुल्बयान-भाग 10)।

ते तुगी कुसनै दस्सेआ जे सिज्जीन केह ऐ?
॥ 9 ॥

وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَجِّينٌ ﴿٩﴾

ओह ऐसा हुकम ऐ जो (अजल/आदि काल
शा) लिखे दा ऐ ॥ 10 ॥

كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ﴿١٠﴾

उस रोज झुठलाने आहलें आस्तै अजाब (गै
अजाब) होग ॥ 11 ॥

وَيَلَّ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿١١﴾

उंदे (ऐसे झुठलाने आहलें) आस्तै जो जजा-
स'जा (बदले) आहले ध्याड़े दा इन्कार करदे
न ॥ 12 ॥

الَّذِينَ يَكْذِبُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿١٢﴾

ते उसदा इन्कार नेई करी सकदा पर ऊऐ जो
हद्द शा बधी गेदा ऐ (ते) सख्त गुनाहगार
ऐ ॥ 13 ॥

وَمَا يَكْذِبُ بِهِ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ﴿١٣﴾

जिसलै ऐसे लोकें सामनै साढ़ी आयतां पढ़ियां
जान तां ओह गलाई दिंदे न जे एह ते पैहले
लोकें दियां कहानियां न ॥ 14 ॥

إِذَا تَتَلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ
الْأُولَٰئِينَ ﴿١٤﴾

हरगज (ऐसा) नेई (जियां ओह आखदे न)
बल्के (असल गल्ल एह ऐ जे) उंदे दिलें पर
उसनै, जो ओह कमाई चुके दे न, खाम (जंग)
लाई दिती दी ऐ ॥ 15 ॥

كَذَّٰبٌ لَّا يَكْسِبُونَ ﴿١٥﴾

बल्के इयां आखो जे उस रोज ओह अपने
रब्ब दे सामनै औनै शा यकीनन रोके जांगन
॥ 16 ॥

كَلَّا إِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمِئِذٍ
لَّمْ حَٰجِبُونَ ﴿١٦﴾

फी ओह जरूर ज्हन्नम च दाखल होंगन
॥ 17 ॥

ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيمِ ﴿١٧﴾

फी उनेंगी गलाया जाग, इयै ते ओह (अन्जाम)
ऐ जिस दा तुस इन्कार करदे होंदे हे ॥ 18 ॥

ثُمَّ يُقَالُ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ
تُكْذِبُونَ ﴿١٨﴾

थुआड़े बिचारें दे खलाफ नेक लोकें (दे बदले)
दा हुकम यकीनन 'इल्लिय्यीन' च ऐ ॥ 19 ॥

كَلَّا إِنَّ آتِ كِتَابِ الْأَبْرَارِ لَنُغِي عَنْهُمْ ﴿١٩﴾

1. 'इल्लिय्यीन' दा अर्थ ऐ ऐसे महापुरुष जो आध्यात्मिक तौर पर उच्चा स्थान रक्खने आहले ते दूएँ शा श्रेष्ठ होन।

ते तुगी कुसनै दस्सेआ ऐ जे 'इल्लिय्यून' केह
ऐ? ॥ 20 ॥

وَمَا أَدْرَاكَ مَا عَلَيْوْنَ ۙ

ओह इक लिखेआ गेदा' हुकम ऐ ॥ 21 ॥

كِتَابٍ مَّرْقُومٍ ۙ

जिसी अल्लाह दे प्यारे लोक (आपू अपनी
अक्खीं कनै) दिखडन ॥ 22 ॥

يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ ۙ

नेकी च बधे दे लोक यकीनन नैमत
(आहली ज'गा) च रक्खे जांगन ॥ 23 ॥

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۙ

सिंहासनें पर (बैठे दे सब हाल) दिक्खा करदे
होंगन ॥ 24 ॥

عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ ۙ

तूं (जेकर उनेंगी दिक्खें तां) उंदे चेहरें पर
नैमत दी रँस (हरेआली) मसूस करगा ॥ 25 ॥

تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ۙ

उनें गी खालस बंद बोतलें चा शराब पलैई
जाग ॥ 26 ॥

يُسْقَوْنَ مِنْ رَحِيقٍ مَّحْمُومٍ ۙ

उसदे आखर च कस्तूरी होग, ते चाही दा ऐ
जे इच्छा रक्खने आहले (इन्सान) ऐसी (गै)
चीजै दी इच्छा करन ॥ 27 ॥

خِتْمُهُ مَسْكٌ ۙ وَفِي ذَلِكَ فَلَيْتَاتَافِسِ
الْمَسَافِسُونَ ۙ

ते ओहदे च तस्नीम' दी मलावट होग ॥ 28 ॥

وَمَرَاَجُهُ مِنْ تَسْنِيمٍ ۙ

(साढ़ी मुराद उस) चशमे (कनै) ऐ जेहदे
चा अल्लाह दे प्यारे लोक पींगन ॥ 29 ॥

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ۙ

ओह लोक जो मुलजम होन यकीनन मोमिनें
कनै हासा-मजाक करदे होंदे हे ॥ 30 ॥

إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ
أَمَنُوا يَصْحَكُونَ ۙ

1. यानी 'इल्लिय्यून' ओह लोक न जिंदे बारै खास हुकम जारी होंदे न ते अल्लाह दे प्यारे लोक आपू अपनी अक्खीं कनै उनें हुकमें गी पढ़डन ते खुश होंगन।
2. 'तस्नीम' दा अर्थ ऐ उच्चो शान, प्रतिशठा ते मैहमा। इस लेई तस्नीम दी मलावट दा अर्थ ऐ जे तस्नीम दा पानी उनें सुरगवासियें दे पानी च मिले दा होग। जेहदे करी उंदा दरजा उच्चा होंदा जाग।

ते जिसलै उंदे कोला लंघदे होंदे हे तां इक-
दूए गी अक्खीं दा शारा करदे होंदे हे ॥ 31 ॥

ते जिसलै अपने घरें पासै परतोदे हे तां
(मुसलमानें दे खलाफ) खूब गल्लां बनादे
होई परतोदे हे ॥ 32 ॥

ते जिसलै (बी) उनेंगी दिखदे हे, आखदे
हे जे एह लोक ते भलेआं गुमराह् न
॥ 33 ॥

ते सचाई एह ऐ जे ओह उंदे पर नगरान
बनाइयै नेई भेजे गे हे' ॥ 34 ॥

इस आसतै जो ईमान ल्याए (ओह) उस
(जजा-स'जा आहलै) रोज इन्कारियें पर
हसडन ॥ 35 ॥

सिंहासनें पर बैठे दे (उंदा सब हाल) दिक्खा
करदे होंगन ॥ 36 ॥

(ते आपस च गलाडन जे) क्या इन्कारियें
गी, जे किश ओह करदे होंदे हे (उस दा)
पूरा बदला थहोई गोआ (जां नेई) ॥ 37 ॥
(रुकू 1/8)

وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَرُونَ ﴿٣١﴾

وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ انْقَلَبُوا
فَكِهِينَ ﴿٣٢﴾

وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَؤُلَاءِ
نَضَّاءُونَ ﴿٣٣﴾

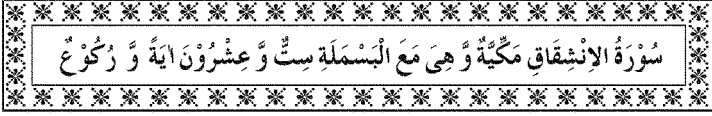
وَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَفِظِينَ ﴿٣٤﴾

فَأَلْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ
يَصْحَكُونَ ﴿٣٥﴾

عَلَىٰ الْأَرَآئِكِ لَا يَنْظُرُونَ ﴿٣٦﴾

هَلْ لَّوَبَّ الْكُفَّارِ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٧﴾

1. इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे कुसै दे दिली अकीदे बारै फतवा देना जायज नेई की जे होई सकदा ऐ जे उसदे दिलै दी गल्ल फतवा देने आहले पर जाहर नेई होऐ ते ओह झूठा फतवा देई देऐ।



सूर: अल्-इन्शिकाक़

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां छब्बी आयतां ते इक रूकु ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांS लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

जिसलै गास फटी जाग' ॥ 2 ॥

إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ ①

ते अपने रब्ब (दी गल्ल सुनने) आस्तै कन्न
धरग² (लाग) ते इयै (उसदा) फर्ज' ऐ ॥ 3 ॥

وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ①

ते जिसलै धरत फलाई (बछाई) दिती जाग'
॥ 4 ॥

وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ①

ते जे किश ओहदे च ऐ ओह उसी कड्डी'
सुट्टग, ते खाल्ली होई जाग' ॥ 5 ॥

وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ①

1. यानी जिसलै लगातार गासै धमां नशान जाहूर होन लगी पौंगन।
2. यानी नशानें दी भरमार होने करी बड्डे-बड्डे लोक ते विद्वान बी अल्लाह दियें गल्लें पर बिचार करने आस्तै त्यार होई जांगन।
3. यानी बंदे दा असल फर्ज ते एह ऐ जे गासी नशान औंन जां नेई औंन, अपनी अकली शा कम्म लेइयै गै खुदा अगमें झुकी जा ते इस गल्ला दा इन्कार नेई करै जे डराने आह्ले जां खुश-खबरी देने आह्ले नशान जाहूर होन पर ओह ऐसा नेई करदा।
4. यानी उस युग च एह साबत होई जाग जे नेकां मंडल जो जाहुरा तौर गासै कन्न संबंघत लभदे न ओह धरती दा गै अंग न, जियां चंदरमा ते मंगल ग्रह बगैरा। विज्ञान नै एह रहस्य इस युग च खोहलेआ ऐ। पैहलें ऐसा नथा होआ। बल्के इस शा बी बद्ध गल्ल एह ऐ जे इनें मंडलें गी धरती दा हिस्सा समझियै किश लोक एह कोशश करा करदे न जे राकेट रहें उंदे पर पुज्जी जान जां उनेंगी बी बस्सने आस्तै धरती दा इक हिस्सा सिद्ध करी देन। जेकर ऐसा होई जा जां कुसै होर तरीके कन्न चंदरमा ते दूर मंडलें शा ऐसे लाह लैते जाई सकन जिंदे नै धरती गी लाह होऐ तां इसदा भाव इयै होग जे धरती फैली गई ऐ।
5. भाव एह ऐ जे उस युग च भूगर्भ विज्ञान बड़ा बसीह होई जाग ते धरती दे सूखम रहस्य जाहूर होई जांगन जियां जे अजकल्ल धरती दे बक्ख-बक्ख बर्गें दा ज्ञान होआ करदा ऐ ते ओहदे शा धरती ते गासै दी आयु दा अंदाजा लाया जा करदा ऐ। उनें वर्गें दे लिहाज कन्न (उपलक्ष्य च) ऐसे नेकां लाह हासल कीते जा करदे न जिंदे कन्न मानव समाज गी फायदा पुज्जा करदा ऐ।
6. 'खाल्ली होई जाग' दा एह अर्थ नेई जे कोई बी गुण ओहदे च नेई रीहग, बल्के अर्थ एह ऐ जे इनी मातरा च धरती दे रहस्य जाहूर होई जांगन ते इयां सेही होग, आखो जे कोई बी रहस्य ओहदे च बाकी नेई रेहदा ऐ।

ते अपने रब्ब (दी गल्ल सुनने) तै कन्न धरग'
ते इयै (उस दा) फर्ज' ऐ ॥ 6 ॥

وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝

हे मानव! तू अपने रब्ब कश पूरा जोर³ लाइयै
जाने आहला ऐं (ते) फी ओहदे कन्नै मिलने
आहला ऐं ॥ 7 ॥

يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَى
رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلَاقِيهِ ۝

इस आस्तै जेहदे सज्जे हत्थै च' ओहदी कर्म
सूची दिती जाग ॥ 8 ॥

فَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ۝

तां उस शा तौले गै उसदा असान स्हाब⁶ लेई
लैता जाग ॥ 9 ॥

فَسَوْفَ يَحْصِبُ حِسَابًا لَّيْسِيرًا ۝

ते ओह अपने परिवार कश खुशी-खुशी परतोई
औग ॥ 10 ॥

وَيُنْقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۝

ते जिसी उसदी पिट्टी पिच्छुआं ओहदी कर्म-
सूची दिती जाग ॥ 11 ॥

وَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ۝

ओह तौले गै (अपने मूहा अपनी) तबाही गी
सादा देग⁶ ॥ 12 ॥

فَسَوْفَ يَدْعُوا ثُبُورًا ۝

ते भड़कदी अग्गी च दाखल होई जाग⁷ ॥ 13 ॥

وَيَضِلُّ سَعِيرًا ۝

ओह अपने परिवार च बौहत खुश रौहदा
होंदा⁶ हा ॥ 14 ॥

إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۝

1. इत्थै धरती दा अर्थ धरती पर रौहने आहले ऐ ते भाव एह ऐ जे जिसलै एह गल्लां जाहर होंगन अल्लाह कुरआन-मजीद दे प्रचार आस्तै ऐसे समान पैदा करग, धरत बासी इस पर रूहानगी बुझन लगी पोंगन।
2. इस च एह संकेत ऐ जे उस आखरी युग दे औने शा पैहलें बी उस दा इयै फर्ज हा, पर अफसोस! जे उसनै आखरी युग यानी उस दिने दा इंतजार कीता जे धरती बी नशान जाहर करन लगी ते गास बी।
3. यानी खुदा दे दर्शन उमर-भर मैहनत (तपस्सेआ) करने पर मिलदे न ते ओह बी जेकर ओह चाह तां।
4. सज्जे हत्थ दा भाव नेकी ऐ। इस आस्तै सज्जे हत्थै च कर्म सूची देने दा अर्थ एह ऐ जे उस शख्स दियां नेकियां मतियां होंगन ते उसदे सज्जे हत्थै च कर्म-सूची औंदे गै उसी पता लगी जाग जे ओह सुर्गे च जाने आहला ऐ।
5. सज्जे हत्थै च कर्म-सूची मिलने पर उसी पता लगी जाग जे खुदा नै उसदा स्हाब लेई लैता ऐ ते उसगी जन्ती करार दिता ऐ ते एहदे शा ज्यादा असान स्हाब होर केह होई सकदा ऐ।
6. यानी उस बेलै ऐसे काफर पर एह सचाई जाहर होई जाग जे ओह बौहत बड़डा अजाब पाने आहला ऐ ते ओह समझग जे इस अजाब शा बचने दा इक्के साधन ऐ जे उसगी भलेआं मटाई दिता जा ते ओह खुदा अर्ग्य प्रार्थना करग जे मिंगी अजाब नैई देओ, मी मटाई देओ।
7. यानी उसदी दुआऽ नैई सुनी जाग ते उसी नरकें च सुट्टी दिता जाग।
8. यानी ओह संसार च बड़ा घमंडी हा ते अपने परिवार च ऐसा खुश रौहदा होंदा हा आखो जे ओह बड़ा कामयाब इन्सान ऐ।

(ते) ओह भरोसा रखदा हा जे सम्पन्न होने दे बा'द उसी कदें तंगी नेईं औग ॥ 15 ॥

وَالَّذِينَ
عَالَمِ السَّعَادَةِ

إِنَّهُ ظَنَّ أَنْ لَنْ يَحُورَ ۗ

पर ऐसा ते (जरूर) होना हा, की जे उसदा रब्ब उसी सच्चें गै दिक्खा करदा हा' ॥ 16 ॥

بَلَىٰ ۗ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ۙ

ते अस उंदे बिचार गलत होने बाँरे सबूत दे तौरा पर शफ़क़² (संजा दी लाली) गी पेश करने आं ॥ 17 ॥

فَلَا أَقْسِمُ بِالشَّقِيقِ ۗ

ते रातीं गी बी ते उसी बी जिसी ओह समेटी लैँदी ऐ ॥ 18 ॥

وَاللَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ۗ

ते चनै³ गी (बी) जिसलै ओह तेहरमीं दा होई जा शहादत दे तौरै पर पेश करने आं ॥ 19 ॥

وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ۗ

तुस जरूर दरजा-ब-दरजा इनें हालतीं गी पुजगे ओ ॥ 20 ॥

لَنْ رَكَبَيْنَ طَبَقًا عَن طَبَقٍ ۗ

ते इनें मुन्करें गी केह होआ ऐ जे ईमान नेईं आहनदे ॥ 21 ॥

فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۗ

जे जिसलै उंदे सामनै कुरआन पढ़ेआ जा तां सजदा नेईं करदे ॥ 22 ॥

وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ

الَّذِينَ

لَا يَسْجُدُونَ ۗ

बल्के मुन्कर अपने कुफर च इन्ने बधी गेदे न जे ओह (कुरआन दी सचाई गी) झुठलाना लगी पे न ॥ 23 ॥

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يَكْذِبُونَ ۗ

ते अल्लाह उसी जिसी उनें (अपने दिलें च) छपाले दा ऐ, खूब जानदा ऐ ॥ 24 ॥

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ۗ

1. अल्लाह आखदा ऐ जे उसदा ख्याल गलत निकलेआ की जे खुदा उसदे कर्में गी दिक्खा करदा हा ते उसदे कर्में मताबक उसी बदला देने आस्ते घात लाइयै बैठे दा हा।
2. यानी जिस चाल्ली शफ़क़ (यानी संजा दी लाली) दा समां घट्ट होंदा ऐ उससै चाल्ली जिसलै इस्लामी सूरज अस्त होग तां ओह समां बी घट्ट होग, ते दबारा सूरज चढ़ने दा समां तौले आई जाग।
3. जिस चाल्ली तेहरमीं, चौहदमीं, पंद्रमीं ते सोहलमीं दा चन्न पूरा होंदा ऐ उससै चाल्ली तेहरमीं, चौहदमीं, पंद्रमीं ते सोहलमीं सदी च पूरी चाल्ली इस्लाम दी त्रक्की पूरी होंदी जाग।

इस आस्तै (उंदे गुप्त बिचारे ते जाहरा कर्मे कारण) उनेगी दर्दनाक अजाब दी खबर देई दे ॥ 25 ॥

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝

पर ओह (लोक) जो ईमान ल्याए ते उनें परिस्थिति मताबक कर्म कीते, उनेंगी इक नेई मुक्कने आहला (नेक) सिला थहोने आहला ऐ ॥ 26 ॥ (रुकू 1/9)

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝

○○○

سُورَةُ الْبُرُوجِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ السَّمَلَةِ ثَلَاثٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَرُكُوعٌ

सूर: अल्-बुरूज

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां त्रेई आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अ'ऊं बुरजें आहले गासै' गी गुआही दे तौरें
पर पेश करना ॥ 2 ॥

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ ①

ते उस ध्याड़े गी बी जिसदा बा'यदा' दिता
गेदा ऐ ॥ 3 ॥

وَالْيَوْمِ الْمَوْعُودِ ①

ते (जिस दा बा'यदा दिता गेदा ऐ उस)
गुआह' गी ते उस शख्स गी जेहदे बारै पैहली
धार्मक-कताबें च भविक्खवाणी मजूद ऐ ॥ 4 ॥

وَسَآهِدٍ وَمَشْهُودٍ ①

खाइयें' आहले हलाक होई जांगन ॥ 5 ॥

قَتِيلَ أَصْحَابِ الْأَحْدُودِ ①

1. गासै दे उनें काल्पनक थाहरें गी 'बुरज' जां 'राशि-चक्र' आखदे ने जिंदे बारै एह समझेआ जंदा ऐ जे सूरज उंदे चा लंघदा ऐ। इस लेई इत्थें एह गलाया गेदा ऐ जे बुजें आहले गासै गी गुआही दे रूपै च पेश करना यानी रुहानी ते अध्यात्मक गासै दे जो सूरज न उंदी अध्यात्मक त्रक्की गी गुआही दे रूपै च पेश करना यानी जियां-जियां ओह अपनी अध्यात्मक उड़ाण च विकास करडन, कुरआन मजौद दी सचाई दी गुआही दिंदे जांगन।
2. यानी ओह दिन जिस दिन इन्सान अपने रब्ब दी किरपा कन्ने अपने रब्ब गी हासल करी लैग।
3. यानी उस रोज इक ऐसा महापुरश जाहर होग जो अल्लाह शा वही ते इल्हाह हासल करियै हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दी सचाई दी गुआही देग ते दूए पासै हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दे कलाम च उस दी सचाई पर गुआही होग। इस आस्तै ओह शाहिद यानी गुआही देने आहला बी होग ते मशहूद बी होग, यानी जेहदे आस्तै गुआही दिती गेदी ऐ।
4. यानी सच्चे धर्म दे बेरी म्हेशां गै मोमिमें दा नाश करने आस्तै अगग भड़कांदे रौहंदे न पर उंदा नाश करने च नकाम रौहंदे न ते आपूं उंदा नाश होई जंदा ऐ।

यानी (खाइयें च) अगग (भड़काने आहले)
जेहदे च (खूब) बालन' (लाया गेदा) हा
॥ 6 ॥

النَّارِ ذَاتِ الْوَقُودِ ۝

जिसलै ओह उस अगगी पर (धरना² देख्यै)
बैठे दे हे ॥ 7 ॥

إِذْهُمْ عَلَيْهَا قُوعُودٌ ۝

ते ओह मोमिनें कनै जे किश (मामला) करा
करदे हे उंदा दिल उसदी असलीयत गी
समझदा³ हा ॥ 8 ॥

وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ
شُهُودٌ ۝

ते ओह उंदे कनै सिर्फ इस आसतै दुश्मनी
करदे हे जे ओह गालिब (ते) सब स्तुतियें दे
मालक अल्लाह पर ईमान की ल्याए⁴ ॥ 9 ॥

وَمَا نَقْمُوا مِنْهُمْ إِلَّا أَنْ يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ
الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ۝

ओह अल्लाह जिसदे कब्जे च गासैं ते धरती
दी बादशाहत ऐ ते (एह नेई सोचदे जे)
अल्लाह हर चीजा (दे हालात) शा वाकफ⁵
ऐ ॥ 10 ॥

الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

ओह लोक जिनें मोमिन मड़दें ते मोमिन
जनानियें गी अज्ञाब च ग्रसित कीता, फी
(अपने कुकर्में शा) तोबा (प्राहचिंत) बी नेई
कीती उनेंगी सच्चें गै जहन्नम दा अज्ञाब मिलग,
ते (इस लोक च बी) उनेंगी (दिल) जलाई
देने आह्ला अज्ञाब मिलग ॥ 11 ॥

إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابٌ جَهَنَّمَ
وَلَهُمْ عَذَابٌ الْحَرِيقِ ۝

(ते) जेहके लोक ईमान ल्याए ते कनै गै उस
(ईमान) दे मताबक उनें कर्म बी कीते उनेंगी
बाग मिलडन, जिंदे हेठ नैहरां⁶ बागा करदियां
होंग (ते) इयै बड़्डी कामयाबी ऐ ॥ 12 ॥

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ
جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
ذَلِكَ الْقَوْصُ الْكَبِيرُ ۝

1. यानी एह अगग जो सच्चे धर्में जां धर्म सुधारकें दे खलाफ भड़काई जंदी ऐ, सधारण अगग नेई होंदी बल्के बार-बार बैरी दे बालन कनै उसी भड़काया जंदा ऐ।
2. यानी सचाई दे दुश्मन उस अगगी कश बैठे रौहदे न तां जे जिसलै ओह किश मदधम पवै तां उस च बालन लाई देन।
3. यानी जेकर मोमिनें ते सुधारकें दा बरोध करने आहले उनेंगी दुख दिंदे न तां उंदे दिल गुआही दिंदे न जे ओह जुलम करत करदे न ते केई बार उंदे मूहा निकली जंदा ऐ जे एह बौहत बुरी गल्ल ऐ।
4. एह आयत पैहली आयत दा समर्थन करदी ऐ यानी उनें बरोधियें दे बरोध दी कोई बुनेआद नेई होंदी बल्के सिर्फ ईरखा गै बरोध दा कारण होंदी ऐ।
5. अर्थात् उंदा बरोध जिने-जिने ईरखा-द्वेष कारण होग उससै मताबक उनेंगी दंड मिलग।
6. पवित्र कुरआन च बार-बार एह आया ऐ जे सुर्गे दे हेठ-नैहरां बगदियां न। असल च जो नैहरां बागें च बगदियां न ओह उंदे हेठ नेई बगदियां। इस बरौ याद रक्खेआ लोड़दा जे संसारक बागें च जो नैहरां बगदियां न ओह सरकार ते कुसै बड़्हे जिमिंदारे दे अधीन होंदियां न पर अल्लाह आखदा ऐ जे सुर्गे च बरोध आहलियां नैहरां उंदे च बास करने आहलें दे अधीन होंगन ते ओह उत्तू दे बूहटें ते पानियें दे बी पूरी चाल्ली मालक होंगन।

सच्चें गै तेरे रब्ब दी पकड़ बौहत् सख्त¹ होंदी
ऐ ॥ 13 ॥

إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ۝

(की जे) ऊऐ दुनियां दे अजाब गी शुरू
करदा ऐ ते (जेकर कोई कौम बाज नेई आवे
तां) बार-बार अजाब आहनदा ऐ ॥ 14 ॥

إِنَّهُ مَوْيِدٌ وَيَعِيدٌ ۝

ते (उसदे कनै गै) ओह अत्यंत बख्शने
आह्ला (ते) बे-व्हा प्यार² करने
आह्ला बी ऐ ॥ 15 ॥

وَهُوَ الْعَفُورُ أَلْوَدُودٌ ۝

(ओह) अर्श³ दा मालक (ते) बड़ी शान
आह्ला ऐ ॥ 16 ॥

ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ۝

जिस गल्लै दा इरादा करी लै, उसी करियै
रौहने आह्ला ऐ ॥ 17 ॥

فَعَالٌ لِّمَآئِرٍ يُدۜى ۝

क्या तुसेंगी (सचाई दे बैरियें दे) लश्करें दी
खबर नेई थ्होई ॥ 18 ॥

هَلْ أَتَتْكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ۝

यानी फिरऔन ते समूद दे लश्करें दी ॥ 19 ॥

فِرْعَوْنَ وَتَمُودَ ۝

असलीयत ते एह् ऐ जे मुन्कर लोक (बुरी
चाल्ली) इन्कार (दी बमारी) च फसे दे न
॥ 20 ॥

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ۝

हालांके अल्लाह (उनेंगी) उंदे पिच्छुआं (आइयै)
घेरने आह्ला ऐ ॥ 21 ॥

وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ ۝

(इस दे अलावा) एह् बी इक सचाई ऐ जे
ओह (कलाम जो इनें गल्लें दी सूचना देआ
करदा ऐ) इक गौरवशाली कलाम ऐ ते हर
ज'गा ते हर युग च पढ़ेआ⁴ जाने आह्ला
कलाम ऐ ॥ 22 ॥

بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ ۝

(ते होर कमाल एह् ऐ जे) ओह लौहे-महफूज
च ऐ ॥ 23 ॥ (रुकू 1/10)

عَمَّ

فِي لَوَجٍ مَّحْفُوظٍ ۝

1. इस आस्तै ओहदे शा बचदे रौहने दी कोशश करनी लोड़दी।
2. यानी अल्लाह दे अजाब देने शा एह् नेई समझना चाही दा जे अल्लाह बे-रैहम ऐ की जे सारा कुरआन मजौद इनें गल्लें कनै भरे दा ऐ जे खुदा इन्कारी लोके पर बी कदें इस दुनियां च ते कदें अगलै ज्हाँन रैहम करदा ऐ।
3. अर्श दा मतलब अल्लाह दी बहूमत ऐ ते बड़ी शान आह्ले अर्श दा मालक होने दा अर्थ एह् ऐ जे अल्लाह ऐसे निजमें राहें संसार च बहूमत करदा ऐ जिंदे कनै ओहदी बड्डी शान जाहर होंदी ऐ ते अत्याचार सिद्ध नेई होंदा।
4. एह् अर्थ असें कुरआन शब्द दा कीते दा ऐ, की जे इसदा अर्थ ऐ ओह कताब जिसी म्हेशां पढ़ेआ जा।

سُورَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ ثَمَانِي عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعٌ

सूर: अल्-तारिक

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां ठारां आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अ'ऊं गासै गी ते लोई आहले तारे (सवरे दे
तारे) गी गुआही दे तौरै पर पेश करना ॥ 2 ॥

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ②

ते तुगी कुस चीजा नै दस्सेआ ऐ जे लोई
आहला तारा केह ऐ? ॥ 3 ॥

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ③

ओह तारा (ओह ऐ) जो बौहत चमकदा ऐ
॥ 4 ॥

النَّجْمُ الثَّاقِبُ ④

(अस दा'वा करने आं जे इस किसमै दी)
कोई जान नैई, जेहदे पर इक नगरान (खुदा
पासेआ) नियुक्त नैई होऐ ॥ 5 ॥

إِنَّ كُلَّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ⑤

इस आसतै इन्सान गी दिक्खना चाही दा ऐ जे
ओह किस चीजै कनै पैदा कीता गेदा ऐ ॥ 6 ॥

فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ⑥

ओह इक उच्छलने आहले पानी शा पैदा
कीता गेदा ऐ ॥ 7 ॥

خُلِقَ مِنْ مَّاءٍ دَافِقٍ ⑦

ओह (पानी जां इन्सान) पिट्ठी ते सीने (दी
हड्डियें) दे बिच्चा' निकलदा ऐ ॥ 8 ॥

يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ
وَالثَّرَائِبِ ⑧

1. यानी संतान पैदा करने आहले यंत्रें चा जो पिट्ठी ते सीने दी हड्डियें दे बश्कार होंदे न। एह पवित्र कुरआन दा कमाल ऐ जे नगी शा नगी गल्लै गी संकेत च ब्यान करी दिंदा ऐ।

ओह (यानी खुदा) उसदे दबारा परताने च बी सच्चें गै समर्थ ऐ ॥ 9 ॥

إِنَّهُ عَلَىٰ رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ۝

उस रोज जिसलै गुप्त भेत जाहर कीते जांगन ॥ 10 ॥

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ۝

जिस दे नतीजे च नां ते (अपने उप्परा मसीबत टलाने दी) कोई ताकत उस (इन्सान) कश रौहग ते नां उसदा कोई मददगार होग ॥ 11 ॥

فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ۝

अ'ऊं गुआही दे तौरा पर उस बदलै गी पेश करना जो बरखा कनै भरा-भरोचा बार-बार ब'रदा ऐ ॥ 12 ॥

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۝

ते उस धरती गी बी शहादत दे तौरा पर पेश करना जो बरखा दे उतरने दे बा'द (यानी ब'से दे बा'द) फट्टियै हरियाली कढदी ऐ ॥ 13 ॥

وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ۝

एह शहादत इस गल्ला पर ऐ जे ओह (कुर'आन) सच्चें गै अटल¹ ते आखरी गल्ल ऐ ॥ 14 ॥

إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَضْلٌ ۝

ते ओह कोई (बे-फायदा² ते) कमजोर³ कलाम नेई ॥ 15 ॥

وَمَا هُوَ بِالْمُهْرَلِ ۝

1. यानी अल्लाह नै जिसलै इस संसार दी त्रिपी आस्तै बरखा उतारी ऐ ते इक गै बार नेई बरहाई बल्के थोड़े-थोड़े चिरे बा'द ओह बरखा बरहांदा रौहदा ऐ तां एह किया होई सकदा हा जे जरूरत पोने पर अध्यात्मक बरखा नेई होऐ जो कुर'आन जां उसदा समर्थन करने आहली वहाँ ते ईशवाणियां न।
2. उप्पर दिती दियें दलीलें शा एह बी सिद्ध होंदा ऐ जे कुर'आन इक फैसला करने आहली कताब ऐ की जे ओह हर इक गल्ला गी प्रमाणें कनै ब्यान करदा ऐ। जेकर उसदे प्रमाण सच्च साबत नेई होंगन तां ओह आपू झूठा होई जाग ते जेकर उसदे प्रमाण सच्च साबत होंगन तां ओह आपू सच्चा साबत होई जाग। उसदे खलाफ दूइयां कताबां बगैर प्रमाणें दे गल्ल करदियां न इस आस्तै उंदे सच्चे जां झूठे होने दा फर्क करना मुश्कल होई जंदा ऐ।
3. इस थाहरा पर बदलें ते धरती गी पवित्र कुर'आन दी सचाई आस्तै पेश कीता गेदा ऐ यानी जिस चाल्ली बरखा होंदी ऐ ते धरती हरियाली कढदी ऐ। इस्सै चाल्ली पवित्र कुर'आन मजीद दे उतरने पर बौहत पवित्र ते नेक संतान पैदा होग ते ऐसी उत्तम संतान पैदा होग जो साबत करी देग जे पवित्र कुर'आन आखरी कताब ऐ ते इसदे बा'द कुसै दूई कताबें दी मेद रखनी ब्यर्थ ऐ। नां ते इस कुर'आन च कोई कमजोरी ऐ ते नां गै कोई निरर्थक गल्ल ऐ। जेहकी बी गल्ल एहदे च ब्यान कीती गेदी ऐ बड़ा फायदा देने आहली ते बड़ी मजबूत ऐ।

ओह लोक सच्चें गै (इस कुरआन दे खलाफ)
खूब दाऽ-पेच लड़ाडन ॥ 16 ॥

إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ۝١٦

ते अ'ऊं (खुदा उंदे खलाफ) खूब उपाऽ
करड (ते सचाई बाँदे होई जाग) ॥ 17 ॥

وَأَكِيدُ كَيْدًا ۝١٧

इस आस्तै (हे रसूल!) मुन्करें गी मोहलत दे
(हां) उनेंगी किश दिनें दी होर मोहलत' दे
(तां जे ओह जेहका जोर लाना चाहन, लाई
लैन) ॥ 18 ॥ (रुकू 1/11)

فَمَهْلِ الْكُفْرَيْنِ أَمْهَلُهُمْ مُرُوءِيدًا ۝١٨

1. इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे इन्कारी लोक कुरआन मजीद दे खलाफ हर चाल्ली दे उपाऽ करडन, जेकर कुरआन मजीद झूठा होंदा तां कदें बी सफल नेई होंदा, पर की जे ओह अल्लाह पासेआ ऐ, जिसलै ओह लोक खुदा दे कलाम गी मटाने दी कोशश करडन तां अल्लाह बी उनेंगी मटाने दे उपाऽ करग ते इसदा नतीजा इयै निकलग जे अल्लाह विजयी होग ते ओह परास्त होई जांगन, हां! जियां जे अल्लाह दा निजम ऐ अजाब किश चिरै बा'द आँदा होंदा ऐ ते इस्सै पासै इस आयत च संकेत कीते दा ऐ जेहदे च गलाए दा ऐ जे इन्कारी लोकें गी ढिल्ल दे यानी ढिल्ल देने दे फल-सरूप ओह अपना सारा जोर इस्लाम गी मटाने तै लाई देंगन ते उनेंगी एह आखने दा समां नेई मिलग जे असेंगी मुसलमानें गी तबाह करने दा समां नेई मिलेआ। इस आस्तै जिसलै उनेंगी समां मिली जाग तां फी उंदा मूह बंद होई जाग।

سُورَةُ الْأَعْلَى مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ عِشْرُونَ آيَةً وَرُكُوعٌ

सूर: अल्-आला

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां बीह् आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांS लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۞

(हे रसूल!) तूं उच्चै शान आहले (ते
सर्वश्रेष्ठ) अपने रब्ब दे नांS दे बे- ऐब होने
दा बर्णन कर ॥ 2 ॥

سَبِّحْ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى ۞

(ओह) जिसनै (इन्सान गी) पैदा कीता ते
(उसी) बे-ऐब' बनाया ॥ 3 ॥

الَّذِي خَلَقَ فَسَوَّى ۞

ते जिसनै (उसदी शक्तियें दा) अंदाजा लाया
ते (उंदे मताबक) उसी हदायत दिती ॥ 4 ॥

وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَى ۞

ते जिसनै धरती चा चारा कड्ढेआ ॥ 5 ॥

وَالَّذِي أَحْرَجَ الْمَرْعَى ۞

फी उसी स्याह (काला) कूड़ा-करकट बनाई
दिता ॥ 6 ॥

فَجَعَلَهُ غَتَاءً أَحْوَى ۞

(हे मुसलमान!) अस तुगी (इस चाल्ली)
पढ़ागे जे उसदे नतीजे च तूं भुलगा नेई ॥ 7 ॥

سَقَرْنَاكَ فَلَا تَنْسَى ۞

1. इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे मानव प्रकृति च अध्यात्मक त्रक्की दा असीम मादा भरेआ गेदा ऐ ते उससै चाल्ली इलमी त्रक्की दा बी असीम मादा भरेआ गेदा ऐ। फरमांदा ऐ जे एह इस गल्ला दा सबूत ऐ जे इन्सान गी पैदा करने आह्ला बे-ऐब ऐ, जेकर ओह आपूं बे-ऐब नेई होंदा तां सारी खूबियें दा भंडार नेई होंदा ते ऐसा इन्सान कियों पैदा करी सकदा हा।
2. यानी कुरआन मजीद मुसलमानें दे दिलें च इस चाल्ली रचाई दिता जाग जे उंदे चा कोई नां कोई वर्ग क्यामत तक इसदे प्रेम च डुब्बे दा रौहग। ते बार-बार ऐसे कामिल इन्सान मुसलमानें च पैदा होंदे रौहगन जो कुरआन मजीद दा झंडा उच्चा रखडन।

सिवाए उसदे जिसे अल्लाह भुलाना चाह¹, ओह यकीनन जाहर गी बी जानदा ऐ, ते उसी बी जो छपे दा ऐ ॥ 8 ॥

إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۖ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ
وَمَا يَخْفَى ۝

ते (हे मुसलमान!) अस तेरे आस्तै (कामयाबिये ते) असानिये दी प्राप्ति सैहल करी देगे² ॥ 9 ॥

وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرَى ۝

इस आस्तै तुस बी नसीहत³ करो, की जे नसीहत देना (दुनियां च म्हेशां) फायदेमंद साबत होंदा रेहा ऐ ॥ 10 ॥

فَذَكِّرْ إِنْ نَفَعَتِ الذِّكْرَى ۝

जो (खुदा शा) डरदा ऐ ओह यकीनन नसीहत हासल करग ॥ 11 ॥

سَيَذَكِّرْ مَنْ يَخْشَى ۝

ते (उसदे बरखलाफ/उलट) जो अत गै नभागी होग ओह एहदे शा मूंह फेरदा रौहग⁴ ॥ 12 ॥

وَيَتَجَبَّبَهَا الْأَشْقَى ۝

(ऊरे) जो बौहत बड्डी अगगी च दाखल होने आह्ला ऐ⁵ ॥ 13 ॥

الَّذِي يَصَلِّي النَّارَ الْأَكْبَرَى ۝

फी (ओहदे च दाखल होने दे बा'द) नां ते ओह ओहदे च मरग ते नां जीदा⁶ रौहग ॥ 14 ॥

ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَى ۝

1. इस शा पता लगदा ऐ जे सचाई शा दूर अल्लाह नेई करदा बल्के इन्सान आपू गै सचाई शा दूर होंदा ऐ। इस्सै आस्तै आखदा ऐ जे सादा कम्म ते एह ऐ जे अस कुरआन मजीद मुसलमाने गी सखागे पर जेकर मुसलमाने चा किश न-भागी उसी भुलाना चाहन तां अल्लाह उंदे अंदरै-बाहरै दी गल्ल जानदा ऐ, ओह उंदे इरादे च रोक नेई बनग ते आखग जे जिसलै एह आपू तबाह होना चांहदे न तां होन देओ।
2. इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे पवित्तर कुरआन जो मानव प्रकृति दे मताबक ऐ ओहदे पर चलना किश बी मुश्कल नेई ते जेकर कोई इन्सान एहदे पर चलना चाह तां खुदा बी उसदी मदद करदा ऐ ते उस पर चलना होर बी असान करी दिंदा ऐ।
3. यानी जिसलै खुदा इन्सान गी हदायत दिंदा ऐ तां ओहदे आस्तै बी जरूरी ऐ, जे ओह बी अल्लाह दा अनुसरण करदे होई दूर लोके गी बी नसीहत करदा र'वै ते एह कर्दे बी नेई समझे जे गुमराह इन्सान हदायत नेई पाई सकदे। बल्के मेद रक्खै जे जिस इन्सान दे दिलै च जरा बी खुदा दा खौफ होग, ओह जरूर नसीहत हासल करग।
4. यानी सिर्फ ऊरे शख्स पवित्तर कुरआन शा मूंह फेरग, जिसदे कुकमें ओहदे दिलै पर मोहर लाई दिती दी होग।
5. यानी जिसदे कुकमें दी ब'जा करी अल्लाह नै फैसला करी दिते दा होग जे उसगी अगगी च दाखल कीता जाग।
6. यानी ओह अजाब बौहत कठोर होग, उस अजाब गी ओहदी शिद्दत (तेजी) कारण मौत बी आखी सकने आं ते जीवन बी, की जे तेज जलाने आहली अगगी कारण उसदी खल्लडो सख होई जाग ते उसदे मसूस करने दी शक्ति घटी जाग। इस आस्तै नरक च इन्सान दी हालत ऐसी होई जाग जे नां ते ओह मुरदा खुआग ते नां जीदा जीव।

जो पाक (पवित्र) बनग, ओह यकीनन कामयाब होग ॥ 15 ॥

قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكَّى ۝

बा शर्त एह् ऐ जे (पवित्र बनने दे कन्नै-कन्नै) उसनै अपने रब्ब दा नांऽ बी लैता होऐ ते नमाज़ बी पढ़दा रेहा होऐ ॥ 16 ॥

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّى ۝

पर (हे बरोधियो!) तुस (लोक) ते दुनियाबी जिंदगी गी (आखरत दी जिंदगी शा) पैहल दिंदे ओ ॥ 17 ॥

بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝

हालांके आखरत बौहत बेहतर ते चिर-स्थाई ऐ ॥ 18 ॥

وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَى ۝

यकीनन इयै (गल्ल) पैहली कताबें च बी (दर्ज) ऐ ॥ 19 ॥

إِنَّ هَذَانِ الصُّحُفِ الْأُولَى ۝

(यानी) इब्राहीम ते मूसा दियें कताबें¹ च ॥ 20 ॥ (रुकू 1/12)

۝

صُّحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى ۝

1. यानी एह शिक्षा ऐसी सधारण ऐ जे सारे रसूलें दी शिक्षा दा जो-जो हिस्सा बी सुरक्षत ऐ ओहदे शा कुरआन दा समर्थन होंदा ऐ। पैहले नबियें दी शिक्षा गी सुरक्षत रक्खने दा बौहत घट्ट प्रयास कीता गेआ ऐ। सिर्फ यहूदियें अपनी कताब 'तालमूद' च किश नबियें ते सुधारकें दी शिक्षा दा संग्रह करने दी कोशिश कीती दी ऐ। उसी पढ़ने कन्नै पता लगदा ऐ जे कुरआन मजीद दियां नेकां सचाइयां पैहले नबियें द्वारा बी ब्यान कीतियां जदियां रेहियां न जो इस गल्ला दा प्रमाण न जे कुरआन मजीद दे चेचे अंश पैहली कताबें च बी मजूद न।



सूर : अल्-ग़ाशिय:

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां सताई आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'कं अल्लाह दा नांS लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

क्या तुगी (दुनियां पर) छाई जाने आहली
(मसीबत दी बी) खबर पुज्जी ऐ? ॥ 2 ॥

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ ①

उस दिन' (जिसलै ओह मसीबत छाई जाग)
किश चेहेरे उतरे दे होंग ॥ 3 ॥

وَجُودَهُ يُورِثُ الْخَاشِعَةَ ①

(ओह) मैहनत करा करदे होंग (ते) थक्कयै
चूर होआ करदे होंग ॥ 4 ॥

عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ①

(पर उस मैहनत दा कोई फायदा नेई होग ते)
ओह जमात (बरहाल) इक भड़कदी अग्गी
च दाखल होग ॥ 5 ॥

تَصَلَّى نَارًا حَامِيَةً ①

ते उस (सारी जमात) गी उब्बलदे चश्मे चा
(पानी) पलैया जाग ॥ 6 ॥

تَسْفَى مِنْ عَيْنٍ أُنِيَّةٍ ①

उसगी सुक्के शिब्रिक² घाS दे सिवा दूआ
कोई भोजन नेई मिलग ॥ 7 ॥

لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِنْ صَرِيحٍ ①

1. इत्थें उस अजाब दी सूचना दिती गेदी ऐ जो आखरी युग च मानव जाति पर औने आहला ऐ ते दस्सेआ गेदा ऐ जे जिसलै ओह अजाब औग तां पापियें दे चेहेरे उतरे दे होंग ते ओह उस बिपता शा छुटकारा पाने आस्तै पूरा जोर लांगन।
2. अरबी भाशा च 'जरी' ते 'शिब्रिक' दो शब्द न जिंदे कनै अधीस्ट ऐसा घाS ऐ जो बगैर जहें दे होदा ऐ। सुक्के घाS गी 'जरी' ते सैल्ले घाS गी 'शिब्रिक' यानी अमर बेल आखदे न ते उस दा खास गुण एह ऐ जे उसी खाने कनै कोई लाह नेई होदा यानी नां ते उसी खाइयै मनुक्खे दी सेहतू गी कोई ताकत श्होंदी ऐ ते नां ओह मुट्टा होदा ऐ। इस आस्तै पवित्र कुरआन ने बी इसदा इयै अर्थ लैते दा ऐ जे नरक बासियें गी नेह भोजन नेई मिलउन जो ताकत देने आहले होन बल्के ओह श्होंग जो नां ते ताकत देंग ते नां उंदे कनै भुक्ख मितग।

जो नां ते उनेंगी मुट्टा करग ते नां भुक्खै (दी तकलीफ) शा बचाग ॥ 8 ॥

لَا يَسْمِنُ وَلَا يُغْنِي مِنْ جُوعٍ ۝٨

उस रोज किश दूए चेहरे खुश होंगन ॥ 9 ॥

وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۝٩

अपनी (पिछली) कोशशें पर राजी होंगन ॥ 10 ॥

لَسَعِيهَا رَاضِيَةٌ ۝١٠

उच्चे सुगैं च र'वा करदे होंगन ॥ 11 ॥

فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝١١

ओह उस च कोई ब्यर्थ गल्ल नेई सुनडन ॥ 12 ॥

لَا تَسْمَعُ فِيهَا لِأَغْيَةٍ ۝١٢

उस च इक बगदा चश्मा होग ॥ 13 ॥

كَلْبًا

فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝١٣

ते उस (जन्नत) च उच्चे तख्त (बी) रक्खे दे होंगन ॥ 14 ॥

فِيهَا سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ۝١٤

ते पानी पीने दे कटोरे रक्खे दे होंगन ॥ 15 ॥

وَأَنْوَابٌ مُّوْضِعَةٌ ۝١٥

ते स्हार लैने आहले छोटे साइज दे तकिये रीहेंगं च (स्हार लैने आस्तै) रक्खे दे होंगन ॥ 16 ॥

وَتَمَارِقٌ مَّصْفُوفَةٌ ۝١٦

ते कलीन बिछे दे होंगन ॥ 17 ॥

وَزَرَائِبٍ مَّبْنُوثَةٌ ۝١٧

क्या ओह बदलें' गी नेई दिखदे जे ओह किस चाल्ली पैदा कीते गेदे न ? ॥ 18 ॥

أَفَلَا يَنْظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ

ते गासैं' गी (नेई दिखदे जे) किस चाल्ली उच्चा कीता गेदा ऐ ॥ 19 ॥

كَيْفَ خَلَقَتْ ۝١٨

وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۝١٩

ते फ्हाड़ें' गी (नेई दिखदे जे उनेंगी) किस चाल्ली गड्डेआ गेदा ऐ ॥ 20 ॥

وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ۝٢٠

1. मूल शब्द 'इबिल' दा सधारण अर्थ ऊंट ऐ पर एहदा अर्थ बदल बी शब्द कोश च लिखे दा ऐ (मुफ़्दात)। अल्लाह इस आयत च आखदा ऐ जे बदल इक थाहरा उठदे न ते सारी दुनियां पर छाई जंदे न। क्या कुरआन दे बरोधी एह बी नेई समझदे जे बदलें' गी पैदा करने आहला खुदा जिसने उंदे राहें सारे संसार च पानी फलाई दिता ऐ, क्या कुरआन मजौद दे अध्यात्मक पानी गी सारे संसार च नेई फलाई सकदा ?
2. यानी जिस चाल्ली एह गास उच्चा कीता गेदा ऐ उससै चाल्ली रुहानी गास यानी हजरत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. गी उच्चा कीता जाग।
3. मूल शब्द 'जबल' दा अर्थ फ्हाड़ ऐ ते इसदा अर्थ बड्डे लोक बी होंदा ऐ। की जे पैहलें हजरत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. दे सहाबा (साथियें) दा जिकर ऐ। इस आस्तै इर्थें जबल दे अर्थ च मुसलमानें दे बड्डे लोक गै लैते जांगन ते इस आयत दा अर्थ एह होग जे क्या ओह सहाबा गी नेई दिखदे जे ओह किस चाल्ली स्थापत कीते गेदे न यानी बैरियें दे खतरनाक हमलें च बी अपने थाहरा पर डटे दे न ते अपने थाहरें पर इद्धर-उद्धर नेई होदे।

ते धरती गी (नेई दिखदे जे) किस चाल्ली पद्धरी' कीती दी ऐ ॥ 21 ॥

وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ﴿٢١﴾

इस आस्तै नसीहत कर की जे तूं ते सिर्फ नसीहत करने आहला ऐं ॥ 22 ॥

فَذَكِّرْ لَّهُ إِنَّمَا أَنْتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢٢﴾

तूं उनें लोकें पर दरोगा दे तौरै पर नियुक्त नेई ऐं ॥ 23 ॥

لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيِّرٍ ﴿٢٣﴾

पर जिसनै पिट्ट फेरी ते इन्कार कीता ॥ 24 ॥

إِلَّا مَنْ تَوَلَّى وَكَفَرَ ﴿٢٤﴾

उस दे नतीजे च अल्लाह उसी सारें शा बड्डा अज़ाब देग ॥ 25 ॥

فَيَعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ﴿٢٥﴾

यकीनन (सच्चें गै) उनें साढ़े गै कश परतोई औना ऐ ॥ 26 ॥

إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ﴿٢٦﴾

फ़ी उंदे शा सहाब लैना बी यकीनन साढ़ा गै कम्म ऐ ॥ 27 ॥ (स्कू 1/13)

﴿٢٧﴾

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ﴿٢٧﴾

1. इस कन्नै ओह धरती खंड अभीष्ट ऐ जेहदे पर सहाबा अपने छोड़े दुड़ांदे हे। इस च दस्सेआ गेदा ऐ जे इन्कारी लोक धरती गी नेई दिखदे जे ओह मुसलमानें आस्तै किस चाल्ली पद्धरी बनाई गेदी ऐ जतांह चांहदे न हमला करी दिंदे न ते कोई उंदे सामने नेई खड़ोंदा।



सूर: अल्-फ़ज्र

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां कत्तरी आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांस लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

अ'ऊं गुआही दे तौरै पर इक औने आहली
सवेर¹ गी पेश करना ॥ 2 ॥

وَالْفَجْرِ ۝

ते दस्सें रातीं² गी बी ॥ 3 ॥

وَلَيْالٍ عَشْرِ ۝

ते इक जुफ्त (जोड़ा) गी ते इक वत्र (ताक)
गी ॥ 4 ॥

وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۝

ते (उप्पर दस्सी दी दस्सें रातीं दे बा'द औने
आहली) रातीं गी जिसलै ओह चली पे³ ॥ 5 ॥

وَاللَّيْلِ إِذَا يَسِرَ ۝

क्या इस च अकलमदें आस्तै कसम (यानी
शहादत) है जां नेई ? ॥ 6 ॥

هَلْ فِي ذَلِكَ قَسَمٌ لِذِي حَجْرِ ۝

क्या तुगी पता ऐ जे तेरे रब्ब नै आद जाति
दे लोकें कनै केह (ब्यहार) कीता ॥ 7 ॥

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۝

1. यानी मदीना पासै हिजरत कीती।
2. इस सूर: दे उतरने दे बा'द दस्स साल हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. मक्का शैहरै च रेह जो तकलीफें भरोचे साल हे ते रातीं आंगर हे। एहदे बा'द हिजरत होई जिस च जुफ्त (युग्म) दा नजारा बी हा ते वत्र दा बी यानी हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. ते हजरत अबूबकर हिजरत च शामिल हे ते अल्लाह जो इक ऐ गासै थमां उंदे कनै शामिल हा (सूर: तौब: आयत 40)
3. इस च दस्सेआ गेदा ऐ जे हिजरत दे बा'द जिसलै मदीना च तकलीफें भरोची रात आँग तां ओह तौले गै खतम होई जाग।

यानी (आद) इरम (कौम) शा जो बड्डे-
बड्डे भवनें आहले हे ॥ 8 ॥

إِرْمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۝

ओह लोक जिंदे आंगर कोई कौम उनें देशें च
पैदा नेई कीती गेदी ही ॥ 9 ॥

الَّتِي لَمْ يَخْلُقْ مِثْلَهَا فِي الْبِلَادِ ۝

ते (क्या) समूद (दे बारे बी तुगी किश पता
ऐ) जो घाटियें च चटानां खरोतियै (अपने
मकान) बनांदे हे ॥ 10 ॥

وَتَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۝

ते फ़िरऔन (दे बारे बी तुगी किश पता
ऐ) जो 'फ़ाडें' दा मालक हा ॥ 11 ॥

وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ۝

ओह ('फ़ाड़) जिनें शैहरें च सख्त फसाद पाई
रख्खे दा हा ॥ 12 ॥

الَّذِينَ طَعَوْا فِي الْبِلَادِ ۝

ते फसाद च बधदे गै जंदे हे ॥ 13 ॥

فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ۝

जिस करी तेरे रब्ब नै उंदे पर अज़ाब दा
कोड़ा बरहाया ॥ 14 ॥

فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ۝

तेरा रब्ब यकीनन मौके दी ताड़ च (लग्गे
दा) हा ॥ 15 ॥

إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ۝

इस आस्तै (जरा दिक्ख ते) इन्सान दी हालत
गी जे जिसलै उसदा रब्ब उसी अजमैश च
पांदा ऐ, ते उसी आदर प्रदान करदा ऐ ते उस
पर नैमत नाज़ल करदा ऐ तां ओह आखदा ऐ
जे (अ'ऊं ऐसी शान आहला आं जे) मेरे रब्ब
नै (बी) मेरा सम्मान कीता ॥ 16 ॥

فَأَمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ
وَنَعَّمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ۝

जे जिसलै (अल्लाह) उसी अजमैश च
पांदा ऐ ते उसदा रिशक घटाई दिंदा ऐ तां
ओह आखदा ऐ, मेरे रब्ब नै (बिला ब'जा)
मेरा नरादर कीता ॥ 17 ॥

وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ
فَيَقُولُ رَبِّي أَهَانَنِ ۝

1. पर्वते कन्ने सरबंथत सरदार न ते भाव एह ऐ जे फ़िरऔन दे सरदार लोक जो पर्वत खुआने दे काबल हे ते मिस्र दी क्हुमत गी अपने बलबूते ते शक्ति कन्ने चलाऽ करदे हे।

(खुदा बिला-ब'जा स'जा नेई दिंदा) बल्के
(कसूर थुआड़ा अपना ऐ जे) तुस यतीम
(अनाथ) दा आदर नथे करदे ॥ 18 ॥

كَلَّا بَلْ لَا تَكْرُمُونَ الْيَتِيمَ ﴿١٨﴾

ते नां मस्कीन (गरीब-गुबे) गी खाना खलाने
आस्तै इक-दूए गी प्रेरना दुआंदा हे ॥ 19 ॥

وَلَا تَحْضُونَهُ عَلَىٰ طَعَامِ الْمَسْكِينِ ﴿١٩﴾

ते बिरसे च मिले दा धन सारे दा सारा
(ऐशप्रस्ती च) दुआई दिंदे हे ॥ 20 ॥

وَتَأْكُلُونَ التَّرَاثَ أَكْلًا لَّمًّا ﴿٢٠﴾

ते तुस धन गी बौहत ज्यादा प्यार करदे हे
॥ 21 ॥

وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ﴿٢١﴾

सुनो! जिसलै धरती गी टुकड़े-टुकड़े करी
दिता जाग' ॥ 22 ॥

كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكَّادًا ﴿٢٢﴾

ते तेरा रब्ब इस शान च औग' जे फरिश्ते रीहगां
ब'न्नी खड़ते दे होंग ॥ 23 ॥

وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿٢٣﴾

ते उस रोज नरक (लागै) आंहादा' जाग, उस
अजाब बेलै इन्सान चाहग जे ओह नसीहत
हासल करै, पर ओह बेला नसीहत दा पूरा-
पूरा फायदा लैने दा नेई होग' ॥ 24 ॥

وَجَاءَ يَوْمَئِذٍ يَوْمِئِذٍ بِجَهَنَّمَ ۚ يَوْمَئِذٍ
يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ وَأَنَّىٰ لَهُ الذِّكْرَىٰ ﴿٢٤﴾

1. यानी इन्कारी लोकें च फुट्ट पेई जाग ते ओह बक्ख-बक्ख होई जांग जां मुसलमान जिनें थाहरें विजय हासल करडन उनें ज'गें रीहनें आहली कौमें च फुट्ट पेई जाग ते ओह किट्ठे होइयै मुसलमानें दा मुकाबला नेई करी सकडन।
2. यानी अल्लाह ते उसदे फरिश्ते जिसलै इन्कारी लोकें पासँ आँदे न तां अजाब लेहयै आँदे न (दिक्खो सूर: हश्त्र आयत 3 ते सूर: बकर: आयत 211) ऐसा गै उसलै होग ते अल्लाह दा आँना ते फरिश्तें दा आँना दस्सग जे उनें लोकें दी तबाही होने आहलीं ऐ। इतिहास च आँदा ऐ जे बद्र नांउ दे युद्ध बेलै इन्कारी लोकें फरिश्तें गी दिक्खेआ हा जो उंदे पर तलोआरां चलांदे हे ते उंदे पर पत्थर बरहांदे हे ते उनेंगी उनें फरिश्तें गी सामथाम दिक्खने दा इन्ना विश्वास हा जे जिसलै बा'द च मुसलमान उनेंगी मिले तां उनें उंदे कन्ने गलाया जे थुआड़े पैहलू च (कन्ने) इसै चाल्ली दी बरदी पाए दे लड़ाई च इक सुआर लड़ा करदा हा ते उस सहाबी नै बी उसदा समर्थन कीता जे हां! मैं बी दिक्खेआ हा। सेही होंदा ऐ जे बद्र दे मौके एह कश्फ़ी नजारा मोमिनें ते इन्कारी लोकें गी दस्सेआ गेआ हा।
3. यानी ओह दंड भोगने दा दिन होग ते इन्कारी लोकें गी नरक लब्धन लागी पौग।
4. अल्लाह दी भेजी दी कताबें च सदा रेहम दी शिक्षा दिती जंदा ऐ। फिरओन आखरी बेलै ईमान ल्याया ते उस बारै बी इयै आदेश होआ जे अस तेरी सारी प्रार्थना गी मन्नी नेई सकदे पर तेरे शरीर गी सुरक्षत रखगे। (सूर: यूनस आयत 93) इयै हाल मक्का बासियें दा होआ। जिसलै मक्का फ'ता होआ तां हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. नै घोशना करी दिती जे ओह कतल ते मौत दे अजाब शा बचाई लैते गे, पर उनेंगी ओह बद्र प्राप्त नेई होआ, जो सारें शा पैहलें ईमान आहनेने आहले सहाबा गी प्राप्त होआ हा। अल्लाह पवित्र कुरआन च आखदा ऐ जे जो लोक मक्का दी विजय दे बा'द ईमान ल्याए, ओह उनें लोकें दे बरबर नेई होई सकदे जो उस च पैहलें ईमान ल्याए हे। (सूर: हदीद आयत 11)

ओह आखग, काश! में अपनी इस जिंदगी
आस्तै किश अगें भेजे! दा होंदा ॥ 25 ॥

يَقُولُ يَلَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ۝٢٥

इस आस्तै उस दिन खुदा दे अजाब जैसा उसी
कोई अजाब नेई देग ॥ 26 ॥

فَيَوْمَئِذٍ لَا يُعَذِّبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ ۝٢٦

ते नां उसदी पकड़ जैसी कोई होर पकड़
करग ॥ 27 ॥

وَلَا يُؤْتِيهِمْ وَقْفَةً أَحَدٌ ۝٢٧

ते ओह जान जिसी शांति प्राप्त होई चुकी ऐ
॥ 28 ॥

يَأْتِيهَا النَّفْسُ الْمُظْمِئَةُ ۝٢٨

अपने रब्ब कश परतोई? आ (इस हालत च
जे) तूं उसी पसंद करने आह्ला बी ऐं ते ओह
बी तुगी पसंद करने आह्ला ऐ ॥ 29 ॥

ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَةً ۝٢٩

फ़ी (तेरा रब्ब तुगी आखदा ऐ जे) आ! मेरे
(खास) बंदें च शामिल होई जा ॥ 30 ॥

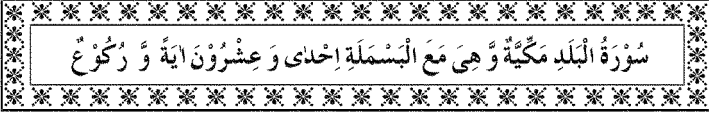
فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ۝٣٠

ते (आ) मेरी जन्नत च बी दाखल होई जा
॥ 31 ॥ (रुकू 1/14)

ع 31

وَادْخُلِي جَنَّتِي ۝٣١

1. ते नतीजा निकलने मौकें चाहे इस लोक च निकलै ते चाहे परलोक च, ऊरे कर्म मनुक्खै दे कम्म औंदे न जो ओह पैहलें करी चुके दा ऐ।
2. इस च दस्सेआ गेदा ऐ जे कामिल ते पूरा संदोख अल्लाह दे मलाप कन्नै गै हासल होंदा ऐ ते मलाप उस सहयोग दा नां ऐ जे अल्लाह पासेआ जे किश आवै उसी इन्सान खुशी-खुशी स्वीकार करै ते ओह (मनुक्ख) जो बी कम्म करै ओह अल्लाह गी प्यारा लगै।
3. जिसलै इन्सान उप्पर दस्से दे थाहरै पर पुज्जी जंदा ऐ तां अल्लाह आखदा ऐ जे तूं मेरे खास भगतें च शामिल होई गेआ ऐं जो पक्के तौरा पर जन्नत च जांगन जां आखी लैओ जे जन्नत उनेंगी अपने पासै सद्दा करदी ऐ।



सूर: अल्-बलद

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां इक्की आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांस लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

सुनी लै! तेरी गल्ल झूठ ऐ। अ'ऊं इस शैहरे
(मक्का) गी तेरी सचाई दे तौरै पर पेश करना
॥ 2 ॥

لَا اَقْسَمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝

ते (आखना जे हे मुहम्मद!) तू (इक दिन)
फ़ी इस शैहर (मक्का) बापस औने आह्ला
ऐं ॥ 3 ॥

وَ اَنْتَ حَلّٰلٌ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝

ते प्यो! गी बी ते पुत्तै गी बी (शहादत दे तौरै
पर पेश करना) ॥ 4 ॥

وَ الْوَالِدِ وَ مَا وَ لَدَ ۝

असें यकीनन इन्सान गी मैहनत दे वशीभूत
बनाया ऐ ॥ 5 ॥

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ۝

क्या ओह एह समझदा ऐ जे ओहदे पर कुसै
दा जोर नेई चलग? ॥ 6 ॥

اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِٓ اَحَدٌ ۝

1. इत्थें पिता ते पुत्र दा अर्थ हजरत इब्राहीम ते हजरत इस्माईल न जिनें मक्का बस्ती दा निर्माण कोता हा। ओह बी दमै हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दी सचाई दे गुआह न की जे उनें दौनीं मक्का दी नीह रखदे बेलै एह प्रार्थना कीती ही जे इस च पवित्तर करने आहले लोक आइयै बस्सन, पर हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दे समै उस च अनेकेश्वरवादी बस्सा करदे हे। इस आस्तै एह गल्ल जरूरी ही जे हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. विजय हासल करन ते हजरत इब्राहीम ते हजरत इस्माईल दी भक्वखवाणी बी पूरी होई जा।
2. यानी मक्का दी विजय असानी कनै ममकन नेई बल्के एहदे आस्तै सख्त मैहनत दी जरूरत होग।

ओह आखदा ऐ जे में ते ढेरें दे ढेर माल
लुटाई दिते दा ऐ' ॥ 7 ॥

يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَا لَا بُدَّ ۝

क्या ओह एह समझदा ऐ जे उसी कोई दिक्खने
आहला नेई? ऐ? ॥ 8 ॥

أَيْحَسِبُ أَنْ لَّمْ يَرَهُ أَحَدٌ ۝

क्या असें ओहदे आसतै दऊं अक्खीं पैदा नेई
कीतियां? ॥ 9 ॥

أَلَمْ نَجْعَلْ لَهُ عَيْنَيْنِ ۝

ते जीहब बी ते दऊं ओठ बी (पैदा नेई
कीते)? ॥ 10 ॥

وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ۝

फी असें उसी (हदायत ते गुमराही दे) दमें रस्ते
बी दस्सी दिते दे न' ॥ 11 ॥

وَهَدَيْتُهُ النَّجْدَيْنِ ۝

(पर) फी बी ओह उप्पर (चोटी पर) नेई
चढ़ेआ⁶ (पुज्जेआ) ॥ 12 ॥

فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۝

ते तुगी कुस नै दस्सेआ ऐ जे चोटी केह (ऐ
ते किस चीजै दा नांs) ऐ? ॥ 13 ॥

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ۝

1. यानी भामें ढेरें दे ढेर धन-दौलत इस्लाम गी मटाने आसतै लुटाई देन, फी बी इस्लाम विजयी होग ते ओह नकाम रौहगन।
2. यानी नतीजा ते अल्लाह पैदा करदा ऐ। संसारक साधनें कन्नै नतीजे नेई निकलदे। इस लेई जिसलै अल्लाह दिक्खा करदा ऐ जे उंदे दिलें च शिकं ते इन्कार ऐ ते ओह चंगे कम्म दखावे आसतै करदे न तां यकीनन अल्लाह उंदे कर्म करी उनेंगी सुख नेई देग बल्के उनेंगी अजाब गै देग।
3. यानी दिलै दियां अक्खीं, जिंदे कन्नै ओह सचाई गी समझी सकदा ऐ।
4. यानी जबान (जीहबै) ते ओठें कन्नै अपनी शंकाएं गी जाहर करै ते इस चाल्ली शंका-समाधान दे बा'द अपने दिलै गी पवित्तर करै।
5. यानी पवित्तर कुर'आन नै स्पष्ट करी दिते दा ऐ जे हदायत केह ऐ ते गुमराही केह ऐ। इसदे बा'द बी जेकर कोई इन्सान गुमराही पासै जा तां एह उसदा अपना दोश ऐ की जे अल्लाह नै अध्यात्मक अक्खीं बी दित्ती दियां न ते जेकर अक्खीं कन्नै कोई चीज नेई लब्धै तां जीहबै ते ओठें शा पुच्छियै ओह अपने खतोले दूर करी सकदा ऐ ते इस चाल्ली उंदे सारे ब्काने तोड़ी दिते गेदे न ते अल्लाह दा कलाम उतारियै उंदे आसतै स्पष्ट करी दिते दा ऐ जे हदायत केह ऐ ते गुमराही केह ऐ। अध्यात्मक अक्खीं देइयै उनेंगी इस गल्ला दी शक्ति दित्ती दी ऐ जे ईशवाणी दे गुणें गी पछानी सकन ते जबान ते हदायत देइयै इस काबल बनाए दा ऐ जे ईशवाणी दा कोई हिस्सा जेकर समझा नेई आवै तां दूर लोकें शा पुच्छियै उसगी समझी लैन।
6. यानी इन्ने साधन होने दे बावजूद बी इन्कारी मनुक्ख त्रक्की दे शिखरें पर नेई चढ़ी सकेआ बल्के गुमराही दे गतै च गै पैदा रेहा।

(चोटी पर चढ़ना गलाम दी) गरदन छुड़ाना
(यानी उसी अजाद कराना ऐ) ॥ 14 ॥

فَأَتَى رَقَبَةَ ۞

जां भुक्ख (फाके) आहले ध्याड़े खाना खलाना
ऐ ॥ 15 ॥

أَوْ اطَّعِمَ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْعَبَةٍ ۞

यतीम गी, जो करीबी' होऐ ॥ 16 ॥

يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۞

ते असहाय (परबस्स) गी जो धरती पर डिग्गे
दा' होऐ ॥ 17 ॥

أَوْ مُسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۞

फी (चोटी पर चढ़ना एह हा जे इनें कम्मं दे
अलावा) एह उंदे चा बनी जंदा जो ईमान
ल्याए ते (जिनें) इक-दूए गी सबर करने बाँरे
नसीहत दिती ते इक-दूए गी रैहम करने दी
नसीहत दिती' ॥ 18 ॥

ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَّصُوا
بِالصَّبْرِ وَتَوَّصُوا بِالْمَرْحَمَةِ ۞

इयै लोक ते बरकत आहले होंगन
॥ 19 ॥

أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْمِيمَنَةِ ۞

ते जिनें साद्वी आयतें दा इन्कार कीता ओह
न्हूसत आहले (न-भागे) होंगन ॥ 20 ॥

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا هُمْ

أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ۞

उंदे पर भट्टी दी अग्ग (आहली स'जा) नाजल
होग ॥ 21 ॥ (रुकू 1/15)

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّوَصَّدَةٌ ۞

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّوَصَّدَةٌ ۞

1. यानी रुहानी ब्रक्की उसलै गै मिली सकदी ऐ जिसलै इन्सान संसार च दासता गी मटाई देऐ ते दरिदरता गी दूर करै ते इस्सै चाल्ली यतीमें ते बे-सहारे लोकें दी सुख-सुबधा दा प्रबंध करै।
2. यानी ऐसा बे-सहारा आदमी जेहदा कोई सहारा नेई होऐ की जे जिसदे दोस्त होंदे न जेकर ओह धरती पर डिग्गी बी जा तां उसदे दोस्त उसी सहारा देखै उआली लेंदे न। एह दरिदर जिसगी दुआलाना मुसलमानें दा फर्ज ऐ ओह दरिदर ते बे-सहारा ऐ जिसदा कोई बी मददगार नेई होंदा, ओह जेकर डिग्गी पाँदा ऐ तां उसगी दुआलाने आहला कोई बी नेई होंदा।
3. चोटी पर चढ़ने दा किश स्पष्टीकरण पैहलें कीता गेदा ऐ हून किश होर खोहलियै ब्यान करदा ऐ ते दसदा ऐ जे सिर्फ शुभ-कम्म गै फायदेमंद नेई होंदे उन्ना चिर जे मनुक्ख ईमान नेई ल्यावै ते फी सिर्फ आपू ईमान आहने पर गै संतुष्ट नेई होऐ बल्के दूए गी बी ईमान आहने ते शुभ-कर्म करने दी प्रेरणा दिंदा र'वै।

سُورَةُ الشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ سِتُّ عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعٌ

सूर: अल्-शम्म

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां सोलां आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

अ'ऊं सूरजै गी गुआही दे रूपै च पेश करना
ते चुहा (कुलार) दे समे गी बी जिसलै ओह
चढ़ने दे बा'द उच्चा होई जंदा ऐ ॥ 2 ॥

وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا ۝

ते चन्नै गी जिसलै ओह सूरजै दे पिच्छें औंदा
ऐ? ॥ 3 ॥

وَالْقَمَرِ اِذَا تَلَّهَا ۝

ते दिनै गी (बी शहादत दे तौरै पर पेश
करना) जिसलै ओह उस (सूरजै) गी जाहर
(बांदै)करी दिंदा ऐ ॥ 4 ॥

وَالنَّهَارِ اِذَا جَلَّهَا ۝

ते राती गी बी (शहादत दे तौरै पर पेश
करना) जिसलै ओह उस (सूरजै) दी रोशनी
गी अक्खीं शा ओहलै करी दिंदी ऐ ॥ 5 ॥

وَاللَّیْلِ اِذَا یَعِشَهَا ۝

1. यानी हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. गी इस्लाम दी सचाई आस्तै गुआह दे रूपै च पेश करना की जे ओह उदय होने दे बा'द सधारण हालती शा बौहत उच्ची हालत तगर पुज्जी जांगन ते सदा आस्तै रौहने आहली इक कताब दुनियां दे सामनै पेश करियै अपने आपै गी सूरज साबत करडन।
2. यानी अल्लाह उनें मुजदिदें (दीन गी जंदा करने आहलें) ते सुधारकें गी हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दी सचाई आस्तै पेश करदा ऐ जो थुआड़े बा'द औंगन, की जे ओह औने आहले जे किश हासल करडन हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दा अनुसरण करनै करी हासल करडन।
3. इत्थें दिनै गी गुआही दे रूपै च पेश कीता गेआ ऐ जिसलै ओह सूरजै गी बांदै करी दिंदा ऐ। भाव एह ऐ जे जिसलै इस्लाम दी त्रक्की दा समां औंग जो दिनै आंगर होग ते हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दा बजूद दरजा-बदरजा जाहर होंदा जाग।
4. यानी उस समे गी गुआही दे रूपै च पेश करना जिसलै जे संसार च अधर्म (कुफर) दा न्हेरा छाई जाग। उस बेलै हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दा प्रकाश (रोशनी) दुनियां दी नजरै शा ओहलै होई जाग।

ते गासैं गी ते उसदे बनाए जाने गी बी ॥ 6 ॥

وَالسَّمَاءَ وَمَا بَنَاهَا ۝

ते धरती गी बी ते उसदे बछाए जाने गी बी
(शहादत दे तौरै पर पेश करना) ॥ 7 ॥

وَالْأَرْضَ وَمَا طَحَاهَا ۝

ते इन्सानी आत्मा गी बी ते उसदे बे-ऐब²
बनाए जाने गी बी (शहादत दे तौरै पर पेश
करना) ॥ 8 ॥

وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا ۝

जे उस (अल्लाह) नै मनुक्खै पर उसदी
बदकारी/कुकर्मी (दे रस्तें गी बी) ते उसदे
संयम (दे रस्तें) गी बी चंगी चाल्ली खोहली
दिता ऐ ॥ 9 ॥

فَالهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا ۝

इस आस्तै जिसनै उस (जान) गी पवित्तर
कीता ओह ते (समझो जे) अपने मकसद गी
हासल करी बैठा ॥ 10 ॥

قَدْ أَفْلَحَ مَنْ رَزَقَهَا ۝

ते जिसनै उसी (मिट्टी च) दब्बी दिता
(समझी लैओ जे) ओह नकाम होई गेआ
॥ 11 ॥

وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّاهَا ۝

समूद नै अपनी घोर उद्दंडता करी (समे दे
नबी गी) झुटलाया ॥ 12 ॥

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوَاهَا ۝

उस बेलै जिसलै जे ओहदी कौम चा सारें शा
बड्डा नभागा ओहदे (समे दे नबी दे) बरोध
आस्तै खड़ोता ॥ 13 ॥

إِذِ انبَعَثَ أَشْقَاهَا ۝

इस पर उनें (यानी समूद दी कौम) गी अल्लाह
दे रसूल (सालेह) नै गलाया जे अल्लाह
आस्तै वक्फ (समर्पत) कीती गेदी ऊंटनी शा

فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ

1. इस आयत च एह दस्सेआ गेदा ऐ जे इस्लाम दी त्रक्की यकीनन हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दे प्रकाश गी प्रकट करने आहली होग ते इस्लाम दा पतन हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दे प्रकाश गी लोकें दी नजरें शा छपैली देग, पर गास ते उसदे बनाए जाने दी हिक्मत दस्सा करदी ऐ जे सचाई म्हेशां विजयी होंदी रौहग चाहे इस लोक च ते चाहे परलोक च। इस आस्तै वक्ती रोकें शा घबराना नेई चाही दा।
2. इस आयत च इस पासै इशारा कीता गेदा ऐ जे मानव-प्रकृति गी अल्लाह नै पवित्तर बनाया ऐ। इस आस्तै एह गल्ल ममकन ऐ जे सारा संसार जां संसार दा किश हिस्सा सदा आस्तै हदायत पाने शा बंचत होई जा।

बचदे रौह ते इससै चाल्ली उसदे पानी पलैने
दे मामले च बी हर चाल्ली दी उद्दंडता
छोड़ी देओ ॥ 14 ॥

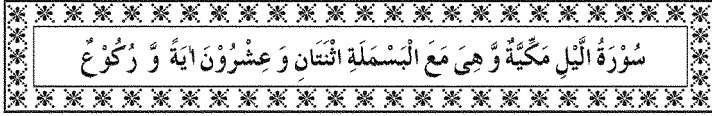
पर उनें उस (नबी) दी गल्ल नेई मनी,
बल्के उसी झुठलाई दिता ते (ओह) ऊंटनी
(जेहदे शा बचदे रौहने बारै उनेंगी आदेश
दिता गेआ हा उस) दियां सदां कप्पी दित्तियां
जेहदे करी अल्लाह नै उनें गी खाक (मिट्टी)
च मलाने दा फैसला करी दिता ते ऐसे उपाऽ
कीते जे उससै चाल्ली होई बी गेआ ॥ 15 ॥

ते ओह (इससै चाल्ली) उंदे (मक्का आहलें
दे) अन्जाम दी बी परबाह् नेई करग ॥ 16 ॥
(रुकू 1/16)

فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوا وَهَاۗ فَدَمَدَمَ عَلَيْهِمُ
رَبُّهُم بِذُنُوبِهِمْ فَسَوَّاهَا ١٥

١٦

وَلَا يَخَافُ عُقْبَاهَا ١٦



सूर: अल्-लैल

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां बाई आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांS लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अ'ऊं रातीं गी गुआही दे रूपै च पेश करना
जिसलै ओह खट्टी' लै ॥ 2 ॥

وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى ①

ते अ'ऊं दिनै² गी बी (गुआही दे तौरै पर पेश
करना) जिसलै ओह खूब रोशन होई जा
॥ 3 ॥

وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّى ①

ते नर ते मादा³ दी पैदायश गी बी (शहादत ते
तौरै पर पेश करना) ॥ 4 ॥

وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنثَى ①

ते शुआडियां कोशशां⁴ यकीनन बक्ख-बक्ख
न ॥ 5 ॥

إِنْ سَعَيْكُمْ لِنَشْتِئ ①

इस आस्तै जिसनै (खुदा दे रस्ते पर) दिता
ते संयम अखत्यार कीता ॥ 6 ॥

فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى ①

ते नेक गल्लै दी तस्दीक (पुष्टी) कीती ॥ 7 ॥

وَصَدَقَ بِالْحُسْنَى ①

1. यानी जिसलै बी संसार च धार्मिक अंधकार छाई जंदा ऐ। जेकर कोई अकली शा कम्म लै तां उसी पता लगगी जाग जे ऊरे दिन ऐसे होंदे न जिसलै जे एह संसार सुधारकें शा खाल्ली होंदा ऐ।
2. यानी जिसलै कदें संसार च सदाचार ते नेको दा युग आवैं तां बिचार करने पर चंगी चाल्ली पता लगगी जाग जे इस युग च सुधारकें कोशशां करियैं इस्लाम दा नूर लोकें दे दिलें च दाखल करी दिता ऐ।
3. यानी मानव समाज च किस लोक ऐसे होंदे न जो लोकें गी स्हेई रस्ते पर चलने दी हदायत दिंदे न। ओह 'नर' खुआने दे अधिकारी होंदे न ते किस लोक ऐसे होंदे न जो उंदी हदायत शा प्रभावत होइयैं स्हेई रस्ते पर चली पाँदे न आखो जे ओह लोक 'मादा' दा गुण रखदे न।
4. यानी मुसलमानें ते इन्कारी लोकें दियां कोशशां बक्ख-बक्ख न। इंदे चा इक ते हदायत पाने आस्तै कोशश करा करदा ऐ ते दूआ गुमराही आस्तै कोशश करा करदा ऐ।

उसी ते अस जरूर गै असानी दे मौके प्रदान करगे ॥ 8 ॥

فَسَيَسِّرُهُ لِّلْيَسْرَى ۝٨

ते ऐसा (शख्स) जिसनै कंजूसी शा कम्म लैता ते बे-परबाही दा प्रगटावा कीता ॥ 9 ॥

وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَى ۝٩

ते नेक गल्लै गी झुठलाया ॥ 10 ॥

وَكَذَّبَ بِالْحَسَنَى ۝١٠

उसी अस तकलीफ (दा समान) (यानी बदनसीबी) प्रदान करगे ॥ 11 ॥

فَسَيَسِّرُهُ لِّلْعُسْرَى ۝١١

ते जिसलै ओह हलाक होग तां उसदा माल (धन-दौलत) उसी कोई फयदा नै पुजाग ॥ 12 ॥

وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدَّى ۝١٢

हदायत देना सच्चें गै साढ़े जिम्मै ऐ ॥ 13 ॥

إِنَّ عَيْنِنَا لَلْهُدَى ۝١٣

ते हर गल्लै दा अंत ते आद (शुरू) बी यकीनन साढ़े गै अखत्यार च ऐ ॥ 14 ॥

وَإِنَّا لَنَّا لِلْآخِرَةِ وَالْأُولَى ۝١٤

इस आस्तै (याद रखो जे) में (ते) तुसंगी इक प्रचुल्ल अग्गी शा सोहगा करी दिता ऐ ॥ 15 ॥

فَأَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّى ۝١٥

ओहदे च सिवाए कुसै बड्डे बदनसीब दे, कोई दाखल नै होग ॥ 16 ॥

لَا يَصِلُهَا إِلَّا الْأَشْقَى ۝١٦

(ऐसा बदनसीब) जिसनै सचाई गी झुठलाया ते (सच शा) मूह फेरी लैता ॥ 17 ॥

الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّى ۝١٧

ते जो बड़ा संयमी होग ओह जरूर ओहदे शा दूर रखेआ जाग ॥ 18 ॥

وَسَيَجْجَبُنَّهَا الْأَتَقَى ۝١٨

(ऐसा संयमी) जो अपना माल (इस आस्तै अल्लाह दे स्ते पर) दिंदा ऐ जे (ओहदे कन्नै) अध्यात्मक पवितरता हासिल करै ॥ 19 ॥

الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَرَكَى ۝١٩

ते कुसै दा ओहदे पर स्थान नै होंदा जिसदा बदला उतारने दा उसी बिचार होऐ ॥ 20 ॥

وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهُ مِنْ نِعْمَةٍ تُجْزَى ۝٢٠

हां! पर अपने गौरवशाली रब्ब दी खुशी हासिल करना (उसदा मकसद होंदा ऐ) ॥ 21 ॥

إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلَى ۝٢١

ते ओह (खुदा) जरूर ओहदे पर खुश होई जाग ॥ 22 ॥ (रूकू 1/17)

۝

وَلَسَوْفَ يَرْضَى ۝٢٢

سُورَةُ الصَّحِي مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ اثْنَتَا عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعٌ

सूर: अल्-जुहा

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां बारां आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांS लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

अ'ऊं दिनै गी (शहादत दे तौरै पर पेश करना)
जिसलै ओह रोशन' होई जा ॥ 2 ॥

وَالصَّحِي ۝

अ'ऊं रातीं गी बी (शहादत दे तौरै पर पेश
करना) जिसलै जे उसदा न्हेरा चपासै फैली²
जा ॥ 3 ॥

وَالْبَيْلِ إِذَا سَجَى ۝

जे नां तेरे रब्ब नै तुगी छोड़े दा³ ऐ ते नां ओह
तेरे कन्नै नराज ऐ ॥ 4 ॥

مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَى ۝

ते (एह दिक्ख ते सेही जे) तेरी बा'द च
औने आहली हर घड़ी पैहली शा बेहतर⁴ ऐ
॥ 5 ॥

وَلِلْآخِرَةِ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَى ۝

1. यानी जिसलै बी इस्लाम दी ब्रककी होग हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दी सचाई जाहर होई जाग।
2. यानी जिसलै कदें लम्मे समे आस्तै धर्म च कमजोरी पैदा होग तां एह साबत होई जाग जे हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दे नूर दे प्रसार च किश रकावटां पैदा होई गेइयां न इस लेई संसार उंदे नूर दा पूरी चाल्ली फायदा नेई लेई सका दा ऐ।
3. इस च दस्सेआ गेदा ऐ जे संसार च न्हेरे दा छाई जाना इस गल्ला दा प्रमाण नेई होग जे हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. झूठे न बल्के इस गल्ला दा प्रमाण होग जे मानव-प्राणी च विकार आई गेआ ऐ ते उसदे सुधार आस्तै नमां सूरज (सुधारक) उदय होने आह्ला ऐ जेहका परतियै इस्लाम गी विजयी करी देग।
4. यानी जिसलै बी संसार च कोई विकार पैदा होंदा ऐ तां खुदा तेरा समर्थन करने आहले लोक खड़े करी दिंदा ऐ ते क्यामत तक खड़े करदा रौहग। एह इस गल्ला दा प्रमाण होग जे तूं सच्चा ऐं।

ते जरूर तेरा रब्ब तुगी (ओह किश) देइयै
रौहग जेहदे पर तू खुश होई जागा' ॥ 6 ॥

وَأَسْوَفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَى ۝٦

क्या (इस जीवन च उस दा ब्यहार/सलूक) तेरे
कनै गैर-ममूली नेई रेहा ते) उसनै तुगी यतीम
समझियै (अपनी छत्तर छाया च) ज'गा नेई
दिस्ती ॥ 7 ॥

أَلَمْ يَجِدَكَ يَتِيمًا فَآوَى ۝٧

ते (जिसलै) उसनै तुगी (अपनी कौम दे प्रेम
च) मुग्ध^२ दिक्खेआ तां (उंदे सुधार दा) स्हेई
रस्ता तुगी दस्सी दिता ॥ 8 ॥

وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَى ۝٨

ते जिसलै तुगी मते टब्बै आहला पाया/
दिक्खेआ तां (अपनी किरपा कनै) धनवान
बनाई दिता ॥ 9 ॥

وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَأَغْنَى ۝٩

इस लेई (इनें स्थानें दे नतीजे च) तू बी
यतीमें गी उभारने च रुज्जे^३ दा रौह ॥ 10 ॥

فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ۝١٠

ते तू मंगने आहले गी नेई निक्खर ॥ 11 ॥

وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝١١

ते तू अपने रब्ब दी नैमत दी जरूर चर्चा करदा
रौह^४ ॥ 12 ॥ (रुकू 1/18)

ع ٩٣

وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝١٢

1. इस दा अर्थ एह ऐ जे जिसलै अंत तक तुगी सफलता गै प्राप्त होंदी जाग तां तेरी खुशी च केह शक्क ऐ।
2. किश विद्वानें लिखे दा ऐ जे मूल शब्द 'जाल्लुन' दा अर्थ ऐ जे तू गुमराह हा, असें तुगी हदायत दिती। पर शब्द कोश च इसदा अर्थ प्रेम च मुग्ध होना बी लिखे दा ऐ (दिक्खो मुफ़्फ़ादते रागिब)। इस आस्तै एहदे मूजब आयत दा भाव एह ऐ जे हे रसूल तू अपनी कौम दे लोकें दे हदायत पाने दी इच्छा च मुग्ध हा। इस लेई असें तुगी ओह रस्ता दस्सी दिता जेहदे कनै तू अपनी कौम दा सुधार करी सकें।
3. यानी उनें अनाथें दी हालत ऐसी नेई होऐ जे ओह समझन जे उंदी पालमां लोकें दे दान कनै होआ करदी ऐ। जेहदे करी उंदी हिम्मत जंदी र'वै। बल्के लोक उंदी पालमां अपने अजीजें आंगर करन जेहदे नै उंदी हिम्मत बधै। जियां जे हजरत मुहम्मद मुस्ताफ़ा स.अ.व. कनै होआ, की जे तुस बी अनाथ हे, पर तुसंगी तुंदे दादा ते चाचे नै पुत्तरें शा बी उप्पर समझेआ। इस आस्तै अल्लाह आदेश दिंदा ऐ जे ऐसी कोशश करो जे लोक अनाथें गी अपने सककें आंगर समझन तां जे उंदे च उत्साह-हीनता दा बिचार पैदा नेई होऐ, बल्के उंदी हिम्मत बधदी र'वै।
4. संसारक नैमतां ते बशक्क तुसंगी शासक बनने परेंत थ्थोई गेइयां हियां, जिंदा जिकर तुस मुसलमान रेआया दी मदाद राहें करदे होदें हे पर इत्थें चेचे तौरा पर एह बर्णन ऐ जे खुदा नै पवित्र कुर'आन दे रूपे च जो नैमत तुगी दिती दी ऐ उसी सारे संसार च फलांदा रौह।

سُورَةُ الْمَنْشُورِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ تِسْعُ آيَاتٍ وَرُكُوعٌ

सूर: अलम् -नश्रह

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां नौ आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'कं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۞

क्या असें तेरे आस्तै तेरे सीने गी खोहली नेई
दिता? ॥ 2 ॥

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۞

ते तेरे इस बोझ गी तेरे परा तुआरियै सुट्टी नेई
दिता ॥ 3 ॥

وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ ۞

ऐसा बोझ जिसनै तेरी कमर त्रोड़ी² दिती दी
ही ॥ 4 ॥

الَّذِي أَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۞

ते तेरे जिकर गी बी असें उच्चा करी दिता ऐ
॥ 5 ॥

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۞

इस आस्तै (याद रक्ख जे) इस तंगी कनै
इक बड्डी कामयाबी (जुड़ी दी) ऐ
॥ 6 ॥

فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۞

1. यानी कामिल शरीअत (कुरआन) तेरे पर उतारी दी ऐ तां जे तू खुदा दी हदायत दी रोशनी च चलें ते रहान नेई होयें।
2. तुस इससै ब्याकुलता च 'हिरा' नांऽ दी गुफा च जंदे हे जे अ'कं अपनी बुद्धि कनै अल्लाह गी पाने ते मानव समाज दा सुधार करने च कियां कामयाब होई सकना। अल्लाह नै अपनी खास हदायत यानी पवित्र कुरआन राहें थुआड़ी ब्याकुलता गी दूर करी दिता । इस दा ब्यौरा सूर: 'अलक़ च औदा ऐ।'

(हां!) यकीनन इस तंगी दे कन्नै इक (होर बी) बड्डी कामयाबी¹ (निश्चत) ऐ ॥ 7 ॥

إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝

इस आस्तै जिसलै(बी) तुगी समां² मिलै तां(खुदा कन्नै मिलने आस्तै) फी कोशश च लग्गी जा ॥ 8 ॥

فَإِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ ۝

ते तू अपने रब्ब पासै ध्यान दे ॥ 9 ॥ (रुकू 1/19)

ع 19

وَالِى رِبِّكَ فَارْعَبْ ۝

1. मूल शब्द 'युस्र' -असानी कन्नै इस पासै इशारा कीता गोदा ऐ जे ओह बार-बार आँग, पर उस तंगी बारै दस्से दा ऐ जे ओह इक निश्चत समे तक रहियै दूर होई जाग। इस आयत च एह भविष्यवाणी कीती गेदी ऐ जे हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. पर संकट दा कोई ऐसा समां नेई आँग जो स्थाई होग। पर सुखे दियां घडियां ऐसियां आँगन जो स्थाई खुआइयां जाई सकडन। इस आस्तै मक्का ते अरब दे लोकें दा अट्टें साल्लें अंदर नाश होई गेआ, पर हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. नै जिसलै मक्का पर विजय हासल कीती ते इस्लामी शासन दी नीह रक्खी ते मुसलमानें आस्तै असान्नी दे रस्ते खुल्ले तां एह शासन बक्ख-बक्ख रूपें च बदलदा अज तक आया ऐ ते इससै युग थमां केई इक देशें च इस्लामी शासन दी स्थापना होई गई ऐ।
2. यानी जिसलै बी तुगी शासन सरबंधी कम्में ते मुसलमानें दी शिक्षा-दीक्षा शा बैहल मिलै तां तू अध्यात्मक कम्मै च लग्गी जा की जे ओह तेरा नेई मुक्कने आहला कम्म ऐ ते ओहदे चा बैहल मिलने दा कोई सुआल गै नेई।

سُورَةُ التِّينِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ تَسْعُ آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

सूर: अल्-तीन

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां नौ आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांस लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

अ'ऊं अंजीर¹ गी ते जैतून² गी शहादत दे तौरै
पर पेश करनां ॥ 2 ॥

والتين والزيتون ۝

ते इससै चाल्ली सीनीन³ पर्वत गी ॥ 3 ॥

وطور سينين ۝

1. 'अंजीर' शब्द राहें हजरत आदम पासै संकेत कीता गोदा ऐ जो एह ऐ जे इन्सानी फितरत गी उत्तम रूप च पैदा कीते दा ऐ की जे हजरत आदम दे बारै बाइबिल च लिखे दा ऐ जे हजरत आदम गी अल्लाह नै अपने रूप च बनाया (पैदायश बाब 1) ते कुरआन मजीद च लिखे दा ऐ जे अल्लाह नै उसगी अपना खलीफा (अधिनायक) बनाया ऐ। इस आस्तै दौनीं कताबें दी सैहमती शा पता लगदा ऐ जे आदम दी संतान उसदे गुण लेइयै नेक ते सदाचारी पैदा होग ते उसदी पैदायश च बुराई दी जड़ नेईं आँग बल्के नेकी दी जड़ आँग। इस बक्खी संकेत करने आस्तै अंजीर गी गुआही दे रूपै च पेश कीता गोदा ऐ।
2. जैतून दा बर्णन इस आस्तै कीता गोदा ऐ जे जैतून दी शाख हजरत नूह दी घटना दा चेता नुआंदी ऐ। तौरत च लिखे दा ऐ जे हजरत नूह दी किशती जिसलै 'जूदी' यानी 'अरारात' पुञ्जी तां हजरत नूह नै बक्ख -बक्ख पैंछियें गी छोड़ेआ तां जे ओह पता लाईं आँन जे कुतै धरती बी लभदी ऐ जां नेईं। खीर च उनें कबूतरी छोड़ी जिसलै ओह बापस आईं तां ओहदे मूहें च ताजा जैतून दा पत्तर हा जेहदे शा हजरत नूह नै समझी लैता जे हूँ अल्लाह दी मेहर होईं गईं ऐ ते धरत लब्धन लगी पेईं ऐ फी ऐसा होआ जे ओह अपने साथियें कनै उर्थें उतरी गे। जित्थें हजरत नूह दी किशती रूकी ही उस थाहरा दा नांस पवित्रर कुरआन नै 'जूदी' रक्खे दा ऐ ते बाईबिल नै 'अरारात' रक्खे दा ऐ। शब्द कोश दिक्खने पर पता लगदा ऐ जे इनें दौनीं शब्दें दे अर्थें च कोई भेद नेईं। अरारात अरबी शब्द ऐ। हजरत नूह की जे इराक नवासी हे इस लेईं उंदे आस्तै इस शब्द दा उच्चारण असान हा ते जूद दा अर्थ देआ ते उपकार ऐ यानी ओह थाहर जित्थें अल्लाह दी देआ ते उपकार प्रकट होन। 'रात' दा अर्थ ऐ 'शरण चाही' (अक्रब)। अरारात दा अर्थ ए होआ 'अ'ऊं पनाह दी ज'गा गी अपने सामनै दिक्खा करना। इस आस्तै इस च बी जूदी आहला अर्थ आईं गेआ।
3. सीना-एह शब्द इक वचन ऐ, पर इत्थें इस दा प्रयोग बहुवचन होए दा ऐ। इस दा कारण एह ऐ जे सीना पर्वतें दे सिलसले दा नांस ऐ।

ते इस अमन आहले शैहर¹ (मक्का) गी बी
॥ 4 ॥

وَهَذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ ۝

(एह सब शहादतां दसदियां न जे) यकीनन
असें इन्सान गी अच्छी शा अच्छी अवस्था च
पैदा कीता ऐ ॥ 5 ॥

لَقَدْ حَقَّقْنَا الْإِنْسَانَ فِي
أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ۝

फी असें उसी नीच शा नीच दशा पासै परताई
दिता ॥ 6 ॥

ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ ۝

सिवाए उनें लोकें दे जो ईमान ल्याए ते जिनें
परिस्थिति मताबक अच्छे कर्म कीते इस आस्तै
उंदे लेई इक नेई मुक्कने आहला बदला होग
॥ 7 ॥

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
فَلَهُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝

इस आस्तै (असलीयत दे खु'ल्ली जानै परैत)
केहड़ी चीज तुगी बदला दिते जाने बाँरे झुठलांदी
ऐ ॥ 8 ॥

فَمَا يَكْذِبُكَ بَعْدَ الْدِينِ ۝

क्या (हून बी कोई सोची सकदा ऐ जे)
अल्लाह सारे हाकमें शा बड्डा हाकम नेई
ऐ ? ॥ 9 ॥ (रुकू 1/20)

ع

أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمِ الْحَكِمِينَ ۝

1. मक्का शैहरें गी हजरत इब्राहीम ते हजरत इस्माईल नै अमन आहला करार दिते दा ऐ। इस गल्ला पर ज्हारं साल बीती गेदे हे तां बी अरब लोक अज तक उसदे सत्कार दा ध्यान रखदे न। एह इस गल्ला दा सबूत ऐ जे मक्का कन्नै सरबंथ रक्खने आहला धर्म सच्चा ऐ। इस आस्तै इक समां आया जे मक्का मुसलमानें दे अधिकार च आई गेआ ते इस्लाम गै मक्का दा धर्म खुआया। ते फी मुसलमानें दे संबंथ कारण मक्का गी इक होर नमीं शांति मिली जो अज तक चलदी आवा करदी ऐ बल्के ओह शांति ऐसी ऐ जो इस शा पैहलें बी उसी प्राप्त नथी, की जे पैहलें मक्का वासी अपनी इच्छा मताबक महीनें गी अगों-पिच्छें करियें उसदी शांति गी भंग करी दिंदे हे, पर हून इस्लाम नै ऐसे बारां महीने निश्चत करी दिते न जिनेंगी अगों-पिच्छें करने दी कुसै च हिम्मत नेई। इस आस्तै हरम दे खेतर दी रक्खेआ पूरा साल होंदी ऐ। इस शा पैहलें सिर्फ मक्का आहलें दे अपने बिचारें दे अधीन होंदी ही। हरम शब्द दा अर्थ ऐ सत्कार जोग चीज ते परिभाशा च मक्का दे चपासै चार-चार मील दा जो अलाका ऐ ओह हरम खुआंदा ऐ की जे उस अलाके च कुसै जीवधारी दा बध बरजत ऐ।

سُورَةُ الْعَلَقِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ عَشْرُونَ آيَةً وَ رُكُوعٌ

सूर: अल्-अलक

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां बीह आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۞

अपने रब्ब दा नांऽ लेइयै पढ़' जिसनै (सारी
चीजें गी) पैदा कीता ॥ 2 ॥

إِقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ۞

(ते जिसनै) इन्सान गी खून दे इक लोथड़े शा
पैदा कीता ॥ 3 ॥

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۞

(फ़ी अस आखने आं जे) कुर'आन गी पढ़ियै
सुनांदा रौह की जे तेरा रब्ब बड़ा करीम' ऐ
(यानी बौहत किरपा करने आहला ऐ) ॥ 4 ॥

إِقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ ۞

ओह रब्ब जिसनै कलम कन्नै इलम सखाया
(ऐ ते अगमें बी सखांदा रौहग) ॥ 5 ॥

الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۞

उसनै इन्सान गी (ओह किश) सखाया ऐ जो
ओह पैहलें नथा जानदा ॥ 6 ॥

عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۞

1. किश विद्वानें ते ईसाइयें गलती कन्नै लिखे दा ऐ जे 'हिरा' नांऽ दी गुफा च फरिश्ते नै रेशम पर लिखे दा इक लेख दस्सियै हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. गी गलाया हा जे 'पढ़ो', पर सचाई एह ऐ जे मूल शब्द 'इक्रा' दा अर्थ पढ़ने दे अलावा दुर्हाना बी ऐ। इस आस्तै इस सूर: च दस्सेआ गेदा ऐ जे जिसलै फरिश्ता पैहली बार वह्नी लेइयै हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. कश आया तां उसनै तुसेंगी गलाया जे जे किश अ'ऊं आखदा जां, उसी दुर्हांदे जाओ।
2. यानी जिन्ना तूं कुर'आन पढ़ियै सुनागा, उन्नी गै तेरे रब्ब दी शान ते मानव जाति दा सम्मान उजागर होग।

(जैसा ओह समझदे न उस चाल्ली) नेई बल्के इन्सान यकीनन हद शा बधा करदा ऐ ॥ 7 ॥

كَلَّا إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنَّا ۖ

इस चाल्ली जे ओह अपने आपै गी (खुदा दी किरपा कन्नै) बे-परबाह समझदा ऐ ॥ 8 ॥

أَنْ رَأَاهُ اسْتَعْتَىٰ ۚ

सचाई एह ऐ जे तेरे रब्ब कश गै परतोइयै जाना ऐ ॥ 9 ॥

إِنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجْعَىٰ ۗ

(हे मुखातब!) तू (मिगी) उस (शख्स) दी (हालत दी) खबर दे ॥ 10 ॥

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُبْعَىٰ ۚ

जो इक (अबादत करने आहले) बंदे गी जिसलै ओह नमाज़ पढ़ने च ब्यस्त होंदा ऐ (नमाज़ पढ़ने शा) रोकदा ऐ ॥ 11 ॥

عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰ ۗ

(हे मुखातब!) तू (मिगी) दस्स ते सेही जे जेकर ओह (नमाज़ पढ़ने आहला बंदा) हदायत पर होऐ ॥ 12 ॥

أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَىٰ الْهُدَىٰ ۚ

जां संयम शा कम्म लैने दा हुकम दिंदा होऐ ॥ 13 ॥

أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ ۗ

ते उसी रोकने आहला (हदायत दा) इन्कारी होऐ ते (उस शा) मूंह फेरदा होऐ (तां फी उस रोकने आहले दा अन्जाम केह होग) ॥ 14 ॥

أَرَأَيْتَ إِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۗ

क्या ओह (इन्ना बी) नेई जानदा जे अल्लाह हर इक चीजै गी जानदा ऐ? (इस आस्तै ओह कन्न खोहलियै सुनी लै जे ओह गलती करा करदा ऐ) ॥ 15 ॥

الْمَعْلَمَ بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ ۗ

1. 'बंदे' शब्द राहें हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. पासै संकेत कीता गेदा ऐ ते दस्से दा ऐ जे तुस अल्लाह दे पवित्र घर 'काबा' च नमाज़ पढ़दे हे ते मुन्कर आइयै थुआड़े सिरै ते पवित्र शरीरै पर मिट्टी सुट्टी दिंदे हे ते इक बार ते उनें थुआड़ी पिट्टी पर कंटे दी ओझरी रक्खी दित्ती ही जेहदे करी तुस सजदे च सिर नथे चुक्की सकदे।

जिस चाल्ली ओह चांहदा ऐ उस चाल्ली नेई
होग बल्के जेकर ओह (अपने इस कम्मै शा)
बाज नेई आया तां अस उसदे मत्थे दे बाल
पकड़ियै जोरै कन्नै ध्रीङगे ॥ 16 ॥

كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهُ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ۝۱

ऐसी मत्थे दी चोटी जो झूठी ऐ ते ओह
खताकार (कसूरबार) बी ऐ' ॥ 17 ॥

نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۝۲

इस आस्तै (इन्कारी गी) चाहीदा ऐ जे ओह
अपनी सभा बुलाऽ ॥ 18 ॥

فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ۝۳

अस बी अपनी पुलसै^२ गी बुलागे ॥ 19 ॥

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۝۴

दुश्मन दी मरजी दे मताबक गल्ल नेई होग।
(इस आस्तै हे नबी!) तूँ इस (चाल्ली दे
इन्कारी) दा आज्ञा-पालन नेई कर ते (सिर्फ
अपने रब्ब दे हजूर च/सामनै) सजदा कर ते
(इस सजदे दे नतीजे च अपने रब्ब दे) होर
लागै होंदा जा ॥ 20 ॥ (रुकू 1/21)

كَلَّا لَا تَطِعَهُ وَأَسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۝۵

1. यानी असल च ते इन्सान गिरे दा गै ऐ, पर ओह चोटी ओहदी बड़ाई ते इज्जत दी नशानी होंदी ऐ। इस आस्तै ओह झूठी ते कसूरबार ऐ की जे ओह महापापी गी इक महान आदमी प्रकट करदी ऐ।
2. इस ज'गा 'पुलस' दा अर्थ अजाब देने आहले फरिश्ते ऐ जो इस संसार च बी ते परलोक च बी सचाई दा इन्कार करने आहले लोकें गी स'जा दिंदे रौहदे न।

سُورَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ سِتُّ آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

सूर: अल्-क्रद

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां छे आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांस लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

असें सच्चें गै इस (कुरआन) गी इक
(म्हत्तवपूर्ण) भागली¹ रातीं च उतारेआ ऐ
॥ 2 ॥

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ②

ते (हे संबोधत!) तुगी केह पता ऐ जे (एह
म्हत्तवपूर्ण) रात जिस च तकदीरां (भाग)
उतारी दियां न, केह चीज ऐ? ॥ 3 ॥

وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ③

एह (म्हत्तवपूर्ण) तकदीरें आहली (भागली)
रात ते ज्हार म्हीने² शा बी बेहतर ऐ ॥ 4 ॥

لَيْلَةُ الْقَدْرِ حَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ④

1. इस दा एह अर्थ ऐ जे नबी दा समां रातीं आंगर होंदा ऐ, पर ओह रात ऐसी होंदी ऐ जेहदे च अल्लाह पासेआ भविक्ख बारें फैसले होंदे न। इस लेई इस सूरत च दस्सेआ गेदा ऐ जे पवित्र कुरआन मजीद गी असें तकदीरां यानी भाग उतारने आहली रातीं च उतारे दा ऐ यानी भविक्ख च जे किश इस संसार च घटने आहला ऐ, ओह इस कुरआन च ब्यान करी दिता गेआ ऐ। इस दा इक अर्थ एह बी जे असें हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. गी महत्तवपूर्ण ते भागली रातीं च उतारेआ ऐ।
2. हदीसें शा पता लगदा ऐ जे इक ज्हार साल गुमराही दे होंगन। हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. आखदे न जे सोरें शा अच्छी सदी ओह ऐ जिस च अ'ऊं आं, फी ओह सदी बेहतर होग जो इसदे बा'द आँग, फी उसदे बा'द औने आहली सदी बी बेहतर होग, फी गुमराही ते अंधकार दा युग होग। (मिशकात शरीफ) इस आस्तै ज्हार म्हीने दा अर्थ ज्हार साल ऐ ते साल बी ओह जिंदे च हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दी शीतल छाया सुंगड़ी गेदी ही ते बुराई फैली चुकी दी ही। इस पासे संकेत करियै दस्सेआ गेदा ऐ जे एह अध्यात्मक रात दा युग जिस च हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दा अवतार होआ जां पवित्र कुरआन उतरेआ, रात होने पर बी हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दे कारण गुमराही दे ज्हार ब'रें शा बेहतर होग।

(हर चाल्ली दे) फरिश्ते ते (कामिल) रूह
उस (रात) च अपने रब्ब दे हुकम कन्नै सारे
(अध्यात्मक ते संसारक) मामले लेइयै उतरदे
न ॥ 5 ॥

مَسْأَلَةً
مِنْ رَبِّهِمْ

تَنْزِيلُ الْمَلَكَةِ وَالرُّوحِ فِيهَا
يَأْذِنُ رَبِّهِمْ مِنْ كُلِّ أَمْرٍ ۝

(फ़ी फरिश्ते दे उतरने परैत ते) सलामती'
(गै सलामती होंदी) ऐ (ते) एह् (अवस्था)
सवेर होने तगर (रौहदी) ऐ ॥ 6 ॥ (रुकू 1/
22)

سَلَامٌ
عَلَيْهَا

سَلَامٌ هِيَ حَتَّىٰ مَطَلَعِ الْفَجْرِ ۝

-
1. यानी नबी दी विजय तक अल्लाह दे फरिश्ते ओहदे कन्नै रौहदे न ते उस बेलै तगर साथ नेई छोड़दे जिन्ना चिर सफलता हासल नेई होई जंदी। “फरिश्ते दे उतरने दे बा'द ते सलामती गै सलामती यानी शांति गै शांति होंदी ऐ” दा अर्थ एह् ऐ जे भामें ओह् युग न्हेरला होंदा ऐ तां बी अल्लाह, नबी दी ब'जा करी उस युग च नेकां बरकतां उतारदा ऐ ते ओह् बरकतां उच्चर उतरदियां गै रौहदियां न जिन्ना चिर जे सवेर नेई होई जा यानी ओह् समां जिस च गुमराहो दे बा'द हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दा रहानी अवतार होग।
-

سُورَةُ الْبَيْئَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعُ آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

सूर: अल्-बय्यिन:

एह सूर: मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां नौ आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने (ते) बार-बार रैहम करने
आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

ओह लोक जिनें कुफर कीता ऐ यानी कताब
आहले ते मुश्रिक (दमें गै) कदें (अपने
कुफर शा) रुकने आहले नथे, जिन्ना चिर
तक जे उंदे कश स्पष्ट प्रमाण' नेई आई
जंदा ॥ 2 ॥

لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ
وَالْمُشْرِكِينَ مُنْفَكِينَ حَتَّى تَأْتِيَهُمُ
الْبَيْئَةُ ②

यानी अल्लाह पासेआ औने आहला इक रसूल
जो (उनेगी ऐसी) पवित्तर कताबां पढ़ियै सुनांदा
॥ 3 ॥

رَسُولٌ مِنَ اللَّهِ يَتْلُو صُحُفًا مُطَهَّرَةً ③

जिंदे च कायम रौहने आहले आदेश' होन
॥ 4 ॥

فِيهَا كُتِبَ قِيمَةٌ ④

ते (अजीब गल्ल एह ऐ जे) जिनें लोकें गी
(कुर'आन मजीद जैसी मकम्मल) कताब दिती

وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ

1. मतलब एह ऐ जे कताबा आहले गलत जां स्हेई तौरा पर इक गासी कताबा कनै बावस्ता (संबंधत) हे। इस आसतै जिच्चर हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. कुर'आन मजीद लेइयै नेई आँदे उच्चर उंदे सुधार दी कोई संभावना नेई ही।
2. यानी ओह स्पष्ट कताब बी ऐसी ल्याए जेहदे च सदा अटल रौहने आहली सचाइयां होन तां जे यहूदिये ते ईसाइये पर साबत होई जा जे सादियां कताबां त्रुटिये आहलियां ते मितने आहलियां न, पर स्थाई ते कायम रौहने आहली कताब ऊऐ ऐ जो हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. ल्याए न। इस लेई उंदे पर ईमान आदे बिजन कोई चारा नेई।

गेई ऐ ओह उस स्पष्ट प्रमाण (यानी रसूल) दे औने दे बा'द गै (बक्ख-बक्ख गरोंहें) च) बंडोए न ॥ 5 ॥

हालांके उनेंगी इयै हुकम दिता गेदा हा जे ओह सिर्फ इक खुदा दी अबादत करन ते अबादत गी सिर्फ ओहदे आस्तै मखसूस करी देन (इस हालत च जे) ओह अपनी नेक भावनाएं च द्रिद्व विश्वास रक्खने आहले होन ते (फी सिर्फ इस गल्ला दा हुकम दिता गेदा हा जे) नमाज जमात कनै पढ़दे रौहन ते जकात देन ते इयै (महेशां सचाई पर) कायम रौहने आहला धर्म ऐ ॥ 6 ॥

कताब आहलें ते मुश्रिकें (अनेकेश्वरवादी लोकें) चा कुफर पर कायम रौहने आहले लोक सच्चें गै ज्हनम दी अग्गी च (दाखल) होंगन (ते ओह) उससै च रौहगन। ऊऐ लोक बुरे लोक न ॥ 7 ॥

(इस दे मकाबले च) ओह लोक जो (कताब आहलें ते मुश्रिकें चा) ईमान ल्याए ते उनें (ईमान दे मताबक) नेक कर्म कीते, ऊऐ लोक सारें शा अच्छे प्राणी/लोक न ॥ 8 ॥

उंदा बदला उंदे रब्ब दे हजूर च (यानी कोल) कायम रौहने आहले बाग होंगन जिंदे हेठ नैहरां बगदियां होंगन, ओह उंदे च बास करडन। अल्लाह उंदे पर राजी (यानी खुश) होई गेआ ते ओह ओहदे (अल्लाह) पर राजी (खुश) होई गे। इयै (बदला) उस दी शान दे मताबक ऐ जो अपने रब्ब शा डरदा ऐ ॥ 9 ॥ (रुकू 1/23)

بَعْدَمَا جَاءَتْهُمْ الْبُرْهَانَةُ ۝

وَمَا أَمْرٌ إِلَّا لِعِبَادِ اللَّهِ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ خُنْفَاءً وَيَقْتُمُوا الصَّلَاةَ وَيُوْتُوا الزَّكَاةَ وَذَلِكَ دِينُ الْقِيَمَةِ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۗ أُولَئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝

جَزَاءً وَهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۗ أَبَدًا ۖ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۗ ذَلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُ ۝

1. यानी जिनें कताब आहलें दे समे च पक्वितर कुर'आन उतरेआ ऐ ओह पैहलें ते अपनी झूठी व्हानियें पर खुश हे, पर हून ओह लोक गै पक्वितर कुर'आन मजीद दी सच्ची गल्लें दे मकाबले च बाईबिल दी झूठी गल्लें गी पेश करियै इखलाफ करदे न।

سُورَةُ الزَّلْزَالِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ تِسْعُ آيَاتٍ وَرُكُوعٌ

सूर: अल्-ज़िज़्ज़ाल

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां नौ आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांs लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

जिसलै धरती गी पूरी चाल्ली ल्हाई दिता'
जाग ॥ 2 ॥

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝

ते धरती अपना बोझ कडिद्वयै सुट्टी देग'
॥ 3 ॥

وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ۝

ते इन्सान आखी देग जे उसी केह होई गेदा'
ऐ ॥ 4 ॥

وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ۝

उस दिन ओह अपनी (सारी गै गुप्त⁴) खबरं
(गल्लां) ब्यान करी देग ॥ 5 ॥

يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ۝

1. यानी धरती दे अंदर ते बाहर भंचाल आँगन जियां जे अजकल धरती दे अंदर लावे करी बी ओहदे च भंचाल आवा करदे न ते अणुबंबें ते हाईड्रोजन बंबें करी बी उसदे बाहर भंचाल आवा करदे न ते अध्यात्मक रूप च बी ऐसे-ऐसे अंदोलन चला करदे न जिंदी ब'जा करी धरती पर रौहने आहलें दे दिल कंबी गेदे न।
2. इस दा एह अर्थ ऐ जे जिनियां बिदयां ते ज्ञान इस संसार च छप्पे दे न ओह जाहर होन लगी पौगन, भामें ओह धार्मिक होन जां संसारक जियां जे इस बेलें विज्ञान बी त्रक्की करा करदा ऐ ते पवित्र कुर'आन दा इलम बी नमें शा नमें रूपै च बंदोआ करदा ऐ।
3. यानी उस युग च मनुक्ख रूहान होई जाग ते गलाग जे गल्ल केह ऐ, अज्ज धरती च बी लावा फुट्टा करदा ऐ ते बाहरा दा बी भंचालें दे समान (सरिस्ते) कीते जा करदे न ते अध्यात्मक तौरा पर बी ऐसे अंदोलन चलाई दिते गे न जिंदे करी धरती पर रौहने आहलें दे दिल कंबी गे न।
4. अंतम युग यानी कलयुग दे बाँरे जिनियां भविक्खवाणियां हियां ओह सब पूरियां होई जांगन, आखो जे उस दिन धरती अपने गुप्त भंडारें गी जाहर करी देग।

इस लेई जे तेरे रब्ब नै उस (धरती) बारै वह्नी करी रक्खी दी ऐ ॥ 6 ॥

بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ۝

उस रोज लोक बक्ख-बक्ख गरोहें दे रूपै च' ज'मा होंगन तां जे अपनी-अपनी कोशशें दे नतीजें गी दिक्खन ॥ 7 ॥

يَوْمَئِذٍ يَصُدُّرُ النَّاسَ أَشْتَاتًا ۝
لِيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ۝

फो जिसनै इक कण बरोबर (बी) नेकी² कीती दी होग ओह उस (नतीजे) गी दिक्खी लैग ॥ 8 ॥

فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۝

ते जिसनै इक कण बरोबर बी बुराई³ कीती दी होग ओह उस (नतीजे) गी दिक्खी लैग ॥ 9 ॥ (रुकू 1/24)

وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۝

1. मतलब एह ऐ जे ओह समां अजादी दा होग ते बक्ख-बक्ख दल एह घोशना करडन जे साढ़े दल दा एह नांs ऐ ते एह कम्म ऐ ते ऐसा करने कन्नै उंदा मकसद एह होग जे लोक उंदे नांs ते कम्म दिक्खियै उंदे दल च शामिल होई जान ते दुनियां आहले उंदे बारै एह गलाई देन जे उंदा दल गै श्रेष्ठ ऐ।
2. इस च दस्सेआ गेदा ऐ जे उस आखरी युग च मानव समाज कन्नै अल्लाह बैसा ब्यहार करग जैसे उसदे कर्म होंगन ते कोई कौम उससै लै अच्छा फल पाई सकग जिसलै जे ओह नेक होग।
3. यानी कोई कौम बी बुरी होंदे होई लोके गी धोखा नई देई सकग।

سُورَةُ الْعَادِيَّاتِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ اثْنَتَا عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعٌ

सूर: अल्-आदियात

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां बारां आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अ'ऊं शहादत दे तौरा पर उनें जमातें गी
पेश करना जो घोड़े पर चढ़ियै इस चाल्ली
बे-ल्हाशा दौड़दियां न जे उंदे घोड़े दे मूहां
अवाजां निकलन लगी पौंदियां' न ॥ 2 ॥

وَالْعَدِيَّتِ صَبْحًا ①

इंदे अलावा उनें घोड़ सुआरें गी जिंदियां
सुआरियां (घोड़े) चोट मारियै चंगारियां
कढदियां' न ॥ 3 ॥

فَالْمُورِيَّتِ قَدْحًا ①

फी बडलै-बडलै हमला^३ करने आहलें गी
॥ 4 ॥

فَالْمُعِيرَاتِ صَبْحًا ①

1. इस आयत च इस्लाम दी सचाई गी सिद्ध करने आस्तै सहाबा (यानी हजरत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. दे साथियें) गी पेश कीता गेदा ऐ। भामें इत्थें घोड़े शब्द बरते दा ऐ पर घोड़ा की जे आपूं नेई चलदा बल्के उसी सुआर चलांदा ऐ इस लेई इस दा अर्थ घोड़े पर सुआर होने आहली जमातां न यानी सहाबा जो जिहाद करदे हे।
2. इस आयत दा ब्यौरा बी ऊऐ ऐ जो आयत 2 दी टिप्पणी च लिखे दा ऐ।
3. इस आयत नै सारा भेद खोहलीं दिता ऐ जे इस ज'गा पर सहाबा दा बर्णन ऐ नां के सिर्फ सुआरियें दा की जे इत्थें बडलै हमला करने दा जिकर ऐ ते ऐसी सावधानी/हुर्यारी कर्नै हमला करना घोड़े दा कम्म नेई बल्के सुआरै दा कम्म ऐ।

जिसदैं नतीजे च उस (बडलैं) मौकैं धूड़ां
डुआंदै^१ न ॥ 5 ॥

فَأَشْرَبَ بِهِنَّ نَعْمًا ۝

ते लश्कर च दड़ी जंदे न^२ ॥ 6 ॥

فَوَسَطْنَ بِهِ جَمْعًا ۝

इन्सान सच्चें गैं अपने रब्ब दा बड़ा नाशुकर-
गजार^३ ऐ ॥ 7 ॥

إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ ۝

ते ओह सच्चें गैं इस पर (अपने कथन ते अपने
कर्म कन्नै) गुआही देआ करदा ऐ ॥ 8 ॥

وَإِنَّهُ عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشَهِيدٌ ۝

ते ओह (बावजूद इसदे) सच्चें गैं धन कन्नै
प्रेम च बौहत बधी चुके दा^४ ऐ ॥ 9 ॥

وَإِنَّهُ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيدٌ ۝

क्या ऐसा इन्सान नेई जानदा जे जिसलैं ओह
(लोक) जो कबरें च न टुआले जांगन ॥ 10 ॥

أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ ۝

ते जे किश सीनैं च (छप्पे दा पेदा) ऐ,
कड्ढी लैता जाग^५ ॥ 11 ॥

وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُورِ ۝

उस रोज उंदा रब्ब सच्चें गैं उंदी नगरानी करने
आहला होग ॥ 12 ॥ (रुकू 1/25)

عَلَّمَ

إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌ ۝

1. यानी जिसलैं ओह हमला करदे न तां सिर्फ रस्तें परा गैं चंगारियां नेई निकलदियां बल्के ऐसा शोर मचदा ऐ जे जिस ग्रां पर उनें हमला कीते दा होदा ऐ उल्थूं दे लोक घबराइयै निकली औंदे न ते सारा वातावरण धूड़ै कन्नै भरोची जंदा ऐ यानी धूड़ गैं धूड़ होई जंदा ऐ।
2. यानी एह घोड़सुआरें दा जत्था जो हमला करदा ऐ उस कौम दे लोकें गी दिक्खियै जिंदे पर हमला कीता गेदा ऐ, डरी नेई जंदा बल्के बड़ी ब्हादरी कन्नै उंदे च बड़ी जंदा ऐ जिसदे नतीजे च हत्था-पाई आहला युद्ध होन लगदा ऐ।
3. इस आयत च सहाबा कन्नै युद्ध करने आहलें दा जिकर ऐ जे ओह बड़े किरतघन न। सहाबा ते उंदे सामनैं अल्लाह दा कलाम पेश करदे न, पर ओह उंदा आदर ते सत्कार करने दे बजाऽ उल्टे उंदे कन्नै युद्ध करदे न।
4. यानी एह मुन्कर लोक इन्ना बी नेई समझदे जे मुसलमान जिंदे आस्तै अल्लाह नै विजय निश्चत करी रक्खी दी ऐ उंदे कन्नै युद्ध करने दा नतीजा ते एह निकलग जे उंदे धन नश्ट होई जांगन, पर ओह लालचवश ते अपनी अज्ञानता करी उंदे कन्नै लड़ाई करदे जंदे न, इस बिचार कन्नै जे होई सकदा ऐ जे कोई ऐसा ढंग बनी जा जे अस जीती जाचै ते धन-दौलत असेंगी मिली जा।
5. जेकर इनें आयतें गी ते इस संसार सामनैं रक्खियै दिक्खेआ जा तां एह अर्थ होग जे मुन्कर लोक जो दिक्खने गी ते जींदें न, पर धार्मिक ट्रिस्टी कन्नै कबरें च न (यानी मरे दे न)। जिसलैं उनेंगी इस्लाम दे मुकाबले पर खड़ा करी दिता जाग तां उंदे दिलें च जो भेद छप्पे दे न ओह बाँदै करी दिते जांगन यानी दिलें च ते ओह इस्लाम दियां मतियां सारियां सचाइयां मन्नी चुके दे न सिर्फ पराहले तौर पर इस्लाम दा मकाबला करा करदे न।

سُورَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمِلَةِ اثْنَا عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعٌ

सूर: अल्-क्रारिअ:

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां बारां आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांस लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

(दुनियां पर) इक बड़ी भारी मसीबत (औने
आहली ऐ) ॥ 2 ॥

الْقَارِعَةُ ۝

ते तुगी केह पता जे ओह मसीबत कनेही ऐ?
॥ 3 ॥

مَا الْقَارِعَةُ ۝

ते (फी अस आखने आं जे हे संबोधत!)
तुगी केह पता ऐ जे एह (बड़ी भारी)
मसीबत केह ऐ? ॥ 4 ॥

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝

(एह मसीबत जिसलै औंग) उसलै लोक
खिल्लरे दे पतंगें आंगर (रहान होए दे फिरा
करदे) होंगन ॥ 5 ॥

يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ
الْمَبْثُوثِ ۝

ते प्हाड़¹ पिंजी दी उनै आंगर होई जांगन
॥ 6 ॥

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوشِ ۝

उसलै जिसदे (कर्म दे) पल्लड़े भारी होंगन
॥ 7 ॥

فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ۝

ओह ते बौहत अच्छी ते पसंदीदा हालत च
होग ॥ 8 ॥

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ۝

1. जियां जे अस पैहलें बी केई बार लिखी चुके दे आं जे अरबी शब्द कोश च पर्वत दा अर्थ 'बड़डे लोक' बी ऐ ते इत्थें बी ऊए अर्थ लैते दा ऐ। भाव एह ऐ जे जिसलै ओह अति डरौनी मसीबत औंग यानी मुन्कर लोकें दी हार होग तां उस संकट काल च बजाए इस दे जे बड़डे-बड़डे लोक किट्टे होइयै हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. पर हमला करन, तांह-तुआंह नसदे फिरउन।

ते जिसदे (कर्म दे) पल्लड़े हलके होंगन
॥ 9 ॥

وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۝۹

उसदा ठकाना हाविया' (यानी ज्हन्नम) होग
॥ 10 ॥

فَأَمَّهُ هَاوِيَةً ۝۱۰

ते (हे मुखातब!) तुगी केह पता ऐ जे (हाविया)
केह ऐ ॥ 11 ॥

وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَ ۝۱۱

एह् इक प्रचुल्ल अग्नि ऐ ॥ 12 ॥
(रुकू 1/26)

۝۱۲

نَارٍ حَامِيَةٍ ۝۱۲

1. मूल शब्द 'उम्म' दा अर्थ माता ऐ पर असें इसदा अर्थ ठकाना कीता ऐ। इस दा कारण एह ऐ जे पवित्त
कुरआन नै माता गी बी मनुक्खें दे ठैहरने दा स्थान आखे दा ऐ। (दिकखो सूर: मोमिनून, आयत : 14)।

سُورَةُ التَّكْوِيْنِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمِلَةِ تِسْعُ آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

सूर: अल्-तकासुर

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां नौ आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

तुसेंगी इक-दूए शा अगें बधने! दी इच्छा नै
बे-परवाह करी दित्ते दा ऐ (ते तुस इसै
चाल्ली बे-खबर रौहगे ओ) ॥ 2 ॥

اَلْهٰكُمُ التَّكْوِيْنِ ۝

इत्थें तक जे तुस मकबरें (कबरें) च बी
पुज्जी जागे? ॥ 3 ॥

حَتّٰی زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝

(चंगी चाल्ली चेता रक्खो जे) तुस लोक
तौले गै (कुर'आन मजीद च ब्यान कीती गेदी
सचाई गी) जानी जागे ओ ॥ 4 ॥

كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝

फी (अस आखने आं जे थुआड़ी हालत इस
चाल्ली नेई जिस चाल्ली तुस समझदे ओ ते)
तौले गै तुसेंगी पता लगगी जाग (जे थुआड़ी
अंदरूनी हालत सच्चें गै ऊऐ ऐ जो कुर'आन
मजीद च ब्यान कीती गेदी ऐ) ॥ 5 ॥

تُمْ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝

1. इस आयत च एह संकेत कीता गेदा ऐ जे मुन्करें च नेकी ते कोई नथी पर ओह छल-कपट राहें मुसलमानें शा अगें बधने दे चाहवान हे ते इसदा नतीजा एह निकलेआ हा जे ओह अपने बनावटी कर्म गी असल कर्म समझी लेंदे हे ते इस चाल्ली धर्म दे तत्त शा बे-परवाह होई जंदे हे।
2. यानी मरने तगर उंदा इयै हाल रौहदा हा सिवाए किश ऐसे लोकें दे जिनेंगी अल्लाह आपू हदायत देई दिंदा हा। आपू हदायत पाने ते अल्लाह दी दिंती दी हदायत दा लाह लैने च बड़ा फर्क ऐ। आपू हासल कीती दी हदायत गी अल्लाह कन्नै जोड़ी नेई सकदे।

(असल सचाई थुआड़े बिचारे मताबक) हरगज नेई (ऐ) काश! तुस असल सचाई गी यकीनी इलम दी मददी कनै समझी सकदे ॥ 6 ॥

كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِينِ ۝١

(तां तुसेंगी पता लग्गी जंदा जे) तुस जरूर ज्हन्नम गी (इस्सै दुनियां च) दिक्खी लैगे ओ ॥ 7 ॥

لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ۝٢

ते फी इसदे बा'द तुस उसी यकीन दी अक्खीं कनै (आखरत च) बी दिक्खी लैगे ओ ॥ 8 ॥

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ۝٣

फी (एह बी याद रक्खो जे) थुआड़े शा उस रोज (हर बड्डी) नैमत दे बारै सुआल कीता जाग (जे तुसें उस दा शुकर कीता ऐ जां नेई कीता) ॥ 9 ॥ (रुकू 1/27)

ثُمَّ لَتَسْأَلَنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ۝٤

سُورَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ أَرْبَعُ آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

सूर: अल्-अस्र

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां चार आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अ'ऊं (हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. दे)
समे' गी शहादत दे तौरा पर पेश करना ॥ 2 ॥

وَالْعَصْرِ ①

(जे) सच्चें गै (नबियें दा बरोधी) इन्सान
(म्हेशां गै) घाटे च (रौहदा) ऐ ॥ 3 ॥

إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ ①

पर ओह लोक जो (रसूलें पर) ईमान ल्याए
ते (फी) उनें (मौके दे) हालातें मताबक
अच्छे कर्म कीते ते सचाई दे असूलें पर कायम
रौहने दा आपस च इक-दूए गी उपदेश दिता
ते (पेश औने आहली औखें पर सबर शा
कम्म लैने बारै) इक दूए गी हदायत दिंदे रेह
(ऐसे लोक कदें बी घाटे च नेई रेही सकदे)
॥ 4 ॥ (रुकू 1/28)

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
وَتَوَّاصُوا بِالْحَقِّ وَتَوَّاصُوا بِالصَّبْرِ ①

1. पवित्र कुरआन मजीद च मूल शब्द 'अल्-अस्र' व्यक्तिवाचक संज्ञा ऐ अल्-अस्र दा अर्थ हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. दा समां कीते दा ऐ।

سُورَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ عَشْرُ آيَاتٍ وَرُكُوعٌ

सूर: अल्-हुमज़:

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां दस्स आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

हर चुगली करने आहले (ते) ऐब हूंडने
आहले आस्तै अज़ाब गै अज़ाब ऐ ॥ 2 ॥

وَيْدٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ①

जो माल ज'मा करदा ऐ ते उसदी गिनती
करदा रौंहदा ऐ ॥ 3 ॥

الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ ①

ओह समझदा ऐ जे उसदा माल उस (दे नांऽ)
गी म्हेशां जीदा रक्खग ॥ 4 ॥

يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ ①

पर ऐसा बिल्कुल नेई (जैसा उसदा बिचार ऐ
बल्के) ओह सच्चें गै (अपने माल समेत)
हुतम': (नरकै) च सुदटेआ जाग ॥ 5 ॥

كَأَلَيْسُنْبُنَّانَ فِي الْحَطْمَةِ ①

ते (हे मुखातब!) तुगी केह पता ऐ जे एह
हुतम: केह शै ऐ? ॥ 6 ॥

وَمَا أَذْرَبُكَ مَا الْحَطْمَةُ ①

1. मूल शब्द हुतम: दा अर्थ नरक ऐ की जे हुतम: दा अर्थ होंदा ऐ जिसी तोड़ेआ जा। पवित्र कुरआन मजीद ते हदीसैं शा पता लगदा ऐ जे अल्लाह अपने बंदें पर रैहम करियैं आखर नरकें गी खतम करी देग। सूर: क़ारिअ: च जिकर आए दा ऐ जे इन्सान म्हेशां नरकें च नेई रौंहग। बल्के जिस चाल्ली मां दे डिड्डै च किश चिरे आस्तै रौंहदा ऐ, उसी चाल्ली किश चिरे आस्तै दोजख च रौंहग। फी बाहरै दी खुल्ली हवा यानी जन्नत च आई जाग। इसी चाल्ली हदीस च हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. नै गलाए दा ऐ जे ज़हनम पर इक ऐसा समां आँग जे उस च कोई शख्स नेई होग ते हवा उसदे दरोआजें गी खडकाग (तफ़सीर मुआलिमुलतन्जील सूर: हूद दी आयत फ़ाम्मल्लजनीना शक्कू दे हेठ)। इस हदीस शा बी कुरआन मजीद दी इस आयत दी तसदीक/पुष्टी होंदी ऐ।

एह (हुतम:) अल्लाह दी खूब भड़काई दी
अगग ऐ ॥ 7 ॥

نَارَ اللَّهِ الْمُوقَدَةِ ۝

जो दिलें दे अंदर तक जाई पुज्जग¹ ॥ 8 ॥

الَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى الْأَفْئِدَةِ ۝

फनी ओह (अगग) हर पासेआ बंद करी दिती
जाग तां जे उस दी गरमी उनेंगी होर बी ज्यादा
कश्टकारी मसूस होऐ ॥ 9 ॥

إِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّوَصَّاةٌ ۝

ते (ओह लोक उसलै) लम्मे खंभें कन्ने ब'न्ने
गेदे होंगन² ॥ 10 ॥ (रुकू 1/29)

عَمَّ

فِي عَمَدٍ مُمَدَّدَةٍ ۝

1. यानी इन्सान दे अंदर (दिलें च) जो बिकार होंगन उनेंगी बी एह अगग जालियै भसम करी देग।
2. यानी जिसलै अल्लाह दा अजाब औग तां अल्लाह दा रहम चाहग जे उनेंगी नरकें चा बाहर कइडै, पर उंदे पुरखें दे रीत-रबाज जिंदे पर ओह चलदे हे, उनेंगी नरकें च रक्खने पर मजबूर करडन की जे उंदे करी गै उनें ऐसे बुरे कर्म काते हे जिंदे कारण ओह नरकें दे सख्त अजाब दे भागी बनी गे।

سُورَةُ الْفِيلِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ سِتُّ آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

सूर: अल्-फ़ील

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां छे आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

(हे मुहम्मद!) क्या तुसेंगी पता नेई जे थुआड़े
रब्ब नै हाथी (इस्तेमाल करने) आहलें कने
कनेहा सलूक/ब्यहार कीता हा'? ॥ 2 ॥

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ
بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ①

क्या (उनेंगी हमला करने शा पैहलें गै तबाह
करियै) उंदे मन्सूबे गी नकाम नेई बनाई दिता?
॥ 3 ॥

أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ①

ते (उसदे बा'द) उंदी (लाशें पर डारें दे डार
पैछी भेजे) ॥ 4 ॥

وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ①

(जो) उंदे (मासै) गी सख्त किसमै दे पत्थरै
पर मारदे (ते नोचदे) हे? ॥ 5 ॥

تَرْمِيَهُمْ بِحِجَارٍ مِّنْ سِجِّيلٍ ①

इस आसतै इस दे नतीजे च उसनै उनेंगी ऐसे
भोऽ (खुरें हेठ मले दे सूहनै) आंगर करी
दिता जिसी पशुएं खाई (नकारा करी) लेदा
होए ॥ 6 ॥ (रुकू 1/30)

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّا كُوِّلٍ ①

1. 'अबरहा' एबेसीनिया दी व्हूमत पासेआ यमन दा राजपाल हा ते उसनै अल्लाह दे घर 'काबा' गी ढाने दी इस आसतै कसम खादी ही जे कुसै अरब दे बशिंदे नै गिरजे च सचेता फिरी दिता दा हा। इस आयत च अबरहा दी घटना पासे संकेत ऐ जे उसदे हमले मौकै उसी केह-केह स'जा मिली ही।
2. इल्ल बगैरा पैछी जिसलै लोथें गी खंदे न तां उनेंगी इस चाल्ली खंदे न जे पैहलें मरदाई दे मासै दा इक टुकड़ा लेइयै उठी जंदे न ते उस टुकड़े गी पकड़ियै बार-बार पत्थरै पर मारदे न ते फी खंदे न। पत्थरै पर मारने दा कारण एह होदा होना जे जेकर मासै दे टुकड़े गी रेत-मिट्टी बगैरा लगगी दी होग तां झड़ी जाग।
3. यानी जियां खादे दा भोऽ (सूहन) कुसै कम्मै दा नेई रौहदा उसै चाल्ली हाथी आहले लोक भलेआं नकारा होई गे।

سُورَةُ قُرَيْشٍ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ خَمْسُ آيَاتٍ وَرُكُوعٌ

सूर: कुरैश

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां पंज आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जे बे-
हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार रहम
करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

(दूए मकसदें दे अलावा) कुरैश दे दिलें च
प्रेम पैदा करने आस्तै' ॥ 2 ॥

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ①

यानी उंदे दिलें गी गरमी ते सरदी दे सफरें शा
प्रेम पैदा करने आस्तै (असें अबरहा गी तबाह
कीता) ॥ 3 ॥

الْفِئْمَةُ رِحْلَةُ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ ②

इस लेई उंदे आस्तै जरूरी ऐ जे ओह (कुरैश)
उस घर (यानी काबा) दे मालक दी अबादत
करन ॥ 4 ॥

فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَذَا الْبَيْتِ ③

जिसनै उनेंगी (हर किसमै दी) भुक्खै (दी
हालती) च खाना खलाया ते (हर चाल्ली
दे) खौफ दी हालत शा चैन बख्खोआ ॥ 5 ॥
(रुकू 1/31)

الَّذِينَ أَطْعَمَهُمْ مِنْ جُوعٍ ④

وَأَمَّهُمْ مِنْ خَوْفٍ ⑤

1. इस आयत च मूल शब्द 'लिईलाफ' च 'ल' एह दस्सने आस्तै बरतोए दा ऐ जे इस सूर: दा सरबंध पैहली
सूर: कनै ऐ यानी 'अबरहा' दी तबाही दी घटना इस आस्तै घटी ही जे मक्का दे लोक असानी कनै तांह-
तुआह फिरी सकन।

سُورَةُ الْمَاعُونِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ ثَمَانِي آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

सूर: अल्-माऊन

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां अदठ आयतां ते इक रूकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांस लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۞

(हे मुखातब!) क्या तोह उस शख्स गी
पन्खानेआ जो धर्म गी झुठलांदा ऐ ॥ 2 ॥

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالذِّينِ ۞

रूऐ ते ऐ जो यतीम गी दुतकारदा होंदा हा
॥ 3 ॥

فَذَلِكِ الَّذِي يَدْعُ الْيَتِيمَ ۞

ते ओह गरीबें गी खाना खलाने आस्तै (लोकें
गी कदें बी) प्रेरणा नथा दिंदा ॥ 4 ॥

وَلَا يَحْضُ عَلَى طَعَامِ الْمَسْكِينِ ۞

ते उनें नमाजियें आस्तै बी तबाही ऐ ॥ 5 ॥

فَوَيْلٌ لِلْمُصَلِّينَ ۞

जो अपनी नमाजें शा बे-परबाह् रौहदे न ॥ 6 ॥

الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۞

(ते) जो लोक सिर्फ दखावे शा कम्म लैँन न' ॥ 7 ॥

الَّذِينَ هُمْ يَرَاءُونَ ۞

ते ओह अपने घरै दी सधारण चीज बी देने
शा (अपने आपै गी ते दूएँ गी) रोकदे रौहदे
न' ॥ 8 ॥ (रूकू 1/32)

وَيَمْتَعُونَ الْمَاعُونَ ۞

1. भाव एह ऐ जे उस शख्स दी बी तबाही होग जो धर्म गी झुठलांदा हा ते यतीम गी दुतकारदा हा ते गरीब गी खाना खलाने दी प्रेरणा नथा दुआंदा ते ओह बी जो दिल लाइयै नमाजां नथा पढ़दा, बल्के दखावे आस्तै पढ़दा हा।
2. यानी उस दा दिल ऐसा कठोर होई जंदा हा जे गरीबें गी ओह समान ते चीजां देने शा बी बचदा हा जेहकियां ओह किश दिनें आस्तै मंगियै फी बापस परताने दे बा'धे पर लैँन न ते ओह दूएँ लोकें गी बी आखदा ऐ जे गरीबें गी कोई चीज मंगने पर नेई देआ करो धामें ओह एह बा'धदा बी करन जे मंगियै लेती जाने आहली चीज परताई देंग।

سُورَةُ الْكُوْثَرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ اَرْبَعُ اَيَاتٍ وَ رُكُوْعٌ

सूर: अल्-कौसर

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां चार आयतां ते इक रकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांs लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

(हे नबी!) सच्चें गै असें तुगी कौसर' प्रदान
कीता ऐ ॥ 2 ॥

اِنَّا اَعْطٰیْكَ الْكُوْثَرَ ۝

इस आसतै तू (उसदे शुकराने च) अपने रब्ब
दी (बौहत ज्यादा) अबादात कर ते उससै
खातर कुरबानियां कर (दे) ॥ 3 ॥

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَاَنْحَرِ ۝

ते यकीन रक्ख जे तेरा बरोधी गै नरीना (नर)
उलाद शा बंचत होग² ॥ 4 ॥ (रकू 1/33)

ع
۱۳

اِنَّ سَانَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ۝

1. मूल शब्द कौसर दा अर्थ हर चीजै दी भरमाली ऐ ते ऐसे बंदे आसतै बी इसदा प्रयोग होंदा ऐ जो महादानी होऐ ते मता दान ते पुन करने आहला होऐ जियां जे हदीसें च हजरत मसीह बारे आँदा ऐ जे जिसलै ओह आँगन तां ओह लोकें गी धन देंग, पर लोक उस धन गी स्वीकार नई करडन। इस आसतै इत्थें आँने आहले इक उम्मती दा बर्णन ऐ यानी ओह हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दा अध्यात्मक रूपै च पुतर होग। इस आसतै इस सूर: च दस्सेआ गोदा ऐ जे इन्कारी लोक आखदे न जे हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दी नर संतान नई होने करी ओह औतर न, पर ओह औतर कियां होई सकदे न जिसलै जे उंदी अध्यात्मक संतान चा इक ऐसा शख्स प्रकट होने आहला ऐ जो हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दी शिक्षा दे भंडार लुटाग इत्थें तक जे लोक उसदे दिते दे धन गी लैने शा इन्कार करी देंग ते ऐसा धन जिसी लैने शा लोक इन्कार करदे न, ज्ञान दे गै भंडार होंदे न नई ते जाहरी ते सधारण धन बगीरा कुसै कश करोड़ों पौंड बी होन ते उसी इक पौंड बी दिता जा तां ओह उसी झट्ट स्वीकार करी लेंदा ऐ।
2. यानी तेरा बैरी अध्यात्मक संतान शा बंचत ऐ ते कुरआन मजबूद शा सिद्ध ऐ जे अध्यात्मक संतान मिलने करी मनुक्ख उस गरोह च शामल होंदा ऐ जेहदे कन्नै अल्लाह कलाम (गल्ल-बात) करदा ऐ ते जिसी इल्हाम ते वही होंदी ऐ। ऐसी अध्यात्मक संतान सिर्फ हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. गी मिलग। तुंदे बैरियें गी नई मिलग। जियां जे सूर: अहचाब आयत 41 च अल्लाह नै गलाए दा ऐ। इस आयत च संकेत ऐ जे मुन्करें दी संतान अल्लाह दी किरपा शा बंचत रौहग, इस आसतै उंदी संतान नर संतान नई खुआई सकग सवाए इस दे जे एह मुन्कर लोक हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. पर ईमान लेईं आँन जियां अबू-जहल दा पुतर इक्रमा ते अबू-सुफियान दा पुतर मुआविय: हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. पर ईमान ल्याए।

سُورَةُ الْكَافِرُونَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ سَبْعُ آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

सूर: अल्-काफ़िरून

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां सत्त आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

(अस हर समे दे मुसलमान गी आखने आं
जे) तू (अपने समे दे इन्कारी गी) आखी
दे(जे) सुनो! हे इन्कारियो ॥ 2 ॥

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ②

अ'ऊं थुहाड़े तरीकै आंगर अबादत नेई करदा
॥ 3 ॥

لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ③

ते नां तुस मेरे तरीकै आंगर अबादत करदे ओ
॥ 4 ॥

وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا أَعْبُدُ ④

ते नां अ'ऊं (उंदी) अबादत करना जिंदी अबादत
तुस करदे आए ओ ॥ 5 ॥

وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَا عَبَدْتُمْ ⑤

ते नां तुस(उसदी) अबादत करदे ओ जिसदी
अबादत अ'ऊं करग करना ॥ 6 ॥

وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا أَعْبُدُ ⑥

(उप्पर कीती दी घोशना दा नतीजा एह ऐ
जे) थुआड़ा धर्म थुआड़े लेई (इक तरीकाकार
निश्चत करदा) ऐ ते मेरा धर्म मेरे लेई
(दूआ तरीकाकार निश्चत करदा) ऐ ॥ 7 ॥
(रुकू 1 /34)

⑦

لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ⑦

سُورَةُ النَّصْرِ مَدْيَنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ أَرْبَعُ آيَاتٍ وَرُكُوعٌ

सूर: अल्-नस्र

एह सूर: मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां चार आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांउ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

जिसलै अल्लाह दी मदद ते पूरी विजय होई
जाग ॥ 2 ॥

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ②

ते तू इस गल्ला दे आसार दिक्खी लैग्गा जे
अल्लाह दे धर्म च लोक दलें दे दल दाखल
होंगन ॥ 3 ॥

وَرَأَيْتِ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي
دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ③

उस बेलै तू अपने रब्ब दी स्तुति करने दे
कनै- कनै उसदी पवित्रता दा यशोगान
करने च ब्यस्त रौह ते (मुसलमानें दी तरबीयत/
शिक्षा-दीक्षा च जो कुताहियां/कमियां होई दियां
होन उंदे पर) उस (खुदा) अगें परदा पाने
दी दुआउ कर । ओह सच्चें गै अपने बंदे पासै
रैहमत कनै परती-परतियै औने आहला ऐ
॥ 4 ॥ (रुकू 1/35)

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ④
إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ④

سُورَةُ الْاَلْهَبِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمِلَةِ سِتُّ آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

सूर: अल्-लहब

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां छे आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝۱

अबू-लहब¹ (अग्गी दे लोरे दे पिता) दे दमैं
हथ सुन्न होई गे न ते ओह (आपू) बी सुन्न
होइयै रेही गेआ ऐ ॥ 2 ॥

تَبَّتْ يَدَا اَبِيْ لَهَبٍ وَتَبَّ ۝۲

उसदे माल (धन) नै उसी कोई फायदा² नेई
दिता ते नां उसदी कोशशे³ गै (कोई फायदा
दिता ऐ) ॥ 3 ॥

مَا اَغْنٰی عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ ۝۳

ओह जरूर अग्गी च पौग⁴ जो (उस्सै आंगर)
लोरे आहली होग ॥ 4 ॥

سَيَصْلٰی نَارًا اِذَا تَلَهَبَ ۝۴

1. इस च जां ते अबू-लहब दे रंग पासै संकेत ऐ जो बौहत सफेद हा जां उसदे सभाऽ पासै संकेत ऐ जो अत गै क्रोधी हा जां इस्लाम दे हर बरोधी पासै उस दी अंदरूनी हालत गी दिखदे होई संकेत ऐ जां अमरीका ते रूस पासै संकेत ऐ जे इनें दौनीं अपने दो-दो साथी (मदादी) बनाई रखे दे न तां जे लड़ाई मौके कम्म औन। हथें दा अर्थ मदादी बी होई सकदा ऐ, की जे हथें कन्नीं बी मदद ते प्रतिरक्षा कीती जाई सकदी ऐ। अल्लाह आखदा ऐ जे एह दमैं दल भुल्लै च होंगन। इक दल त्रिमूर्ती उपासक होग ते दूआ नास्तक। इस आस्तै असें इनें दौनीं दलें दे दौनीं हथें गी सुन्न करी दिता ऐ यानी उंदे जो बड्डे-बड्डे साथी न उंदे सर्वनाश दे समान पैदा करी दिते न ते इस्सै चाल्ली इनें दौनीं दलें दे सर्वनाश दे समान बी त्यार करी दिते न।
2. यानी ओह धनवान होंगन, पर उंदा धन उनेंगी कोई फायदा नेई देग।
3. उंदे कश महान वैज्ञानक साधन उपलब्ध होंगन पर ओह बी उनेंगी कोई लाह नेई देंगन।
4. यानी ओह आखरकार जरूर गै लौकिक जां पारलौकिक (दुन्याबी जां आखरत दे) अज्ञाब च पेइयै रौंहगन। ओह ऐसी गै लोरे उआलने आहली अग हाग जैसा उंदा दिला इस्लाम दे बरुद्ध ईरखा-द्रेश कन्नीं भड़का करदा ऐ।

ते उसदी लाड़ी' बी जो बालन चुक्की-चुक्की
आहनदी ऐ (अग्गी च पौग) ॥ 5 ॥

وَأَمْرَاتُهُ حَمَالَةَ الْحَطَبِ ۞

उसदी (लाड़ी दी) मुंडी च खजूरी दे
बूहटे दा सख्त' रस्सा ब'न्नेआ जाग ॥ 6 ॥
(रुकू 1/36)

عَمَّ

فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍ ۞

1. लाड़ी दा अर्थ मतैहत लोक न यानी देश दी जनता ते मतलब एह ऐ जे जो बरूनी (बाहरले) दोस्त ओह बनांगन, ओह बी तबाह होई जांगन ते उंदा धन बी तबाह होई जाग ते समान बी तबाह होई जाग ते उंदी जनता बी तबाह होई जाग। इस दा कारण एह ऐ जे जनता बी भड़काई दी अग्गी च बालन लांदी जंदी ही ते उनें गी जोश दुआंदी जंदी ही।
2. की जे एह जम्हूरी क्यूमतं हांगन। इस आस्तै उंदी रिआया अपने सियासी सरदारें कन्ने बड़ी गैहरी सांठ-गांठ रखदी होग, ऐसा जोड़ु जिसी तोड़ेआ नेई जाई सकदा। इस आस्तै इत्थें खजूरी दे रस्से दा जिकर कीते दा ऐ की जे ओह जुट्टी नेई सकदा ते एह दस्सेआ गेदा ऐ जे उंदी रिआया म्देशां उनेंगी उकसांदी रौहग जे लड़ाई आस्तै होर समान पैदा करो जेहदे पासै बालन चुक्की-चुक्की आहनने दा संकेत कीता गेदा ऐ।

سُورَةُ الْإِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ خَمْسُ آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

सूर: अल्-इखलास

एह सूर: मक्की ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां पंज आयतां ते इक रूकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

(अस हर युग दे मुसलमान गी आदेश दिन्ने
आं जे) तू (दूए लोकें गी) आखदा' रौह जे
(असल) गल्ल एह ऐ जे अल्लाह अपनी
सत्ता च इक्कला' ऐ ॥ 2 ॥

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ②

अल्लाह ओह (हस्ती) ऐ जिसदे सब मुल्हाज'
न (ते ओह कुसै दा मुल्हाज नई) ॥ 3 ॥

اللَّهُ الصَّمَدُ ③

1. मूल शब्द 'कुल' (आखीं दे) आखरी त्र'ऊं सूरतें शा पैहलें बरतेआ गेआ ऐ। एहदे च एह संकेत ऐ जे सद्दा एह सनेहा अगगें होर लोकें गी पुजाई दे। हून एह जरूरी गल्ल ऐ जे जिसलै हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. अल्लाह दा सनेहा लोकें तक पुजाई देंग तां उसदे बा'द बी लोक 'कुल' शब्द दा पाठ करदे रौहगन इस आस्तै उंदा बी फर्ज होई जाग जे ओह इस सनेह गी दूए लोकें तक पुजान। इस लेई 'कुल' आखियै इस पासै ध्यान दुआया गेदा ऐ जे तुस मेरी इस शिक्षा गी अपनै तगर गी सौमत नई रक्खां बल्के उसी दूए लोकें तक पुजाओ, फी तुंदे शा सुनने आहले लोक दूए लोकें गी सुनान इत्थें तक जे सारे संसार च अल्लाह दा सदिस पुज्जी जा।
2. मूल शब्द 'अहद' दा अर्थ ऐ इक्कला, अरबी भाशा च इक शब्द गी व्यक्त करने आस्तै द'ऊं शब्दें दा प्रयोग कीता जंदा ऐ 'वाहिद' ते 'अहद'। 'वाहिद' दा अर्थ होंदा ऐ इक, पर इसदे बोलने कन्ने दूए पासै ध्यान जंदा ऐ ते आखने आहला समझदा ऐ जे इक दे बा'द दो ऐ, दो दे बा'द त्रै ऐ। इस आस्तै एह शब्द इक दा अर्थ ते दसदा ऐ पर इक शा बद्द दी संभावना गी रद्द नई करदा। इसदे उलट 'अहद' दा अर्थ ऐ इक्कला। इक्कले दे बा'द दुक्कला नई होंदा। इस आस्तै इस शब्द दा अर्थ एह होंदा ऐ जे इस सत्ता दे कन्ने इयै नेही कुसै दूई सत्ता दे होने दी संभावना हें गे नई। इस सूर: च अल्लाह दे पूरे एकेस्वरवाद दा बर्णन ऐ ते इस शब्द गी आहनियै अल्लाह नै अपनी कामिल तौहीद (यानी पूरे एकेस्वरवाद) दी घोशना करी दिती ऐ।
3. मूल शब्द 'समद' दा अर्थ ऐ 'बे-न्याच' यानी जो कुसै दा मुल्हाज नई होऐ पर उसदे सारे गै मुल्हाज होन यानी ऐसा कोई नई जो उसदी मदद दे बगैर कायम रेही सकै। इस शब्द च बी कामिल तौहीद यानी एकेस्वरवाद गी पूरी चाल्ती स्पष्ट कीता गेदा ऐ ते दस्से दा ऐ जे इस संसार च जेहकियां बी चीजां हैंन ओह उस अल्लाह दे बगैर गुजारा नई करी सकदियां। हां अल्लाह गी इन्नं चीजें दी मदाद दी कोई जरूरत नई। 'समद' दा अर्थ सदा कायम रौहने आहला बी ऐ ते बड़ा मेहमाशाली बी ऐ। एह दर्में बी कामिल तौहीद गी सिद्ध करदे न। जो सदा कायम रौहग उसदा कोई मुकाबला नई करी सकदा ते जो मेहमा ते गौरब च इन्ना बधी जाग जे कोई दूई चीज उस तक नई पुज्जी सकदी इस आस्तै इस दा बी इयै भाव ऐ जे ओह इक्कला ऐ।

नां उसनै कुसै गी जनम दित्ते दा ऐ ते नां उसी
कुसै नै जनम दित्ते दा ऐ' ॥ 4 ॥

لَمْ يَلِدْهُ وَلَمْ يُولَدْهُ ۝

ते (उसदे गुणें च) उसदा कोई बी शरीक नेई^१
॥ 5 ॥ (स्कू 1/37)

ع
۷

وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝

1. एह आयत बी कामिल तौहीद यानी पूरे एकेश्वरवाद दा प्रमाण ऐ, की जे जिसनै कुसैगी जनम नेई दित्ते दा होऐ ओह जां ते बाझा होंदा ऐ जां फी ऐसी हस्तियें च होंदा ऐ जो परिवर्तनशील नेई होंदियां जियां पर्वत ते दरेआ बगैरा। पर खुदा दे बारै गलाया गेदा ऐ जे ओह बड़ी शान आहला ऐ इस आस्तै पर्वतें ते नदियें दी ओहदे कन्नै निसबत (संबंध) नेई होई सकदी ते नां उसगी कुसै नै जनम दित्ते दा ऐ' एह शब्द बी कामिल तौहीद गी सिद्ध करदे न की जे अल्लाह दे सिवा कोई हस्ती दुनियां च नेई लभदी जिसगी कुसै नै जनम नेई दित्ते दा होऐ।
2. पैहलें तौहीद (व्यक्तिगत एकेश्वरवाद) दा जिकर कीता गेदा हा। हून सिफाती तौहीद यानी अल्लाह दे गुणें दा बर्णन कीता गेदा ऐ। एह गल्ल याद रक्खनी लोड़दी जे गुणें च शरीक होने दा एह अर्थ नेई जे उसदे गुणें कन्नै मिलदी-जुलदी कोई गल्ल इन्सान शा नेई होंदी। इन्सान बी दिक्खने आहला ते सुनने आहला ऐ ते अल्लाह बी दिक्खने आहला ते सुनने आहला ऐ। इस आस्तै दिक्खने च तां एह इक समान सेही होंदा ऐ, पर अल्लाह दिक्खने आहला ऐ ते ओ बिना अक्खीं दे दिखदा ऐ। ओह सुनने आहला बी ऐ पर बिना कन्नै दे सुनदा ऐ। ते बगैर कुसै यंत्र यानी मशीन (आले) दे दिक्खने आहला ते सुनने आहला ऐ। इस आस्तै मनुक्ख बी दिखदा ऐ ते सुनदा ऐ पर ओह उसदे गुणें च शरीक नेई होई सकदा।

سُورَةُ الْفَلَقِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ سِتُّ آيَاتٍ وَرُكُوعٌ

सूर: अल्-फलक

एह सूर: मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां छे आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नांऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आह्ला (ते) बार-बार
रैहम करने आह्ला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

(अस हर युग दे मुसलमान गी आखने आं
जे) तूं (दूए लोकें गी) आखदा रौह जे अ'ऊं
सारी मख्लूक दे रब्ब शा (उसदी) शरण
मंगना ॥ 2 ॥

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝

उसदी हर मख्लूक दी (जाहरी जां गुप्त)
बुराई शा (बचने आस्तै) ॥ 3 ॥

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝

ते न्हारा' करने आहले दी हर शरारत शा
(बचने आस्तै) जिसलै जे ओह न्हारा करी
दिंदा ऐ ॥ 4 ॥

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝

ते सारे ऐसे प्राणियें दी शरारत^२ शा (बचने आस्तै
बी) जो (आपसी संबंधें दी) गि'रा च (संबंध
त्रोड़ने दी नीत कन्ने) फूकां मारदे न ॥ 5 ॥

وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ۝

ते हर हसद (ईरखा) करने आहले^३ दी शरारत
शा (बी) जिसलै ओह हसद (ईरखा) करने
पर तुली पौंदा ऐ ॥ 6 ॥ (रुकू 1/38)

ع
۝

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝

1. मूल शब्द 'गासिक' दा अर्थ अरबी भाशा च चन्न बी हौंदा ऐ ते 'गासक' दा अर्थ ऐ जिसलै न्हैया करी देरे, ते चन्न उसै लै न्हैया करदा ऐ जिसलै उसी ग्रैहन लग्गै। इस आस्तै इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे हे अल्लाह! तूं असेंगी उस युग दियें बुराइयें शा बचाऽ जिस युग च चंदरमां गी ग्रैहन लग्गग एह हजरत मुहम्मद मुस्ताफा स.अ.व. दी उस हदीस पासै संकेत ऐ जे साढ़े इमाम महदी आस्तै दी नशान जरूर निश्चत न जे उसदे जमाने च सूरज ते चंदरमा गी ग्रैहन लग्गग। (दार-कुतनी) इस आस्तै इस आयत च इमाम महदी दे समे पासै इशारा कींता गेदा ऐ ते मुसलमानें गी प्रार्थना करने दी प्रेरणा दिती गेदी ऐ जे हे खुदा! असेंगी इस गल्ला शा बचाई रक्खेओ जे अस इमाम महदी दा इन्कार करी देवै।
2. यानी ऐसा कर जे जो लोक असेंगी इमाम महदी शा दूर रक्खन अस उंदे फरेब च नेई औंचै।
3. इस च एह इशारा ऐ जे इमाम महदी राहें इस्लाम गी तीले-तीले वक्की मिलग ते इमाम महदी दे बरोधी उस पर बड़ी ईरखा करडन। इस आस्तै उस समे दे मुसलमान गी प्रार्थना सखाई गेदी ऐ जे हर ऐसे ईरखा करने आहले दी शरारत शा मिगी बचाऽ।

سُورَةُ النَّاسِ مَدْيَنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ سَبْعُ آيَاتٍ وَرُكُوعٌ

सूर : अल्-नास

एह सूर: मदनी ऐ ते बिस्मिल्लाह समेत
इस दियां सत्त आयतां ते इक रुकू ऐ।

अ'ऊं अल्लाह दा नाऽ लेइयै (पढ़ना) जो
बे-हद कर्म करने आहला (ते) बार-बार
रैहम करने आहला ऐ ॥ 1 ॥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝۱

(अस हर जमाने दे मुसलमान गी आखने आं जे)
तू (दूए लोकें गी) आखदा रैह जे अ'ऊं सोरे
इन्सानें दे रब्ब शा (उसदी) शरण मंगना ॥ 2 ॥

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝۲

(ओह रब्ब) जो तमाम इन्सानें दा बादशाह'
(बी) ऐ ॥ 3 ॥

مَلِكِ النَّاسِ ۝۳

ते तमाम इन्सानें दा उपास्य' (बी) ऐ ॥ 4 ॥

اِلٰهِ النَّاسِ ۝۴

(अ'ऊं उसदी शरण मंगना) हर-इक भरम
पाने आहले दी शरारत' शा जो (हर चाल्ली
दे भरम पाइयै) पिच्छें हटी जंदा ऐ ॥ 5 ॥

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝۵

1. इस आयत च इस पासै इशारा कीता गेदा ऐ जे आखरी युग च केई सम्राट इस्लाम दा बरोध करने आस्तै खड़े होई जांगन। इस आस्तै मुसलमानें गी सखाया गेदा ऐ जे ओह प्रार्थना करन जे साढ़ा असली सम्राट (यानी अल्लाह) असंगी संसारक सम्राटें दी शरारत शा बचाई रक्खै।
2. इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे साढ़ा असल सम्राट यानी अल्लाह सोरे संसार दा उपास्य बी ऐ, भी बी लोक उसदे मकाबले च झूठे उपास्य पेश करदे न पर अ'ऊं अपने असल उपास्य अगें एह प्रार्थना करना जे ओह मिंगी झूठे उपास्यें दी शरारत शा बचाई रक्खै।
3. इस आयत च दस्सेआ गेदा ऐ जे आखरी युग च जिसलै जे झूठे राजें ते झूठे उपास्यें दा जोर होग तां ऐसे लोक बी पैदा होई जांगन जो दिलें च शक्क पैदा करने आहले हांगन जियां प्रोफेसर बगैरा। इस आस्तै अल्लाह अगें एह बी प्रार्थना करदे र'वो जे ऐसे दार्शनिकें दी शरारत शा बी ओह मुसलमानें दी रक्षा करदा र'वै। इस शा अगें ऐसे दार्शनिकें दे कम्मै दा ढंग दसदा ऐ जे ओह लोकें दे दिलें च भरम-भलेखे पैदा करियें आपुं पिच्छें हटी जंदे न, यानी ऐसियां कताबां लिखदे न जिंदि कन्नै धरम दे खलाफ भरम-भलेखे पैदा ते होई जंदे न, पर सधारण दिश्टी कन्नै ओह कताबां धरम दे खलाफ नेई लभदियां।

(ते) जो इन्सानें दे दिलें च शक्क-शु'बे पैदा करी दिंदा ऐ ॥ 6 ॥

الَّذِي يُوسِّسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝۱

भामें ओह् (उपद्रवकारी) छप्पी दी' रौहने आहली हस्तियें चा होऐ, ते भामें आम लोकें चा होऐ ॥ 7 ॥ (रुकू 1/39)

۝۲

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝۲

-
1. इस थाहरा पर मूल शब्द 'जिन्न' छप्पे दे रौहने आहलें आस्तै बरते दा ऐ ते 'अन्नास' शब्द सधारण मनुक्खें आस्तै। मतलब एह् ऐ जे एह् भरम पैदा करने आहले लोक कदें ते बदेशी होंगन जो नजरी नई औंगन ते कदें देसी सधारण लोक होंगन जो अपने नाहरें कन्नै मोमिनें दे दिलें च भरम-भलेखे पैदा करडन।
-

دَعَا خَاتَمِ النَّبِيِّينَ

कुरआन समाप्ति पर प्रार्थना

اللَّهُمَّ ارْحَمْنِي بِالْقُرْآنِ الْعَظِيمِ وَاجْعَلْهُ لِي إِمَامًا وَنُورًا وَهُدًى وَرَحْمَةً.
اللَّهُمَّ ذَكِّرْنِي مِنْهُ مَا نَسِيتُ وَعَلِّمْنِي مِنْهُ مَا جَهِلْتُ وَارْزُقْنِي تِلَاوَتَهُ آثَاءَ
الْيَلِّ وَأَثَاءَ النَّهَارِ وَاجْعَلْهُ لِي حُجَّةً يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ.

हे अल्लाह! मेरी कबर च मेरी घबराट दूर कर! हे मेरे अल्लाह! मेरे पर पवित्र कुरआन दी बरकत कनै रहम कर! ते उसी मेरे आस्तै इमाम (यानी मार्ग दर्शक), नूर (प्रकाश), हदायत ते रहमत बनाऽ हे अल्लाह! जे किश अ'ऊं कुरआन मजीद चा भुल्ली चुके दा आं; ओह मिगी चेता कराई दे, ते जो मिगी नेई आँदा ओह मिगी सखाई दे ते दिन-रात मिगी इसदा पाठ करने दी तफीक (शक्ति/समर्थ) प्रदान कर ते हे सारे जहानें (लोकें) दे रब्ब! इसी मेरे फायदे आस्तै प्रमाण दे तौरै पर बनाई दे।

अल्लाह दे गुणवाचक नांऽ

कुरआन मजीद च ईश्वर दे नेकां नांऽ दस्से गेदे न। इंदे च इक नांऽ अल्लाह ओह्दा जाति नांऽ ऐ ते बाकी सब नांऽ गुणवाचक न।

1. अल्लाह - यानी ओह् सत्ता जेहकी सर्वशक्तिमान ते सर्वव्यापक ऐ ते जेहकी सारे सदगुणें दा भंडार ते हर अवगुण शा पवित्तर ऐ।
 2. अल्-रहमान - बे-हद किरपा करने आहला, बगैर मंगे देने आहला।
 3. अल्-रहीम - बार-बार रहम करने आहला, कुसै दी मैहनत ते परिश्रम दा बदला बधाई-चढ़ाइयें देने आहला।
 4. रब्ब - मालक, सुआमी, पैदा करने दे बा'द अपनी स्त्रिस्टी गी क्रमशः त्रक्की प्रदान करियें पूरी पराकाश्टा (उचाइयें) तक पुजाने आहला, पालनहार।
 5. मालिके - यौमिद्दीन - सर्वशक्तिमान जिसी हर चीजा पर कब्जा ते पूरा अधिकार जां प्रभुत्व हासल ऐ। इनाम ते स'जा दे समे दा सुआमी।
 6. अल्-मलिक - सम्राट, सारी धन-सम्पत्ति, सत्कार, बादशाहत दा पूरा ते असल सुआमी। पदार्थें दी स्त्रिस्टी ते उनेंगी क्रायम रक्खने पर पूरा अधिकार रक्खने आहला सुआमी।
 7. आलिमुल्-गैब - गैब (परोक्ष) दियें गल्लें दा इलम रक्खने आहला।
 8. अल्-कुद्दूस - सारी कमियें ते कलैकै शा पवित्तर, अपनी सत्ता च, गुणें च ते ज्ञान च बे-मसाल पवित्तर। दूएँ गी पवित्तर रक्खने आहला।
 9. अल्-सलाम - सलामती आहला, दूएँ गी शांति देने आहला, हर कमी शा सुरक्षत।
 10. अल्-मोमिन - शांति प्रदान करने आहला।
 11. अल्-मुहैमिन - शरणदाता, नरीक्षक।
 12. अल्-अजीज - प्रभुत्वशाली।
 13. अल्-जब्बार - तजस्वी, टुट्टे दे दिलें गी जोड़ने आहला, बगाड़े दा सुधार करने आहला।
 14. अल्-मुत्तकब्बिर - गौरव, उच्ची शान ते उच्चे औहदे दा सुआमी ते अधिकारी।
 15. अल्-खालिक् - हर-इक पदार्थ दा पूरी हिकमत कनै अंदाजा करने आहला, सिरजनहार।
 16. अल्-बारी - बनाने आहला, हर-इक पदार्थ दा आविश्कारक।
 17. अल्-मुसब्बिर - अपनी स्त्रिस्टी चा हर-इक गी ओह्दी परिस्थिति दे मताबक मनासब रूप ते अकार देने आहला।
 18. अल्-हकीम - हर-इक कम्म हिकमत कनै करने आहला, पदार्थें दे तत्त्व दा ज्ञाता।
-

-
19. अल्-गफ़फ़ार - बौहत् माफ़ करने आह्ला, कमजोरिये पर परदा पाने आह्ला, जेहदी माफी ते मुक्ति सर्वश्रेष्ठ होऐ।
20. अल्-कहहार - समर्थवान, अपने फ़ैसले गी मनोआने आह्ला।
21. अल्-वहहाब - बौहत् प्रदान करने आह्ला, महादानी।
22. अल्-रज्जाक - रुजगार / रिशक प्रदान करने आह्ला।
23. अल्-फ़त्ताह - खोहलने आह्ला, सच्च-झूठ गी स्पष्ट करने आह्ला।
24. अल्-अलीम - महाज्ञानी, अक्षुण ते असीम ज्ञान आह्ला, पदार्थे दे तत्त्व दा पूरा ज्ञान रक्खने आह्ला।
25. अल्-समी - बौहत् सुनने आह्ला, व्याकुल, दीन-दुखी दी प्रार्थना तौले सुनने आह्ला।
26. अल्-बसीर - बौहत् दिक्खने आह्ला, हर परिस्थिति ते हर बेल्लै दिक्खने आह्ला।
27. अल्-लतीफ - अत्त गुप्त भेतें दा ज्ञाता, देआ ते रैहम दा ब्यहार करने आह्ला।
28. अल्-खबीर - पदार्थे दे तत्त्व दा ज्ञाता, पूरा चैतन्य।
29. अल्-अज़ीम - महान गौरवशाली, ओह सत्ता जेहदा शासन पूरी ख़िस्टी पर फैले दा ऐ।
30. अल्-ग़फूर - बौहत् क्षमा करने आह्ला, पापें गी माफ़ करने आह्ला।
31. अल्-अलिय्यो - उच्च पद दा सुआमी, जिसदे पद च कोई शरीक नेई बनी सकै।
32. अल्-कबीर - बड़ेआई आह्ला, बड़ेआई प्रदान करने आह्ला।
33. अल्-मुत्ताल - उच्ची शान आह्ला, सारे अवगुणें शा पवित्तर।
34. अल्-कविय्यो - शक्तिशाली ते शक्ति प्रदान करने आह्ला।
35. अल्-मतीन - बौहत् बड़्डी शक्ति रक्खने आह्ला, सुदृढ़।
36. अल्-कदीर - सर्व शक्तिमान, ओह सत्ता जेहकी जिस गल्ला गी करने दा अरादा करी लै उसी पूरा करने दी पूरी-पूरी समर्थ रक्खै।
37. अल्-अफुव्वो - बौहत् क्षमा करने आह्ला।
38. अल्-वदूद - बे-हद प्रेम करने आह्ला, भले लोकें गी दोस्त बनाने आह्ला।
39. अल्-हादी - सन्मार्ग आह्ले पासै हदायत देने आह्ला।
40. अल्-रऊफ़ - लोकें पर बौहत् नरमी ते देआ करने आह्ला।
41. अल्-बिर् - श्रेष्ठ ब्यहार करने आह्ला, नेकी दा सिला केई गुणां बधाइयै देने आह्ला।
42. अल्-हलीम - अतिऐत्त सैहनशील, समर्थ रक्खने पर बी गुस्से च नेई औने आह्ला बल्के माफ़ करी देने आह्ला।
43. अल्-तव्वाब - सच्ची तोबा कबूल करने आह्ला, बार-बार रैहम करने आह्ला।
-

-
44. अल्-वकील - असली कार्य साधक।
45. अल्-शदीदुल इक्राब - पापें दी सख्त स'जा देने आहला।
46. अल्-वासेउल् मगफिर - पापें गी खट्टने (छपालने) आहला, बौहत माफ करने आहला।
47. अल्-हमीद - सारियें स्तुतियें दा सुआमी।
48. अल्-मजीद - हर चाल्ली दे गौरव, बड़ेआई ते शान दा सुआमी।
49. अल्-तौल - बौहत स्थान करने आहला।
50. अल्-वाली - अनुशासक, संरक्षक, सुआमी, स्हायक, प्रेम करने आहला, शरण देने आहला।
51. अल्-मुन्तक़िम - बुरे कर्में दी मनासब स'जा देने आहला, बदला देने च पूरी-पूरी समर्थ रक्खने आहला।
52. अल्-गनी - बे-परवाह, ओह सत्ता जेहकी कुसै दी मुत्हाज नेई होऐ पर सब ओहदे मुत्हाज होन। सारें दियां जरूरतां पूरियां करने आहला।
53. अल्-हसीब - स्हाब लैने आहला।
54. अल्-मोहयी - जींदा करने आहला।
55. अल्-हय्यो - सदा सर्वदा जीवत, हर पदार्थ दे जीवन दा अधार।
56. अल्-कय्यूम - अपनी सत्ता च क़ायम ते दूएंगी क़ायम रक्खने दा असली साधन।
57. अल्-अव्वल - सर्व प्रथम, सदा सर्वदा स्थिर रौहने आहला।
58. अल्-आख़िर - सारें शा अंत च रौहने आहली सत्ता, आदि ते अनादि। अल्लाह दा नां ते आदि ऐ नां अंत, एह अर्थ मानव गी द्रिस्टी च रखदे होई कीता गेआ ऐ वरना अल्लाह सदा-सर्वदा आस्तै क़ायम ऐ।
59. अल्-जाहिर - सारें शा ज्यादा जाहर (यानी स्पष्ट) हर-इक पदार्थ आखरकार उसदी सत्ता गी स्पष्ट करदा ऐ।
60. अल्-वातिन - अति गुप्त, हर-इक चीजा दा सत्त्व ओहदे राहें प्रकट होंदा ऐ, हर-इक चीजा दे सत्त्व दा ज्ञाता।
61. अल्-फ़ालि़क़ - कुसै चीजा गी इस चाल्ली फाड़ने आहला जे ओहदे चा श्रेष्ठ पदार्थ दी उत्पत्ति होऐ।
62. अल्-हन्नको - पूरा तत्त्व ते सचाई।
63. अल्-मुबीन - पूरे रूप च प्रकट करने आहला, पूरा प्रकाश।
64. अल्-वाहिद - कामिल रंग च इक, जिसदे एकत्व च कोई दूआ शरीक नेई होऐ।
65. अल्-अहद - इक्कला, अपनी सत्ता, गुणें, कर्में, ज्ञान ते समर्थ च बे-मसाल ते इक्कला।
66. अल्-मुकीत - पूरी समर्थ रक्खने आहला, पूरी स्त्रिस्टी गी रिशक प्रदान करने
-

-
- आह्ला, सारी शक्तियें दा मालक, हर-इक पदार्थ दी शक्तियें गी ठीक रक्खने आह्ला।
67. अल्-जामिओ - किट्ठा करने आह्ला, सारे गुणें दा भंडार।
68. अल्-मौला - सुआमी, प्रेम करने आह्ला, मसीबत ते कड़ाई/सख्ती दे मौकै स्थायता करने आह्ला।
69. अल्-नसीर - मदादी, कामयाबी ते खुशी प्रदान करने आह्ला।
70. ज़िल्-मआरिज - हर-इक पदार्थ गी क्रमशः बढ़ावा देइयै त्रक्की दे शिखर पर पुजाने आह्ला।
71. अल-रफ़ी - श्रेष्ठ औहदें आह्ला, हर चाल्ली दी उचाई ते शान दा सुआमी।
72. ज़ुल्-अर्श - अर्श दा सुआमी, सारे सदगुणें दी परकाशठा दे कन्नै अनुशासन दे सिंहासन पर बौहने आह्ला।
73. अल्-बदीओ - बिना कुसै पैहले आदर्श दे नमीं खिस्टी करने आह्ला, शून्य थमां अस्तित्त्व सत्ता प्रदान करने आह्ला।
74. अल्-फ़ातिर - पैहली बार पैदा करने आह्ला।
75. अल्-शकूर - गुणी, शुकरगज़ार गी होर बी ज़्यादा इनाम देने आह्ला।
76. अल-करीम - सारें शा बधियै दान करने आह्ला, बग़ैर मंगे उपकार करने आह्ला।
77. अल्-हफ़ीज़ - रक्खेआ करने आह्ला, अणु-परमाणु दा नरीक्षक।
78. अल्-क़रीब - लागै रौहने आह्ला, पल्लेआ मदाद करने आह्ला।
79. अल्-मुजीब - प्रार्थना कबूल करियै उत्तर देने आह्ला, बे-चैन दी पुकार सुनने आह्ला।
80. अल्-मुहीत - घेरने आह्ला, समर्थवान, नरीक्षक, जेहदा अतंक हर-इक पदार्थ पर छाए दा होए।
81. अल्-मालिकु ल्मुल्क - साम्राज्य ते अनुशासन दा सुआमी ते हर-चाल्ली दे प्रबंध दा असली सुआमी।
82. ज़ुल्-जलाल वल् इकराम - दबदबे ते सत्कार दा मालक ते दूएं गी समर्थ ते सत्कार प्रदान करने आह्ला, अति महान।
83. ज़ुल्-कु व्वत - बे-हद शक्तिशाली, सारी शक्तियें दा मालक, दूएं गी शक्ति प्रदान करने आह्ला।
84. अल्-रक़ीब - संरक्षक, अपनी खिस्टी शा बे-परवाह नैई होने आह्ला।
85. अल्-बासित - हर एक पदार्थ च बस्तार प्रदान करने आह्ला।
86. अल्-नूर - प्रकाश प्रदान करने आह्ला।
87. अल्-शाफ़ी - तंदरुस्ती प्रदान करने आह्ला।
88. अल्-हादी - हदायत देने आह्ला।
-

पारिभाषिक शब्दावली

पारिभाषिक शब्दावली

- अस्सलात-नमाज़ - मुसलमानें दी खास उपासना विधि, जेहदे च क्याम, रुकू ते सजदा बगैरा होंदा ऐ।
- अहले-किताब - कताब आहले, यहूदी ते इसाई जेहके तौरात नांऽ दी कताबा गी ईशवाणी मनदे न।
- अज़ाब - अल्लाह दी ना-फरमानी करने पर संसार च औने आहली बरबादी, बिनाश, बुरे कर्म दा फल, दुख, कष्ट, संकट, बिपता ते स'जा।
- अरफात - मक्का शैहरै थमां लगभग नौ मील दे फासले पर इक मदान जित्थे हज्ज आहले म्हीने दी नौमी तरीका गी सारे हाजी किट्टे होइयै प्रार्थना ते उपासना करदे न। इस ज'गा हर हाजी आस्तै पुज्जना जरूरी ऐ।
- अर्श - राज सिंहासन, गल्बा, आदर-सत्कार, अल्लाह दे पवित्तर जां कमी रहूत गुणें दा नांऽ ऐ जो अनादि ते अनंत जां अपरिवर्तनशील ऐ।
- अन्सार - स्थायक, साथी, मित्र। मदीना दे ओह लोक जिनें मक्का थमां हिजरत दे बा'द हजरत मुहम्मद मुस्ताफा सल्लअम ते उंदे साथियें दी मदद कीती।
- अहलेबैत - घरे आहले। कुसै नबी जां रसूल दे परिवार गी खास तौर पर हजरत मुहम्मद मुस्ताफा सल्लअम दे परिवार गी अहलेबैत (अनुयायी) आखदे न।
- आयत - कुरान मजीद दी सूरः दा इक हिस्सा, नशान, चमत्कार, युक्ति, प्रमाण, हदायत ते अज़ाब दस्सने आहली गल्ल।
- आखिरत - क्यामत, महाप्रलेआ, बा'द च औने आहली घड़ी ते भविक्ख च होने आहलियां ओह गल्लां जिंदा बा'यदा दिता गेदा ऐ।
- आदम - मानव मातर दा पैहला सुधारक जां पथ प्रदर्शक (मार्ग दर्शक) धरती पर बस्सने आहला ते गंदमी रंगे दा मनुक्ख।
- आराफ - उच्ची शान आहला थाहर ते पद। आराफ आहलें दा अर्थ सब नबी
-

| | |
|------------|---|
| | न ते हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम दी उम्मत दे कामिल ईमान आहले लोक न। |
| इमाम | - धार्मक नेता, सरदार, लीडर, नबी, रसूल, मार्ग दर्शक, ते ओह् शख्स जेहदा अनुसरण कीता जा। |
| इञ्जील | - शुभ-समाचार। ओह् शुभ-समाचार जेहके हजरत मसीह अलैहिस्सलाम गी अल्लाह पासेआ दित्ते गे हे। |
| इद्दत | - इक मुसलमान जनानी दे बिधवा होने जां तलाक़ मिलने पर कुसै दूए शख्स कनै ब्याह करने आस्तै इस्लामी शरीअत दी निरधारत अबधि गजारने दा नांऽ इद्दत ऐ, जेहका तलाक़ होने पर त्रै म्हीने ते बिधवा होने पर चार म्हीने दस दिन ते जनानी दे पटाली होने दी हालत च बच्चे दे जम्मने तगर ऐ। |
| इल्हाम | - संकेत करना, तौले संकेत करना, गल्ल दिलै च पाना, अल्लाह पासेआ उतरने आहली वाणी। |
| इस्लाम | - आज्ञा पालन करना। अल्लाह दे नियमें ते कुदरती सिद्धांतें दा पालन करना। इस्लाम ओह् धर्म ऐ जेहका हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम नै लोकें दे सामनै पेश कीता, जेहका अमन ते शांति दी तलीम दिंदा ऐ। |
| इफ़तरा | - जानी-बुञ्जी झूठ घड़ना। अपने पासेआ कोई गल्ल घड़ियै उसी अल्लाह कनै संबद्ध करना। |
| इस्त्राईल | - अल्लाह दा पैह्लवान जां सैनक। हजरत याक़ूब अलैहिस्सलाम दा इक गुणवाचक नांऽ ऐ जेहदे कारण उंदी संतान गी बनी-इस्त्राईल (यानी इस्त्राईल दी संतान आखदे न) ते फ़लस्तीन दा इक हिस्सा जेहदे च यहूदियें अपना राज स्थापत करियै ओहदा नांऽ इस्त्राईल रक्खेआ हा। |
| ईमान | - कुसै मन्तव्य गी मन्नना, जियां ईश्वर, फ़रिशतें, रसूलें, गासी कताबें ते परलोक सरबंधी जीवन गी मन्नना। एह् गल्लां मन्नने आहले गी मोमिन आखदे न। |
| ईला | - घरैआले दा सघंद खाइयै अपनी लाड़ी शा अलग्ग होई जाना ते हर चाल्ली दे सरबंधें गी तोड़ी देना। |
| उम्मुलकुरा | - बस्तियें दी मां, केन्द्र, उम्मुलकुरा कनै सरबंधत मक्का नांऽ दा शैहर ऐ। |

| | |
|------------------|---|
| उम्र : | - हज्ज आहले दिनें दे अलावा दूए दिनें च 'काबा' दे चपासै चक्कर लाना ते सफा ते मरवाह फ्हाडियें बश्कार सिलसलेवार चलना ते दौडना। |
| उम्मत | - सम्प्रदाय, गरोह, दल, कुसै नबी जां रसूल पर ईमान आहने आहले लोकें दी जमात ओहदी उम्मत खुआंदी ऐ। |
| एतिकाफ | - रमजान दे म्हीने दे आखरी दस दिन मस्जिद च अबादत बगैरा आस्तै दिन-रात रौहना। |
| एहराम | - हाजियें दा द'ऊं अनसीती चादरें आहला खास लाबा जेहका हज्ज जां उम्र: करदे मौकै पाया जंदा ऐ। |
| कियामत (क्यामत)- | - मरने दे बा'द अल्लाह दे सामनै खडोने दा समां, व्यक्तिगत मौत, कौम दी तबाही, पतन, परलोक ते महाप्रलेआ। |
| कब्र (कबर) | - मुडुदा दब्बने दा थाहर, ओह थाहर जां वातावरण जित्थें आतमा भौतक शरीर छोडने दे बा'द अपने कर्म मताबक नमां अध्यात्मक शरीर हासल करियै रौहदी ऐ। |
| क्लिब्ला | - आमनै-सामनै, ओह दिशा जेहकी मूहें दे सामनै होऐ, ओह दिशा जिस पासै मुसलमान मूह करियै नमाज पढदे न, काबा, जेहका मक्का च स्थित ऐ ओह मुसलमानें दा क्लिब्ला खुआंदा ऐ ते संसार-भरै दे मुसलमान ओहदे आहले पासै मूह करियै नमाज पढदे न। |
| कुर'आन-मजीद | - मुसलमानें दी धार्मिक गासी कताब। |
| किसास | - बराबर दा बदला। कुसै शख्स कनै ऊऐ ब्यहार करना जेहका उसनै दूए कनै कीते दा होऐ इस रूपै च जे जेकर उसनै कुसै गी कुसै चाल्ली दा कश्ट जां दुख पुजाए दा होऐ तां उसी उससै मताबक कश्ट जां दुख पुजाना जां कोई हौर ओहदे मताबक स'जा देनी। |
| कु सीं | - ज्ञान, शासन, आतंक, शान, गौरव, अनुशासन जां साम्राज्य। |
| कफ़ारा | - फ़िदयः, सिला, बदला। पापें दे फल शा मुक्ति हासल करने आस्तै कोई चीज बदले दे रूपै च अल्लाह दे नांS पर देनी। |
| काफ़िर (काफर) | - इन्कार करने आहला यानी अल्लाह, फ़रिश्ते, रसूल ते ओहदी कताब दा इन्कार करने आहला। |
| कलाला | - (क) ओह शख्स जेहका मरी जा ते ओहदी उलाद नेई होऐ। |

संतानहीन। औतर।

(ख) ओह जेहदी नां संतान होऐ ते नां गै मापे होन।

- कशफ - जाहर होना। जागदे होई कुसै गैबी नजारे गी दिक्खना। सुखने ते कशफ च एह फर्क ऐ जे सुखना सुत्ते दे होने पर दिक्खेआ जंदा ऐ, पर कशफ जागदे होई।
- कौसर - हर चाल्ली दियें चीजें दी भरमाली जां ऐसे लोकें दी बी होंदी ऐ जेहके महादानी होन।
- खुला - घरेआहली दा अपने किश हक्क-हक्क छोड़ियै अपने घरेआहले शा तलाक लैना।
- खलीफा - अधिनायक ते बारस। नबी जां रसूल दे बा'द ओहदी ज'गा लैने आहला ते ओहदा कम्म चलाने आहला।
- गनीमत - ओह धन-दौलत जेहकी युद्ध खेतर च विजेता (जेतू) दे हत्थ औंदी ऐ।
- गैब - परोक्ष। ओह सत्ता जेहकी इंद्रियें राहें नेई पन्छानी जाई सकै ते नां गै इनें अक्खीं कनै दिक्खी जाई सकै पर ओह मजूद होऐ, जियां अल्लाह, फरिश्ते बगैरा।
- गुलाम - जागत, दास। ओह शख्स जेहका युद्ध च शामिल होऐ ते बंदी बनाई लैता जा।
- जन्नत - सुर्ग, बैकुंठ, बाग, उपवन, सायादार बूहटें आहला, सुखद-सुहाना ते शांत स्थान ते अध्यात्मक ट्रिस्टीकोण कनै ओह थाहर जित्थें मरने दे बा'द नेक आतमां रौहडन।
- जिन्न - छप्पी दी रौहने आहली मख्लूक, बड्डे लोक, शक्तिशाली लोक, जेहके द्वारपालें ते ड्योदियें दे पिच्छें छप्पे दे रौहदे न।
- जुन्बी - जनानी कनै संभोग करने दे बा'द ते सुपन दोश होने पर मनुक्ख जुन्बी खुआंदा ऐ ते शनान करने दे बा'द पवित्तर होई जंदा ऐ।
- जिज्या - ओह टैक्स जेहका गैर मुस्लिम प्रजा शा उंदी जान-माल ते मान-मर्यादा दी रक्खेआ ते फौजी सेवें दे बदले च लैता जंदा हा।
-

| | |
|-----------------|--|
| जिब्राईल | - ईशवाणी आहने आहले फरिश्ते दा नांऽ। |
| जिहाद | - प्रयत्नशील होना। अपने सुधार आस्तै कोशश करनी अपना धर्म फलाने आस्तै शान्तिपूर्ण कोशश करनी, अपने धर्म दी रक्खेआ आस्तै युद्ध करना। |
| जहन्नम (जहन्नम) | - नरक, अध्यात्मक द्रिष्टीकोण कनै ओह् थाहूर ऐ जित्थें मरने दे बा'द बुरे कर्म दा फल भोगने आस्तै बुरी आतमां रौहडन। |
| जाकात | - इस्लाम दा ओह् आर्थक कर जेहका धनवान मुसलमानें द्वारा निश्चत दर कनै दिता जंदा ऐ जां गरीबें च बंडेआ जंदा ऐ। एह् देश दी भलाई आस्तै बी खर्च कीता जाई सकदा ऐ। पवित्तर करना। |
| तअव्वुज | - अल्लाह दी शरण च औना। कुरआन-मजीद दा पाठ करने शा पैहलें "आऊचुबिल्लाहि मिनशशैतानिरजीम" यानी अ'ऊं दुतकारे दे शतान थमां अल्लाह दी शरण चाहन्नां। |
| तौरात | - ओह् इल्हामी कताब जेहकी हजरत मूसा अलैहिस्सलाम पर उतरी ही। यहूदियें दी धार्मक कताब। |
| तौब: | - प्राहचित। पापें पर शरमिंदा होना। तौब: दियां त्रै किसमां न (क) दोश मन्थियै ओहदे पर दिली पछतावा करना (ख) पापें शा बेज्जर होइयै उंदे नवारण आस्तै चंगे कर्म करना (ग) अगैं आस्तै नेकियां ते परोपकार करना। |
| तरका | - बिरसा। मरने आहले द्वारा छोड़ी गेदी जैदाद। |
| तवाफ | - परदक्खन। कुसै चीजै जां थाहरै दे चबकखै चक्कर लाना, उम्र: जां हज्ज करदे मौकै काबा दे चबकखै सत्त चक्कर लाने। |
| तलाक | - छुटकारा। घरैआहले पासेआ नकाह दे करार दी जिम्मेदारी छोड़ी देने ते घरैआहली गी छोड़ी देने दी घोशना। |
| तलाक-रजूई | - ऐसा तलाक जेहदे च लाड़ी-मरहाज आपस च रजामंदी जां ताल-मेल करी सकदे न। घरैआहले गी ऐसा हक्क दो बार दे तलाकें तक ऐ, जेकर त्रीया तलाक होई जा, तां फी रुजुअ यानी आपसी सरबंध स्थापत नेई होई सकग, बल्के जुदाई होग। त्रीये तलाक गी तलाक-बत्त: जां तलाक-बाइन: यानी बक्ख करने आहला तलाक आखदे न। |
| तुहर | - पवित्तरता! जनानी दे मासक धर्म (कपडें औने) दे बा'द दी पवित्तर- |

अवस्था।

- तकदीर - अनुमान, भाग। अल्लाह दा कुसै गल्ला दे बारे च फैसला।
- तयम्मूम - पानी नेई थ्होने जां रोगी होने कारण पवित्र मिट्टी पर हथ मारियै उने हथें गी अपने मूहें ते हथें पर मलने दी क्रिया दा नांउ तयम्मूम ऐ।
- दियत - प्रतिकार, प्रतिशोध, बदला। ओह धन जेहका हत्या करने पर हत्यारे गी हरजाने दे रूपै च देना पौंदा ऐ।
- नसारा - हजरत ईसा मसीह दे अनुयायियें जां ईसाइयें गी नसारा आखदे न।
- निकाह - ओह करार जेहदी घोशना राहें इक पुरश ते जनानी आपस च लाड़ी-मर्हाज बनदे न।
- निअमत (नैमत) - अल्लाह आहले पासेआ थ्होने आहली हर इक भलाई। बख्शीश, इनाम। नैमत।
- निशान - युक्ति, सबूत, चमत्कार।
- फिद्यः - (दि.) कफ़ारा।
- फुक़ान - नशान, चमत्कार, सच्च ते झूठ च टकोहदा फर्क करने आहली गल्ल।
- बैअत - बिकी जाना, मन्नी लैना, चेला बनना, अनुयायी बनना, अनुयायी बनने आस्तै गुरु दे हथें पर हथ रक्खियै ओहदे आदेशें गी मन्ने दा करार करना।
- मस्जिद - मुसलमानें दी अबादतगाह।
- मस्जिदे हराम - आदरजोग मस्जिद। काबा बैतुल्लाह यानी अल्लाह दा घर जेहका मक्का च मजूद ऐ।
- मक्की सूरतां - कुरआन-मजीद दियां ओह सूरतां जेहकियां हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम दे हिजरत करने शा पैहलें उंदे पर उतरियां हियां।
- मदनी सूरतां - कुरआन-मजीद दियां ओह सूरतां जेहकियां हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम पर हिजरत करने दे बाद उंदे पर उतरियां हियां।
- महर - ओह धन जां चीज जेहकी इक पुरश अपने ब्याह दे मौके पर अपनी घरेआहली गी देने दा करार करदा ऐ। महर जनानी दी निजी संपत्ति हौंदा ऐ।
-

| | |
|------------|--|
| मशरुल्हराम | - एह हज्ज दा इक स्थान ऐ, जेहका अरफात ते मिना दे बश्कार मक्का थमां लग-भग छे मील दूर ऐ। इसी मुज्दलफा बी गलां दे न। |
| मुत्तकी | - संयमी, नेक। अल्लाह दे आदेशें दा पूरी चाल्ली पालन करियै ओहदे संरक्षण च औने आहला। |
| मुकातबत | - सुआमी ते दास दा आपसी ओह समझोता जेहदे फल-सरूप दास निश्चत धन सुआमी गी देइयै अजाद होई जंदा ऐ। |
| मुनाफिक | - ओह शख्स जेहका जाहरा तौर ईमान आहने दा प्रदर्शन करै, पर दिलै थमां इन्कार करने आहला होऐ। |
| मुसलमान | - ओह शख्स जेहका कलमा 'ला-इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' पढ़ै यानी अल्लाह दे सिवा कोई उपास्य नेई ते (हजरत) मुहम्मद मुस्तफा सल्लअम उसदे रसूल न ते अपने आपै गी मुसलमान आखै। |
| मुश्रिक | - ओह शख्स जेहका अल्लाह गी छोड़ियै दूई सत्ताएं गी ओहदा शरीक मनै जां अल्लाह दे सिवा दूएं गी अपना उपास्य बनाऽ। |
| मन्नत | - मनौती, नजर मन्नना। |
| मलक | - फरिश्ते। ओह अध्यात्मक सूखम, शक्ति संपन्न सत्तां जेहकियां अल्लाह दे इरादे गी संसार च लागू करदियां ते उसी चालू करदियां न। एह शब्द संयमी ते नेक बिरती दे लोकें आस्तै रूपक दे तौरै पर बी बरतेआ जंदा ऐ। |
| मीकाईल | - इक फरिश्ते दा नांऽ ऐ, जेहदा कम्म अक्सर संसारक त्रक्की दे साधन उपलब्ध कराना ऐ। शाब्दिक अर्थ ऐ, अल्लाह जनेहा। |
| मुहाजिर | - अपना देश छोड़ियै कुसै दूए थाहर जाइयै नवास करने आहला शख्स मुहाजिर खुआंदा ऐ ते देश छोड़ी देना हिजरत खुआंदा ऐ। |
| यहूदी | - हजरत मूसा अलैहिस्सलाम दा अनुयायी। ओह शख्स जेहका तौरात गी अपनी शरीअत मनै। |
| रसूल | - नबी, पगंबर। लोकें दे सुधार आस्तै अल्लाह पासेआ भेजेआ गेदा ओह शख्स जिसी अल्लाह नबी जां रसूल दे नांऽ कनै पुकारै ते मती गिनतरी च गैब दियें गल्लें दी उसी जानकारी देऐ। |
| रुकू | - आज्ञा दा पालन करना। नमाज च गोडें पर हथ्य रक्खियै झुकना। |

| | | |
|-----------------|---|--|
| रुजूअ | - | कुसै मुसलमान पुरश दा अपनी लाड़ी गी सघंद खाइयै अलग्ग करी देने जां तलाक देने दी किश परिस्थितियें च दबारा ओहदी बक्खी झुकने दा नांऽ रुजूअ ऐ जेहका किश प्रतिबंधें (रोक-रुकावटें) कनै होंदा ऐ। |
| रूह (रूह) | - | हर चीजै दा तत्त। जान-प्राण, शरीर दे अलावा ओह चीज जेहकी जींदे प्राणी च मजूद ऐ। |
| रूहुलकुदुस | - | अल्लाह दी पवित्तर वाणी, ईशवाणी आहनने आह्ला फ़रिश्ता, पाक रूह, पवित्तर आतमा। हज़रत जिब्राईल। |
| रोज़ा | - | बरत, धीरज। इस्लामी शरीअत मताबक पौ-फटने (झुसमुसे) शा लेइयै सूरज घरोने तक बिना खादे-पीते ते मनो-कामनें दा त्याग करियै प्रार्थनाएं च समां बतीत करना। |
| रोया | - | सुखना। |
| लौंडी | - | दासी। ऐसी जनानी जेहकी जंग च शामिल होऐ ते कैदी बनाई लैती जा। |
| वज़फ़ | - | सौंपी देना, देई देना, अरपत करी देना। धर्म दी सेवा आस्तै अपने तन, मन, धन गी अल्लाह दे रस्ते पर अरपत करी देना। |
| वसीय्यत (बसीहत) | - | पक्की ते तकदी गल्ल। वसीय्यत ऐसी गल्लें गी आखेआ जंदा ऐ जेहकियां मरने आह्ला अपने लोकें गी तकदी दे रूपै च आखी जंदा ऐ। |
| वह्यी | - | संकेत करना। फ़रिश्ते दे राहें अल्लाह दी वाणी दा उतरना। कुरआन-मजीद अल्लाह दी ओह वाणी ऐ जेहकी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम पर वह्यी राहें उतरी। |
| शरीअत | - | इस्लामी बिधान। धार्मक आदेश। |
| श.फ़ाअत | - | सफारश। कामिल दरजे दा इनाम जां औहदा दुआने आस्तै कुसै दी सधारण नेही कमियें गी माफ करी देने दी सफारश करना। |
| शैतान (शतान) | - | पापें दी प्रेरणा देने आह्ला, अल्लाह थमां दूर लेई जाने आह्ला, भइकने आह्ला सभाऽ रक्खने आह्ला, सरकश, उद्दंडी, बिद्रोही, हद शा बधने आह्ला ते घमंडी। |
| शहीद (शहीद) | - | साखी, गुआह। गुआही दिंदे बेल्लै भलेआं सच्च बोलने आह्ला, ओह जेहदे शा इलम दी कोई गल्ल छप्पी दी नेई होऐ। अल्लाह दे रस्ते पर जान देने आह्ला। हर-इक गल्ला दी जानकारी रक्खने आह्ला, |

| | |
|-------------|--|
| | नरीक्षक ते शहीद (शहीद) अल्लाह दा इक गुणवाचक नांऽ बी ऐ। |
| सजदः (सजदा) | - आज्ञा दा पालन करना। नमाज़ पढ़दे मौकै धरती पर मत्था रक्खियै अबादत करने दी हालत। |
| सफ़ा-मरवह | - काबा दे लागै दिये द'ऊं फ़ाड़िये दा नांऽ ऐ। हज्ज ते उम्रः करदे बेल्लै इनें दौनीं फ़ाड़िये बशक्हार चक्कर लाए जंदे न। |
| सहाबी | - हज़रत मुहम्मद मुस्ताफ़ा सल्ललअम दा साथी। ऐसा शख्स जिसनै उनें गी दिक्खेआ ते उंदे पर ईमान ल्याए दा होऐ। |
| सई | - सफ़ा ते मरवह दे बशक्हार इक कंठे थमां दूए कंठे तक औने-जाने दा नांऽ सई ऐ। |
| सब्त | - शनिवार ! यहूदिये च एह ध्याड़ा त्यहार दे रूपै च मनाया जंदा ऐ। |
| सलीब | - फांसी पर चढ़ना, फांसी पर मारना। फांसी आहले दियां हड्डियां त्रोड़ना, इत्थे तक जे ओहदी जान निकली जा। |
| सिद्दीक | - बड़ा नेक, संयमी, बौहत सच्च बोलने आहला, सचाई च कामिल। अपने कर्म कन्नै अपनी गल्ल सच्ची साबत करने आहला। सिद्दीक़ीय्यत दा औहदा हासल करने आहला। |
| सालेह | - नेक-संयमी। परिस्थिति दे मताबक कर्म करने आहला। जेहदे च सालेहिय्यत दा औहदा हासल करने दे गुण मजूद होन। |
| सीना | - इक पर्वत दा नांऽ ऐ, जेहका सीनाई च ऐ। एहदे आले-दुआले दे मदान ते जंगल गी सीना दा जंगल आखदे न। |
| सूर | - बिगल। सूर फूकने (बिगल बजाने) दा अर्थ बौहत बड़्डी तबदीली ऐ। |
| सूरः | - कुरआन-मजीद दा इक पूरा भाग। कुरआन-मजीद केई हिस्सें च बंडोए दा ऐ ते इंदे चा हर-इक हिस्से गी सूरः आखेआ जंदा ऐ। |
| हद्द | - इस्लामी शरीअत दी निश्चत कीती गेदी सीमा। |
| हज्ज | - इस्लाम धर्म दा इक महत्त्वपूर्ण रुकन (अंग) ते इक खास अबादत दा ढंग। हज्ज जुल्हज्ज दे महीने च खास आदेशे कन्नै मक्का जाइयै काबा दी परदक्खन ते अरफ़ात बगैरा च हाजर होने कन्नै पूरा कीता जंदा ऐ। |

| | | |
|----------------|---|---|
| हज्जे-अकबर | - | मक्का दी विजय दे बा'द इस्लामी अनुशासन (क्हूमत) दे अधीन होने आह्ला पैह्ला हज्ज। |
| हज्रक | - | सच्च, तत्थ, भाग, ठीक, हिस्सा, अधिकार। |
| हरम | - | मक्का शैहरै दे आसे-पासे दा खेतर, जेहका चपासै चार-चार मील तक फैले दा ऐ। सत्कार जोग स्थान, जित्थें कुसै दा खून करना बरजत ऐ। |
| हराम (रहाम) | - | नजैज, नापाक, अवैध, अपवित्तर। |
| हलाल (ल्हाल) | - | जायज, ज'बा जां ल्हाल कीता गेदा, पवित्तर, वैध। इस्लामी शरीअत मूजब ज'बा कीता गेदा जानवर। |
| हवारी | - | स्हायक, साथी, हज्रत मसीह अलैहिस्सलाम दे साथी। |
| हिक्मत | - | सत्त्वज्ञान, दार्शनिकता, न्यांऽ, नम्मरता (ल्हीमगी), विद्वता, गल्लै दा तत्त, सार ते असलीयत, अज्ञानता शा रोकने आहली गल्ल, हालात दे मताबक कम्म, कुसै चीजै गी ठीक मौके पर रक्खना, कुसै समस्सेआ दा ठीक जां सुधार होना। |
| हिजरत | - | देश छोड़ियै कुसै दूई ज'गा पासै उठी जाना। हज्रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम दे मक्का थमां मदीना आई जाने दा नांऽ बी हिजरत ऐ। |
| हिदायत (हदायत) | - | राह् (रस्ता) दस्सना, रस्तै चलाना ते मकसद तक पुजाना, पथ प्रदर्शक, पथ प्रदर्शन। |
